श्रीकृष्ण बाल विनोद

श्रीनर हरिदास विरचित



॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ श्री सारदायै नमः ॥ अथ बारहठ श्री न
रहरदास कृत अवतारचरित्र लिष्यते ॥ सारदूल ॥ सुंडादंड प्रचंड मे कड सदं
मद गंध गल्लस्थलं ॥ सिंदूरारुण तुंड मंडित मुष त्रिंगरस पुंजारवं ॥ यं फरसां
कर धार सार सगुणं पारं प्रत्र्ये सर ॥ तसतितं सदबुधि सेवस फलं वरदायलं
बोदरं ॥ १ ॥ या धवला गिर वासवेयु वर णीहं सावरं वाहिनी ॥ या धवलं अविचंस
अंस अमलंकर विनवाणीवरा ॥ या धवला वसना विसाल नयनी स्यांमं त्रसर
लंकनी ॥ सा अनु कंथ सरस्वती सुवदना विद्यावरं दायनी ॥ २ ॥ यं पुष्पमं गरुदे
व सेत सुद्ह विद्या प्रायाम हं ॥ श्री मम जझ सु दिक्षित गिरधर वंदे प्रसादं
वरं ॥ नदृष्टं सत पंथ काव्य करणं विघ्नं सहरणं यरं ॥ श्री सुर सेव्य पदार
विंदं विमलं सरणागतं घ्यावहं ॥ ३ ॥ अरिल ॥ गणपत गहर ग्यांन अषन ॥ सर
सत सुदति सुमति समसनं ॥ गुरप्रसाद यादगुर ग्यानं ॥ कृत अवतूपन गहि गतीव
षांनं ॥ १ ॥ छंदपद्धरी ॥ यक समय सेष सज्यासमांनं ॥ हरि सयन करत बलअम्र
मंगन ॥ धरिलु वनन तुरद सत उदर वास ॥ सोलणे सेष सज्यानिवास ॥ नकुकालत्र
ये तिह गंवितीत ॥ मन मोहरं हत माया अजीत ॥ विसतार विस्व कारण विष्यात
परिक्रम लंणे जागत प्रात ॥ २ ॥ ब्रुह्मावतार उतनपति ॥ कविरोवाच ॥ हरिधर
तत्रितजीला निधांन ॥ चतुरानन तप ज्योनाल ध्यान ॥ विधलणे प्रजापति अतिप्रनीष्ट
सोंतस जति लणे मांनुषी सिष्ट ॥ नवदुष बीजनि मृाण कीन ॥ वरवढै नित्य साषा नवीन
॥ कृगिगन तेज जलवाय जांन ॥ मनकाज हरिलपर मातमांन ॥ सुइस्वार रचे दि
घवल विधांन ॥ सतितेता अपुरी कलि समांन ॥ अगरे सुप्पम कृतयुग पुनीत ॥ मन
सुगत अये परिक्रम मीत ॥ सत तेता अपुर जुग सुभाय ॥ नकुल ये ऐक धरम मंहि
सहाय ॥ तहांव[illegible]ढे धरम लाल अनेक ॥ सतसील सुकृत विद्या विवेक ॥ तिहसम
य धरम बलि नकुपाय ॥ सविसेष रिष नवरत्नौवनाय ॥ त्रियजुगन सहजम
तिणेकमीत ॥ कलिक्रोध लणेर विप्र पकिरीत ॥ पतिय पहित्र जुग कलिक रहिषे
रु ॥ विपरीत विरुध वाढौ अपंरु ॥ इक और रत्न कुंभ कलि ऐक आय ॥ सम वानहि
पावत उषवियाप ॥ कलिर है कफु सजिमीन षांन ॥ विन समय वृष्याकरि बोबि
धांन ॥ दूहा ॥ कलिके संगि कलि विना ॥ हियविवाद दुति हीन ॥ तरफ रात अं तिजिन
हिनित ॥ ज्यू विन नीर हि मीन ॥ छंदपद्धरी ॥ तब लये षान दु तिदुबित पाय ॥ बयरो गिलप
जिजर सहनदाय ॥ ठंतिपाय स्रजि वाढी अमांन ॥ अफु जाय पाय लये सोक जीन ॥ कु
जिसर न जाय इह मंत्रकीन ॥ दूहा ॥ जिह रोनि निरजल्पता ॥ ताके अपजस पूंन ॥

कलिसौराजा ओर को ॥ मित्री कपट अनूत ॥ १ ॥ यह समाज कलि कौ समझ ॥ अरु आ
पुनौ सुभाव ॥ सफल करन अभिलाष सब ॥ कीनौ गवन बजाय ॥ २ ॥ कविरोवाच ॥ पध
रि ॥ कलि आरि दुकार रचौ आंन पाय ॥ सरनागत पावै अभय भाय ॥ पुनि हारि तबै दुद ये
प्र मांन ॥ कोउ दीन सु कारन तकार आंन ॥ जीनौ ह कार तिहु भूपन समीय ॥ भूप सिंहास
न तहां कल पुष्पीय ॥ सादर निहार आवत सुपाय ॥ नह राय सभा सभ मनवै आय ॥ ३ ॥
दुहा ॥ कलि कौं अघ वंदन करे ॥ बेवक दई बताय ॥ सभा निहार विचार सब ॥ अंतर
बैठे आय ॥ कलिरोवाच ॥ पद्धरी ॥ कोदेस वंस बजि नामक मैं ॥ मनतजु सो कअरु
कहहु मरम ॥ पापोवाच ॥ ठारौ अकास अरु धरी भूमि ॥ अविक मिनर भूप अर
मै अगमि ॥ उर सहन जात मै दुष असेस ॥ फटि है न भूमि की जे प्रवेस ॥ अरि बुध दे
ष सुनि अप्रमांन ॥ कछु अजहु आंष फूटै न कांन ॥ कलिरोवाच ॥ निज मरम न वे
दहु वैर मित्र ॥ यह काल आहि ऐ ही विरत्र ॥ पापोवाच ॥ जो पूछित हौ मोहि दुविते
व ॥ बिन की जदीष्ट परस दरदैव ॥ मनुराज भये बलि अप्रमांन ॥ सुभ असुभ हेत
वेता निधांन ॥ तिह वरी भये वां मा अनूप ॥ निरवृत्ति यनाम रूप ॥ प्रिय प्रिया पर स
पर मिज प्रकृति ॥ रिसरा सरमे मनु रत विरच ॥ मनु तेजु भये दै तदय वंस ॥ करमादि
कमई हि नांम अंस ॥ करमा अकम भए भय भ्रात ॥ निरवृति प्रवृति मनू नात मात ॥
भ्राता सुध रम मो पवित्र य जात ॥ माता सु विद्य सुभ करम तात ॥ पूवी जु देव मम मरम
वात ॥ माता अविद्य दुकरम तात ॥ करमादि भए घोर मा विकार ॥ दुकरम आ दिह मया
पसार ॥ बलवंत वीर मोहि पापनाम ॥ कतु एन विरोधी मित्र कांम ॥ पुन्नु होय जहा मेरौ प्र
चार ॥ बिन मांफ करू सो देस बार ॥ यह भ्राति भइ जब वंस वृधि ॥ इक येह वास विग यो वि
दुध ॥ हम वेन बसहि ऐकंत थांन ॥ मति भएे विदुध बल अप्रमांन ॥ हम पाप हित हिवे
उपाय देह ॥ वेतज हिता हि हमरा बिनेह ॥ पितु देह दुहा वे अत्ति असंक ॥ हम मिलै ब
जहि सेव हि ससंक ॥ सब बंद जात मनु कह सुनाय ॥ करि माद्य करयौ कहि तबै आय ॥
जेमि सौ कारागेह मांझ ॥ निकसन नहि देवत भोर सांझ ॥ मनु पावत नही अवकास को
य ॥ पुनि मारन काजै जतन होय ॥ पितु बचन करत ऐ अंग भूत ॥ अनसस्त्र बध कक
हियै अनूप ॥ मनु परयौ महा संगट सषेद ॥ करमाद्य मंत्र पुनि लहयौ भेद ॥ पितु घात जां
न करमादि पूत ॥ उरत्रास मनु हित ज्यौ अनूत ॥ मनूवाच ॥ सुनसायक हौ मनुनि
संदेह ॥ करमादि वस हु मजरी नयेह ॥ उपधांन पत्र फल नदी आंन ॥ जल पात्र स
रित सम्पाय थांन ॥ कर पात्र गुह हु कुम पंच ग्रास ॥ निस दिवस असन जगिर हि नि
रास ॥ त्रण कासप आस पजर धिपाय ॥ पुनि गृह परण साजा सु नाय ॥ निर आ
सर हहु संपत विहीन ॥ गति मोह मांन निद्रा अधीन ॥ सपवुम तरि जग अंतर अकांम

बन मांज अकेले रहत बाम ॥ नखवार दृषवुर कर्महीन ॥ नित अंग राग लक्ष्मी
नवीन ॥ हिमासिसर काजनिरव सनजाहु ॥ युं निग्रीष मयश्वानजित्तपाहु ॥ वरषा
विसेष जलधार सीस ॥ इहदई पितापुत्रन असीस ॥ रिस्य नग नऊ धारि अर
ताप्य ॥ सबजन महोछु तु तनहु साप्य ॥ दुहा ॥ कर्मादिक नसत्रासकै ॥ दीनोपीतानिवा
स ॥ लखैअकरमादिक नहम ॥ कीनोमंत्रप्रकास ॥ छंद पधरि ॥ यकसमय दृष मनु मो
ह लीन ॥ कछु देहु वास हम भुगतिकीन ॥ अब आन अकर मादिक सुनाय ॥ क
रिजो रिरहे पितु टेक पाय ॥ अविवेक असंग निभ्रम नाचार ॥ अतिसे अनीत अन
रथ्य अपार ॥ ईत्यादि सबै जीनि संभारि ॥ अज्ञाअधीन पितु हेतकारि ॥ पितु ल
ये पुत्र हम अनुजयेष ॥ सुनि होहु जरु कलियुग विसेष ॥ ईह भांति पिता हम पु
सन कीन ॥ दिग्विजय होहु वर हम हि दीन ॥ मनु कल ह वढत देवहु अमान ॥
पितु करे पुत्र जब उभय थान ॥ यह भांति पिता कीनो विभाग ॥ कबु हम हि ननहीन दि
लाग लाग ॥ सतकरम गयेत वरिषा निवास ॥ तनज रहे मान हित प्रकास ॥ सानंद रहहि
रिस्य कर साप्य ॥ गवहि सप्रेम हरि विरलगाप्य ॥ परिचारिक रहि हम स्वउ देस ॥ सुर
विवासहे तहैं सनविदेस ॥ प्रतिपुरिष नजे जगजन पुनीत ॥ नेक रहि नेक हम सौं नप्री
त ॥ दीजहि कपाट हम जातिकारि ॥ स्वस्थान कछु न पाव हि संचारि ॥ निसवसह सो
वत हम पंथ जात ॥ पुर जारि बारि सोतकरत प्राति ॥ विपरीत विरत हौ गरो विहाल ॥
सहि रहन सकै हम परम साल ॥ निश्चय विचारि ह मय है कीन ॥ यै समय पाय वरत्ते
प्रवीन ॥ सांहायहीन हम प्रवलसत्र ॥ तव मोन साकउ भिचले अत्र ॥ हम नजत टेर
यम कह्यौ राज ॥ कलि जीयत अहि राजाधिराज ॥ तनदई तुनीतीतु महि फेर ॥ ह
म कहन सकत लघु मुहि हेर ॥ इह नइ विप्र हम माफ देव ॥ सोजाज प्रजु हिहम
करहि सेव ॥ कविरोवाच ॥ दुहा ॥ ठलु अकेलु समरथ्य हरि ॥ अरु अनाथ्य प्रकार ॥ अ
वतिरै प्रभुत्र णकुरै ॥ सोकार न करतार ॥ छंद ॥ नरसोक बुजिन करहु मित ॥ य
ह काल आहि निवल निरत ॥ सुखहोत तिनहि फिर होत दुष ॥ इह जान सोकत
जिहै विदुष ॥ छंद भायणा ॥ जहा रवि होत उदोत तहां तमनाही बल ॥ वां सुरत्र यै धि
तीत ॥ सुनि सब वैराग्नी लज ॥ धीरगहो नरिवीर ॥ नदुष हीरतना ॥ परिहा ॥ अपनी
अपनी वर सुनाटक नवना ॥ १ ॥ जौं ग्रीषम कै अंत ॥ सुन रषा आयहै ॥ वरषा होय विर
तीत ॥ सीतसमुद्राय है ॥ योही जग अनुसार ॥ अनुक्रम जेषिये ॥ परिहा कबहु दइसु
दीष ॥ हमा परिदृषिये ॥ २ ॥ जौं नपत्ता बहुमोहित ॥ आपविचारिये ॥ सुषकै गयै निदांन ॥
सुदुष निहारिये ॥ फिर तेही अनी आस ॥ बहुर सुष पाइये ॥ परिहा ॥ क्रोध विरोधनि
वारिन ॥ सोक वढाइये ॥ छंद लु जंगी ॥ लयो दुषती को सुमै दुष पायो ॥ वकै लाप मै

रे इहां तू जु आयौ ॥ सदा हित कारी सो खात्रान्न तेरौ ॥ करौं तोहि मो सौ फिरै धौंस मे
रौ ॥ पापोवाच ॥ तजि विक्रमी तुम्म मोहि जांनौ ॥ सदा धर्म धेषी कु कर्मी सयांनौ ॥ यहै
नेम सा त्रौ सुनौ देव मोरौ ॥ तको देह आवै कहौ काज तोरौ ॥ रहै सत्रु संघट तै जो वच्यौ
कुं ॥ सु तो स्यांम के कांम देही सच्यौ कुं ॥ २ ॥ कलिरोवाच ॥ बजै वाय जैसो गहै ओट तै
सौ ॥ सोइ सूर सामुष्य संदेह कैसो ॥ छंद चौपई ॥ ऐक बात हम सुनी अनैसी ॥ सु
नीयै मित्र कहु तोहि कैसी ॥ सो अब कहै है कहत सम्रूला ॥ सुन्नि आयै बाढित उर सू
ला ॥ कविरोवाच ॥ पूछी पाय सु विस्तर बातै ॥ कहा अनिष्ट अवतब्य सु तातै ॥ क
लिरोवाच ॥ फेरि कहै कलि सुनि अघ मित्र ॥ जो कबहु होनै अहित तिरत्र ॥ है है
महा अवितार प्रबोधी ॥ धर्म सहाय कपाय विरोधी ॥ ते सब मारि दुष्ट संघरहै ॥ ध
रम निरंतर रिव्याक रिहै ॥ माया रहत निरंजन स्वांमी ॥ अषिज चराचर अंतर
जांमी ॥ दुहा ॥ निसकत निर्जित निगम हित ॥ अतुजित जोति अषंड ॥ ऐक ऐक
कव रूं प महि ॥ कोटी कोटी ब्रहमंड ॥ १ ॥ पापोवाच चौपई ॥ स्रुति अषल ब्रहमं
ड निवासि ॥ रोम कोट ब्रहमंड प्रकासी ॥ रोम रूप ब्रहमंड समेहै ॥ ते अवितार उदर
किह तेहै ॥ कवि वाच ॥ दीनन राव वत्स लूनावै ॥ सेवक संग फिरै हित सावै ॥ का
रन पाय सु देही धारै ॥ काज त्रये निज लोक विहारे ॥ पापोवाच ॥ कलि अवनीय क
याय ह कीजै ॥ दास जान मो तौ मैडगदीजै ॥ सौ प्रसंग सविसेष निदांनो ॥ अनुक्रम सौ
अवितारि वषांनौ ॥ कविरोवाच ॥ मोहि न सकह ती सुन मित्र ॥ जिह वरनां अवितार
विरता ॥ नेत नेत जिह निगम वषांनै ॥ कहि ताको अनुक्रम को जांनै ॥ नहि अविता
र अनुक्रम लीनौ ॥ कारन पाय रूप सोई कीनौ ॥ आदि मध्य अरु अंत न वांको ॥ केर
से कहू अनुक्रम ताको ॥ जग ही मंड जगत तै न्यारा ॥ पल ही समटै पल ही पसारा ॥
कीट गयंद ऐक सम तोलै ॥ बाहिर नाद्रै भीतर बोलै ॥ आदि प्रगट ये कोउ न पावै ॥
जो पावै सो फेर न आवै ॥ जाकी माया जगत लुभांनै ॥ सिव विरंच पुर पार न जानै ॥ की
री कुंजर साध्य प्रकारा ॥ पुष्प मकीट की हेत संचारा ॥ नित नवीन जाको जस गावै ॥
सेष सहंस मुष ओर न पावै ॥ अगम अगाध निरंतर लेषो ॥ जो कबहु होय चिरत्र
सु देषो ॥ दोहा ॥ कजि अरु पाय प्रसिद्ध मै ॥ इह विध हुं ऐकंत्र ॥ मन मन सा मर मन मि
त्ने ॥ सहज सुहाये मित्र ॥ १ ॥ इती कलि जुग पाप संवाद ॥ कुंडलिया ॥ वास कियौ
अग पात मह ॥ कलि संयुत परिवार ॥ जब जैसो कबु देषबो ॥ तब तैसोहि विचार ॥ तब
तैसोहि विचार ॥ कछु अवकास जु यैहै ॥ जीत सबै संसार ॥ महा मन मोद बढैहै ॥ सु अं
ट बंधु सुत त्रिया ॥ साज सेवक संग लीनै ॥ सहचर सषी त समेत ॥ वास अइग्यान जु
कीनौ ॥ दुहा ॥ वार न पात सु बार हव ॥ नरहर मति अनुसार ॥ मै सागर पार न ज
यौ ॥ कहत चिरत अवितार ॥ १ ॥ छंद सु पंच विरंच बव ॥ सेष सहं समुष संग ॥ नितर
स नाज सक हत नव ॥ ओर न लहत अलंग ॥ २ ॥ रसना ऐक जु खाद रत ॥ सबहीन रह
त सषेद ॥ कितो कित हि हरि जस कहुं ॥ बरनत नेत सु बेद ॥ ३ ॥ जो सो पंन सामर्थ्य

मै ॥ कहियै मति अनुसार ॥ पावन हीन दयाल कृपाल ॥ कृत मो नवकी रतार ॥ ४ ॥
जप्पास कनर हर सु कवि ॥ कह अवितार स्वरूप ॥ जिह जिह ग्रंथ नजे सुने ॥ रिदय
ति त अनुरूप ॥ ५ ॥ नरहरि पुनु वाराह बखे ॥ ऐ बिन अवधार न हेत ॥ निर्मल न दित जा
त कुल ॥ देह सत्य मय सेत ॥ ६ ॥ अथ नाराइण उतपति ॥ कबिरोवाच ॥ छंदय
रि ॥ पर पुरख काल इक निज प्रकास ॥ बहुधर नवर हुओ माया बिलास ॥ हरि प्रिया
आयत ब बिह निकेत ॥ हरि निरन जीन हरी दरस हेत ॥ जुमार पाल जय बिज बा
नाम ॥ करि जोरि रहत नित सहित काम ॥ ककि सस आव पुति हार कम ॥ कीनो निवेद
जा मोन मम ॥ मुसकाय कहीओ जब जगत मान ॥ करकस सुनाय फल लहु तात ॥
पुंनि लए ऐत काल कछु जब बितीत ॥ परिधारे सनिकादिक पुनीत ॥ कृत गमन मध्य द
र सीत्र काल ॥ बटिका निरोध किय द्वारिपाल ॥ फिर हेकु भिन कई हु गंरि षीस ॥ जो
जो सुध धाइ हि जगत इस ॥ मुनि लए ऐ तबै क्रोधायमान ॥ पुंनि दयो स्राप दुसह निदांन ॥
कृत दुष्ट जाकु तुम लुब्ब निकेत ॥ अवितर हु जोनि आसुरि अचेत ॥ माया अजीत
वन प्रभू मुरार ॥ सनकादिक सनमुष पाव धार ॥ आदर असेव कीनो अनंत ॥ सु
न्द रस दयो लष परम संत ॥ अरघादिक वंदन प्रसन कीन ॥ अति लाष पूर रिष बि
दा दीन ॥ दहुंण सराप लौ द्वार पाल ॥ जय निरसनु मत बपु अति बिहाल ॥ जय बिज
य उवाच ॥ जय बिजय आंण अति प्रणत कीन ॥ अवितर न भूम हम श्राप दीन ॥
सुन बूद तहि प्रभु उवरन साप्प ॥ अपराध बिना हम लऐ अनाप्प ॥ जगदीस करहु
ग तिदीन जांन ॥ जिह होय नहीं प्रभू दरस हांन ॥ श्री नाराय णोवाच ॥ सनिकादि द
यो जो द्वैस दाय ॥ सो लऐ बिना मिटहै न स्राप ॥ अवतरहु ये ह कस्यप रिषीस ॥ दती
गुल होहु आसुर अधीस ॥ सु भूल जे भूगर ज सप्पान मीत ॥ पुनि देहूं दरसन जगपु
नीत ॥ भूलोक जाय अवतरहु आय ॥ तुम बहे जन्म हम सूं मिलाय ॥ अत्यंत बिर
ध हू जयै मोहि ॥ तीसरै जनम तौ मिलन होय ॥ दुहा ॥ हो नी होय सु हैरहै ॥ नाहिं
टरै निदांन ॥ भूत भवष्य तवर्तमान ॥ सब हि बेद पुरांन ॥ ७ ॥ कबिरोवाच ॥ छंदप
धरि ॥ यौ कहत जोतनि कसी अनंत ॥ सब संत दाप सेर हे संत ॥ कसापपु जाय पत्नर
सोन कूल ॥ सो जोति आन पुगटी सम्मूल ॥ दती नाम दक्ष पुत्री सुदेस ॥ सुन प्रान
प्रिया कस्यप रिषेस ॥ अति जयो प्रिया व्याकुल तंग ॥ जर बेदत बही वान न अनं
ग ॥ अकुलाय आय त्रिय पीव समीप ॥ रति जाचि निवी अ समय रिषीप ॥ हो संध्या ज द
पी असुर काल ॥ रति दांन दयो रिषि है दयाल ॥ दती गर्भ दुष्ट सुत धरे दोय ॥ सत वर्ष
बीत पुनि यस वहाय ॥ तिह काल दयो दरसन अनंत ॥ निज बाचा प्रतिपालन निमं
त ॥ हिरणाक्ष्य हिरणकस्प बलिष्ट ॥ जो रिता असुर प्रगटि प्रतिष्ट ॥ सो लऐ देह प
र बल समांन ॥ अति दुष्ट कर्म बल अप्रमांन ॥ राज निकोष हिरणाष कीन ॥ निज र
धरे बत्र चामर नवीन ॥ पित राज लऐ आसुर अजेव ॥ तिह समय अनय प्रगटे अमे
व ॥ नीर घमु जाय द तम मिटि दांन ॥ मख विप्र बेद सुनियै न कांन ॥ उषधी अनल सुरगो अ
द्विष्ट ॥ निरबिज भई क्षिति सत्य निष्ट ॥ तब कोप असुर भूजक सम्मूल ॥ सब जइ

कादि प्रथ्वी समूज ॥ चितकरी सुचलु जै कहूं पलंक ॥ पलज हां भयो जल बिन
असंक ॥ सुर साज लीये आसुर समाज ॥ सो सुल करत निसंक राज ॥ मषत्रा
ग रहित लषे सुर रिषेस ॥ उरि चढी तवे चिंता असेस ॥ सुरगऐस बै मिज ब्रह्म
ध्यांन ॥ दुष कहे उसह वाये निदांन ॥ विधकरत जोग धारन असेय ॥ उधू सत्व कु
रि रोमं अघेय ॥ सुल्क घ्रांण द्वि निसु ह्रिम सरीर ॥ अंगुष्ट मात्र वाराह वीर ॥ निज रू
प ब्रह्म वाराह नाम ॥ अविनासि जो पूरन धरम धाम ॥ वेदोमय जिड्स वाराह वीर ॥
स्रुव तुंड मन्त्र मे अनुक्रम सरीर ॥ तनु वढ्यौ मनु परबत विथार ॥ संधुगत रोम तिष
न सुधार ॥ ससि हेत उल्लयद दाढा सरूप ॥ जल नेत्र घाण घुर घुर सजूप ॥ सो भाव
सिध सुकर प्रकास ॥ भुव फीर ह करह ध्यान नास ॥ सुध गंध पान निश्चय सु भाय ॥
जल मगन लइ प्रथ्वी सपाय ॥ षरनषर प्रलय वारिध विहार ॥ आ बोर छता जल
सुर उधार ॥ विन सुत जजाय वाराह देव ॥ उरबी उधारि कीनो अजेव ॥ सित दाढा ॥
अग्र भुव अप्रमांन ॥ गज दंत अंत कर दंम समान ॥ हिरणाक्ष जु सौं तव आंन जु
ध ॥ क्रोडावतारि हरि त्यों संक्रुद्ध ॥ प्रति द्वंद होत हरि असुर पर्व ॥ संन्यस्त मति लये
तहां लोक सर्व ॥ स्तुति करत सहस्र गति साधक लप ॥ इह भई क्रोध कोड़ा अनलप ॥
निय ह्वौ दैत्य माया अनूप ॥ रद अग्र लही भुव अतुल रूप ॥ उधार देव बजि अमांन ॥
चित कीन रतन गर्भा सु ध्यांन ॥ महा सक्र तन्न तहां करि मुरारि ॥ जय सबद सिध नार
न उचारि ॥ आ ब्रह्म भयो नभ रष्य अकास ॥ सुर पुहप ब्रषा कीनी सहास ॥ कीनौ पु
रांन वाराह देव ॥ साधि न करत भये रिद्ध पसन्न ॥ विधसाध्य हव कव्यौ विलास ॥ सं
तोष पोष पित्र गन प्रकास ॥ अन्नादि बीज औषद अपार ॥ सो किये प्रगट आसुर सं
धार ॥ पूजा हरि लीर ष्यमष प्रसाद ॥ विध जुगत करत त्रौऐ निरविषाद ॥ इह हेत भये बा
राह आय ॥ सुरष्यये अभिज आसुर उप्पाय ॥ वाराह तबै निज पुर विहार ॥ प्रभु करत
भये लीला अपार ॥ दोहा ॥ विमल विहार वाराह प्रभु ॥ सागर पै वसहास ॥ असु
र हन्यौ हिरणाक्ष रिन ॥ कीनो पुव्वी प्रकास ॥ १ ॥ कवित ॥ विमल रूप वाराह ॥ विह द
बल तेज विराजत ॥ क्रम ह मकव्याद ॥ भगत गत हेत उपाजित ॥ सुर सधार बित
अरषयार ॥ अवतारि अजोनिय ॥ तपविधान मष होम दांन ॥ पुहवी परकासीय ॥
अघ असुर ग्रसति मानुष अनिन ॥ कोउ सहाय नाहि न करन ॥ उधारि मूल नरह
रि सुकवि ॥ सित वाराह असरन सरन ॥ इति श्री वाराह अवितार बारह २ नर
हरिदासेन विरंचित ॥ अथ सनत्कुमार वरननं ॥ श्री कविरोवाच ॥ छंद प ॥ सनिकादि
आदि तिपति सरूप ॥ नैष्टक ब्रह्मचारी अनूप ॥ सत्त्वासन तप कृत ब्रह्म संत ॥ ऋषि
सपुत्र तब भये अनंत ॥ विग्रह विभाग कियत प्रकारि ॥ सनिकादिक उपजे जोग्य
सार ॥ दोहा ॥ सनक सनंदन दैसरे ॥ तीजे सनितकुमार ॥ चौथे भये सनातना ॥
आदि पुरष अवतार ॥ १ ॥ आतम तत्व प्रनिष्ठ ज्यौ ॥ पहि जै हो संसार ॥ सो वितारि क
रि विस्तर्यो ॥ उत्तम जिअधिकार ॥ २ ॥ पंच बरष के बाल सम ॥ मति अविकार सरीर
॥ उपजे ते तीपति मांनुसी ॥ सिष्ट विहार सधीर ॥ ३ ॥ तीन लोक आगम निगम ॥ भूते

अविख्यात इशान ॥ नरहरि प्रभु अवितार अठे ॥ सनकादिक भगवान ॥ ४ ॥ इति श्री न
रहरिदास बारहठ विरंचित ॥ सनकादि द्वितिवतारि ॥ संपुरणं ॥ जिगोवतार जि
कबिरोवाच ॥ छंद पद्धरी ॥ मनु सुता लई अकुति नाम ॥ रुचि पांन ग्रहन किय धर्म धांम ॥ तिह
उदर जिग्य अवितारि लीन ॥ मख कर्म अखिल विस्तार कीन ॥ अरंभ्यार जिग्य दछिण
नाज ॥ संतोषयो त्रिभव सुर समाज ॥ सुरगन समेत तप किये विसेष ॥ ईंद्राधिकार पायो
असेष ॥ दुहा ॥ सायंभू मनू रषियौ ॥ कीनौ असुर संघार ॥ जिग्य पुरष हरि अवि
तरे ॥ इह कारन संसार ॥ १ ॥ नरहरि प्रभु महिमा अमित ॥ धरम सहाय निदांन ॥ निज
इछा लीला करी ॥ जिग्य पुरष भगवान ॥ २ ॥ इती श्री बारहट नरहरिदासेन विरंचि
त जग्यातार त्रतीय संपुरणं ॥ अथ नरनारायणावतार लिष्यते ॥ कबिरोवाच ॥ दुहा ॥ ब्रह्मा
को सुत मानसिक ॥ भयो धरम यह नांम ॥ दक्ष प्रजापति की सुता ॥ मुरती भइ तिह बाम ॥ १ ॥
छंद पधरी ॥ पितु भए धरम सुरती सु मात ॥ उपजे नर नारायण विष्यात ॥ ते बैठ बदर का
श्रम प्रवीन ॥ तब बहुत हैत तप उग्र कीन ॥ नर नारायन तप बल प्रभाव ॥ आनंद भए
त्रिय पुर अमाव ॥ समसहंस वरष उपवास रिसिद्ध ॥ फलमात्र कीन पारन प्रसिद्ध ॥ सो उ
ग्र तपस्या सुनि सुरेस ॥ ईंद्रासन कंपित भो असेस ॥ इह समय ईंद्र पठियो अनंग ॥ अ
यररै मोहित तप सिद्ध भंग ॥ मिल मदन मित्र माधव समान ॥ आरंभव मसफिर प्रमां
न ॥ मल मेघ वधू घरि अग्र लाग ॥ बनि सिंन विविध मधु लत विलाग ॥ ईंद्र आति बडका
श्रम समीप ॥ मन मुदित आय मनमथ्थ महीप ॥ बन फूल लता तरु पुहप पात ॥ मारुत
सुगंध बलि अकसमात ॥ इह रूप भयो आगम अनंग ॥ उदीपन उपजे अंग अंग ॥ दि
ढ मुष्टि धारि टंकारि दीन ॥ कोदंड बान संधान कीन ॥ आकरषन बसकारष अनंत ॥ उ
नमाद कंद्राव न सोष अंति ॥ पै बांन लगे प्रभु अंग अंग ॥ भा भीन भये मकर ध्वज निषंग
भेदन कटाछि अनु हाव भाव ॥ सुर रमनि ष्यकी करि रति सुभाव ॥ निरबीज गये ते द्रिम
अनेक ॥ उपचार वार नहि फुरत ऐक ॥ अक्रुद्धौ मनोज करिकरि उपाधि ॥ धारण धां
न न हिट रिस माधि ॥ उरि काम वास उपजे अनंत ॥ मत क्रोध दिष्ट जारे महंत ॥ तब त्र
पे बिसंनि मदन जांन ॥ आदर प्रभु कीने ऐह आंन ॥ करि जोरि काम तब प्रणत कीन ॥
अखिलहेस अखिल माया अलीन ॥ जित कांम क्रोध तुम नियत जंत ॥ सब इह्यारा व
री परम संत ॥ तुम करहु क्रोध किह परिक पाल ॥ बहु दोष पितानहीं हम्पत काल ॥ जे
तिरही कांम सागर सुजांन ॥ गोपर क्रोध बूडही अग्यांन ॥ तिह दीन देष प्रभु भयेद
याल ॥ कारनह रूप सत तिक पाल ॥ सब कांसहं अब नितास्वरूप ॥ अखिलहेस सं
गदेबे अनूप ॥ अपछरा सहित बिसमत अनंग ॥ अदन्नु तर स उपज्यो अंग अंग
उरबंसी नाम अपछरा ऐक ॥ तासत्रू कह पठही करि बिबेक ॥ सोक प्रौ बिदा उरबंसी
संग ॥ इंद्र कह आनंद दानी अनंग ॥ इंद्र उर उपज आनंद अपार ॥ सो अद्र त्रियासु
रपुर सिगार ॥ सुर राज लभ्यो अविनार सिध ॥ परिपूर्ण पुरष पूरण प्रसिध ॥ इह जान
इंद्र प्रभु पास आय ॥ सब सेष दंडवत किय सुभाय ॥ मै देव मुढ जान्यो न मरम ॥ सो छि
महौ भयो मोतै अकर्म ॥ दुहा ॥ नरहर प्रभु अवितार औ ॥ नरनारायण देव ॥ दुस्तर तर
पबल जीत जग ॥ आयु नर है अजेव ॥ १ ॥ इति श्री बारहट नरहरदासेन विरंचि

न नरनारायणअवतार ॥४॥ अथ पंद्रम अवतार ॥ कपिलदेव ॥ कवित ॥ ब्रह्मसुअन
तपतेज लयो कर्दम रुजमुनिवर ॥ मनुल नियाइक देवहूती ॥ कललासयह नकर ॥ कपि
लदेव तिहउदर ॥ लयो अवितार सुपंद्रम ॥ सांख्य योग्य संधियो ॥ कविनजितियो कालकम
जपदेसर्हम विद्या अखिल ॥ कहयो मातकारनकरन ॥ उरधामनसिघपुनिसुरसती ॥ प्र
भूनरहर असरनसरन ॥ १ ॥ दुहा ॥ सांख्य जोग्य नरहर सुकरि ॥ नाम नभेद नओर
॥ जप्पाजपाजीसुतकी ॥ सोम नियासोफोर ॥ १ ॥ कवित ॥ अगरदेवपु हमीपवित्र ॥ सोरं
लपुर विमल ॥ देवदेव कपिलावतार ॥ तह करसौतपोप्पज: वेवतपयाकहयो ॥ विघ्न
लोसत्यसुग ॥ अउत्रेता आरंभियो ॥ दिवसेस वंस राजासगर ॥ तबहू अ जोध्यात
पायो ॥ १ ॥ नृप बाहु करिन निरत ॥ प्रछन्न अयोयराज्य ॥ अवनबाहिजे भौम ॥ वि
कलचित गहनवासगय ॥ तहां अखे उपंनतस ॥ त्रियासहगवनविचारिय ॥ तासग
रलपतिव्रता ॥ नियतलख गुरिव निवारिय ॥ गरअनी जां निसोतिनगरल ॥ मेषआ
बलाकह दयौ ॥ जन मयोसुपुत्र तागरजजुत ॥ सगरनामताते भयौ ॥ २ ॥ बंदप
धरि ॥ व्याहीसु सगर तब उभयवाम ॥ निजय प्रियकेसनीसुमतिनाम ॥ संततहीत
सेयो तिह रिषीस ॥ अतिप्रसन्न उरबदीनी असीस ॥ केसनी उवाच ॥ उनरयौ वननके
सनी येहु ॥ दुववंसतिलक मम पुत्रदेहु ॥ वरमागसुमतितिह करिविवेक ॥ अबदेहु
पुत्रमेरै अनेक ॥ संतानहेतसिससूरसाथ ॥ अवतप्पा अस्तु यो रिद्धी नाथ ॥ कपि
लोवाच ॥ जुगलइगर्भ त्रियधितसुजांन ॥ मुनिवर प्रसाद मन मोदमांन ॥ नृप ज्यौर
अपसम जसुपुत्र एक ॥ केसनी वंधितअनेक ॥ जहांलयौगर्भ भून सुजीव ॥ दसमा
स प्रसव लवसद इव ॥ नुवरीसु मतिइक जनीलव ॥ नृप जेसवन संदेह अत्र ॥ औ
राघदुजन मांगे अनेक ॥ इह वेर मदेयेतपुत्र एक ॥ सोफरी तुवरियावढिसनेह ॥ दे
वेसुवाजतिल मात्रदेह ॥ सुतसाव सहंस संख्यासुनाम ॥ लेधरे माफ धतकुंभताम ॥
पूतिकुल पुत्र सवरधिपाय ॥ साहंसी सूर उप जेसुआय ॥ विक्रमी वली अतिकाय
वीर ॥ नितरूप बोदकढित सुनीर ॥ नृप सगर सुकृत अनेक कीन ॥ सत्सवाज मेघ
संकल्पलीन ॥ कतुहीनलगे आरंभकाज ॥ संचारिसार मुनिवरसमाज ॥ यट जिइस
बोधनुटहिप भंग ॥ असुरहीसंगरक्षक अभंग ॥ इब्रासु फिरहय अविघ अंत: ॥
पुनिजिहुम पान आवहिपरंच ॥ जव भयेनिनाणु जिगपनाम ॥ मनइंद्र डरयो अनित्रा
समांन ॥ कतिसतमकाज आरंभ कीन ॥ मख पहबांधहयमुकिहीन ॥ कियतासअस
रक्षककुवार ॥ सुतसाव सहंससेन्याधंसार ॥ तिह अम्बहरनकइंद्र आयौ ॥ वनसंगफि
रतमनदुखवियाप ॥ चौंनक लई इ यक दिवसआय ॥ पुजियोदाव तिह समयपाय ॥
करिवेखविप्र जिहहटयो वाज ॥ लयटरेतसकजेगमोलाज ॥ गहनवनगिरकदुरग
मगंभीर ॥ धरिकपलिदेवतिह ध्यांनधीर ॥ जे अस्यतिहै बांधेसुकाय ॥ पुनिगयोइं
द्र निजपुर पुलाय ॥ सेवकपुकार करर नसुनाय ॥ वाजीन लहतमनु गोविलाय ॥
सवकाजकहत ऐपरमसह ॥ वलनांनदिवमामा अवाध ॥ उविनजेकरर मनक्रो
धमान ॥ जरतेक सांनघूत दयो जांन ॥ कवित ॥ क्रोध रंच दिग अंत ॥ सोधलीनौव
सुमतीय ॥ कहुनबाजकुरिनहयौ ॥ डोह दाहलतिह ढतिय ॥ खोजतहय बिलधिनर
त ॥ कयौसागर रतनाकैरि ॥ वारनीरगंभीर ॥ गहर दनु देवनदुस्तर ॥ पारवेषषो
दप्रथ्वी पुनंल ॥ नमोउदधिजनु निरमयो ॥ पुरिव्रकुप्रसिद्धभूजवलप्रबल: ॥

रूतनलचाह्यित जौत्र्ययौ ॥१॥ छंद पद्धरी ॥ संक म्यो सैन योजत सुनाय ॥ पुछ्यो मीयमं
गय दत्तिन्न पाय ॥ सब करहर आय तिह चिवुर तीर ॥ अपब्बाह गवंत ह्रैवेगं चिर ॥ स
वहि नले औयौ काल संग ॥ तिन लख्यौ तहां बाज्यौ तुरंग ॥ तहां देषि ध्यान जुत कपल
देव ॥ अनिगहैगहैपायो न भेव ॥ असमोर बिरूर अंतर अगाध ॥ सरु मोन मुद्र
व्रषल ऐसाध ॥ पद लात हन्यौ मुनि जौ प्रबोध ॥ कालान लत्तय ज्यो दृष्ट क्रोध ॥ व
वि अग्नि नेत्र जनमा अपसेष ॥ सब करे कुवर असमा विसेष ॥२॥ तहां चीत कछु काल जु
व्रहय सोधन पायौ ॥ जिह्व समय रिजान ॥ राज मन संक्रम आयौ ॥ किय संको
प विकरूप ॥ कबु नव्धू पवन आवत ॥ कहो न ध्यान बिलहोत ॥ निज दस कुं दिसधा
वत ॥ सब सुन्नर मित्री रिषसगर सौं ॥ करि बिनारि निरक्रर की यौ ॥ कि जीयै सो धको
र न कव्रन ॥ कुवर सेन कहां संकमिय ॥३॥ छंद पधरी ॥ वर बीर सगर सुत जुत वि
वेक ॥ असमजस सु जे बो पुत्र ऐक ॥ असमज के सुत अंसमांन ॥ गुणवंत सूर ब
हु उमल ह्यांन ॥ सोक पिल हैव हमु किसाह्म ॥ अति दीन भाष कीनो अराध ॥ तहं
नतेन्द देवसु प्रसनतास ॥ परिपाय अश्व जान्यौ प्रकास ॥ जे अश्व अजो आपुरीआ
य ॥ सबिसेष कह्यौ कारन सुनाय ॥ सुनबक्षौ सोक त्तरिन हिसमात ॥ जुग जुग प्रमान
त्रिलोक जात ॥ सुत जरे जिह्व विगड्यौ समूल ॥ सुनि सगर न्रपत तरिन वितसूल
॥ विध वेद धर्म कृत युग्य विवेक ॥ न्रप सगर दांन मष कि ऐ अनेक ॥ असमजस कु
न रिजर चढि वैराग ॥ तिह पिता संग कृत राज त्याग ॥ दिन सो धपुत्र पहि राज दीन ॥
कव जुत सगर वन वास कीन ॥ यो करत राज न्रप अंसुमांन ॥ प्रगट्यौ दिलीप तां
सुत प्रमांन ॥ तब भयौ भागीरथ्य पुत्र तास ॥ पावन जल कीने भुव प्रकास ॥ प्रगट्यौ
सुत गीरथ्य पुं निरूप ॥ जग जेत भूय धुरधर मजूप ॥ कबित ॥ न्रप भागीरथ्य इ
क काल ॥ यह जो ध्यान जात तहां ॥ गली मध्य पनिहार ॥ धकोलगि कुआगिर्यौ तहां ॥
तिह वंध्यी दुर मुषा ॥ परम छिद्र बचन सुनायौ ॥ जरे पिता महि अनल ॥ ज्वाल सो गति
न समाए ॥ दुरबचन बांन लगो दुसह ॥ मन संभ्रम महि अदुरुयौ ॥ अंतर बिषाद उप
ज्यो अमित ॥ तब हित यो वन तक्कियौ ॥१॥ बैवित यो वन राज ॥ ध्यान हिय विश्वंभर
धरियौ ॥ मन वान कयक समेत ॥ तहां तप अनुसरियौ ॥ कछुक काल वितयौ ॥ देव
दरसन तिह पायो ॥ नर अंतर अभिलाष ॥ अंसको प्रभु हि सुनायो ॥ प्रभु कहि प्रवा
ह गंगा प्रगट ॥ जो तिह जल थल विप्परहि ॥ अल्प मत्सु मरे पुरषा अमित ॥ न तो अ
धोगति धरहि ॥२॥ पुंनि राज सुरसरित हेत कांनन तप किन्नो ॥ तिह मंदाकर
नि प्रसन्न ॥ होय वंछित वर दिन्नो ॥ मातत्रयं पथगामनी ॥ पित्र सुक्र पाप घार हु ॥ मम
पुरषन ऐ अगत्य ॥ आप अवसे उधार हु ॥ अति तेज तपन आकास तै ॥ को मम धा
रा धारि है ॥ जो जेहै रसातल भेद जल ॥ कह कि ह जाति निकारि है ॥३॥ बहुरि राज
वन बैठ ॥ उग्र तप कर्यौ अषंडित ॥ सिंभु हेत सविसेष ॥ ब्रह्म माया बल षंडित ॥ त
बदया लत्र पुरारि ॥ दांन भागीरथ्य दिष्यो ॥ आगम गंग तरंग ॥ विघ्न हि काज विसेष्यो ॥
सिव दयो बचन अभिलाष सुन ॥ इक्ष्वाकु कुल जन अनुसरहु ॥ पावन प्रवाह मम सीस
पर ॥ आनि सुरगतै उतरहु ॥४॥ दूहा ॥ राजा सिंभु प्रसन करि ॥ परम इष्ट वर पाय ॥

प्रथिवि तगंगा सुप्रगट॥ कीनी सब समझाय॥१॥ माला हर जब मुगट मह॥ परि
पुप्रवाह पुमुं॥ नीत॥ मो ढिमन्द्रा रिसं तु छमन॥ बाना हु इ वि नित॥२॥ हे जन नीत त्र
तेज जज॥ सु कोसह न समरथ्य॥ पिकपिनाकी बिनु अवर॥ व्रह्म सब अप्रकिरथ्य॥३॥
॥ गंगा त्रहु पुरि गामनी॥ सिव सिर करि प्रवेस॥ मात दरो ठव रिदोन मुहि॥ सो स
ब फल जहि असेस॥४॥ गंग तरंग अनंग गति॥ अति आनर्चि अप्पाह॥ परे आन
सिव सीस परि॥ पसरे पुन्य प्रवाह॥५॥ इम तरहै कछु काज तुव॥ जरा जुट जल
जाल॥ पावत नहि न प्रवेस पंथ्य॥ समति आई अघसाल॥६॥ भागीरथ्यो वाच॥ दोहा॥
अनंग गरि संन्टपत इहै॥ बिनती करी विसेस॥ पात कहन पुनीत पंथ्य॥ पुंह वीहो
पुप्र नेस॥ सिवो वाच॥७॥ जिह कारन कीने जतन॥ जन पावन ले जाहु॥ अगौन पत
तुम अनुसरहु॥ पाबै बलै प्रवाहु॥८॥ कवि उवाच॥ कवित॥ जूट छोरि जन हेत॥ मुक
किये जरा मकै सुर॥ तिह मग गंग तरंग प्रगट॥ विथुरे पुंह मापर॥ भूप भागीरथ्य अग्र
लाग॥ पाबै जल पावन॥ जन्तु करत जहां जिग जाप॥ व्रहं॥

जो घन आवन। बिमल जल पार संसार भव। बिमल धार जानि उचरन। सब मुनि विचार रिष
राज सु। करि युकारि लगे उकहन। ४ तन बेज कक कति कोय। गंग करि अंजुलि आंनी। लेमिलीमु
ष मांझ। रहे अविसेष न पांनी। कर जोरि कार सुनाय। नृप बीनती कीनी। जांन जग्त उधार
हेत मुनि अग्या दीनी। निकसे तरंग गंगा तहिन। जंघा फारि यविन जल। जगन यो नाम जांन्हे
नवी। वेद विद तत बते विमल। ५ सुरसर ता लिय संग। राज चल्यो सु भगीरथ। परे हा म ज
ल परस। पां न उधरे जात पथ। ईह विधि उनि श्रवाह। करत पावन ष्रथ्वी थल। जहां स
गर सुत जरे। तहां वियुरे सु महा जल। कत धिन्य भगीरथ सुर कहत। कुल कलंक कढि ते
करे। इष्वाक वंस धुज अवतरे। अषल अधोगति उधरे। ७। इह प्रकार कपिलावतारि। सि
द्धे स सुरेसुर। दुगम तत्व उपदेस। तप्यो तप उग्र निरंतर। वरणाश्रम करि करि विभाग प
कत निरणय किन्लो। उतपतत्व नु अनुसरित। निगम मारग कहि दिन्लो। परलोक कहां नन
रहरि प्रभु। कतिजुग इपजि हि पावन करे। पारि ब्रह्म आदि पुरन पुरष। अषिल जग्त हित अ
वितरे।। ५।। इति श्री नाभा बारहठ नरहरिदासेन विरंचित।। कपिलावतार पंचा।। क
विरोवाच।। कवित।। ब्रम प्रजापति सुवन। अत्रि रिष्य हय यो महा तप। उरी अनिकावास जि
तु जहां करत जोग जप। अनिसुया त्रिय तास। महा पावन पतिव्रता। समता दया सुभाव। स
दा निवही सुर संता। जिह नियत अंग रष्या निमत। अंगराग सीतल दयो। उदित पत्र नाव आ
जन मल्लो। नाम मन कलुष न विदियो।। २।। छंद पधरी।। तप कस्यो अत्र रिष त्रिय समेत। तै ऐक वि
तप रिब्रह्म हेत। तप करत वीत जब कछु क काल। दीय दरस देव आतुर दयाल।। श्री नाराय
णोवाच।। जिह कारज अत्र तुम तप्यो ताप। आनंद सहत बर कहहु आय।। अत्रउवाच।।
अंजुलि परासार द्धि जि कह्यो ऐक। तव सह सदयाकरि उत्र देक।। श्री भगुवाच।। निश्चे
सु बोले हित निधांन। मैं ऐक और न ही मो समांन।। कविरोवाच।। वर पाय अत्र कहि विमल बा
न। अबिलंहै सत्तु मदहि अवितर क्यांन।। नारायणोवाच।। अंसावतारि तव उदर आय। सुत
है कु दत्तात्रय सुनाय। देवा च रिह्ना हि देवाधिदेव। अनत दिष्ट न ये माया अजेव। अनसुया
गरभ सुत रत्न आय। प्रगटे दत्तात्रय प्रविधपाय। आ जन्म उपजि वैराग्य अंग। न इजोग सि
द्ध वाचा अनंग। मन हाथ सिद्ध महिमा अमेव। जोगेस न ऐ माया अजेव।। दुहा।। सहंस्रार्जु
न राज तब। सेवा करी अथंक — — — समृद्धि तिहि। जोग भोग बलवंत। १। मुनि प्रसाद
प्रह्लाद नृप। साध भये सब सिद्ध। जिह विद्या अन्वेष की। पाई परम प्रसिद्ध। २।। कवित।। उ
रवि वायु आकास। आप कुतत्तु कससि दिनकर। अजगर सल भ कपोत। सिंधु मकरीक
मधु जकर। मृघ कुभग जपिंगला। कुरु र अरुभ बकुमारी। सरकत विषधर उरणनाभ
भंगी जयकारी। द्वादस कहन जिन गुर करे। लेष तत्व सब गुन जयो। संसार हेत नरहरि
सुकवि। दत्तात्रय वतार भयो।। ३।। इति श्री भागवते नाभा बारहठ नरहरिदासेन वि
रंचित दत्तात्रेय अवितार षष्टम।। ६।। श्री रिषभ देव अवितार लिषंते।। कविरो

वाच॥ छंद पद्धरी॥ मरुदेवि नयो नाभ नरराजा समृध॥ वहि प्रिया मेरु देवी प्रसिध॥ ता कूष
उतपन्न ऋषभेव॥ देवाधिदेव जे ऐरिषन देव॥ कुवरापन साधन करे काय॥ परिग्रह मक
पातेस्यिपाय॥ जद रहहि देव अविद्युत जीव॥ देषहि सो अबिलषाणी दईव॥ सब का
ल अरहंस धर्म साध॥ अनंतोगर देवरजित उपाध॥ उपदिष्टा वर्णाश्रम मधि हिंस॥ हित अन
वतायो परमहंस॥ १ कवित॥ अनादि सृष्टि ईक काल॥ नई सब ही महिमंडल॥ इहां नृत
सब जगत॥ नऐ जलवोर महाथल॥ तब हि रिषन आतमा॥ जोगमाया विस्तारिय॥ मेघमा
ल अजनान॥ नाम वर्ष कितनारिय॥ उतिय नि अनिय विनी अमित्त॥ सुद्ध चराचर जीव
सब॥ अभिषनाग नर उविरत॥ तीन लोक जयकार तब॥ छंद पद्धरी॥ मन चितनाभ रा
जा महीप॥ सुत रिषन देव धरि छत्र सीस॥ जुगराजक स्यो सुत उग्र जांन॥ निर्घोष वजे
मंगल निसांन॥ नृपनाभ समय ईद्र जुवतिसंग॥ उद्यान वसे वैराग अंग॥ तो रिषन देव
राज निवेष॥ आचार नीत क्रम विध अनेक॥ कछु काल रिषन वर्जित विकार॥ चित जाय
सुमन नयेव मधार॥ गुरदेव पाय अज्ञा सुमांन॥ उनि कस्यो ग्रहस्ताश्रम प्रमांन॥ विधि जुगत
कीन मंगल विवाह॥ निज प्रिया जयंती रिषन नाह॥ सब नात प्रिया प्रियमिल सुनाव॥ सुवने
स्पविलस अनेक नाव॥ उनि पुत्र सवजयंती अविधि पाय॥ सत पुत्र नये अपने सुनाय॥ पाटे
त नरथ नितम हि प्रबंध॥ चित नयो नाम तिहनर तषंध॥ निज आत्म अनुज नऐ बलि निधां
न॥ नवषंड नाम तिनके निदांन॥ जोगिंद्र नयेनव साधि जोग॥ सुवन्नमत नऐ तज राजभोग
क— हर अतिषपर बुधनाम॥ पिपलायन आहुत होत्र धांम॥ कहि द्रुमल च मस अष्टम अ
नूप॥ नवमे करनाजन मपान रूप॥ अरु ऊ तेव यासी पुत्र ओर॥ थित ह्रम कर्म जित घोर
घोर॥ इहनांति करे वसुधा विनाग॥ इवा अमत उपज्यो नृप वैराग॥ देति लकन स्थक हराज
दीन॥ कुलमोह छाड उगवन कीन॥ सम काय नेद नहा मोर सांक॥ मिल आतम परमा
त्मा मांऊ॥ कछु मुकि प्यासन दिढ धार्यो हि॥ तप सीत मेघ आपेन ताहि॥ अनि मोह अजा
ची अनायास॥ समदिष्ट सदा सुनसावकास॥ सुषदुष अप्याप्रित सहजसाह॥ बलवंतक
रहि विषियान बाध॥ नृमता हि उरषन हिसो चनेद॥ अति मलिन अंग आतम अषेद॥ छंद
भुजंगी प्रियात॥ सुगंधं विगंधन अस्तुत कारी॥ विनेदं न सत्रं न मित्रं विचारी॥ न हीमां न माया न
मदं न मोहा॥ न रंगं विरंगं न दइया न देहा॥ न सीतं न तापं न संगं कुसंगं॥ न त्यावं न निद्रा न
अंगं अनंगं॥ सुषं दुःष मसक्या॥ न रूसं न वासं॥ ग्रहे बाह्य आंने तते पंचग्रासं॥ समं विषमं
भूमि पंथं सहजं॥ विमत्तं दिगं वितरागं विलासं॥ विमोहं विदेहं नई ह्रि विकारं॥ अघांने रहै
वीतं अहारं॥ विलेपन श्रीषंड आगी क्विचारं॥ धरी पुष्प दाम लाग जै विवधारं॥ प्रकासि जुनि
द्या महामोद पावै॥ ह सैता लंदै आप [illegible] रेह सावै॥ अलेपं अत्रेपं रहै अप्रकासं निरा ६
बाध निर्लेप निर्ग्रं निरासं॥ अनंत अवधुत माया अतीथं॥ अमोहं अक्षोहं अद्रोहं अनीतं
अनामं अकामं अगामं अजेयं॥ अनाधार आकार महिमा अप्रमेयं॥ पत्र तत लीने न षेपान

पांनी ॥ बिचारं प्रचारं बिहारं बिमांनी ॥ कबित ॥ रिषभदेव अवितार नरेश्रम धृत असं
गी ॥ मोह मांन मद मारि ॥ अंग तें न ऐश्र नंगी ॥ वरजित विषय विकार ॥ सील संतोष सहज
सम ॥ दया रूप निज देह ॥ दीनबंधु लख्यात मदम परब्रह्म परम पावन ॥ डरष अविकारि
आनंदमय पूरन ष सिध नरहरि प्रभु ॥ जयंति जयंति रिषभ देस जय ॥ १ ॥ इति श्री ज्ञान प्र
तिनाषा बार हवंन रहरदा सेन विरचित रिषभावतार समापत ॥ ७ ॥ श्री ध्रुव
रदांन वतार लि॰ ॥ कबिरोवाच ॥ दूहा ॥ आतम निगमन तें अगम ॥ अषिल उदारि अपार
सुनऊ कहत नरहरि सुकवि ॥ ध्रुव वरदन अवितार ॥ १ ॥ सायंभु मनु ब्रमसुत ॥ नरेश पति सृष्ट
जाय ॥ तासु तन्य उतांनपद ॥ राषी उद मी बताय ॥ २ ॥ रानी प्रथम विवाहता ॥ नई सुनिति जि
स नाम ॥ तास गरभ संभवित ध्रुव ॥ भयो भक्त विश्राम ॥ ३ ॥ परम सुहाग वल लघु त्रिया ॥ रानी सु
रुचि स्वरूप ॥ तास लहे तें उत्तमो ॥ उतम कवर अनूप ॥ ४ ॥ कबित ॥ एक समें उतानपाद ॥ सिंघा
सन बैठे ॥ मुष आगे दोनू कुवार ॥ षेलत लघु जेठो ॥ रानी सुरुचि समीप ॥ नृपति अति प्रांन पिया
री ॥ भयो उवाय उतिम कुवार ॥ नर अंक तिंनारी ॥ ध्रुव निकट आय जब आप तें ॥ पिता गोद बै
ठत भयो ॥ करि कुटल द्रिष्ट तब वचन कहि ॥ तब हि सुरुचि निवारियो ॥ छंद पधरी ॥ पितु गोद
देषि उतम कुवारि ॥ तह करै उ ध्रुव बैठन विचारि ॥ तब निकट सिंहासन गयो बाल ॥ जननी स
पित उरी ज्वाल ॥ माईवाच ॥ करि चष कुटि कुटिल बोली करूर ॥ डरि नागिन सु वन ध्रुव रह कूद
र ॥ डर नाग वि उपज्यो उर दीन ॥ कत जोइ पछतें तें को उन कीन ॥ जो होत ध्रुव मम उदर जात ॥ बन
बैठत सिंघासन विष्यात ॥ जिह कूष भयो तब जन्म जांन ॥ पित परन वनां जत न उ दषांन ॥ ज
दपी कुल उतम बन जानि ॥ राजा पद जोग्य न जन मरात ॥ कबिरोवाच ॥ इह सुनत ध्रुव परजरयो अं
ग ॥ सो क्रोध मन कंप्यो स मंग ॥ निस्वास वदन जल धार नैन ॥ उपज्यो क्रोध न लउर अचैन ॥ इह
दसा श्रवन द्रग अंसु धार ॥ जननी पह आयो ध्रुव कुवार ॥ देष्यो सुनिती ध्रुव मन मलीन ॥ गह सुभ
जा ऐम सुत गोद लीन ॥ माता उवाच ॥ मत करऊ रुदन उषदोत मोहि ॥ सिरपर कऊ वज्र जिन
सहत तोहि ॥ कि दुष्ट कयो डरवचन कोय ॥ सो कहु उतरा ष उन गोय ॥ जे कहे सुरुचि डर
वाय जाल ॥ सब सेष सुनाए हृदिय साल ॥ दूहा ॥ माता तबै सुनिती ध्रुव ॥ सुत कू करत प्रबो
ध ॥ सुषदुष अपने करम फल ॥ कहा निरिष्य क क्रोध ॥ १ ॥ भजु जु मैं तैं नाम जो ॥ दीनानाथ दया
ल ॥ तातें ऐपरन वअसह ॥ सहीयत अंतर साल ॥ २ ॥ बिन वद लेउपकार हरि ॥ करि तदीन सो
देव ॥ करि है दुष निरमूल सो ॥ सुष निधांन प्रभु सेव ॥ ३ ॥ करि धीरज मन वचन कम ॥ निज स्वरू
प धरि ध्यांन ॥ आप नकाल अधीर है ॥ करत रुदन अग्यान ॥ ४ ॥ कबित ॥ सुर असुरादिक सि
ध ॥ जछ गंधर्फ महामुनि ॥ जपतप संयम नियम ॥ करत मब दांन ग्यांन गुनि ॥ अपनेक रिषि
हि सस त्र सीस कारत संकर हित ॥ नैर वादि घट नंग ॥ करत अवरो अंगी कृत ॥ जिहि श्रेयस
कल नवत्रूत जग ॥ जा चित दिष्ट प्रसाद जिय ॥ सो भजऊ प्रभु जाके सरन ॥ संतत चरन निवा
स क्रिय ॥ दूहा ॥ जातें परम निधांन पद ॥ पावत है संसार ॥ सो इप्रभु कारन करन ॥ अनति भज

कुअविकार १ ॥ छंद पधरी ॥ उतांनपाद तव पितु नरेस ॥ ईहै नजान तयो आवंन लेस
मनु सायंभू पितु पति महीप ॥ ष्यवीसष्टतुल पायो प्रदीप ॥ पर्पित महतेरो विधविनीत ॥ पद
लयो प्रजापति अति पुनीत ॥ तव जन्म न यो तिहूं उंच वंस ॥ पद लहौ उंच ष्यधीप्र संस ॥ कवि
रोवाच ॥ ध्रुव सुन्यो जव हि जननी प्रबोध ॥ करि निश्चय निकस्यौ विगत क्रोध ॥ ध्रुव चले वन
हित षहित विसेस मग मांझ मिल्यौ नारद रिषीस ॥ परिक्रम लध्रुव कीनो प्रनाम ॥ मुनि ध्रुव
कहा निज वंस नाम ॥ नारदोवाच ॥ सेवक सहाय विन तात मात ॥ क्यौं बालक्रक्के जो वन हि
जात ॥ ध्रुवोवाच ॥ ~~सेवक सहाय विन तात मात~~ हौ जात वन हित प्रकाज देव ॥ नृपति सुतन
कहिरो षनेव ॥ सव कहे मात लघु वचन सूल ॥ जो लगे हृदय विष बांन तूल ॥ नारदवाच
दित ॥ पंचवरष वय पेषि ध्रुव मूक लोत्तम सुत ॥ अलि प देह वय अलिप अतहि अमरष
कित उपजत ॥ समय न आत मद मन ॥ देहमोषन के अदिन ॥ लाफ जनन वितु लहन बालकी
ला सुष सेवन ॥ विध रूमुनि न तप स्या विषम ॥ अति दुरंत तिह अनुसरन ॥ वय बुद्धि सुबल गुरिम
म विना ॥ किह विधति ह चाहत करन १ ॥ इह देवी गति अगम्य देव रिष मुनियन दुस्तर ॥ अति सु
भिम अप्रमेय ॥ वचन मन कर्म अगोचर ॥ ब्रह्म रुद्र सनकादि ॥ सकल षोजत नहि पावत ॥ ईही
यन यत्न करत ॥ तदपी निर्धार न आवत ॥ जिह नियतनेत न्याषत निगम ॥ अविलोक्यो उन अ
नुसस्यो ॥ लग तहि जाहहि किहि दुनी तित ॥ वृथा बाल हठ हि परस्यो २ ॥ पंच अन जल पंच सीत पं
च मत पस्याकृत ॥ ग्रीषम वरिषा ससिर ॥ ऐक आसन आराधित ॥ को उ अधो मुष विउर्धपाय ॥ लंबित
ध्रुमासन ॥ क्षुधा पियासा रहित ॥ रहित केवल पवनासन ॥ इह दसा कलिप वीतत अनंत
तोउ न दरसन जोति निह ॥ अति दुस्तराधत ~~उप्पार तातै फि~~ पस्या अगम कहि साधक्क गोज
तन कीह ॥ दोहरा ॥ जोग जुगती अती कवन है ॥ तपसाधन उप्पार ॥ तातै फिर गतिजा कुधु
व ॥ नारद कहे विचार १ ॥ बाल अवस्था पोषत न ॥ बल विक्रम जव होय ॥ समय पाय उद्दिम
करत ॥ तब फल पावत कोय २ ॥ सुष दुष कर माधीन सव ॥ रे बालक अज्ञान ॥ सो विनु तु
कैनाट रे ॥ यह हेतु निगम निदांन ३ ॥ ध्रुवोवाच ॥ मेय दहठा न्यौ नेम करी ॥ क्यौ फिर जाउ ग्रेह
वचन तुम्हारो सीस परि ॥ मन न पक्यो संदेह ४ ॥ ग्यांनी तन पोषन करत ॥ आसा वढत विसाल
आन अवांन कवी वही ॥ कपट जात ले काल ५ ॥ छत्री येह अवतार मम ॥ स्वायंभू मनू वंस करि
परितं ग्पा कोन जै ॥ मुनि मुनि जगत प्रसंस ६ ॥ तुम जांनत छत्रिय धरम ॥ महा कठिन यौ हार व
चन नंग तै देवरिष ॥ कै उपहास संसार ७ ॥ मेरे कर मउद्योत तैं ॥ पायो दर सन आज ॥ तुम विज्ञ
नग जित विश्व हित ॥ विगत मोह रिषराज ८ ॥ निहित करम जु आचरै ॥ तिह वर जे संसार मोहि
वरिजत सुनक तकरत ॥ यह न नीत को हार ९ ॥ जब देष्यो बालक सढ्ढ ॥ उर अपंन विस्वास
नारद परिमय घ्यहै ॥ साधु साधु कहि तास १० ॥ छंद पधरी ॥ सुष सन न ऐ नारद रिषीस दिढ हो ७
कुन करु दीनी असीस ॥ श्री वासुदेव मंत्रोपदेस ॥ रिषक र्यो ध्रुव हि करुणा विसेस ॥ है मधुवन पा
वन जमन कूल ॥ तहां वस्त करुण आनंद मूल ॥ ध्रुव कर जाधीन तुम जहां जाय ॥ निज रूप स्याम

दीनौवताय ॥ कबित ॥ ॐनमोभगवतीवासुदेवायविसंभर द्वादसअछरिमंत्र कह्योउपदेसमु
ककरिनारदअंतरध्यांन भएध्रुवआयोमधुबन तरणसुताकेतीर देषबैठोतपसाधन तरु
लताउहपगुंजितमधुप नाचितमतमयुरजेहां धरिनिजस्वरूपउरिध्यांनयुत कीनोजोग
रंगतहां १ प्रथमबेवऐकाग्रचित इकमासफलासन उनिगादेरहिउत्रयपाय पछवकत
नछिन त्रतियमासजलपांन रहेयकपायनिरंतर चौथेपवनाहार चरनपछवटेकेधर
पंचमेमासरोउतजपवन पगअंगुस्टधारियो धसिगइधरनइहओरजब उतियउर
उच्चारियो २ सहननारिवसुमती होतअधउर्धमन कुतुलतिहनिहारिलोकेस भयेभ
यसंकपविकुल सुरसम्राजसुरिराज गऐहरिसरनततछिन न्रूमचालत्रवभूत
हालसबकह्योनिवेदन ब्रह्मंडफोलिफिगमिगनगिर पविनरुधाविथ्याकागविन श्र
द्रुतिविरतउलिटतअविन कहिनजातिकारनकवन ३ ॥ दुहा ॥ देषदसायहसुर
नकी हसिबोलेविस्वेस मैपायोभोहेतुसब भयनकरोलोकेस १ ॥ श्रीभगवानो
वाच ॥ छंद ॥ इकराजउत्तनपकरतबाल सहिनांहिनसक्योतुमचाल विधव
तविध्यांनतिहसकलकीन मनवाचकर्मनयोमोहिलीन तजिनीतनावथिरकरकछे
त देनांहिअवरिकोउनीतहेत सबकरिहूंताकेअरथसिद्ध तपसाफलदेहूंजगप्र
सिध निजलोकजाहुतुमलोकनाथ सबलोककरीरिक्ष्यासनाथ करिहरसववंद
नकेसकाज सुखथानसिद्धारेसुरसमाज श्रीनारायणकरूणनिवास परिभ्रमपधा
रेध्रुवहिपास कमलायतलोचनकमलपान जगदीसकरीसुधदासजांन ध्रुवदेहद
मितदेष्योसधीर परीभ्रमसहितनहीदासपीर मनलगनमगनभयोब्रह्ममांझि सिसु
समरूपरतनहीनोरसांझ इहदसाभयोबालकविदेह समभावसहितहरिसंस
नेह हेदीपकआत्माऐकहीस ईहभांतमिलेमनदासईस गरुडाध्रुजगटेअप्र
ध्यांन ध्रुवध्यांनमगननहीपरतजांन ध्रुवसुपहरिकेस्योसंषसुध मतिजोगसुनिजभो
प्रबुध प्रभुपरेदिष्टजबहुजाचार बनमालमुकटजुतिहरिमुरार वउस्यांमपीत
अंबरीदीसाल मकराकतकुंडलतुलछिमाल आनंदमगनध्रुवहरसपाय विधयुग
करीकरुनावनाय ॥ अथध्रुवअस्तुत ॥ कबित ॥ ओउंकारअपारि अषिलआधारी
अनामय आदिमध्यअविसांन असमसमआतमअव्यय एकअनेकअनंत अजित
अवधूतअनोपम अनिलअनलआकास अंबुअविनीमयआतम उतिपतिनासका
रुनअतुल ईसअघोगतिउधरन अधमधउर्धव्यापितअमित तुमअनंतअसरनस
रन १ परमधांमपरियोत परमआनंदपरिमेस्वर परहितपरकृतपरम उजपरिब्रह्म
जाइपपरि परआतमपरितत्व परमपरप्रीतपरोदय परमारथपरश्रेय पमीरिधव
कृतपराश्रय पारनिधसिद्धपरिचिह्निपन परमपुरषपरिधांमपति परध्यांनज्ञांनपरि
हितप्रिय [illegible]मपतितकपरमगति २ निराकारनिरलेप निगमहितनिकटनिरंतर

निरविकारनिरधार॥ नितनवधावसनरहरि॥ निरालंबनिरगुननिरीह॥ निरविघ्ननिरं
जन॥ निरवगनिहचलूनिधांन॥ निहकलनारायन॥ निरबीधनिराकृतनाथनिज॥ निगमहे
तनिरकासहित॥ निग्रहननागनगउधरन॥ नमसकारनवरूपनित॥ ३॥ जईतजईतजग
दीस॥ जगतकारनजोगेस्वर॥ जईततरनजगसरन॥ जकृतातजगउछरन॥ जगंना
थजगपाल॥ जकृमंफनजोगासन॥ जगरछकजगरूप॥ जगतकरताजुगतासन
जगबंधजगतपतिजगतनिध॥ जयोजगतकारनकरन॥ जगपावनजगनिधांनज
स॥ सदासुकविनरहरिसरन॥ ४॥ कविरोवाच॥ दुहा॥ श्रीभगवंतध्रुवके॥ बोले
दीनदयाल॥ जिहइछ्यातपसाधीयो॥ सोफलमागकुबाल॥ कैसनाथतबध्रुवकहै
काटेअकमकलेस॥ मनईछ्याप्ूरनभई॥ दीनबंधुदेवेस॥ २॥ सुरसिधनउरलभद
रस॥ सोमैदेष्योआज॥ सकलमनोरथसिधमम॥ भएसुमंगलकाज॥ ३॥ फेरकहो
करुनाउदिध॥ दीनबंधुजगदीस॥ लीजेवंछितराजसुष॥ आषंडलअवनीस॥ ४॥ ध्रुवो
वाच॥ राजश्रीकेबंधतै॥ छुटतहैहरिनाम॥ सोहरिदरसनपायकै॥ बंधनपरूंनस्वां
म॥ ५॥ राजसश्रीयांविलासमै॥ सुष्रहैनहिचेत॥ देवदेवपतिराजदे॥ सबअनर्थके
हेत॥ ६॥ श्रीभगवानोवाच॥ सबदिनरहिहैसुधमति॥ मनगतिमिलहैमोहि॥ राजकर
तकुराजके॥ बंधनपरैनतोहि॥ ७॥ दिव्यवरषनकवोकतुम॥ सहंसकरकुगेराजपा
वेलहिहौउरधगति॥ सबसरिहैमनकाज॥ ८॥ होतदसाजोमुनिनकी॥ तपबलजनऐ
विदेह॥ कैहैदसासुराजमै॥ तवधुवनिसंदेह॥ ९॥ कविरोवाच॥ ध्रुवकेसबसाधनफ
ले॥ भयोदरसभगवांन॥ मनवंछितवरदांनदे॥ हरिभऐअंतरधांन॥ १०॥ ध्रुवचलेजब
येहकूं॥ वीचपंथमहिजात॥ आंनिमिलीतहांराजश्री॥ मनवंछितसबवात॥ ११॥ राजथां
नउतमकुवर॥ गेआवेटकहेत॥ तहांजछसनसोजुधभो॥ आपमरयोरिनषेत॥ १२॥ रां
नीसुरिचिकुवारिउष॥ कीनोअग्निप्रवेस॥ तबराजाउतानपद॥ भयोवैराग्यविसेस॥
१३॥ ध्रुवआयोयाहीसमै॥ राजामिल्योप्रहास॥ तिलकबहुउतदियो॥ आपगयोवन
वास॥ १४॥ वरषअवारैसहंस्रउव॥ ध्रुवकीनोजुवराज॥ भुक्तेकोटिकईदसम॥ सब
सुषसाजसमाज॥ १५॥ अविधपायनिरबांनपद॥ पायोप्रगटनरेस॥ सबलोकनकेसी
सपरी॥ प्रथ्वीउप्रवेस॥ १६॥ सोधुवदेषकुविश्वसब॥ बडकलिपंतरिवीत॥ करिजोरे
दरसनकरत॥ नमसकारजगनीत॥ १७॥ कवित॥ सहंसवरषछतीस॥ राजनिरकंटकक
रियो॥ जाकेनीतप्रभाव॥ धरमचकुपदअनुसरीयो॥ राजजोगप्रसिद्धियो॥ करूअनुरा
गनकीनो॥ भ्रूजलजलसंजोइप॥ चरनपंकजचितदिनो॥ सुरगनिसदामनरिहहिसुकवि
जयजयजयजगदीसजय॥ ध्रुववरदनामजगउधरन॥ ईहकारनअवितारिजय॥ इ
तिश्रीभागवतेबारहनरहरदासेनविरंचिता॥ ध्रुववरदनामोवतारअष्टमसंपूर्णं ५
॥ प्रथूअवितारलि॥ दुहा॥ अथपारंभअनंतप्रभु॥ कहिहूंप्रथूअवितार॥ दीनदयो

रषयारिषल सुषदायक संसार १ स्वायंभू मनुवंस मद्ध भयो अंग अविनीस
जाके तेज प्रभाव जग सासन मानत सीस २ पटरानी नृप अंग कै भइ सुनिथा
नाम पतिव्रताभाव सिंजुत सकल गुनिन को धाम ३ वाके उदर दिज जप्य जो अघ
मय वेणु कुवार सात सेवत इरविसन नीत रहित सविकार ४ ऐक समै तिह तात सं मि
थ्या भाषन कीन जांन अधरमी पुत्र कौं नृप मन भयो मलीन ५ बत्रीय कुल अवितार ले
मिथ्यावादी होय वेद पुरांनन मै कह्यो नरक विलासी सोय ६ पुत्र हि देष्यो दुष्टम
ति राजा कह्यो रिसाय जा पापी या देस तै मो हि न वदन दिषाय ७ वेणु निकास्यो
देस तै कर्यो अनादर राज मुद्दले निकस्यो तिह समै सबै तज्यो सुषकाज ८ गयो वे
णु करूं वन गहन तहां तप साधन कीन प्यास छुधा निद्रा रहित भयो ध्यान लवलीन ९
राजा अंग हि काल बहु राज करत गऐ वीत उपज्यो मन वैराग तब छुटी राज सुप्रीत १०
ऐक समै यगत अर्धनिस निकस्यो राजा अंग किह उन जांन्यो कित गयो सबै ग्रेह तज संग
११ सेवग मित्री सुभट जन षोजत रहे दिगंत कहूं न पायो सो धनृप भए लीन मन संत १२
भई अराजिक भूमति हि भय त्रास ति न वभूत ग्रसे सोक तै वसत ग्रह सबै विगत सुषसं
त १३ लोक दसा अविलोक कै रानी परम कृपाल भृगु हि आद दे अवर रिष बोल लहे
तत काल १४ कीनी इच्छा जोरि करि वंदन वारमवार देस अराजक लोक दुष कहे सबै
ओदार १५ सचिव वबृध सामंत सुभट उतम अंतज लोक रिद्धसनक सोऐ दुष्हि सब पुनिचि
त बहु वियोग १६ ईम सब हु नके लेहु मत करहु मंत्र निरधार पांवे षोज हु वेणु को च
हु दिस पठवहु चार १७ सबकौ समते सो मिल्यो कीजै काज विसेस रांनी सो पै होत दिढ यहै
नीत उपदेस १८ पिता निकास्यो दुष्ट गिन इह जानत सब कोय पापी राजा कै भए महा अनि
ष्ट होय १९ अंग वंस मै अवरि कोउ छत्री रह्यो न आई सील सुभाव जु वेणु कौ तुम हि जान
त ताहि २० पृथ्वी दोषन देषही अनि हित गिनै न कोय भौ आतुर यो ही कहै जो भवतव्य
सो होय २१ रषी जहां हा भूत तव लोकन करी पुकार को उव साध असाध हो कीजै नृप अ
धार २२ सब मिल कीनौ मंत्र यह रिषसै जोरे हाथ ले आव हु नृप वेणु कौ कीजै नाम सना
थ २३ तिह वन साधत वेणु तप भृगु जहां गये रिषीस उन वंदन कीने विविध ईन सुमद
ई असीस २४ वेण हु किय उपदेस रिष ले आये गहि बांहि मात सुनि ती सूं मिल्यो यह ग्र
ह भये उछाह २५ वेद मंत्र जुति वेणु कह भृगु कीनौ अविषेक पर जागत नृपता प्रगट
अविन वत्र तप एक २६ **छंद पधरी** पायो सपाट पुर्तनि पै देस इक बत्र तप्यो अविनी नरे
स सेन्या समृथ्य चतुरंग साज वर वीर सुभट सो साचिव वाज अनुसरत उय सासन अषे
म दिजीये तिन दी अपिराध भूंम लूटाक चोर लंपट कुलोक जहां तहां विलांन सत्र वस
सोक विष वदन गंध मुष क विलात इह भांति गऐ षय पल अराति रिष पाय निकंटक क
रत राज संग दुष्ट प्रत्ति सिवक समाज मद अंध भयो अंकुस अमान ईस्वति मांन आप

हिअजांन। दुहा॥ सुरापांनपलभोजनह। वेस्यारतविलास। आषेटकदुर्व्रतक्रमपरि
तीयसेवपहास। छंदपधरी॥ सवकरतसमजर विप्रसेव। जमांनतनाहीगरतदेव॥ अ
तिउग्रतेजतिहअहंकारी। विपरीत मर्मवाच्यो विकारि॥ छलमर्मभ्चारत क्वनछेद॥ नव
नाहिसाधुअसाधुभेद॥ वितवतकरहवअनाचार॥ अविवेकअमिथ्यामुषउचार॥ निक
सेंजनगरबाहिरनरेस॥ सुनिसबहोतहाहंतदेस॥ निर्घोषपटहकतधरमनास॥ सिरज
तनृपाधनितनवसहास॥ मषहोमसिटे पूजामहंत॥ सुरविप्रसुरनी सनमांनसंत॥ बलिय
नलहोमतपनएबाध॥ सबनृमकर्मछगटेअसाध॥ दुहा॥ जेकृतनिदतनृपतिकहतेस
बसेवतराज॥ तातेहाहानूतजन॥ वाढतसोकसमाज॥ २॥ छंदपधरी॥ नितनेमअम्महोती
कजात॥ विपरीत्पकरमतिनिसुनवात॥ सुजगएतबहिमिलऋगुनिकेत॥ अविनीसुकहे
अनर्थहेत॥ नगुआदितबेसबरिषसमाज॥ जुतसोकनएगतद्वारराज॥ प्रतिहारकहे
नृपसऩ्मांन॥ थितराजद्वारिमुनीमुषमलान॥ तबलएबोलिनीतररिषीस॥ उजनिकट
आयदीनीआसीस॥ राजोवाच॥ नृपकह्योविप्रअंतरकुचेत॥ तुजराजकहिकआगम
नहेत॥ रिषउवाच॥ दुहा॥ वेदवणितजुनृपधरम॥ सोयेसुनकुनरेस॥ कहततिहारेश्रे
यलग॥ एरिषदितउपदेस॥ १॥ सुरमुषकहियतअग्नसो॥ इहजांनतसबकोय॥ जामेहव
नजुहोतहैसुरिनपकुचेसोय॥ २॥ हयमेघादिकजिगपसो॥ होतितुहमिपरराज॥ तबसु
रसबसंतुष्टह्वैकरतराजहितकाज॥ ३॥ वरणाचारनृपदंडनो॥ तजततनहिंनआचार॥
तिनकेपुनदसासफल॥ नृपपावततनिरधार॥ ४॥ वाढतउनिषमावतेकोसदेसबल
कित्ति॥ राजअकरकनागवत॥ नृप पूरणतानित॥ ५॥ यायुरवलकुलउग्रता॥ सु
षसंपतिजयसुध॥ ऐसबपावतधमनैसदारहितसचितसुध॥ ६॥ होतसुवद्धय
रमते ब्रह्मा विष्णमहेस॥ तातेमनवचकर्मकर॥ धरमनतजितनरेस॥ ७॥ जपतप
तीरथजोगमष॥ विमलविष्णुविसवास॥ इनकांकियेनिषेदते॥ होतिनृपतिकोनास॥
८॥ राजाउबोरिषनसो॥ कहीयेकरीनिरधार॥ किहनिमंततुममषकर्त॥ सहतकलेसअ
पार॥ ९॥ विष्णुउमरुद्रादीसुर॥ तिनहितकीजतज्याग॥ होतसंतुष्टहिवासना॥ गहिसंतो
षनिजनाग॥ १०॥ कवित॥ ससिनिवासआकास॥ च्रकुटिवदिपरविरजय॥ नास
देवअस्वनिकुवार॥ स्रुतिअनलसुसजिय॥ बाकुईदजलवरण॥ स्वादरसनाअनुर
तिय॥ ईडीउमनिवास॥ प्राणसबअंगपवरतिय॥ अगपाअनंतसबवांअमर॥ वस्तजनमते
अंतवय॥ मुनिजानतवेदवणिततुम॥ महीपालवउदेवमय॥ १॥ दुहा॥ तुमजांनतनरनाथ
को॥ अंगअंगसुरवास॥ तातेराजादेवमय॥ कहतपुरांनप्रकास॥ २॥ जिगपकरतजोसुरन
को॥ मोहिसमरपेश्रांन॥ लेजारितहोअन्नमहि॥ कोनपरीयहवान॥ ३॥ न्यो बीजनअंकुरै
जस्योनपावेकोय॥ नसमनएतेकाजकिय॥ हमकुवरतावकुसोय॥ ४॥ मुनीउवाच॥ फे
रकह्योमुनीवेणसो॥ अंतरउपजीज्वाल॥ अपनोपजगतिधरम॥ नहिबाकृतनृपाल
५॥ आगेजेराजानए॥ अबलोसुनकुनरेस॥ तिनजोअंगीकृतकह्यो॥ सोकरमविसे

स६॥ अरथकामनाधरमकरि॥ साधतमुक्तविसेस॥ चारपदारथइनहिलगि॥ ततप
रिरहतनरेस॥७॥ राजावाच॥ रहरेअपढसुतमरिष॥ मानतनाहिनिषेध॥ फेरिफेरिसी
षकहत॥ आतुननऐसमेध॥८॥ अइप्रानंगनरिंदकेहै॥ असत्रबधपाप॥ देषहोनीत
विचारकरि॥ पिंडतहोतुनिआप॥९॥ कविरोवाच॥ राजाकेताहीसमय॥ आनवध्यौउर
क्रोध॥ मारिनिकारिऊवारितै॥ हमकहकरितप्रबोध॥१०॥ वेणुवाच॥ वैणुकह्यौपतिहि
रस्त॥ यापैकाटकुघेर॥ ईहविधवारलंघाइये॥ मुहिनदिषावकुफेर॥११॥ कह्यौअना
दरउजनकौ॥ व्रतिप्रनअज्ञापाय॥ कीनोवेविप्रहारतहां॥ मुनिवरउवेरिसाय॥१२॥ क
विरोवाच॥ तबेरिहोस्वरिकोपजुत॥ लागेकरनविचार॥ राजाहिदीनैआपके॥ तपमेहोत
विकार॥१३॥ याकहदीनौराजहम॥ याहिप्रबोधनहोत॥ निष्टकरमयहआवरै॥ नयेप्रनि
ष्टउद्योत॥१४॥ विप्रसधोहीनष्टिमत॥ सुरिनिंदकसविकार॥ ताकेमारेदोषनह॥ यहैजुवे
दविचार॥१५॥ हमविरोधकपापनृप॥ आपनयोभगवंत॥ आपदयोव्रगुलोकयो॥ इहछि
नयाकोअंग॥१६॥ सिंघासनतेनृपगिरयौ॥ प्रांनगयेततजीदेह॥ करैसपावैकर्मफल॥ निश्र
यनिसंदेह॥१७॥ नगुमुनीनीकसेआपदे॥ वैंणुमरयौसविकार॥ ताहीछिनरनिवासमह
कैरह्योहाहाकार॥१८॥ मातासुनिथावेणुकीकरिकरिकहैविलाप॥ प्रांणीपावतकर्मफ
ल॥ होतनमिथ्याआप॥१९॥ मृतुकलेवरिलेधरयौ॥ तेलघोनिकामांहि॥ रांनीविद्याजोमपते
क॥ मगतिविगरयौनाहि॥२०॥ छंदपधरी॥ नृपमरयौअराजकभयोदेस॥ अकिनीअनथप्रगटे
असेस॥ परिवियातक्तिविताप्रहार॥ जनहतकपासधारकजुवार॥ विस्वासघातिवेसा
विहार॥ परिनिंदकतसकरपापचार॥ निसतित्तनेदहिनपरितआर॥ गोहरनकरतह
रिदितजारि॥ वांनिजीकृषीपसुपाललोक॥ सुनिदेबिविरतनऐनयससोक॥ सबन
येदीनसिधंतसाध॥ आचारत्रउमगेअसाध॥ कुविरहितन्नृपवनिवढविसाल॥ निरक
रनकरैबकुपालनाल॥ अनिवृष्टिहोतिजहतहांअसेष॥ बनिनईनईसरितावितेष॥ हा
हाउकारिसंसारिहोय॥ करितारिविनारछिकनकोय॥ कहुकालदसाइह॥ नौवितीत
नयप्रस्तवर्णयारैंसनीत॥ ईकसमयलोकसबजुरेआंन॥ मिलमंत्रकरयौमनत्रासमां
न॥ नद्युसर्नचलउककरिहासनाव॥ सुनउषितसाधुकरिहैसहाय॥ सरस्वतीतीरबि
तउमषेत॥ चुगुकरतजिइपतहांमुनिसमेत॥ जननऐदीनरिषअयजाय॥ बंदनप्रनां
मकीनेवनाय॥ मारितउसासरोवितउषार॥ कहिहाहिहाहिकिनीउकार॥ प्रजाउव
वा॥ नयसोकउदधबुडतिविहाल॥ उषनयोसरनआयेदयाल॥ उहा॥ नहदसाजोदे
सकी॥ विनराजारिषराज॥ प्रांनविनांजोदेहयै॥ कोउवसतनहकाज॥१॥ रह्योनराजा
अंगको॥ संततछत्रीकोय॥ अबवरवर्नकहराजकौ॥ हमपैतिलकनहोय॥२॥ नृगुरोव
वा॥ वेणुपतनभोकर्मवस॥ करियेकवनउपाय॥ उत्तनराजाकेनयो॥ दयोसरीरज
राय॥३॥ लाकवाच॥ लेराष्योहैतेलमह॥ दयौनअग्नसरीर॥ परमसाधपक्षारिये

हरियेजनकीपीर ॥४॥ कविरोवाच ॥ लोकविलोकैदुषतजब ॥ मुनिवरत्नऐदयाल ॥
कष्टनिवारनविस्वको ॥ उठिआयेतिहकाल ॥५॥ रांणीवाच ॥ न्रिपुपवधारेराजग्रह
रांणीकरेप्रनाम ॥ मुनीवरतुमकृतैरहै ॥ इहबूझतधनधाम ॥६॥ आपअनुग्रहजोभयतु
मईदेवतियधकार ॥ दंडदयाकरिकरतहै ॥ यहैवेदब्योहार ॥७॥ कविरोवाच ॥ न्रिपुरां
नीकेवचनिसुनि ॥ समकलोककीत्रास ॥ जहांकलेवरिवेणुको ॥ आएतहांसहास ॥८॥
छंदपधरी ॥ मुनवसोधजथाविधवेदजान ॥ आसनदर्भादिकरचेआन ॥ वउमतकहवैं
तापरिविसेष ॥ उच्चारिमंत्रकीनोअसेष ॥ दुहा ॥ जंघामथतजुवेणुकी ॥ उपज्योबाहुक
राज ॥ तिहतेवंसनिषादभौ ॥ करतजथाकुलकाज ॥१॥ करेजुअंकमवेणकम ॥ अघ
मयतिनकोअंस ॥ पहिलेहीबाहुक भरीष ॥ प्रगटोपापवंस ॥२॥ छंद ॥ रिषव
र्यममथतजंघानरेस ॥ प्रगटोनिषादअतिकृष्णवेस ॥ लघुस्थूलअंगमस्तकलिलाट
सचकपिलअंगकारेकुघाट ॥ वेगंधदेहचषअरुनवांन ॥ वालीकराजककर्कसविधां
न ॥ परहिंसकपरवित्तापहारि ॥ परिध्रोहप्राणघातकप्रकार ॥ विपरीतकरमगतध
र्मबाध ॥ इहरूपउपजिअंतजअसाध ॥ कंदरागुढपरबतप्रकास ॥ रिषदयोतिनिहिवन
गहनवास ॥ प्रथमहिअक्रमअंसजिहप्रसाद ॥ न्रिपपापअंसउपजेनिषाद ॥ पितमेछ
कालजिहअधमषांनि ॥ जगभएतिनहितेंनीचजाति ॥ अघनिकसवेणुभोसुद्धअंग ॥
अकायदेहसोउदकगंग ॥ कवित ॥ दछिनभुजामथांन ॥ करेजबवेणकलेवर ॥ अ
तिउदारिअंसावतारि ॥ प्रथुभयेउरषपर ॥ वामबाहुकेमथत ॥ अरिविप्रगटीविर्दअ
नुत ॥ पतिव्रताजलछीप्रतिष्ठ ॥ लछिनगुनसंजुति ॥ अंगअंगवदनदेषेअसम ॥ कियेवि
चारनिस्चैकरयो ॥ नववनूतसकलमानकुअनय ॥ अषिलइसप्रभुअवितरयो ॥ छंद ॥
चक्रवरनपद्मरेषाप्रकास ॥ करसंषचक्रअरुगदातास ॥ प्रतिपालजोकरिषवरप्रसं
स ॥ विस्वेस्वरप्रगटेअंगवंस ॥ निस्चयजुतदरसनकरकुनेम ॥ परिभ्रमनजकुएसहि
तप्रेम ॥ नरदेहद्वयप्ररनप्रमान ॥ महंमायादेवीइहैमांन ॥ प्रथुअरविअंगभुनिप्रतिब
लबिकीनेवंदनविष्णुलछि ॥ यहसमैवजैदुधिबअकास ॥ उनिनईउहपवर्षाप्रकास
प्रस्ताद्यदेवरिषवितरआय ॥ गंध्रबज्ञानकीनोसुनाय ॥ सुरकिंमानाटककरिप्रसि
द्ध ॥ जससहककहतचारनसुसिद्ध ॥ ब्रह्मादिकवंदनकृतिविसेष ॥ दाहिनेहस्ततिह
गदादेष ॥ भुजवामसंषचक्रादिनाव ॥ पद्माकृतिरेषामध्यपाव ॥ सुरनिस्चयकीनो
नामसीस ॥ अवतारिनयोत्रयलोकईस ॥ सुरिमुनिनकरयोराजाभिषेक ॥ विधतिलक
छत्रचामरविवेक ॥ सुरआनआनअपनेसुनाय ॥ परिभ्रमनेटकतवंदपाय ॥ सिंघा
सनहिममयसुहृणसाज ॥ वैश्रवणदऐविधविधविराज ॥ जलपूरणताग्रहछत्रजा
ल ॥ विधजुक्तवरणदीनेविसाल ॥ कीरतमयमालाधरमदेव ॥ विजनादिकचामर १०
दियेससेव ॥ कृतदंडनीतमयधरमकाज ॥ रत्नमयमुकटदीयदेवराज ॥ सरस्व

तीमालमुक्तासुरेस । दियब्रमकवचब्रमाविसेस । दियचक्रसुदर्सनचक्रपांन । अय
यश्रीलिछमीदईआन । दीयरुद्रषडगदसचंद्रहास । अंबकाषडगसतसिसप्रका
स । तारस्थविस्वकर्मासतेज । ससिसुधाषीरसागरसुसेज । दियअनंतधनुषअजग
वअनूप । रिबदऐकिरणमयबांणरूप । पदमानजोगमयमनप्रकास । सुनसुमनव
रूपप्रकास । जलचरनिचरमअनिनेदजांन । अतिगंधवनासहितदईआन । अनदस
गमनआकासचार । रथमागसरतदधिदियविहार । मनिदइकौसिकविषमुषनमां
न । अतिछेदचक्ररथगिरतआंन । कांमनासफलताकामगाय । सबसिधकलपतरु
मनिसमाय । दइवतदऐदेवनप्रदीप । मुनिदऐमंत्रआसिषमहीप । इसादइऐसुनसब
निआंन । मनवाचक्रमप्रथुलएमांन । सुसथांनगऐब्रह्मादिदेव । प्रथुकरैराजअवनी
अजेव । समधरमनीतजुतविधविसेस । ईहनांततपतआबंकलेस । दिनएककषीमि
लराजद्वार । सबकहेनृपदिठबीप्रकार । पितरहीअब । जिककबुककाल । बनगहन
वृछिवाढेविसाल । रजउष्टवातवरहोतरेन । सबनऐषेत्रपलमयसुषेन । जलचर
षनिरंतरजलदजाल । पितनऐनयानषनालषाल । यहहेतरहतअविनीअजोत
हमनऐनिरुदमकबुनहोत । प्रथुराजसुनीजबजनउकार । आरंभकरेलीलाउ
दार । गिरकंदरनिरकरवनगहीर । नदविरदनिरंतरवहतनी । दिगविजयकाज
कियप्रभुप्रयांन । समनूमकरीथितथांनथांन । कवित । उगामप्रदेसथलदिर्घ
नऐइचरजअविनीवति । विमलषालसरितविसाल । तरुलमइदित । धनुषअग्रप
र्वतदहाय । नदनरेनिरंतर । थलविथ्यारितिरथांन । पूरिकीयेअविनसुपद्धर । स
मकरेषेतवनिकाटिसब । उपजअन्निउषधअतुल । पसुपालरूषिनिजवरतप
र । सुगमपथाउदिमसफल । क्रतविनागवसुमतिय । षेरुबकुदेससुपतन
नगरयामअनेक । विसदवाटिकासुषदवनआषेटउद्यांन । थांनकीनेगिरकंद
र । जलनिधांनसरवरसरूप । वापीसोनावर । वनधातुरतनआकरविमल
वनअपारविवहारविध । संसारयथाअनीलाषसुष । सेवतयहपदअष्टसिध
२ जिहजिहथलमिलतुहजात । उतपातउपकिय । जिहपबाधसंताय । सिंधस
नारीबीनलीय । दीनविद्यादुजिगउ । बालहित्याजिहकिन्निय । आविननारिआ
कंप । नइतिहओततन्निय । हयमेधआदिदेमषहवन । नऐउन्नमयअषिलनु
व । षघुनृपतिसोधजबसुधकिए । प्रथीनामतप्रगटकुव । र दैप्रसमतप्रथी । क
त्योप्रथुसुंदरहकारन । तुमअनंतअवितारी । अषिलभुवनारिउतारन । धेमरूप
होधरू । प्रगटनवईच्छाहरन । करकुवछकोउएक । सबेकुपकाजसंहरन ॥
करिहोविचारनिरधारिकरि । जगतहेतदोहारजब । संसारसुखधसंनारसिध । अ
वतरतनमयदमसब । ४ नयैबकसुरराज । प्रथीमिलनधेनदयापरा । दुह

नहार सबदेव तहां रिषजषतपेसुर ॥ पितर सिध गंधरब ॥ जोग साधक उजदांनव
राकस असुर पिसाच ॥ नाग नवभूत सुमांनव ॥ सतउरषस्नरजे सनर ॥ वरणन्या
रनिज ब्रतकर ॥ ऐद उहरत्तयनौ अविन ॥ उरषसिध नद्यो गपर ॥ ५ ॥ दुहा ॥ जथाका
मना सिध सुष ॥ सब पाऐ संसार ॥ प्रथु प्रसादप्रथ्वी उही ॥ उनप्रकार अपार ॥ १ ॥ सुनत
टशावीसरस्वती ॥ हिमावरत सुषेत ॥ प्रथु प्रतुराज सथांन तिह ॥ नऐउ धर्म समेत ॥ २
दरुअसाधन साध सुष ॥ कीजेज थाप्रकार ॥ वेदप्रणित जु राजविध ॥ प्रथ्वी कीन प्रचा
र ॥ ३ ॥ होति अविध कालातिक्रम ॥ जान्यो प्रथ्थू नरेस ॥ सुत्क्यो पूरन राजपद ॥ अरु देवति
असेस ॥ ४ ॥ नृप नपज्यो वैराग मन ॥ नौ बनवास विचार ॥ सुत्रहि दीनो तिलक तब ॥ अप
ने हाथ उदार ॥ ५ ॥ नयो नृपति बुधा अबतहां ॥ राजश्रीपद पाय ॥ रानअरिची समेत प्रथु
वास करयौ वनआय ॥ ६ ॥ करीतपस्या उग्र तहां ॥ दंपति संजुत नेम ॥ ईंद्रियन यह देहद
म ॥ पारि ब्रह्मस्नप्रेम ॥ ७ ॥ राजाजोग प्रभा संजुत ॥ नऐजोति मय लीन ॥ रांनी अग्नि प्रवेस क
रि ॥ धर्म पतिब्रति कीन ॥ ८ ॥ आगि मजो इसा निस करि ॥ कीने षांन पयांन ॥ प्रथू परिलोक
प्रवेस नौ ॥ रानी अरुची समांन ॥ ९ ॥ वजेगिमन निसांन तब ॥ सुमन व्रषी आकास ॥ आ
नंदे ब्रह्मादि सुर ॥ नृप वैकुंठ निवास ॥ १० ॥ कवित ॥ देवनावन्रपनाव ॥ दाव सत्रन सुद
षीय ॥ प्रजु प्रनाविउ वित्त ॥ वयर विसक्रोध विसषीय ॥ दयादंन अनुसार ॥ देवीदान
प्रमान कीय ॥ इह कारन अंसावतारि ॥ नुवनारि विनासीय ॥ जिह आदि नमध्यन
अंतकहु ॥ कविन रहरियो वेदकह ॥ प्रथू नयो देव त्रयलोकिपति ॥ महाराज अवि
तार मह ॥ ११ ॥ इति श्री भागवते महापुराणे भाषा बाहर वनरहरिदासेन विरं
चित नवमो प्रथ्थू अवितार संपूर्णं ॥ ९ ॥ अथ हयग्रीव अवीतार लिष्यंते ॥ कवि
रोवाच ॥ दुहा ॥ अबक हिवो हैकरम जुत ॥ सुंषद साध संसार ॥ जिहकारन भुवलोक
नौ ॥ हयग्रीवा अवीतार ॥ १ ॥ ब्रह्मा कोवासुर प्रलय ॥ नयो अवीध वसथांन ॥ रजनी सु
षकीनो सयन ॥ समयक मलन्नजान ॥ २ ॥ प्रथ्वी पसरे प्रलयजल ॥ नास नयो जग
जंत ॥ जूनट साज समेट सब ॥ सोइ रहत दिन अंत ॥ ३ ॥ बाढ्यो फेरन रंग वस ॥ मि
लजल मलसविकार ॥ तातेउपज्यौ असुर इक ॥ अग्यान न आकार ॥ ४ ॥ जिहहिमा-
क्रांत सरीर सब ॥ पर्ब समत न मांन ॥ ततछिन रहु विसाल करी ॥ इरन नयो प्रमांन
५ ॥ धरमविरोधक पापमय ॥ नयो विग्रह विसतार ॥ बुधि विक्रम विवसाय जुत ॥ माया
रचित अपार ॥ ६ ॥ छंदपधरी ॥ इक वह समय आसुर अनंत ॥ सुषनिद्रा मात्ति नऐ
ब्रम संत ॥ विध आनन सो आनमिलाय ॥ सो वेद स्वास पीने सुनाय ॥ जब नऐ उदरग
ति निगम चारि ॥ लेगयो दुष्ट सब हिन संनार ॥ वेदन प्रनाव आसुरी विसेष ॥ निरनी ११
त वस्त अंतरी निमेष ॥ विचप्रलयनीर मिंदर विसाल ॥ सोउ वसै अप्रसुरत हा भ्रम
रसाल ॥ नदी निगम समावत अप्रमांन ॥ निस्वास जउदर वहि आस समांन ॥ सुषउग

लिवेदतबअसुरमुहि ॥ ग्रहमंकधरिकरिजतनगुटि ॥ असमो विधनिसा वीतजागे वि
नीत ॥ दिनउलयौंविवस नौविलीत ॥ इहकल्पसिष्टउपराजदेव ॥ मधकैतभएमहि
माअमेव ॥ पितुकरेजवेअज्ञाप्रसाद ॥ मिलतुतभएऐस बअरमाद ॥ अधिका
रजथाकुमनामअंक ॥ आरंभजिह्नकीनेअसंक ॥ उतभएपितुरुउठितवि
धांन ॥ थिरबमतुतसबथांनथांन ॥ कृतमुदतुमभएऐ सरेनकाक ॥ निश्चेकनिम
मलेझोनिलाज ॥ विनुवेदवताबहिकहाविधांन ॥ मधबाधभएऐवितामांन पा
षानमाहिप्रतीमाप्रमांन ॥ यूंनयेवुमस्कैनआंन ॥ उरमांकवेदषोजतअनंत
पावनल्हेसककुपर्मसंत ॥ नयेविकलवुमचित्तवारवार ॥ करित्राहित्राहि
कीनीउकारि ॥ तुमदीनबंधुदेवाधदेव ॥ नवन्तलषतअंघ्यानभेव ॥ सब
कालकरनकारनसमृथ ॥ तिहनायभजेजिहलऐतथ ॥ रछिपालवैदेवराज
धराज ॥ अनसहनअवस्थापरीआज ॥ उपवांनबमजबसुनीदेव ॥ इहसमय
आंनप्रगटेअजेव ॥ कृतअरचापूजाकबलजात ॥ विधवारवारवंदनविष्यात
॥ देवस्तुती ॥ देवाधीदेवदीननदयाल ॥ करनानिधांनबीलेकृपाल ॥ सबवि
धविरंचतुमधरतसेत ॥ कीनोमोहिसिमरनकवनदेत ॥ ब्रह्मवाच ॥ भगवंतइम
नकस्तलसोवेद ॥ विस्वेसविष्णुकहांगएवेद ॥ इगअंधभयोकुजथाजंत ॥ क
रीयेसहायअबरमाकंथ ॥ तबनारायणकरुणानीधांन ॥ धरदयकतवि
तजोगध्यांन ॥ अग्यातउदधमहअसुरऐक ॥ अस्वाननअघकरअनेक ॥ ले
गयोवेदसोहरिनिलाज ॥ योंकहेविष्णुमेलष्योआज ॥ विधकहोजोरिकरिवि
वसहोय ॥ तुमतेअगम्यनहिगैरिकोय ॥ कृतिकर्नरुअकरिनअ्रियाकंथ ॥
अन्यथाकर्नतुमहिअनंत ॥ तुमदऐवेदमोकहदयाल ॥ पुनकरिहोतुमहीप्र
तिपाल ॥ नहीहोतकरमविननिगमनाथ ॥ असमर्थभएऐउजवरअनाथ ॥ विध
जुगतसुहरिदीनवान ॥ अषल्हेसवहीउरदयाआंन ॥ अस्तुतिसरीरआकृत
अनूप ॥ हरिभयेजहांहयग्रीवरूप ॥ प्रभुकस्योअंबुनिधमहिप्रवेस ॥ सामुहे
असुरआयोअवेस ॥ जातीस्वभावकियमाककोर ॥ कबुकालभयोस्यांम
घोर ॥ निग्रहेउष्मारुयोनिसेष ॥ हयग्रीवववेदभयोविजयदेष ॥ प्रभुकस्योअ
सुरमिदरप्रवेस ॥ आकरषवेदलीनेअसेस ॥ निरघोषदेवउधबिननाद ॥ परि
पुरषदयोनरसनप्रसाद ॥ अंबुजजुवदीनेवेदआंन ॥ विस्तारविविधजय
जयतीवांन ॥ मषजोगजापतपकर्ममंत्र ॥ सबसेषकरतमुनीगनसुतंत्र ॥ प्र
ष्यीसुधरमप्रगटेप्रकास ॥ वैकुंठनाथवैकुंठवास ॥ कवित ॥ यहप्रकारिअ
विलेस ॥ पुरषहयग्रीवप्रगटीय ॥ उद्दिमारिसंधारि ॥ असुरमायाआकुदी
य ॥ अमरबृदआनंद ॥ निगमहिसरहितनिरंतर ॥ विधसनायकरिविश्वना

थपरिखमदयापर॥ हयेहयग्रीवासुर नहित॥ नऐइस्वरजत्रजुलोकतुव॥ उ
धारिनिगमनरहरिसुकवि॥ हयग्रीवाअवितारकव॥ इति श्रीभागवतअविता
रचरित भाषाबारवनरहरिदासेन विरंचितहयग्रीवाअवितारसंपु
र्ण॥ अथ कछावतार लि॥ कविरोवाच॥ दुहा॥ १०॥ ऐकसमयसबदैत्य
मिल॥ कीनोमंत्रविचार॥ सुक्र हमारि कुलगरू॥ तपबलबुध्यअपार॥१॥ तिहवि
द्यासंजीवनी॥ पूरनमंत्रप्रकास॥ गरुप्रसादहममृतुतै॥ अजयजतयेविस्वा
स॥२॥ अबपौरुषकरिदैत्यगट॥ सुरसुरराजसंघार॥ वासकरैतिहथांविम
ल॥ इन्द्रलोकलेमारि॥३॥ सबैदनुजसानंधके॥ आनलगेसुरधाम॥ तहांमहा
दुसनयो॥ देवासुरांसंग्राम॥४॥ जोदानवरिनमहि गिरै॥ सुक्रजिवावैताहि॥ सोइ
आनतारथगिरै सस्त्रअस्त्रसंनाहि॥५॥ महाजुधकबुकालनो॥ आसुरघटैन
कोय॥ घटनलगेसुरांमसुर॥ रहेसोचवसरोय॥६॥ सुरिनिक सेसंग्रामतजा॥ ल
ख्यो सर्नविधजाय॥ कयौप्रमअपदेसजब॥ करिहैविष्णुसहाय॥७॥ देवगये
हरिकेसरन॥ उपनविनयोतथा॥ तुमदयालत्रयलोकपति॥ कारनकरनस
मर्थ॥८॥ श्रीभगवानुवाच॥ मंत्रसजीवनसुक्रपह॥ तातेवेबलवांन॥ सिंधउ
चितबलवंतसौ॥ मंत्रकस्यौभगवान॥९॥ अमृतपयोनिजमांझहै॥ कादिकुक
रेमथांन॥ सुधातुमारैकूरचदै॥ तौतुमअनजुसमांन॥१०॥ उनकेबलसंजीव
वनी॥ तुमहीसुधाबलहोय॥ जायकरोइहसिधतुम॥ सिधकाजसबहोय॥११॥ स्वा
मीदैत्यनकोकृतो॥ जहांविरोचनराज॥ उतपगऐसुरनवह॥ सिंधकरनकैका
ज॥१२॥ उतवीरोचनसुकहै॥ तुमअनएकहिवंस॥ तातेअपनेवंसमह॥ नहि
विरुधप्रसंस॥१३॥ अबतोकरियेसिधयह॥ उसरह्योविचारदरूवैबलअप्र
मांन॥ सुधापयोनिधमंझहै॥ काढकुकरेमथांन॥ मानविरोचनमंत्रयह॥ उतरद
योविचार॥ लोकबुनिकसेउदधतै॥ लेसमभागसंभार॥१५॥ हमतुमलेसमभा
गसब॥ बलविक्रमविवहार॥ जहांघटहिजैकाजते॥ तहांजुधनिरधार॥१६॥ देव
दनुजयोकहिकरै॥ सिधप्रबलमतिवांन॥ आपसमैमिलएकहै॥ उदीमकिन्हो
आंन॥१७॥ मिलेदैतसबमहाबली॥ मदलाऐभगाय॥ अर्धपंथमहलेधस्यो॥ करिक
रिवीचकषाय॥१८॥ देवउहातेआनियै॥ मजबलअनुमांन॥ अर्धभागहमतुम
सकल॥ करियेबचनप्रमांन॥ बलउद्यमकरिसुरथके॥ मंदारउवेनमूल॥ तबह
रिकोसुवरनकस्यौ॥ ताहिनकोसमतूल॥२०॥ आतुनदीनदयालप्रभु॥ तिहबि
नदेवसहाय॥ मदराराष्योउदधातट॥ गरुडपीठधरीआय॥२१॥ गिरमेघलजो
जनसहस॥ सहंसउर्धचालीस॥ मंदरांचलपमानयह॥ सोभाअनितसुदीस॥ १२
२२॥ नेत्रकाजमनुहारिकरि॥ आंन्योवासगनाग॥ सुरासुरिनतासोकह्यो॥ लीजै

क्रइमृतनाग।३३।छंदपधरी।उनिसुनकु कमठअवितारहेत।कृतरूपअत्र
परबलधरमकेत।इहसमयदेवदांनवबलिष्ट।मिलकरतनऐकीडाउतिइसा
मंदमथनकीनौसमर्थ।उधरिहरलचवदहसुत्थ।निवेसकरयौवासगनिहा
र।मथांनदंडमदराविचार।पयमंकधरयौपरिवतविसेस।सोउन्नयोछीनदे
ष्योअसेस।जातीसुमावयहरूपलजांन।जलमांकगिरयौमृवतनिधांन।तहांन
येनिरुद्यमदैत्यदेव।पयनिधअगाधपावहिनभेव।सुरअसुरनऐआतुरसभे
द।करिजोरिकरयौकरुणानिवेद।कीजैसहायराजाधिराज।करहिनंगहोतिहि
देवकाज।सबकालनऐतुमसुरसहाय।जोतीस्वरूपउनुजांनराय।हरिनए
तबैकछावतार।वउवुधमहापयनिधविहार।धरनधारीपीठपरवततुपार।अ
धारयौदेवकूरमवतार।आवरतअंगवासिकसमूल।सोनयोडूडरकेवंगतुल
धरिहूवदेवसमदेवराज।वलिआद्यमुषहिअसुरसमाज।वहिकालनाग
मुहसतैविसेस।अतिधूम्रजुक्तनिकसेअसेस।तिहजरेअसुरसोनऐसांम।तैसुक
क्वाएमंत्रताम।परवंकन्नमतमंदराचकास।उछिलहपयोनिधपकं[स]डुकसमान। सोरधार पीरकं
निंद्रागतिभोकरुणानिधांन।सुरअसुरकरतक्रीडासमांन।मिलकरयौषीरसाग
रसैमथ्यांन।कियप्रथमगटहलाहलप्रथमकाल।त्रयलोकजरितज्वालाकराल
देवनउकारिकियसिवदयाल।मुषमाकधरयौविषमुकमा।अन्नूरोकेसिवग्रीवा
प्रवेस।नऐनीलकंठतबतेनवेस।उनिकढेमथहालाप्रतिष्ठ।मृतकुंनलयोसो
ईसुनिअप्रष्ठ।उनिनिकसकनकघटईन्द्रसपूर।सोउललोछीनअसुरसमू
र।संग्रामउदितनऐउनयसथ।ससत्रायुधसंजुतभिडसमृथ।निरघोषवतत्वा
सिंघनाद।विपरीतविरुधवाढेविवाद।तहांसुरनकरयौसिवरनससोक।तुमहो
सहायस्वांमीत्रलोक।आकासवांनप्रतुकह्योऐह।मायावपंचरचिकुसंदेह।यो
कहलमात्रयकवियाआय।सुनदरससरूपसोभासवाय।मिलकरयौसबेदांनव
समाज।कहांवसतकोनतुमकहाकाज।मोहनीवाच।नितमेरोरिवमंडलनि
वास।किन्नासुईछविहरतअकास।त्रयलोकगवनमेरोसतत्र।महिदेवतकोल
तमायमंत्र।कलनागकरैपहिलेप्रमांन।मिलकरयौषीरसागरमथांन।लालच
वसकैसवनागपलेऊ।ईछ्योविचारिनहीनीतएऊ।उपजेकसिपदकुवंसआ
द।वसऐकवयरवरजितविवाद।वंसवढततत्कदेष्योवीरोध।पैहमहिआयक
रवाप्रबोध।विस्वासकरोमेरोविचार।समनागपसबनदेऊंसंभार।सुनिदैत्यत
हांबोलेसहास।तुमवरोऊमहिउपजेविसास।कन्याजदबोलीस्पांनकूल
ममवचनत्यंगनदीकरतमूल।तववरतुमहिकेदैसतंत्र।मेरोईदईछ्याम्र
समंत्र।निरधारवचनकीनोसनेम।प्रगट्योविस्वासदऊधासप्रेम।तवकयौमो

हनी क्वन तास बिरु कलस दिकु जब जे बिस्वास ॥ आसुर न दऐउ कु कलस आ
य ॥ सोउ सुराय मृत्य दूरित सुनाय ॥ जहां सस्यौ काज मोहनी जांन ॥ मृस्य काक नंक
घट लऐ मांन ॥ मोहनी रूप अनूत मुरार ॥ सुर हेत दैत्य मन मोहकार ॥ सुर दे बअसु
रन एमोह लीन ॥ तहां थक्यौ कलह उनप्रणत कीन ॥ यमृत बिनाग रूं करत आज ॥
मिल थांन होउ दो ऊ वैसमाज ॥ नए असुरन्निन पंकत प्रमांन ॥ पति मोह मनो प्रतिमा
पाषांन ॥ सब किये बिव समाया समर्थी ॥ सुरदित सुधाम ददैत्य सथ्य ॥ ईक राहु नांम अ
सुर अमांन ॥ हरि कपट लख्यौ तिह गंध्रपांन ॥ सुर रूप करयौ तिह सुर समांन ॥ थित
नयो सोध सिस सूर थांन ॥ जब लस्यो राहु ईमृत सुजांन ॥ मिल दयौ सोध सिस सूर
मांन ॥ प्रभु असुर जांन कीनौ प्रहार ॥ सिर छेद चक्र थन दिष्टसार ॥ तब देत जीयो उ
यपंक दोय ॥ सिर नयो राहु घड केत सोय ॥ पेम स्यो नहीं इमृत पनाव ॥ नयो सस्वंद
सो वैर नाव ॥ सुर असुर सुधा सब पांन संग ॥ अभिलाष दुरि रस मत रंग ॥ सागर म
थांन फिर करत सोय ॥ हित आप आय उनमत होय ॥ प्रबल सुर नऐ अमर पद
सुधा पाय ॥ सुर रत्न लेहि असुरन धकाय ॥ निक स्यो पिनाक सिव सि[illegible]स निहार ॥
सो इधनुष तिक लीनो संभार ॥ श्रीवंक कोस्तमन मणि समेत ॥ हरि धरत नऐ प्राची
नहेत ॥ आन्हूषन आयुधा प्रिया आय ॥ उरथांन वाम अंग घरघर अनाद ॥ मातंग तुरंग
निघेनु काम ॥ तरू रत्न धनंतर वैद्यतांम ॥ घट रित हिंद येईइह बिसेष ॥ ईरासन नुबि
तनयो असेष ॥ उनि निकरे बाडवपल यरूप ॥ नृगि गन वढ कुबाड वैन्नयांन प्राज
लहि ज्वाल तप अप्रमांन ॥ सुर असुर गिरा प्रत प्रह्म कीन ॥ कहां धरहि विषम बाडव
नवीन ॥ वाणी सदयो उत्तर विचार ॥ मुक ऐफेर पयपति घ मंझार ॥ सब समक उदध
महि धस्यो सोय ॥ कृत करम देव मेटन्न कोय ॥ प्रज्वलहु ज्वाल प्रत अखिल जंत ॥ उर
उदध ताप वाढ्यो अनंत ॥ तब उदध गिरा प्रति विनय कीन ॥ नहीं सह्यौ परत बाड
वनवीन ॥ विध सुता प्रसन कुयता हिवार ॥ दियसागर महि कुमल सुधार ॥ इह मथ
नाग जल जीव आय ॥ सोइ दग्धत तहां है सुनाय ॥ सरस्वती आप श्रीयदीय सहा
स ॥ हमतु महि वनतन हिऐक वास ॥ बुद्धयो पयोनिधनयो बाब ॥ सबल ऐरतन
सुर असुर आब ॥ उधरे रत्न कीडा उधार ॥ हरि करयो तहां कमठावतार ॥ सोई
यमृत कबु उबरे कुसेष ॥ लेवलौ इड निज उर विसेष ॥ आसुन दइ रोको अमां
न ॥ हम अब रलिये को यमृत आंन ॥ जाजुलिय सुरासुर नयो जुद्ध ॥ कबु काल
इमृत कारन सक्रुद्ध ॥ आसुरी विरोचन सुता एक ॥ अतिकाय उपद्रव मय अने
क ॥ वियदीरघ जिम्या नाम तास ॥ गज ईइ अघाई करन यास ॥ गज सक्र सहत
तन ग्रस्त जांन ॥ प्रभु इसह चक्र मोष्यो प्रमांन ॥ उतबंग छिद्यो परि सिंधु आय ॥
सो कस्यो नसम बाडव सुनाय ॥ रिम अज्ज दिवी रोचन गिस्यो राज ॥ बलि कुवर

सहित अ आसुरसमाज ॥ करि सक्र समर रिआसुर संघारि ॥ लैगयो सुधासुर सुर सं
नारि ॥ वह काल सुक्र आयेरिषीस ॥ गुरदीनी संजीवन असीस ॥ रिन सुमन पाये
सीसराज ॥ परलोक विरोचन कस्यो काज ॥ सब अंग लदेसयौंभवोर ॥ बलिकुंव
र जीयो भुनि असुरि और ॥ मिलसुक्र असुर सुरता ऐअमान ॥ लैगऐ बलहित ब
सुतलथांन ॥ तबदयो बलहिति हति ऋबन ॥ तिह समय राजबलकक रततन
सुर असुर गऐ निजधाम ताम ॥ क्रीडा निवृत नईलषि काम ॥ तहांक थ्यो कमठ
क्रूरमधुरान ॥ स्तुति करत सिध चारन सुज्ञांन ॥ ईह कारन कछिपरूप कीन ॥ नि
ज रत्नचतुरदस लियनवीन ॥ ९ तुनयेत बेज्योतीपवेस ॥ सुरलोकवजेउधविस्र
सेस ॥ उक्त ॥ आभुन कछिपरूपके ॥ नरहरिव भविस्तार ॥ अदिभ्रमायो पिष्टपरि
पयनिधमथ्योअपार ॥ कवित ॥ चारन सिध प्रसिध ॥ जपति जिंदकीत निरंतर
कमठ पिष्टका कविन ॥ भ्रमति कतिकूटचक्रवरि ॥ उदधि डमथउबलिय ॥ अनल
बलमिलत तअवग्गल ॥ जनसषेदकरिन ॥ कारन दिवमंफल ॥ अदिनूत वितवि
क्रमअतुल ॥ कीतसुकविनरहरिसुकह ॥ सबकालविजयपिंजरसरिन ॥ मम
गतिचर्ननिवाससह ॥ १ ॥ इतिश्री भागवते महापुरांणे भाषाबारवनरहरदासे
नविरंचिता ॥ कबावतार ऐकदसमो संपूर्णं ॥ ११ ॥ अथ मछावतार लि ॥ कवि
रोवाच ॥ उक्त ॥ नरहरि अनुकार ननिपक्ल ॥ सुनकउ जथामत संत ॥ पृथ्वीराषी
प्रलयते ॥ नऐमीननगवंत ॥ १ ॥ द्रावडदेसनरेसनो ॥ सत्यव्रततिहनांम ॥ वेदप्रणी
तविधांनमय ॥ सकलधर्मकोधाम ॥ २ ॥ राजनीतजुतनियतव्रति ॥ ब्रमपरायणवी
र ॥ ३ ॥ विधर्म प्रजापालिन ॥ विजईसमरसधीर ॥ ३ ॥ ब्रमाकोवासुरप्रलय ॥ सम
यनिकट नो आन ॥ नृपति अविधवसदूरतव ॥ पघवितवति प्रमांन ॥ ४ ॥ भावीव
सब्रमाप्रलय ॥ कबकुटरैनकोय ॥ नक्रपरायनसत्यव्रत ॥ सुनो प्रलयवसहो
य ॥ ५ ॥ ज्यौंकैहैमिथ्यासकल ॥ व्रतसंजमतपदांन ॥ करिअपहासजुनकको ॥
निश्चयहोयनिदांन ॥ ६ ॥ भावीमिथ्याहीकूंनह ॥ नक्रुननिदैकोय ॥ अबतोइह
करिबोउचित ॥ नृपतिहरिप्याहोय ॥ ७ ॥ कारनकर्मसमुपहरि ॥ कीनोइहनिरधा
र ॥ जिनतेडस्करनाहिकबु ॥ वेदधरमसुविचार ॥ ८ ॥ सरिताद्रावडिदेसमहं ॥ क
समालातिहनांम ॥ करतनृपतितिह नितकृत ॥ विवधनीतविश्राम ॥ ९ ॥ तहांकृत
मंजनसत्यव्रत ॥ नृपजपकस्योसनेह ॥ तिर्पनजलकरगतनयो ॥ सफरसतम
यदेह ॥ १० ॥ अतिसुछिमतनकन्कमय ॥ पुरअंजुलिगततास ॥ रहारह्यावारहै
बोल्यो सफरसत्रास ॥ ११ ॥ बालसरीरविलोकतिह ॥ कैदयालनरनाथ ॥ लैमेल्यो
जलपात्रमैं ॥ हितकरिअपनैहाथ ॥ १२ ॥ मीनअनुक्रमवधिकवय ॥ सोनहपात्रस
मात ॥ जबदिधस्योजलकक्रसमह ॥ वधतहरहविष्यात ॥ १३ ॥ लैरापैतिहसरित

क्रु

मद विग्रह वदे विसेस । कछु समातन सफर रसो । विसमय नयो नरेस ॥ १४ ॥ रा
जा वाच ॥ नहीं पराकृत जंतु यह । कछु कारिन यह और । मन संकल्प विकल्प उप
पा उपजत है तन ओर ॥ १५ ॥ मीन वाच ॥ बोल्यो मीन प्रवीन यह ॥ नृपति सुनहु निर
धार ॥ अद्य वदि दिन सातमे ॥ है है प्रलय संसार ॥ १६ ॥ अब तू पई है करि बोउ चित
मीन देह कहि नमी ॥ विश्व बीज राषहु वित ॥ औषध त्रण अन्न लय मो ॥ १७ ॥ नाव कर
उ बीनि षल ॥ ले बंधहु मम अंग ॥ मुनि समाज युत बैठ तुम । सकल चराचर सं
ग ॥ १८ ॥ कविरोवाच ॥ सुनी नृप वितंत सब ॥ मच्छ कह्यो जो आदि ॥ कृतमाला सरि
ता विषम ॥ दयो सु मीन प्रवाह ॥ १९ ॥ नदी संग मिल सफर तहां ॥ सागर कह्यो प्रवे
स ॥ जो जन लख्यो सु अंग तो ॥ विग्रह वृध विसेस ॥ २० ॥ मीन स्वदेव जो जो कह्यो ॥ पैठ
प कह्यो प्रमान ॥ नाव बीच बल सु नाट रे ॥ जोई ध्यान गवान ॥ २१ ॥ छंद पधरी ॥ जब
भए अविध दुरन प्रमान ॥ तौ प्रलय नीर बाढ्यो नयान ॥ नृप करी नाव प्रथ्वी प्रसिध ॥
सब बृक्ष बेल रावर स अमर सिध ॥ उषधी अन्न त्रण बन अपार ॥ सो विश्व बीज राष्यो सं म
र ॥ जहां न यो अविन जल बिंब जांन ॥ विन ये सु विष्णु सो दीन वांन ॥ तुम दीन बं
धु देवन दयाल ॥ करि नारकर हु रछा कृपाल ॥ उहां महा मच्छ तन मान अंग ॥ सु
न लछ लछ जोजन सु अंग ॥ इह सम यछ्यो प्रभु दरस आय ॥ सो उ सफरि
रूप वेदन सहाय ॥ प्रभु दरस देष संस्तुत सनेह ॥ देवी सुसक्त भए राज देह ॥ अ
ग्या सु देव अहि सेष आय ॥ सति व्रत नृपति कारन सहाय ॥ कत सेष मध्य राजा
विसेष ॥ इक ओर बाध प्रथी असेष ॥ इक उतीय ओर विस्तार अंग ॥ सो लष्यो बांध
सुर सफर सैन अंग ॥ सो अंम्प बांधि औ बीसु नाय ॥ अबिनी सु प्रलय जल उपरि आ
य ॥ बजि प्रलय काल को महावात ॥ प्रथ्वी हु को लिजि मन लनिपात ॥ त्रैलोक नास
इम करि है बिमल वारिध विलास ॥ निस नई ब्रम तहा कह्यो सैन ॥ जल प्रलय तर
गन उगी कैंन ॥ अनमोघ दई वेद्या अमान ॥ प्रभु धरे चित सो इकै प्रमान ॥ जल
मिले फेन नयो ऐक जोग ॥ उपज्यो सषा सुर अ वियोग ॥ सुर उपजी सत्रु सो पा
प संग ॥ उद्यम अनूप अघ रूप अंग ॥ सुष निद्रा वसत हां ब्रम साध ॥ इह समय
आय आसुर असाध ॥ लिय स्वास पियास संजुक्त वेद ॥ न्हकम लन पायो उष्ट
भेद ॥ जब भइ ब्रम रजनी वितीत ॥ विध प्रलय वीत जागे विनीत ॥ चितक स्यो त्रा
ति संध्या क्रिया रि ॥ द्रम्प सुद्ध भए श्रिष्टा सधार ॥ तरिमां क्रु वेद षोज तप्त सेस ॥
सुनि तो हृदय पावतन लेस ॥ विध कह्यो मीन सुवर न विसास ॥ तत काल
आय प्रभु तुहरन त्रास ॥ धरि मबदेवत हां जोग ध्यांन ॥ गए निगम स्वास संग ल १४
हो ज्ञान ॥ श्री भगवानुवाच ॥ लेगयो संष आसुर निलाज ॥ रह मारि आन हु

देकुआज ॥ जो ब्रहम बिरोधी पापन्हीन ॥ लै बेद भयो जल जलिध लीन ॥ लै गयो असु
रजल निग मजाम ॥ धरि भऐ धरम अबिहीन धांम ॥ सुनियेत हो मजपमंत्र जाग ॥ भएउ बि
तदेव पाव दिन भाग ॥ प्रतिपाल धर्म देवाधदेव ॥ ई हुसमय मछ को पेअ भेव ॥ जलथाद
लीन तब मछ जाय ॥ जुध स्यो संषअसुर जगाय ॥ कछु काल भऐ कीडा सुकुध ॥ का
रनाद्भुत भऐ मीन कुध ॥ घन्मा स्यौ संषासुर प्रबारि ॥ सब सेष बेद लीने संभारि ॥ सोक
रे २१ग टले भू निकेत ॥ सुन निगम बीज अोषद समेत ॥ संषोवाच ॥ दुहा ॥ संषक स्यो
तब बिधनसो ॥ मोहि हत्यो कै मीन ॥ इह गति करै दयाल अब ॥ रक्षवर्न आधीन ॥ श्री
भगवानुवाच ॥ तबिगतिनी र अन्हाय मोदि ॥ सिव हि साधु सुजांन ॥ मनसा बाचा मा
न हुं ॥ पूजा वदे स्मांन ॥ २ ॥ कविरोवाच ॥ बेद पषाले बिमल जल ॥ अंबु रूनैदीय आंन
पीयो नन्द र ष संगमल ॥ विघन करी गिलांन ॥ ३ ॥ तब मुष सो जल चार नहि ॥ दया जु रू
ले दीन ॥ प्रीत सहित तिह पांन किय ॥ बाढल बुध प्रबीन ॥ ४ ॥ छंद पधरी ॥ ब्रमा हि पढाऐ
वेद आंन ॥ मन मुढ बाल अधयन मान ॥ प्रभु कथ्योत हां मबगातु रान ॥ पाढाऐ ब्रमत्र
न प मांन ॥ बिध बिनयक स्यो सन काद्य साथ ॥ रिषदेव निवार्यो दया नाथ ॥ सब का
ल सब नतु मही समांन ॥ भक्त हेत करुना निधान ॥ सुषसथांन ब्रमस निका
द्यु सिध ॥ पणां यां मधांम बक्कु करि प्रसिध ॥ करि जोरि सत्पब्रत पणत कीन ॥ प्रभु दे
कु चरन संगम प्रबीन ॥ भगवान मीन करि कह्यो नाइ ॥ जगराज जोग प्रभु करकु
जाई ॥ सुष राज करकु मनप्रगट संत ॥ अबितार चिरत महिमा अनंत ॥ नृपता बिला
सकबु काल नेम ॥ पुनि मिलकु जोति देवी सप्रेम ॥ प्रभु पाय सेष अग्पाप्रसाद ॥ मंद
र पताल गयो अप्रमाद ॥ सुरि देव बजे दुधिन अकास ॥ पुनि नइ भुइ हप्रवरषा प्रका
स ॥ इह कारन भयो मछावतार ॥ जग जीव करन उधार पार ॥ दुहा ॥ वेद सहायक
विश्व हित ॥ प्रभु अवितार प्रमांन ॥ अंतरध्यांन अनंतगती ॥ भऐ मीन भगवांन ॥ १ ॥
इह विध सफर सरूप करि ॥ कीनो ब्रम सहाय ॥ संषासुर सो निग्रह्यो ॥ आने वेद बु
लाय ॥ २ ॥ सत्यब्रत कर राज सुष ॥ प्रन अविध सुपाय ॥ करनी जोग अभ्यास करि ॥ जो
ति मिले पुनि जाय ॥ ३ ॥ निगम हेत नरहर सुप्रभु ॥ मछ देव मघ मित्र ॥ विसद देह विच
साय जुत ॥ संबल अबल चीर त्र ॥ ४ ॥ इति श्री मछापुराण भाषा बारह नरहरद
सेन किर्तत मछावतार १२ वादसमो संपूर्ण ॥ अथ नृसिंघावतार लिषंते ॥ दुहा ॥ न
रहर प्रभु नरहरि भए ॥ लीला अगम अपार ॥ सुषदायक अनुक्रम सहित ॥ सुन कु
जथा विसतार ॥ १ ॥ कविरोवाच ॥ छंद पधरी ॥ हिरनाछ मरत इक अनुज भ्रात ॥ क
कुवक्यो हिरनकस्यप विष्यात ॥ सो भयो भूम भूपति प्रतिष्ट ॥ सब सुनत सचि
व अरु बधु इष्ट ॥ वसुधा प्रभुत्व पायो विवेक ॥ भयो ताहि राज निषेक ॥ बलवं
त असुर साहंस विसेष ॥ सुर साल धरन द्राह्य भेष ॥ तिह प्रिया कया धु धरम बो

म॥ त्रियधस्योगर्भसुतरलताम॥ धृतगर्भनऐकबुद्धिनबितीत॥ नृपचस्योहो
नतवजक्तजीव॥ इहउपजज्ञांनआसुरआसुरअजेव॥ इकस्योदेहतपब
लसतेव॥ विधनिमतकरतवनतपविचार॥ गोनिकसराजतजराजनार॥ सब
सुनत्रृत्तिमित्रीसुजांन॥ सबकरतराजकारजसुथांन॥ नृपगयोसुमंडाच
लनिकेत॥ सुनदेषवोरजलतरुसमेत॥ विधसहतकस्योतहांतपविचार॥ ध
रध्यानरहितनएनिराधार॥ नृवरनउर्धभुजमिलतनेत॥ कठनऐदेहजागत
सुचेत॥ तपकस्योउग्रधरिएकध्यांन॥ मनवाचकर्मग्रहिब्रमज्ञान॥ इहगइक
थासुनिब्रम्हअसेस॥ सोनयोउचितसुनकेसुरेस॥ सुनतनगरहिर्नकसिपसुथां
न॥ परचक्रइक्कायोउमांन॥ उरजारिसुनटआसुरसंघार॥ सबलऐकाठह
यगयसंनार॥ पजल्लूटफारिननारपाट॥ सुचरलदब्रजीनेसुघाट॥ उमग्रही
कयाध्रत्रियाराज॥ सुनगर्भवंतीविबत्रियसमाज॥ लेचल्योकयाधूपकरि
ईद॥ तहांमिलेवीचनारदमुनिंद॥ नारदोवाच॥ सोइंदकस्योनारदसनेव॥ ईह
गर्भउत्रहेरलदेव॥ जयविजयअंसयहगर्भसांज॥ निसेषकर्नआसुरसमाज
प्रतिहारअंसवउधरउनीत॥ निरवंसहेतनिसचरअनीत॥ सुनगर्भजलकी
जैसुरेस॥ सुरिकाजसिधकेहैअसेस॥ इंद्रोवाच॥ वसुकहेतबेनारदविनीत
प्रतिपालकरऊतुमरिषउनीत॥ कवीरोवाच॥ लेगयोकयाधूमुनिनिकेत॥ हित
करततासउचिकादेत॥ ज्ञांनोपदेसरिषकरहिनित॥ सिसुग्रहेगर्भअंतरसु
चित॥ कवित॥ नहिन्हकेनिजधरम॥ कीटकुंजरसमलेषै॥ हांनवृधनहीनेदब्रम
मयविश्वसंपेषै॥ उरउपजेअहेत॥ वाद्यरजोतिप्रकासे॥ कांमक्रोधमदमोह
लोभनत्रछांनजनासै॥ लघुआपसवनगुरिकरिगिनै॥ संततिसतसंगतिग्रहै
सुनउत्रकरनकारनसुलषि॥ ब्रमज्ञांननारदकहै १॥ छंदपधरी॥ सोउरहे
नाहिउरजननलेस॥ सिसुनयोब्रमज्ञांनीसुवेस॥ नात्रियागर्भसपूर्ननयो
ताम॥ उहचायदइरिषराजधांम॥ सोरठा॥ माताररयोनलेस॥ नारदकेउप
देसको॥ उपजेनरकअसेस॥ गर्भब्रमज्ञांनीनयो॥ १॥ दुहा॥ गर्भमोषसतव
र्षनो॥ पूरीअविधप्रकास॥ प्रेमनागवंतउत्रनो॥ जिदहरिकोविस्वास॥ २॥ छं
दपधरी॥ तिहउत्रनांमप्रहलाददीन॥ वपुवढेनित्यपोषुषनवीन॥ सोरत्योरूप
अंतरसमाय॥ द्विजगर्भदयोनारदबताय॥ संसारसकलअंधारधांम॥ मणिदीप
प्रगटइकरामनाम॥ मनजांनयहेहरिनांममोह॥ बलबयनतादिलागेनबोह
वनकरैकुवरनिजउरविहार॥ सिसुगिनैसकलमिथ्यासंसार॥ कबुकालन
एनृपतपकरंत॥ सुधकरीवमनिजजांनसंत॥ आरुढहंसविधआयआप॥ ब १५
नलषासीतजजतपवियाप॥ प्रजरुधरादिकषायोप्रचार॥ दलदर्ननिकस

अंगनविदार । ऐवसकीनसिरसुकनिआय । सोरहेजीवअरुथनसमाय
रहदसाबिहारितपञ्चबंफ । करनर्धदसोमनुकावर्णफं । नरिब्रमकमंरलसलि
मूर । छिरकोसरीरपलरुधरिपूरि । नृपजङ्गोजोगपनिद्रानिवार । वहदिष्टब्रमतिद
वदनभार । जिगयोपवित्रववेदवांन । आरुद्रहंसजलपात्रपांन । आनंदवदि
तनृपकरीटेकं । अनिलापदेवद्रिकिअनेक । ब्रह्मा उवाच । विधकहतनऐनृपसु
विचार । जिहहेतसंध्योवनजोगसार । राजावाच । इकआदिवित्तचिंताअमांन । ति
हहेतधरयोमैब्रमज्ञान । निजनागमोहितुमदरसदीन । परिवावसिष्टकरताप्रवी
न । राजावाच । मोहिहोतकपाजोविधकपाल । मांगूसकलरूंवाहनमुराल । जेदीजे
वावाजलदजात । सविसेषकरूविनतीसुतात । विवेविप्रब्रमवाचासुदीन । करिजे
रिदेततबप्रणतकीन । जुधजीतसकैमोसौनदेव । संसारसकलमोहिकरेसेव । नि
सचौसमरूनहीदयानाथ । धरिअंगनमैलैअरिनधात । सुदिसिदहिनसस्त्रात्र
स्वअंग । नरअसुरजुरैमोसौनजंग । सुनरथीअस्वगजचदिसमूर । सोउअंग
घावघालैनसूर । मोहिअंतमिलैनहस्तायधाम । सव्यात्ररुठनदीविघ्नताम । अ
कासधरनगिरजलनअंत । सोउदेहमोहिवरपरमसंत । चापैनअंतकविवर
णभार । पसुपविसकनसनमुखनिहार । विधनथात्रअस्तुकहिवदनचार । आरो ८
हहंसनिजपुरपधार । कविरोवाच । तबदैतगयोनिजराजधांम । सुतमिल्योआ
यदलबलसमांन । उरधारलयौतबकुवरराज । सबनगरवजेवाजत्रसमाज ।
उछाहनऐआसुरअवास । नृत्यादगीतनानाविलास । प्रहलादसहितनृपग्रहप
धार । नोछावरकीनीअसुरनार । उहासुनीइंदकीनीअनीत । उरवढोक्रोधआसु
रअनीत । आसुरीसिष्टजबरवीऔर । ब्रह्मादरुद्रवहेगोरवोरी । दिगपालअनंत
रआदिदेव । नयौनयोविश्वकर्मासनेव । ब्रितरोदसकरेधर्मांवछीन । पैतप्यो
असुरस्तुवपायनीर । नवषफफतिहनरैआंन । करिजोरिरहततनृपसंकमांन
तपहोमदानमषमिटेतांम । सुरअंसरहितनऐउषीदांम । गोविप्रतिक्रजिज्ञो
पवित्त । अपमांनहोततुलबीअनीत । सेवानदेअतिथसाध । ईहनांतनऐधर
धर्मबाध । फलरीघंटसुनियेनकांन । दुजदेवदुषितअतदीनमांन । ब्रूतईपा
पपीडतसपूर । निबीगईयासतअंकुर । बितमईतबैनारायकंत । अवितारध
रनचासोअनंत । ईहनांतहिरणकसपनृपाल । सोकरेराजसुरराजसाल ।
इहकर्मकालकछुनोअतीत । अंकुरेपापनिजकृतअनीत । उपजीकुबुधआ
सुरअसाध । सुतपेषऔरिप्रहलादसाध । यकसयराजमनचितकीन । पसुपा
यनृपतिविद्याविहीन । असुराहिविरोहितमदअबंफ । सुतसुकअनयमरकारु
संफ । इहजांनबोलिगुरनिरविषाद । प्रहलादकरिकुविद्यापसाद । असुरीधर

मविद्याअपारि ॥ सोउपदिक्तजलसंजुतकवार ॥ कलकुंकमचर्चितअविन्न
नाल ॥ लेवलेकुवरकंकचटसाल ॥ उपधानअरुणआवृतअनूप ॥ आरोह
उरदरिवतिमररूप ॥ निजसिसुनाएलेगुरिनिकेत ॥ त्रियदेतगांनमंगलसमे
त ॥ पहुखादसहितचहासमाज ॥ चरसालनऐपावतिसमाज ॥ जबनऐकु
वरगुरचरनलीन ॥ विद्याविसेषआसिषसुदीन ॥ कियगानदांनमंगलवि
धांन ॥ सारदापूजगनपतसमांन ॥ ॐनमोसिधआपरअनाद ॥ प्रहलादपठ
तनऐनिरविषाद ॥ लिषदएजथाक्रमसिसुनअंक ॥ सोपढतसबनचटानि
संक ॥ तहांवैसंकमरकासनाय ॥ विवधरैसुसिष्टमनवनाय ॥ करिलटीत्रा
सआसुरकुवार ॥ सबपढतआपसंथासुढार ॥ गुरगमसबननोअषर
ग्यांन ॥ प्रहलादकरीसुधगर्भध्यांन ॥ उपदेसकरयोरिषिगर्भवास ॥ सोग्यांनप
रमविद्याप्रकास ॥ जोकह्यौकृतोनारदरिषीस ॥ सोनामपढतपदवंदसी
स ॥ विचगर्भदईनारदवताय ॥ सोरहीहृदयमूरितसमाय ॥ करियारसु
नगतनसघनस्यांम ॥ सुविसालनेत्रवैजंतीमाल ॥ गदसंषचक्रनीरजस
५ नाल ॥ आजानभुजाकंदरविसाल ॥ वामंगरमामणिउरविकास ॥ सुनपी
तवस्त्ररथगुरडजास ॥ इहदसानइसिसुउरउदोत ॥ मनहायनऐज्योमु
निनहोत ॥ वाचासुकर्ममननिरविषाद ॥ उररंगेस्यांमअद्वैतवाद ॥ करलिषेकव
रहरिहरिसुअंक ॥ सुनधांनपढेहरिहरिनिसंक ॥ सबसषापढकहदरिहरिसं
मार ॥ हरिपढतनआवैजन्महारि ॥ हरिनामसुजगनौकासंसार ॥ हरिपढत
होकुनवजलधपार ॥ हरिनामडीतलवकुसुमीन ॥ हरिआहिअवलमया
अजीत ॥ सुननांमकुंवरचहासमेत ॥ हरिहरिजुपढेलिषपरमहेत ॥ आसु
निनऐसंकमरकासक्रुध ॥ विकरालदंतवांणीविरुध ॥ वेवरणदेहवेगंधता
स ॥ आरक्तनेत्रउतंगनास ॥ करककसकरालन्हापाकुचाल ॥ ग्रिमाप्रलंब
रजतिक्रनाल ॥ फरकंतअधरजलश्रमसरीर ॥ कततउरधरोमअंतरअधी
र ॥ कुलगरुअसुरवैमहाकाय ॥ जाजुलिनऐकोनिकरजाय ॥ वरिमकापा
नदोरेकुचाल ॥ नयनीतनऐतुवगिरेवाल ॥ तिहचरमकरयोकुवरहिप्रहा
र ॥ फिरलगीताहिमलौसन्तारा ॥ तिहचोटनयोविहवलडजाति ॥ करिस्वव
वितनौकरतबात ॥ संदाउवाच ॥ कुलदेलधरमनांहिनकुवार ॥ इहकोनपा
वकाढौकुचार ॥ हरिनांमकहैयहवंसकोय ॥ नृपहतैताहिनिरसंकहोय ॥
वहनामकहावतहैमुरार ॥ सुरहेतकेइकअसुरसंघार ॥ पितुतासकुलतौतो
हिनिरोधतीस ॥ उदमारकहावतआपईस ॥ हरिनामलेहिकोअसचग्यांन ॥ नृ
कवररजथंननिधान ॥ तवपितात्राताअयजअजेय ॥ हिरणाक्षनामबलअ

वृमेय। तिह धरी नृप सत्तम पयाल। ग्राबंध लेय सुर १ तहि साल। हरि हतो ता हिम
स का समान। तू नाम लेत ताको अग्यांन। नृप हरि सो च हत है वैर भ्रात। तेता हि करयो
है मात तात। पल जियत वसै जो निरविषाद। धिक तास जनम जिह परम वाद। दोहा।
जाके अरि विसमर्न किय। जो नहि अरि उर साल। ता हि जनम प्रहलाद सुनि। व्रथा
नयो श्रम बाल १। छंद पधरी। सुन सांम दांम अरु भेद फंद। गुर दई सिष्या कुवर हि
अबंध। ईह पाव वसयो ते कुवर आज। उन पढत सुन हि कहदे कुराज। दुज दयो बोध
हित चित वढाय। प्रहलाद नयो गज सो न पाय। गज मंजन करत गज नृत सवार।
छिन बीच परे उ निमिलै बार। त्रिय लेद आच दग पलाज लीन। प्रिय मिल हि जाय उ
तरी प्रवीन। इह नीत बाल मिल चित अनंत। प य पय हि नीर नीर नीर हि मिलंत। कवि
रोवाच। सब बैठ जाय वटा सुथान। प्रहलाद नयै उ बित निदांन। कहि देन कहि
त गुर नृप हि वात। नय होत सुनत कंपत सुगात। सो कह कुजिह न गुर सुत रिसा
य। जिह लेत हो कुसु प्रसन राय। प्रहलादोवाच। को राय का हि सुप्रसन कांम। सुप्रस
न करु जिह राम नांम। जिह रोम कोट ब्रह्मंड वास। सुहृत अंग होत वैउर विनास। ब्र ५
ह्मादि करत जिह वर्न सेव। रूप चंद सूर देवाधिदेव। यह ध्यान पढ हि हमरा मनाम
करुनानिधान सब सर हि काम। कविरोवाच। रट ऐक उवै धुनि रामनाम। प्रज्वलो सु
नत गुर हृदय ताम। किलकारि उठो संडा कुचीन। नृप गिरे सलय बालक सनीत। सानं
द पढत प्रहलाद सूर। गुर त्रास चित आनै न मूर। संडवाच। करि कोप संड बोल्यौ क
राल। तै सबै विगारि असुर बाल। रिपुनाम लेत कित वारवार। इह बाल कुविद्याकुल
कुवार। यो कहत मात्र संडा सुनाय। नर नारि मिले सत जुथ्थ आय। आये सु दुष्ट
असुर अनीत। आसुरी सबै वैसी अनीत। सो कहत गुर हि सिसु मारि मारि। इह मूढ
लगावत वंस गारि। यो कहत सबलेन रनारताम। उठि गऐ संड मर्का सुधाम। सखीयो
वाच। सखि कै घाद ग्रेह आऐ सु विप्र। सब मिली आंन जुवती सु छिप्र। निस्वास संसुधारा
सुनैन। यो देष संड मर्का अचैन। सब नई तहां जुवती सवास। उन रहि घेर छाऐ न पा
स। कबु न ऐ आन अति राज क्रुध। वढपरयो किध्रु काज विरुध। अपमांन नयो कबु राज
दार हि न किरयो किधू ति हि उपउपार। काउ लई व्रति सक वी बुझाय। उज जुवती उवि
त शुचित सुनाय। गुरउवाच। कहा कहू कबु कहि बैन जोग। उरि उठी सहय अति छि
(प्रियोग) विपरीत नई यक आन वात। सो दहत नही अंतर समात। पै अंत कहै वनि दे
क पाल। सहि जात नही हम परम साल। कल लज्यो नृप हि दिक बक कतकाल। पढि
यो सु पढाव नव वट साल। कुल अर उचित विद्याकुवार। सब ता हि पढावत कसौसा
र। सो लहे एक दैवार संत। उनि गहलो कुवर विपरीत पंथ। इह सुने राज जो अनाचा
र। कहि हि ये न संक हतिहै कुमार। नव तब मकछु यह बुध दियाप। अनिक है संकक

हिजैतुपाय॥सिसुहतेराजहमअजसुहोय॥पदबेदकरतसटसुकनसोय॥
इहनईआंनचिंताअसेस॥कछुवनतनाहिकारनविसेस॥सोयहो एकउहनामसार
केउपजिकबुक्तयाकुवार॥इहसुनतविप्रवनिताअपार॥चटसालमाइतहांन्रिपकुवार
कुजविया॥मिलीसबपायसोध॥प्रहलादकतसिष्याप्रबोध॥गुरस्त्रीउवाच॥कहिदेनकहि
तगुरन्रिपहिनिंद॥तिनहोतहमहिसुनपरमबेद॥न्रिपदहतैतोहिसंदेहनांहि॥यहहोयप
लयपुनिकहांजांहि॥मुषकवनदिषावहितबहिरांन॥इहबाळउतविपरीतवांन॥प्र
हलादवाच॥सबसुनहुमाततुमहृदयसुध॥विपरीतवानजिहहरिविरुध॥मोहियै
हैवानउधारमूल॥तिहतजुनाहिहैपांनतूल॥यवानरहहुयैजाकुपांन॥निजबुध
इहैमेरेनिदांन॥गुरस्त्रीउवाच॥सुरनामलेततूवारवार॥कहकाजकहातेरेकुवा
र॥सुरअसुरिजबैपलिजुधहोय॥सुरविजयपराजयअसुरसोय॥सुरिउष्टहोय
महानागपाय॥नषबाधककरैनिसेषराय॥तुमपढतअबैजोब्रह्मग्यान॥जिह्नाधिका
रितामहिविधांन॥तुमपढहुअसुरिविद्याप्रवीन॥दनुहोहुचष्टसुरपरहिहीन॥
आगमननिगमजलथलअकास॥पातालगवनसीषहुप्रकास॥जलबलरुधनुर्वि
द्याप्रवीन॥वसकरनजुहमायानवीन॥पर्कायगवनआकर्षणान॥जलबादउतपट
रूसुजांन॥एसबैपठहुविद्याअपंक॥सुरिराजनमाहुजेहुनंक॥प्रहलादोवाच॥
प्रहलादबोधलतबनरुमोर॥हमतुमहिनांहिबकवादगोर॥महिलगतसुवि
द्याइहैमाय॥जिहपढेवंसनहिनरकजाय॥मोहिसबैअविद्याअवरसूफ॥यहिहै
जोनारदकह्योगूंक॥कविरोवाचासोरठा॥सबैरहीसमजाय॥बालकमूल
नमांनही॥जलहीतेउपजाय॥जोजलकमलनतीजही॥१॥छंदपधरी॥जेरंगेसा
मसुंदरसुरंग॥फिरचढतनहितिहओररंग॥वियजायकहोतबप्रियनिकेत॥प्र
हलादनबाछतब्रमहेत॥गुरउत्रसंकमर्कागहीर॥पुनिआनबोलीअंतरअधीर॥
संडाउवाच॥मततदेकहुवरअबदोसमोहि॥करितारन्नयोप्रतिकूलतोहि॥इ
मकतन्रिपहिअबकरहराय॥विनकहेनिकारेदेसराय॥प्रहलादोवाच॥तुमक
हउराजपहिजहिनिसंक॥मैपदेउनैचदैतअंक॥सोतजुनांहिजोतजहिप्रांन॥इ
हसुनकसंडमर्कानिदांन॥संडाउवाचकुंडलीया॥मुढपिजावहिराजमत जो
पैतुमबलवंत वाकेचलिबेमूलता तेरोकैहैअंत तेरोकैहैअंत द्वारिजाकेगज
गाजे देसकोसरथबाज सुभटबहुसेनसमाजे अरुवनितासतजूथ दंडसुरि
उरिकोआवे उष्टअसुरवहदास मुढमतराजपिजावे॥प्रहलादउवाच॥छंदभु
जंगीप्रियात॥कहामतमातंगजोद्वारिगाजे॥वनीहैमजंजीरघंटाविराजे॥मदंमो
वि षदंतावलीसुभ्रसोहै॥नऐकर्णअंगीजोतुंगीमोहै॥सतमेघघैरैचलैआपरंगी॥प १७
रैलोहजंजीरऐचैअनंगी॥वृथाऐविनारामसंदेहनांही॥सबैनिष्टजैहैमनेअन्न

भ्रांती॥कहाबाजबेगीबंधेबाजसाला॥जरंजीनराजेबंधीकंठमाला॥महातेजताजी
सुषंबागसाचे॥चढेपीलपीलंथितंथालनाचे॥धराबायुधावैतिरछेतरंके॥मनोफाललंघू
लसाषाफरके॥सबैमृतिकापिंडभूमीसमेहै॥जगंनाथथेथीनएनर्कजेहै॥कहासंद
नंसंगसोनायमानं॥रसीरिसमंपद्मदूरेसमानं॥सबैरामदीनंसुमिथ्याबषानं॥कहास्त्र
रिसामंतसेवासयानं॥सकैदेहआयुधसानंधसानै॥कहादास्नीमांनबाजेबधाए
जिन्हैगर्जतेमेघगर्जेलजाए॥कहाआतपत्रंजलदंसमानं॥समंहैंदंडसोन्नातडितं
लजाने॥कहासिंघपीठंसोबणेबनाए॥कहाचाबरंस्वेतबक्षंधांवलाए॥कहाकोस
धानंधनंअत्रमानं॥बनेदेसबासंउदेअस्तनानं॥कहासेकसप्पांसुषंनोगपसाजे॥नृथ्य
गीतनृत्यादिनानाविराजे॥कहामिदरससथानंअबासं॥कहाइतमित्रीवलैवितलीनै॥
कहासेनचतुरंगसंगप्रवीनै॥कहाकोटदुरंगअगंजीतराजे॥सबैरघुकंशूरजंब्रसा
जे॥जडेद्वारकपाटसारंजकीरं॥रचैनैषिलषाईभरीनितनीरं॥कहानृपमंत्रपंसनासत्य
सोहै॥कहादासबबाससेवाविमोहै॥कहावर्णआरूढराजावाक्यकारी॥कहापाटनहाट
बिणजंब्योहारी॥कहाइतलीनारमेंथानथानं॥वृथालक्षकोटीसदीपंध्वजानं॥क
हागोमथ्यासीनकोलैविराजी॥समंदेममुक्तानुश्रृंगारसाजी॥कहातुरंगअद्भुततेगथां
नं॥समचार्णवाघजंत्रनयानं॥कहानृमआरूढष्पबंबंधुनाचे॥मृधंसावजंनेटआपि
टताचे॥सरंसारसंअबंछअंबोजफूलै॥कहागुकउजंसंगभृंगफूलै॥कहातोयतेजं
नदंदीपवानं॥कहामच्छकच्छेतटंषोलतानं॥महाग्राहआवर्तजंतुनयानं॥कहा
सागरंओरकिसीकयानं॥महाषांनवैरागरंषोदकढै॥नगंलालहीरामणीमोल
बढै॥कहाबाटिकाब्रषसोहासुहाए॥रचैनित्तफूलेफलेविस्तनाए॥समंरंग
सोरंगपिकंमोरसोरं॥कृतंनिरफरंसीतछायासमोरं॥कहाकूपवापीसुढारंसवा
री॥हिमंतारकुंनंतरैंनीरनारी॥कहाछेजल्धाकेरमैंवारनारी॥विलसैंरसेसेकड
बाधिकारी॥कहाप्रेमवंतीत्रियाज्यूथपाए॥रसीरूपकीरासषेलेबिजाए॥त्रियामुग्ध
मध्याजुप्रोढाप्रमानं॥समंषोडसश्रृंगारषनंमोहमानं॥निजंनायकाअष्टभोगंअघानं॥सु
वासेसुगंधंस्वरूपं॥सुमानंसतंजूथदासीसुभ्रसेवसाजै॥बनैअबअबाससकावि
राजे॥कहाआपअश्वैसैसुकीनेकहाबेवकीयुवकारकहाविर्दकावे॥कहानादनाद्ये
करेदांनदीनै॥कहाआपत्रलोककोराजकीते॥विनानरूऐतेअन्नथ्याबषानो॥
सुहैऐकनारायनैनित्यमानो॥सबैपावकूगेपढेब्रजसंझा॥यहैनर्ककोमूलदेषो
अषंझा॥संकातवाच॥कहाबेसविद्यातजेतेबझाई॥कहारामनामंरटेसोनपाई
कहाबापक्यूंगातजेउषदीनै॥कहासत्रूकोनामसानंदलीनै॥कहाआपकोध्रम
सोहीनजांने॥कहासत्रुसेवाकियैध्रममाने॥कहासत्रुसोबिग्नेनेमित्रदोषी॥कहा
ध्रमबाधीनएपापपोषी॥कहाबापअपमानरूसंसमाने॥कहागुरुपीलैकहास्वारि

छांनै ॥ प्रहलादोवाच ॥ कहा मुद संभाइजातीकहावै ॥ छेकर्म नि ऐश्रौत्रसंध्या
अन्हावै ॥ कहादेव अध्यायनउपवितधारे ॥ सतंपावछस्त कंटीकासवारे ॥ क
ऐबारदेषैकरैमूढमोही ॥ जथा नावकैहैसबैसिधुतोही ॥ यहेबालज्ञानैसुत्र
अपजांनै ॥ नहेवंसबौरै नृपकेअघानै ॥ कहासेतमाथेकहाबालदेही ॥ नयो
रांमधेषीरूनांमेसनेही ॥ महामुढ नोचृधस्व्रेतलेषै ॥ नयोबालज्ञांनीमहाब
धदेषै ॥ कतेपादउतांनबधंनपालं ॥ ध्रुवंपंचवर्षकृतेदेहबालं ॥ कहोको नहू
न्यौतिस्योकोनिदांनं ॥ इहैज्ञांननीकोकिध्रूवेवषांनं ॥ संडाउवाच ॥ कहा
दासनयोत्सत्रुकौ ॥ मैटपीताकीकांन ॥ जोयातेकछुउपजै ॥ मैरोदोषनमान ॥ क
विरोवाच ॥ १ ॥ गुरसुतहू कहियहगयो ॥ अंतरउरसविषाद ॥ सबनारीऐ
कत्रकै ॥ पूछतगतप्रहलाद ॥ २ ॥ संडाउवाच ॥ कुंडलियां ॥ स्वांनपूछकी
वक्रता ॥ अरुप्रहलादकोनाव ॥ कोटजतनकहिकहियकै ॥ निकनतजेतस
नाव ॥ निकनतजततसनाव ॥ वंसमैपोयवनाई ॥ उनराषीषटमास ॥ निकस
वेकीवकाई ॥ जुरकअनेकनमैकल्यो ॥ सोसबमान्योतुछ ॥ अपनोनावनव
न्ही ॥ जैसेस्वानकीपूछ ॥ १ ॥ कविरोवाच ॥ छंद प ॥ तबसुक वंसकीजेक
लित्र ॥ सबजालनई प्रहलादजत्र ॥ उनिकुवरआनघेरौसुभाई ॥ तेकहन
लगीवातैवनाई ॥ गुरस्त्रीयोवाच ॥ मतिपुत्रजरावैजरैदेह ॥ मतिरांमनांममु
षफेरलेह ॥ तुव आसककैसबवंसआज ॥ तोयदेषवफुलितहोहिराज ॥
तुहोहिराजथंभनकुवार ॥ सुरराजसाज्ञसुरउरउजार ॥ सुरहोहिपीन
आसुरसहाय ॥ अबकरकुकवरसोऐउपाय ॥ तबनयोजन्मतेरोकुवा
र ॥ नृपग्रेहवजेसानंदथार ॥ सुवचनरहेतोसुजुतात ॥ सुषलोनउतारैदेष
मात ॥ कषतेरेहमकोहोतदुष ॥ सुषतोहिहमैतबपरमसुष ॥ जाजुलितते
जनृपअत्नसुवंक ॥ सोपानहततनहीकर्तसंक ॥ पितुवचनउत्रजोकरै
नंग ॥ पितुबधकनामपावैअनंग ॥ पितुमातपुत्रजोदेहैसुष ॥ तेदेहधिन्यक
हीयेविदुष ॥ सुषहोयनृपत्तिपरिवारअब ॥ सोपाठपठकृतकुवरअब
नवषंक्क कक मागकुनवाय ॥ सुरराजसुरन संकटमनाय ॥ कीजेविवाह
मनमोदकार ॥ सुरअसुरनागकिंनासुवार ॥ वनिताविवाहकरियेविलास
सोगंधसेऊउतमअवासपविद्योसकरकुनवरसस्वार ॥ वनिताअनेक
मुग्धाविहार ॥ इहवचनकह्यो ॥ वियवारवार ॥ करिअवनमुंदबेवोकुवार ॥ प्र
हलादवाच ॥ इक रांमनांमकारनउधार ॥ विननकुवृथाजीवोसंसार ॥ इह ॥ १८
परतजांनमोहिपुत्रअंधार ॥ विषीयादिकआसीविषविचार ॥ जगमिथ्यादेव
यलोकराज ॥ सबबंध्याआदिसंपत्तसमाज ॥ कहावैठैसिंघासनवनाय ॥

सिरबत्रकहाचामरदुलाय ॥ कहा तुवनवनाऐस सथांन ॥ सुष सेजकहा सोगं
धसमांन ॥ कहा तुरषवीत्या जिहनामहेत ॥ सत पुत्र कहा जो जतससमेत ॥ कहा अ
पवने अरु त्रियवनाय ॥ सुंदर स्वरूप मुग्धा सुनाय ॥ सोगंध कहा षोडस सिंगा
र ॥ बहु रंग वस्त्र पहरे सुढार ॥ कहा अंजन मंजन तिलक तेल ॥ तांबूल कहा रति
रंग बेल ॥ पदनूपर किकहा सहायमांन ॥ छुद्रघंट कहा रलिन समांन ॥ नग जटित
कहा कर बिलय नेक ॥ अरु कहा कंठ भूषन अनेक ॥ श्रुत कहा हेमकुंडल
समाय ॥ बहु मोल जास मुक्ता बनाय ॥ उपमा कहा पंजन नैन मीन ॥ करि भाल क
हार बितिलक कीन ॥ लटि बुट कहा चंपक सुवेस ॥ सुन सरल कहा जो पास केस
आवरन कहा पटवास अंग ॥ मातंग चाल अंगन बिहंग ॥ इह रूप कहा जो पियरि
झाइ ॥ सब आदि अंत भूमी समाइ ॥ त्रिय आदि सबै निंदत स्वरूप ॥ परि कून कहै टेति
ह मोह कूप ॥ त्रिय रूप रसे वास वर्ष्ठतीस ॥ नए रघु सह सत न आप सीस ॥ त्रनिकु
ते ब्रम इह रूप लीन ॥ नौ पंच मन मल्ल कम्राप नीन ॥ इह होत्र सिंकर घुवंस राज
कियइ है मोह सब चेष्ट काज ॥ मो लिस्त कु ते अस्प बल प्रवीन ॥ द्रुपद षवंस
बनास कीन ॥ स्त्री योवाच ॥ दुहा ॥ तो कहत ज्यो लल यह ॥ कीजै कहा कुवार ॥ जो
पे त्रिय निंदित महा ॥ को आदत संसार ॥१॥ तुम ब्रह्म ते उपजत ॥ बिना ध्रुत
मात ॥ ईह उपदेस न तब कह्यौ ॥ जब भ्या होतु व तात ॥२॥ प्रह्लादोवाच ॥ छंद प
धुर बध्धक रत मिथ्या विवाद ॥ गुण कतु कबोध सुधरीस वाद ॥ जो सुनै कुतै मेग
रनत्यांन ॥ वह विना नरक तमो हि आंस ॥ मो जननिक ह्यो नासद श्कास ॥ सीतल
गहै मेग नैवास ॥ मन और त्रिया तलहि विरोध ॥ सोल हे नेक मम जन्म सोध ॥ वह
रातन होगजत उदर वास ॥ जो फल का फिथ निक सत प्रकास ॥ सोर हितना हि त्रि
य उदर ज्ञांन ॥ सुरगुर हि देह सिद्धा सुजांन ॥ मो ता हि नहीं बकवाद घोर ॥ हम नए
अंध रूक केन और ॥ कुंडलिया ॥ कूकरी स्कान्हा क जो ॥ चावत के स्वछंद ॥ ता रू
क दौको नैर तिर ॥ च लेरु दरि के बुंद ॥ च लैरु धरि के छंद ॥ अस्थिलो ज्ञूलपटां
ने ॥ ताक हि चाट तस्वांन ॥ लियै एकांत सयाने ॥ सो ही कामी पुरिष ॥ प्रेम युत रहत वि
षय पर ॥ नहीं अघात नहीं तजत ॥ हान रूके ज्या कूकर ॥१॥ छंद पधरी ॥ जो तुम
जुवती रूप बषानौ ॥ तिनको मोप हि सुनहु निरदानो ॥ जिह तन मंजन वस्त्र सुसाजे
लषपटं तर नादिक लाजे ॥ जिह सिर मांग सुहाग सुवारहि ॥ भूपति केसवास विस्ता
रहि ॥ मध्य विभाग मांग मुक्ता गन ॥ रिषपंकति मान हुनन अंगन ॥ मांग सिंदूर न्नरी
सुपकारा ॥ रवि तलिया विच सुर स्वरी धारा ॥ व निपाटी जन अस्ति विसाला ॥ स्यांम जल
द सिसर उवरि सुढाला ॥ वेनी कुसम कुरंव नाइ ॥ नागिन मनहु पयोनिधन्हाई ॥ जिह
सिर लपट पास सुकरावत ॥ रसवस केश्रिय पाव लगावत ॥ मनमीन न अलि कांचन

ससी ॥ केचितपथकपासपसरीसी ॥ राजतमालिमयटीकोऐसो ॥ नामनिनालज्ञा
गमिलजैसो ॥ कुंकमबिंददेतभ्रिऐसी ॥ अरधचंदपर्व्वदिनवेसी ॥ जिहमुषचुहावछिन॰
तीवही ॥ अलिसुतछूकितदेषिबपावही ॥ स्वुरणरेषनयत्रकुटीऐसी ॥ राजतवीद
करनसीजैसी ॥ तिहनासावेसरछबिबनावत ॥ मुषमुक्तागहिसुकबिटकावत ॥ जि
हमुषश्रवनसुक्रतिमनमोहै ॥ स्वातीबूंदमुक्ताफलसोहै ॥ कुंडलकनकविराज
तकेसै ॥ ससीपासजुगदिनकरजैसे ॥ तिहमुषसुनगकपोलसुहाए ॥ मानकुचि
कनकतबकसेताए ॥ जिहदृगविहदवंकरतनारे ॥ मीनमृगषंजुषजनगनहारै ॥ उनि
अंजनमंजनचषकोरे ॥ मदनविसषमानकुविषघोरे ॥ कर्तकटाछश्रवनलग
कैसो ॥ उछलमीनजलबाहिरऐसे ॥ सुनगस्वरूपदृतेपरसोहै ॥ तरुनकहात
रुनीमनमोहै ॥ जिहमुषमध्यदसनयुलसै ॥ जनुविकसेदाडिमसेहसै ॥ सहज
रागअधरनअरुनाई ॥ मांनकुपानपानसेषाई ॥ हसतसुगंधस्वासछबिछाव
त ॥ मानकुफूकैमदनजगावत ॥ जिहमुषवानीमधुरवषांनो ॥ मोहनमंत्रपढत
सीमांनो ॥ जिहमुषविंबुकबिंदीवनऐसे ॥ राकाचंदराहुरदजैसो ॥ कंठकपो
तसोनितसुविसेषा ॥ राजतरुद्रगरिलकीरेषा ॥ उनिउरमुक्ताहारसुवावहि
मेरुकुतेसुरसुरिअधावहि ॥ ग्रीवासुमनिमालसुविसाल ॥ मदनसदनमनुवंद
नमाला ॥ वनिताअंगविसेषवषानै ॥ प्रियभुजलतापीवसेमांनै ॥ जेकरीकमल
कवलछबिबदेहै ॥ बूमततविरहउधधग्रहिलैहै ॥ भुजजुगउरधअलसवासि
जुरित ॥ बूटितमनकुलडतसीलूटित ॥ करिचूरीबिलीयादिकराजीत ॥ मांनहु
मदनफांदसेसाजत ॥ करिपल्लवसुछायतमोहै ॥ चंपककलीसालिक्रतसोहै
पलवजातअरुनसुनऐसे ॥ मकरकेतरथनोदनजैसे ॥ कुचककोरक
रिकुंनविराजित ॥ सुफिनावरोमावलिसाजत ॥ उरजउतंगवनतयुगऐसे ॥ प्रिय
अभिलाषफलजैसे ॥ चोलीउरजवनावबनाए ॥ कांमकनैलहुउवकवंचक
साऐ ॥ तनवनिअस्तकंचुकीतुटी ॥ कनकरेषधरिकामकसुटी ॥ पिष्टनागपसोज्ञा
योलागत ॥ कांमपाउपाटीअनुरागत ॥ निमनानसरषगमनिलोना ॥ त्रविलतरंग
अतुलिवियसोना ॥ कटिमलियदितमेषलाराजहि ॥ समतारदितसिंघगनलाज
हि ॥ जेनितंबकंदलीसमलीने ॥ जेपदकमलकमलसमभीने ॥ ऐमीअरुनवीराज
ऐसे ॥ कंदलीदृफतबिनारजजैसे ॥ नूपरिधुनकंकनरवविराजै ॥ कामदुहरिमनुमं
गलवाजे ॥ गजगतिविलहिपतहिअतनावत ॥ रतीमनकुपतिमिंदरआवत ॥ जि
हतनउद्यानुहिनधारी ॥ मनकुंवसंतदुरीसुषकारी ॥ जिहतनसहजसुवास
सुहाई ॥ मलियवातचलिमनुउपराई ॥ जिहतनवसनविराजतऐसे ॥ दामनिज
लदजपेटीजैसे ॥ तनबकुरंगवसनफहरावहि ॥ वातविधूतजलदसेधावहि ॥

जिहसमयप्रमुदितनरतितेंछबिबअधकाही। गतहिविलोकसुरललनाही। भूषन
वसनवनीपियप्यारिकेरिय। जिहसमयमुदितसुषकारी। नवसतसाजमिलनम
नभावन। मनुमनमथरतिकरियरूआवन। जिहतनपरसतपियसुषवाढत। जे
मिलविरहनाटसलकाढत। जितनपतसज्यात्रनुसरही। हाकिनावसंजुतमनह
रही। जितनषष्वतपियअनुरागन। कनककंजषचितमानकगन। सुंदरितन
श्रमकेकनसोहैं। मेरुअंगजनुओसविमोहैं। जानततसबैसुषदजुवतीतन। पति
अभिलाषकरतपरिपूरन। जिहसतचनपलोटततदासी। देषतहोतहिसोतनुदा
सी। तुमजुवतीतनअंगविसेषे। निंदतनासहैतमेदेषे। जिहतनपियसंपरसपवढैहैं
सोपेअतभारमिलजैहैं। कविरोवाच दूहा। जेसेगंधविगंधमिलनिकसतहैसब
गेर। देषोमहिमापवनकी। आवनऔरेऔर।१। तोहीसिसप्रहलादसिष। सबहि
नकीसुनलेत। आपअसंगअलिप्तरही। नहिभाफतहरिहेत।२। इहविधपल्टोत
रनऐ। गुरुपत्नीप्रहलाद। उठिगवीनीघरिआपनै। पतहिमिलीसविषाद।३। संडा
उवाच। छंदपधरी। तुमजउबउवेपियकूविचार। कहुमांनतहैसिष्याकुवार। प
त्नीउवाच। समझायकह्योहमग्यांनगूढ। नहीहोतऐकतेदोयमूढ। दूहा। जो
नाबीसोहोयहै। नृपहिकह्योसमझाय। कहाकटारीहुकिहै। विटकीयपधरा
य।४। कहिजैतुमपियराजसों। औरफेरसोवात। जातेइहबालकजिये। केनपरे
उतपात।५। संडाउवाच चौपई। तुमधोकहोकहाहमकहिहै। जिनतेराज
रोसनहिगहिहै। स्त्रीरुवाच। ज्ञाताततत्वनयोयहबाल। नागपतुमारेवहैनृपा
ल। संडावाच। अंततिहारेपियकोग्यान। ऐसीकहतेजियकौज्यांन। हमक
हिहैसुधीसमझाय। जोहोनीसोकैहैजाय। कविरोवाच। सडासेसबद्यौअस
राल। अतिआतुरिआयोचटसाल। दूहा। बालविलोक्योपढतगुर। रांमनाममनि
संक। विधनाजीष्योसुनाटलै। लिषलिलाटपटअंक। संडाउवाच। छंदपधरी
मेवरज्योबालकबहुतवार। नहितजतकुविद्याकुलकुचार। इहग्यांनबाक
अजऊअग्यांन। एकटुकनयोकिमतोहिग्यांन। लकुबधकुवरतजमनकुचा
ल। हमपायपरतकुयचेकृपाल। प्रहलादवाच दूहा। कहाकरोविधनिरम
यो। एकहग्यांनअजांन। संभारहरिकेनांमपरि। वारिदिवसतप्रांन।१। संडाउवाच। छं
दपधरी। उठिबिनकुबुलावहितोहिराज। अबकहाहमहिसकवादकाज। क
विरोवाच। इहसुनततउगवनोकुवार। सावंदजातपितुपहसुढार। गुरहूरमिले
तवदेरिआय। ततिपरघवालजलचढतजाय।१६०। गुरगयोलियेजहअसुररा
य। सुतपांनपटअपनेसुनाय। गुरकह्योतबेनृपसोंसुनाई। इहबालकनाहिन
पढतराहि। हमरहिजतनकरिकरिअनेक। इहकबूरनबाफेआपटेक। अबह
महिदोसनाहीनरेस। हमसबेकहोकारनविसेस। समझायकयोआउन
समांन। जोउनतजेयौवसमग्यांन। नृपकह्योबहिहिजहिरिमाय। तूपढ्योकहा

कहिमो हि सुनाय ॥ नृपनि कटगयो बालक सधीर ॥ प्रहलाद नाम हरि न कू वीर
मै पढैउ नय अदास नृप ॥ सुन राम नाम हरि हरि सरूप ॥ हिरणाकिसप उवाच
अैको न पढ ए तो हि अंक ॥ सो कहउ तुम सो निसंक ॥ प्रहलादोवाच ॥ इह मोय
दएना रदवताय ॥ मन वाच कर्म हम पढत राय ॥ कविरोवाच ॥ इह सुनत दैत पर जु
स्यो अंग ॥ घुत नए मन कुं कृत नु कप संग कर षग्ग्यान ओ आसुरिक रूर ॥ सोयुसे
वीवमंत्री समूर ॥ ईह पढ्यो चूलि अज्ञान आज ॥ अपराध छिमकु राजाधिराज ॥ इ
ज सुनी बाल वियअबधदेव ॥ ईह सुन्यो सुकृपद रधर्म नेव ॥ यह जान कहत हम फेर
राय ॥ करि जोर तिहारे श्रेयकाज ॥ उ निक उकि कृपा ईत नी सुचाल ॥ यह कुवरि पगावकु
फेरसाल ॥ इह पटे फेर तो दंड दीज ॥ कुल पाव पढे तो कृपा कीज ॥ राजोवाच ॥ इह बै
वो है मुष काल मांहि ॥ अब मृत्यु बुलावे देत बांहि ॥ लेजाकु सविवत हां कुवर मात
मम काय कहो सब विवरवात ॥ उषवयक होतु मत्याई हूत ॥ मग छ्यो फ हूं प दिन पत
हूत ॥ कविरोवाच ॥ लेगयो जहां मित्री सवास ॥ प्रहलाद हि निज जननी अवास ॥ स
बदयो कयाधुस विवसोध ॥ उनि कर्त्त नई उत्त हि प्रबोध ॥ बेगा रिअंक सिर सुंघ माय ॥ सु
तदेत वई सिक्षा सुनाय ॥ सको व रूप नृपको संनार ॥ दगप नर्त कयाधू देत गार ॥ मा
ताउवाच ॥ सुर नजत कहुं नाहि न सुनाव ॥ तुम उनहि निरंतर वैर नाव ॥ निस दिवस प
ढत तत सनु नाम ॥ तिह नाव उत्त तो हि कवन काम ॥ देवासुर जुद्ध हि सुनो गीत ॥ सुरि होत
विजय दनु पराजीत ॥ ~~इह हत्यो जाहि त कहत रांम~~ नित पढत जाहि तत जान इष्ट ॥ तिह
मास्यो संषासुरे ब लिष्ट ॥ तब पिता भ्रात हिरण्याख्य नाम ॥ इह हत्यो जाहि त कहत राम
त लेकु वयरकै दास होय ॥ इह कर्म न लोक हि हैन कोय ॥ तू पढत ब्रह्मविद्या न कुल
कहु गई असुर विद्या सम्मूल ॥ कुल वधु वहै कुल लाज लीन ॥ सो उत्र पिता आज्ञा अ
धीन ॥ मातंग रहत अंकुस हि मान ॥ निरमूल व है गज तिल्क जान ॥ कल अगर ईषक
सिये त्रसेष ॥ रस वास व है वानी विसेष ॥ प्रहलादोवाच ॥ दोहा ॥ मै कसराच्यो आनमम
जो तहि मिले अनंग ॥ गोउ सां मस्तु जान रंग ॥ चढत न आंन कु रंग ॥ १ ॥ कहा वकु
बकवादि लग ॥ माता सुनकु निदांन ॥ मै पायो हरि नाम निध ॥ दीऐ वधाइ पान ॥ २ ॥ मा
ताउवाच ॥ बंदप ॥ तू कहा वैर लेहै क हूत ॥ जो नयो सतु सेव गध्यनूत ॥ उषवक्षन
कहत रांनी सुदेस ॥ सुत हेत इते उत्तन यन रेस ॥ गति नई छब्बूद री सर्पग्रास ॥ चषन
गत पैन षव प विनास ॥ कुल राज सदा मित्री धिकार ॥ हम कहा कहे तुम बुध्य सार ॥ धन
धान ईहै मेरे कुवार ॥ सो आहि अंध वटका अधार ॥ धरिबा हि तुमे सो पति वधान ॥ सो क
रकू नंग नहीं हो रूपांन ॥ किह मांत जीयत इह रहिक हूत ॥ तब दांन तिहारो मन कु
हूत ॥ मो वच्च मंत्र कहिये महीप ॥ प्रज्वलत मन कुन ए स्यातव ॥ नृतिग र्वनयो केगर्व
मोच ॥ के नयो निष्टफल कहा सोच ॥ ईह षोज परि कुमत आपराय ॥ कुल नौ कलिक २०
कर विष हि षाय ॥ नहि कटत अगश्र तिउपजव्याध ॥ पितवाय नरेक बुन ई उपाध
कविरोवाच ॥ लेगयो उत सिसु नृपति केत ॥ सब नीत वचन कहि सहत हेत ॥ उवि

कहेसचबरांनीकहाव सुनियेयोनृपतिस्वात्मकसुभाव नृपकह्योसंक्रमकौसु
हेरलेजाकुसबहिवटसालफेर आसुरीधर्मविद्याअपार अधियनकरावकु
गुरकवार यहपढेअविद्याकेरमूढ ततकालकहतुम्मोसोदृमूढ लिपदईता
हिपाटीकुजात उनिकीनआनरांनीप्रसंस प्रहलादबुद्धमिनुअग्निगात जविगऐत
बेरनिवासराज मुकुटकुटलिचपरकसाज उनिकीनआनरांनीप्रसंस थिरसेक
कुरुकबत्रावतंस।रांनिउवाच॥ अपराधनहिनहमबालनाथ इतकंवकरतजहेसु
पहाथ सुपनएसनुबहमित्रबेद अविलंबकारसोइकरतबेक इहनयोएकमहि
कहत सिसुहतेपापनृपजेअनंत परिजनपालयाकेकपाल मुहअग्नितिदेकुदेस
हिनिकाल।कविरोवाच॥ विषरोषकारिसबनीत मनुगुरउमंत्रअहिकरिविरामउ
नहतीयघोसगुरप्रातिकाल कुजनऐउआनधितचटसाल १।दुहा।सिसुकेएक
अधारिहरि कपपांनीकोप्रीत ज्योंजलमीनहिपरिहरै त्यांमेहानप्रतीत१।पि
ताबधुउरजनतज्यो माततज्योब्रहजाद सोहरिदृढकरिसंग्रह्यो देषोप्रेम
प्रसाद २।पढैनिरंतरनामहरि अंतरपरननदेह मनमिलज्योजलदुधलो बा
लकनयोविदेह ३।छंदपधरी॥करकंतअधरकुजनसुमोफेर सिसुरामनामगु
पकलोटेर सुनिउग्रोतबेसंकाअसंक करिचर्मसिसुहिमारननिसंक कै
बाफिकुम्हरिचरामनांम कैयहेमारिफरोसुगम करनऐकावनहीवजतपाय
जलमिलतनेत्रनहीदेषीजाय तारूहजिम्मिलदंततास श्रुतनाकसुधनही
कुरतस्वास अकुलायगिरयोगुरिलुटतभूम अनुतनयोसिसुरहेफूम कछुका
लगयोनोकुजहिचेत उवगयोदौरिचितपतनिकेत करिपादफिकारेमुढविष
चुतातकहिहराजहसविप सुतरटतरामनांमहिविसेस हमदेहतुयासं
थानरेस प्रज्वलोराजकुजकहवार आरस्कनेनकोधाधिकार प्रहलादच्छ
मावहिसबेटेक योकहतउष्टदौरेअनेक प्रहलाऐबालआसुरउगाय पा
रिक्तापांनहरिरटतजाय जबनइदिष्टगोचरनिवेस प्रहलादकरतचिता
विसेस।कुंडलीया॥ मोहिनसेसोस्वांमको सोनहमिथ्याहोय दीनसहायक
उष्टदम बिरदकहावतसोय बिरुदकहावतिसोय दीनदासहिरुपवारे
तहांप्रगटेतिहिरूप जहांजिहनायसंभारे एसबकीटपतंग रोससवकहस
रोसे सोमिथ्यानहीहोय मोहीजोस्वांमनरोसो १।मेरेस्वांमप्रधारहै मनहरहै
नितअसबवातांनरतलालनहै है अंत तलनहै है अंततादिकुरषोजनपे
बो नकुविरोधीहोयजरनसफोहेजेबो पनुऐहैसुरसंग नेकआतुरकेदेरे
कुसबतेबलवंत स्वामआधारसुमेरे २।छंदपधरी॥ तणकोटमिलेआसुरअपान
प्रहलादरएक्किकणकासमांन सोसूजपरतसबहीनबाल प्रगट्योमनुआसुरप्र
लयकाल करचापबांननृपअतीसकुध प्रहलादअग्रगाहेउबुध।राजावाच॥न
बताहिनऐउबितनृपाल कहापढ्योसुभावहिमोहिबाल।प्रहलादवाचदुहा॥

मैजुपद्यो ईकनाम हरि॥ तुम हि सुनाउ सब॥ उहि निरंतर पढत हम॥ कह्यातब
कहा अब॥ १॥ छंदपधरी॥ ईह सुनत हि सधन कुरू बांन॥ आकर्षक रूयो लैकु
रू कांन॥ राजावाच॥ अब बोल बुझावहि तोहि मुच॥ जिह जपत निरंतर ज्ञं
न गुर॥ कविरोवाच॥ नृप बांन देष सिसूनयो त्रास॥ हरि हर चैमा हिम तबु वैता
स॥ राजावाच॥ उर वेध करूं तोहि बांन बाल॥ पतिपालक रैबोल कु सुला
ल॥ निसद्यो सजपत तजा सनांम॥ अब कहो कहांवे सोइ स्यांम॥ इह जानक
हत हम तो हि धूत॥ अजमत भ्यान कुछ बांन द्रुत॥ सब सत्रू परोसी लगी आग॥ तब
बीनत कूपसब नीर लाग॥ दिष्यो न क रूं तू जपत जास॥ पाताल वसे कै धूं अका
स॥ अन दिष्ट न ज्योतिर मदीन॥ मो हि बाफि छत्र धरिरवीन॥ सविन्त जे मो हि तज
काल जाय॥ जोर स्यो आन सिर पर न माय॥ दुहा॥ अबा है को काहू सी सतो हि॥ नी
नेपउ गड धार॥ अति बलपा के कूलते॥ कीजे ता हि उकार॥ १॥ छंद प॥ अब हम
कूं देषे नेक ताहि॥ आरिस हा यजिह बिरद आहि॥ प्रह्लादवाच॥ तब कछु टे
र जो हो यहर॥ १ नु जो तिरही घट घट सहर॥ दुहा॥ वह जग मैं वहमां कु जग॥ बीज
फल हि फल बीज॥ जूं विछुत मही जल वसै॥ जैसे जल मही बीज॥ १॥ वह रषक नष
कव है॥ उहै उपाजि कमूल॥ सोइ मो हि बुझाय दै॥ और न जिह सम तूल॥ १॥ छंदपधरी
सब देष सुने मै विध विचार॥ उह विना आहि सोन ही संसार॥ पाताल सप्त उदर नथां
न॥ अरु कूष सप्त सागर श्मांन॥ नुज मूल जासु गिरवर निश्रंग॥ दस दिसा जा
स आनि न अंग॥ सिस सूर व क्रि जिह नेत्र जूप॥ आकास लिंग जिह परम रूप॥ ज
ल पात्र पवित्र जिह जलद जांन॥ वसुमती पीठ वेठक विसाल॥ नषित्र जाल जिह उ
ह पमाल॥ अरु वदन वेद वानी रसाल॥ अष्टादस वन जिह रोम राज॥ अरु वैम जास
मस्तक विराज॥ विधि नमीच मो हि न ही मरन देत॥ नर पैरे न तूल कुषब रलेत॥ विधस
विव जा हि सिव दंड धार॥ कुट वाल राज धरम हि निहार॥ सुरराज सहित सुरकरत
सेव॥ प्रनू दीन बंधु देवाधि देव॥ गज की टत राजू एक मांहि॥ हरि तोलनि वाहे कर्ष
बां हि॥ जिन रच्यो विसद वैराट रूप॥ ब्रहमंड कोटि उतिरो म रूप॥ तीसे अनेक ति
ह माफ की ट॥ निज ईसक हत सिस ही किरीट॥ ५६॥ कविरोवाच॥ बल वंत अस
रवुर कोप कीन॥ सुत सोक नयो मन अति मलीन॥ असत्र विनाहे सुष असेस॥ इ
हन ऐसे ऐ मुनि उ ब विसेस॥ पछिता हि हिरणकस्य प अपार॥ इह न एव ज्यो कुट
कु सुधार॥ विष रमत बृद्ध न ही भेद कोय॥ कल खग हित वै निरधार होय॥ कबु जान
१ रत मो हि न ही बाल॥ वंसावतंस को उहोत साल॥ धिक मो हि त्रिया करिय ह कीन॥
धिक काम न यो जिह रतत्र अधीन॥ जो जान परै ईह जन्म काल॥ कबु पापन हीय ह
रसो बाल॥ कहि राषन हार हि बोल दूत॥ सुवताय वहे कहां है क दूत॥ कू तो हि जरा २१
व क अग्न मांहि॥ उनि बोरि दे क जहां जल अथाह॥ उहि हिं क गिरा व क गिर उतंग
गज मस्टक रावकूं अंग अंग॥ ससो षन लेहे सो षरांन॥ वह बोलतो हि रावै निदां

त।प्रहलादवाच।जिहनाममृतुमूललोकवास।न्रपगर्वकहाअबदेउत्रास।सो
गंधउहपसक्यासहास।आनैंषनोजनरतिविलास।सतजुवतिन्नहिउर
वरनधार।अरुपियतसबैजलवारवार।जिहदेहकरतमंज्जनप्रवास।जिह
वलतविनावहिसीसवास।जिहदेहकाजतुमवट्यौगरब।सुनताहिकंक
निदानसरब।केजरीअगनउफबारजाय।महिषीदगाफदीजतमिलाय।कै
भूमिलुटततहांनकजाय।श्वागहतसिषासूकरसिंगाल।वउदेतसजनज
लमरवहाय।केषातककुक्रमकुलअघाय।मलपात्रदेहतिरकहामोह।है
नासहेतयच्यपसमोह।प्रभुजोतिरहीघटघटसमाय।जिहजोतिलषेसोउस
७६ रगजाय।मोहिरहूपकहैंजोतिमूल।सोनासततोमीमेसमूल।जलथलअकास
गिरवसतजोइ।नविन्नतरहीसोइजोतिचीनोइ।देषेसनिकटतातेनदूर।जोकहै
दूरतिहतजजरूर।मनवाचकरमहरिवर्नभूढ।सोभेदकह्योतोहिजानगूढ।रा
जावाच।छंद१।कैवकउतोसहीउनजान।व्हहतसीससबमेटकोन।अबमोहि
कहौरावहिसनूसेव।मैसबैकंनबाकिजुदेव।कोपढ्योअरुविद्याअज्ञान।गजपासरहा
उहतूशान।प्रहलादोवाच।कोपढेपढावेकहैकोन।कुलअरुसुकहाविद्यासूकोन।ग
जकोनमरैमारैसुकाहि।कोप्रानइहैदेहीकहाय।सतकंजनरेजलउरथांन।स
सिनावजनएप्रतिबिंबआंन।घटनिष्टनए[illegible]जलन्नूनिवास।वहचंदउहेएकोअ
कास।इहजानसमझिअजरूंमदांध।उहजोतिगएतनन्तूसमंध।कविरोवाच।इह
सुनतवातपरजन्नूवाल।आरुवातमनफूलनफाल।जडचरनलोहदथकरीहाथ।
जलबोरिदयोसिसुकरिअनाथ।जलजासमीनपावहिनथाह।मातंगहूरूयतम
करयाह।५००।दुहा।पानीपिसुनपिसाचवन।पावकप्रलयप्रहार।सुषपतप्रेमअरिष्टके
दीनहिदेवअधार।१।काव्य।नर्दहरिरक्तअपर्युदोतानेवकाव्य।वनेरिणेसतुज
लम्निमध्ये।महाबुधोश्वंमस्तकेवा।सुप्तंप्रमतंविषंमस्थितंवा।सर्वस्पदीनायअव
ताहिसु।दुहा।आवजामहरिनामरति।बालरह्योजलवीच।कालरह्योसेरोसवस
जग्योनिसाचरनीच।१।छंदपधरी।तिहआंनदरसदियप्रातिकाल।सबसचिवलहां
पलसुनटज्वाल।राजावाच।दसिकह्योराजसिसुषवरलेह।वहगयोकिब्रंकहं
तिर्तदेह।कविरोवाच।योकहितदोरिआसुरअपार।उहांगयेजहांजलथितकुवा
र।दुहा।तहांदेष्योअद्भुतविरत।सिसुबैठेजलजीत।परिब्रमप्रहलादप्रभु।अैसीप्री
तप्रतीत।१।छंदपधरी।तजीगयोनीरचक्रओरपास।जलमाझनयोथलसाक्का
स।हथकरीकरीअरुपयजंफीर।सुन्नपीतवस्त्रपहरेसधीर।आविरचितचंदनअं
गराग।पटचालतिल्कसिरवनीपाघ।सबअंगसंषचकाद्यअंक।सोबालदेषफु
लतनीसंक।वरुआयकह्योन्रपसोविचार।उरअसुरसूलउपनेअपार।दुहा।अै
सेप्रभुहिविसारसव।जिहजगजोतिअगुढ।आउनिमोफरिलिकलो।ईसकहावतमी
मुढ।१।प्रभुऐसेकोपरिहरै।आपकहावतराय।करवीद्बीउष्टमत।नेकनतजतसुभाव

२ । बालकव्यो जलथलनयो । आसुरनकस्यो अज्ञान उनी अपने जियकी परी । कांप
तलग्पो शान २ । छंदपधरी । इह देवकी अवितस्यो आय । सुत कालरूप उपज्यो सुन
य । आकत सुनावन हि असुर वंस । इहकपट नेपको उअमर अंस । यहवात असुरन
उरमे निहार । सिसु लाकु कछ्यो जलते निकार । तबकाल नयो जलकूत बाल । नृप
अयकस्यो लेतातकाल । राजोवाच । तबबाल देषबोल्यो नृपाल । विषअग्निथरकु
ज्वालाकराल । सबछूतकर कु अनुक्रमसमेत । जलमांझ नयो थलकबनहेत । ज
लजंतु प्रबल आवरतग्राह । मदमोषमीनपावहिन थाह । इहपायलोह हथकरी हाथ
सबबूट गई किम एकसाथ । प्रहलादोवाच । तैबाधमोहि जलकार दीन । करतार जहां
ममजतनकीन । राजोवाच । कहिमुढ जलहि करतारकोय । तुअ आहि उपासित सकट थो
थ । प्रहलादोवाच । अष्टमी चौथ जांनूं न आल । परिव्रम एक जांनूं कपाल ५१० मेरो
नटूं नानहीन साध । आकर्ष दिष्ट बंधन उपाध । कूं ऐक उपासित रांम नांम । आरिष्ट नि
वार दिउ दैसांम । सब गोर रह्यो जलथलसमाय । वह विनाश आहि सो किन सजाय ।
राजोवाच । दूहा । मो भ्राता हिरणाछ नृप होवापै बलवंत । जुग पवर्त इह गांव स्त न
हीदेष्यो नगवंत १ । बालहीबा याकालकी नयो अनौषोग्पान । वापी सरवर नदवि
हद कूंप हिमे नगवांन २ । प्रहलादवाच । कालग्रयो सो जांनिये निकटन सूझत जा
हि घटही मे बोलत उगट अजून देष्यो ताहि ३ । छंदपधरी । सुन लेकु उथम नामाधि
कार । उनरहत तमोहि मतकरे वार । इक नाम कुजाती अजामेल । आजन्म नयो धरम
हि अमेल । तीहन जे अतरहरि उन्ह हेत । गति उर्धनई मन बच समेत । सुकनिसा पढा
वत बार नार । हरिहेत नइ सुर उरविहार । वयपंचवर्ष धुव तत्वसूझ । पदच्चलयो
देषकु अगूझ । कविरोवाच । उरिअसुर वचन लगवज्रतूल । सटनयो कोपतनमनहि
सूल । घृततेलतूलकाठहि समान । ग्रहस्यो उष्टनूतलनयान । वरु घोर रासब्रासुर
अनूत । मतनिकस जात कछु केकउत । सुह अंगकीन नृपचषक रूर । उवकाय नयो
बालक समूर । आकर्ष उष्ट आसुर अनिष्ट । प्रहलादक स्योति हयदप तिष्ट । दूहा ।
राजाकी नगनी उसट । दूढा नाम अ साधि । अग्नबंध अभ्यासनी । अविरो मंत्र उपाधि १ । सो
बैठी ले गोद मह्हि । पहलाद हिति हये रूलाय दइ चक्र घांस अगनि । ज्वालकराल अछेद २
जहा लागी ढूंढा जलन । विफल नए सब मंत्र । बलबूटे प्रहलादको । लीनौ सरण सुतं
त्र ३ । ढूंढावाच । संगत साध असाध के । सदा होत सुनकाज । मेरे बूटे मंत्र बल कोउ कु
रत न ओज ४ । प्रहलादोवाच । ईह दिन तेरी मानता । कैहै जक्त असेस । जो कोतो कहि
श जहै । व टिहै आयु विसेस ५ । ईह विथ उपोत स्नए ढूंढा अरु प्रहलाद । बाल हुयो
नहतापतन । उहै जरी सविषाद ६ । छंदपधरी । उज्वल्यो अनलगत उलयकाल । ज्वा
लुल्म गिगन मिल ज्वालमाल । आसुरी असुर थिर रजू थआय । सब वोमरस्यो सुरस्थ
नआय । जबलह्यो जलन मिदर सुता । नृगिगन नई धुनिहाय हाय । ससि सूर रहे र २२
थथैवहाय । उषदीन सहत कदूदयानाथ । सुरनाद नयो हाहाअकास । हरिराय

लास
लेकुसिसुरुभषितहरिबिरदकहैअनाथनाथ॥ इहकस्योसषनबालकअनाथ॥कवि
रीवाच॥दुहा॥वासुदेवमोहमहित॥संततदीनसहाय॥दुषीनएदुषदीनके॥अनन
इजलषाय॥१॥छंदपधरी॥ज्वालाकरालजबमिटीजान॥टारतअंगारनृपआभअ
न॥पुननयोअनलफूलाप्रकास॥कछुअसुरजरेनृपहेजुपास॥जबटारकरे
पछिहांअंगार॥जबहरतवीचबैठेगोकुवार॥वहुपीतवसनअरुतिलकभाल॥तु
रसीदलमालाउरबिसाल॥आसुरीजोनसंसर्गआप॥जरिगएसबैसिसुजोनि
पाप॥ तनतायकछूजनुस्वर्णसुध॥प्रहलादअनलदेषतप्रबुध॥दुहा॥तादिनतेउ
जतिनइ॥हुहाहोरीनांम॥देषकुधेषीसाधको॥गारिदेतसबगाउ॥१॥जालनबैठी
गोदलै॥बलहिघातबिसास॥सोप्रतसंमतजालीस्यत॥पावनइउपहास॥१॥छंदप
षलकसकलकरैनोकुसलबाल॥निहचैनृपसूक्यौआपकाल॥कुलअसुरहे
तअतसयसकोप॥प्रह्लादवदनसोवटतओप॥नृपदेषउतमनमलीनकीन
रिपुफेरजीयौमनुकैनवीन॥आकासनयोजयजयासद॥सुरनएहरिकअसु
रविमद॥सुरलोकवजेदुधुनिअपार॥सुरवधूरषिकीयपुहपसार॥गंध्रबकरतर
गायगांन॥ध्रुककहतवंसआसुरअज्ञांन॥दुहा॥विणनहीटूटतवज्रतैजोजम
करतप्रहार॥नकजरैकोअगिमे॥जिहरछककरितार॥१॥जन्मनेकसंकटजथा॥वि
घुरषेसुरिवृंद॥तौहीअबप्रह्लादकौ॥बिरदलयोगोबिद॥२॥अबकुसाधहरिभक्तसो
रहिबोचितलगाय॥देषकुजलमहथलनयो॥अनलनयोजलषाय॥३॥छंदपधरी॥
नृपलयोनिकटबालकहकार॥करिजोररह्योसनमुषकुवार॥राजावा॥बलकहाद
इयहकोनमंत्र॥जिहनइअग्निसीतलसुतंत्र॥कौउएहरितजबअग्निमांह॥कछुप
ह्योकिधूसेलषिपांहि॥कोउवीरकिधुंआराधकीन्ह॥जिहक्योंअनलजालाअधीन॥
प्रह्लादवाच॥दुहा॥सुनदेषेसिमरनकरै॥स्यामविनाउरआंन॥गरिकुटोजरिजाकुसोर
सनालोवनकान॥१॥कविरीवाच॥छंदप॥कौ॥कुहोतनहीउरदयाराज॥वकुवोरदु
ष्टआसुरसमाज॥गिरएकविकटओघटउतंग॥आकासलगेअतिअगमअंग॥तदूर
ताअरुफिलअप्रमांन॥नयजंतुतहांकंदरनयान॥गुंजारसिंघघनतिसदहोत॥पकुवे
नवितपंषीकपोत॥नृपदयोतवैआयसरिसाय॥सिसुडारिदेहुपरबततवहाय॥लेगए
उद्दबालहिअनेक॥गिरसीसअसुरसबगएटेक॥सुररथनयौसोमितअकास॥हा
हंतवांणकरुणाप्रकास॥आकर्षकंवसिरयोडारि॥हरिगह्योवीचकंदुकनिहार॥गि
रमूलधर्योसानंदबाल॥सिसुसीसवर्षिसुरसुमनमाल॥सिसुडारिदयोजबसुमेरा
ज॥सानंदचलेजहांन्दत्तसमाज॥गिरमूलआयदेष्योनृपाल॥सिसुपटतरांमनामहरि
साल॥मनअसुरनदिनचितासमाय॥इहधांनलेकुकोनहिउपाय॥दुहा॥डारिद्योसिसु
सयलितै॥केलल्योहरिवीच॥प्रनूलाकेरहाकनए॥कोवपुरानृपनीच॥१॥छंदप॥ले
गयोराजसिरसराजद्वार॥सबलएबोलतहांसर्पधार॥दुहा॥सर्पलपेटेकंवपै॥तहांग
हैसिसुकस॥मंत्रकवंदनबूबुसो॥रहेभुजंगमफल॥छंदप॥नहीनस्योसर्पज

बेनक्रबाल तबबुटीजियनआसानृपाल जबकुरतकछुनाहिनउपाय।
तबसिधविचारनलगेराय कुसलाइबुलायोनिकनबाल तहांलगेदेनसिद्धा
सुवाल।राजोवाच।बसकर्मओरआकर्षमंत्र सुतपढकुअसुरविद्यासुतंत्र।शु
क्रादोवाच।कोअसुरआसुरिविद्यानरेस मोहिकाजकहापढबेविवेस मोहि
लागतविद्यासबेसूल इकरामनामअक्षरमूल सोपढतरायकुसहितहेत दिन
रातनअंतरपरनदेत कोसिधकवनसाधनस्वरूप कोविद्याअविद्याकेननृप सवि
सेषरहीघटघटसमाय स्वछंदजोतिआरतसहाय होदेषततोहिनपरतसूझ
अतदधराजतोकुअबूझ।राजोवाच।अनबूझविचारकुतोहिसूत कुलधोहसू
जहिमतअनूत सानंदपढतजोसनुज्ञांन कुलपावलगतकरिवोनिदान तुषेतल
गैसीकहतवात वातावसेषकेसन्नपात जोनजेमोहिमनवाचलाइ तोकरूवेगमो
सोवढाइ रथकरीअस्वसेवकसमाज अर्थीसनषामरछत्रसाज हिमधेहराजबिन
अर्थदेकु सुषकालमाकतैकाटलेकु।शुक्रादोवाच।दूहा।तोसोतुहीहोकुनृप मोहि
नतोसोकांम मोकहाषैचवढाइहै कुलोनहीमतचाम १ मोकहकहावढाइहै तुही
नासहिलीन हूंवाढ्योभगवानको जगजाकेआधीन २।छंदपधा।ऐरचितउचितहि
ममयअवास परिवालथूंनकेलसोचकास सुमजुवतिसेकमनसफविलास तो
सहितसबेहैकालयास।राजोवाच।नृपग्रेहनयोतुउठआय कन्यानननईस्वातिक
सुनाय धिकतोहिजनमसवनिष्टसूत कुलिगारिलगावतकाकपूत अजहूसमकि
नजमोहिआज जोवढ्योचहतसिरछत्रसाज।शुक्रादोवाच।दूहा।वढ्योवढ्योनृपका
कहैसूजतनहीनिदान सोइवढिबोजांनतूजोउरवाढेज्ञांन १।छंदप।संतोषसहि
तमनमांनमार कछ्याछिलाषगुनगरबुपारि मनमोहअहंपदकरेनास सानंद
रहेसमसावकास सतसीलसुकृतिगहिसाधसंग परिदारदव्यबाहैवसंग सुष
सीकनवायेलब्धहांन लघुरहैआपगुरिसबनमान उरसूजपरैजबतलपांन स
वराजरंकदेषेसमांन गजकीटहोयजबएकदिष्ट नवनूतगिनेकरिपर्मइष्ट निर
जीतसत्रुनिर्बंधनेह निसंकफिरेजलथलविदेह निर्लोननृत्वेनिर्दंदनित हरि
विनासकलमांनेअनीत षटच्यारएकजबलहेतत्व उनिद्रोहिविमलमायाविर
त वउपंचभूतपिंडीवनाय तुकहावढावनकहतआय कछुमेरोमोमहनहिन
राज तुमकहावढावनकहतआज तुमकूतोछिनछिनघटतजात ताकोकछुक
रियेजतनतात कैहेनकछुबलघटैदेह इहसमककरकुस्पमहिसनेह तुममोहिदी
षावतराजलोच सुनिलीजेताकेबचनछोच मनमोहलीनमायामदंध बकुनजेता
हिजेपासबंध सबकालरहैमनद्रोहलीन छिनछिनहिसूलवाढैनवीन अपमांन
अविद्याअनाचार सबदेषकुराजहिमेप्रकार पापानुरागधर्मापहार सत्सनकेहित २३
नृपतासंसार सकलराजतवनकेरूपकोदेषपरैतिहपापकूप।कविरोवाच।।स
बथकोराजसाकहिकहिसमूल शुक्रादएकमांनीनमूल।राजोवाच।नृपकहैहे

रतबपापतोहि तस्मरतबालनहीदोसमोहि।कबिरोवाच।सुकरत्तविकटभ्रकुटीवि
रूप क्रुतकोपनेत्रलोहीतकरूर बिपरीतरूपवारुणबिसाल मातंगमगायोतबनृपा
ल प्रहलादनलीनसतपीलवांन करवासचरिवगजगेरवांन अतिकष्टसाध्यवारण
अनीतबेगारिझारिवचननविनीत क्रुतबंधकंधघंटासजोपपोतास्वद्योगजन्त्रत
सकोप अंकुसत्रासकवाचवाअलीन करिणीअनेकआवतिकीन पेरयोपहारजनुपी
लवांन उनिमतंगनोजगनयान गजजूथमधमदगजगहीर जमरूपचल्योऐरावतज
जीर जनक्षनकरेनृपद्वारीजात ज्वाजुल्यमनकुंजमकीजमात इहरूपनयोनृपदि
ष्टआय दुष्टसैनकरीतामसस्वभाव गजपेरयोजबप्रहलादओर नजिवलेलोकस
बढोरढोर बैठेनिसंकप्रहलादबाल आनेनचिंतसिरभ्रमोकाल गजनयोआनसि
सुचरनलीनकरिताहिदीनरक्षाजुकीन गजलयोतबैगजचुतिउतार उस्किर्नचंपमस्त
कउपारि।दोहा।हरिसबकेसंकटहरिन बालकहरिकोदास बंदचरनप्रहलादके गजफि
रचल्योप्रकास।१।छंद।नृपतबेमहलतेउतरिआई उनिकर्तीहिर्लकस्यपउपाई त
बबोलशुक्रमित्राधिकार इहबालमरहेकोनेउप्रकार इकअसुरनामसोषनकहाई
परदेहपवनकेपेवजाइ उरिपेवषांनसोषेअसेष नजिजातमुवेअज्ञाननेससंसो
षनबोल्योतबैराय चरुचलेसुनतअतिगतउलाय संसोषनपतनीसिरफिकार सवि
षादजातवहराजद्वार मिलगइवीचउरचरनवांम सविषादकरीरूपअयतांम मैजा
तनदेष्योदेजुपीठ कवकदाहसोइहअसुरधीठ उषकोनआइत्रियराजद्वार बिपरी
तवेषशूलकुविचार पतिमोरबलीसंसोषनाम इहकवरहत्योसोमधाधाम बलवंतउ
हांअरुइहांबाल प्रहलादचितअद्भुतजुवाल तबबोलपरोसीअसुरआई सबनेदस
बनिहबेसुनाई प्रहलादरूपअतिबलकुवार तिहमारयोसंसोषनपवार सततकरयो
नहनइवार ईहअबहिमारिआयोकुवार करिजोरिरहयोसनमुषसुबाल सकोअता
हिशुभितनृपाल बलकोनकरयोतेकहकुधृत मातंगसहंसजिहबलअभूत आसु
रीधर्मबिद्यअजेय वहसबेपढ्योगुरुहिपरमवेय किहनातहत्योतेवहकशत इहहैत
मोहिकवरजअभूत।प्रहलादोवाच।इहमर्मनसुनयोअजकुराय जोनयोचहअरुवनी
आय उहअजेसंघारेउहजुएक सोजरयोशरिघटघटअनेक घटपोषविनासैजहैसो
इ तिहलागकहाअबकरेकोइ दिनदअरूपयजुतुमहीदीस बतनेत्राअंधनोतबतीस
उनसाईउद्योनिस्वरबिसाई इहजाऐसबैनिरफलउपाई मुदबाधपरयोतबसइ
सांझ देपाटअकेलोसुवनमांझ निसव्यारजामसोचितनृपाल इहमांतजयोतिदिश
तकाल नृपआयतबेसुजसनाथांन अकुलायनगरसबफिरिआंन कोउअसुरजा
कुमतआपकाज अज्ञाप्रसादयहकरयोराज इहजातिफिरेदेरतअबोप क्रुतआदि
नयाअबराजकोप दरबारनऐहेआजकोइ नृपहतेजासनिरसंकहोइ राजासु
बैठदरबारतांम मिलसचिवसुभटसबगांमगांम नृपनईतबेअज्ञासुफेरि षल
एककुरचकुआरणघेर षाकारओटबुपरनरूफ हितअहितसबेतबगमकूफ

नृसिंघ
२५

आरण माहि रवि ग्रहन रूप ॥ जरि पाट थंन पाषांण रूप ॥ मिलि असुर षोडस दइत मूल
च रु और कस्यो चौगांन तूल ॥ चहुं दिसा थांन जो जन सु अंत ॥ तहां सु रूप दरस्यो
टीचलंत ॥ वैसाष मास सुन सुकल पछ ॥ आरंभ चतुर्दस तिथ प्रतछ ॥ सिंघासन वाम
रचे समाज ॥ तिह ओह नयो थित आन राज ॥ सानध बंधु असुर सहाइ ॥ सब मिले आन अ
प आप नाइ ॥ बांनी विसाल कर्कस विडंब ॥ काली कराल जिह्वा प्रलंब ॥ पर्वत निहूं च प अ
रुण रूप ॥ गिर गुहा नास श्रुत स्वरूप ॥ क्रत काल दंत मांन कुदाल ॥ मुष मुछ ग
र्धवा ष्ठव माल ॥ सिर उर्ध केस कपिले कुसाज ॥ विट कोड रोम तन रोम राज ॥ भुज दिर्घ म
न्हु तरु साष नाय ॥ अहि पंच करन पल व कु नाय ॥ ष स्न षर मन कु षर छुरी लेष ॥ व
क्षव रम्च रमगो धा विसेष ॥ गज वर ण्वलत गत कुम्याज ॥ लष किवि वरणत नरहित
लाज ॥ कारे कुरूप कर्कस कुनाय ॥ सिर ले अरुण चंदन सु नाय ॥ असु वने सु नट मुकुन
मुराय ॥ एक च वोर नए दनुज आय ॥ जिसु नट अस्त्र स स्त्र न सरूप ॥ क्विचक री एक पंकति
विरूप ॥ तिह पार पंथ पायक प्रकास ॥ कर फरी वगा कु देस हास ॥ विचम ह भुजा कंध र विसा
ल ॥ असफोटक रहि बील दिकराल ॥ गज फिरे स स्याव लि गज गे ॥ प जे दुष्ट रहे कर जौर पत सं
चा रनहि नत हा पवन रूफ ॥ यो कस्यो दुष्ट मंडल अग्रूफ ॥ जहां मिली दुष्ट जुवतिन जाल ॥ वि
कराल रूप रति भुध र बाल ॥ मंत्राधिकार मति न एन्तूल ॥ सिर परी काल बाया समूल ॥ थित त
हां नृपासन मन मलीन ॥ वरस्यो ब्रमसो नयो पीन ॥ मत्त घरी नयो उर उलट ग्यान ॥ घर पाप
नस्यो भुव चार मान ॥ अबदी स हिरण कस्यप न रेस ॥ ड्ढ गए मन कु करि काल केस ॥ धरि न
चौ ई जब हि नाराय कंत ॥ मति चालन यो असुर अमंत ॥ विहसाय मिलन अंतर जुवांम ॥ कव
कु न नई विचित्र सिकांम ॥ नृप कस्यो तब हिं प्रति हार टेर ॥ इह कह्यो वचन सब दिन फेर ॥ इह
मंडल आवे अवरि कोय ॥ बिनु असुर देव मानष जु होय ॥ गहि लेकु अचानक ताहि अंक
यह नयो नृप तिम्राय सनिसंक ॥ कुल धर्म मिटत जिन क रिउपाय ॥ धिक तास जन्म यो कहत
राय ॥ प्रह्लाद हतत जो राषलेइ ॥ मम सत्रु जु वा कह जान देइ ॥ जिह मांकु होय हरि नाग जाय
सकुट बहुत तो तिह कहत राय ॥ निज दाव परे हरि पकर देकु ॥ बलक रेस बे मिल मारी लेकु
कुसियार रहिकु आयुध सनाय ॥ मम सत्रु कहू के नाम पजाय ॥ सबन एज बे मंडल सुर
व प्रह्लाद बुलायो तब पतब ॥ नृप दुष्ट विदा कीने अपार ॥ करि जल घेरी लावकु कुवार ॥ प्र
ह्लाद प्रत हितिन कह्यो जाय ॥ बालक वर बुलावहि तो हि राय ॥ प्रह्लाद गयो जब ग्रेह मात ॥ हु
जात बुलायो वेग तात ॥ मातोवाच ॥ तब कस्यो जननि तव विजय होइ ॥ सो पद कु पि
ता जिह करै मोह ॥ प्रह्लादोवाच दोहा ॥ हू न स्वाहत यह जन्म मात पिता की मोह ॥ साम
सनेही मन वसत ता सौ निश्चल होइ ॥ १ ॥ कविरोवाच ॥ यो कहि चल्यो प्रणाम करि माता
सु प्रह्लाद ॥ जाको साहंस जुग विदत उदत नयो उनमाद ॥ छंद ॥ सिसु चल्यो दुष्ट ह्वे
न आय ॥ सो गयो वीच मंडल सुनाय ॥ नृप अग्र नयो करि जोर बाल ॥ करि धनुष बांन २५
संजुन पाल ॥ अति बाल रूप सो भा उदार ॥ उनि नंद नंदसकी नो कुमार ॥ कर तिलक भा
ल उरतुल बीमाल ॥ वउपीत व राजत विसाल ॥ पर वे षरा ह म नु सीस समीप ॥ अंग

रवीचजनुरविषदीप | तणकोटमध्यकेअग्निज्वाल | किवअसुरलष्योयोपर तबाल | सु
रलोकसुनीजबयदअनीत | सुरवदेसबैहरिनरूपीत | ईशाद्यविमांननगिमबाय | सु
रआइसबैअपनेसुनाय | रविचंद्रहैथिरकैअकास | अरुपवनपावनविथकौअका
स | पसुपंछीकरतकरुनाप्रकार | करितारकरक्रूरहाकुवार | आकासबयोजनुज
लदज्वाल | वनरहेदेवसंदनविसाल | धिकारकहतसबअसुरजात | इहउग्रहतबकौ
उरसमात | राजावाच | करिधनुषतांनबोल्योकरूर | जिहकर्तपैसोकमौहांजरूर | अब
लेकुवैगरहाकबुलाय | यहहनतबांनउरिवेधजाय | शुक्रादोवाच | उहा | जोपसुहोयतो
टेरिहू | करिउवैदांनारि | अद्भुतजोतअनंतप्रभु | घटघटमैकरितार | १ | मोम्हितोमहि
कावमहि | गजकीटमैसोय | ताकहटेरबुलाइयै | जासूअंतरहोय | २ | मोकहस्रकृतमोर
अन्द्र | सबहीघटप्रभुसबंध | तोहिनसुकृतवावरे | आपनहीहतअंध | ३ | राजावाच | तुमही
मोकहगुरनयो | फुवबतावतिसार | अपनोप्राननराषही | मारतपायकुवार | ४ | बेदपधरी | इस
मासरहयौतउदरकूप | उनिनयोजन्मसुंदरसरूप | लेगोदलकायोमातनात | कुलधर्मग्रेह
यहकुयविष्यात | लेतोहिपढायोवहसाल | कुलपावतज्योतिहस्रफकाल | यहसैसबजेहैअब
हीमुढ | उनिआनहोयजोबनारुढ | सुषसेकतरणिसोगंधवास | गजवाजसुनरसेवकवि
लास | सुषकरिकवरथरहसीस | हगिनाकिकौनकैजेछतीस | शुक्रादोवाच || कहासु
दरमिंदरसेफवास | गजवाजकहानृपताविलास | सिरछत्रकहात्रयलोकराज | बकसुन
टकहाजोसेवसाज | नृपनएनकजेधेषकार | जगगएजुवालौजन्महार | राजावाच | जिह
हारिलनमसुनधूतबाल | कुलपावलप्योजिहपरमसाल | जिनहारिसेवैतुसेवासहास |
जेनएसत्रुकेदीनदास | कुलपावतजेहिपदसत्रुगांन | तेहारिएजगजन्मजांन | जल
माजरहतजेसीतकाल | पंचग्निताप्रहैहैउष्नकाल | वरिषारुतमिंदरबाहिजाहि | गिर
देहतजहि मरुअइमाहि | अघासरूषोडसदांनदेह | हयमेधकरैदिहाजुलेह | करकंव
कारत्रअरपहिमहेस | तबहोहिचकवरतीनरेस | करिउग्रतपसाधन्नृपांन | तबसीसछत्र
धारतनिधांन | सुषसबैकहतत्विषकश्त | नृपयहदेजन्मनोवृथाधूत | सबकीटकहा
तोहिराजकाज | तोहिदेषलग्गकुलअसुरलाज | शुक्रादोवाच | छितनृपतकहाजोविल
यकीन | नरिअविनमहाजोकरनलीन | अरुकहालयोजोइद्रराज | हरिविमुषजगावत
कुलहीलाज | हरिविमुषहोईजोनृपकहाय | जगजिहतुजन्मजैहैगमाय | राजावाच | इह
मजियतउग्रजनमहिगमाई | सिरधरतछत्रजेलगतपाई | सुनिजैनकहूंदेषेनकोय | तिह
कर्तसेवसुप्रघरहोय | अवजन्मतिहारोधिनश्त | जोनयोसत्रुसेवककश्त | शुक्रादवाच |
जग्यौजनकहतमानुषीदेह | उरदत्तनिराजनाहिनसंदेह | प्राचीनपुन्नतुमलहीसोई | सोक
रकुजतनहिनासहोई | नहिबूडीजतकरीहोनृपाल | इकवीसवोकन्नमियोविसाल | ने
वन्नतदीतसबगर्भवास | सहिदुस्सहदुरूपवूरतप्रकास | उतपतसबनजतजबुंदएक
उनिवर्णरंगआकृतअनेक | अघवनउरधपदस्वाससरूध | गतिएकरंकराजनप्रबुध | जि
हजवुरज्वालसबजरतजाय | तनहिनजस्योकाकेप्रभाव | जिहकाद्योज्वालकरालमा

क॥सोउविसस्योस्रुफनमोरसांक॥लगपवनत्नसोउत्तुधालीन॥कर्तारिविसरज
मोषकीन॥जबचल्यौपायलगबेलबाल॥तजिउधप्पासीससंगज्वाल॥उनिनयो
जबेजोबनप्रकास॥तारुण्यतेजविविधविलास॥अनिबेकनयोनृपतिकहाय॥ध
रिसीसबत्रचांमरचलाय॥इहदेहराजजिहकुलअधीन॥सिंगारकरतनीतषतनवी
न॥तनबाहिसबेहरिजोतजाय॥कहिकिंयोबियोसबकुलगिनाय॥पतिद्योसपी
यतजेनीरवार॥करिताहिनिगोमीदेतजायँर॥जिहदेषगर्नतुवनयोराय॥गजबाज
गमनदीसंगजाय॥सोगंधवहतजिहवारवार॥सोतदेहीकैहैअंतबार॥षटरसन
देहपोषततुवाल॥कैतासुअघेदेस्वांनस्याल॥कुंडलीया॥ऊसेपतुहीविसरक
रिपूजतआनस्वरूप॥अंधअंधकेकंधचढि॥द्यौसपरितसवकूप॥१॥द्योसपरतसव
कूप॥गर्नकोवानजानै॥जिहकाद्योउहकष्ट॥तादिनहीनेकपिछाने॥उनिष्येहैवहद्योस
सुतेडुषदेषेजेसी॥आपनयोअबईस॥आद्यविसरयौयतुवेसे॥१॥राजोवाच॥छंद१४॥
जबसुनेमरमबिदवचनराय॥अतिकोपवद्योउरअसुरआय॥करिक्रोधकयोनृप
वचनएह॥तोहिराषेताकहबोललेह॥तवरहकदेषहिमहीताहि॥किहरूपरंगअ
रुकोनआहि॥प्रह्लादउवाच॥तुवदिष्टबडहैकालरूप॥नवरूपतउदेताकोसरूप॥दु
हा॥जलथलकाचपषानमहि॥हैप्रभूहीकोवास॥घटघटप्रतिबिंबतनए॥आउनि
वसप्रकास॥१॥राजोवाच॥हरितूकहतपाषांनमाहि॥इहथंनकबुपाषांननाहि
पाषांनमाहिहरिवस्तआहि॥इहथंनबुलावऊवेद्धताहि॥प्रह्लादोवाचदुहा॥मे
रोअतुयाथंनमहि॥सोमिथ्यानहीहोय॥मनवचकर्मबुलावऊं॥दरसनदेहैमोय॥राजो
वाच॥सोमनवचकर्बोकहा॥मरतेऊननहोय॥तवदरसनकरहैकहां॥उरलिहै
सरपोय॥२॥गएविदेसनबंधुसब॥तरुनीतजेसनेह॥कपिनासेपसुमरीगए॥दुधंनिव
रषोमेह॥३॥मैमारोउरिछेचयह॥बांनन(?)पांनलेजाय॥तबयोहरिकरिबै॥कहासुवै
वैद्यजोआय॥४॥कविरोवाच॥छंद१॥वैसाषसुकलचवदसविसाल॥रिवहोतअ
स्तगतसिधाकाल॥प्रह्लादकरीकरुणापुकार॥थरायथंनजबपरिदरार॥थरह
रथंनमिगमिगतयेह॥हलहलितनृमनरिपुसुरदेह॥कसमस्तकमचफणलस
तसेस॥उरपरीत्रासअसुरअसेस॥प्रह्लादोवाच॥नुबमारउतारनप्रनृपविन॥ह
रिइतीधेरकबहुनकीन॥इहमृदहिषावतमोहित्रास॥अबदेऊदरसकरुणानिवा
स॥दुषदीनहरनदेवाधदेव॥सबकालकर्तइंद्रादिसेव॥पितमाततजोहकरिअनाथ
कोकेहैमोतेदीननाथ॥सवइकवत॥अपिलजगतसबआपनेकर्मबंध्यो॥नातितहैता
रीदेनतुमहीनचायबौ॥कर्तुअकर्तुनाथअनयथासमर्थहहरि॥वियताकूमनमेनम
नकोवहायबो॥अतिहिरसिकरमारमारसजोरहतरसै॥यहेनउचितपेविरदविस
रायबौ॥मोकूसेपतितकीपुकारजोनलगतती॥छाडिदेऊपतितउधारनकहायबो॥ २५
॥१॥छंद१॥कविरोवाच॥योकहतगरजउहचीप्रकास॥ईद्रासनफोलोअतसत्रा
स॥सिवटरेजोगनिद्रासमाधि॥मदहतुकनएदिगगजमदाध॥दिगपालचकितब्रह्मं

कलोल ॥ अछिबकतअमरनदीकुरतबोल ॥ पकरंचनिर्तगईतालचुकी ॥ मुषहासत्रा
सनिस्वासमुक्की ॥ जयजयनृसिंहसुरमोअवार ॥ ब्रह्मादलषोजुवटलौनार ॥ घहराय
घोषतबफल्यौ थंभ ॥ अवितारित्रयौनरहरिअसंभ ॥ कटकटतडसनदहाप्रकाससि
सस्सूरज्वलनत्रयनेत्रजास ॥ कतजंत्रुदीवितमुहसकराल ॥ सारस्कदिघ्घिजिका
सवाल ॥ कतिनृकुटिकुटलवंकटसकोप ॥ नर्थसततसटावउपीतओप ॥ षरनषरव
जुपरकरउणाय ॥ आछोटनृमितसिरउंघआय ॥ धुंकारसदृगरिजितसधीर ॥ विक
रालरूपनरसिंघवीर ॥ वजुउपिकहिरणकस्यपपछार ॥ धरिगोदनऐधितग्रेहद्वार
दनुउदरसषरनषरनविदार ॥ आनंदसुरनजयजयउचार ॥ तहांकरीदेवक्रीडास
तत्र ॥ अंदोलहारउरअसुरअंत्र ॥ आसुरसंघारमायाअनूप ॥ हरिभएकालत्तगवांनरू
परतलिमवदनकरिअरुणरंग ॥ नृकुटीविसलत्रयलोकनंग ॥ आसुरीगर्भआवित
अपारसिसुकरतसनयहाहाउकार ॥ हामातमाततातेहिहोय ॥ कउसहअनताता
नकोय ॥ तृषनासनवंछितनोविसाल ॥ सुनविरतसगणनाटकसहासकररुवरुत्ता
कहरसमरक्रुध ॥ वडषरतपत्रजोगिनसबुध ॥ वैतालतालमिलहाकवीर ॥ गुरषेतज
लगर्जितगहीर ॥ फाकनीफकत्रंवक्ररहकक ॥ गोमायुविल्हरीघीगहक्क ॥ आनंदनार
दअंगअंगयहमिलोअविसरअनंग ॥ ऐरावतआरुहिइंद्रआई ॥ वरकुसमवरिष
उधनिवजाई ॥ सुनकर्तअमरकिंन्नासुगांन ॥ नृत्यायगीतवाजितविधांन ॥ धर्वकर्त
नाटकसुगेय ॥ उमारिविर्दतुबरअजेय ॥ दिग्गजारूढदिगपालआई ॥ सबकर्तस
हजयजयसुनाई ॥ षगुधारिहंसवाहनप्रकास ॥ सुनदेषब्रह्मक्रीडाविलास ॥ चववे
दउक्तहितमंत्रवीन ॥ सुषवारउवितआसिषसुदीन ॥ तेतीसकोटिसुरकहततामनु
वनारहस्यौपत्रुधर्मधाम ॥ रिपकहतनऐआनंदएव ॥ जगजयतजईतनरसिंघदेव
सकुटमहिर्नकस्यपसमूल ॥ हरिकोधानलजरिसलनतूल ॥ कछुवचेनाजअसु
रकुवार ॥ निस्सेषकरुयौपत्रुतुमनार ॥ नयनीतनएरिषदेवनूप ॥ सुनिकटआय
कमलासरूप ॥ दंडवतकीनकरुनादिषाय ॥ नऐसांतिरूपनरहरिसुनाय ॥ सुनस
रकोटदीपतसरीर ॥ वडवृधिविमलनरसिंघवीर ॥ नरसिंघदेवबैगारअंक ॥ तवनक्ष
तिल्कबालकनिसंक ॥ चाटितनृसीहनिजरसनबाल ॥ दनुउश्हतेनरहरदयाल
वरषासुहोतसुमनप्रकास ॥ लेअमरस्विमरढालतसहास ॥ तहांधस्यौबनप्रह्लादसी
श्री सदियतिलकआपत्रयलोकईस ॥ श्रीनृसिंघवाच ॥ नृपताविसेषवितितोहिदीन ॥ उनहो
जवितजाचकप्रवीन ॥ प्रह्लादोवाच ॥ मुषच्यारररततविधच्यारवेद ॥ सोनेतनेतगावित
वेद ॥ इंद्रादिकसुरसबसत्वहीन ॥ नितनित्तसरूमायानवीन ॥ कैध्यानावसथितद्रु
धार ॥ छिग्वासनऐमुषमेकच्यार ॥ नयनेत्रदेषजलथलअकास ॥ निरधारधारपायोन
तास ॥ रिषवसतसघनउद्यानधार ॥ जलपत्रमात्रपोषतसरीर ॥ डगमुद्यरहतरतऐक
ध्यांन ॥ पेदेवनहिनपावतनिदांन ॥ नुवअंतत्रुमतिजतजोगसाध ॥ अष्टांगउपासन
निरउपाध ॥ अरुहोतसिधसाधकअनेक ॥ वेकुंनवतावतहेतएक ॥ षटकर्मत्रसिंध्या

न्हाईविश्व॥सोउजोतफिरतबीजतसद्धि॥जुगसदंसरसननितनामनजार॥श्रा
राध्यसे॥धनहिलहतओर॥तुमरहितआदमध्यवसांन॥कारुणान्रतकरुणानिधान
करलनजोततुमदेहधार॥सुहिदीनदरसदीनोमुरार॥गहिबाहिमोहिवैगारिगोद॥
मनवंछतपायोसहितमोद॥अभिलाषसवेह्हरेअनंत॥सिरधर्योहाथमोहिकर्यो
संत॥करिजोरियहैजाचतकृपाल॥दिढनकंदेकुदीननदयाल॥नितरहेनेत्रतुव
दरसलीन॥प्रभुसुजससुनअविनपवीन॥नितनामरटेरसनानवीन॥श्रुरहैहस्त
वंदनअधीन॥सिररहैनमस्कृतचर्नसंग॥उनिमालदेसपदरजप्रसंग॥सुनजोतिरह
कुहरिउरसमाय॥भनकरूसतनपरिक्रमणपाय॥बिबसंगरहकुचितवेदसाव॥
नवतथाअस्तुनरसिंघनाथ॥कीनोप्रणामनरसिंघदेव॥निजरूपजगतउधारनेव॥सब
आयनिकटजबसुरमाज॥सानंदकरतमहिमासमाज॥छंदभुजंगीब्रह्मास्तुत॥निमो
देवनारायणंदेवसिंघं॥निमोदेवनारायणंवीरसिंघं॥निमोदेवनारायणंक्रूरसिंघं॥नि
मोदेवनारायणंदिव्यसिंघं॥निमोदेवनारायणंवाघ्रसिंघं॥निमोदेवनारायणंउग्रसिंघं
निमोदेवनारायणंपुरषसिंघं॥निमोदेवनारायणंरौद्रसिंघं॥निमस्तेनिमोभीषणंनादसि
घं॥नमस्तेनमोविज्वलंनेत्रसिंघं॥नमस्तेनमोदृंदतेन्द्रतसिंहं॥नमस्तेनमोनिर्मलंचित्तसिंहं
नमस्तेनमोनिर्जितंकालसिंहं॥नमस्तेनमोकल्पितंकल्पिसिंघं॥नमस्तेनमोकामदंकाम
सिंघं॥नमस्तेदयारूपदुष्टांतसिंहं॥नमस्तेनमोकालनगवांनसिंघं॥नमस्तेनमोरूपन
वनेकसिंघं॥नमस्तेनमोहितरूपप्रल्हादसिंघं॥नमस्तेनमस्तेतिलिछ्मीनृसिंघं॥रु
द्रस्तुत॥नमस्तेनमोहेमकस्यपदाहं॥नमस्तेनमोहेतप्रल्हादचाहं॥नमस्तेनमोकोटि
सूर्यप्रकासं॥नमस्तेनमोन्रूमत्तारंविनासं॥नमस्तेनमस्तेसुरंहेतकारं॥नमस्तेनम
स्तेतीआसुरंषयारं॥इंद्रस्तुत॥नमस्तेहितंचितांदीनंदयार॥नमस्तेकृतंरंपंथंनविदारं
नमस्तेतीवारंनयारंअनीतं॥नमस्तेनमस्तेतीमायाअजीतं॥देवास्तुती॥नमस्तेअपा
रंअधारंअनाथं॥नमस्तेप्रचारंविकारंप्रमाथं॥नमस्तेसधीरंउरंदीनपीरं॥नमस्तेहितं
गोदुजंधर्मधीरं॥रिखिस्तुत॥नमस्तेअछेयंअजेयंअनाद्यं॥नमस्तेअलिसंअबिसंअवा
द्यं॥नमस्तेसविद्यंअविद्यंअमृत्यं॥नमस्तेकर्तृअकर्तृसनाथं॥नमस्तेसरूपंसरूपंअ
नाथं॥नमस्तेसमोहंसमोहंसनिलं॥नमस्तेप्रकासंअवासंअजेयं॥निराकारनिरधा
रमानंअमेयं॥अवामंअकामंसकामंउदासी॥वपंकोटब्रह्मांडरोमंसुवासी॥सुरंमेघ
ओघंजितगर्जसिंघं॥नमस्तेनमस्तेनमस्तेनृसिंघ॥कुंडलीया॥उधार्योप्रल्हादहरि
अविनीनारनतार॥श्रीनृसिंघसुरसिधसब॥प्रभुवैकुंठपधार॥प्रभुवैकुंठपधारदेव
दुंधभिहिवाजत॥गांनकरतगंधरब॥तानरंनारदिकसाकत॥वामंगअंगकमलाविमल
आरतबधुमुरारि॥विदुदनयोजुगजुगविदत॥हरिप्रल्हादउधारि॥१॥छंदप॥अतिदु
खितकयाद्भूतहाआय॥रिणअजरपस्योतहांअसुरराय॥उरलग्योजननिप्रल्हादस्यो॥
नसवसेषकरतकरुनासुवांन॥राणीवाच॥कहिसाधुसाधुउत्रहिसुमात॥नवमानधि २६
नजिहतिस्योतातसवयाहिकहांइहगतसनेव॥धरिदेहहतहिनिजकरनदेव॥

धरिमिश्रनयोसुततू सधीर । सबबुद्यो मरण जांमण सरीर । दुहा । गति जे सीया दुष
की । ऊ ङ्नकारू होति तो दित हरियह देहधरि । मा रिमिलायो जो ति । १ । कबीरो वाच । छं
द ५ । बिय निकट कयाधृ तब दिश्राय । रूपच्चनेरही मस्तकलगाय । कुंडलीया । स
तरा ना वीती समय । वृथा करयो न परोस । आपकमाएकर्मते । अबकिहदीजे दोस ।
अबकिहदीजे दोस । आउही कर्मकमाए । सब दिन जांने एक । एक पंथ नधाए । घुमल
गे पिबतां न पन जब नऐ विरांने । तब उघ सबआष । समयवीते सतराने । छंद ५ । वि
यजो तिन सूझी तुमही आंन । परिका सरही गज क्रम मवमांन । उहमो हिद ईनारदवता
य । सिसुग्रही गर्भ गत चित लाय । अपरू रूराइ नहीक ह्यो तो हि । मे नांन कहऊ तो हतै
मोय । ईहनयो बमज्ञांनी सहूत । फल नयो तास तुम कह अन्हत । तुम पंथ बुहार तनर्क
जांन । सब करे बाधसरगत विधांन । सुत नयो साधु ज्ञि हत त्वसूझ । इहगर्भ माफ सुन
य हो गूंझ । सुन पंथ ग्रह्यो यह बाल वेस । तुम बासद ई या कह अ सेस । तुम हत नयो
नया के विचार । पनुन्न रे अगट तहां थंन फार । रावरे कृते कृत नर्क जोग । सुत साधुल
ह्यो कि हकर्म योग । दुहा । तातै संतत सेयजे साधु संग मन लाय । जैसे जाती संग तै कु
कर गंगा नाय । १ । छंद ५ । पत नां हि निसूझ्यो तल पांन । हरि निक्त अगट नही बधधांन । स
तसां पजो पनही सुविस मेध । विध युक्त न कीने बाज मेध । सत संग नजो न हि वित्त लाय
व सगर्बसर्ब हारे व जाय । उदिया स्तराज अरु अष्ट सिध । गज बाज साज सुष नै वे निध
इह गर्ब न सूझो तु महि सांम । पियब लेअ के ले बाक धाम । दुहा । कहै कया ध्रुवा कह हरि
नरक परि क्ज जिन कोय । आन देव के सेवक हि । निसचय मुक्त न होय । १ । ध्रुव बाज कह
रि उधरे । तिही उर्ध पद पाय । टिका रची प्रक्लाद की कीनी स्याम सहाय । कविरोवाच । की
कीनो राज हि न्रतक कृत पेम युक्त प्रह्लाद । नारद स्यो ध्रुव लोक को वास वटे रे विषा
द । २ । होत डषी दुष दीन कै संतत को लत साथ । संकट हरत अनाथ को । देषङ्क आप
अनाथ । ४ । देमक सपरि उ संघ स्यो कस्यो नरू ज धार । ईह कारन नरसिंघ तनु रूप
नयो अवितार । ५ । छंद ५ । प्रह्लाद नयो राज निवेस । इक छत्र तप्यो अवि नी नरेस । गोवे
द विषर तनीत नाय । ईह राज धर्म बलि बङ्क पाय । रस अवित अविन ओषध असेष । त
रु लता फूल फल हि विसेष । व तिये दहो हि इजा प्रसाध । फल री उ कनक सुन संपना
द । की रतन कया मष वेद वाद । परिसा गप की ए लोक नि प्रसाद । इक छत्र राज प्रह्लाद की
न । उंन ब्रह्म ज्ञांन साध्यो प्रवीन । तिह उत्त विरोच न दयो राज । सिर छत्र धस्यो सुन तिलक
साज । दुहा । सुनत कथा प्रह्लाद की । साध हि पीत प्रकास । ता को गोर न लोक त्रय । जा हि
नही विस्वास । १ । सवइया । जा दिन आन उपाइ थके सब ता दिन आंन सहाइ करैगो सो
क अलोक विलोक न लोक । रयो न रिद्र सुदृस्टि रैगो । जे से बटे गजराज की पीव सो ।
कूक रिवाद हि न्हस मरेगो । जो करु णामयरंग मकपातो । कहा जग की अकृपा विगरैगो ।
१ । कबीत । इह प्रकार अवितार रूप अद्भुत जु धास्यो । कोटि वज्र नष कवन उद रहि
र्णकुसफास्यो । नभास्यो प्रह्लाद राज महिमं कल दीनो । अरु कीनो अध्रुरेस दास अपनो

करलीनो॥ इहन्नयो बिरद जुग जुग बिदत॥ विश्व सुजस बिसतारीयो॥ नरसिंघ देव
नरहरि सुकवि॥ अविनी भार उतारीयो॥५५॥ इति श्री नृसिंघ अवतार संपूर्ण भाषा बाह
रतन रहरदासेन विरंचिता॥३॥ अथ दुहा॥ ७५॥ छंद॥ ६४४ कवित॥ २॥ कुंडलीया॥ ८॥
सवइया॥ २॥ सर्व॥ ७४१॥ अथ वामन अवतार लिषंते॥ कवि रीवा॥ दुहा॥ अब वामन
अवितार कत कै॥ सु सुनकु संतमनलाय॥ बलि बांधन व उविस्तरयो॥ तिकु उरि मैन समा
य॥१॥ छंद पा॥ कारन सरुप हरि कम त कीन॥ मथबी रोदधि तिह रतन लीन॥ सब रतन जथा
बिध सुरन पाइ॥ सुरलोक लयो हरि सु चाइ॥ जऐ रूप मोहनी नव तु लाय॥ ईछ्या सु
आप हरि तिहा आय॥ दानव नमाइ व जु सुरा दीन॥ छुरन व साधसुर सुधा पीन॥ उनर लो
सेव सो इमृत पाई॥ लेचल्यो सक सुर पुर सुनाइ॥ आसुरन इइ ये स्यो अमान॥ हमजीयत ले
हि को उइमृत आन॥ जा जुलि पिसुरासुरन्नयो जुधक बु काल इमृत कारन सकुध॥ रिण जुकवि
रोचन परयो राज॥ बलिकुवर सहित दानव समाज॥ जय जुद्ध सक दानव संघार॥ लेगयो सुक्ष
सुरगुर सुढार॥ रिण जूमसुक आए रिषीस॥ तहां दीनी संजीवनी असीस॥ रिण जूमन पायो सी
सवाम॥ फेतत लविरोचन नयो ताम॥ सब अंग जल दे जिदवो रवीर॥ बलि कुवर जियो अरु अ
सुर ओर॥ रिण जूक बिरोचन सुजस लीन॥ सो तिलक छत्र लेबल हि दीन॥ गुरराज सुकन
य अकमान॥ लेगयो बलिहि पाताल थांन॥ धरमिष्ट नयो बल छत्र साज॥ आपकडे सराजा
धिराज॥ राजनिषेक बलनयो जांन॥ सब न ऐ दैत्य अेक न आंन॥ बलसमान पासन बल
निधान॥ थिर नएज थाकु मसुनटथांन॥ गुरराज समाति हि सुक आय॥ बल दई मध्य बैठ
कवताय॥ सिंघासन सुक ही अग्रदीन॥ तब सुनटनऐ सब मन मलीन॥ उविगऐ सु नटक
हि सुरन साल॥ उजकरि है दिग्गविजई नृपाल॥ गुरराज लह्योत बच्छो न वित्त॥ इक राज
जिइ करिबोउ वित्त॥ अवगटर है बल कहु क काल॥ मषकर्यो सिध षष्ट म पयाल॥ उइ
अग्नि कुंड रथ निकस एक॥ तन त्रान सहित आयुध अनेक॥ गुरि कह्यो बलहि इति निरवि
वाद॥ दिग विजय होहि तब मष प्रसाद॥ रथ च्रढे राज तिह विजय काज॥ सानद्ध बंध सस्त्र अ
स्त्र साज॥ तिह रथारूढ देषे न कोय॥ यह है ने सब्ब निसंक होय॥ नृप जीत सबै बलव
लनिधांन॥ भुव लोक लयो भुजबल प्रमान॥ वस कर्यो नागम ढल विसेष॥ प्रत जुध स
मनको उग्रहरि असेष॥ इह सुनी सुरन जब उ सहवात॥ तब नो विषाद उरन हि समात॥
सब लग्ये अमर तहां तजन लोक॥ सुन ई द्व वह्यो उर अतुल सोक॥ सनकादि सन्नयमि
ल सुरि समाज॥ कस्यप प्रजाप पहि गऐ सकाज॥ कारण निवेद कस्यप हि कीन॥ कियस
बन विदा तहा अनयदीन॥ उपदेस कर्यो कस्यप सकेत॥ रत्नि कर कुअदिति तहा वि
सुहेत॥ प्रतिव्रत न षिया अज्ञा सुपाइ॥ सविसेष कर्यो पति व्रति सुनाई॥ जब नयो वर
ष ह्वत करत जांन॥ विधि जुगत तथा थित एक थांन॥ नराच॥ हरि दयो तहां द
रसन दयाल॥ हमवक्त न ले कुफल वृत विसाल॥ अदितीउवाच॥ उनि कह्यो अदि
ती हरि सुप्रकास॥ बलि नयो विजई सुरपत हिरास॥ हरि नै सदयत हांक हि सुना
य॥ कसदा आदि धरम हि सहाय॥ बलि महाबली अरु धरम धीर॥ पतजुध न हि नसम

कोयवीर। तबनंदर अनुजन्म वितरू आय। कैई जन्मातकरिहूंसहाय। वरपा
यअदतीउपज्यो विसास। हरिन्नैऐतबहि निजपुरनिवास। कविरोवाच। बलन
योजबैबलइद्रथांन। ईजादिन्नेऐउलायमांन। सुरन्नजेसबैतज्यथांनथांन। कवि
कलोमंत्रबजग्येयमान। गुरउवाच॥ छलबलहिनपाजतनूनरेस। उदयनहोत
वेदोयदेस। धर्मबलिलेतछितनृपतिकोय। अनेककल्पउदयसुहोय। सतजिह्न
कियेसुरराजहोत। सुरलोकसबैनृपताउदोत। कविरोवाच। धरमाधिकारनरइं
नदीप। बलिमहाचक्रवतीप्रथीप। जिहऐहसमृधिसुरपतिसमांन। धरमाधिकारबल
अप्रमान। तिहसमयसुबलिउद्यमप्रवीन। सतजिग्याकरनसकउलीन। मषहोतनऐ
नानाप्रकार। सबजांतवस्यकीनोसंसार। दनुदेवमनुजसासनअधीन। इकनुनसवि
धसतजज्ञकीन। इहनइजबैसुरलोकवात। अतिउसदइद्रउरनहीसमात। तहां
नयोनीतवासवसतेष। अतिबलीअसुरकृतमषविसेष। उरहमगऐवासुरउनीत।
सबकहौविधहिकारणविनीत। इद्रोवाच। परिवंदइत्यरूमषप्रसाद। दिगविजयन
योवहनिरविषाद। सुरलोककाजउहीजलकीन। सतजिग्यनएतिहएकहीन। आरंभ
नही नयौतिहमषसमूल। सहीजाईउरपरमसूल। कविरोवाच। विधसक्तनऐआरुहिवि
वान। क्रतगमनजहांकरुणानिधांन। परिवुल्लदेवपोढेउनीत। जलतल्पस्वंतमा
याअजीत। धुन्यवेदकरीतहांब्रह्मआय। सुनजगेसेषसांईसुनाय। श्रीभगवानोवा
च। तुमआयब्रह्मवासवसमेत। मोहिसुसप्रबोधेकवनहेत। विधेवाच। निजदासप
नुहिकरुणानिवेद। विधकतनऐसकहिसुनेद। लोकेसथपेतुमलोकलोक। स्वबं
दवस्तअपआपओक। मृतलोकतप्तबलिदेतराई। धर्माधिकारमषवलसहायसो
लयोचहतअबइंद्रथांन। इकनूतनएसतमषविधांन। आरंभनयोतिहजिग्यका
ज। मनहोतछुभिततिहदेवराज। सुरलोकहोतआसुरसंवार। इहजांनकरीप्रभु
सुउकार। श्रीभगवांनवाच। धरमीकराजनत्ववेदनीत। किहहेतहतबलीजग
उनीत। मरजादवेदलंघहिनमूल। संततसहाइहूंतिहसमूल। ब्रह्मावाचइहा।
उपज्योज्ञांनपिसाचकह। जोब्रगुलातणबाइ। ताकेजीनेउवितही। तजिबोदूवसहा
इ१। श्रीभगवानवा॥ इहांनकारणवरणको। ज्ञाउतत्वप्रकास। न्हहितबाधोभक्त
को। कोलितअविनप्रकास।२। विधेवाच॥ जोहितबाधेभक्तके। कोलतहोमहाराज। क
रिबोसकसहाइअब। आपपपेकीलाज।३। संततदेवसहायतुम। आरतबंधुउदा
र। सुरपततुमहीकरथप्यो। आरतकरतउकार।४। स्वेसुइब्रालोकत्रय। कृतलीलावि
स्तार। लोकमृजादाटरितहरि। करिहोतुमहीविचार।५। छंदपधरी। कविरोवाच। इह
भातब्रह्मबसुकरिविचार। उनगऐतहांनिजपुरसुधारि। हरिनऐतहांचिततविसेष।
अपराधविनाअनितउवितधेष। श्रीहरिवाच। नृपवलउनितवेदकप्रभाव। किहहे
तहोयजिहवैरभाव। वसुब्रातहोयलघुब्रमचार। तबविहतकबुकरिबोविर। कवि
रोवाच॥ कस्यपरिषीसपितुअदितमात। वसुअग्रजदहरिनऐअनुजन्मात। ननमा

सहादसीसुक्लपक्ष॥ मध्यांनजन्मबामनप्रतक्ष॥ इहभ्रातइंद्रताताअनूप॥ हरिलिए
विस्वबामनस्वरूप॥ प्रारंभकस्यौबलयज्ञकाज॥ सुक्रादिसचिवआसुरसमाज॥ विधस
हतहोततहांमषविधांन॥ हव्यादिमनुजवेदज्ञांन॥ जिज्ञासनबैठेबलिवथीप॥ संध्याबलि
बामाअंगसमीप॥ दुहा॥ कोऊजाचितहैआयकछु॥ बंछितदेवसुतीस॥ कलिलताजुतक
लितरु॥ दिहधरैजनुदीस॥१॥ कारणबामनरूपकर॥ हरिआएबलिद्वार॥ कौतुकहितसंग
नगरके॥ कौलितलोकअपार॥ छंदपधरी॥ इहसमयआयबामनअनूप॥ सुभसांतब्रह्म
चारीस्वरूप॥ अप्रासछदद्वादसममोह॥ उपवित्तकंठमनरहितमोह॥ कुसरूंफअरुहथमा
लाप्रकास॥ करवामकंमंडलसावकास॥ कौपीनमौंजकसककटिप्रवेस॥ मेषलाअजिनसो
भितसुवेस॥ घनस्यामसुभगमुषवेदच्यार॥ बानीविलासअद्भुतमोहकार॥ जष्टिकाधारजर
जरसरीर॥ सिरहोतकंवअंतरअधीर॥ प्रतिहारवा॥ नृपगुरदरिकीनप्रतिहारजाइ॥ बाम
नस्वरूपदुजद्वारआई॥ कविरोवाच॥ यलजिज्ञलएबावननबुलाय॥ नृपनिकटतबैदुज
देवआय॥ आसिषसुदीनबामनअनेक॥ इदनक्तहोकुसंजुतविवेक॥ बलिरोवाच॥
कोआउनकहिजैअत्यनेव॥ बामनवा॥ कूआदिअउरबब्रह्मदेव॥ बलिरोवाच॥ स्व
छंदबासविकककवनगाम॥ बामनवा॥ छितअविलब्रह्मसर्जितसुधाम॥ बलवाच॥ सब
कालकवनरहासरूप॥ बामनवा॥ नवसमकमोहिअनाथनृप॥ बलवाच॥ कोवंसपि
ताउतिपतीकाल॥ वा॥ मोनहिनतासममरननृपाल॥ अभिलाषकवनचितधरिअमेव
फललेहूकरऊहूरनकूदेव॥ नृस्वर्णरत्नसज्यासुथेह॥ कन्याहयवारणगौसदेह॥ अरु
महादांनषोडससुवास॥ भूमीसनोमपतनविजास॥ जुतदेसदीपषितषंडलेह॥ तहांक
रिकूराजआसिषसुदेह॥ बामनवाच॥ त्रयपर्धभूमसमदेकुमोहि॥ स्वसथांनवसनिरभी
तहोहि॥ बलीवाच॥ जाचिनाकीनकहाअलिमदांन॥ मोदेतभूम्यकात्रयपदमांन॥ दातासु
बेत्रअरुपात्रकाल॥ अनुसारहिजाचकुनातकाल॥ दुजोवाच॥ इहवचनतुमहिहैयु
क्तनृप॥ पज्ञादपितामहधर्मरूप॥ तुमदेतअधिककछुनहिनराज॥ त्रयलोकसहीसंपत
समाज॥ संतोषसहितअपनेप्रमांन॥ मांग्योनरेसदीजेसुदांन॥ राजोवाच॥ तुजदीपद्वि
योजनहेरिषीस॥ तोदेसषंडलीजैसुदीप॥ दुजोवाच॥ नवषंडसप्तदीपनसमेत॥ जोली
नकरेसंतोषचेत॥ जबत्रयोअसंतोषीदुजात॥ जबब्रह्मतेजतिहबाडजात॥ मोहिआदि
प्रयोजनयतेराज॥ संतोषमांनलेहूसकाज॥ दुजदयाजुक्तजोदइराय॥ तूइहमोयतैलो
कनाय॥ सुक्रोवाच॥ कुलगुरुसुक्रदरसीत्रकाल॥ पेकस्यौनांदिइहदुजनृपाल॥ राजावा॥
नृपगुरूतबैहब्यौसहास॥ कोआदिकहैअनुक्रमप्रकास॥ सुक्रोवा॥ धरिकपटदेहह
रिसुरसहाय॥ तवजिदिपविगास्यौवहतराय॥ मांगतत्रपैडछितकाजओक॥ छलसाक
बीनलेहैत्रलोक॥ पुनिकहैकऊनदीनिवताय॥ कृतहासरूपसुरपतसहाय॥ बल
वाच॥ बिनमांफकोटब्रह्मंडदेह॥ असनाज्ञसुमोपहनीषलेह॥ सुक्रवाच॥ छलछी
नलेहछितराजसाज॥ तिनदेधर्मकहामाहाराज॥ बलिरोवाच॥ दुहा॥ जावतहरिसो
कपटजुत॥ हमनिर्कपटहिदेत॥ याकौसुक्रविसेषफल॥ बेदविमलकहिदेत॥१॥ आपुन

हरिभुजरूपधरि॥ अरुसुरराजसहाई॥ मोसोसुकृतओरको॥ जापहिनिहाकआई॥२
अग्निजरावतीइबकु॥ मघकीजतहितदेव॥ हाथमाफअबलेतुहे॥ हरिदेवनकेदेव
॥ **कविरोवा**॥ उतरतटनदिनर्बदा॥ षेत्रतहांभृगुकछ॥ तहांकरतबलराजतब॥ पावन
यग्यप्रतिष्ठ४॥ **छंदपधरी**॥ गुरलष्योजबेनृपनियमकीन॥ तबनयोआपजलपात्रलीन॥ **रा
जावाच**॥ भुजलेकुस्वस्तिकरिकसोराज॥ सकंपिकर्तहमभूमकाज॥ **कविरोवाच**॥ संकपि
हितबलिकरपसार॥ जलपात्रसुकरुध्यतद्वार॥ जलचलतनहिनकृतरुधनिहार॥ ह
रिकस्योतवेकरकुसत्रहार॥ भुजदाननिवारनफलसुपाई॥ नऐकांणगरुतहांदुष्ट
नाई॥ जलमेलहस्तसंकल्पकीन॥ बलित्रेमनत्रपदवामनहिदीन॥ **राजावाच**॥ नरिपैन
लेकुनिजपदउजात॥ सुस्थांनत्रमजोमनसुहात॥ **कविरोवाच**॥ वडवढ्योतहांवाम
नवैराट॥ सुरराजकाजकृतकपटवाट॥ हरिकंवग्रहणभृगुत्रियाकीन॥ अनदिष्टच
कतिहसीसछीन॥ उनआनलगेकरअसुरघोर॥ तोऊमारिपवारेघोरघोर॥ पदएक
पुर्बपछिमपजंत॥ दुवाद्यदिछनउतरादिगंत॥ क्रमतीयनभमईकवर्नदीन॥ ब्रहम
डिह्योइकअर्धकीन॥ परिब्रहलचवर्नदसंजुपाई॥ विधकरीजहांभुजावनाई॥ सउनीत
कमंडलसलिलआन॥ कृतअर्धपाद्यवि[illegible]धआपपान॥ सोचल्योनीरहरिचर्नसंग
त्रयलोकगवनपावनतरंग॥ तिहरधुनयोगंगावतार॥ नवचृतकर्नउधारपार॥ त्र
गिनअंतनोअरक्षपाय॥ पुनिरह्योअर्धतबपुछिराय॥ **वामनवाच**॥ अबचरपतिवताव
हीवोरकोय॥ त्रयपरघजहांपूरणसुहोय॥ **बलिरुवाच**॥ छितदइतुमहिवामनविनी
त॥ मोअंगधरकुअबपदउनीत॥ **वामनवा**॥ त्रपरहतअर्धपदत्रमसेष॥ कोहोइसी
सपुरनविसेष॥ **राजावाच**॥ भुजनमसबैममसिरअधीन॥ कबुअर्धपादसंदेहकीन
॥**कविरोवाच**॥ हरीधरयोचर्नजबवांपसीस॥ बलिगएसुतलिदांनवाधीस॥ बलिसाधु
साधुकहिसुरसमाज॥ तहांकरीसुमनविरषाविराज॥ प्रभुकह्योतहांबावनप्रुराण
धरिनामत्रविक्रमबलिनिधांन॥ नलिराजनएमनकाजसिध॥ उनकरतनएविनतीप्र
सिध॥ वरदेऊइहैहितचितसुमोहि॥ हरिचर्नहिरसअंतरनहोहि॥ **श्रीभगवानवाच**॥ ब
लिअटलराजतुवसुतलहोय॥ उनलेकुमागजिहमनहिसोय॥ बलनऐतहांहरिचर्न
लीन॥ करिजोरसमुषह्वैप्रणतकीन॥ **बलिरोवाच**॥ वरदेऊइहैदेवाधदेव॥ सबकालरहूं
रतचर्नसेव॥ **श्रीभगवानवाच**॥ प्रभुकह्योतबहिकरुणाप्रसाद॥ मेरहिंरह्योहतवचतु
रमास॥ तेतीसकोटसुरसहिततांम॥ धरिगदासुवसिकुंद्वारधांम॥ बलधनधिनतुवस
तबोल॥ उचरयोकरयोनिश्चयअमोल॥ रूंबलनलझोहोताहिराज॥ सोबल्योमोहि
तेसत्यकाज॥ ममअगमप्रबलमायाअवार॥ विश्वहिडुरंततांकोविथार॥ कर्तारनपा
योपारकोय॥ सत्यबलल्यईतेजीत्यसोय॥ विश्वासघातमेकपटकीन॥ नहीकरयो
तदपीनृपमनमलीन॥ इहसुतलराजसुरपुरसमांन॥ चिरंजीवकरिकुबलबलिनि
धांन॥ सुषसमृधईइकीइहांआइ॥ सोकरकृपीगहमहैसहाइ॥ **रानीवाच**॥ रांनीत
बबोलीकहीरसाल॥ तुमदेकलेकुतुमहीदयाल॥ दातानपात्रयहांनाहिकोय॥ की

नोसुयोकरिहौसुहोय॥सिक्षावृपायोवरविनीत॥सोवामनअमरपदवीतु
नीत।कविरोवाच।इहसमयसुक्रकृतमनमलीन॥हितस्यामकरतमनअहि
तकीन॥देहरिस्रापकरिक्रकुदाव॥नगवंतलसौकविचित्तनाव॥कृतवामननसु
कहिसमाधान॥एकांदसतदपितुवसमनआंन॥अज्ञातज्ञाततनुवसमुहिआईसब
नासअसुनकैहैसुनाइ॥ब्रह्मायविनयकीनेविसेष॥आकासवजेहुधनिअसेष॥प्र
नुकसौविमललीलाविलास॥ब्रह्मादिसहतवैकुंटवास।दोहा।करयोअनुग्रहइंद्रको
अरुबलिकोउधार॥कीयेअनयसुरलोकसब॥सोवामनअवितार॥१॥जाकेकोउनांहि
पक्ष॥ताकोकरतसहाय॥सेवककेसेवकनए॥नरहरिप्रभुहिसुनाय॥२।कवितबपै।
अदितिकृषअवितार॥नएकस्यपप्रजेसपित॥दिर्घसहोदरदेवराज॥लघुभ्रातधर्महि
त॥वध्योविसंदविग्रह॥वैराटनिप्रहदैतेसुर॥करतबाधसुरकाज॥कस्योएकांदसत्रु
सुरगुर॥नरूं॥भुरनमातविष्यातरतन॥ब्रह्मचारकतव्रतवरन॥कारणसोइवामनरू
पकीये॥सदासुकविनरहरसरन।इतिश्रीवामनउपाख्यानेनाषाबारठनरहर
दासेनविरंचितवामनअवितारचतुरदसमो॥१४॥संपूर्णं॥अथहरिगजमोष
अवतारलिषंते।कविरोवाच।बपै॥पोहमनत्रकुटाचलप्रसिद्ध॥सबजंतुसुसंगम
जोजनअयुतउतंग॥अयुतमेषलाअनुक्रम॥महाश्रंगत्रयमिलत॥हेमअरुतारलो
हमय॥दुग्धसिधुकेमध्य॥रत्नअरुनधातसुसंचय॥तरुलतानिरंतरफूलफल॥विमल
नीरनिरझरवहत॥गंभीरगुफावकुंओरगिर॥सुषनिवासरिषवररहत॥१॥छंदपध
गंधरवसिधचारनसुज्ञान॥मिलकरतसुजसमहिमाअमांन॥विद्याधरकिनरगनवि
वेक॥निजभावकरतअस्तुतीअनेक॥मिलज्ञानतानन्रूपरसतूर॥अतिसहगुहा
झंकारपूर॥उरगाद्यजंतुआश्रितअपार॥सुबलहतजथावंछितसुढार॥झंकार
व्याघ्रसिंहाद्यहोय॥अरिजंतपंछीकपोत॥निरकरिनइस्रसरितटवनीर॥सुरर
मनितहांमंजितसरीर॥सोभाअसहजसोगंधसंत॥आमोदपसरदसदिगनअंत
मिलअनलचलतचोरनअमान॥सबकालसुषदपरबतसुथांन॥पर्बतसमीप
इकवनउनीत॥सोवरणदिवरचककविनीत॥रितुवंतनांमसोवनरिसाल॥सबकाल
फलतफूलतविसाल।छंदहनफाल।सरएकतिहवनमाहि॥अतिअमलनअथा
ह॥मरजादमणिमयमूल॥करणरतनबालककूल॥तरुकल्पविलीयनाम॥घणछां
हअमितनधांम॥वनकनककमलविराज॥रविउदितप्रफुलतराज॥भ्रमनिकरगुं
जीएरंग॥उनमतरतअनंग॥झंकारउहपिनफूलसो॥भ्रमितअलिरसमूल॥तहां
लताकुमदिनतंत॥बहुकुसमनिसविकसंत॥सोगंधसीतसुमंध॥अतिपवनत्रवि
थअनंद॥मिलतरुलतंरुवमोर॥चितमत्तचक्रितचकोर॥रसहंससारसरंग॥तहांनी
रविविधतरंग॥जलजंतुअगिणतजात॥तहांवस्तभांतिनिभात॥नवनकचककनयांन
मिलग्राहतंत्रअमांन॥कतकमगमकरकिलोल॥तिरमीनटाजनटोल॥जलउर्गद
डरजीव॥सबबलसअननीसीव॥वनमहिगजगहद॥अतिप्रबलअनयआयाद

ववरीसुगनमुघवित्त । बनसिंघर नविवित्त । नवजीवअनिअनिन्नात । जिदजांनति
नहीजात । कवतछपै । द्रावडिदेसविसाल । उगटईकवस्तवथीपर । औरावतिदअ
नृप वर्णवसतुरीच्यारवर । सबैसंमध संयुक्त । निरतनिजकर्मनिरंतर । इदुम नितहां
राज करतनृपधर्मधुरंधर । अज्ञाअषंडयुत । दंडजग दिसकोसचतुरंगदल । भगवंत
परा ईनद्ढभगत । नृपतऐकेरिवचकतल । १ । एकसमयतपकरन । करतबैठेदिआस
न मौनव्रतसंयुक्त । नेत्रमिलतत्वपरायन । लक्षीध्यांनऐकाग्र । चित्तमनवाचकर्मयुत । सि
षसुत्रकरतुलछि । मालरसरूपसातरत । निस्सीमिमिल्योपरिव्रमभन । मिलतनीरज्योंनी
रमहि । कहियुक्तव्रतइंद्रियनकी । जिहसुचितगुनज्ञानजद । २ । छंद । निजवस्तकु
लाच लतपनिधान । आऐअगस्तसोइसिषसमांन । नहीकर्योद्वारपालकनिषेध । आएजुम
धमुनिवरसुमेध । जिहयेहकरतनितकृतराज । च्यनिवारतआयोद्विजसमाज । नयोआ
वनकुनजअकसमात । नृपध्यानवस्सत्यनहिनज्ञात । असमयनहीवंदनअर्घकीन
मुनिनयोअउजितमनमलीन । उरिवद्यौक्रोधरिषिराजआन । आरक्तनेत्रमुषविषम
वांन । अतक्रोधकंपरोमांचअंग । परजर्योअनलकुतनुकपसंग । अगस्तोवाच ।
मुनिकह्योनऐनृपमदांअंध । वनकरीमत्तजैसैविवध । नृपहोकुजाइवनगजविसा
ल । मदअंधरहहिसवसर्वकाल । कबकुनहीताहित नेदकोई । हवएकजगकुमद
विवसहोइ । नृपलष्योनूतनावीविधांन । मानीसुवेदमायाप्रमान । सुरउद्यौराजकंपस
रीर । असमन्नआपअंतरअधीर । कीयराजतहांवंदनअनेक । विस्तारविनयवांनीवि
वेक । राजोवाच । प्रभुकरदंनअथवाप्रसाद । मैलयोधरसिरअप्रमाद । हूंकृतोध्यांन
परसुषनिधांन । यहकाजवियनाहिनगुमान । रिषसिषवेतुमहीधर्मरीत । अनसमजप्रा
पदेबोअनीत । जोकरेवकेविधअबीधजांन । सोलईसीसमेसबेमांन । कविरोवाच ।
हीनतादेषरिषनऐदयाल । कीनीअनीतसोवहोकाल । नृपदंडदयोहमनिरपराध
सोनएलजितमनसमजसाध । समभावकह्योकुंनजसधीर । विनतुत्केसापनटरैवी
र कवुकालवीतहोमहाकाय । तुमअवसकुंजरीजोनआय । करिहोहरिसमरनअं
तकाल । तवुपसुकैहौतिहिकाल । गविमोअगस्तदेश्रापगेह । दिनताहीवुद्यौनृपत
देह । वद्धीपनयोगजअविधपाय । सोजन्मत्रकूटाचलसुजाय । सतपंचकरिनवहत्रेना
संग मदमत्तचरुतघूमतमतंग । सप्तांसहंअगजजुथ्थसाथ । निसदिवसकरत
क्रीडासनाथ । मदगंधअंधअलिभ्रमतमत्त । गुंजारसहसवअवणरत्त । षटरितुअन्ने
कसुषकर्तबिल । मनमथविलासरतिरमणमेल । क्रमजुक्तआयतहांउष्नकाल । जल
बुधाअनिलअऐअनलज्वाल । रितवंतवरणवनसघनछांह । मातंगजूथतहारहतमां
हि । जलपांनसमयगजजूथजांन । ~~कैकैसेमि~~ लगऐसरोवरत्रषामांन । सबपैवउरद
अपनेसुजाय । जगपांनकरेसरमध्यजाय । मिलकेलसलिलअंदोलमान । मनुनयो
बकुरसागरमथांन । जलजीवविकलकलिपांतजांन । थजपरेअांनपावहिनथांन
अंतकस्वरूपजलएक । आवरतवियाफरजनअनेक । विहसमयरह्योसोवतनिसं

हरि·
३०

कवि यलिषत अंक व सदि वसवं का जल ६ लत जां न त्रियपुत्र जाई जातु लप ग्राह
जमसो जग ग्राह देहवीर त्रप द्वंद होत आज कहू चलक कंथ सबब्याम काज सुनि अस
न नेत्र रसना सवाल कोप्यो क्रूर तंत मनु प्रलयकाल उग्यो जंत्र जात अरुसात अंग स्वचस्यो
अनल सम अनिलसंग उछल्यो दिव परितस संक अनिथा न हि न विधि लिषत अंक दा
रुण सु ग्राह गजराज देव विस्तार करे तं ताविसेष पद्दल एबांध म्यारू प्रकास पसरे जुते
ताव रुण पास कतहू ग्राह तंता करूर संयह्यो रात्र मनु द्विरु दस्तर जब बंध चर्णवस
नयो जांन अँचयो सु ग्राह उर कोध आंन गजतीर नीर दिस वैंच ग्राह बलमत्त होत ज्यो
जुध बाहु गजयुहे देव गजजूथ गाज सब लगे आन बल बुध समाज दिस हस दद्ध
दिस करत दाव संग्रहो नाथ कीनो सहाय गजयुहे ग्राह स्याओ टगो मं वसवात पत्र ज्यो
भ्रमत वोम व्रति युध होत गजग्राह दूर उछल हि सलिल नहीं सुरु स्दर मथ देव दनुज
गजग्राह मांन सुरु क्षीरु सिंधु सरत्न ऐसमांन जल उछलि लगि भ्रम मीन जात विपरीतका
ल वरसै विनात दिन होत निसावदित मदिगंत विपरीत गताग ती जल वहेत नयनीत
जंतु जल थल भ्रमंत तन नएषीन जाम्यो जु गंत जुत हुधा त्रषा नए दीन जीव दिनवल
यदी सरह्यक दरव जल विवनयो थल थल नि जाय सरनीर उछल नांहि न समाय
यो न एव वर्ष दश सत वितीत नव नूतन्व रावरस वस नीत प्रति वधसी कवा द्यो अपार
करिवाहि वाहि करिनीत कार गिर जंतु हुरि दजल जंतु ग्राह यकी गटत वधत बल जं
ज ग्राह विनु मत्त वर्ष गज सहस्र वीत बल नए नंग उरव टीनीत नयन एजीव
तसा सु नंग अति विकल वार्ण अंग अंग छुट्यो कुटंब बल नए बीन देष्यो गजेस
अती हीन दीन गज षेचक स्यौ जल मग्न ग्राह थल लगत नाहीं पग जल अग्राह क
रिराज सु जांन्यो अंतकाल सुध नयो जन्म पूर ब सु ढाल अन मन्न रट्यो जब सूक अंत
मु षि का मात्र देषत महंत वंदत्रा हत्राहि वारुण विहाल करि तार कर उरि द्वा कपाल
आनंद अंसु रोमन्न उनारि करिराज करी हरी हरि उकारि सुषसेज सयन कमलास
मांन निद्रा वस है करुणा निधांन वैकुंठ विद्धुली ला विलास ब्रह्मा द्यक रूअन ग
म्य वास छंद विषम दीन आधीन बांन जब सुनी विसंभर अति अस्मय आतुर अनत
प्रचुत्र वेद यापर करद बिन लीय चक्र वाम कर वसन विराजत ज्यो पायो वाहन विसेष
सोच टेदीन हित पल मांज लद्दा जोजन प्रहवि गरुड चलत संपात गति सोइ जात वीच बा
न्यौ सुथल आवन दोरि दया लअति १ काल अलिप पंथ इंधक जगत पति अंतरजानि
य परि अतुरि निज पांन प्रगट विस्तार प्रमानिय मुष्टमात्र मातंग सुंडि जब लही सलिल
सिर हस्त वाम संग्रहिय ऐंचि काढ्यो गज आतुर करि चिंक्र ग्राह उवषंफ किय कंत वि
लोक जय जय हरिय हरिनाम लेत गजराज हरि यो नर हरि पितु उद्धरिय २ सवईया
गजग्राह युहे बडकाल वह्यौ बलहीन नयो जलग्राह न पायो सूत द्वियापरिवार न
पीतम प्रीत बुटी नयो देह परायो स्यांम सुजांन हकार सुनी निज नाम मतंग रकार लो
नायो अंगनि अवांनिकवी षिरहै सब छुटे न हथान गजेंद्र छुडायो १ पिरवास सदा सु

विलासथली॥ सुषदेतकुतेतहांउषसमानो॥ मैगलमत्तमहामदमोकल॥ वारथसोतिहांतें
बंधानो॥ बातचरत्रयलोकविचित्र॥ सदाउषमोचनस्यामसयांनो॥ औररचीविधऔरनइ
गजग्राहयह्यौसोइग्राहयहानौ॥ २ अनंतकेयसदावनवासअगोचर॥ जानवेदवतावहिजै
सौ॥ उपहारलेउपकारकरै॥ कृतउपरकृतसुदेवहिकैसे॥ नवनूतिनसंकटआनत
एतिहकारणरूपधरेप्रभुतैसे॥ उपकारविउपगारकरै॥ हरिदीनसांदेवदयालहैऐसे॥ २
छपैकवत॥ आपदरथगंधर्बविसदतनग्राहमहाबल॥ अविधअंतलौअनयषेरतिह
बालवस्योबल॥ नयोचक्रहथवेह॥ फेरअपनोपदपायो॥ गावतगुनहरिगीत॥ सहतसुष
ग्रेहसिधायो॥ हूहूजनामगंधरबहो॥ हुजरिहदेवलआपदिय॥ बकुकालरफनकस
वस॥ ग्राहयौनतिहनुगाईय॥ १॥ छंदपधरी॥ हरिगजग्रअचांनकलुषनहेत॥ चिंतवनकरित
कमलासुचेत॥ सुहतसयनसमयअवलोसधीर॥ इहजांतउठेसबकुनअधीर॥ विस्मय
मनिउपजतवारवार॥ वहिनाइहैसंभ्रमविचार॥ जिरहतनिरंतरनिकटजास॥ प्रभुगमन
हेतजांनिनप्रकास॥ उविगएसंगऔतुरअनंत॥ सबमिलेजातहरिपरमसंत॥ विद्रुदइ
द्रदिगपालदेव॥ अनुतकर्मदेषेअजेव॥ इहसमयउहपवरषाप्रकास॥ सुरिवजेगगनदु
धिप्रकास॥ गुनप्रसस्सिद्धवारनसुगीत॥ जसपढतवांनजैजयअजीत॥ सुरिवधुविवध
नाटकसुजांन॥ गधर्बकर्तसुरतांनगांन॥ इनदेहपलटभोविष्णुआप॥ सबदेरेउदतमय
मुक्तआप॥ भुजच्यारपीतपटतिलकभाल॥ मणिहृदयसुभगउरितुलछीमाल॥ सुभव
रणस्यामआयधअनंग॥ सारूपमुक्तमिलचल्योसंग॥ दुहा॥ करिवंदनप्रमुदितकह्यो
ब्रह्मादिकसुरसिद्ध॥ वेदविदतअवतेअविन॥ हरिअवितारप्रसिध॥ १॥ नृतननिंदतवेमान
अनुतविरतअनंत॥ दीनानाथदयालुहरि॥ सबकहिहैसुरसंत॥ २॥ सुरसमूहयुतगजस
हित॥ हरिवैकुंठपधार॥ नरहरिप्रभुगावितनिगम॥ वितविदतयुगच्यार॥ ३॥ छपै॥ इदद्युम
नन्टपएक॥ आपहतनयोसोसिंधुर॥ वार्णवनसरिवरविसाल॥ तंत्रग्रासितनयोआतुर
इहअवसरप्रभुआन॥ विषमजलग्राहविदार्यो॥ तंत्रीजोनसुटस्यो॥ अंतगजराजउधार्यो॥
अविलेसविरदकीनोअतुल॥ नयोप्रसिद्धत्रयलोकभुव॥ कारुणास्वरूपनरहरिसुकवी
हरिप्रसिधअवितारहुव॥ ४॥ इतिहरिअवतारगजमोषवरिनभाषावाहरलनरह
रिदासेनविरचिता॥ ५॥ संपूर्णं॥ अथहंसअवितारलिषंतेकविरोवाचदुहा॥ एक
समयविधलोकविधवैठेसभावनाय॥ सनकादिकनारदसहित॥ सबसुतबैठेआय॥ १
सकलसभासदवंदना॥ करिवैठेसवसयांन॥ होनलगीचरचातहां॥ तत्वज्ञानविज्ञान॥ २
हतानारदसनकादसौ॥ कह्यौप्रसंसानंद॥ दिर्घजानतपस्याअतुल॥ विद्यायुतजग
वंद॥ ३॥ तबसनिकादिकप्रस्नतिह॥ करिकरिरहेविचार॥ तदपिनउतरउपजत॥ नहिपाव
तनिर्धार॥ ४॥ दीनदृष्टसनकाद्यतब॥ चितियैपितुकीओर॥ ब्रह्मारहतविचारत॥ उतर
लहतनछोर॥ ५॥ चिंतावसथितविधनए॥ जगतपितामहनाम॥ प्रस्नोतरउपजतनही॥ लघु
ताकैहैनाम॥ ६॥ कविरोवाचछंदप॥ मोहिदयोपितामहपदमुरार॥ सबवेदवानवस्तव
दनच्यार॥ उतरकछुनायोतदपिअंत॥ उपहासजगतकैहैअनंत॥ हरिविरददीनबंधूदया

ल॥ सबकालकरतसबकीसंभाल॥ कृपहीतदीनकौ कृपीदेव॥ भवसाधुकहत्तय
हपरमभेव॥ यौ ब्रमकह्यौ सिवरनअनंत॥ करीयेसहाइ मम रमाकंत॥ विधकिएवे
देआतमविषाद॥ परकुरषकरि कृसिष्पाप्रसाद। कविरोवाच। उत्पत्तिखुइब्रअ
नाथनाथ॥ वउधर्यौ हंसवेकुंवनाथ॥ मायाअजीतरध्यामुरार॥ परिब्रमहंसतहांपा
वधार॥ ब्रह्मायकरेउजनवनाइ॥ काणन्भितप्रभुहंसकाइ॥ जोकह्यौ प्रथमनारद
रिषीस॥ उतरसोइदीनोजगतईस॥ दुहा॥ मायाब्रमविनाइझकरि॥ कीटनिरूपनकीन
भिन्नाभिन्नवतायकै॥ तादीष्टउतरदीन॥ १॥ जेसैबायादेहसो॥ रहितनिरंतरसंग
त्युंहीमायाब्रमको॥ देषोप्रगटप्रसंग॥ २॥ ब्रह्मादिकचीन्हेविमल॥ स्वयंब्रमविस्वेसअ
पनेअपनेभावयुत॥ अस्तुतकरीअसेस॥ ३॥ उपटास्यौ उपदेसदे॥ धरिप्रभुदयानिधा
न॥ हंसरूपअवितारहरि॥ पुनिभऐअंतरध्यांन॥ ४॥ समाधानकियेउजनकोवितार
रीअपार॥ कारणईहनरहरिसुकवि॥ नयोहंसअवितार॥ ५॥ इतिश्रीनाथाबारवनर
हरदासेनविरंचितहंसाअवितारसंपूर्ण॥ १६॥ इश्रीमनंतरअवितार॥ कविरो
वाचदुहा॥ ब्रह्माकेसुतउपजे॥ सनिकादिकतपसिध॥ सिष्टरचनअज्ञादइ॥ वेनटीगएे
प्रसिध॥ १॥ तहविधअज्ञानंगतै॥ रोषवढ्यौउरिआई॥ तिहब्रिकुटीन्रकुटितहां॥ क्रोध
नअंगसमाय॥ २॥ तिहन्रकुटीपंथरुद्रतहां॥ भएक्रोधमयदेह॥ पंचाननप्रतिमाप्रगट॥
समअंगुष्टसदेह॥ ३॥ ताहीछिनतनरुद्रको॥ वाढ्योजथाप्रमान॥ पितुआगेजबजोरिक
रगादेजोगपनिधान॥ ४॥ अज्ञादीनीब्रह्मतब॥ सहितविवेकविचार॥ सिष्टउपाजकुसि
भुतम॥ विस्वविविधविस्तार॥ ५॥ छंदवैताल॥ विपरीतवीरपिसाचविस्तरु॥ भूतप्रेतभया
वने॥ वैतालनिसाचरविकटषेचर॥ कुसरूपभरावने॥ जाम्बुलिपजातभ्रातजहतह
जगतअनहितजानियै॥ मायाअनेकसुमांनसीयह॥ रुद्रसिष्टप्रमानिये॥ जियहतक
जावरपापसंजुत॥ कष्टयुतबक्रवपकरे॥ विस्वासघातअमापवियह॥ द्रिष्टध्रोही
वित्तरे॥ बिलहकरपदवदनबानी॥ रंगआकतस्थानसी॥ पलपिसतरुधिरसरीरपो
षक॥ मलिनउतपतमानसी॥ सोउदेषब्रह्मासिष्टसंभव॥ नयचसितआकुलभए
सुरसिधजोगीजतीतापस॥ अतुरब्रह्मापेगए॥ भवसिष्टकर्मविरत्तभवजुत॥ क
मलभूआगेकहे॥ सुरसिद्धसाधकत्रासमुनिसब॥ ब्रह्मचकितथकसेरहे॥ विधबो
लिरुद्रहिकह्यौ॥ अपनी॥ सिष्टपूरणकीजीयै॥ सुरिसिधसाधकब्रमसिष्टहि॥ अन
यदांनकुदीजीयै॥ तबरुद्रवच्चप्रमानपितुको॥ कह्यौअपनेग्रहगए॥ तहांभएब्र
ह्माचितसंभ्रम॥ महातपसाधतभए॥ कछुकालसाधीउग्रतपस्या॥ गिगनवानीत
हांभइ॥ करिदेहनोतनतजकुजीरन॥ देवइहअज्ञादइ॥ विधधर्योविग्रहदुती
यततबिन॥ कुधापहिलीतनभयो॥ तिहदेहदहनभागतैतब॥ मनुस्वायंभुनमियो
अंसावतारउदारअस्तुति॥ प्रथममनुतेइभयै॥ विष्णातबुधबलअतुलविक्रम॥ ज
गतसुषदाइकजए॥ विधअर्धनागजुसेषविग्रह॥ अषिलतयूअनुसरी॥ तिहतेभ
इगुणसीलसंजुति॥ सत्परूपासुंदरी॥ अषिल्हेसजिस्मीअसरूपजेभयबरव

रनी भए । अति करे विमल विवाह उछाव । देपि सुर मुनी मन रए । पति स्वयंभू प्रिया पावन
सतरूपा सुंदरी । मैं थुनी सिष्ट अमेव महिमा । विस दतिन ते विस्तरी । तहां साई तु मनुपाय
पदवी । करत सिष्ट प्रमांन । सुत भए द्वै अरु तीन किन्या । पर्म धरम निधांन । प्रियम प्रियव्रत उत्र
लघु । उतांनपाद अनूप । देहूती प्रगट प्रसूति अरु । आकुती अतुलति रूप । भव सिष्ट भू
तपि साध निर्नय । कर्त अति ति तपि पात । भ्रम सिष्ट न इउ सनीत ताजित । पाजपो जितपात । इह
सुनी ब्रह्म अनीत अतसय । चित्त बहु चिंता भरे । देतिलक चामर छत्र मनु तहां । स्वायंभू अ
भूपत करै । ति लगे षात पिसाच मनु कह । निकस के अग्पात गे । किंदरा गुंठ सुमेर कीत
ह महा तप साधन लगे । कछु काल बीत दयाल के सब । प्रगट तत हद रसन दीयो । तिह गे
र मनु सायंभू वक हे तह । विष्नू सू इहवी नियो । प्रभु स्वर्ग अरु भू लोक मो ते । करत रछा
नाव नै । तुम अनत अजेय अनाद अछुत । जोग हित कत कानै । वरदयो विप्र प्रसन मनु कहत भू
म्परछा तुम करै । स्वरग को हम जतन करि है । चित चिंता मत धरै । दोहा । स्वायंभू मनु रुदयो
मन वंबत वरदांन । दीनानाथ दयाल पुनि । हरि भए अंतरध्यांन । १ मनु आए भू लोक फिर
करत भए सुष राज । अतुल तत तेज प्रताप अति । सहित समृध समाज । २ रुचि नांमा मुनि व
र भयो विद्या ब्रह्म विनीत । ताके यह आकूती त्रिया पतिव्रता सु उनीत । ३ जन्म उदर आकू
ति के । अनें त अंस अवितार । जिग्य नाम सो इह भौ । रुद सिष्ट प्रयकार ४ ईद स्वर्ग रिद्धा करी
स्वायंभू भुव लोक । सिष्ट वधी तिह मेष धनी । अपने अपने ओक ५ स्वायंभू मुनी मनु भए नामा
सुरराजे । मनंतर यह प्रथम भौ । जानत साध समाज ६ । यहै मनंतर के विषय । भयो जिग्य
अवतार । कर्म निरूपण मष क्रिया । कीनो धरम प्रकार ७ दूजो मनु अवितार भौ । स्वारोचिष
यह नाम । अग्नि पिता स्वाहा जननि । विमल नीत विश्रांम ८ इह भयो विभु नांम तब । स्वर्ग जो
करु छवार । दया धर्म उपदेस करि । भए रिसि भअवितार ९ तीजो उतिम नाम मनु । पिता प्रिय
व्रतिराज । सुमताना मा मात तिह । सुष संतान समाज १० इह भयो तहा सतिजित । विधयुत
स्वर्ग विहार । नरनारा त्यति तिह समेय । भए उत्य अवितार ११ चौथो तामस नाम मनु । प्रथु ख्यात
तिह तात । केतुमती माता भइ । विमल विश्व विष्यात १२ इह भयो देव हित तहां । उष्ट नरुचि
चार । दीन उधार न दुष हरन । श्री हरि तहां अवितार १३ ग्राह ग्रस्यौ गजराज जल । कीनी दी
न उकार । बल विक्रम करि हीन भौ । मो छक स्यो तिह वार १४ पंचम मनु रेवत भौ । तामस को
लघु भ्रात । पिता मात वेही भए । विश्व विदत जगवात १५ इह भयो विभु सरो । ताके सम
य विसेस । नाम भयो अवितार तिह । श्री वैकुंठ सुरेस १६ षष्टम मनु चाक्षुक भयो । पित सुच
हु उनीत । माता भर हूति प्रगट । वेन वनो गुप विनीत १७ ईद भयो दुरमां नतव । श्री कवि
प अवितार । वीर उदध्यम थांन किय । का ढेरल उद्दार १८ षट विती तमनु एन ए । अपनी अ
पनी वार । वर्तमांन नवतम जे । कहि है जथा प्रकार १९ वैवस्वत मनु सातमो । विवस्वान पि
तु तास । अरु माता संज्ञा भइ । पुहवी प्रघि प्रकास २० नाम पुरंदर इन्द तहां । तहां श्री बामन
अवितार । तीन पग्ध क्रू मेदनी । बल छलि बंधनहार २१ वैवस्वत मनु इह युत । वर्तमांन संसा
र कहि है अब चौंवत जे । मनुवास अवितार २२ मनु सावर्णि भयो यह । वैवस्वत के

भ्रात विवस्वान तेही पिता ॥ सोपे संज्ञा मात २३ ॥ अष्टम मनु यह जानबो ॥ अरु बलनामा
द जो ॥ कैहै नन्न नृप गति ॥ त्योक हि है मनु दइ २४ ॥ नवमो दिक्ष सावर्णमनु ॥ पिता वर्ण
सप्रहास ॥ श्रुतनामा तहां स्वर्गपति ॥ पिरु तक हतप्रकास ॥ २५ ॥ दसमो ब्रह्म सावर्णमनु उप
श्लोपि तु ताह ॥ इद नाम तहां विश्वसृज ॥ अषिल प्रसिध सु आहि ॥ २६ ॥ नाम धर्म सवर्णमनु
एकादशम उदार ॥ पिता अनाघ्रत इद्र धृत ॥ धर्म सेत्य अवितार ॥ २७ ॥ मनु जब कैहै द्वादसम
रुद्र सावर्ण सुनांम ॥ देवानु षत्ता के पिता ॥ इद नाम रितुधाम ॥ २८ ॥ रक्षक वेद मजाद के ॥
विवध धर्म विस्तार ॥ नाम सुधामा मात तिह समय ॥ प्रभु कैहै अवितार ॥ २९ ॥ देव सावर्ण त्रियोद
सम ॥ दिवि हो त्रपितु जांन ॥ इद्र दिवसवी ता समय ॥ रिन अअवितार समांन ॥ ३० ॥ इद्र सावर्ण च
तुरदसम ॥ वृहस्त सेन तिह तात ॥ श्रुतसु विना माइ द्रतिह ॥ कैहै विश्व विष्यात ॥ ३१ ॥ भुजसु
स्ती मघ दीन के ॥ करि है जतन अपारि ॥ सुनियत कैहै तिह समय ॥ वृहद्भानु अवितार ॥ ३२ ॥ दोहे ॥
अपने अपने समय ॥ विहतत पते जराज बख ॥ धर्मनीत दिव्य लोक ॥ करत रक्षा महि मं
डल ॥ तिह प्रसाद मष भाग्य ॥ सकल निर्नय सुर पावित ॥ आप आपने काज ॥ लोक लोके
सच लावत ॥ विस्तार सिष्ट विधि निर्विघन ॥ जिन अनेक दुरजन जए ॥ कहि सम हृ नरह
रि सुकवि ॥ मनंतर अवितार ए ॥ इति श्री मनंतर अवितार ॥ १७ ॥ भाषा बारठ नर
हरदासेन विरचित ॥ अथ धनंतर अवितार लिषंते ॥ कवि रोवाच ॥ दुहा ॥ आ
मय षयकारी अषिल ॥ धनंतर अवितार ॥ तंत्र मंत्र औषद सस्त्र ॥ रवेचार उपचार ॥ १ ॥ छंद
प० ॥ दनु देव जनय बल अप्रमान ॥ मिलक स्यो दुग्ध सागर मथांन ॥ तहो फेएक एका श्र
कास ॥ तेन एराइ प्रथी प्रकास ॥ जगवात पितक फहतक जंत ॥ इसाद प्रगट आमय अ
नंत ॥ विसैत बआग मज्ञान चेत ॥ हरि जान विश्व एता सहेत ॥ परिब्रम लख्यो रोग न प्रभा
व ॥ नव नृत हेत कृतदया भाव ॥ तेज मय उरष इहं प्रगट तांम ॥ कलकुं भसुधा पुरित
सुकाम ॥ बउस्यां मपीत वासन विसाल ॥ कमलायत लोचन तिलक नाल ॥ कुंडल किरी
ट मिलमय प्रकास ॥ कवकु वितसो भियत अस्त तास ॥ अत सुंदर आकृत विधूंस स
ब अंगविक्क सो भाव तं तम ॥ ~~तैसोमय~~ रे तेजमय धनंतर नाम तास ॥ विष्यात वैद्य विद्या वि
लास ॥ नाटिका काल औषद गिनांन ॥ वसवर्त रोग नासक विधांन ॥ आमय विनास कीनो
अपार ॥ प्रगटे सुग्रंथ विश्वोपगार ॥ सुजतंत्र मंत्र औषद सुभाय ॥ विधस स्त्र क्रियादी नी
वताय ॥ उनि धात कर मम्लीक्वार ॥ कीने प्रचार जग परुपकार ॥ परिब्रह्म नयो प्रथी प्रका
र ॥ निज नाम धनंतर रोग्प नास ॥ दीने वताय एतत्वदाउ ॥ भावना सिद्धि विश्वास भाउ ॥ निर्लो
भ वैद्य रहि बोनिदांन ॥ सो इस फल हेत वेदक विधांन ॥ कवित ॥ करदया जगत उपदे
स कीन ॥ जगदीस भए जग जोत लीन ॥ दुहा ॥ नरहरि प्रभु इह हेत भए ॥ धनंतर अविता
र ॥ तिह प्रसाद भए रोग ते ॥ सब निरभय संसार ॥ १ ॥ इती श्री धनंतर अवितार ॥ १८ ॥
संपूर्ण ॥ भाषा बारठ नरहरदासेन विरचित ॥ अथ फरसा अवतार लिषंते ॥ क
विरोवाच ॥ छंद प० ॥ भुजराम सुन कु अवितार देत ॥ सुन क्रस्त करम जिह धरम सेत
कुसनयो नृप इक सोमवंस ॥ सुत भयो कोसिक पोहवी प्रसंस ॥ तिहकस्यो महा

तप उत्र काम। सुत होय ई द्रसम धर्म धाम। इह कथा सुनी जब ई द्रआप। तब विघ्न कर तन्न
यो अत स पाप। कीनो सुरेस उद्यम असेस। तप भंग होत नाहि नरेस। सुर राज गए जब
गुर निकेत। हव कहे सकल तप भंग हेत। करि जतन विघ्न मेव कुत कीन। नृप रहत निरंतर ध्यां
न लीन। गुर कह्यो इद्र सू गूढ ग्यांन। मिल नृप हि कर कुमित्री समांन। इह तप निहार तब देव
राज। कौसिक सू कमित्री स काज। कौसिक सू सक्र य इव छल कीन। कां मनाक वन तप नृत
सु लीन। निरधार कह्यो उतर नरेस। सुत कुव रूं आन मे रे सुरेस। दुहा। तप इरन करि
राज तब। सुप नो गव कु सरीर। मम अंसा अवितार सुत। तेरे कै है सुधीर २ यो कहि इद्र सु
सथान गयो। राजा आयो ग्रेह। रस विलास सु पराज के। गुनवत सहित सनेह ३ अविध पाय
सुत उपज्यो। राजा गाध पुनीत। अंस नयो सुर राज को। विद्यानीत विनीत ३ कन्या उपजी गा
ध कै। सत्यवती जिह नाम। सुंदरता सोभा सहित। सम गुन लछिन धाम ४ ब्रह्मा को सुत
भ्रिगु नयो। सुक नयो भ्रिगु ग्रेह। रिचा रिचिक ताके नयो। महा तेज बल देह ५ रिच रेचिक नृप
गाध की। कन्या जाचें कीन। राजा कह्यो रिचा राज सो। कुं कुवरू तन आधीन ६ राजावाच। हय
स हंस्र ससि कांत तन। साव कर्ण सुन रूप। इते समर्पे आन मा हि। कन्या व रै अनूप ७ मैय
हली नो एक हृत। सो मिथ्या न हि होय। जो यह पन पूरन करै। सत्यवंती पति सोय ८ कविरो
वाच। तब रिचिक गए वरुण पह। हय जाचन्या कीन। साव कर एन लछन सहित। हय सह
स्रती हदीन ९ आंनद एह य गाध कह। कीनो वचन प्रमांन। सत्यवती संकल्प करि। दीन्ही क
न्यादांन १० मुनि कृत किन्या करियहन। ले आए निज ग्रेह। कर्म चारि ग्रस्त के। निवह नियत
सनेह ११ सत्यवंती अनि पुत्रता। कछु नो काल वितीत। अंत डुष नर प्यार सों। विनियो पर
म पुनीत १२ सत्यवंती की मात तब। आप अपुत ता जांन। जाचन्या जा मात सो। पुत्री पुत्र हित
मांन १३ पुत्र हेत प्रिय सा सुके। कीनो जिज्ञ विधांन। मष उसाद मुनि मंत्र युत। दै चरु कर सम्मां
न १४ छंद पध। चरु नयेस हूरन मंत्र जोइ। रिष उम कुरु कीने प्रयोइ। प्रिय हेत कह्यो सो
चरु सुतंत्र। तिह ब्रह्म सक्त मेली सुमंत्र। सा स्त्रं निमंत्र चरु कृत सतेज। तिह त्री सक्ति दीय
रुद्र तेज। चरु नए सिध पूरन प्रभाव। सो सात्व गुन संयुत सुभाव। रिचीरुवाच। संध्या स
नान्ह सरिता सनेम। रिष कह्यो जात परिब्रह्म प्रेम। उनि आय सु दे है चरु पुनीत। विधि जु
गत होउ तुम महा विनीत। यो कहि रिचिक गए नित काज। सानंद सरित संजुत समाज। रिष
रहे काल कछु सरित तीर। आतुर स्वभाव त्रिय कन्न अधीर। उन उत्तम नोरथ सिध पाई।
अंबा समेत मष साल आइ। दुहा। सत्यवंती की मात तहां। कीनो चित्त विचार। मुनि जु क
ह्यो निज त्रिय निमत। या मे कछु इध कार १५ सत्यवती की निमत चरु। कीन्हो कै तो रिषि स
माता सो चरु आपले कीनो नृप असेस १६ सेष रह्यो चरु पुत्रिका। न दयन कह्यो सम्मूल
विधि के अंक नि अनिध्या। नावी टरै न मूल १७ करि आए रिषि नित कृत। चरु कुन पाए थांन
सत्यवंती को तिह समय। पुछित नए निदांन १८ त्रिया दयो तब प्रिय को। उत्तर प्रेम प्रसिध
न दयन करे हम जिज्ञ चरु। हो कुमनार्थ सिध १९ सत्यवतीवाच। छंद प। तिह काल गर्व
स्थित नइ सताप। मुनि त्रिया कष्ट उपज्यो प्रमाप। अब ही मो हि उपज्यो क ष्ट आई। सुनाग

न्हीतखरनसुनाइ स्त्रीवाच॥ कहिविप्रनइविपरीतकीय॥ कल्यानहेतनहीकछुहो
य॥ सत्यवतीवाच॥ चरुकस्योविपरजयइम अचेत॥ त्रियजाततजान्योहितकुहेत॥
रिषीवाच॥ तवहोहि भ्रातस्वातिकसुभावई॥ अतिघोरकरम सुतहोहिआई॥ त्रियोवा
च॥ नहितहिकह्यो अतिसन्नईनाज॥ सुतिघोरकर्मनोहिकीनकाज॥ रिषीवाच॥ वि
यदयोवचनरमनीप्रसिध॥ सुतहोहिस्वांतिसाचावसिध॥ तवउत्रजद्यपिभृगुकुलउ
नीत॥ कियउग्रघोरकर्माअनीत॥ कविरोवाच॥ उनिमंत्रउदकिपायोप्रकास॥ त्रियसं
तिरूपनयोगर्नतास॥ नयोउत्रअविधपरमांनपाय॥ जमदग्निमहास्वातिकसुभाय
राजाइक रेणुकधरमधाम॥ सुत्रिकातास रेणुकानांम॥ जमदग्नरिषहसोदईदांन॥ रेणु
कावेद संजुतविधान॥ तिहनइगर्भथितसमयपाय॥ भृगुवंसजदपिदारुनसुभायद
समासवीतनयोजन्मदेव॥ अवितारफरसधारुनअजेव॥ इहकालउछन्नीअनीत
उवकरीनारिपीडतसनीत॥ अवितरेइसतिहसमयआई॥ श्रीफरुसरामगोभृजस
हाई॥ विधजुक्तकरीसेवाविसेष॥ सिवदइधनुरविद्याअसेष॥ सस्त्रास्त्रविद्यासमान
अधियनसिधपाइप्रमान॥ तपकरेफरसधरगंगतीर॥ स्वातिकसुभावबैठेसधीर॥ ज
मदग्नअग्नहोत्रीहुतात॥ प्रतदिवसकर्तकितसमयप्रात॥ रेणुकानित्यपतिव्रत्यनेम
पटकलसनीरआणतसप्रेम॥ इसदिवसआइगंधर्वराज॥ सुरसरितविबुधकन्यास
माज॥ तिनामपद्मपालीप्रसिध॥ संजुतविलाससुषसकलसिध॥ विधांनरागवाजित्रवि
वेक॥ अपछरा करतनाटिकअनेक॥ अवगाहगंगजलअंगअंग॥ मिलकरतमनक्रीं
डामतंग॥ इहसमयरेणुकानीरआय॥ गंधर्बदेषसबसुषसुभाय॥ मनचिकतकरित
चितवनमूल॥ सषतहांजहांहरिसांनकूल॥ वसुधाहेथैकुदेसवांन॥ इकदेहधरत
हमरूअझांन॥ सोगंधवस्त्रसफानसैन॥ चितनेमकर्मजुतनदिनचैन॥ तंबूरतनछषन
नतेल॥ सिंगारनहिनसुषसमयषेल॥ नृपग्रेहजन्महमत्रथापाय॥ वृतनेमतपहिजेहे
विहाय॥ मनसोचवैरेणुकाकस्योमाहि॥ चितचीतकलसजलरहितनांहि॥ पटपात्रनीर
नहीचलतपेष॥ नयनीतहोतविस्मयविसेष॥ जवकालअतीक्रमनयोजान॥ त्रुन
आईग्रेहतवरित्तपांन॥ भृगुहस्तजोरिपतिअग्रजाई॥ कहानीरकह्योनर्याविनाई
पपात्रआजआवेनआप॥ मृतकल्सकरूआनोअमाप॥ त्रियवचनसुनतउमन
योआय॥ पतिध्यानदिष्टकारनसुपाय॥ गंधर्बदेषसंपतिसमाज॥ इहचित्तअनागी
चल्योआज॥ चितचारनावतितउपजिवाम॥ मुनिकरेरोषचषरततांम॥ दुहा॥ जामद
ग्नउवाच॥ वसुमुनिआदजुपंचसुत॥ पितनबलीनेटेर॥ मस्तककाटकुमातकौत
तरिदेउनफेर॥ २०॥ तवपांचकुउत्रनचन॥ फेरकह्योडपरोई॥ ऐसोपापअक
मइह॥ हमपेतातनहोई॥ २१॥ फरसुरांम तिहछिनसुतप॥ करतसुरसुरीतीर॥
मुनिजमदग्निसकोपमन॥ बोलरयोरिणधीर॥ २२॥ पितान्नककदारुणवकति॥ आयो
फरसउनारि॥ पितुदीन्हीअज्ञाप्रगट॥ मातभ्राततवमारि॥ २३॥ काटेसीसकुमारकरी
फेरनपूछीवात॥ पृथ्वीतललोटतपरे॥ पांचभ्राततअरुमात॥ २४॥ जमदग्नोवाच॥ न

ऐसघरिषजमदग्नि कीनी अद्भ्रासिष जोकछुरस्त्रा चितमह मांगकुवर प्रसिध २५
॥फरसरामोवाच॥ जोरिकयोकरिफरुसधर केआधीनजुआप जननी सोदर
जीवैमोहिन लगैपाप २६ तहांजिवाएमृतकसब ब्रमतेजरिषराज मानक
सोवतसेउठे करितनएग्रहकाज २७ फेरकह्योतहांफरसधर मेरोनेमअनंग
कबकुनजननीजनककी करुकुनअपमानंग २८ जननीपत्नीस्वनावजुत
उ१ जैवैरविकार कबहु अज्ञादेहमोहि तुमहिहतूनिरधार २९ तुमतोदेवीस
ककरि सबैजिवाएआज इनपहजीतुमनाजियैसबकोहोहिअकाज ३० तातेजु
कननीकटतुव अंतररहिहूजोइ होयघयोजनमीहिलग लीजकुवैद्यबुलाइ
३१ योकहिकीनोरामतब आश्रमगंगातीर तपव्रतसंजमनियमजुत करतनऐत
हांधीर ३२ हैहयवंससवसिधमह नयोराजतिहवार नामसहंस्रार्जुननृपति विद्या
बलविस्तार ३३ दतात्रयआराधकीए पदवंदनकियसीस सेवाहैहयराजसो प्र
सन्नएजगदीस ३४ तिहविद्याआन्वषकी दीनीसहितविसेस तातेजलथलगव
नपथ पायोनृपतिप्रवेस ३५ रिभकरिसमरिअजेयता दऊदिसहाथहजार जो
ज्ञसक्तअदृप्यश्रिया पाएएककहिवार ३६ कन्यारेणुकनृपतकी ब्याहीहैहयरा
ज पर्मप्रियापटरागनी सोभासीलसमाज ३७ ॥छंद१॥ इकद्यौसप्रबलहैहयनरे
स वनगहनखेलमृगीयाविसेस वनितासुसंगसंजुतविवेक यौकरतउचितक्री
डाअनेक थलजलविहारपरबतसुथांन किदराविविधनिरफरनिवान सरवर
नविमलपंकजप्रकास वनकुसमत्रविधमारुतविकास गंधर्बकरतसंगीतज्ञा
न सुरसरसतानवाजतविधांन ऋतुरितुविसैलासवैनवविसेष अद्भुतप्र
नंगविलसतअसेष तिहसमयआयसुरखुरीतीर सेन्यासमृहचतुरंगसंग अ
नेकसुभटजोधाअभंग मृघियाविलाससंजुतसधीर तीहसमयआयसुर
खुरीतीर जमदग्नकरततहातपउदात वनविमलतपोथलजगविष्यात वककौ
लस्यतरांनीरुराज देष्योमुनिआश्रमवनविराज यहनरमदेषरानीसुथांन इह
कहोकोनकोतपनिधान नृपउष्टनावउतरसुदीन मनगर्बतर्कअंतरमलीन इहां
वस्ततिहारीवेनआज मिलवलकुदेवसंपतिसमाज ॥दोहा॥ सेन्याघारैराषिसबआ
पगएमुनिग्रेह मिलेपरसपरमोदमन संजुतहितहिसनेह ३८ पूजेविहतप्रसन
मनपर्नकुटीबेवारकीनोप्रश्नोतरिकुसल विविधसप्रेमविचार ३९ दिनअंतरहै
हयनृपति अज्ञाजाचनकीन रहसुन्यरिषपत्नीतबै मन्महतइमलीन ४० ॥जमद
ग्नवाच॥ फेरकह्योतहांजमदग्न राषउधर्महमार वनफलभोजनजलविमल क
रीयेअंगीकार ४१ रहआएउतिथक्रमजोनकरैयहवांन धर्मविपर्जयहोउजब तु
मसुबजानसयांन ४२ ॥राजोवाच॥ नृपतिकह्योकठुहासजुत वचनअहंकतफे
र मेरेसेन्यअसंषहै मुनिदेषउहियहेर ॥जमदग्नोवाच॥ महाउरीमहिषावती ॥जिनके
राजसथांन तिनकेअवरजकोनरूप जोदजमिलअप्रमान ४४ ॥कविरोवाच॥ नवरा

जासिह्नराजसो॥कीनोक्वनउमांनसरतातटपटग्रेदकरि॥नृपतगएमध्यान॥४५
कामधेनजमदग्नकै॥दैविपमतिइहनांम॥पर्णसालथितइजियत॥देइसुविछ
तकाम॥४६॥दिह्नोजनआसनविविध॥हैहयराजबुलाइ॥सोहसामतरुसेन्यस
बमुनियहबेठेआइ॥४७॥बंदवधरी॥इछ्याउसुकरेनोजनअनेक॥मिष्टांनपांनविज
नविवेक॥मृघमदकश्रतांबूलतेल॥सुगनसेफसयनसोगंधमेल॥नईईछ्यासुरन
नांतनांत॥पलनृपतवहीहावितपांन॥नृपनयोमहाइचरजनिदान॥उनवृभि
तबैसेवकसुजांन॥राजावाच॥नंफारकवनदेखोसुनाय॥इछ्यामनजहातेवस्तु
आय॥सेवकवाच॥देषीऐकातहमनृपदयाल॥सुरिनीइकबांधीपरनसाल॥कहि
यतरिह्नयाकहहकांमगाय॥इहसिधसबैताकोप्रभाव॥राजावाच॥मंत्राधपतन
सौकहिमहीस॥इहसुरिकाजजाचऊरिषीस॥मंत्रीवाच॥तबसविवकह्योसोमु
निरिसाइ॥नृपकह्योततोलीजेजुजाय॥कविरुवाच॥तजुतह्योजबैनृपविदाथाई
सोधेनुसविवजाचीसुनाई॥जमदग्नवा॥ईसुतुमहयगयदियेअनेक॥ईहमै
रेवछियाआहिऐक॥गहिहैनसविवनहीदेऊगाय॥ततिदिवसविर्जलदर
सपाय॥मंत्रीवाच॥सोकह्योसविवनृपसोसुनाय॥गहीदेतनहिनजमदग्नगाय
॥कवीरोवाच॥बलकर्षरिह्नहिंदेमहारेस॥लेगयोधेनुहेहयनरेस॥रिवरांमरांम
कहिकिहुकार॥धरिकोपसुआयोफरुसधार॥फरसरामवाच॥तुमबीत्योकार
नकवनतात॥सोककुमोहिजोविषमवात॥कविरोवाच॥कततसुनोउद्रछत्रीजुकी
न॥नृगुवंसतीलकजहांरीसकीन॥मिषलअजिनमोजीसमांन॥वेषमकुवार
करधनुषबांन॥जटतिलकदर्नउपवितजोग॥नृवनार उतारनरहितनोग॥जु
तब्रह्मचर्जउरक्रोधज्वाल॥कमजोगपवकुवमनुषलयकाल॥आवर्तवातचलि
असमांन॥ननरेणुरुधसूकेननांन॥नाषत्रदिवसअजुभुलनिहार॥चहिगिग्न
गीधपंछीप्रचार॥पलचारनषीकुलमिलअपार॥सहायमांनधावतसुढार॥वेता
लवीरमिलप्रेतवृंद॥उरवढ्योमहाजोगनअनंद॥हेहयदलदेखतअसुनहोत
विपरीतनिमतचलविचलचेत॥उरविकसस्हरअंतरअनंद॥विसमोहपरेकात
रनछंद॥उरधसतराजहेहयप्रवीन॥भुजिरांमपिष्टपहहाकदीन॥सुनिवचनफि
स्योसंग्राम॥सूरकरीसहंससकैआयुधकरूर॥मिलनयोमहानारथनयांन॥अग
गेजुवीरमनअसहमांन॥इहओरफरसुधरएकआय॥दससहस्रउनदिनसदाप
मुषमारमारसंग्रामसूर॥सोरस्योसहस्रुजतंनपूर॥इकपतीसुरथायनअघाय॥उवउ
वकबंधइकनिरतआय॥दलपालनूमभयकालदीस॥गजराजगरजहैवरनहीं
स॥दिगदंतनीतदिगपालमेल॥कसमस्तकमवहाहंतकोल॥फिगमिगतअचलथि
रवरउदास॥उनिपवनगवनविथकोपकास॥करसहसछेदककर्वसुकुवार
सिरकाटरामसेन्यासंघार॥मिलमांसश्रोणकर्दमसहीस॥दिनपलयकालथिर
चरनदीस॥सतरहअक्षोहणीरेसूर॥प्रभुहेतसिधपोरषसदूर॥बसओणदि

परिनमृविहार॥ करउर्धघोरधाराकुठार॥ चितअग्रकामधेनाअनीत॥ जुधअज
रवि विराजतअरिजीत्त॥ इहरूपदेषत्रह्लादआय॥ सुनकरी पुहपवर्षासुनाय
वाणीसुविविधजयजयविसेस॥ सानंदवजेदुंधिनसुरेस॥ निरसंकमारहैहयनरेस
उरफरसरामकीनोप्रवेस॥ जयपायमहासंग्रामकीत॥ पितुदईआनधेनाउनीत॥ त जी
पकर्नगएफिरसांमतान॥ करिनियमकछबैठेअकाम॥ दुहा॥ सहंस्राअर्जुनकेसुकत
सोपितुवयरसंभार॥ दिनकछुवीतेदुष्टता॥ वटकुकर्मविचार॥४७॥ कोपैहैहयराजके॥ सुत
आएदलसाज॥ ततछिनआश्रमगंगतट॥ बैठेमिलगजवाज॥४८॥ छंदपा॥ जमदग्नध्यानजु
तनेमजाप॥ इहसमयकर्तबैठेअपाप॥ वषमुदितमिलतपरिवलसेवेत॥ आनंदमग्नउधारहे
त॥ व्रतमोनजुगतवरजितविवाद॥ मुनिबैठेआसमअप्रिमाद॥ अनसमयदुष्टछत्रीअनीत
जमदग्नहतेतिनक्रोधजीत॥ हाहंतसबरिषिग्रेहहोई॥ रेणुकासहितसबरुदनरोई॥ सुनदु
सहरूनदुजरामदेव॥ अतिवेगतहांआयेअजेव॥ सामंतसूरसेन्यासमोइ॥ दुजरामहथे
रिउसुवनदोई॥ मारेअसंषषत्रीअमांन॥ रिणत्तरेरुधरनिर्कर्निवान॥ तहांरामनियमलीनोतु
रंत॥ सुनषत्रीकर्मदारुनदुरंत॥ षलरुधरिपूरतटनीविष्यात॥ तहांपेवजलांजुलीदेकुतात
संकष्पस्योसुरनरसिध॥ सोइजामदग्नसग्रामसिध॥ देअग्निदाहपितुक्रियाकाज॥ सब
करुकअनुजमिलकुलसमाज॥ देअग्याबंधुनरांमदेव॥ उगिचलेआपआपआयुधअजे
व॥ हियनयोकछिनआयुधप्रहार॥ तिहकर्तीतिछधाराकुठार॥ दुहा॥ रामआईमहिदिवावती
कहेजुक्वनकराल॥ उत्रजुहैहयराजके॥ आननिरेततकाल॥५०॥ छंदपा॥ सग्राममनयो
दारुणसकोप॥ रिनवीरजुरेतहांपेजरोप॥ मचमारिपरसपरअतीअमांन॥ नाराथनयो
भूतलनयान॥ दुजरामहतेरिउसुवनदोय॥ सामंतसूरसेन्यासमोय॥ मारेअसंषषत्री
अमांन॥ रिनन्नरेरुधरनिर्झर्निवान॥ तिहपैठकस्योतिर्पनसुतात॥ विस्तरीलोकनयनि
यमवात॥ मस्तकनअंडकियउरीमांहि॥ जगजीवदेषनयनत्तजाहि॥ इहनांतिसोध्य
उर्बीअनीत॥ निरमूलकरेषत्रीअनीत॥ नयोपानलनणनेआव॥ अंकुरिछेदसंतति
अनाव॥ इकवीसवेरदेउसहदाव॥ जुवकरीनिछत्रीवेरनाव॥ दीनीजेविप्रनउदकदां
न॥ नमीसनतोंम्पथित्तराजथांन॥ पतिजुधरुद्रतिरपनप्रकार॥ धरकोपवैरहितफरसधा
र॥ इहनांतनइलेलेअमाप॥ पृथ्वीसुगमाइलोनपाप॥ परसपरकरेविप्रनविरोध॥ इकवीसवा
रषोइअबोध॥ इकसमयमिलेछत्रीअसेष॥ वहिविप्रनसोविग्रहविसेष॥ धरफरसकुतेकत्र
ध्यानलीन॥ कतसुनीबकरछत्रीसुकीन॥ आतुरअनीततबरामआय॥ संग्राममच्योदारु
णसुनाय॥ विपरीतवीरक्रीडावीसेष॥ डिगदेवचकितनणर्वितदेष॥ दुजरामदीपअरिसजव
ष दाय॥ अनसंकेपरेघायलअघाय॥ पलचारग्रीधआहारपाय॥ सबनएत्रपितअपनेसुनाय
कुरुषेत्रन्देम्पसंग्रामकीन॥ वहिचलीउहासतानवीन॥ नरिरामकुंडरुधरहिनयानपर
सुधरिपैठकंछहित्रमांन॥ तिहरुधरदेकुतिरपनउनीत॥ विष्यातवातत्रयपुरवीनीत॥ यहसमयपि
तैतिजमदग्नआई॥ सबपित्रयुक्तस्वातिकसुनाई॥ ब्रह्मादिदेवमुनिगणविसेष॥ दारुणविलास
पितनकूदेष॥ सुननईसुमनविरषाप्रकास॥ सुरसिदसहूजयजयसहास॥ जामदग्नवाच

नऐपितरपितासंतुष्टभाव। सुतदोकुअबैस्यातिकसभाव। करियैनिवर्तक्रीडाक
राल। सुषनऐहमहिमिटवैरसाल। फरसरामवाच। फरसधरिकिस्योपितसुसशीत
रिषजांनतहोतुमधर्मरीत। रिनछुट्योमोहितुमनिट्योरोष। सोक्चनदेहुसंजुतसंतोष
पितकरीअत्रवाचाप्रमांन। वलकदेअहिंस्याकृतविधांन। अतिरोषजदपिसुतजयअ
नेक। अनुसरकुअहिंस्याधर्मएक। सुतधिनधिन्यपोरुषप्रसुभाय। तपकरकुविगत
कैवैरभाय। सुरपितरगएस्वस्थांनसंग। परसधरकहतपोरुषप्रसंग। अतिआतुरआ
एउहीकाल। भुजरामभुजनघेर्योदयाल। दससहंदिसजाचतविप्रदीन। प्रभुपरसुराम
बोलिप्रवीन। अक्रायरुधरवेराइकीस। छितहइतुमहिहतहतछत्रीस। दिगअंतलइ
तुमप्रथ्वीदांन। निजअसंतोषसोगइनिदान। धरिविप्रआपआपहिविरोध। इकवीस
वेरषोइअबोध। कपैकवित। स्वस्थसमयभुजमहासूर। महिमाप्रसिधमहि। रणहि
दीनआधीन। कर्मयुतमर्मनिगमकहि। विषमपर्सपरवयर। दुतीयसुषदेषमहादुष
असहमांनउतकरष। आनमिलहोतमलिनमुष। तिहनाहिनप्रथ्वीजोइतुमनिछ्रा
पररहिउदरनर। भुजरामकह्योइह भुजनसो। प्रभुतातदपिविरोधपर। दुहा। योकहि
रामसुसांतमन। विरतह्वैलेवनवास। वैरविरोधविहायसब। हरनदयाप्रकास। ५। क
वित। फरसरामप्रथ्वीप्रविव। प्रसिक्रमणप्रकासीय। अन्यकाजतीरथप्रसिध। कनीयम
जुक्तकिय। सांतभावअनुसरीय। दयादिस्यापितुदीनीय। मनवचकर्मविसुध। बुध्य
कर्णरसभिनीय। वनगहनमहंद्राचलविमल। सरितातटआश्रमसुषद। नितब्रह्मच
र्यसंजमनियम। प्रभुसाधतचिरंजीवपद। ६। ब्रह्मवंसअवितरन। दुष्टप्रियकुल
दारुन। जटातिलकजग्योपवित्र। विप्राजिनधारन। दरभमोजमेषला। धनुतुनीर
विसकधर। धाराघोरकुठार। विषमविसेसवहतवर। अवतरनमरनवरजितअनं
त। जरारहितइद्राद्यजित। तपकरतअतुलत्रयलोकपत। धावतसुरउधारहित। ब्र
ह्मसग्रेहपरिव्रम। धर्योनिजदेहधर्महित। मातबंधुपितुवचन। हंतितोपापअमित कर
मषविछुजदेह। ब्रह्मचारीव्रतधारिय। कियनिछत्रीइकवीसवार। भुवभारउतारीय। कत
वितर्करेनरहरिसुकवि। विमलकितजगविथरीय। त्रयलोकनाथभृगुकुलतिलक
कारनइहअवितारकिय। ४। इतिश्रीनाभाबारठनरहरदासेनविरंचितश्रीफ
रसरामअवितारसंपूर्ण। २०। अथश्रीव्यासाअवितारलिषंते। कविरोवाच। दुहा।
मदकेतगांधर्बयक। त्रियामदिकानांम। रमआपहतकर्मवस। सफरमिथुनभऐता
म। १। आपंसमयभुजसौत्रिया। कह्योवचनइहरोय। लीनोसीसचढायहम। आपमो
क्षकबहोय। २। सफरीविर्जमुनुजनज। पुत्रीगर्भनिवास। तबैमिथुनतुमभ्रातजपरी
पंचतलवलयकुप्रकास। ३। कन्यातिकसैउदरतव। रहैसुफीवरगेह। जवतुमपावकु
आपपद। फिरगंधर्बीदेह। ४। मदकेतवाच। कह्योबकुरयोमदीका। जीवरभीचसुभा
वतातेजोकन्याकरै। कोउकरमप्रभाव। ५। सोफलपकुचेमातपितु। इहजांनतसब
कोय। तोहमकैसेपदलहै। आपमोक्षकैसेहोय। ६। रिह्लवाच। फेरकह्योभुजश्रम

कै। नकरकुसोचविचार। सोकन्यानृपग्रेहमत। करीहैधरमप्रकार।७। कविरोवाच।
देहतजीगंध्रबतब। मीनभएजजमाहि। करतविहारजुकरमवस। जमुनाजुन्य
प्रवाहि।८। वसुनामाकोनृकुवरनो। गिरकावांमातास। पितुअज्ञाततकालगो। वनम्रा
षेटविलास।९। ताकीवामारितुसमय। सुकसोदयोसदेस। गृधियाजंतुनकसवद्यो। क्रीडा
सकुविसेस।१०। नलिकाबिर्जसुमेलतिह। सुदीनीसुकहात। कार्जसफलसुकफिर्चेल्यो
मार्गगिगनसनाथ।११। तरणसुताकेमध्यतट। जबनिकस्योसुकआंन। नभ्यनोगताभाव
ते। फपट्योवीचस्त्रिवांन।१२। तहांनलिकउथमुषनइ। बीर्जगिरयोजलवीच। गंध्रबीसफरीभि
ल्यो। जबनियरांनीमीच।१३। तिहगर्भस्थितकिन्यका। मछगंधासुतरूप। लिषलिलाटपटनाटरै
जोविधलिष्याअनूप।१४। माछीफार्योजालतब। मीनमिथुनपरिबंध। सुषदुषजुकेजीव
सम। सबैकर्मसबंध।१५। छंदपधरी। माछीलेआयोसफरयेह। लिसभ्रविदार्योउदरदेह।
तबनिकसिएककिन्याअनूप। सबअंगअंगसुदरसरूप। इहदेषअसंभववातएक। उत
पन्नभएइवरजअनेक। उहकुतीअउत्तकमीनमार। सोपोषउनकाहितअपार। सबदे
हमछसोरंनसुनाय। मछगंधनामतातेकहाय। अतसुदरअतुलतिरूपअंग। अद्भुतमन
कुसेन्याअनंग। पितुनामसत्वारतसमयप्रात। मछगंधारूपनतनसमात। इहसमयपारा
सुरपावधार। इहनावमाफकिन्यानिहार। पारासुरोवा। देख्योरिनावजलमांफधार। उवमा
छनमोहिसरितातुतारि। मछगंधावाच। दुजछिनकविलंबकुरइहादेव। छिनआवहितुषीकर
हिबेव। पारासुरोवाच। अबकासविलंबनमोहिआज। करिबोअविसकछुवेगकाज। कन्या
उवाच। मततापसकलपकुत्रासमान। इहआगेकीनीनावआन। कविरोवाच। बैठेमहा
रिष्पनौकाविसाल। तिहकीनोषेवटताततकाल। सुंदरीदेषकिन्यासरूप। योवनारुढमनमथ
तनूप। पारासुरवाच। मुनभयोतबैमनमथमार। दुस्सहनबांननिकसेदुसार। बकुभयोरि
षहिकामावबोध। प्रियवचनकर्योकिन्याप्रबोध। मारतअनंगइहसमयमोहि। तिहता
क्योसुदरसरणतोहि। रतुदानदेकुनदषेत्ररंग। इकछजरुकरतबाधाअनंग। मछगंधा
वाच। तबकह्योमीनगंधासुताहि। इककिन्याकुअरुदिवआहि। इहउचितनांहिकरम
हिकुअक। किन्यात्वनसैवदिहैकलंक। कविरोवाच। रिषविषमकुहरकीनोविचार। आ
कासभयोदिगअंधकार। रिषरोवाच। मुनिकह्योनजकुयदीपमोहि। ततकालदेउत
तआपतोहि। कविरोवाच। कुलजाजनदपिपितुमातकांन। जियफरीआपनयदुस्स
हजान। कन्यानहीउत्तरफेरकीन। दुजराजतहांरितुदांनदीन। प्रियवचनपरासरन
यप्रसन्न। मांगकुवनितावरईछमन। मगंधावाच। किन्यात्वरहैजानैनकोय। दुरगंधन
सेनिदानहोय। रिषरोवाच। पसरेसुगंधजोजनप्रमान। जोजनगंधातुवनामजान। वनिता
विसेषवैभवविसाल। किन्यात्वरहैतुवसर्बकाल। इहगर्भधरकुयदीपआज। कृतसफ
लहोकुमनवंछकाज। कविरोवाच। नणमासपरणआबादिताम। धरिउत्ततहासोगईधां
म। सुतभयाभवर्णसुदरसरीर। सोउजातमात्रउठिगेसधीर। स्वजसिधसाधस्वातिकसुता
व। परउरिषमहादेवतप्रभाव। तपकस्योसुथलकबुवेवताम। आराधअनंतअंतरअ

काम। बिनु असन पान बासन बिहीन। नित बढत देह पौरष नवीन। अति सहै कष्ट
टरि तु अनंग। तपि पन्न सिथत ह्वा अंग अंग। इह उग्र रूप बम अंसावतारि। सु ब्रह्मन
ऐह रिझिय संभारि। इक दिवस आ निहरि दरस दीन। परिब्रम अषिल करुणा प्रबीन।
बिष्नु तह कह्यौ बर माग ब्यास। जिह काज तप्यौ बन गहन वास।ब्यास उवाच। करितार
ज्ञान जब स्वान कूल। मोहि देहु वेद बिद्या समूल। रिह्व प्रत्र ह्यौ राजाधिराज। यह ज्ञा
चित हू वरदान आज।भगवानोवाच।परिब्रम कह्यौ तहां ह सिब्र वीन। कृत जात मात्र
पत्र ग्रकीन। वर लेहु विवध सुष भोग्य ब्यास। विस्तार राज वैभव विलास।ब्यासोवाच।
सुष संपति मेरे इह सम एव। दीजै दयाल देवाधिदेव।भगवानोवाच। तुज दीनो इच्छा दा
न देष। ब्यासात्व विस्व कै है विसेष। तव वेद च्यार बानी बिसाल। पूरन पमान कहि है प्रका
स।कविरोवाच।दुहा। वर वंछित देव्यास कह सदा सहाइक संत। भक्त वछल तिह छि
न न ए अंतरध्यान अनंत।कवत। धर्म निरूपन कस्यौ। माहात्मा रथ मुष भाष्यौ। वेद बि
भाग बिचार। रिधु रिवम हंफल राष्यौ। वेदब्यास विष्यात कृष्न द्वैपायन कहियो। तीन भुवन
तप सिध लोकि अमर पद लहियो। कृत कीत कहीन रहरि सु कवि श्रीप सक्त मन अनुस
स्यौ। अवितार अंस अषिलेस को। ब्यास नाम जग विस्तस्यौ।इति श्री वेदब्यास अवितार
बिरतंत भाषा बारठ नरहरदासेन विरचित॥ अथ श्री रामा अवितार प्रारंभ्यते
॥गाथा॥ आरंभे आयेसं। वदन सिंदूर अरुण विथरियं। वाहन आषु विचित्र। वरदाता बुधि
लंबोदरं॥१॥ स्वित गिरवास सकला। स्वित वस्त्राय विमल ससि वदनी। हंस रथ वीणा हस्ता।
सद विद्या दानी सरस्वती॥२॥ मूल सक्त माहामाय। ज्वालानन जोति ज्वाल प्या। सन गरं
कोटि निवासं। जगजेतवं दी जगजननी॥३॥ सहंस कर सप्रकासं। उदितं असुर नास त
म अषिलं। प्रतिमा अक्षयं भुरषं। जय हेता देव भासंकरं।सिवस्तुत। कवित। ब्रषभ को
वाहन बिछावनो है लोम बिष। बिष इत्वचा को वास को धके निकेत है। आसी बिष भूषन
भेष न बिष बंधु भाल। मंगल तिलक सर्व मंगला देत है। बिषय बिनास वेष रहत बिबे
हीत। सूल श्रीकपाल इहै संपत समेत है। देषो धो अनूत नूतनाथ एको पल भजे। रीझै
म्हतिनामा निजअमृत सपद देत है॥१॥ गौरि भूलि ज्यात भवा। भोग देदे भार ही लो। गौरी गौरी भ
वा के समान न्यारी यतु है। तेज की तरुलता इतप की अतुलताई। पन की पवीत्रताइ पार
पारी यतु है। रति कू सोर तिओ विरत सो विसेष रत। आरत उकार सुन उरधारी यतु है।
कासीनाथ सौ कासी सा व कासी कू न होत नेक। हासी भजे वासी ते विसासी तारीयतु है
॥छपै॥ जटाजूट सिर गंग। वंद सिषर चषकृत तनु षह। गरल कंठ अहि हार। मुंडमाला वि
भूषन षह। नव रूप सूल कपाल। पांन धनु बान प्रकासित। वघंबर कप अवधूत। सिंह गज
वरम सवासित। वामंग सिवा वाहन ब्रषभ। जइत जयत संकर अजर। रघुनाथ विरत
कृत ध्यान रत। सुमती देहु दाइक समर।अथ स्वायंभु मनु तपस्या प्रसंग। कविरोवा॥
दुहा॥ याज्ञवाल्कि मुनि इक समय। उर आनंद सहास। भारद्वाज सौं यह कथा कही जु
प्रेम प्रकास।कवित। स्वायंभु मनु समय। पायत पसधन किन्नो। पतिब्रता सु पुनीत। सतरू

पासंगल्हीनै जहा नेमषारूण्य पर्मपावनथलपायो धेनुमतीसरितासुतीर मनुध्यानज
गायो तबश्रादसअक्षरमंत्रतिह जपततनिरंतरसमनुगत मनदंपतिमहासंतोषमिल
तइमूलफलपद्मवत्नुगत २ उनिछाडिफलमूल पत्रजुतक्तुधासुजितिय एकवारआधार
वर्षषटसहंस्रजुविवितिय वरषलहसइक रवाररवातासनकिनो अयुतवर्षरहिनिराहार
तजिपवनसुद्धिलो ईकपायरहेगाढेअविन अस्थमात्रअवसेषतन सोइतउग्रजाइप
मनुसंधियोउ मिलसमकाइकवाचमन ३ तदपितनसर्धाघटत रहततरतध्यानंनिरंतर
अनतदेषतापसअनिन प्रभुनऐदयापर विमलहोतआकासवान मनुमांगमाइप्रमु
ष सुनतसउहृष्टसरीर नऐसबरोमरोमसुष आनंदमग्नमनुउच्चरयोउ प्रभुतुमदा
तापर्मपद सिवकाकजुसंतजुउरिवसत सोउदरसनदीजेसुषद ४ छंदपधरी जं
गहेतजगतपतजगनिवास श्रीरामरूपवेदनप्रकास सुतस्यामदेहनीरदसमांन
परधानपीतविदुतप्रमांन रत्नसमयकनकमूदनरसाज मकराकृतकुंडलमु
क्तमाल कटिषीनसिषतनकसनिषंग आरंनविस्वजेतअनंग सारंगवामकरनि
मतसोह मिलदछिनग्रामिविसषमोह सुतआदिसक्तवामंगसंग अविलोकउदि
तछविबहुअंगअंग इहरूपदेषमूरितउदार मनुकरेदंडवतनिमसकार श्रीहरिउवा
हरिलखौबाहधरिमनुउठाय वरलेहुदेतइहतप्योआप मनुरोवाच मनुकलोदेव
ममसरेकाज सबनएमनोरथसफलआज करिजोरिकसोइहेरमकंथ अनिबएक
अंतरअनंत श्रीभगवानोवाच हरिकह्योतबैकरिपरमहेत मनुमांगकुसो इछ्यासमे
त मनुवाच दोहा सायंभूमनुतिहसमय प्रगटकह्योवरपाय तुमसोमेरेपुत्रकुइ ति
हहितलितउलहैंमाय १ श्रीहरिवाच पुनिहरिकह्योप्रसनकै सतिरूपासुएकु जोअनि
लाषाचितमह तुमकुमागकुलेकु २ सतरूपावाच ममनरथ्यामाग्योजुवर सोइरू
मांगतदेव दीनानाथदयालतुम जांनतअंतरभेद ३ श्रीहरिवाच तबहरिपरमप्रस
नकै दीयवंछितवरदांन असोइकैहैअविस मनुकीजेपरिमांन ४ छपै केस्याल
वाधदेव वरदानदयोतब कछुककालमनुपदविसाल सुषकरभोगसब अविधपा
यअविधेस प्रगटकैहैप्रथ्वीपत तबतवग्रहअवितार आनलेहूनरआकृत तिह
समयजोगमायाअजित वैदेहीकैहेविमल मनुकरकुइहैनिरधारमन सबैहोहिसा
धनसफल ५ इतिसायंभूमनुवरलतिनु ॥ रावणपूर्वजन्मप्रसंगाकविरोवा दोहा
अबरावणपूर्वजन्म सनकुयथाक्रमसाध भुजसराप्रतजपोनप ति आसुरजन
योप्रसाध १ कैकैनामादेसइक नृतलवसतअनीत सत्यकेतराजातहां राजकरे
रिपुजीत २ ताकेपुत्रसिधदे नऐविश्वविष्यात जेठोभानप्रताप अरु अरिमर्दन
लघुभ्रात ३ सतकेतन्रपपुत्रधनोराजपुत्रकहदीन विमलचित्तवैरागयुत बानप्र
स्थव्रततलीन ४ भानप्रतापसुनृपतभो आसुमुदअविनीस धर्मप्रवर्तेअषिलतुव जग
जनदेतअसीस ५ ताकोमीत्रीधर्मरुच नीतनिपुननिसंक इद्जीतनिरलोभअति
एकस्वामहितअंक ६ छंद १ इकसमयराजदलबलहिसाज करिमंत्रवद्योहि

राम॰ ग विजयकाज ॥ अनेक सत्रु मारि संग्राम ॥ निसेष लए धन धरा धाम ॥ दिग अंत करी अग्या अवं
३७ न ॥ नर कांम दुधा प्रथी द्वंन ॥ कृत महा दान मष होम कीन ॥ नित होति द्विज नित अयन वीन
आषेट चढ्यो नृप एक काल ॥ जन जंतु विविध संग सु नट जाल ॥ आरन्य जीव मारे अमांन
विध्याचल वन बाजत निसांन ॥ पदि लेइक आसुर काल केत ॥ परिता पभान सो जु स्यो षेत
सत पुत्र असुर दस बंधु ताम ॥ सो मारि लए राजा संग्राम ॥ सुत बंधु फिरै सम्या समेत ॥ कर
मीन तनां न्याकाल केत ॥ वन मांझ रहै आसुर विसेष ॥ वस माया करि अनेक वेष ॥ अट
वी जिह हो आसुर अमांन ॥ नयो आवन तहां परताप भांन ॥ सो नयो असुर सूकर रिस
रूप ॥ उच्च लखौ निकट आगे अनूप ॥ नृप लख्यो पीठ सु करि निहार ॥ संधांन बांन धातु
ष संभार ॥ डरि जात निकट दर सै दुरंत ॥ इह भांत करे माया अनंत ॥ नृप एक आप को
उ संग नाहि ॥ मिलप्यो बाराह वन गहन मांहि ॥ थल तहां विवर पर्वत अथाह ॥ वन पाइ
विवर गत भौ बाराह ॥ देष्यो पद चिन्ह सु विवर द्वार ॥ नृप फिर्यो गिरत दुर्गम निहार ॥ तह
नयो त्रषातुर नृप तास ॥ नहीं पायो षोजत जल निवास ॥ न्रवली छीन परतापभांन ॥ नृप
गयो भाज इक भ्रास मांन ॥ नय सो नक रूर हि सक्त नृप ॥ रिष भेष बसै कुकपट रूप
नपता न तापलत पनिहार ॥ वन भ्रमत तहां उतर्यो विचार ॥ मुनि कपट भेष बैठो म
हंत ॥ नृप करे देष वंदन अनंत ॥ नृप भान सो न चीन्यो निदांन ॥ अति परी विपत नौ रूप भा
न ॥ नृप भान पिछांन्यो तिह नरेस ॥ उर वेर भाव उपज्यो असेस ॥ नृप भान कह्यो सो जान
संत ॥ उर त्रषा मोहि उपजी अनंत ॥ तप कपटी दीनो जल बताय ॥ पीनो जल राजा असुपा
य ॥ नृप आयो फिर कपटी निवास ॥ हय बांध आन बैठो सहास ॥ कपटीवाच ॥ भान सांक
कह्यो तब कपट भेष ॥ अस्त मित नयो दिनकर असेष ॥ जो जत न तु बसित र नगर जांन नि
स सयन इहां कीजे निदांन ॥ कविरोवाच ॥ नृप भान तहां बैठो निसंक ॥ कपटी दीय आ
सन न्रप उछंक ॥ ईश्वरी प्रबल इच्छा अनंत ॥ अन चित असंभव मिले अंत ॥ कपटीवा ॥
कपटी मुनीश्वर्यो देह कांम ॥ नृप कहो कृपा करी आपनांम ॥ तब चिकच ककवर ती सुचा
र ॥ वन भ्रमत लक्षै अकोवलो किह विचार ॥ नृपोवाच ॥ भूव राजत पतपरता प भांन ॥ मंत्री
रू ताको जिय समान ॥ भृ धीया हित नमत उद्यान मांझ ॥ सेवक क कुतु लेहो तसांझै
झ मैं नाम पयो गप्त तु दरसपाइ ॥ सब भांत कृतारथ भो सुनाइ ॥ तहा कह्यौ भांन क
र जोर तास ॥ प्रभु आपन को कहीयै प्रकास ॥ कविरोवाच ॥ अविनी सय स्यौ विश्वास
एक ॥ यह कपट वात विलवै अनेक ॥ छत्रीय नरेस जुत प्रगट सत्र ॥ तिह जरत नेत्र न
प देषत त्र ॥ कपटीवाच ॥ कपटी तब बोल्यो कपट लीन ॥ हूं निरधन निह्प कथां नहीन ॥ त
नु चिकत नाहि न नृपति तांहि स ॥ सब नयो जांन माया विलास ॥ भानवाच ॥ कर जोर भांन
तब प्रणत कीन ॥ तुम वीतराग विषीया विहीन ॥ निज कछु कुनाम करि कृपा नाथ ॥ हित जु
क्त धर कुमम सी सहाथ ॥ कपटीवाच ॥ वस नयो सत्रु जांन्यो विसेष ॥ बाचा द बोल्यो कपट
वेस ॥ जन संग भ्रए तप ध्यांन जाय ॥ इह नीत रह्यो एकांत आय ॥ नो मैं मनं प्रसनतु मन कंम
व रा षिद्रू नहीं तासो दुराव ॥ मम नाम एकतन सुन कुमूल ॥ तन देषत हू सब भ्रम तल ॥ ना

नीवाच ॥ तुंनि नृपत त्रान रख्यो निपाप ॥ इह नाम अर्थ मुनिकर दुअाप ॥ कपटीवाच ॥
इह अखिल मिष्ट नृपजी अनाद ॥ वह समय न यौ मम जन्म आद ॥ दुसरौ न यौ न इह केर
देउ ॥ इक तननाम को अर्थ एह ॥ तप तेक बुदुरलन्ना हितंत ॥ सिधांत कहत यह साध संत
विधन्त ए सिष्ट करता विधान ॥ प्रतिपाल विष्नु ए थी प्रमांन ॥ तिह विश्व विनासक सिव विष्या
त ॥ तपबल अगम कहु न हिन तात ॥ आजन्म करे मैं तप अपंन ॥ जित न यौ प्रबल माया
प्रपंन ॥ कविरोवाच ॥ उतपति प्रलय वीती असेष ॥ वस करयो नांन कहि कहि विसेष ॥ कपटी
वा० ॥ नृपलह्यो प्रकास न आपनाम ॥ तिह बीच बोल कपटी सु तांम ॥ अब लो दुराव कीनो त्र
ज्ञान ॥ नुव पति तुम आहि परताप नांन ॥ तव पिता न यौ नृप सत्यकेत ॥ रूच काल डु गुर रक्ष
पाहि त ॥ उर पन हीकरत निज गुण प्रकास ॥ अनगम्य न मो तैं प्रकास ॥ अनि लाष चित
नृप मांग आज ॥ करिहुं नृपत तेरो सफल काज ॥ राजावाच ॥ नृप नांन कह्यो तब इह निदांन ॥
प्रभु मांगत हुं अभिलाष पांन ॥ अरिक रहित अजेय अरु अजर अंग ॥ समर जित अमर दुष
रहित संग ॥ निरकंटक एक हि छत्र नाथ ॥ सत कल्प राज नुक्तु सनाथ ॥ कपटीवाच ॥ कहि
तथास्तु कपटी करूर ॥ सब क्षे है वंछित काज सूर ॥ वस क्षे है जगत रे विसेष ॥ काल आद्य
अपलपां नी असेष ॥ द्विज विनास बैतो यन रहि है ॥ क्ष एर हि है अजित तप बल अषंड ॥ जो है
हि विप्र तुव वस नरेस ॥ तो ब्रम विष्नु तुम ही महेस ॥ निश्चै दुज आप हि हो इनास ॥ विध हरि हर
कृत वन ही विनास ॥ कै वात परै इह बैठे कांन ॥ नृपमरन तब हि तेरो निदांन ॥ राजावाच ॥
निर्णय तव श्रुत्यौ नृपत न्नांन ॥ वस होय विप्र कहिये विधांन ॥ कपटीवाच ॥ इन है वस कारक ब
कृत पाउ ॥ सो पे दुरंत दु साध दाउ ॥ राजावाच ॥ प्रभु नुक रो उहै साधन प्रसादै ॥ सिद्दो हि विप्र जि
ह निर्विषाद ॥ कपटीवाच ॥ रिषक ह्यो फेर तब कपट रूप ॥ भोजन असक्त है विप्र नृप ॥ हूं क रू
पाक विध जुगत वांन ॥ आ तुन भरसा व कु राज आन ॥ सो करहि विप्र भोजन सदास ॥ वस होहि
नियत मांन कुविसास ॥ इक आन क भिन भनि आ हि मन तर्क वितर्क न परयो ताहि ॥ आज
न्म सुन कु निश्चय नरेस ॥ मैं कस्यो ना हि पतन प्रवेस ॥ तुव नगर गऐ बिन सर्ब तंत्र ॥ किहु नात
हा हि साधन सु मंत्र ॥ राजावाच ॥ मुनि सुन कु वेद मरजाद मूल ॥ न जिबो अंगीकृत लघु न थू
ल ॥ सिष दुष्म कष्ट त्रिण नी रफैन ॥ सिर किये वहन ज्यौ धरि नैरैन ॥ करि प्रसो मोहि तुम दयाकी
न ॥ निरवाह सबै तुम ही अधीन ॥ कपटीवाच ॥ करीये जु गुप्त साधन सकाज ॥ तव हा हि सिध सो
ई तंत्र तांम ॥ कुश्रात नृप तुम वलकु ग्रेह ॥ दुज लह निमंत्र ए जाइ देह ॥ परिजंत मास सवाद
सस प्रेम ॥ नित तिन हि जिमावकु सहित नेम ॥ मख होम करि हि जै विप्र संमूल ॥ सुर हो हि तब
हि तुव स्पानकूल ॥ सुन गुप्त बात इक नृप सहास ॥ इन रूप न आव हुं तुम अवास ॥ या तमो
हि नृप जी बुध एक ॥ इह होय सिध साधन अनेक ॥ आद कुलपिरोहित तुव प्रत्तु आहि ॥ तव
बल लै आउ इहिं ताहि ॥ तव देकु मेरो रूप तास ॥ हूं करि हु रूप वाको प्रकास ॥ रूप्रै रूप
यत रूप हीर ॥ कत इह मम विकै न हि न कोइ ॥ परजंत बरष तुव रक्षु पास ॥ सोइ तहि इ
हां राष्ट्र प्रकास ॥ साधन मो हि दुरलभ न नहीं संसार ॥ कारिज तुव करि हूं इह प्रकार ॥ आज
ते तुम हि दिन प्रतिय आन ॥ मो हि तसरूप मिल हु प्रमांन ॥ पहिचांन मो हि वात न प्रकास

ऐकांत बोल लीजहु अवास ॥ निरधार कर रहु नृपतु वनिकेत ॥ तपबल पहुंचे हूं हयस
मेत ॥ अवसेष रही अबनिसा आय ॥ सुष सयन नृपति करी हु सुनाय ॥ नए वेषधीन मघी
यान्त मंत ॥ तहां निद्रा वस नृप द्रय तुरंत ॥ कवि रिवाच ॥ कपटी की मित्री कालकेत ॥ निसवरत
बढ्यो योमुनिकेत ॥ जो नयो विसद राक सवाराह ॥ छल छिद्र पाय कीनो उछाह ॥ सुत बंधु वय
रराक ससंचार ॥ चित कपटी मिल नृप बध विचार ॥ कालकेतुवाच ॥ कहि कालकेतु यहक
पटकार ॥ बधसत्रु उचितना दिन बिचार ॥ जो हीन तद पित्र षष त्री जात ॥ अति लघु कर गिनि
ये नहीं अराति ॥ सीष्यो विसेष जो राह सुत्र ॥ तनकर्तयप्रहणसिसीस्वरतत्र ॥ निश्चे सुष दी ऊय
सत्रु नास ॥ सुनियै मत मेरो सावकास ॥ निरमूल सत्रु कुल करि निसेष ॥ वासुरचउ रथ मिलहु
विसेष ॥ कपटीवाच ॥ कहि कालकेत सो कपटरूप ॥ नबढो कुविजय तुव असुररूप ॥ कविरि
वाच ॥ करि एक समाया कालकेत ॥ मेल्यो नृप मंदिर हय समेत ॥ रानी ढिग सइन कराय राज
वि चवाजसा लबाध्यो जुवाज ॥ सो आन पिरोहित्र दसयाप ॥ आकर्ष बुज हिलेगयो आय
तहां करी नूत माया अनूत ॥ धरि वेष पिरोहित आपधूत ॥ तहह यो आपनो रूप ताहि ॥ क
रि गुद्द सुराख्यो कंदराहि ॥ करि ता को रूप सु कालकेत ॥ तिहसेक सयन किय सुषसमेत
निसक बुक सेष जाग्यो नृपाल ॥ वियथेह आप जब लात काल ॥ उगि बाहिर आयो नृप अ
ज्ञात ॥ ते ही हय बढवन नयो जात ॥ काहू नहीं जान्यो इह प्रकार ॥ दिन मध्य आय फिर रा
ज द्वार ॥ करि सन्ना सुन्नट मित्रा ध्यकार ॥ सिंघासन बैगे नृप सुढार ॥ क्रम जुक्त देष संपत अ
नेक ॥ कृत सन्मा विसर जन जुत विवेक ॥ त्रय दिवस जहां जुत सम वितीत ॥ उन नयो सन्मा
ष्ठित नृप उनीत ॥ मुनि कपट सुमहि मालझो मोह ॥ वसन्नयो नृपत माया विमोह ॥ त्रति मा
जु पिरोइत असुर पाप ॥ इह समय आन दियेद रस आप ॥ नृप निमकार किय सहित तने
म ॥ वोहित तहां आसिक दियस प्रेम ॥ उठि मांनत बैएकांत आय ॥ वोहित स्वरुप लिय बोल
पाप ॥ नृप तहां करे संकल्प नेम ॥ द्विजा भुज भोजन जदप्रेम ॥ अज्ञा नृप पोहित दई एकु ॥
दिन लक्ष निमंत्रन द्विजन देहु ॥ नावी सुद्र बल नृपल बिचनान ॥ आरंभ्यो आन कछु होउ
आन ॥ वोहित नृप सासन जब हि पाय ॥ सकुटंब बीप्र निमते सुनाय ॥ माया प्रपंच बिध विध
वनाय ॥ किये पाक असुर धर विप्र काय ॥ दससइ भोजन सुदेस ॥ अनेक स्वाद विंज
न विसेस ॥ पसुमास विवध राधे प्रकार ॥ तिह माफ विप्र आमष विकार ॥ जब नइरसोइ
सिध जांन ॥ इह विप्र निमंत्र तमिले आंन ॥ नृप जांन सविधि जपद पषार ॥ बेवारि तबै प्र
कति बिचार ॥ अस्पर सनृपत वा है अधीन ॥ परुसारि पाक आये प्रवीन ॥ ईह वीच नई आ
कास वान ॥ हे तो जन की नै धर्म हांन ॥ विप्रा मप राधे रह वनाय ॥ जो ब्रम नषै सो उ नरक
जाय ॥ इह सुनत विप्र उठे रिसाई ॥ वसन्ना वीन्नृप हिन वनी आई ॥ कविरोवा ॥ विप्रन स
राप दीनो विसेस ॥ राकुटंब होहु राकस नरेस ॥ भूदेव मांस तो होहु न्तदा ॥ उनिक
रिहु पाप षष्टी षत्रहस ॥ हिक वर्षमाजत मनासहोई ॥ कदांत नर हउ वंस कोई पापि
ष्ट करे है निष्ट विप्र ॥ सुन एध मर रूपक प्रबिप्र ॥ नृपर्योग ज्ञो सोक हुन जांन ॥ निर्धार
नइ फिर गिग्न वांन ॥ निर्दोष नृपत निश्चय निपाप ॥ अपराध विनां द्विज दयो सरा

प। कविरोवा॥ सोविस्मयसुनतप्रतापन्नान॥ नननगिरादेवरख्यानिदान॥ अविनीसपाकमिद
रहिआय॥ नहीप्रोहितपाकनपचपाय॥ कारनविप्रनसंग्रगटकीन॥ मुरिछागतनोन्टपम
नमलीन॥ दुजोवाच॥ दुजकह्योनांनसोकेट्याल॥ नावीबलिष्टमानकुतुवाल॥ निरदोषन
नत्नसंदेह॥ अनिसमकआपत्नमदयोएह॥ सबकहतसुरासुरवेदसंत॥ अनिथाहोहिन
हीआयअंत॥ प्रथीसुरकैहोजुगतपाप॥ अविधलोआपनजिहोसुत्राप॥ श्रीरांमबानहत
समरसिध॥ ऊनिमिलहोजोतिदेवीप्रसिध॥ कविरोवा॥ सबगएविप्रदीनोसराप॥ प्रांणीकत
जुक्त कुळन्नपाप॥ दुहा॥ प्रोहितनांनप्रतापको॥ ग्रेहदयोपकुचाय॥ कालकेतुमुनिकपरसे
जयजुतमिल्योसुजाय १ प्रीतमकोअरुआपनो लीनोवयरविसेष केकेदेसनरेसको
षोयोवसअसेष २ उसहनानप्रतापको॥ दीनोआपउजात॥ अतिअनीतयुतवातयह॥ नर
विस्वविष्यात ३॥ बलउरजनअरुमद्दका॥ इनकेसिधसनाव॥ छिद्रहिताकतरहतनित॥
देनसमइपरदाव ४॥ वेरीनाननरेसके॥ एकेनएअनेक॥ जहांतहांतेसमठसबै॥ कीयेउ
द्यमजुतटेक॥ ५॥ कवतबपै॥ आगेन्टपतप्रताप॥ नानजिहपरनवदीन्नो॥ राकसमनुजअ
नेक॥ राजमिलमंत्रजुकिन्नो॥ सत्रुसेनचतुरंग॥ साजपरिहंससंनारिय॥ चकुओरिचदसीव
वैरवियहविसतारिय॥ दकुदिसप्रबंनअनपारदल॥ धर्मस्यामरषवालधर॥ दिनफिरेसुन
टन्टपन्नांनके॥ परेवीरसयामपर १ वर्षएकवरवीर॥ विषमसयामजुवितिय॥ घलमुरेषग॥
धारकरी॥ रिवमंडलकितीय॥ सुनटमित्रीसुतबंधु॥ सहितसेन्याचतुरंगीए॥ परयोसुन्टपत
प्रतापन्नांन॥ नारायअनंगीय॥ तबस्योनवंसअवसेषइह॥ कोउनजलअंजलीकरन॥ नहीं
टरतदेवइछ्यानियत॥ नोमहीपइहविधमरन॥ २॥ रावनन्टपतप्रतापन्नांन॥ कुनसअ
रीमर्दन॥ मंत्रिधर्मरुचिधर्ममूल॥ कैहैसुवन्नीत्तन॥ अविरसुनटसेवकअनेक॥ अवित
रहीजथाक्रम॥ आकतदेहउतंग॥ महावेकृतपापातम॥ परतापप्रांनहिसकपतत॥ वि
श्वद्रोहिमननमथविवस॥ अविवेकजोनराकसअधम॥ नएत्नवहपदअवधसवस ३॥ इति
रावणपूर्वजन्मसंपूर्णं॥ अथरावणादिकजन्मलिषंते॥ कविरोवाचदुहा॥ एव
णादिकोजन्मअब॥ कहिहैमतीअनुसार॥ जिहकारनवैकुंठनरहरन॥ नोरामाअवितार १ कृत
युगविषैपोलिस्तरिष॥ साधनतपसाधंत॥ आयोन्टमिसुमेरमी॥ घलदेष्योएकंत॥ २ तपहित
कह्योनिवासतिहां॥ वनविचित्रविस्तार॥ सरसरोजकुह्वियसुषद॥ मत्तमधुपगुजार ३ तहां
साधनकियेउयतप॥ नयोव्रमचितलीन॥ धारनजोगपसमाधधरी॥ मनआसनदिढकीन ४
तहांराजाविणबिंदुको॥ पत्तननिकटप्रसिध॥ वर्णचतुरतामेवसत॥ सबसानंदसमधय
किनरसुरमुनिकिनका॥ गंधर्बीसुनगमांन॥ तिहसरवरआइतवहि॥ करतविलासविधा
नइ॥ तेनाचतगावतहसत॥ वाजंत्रविविधवजाय॥ क्रीडतदेकरितालिका॥ धरतपरसपरि
धास ७ कोलाहलअतिकीनिका॥ आश्रमकेढिगआय॥ प्रेतराई त्नयोध्यांनमय॥ कर्‍यो
पुलिस्तरिसाय॥ उलिस्तोवाच॥ रेपापनिममदिष्टपथ॥ जोइकैहैआयगर्भवतीसोकन्
का॥ कैहैसहत्नसुनाय॥ कविरोवाच॥ तबवहकन्यानयत्रसत॥ आपआपयहआई
नेदनकाउसुंकह्यो॥ लघुवयरहीलजाई १० कन्यानपत्रणविंदकी॥ अवरेदिनअ

ज्ञात ॥ षेलत निर्नय आनसो ॥ बिनु जाने च्वदवात ॥ ११ ॥ परि सुदिष्ट उजिस्तके ॥ अकसमात इ
हि आइ ॥ गर्न धिततात कहतइ ॥ जावी प्रबल सुनाइ ॥ १२ ॥ छंद पधा ॥ वैवर्ण लइहो तनहोनवा
म ॥ तब गर्न सुलछन प्रगट ताम ॥ अंबा विलोक सविकार अंग ॥ पतिसो निवेद्य उजीषस
ग ॥ नृप लष्यो ज बैक रिजोग ध्यांन ॥ मुनि किक तस दोष इह सत्य मान ॥ त्रण बिंदु धरि तिहां गुढ
ष्यान ॥ पोलिस्तदइ उत्री प्रमांन ॥ नित करेनर्त सेवा सनेम ॥ पतिवर्त धर्म साधे सप्रेम ॥ मुनी
रोवाच ॥ तब कै प्रसन बोले उलीस्त ॥ सुनि प्रिया करूं इक वचनसत ॥ इक कै है तेरै सुत अजे
व उवर्वंसद्ध धाकार्क कुदेव ॥ कविरोवाच उत्ता ॥ ताके प्रत्र प्रसिध नैौ ॥ विश्वश्रमाय इहनाम
विद्यायुत लछन विमल ॥ तिजस्वी अभिराम ॥ १३ ॥ सिद्ध उलिस्तको उत्र अरु ॥ ब्रम पुत्र नवर
वान ॥ ताकह किन्या आपनी ॥ भारद्वाज दइ आंन ॥ १४ ॥ सो व्याही विश्वेश्रमा ॥ मिलच्यो आनंद अ
मेव ॥ ताके उत्र कुबेर नै ॥ जो उतर दिगदेव ॥ १५ ॥ विध निमंत किय वैश्रवण ॥ उग्र तपस्या आ
ना ॥ मन संजम आतम दमन ॥ जलतप सीत निजांन ॥ १६ ॥ छंद पधा ॥ जियसाध जोग सहि दुषजा
ल ॥ दियदरसन कै व्रह्मा दयाल ॥ कविरोवाच ॥ वैश्रवन माझ विधवाचदीन ॥ कारण की इहत
पस्या उग्र कीन ॥ कुवेरवाच ॥ ईश्वर जदेकु देवत अनंत ॥ अक्षय धने सपद अविध अंत ॥ पद
वी धनेस नै दिसापाल ॥ दीनौ विवान पुहपक दयाल ॥ कविरोवा ॥ पायो कुमेर प्रथवी शताप
अंबुज नव गए सुस्थांन आय ॥ इक दिन कुबेर रथ चढे आय ॥ पित वंदन कीने दरस पाय ॥ वै
श्रवणकह्यौ ॥ पितसो सप्रीत ॥ वरदया मोहि ब्रमा विनीत ॥ विश्राम रता वह कोन विष्यात ॥
तहां वसू जाय निरनीत तात ॥ पिताउवाच ॥ इक दुरंग पुरी लंका अनूप ॥ सो रचित विश्वकर्मा
स्वरूप ॥ वन गहन त्रकुंटाचल विसाल ॥ प्राकार कनक थंभा प्रवाल ॥ याथो निध परषा गह
नश्रूर ॥ संचार तहां इक प्रचा सूर ॥ निरभयो कुतौ राक सनिवास ॥ ते गए सुतल न जविस्त्र
वास ॥ सो आदि सुन दुरगम सुथान ॥ तहां पुत्र वास करियै प्रमांन ॥ कविरोवाच ॥ पितु वच
न पाय अज्ञा प्रवीन ॥ निर्नय धनेस तहां वा कीन ॥ संपत सव अक्षय सुष समाज ॥ रस नीज
करै तहां जक्ष राज ॥ दुहा ॥ मालवान राकस अधम ॥ अविन सुतल तै आय ॥ संपति सुष वैश्र
वणको ॥ लंक विलोकी जाय ॥ १७ ॥ राकस थ्यानक सुरन पह ॥ देषत उपज्यो धेष ॥ सत्रू भाव
ते तिह समय ॥ वाढ्यो दुक्ष विसेष ॥ १८ ॥ बलजब देषे आन सुष ॥ अंतर जरै अपार ॥ ताके
विघ्न विसेष कह ॥ करै अनेक प्रकार ॥ १९ ॥ मालवान फिर ग्रेह गो ॥ करन कुबेर अकाज ॥
कन्या अपनी केकसी ॥ लै आयो निरलाज ॥ २० ॥ मालवानवाच ॥ तिह बल किन्या सौ कह्यो ॥
नई सजिग्या नाम ॥ विधनाती विस्वेश्रवा ॥ ताकह जनक सकाम ॥ २१ ॥ तब तुम पुत्र कुबेर से
होहि महाबलवंत ॥ बीन लेकु सो सुरिन पह ॥ नव लंका परियंत ॥ २२ ॥ कविरावा छंद प ॥
करि मंत्र प्रगाइ कनिक हि ॥ जयहो कु पुत्री तहां वेग जाहि ॥ केकसी आयत बरिष निकेत ॥
सेवा सु करै मन क्रम समेत ॥ पोलिस्त समय इक चितप्रकास ॥ सो जइहो जोग निद्रा निवास ॥
केकसी अग्र गाढी कुमार ॥ फेरही अधो मुष मुष निहार ॥ जोबना गवन उद्भव अनंग
उफनाय सुसोना अंग अंग ॥ पद नषन षिनत रेषा प्रमांन ॥ लज्या मिलाष नय मिलसमा
न ॥ विसेश्रवावाच ॥ मुनि कह्यो तहां लषल ज्यमान ॥ आगमन कवन कारन उद्यांन ॥ के

कसीवाच। सरबग्य सदा प्रभु परम संत। अग्यात कछु तुम ते अनंत। कविरोवा॥ कै भा
नावस्यत रिषस हेत। चिंता मिलाप त्रिय लष्यो चेत। रिषरोवाच। अग्या सु दई पौलिस्त ए
व देउ त्रै दुष्ट कै है अदेव। केकसीवा॥ प्रभु होय दुष्ट तुम ते सुपूत। आवै न चित्त इह असंभ
त। रिषरोवा। कियजात पमाते असुरकाल। बल समय होय मिथ्या न बाल। सुत होय द्वि
तीय स्वाभाव सिध। परिभ्रम नक्त पावन प्रसिध। कविरुवा। त्रिय नई गर्भ स्थित दुजे प्रसा
द। बस अविध प्रसव नौ निरविषाद। जिह जात मात्र नऐ प्रसुन जाल। ब्रह्मंड डोल थि
र चर विहाल। आक्रत असाध आतम अनीत। भुवकंप नयै त्रय लोक भीत। उतपात होत
उर मत अमांन। जब भयो जन्म रावन सुजान। विग्रह अमांन अरु तु जावीस। स्वाभाव दु
ष्ट दसकंध सीस। बल अमित देह धर धरम बाध। अति कुंभकरण उपज्यो असाध। अनति
पत कांम अघ रूप आप। उनि सर्पनषा उपजी सपाप। उतपति विभीषन सु मन सुभाव। भग
वंत पराइन नक्त भाव। यो उतपति रावन कुंभ आप। पित्ता सन वन तनमनु षपाय। कुयत
सदृष्य जगना सहेत। मिलवढत रोझ जौं वधु समेत। परिताप विश्व हिंसक सुधांन। प्रभु न
व अनीत बल अप्रमांन। कीने कुबेर तहां निमसकार। उनि द्रष्य पिता आसिष अपार। वैश्रव
ण देष प्रतत तेजवंत। केकसी उपजि अमरष अनंत। केकसीवाच। सोग इन त्रै रावन संमी
प। मम सौत पुत्र भौ महिम द्वीप। उरि उठत अमर्ष सवैर भाव। सुष आन अस हस बंधु त्रिय
सुभाव। सुत कर कुजतन तुम कै सदाव। या ते विसेष अति होउ कुआप। रावणवाच॥ अंब
न चिंत तु मरह कअंत। अब हम कु करै उद्यम अनंत। कविरोवा। रावन सबंधत बभीषन
राज। गोकरण गयो तप करन काज। अपने सुनाय त्रय बंधु तांम। कृत नियम योग साधत स
काम। एकाग्र चित रहि ऐक पाव। पंचास वर्ष सत गत सुभाव। सब भाय संध्यो तप ध्यान से
व। दियद रस बभीषन ब्रह्म देव। विधुरुवाच। चित हेत कह्यो विध बदन भ्यार। वर मांग व
भीषन मन विचार। बभीषणोवाच। मांग्यो सु बभीषन परम प्रेम। नित रहै बुध रज धरम नेम
इछा प्रधम उपजै न आय। ईश्वरी भक्त सब बिनु सुभाय। सो इह होउ कह्यो विध दया
संग। अरु अजर अमर आतम अभंग। सब फले जात साधन सुभाव। उठित बैकुं
ठान तप विहाय। नऐ वर्ष अयुत ततव तै वितीत। ब्रह्मात बदर सन दियविनीत। सरस्व
ती पेरित हासुर समाज। इह दुष्ट लहद मकवस कु आज। बानी तब कियै जिह्वा प्रवेस
सुन जान कुं भइह स्थल सुरेस। उरि वस्यो कुंभ अनीला प्रमांन। विध कह्यो मांग सोउ
मोद मान। कुंभोवाच। वर्ष महि एक भौजन विसेष। षट मास नींद सोउ असेष। विधरोवाच।
ब्रह्मा वर दी धौ जहि विस्वास। ऐयो ही कुय है अनायास। पुनि देव वृंद आनंद पाय सं
सार अहित रगो संभार। देवउवाच। इह जाव रक रितौ नित अहार। सद जदीन अपा
प तसंसार। कवीरोवाच। सरस्वती भ्रम आये सुथांन। करि विविध विश्व रक्ता विधान। इ
ह उग्र तप तरावन प्रबंध। कत अग्नि ज्वलत अति अग्नि कुंड। जब दिवस दंसड कव
र्ष जाय। मस्तक इक होमत अग्नि मांय। एकासन बैठो तप अपार। नव सहस्त्र वर्ष
हि निराहार। आकुति दस मिसिर समय आय। सो उ लझो सी स छेदन सुनाय। नि

कारषडगजबलक्षोपांन। तबबोलिब्रमआकासवांन। ब्रह्मोवाच। मामेतीवाचवाद
नमुराल तहांआंनदरसदियतातकाल। दससीसमाइविधवरहिदीन। निरधार
जुमनइछ्यानवीन। रावणोवाच। सुप्रसनदेषजबब्रह्मसंत। तबकह्योदसाननहूलह
यतंत। सुरअसुरजक्षतारक्षसाथ। नहीनागकुकरममअंतनाथ। ममनक्षनृतम
नुषमहीप। सोगिननतनाहिममबलसमीप। अमरत्वअनयजलथलअकास। पाताल
गवनमागतप्रकास। विधोवाच। विधत्थाअस्तुकहिविमलवांन। मननिश्चयसोदससी
समांन। काटेजुसीसतेहोम्मकीन। नअक्षयकैहैफिरनवीन। कविरोवाच। योकहत
मात्रअक्षयअनूप। सिरनयेप्रगटसुंदरस्वरूप। आश्रमसबंधुदसकंधआय। प्रकुल
तईछवरदांनपाय। विष्यातनइत्रयलोकवात। सुरसाधसिधकाकुनसुहात। दूहा। द
ससिरकोनांनोउसट। मालवानतिहनांम। सोसुनआयोसुतलतै। सहितकुटंबसवाम
२२ असुरिप्रहस्तहिआददे। संगमारीचसुबाहु। आंनमिलेदोहित्रपह। सिधनयोसु
सनाह २३। मालवांनोवाच। तिहषलरावनसोकह्यो। हमछ्याडीजबलंक। सोगहपायो
सुन्पतहां। वसतकुबेरनिसंक। २४। छलबलअथवासामकरि। लीजैवेगछिनायराक्ष
कोउहदुरगहै। देववसैतहांआइ २५। रावणोवाच। तवरावणउतरदयो। तुमजांनतस
बरीत। जेगेबंधुकुमेरमेरसो। नाहिनउचितअनीत २६। प्रहस्तोवा। तबैप्रहस्तनिसंक
कै। रावणसकहिवात। राजबलीजुसुरकै। तिनकेकैसेभ्रात २७। दोउकस्यपकेसुवन
दानवदेवप्रतिष्ट। तुम्मराजकेकाजसो। अजउलरतबलिष्ट। २८। कविरोवाच। रावनसु
न्योप्रहस्तमत। लोभातत्रघवदाय। जेगेभ्रातनिकासकै। लंकालइछिनाय। २९। रावनत
हांकुटंबजुत। आनवसोगढलंक। सबराकसमिलराजदिय। कृतिअनबैकनिसंक
३०। रावकीबहिनीतहां। विद्युतजिव्हानांम। कालषंजकोतिसमय। व्याहिदइवरवाम
३१। छंदप। पितुसकुबेरकीनीउकार। वृतांतकह्योसबवारवार। जबपितुकुबेरकौ
उषितजान। उपदेसकह्योमनमोदमांन। उषतेरौहरिहैसिंतुदेव। सुतकरकुवेम
जुतजायसेव। मनधरविसपितुवचनमांन। उग्रतपकह्योकइलासआंन। हरदेव
तबैसुप्रसनहोय। सुतसषाआपनौकह्योसोय। अलिकापुरउतरिदिसअजेय
सोरचीविश्वकर्मासमेय। उरवासदयोसिवकैदयाल। दीनोधनेसपदिसापाल। दूह
वसिकुबेरअबैलकापुरी। रावनिलंकनिवास। यहविधक्रमविनागनो। सहितप्रता
पप्रकास। ३२। कवित। कसिपपितुदनिमात। उदरजयजयोनिसाचर। सबअसुरनति
हदइ। विश्वकर्मापदवीवर। ताकीकिमाअतुलिरूपनाममंदोदरी। गुनलक्षनवि
द्याप्रवीन। त्रयलोकहिसुदरि। सोवनितान्याहीरावनहि। संगअमोघदीनीसकतव
रवरिननोप्रविलसतविवध। प्रथ्वीकंटकलंकपति। दूहा। दइतविरोचनदोहिता
विद्युतज्वालानाम। कुंभकरनतिहकरग्रहन। कृतसुतवंछितकाज ३३। विद्युतिना
मसैलूषविद्युगंधरबनकोराज। सरमाताकीपुत्रिका। सोधीसुमतीसुलाज ३४। सो
व्याहीजुवनीषनह। आनदनएअनेक। वरवरनीजोडीविमल। बनीजुनीतविवे

क ३५ दुष्टछत्रमंदोदरी जायोपलबलवंत अघकारक अनसंक अति अविधअ
धर्मअसंत ३६ जातमात्र घननाद जिह कीनौ गर्ज कराल मेघनाद तातें नयौ नाम
सुरेस हिसाल ३७ कुंभकर्णोवाच कुंभकर्ण सो दसकंधसों निद्राबाधितमोहि सुषमं
झो पायो सुमै कहा कहौ अब तोहि ३८ कविरोवाच गुफा त्रकुटाचल गह्वर कृत अनेक
प्रकार कुंभकर्न तिह सयन किय करि अहार अनपार ३९ देव दनुज नर नाग गंध्रु
ज त्रय पुर नयो संताप सब दिन को रावन सुतन पीडा देत असाप ४० सुन्यो अध
र्म विरन सब रावन को सविसेष पविएष्ट तकुबेर तहा कहि कहि विनय असेष ४१
कुबेरुवाच ब्रह्मअंस उत्पन्न वित्तु कुल उज्जल तजय कार तिन कह तुमकन आच
र्ण अविन अधमाचार ४२ रावणोवाच रावन सुनसुर परजर्यो असहमान अहमे
व हकौ ७१ दिष्टा तयौ तुमकुबेर दिगदेव ४३ कविरोवाच छंद १० मिलसेन्या कंटक
कौ थमान अलिका ऊर धेर्यो तबहि आंन निकस्यो कुबेर मन चासमान तहि लयो
छिन पुहपक विमांन जिह रथारूढ जमवरुण जीत अनिकरण लह्यो दसदिसअ
नीत जब घेर्यो वासव लोक जाय इहां ईद करे संग्राम आय देवासुर कीनो कछुक
काल सो मेघनाथ सुररनए साल आयो तहा आतुर कुवर आप दारुण संग्राम कीनो
सदाप लेचली बाधई इहि निलाज दीनो बुलाय विधि देवराज अतिबली समर कृत वि
जय अंक इद्रजीत नाम पायो असंक इहा रावन गिर कैलास आइ सब करे सि
व हिवंदन सुनाई लीला तगय कैलास लीन उनी धरयो फेर वष्वी ववीन दीयआ
प जुनंदी गनसहो हास नरवानर करितुव होरू नास दूहा डरी सुदे हयराजकी म
हिषमती वसिध रेवातट नय दुपर दत सबको उवसत समृध ४४ सुंदर सुनगसमृ
ह संग नदकीडा नरनाह करसहस्र अविस्तार कृत पानी रुके प्रवाह ४५ दससिर संधाम
ध्य दिन विमल नदीत लवास प्रेमयुक्त हर हजियत किये पथ्य विप्रकास ४६ पाणि लए
तव अविरूप चले प्रवाह सपूर मिलत रंग सिवलिंग गत कोपितगौ षलकूर ४७ पर्यो
फूरु रावन नृपत न्हतल महानयांन कछुकक स्यौ कीडा कलह निसवबंध्यो निदान
४८ आये तहां पुलिस्त रिषि सो इह सुनी सुनाय करि जाचना नृपति कह दिये दसकं
ध छुराय ४९ छंद १० जब गयो सुत तलविजइ विहार देत्यन सोरक्यो उराचार दससीस
इते उत बलसदाप अनि लेंग मिले दहुं जुध्ध आप दहुं और करे षल प्रबल दाव
निरघात पात घाइन निहाव दइतेस तहा राक सद बाई बल लयो बाध्य रावन वि
दाई पो लिस्त घंनबांधो सपाय छैवास आय बलविजइ आप दससी रीसवीस
नुज देष देष वनिता विनोद उपजे विसेष देकवल हाथ देतिंद दास हनिताल नचा
वत करित हास ईहसमय सुकबलि द्वार आई सव षंनबंधदेष्यो सुनाइ छुटकाय
दयो गुरुबंध छोर बलितोलल लंक आयो बहोरि कवित नयो नरेस पताप नांन रांक
लंकेसुर अतिमर्दन नौ कुंभकर्न अलि सन अयेसुर सविव धर्मरु विसील नयोन
कव नीत न अवरजया कमसुनद सरमायाक मलीनमम कलआपदोषगतिदुर्ग

तिह ॥ विश्वविनासिक बुधिविकल ॥ राकसी जोन तुक्कव अनय ॥ षरवाहन निरलाज षल ॥
॥ दूहा ॥ मन धन जोबन राज मद ॥ कुल दल बल ईक बीर ॥ ईन ही ते उपजित अषज ॥ देत अ
नर्थ न ओर ॥ ५० ॥ छंद पध ॥ इक समय दसानन छा ना आन ॥ बैठो सु बध सिर छत्र तान ॥ सुत
पोत्र सनास दसि विसंग ॥ अरु आय सु नटराकसि अनंग ॥ रावणोवाच ॥ करि कोप कह्यो कंट
कक रूर ॥ तुम सबैनि सबर समर सूर ॥ ईक मूल मंत्र सो सुनहु आज ॥ रुक हत निसाच
र श्रेय काज ॥ हम सो हित कारीह रषवंत ॥ सुप सन सदासिव ब्रमसंत ॥ ईंद्रादि देव हम सत्रु
आद ॥ असुरिसु रवय रउपज्यो अनाद ॥ इन के सहाय है विष्णु एक ॥ सो उकर त अमर
रह्या अनेक ॥ वह विष्णु मरै जिह तिह उपाई ॥ सब ही हि काज अपने सु नाई ॥ विवध को मू
ल है मष विधांन ॥ निसेष उषार कू वे निदांन ॥ जब नाग न पाव हि अमर जात ॥ आउ हीदी
न कै है अरात ॥ हीन बल परहिज बमा रिखेकु ॥ यल छाहि जाहि के दंद देहि ॥ विवध तज
जाहि जबदेव वास ॥ तहां असुर बसाव कु अनायास ॥ कविरोवाच ॥ सब दुष्ट उवेय हम
रमांन ॥ कुतिधर्म बाध मष छाड कान ॥ द्विज नो जसाध जप होम दांन ॥ अरु पाठ वेद सास्त्र
पुरांन ॥ जो ब्रम तिलक जिह्रो पवित्र ॥ अति ही साध तुरछी अनीत ॥ ऊनिक तध्यान मुनिज
हां पाय ॥ दे अर्धवं व दीजत उगाय ॥ प्रतिमा करि षंडन पद प्रहार ॥ आमूल लेत देवल उषा
र ॥ रुधरि कु जमांस आवहि रसोय ॥ हित सुक्रत ता स आहार होय ॥ अति कोप बढ्यो राव
न अ साथ ॥ बल साध जक नंध रधर्म बाध ॥ तहां अयनाग धर इंद्रजीत ॥ अनेक संग सेना
अनीत ॥ इंद्रादि देव दिगपाल अंत ॥ ते कु वर बांध आंन कुतुरंत ॥ दल चलत धसक ध
रनी दिगंत ॥ परिवत नअंग ट द्विढ हियरंत ॥ नीसांन गहर गहर धुनि परनिहाव ॥ सुनि होत
अमर वियग र्भ श्राव ॥ इहलो कलोक जब बात आय ॥ स्वस्थांन सुरन छाडे सु जाय मिल
बिप दिमेरु किंदरा माज ॥ सुर समय न जानत नोर सांझ ॥ दिग देवलोक जब सुमदेष ब
सगर्ल्ह सो रावन विसेष ॥ अहं मे क असुर उपज्यो असेस ॥ सन मुष न नयो कोउ सुर सुरे
स ॥ वैश्रवण सूर ससि सुवरण वात ॥ जम अग्निकाल कृतर विष्यात ॥ मनिज दासि धगंधर्व
नाग ॥ नए विवध षीन मष हीन नाग ॥ विधसिष्ट नइ वृस वर्तवांन ॥ कोउ तंत्र मंत्र सुनियै न
कांन ॥ सब नांत बुध बल मंत्र साध ॥ वस कर्यौ विश्व उपजी उपाध ॥ सुर जछ दानव नाग कि
नर नरेस ॥ गंधर्व दैस दांनव दिगेस ॥ वियवधू सुनग किंन्ना प्रकास ॥ बल लेत बीनजी
य जगत जास ॥ सुर धेष दुष्ट सेवक असाध ॥ अनेक रूप कारक उपाध ॥ जहां सुनत सा
धद्विज सुर त्रिसिध ॥ उरजात देत पतन उसिध ॥ निरमूल करैस बधर्म नास ॥ गुर देव नष्ट
जाअ तिथ्यास ॥ जप जोग जुगत गुर गम ग्यान ॥ क कुनी तनेक सुनीयै न कान ॥ कोउ क
रै न मात पिता कांन ॥ जग नए निष्ट आचार जांन ॥ इह नांत धरम गत आदि अंत ॥ नृष्ट
तहां नारायकंत ॥ नृन इष्टे तुरू पास नीत ॥ अति असहमान रावन अनीत ॥ जब नइ विक
ल विकल विहाल ॥ सहि जात नहि न उर परम साल ॥ सुर रहे मेरु किंदर समाय ॥ अति त्रा
स जु रुकगो तहा आय ॥ रथीवाच ॥ सब कहे अनृथ जे नए संसार ॥ नइ देवता सरु दुषि
त नार ॥ ववषा न चराचर नहि विचार ॥ तुव कस्यो अब वर मोहि सुगम नार ॥ विश्वास घा

तअरुस्रामध्रोह। मनकनकतेयहुतछेद। मोहिसंसरगीनदीसाम्रावसिध। एपंचमहापा
पीवसिध पाविष्टजहाएधर्तपाय। कंटकितकंपममहोयकाय। इहअराध्य अवरपापीअपार
सबरह्योश्वराकससंसार। अविनजबनइअघन्नरअधीन। कररुनसुरनसूत्रणतकीन।
दुहा। लषचोरासीजीवजग। आकृतदेहअमान। तिनदिवहतनिसंकहु। मानतवुलसमान
५२ इन्द्रादिकसबमिलअमर। संगवसुमतीससोक। किंनरजहगंधर्बमुनि। आएविधकेलोक ५३
अवनीकोअरुआपनो। सबदुषकह्योसुनाय। ब्रह्मासोविधविधविवर। इन्द्रादिकअकुलाय
५४ ब्रह्मोवाच। तपस्याफल१हिलोतिनहि। मेंदीनोवरदांन। अबतोमेरोनाहिबल। ब्रह्माक
हो निदान ५५ दीनबंधुजाकोविरद। अषिलविश्वआधार। सदासहायकआपनै। करीये
तिनहिउकार। कविरोवा। सिवविरंचसुरपतिसुरन। कारुनकरुनाकीन। स्तुहिश्वरनपुर
उहम बुध्यबलनऐहीन ५६ श्रीभगवानोवाच। इन्द्रादिककीआपदा। सुनिकुटनरेस। न
भवानीनिरधारजुत। अनयदयोअषिलेस ५७ गिगनगिरागोविदतब। अह्लादइउदाररि
नमनिवंसश्सिधमहलेहुनरअवितार ५८ सायंभूमनुत्रियसहित। तपसाधीसुतहेत
तिनहिदयोवरदांनमै। मनक्रमवाचसमेत ५९ छंदपधरी। मुनस्वायंभूदसरथनरेस। सत
रूपाकवसल्यासुवेस। तिहउदरजन्मलेहूंजतांम। नरदेहनियतममरांमनांम। अंसावता
रत्रयअनुजजात। केकईसुमित्रातिनहीमात। मिथलीसहुजुतधरममूल। सबअविनना
रहरिहूसमूल। प्रथममुनीदयोनारदसराप। अवितारसफलसोकरिहूआप। सुबवस
कुसकुतमसुरसमाज। करिहोअसेषसबदेवकाज। विधरुवाच। विधकह्योदयोमैवरवि
साल। तिहमधनरवानरमनुजनाल। जगमांकअमरअवतरहुजाय। कपिजालविवध
कैमहाकाय। कविरोवा। अंबुजनवनूस्वस्थांनआय। पथ्वीसुरहरिषतअनयपाय। मदमो
दअमरविधवचनमांन। अवितरेकोटतेतीसआंन। एकतैतपजिअनेकअंग। अवितरे
रीछवांनरअनंग। अतिबलीमहाविग्रहअमेव। अवितारजुद्धउछवअजेव। अथहनुमां
नउतिपति। कविरुवाच। दुहा। वनविसालरितुवरणइक। तहांपरबतश्रीकंठ। चंद्रसरोव
रसुषदसुत। द्रोणगिरउपकंठ ६० वहवनकन्याअंजनी। तपसाधतसिवहेत। माहातापसी
सांतमत। साधीसतसुचेत ६१ एकसमयअतिबलअनिल। घांमअमिततहाआय। सर
समीपछायासघन। कीनोसयनसुभाय ६२ कांमोदीपनतैतहां। रेतपातनोवात। मेल्यो
जतनलपेटसौ। मधुकमलकेपात ६३ चंचलजातिस्वभावतै। जोविजनहिजांन। मुष
महमेल्योअंजनी। भयोउदरथितआंन ६४ छंदपधः। कछुभएतबेवासुरवितीत। फिरत
हांपवनआयोसुनीत। वतउहपवनदूरतप्रकास। अनलहेतासमनभयाउदास। अंज
नीवा। अंजनीकह्योतुमकौनआहि। किहकाजषोजतफिरतकाहि। पवनवाच। ममविजे
बाधपटकमलपत्र। उहषोजतसोहमधर्योअत्र। कविरोवा। कहिइतोपवनउनिगवन
कीन। अंजनीतहांमनभोमकौलीन। सोसुनअकर्ममननोसंताप। वहउदरनफारत
लगीआप। श्रीसिवोवाच। विश्वेस्वरबोलेगिगनवांन। रेहनुमतहनुमतिमहांहांन
योकहतमानतहांअमआय। सिवविनायकह्योनिश्चयसभाय। उपजेममएकादस

मअंस तुवगर्नत्रबलवध्वीवसंद्रा श्रीरामनत्क्रसाहंससधीर विष्यातनाम
हनुमनत्वीर तवपुत्रग्पाह्नोरुद्रताम सुरिकाजसिधकरिहैसग्राम अंजनाव
निरदोषदोषनमनलपोदेव अंजुनीकह्योप्रभुटरेएव कविरुवाच केरीनामक
पिमहाकाय सीकर्तसिंनूसेवासुनाय दुहा इतहीतपसनअंजनी उतिकेसरकपि
राज हरिआज्ञापालग्रहण कियोधर्मसुत्तकाज ६५ तपस्यासेवाफलतबहि पायोउ
ऊनप्रसिध नवप्रसादत्रयलोक नएसबरषितसुरसिध ६६ अविधपायअंजनिनंदरम
हावीरहनुमंत अमरसहाइकअवितस्यो विष्णुनक्तबलवंत ६७ इतिहनुमतउत्पति
अथबालसुग्रीवउत्पति कविरुवाचदुहा मध्यजुअंगसुमेरके सतजोजनविस्तार
बलसत्नाताकेविषय बैठतनित्तविहार ६८ एकसमयसुरसिधयुतबैठेसत्नावनाय
ब्रमह्नांनचरिचाविमल होनलगीसुषदाइ ६९ चतुराननकोचित्ततहा नयोब्रमममह
लीन अंसुचलेअनंदमय सोकरिअंजुलीकीन ७० विधसोअउनोअंसुजल करि
तैदीनोडारि न्द्रम्पपर तवांनरनयो विजयनामअविकार ७१ विधअज्ञावसविजयत
हा वसिहोवाहितवीर नितदर्सनवंदननिरत रहतध्यानयुतधीर ७२ इकदिनअर्थ
आहारके विजयभ्रमतवनमाहि तहांवापीसुंदरसुषद देषीउदकअथाह ७३ तिह
वापीवांनरनषत उपरिवाटोआंन मुहफांकोजबनीरमह जोवतिबिबनमान ७४
असहमानअतिदर्पते वांनरजातिविसाल नावीवसअतक्रोधभ्रम कूदपस्योततका
ल ७५ छंद० वापीपत्नावदेवीसुवार नरपरैमध्यसोहोतनार तिहपस्योमाहिरूप
विजयतेष वनितासुनयोअद्भुतविसेष वारितैनिकसतिहसमयवांम तहारहीबैठ
लजितसुतांम यहसमयआयवासवविनीत तरकरीब्रमहूजाउनीत वासुरहिम
ध्यसिंध्याविसेस शोवापीमहआयोसुरेस सुरराजत्रियादेषीसुभाई उरिवढीब्रथाम
नमत्यआइ नयोविरजपातपीडतविअंग सोविर्जधस्योवालनपसंग विरजतिह
उपज्यौमहावीर धरिवालनामकपिराजधीर मिलसत्नाब्रमदिनकरसनेम परिह्
जनकीनेसहीतउेम नितकृतहेतआयेदिनेस उरिकस्योताहिवापीप्रवेस वापि
कामध्यदेषीसुवांम महिरतहानयोउद्योतिकांम रामरवसनयोतहारेतश्राव
सोधस्योयीवसुदरसुनाव सुग्रीवउपज्यितिहविर्जसाय सोरांमसषाह्वैहैसनाथ
देवीप्रनाक्सुतनऐदोय सुदरिसलज्जतहारहीसोय प्रतिमासरूपअपनोप्रजात
फिरनयोविजयवानरविष्यात विधलोकआइतबविजयवीर सुतउनअग्रविलसत
सधीर विजयउवा करिजोरिब्रमसोप्रलीतकीन प्रभुदेहुवासथानकप्रवीन विधो
वाच विधकह्योकेकंदाउरीवीर सुनरचितविश्वकरिमासतीर वनसफुलविषम
पर्वतविसाल निरझरननीरषितवहतपाल तुमवसहुबालसुग्रीवतत्र एविज
यसेवममरहहिअत्र कविरोवाच छंद विपदमध्यब्रलंकवीरजेरीबसुवानर
अमरअंविनअवतरै वगटसबनूमकाजपर अतिवियहआकृतअनेकनव
रहतकालनय जूथपजूथअनंग जुधजगविदतअसुरजय अज्ञाअधीनतव

अनुसरहि। सेवपरायनकपिसकल। जोगविरूजायप्रनताअनय। केकंदानगरी
अकल १। कविरोवाच दुहा। ब्रह्माअपनोगनविविध। इनकेसंगदियएक। इनकदसुर
संपतअषिल। करिहुराजअभिषेक ७६। ब्रह्माकोगनवालकरि। लैआयोकयलास।
विधअग्याहरसोंविवर। कारनकह्योप्रकास ७७। हरपठियोहनुमततहां। बालस
हायकवीर। केकंधापरवेसकिय। समसुग्रीवसधीर ७८। अंबजनुवकोइतवह। इ
हलोकतहांआय। सुरिपतआगेसबकहे। विधकेवचनबनाय ७९। इंद्रादिकसुरमुनि
सकल। आनंनएकत्र। कपिबालहिदीनौतिलक। केकंधाउरछत्र ८०। तबतारारोमा
तरुनि। सुंदरतनयसुजांन। बालविहाहविजयजुत। बिलसतमदनविधांन ८१। तारा
रानीउदरतिह। अंगदजनयोकुवार। महाप्रभाविकवीरमह। अतुलअमरअवितार।
८२। सबैअकंटकराजसुष। करतबालबलवंत। सेवकजूथपजूथसग। अग्याआ
नअषंत ८३। बालसुग्रीवदमहाबली। ईद्रअरकअवितार। निरनअसुरभुजवातनुज
उबवजुधअपार ८४। केकंधाउरिबालकपि। रीतसहितव्रतराज। प्रतदिनप्रथ्वीपर
क्रमति। कर्तसुजोजनकाज ८५। बंद पै। संध्याहितबालहिमौनसाध। सोकरतध्यांन
बकुलगिसमाध। दिगविजयकाजरांवनहुसंत। आरंनअटनकतिअविधअंत उ
हसमयआयकंटकअसाध। बलकरिषसीसकपिकरनवाध। करिवामग्रहेकपिश्र
सुरकंध। मेल्योसुकापमिमदांअंध। संध्याकरिउग्योबालसंत। दीनीपरिकर्मांहूदिगंत
प्रथ्वीविजितकेबांधपांन। अंगदकेक्रीडाकाजिआंन। लटकायदयोपलनानिलाज।
सोदेषहसतवियगनसमाज। बालिसुकरीनायपविनीत। भयोजीनजातनिश्चरसुअ
नीत। छुटकायदयोबलबंधछोर। मुसकातगयोमूछनमरोर। इहनातअमरअवित
रअसेष। बलीमुषनालनूतलविसेष। कवितछपै। असुरसंतापनअविन। भारपीडत
सनीतनय। धेनुरूपतिहधरयो। मनसचितकरुणमय। नारायणआकासवान। अवि
तरनकह्योनर। दिवसवैधरिदेह। रीछकैहैनरवानर। अग्याअनंतउपजेअमर। महा
वीरविक्रमअमित। श्रीरामचंदअवितारसंग। निजयनिहारतपंथनित १। इतिबालमु
षनालोउतिसि। अथराजादसर्थोतिसि। दुहा। राजाअजअविधेसके। स्वायंभुमनु
आय। दसरथकेकैअवितरे। तपस्याकोफलपाय १। उतरेसकोसिलनृपत। तिहउत्री
अनीराम। सत्परूपाअवितारनो। कौसिल्याजिहनाम २। राजादसरथधरमधुर। कोस
लदेसनरेस। ताकहब्याहीविधयुगति। कौसल्यासुनवेस ३। अतिप्रसिद्धपावनउरी।
संसुतसुषनश्रावृध। धर्मउपाइकलोकसब। नितसनुषनवनिध ४। द्वादसद्वादसकोस
लों। चक्कंघांघारबजार। सारथपंथसुमध्यनुव। विहदहुरतहटवार ५। दसपंचापरिवे
षदिढ। पतनकोटप्रमान। चहुदिसदीरघद्वारचव। वज्रकपाटविधांन ६। षाइफलउ
रितविषम। यहिजलजंतुअगाध। मीनकमवनेकीमकर। सुसीयाहअनिसाध ७। मधि
कोटनृपमिंदरसह। आसिपासउतंग। सकलसूलकपाटसंग। चरपोलचतुरंग ८। ब
दउधोर। जलदहरप्रारिषाजोय। अनअंबसागरजोय। विवराजधांमविकास। मनुउदि

तसौ कईलास नगविविधईटनअंक। प्राकारि कुंदनपंक। परिवाल थंभ नपाट कृत
मलिय अग्र कपाट। मणिनीलद्रुमीमांन। सुभसिरालालसमांन। रवि सोम कोतिर
साल। जहां मणि जालन जाल। कृतिका चक्र गनकाम। बकुरंग धाम निधाम। वनिवा
तपथ विस्तार। प्रतिग्रेह विविध प्रकार। नगर रचित प्रतिमानेक। तरु लता गुल्म अनेक।
नव प्रतिअनिभ्रांत। वन विचरंग विभ्रांत। ग्रहग्रहन गोप उतंग। रवि जवन काबकुरंग।
धुजकलस आकृत धाम। दिगविजय चिंत विहाम। पटलोम सुत्र प्रकार। प्रतिधाम विचि
अपार। ग्रहग्रह नदी प्रकास। तप रत्नमणिमय तास। नवपंच तकनकनियंक। प्रतिधां
म धाम प्रजंक। वन सेज जलवांन। सुषषीर फैन समांन। राजधिराज समरथ। सुषिनै
प्रवतदसरथ। नितवस्त ग्रहनवनिध। अनिकूं जअष्ट सुसिध। रसविविध रतिरनवास
वनिताविवेक विलास। नरदेव उत्तीनाग। सुभसेव नृपतीसनाग। मुग्धा रु मध्या मांन
उनिप्रघभ्रा सुप्रमान। दुहा। तीन फ्वास विवाहता। नृप किन्पा सम नांम। सोनागुनयुत सु
दरी। जौ राजत रतिकाम। १ तिन मह पटरानी सुत्रिय। नितपतिव्रता नेम। कही सुमित्रा केक
इ। प्रिय कौसल्या प्रेम। २ अवरदासी कासह अइक। निकट वर्तनी नार। विधसेवा विस्ता सव
सि। अतिप्रवीन इधकार। ४ चेरी चतुर अनेक चित। यौ राजत रनिवास। रमौ न कुरति कुकौन
गर। सौ संजुत सविलास। ५ कला कुसल जिनकामनी। गान तान संगीत। मूरत धारे रागमनु। वा
जत नृति विनीत। ६ समय समय सुभ सहसुर। रस षटत्री सवराग। नित नवन वनाटक नि
बल। सेवत नृपति सनाग। ७। बंदउधोरा। वामनेकु बजेवृध। प्रतिहार षष्टप्रसिध। रनि
वास रक्षकराज। कंचुकी चातुर काज। अतिविसद सना अवास। प्राकार विवध प्रकास। प
रिवेषपोल प्रचंड। मुषथंभ तोरणमंड। थितसूत्र संकल धार। उदघाट वज्रकपाट। पटव
स्त्र विविध वितान। क्षिपिष्ट नृपत वनाय। सुभलक्ष चामर संग। अद्वेत उज्वल अंग। नृतिनिक
ट वर्ती नृप। जे राजमन अनरूप। गुरवासुदेव वसिष्ट। समधर्म कर्मन सिष्ट। उनि आवमं
त्रि प्रमान। सब नीत धर्म सुजांन। अथ अष्टमित्री नांम। दुहा। सिधारक साधक अरथ। प्रष्ट
विजय जयपेषि। पालक ८ असेक उनउ वकौ सुमित्र प विसेष। ९५ देसकोस दल दंड दम
दानादिक सह इत। द्वारपाल देव इह दइ इधकारी अनुनृत। १६ रथ गज हय गोरस वती।
पति इधकार प्रमांन। कवी उरानिक निषज कुल। मागत नरत कमान। १७। बंदउधोरा। सु
रनागन रव ससेव। दिगविजय दसरथ देव। कृतराज नृमसुसंग। इश्वर्यद दर्पत सासरता
सधर्म प्रकास। सबवसहि वर्णसहास। थितवर्ण क्रियवंत। जनु श्रीयासची निलसंत। उध
ट हिहदृक पाट। जौ धामसेध नराट। कोटि स्वध्वजा अनेक। वनिज दान दीप विवेक। बकुकर्म
कार बजार। थ्यास कृकुलयध कार। पुरि बाटिक मुषयुंज। जुति बकुल कुंजन कुंज। तरु
लताक लिसुतत्र। वनि उह पफल विचित्र। सरकूप वापी संग। जलजंत्र चलत तरंग। मि
लभ्रमर भ्रमरी मत्त। वेनिगुंजार रसोरं नरत्त। पसु वृध पसु पती पाइ। सन सुषी अन्यसुभा
इ। वासि कृषी कुल सविवेक। अतिउपजि अन्न अनेक। मनचिंत वर षहि मेह। सबधर्म व
ध सनेह। कहु सोक षन ही संग। आनंद मन अनजंग। उरचढ जोर प्रकास। वनगहन

वागविलास नदमहा सरजूनाम उधारीजगअभिराम निवविसद परवतमालवनि
उताबल्लविसाल नितचलतनिरझरनीर गिरअगमदरीगंभीर आषेटजंतुअपारघ
तिदिवसनिरतप्रकार मृघराजगर्जसमूर बतिसिंघ कंदरिदूर वन महिषषरगावरा
हगजबरितुमत्तअथाह गिरगवयचवरीगाव सतजूथ जूथ सुभाव मृगचित्रमोर
नमांन वनससकअनअनवांन सारंगकल्लनसंग रुरकापसापाअंग कपिन्नालजू
थपजूथ वनसैनीविवधविरूथ जेनषीअंगीजीव दंतीजुलिष्टदइव जलथलनगिनच
रजात कोमवरबनिबिनात वनवासवासविवेक कछुकोलिभिल्लिअनेक आषेट
नरहितईद वनजंतुबंदनबुंद बंद१॥ उतिपनिबांनरत्ननअनेक बहुरंगजातन्नात
नविवेक बितलामृतारमयकनकषान वैरागरवज्राकरिवषांन अनेकधातुमयषा
नआन बहुरंगसंगसोगंधवांन पयचलतअषयनिरझरपहार तारनतहांमज्जत
जलविहार चहुओर देसपरवतनचाउ विस्तारविवधवनवनचनाउ सरिताअने
कतीरथसुथान मुनिवृंदवासतहाउनसवान स्वाध्यायनिरततापससप्रेम तपजाप
होमनमषनित्तनेम सरसीविसालफलजीवसंग नीरजविकासनानाविहंग पतनअ
नेकचथ्थीचमान चवबर्णवासअतिचैनवान द्विजभूजकरमजुतअतिअदीन नित
अनलहोत्र विद्यानवीन सुतिस्मामधर्मषत्रीसधीर गुनवंतसूरदातागहीर आ
पारनउनिचरूकबणकबृंद उपराजकपोषकधनअनंद दिनकथाकीरतरदेवधा २।
रूलरीघंटसुरझंतकार पसुपालकरितपसुनिकरपोष घनहोतप्रातमथान
घोष अन्नेककृषीकषकर्मआस अतिनपजअन्नविराबाविलास त्रयवरण
सेवरतसुद्रतत्र अनुततपरसा धनकद्रहपरत्र अतिनिङविवधसिलीनदार चथ्थी
सकरमकारकअपार वारुणजुमत्तषटरितुविनीत अनुसरतअचलनंगमअनी
त करनीअल्लेकआचूतसकोप बगपंतदंतउज्जुलस्वओप चतिरंगरेषमुषसकचा
प मनुजलदधजाधरित डितधाप सिंदुरसिसविंधुरेसुरंग आकासमनहुआगमप
तंग मदलेषअसितअविरलअनूप गुंजारिमधुपझुकतकरणजूप मदझरततलनना
गमतंग निरझरननीरमनुगिरउतंग घहरातसघनजनुरितुगंभीर मदमोषघोषगर
जिनिगहीर चतिरंगवसिनवासितजुनाग वर्षाकविवधवदलविनाग घंटासुघोषघु
घरनदा दिमतारलिस्रजकीरह्द जुतरंगरंगचामरसजोप आवर्तभ्रिरूपतरुवसंत
ओप नगजटितकनकबंगरिअनूप राजंतरदयकरिबलयरूप मातंगफिरतमोक
लमदंध सतन्नारसारसंकलसुबंध उसाधनरथकरझरतदांन प्रेरतिपहारमनुपील
वांन सतमेघधरैवरषीसुरंग रहरूपद्वारिआवद्रिअनंग कछुभिरतमत्तवारुणस
कुध जाजुलिपमनकुपर्वतनजुध करिहोतकछुकरिदौरिकोप आरूढपवनमनुज
लदओप विरदेतकरीकेउगटविदार पेवंधमनहुधुंवतपहार असिलअैसतबा
जसालाअनेक विधजुक्ततेजलद्दान विवेक प्रतिषेत्रषफसंन्नवपमंग अन्नेकरंग।
आरूढतउतंग अतिसजवकेउकनितक अनूप रहवाउकेउकसुषचालरूप धा

बरसजिवकेउपंद्वीधाप। फरकंतफालकेउमहिश्रमाप। नृपग्रहतकंवकेउधनख
मिल। मिलजातश्रनिलसंगवागमेल। हिमवटतजीननगजटतश्रोप। जरतारसा
रसुषमलसजोप। सुषवागफोररे समसुरंग। व्रतिवाजसाजसोत्ततसुचंग। संदनश्र
नेकविजइसग्रांम। सनाहश्रस्तत्रसस्त्रनसनांम। रथराजकेउकसुषसेफसाजको
उजुक्तवृषनकोजकवाज। वारणसजुक्तकोउरथविराज। अतिकरननारवाहक
श्रमेव। मनमतगरधुंकारमेव। केवलतदंफजोजनयमाज। करनीश्रन्तेकहीराजका
ज। सतजूथसंगवासीसमृथ। अतिवेगवंतवाहकसुअर्थ। मणिरतनहेमबकमूल्यमा
न। महिकोसधानधनश्रप्रमान। सोगंधवसत्रसालाविराज। सुनसस्त्रश्रस्त्रसालास
माज। अनेकनोजसालाश्रनूप। नवत्रसहोतश्रनेकनृप। पलिद्धधात्रधामिलश्र
नधूर। समपंचसाकषटरससमूर। घृतएकविवधस्वनविधांत। दससहविधोनो
जननिदांन। अनिवारतनोजनकरितप्रांन। अनेकमनुजमनमोदमांन। षटदरस
नाषषटमिलमहंत। जयकीतजग्गदसरथजईत। अनेकदानपावतअनेक। वि
द्याप्रमानगुनविधविवेक। चतुरंगवलतदलसूरचित। नवनोमदुरंगवसहोतनि
त। तजजातराजदुरगंजनदिगंत। तेलहतश्रनयविएयहतदंत। उदियास्तरा
जमहिमाश्रमेव। दिगविजयतसदसरथनृदेव। सिंघासनचामरछत्रसाज। श्रहा
श्रषंडराजाधिराज। उदमषियातदलबलश्रपार। विस्तारसिंधवियहविचार। महिदुरे
गदंडश्रहाश्रनंग। अतिदयाप्रतेज्ञाश्रंगश्रंग। बकबंधसंगविरदैतवीर। सबनाइनिश्र
इसबससधीर। अवनीविलासकीडाश्रनेक। अननंगतपतनृपछत्रएक। धनुकपापात्र
जसजपतकांन। विद्याधस्वारनसिद्धवांन। इतिराजादसरथेतिपति। अथराजादसर
थरानीकेकइवरदानवसंगलि। कविरोवा। ऊहा। दक्षणदेसदयंतपुर। तहांसंबर
दनुजात। करतराजविष्यातकुल। आमितभुजजयुतात १ तेउपंचमायाप्रबल। क
र्मसाधसक्रोध। जतिसुनाविकरइ सो। उपज्योवैरविरोध। २। देवासुरकञ्चुकालनो। ई
द्रपराजयपाइ। नृपदसरथको वितवन। कीनोहेतसहाइ ३ देवराजसौदसरथहि प्र
गटसुरातनप्रीत। गजहिधुरंधरहोतगज। राजनीतइहरीत ४ नृपमृधियारतजिहस
मय। केकईवियसंग। आतुरैयौईद्रवहां। वनहीनयोप्रसंग ५ इदवाच। सुरिपतिजा
चन्पाकरी। करीयेदेवसहाइ। राजादसरथसुनतही। चलेनिसांनवजाइ ६ संबरदा
नवदसरथहि। भयोनयानकजुध। विषमपरसपरवीरवर। करतप्रहारसक्रुध ७ नृ
परथश्रद्धाषीलतहां। गिरीश्रलहसुजांन। करिश्रंगुरीकतकेकई। रधुनिवेसित
श्रांन ८ वियकरिपल्लवछिद्धथित। पतिदेष्योतिहकाल। विस्मयगतिअतिप्रेमवस। नयो
नृपालकृपाल ९ प्रथमकरूकिन्नासमय। केकईवयबाल। महाविरूपसुतपविमलदु
जदेष्योइककाल १० वहमलीनसुषीनवउ। वढेविसदनषवाल। कीनेवंदनजोरिकरि
दुजसोइनयोदयाल ११ दियविद्यासंजीवनी। देषिनकदुजराज। सोकिन्नानपमानसि
रकरेसफलमनकाज १२ छंद प। सोइराषगूढविद्याविलास। कियसमइपाय रानी

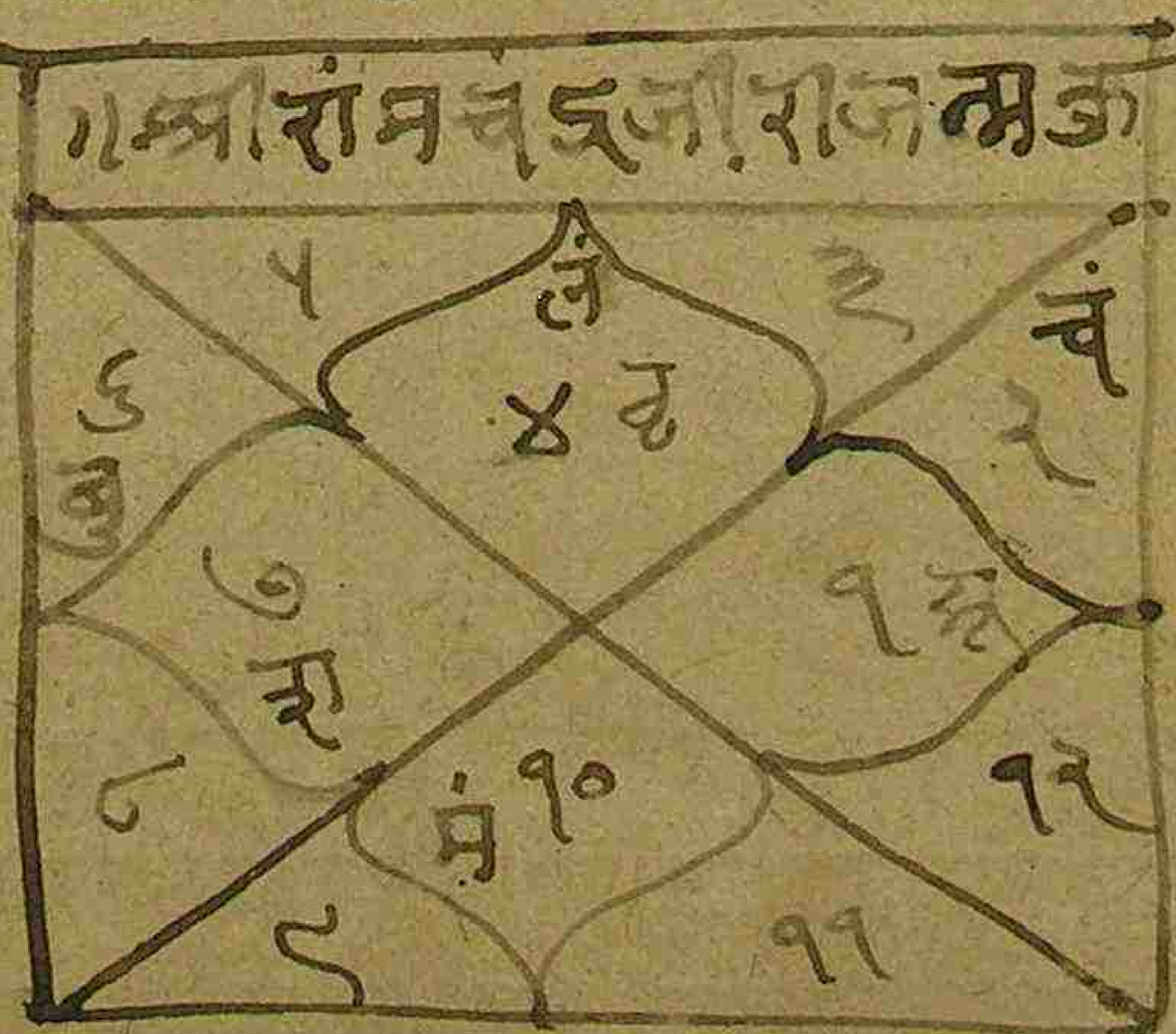
प्रकास । जब नयो अंसुमालीअदिष्ट । अपआपसंभार तबं धुइष्ट । निसनईजुद्ध
कीडानिवृत । रिणखेतरहे दलरोसरंत । षगधारमरेकेउसूरषेत । अलिकगिरेघाय
नअचेत । रनअजिरस्व स्वहतदेवराय । केकइकस्योकरिपरसकाय । दसतिसुवतमा
त्रवनितविसेस । निस्वेसुगइपीडानरेस । उनिगिरेदेषसबसुनटसूर । संजीवनमंत्रसो
नपसमूर । इहसमयजिवाएसुनटआन । संजीवनविद्याबलविधांन । उठतबेराज
दसरथअतंग । अतिवढेक्रोधनहसमतअंग । तिनठे सबै संग्रामसिद्ध । पनुअथआ
नगहेप्रसिध । निसस्योजुधदसरथनरेस । परिबूहमधपकीनोप्रवेस । पयकरेअसुर
षलमारषेत । संबरसबंधसेनासमेत । सबदैत्यमारिकीनोसंघार । कोउनएनाजपैनि
नि धनपार । सग्रांमजैतवाजैसान । वनिरहेगिन्नविबुधनविवांन । संतुष्टनलोजीतेसग्रां
म । वैचित्रकर्मपदिदेषवांम । राजावाच । कियप्रथमजुरद्धारथप्रमांन । अरुमृतिकजि
वाएवीरआंन । कृतिकरेउथत्रियजनयकाज । अवलेकुउनयवरदांनआज । रानीवा
सामाप्रमानकृतपतिसमीप । मांगूतबदीजकुवरमहीप । राजावाच । अतिप्रेमप्रियापी
यकल्योएक । होउईम्मामनतबमागलेक । कविरोवा । सुरपतसहायकीनोनरेस । दिगवि
जयकरेआएसुदेस । दूहा । महाप्रवंकामुष्यरा । धात्रीहृधिसुवेस । केकइहितकारणी । स
बग्रहकाजप्रवेस । १३ । राणीवाच । कारण-दकुवरदानको । दसरथनृपदिदीन । रानीधा
त्रीसोरहिस । कल्योजथाक्रमकीन । १४ । मातारावेगुहमे । नासन्हूतनिरधार । वातहृदयग
तराषवी । अपनीबुधउदार । १५ । इतिकेकइवरदांनप्रसंग ॥ अथश्रवणतापसबध
संगलि ॥ कविरोवा । दुहा । इहविधदसरथनृपतनुव । राज्याकरतजगजीतें । सेदिनाद
सुअजसुवन । गावतजयपुरगीत । १६ । एकसमयकहुकालगत । आषेटकनृपआय
बेठेतमसासरिततट । थांनअदिष्टवनाय । १७ । दंपतिवृधनिकुनमुनि । श्रवनउन्नति
नसंग । विधकृतसमयनिसीथवन । तषाविकलनएअंग । १८ । श्रवनगयोतबकलसले
सर्ताजलकैकाज । धुरितकुंनजुसब्दनो । जांन्योनृपगजराज । १९ । सब्दवेधदसरथतहां
दुस्तमोष्योधनुतांन । सोलागतबोल्योश्रवन । हाहातिदइवान । २० । सुन्योनृपतमांनुषस
बद । उतविआतुरवहाआइ । कुजहत्यानयत्रासतै । रह्योमनसंभ्रमछाइ । २१ । श्रवनवा
तबकुबोलेश्रवणमुनी । वैस्यउत्रहुराज । अंधाममातापिता । आयालैजलकाज । २२
आतुरजललेजाकुवहां । विकलत्रषामयपाप । केमरिहैअपमृतुवस । नांतरदेहैश्राप
२३ । करिकुविसल्यमहीपमुहैदि । इहउपचारनआंन । काढतहीसरश्रवणको । कीनोप्रां
नपयांन । २४ । बदपध । लेगयोनृपतिजबकुननीर । सुनिआइटबोल्योमुनिसधीर । दंपती
वाच । रेउत्रअरणआयोसुदेस । इहसमयकह्योकोसलिनरेस । राजावा । मैहत्योश्रवण
वनवनजंतुजांन । अपिराधमयोअज्ञातआंन । हाउत्रउत्रकदिविषमवांन । मुरछा
गतआतमउछ्समान । अपराधविनाहमकियअनाथ । हतउत्रतहांगहिवलकहाथ ।
कविरुवा । तिनदिनृपगयेलेसरिततीर । जहांपरयोश्रवनसरिहयसरीर । दंपतीअं
ध । संसारबुद्धीसाचोसबंध । वससोकपितामाताविसेस । उत्रसंगकस्योकुतनुकप्रवे

स। दंपतिवाच। दुष पुत्र तज्यौ स्वह मनु देह। सुत सोक मरै कैं रकु नृपनि संदेह। दुहा
दियो स्राप मनु दंपती। जरत अनल तन ज्वाल। इह प्रकारि तौं स्रवण। नयो अचानक
काल। २५। इति स्रवण बध संग संपूर्ण। अथ अंगदेस अनावृष्टी प्रसंग लि। कविराव
अंग देस चंपापुरी। लोमपाद नृप तास। अनवृष्टि द्वादस बरष। नर जन बन तृन विनास। २६
चितातुर नृप लोम तब। नयो दीन आधीन। कहु न पावत थाह कछु। ता ते चित्त मलीन
२७ तिकाज इक दइव यइहु जतिबोलि इक काल। काल चिंता देस कौ तिन ही कह्यो जो
पाल। २८। रिषीवाच। हु जन कह्यौ तब नृपति सों। और उपाइ न कोय। सिंगी रिष आवैत
हां। तो पै विरषा होइ। २९। ऐसे है जब तब चिंता। निश्चय अंग नरेस। नास होइ दुरभिक्ष तौ
वरषहि देव विसेस। ३०। कस्यप देव प्रजापकौ। पुत्र सु नाभक नाम। नियत कर्म तपस्या
निरत। वन निर्जन विश्राम। ३१। शृंगी रिष्य ता को सुवन। ब्रह्मचर्ज व सबाज। रहत सदा
अधियन रत। पितु अज्ञा व तिपाल। ३२। राजावाच। लोमपाद नृप गुर सचिव। बोलि क
लोइ इह मंत्र। किह विध आवै शृंग रिष। वस्तु उद्यान सुतंत्र। गुरवाच। देह तजै कै श्राप
दै। ता तें हरियत राय। बलकरि ना वे विप्रवर। करिबो एक उपाय। ३४। पवव कुवार विला
सनी। वेष विचित्र बनाय। कारन देत उपाय करी। लावहि मोह लगाय। कविराव। नृपत
हां पठइ नायका। दयो मान बहु दान। सो अज्ञा व स सुंदरी। पन कृत कस्यौ प्रमान। ३५। ते
मुनि वेष बनाय त्रिय। गइ जहां रिष्य शृंग। करे परस पर नमसकृत। उपजे सुष अंग अंग
३६। आवन गवन सु वेष इह। कछु क दिस तिन कीन। विवध साफल्य दपन वसन। नाग
र रूप नवीन। समय पाय सो सुंदरी। या हि लियो एकत। विधयुत कीनी वंधना। नयो मिला
प महंत। ३७। त्रिय रस अनुभव नाहि तिहि। शृंगी रिष्य अन संग। कति आकृत नर नार के वि
मन भवै इस संग। ३८। ता तें काव्य बांन त्रिय। इ स सु कन ताहि। दिष्यो अद्भुत रूप रिष। रसो च
कित मुष बाहि। ४०। छंद पध। देवे सरूप नै तन जात। विसमय गति इव तन नयो बात। रिष्
रोवाच। कत तव वन आप यानी सु कोन। मो हिक हीये कार न आफ मौन। स्त्री रुवाच। त्रियर ल
जंतु इह मनो गपनाग। वहव नाना मम मुनिजन समाग। संभ्रमत जंतु जंगम अ सेष। वसहे
हि इमदि दिषत विसेष। मन मथ विलास वंछित प्रमान। इह मदात चिंता मन समान। तन
परसत मम तिण अन लतूल। मदन मय पावत ना सम्हूल। रिषरुवा। मम निकट इहां आ
श्रम महंत। सुष वस्तु पिता तह हा इध संत। प्रजुन हा पान धार कु सुनीत। विध युक्त करहि
आथित विनीत। कविरुवा। वन जंतु विवध सेवत विसाल। रिष अंगत पो यल जल रसाल
सुंदरी चली रिष शृंग संग। मातंग गविन उज्ज्वल अनंग। झंकर होत नूपर नन दूट। सोगंध भव
र गुंजार सद्द। इह भात तपौ स्थल विया आय। रिषि करी सु षदइ जा सु भाय। अरिघा स
नदी नै विश्रांन। वनिता सुबैठ मन मोद मांन। रिषरोवा। मुनिदए आंन फल विवध मूल
करियै मन भोजन सानकूल। अनेक स्वाद मोदक अनूप। रिष अग्र धरे त्रिय अमृत रूप
स्त्रीयोवाच। एआ हि इम कं पै फल अनेक। करियै रिष भोजन सुत विवेक। परसपर
करै भोजन प्रमांन। विस्तार बेम ब रचा विधांन। रिषरोवाच। सिंगी रिष्य इव त्रिय सुभा

य। सबकहोमर्म अपनो सुनाय। कोकर्मनजत विद्या सुकोन। मुनिवेद उपासत कव
नमौन। स्त्रीयोवाच। सबकाम रूप इम परम भेव। दिनरात उपासित मदन देव। नितपा
व प्रेम विद्या प्रमांन। नवरस नक्रिया अनुभव निदांन। इन रस नलह्यो जिह स्वाद आन।
जग जंतु जन्म तिह वृथा जांन। रिषरोवाच। सिष जांन पगाव हिपाव सोय। हितनास जन्म
हि सफल होय। कविरोवाच। व सत्नयो विध जांमो विसेष। अबलिन फल ले कुसाधन अ से
ष। मिल बैर वरहि सवन गहन मांहि। आवै सुनाह तव नाज जाहि। मुनिवंध्यौ त्रियासौ चित्त
मोह। बलकत विविध तहां छयन गोह। यह हाव भाव रस तान गान। वनिताक दाइ पली
ला विधांन। मांननी चलत उव प्रेम मत्त। रिषलगत संगत हां रूप रत्त। तह गहत तदी र अंच
ल घजात। मुनिर सतन सौनातन समात। इह भांत परसपर मिलत आंन। व धकाम कवचन
कल कंव वान। वन बैठ त्रीया परिषद वनाय। इक समय मिल्यौ रिह्लस्त्रिग आय। तहां होन
लगे घन गगन घोर। मिलमत मयूरी सह्यमोर। विस्तार जलद विद्युत विलास। उति दिग्ग दु
रित करि करि प्रकास। तरुलता गुलम कुसिमत तमाल। मधुमत भ्रमित मिल मधुपमाल।
उधी पनम नमथ समय एह। नरिनार नियत वाढत सनेह। सम भाग भए रज विरजसं
ग। उतपन्न होत जे उरथ अंग। पोरष प्रभाव नादिन प्रसंग। इह काल तिन कुप्राप्त अनं
ग। उतर दिग आतुर अनल प्राय। सविसेष सीत व्याप्यौ सुनाय। अष्टा अदृष्ट मिल अ
थकार। कियत उत्त अचांन कवम तकार। आलिंग त्रिया त्रिय आप आप। उरि लाग विरत
वनिता अमाप। इक तहां त्रिया सुगंधा अनूप। रिह्ला कंठ लगी उझिकां मरूप। उरि मिलत
त्रिया मुनि वस अनंग। भयो ब्रह्मचर्ज व्रत तहां भंग। जब परस्यौ त्रिया पासी व जात। ग हिकां
मरोझ वैवर्ण गात। याये सुनाह तव विंक इत। संभ्रम्यो चित्त जान्यौ कुसूत। सुनांहूवाच।
त्रियरायत उरउ छो निदांन। आयो मम आसन कवन आंन। सिंगीरिसवा। रिह्ल सिंगक
ल्यो पितस्व विरांम। मुनि आए यहां त्रिय रत्न नांम। आतिथ्य करयो मै विध अनेक। वन भोज
न दीने जुत विवेक। सुनिंमोवाच। स्रिंगी रिष सौ कहि पितु सुनाइ। ते व स्तक हां सुत मो व ता
इ। कविरुवा। लेगये तहां सुंदर समाज। वन आवन सन्ना वनिता विराज। नय पिक्न न
ई जुवती सनीत। विध युक्त करे वंदन विनीत। सुनिंमोवाच। इछ्यौ सुनाह मुनि त्रिय समा
ज। आवन वन कारन कहो आज। स्त्रीयोवाच। वनिता सुक है कारन विसेस। दुरभक्ष
घोर भयो अंगदेस। पवइ इमराजा लोमपाद। मुनि अंग दिआनो अप्रमाद। दुहा। इहासु
त विरहा मय यसत। उहां उपव हकाज। अंगी रिष हि विचार तब। दइ विदा रिषराय ४१
छंदपध। पितु दीनी अज्ञा मरम पाय। अब उतजाय करिये उपाय। कविरोवाच
सोचल्यो पितु अइ पारिवेस। दिन कछु इक उइ हवे अंगदेस। अबलिन करे उद्यम अनं
त। आंन्यौ तपसी इक वर्ष अंत। सामुहे आय नृप प्रजा साथ। सविसेष करी पूजा सना
थ। अरिघासन कीने विध अनेक। विस्तार पाक सज्पा विवेक। आरंभ जिह सुभलग्न
आय। संभारि सार पूजा सुनाय। कतुई इ देहित सागकीन। निरघो वगिगन मिलय ननं
दीन। छतिविद्या देव कीनी असेस। उरतनाम भयो अंगदेस। नृपलोमपाद उभी अन

१ ससा सुनाम सुंदर सरूप । दिय स्रिंगि रिषहि किमा सुदान । किय पाणग्रहिन हुजाव
मांन । अति सुषद संग परकरि अपार । विधयुक्त दासदासी विहार । रिष स्रिंग राष सुष
घराज । सुन होत भनिव स्वा समाज । दुहा । दुरुन षष्ट दसवर्ष को । सोषी यो रिष स्रंग
महान यो सुनकाल मदि । वक्र उर वगट वसंस ४२ । इति स्रीअंगदेस अनावृष्टि प्रसं
ग संपूरणं ॥ अथ श्री रामचंद जनम प्रसंग लिष्यते । कविरोवाच । दुहा । पार
व्रहान रहरवंत्तु । त्रेता युग पर अवितार । पितु सासन वस प्रेम पन । वेद धर्म विस्तार १
सूरज वंस सहाय सुर । षलरावन षयकार । के है नार विना सुतुव । अबि राम अवि
तार २ । कवित । एक समें अविधेस । नुवन दसरथ नरेस नय । जहां जहां जय युजु
झीयो । नगत अनंगन योजय । दिसको सदिढ उरंग । दीन दमदंन दया षल । परिनव
वगट वयांन । बधु सब सिध वुधबल । अज्ञा अषंड दियास्त लैं । मिलत लोक आवागव
न । वेद कथना ववरजित विसन । राजत नृप जतीरवन १ । विषम अष्ट कवीर । वर्षनव
सहंस अजु विर्तिय । वेद भलित विधांन । करे जय संजुत क्रितिय । विपुल आयु वितियो । जान
अवसेष अलिप जब । जियन आस पुजइय । अविधनइ राय लगी अब । विषम सुग धनो
जनवसन । ह्यौ सनिसा दुष अनलदहि । निरास चित्त वससोक नृप । वात्तवक्र ज्यां तूलव
ह २ । दिवस एक दसरथ नरेस । कुल पूज ये हगय । निज अभ त्रताजांन । चूत नयनीत
चित नय । जन्म जात निर्फल उजात । दुष आंनन बुझीय । ज्यो वूडत सागर जिहाज । अवि
लंबन सुकहि । संसार सुमन रहर सु कवि । छीजत जुग जुगर छकविन । सुनि जैवसिष्ट
सिधांत इह । वृथा राज सुष उत्र विन ३ । वसिष्टोवाच । दुहा । सनतकुमार जो हम सुत
ताप स सु नौन रेस । स्रंगी रिषकरि काज है । कै है उ अविसेस ३ । रोरविप्रादस वर्ष को अं
गदेस जब होय । अंगी रिष करि जिग्य तै नाम हि पावैसोय ४ । राजा दसरथ कर्मवस
रहे अपुत्र बक्र काल । श्रिंगी रिष्हि मष जबकरै । फल पावै तत काल ५ । ऐकारिज नवत
अवस देउ अविधनरेस । तिन मे व्रयम व्रमान नौ । कै ध्वं है वतिय विसेस ६ । दुनि वसिष्ट
मुनिंद्र यवग । अतरिगतिक हिए ह । उत्तचार है है वगट । देव व्रम मय देह ७ । माया जोइ
विदेह यह । पुनि कै है उत पति । अविनी नारविना सहित । सो नृप जात कुसत ८ । अवजि
हु आवै स्रंग रिहा । करियै वेग उपाइ । संतति कार्ज सिध है । समय वन्यो सो आइ ९ । कविरो
वा । अज्ञा पाय वसिष्ट की । दसरथ कस्यो षयांन । सुन दिन सुगन मनाइ सब । चले वजाय
निसांन १० । अंगदेस अवीथे सजब । आयो सुनी स्रंगेस । सजन सवंदुरु सषा । आदर करे
असेस ११ । नृप आएवं पा पुरी । परीकरी इद्र प्रमान । कोसल्यादिक संगत्रीय । किय आतिस
मान १२ । विनु संतति विंता विषम । तरि जो व्यापित आइ । सो दसरथ नृप लोमसो । सबे कहे
समझाई १३ । सुत अनाव रिष स्रंग सो । दो नृप कुयदीन । कर वप्रणमत हाजोर कर
कारण वगट सुकीन १४ । छंद । रिषन एद यालदुष सुनत राज । संगउ नयन पतिकि
यचलन साज । सकुटम वस्यो नृप लोम संग । आनंद बढ्यो दसरथ अनंग । रिष स्रंगस
ग मिलत नयराय । अति हरष अजोध्या पुरी आय । सालंकृत कीनो नगर साज । बाजत्र स

मंगल अद्दन वाज ॥ मिल अंत हहुरी जुवती समाज ॥ शिंगार सेक सो गंध साज ॥ स्वेता सहित
रिद्द अंग आय ॥ पूजा प्रसन करि लिगे पाय ॥ उनि बोल सुद्द दिनृप करि प्रसंस ॥ वरवीरधी
रनिरमल सुवंस ॥ अंगाधिपती मिथुलेस आई ॥ समकासि राज केकय सुनाय ॥ अरु दाछि
णात्य सोवीर रदेस ॥ सोरवि सिधपतन रन नरेस ॥ जहा आइ धर्म मूरित हु जात ॥ सो उ विर
वेद विद्या विष्यात ॥ वरि गुर वासिष्ट अरु वामदेव ॥ जाबाल जुक्क कस्प जुदेव ॥ ध्वीसु से
ध गुद्द दिप्रमांन ॥ सयुनद उतर तट सु थांन ॥ कतु वाज मेध आरंभ कीन ॥ हु जजथा जोग्य
इधकार दीन ॥ सब करे आन संभार सिध ॥ उरित हुन्न ऐआनंद प्रसिध ॥ पट बाध वाज प्रथी
प्रवेस ॥ दल संग स्वई छ्याकिरत देस ॥ भ्रम अस्व मास वादस सुनाय ॥ आगम वसंत थल
जिज्ञ आय ॥ कत अनल ज्वलित बध बाज कीन ॥ देवन असेष आकुती दीन ॥ सुरन एवि
दद्दयमेध सिध ॥ प्रनु पुम्न लान प्रथ्वी प्रसिध ॥ किय कुतिय जिज्ञ आरंभ काज ॥ संभार सार
जुत होम साज ॥ तहां होन लगो मषअग्नि हेत ॥ सुन वेद गांन मंत्रन समेत ॥ यो होत इस्ट आ
कुति अपार ॥ प्रति दिवस होम नाना प्रकार ॥ विधयुक्त वर्षवी तौ विसेष ॥ आकुती दइ इर
न असेष ॥ तहां धरे देह स्वाहा समेत ॥ उलिपनि अग्नि तहां अनषेत ॥ थित षीर स इरतक
न्क थाल कर धरे वरण ज्वाला विसाल ॥ हु ज गुर वसिष्ट हियालदीन ॥ पुंन उर्वकु रूप रवे
सकीन ॥ गुरु अर्ध ना गपाय सप विज ॥ कोसल सुता दिक्कु दयोत त्र ॥ वीर लौ अर्ध अवसेष
आंन थित थाल कस्यो सो उनय थान ॥ केकइ समर्पित एककीन ॥ वे अंस सुमित्रा हिवत्तिय
दीन ॥ सागता सिध मषनयो सकाम ॥ विधयुक्त दांन दिय नृप सवाम ॥ दस लक्ष सप्रकरध
र्मधेन ॥ सो पुज विप्र दीनी सुबेन ॥ दस कोट स्वर्न मष पुर्न दांन ॥ भिल रजत कोट दस वोकमांन
हुजवंद स्वर्न किय विदा देव ॥ जिग अंत करे मंजन अजेव ॥ कम युक्त विय नपयम्नद्दा कीन
निश्चय नइ गर्भ स्थित नवीन ॥ पुति गर्भ अवध वस हृधि पाय ॥ समअंस रूप लक्षन सुनाय ॥
दुहा ॥ प्रसव काल निर्विघन नी ॥ तहाद समास वितीत ॥ जगत आस विस्वास जुत ॥ पनुआ
गमन पुनीत ॥ शाबैक वृत ॥ अविध पाय उत पन्न ॥ येह अविधे सअ विध पुर ॥ पितु दसरथ
पृथ्वेस ॥ धर्म रथै नार वहन धुर ॥ पतिव्रता सुपुनीत ॥ मात कोसल्या रांनी ॥ हंसवंस अवतंस जा
त षत्री जग जांनी ॥ षल गए अस्तमित तिमर षय ॥ हित उद्योर ष्षुवंस कुव ॥ परिब्रह्म परातम
परिपुरष ॥ नयो राम अवितार भुव ॥ ३ ॥ रतु वसंत मधु मास ॥ मिलत पष स्वेत मध्य दिन ॥ नषत्र



पुनर्वसु सिध जोग्य ॥ आगम उत्तराईन ॥ मेष मांनु हषसोम
वुधकमाक कर्ट गुर ॥ सक रसुक्क संक्रमन ॥ लग्न मि
लक कर्क उन्नवर ॥ सुन निम तत्त एन रहर सकव ॥ जातु
धान अरपर जरै ॥ काकुस्त वंस नवमी सुतिथ ॥ राम चं
द्र प्रनु अवितरे ॥ ४ ॥ अर्क वं स प्राकास ॥ अवितीय अर
लोदय ॥ कौसल्या वी सुर मरिव उगट ॥ जगत जयस
न्य निसाचर तिमर ॥ कीत दिगकरण प्रकासीय ॥ ५ ॥
कुमद संकुरिय ॥ सत्रु नाब त्रविनासिय ॥ नरहरक पच

रुवाजसजपत॥ असुरचकोरसंतापउर॥ दसवदनघूकमनमुकऊव॥ वकुलि
तसुरपंकजव्रतपुर॥५॥ अविधसिसरअविसान॥ जन्मआगमजगजांनिय॥ अमरवृ
दआनंद॥ निषनवनतुहपनिभांनिय॥ कंटकनयनरटरीय॥ सीतदाहकनहीसकी
य॥ संतकवलविकसंत॥ कीतिकविकोकिलकिजीय॥ मुनिमधुपमालगावतमुदित॥ वि
दनीतत्रयवातवह॥ जगउगटरामरितीरजजो॥ मिलतछवआमोदमह॥ द॥ मषनिसा
नघुरगरज॥ आसघनघटाबंधिउर॥ मिलमनोरथजलद॥ संतचात्रकरटआतुर॥ सु
रसिखंडमनमुदित॥ जोतिविद्युतिआभासिय॥ क्रितसरतविघरिय॥ विदुषमुषसिधु
विलासिय॥ विरषासुकन्कबुदनवदिय॥ वेरिविगासजवासवन॥ मिलचितारोरवनृपत
मन॥ रामस्यामघनआगमन॥७॥ सोरठा॥ मंगलवंदनमाल॥ विमलथालग्रहग्रहवजे॥ सु
रनरसबदरसाल॥ जयतजयतरघुकुलतिलक॥८॥ कौसल्यावाचवंदेवैताल॥ दुहा॥
विबुधनिसानअकासवज॥ सुमनव्रव्रपसंसार॥ तीनलोकआनंदऊव॥ रामचंदअविता
र॥९॥ छंद॥ परिमातमाजुअनादपौरष॥ सत्सरूपसनातनं॥ नीलोतपलदलस्यामसुंदर॥
पीतवासनभासनं॥ दगअंतअंबुजअरुनआ॥ मकरकुंडलसोभऐ॥ मनिजटतकनक
किरीटमंडत॥ अलकअलिमनछोभऐ॥ भुजचारसंयुतचारआयुध॥ हृदयमतिसोभा
सने॥ कयूरमुक्तामालकंकन॥ विदुत्द्युतनतनवने॥ गनईसकोटिनअग्रवर्ती॥ कुलअम
रवंदनकरे॥ वनमालउरिसविचित्रविभूति॥ हासचंदकचितहरे॥ कटिसिंघमंडितहेमकि
कन॥ नवलकंकतनूपरे॥ जोतिमयनषअरुणराजित॥ रूपअद्भुतनरहरे॥ सोदेवकोकोसि
लसुताविस्मय॥ नइचित्तभावही॥ आनंदधाराअंसुअविरल॥ प्रेमयाहनपावही॥ करि
जोरिकरिकरिपर्मकरुना॥ वारवारवषांनही॥ अभिलाषपूरनभएअपनेजन्मसाफल
जांनही॥ तुमपारब्रह्मअपारअच्युत॥१०॥ मधामधुमांनिये॥ जगकरनपालकनामजगदित
जगनिवाससुजानियै॥ रविकोटवगटवतापराजित॥ ईसकोटिमहेस्वरा॥ विधकोटकोटनवि
श्वतेत॥ कालकोटिभयंकरा॥ हयमेधकोटअधमहंता॥ मारुतकोटमहाबली॥ सिसकोटज
दानंदस्वामी॥ कोटसुरनगनिश्चली॥ वैश्रवनकोटधनेसवैभव॥ सक्रकोटविलासनंत्रेलो
कवंदतपदमपदसेइ॥ कोटितीर्थनिवासनं॥ सरपंचकोटिनअतुलसुंदर॥ छिमाकोटिवसुं
धरा॥ सामंदकोटिगंभीरसोभा॥ कोटिचंदभयंकरा॥ वउकोटिजहतुनीतइजा॥ देवदेवदया
लनो॥ सुनदिष्टकोटिकसुधाश्रावकपरमगतदायकभनो॥ ब्रह्मंडकोटिसविपुलवि
ज ग्रह॥ विमलंगजसविस्तरे॥ कामकोटिककामदाता॥ विश्वजितविश्वंभरे॥१४॥ कचरूप
जिदब्रह्मंडकोटिन॥ नियतनिषनिवासए॥ सोइअमितविग्रहममउदरगत॥ प्रेमभावअ
भासए॥ इहविरतलोकविडंबनालग॥ करनकारनहेत॥ निगमगावततनेतनितमन॥ वाच
कायसमेत॥ दुहा॥ सोरठा॥ आदिमध्यअविसान॥ रहितअसंभवरूपयह॥ पूरनप्रेम
ध्यांन॥ विश्वचरममजियवसकुप॥ रहितसुइछाचार॥ जोयहउत्तरसुरनकु॥ मो
हिमापैनमुरार॥ मायाविश्वविमोहनी॥ द॥ विस्वातमाविसेष॥ रूपअलौकिकरावरो॥
अद्भुतचिरतअसेष॥ करियैअंतरध्यांनहम॥७॥ बालभावरघुवीर॥ प्रविलइसोह

अनुसरकु। सुंदरस्यांमसरीर। देवमनुजपावहिदरस ८। श्रीभगवानोवाच दोहा। मा
ताजोअभिलाषतुम। वंछितवेदविधांन। सोसंपूरनअविधवस। कैहैंभगटभमान ९। तुम
कीनेजिहहेततप। दंपतबनदमिदेह। मातारूपअनूतमम। देषोनिसंदेह १०। अंबाजोस
बादइह। करेपावनितकांम। सोलहिहैसारूप्यता। अंतकालममनांम ११। कविरोवा।
कोसिल्याहिप्रबोधकरि। बालभावअनुसार। रूदनकरिनलागेरहस। नरहरिकेनिसता
र १२। सोसुनिआइमातसब। वंसजुवतिवनवृंद। बालकरूपनिहारनिज। उरनवठेआ
नंद १३। जुवितिनकीनीआरिती। बालकविमलवधाय। हर्षितफीसबलेतहैं। वारंवार
बलाय १४। दइवधाइदसरथहि। दासनइववंदाइ। नृपतिआनंदमगननै। मृतकप्रांन
सोपाइ १५। समयजानगुरविधसंजुत। देवजथबलदीन। आर्थनादीमुषसहित। जाति
कर्मसबकीन १६। मंगलदुधभिगोगिगन। बाजेएकहिवार। नरपुरसुरपुरनागपुर। उछ
वनएअपार १७। आनंदमग्नजुलोकयह। जुक्तनकाऊजांन। एकअहोनिसयहसम
य। निकस्योमासप्रमांन १८। वासुरअंतरअविधवस। गाननएसुभगीत। सांतिरूपकेक
यसुता। जायोपुत्रपुनीत १९। समयपसुतासुंदरी। नईसुमीत्रानांम। पुरसुलछनउन
यसुत। महाधर्मकेधाम २०। करेतिनऊकेजातिकम। जथावेदविधजान। तबतेदिनइसु
षअमित। वसेअवधपुरआन २१। जबवितीतभए दिवसदस। गुरवसिष्टद्विजआय। दे
पादारधपूजनृप। वंदनकरेवनाय २२। वेदपणीतसुहोमविध। करीजथाक्रमकाज। ना
मकर्णनिर्विघ्ननो। सूरिसंतोषसमाज २३। सोरठा। महिदेवनकोग्राम। सांसनदीनेइक
सहस। रत्नसुहनअभिराम। गांववघ्रअनकीमिनै २४। कोसल्यासुतराम। केकइसंभव
भरथ। सोमित्रेयसुनाम। लछमनसत्रघनउभयसुत २५। छंदवैताल। इकदिवसकोसि
लसुताअतहित। कवरतनमंजनकरे। सोगंधलेपनवघ्रभूषन। विवधअंगहिविस्तरे।
पयमांनदेपयूषपूरन। सुषदपलनालेधरे। तबमंदमंदझुलाइमाता। रामनिंद्रावसकरे। पु
निमातजाइआकाइमिंदर। सुकृतनितहिअनुसरी। कुलदेविदेवाअरचिनाकरि।
कृतविहतपूज्याकरी। सुभआइजननीपाकसाला। रामरूपविलोकियो। तहांकत
भोजनदेषबालक। भइचकितविस्मयभयो। पुनिगइफिरजहांउपलना। माफकीने
सैन। उहांरामपायोसबहिसोवत। उपजित्तअचैन। उरिकंपरोमउभारिअपतसहि। असन
मिंदरआय। तिहभातभोजनकर्ततिहग। पुत्रबऊस्योपाय। भयधरकछतियाउपजि
मनभ्रम। धरतनोहिनधीर। अविलोकिदऊगंरूपएको। सोचसुभसरीर। जबरामआ
कुलजांनजननी। दिर्घरूपदिषाई। कचकूपप्रतिब्रह्मंडकोटिन। मंदमुषमुसकाइ। रि
वसोमसिववियसक्रदिगपत। देवदांनव– तजे। गिरसिंधुसरिततटाककानन। चरावर
अनभूतजे। ~~अविलोकिदऊगंरूपएको सोचसुभसरीर~~। नगनितकालजुकर्मगुनग
ति। सकलज्ञांनसुनाइ। मायाप्रवलमनवचअगोचर। वेषसंभ्रमपाई। तनुपुलककंपतिन
इनसुघ्यत। चमित्तचित्तसमीत। इहदसाजननीकुभितदेषी। हसिकह्योमबमीत। श्री
रामोवाच। इहचिरतमातदेषोजुआज। सरिवद्यागोपकरिवोसकाज। कविरुवाच।

करिमंत्रजननिसोइहकृपाल॥बकुस्योमएअंतरिध्यांनबाल॥इहविरतकछूंजांमौन
आंन॥परिब्रह्मसबलमायाप्रमांन॥अनुसरेबालीलाअनंत॥सुषदेतकुटबपितुमात
संत॥अवधूतधूरिधूसरतअंग॥परिब्रह्मचितमायाप्रसंग॥किलकारनजतकबकु
सकोप॥तरवानिमंतमातंगओप॥वससमयअनप्रासनविधांन॥गुरकह्योकर्मनिगम
निदांन॥इवमातगोदलीनिसहेत॥दधिदंदलमुषकविलदेत॥सुवक्रीडासेरूसुचलित
मात॥वधुनदधिलिप्तजरकरविराज॥इवपिष्टदोरिजननीसहास॥परिधरलोटिरोदत
प्रकास॥पुनिलेकुछगअकायहूत॥योकरतबाललीलाअन्हूत॥वनिबालवसनन्हूष
निविहार॥हरिकरजवक्रउरिमुक्तहार॥कवसामसघनचकितविरूप॥जनुघेरजलप
मिलभ्रंगजुथ॥पदरणितहेमनूपरप्रहास॥हस्वलनमंदकिलकिलनहास॥इत्यादबा
ललीलाअपार॥विस्तरहिदेहसुषवारवार॥जबभयोसमयगुरराजजांन॥आरंभकरे
सबसोजआंन॥सुभलग्नसोधपंचांगसुध॥पुनिहोमवेदमंत्रनप्रबुध॥क्रमजुक्तसुचूडा
करमकीन॥बुजपोषतोषबकुदानदीन॥वह्माच्यअगोचरमनलिवांन॥जिहजोतफि
रतषोजततनजांन॥सोईमनुजदेहधरिब्रमहूल॥नृपअजिरकरतक्रीडानकूल॥योषेल
तबालापनविहाय॥अतिचंचलसेसवदसाआय॥सुभस्यांमगोरसुदरसरूप॥ततमाग
काकपक्षाअनूप॥कोपीनपटपरधांनकीन॥वनिमध्यदेसमौजीनवीन॥जज्ञोपवित्र
गुरमंत्रजाप॥अज्ञानतपदइवसिष्टआप॥अधियनहोतगुरग्रेहआय॥ओंनमोसिधसं
थासुनाय॥मनबाललगेविद्यानमांझ॥संध्यानवसाकतनोरसाफ॥गुरगमनएजब
अषरज्ञांन॥सबग्रंथपढेपूरनप्रमांन॥जुगजुगमनिगमजिहस्वासजांन॥संध्यानले
तपदइकापान॥पढिषत्रीधर्मविद्याप्रकास॥संग्रामसिधआयुधअभ्यास॥जलतिरनमं
त्रविद्याअजेव॥आषेटकर्मपोरषअमेव॥गहिचापबांनकटिकसनिषंग॥अभ्यास
तमनकुष्ठलीअनंग॥जमनाटषषडगसस्त्रीसजोप॥आकर्षविमर्दरवीरओप॥आ
रूढअस्वविद्याअपार॥बाजीसुज्ञानमतचितविचार॥वडइपातसदजविद्याविला
स॥संगराजपुत्रषेलहिसहास॥अनुसरहिरामनृपनीतअंग॥समप्रीतअनुजसेवहि
सुसंग॥सुभरामलछमनमिलप्रेमसिध॥पुनिभरतसत्रुघनपनप्रसिध॥पितुमातचितजि
हमोदपाई॥संक्रमतरामतेहीसुभाई॥अनुसासनबंधुनदेतआप॥इहपरमधरमनहीं
लगतपाप॥नितसुनतधरमसास्त्रनिदांन॥पुनिप्रेमनेमसंयुतपुरान॥उठिप्रातपितादर
सनहिआय॥पुनिगुरूदजिनकेलगतपाय॥प्रतिदिवसजनिनमिदरसप्रेम॥नितकव
रकरतभोजनसनेम॥सबससिवसुभनटकविसुरसंग॥पुरराजकाजपरिषदप्रसंग॥इ
हभातहोतवासुरवितीत॥परिवारधरमप्रथीप्रसीत॥इतिश्रीरामचंद्रजन्म॥अथसी
ताजन्मलिषते॥कविरोवाच॥दुहा॥कालातरनरनाथको॥मृधीयासक्रमहीप॥व
सतजहामुनिवृंदवर॥ज्योतिहथानसमीप॥२६॥ध्यांनावस्थितमुनिकतै॥नृपसतका
रनकीन॥जातेदुष्टसुभावजुत॥मनकियक्रोधमलीन॥२७॥पढएनृपतअनीतभृत॥कोप
अरुणकृतनैन॥असहमारीअविनकौ॥आनिकुम्भरिजुगएन॥पापीनमाझ्योअसनृप

सो सुनि बोले सिध॥ का दत षष्टांश्रंस दृम॥ समत वेद श्रसिध॥ २८॥ तहां उपद्रव करे उति
न॥ मुनिन महा दुष मांन॥ रुधरि निका स्यौ देहतै॥ नरिघट दीनो आंन॥ २९॥ अथ धर्यो घट
रु अश्रां नु चरन॥ दुधर द्रूर अघ रूप॥ ताके देषत मात्र तिहा॥ भयो काल वस भूप॥ ३०॥ ता
ही समय वसिष्ट तहा॥ आय मिल्यौ रिषराज॥ देष्यो दुष्टाचार अति॥ अरु नवत अश्रकाज॥
३१॥ वासिष्टो वाचा बंदपध॥ तब बोले सचिव पुर लोक तास॥ कहियो वसिष्ट निक सेवका
स॥ बलिष्ठा फचरन जे जाकु बाल॥ के वंस नास कैं कपाल॥ कविरुवा॥ नृप पुत्र गए तब है
रिषनिकेत॥ मिलसवै राज जुवती समेत॥ रानी वाच॥ सो दीन वांन कै करी सेव॥ दियफं
फ अनुग्रह करु देव॥ मुनि अग्र रुधरि घट धर्यो मूल॥ कृत दोष हर कुकै सांन कूल॥
सुप्रलम नए मुनि टर्यो श्राप॥ बकुकर तदेष अबला बिलाप॥ जब कयो वंस भावी विना
स॥ श्रुति हरष बाल त्रियगए अवास॥ मुनिन ऐसवै मिजमन मलीन॥ कुभ सो इनि वेसन
भूम कीन॥ अनमोघ रुधर वहृव मध्यंस॥ उ विकान पजति हजगव संस॥ वूरन सरीर भ
यो अविध पाइ॥ तिह बाल सदृ कीनो सुभाइ॥ रिषल यो का हिसो इघट सरूप॥ निकसी अ
जोनी किम्या अनूप॥ कृत जात करम मुनिवर प्रकास॥ सुभ वेदमती दयो नामतास॥ तिह
उपजि उग्र वैराग तांम॥ ह्रतवृस्त वर्ज आवस्यो वाम॥ आबाल ब्रमचारन अरेह॥ देवहिति
ह अरिपत कस्यो देह॥ तपसिन सम्हृहमिज करत ताप॥ वद्रिपान सीत ग्रीषम वियाप॥ अति
कर्त कष्ट जद्य पसु अंग॥ स्वाभाविक सोभा वढत संग॥ वंसू घन सुषद आसन विराज॥
सुभ संगत हास षीसमाज॥ इक समय तहा दस सिर अनीत॥ अती बली असुर आयो अ
नीत॥ तिह जांन अजोनी भगीतांम॥ वसनीत विवरगत भइ वांम॥ पाविष्ट द्वारिपद विक्रपा
इ॥ सो उधस्यो विवर अपनै सुभाइ॥ उवरो मग्निया कंपित सरीर॥ अकुलाइ धरि कछुतिः
अधीर॥ स्वाभाव जो वितन भौ प्रकास॥ तहां देष अधमदस वदन तास॥ बल कर्ष कस्यो
तप भंग बाल॥ सु दुष्ट असुर षलसुरन साल॥ वपु सस्त्र छेद कीनो वसेष॥ त्रिय रुधरि पा
त्र भस्यौ सतेष॥ सषी कुतीताप सी एक साथ॥ इव रुधरि पात्र दयो तासु हाथ॥ वेतकास
रित उपकंठ वीर॥ सजनी भुवगाफ कुघट सधीर॥ तुंनिक स्योदसा ननसो प्रकास॥ निसे
षकरु तु ववंस नास॥ अविता रहृतिय इहलोक आंन॥ कुलराहृ पषोव रूप्याफ कांन॥ योक
हत मात्र तन उठी आग॥ ज्वाला कराल बहु लंफ जाग॥ नरच्च स्मसु क्रोधानल सुभाय॥ हियसो
क लोक लोक न इहाय हाय॥ तिह रुधरिपात्र वेत्रीका तीर॥ सषी भूमगाफ रायो सधीर॥ रु
धरि तिह उपजि कन्या सरूप॥ अविता र जोग माया अनूप॥ सुभ अंग सक्ति लछिन सुभा
य॥ यह समेर भाअवितरी आय॥ कतु काज जनक आरंभ कीन॥ प्रचु बोलि सकल मित्री
प्रवीन॥ संभार सिध ह्व वजिज्ञ काज॥ भुवसोध उछिछु जवेद भाज॥ मषकाज करत षि
त सोध मूल॥ तहां षो दिअ विन इक उरसतूल॥ मिलतहां राज रानी समेत॥ कन्क मयजो
तिह लक्कु तुनिकेत॥ हल सीत अग्र तब अहिक होई॥ सह किन्मा निक सो पात्र सोय॥ भ
यो तहा महा विसमित सुभूप॥ सो अतुल देष किन्मा सरूप॥ आनंद उहप विरषा प्रका
स॥ उनिन इगिन नवांनी प्रकास॥ पोष कृ विदेह उन्नी समेम॥ निरधार निगम करी सहित ने

राम
४८

म । कारइहउपजीदेवकाज । राषियैजलमिथलैहेसराज । प्रगटीहलसीतामुषप्रकास
तिहनिकसेसीतानांमतास । करिजातकर्मनानाप्रकार । बाजंतगांनमंगलविथार । नृ
पयेहबदीकिंन्याअनूप । साछातविंकलछमीसरूप । दुहा ॥ दछप्रजापतिमषविषै
गौसुरसंकरजुध । सस्त्राअस्त्रप्रहारसौ । कर्तिपर्सपरिक्रुध ३२ क्रोधधिकारद्रिद्र
कहि सुरिनसमेतसंघारि । उपजीचितगिलानउहां दयोपिनाकहिडारि ३३ चापसुपैमिथु
लेकै । अंगनपस्यौजुआंन । उठैनसुरषअनेकक्रु मनरहैलज्जामान ३४ तादिनतैवहचा
पतहां परयौरह्यौथलपाय । सुरनरआसुरकुसबल । वेलनसकैउगाय ३५ कालात
रतहांजांनकीउपजीरूपअनूप । कन्याराजाजनककै । प्रगटीरमाअनूप ३६ सीतास
तछतसंजुगतहरकौधनुषनिहार । प्रतिवासुरिपूजितप्रतिछि मनक्रमबचनविचार ३७ । छं
दप ॥ प्रतिदिवसधनुषआकर्षपांन ऊदगामसुचौकादेतआन । पुनिधरिपिनाकपुजि
त्तसप्रेम निरधारसहितवहनित्तनेम । इकदिवससदेषसोजनकआई सीताजुवापपु
जितसुनाई । चित्तमहविदेहतिहकियविचार । विधनीतधर्मनयविष्यहार । जनकउवा
किंन्याबलप्रगुणीहोइकंत । संजोगवनैसुषकहततसंत । क्रतनेमजनकहितकिनकाहि
औवेपिनाकसोइववैआहि । पनकरैपुरनमैरैपुनीत । सोवरैसुजिहकिंनकासीत ॥ अ
थराजादसरथग्रहमुनिविश्वामित्रआइमनौ । कविरुवा । दुहा ॥ बटपसघनवन
जलविमल पुनितपोथलपाय । विश्वामित्रपवित्रमुनि । आश्रमकीनौआय ३८ होतत
लउपदेसेतहां सयुतरिषनसमाज । जपतपसंजमनियमजिय करतजथाक्रमकाज ३९
तिहकारनअंतरवसत महादुष्टमारीच । सकुंदरसषासुबाहसो । निलजनिसाचरनिच
४० समयइकतहांगाधसुत । कतुउद्यममनकीन । सोधतपोस्थलछमसुन्न । प्रारंभकस्यौ
प्रवीन ४१ आचार्जहोताप्रबिल । द्विजविप्रपरिवार । बैठमषासनआपमुनि । सिधनइसंचा
र ४२ कुंडप्रदीपतअग्निकत । विप्रनवेदविधांन । मंत्रजपाविधवेदमय । गिराप्रगटनर
गांन ४३ । छंदपधरी । सोसुनतमात्रआसुरअसाध । बकुनिसवरसचरप्रगिएजिन्हबा
ध । कतुजथाउपद्रवआंनकीन । वसमांसश्रोनवर्षानवीन । कैतूहिपांसउपलिनप्रहार
मषरहेनदिनसहीजातमार । वससोकमनऐरिषविश्वमित । चितभ्रमीतदेषआसुरविरत
मुनिचलेदुषैसंगमिलहुजसमाज । प्रतिहारनृपहिगुदरयौपुनीत मुनिआएविश्वामित्र
य मीत सांमुहैआइदसरथ अजतनैतहांराजाधिराज । अतनीतअजोध्यापुरीआय सोरा
जद्वारपकुचेसुनाय । प्रतिहारनृपहिगुदस्योपुनीत मुनिआएविश्वामित्रमीत सांमुहै
आइदसरथनरेस परिपायकस्योमिंदरप्रवेस तहांप्रथमडेमजुत [illegible] धोयपाय सुन
अर्घकीनपूजासुनाय पटकूलदएआसनप्रमांन निजकुसलप्रश्नकीनेनिदांन सुत
च्यारिचरनऔलाएरिषीस आनंदपायदीनीअसीस पुनिएकपाइगाढेप्रवीन करिजो
रिनृपततहांप्रणीतकीन । राजोवाच ॥ प्रथ्वीप्रजावहूरिनपवित्र मुनिकहोआगमन
हेतमित्र । ममग्रेहकीयोपावनमहंत । सोकहिजेकारनपरमसंत । रिषरोवाच ॥ अवि
धेससुनिकुजिहकाजआहीं सबजांतसदातुममषसहाइ । हमकर्तजिज्ञनृपधर्म

दित तहां दुष्टनिसाचर दुष्य देत नहीं होत जिग पूरन नरेस विघ्न बहु करत राकस
विसेस इक मांगत दै हमदान आज जस लेहु देहु राजाधिराज राजावाच वर
दयो वचन निश्चय नरेस सोई धिन्पतु मह दीजै रिषेस रिषरोवाच संग चलहि राम लछ
मन सहाय सुजन होय जिह पूरन सुन्याय ए राजकुवर पववहु अनीत तो होय ना
सनि सचर अनीत परिश्रवन वचन जब इहन्रिपाल सर सेल गत्र हर लदय साल
राजावाच राजा दह अज्ञा मित्रि राज सब सेन करहु चतुरंग साज मिल सुभट सु
रदल बल समेत हम चलहि विश्वामित्र हेत रिषरोवाच मैं पर्व समय जाचौ महीप सो हि
येव नेसु निवंस दीप राजावाच करि जोरि न्रिप तित तहां उगत कीन संक मो च तुरथा
श्रम सुन्याय अविसेष आयक छु रही आय पुनि करे श्रंग रिष सम प्रियोग सुत नए
राम कि हुकत संजोग सो उकाक पक्ष धारी कुवार ममम आदि छधि छत काछ धार दु
स्साध्य युध्य दुसतर दुरंत तुव बाल काल दुज्जान तसु तंत आकर्ष मुष्टि आयुध अभ्यास व
हु बाल कहा जान हि प्रयास क्रीडा सर धनु ही करत केल मारग एण खण लाष मेल रिष
रोवाच रिषवदन सिघव यवत्री बाल लघु करि न इते गिनी ये न्रिपाल विषविक्रम अनि
मित तेज वंत स्वाभाव सिध ए कहत संत राजावाच दव बाह काज कीजे रिषेस हम च
लहि संग सेना विसेस मष सिध करहि बलमार षेत तजि सोक करहु विस्वास चेत रि
षरोवाच कवित छपै विमल देस ह्य वंस एग हि गुरराज वदे तुर सो समाज सो इसाज
सदा हु जित सोपे सुर हरिस च वंदम मवचन लागत नविक्रय करियो अषय वचन रवि
यो नीच भिदर जल न रियो विथरी यह कीत व यपुर विमल सत्य धरम पाइ प्रसिध तिह र
ज बैठ दसरथ न्रिपत वचन तगन ही वेद विध ८ कविरोवाच दुहा गथ सुवके तिह स
मय कौधारु एउ गदेष गुरव सिष्ट अविचेसी विनती करी विसेस ४४ तपबल विश्वा
मित्र के राम सरिहै सब काज जय जुत जस जुत कुसल सो वेग मिलेंगे राज ४५ मुनि
को मन है राम मय जान कनीत नरेस तातै विश्वामित्र को राष कुवचन विसेस ४६ कवि
रोवा अज्ञा मान वसिष्ट की कीनो न्रिपत प्रमान जो जनना व प्रनाव जुत मुनि हि दएव
कुमान ४७ राम लषन तदा बोल न्रिप विमल अंक बैठार दीने विश्वामित्र कह मुनि निज
प्रारषवार ४८ अति हित विश्वामित्र के न्रिपति लगे उ विपाय कंव स्वास उर कंप अति
नैन रहे जल छाय ४९ गए राम तब मध्य ग्रह मात हि नायो सीस लेव लाइ उर लाइ तब
दीनी जइत असीस ५० विश्वामित्र पवित्र मुनि सिसु न ले लै संग जे से बालक सिंघ के
आगे चलत अनंग ५१ सब आयुध विद्या समर [illegible] दइसि सुन हु जदेव सस्त्र अस्त्र
धारन सुकर जुध जइ अन जेव ५२ विद्याव ला हु अतिबला देवन र्मिता दोय कहुक
पंथ अबस्र तु कमिय राम हि दीनी सोय ५३ कौसिक तिह विद्या बल जोग ते भापन
छुधा पिपास आगे गंगा रकिय कौसिक पंथ प्रकास ५४ कौसिक श्री रुगनाथ सो क
हत जथा मग जात अद्भुत सुनि सुनि होत है हर्षवंत दहु भ्रात ५५ विश्वामित्र वाच
सर विध निर्मित मानसिक [illegible]

सो

राम· स ५६ ताकेदछनतटविषय वनइकरम्यविसाल।नीलजयानकजंतुकरि
५० सेवततरलतमाल ५७ इककरूषमालदतिय।तहांवसतसुमदेस १रम
नावतेइइकै।विरंचितदेवविसेस।५८।नामसुकेतुजछइका।मनअनउत्तमा
लीन।ताउवब्रह्माहिततिह।नियततप१साकीन।५९।दीनोताकहदरसविध का
रनइब्रक्षपाल।कहीसुकेतुअउत्तता।सहिनजाततउरसाल ६०।छंद्प।विश्वरी
वाच।विधकह्योदेषतिहिउषवियाप तबउर्बत्तप१जितिशबलपाय।तिहदेषनवप्रा
प्ति उत्तत्तोहि।मनवाचजुछहतहेतमोहि।ताडिकाउत्पती।उत्रीइककैहैअविषपाय
सोउष्टमाहापायिनसुनाय।कविरुवाच।तबउप१नीकिंमाअष्टमताम।निरलाजनि
वुरताडिकानाम।ताडिकावाच।करिजोरखहसूत्रणतकीन।दारुनसनाविजदाता
दीन।कविरुवाच।सुरजोनजद्पस्वातिसुनाबय।नयहोहिकुटबमोहिउष्पनाय
निरबलविस्वउदजाननार।वारनसहंसबलदियविचार।आश्रमअगस्तकेनि
साआय।सोलहोजोमुनिदासुनाय।दारु७१सारमुष।केसदाप।वहलगीअग
स्तहिषानआप।त१बलअगस्तउहलषीतास।पा१नहिश्रापदीनोपकास।वैक्र
तरूपविपरीतवेष।राकसीनइसोकर्मरेष।तजजहहजोनिप्रानीसताप।विलासन
वियहमहापाप।उष्टाउपद्रवकर्तदिस।वसुधाकुरूषमालवविसेस।विपरीतकर्म
वासवविचार।मायलतेकादीतबहिमारि।ताडकावाच।वासव१हमाझोतिहविसे
स।शुषवासथानदीजेसुरेस।रिषवा॥तबइद्रवतायोवनहिताहि।अबआजइहा
तेनिकटआहि।डुहा।जोनअर्धवमानजिह।बनदयोइद्रवताइ।जंतुलहकुतिहम
ध्यजोउ।नदसनकरकुसुनाइ ६१।तातेजंतुनजाततहां।कोऊजुकाकुकाल।महा
नयानकलोकमह।वनताडिकाविसाल ६२।वहैपंथहैनिकटअब।नृमआलि१
बकुनीत।तहांवसतवहताडिका।अतीआसुरीअनीत ६३।मारगदतियसुकेर
महि।नियततहांनयनांहि।करकुविचारिकुवारतुम।जिहपंथआश्रमजाहि ६४
।रामोवाच॥सोसुनविश्वामित्रसो।रामहिकहहसवात।तुमहिकहाउजराजहर नि
कटपंथचलोतात ६५।कविरुवाच।तबआएवनताडीका।विश्वामित्रविचार।सब
यपंथइहदासरथ।चलियैसुरिसंनार ६६ सोसुनरामसबंधुतहां।लीनेचापचढा
य।कृतिटंकारवपिनदके।सबदिनघोषसुनाय ६७ सुनतमात्रसो इताडिका।पंथ
निरुध्योआंन।घोरारवनकीनोसघन।विष्मनयांनषवान ६८ रामबांनसंधांनकिय
निश्चयदेषीनार।कहतअबधनुसाधकुल।सरमोहोनसंनार ६९।रिषवाच।जाने
रामससोकजब।तबबोलेरिषराज।याकोकछूविचारनह।करिबाहेसुरकाज ७०।ग्र
यमकुतीइकपा१नी।दीरघजीकानार।दइतविरोचनकीसुता।मारीचक्रमुरार ७१।ब
कुस्योमातासुककी।उष्टाचारिनदेष।सोपैवंकअदिष्टसो।वामनहतीविसेष ७२।सस्त्रम
तगजगजजोरसौ।सदाकर्तद्विजदोष।तातेराघववेद्यह।मारिमिलाकुमोष ७३।क
विरुवाच।सुनतमात्रस ताडका उरमहहनीअसाथ नमत रुधरिगतप्रानतह विश

धरमकीबाध ७४ त्रयमपिसाचीपापिनी आपदग्धजहवाम मुक्तारामप्रसादसौ नइज
क्षनिकनाम ७५ आपविमुक्तासुंदरी जक्षीदेहसुपाइ कीने रामहिपरक्रमण पायो
सर्गसुजाइ ७६ ताडिकाबधप्रसंग। विश्वामित्रआस्रमआगमन। इकरजनीअंतरतिहा आ
एसमयप्रजात चारनसिधप्रसिधसौ वनसेवितविष्यात ७७ देवतपोस्थलरामतहा उ
पज्यौसुषअपार क्रीलतमानरूसिघदै कीडतराजकुवार ७८ छंद॥ मुषकमलकम
लदलनेत्रमान सायुध्यकोपनएसावधान विस्तरनवक्षकंधरविसाल आजानभुजा
उतंगजाल बाविसतलछनायुक्तदेह सुनभरषसिंघसोदरसनेह कोमंडवांमकरक
टिनिषंग मनुजएउनयक्षअंगीअनंग वषअरुनस्यामतनघनविसाल पटपीतकसे
कटितटसुढाल वीरासनबैठेउजयवीर सयुधसकोपउछवसधीर रामवाच। रि
षरामैजरहिसतवकहीरांम करियहजजिज्ञारंभकाम सबआचारिजहोतासुतंत्र
मुनिकरिकुवेदउचारमंत्र कविरुवाच। समसातरूपकौसिकसुनाय विचबैठेआष्टास
नवनाय सप्तऋर्कई सरिछनसमान जेनिपुनवेदविद्याविधांन पारंभजिज्ञतबज्र
नयपाय सकिबांनचापरघुवरसहाय कृत्वबेदोधुनमभांनकाल जाजुलिपकुंडउ
ग्यअग्नज्वाल भुजदेतमंत्रआहुतीदान निरघोषनइधुनसामगांन दिगरहेपूरतहावेद
नाद मारीचसुमीसौअप्रमाद मिलअनुजसंगआसुरसमाज मारीचकर्तभोकतुअ
काज तहांअस्तरुधरविरषासुहोत तमपसरिगिगनटरिरविउदोत विनुफालरांम
संधानबांन तिहकरयोमोषआकरणतांन मारीचवातसरपंषमार भ्रामितअकास
भूलोसंभार मेल्योसतजोजनउदधिमाफ सरअनलहतीयमारयौसुबाफु नयोन
स्मदइअमरनउबाकु सबलषलसेषनिश्चरसंघार निसेषकरेरिनषेतमार आक
सबयोसुरस्थनिआय सुरकरेपुहपवर्षासुनाय निरघोषदुंदभीगिगननाद
वंदसिधसुचारनजइतवाद निसदिवसदूररहिसावधांन ऐकासनसांधेधनुषबा
न वयसप्तवर्षरघुवीरवीर संघारेअसुरकीनोसधीर ७९ नऐतहांपूरनसमूल
मुनिअसुरजनवदिपर्मसूल उठेरांमलषनसरिताअन्हाई सबनित्तकरमकीनौसु
जाइ दुहा। कौसिकनक्रतप्रभावकी महिमावरननिजाय जिगपुरषनरदेहगृह
भोजनकरतसुनाय ७९ त्रतियदिवसकरिजोरिकहि रिषवरसुइहवान अज्ञा
दिजैअविधकहि गवनकरिहअवनाथ ८० कौसिकतबरघुवीरसं जायोस
हितसनेह कछुदिन दिनकरकुलतिलक दुर्लभदर्सनदेह ८१ वेमछुकूरघुनाथ
तहां रहैकमलदलनेन राजनीतमतधर्मजुत सुनतवहतचितचैन ८२ छंदपधरी
अथजनुषजिज्ञारंभ। तिहसमयसोधसुनलग्नतांम कियधनुषजिज्ञउदमकांम
आरंभसुयंबररविउछाह बोलेनरिंदआजांनबाह सबबोलितहांमुनिगनसमा
ज कृतविविधमंत्रतहांनृपनकाज दानवदेत्पराजहुरंत सबआयदेवदीषीअस
त उनिमनुजवीररराजाअपार मिलमहासूरसुदरकुवार इसादआयजुवपतअने
क विवसायजुक्तविक्रमविवेक अतिसुश्रइसानआपआपउसाध्यवांणआयोस

दु॰ जनक

दो॰ पत्री विश्वामित्र पद ॥७३॥ जनक नरेस धानुष जिग आरंभ्यउ ॥ पविधारियै रिषेस
॥७४॥ कौसिक तब श्रीराम सों ॥ इह्यौ सहित सनेह ॥ धनुष जिग्य कौतुक चलहि देषहि
ग्रेह विदेह ॥७५॥ गरु अज्ञा रघुनाथ तहां ॥ पोरुष करी प्रमांन ॥ उषा समय अति हर्ष जै
कीन्हौ प्रगट प्रयांन ॥७६॥ अथ मिथुल गवन ॥ अहल्या पुर्ब प्रसंग ॥ छंद वैताल ॥ तब आ
इ कौसिक स्वर सरीत र ॥ विमल थल जु विसेषियै ॥ तरु लता मंज्जर पुहुप फल जुत
रहित जन अविरे षियै ॥ विन गुल्म पल्लव विपुल संकुल ॥ गौतिम तपस्या आश्रम गिने ॥ ब
न जंतु वर्जित पंछी मृग गन ॥ नंग पुंज जित गुंजिने ॥ श्रीराम वा ॥ तिह देष श्री रघुनाथ वि
स्मत ॥ वचन कौसिक सौं कह्यौ ॥ इह तुंग जल तट विमल पावन ॥ थल सु निर्जन कौं रह्यौ ॥
रिषरोवा ॥ सुनि कह्यौ कौसिक सुन कुंर रघुवर ॥ पुरा वृत जु मैं सुनै ॥ नव तत्व देवी श
बल माया ॥ नियत निगमागम गुनै ॥ दुहा ॥ राजसुता इक सुंदरी ॥ नांम अहल्या तास ॥ ता के ल
छन रूप गुन ॥ तीन हु लोक प्रकास ॥७६॥ ताकौ नारद ईद्र पद ॥ वरनन कर्‍यौ विसेष ॥ सो सुनि
सुरिपत कौं भयौ ॥ सुत अनुराग असेष ॥७७॥ द्विज इक गौतम रूप द्यौ ॥ विद्या वेद विलास देत
भयो गुरदिछना ॥ सुन मुनि नद्यौ प्रकास ॥७८॥ गुरोवाच ॥ दीनी विद्या धरम मैं ताकौ कछु न
लेत ॥ उचव लकु घर आपने ॥ सुत कल्यांन समेत ॥७९॥ सिषरोवाच ॥ सिष्य कह्यौ रिषराज सौं
मन क्रम वच्छ सुधम सुमोह ॥ धरम हि विद्या सो पढै ॥ ताकी सिधन होइ ॥८०॥ आग्रह देष्यौ सिष
कौ ॥ मुनि मांग्यौ हितमान ॥ आहि अहल्या नृप सुता ॥ दे हु दछना आन ॥८१॥ सिष गयौ नृप
त पह ॥ कियज आचम्या आइ ॥ दीजै कन्या दान हूं ॥ गुर हित मांगत राइ ॥८२॥ तेही समय सुरे
स तहां ॥ आय अहल्या हेत ॥ उनी मांगी नृपत पह ॥ मन क्रम वचन समेत ॥८३॥ द्विज कौ जा
नौ आपन हर ॥ इइ महान यआहि ॥ दो रुचा तकरंत अति ॥ चकित रह्यौ नृप चाहि ॥८४॥ रा
जोवाच ॥ किय निरधार विचारि कर ॥ दोउ न उतर दिह ॥ करि है पृथ्वी परिक्रमण ॥ सुपै अर्ह
त्या लेह ॥८५॥ मंडल करि परिक्रमण ॥ पहिलै आवै कोय ॥ द्विज अथवा देवेस मह ॥ कन्या
पावै सोय ॥८६॥ कविरोवा ॥ कह्यौ प्रमान जु वचन कौ ॥ उठि गवने अकुलाय ॥ भयमु
षी सुरभी जु इक ॥ प्रसव समय द्विज पाय ॥८७॥ दीनी ता कौ प्रदछिना ॥ विप्र सहित विस्वास
सिधकाज नरराज सौं ॥ प्रथम हि मिल्यौ प्रकास ॥८८॥ छंद पधा ॥ ऐरावत आरुढि इंद्र आय
सौ मिल्यौ नृप हि स्वातिक सुभाय ॥ तहे वहै आंन देष्यौ उ जात ॥ संभ्रम्यौ चित्त न हि उपसमा
त ॥ इंद्रोवाच ॥ उच सौ इइ इहु अप्रमान ॥ ऐरावत तै कौ उसज वषांन ॥ किय विप्र विड ष
निर्धारि कीन ॥ पद विक जाइ देष कछु प्रवीन ॥ जब देष विक्रम गौल जाय ॥ पद विक्र विश्व
जगत पाय ॥ तिह आय जथा विधि धर्म तंत ॥ विस्तार जुक्त सब कहीय संत ॥ तब गऐ सबै उ
निकेत ॥ सो कही वात कारन समेत ॥ ब्रह्मोवा ॥ विप्र सौ इइ उपज्यौ विवाद ॥ मिथ्या न होय वे
द न मृजाद ॥ परिवेष उत्तनय सुष गौ प्रमान ॥ सो सत क मंडल के समान ॥ नैगम विचार विधक
हि नि दान ॥ द्विज दे हु जाय किंम्या जु दान ॥ कविरुवा ॥ भुजत हि अहल्या दान दीन कन्या वि
प्र वाह गोत हि कीन ॥ लेगऐ आह गोतम सु येह ॥ नित वढत अंपति ॥ दंपत सुनेह ॥ पुनि इइ प्रमा
व गौतिम प्रकास ॥ तहां सतानंद भो पुत्र तास ॥ सुंदरी पाय मां हि न सुरेस ॥ उर्वानुराग जाति हेष

वेस। मानसिकव्रथा उपजीअमांन। अहल्या बिनु आवे चितनआंन। इंद्रोवाच। सुरराजकही
सिससो सम्मूल। करीयै सहायकै सांनकूल। इका सागोतमाअमदिआंन वगकर्मकस्योदक
कपटवांन। बिद्रता मृचूड बाली बिष्यात। परकासकरी ज्यौ करत घात। सोसुनतनु छोगो गो
तमसुनाय। अस्नान हेत जल तीर आय। रिषरूप कस्यो तब देवराज। कीनो ववेस मुनि ग्र
ह अकाज। गौतम विचारत बन ध्यानगयांन। जिह नइक बुधि बिपरीत जान। तनिआंन कस्यौ
मिदर प्रवेस। अपनै सरूप दिष्यो सुरेस। गोतमउवाच। पापिष्ट कवन तूं घगट पाप। सब करू
नस्म कै देहूं आप। सारूप देह मेरो सुनाय। अन समय अधम तुज ऐह आय। इंद्रवाच॥
नामनी चौर बोल्यौ सभीत। हूं इंद्र कांम कि करअनीत। मै दुष्ट करम आचर्यो देव। अबत्रा
हित्रा हि अ यकु लअ जेव। गोतमउवाच। मुनि नयो तहां क्रोधाय मांन। दारुन सराप दीनो निदा
न। आकार लुबुति हनयो अधीर। सो विकसहै अक्कुयत व सरीर। कविरुवाच। दस सतजु भइ
तिह जोनि देह। आक्रत अस नफल कर्म एह। भगवान इंद्र भयो गयो लाज। कीनो कुकर्म जिह
अंग काज। रिषरोवाच। अति त्रास त्रिया कंपित अधीर। रोमंच देह दृग अवत नीर। इहद साअ
हल्याल षी आप। सकोध्रदयो गोतम सराप। गोतमोवाच। पापनी उपलमय देह पाई। सिल
हो कइहा वर्जित सहाइ। अनजंतु अजनवन रहकुऐह। सबकाल सुमन इनिस देह। इक
सहंस्र वर्ष लहिकष्ट अंग। अति सीत ताप वर्षा अनंग। दिनकर नवंस रघुपति दिनेस। पंथ
जात कर हियहवन प्रवेस। अवलिन्हे सब्रु वहिर ज वर्न आई। सुन देह फेर पाव हि सुनाइ। क
विरुवा। दारुन सराप नइ सिला देह। सोवलेष्यान बुटेस नेह। अनंत व सेरिष जाय आप। सिल
नइ त्रिय तुक्क हि सराप। विस्वामित्रोवाच। अविलेस बुवहिर जचरन अंग। सोत जे अहल्या उ
पल संग। पैसुनत अधोगत के उधार। पदरेणु परस लीला अपार। सो नई त्रियात जिपापसु
ध। परत त्तस अथवा दीव बुध। निजरूप कस्यो गोतम सनेम। मैं मासो ई देषी सहित प्रेम। अहल्या
वाच। कवित्तबपे। नील जलद तन स्यांम। मंद मुषहास विलासत। वसन पीत कोसेय। कन्क
कुंडल मकराकृत। उरि विसाल उतंग। भाल लोचन कमलायुत। कटि निषंग करिधनुष बान
भुजि जांन्हि वलंबित। सुप्रसंन बदन सानुज सदय। श्रीयसेवित असरन सरन। अविलोक
अहल्या उच्चरिय। हरि त्रलोकि संकट हरिन॥१॥ जिह पदरज पावन प्रसिध। वंछित विरंच
वर। जिह पदरज पावन प्रसिध। हित परस इस्वहर। जिह पदरज पावन प्रसिद्ध। ईजा प्रउ
पासित। जिह पदरज दरसनु पाई। नवसिध अभ्यासत। अपकरम नोग्य भगवत अवि
ल। पति सराप सिलरूप परिय। तिह रज प्रसिध पावन परिस। कूअघण मन उधरिय॥२॥ जि
ह हरिपद पंकज प्रसंग। गंगा पुनीत जगत। जिह जल मंजन उरध। लोकपाविष्ट कूपावित
जिह हरि निकनाली सरोज। ब्रह्मा उतपत्तिय। जिह पद पंकज रज पुनीत। बोजित श्रुतिप
तिय। तेइ राम मनुज विग्रह अतुल। नवमम दृग गोचर भए। इह नाइ मोर महिमा अमित
जिह अनेक सुकित जए॥३॥ जिह नामामृत तुसार। रसिक तापस त्रउरारीय। जिह अवे
तार चरित्र। विमल सुरलोक विहारीय। सुरि मुनि नारद सेष। सिध सनकादि सुगावित। प्रति
दिन जस नाना प्रकारि। तउ ओर न आवित। धरि मनुज देह धरिनी भरन। मोहि दित ईहप

दषारमह। मिलतयउरातनकरममम। करिवंदनमुनिनारकहा। ४। ७ सोउयह
उरषउरांन। परमआतमपरमेस्वर। भुईजोसतनसकत। लोकलीलाविमोहकर। आ
पऐकअनेका। रूपमायाप्रतिबिंबत। विधनवविस्नुनाम। भेदतेइहोतविस्वहित
वियहसुतंत्रदरसनविउल। पदपंकजश्रीयउरिपरिस। आरूमितजेनएकोनय
न। रिक्तेतेईधावितजोगरसप। रामजगततत्वंआदि। भूतजीवनजगताश्रय। सर्ब
ग्यांनआसक्त। ऐकन्यासतअनेकमय। ओर्वकारअपार। रांमत्वंवचनअगोचर
वाचकवचनविभेद। जगतमयत्वंजगदीस्वर। कतकारनकारजकर्तत्वं। विदफल
साधनभेदनव। त्वंरामएकन्यासतअषल। तनमायाअनेकतव। ८। तवमायामोहति
बुधतवतत्वनजानत। हैमायापरिमीस। मुढतोहिमानुषमांनत। जोआकास्य
याह। विमलन्यासितबहिरंतर। अचलअसंगतनित। सुधबुधेससमंसर। जोपितामुढ
अग्यानजुतहीनतत्वजानतहरे। तस्मातरामतुमचर्नवित। कोटिकोटिवंदनकरै। ७। तवन
मामिउरषेस। भक्तवछलनयहंता। श्रीनाराइनरिषीकेस। अनअनविदअनंता। जतजत्र
देवाधदेव। अहमितउत्तपत्तिय। तनततत्रतुवभक्त। नियमजुतहोतसुनित्तिय। सुरसेअसदा
असरनसरन। अधमउधारनअघतिय। देवेसदीनबंधवसदय। पाविनपतथअनाथप्रिय
८। तुवनयनासनएक। भूपरिवकोटप्रकासं। करधरसकोमंक। नीलघनआभासं। वसनरु
वरपटपीत। रत्नमणिकुंडलराजत। अमलकमलदलनेत्र। बाकुआजानविराजत। सानुज
साहइरघुवीरसोइ। असमंदेहत्रियउधरिय। मिलप्रेमअहल्यागोतमहि। करिसत्तोत्र
वंदनकरिय। ९। रामवाच। इहजुअहल्याकृत्तसतोत्र। जापढहिनरकजुत। महापापतिहमु
वित। मुक्तिसाजोतिसुधमत। हृदयनिवासितराम। उवकामनापकासै। समर्छेफलसिधहोय
वंध्यतबिन्हासै। सुषलाभमनोरथफलहिसब। ताकेरामप्रभावतहांतत्तकाल। देतदरसनतिन
हि। जोइसिवरजिहहेतजहां। १०। श्रीभगवानवा। ब्रह्मघातगुरुत्रियपद्गोन। तेईसुरापांनपिय
मातभ्रातपितुबालमार। जिहकामविकलजिय। स्वांमद्रोहविस्वासघात। पंथहतकपापपर
गोत्रियमारकुदानग्राह। दवदाहकुकतकर। नितइहसतोत्रजपिहैनियम। सोपरिलोकेंसाध
है। उनितासकहाकरिबोप्रगट। आचारीआराधहे। ११। इहप्रकारिकोसिलकुवार। रिषनारउ
धारीय। ईदहोविपतिश्रापमोद्दा। सिलदेहसुधारीय। पावनपदरजपरस। पापपरिहरिमुनी
तनय। सुमनवरषसुरगिगनवान। जसगावतजयजय। जिहचरनसरननरहरिसुकवीय
हनववंधनछेदगिन। सोइरामकरनकारनसमर्थ। महाबाकुअवितारमन। १२। इतिअ
हल्यास्तोत्रसंपूर्ण। दुहा। गोतमआश्रमतेगविन। कोसिककस्योसकांम। प्रीतसहितमिथु
लापुरी। सानुजसंगरघुराम। ९९। श्रीरघुनाथहिजेसुगन। भएनगरिपरिवेस। तिनकेप्रगटव
नावकहु। कहिनसकतसुरसेस। १००। जबहिसुन्योराजाजनक। आगमविश्वामित्र। सारदआ
एसामुहो। पाइनलगेपवित्र। १। अथमिथलाआगमनाराजाजनकवाच। बोलेविश्वामित्रते
बहुउबेजनकनरेसतहां। मुनिवरविश्वामित्र। कोएदिषतबालवय। दूरनउरषपवित्र। २। विश्वा
मित्रवा। बोलेविश्वामित्रतब। सुनियेमहिपलराज। अैसुतदसरथन्रपतके। मेआनेजिह्न

काज ॥२॥ इनहीमारीताडिका ॥ पंथपावनीकांम ॥ तातेंआगिमनौतबहि ॥ सिधसुरनकेकाम ॥४॥
मुनिमखआश्रमहेतमख ॥ मारयोसबलसुबाहु ॥ बिनुफलसरमारीचकुंनि ॥ दयोउडाइ
सदाहु ॥५॥ आवतरिषत्रियउधरी ॥ परसेपदरजरांम ॥ पतिकुहमिलीअपापव्है ॥ निगमसाष
सुजनाम ॥६॥ वचनसुविस्वामित्रमुनि ॥ कहैनृपतसुषकंद ॥ सुनतलगेपीयूषसम ॥ तरनप
जेआनंद ॥७॥ कवीरूवा ॥ जथाधरमविधवेदस्रुत ॥ पूजाकरीसप्रेम ॥ भोजनभाविजुभक्तिसे
नितनवहोतसनेम ॥८॥ समयपायसानुजसुषद ॥ देषननगरसुदेस ॥ कौसिकअग्यापायव
रपतनकरेप्रवेस ॥९॥ पीतवसनतनस्यामघन ॥ भुजआजानविसाल ॥ सरधनुपाननिषंग
कटि ॥ बोलतबचनरसाल ॥१०॥ जहांरामरविवंसरवि ॥ निकसतविजतमनोज ॥ तहांतहांपुर
नरनारिके ॥ उरविकसतअंबोज ॥११॥ छंदप ॥ सिसुमिलतआनअनेकसाथ ॥ सुनदरसकरत
षेलतसुनाथ ॥ सरवरसुकूपवापीसुथांन ॥ सुषदाइलतातरवरसमांन ॥ अनेकबागस्वना
असेष ॥ वरवीररामदेषतविसेष ॥ तबआईकुसमवाटिकातीर ॥ सुषदाइअमितवेवेसधीर ॥ त
रलतातरुलसंकुलतमाल ॥ नानानिकुंजवेठकविसाल ॥ अनअनविहगगुंजतअनेक ॥ वि
त्यहिविवधवानीविवेक ॥ मिलमदनमत्ततंफिवतमोर ॥ साषानिसाषकलकंठसोर ॥ अनेक
रंगआक्रतअराम ॥ तरुलताकुसमन्हंगव्रमिततांम ॥ रसलुभ्ससुमनमंजररसाल ॥ मकरंद
मत्तमिलन्हभरमाल ॥ चकोरमधुपगुंजारकोप ॥ चतिपत्रनअरुफतअरुनकोप ॥ रसरू
पस्वादअनेकरंग ॥ फलन्हारनिमतसाषाउतंग ॥ विचगावसरोवरवनविसाल ॥ जलविमल
प्रफूलतकमलजाल ॥ मनमथप्रजादसोपाजमूल ॥ कलहंसकोकगनसानकूल ॥ तिहसर
समीपसुनकेतसंग ॥ गौरीदिवालयअतिउतंग ॥ छंदवैताल ॥ तहांजनिनआपापाइसिय
तब ॥ गवरीपूजनकौचली ॥ संगवेसवंसक्विवृत्तासम ॥ आनआनिजुमिलअली ॥ तिहवाट
कासरसलिलसषिसब ॥ विवधविधमंजनकरे ॥ पटधौतपरमपवित्रसियउंन ॥ अंगअद्भुत
आचरै ॥ असिरसिकियप्रासादप्रविसन ॥ धूपदीपककरधरे ॥ नइवेद्यपूजाकरीनिगमन
ध्यानगौरीउरधरै ॥ अनरूपअपनेवंबवयवर ॥ काजजाचन्याकरी ॥ परिदिक्षनादिपरमहि
तचित ॥ पूजदेवीपावरी ॥ तहांनितनेमसप्रेमसीता ॥ करिषणामअनेक ॥ मिलअलीसंकुलनि
कसमवैत ॥ वदीजालविवेक ॥ सषीऐकदेषतकुसमसोभा ॥ वेषवनरघुवीर ॥ उनिआयआ
तुरप्यानकीपहि ॥ अतिहिप्रेमअधीर ॥ सषीरोवा ॥ तिहकह्योराजकुवारसुंदर ॥ स्यांमगोर
सरूप ॥ यहवागहैकदेषआई ॥ उरबसियसरूप ॥ कविरोवाच ॥ सवंसषीसुनिलेगइ
सीतहि ॥ हरषयुततिहकुंज ॥ जहांरामलछमनवनहिविहरत ॥ परमसोभापुंज ॥ जहांआ
नदेषेस्यांमसुंदर ॥ रांमराजिवनैन ॥ आनंदउरिनसमातअतिसय ॥ वरनजातनवैन ॥ कोउ
कहतसषीऐउरषद्रन ॥ देहधरीयदयाल ॥ मिथलेसकेकौतुकतउरातन ॥ विमलफलेवि
साल ॥ कोउकहतनएअनंतअंगी ॥ सुधासुदरदेह ॥ नहीटरतसोभानिरषनियतसु ॥ नइनउ
रझेनेह ॥ ईहन्हातत्तर्कअनेकअद्भुत ॥ श्रुतनउपमासार ॥ बुधबलकरसिंधुसोभा ॥ नहिनपा
वतपार ॥ अलिओटनिरषेजांनकी ॥ रघुवंसवंसराजकुवार ॥ अनमोयवलुरागउपज्यो ॥ अंग
क्रतअनुसार ॥ जोगमायामैथुलीअरुरामचंद्रअनादि ॥ विथलेषजोप्रवियोगसबवन ॥ अंक

टरिदिनआदि॥ दुहा॥ सषीरुवाच ऐकसषीऐसेकह्यो॥ सबनसुनायप्रकार। ऐसुत
कौसिकनृपतके। कौसिकमषरषवार १२ इनहीअदल्याउधरी सतानंदकीमात। आऐ
विश्वामित्रसंग। सुनीनगरविष्यात १३। कवित्त॥ नारदक्वसंन्नारसियउनितुनिचित
इसवेम लज्यान्नयसजनीसकुच नइनरागउरनेम १४ इजीगौरीवेमसूसीतासषीस
माज मंगलगानविधानजुत फिरआइमहराज १५ बनउपवनविहारकर रामआयस्व
सथान कीनेविस्वामित्रकह वंदनविवधविधांन १६ वामअंगवैदेहके दहनअंगजु
राम नावीसुचितसकलसुन्न ऊरुकनलगेसकाम १७ सुनवासुरउरबपहर कीनैस
नावसाउ राजाराजकुवारतहां बोलेरानाराव १८ सतानंदकहितिहसमयपठिऐजनक
विदेह आनऊविश्वामित्रमुनि समआदरसुसनेह १९ आगेहिआएरंगजुव नगरनिवासी
लोग धनुषविगउबाइअति रामदरससाजोग बालतरनअरुवृधजन नेहसहितनरना
र जथाजोगबैसेसकल अपनीठौरविचार २१ छंदवैताल॥ सुनसियोहउछाहसब संनार
सारसुसिध निजकाजतत्परनारनर प्रजुहेतबुधप्रसिध नृपबंध्मित्रियसुहृदसाजनदेवसे
समागता गुरविप्रपूज्यअनेकक्रमगति सुंकविपिंगलसंजुता कुलमांनमागधवंससुक्क
र। वदीजनवानीवरा उनिसिधचारनविश्वपूजित तत्वसाधनतत्तपरा मिलडमहत्रियवइ
ससुदसु निउनविद्याआपनैवन दीपदेसविदेसवासियकर्मकारनकोगिनै सबसजनकु
लविपलसोत्ता। पर्मसुषमिथुलापुरी सबसिधरिधसाम्रध्यसंजुत कोउनउरसमताकरी मिल
लिगनघनइवत्रदससंदन विवधरंगविराजही विधविधुसिंधुसुरेससुरगन सोमसूरसमा
जही जाअनिलअनलदिगेसजोगिय जक्षमनमथजोजुरे रिषसिधगिरतरुसरिततीरथ
सुरसुरिन्नमनुसंवरे जमपितरगजमुषसेषनारद आरषांन्चरान्वरा जलगिगननृचरन्नृत
जेतैचनजुत्तवेदनागविहंग गंधरबकिनरअवछरागन तानगांनसुताल आकासवाजन्न
नादआगम वजविवधविसाल आसुरिअसाधअनीतअतसय दइतदांनवउष्टजेआ
कासछायोरथनअनगिन नावअपअपनेजजे इत्यादअषिलअनंगअंगिय ब्रह्मसि
ष्टजुविस्तरे मषधनुषसीताव्याहमंगल धरमकारनतनधरे। कवित्त॥ विक्रमविसेसदेसदे
सकेअसेसबल। जितेमेरूमेषला संमुद्रमध्यजाएहै॥ विधसिष्टीउपजेजेब्रहमंडवीचवासी॥
पंचभूतकीप्रवृतिराजपदपाएहै कौतिकनिमतकोउबाऊबलकाजवीर जाहिजेसी
भावनानरोसामनभाऐहै पावनपिनाकमषदेषनप्रसिधप्रथ्वी ऐसेअविनीससीता
सुयंबरआऐहै १ दुहा॥ कनकघटतनगमनिजटित। विवधर्मविसतार। आनजथाक्रमबै
ठतिनह राजाराजकुवार २३ विस्वामित्रपवित्रमुनि सानुजरघुवरसंग सादरबोलेरंग
जुव राजाजनकअनंग २४ सतानंदरिषकोसिकह कीनीप्रणीतअनेक सियसुयंबर
धनुषमष आनेविदतविवेक २५ सबहिनतेउरधसुपद उच्चमंचइककीन रामसहित
कोसिकतहां बैठेउन्मप्रवीन २६ जोबालकमृगराजके बैठेअग्रविसेष नृपपतिवि
श्वामित्रमुनि अतिस्पतेजअसेष २७ चपै॥ रामरूपदेषंत सबैसुरनरसुषपावही वि
लआनंदअमोह वहतनदिपलकलगावहि स्यांमवरणतनजलद सामनहीसमतापावै॥ पि

मकराक्रतकुंडलकपोल । छबि अतुलितछावै सीमा । अमितसरूप । देषमनलजितमनो
जा । कचकुंचितभृंगवली । द्रगसरदसरोजा । उंचनालनासाउतंग । हीरारदराजे । मुषप्रस
नमिलमंद । हासवरअधरविराजे । अतुलकंधआजान । बाहउंनूंउरअतिपीना । कंबुकंग्र
ीवली । वनमालनवीना । नाभीसरोजत्रयरेषमध्य । छबिअद्भुतकीनी । रोमावलीसवि
जे । जंत्रजनतुरह्वादीनी । कटिमृगराजनितंब । पीनपटसेतजुबंधे । जंघाद्रतिससीजनजा
नुसुजसमसबसंधे । वरनकमलसुरसेविता । सुरिसरतनिवासा । सरणागतपिंजरविज
नविजय । बकुविधनविनासा । २नषसुद्ररलोपमा । तेजनछिबछीने । पदतलअरुण
कारे । षवजाकुसलीने । पारगतविद्याप्रवीन । दसच्यारविदाना । श्रोताधरमाद्दिसावधा
न । नितवेदपुराणा । कटिकेहस्नायाकसे । कटिधरकोठंगायणु । ग्रामितकर । द्दिपणये
रिषहिश्वंक । द्दितसतलद्दानसुदेस । सबअंगनसोहै । उरषसिधदेषतसवेम । मनद्दतिविनो
दे । सावंदधअत्सारी । जिहईच्छाकरिदेषीजेसी । तिनकहसफलभावनातेसी । रांमनृपनइह
रूपनिहारे । मानकुदेहवीररसधारे । षलषविनरघुवरउहदेषे । रसभयानजनवपहिविसे
षे । सजनविलोकितरांमसनेही । हेमनुधरेकरुनरसदेही । समधिनउररराघवयोहित । मन
उहासरसविस्वविमोहत । नकुनजियरसअद्भुतनारी । सिलतेनइद्दिक्तननारी । रस
श्रंगारसारअवरेषो । देहधरेजुवितीजनुदेषे । गलतगलांनअप्रोरुषगाए । अविनीपतिनि
नक्षउपजाए । असुरदैतजेदनुजअनागे । तिनरसरुद्रकालसेलागे । सतियनउरयोरघुप
तिसोहै । महासातरसतनमनमोहै । विउषनेयोरघुनाथवताए । अबिलवैराटरूपमनुआए
जोगतत्वजोगीजनजाने । चिदानंदमयप्रभावमाने । नकुनउररघुपतयोद्राजत । इष्टदेवसम
सुषउपजात । सासहसुसरयोरामसंवेषे । अतिवछलसुतसमअविरेषे । देवसुरनरामसुषदा
यक । सबनसदासुनकाजसहायक । प्रजाप्रसिसपरमसुषपावत । अविलोकतनहीकस
नईकृतिअनुसारे साधुनसुनआगावत । कवित । जिहजैसीभावना । रामरघुवीरनिहारे । ते
सीईच्छातिनहि । सफलनईकृतिअनुसारे । साधुनसुनआगम । षलनभयकालउपज्रिय
उष्टनआसात्तंगनएमुषमलननिलजिय । नवरससरूपनरह्वरसुकवि । सबनचित्तसंचा
र कियजयजयंतिरामरविवंसरवि । अषिलचराचरउधरियं१ । कवितइकतीसो । एकजिहजां
नेतादिएकजोतभासेआप । जानतअनेकताहिअनेकजनाएहै । निकटनिहारेताहिवग
टेनिकटनाथ । देवथंनफारिनरसिघाहिदिषाएहै । दूरजिनजानेतादिदूरहीविकारदीनो
सुलननिहारेजाहिसुलभैसुहाऐहै । ग्रारितउकारसुनअनंगीयोअंगीहोत । प्रभुविद्याइ
द्रजालकोनघोपढाएहै । १ । दुहा । बालविनूषनतनविमल । रामअद्दतिअरूप । सोभत
बैठेनृपसभा । अविलेस्वरअनूप । २० । साधुनृपवाच । रामअंबैविलोकनरेससब । उरवि
तअविकार । इनकद्दिप्रापितविजयजस । निगमयहेनिरधार । २९ । नरमराषवजीयेन
वन । अंतअकारिजहोय । इनकेरहतअसेषबल । कन्पालरहैनकोय । ३० । दुष्टनृपोवाच ।
जेअविवेकीअंधऊर । नृपबोलेअभिमान । हमदिहोतबलवानको । पावेकन्पादांन । ३१ ।
हमदिनरोसेवा ... निसंक

।२२। साधुनृपवाच। जेनृप वेद मृजाद मह। दस बीले सुनि बात। कहा गाल मारत तृथा
अरु मन लहु वा बात।२३। मघवन्हा ज्यो वावरे। थल देषत जल लेनाय। नरम स्त्र मंत
दिग तलै मरि है सह जसु नाय।२४। जगत पिता जगदीस ए। को सप लरा जकु वार। सीता
जगदंबा सती। निगम कहत निरधार।२५।। अथ रावण बाण आगमनं। कविरो वाच। नये। सुनो
वीच दस सीस। महाराक सब लरावन। हे कंटक त्रय लोक। सह जसुर राज संतावन। सह
अबाकु दती वंस। समर विजइ बाणासुर। तीन लोक न वन्त। जा हि देषत उपजत सुर द
रूउ ष्टदेव दोषी अदय। त्रयी विदत पौरुष त्रबल। सुनि हीत स्वयंबर सीत को। आए ति
हछिन जिग थल।२। दुहा। असुर असा ध अ संष अत। दकु विलछन देह। अविचित तआ
ए अ सह। सबि नभयो संदेह।२६। रावन बान बलिष्ट अत। कहत इहै सब कोय। उहनए
औ धनुष जो। महा उद्रव होय।२७। कविरोवाच। तिन हि विलोक ससोक तहां। भए निरासन
रेस। आए मंगल जान इहां। उपजे विघन अरेस।२८। सजन राज समाज मह। आए असुर अ
नीत। नर नारी हाहा करत। हरि हरि ये विपरीत।२९। रावणवाच। मो हि वता वकु नृप सुता। प
हिले देषकु ताहि। पाछे तो हि पिनाक कह। कन्या जा कुं विवाह।४०। बाणउवा। बाण कह्यो
दसकंध सुन। पहिले चाप चढाय। कु पण पूरन करि जनक को। जस लै लंका जाऊ।४१। क
विरोवाच। रावन बात सुन बान की। सुनी न कीनी कांन। भुंन सानो अत चित मह। बकु रो बोल्यौ
बांन।४२। बाणवाच। नये। रे रे सठ दसकंध छा न हठ गर्भ न कीजे। वचन नंग के होत जगत
गरवत न वीजे। तद्दु नीत पौलिस्त वंस उपज्यो इधकारी। सो करियै परिवान। वात जू मु
ष हउ वारी। हृत लीनौ जनक विदेह जो। सो पै सिर चढाइयै। कहु पहिलै के सैन्य पत की उ
न्नी देषन पाइयै।१। रावणवाच। दुहा। मम भुज बल की वात सुन। महिमा अतुल अपार। न
व शहपायन है वनित। सुर सेवत दरबार।४३। बाणवा। बाण कह्यो दससीस सौ। बकु
मुष रसना पाइ। अपनी कीरत आप ही। कहत बढाय बढाय।४४। रावणवा। तब फिर राव
न बान कह। उतर दयो सदाप। बकु तबा कुं जुत देषियत। अति बलि है हो आप।४५। बा
णवाच। रावन मेरो बाकु बल। सुन्यो अब कुलो नांहि। सब तै दस गुन अ रन जो। जर वा अ
म दिन जाहि।४६। कबिरुवा। सुनै बही जब जात। पिता पद वंदन पावन। महा दांनी दे तेस
निरष सुषपा पन सावन। तब देषे बल तोल। सपत पाताल निवासी। तहा तहा करत लदे
क। छोनि राषी छितनासी। सहस फनन्ना रटास्यो सहज। लोक लोक मह जस लयो। को
जाने केतिक वार कह। सेस सहायक होनयो।१। रावणवा। हसि रावन तब कह्यो। बान तु
मआ हि महाबल। सहसबाहु सयाम। सूर बकु संग दैत्स दल। बल सो राजा बकुत का
लहै सुतल निवासी। पिता तुमारो आन। करि कुन्नू थल हवि लासी। बाणवा। छितमंडल
दीनो दछिना। सो निगमागम साषीयै। निकलंक नृप निरमल्यथल। कहो कहा थोराषी
ये।१। दुहा। अय जबं धुकु मेर को। तुम घर लियो बिनाय। सो हम पह करत न बनै। देव
मृजाद विहाय। कवित। संषासुर हिरणाक्ष। मुर कु मधु कइटभ मारै। हिरणकस्यप
स्याद। सब लकोगिनै संघारै। जिह भुज सरन निसंक। वसत त्रयलोक चराचर। कम

लो कुचक्कु कमवासिनक्विन्नवर। बलसर्बसुदीनी धरमवस। अवरिवचननषंडीयो
सुरिपतिसाहायसोइहायहरि। ममपितुआगम मंडीयो। दुहा। तुमकुसुमैजुवक्कब
ल। धजहिदसनादीन। उर ७१ज्यो साइतरस। रहतब्रमपदलीन ४७ षगटपराक्रमआ
पनै। सबजानतसंसार। चापचढावतदकुनबल। अबकेहैनिरधार ४८ कविरुवा। सु
नौजुरावनबानब्रत। सबनृपनएसत्रास। किन्माब्रासकोगिनै। बुटीजीयनतनआस।
४९ बाणवाच। बाणकस्योदसकंधसौ। राकसधनुषचढाय। कहतेओरनआयइहवा
तवृनायकनाय ५० रावणवा। कापहरीकैौजाकुमै। मैबाध्यौसुरराज। पहिलेकिन्मादे
षहु। पीछैकोमंनकाज ५१ बाणवा। बानकयोतबरावनहि। यामहकोनसवाद। ऋव
मनोरथमनहरष। करतबृथावकवाद ५२ रावनवा। बोलनजांनतबांनतुम। विध
विवेककीवात। बाणवाच। हमकुनकहीजावतन्या। जेसीताहिसुहात ५३ रावणवा। क
रिहोजैसेमैकही। चितनआवैआंन। करिहैकोउमेरोकहा। सुनइहबाननिदान ५४ बाणवा
आगेहीहयराजनै। जोकीनीतुममांहि। वेसीहीकैहैअबै। सोसुधहैकिहंनांहि ५५ रावणवा
चवै। नूतनाथजुनूत। सगनावासगगनेसंग। सुरसरपावकदूषन। स्त्रलअदुतवदूतअंग। स
र्बमंगलासहित। वासकइलासविराजत। सुरवन जंतुसमेत। सकलसोभानगसाजत। जी
नोउचाईगिरगैंदलां। सोजांनतसुरनरसकल। त्रैलोकविदतमेरोअतुल। बाननजानतबाहु
बल १ कविरोवाचदुहा। तजिविवादलंकेसतब। विवधविषमसुनिवांन। मारिमसूसामनहि
मन। आनछुयोधनुपान ५६ बानवाच। बानकह्योपीलिस्तसो। तुमबलअतुलतअंग। कै
सेंकर्षकमुष्टकर। होयपिनौकनतंग ५७ कविरुवा। जैसेइतउतविषयवस। चलेनजोगी
चित्त। तजतनगौरपिनाकत्यो। रावनचयोकुचित्त ५८ रावनवाच। जौरनधनुषमहेसको। ऊं
तोरुंगैतांन। बानकहीयतमहाबली। तुमधौदेवौआन ५९ बाणवा। बानधनुषसाजागए
कियेघनामवियोग। मेरेगुरुकोचा ११ इह। जोनहबुयबैजोग ६० कविरुवाच। परेबिसानोलंक
पत। गिगनगिरायोहोत। धनुषनटरिहैवोरतै। कष्टकरिकुजिनकोय ६१ सरमासरमीसुन
तसो। दससिरगयोबिसाय। करवंदनविसषासनह। बानचलेसुषपाय ६२ इतिरावनबा
नसंवादसंपूर्णं। अथधनुषमषसान्तै। कविरोवाचदुहा। जातिहीनराकसदैत्यके। स
बहिनटस्योकलेस। जोरिवसिसउपरागतै। उयदहोवविसेस ६३ राजाजनकविदेहतब
बंदीजनहिबुलाय। धनुषजिज्ञपनआपनो। सबनकह्योसमफाय ६४ सुमतविमतिदकु
माटसुत्त। सुकविमहामतसुध। राजछनाकेमध्यसो। ठाढेआनद्वबुध ६५ छंदवैअहरी।
सुमतविमततवतुजाउगाई। कहैजनकपननृपनसुनाइ। चापसितुंकोउनृप्चढावै। पै
जससुंदुतकिन्मापावै। दुहा। पूबतविमतविसेषसो। सुमतकहतसमफाइ। राजनकेव
रननसकल। सबनसुनायसुनाइ ६६ विरदगोत्रजेजगविदत। देसवंसगुनग्रांम। विक्रम
दानजुवारता। निजभुजबलदलनाम ६७ षगटसुनतजसआपनो। सूरनवतसुषपाय
परिकरिबाधलपेटपट। मनुसुभटमनाय ६८ तमकतमकनृपतेजसो। धर्तचापकरधाय
नेकनउचलनहमतै। फिरफिरवैवतआय ६९ मंतनबैठमहीपते। बोलतबचनविसेष परि

×मुनीसिन्नकीमनमदनकेवस।नयोनहिनसुनावही।नस्मावसेषअनंगजौसोइ।×उजी.२

सगिरीसपिनाकमनए।निरपौरषनिस्सेष।७०।छंदवेताल।तबसहंश्रदसनटमहा।सुवप
त।श्रनषउवइकवारही।सारोषप्रवसेजिइसाला।आइचापश्रधारही।नहीटरतसि
न्नपिनाकजौविध।लिषतश्रंकलिलाट।महासतीमननहीचलतइतउत।वऐलंपटगाढे
उनिर्दहनपावही।श्रवनीपश्रीहितनऐउविउवधीसउकगनमांनिये।वइराङ्ववनिजौवि
षयरसवस।जरवजोगीजानिये।सन्मासमन्मासपदजोनेषसाजै।सषीमुग्धासंग।जहा
जाततातेघटतमहिमा।श्रंगविवसअनंग।उपहासनाजनन्नऐश्रनि।वापकेढिगआय
कोगिनैमुबीजुरूकरबो।सकेनन्नमछुगाय।उनमाटबोलेजनकंपन।वेसिधकीनहि
पाय।सुवचककेश्रविनीपश्रयेसु।नऐमाकिसुनाय।सुरनरूसक्रनकस्योसाधन।द
यौनहीवरदांन।उरिषसेमहासालपेवहि।फिरेवनतावांन।तुमगर्भहतकिननएजननी
जनेथाजवजाय।वृथास्वमतिनकरयोजुवतिन।वयसरूपविहाय।वरविहतबंध्याकु
हपवनिता।श्रावगर्भसुहाइतमजनहिपोरुषरहितउवहि।अल्पजीवनषोइ।इसादव
वंशहारश्रसहन।करतबंदीजनकिते।बलछाकसीसनिवाइवैवे।जुरेमषन्नपतिजिते
जुगमारधुरतजश्रविनजोवै।धवलबैवश्रधीर।कछुसिंधनांहिप्रहारकीने।विगतपौरु
षवीर।सुमतविमतउवाच।दुहा।सुमतविमतहसिकेकह्यौ।न्नपतिसुनायसुनाय।चाउवद्यौ
नहषरचढे।श्राउनइहमषआय।७१।जनकवा।राजनकीदेषीसदा।जनककह्योसविषा
द।देषौमहिमाकालकी।मिटिपौरुषमरजाद।७२।न्नपजितेन्नगोलके।बलनिधानवरवीर।
श्राएउरुषजुधनुषमष।चलेश्रोटसिरवीर।७३।तदसदैत्यधरमनुजतन।श्राएन्नपतिश्र
सेष।नएनिरुद्यमतेजहत।तिनकुनकछुविसेष।७४।चापवढावनकोगिनै।सकेनश्रवि
नछिगाय।उवीनइनिर्बीजश्रब।कह्योजनकश्रकुलाय।७५।कवित।सप्तदीपदिगश्रंत
नयोश्रावनन्नमीपत।राकसदनुजरीषीस।श्रमरकृतमांनवश्राकत।न्नपविदेहकिंनक
संगजयलाभकित्तसम।कार्जसजनकोरुरु।श्रषलकीनौबलउद्यम।नहीटस्योनटा
स्योधरनतै।नहीचढाइटंकारियो।हाहाजुकालगतवबलइह।सुवमंडलनिर्बिजभयौ।
दुहा।जोजानतनिर्बीजभुव।तोनकरतपनएकु।पावकपजुलतग्रेहसब।तबाकितपइ
यतमेह।७६।रहीकुवारीकिंनक।लिषतविरंचलिलार।पनकीनौसोपरहरू।केउपहास
कविरुवाच
संसार।७७।जनकवचनसुनलछनतहा।कोधारुनचषकीन।मांनकुप्रज्वलश्रनलभ
य।नाइश्रमृतघृतदीन।७८।लछनश्रीरामप्रताकवत।देवदेवरुघुवीर।कहैलछनतव
किंकर।मेरुमहीधरकियतमात्र।जीरनपिनाकहर।देश्रज्ञाश्रषिलेस।दासबलकोतिक
देषकु।जोश्रछरकुंकहत।साररेषासंपेषकु।श्राकर्षनिवाइचढायचिल।निदवैश्रै
वनसायकु।जोश्रछरकुंकहत।साररेषासंपेषकु।श्राकर्षनिवाइचढायचिल।निरवैं
कहीमुषहिजोनऐतीकरू।तोनहिवीरकहायकुं।१।लषमजनकप्रतिवाचा।दुहा।लछ
नसुननिरवीरभुव।रोषारुनकियेनैन।जनककृंतरघुरामजहां।नहिउचितइहवैन।७९।
कविरुवाच।कुरकतश्रधररोमंचभुज।लषनरिसोहैरूप।राममनिवारेसैनकर।सनयजान
नवन्नप।८०।छंदवेताल।कौसिकवाच।सोसमयदेषविसेषकोसिक।हरषउरनसमाव

ही । रसिक लो मुनी मिथलेस सो । धनुरां मदे मो चावही । जनकवाच । सुनद्यो उतर जन।
क मुनि श्रत । काल दंड दको गनै । अतिव ज्रतैजु कठोर सिवधनु । अद्‌मान सु आपने । पन
गे सब तिमा जि है प्रतिवा । को नति स्गौरव कहै । त्रयलोक के सुअसुर सुवत देषहारि बै
ठरद है । करि वंधना जुव विस्वकरमा । कोट मिल उद्यम करै । नव नृतनाथ समाय विनु सो
टि क्यो षित तेना टरै । सब दीपके अवनीप सुरनर हारहार सुरह हिये । तिजमात्र पैन ही ट
स्यो तिनसे । करन कर्ष्यो पन किये मुनि जनए पन व्रत नेगमे रो । राजा किंन्या योरही । वित्त वदीजो
अप्रियो इति विंता । कविनसो नवनै कही । मुनि संग लाए बालक न तुम । कीये मषजय टेक मो
हि राव रेत पते ज्नम हिमा । कहिन जात अनेक । रिषदेषत १ व जनक हरिषत । रामवय लषउ
रुरै । मुनि सिन्धु चाप संन्हार करकस पनक । वन न हित जप रै । वित नयो न जदल ब त्रयो न्व
ल तद पि मित्री बुलाइ कै । मिलक सो जन जुजूथ आनंक । इस चाप उवाइ कै । सतघंट हिम
मयमनि नसो ना । आवरत पट अंग जयपाय समर अनेक ज्ञाते । ईसदहन अनंग । कविरुवा ।
दुहा । पंच सहंस नर मिल प्रबल । विथ आकर्ष विसेष । राज सना मे लेथस्यो । सिनु चाप सविसेष
८१ विस्वामित्र वि लोकवर राम वद रिनधीर न्रकुटि बेरेषा करकनुज सुजेरो मेवसवीर ८२
८२ विस्वामित्र श्री राम प्रता कवित । पथ नयानक वन प्रवेस । ताडिका निपाती । सनु सुनुजसेना
समेत छिद्यो सर छाती । विनु नल सरके पंष । वातमारीच विनास्यो । वारिसिंधु के वीच । नीच सतजो
जनन स्यो । जिहधनुषकर एतेविजय । सो दीजकु सो मित्र कर । रघुवीर वीर त्रभुवन विदतह
रिष वल दाव कु चाप हर । १ । कविरोवा । दुहा । रघुपती विस्वामित्र कै । सुने वचन सुपसंस मनुउ
दियाच मंच पर उठे उदित हरिहंस ८३ कटितट बाध्यो पीतपट । सुजा रोम उच्चार । क्रमन चले मृ
घराज की । कोसिल राजकुवार ८४ देषन सरासन सिनु को । राम चलेय हमांत । जो मृघपति मन
मोद जुत पाय दुरंद मदपात ८५ छंदपधरी । उरलोक तर्क वितर्क करकर । विवध वात वनावही
दसकंध बान द्रिआय देनृ १ गए हारि सुनावही । सीतावा । मन होत सीता सु तहि विस्मय सनय
नार सुनाव । करिकमल को मलरामके अति । चापक विनवटाव । रानीवाच । जांनकी रूप विलोक
जननी राम वय सुनिहार हीलषि कविन ताम वचा १ कीअरु हृत्ति विदेह विचार ही सुष सर्प ज्यो ग
हि गंधमू सी मनहि सोच समाय । वतुना सत्तषवषना सत जिवत । उत्तयदे तेअकाज अनुवदे
धुनु सीता अनुढा रहे जिय निरधार करि नृगवृत जुभाहकीजे सुजस तउन संसार । सषीवा । हि
इहसुन तवत इक सह चरि सयानी नी यत उतर दीन । राम विलोकत वाजरानी मनन कर कु
मजीन मुनि अगस्त सरीर समता । उदध कुतउ पजात एक ही अंजुलिक स्यो अचवन वातज
ग विषियात उरलोक तम रिव विंव पतमा । नीतन हीन प्रमांन । अति तेज वल अधार अतुलि
त नास होत निदान धनुबांन कोमल उह प १ के धरि अतनधनी एक चवषां नेकीनेव स्वरा
च्वर अंग प्रवल अनेक मृघराज तुज वल गजहिमारत मांसरासन मांनिये मातंग अंकुस
समर न प्रतिमा वस ... त्यापिव षांनिये मुनि बीज अहार मंत्र महिमा वस सुरासुर वीर दे
वीन राम हि बाल देष कु स्वायं जोति सरीर सषी वचन सुनि रनवास विके वढ्यो उर विसा
स त्रयलोक प्रमुद रिकरि हीतैसी अषिल सुजिहि आस । कविरोवाच । करि वाम राम उठा
यक हरिको मंजुल चारु कवोर धरि मध्य नाग जमुष्टि धारत अरु नितियो दकु ओर कर

सब्यकूच्याकर्षकीनौ॥ कविन धनुटंकार॥ इह सुनत सतानंद उर॥ अनंद उपजि अपार॥
॥दुहा॥ कौलक मव अदिपत विन॥ सावधान दिगदेव॥ कहि लछनी हरखा पकर॥ सजत राम सं
नेव॥ ८६॥ नहाप्रतछ्याबानजुत॥ करिनिश्चय रघुनाथ॥ काकमुषी आकर्षकृत॥ दिषत सन्ना सुनाथ॥
८७॥ औचक सौ विसषासन हि॥ मंरुलक एसमान॥ तट्यौ मध्यमृनालज्यौ॥ नैआघात नयांन॥ ८८॥ क
वित॥ सुरिसरितासामंद मरिजाद सुमुक्किय॥ हरिदिग्गजादि गमिगीय॥ कमल नव ध्यांन जुमुक्कि
य॥ धरिन ध्रजध सगईय॥ बबलपछ्यविहारयरि॥ महिरवाजछुटमगिय॥ बगटदिगंदेवकंपपरि॥ ना
गेससेस फनिमालनम॥ कौलक मवकूमत जियौ॥ रघुबीरवीर त्रयलोकपत॥ जिह छिन नव धनु नंजि
यौ॥ १॥ नए विस्मत त्रय नवन॥ सगन संकर समाधटर॥ अष्टकुलीचलक्वि॥ लपनगबंधरत्वकंपपर॥
कालदंरुपरिचेन॥ परसोज महथ विछुटिय॥ रविसिसयहरथरुध॥ तिज आफालितटुटीय॥ दिग्चक्रने
लबुहमंरुहिग॥ भुवन त्रयजयजयनयौ॥ दसरथ्थकुवारसि चापदल॥ नव दुर्लभ जसलनियौ॥ २॥
लसतसप्तपाताल॥ बलरघन गर्जपमुक्किय॥ करत गांनविधान॥ तानरंनादिक चुक्किय॥ नएमलिनिम
दअंध॥ विघ्ननिद्रा जु विवर्जिय॥ परमुदन्न रराबन॥ सपापतपपीववितर्जिय॥ द्रगपवामफरुकफरसी
धरन॥ महामोहवैदेहिमन॥ काकुस्थजदिननरहरिसुकवि॥ धरनंज्योन्नूतेसधन॥ ३॥ सुरसुरेसटरि
संक॥ रजनिचरसंक उपजीय॥ परीयलंक आतंक॥ संककंटकमनसजीय॥ सुषसजनसमूह॥ नयो
दुर्जनदुषनारीय॥ विसकजनकसवाम॥ नगर आनंदनिहारीय॥ मुनिनएमाहाकोसिक मुदत॥ की
तसुकविनरहरकरीय॥ त्रयपुरबसिध अविधेससुत॥ विजयकथाजगविस्थरीय॥ ४॥ नीमनाद
धनुभंग॥ नयौ नयनीत उपन्निय॥ त्ररूपुरतदिसविदिस॥ महाबलियकृतमन्निय॥ अमरबृंद आनं
द॥ दुंदुकारिजन्नयो आगम॥ विबधलोक मंगलविधांन॥ मानेनिगमागम॥ सुतन्न ईगिगनविरषासुम
न॥ सुरनिसानवजेसघन॥ कहि जईत जयत रघुनाथकी॥ कविन रहरि मिलमोदमन॥ ५॥ दुहा॥ उ
नयदूक अवधेससुत॥ करमास्यौ कोदंड॥ मानकुपरबतवज्रहत॥ नयो मध्य जुगषंड॥ ८९॥ छं
दपधरी॥ सुरलोक नजे दुंधन्नि अशेष॥ विस्तारनगरबाजतविसेष॥ ननन्रमिमिलतनीसानन हू॥
सुरनरसमाजजयजयसबद्द॥ आनंद कुसमवर्षा अकास॥ उछ्वअनेक अमरन अवास॥ गंधर्ब
करहिकिन्नरसुगांन॥ तहान्रतसकै विबुधसुररमनतांम॥ गोवहि सुगीत त्रियथेइथेइ॥ नवनवउछ्य
हसीतासुनेहि॥ अतिहरष ज्यथ जुवती अपार॥ दसदिसते आवत राजद्वार॥ हितवंत नारनिरषीत है
य॥ कछुनगरपंथ पावेन कोय॥ नृपरमनि उदित आनंद नेह॥ मांनकषसुकितवर्षमेह॥ द्विजराज
दिछना जनक दीन॥ बुत्री बुनीत आनकुबुवीन॥ दिन सुनत वषो दित सतानंद॥ आएर निवास दिजु
त अनंद॥ अज्ञागुरिसी तहदई आय॥ उत्रि काचलकु सुन्नसमय पाय॥ गुरवध्व अयकीनी सुग्यांन॥
उन्नि चलीक वरसीता पवांन॥ आवरतसंग जुवती अनेक॥ विसतरहि विनयवानी विवेक॥ सो ०॥
रूपवती आरतीसाज॥ मुक्ता अविधकुंकमसमाज॥ दधदोबसहतनेतासमेत॥ के दीपक मंगल
कलसहेत॥ सुनगांन जुवतिन उछ्व असेष॥ विस्तार उछ्यमंगलविसेष॥ इहभांत कुवरी मंडपथान
आन॥ दुहपाविजलीनि कमलपांन॥ सुनेजाजमकुचेनयमिलतसंग॥ आनंद अंग उछ्व अनं
ग॥ दुहा॥ सतानंद वाइक सुषद॥ कहि सीतहि सुनकान॥ उनीतुम मेलकुपगट॥ रामकंवजय
माल॥ ९०॥ सो सुन राम समिप सिय॥ नेह कहित नियराय॥ सो न्नासकुचितगुदसुष॥ जिहका छुन

कहिजाय ८१ मनुमालातुजमैथली विहतनवाईविसेस करतमनालसरोजकर रविहिअरधरांके
स ८२ सीताजयमालासमय पतउरमेलसप्रेम सुनलछनरोमंचसंग निरषतबिवहसनेम ८३
देषनकोअकुलातदृग अतिहितलाजअधीन पटपरसवजगलाजपर मानहुतरिफतमीन ८
४ मेलजयमालामुदित सियप्रियकंवसनेह प्रतिघरघरआनदउर दुधनवरषेमेह ८५ उलहि
नउलहारामके लेमेलीवरमाल एकहिवेरागोगिगन वाजित्रवजेविसाल ८६ ब्रह्मादिकआनंदव
ट धनुषजिग्यजयरांम मंगलगानविधांनमिल त्रयउरगामनधाम ८७ सषीयसीषावतसी
तकों अनुपदपरसहुपांन करिनपसारथसंकुचककु गौतमत्रियगतजान ८८ सोरहंस
काऊनसमक मनहिरामनुसकांन नकालइप्तवहेततहा सतानंदसकुचान ८९ सुमनव
रषसुरहियहरष वहस्यौदेवविवांन अपनेअपनेलोकप्रति करेप्रवेसप्रमांन ९० परसनृपत
वाच॥छंदवैताल॥ सियरूपछिबहिनिहार नृपसव नरमहीमनरिसभरे उठसकेअंगस
नाहअनुत कोपवितुअर्थहिकरे नृपबालदोनृधरहीबलही छीनकिन्यालीजीये कोसकैव
रहमजियतकवरी कहतविक्रमकीजीये कहवासजीरननंगकीने कोनवीरकहायहै तब
व दहिषनीजनकउरते जुपेसीयलैजायहै कैहैविदेहसनेहवसजो इनसिसुनकीओरमा
रिहैबंधुसमेतरिनमह जुपेकरहैजोर ॥परसरामनृपतोवाच॥ सोसमयनृपअनीतसुनसुन
तिनहिउतरदीन बचीकहायगमायबलछिब मननहोतमलीन धिकारतुमहिजुसस्त्रधार
त हथागालबजाय गएलाजनाकपिनाकके संग बलविधानविहाय तिहसमयकितगइसु
रतातन अबहिगटीआंन मुषनएकारेरहततद्पिन मोनलज्यामान ज्योवलतस्वानअंग
लसिसमृथ राजबलवसमोह सबनातनातनसंपदा सबनहतकयौ सिवद्रोह मिलकरत
वाइसज्योमनोरथ वैनतेयविनाग हरिविमुषजैसेपरमपदस्वहत नकुविनुहतनाग जसव
हतजैसेलोनलोलप पतितमहिमाउंज कामीनलहिअकलंकलागुवलीमुकतागुफ सोमित्र
रोषजुप्रलयपावक परनहोंऊपतंग दग्धकैहोसकलबलदल त्रणनकरदवदंग॥कविरो
वाच॥दुहा॥ अपनेअपनेनावचनजि नृपगएउठिमोन जगजेतारघुवीरविन कन्याव्याहै
कोन १ जलविधसंसयजानकी मगनहोतमनमार कल्पलताअवलंबज्या पाएरांमसुरा
र २ जनकपुरीनरनारको साधनफलेसनाय जनमदरद्रीविकलज्यौ प्रगटमहानिधपाय ३
इतिश्रीरामचंद्रमषविजयसिवधनुषभंजन॥कविरोवाच॥दुहा॥ परमरम्यमिथलापुरी सब
संसयमिटसूल वाजंत्रगांनविधांनबहि मंगलघरघरमूल ४ बैठेसजनसमाजतहां मुनिवर
विस्वामित्र राजाजनकविदेहतब प्रगटीबनापवित्र ५ जनकवाच॥ कोसिकसुतियेहेतजिह्र
लौवापमनयेह सोईयहहूततातसब कहीयतनिसंदेह ६ परमधामकैलासप्रभु एकसमयसु
षअंग अयनिवेसतइसके सतीरहीतहांसंग ७ छंदपधरी॥ सोसमयसिवलागीसमाध एकास
नबैठेध्यानसाध वषमिलतजोगनिद्रासवेत्त कै रहेविदेहमनब्रमहेत समतसहंस्रगतअसी
सात विस्वसजुक्तनपस्याविष्यात सिवछुटीतहांतालीसतार जागेसुजोइपनिद्रानिवार सतीव
च मननमुदतसतीकीनेप्रमांन मुषधिनधिनकहिधिरमधाम ॥जनकवाच॥ परतक्षप्रजापतिपद
हिपाय अनिगर्नवढ्यौ गररहसआय रूतुविहतदछआरंभकीन संसारविविधनिर्मतनवीन क
रसिधइवमषहोमकाज ... विस्तारजिग्य

कीनोबनाय ॥ बिहसमयदिहपउत्रीदयाल ॥ कहलासिंरूबैठेकृपाल ॥ आकासवहतसुरर
थअसेष ॥ बिस्तारगांनकिन्नरविसेष ॥ सुररमनचिरतनाटिकसहास ॥ आनंदनादउधक्रिअ
कास ॥ सतीवा ॥ प्रभुकहोकहाइहअउमाद ॥ नचमंगलकोलाहजसनाद ॥ श्रीसिवोवाच ॥ न
वकसोफेरतवसुनकुनांम ॥ मषउछ्ववहैतवपिताधांम ॥ सुरजातबुलाएमषप्रकास ॥ संगहो
तगिगननाटकसहास ॥ सतिवाच ॥ मोहिकरकुदेवअग्पामहेस ॥ पितुग्रेहजिह्नकरप्रवेस ॥ सि
ववाच ॥ इहसुनकुसतीकारनअकाज ॥ हमसनाबैवइकसुरसमाज ॥ आगमनदिहनौत
हांज्ञान ॥ उवीकसौसबनआदरसमान ॥ पवधारदहतबतहांप्रमान ॥ रूधानसंगअनसा
वधांन ॥ उवसकोनहीतिहअवसआप ॥ परजसोचित्तरातेप्रताप ॥ हमसोतिहकारनरहि
तहेत ॥ मनमलिनकीनपरिजनसमेत ॥ गुरस्रामभिक्तूपिताग्रेह ॥ अनमोहिस्पागसिथांतएह
अनिमन्त्रणगवननउचितआज ॥ कतपितग्रेहतऊकोनकाज ॥ पितुमाताजद्यपिपरमध्येय ॥ स
नमानविनाजेबीनश्रेय ॥ तिहवैरिगवननहीजुक्ततोहि ॥ मनवाचकर्मभूछितजूमोहि ॥ दुव
त्रियाकबकुनहीउरहोय ॥ कोटिजोकरैउपदेसकोय ॥ दुहा ॥ नौतबलाएदछसब ॥ और
सुताजामात ॥ तुमहिबाचेजिगते ॥ तहांकहाअबजात ॥ ८ ॥ जनकवाच छंद पधरी ॥ मनव
चनजदपिवरजीमहेस ॥ पितुग्रेहतदपिकीनोप्रवेस ॥ सिवसेवकपठियेसतीसंग ॥ अतिसा
वधानसनाथअग ॥ अंतहपुरप्रवसीसतीआय ॥ सबमिलीविमनदासीसुनाय ॥ महादिरकी
नोपितामात ॥ वसकोधकुसलपूछीनवात ॥ बधववधुबदिनीवा ॥ भगनीसतर्ककहिबंधुना
म ॥ गंगाधरठाकुरकवनगांम ॥ हिकुसलहेपनविषसूलसेष ॥ मृघचर्मवाघवारनविसेष ॥ कन्क
वनचसममांनुषकपाल ॥ करदंरुज्वलितमंगलकराल ॥ सपतासिसिनूतविसावसाघमेष
लाजोलिकापंचमाय ॥ आवर्नपटृकोपीनअंग ॥ आरक्तनेनअरुसातअंग ॥ उनमतबीजन
गीअहार ॥ विषअमलप्रवदावतवारवार ॥ संसारमोहवरिजतप्रसंग ॥ अतियहेउघघूमत
अनंग ॥ यहछिवसूनायेइहाआज ॥ कीयजुक्तहोतहासीअकाज ॥ सुनतर्कहासजहातहां
सनेद ॥ मन्सासालसतीआईसबेद ॥ कुतिकुमअनलप्रज्वुलतिकीन ॥ विधजुक्तदक्षआने
नवीन ॥ सबहोताकृत्वजिसावधांन ॥ गावहिसुनसाषाविदगान ॥ अधिकारीयहमषअम
रआय ॥ सबयहतनावैगअपनेसुनाय ॥ आकुतीदांनदीजतअसेष ॥ विधजुक्तहवन
सुरमुषविसेष ॥ विधरुद्रविबैषुविनविवधहंद ॥ आएसकाममषहितअनंद ॥ दीजतसबहि
नमषअंसदान ॥ कुरुद्रनामसुनियेनकान ॥ सोउअनाचारिदेष्योअसेय ॥ मनसती
कोधवदअन्नमेय ॥ रोमंचकोपतननयनरत ॥ वेकृतवदनकीवतविरत ॥ उचरयोसतीवस
रोषआप ॥ सिवद्रोहीपावकुफलसपाप ॥ धहिसुताअषल्हेसध्यांन ॥ निस्चैयहवरजाच्यो
निदांन ॥ वरदानवहैमागतविसेस ॥ नरयारहोहिनवनवनवेस ॥ योकहतमात्रअंगअं
 गकंज ॥ कोपानलप्रगट्योप्रलयकाल ॥ तिहदेहधांनकियगवनताम ॥ चसमावसेषरहि
रुद्रनाम ॥ हाहारवत्तहाचयलोकहोय ॥ करीयेसहायकरितारकोय ॥ कहांजायप्रकार
हिरमाकंथ ॥ त्राताजअवरतुमविनुअनंत ॥ सिवछुटीजोइनिद्रासमाध ॥ आकारप्रल
यजानीउपाधि ॥ इहकहीरुद्रसौगनजुआय ॥ प्रभुजरीसतीअतीउदपाय ॥ हतेस
नएतबपलयनाद ॥ नवकर्षजटापटकीसुनाई ॥ भयोजटाजन्मतववीरभद्र ॥ अति

हीअसाधू अमरनअसनद अन्नेकवीरसेनाअसंत अतिकोपचलेजलिअंत विध्वंसजिद्र
तिहकस्यौवीर सिरछेदनिज्नकीनेसरीर सुरनकरमारकीनोसंघार नाज्योसुरेसतजिराजना
र सबकलजहोताकके सोध कतनासअदिन्नगुअतिदिक्रोधदसविनुसुरतग्रहिजिगपअं
स तेमारिवीरकीनेविधुंस सुजदीनेन्नवविनुहोमदांन निस्संकवीरतेदहतिनिदांन बस्सोजको
लवलपलयवाई दहाद्यअमरविथलोकआई कीनीउकारसुरगनप्रकास निरधारहोतत
वसिष्ठनास करीयेप्रसांतविधरुद्रकोप प्रभुहोतवेदमरजादलोप दधीचवाच दहाद्यब्रमकेला
सआसिकअथदुषवस्योसुनाई रुद्रवाच सुनीब्रसस्तुविंतानरेस सुप्रसनदइअज्ञामहे
स विधजायजिवावकु विविधब्रंद इधकारलेकुदत्तहीअनंद कमलनुवआयतबदहाले
क सयांमवेषउरवद्योसोक पलवरनदत्तसिरमृतकपाइ बिनसीससबनकेगएआई कौ
जिवहिविनामस्तककबंध सिरगएदेहफुबेसबंध जनकउवाच अंबुजनवजहांअजक
मलआंन जोसौसुकलेवरदिषजांन करपरसब्रमतबमृतककाय जगविदतदिह्नजीनो
जिवाय उनिदतियअजोसुषनामपाय सुसथांनदत्तबैवैसुनाय अन्नेकजंतुसिरवहेवे
र न्रगुआद्यदेरद्रजजीयेओर उनमंगआंनअरूआंनअंग सुरजीयेविलत्तनवदनसंग
क्रोधवससिन्नूकीनोअकाज मारेजुसुसरसालासमाज नगुआद्यकस्योहोतानन्नंग संघार
देवनयोदत्तसंग कतनिदतकारजबविवसक्रोध उनिमएदयालउज्योप्रबोध उपजीगिलांन
उरसिन्नआंन नास्योपिनाकग्रहिप्रबलपान नयोदेवराजषष्टमविदेह तिहसमयधनुषप
स्योतासयेह सिवोवा सिवकस्योचापराषकुसंन्नार हैनासन्नतमेरोनिहार जनकवाच बज्र
कालनएदहवांवितीत प्रभुनयोसफलधनुषउनीत कारनपिनाकआगमनकाज रिषकोसि
कसोकहिजनकराज इतिसतीदासधनुषकथजिग्पविधुसनंसपुर्ण जनकवाच दुहा को
विस्वामित्र
सिककारनधनुषको आउनसुन्योअसेष अबसीताउसुनेवरनतहो सविसेष ९ एकसम
यहमजिज्ञथल सुधकरतसवांम हलसीताकेअग्रतत निकस्योकुनसकाम १० तामहपाइ
उवका दूरनअंगप्रवीन तातेसीतानामतिह दुजनविचारसुदीन ११ कन्याइजतधनषकह
अहप्रतिथरतउवाय कारनतिहवतधनुषको हमलीनोरिषराय १२ वरनतवरदगुनब
ल तबबसबंधसमाव कीनोपनहमधनुषको तातेनेमनिदांन १३ कोसिकसीताआहतबर
ओ धनुषआधीन तवआगमअवधेसके कवरप्रमानसुकीन प्रभुसवरेप्रसादमम पन
पूरनतापाई जनककस्योमुनिकोसिकहि वचनविनीतवनाइ १४ धनुषभंगकृतमष
जय सीतावरीसुनाय रामचंदनवचंदकी लेकुवरातबुलाय १६ सीयसुयंबररस
फलनौ कुंकतकुतरिषीस अबजोअज्ञाहोइप्रभु सोइप्रमानमनसीस १७ विस्वा
मित्रवाच विस्वामित्रपवीत्रमुनि अज्ञादीनीएह चारूसुतअवधेसके आवकुराजविदे
ह १८ जनकवाच कोसिकविस्वामित्रको कीनोवचनप्रमांन सबैकवरदसरथसहित न्योत
बुलाएजात १९ त्रकालज्ञदेवगपतब बोजेविप्रविदेह सुनकारकपंचाज्ञसुध द्यमलगलि
षदेह २० पवएदूतजुअवधपुर महीपालमिथुलेस सुनदिनवारवरातसौ आवकुअवध
नरेस २१ विस्वामित्रहिआदिदे सोहितपरसप्रवीन विप्रषनजोतसेहम दिमलिग्नलिषदी

न॥२२॥कविरोवा॥वासुरतीजेअतीसजव॥पकुचइ॥तसुषपाय॥कुसल॥पत्ररघुवीरको॥दयौ
वसिष्टआय॥२३॥सिधजोइअतितितसहित॥बकुतकुतेतिद्वार॥तीनकाजदरसीतवहिक
स्यौवसिष्टविचार॥२४॥पत्रलग्नदसरथनृपहि॥लेदीनौगुरराज॥रामचंद्रलछनकुसल॥श्रुत
प्रेमप्रकास॥२५॥कौसल्यादरनिवासवा॥छपै॥काकपक्षधरकवर॥करनकीडाधनुसायक
लेवालंकराकसिवलिष्ट॥जरिबौनहीलायक॥मुनिवरविस्वामित्र॥नृपहिजाचनाकीनी॥ववन
सूरवरसूर॥वंकहीनाहिनकीनी॥लाकिलेरामलरिकालषन॥विछुरेजबहिअदिष्टवस॥निक
सेनप्रानतिरछिनिलज॥तौअवकहाधतीततस॥१॥राजापत्रविलोकनं॥स्वस्तश्रीदसर
थनरेस॥अविधेसवीरवर॥हंसवंसअवतंस॥जोगसुनपत्रप्रेमघर॥लिषतजनकमिथुलेस॥
सहितबंधवकुसलिसब॥कोसदेसकुलकुसल॥अषिलरावरीचहतअब॥हितदीनीतुत्रीच्या
रहम॥कररकुव्याहव्याहकुवर॥सकिकेवरात्वतुरंगसंग॥पावधारकुममसीसपर॥१॥सु
नतपत्रसबत्रिय॥असिषआनंदउपजिय॥ज्योरकृतधरथांन॥गहरवरषाघनगजीय॥वस
पियास्वातगविल्पयतुस्वातनीरमुष॥जनमद्रिद्रीमनकु॥संगनवनिधलहैसुष॥परिजरतन
गरग्रीषमश्रगट॥घोरघोरवरषतसघन॥कहिनृपतिरामलिछमनकुसल॥मिलमात्ताआनंद
मन॥कविरोवाचदुहा॥राजद्वारअरुनगरतै॥इतनपाएदांन॥धोतवसनमनिगनिविवधम
नवंछितसनमान॥२६॥कुसलपत्ररघुवीरको॥सबहीत्रियनसुनाई॥भनिबाहिरआएनृपति
बैठेसनावनाई॥२७॥छंदपधरी॥आएवसिष्टकुलइजओर॥थितजनऐजथाक्रमघोरवोरब
कुबंधुआयबिरदैतवीर॥सबसनामधबैठेसधीर॥मत्राधिकारआएसुमीत॥सोसविवसाम
हितपरमसंत॥अरुचतुरअंगरदाकअनेक॥व्यापारजुक्तवनियविवेक॥नृपमानमहा
जनपुरनिवास॥प्रजवर्नविर्नआएप्रकास॥तबबोलसनानृपजनकइत॥प्रछितसप्रेमकु
सलातपूत॥आनंदवचनसुनसुनअपार॥विधपूछनलागेवारवार॥अविलोकरहतजनइ
तओर॥चाहतसकोमज्यौससिचकोर॥आनंदनगरघरघरअनेक॥बाजित्रगीतमंगलविवे
क॥मंत्रिउवाच॥राजासोविनीयोमित्रीराज॥करिहैप्रभुआज्ञागवनकाज॥महिपालदयोआ
इससुमितसुमसाधकुसबदिगविजयतंत॥धारंनउचितकरियेप्रमान॥नदीकालविपर
जयविधनिदान॥जिहजोइजथाक्रमजांनजंत॥तिहदेकुउचितमित्रीतुरत॥सिवकागज
हयरथसहितसाज॥करविनयदेकुचाहतसकाज॥आवरनपट्टवकुमोलओपजुत
अलंकारमणिरतनजोय॥आमोदविविधसोगंधअंग॥सनाधसस्त्रअस्त्रानिसंग॥कविरो
वाच॥सबराजसोजनिकसेसुनाई॥पुरतनंगारविसतारपाई॥मिलसकटनारवाहक
अनेयगजकनेत्रषनवामीसवेयनरकन्कडवबोलतनंगारतहांरूपकसंम्पारहि
ततारकेरोयरूमकतसत्रसार॥नरिविवधरंगावसत्रनसंनार॥नरीयतअनेकसोगंधभेद
आयुध॥छतीसजुसनअभेद॥रसवतिमिष्ठनजेराजरीत॥नंगारनहलादेअनीत॥नरस
सराजगौजनसुनाय॥वरनैसुकवनसंम्भावनाय॥लेकनककलसनिकसेकहार॥परिबहिसु
नीरस्वादनप्रहार॥कोगिनेवस्तुनृपयेहकाज॥अबकोसकोसरछकसमाज॥छंदवैताल
सुनसाजवाजसमातसोचाराजद्वारविराजही॥नगकनकजहितजराउजीनन॥जात

जातिन ब्राजही। जरितार वस्त्र जुजीन संजुत पाट कोरि अमानिये सब तुरंग देस सुपेत संभव
जाति अन अन जानिये। सुषवाग साचे नर सुनावै गवन पवनन समगिने। तिरछे जुत र्किते वीज
कर्कत सब हिअंग सुहावने। घतिरंग रंग पमंग पाट जु। अंग अंग जतंगए। आरोह स्वामिक अग्र
गामिक चाल तेज सुचंगए। आरूढ ओपित सुन्न इसामित। सस्त्र अस्त्र सरूपए। वर वीर धीर जुवी
र विद्या साच वाचा सत्रए। गज उजग जत सघन लाजत। छरितु छा के छ रहरे मद अंध माते धा
प धामते। जलद मांन कुजलनरे। सिंदूर विछुरे अरुन सिर पर सेत चामर सोनए। मद लेप अ सित
कपोल मंडित। भमरसी रसनलीनए। बिनु दंत उज्जल कनक बंगरी। जरीव गमनि जोपए। आरसी
तअन्तेक आकृत पताका ध्वज ओपए। मदमस्त मैगल सतन संकुल। लोह लगर लगए। दलअ
यदंतीय प्रबल यंतीय। वहत मग्ग अमग्गए। मिलज्वलत मंगल चरषचंवलि। भ्रमत यौतपमान
नी घन घटा कारी मध्य बजु यां। दमिक मांन कुदांमनी। सफिसु नग संदन साज संजुत। बने वि
वध विछावने। परिदास पाट वटमय। सुरंग रंग सुहावने। घतिरथन कलस पताक ध्वजिघत। फ
बितन नफ हरावही। जुत छुरंद हय वर बृषन जोते। धएस जिवत धावही। छुति कनक कंकनि सु
नग धुनि सुनि सुर नमन मोहीए। समचलत जलथल अंतरिष कूस बहि लातन सोहए। सवि का
सुषासन जात अन अन समय सेफ सुहावनी। पटरो मव स्त्र सुरंग जपटिय। रूप सुष संभाव
नी। छंद प। गज हय रथ पय दलमिल अज्ञान। निरघोष गिगन वाजे निसांन। कुलदेवी देव
पुजा सकीन। द्विज अस्वन करि गौदान दीन। द्विज गुर वसिष्ठ अरु वामदेव। जाबालि रुक स्य
पायन अजेव। दिरघा कुमार कहि यदु जात। मुनि विस्व वेद कस्यप विष्यात। मिल सुक विसि
चार न समांन। विधवंद सुतमागध वषांन। दूहा। बदे वसिष्ट सु- ष मत। रथ सु अय गुर राज
धिवरथ हिद सरथ नृप। चढे सकल सुन काज। २७। छंद पधरी। इसाद वले रिषवर अनेक।
आरोह रथन वन एक एक। सहनरथ वरगुन छत्र साज। मए रथारुढ राजाधिराज। निरघोष
गिगन दुंदुभि धुनिननाद। विस्तार विविध जय जयंती वाद। दूहा। जालग वाषिन जुवतिजन।
गावहि मंगल गीत। देषवरात जु अमित दल। वर षहि उहपवीत। २८। छंद उधौर। सुन सुगन
होत सकांम। मिलया ह उछ हराम। समकलस जुवतिन संग। अरुन हे उन उबरंग। सत सुरभी
सुषसवछ पय पान देत षतछि। मिलहूर दधघट मीन। करउधमिर गत कीन। द्विज कै सउस्तक
देष विस्तार सुव स विसेष। निनदाचाप सजील। सुनद साआई सुसील। कतसछद छिनका गंग
योन कुलद रसनलाग। तहालाव आय सुषेत। दिसद रस उनि उनि चेत। मिलदाह है प्रघमाल सम
अंग आई सुछाल। थिरथेमकरि जुसुथान। दूब सिषर बोल सुवान। वर सछ स्यामावांम। त
रुहरि तवै वीरतां म। उविपवन विधअनंद। सो गंधसीत सुमंद। दूहा। जथा मनोरथ सगुन सुभ
अए अषिज नुवपाल संघन गारे सयन से। वाजत चले विसाल। ३०। विधहरि दरगोरी सगुर म
हा गने सम नाय। बनी जान रघुवीर की। जो किद्वरनी जाय। ३१। छंद पध। सुन दिवस सुगुन दिग
विजय साध। आनंद समूव र्जत चपाध। चतुरंग चमू सफ जान च्यार। सुकमीय च्यार मग्ग द्विवि
चार। छंद वैताल। गज अस्व करन निल देअगिनत। बजत मंगल वाजने। सदनादनेरी यअम
र अंग। जाफ किम कोगिने। पंच सछताल मृदंग पूरित। वासतं त्रियवजए। गंधरब किंनर
गुनी ज्ञान न। सकल मंगल सजए। ती सान धुनि गज घंट गजत। विजय वरू दल वजए। ति

इहरिन्न नभअंतरालय। जनुघनाघनजंगए। निर्घातहयखुर सद्दनिश्चल। चमूचतुरंग
नीचली। पातालपरबतमालथ्थी। अष्टआसाअंकुली। दुहा। गरजेगयंदनिसानधुनि
हयहेषारवहोय। वातपराईआपनी। कहीन समके कोय ३२। सुरखधिंतनीसांनसुरव
जत्तवारहीवार। वर्षसुमनहरिषतविबुध। ईडउछाहअपार ३३। सितवधाइसरितसबबा
सवाससुषवृंद। करिराबीसंजुत सकल। असनआद्यआनंद ३४। कुलमंडनरघुनाथकी
जहाजहांवसतवरात। तहातहांसबसंपदा। धरीविदेहविष्यात ३५। छंदपधरी। संक्र
मपयांनदिअचार सेन। सुनसीमआयमिथुलासुषेन। यकवीवरातसबनईआय। सबसुन
टवीरअपनेसुनाय। दोरेजुवधउवासमयदेष। वेगजुतमिलेजनकहिविसेष। देदूबवधाइ
पायदांन। धनुनिकटत्यांनआइथमान। सकमौजनकचतुरंगसमाज। वसप्रेमसामुहेहो
जैतवाज। अतिवेगनृपतडुवअयआन। परसपरलेटवीतमथमान। मिलउतनयराजसम
धीसमोद। रसविनयकरेउनिरथ्यारोद। नवनेदसहितदुवदलनरेस। उरमभकस्योमिथुला
प्रवेस। मिलआयजानवासेमहीप। दासीनसजेआरतीदीप। उछाहकलसआएअनेक।
वनितासज्ञानमंगलविवेक। दिआसनदसरथबैवदेव। सजितेमछत्रचामरसनेव। विश्वा
मित्रजनकप्रतवाक्य। कवित। विश्वामित्रविदेह। राजस्कलोविचारीय। जथावंसव्यहा
र। करिकुसबविधिसुषकारीय। देवविदतआचार। बूझगुरबंधुमित्रीबर। मंगलगानविधान
कलसतारनउबवकरि। सबबोलसखिवसेवकसहित। देवसुअज्ञादीजीये। जिहहोयन
हिनकालतक्रम। काजविलंबनकीजीये। इतिश्रीरामचंद्रवरातराजादसरथमिथलाआ
गमन। कविरोवाच। दुहा। रामलषनदसरथदरस। दिषनकहअकुलाहि। वनीसकुचअरु
प्रेमवस। पगटकहिनउरपाहि। ३६। रिषवरविनयविवेकलषि। सुषपायोसज्ञान। उतवहुज
कुअविधेसप। मिलियेसुतसनमान ३७। आएविश्वामित्रजब। जनवासेसुषपाय। सुनतमा
नदसरथसुतन। आउनसनमुषआय ३८। विश्वामित्रहिसामुहे। आएअविधनुपाल। याहत
सेसुषसिंधुमुनु। लियेसंगदोऊबाल ३९। छंदपधरी। पउधारतहाकोसिकवुनीत। आगेसु
रामसानुजअनीत। अवदेसरिषयसामुहेआय। कीनेप्रनामदंडवतकाय। पितुचरनलगे
राघवप्रकास। उरलायलहेसानुजसहास। अवधेसरामलएकंवलाय। प्रवसेसरीरमनु
प्रानपाय। जुनिरामवसिष्टहिलगेपाय। लीनेआसिषदेउरलगाय। तहांरामहिनेटेनरथ
न्हात। सुषसागरनाहिनउरसमात। विधजुक्तपरसपरमिलेवीर। सबजीवएकअरुचवस
रीर। सानुजवीरहीमिल्योसाथ। हितमनक्रमहानिधवढीहाथ। सुनसत्ताबैवमानुजसमा
ज। रिषराजसहितराजाधराज। दुहा। सुतमिलदसरथजिहसमय। वढसुषसिंधुसुनाय। उ
पजेआनंदकाजयह। जोकारूनसैकहाय ४०। सुतबेवपिताआगेसनेह। धारेसुधरमम
नुदियदेह। सतानंदआगमन। तहासतानंदमित्रनसमेत। जनवासेआएहियसहेत। सब
उचितमंगलिकवस्तुसाजि। विहसितवितांननीसांनवाज। विधमंगलगावहिजुवतीछंद। उर
वदेसकलजावकअनंद। सबसाजदेषकोसिलनरेस। समतानलहतसंपतसुरेस। मिल
सुतनसहितनृपकियप्रनाम। दियसतानंदआसिकसुताम। सतानंदवाच। मिलमासमागसि
रलग्नवेष। गोधलुसमयहिमरितवसेष। छंदवैतालो। सुनसमयसबकिस्यानसंजुत

निकट्यआयनरेस। गुरसहित गृहविदेहकै॥ अवकरहुउनिषवेस॥ कुलधरमविधविप्रदारक
रिकरि। गुरवसिष्टहित्रग्रकै॥ सुतवंधुसाजनसचिवसेवक॥ साधुसंगमग्रग्रकै॥ रथहरिदह्य
समसाजराजित। वीरवहुआरुवनै॥ तिहवाजघोरनिसानजिततित॥ घनघुमरमानहुघने॥ सुष
देषसंपतजाइसोना॥ अमरपतअविधेसके॥ मुषसहंस सेषविसेसमहिमा॥ समनकोउकहि
सकै॥ सबछयोगिगनअनूतअनगन॥ विविधसंदनवनरहे॥ सुररमननाटककतकनुह छ॥
जायकविकापेकये॥ इवनृपतसंपतिदेषदेषसु॥ अमरआनंदितनए॥ स्वनाअजोकिकरी
तराजत॥ वारवारहीवरनए॥ उरिजुवतिजोवतिजालिजालिन॥ सुषवरातसवेषिए॥ निजनागप
रांमविलोकरूपहि॥ लेतजनमसुलेषिए॥ इतिसमयअविथनरेसआवन॥ नयोग्रेहविदेह
के॥ सुषदेषसंपतजनकसोना॥ नियतद्रहकेनेहके॥ नृपद्वारतोरनरवितनिश्चय॥ विवधउभे
विसेषिए॥ सोवदनाकरिरामसानुज॥ वगटमधवेसए॥ तहांकलससनमुषथानतरुनी॥ विन
यसुदरबृंद॥ ओरोपितिहतांकनकंथासन॥ बेववरजगबृंद॥ डुहा॥ पेषेइछहदेमपंर॥ अग्रसु
वासनिधान॥ ताछिनकेसुषसुरसगन॥ विथकेनसकजवषान॥ ४९॥ जुगमनरसुरवंधुजुत
मिलिसहितउदमाद॥ जैसेजलनिधविमलजल॥ मिलतमुकिमजाद॥ ४२॥ वैताल॥ सुषरामचंद
विलोकसबहिन॥ अमितउरआनंदनए॥ सारंगकंवसुसांमतातन॥ वसनतडितविराजए॥ विधु
वदनदिनकरतेजविग्रत॥ नेनजलजसुहावने॥ आजांन्हिबाहुसिंघकटितट॥ विकुलछवि
डछहबने॥ विउवादउचितसेविनुषन॥ वक्षदिव्यविसेषए॥ वनमोरनगमनिकनकरा
जित॥ अमितविधअविरेषिए॥ इंडोवाचककवित॥ रामचंदनुकचंद॥ देषिईदहिआनंदनय॥
सहसविलोचनसफल॥ जानमनमांनिवुममय॥ उस्सहगोतिमआप॥ आपवितकिअनुग्रह
महाअहितहितमांन॥ अमरपतकहेरहसयह॥ कतकामविवसनिदतकरयो॥ हनसुधिन
ममआपदिय॥ इहसयदेषअविधेससुत॥ लोचनबिनजुगलाजलिय॥ ४३॥ कविरोवाचछंद॥
सुन्दरवितपदूमरूपसुथान॥ अतहितंगलगियासमान॥ कतकावलितअंगनअनूपक्र
ल्तेकरंगआनेअरूप॥ अधिउरथकनक घटपंतिओप॥ जुतहरितवासअविलंबजोपरं
वकदलिकनकमयकावरंग॥ फलपवजुकरुउपजतउतंग॥ रुकममयरवितततहांवृषराज
विथअंगरंगमीनवीराज॥ लचपछवमंजरउहपतास॥ विधसुषदविवधकतमसुवास॥
अनेकरत्नमयफलअनूप॥ राजतप्रमांनजिहरंगरूप॥ करिमोतिनकेतरूगुछकीन॥
नहिबिनपरतरविनानवीन॥ जुतिमानरंगजिहगेरजोप॥ घतिमासुवृदसकतमप्रयोग॥ सो
तजोगकुजतसुतात॥ वंदनसुमालयहयहविराज॥ रतिकामवागमनुलताराज॥ कनकम
यथंनतोरनकीन॥ निरमतमयूरजहांतहांनवीन॥ वनकलस पताकाधजअवास॥ उतंग
अषिलचुबतअकास॥ घतिवारवंधतोरणवसिध॥ सोदेषविमोहतअनरसिध॥ सोदेषवि
जोतमयरत्नदीपकसंजोय॥ हसतमनुधांमपरकासहोय॥ विदकारचितमंगलविधांन॥ र
हआसनसुधार॥ वहुओरवनीवोरीसुच्यार॥ घतिवोरीसुमंगलप्रवेस॥ रतिजजहांकीनेगुर
रविस॥ सोनागपातीमणिगारसाज॥ विधफुल जहां जुति तीविराज॥ [illegible] नवथलथलेम

गलउचित ॥ चारीतिविमहार ॥ करिचौरीपरवेसकिय ॥ चारूराजकुवार ॥४३॥ परेपद्दमयपाचहै
नेगीआऐलेनवरकिम्पाविरंजीवने ॥ लगेअसीसांदेन ॥४४॥ चौरीप्रवेसनं ॥ बैठेमंडपमाझावनि
आसुरकुलदाआंन ॥ होनलगेवेदनविदत ॥ जथाजोग्रकृतजांन ॥४५॥ जनयनरेससबंधुयद
अद्भुतमंडपआय ॥ देषतमानक्रुद्धदेवसुरसमाजसमुदाय ॥४६॥ छंदपधरी ॥ सुनघटतदेमआ
सनसुरंग ॥ अनमोलजटततनगअंगअंग ॥ निजबैठतहांदसरथनरेस ॥ स~~बंधुसुत~~कुछत्रसी
स्वामरसुरेस ॥ विष्यातवीरतवहंसवंस ॥ अवितारदिव्यवस्त्रावतंस ॥ श्रीपतसबंधुतहांजनकआ
पवतिआसनबैठेजुतप्रताप ॥ आराध्यसिधपरसिधआन ॥ विद्याधरचारनविभुधवान ॥ पधका
रीमागधसूतआय ॥ सबकविताबंदीजनसुनाय ॥ जाबालअत्रगोतमपुजात ॥ तहांनारदाजक
सपविष्यात ॥ ईसादद्विजरिषवरअनंत ॥ महिमासुकरमअतुलतमहंत ॥ दुहा ॥ कुलगुजितरघु
वंसके ॥ जहांवसिष्टरिषराज ॥ वामदेवमिलव्यासकेकरतजथाविधकाज ॥४७॥ वंदतवंसविदेह
के ॥ सतानंदसुनसेष ॥ वेदप्रनीतविवादविध ॥ आश्रतकाजअसेष ॥४८॥ करनसमर्थजोसिष्ट
करहमुनिवरविश्वामित्र ॥ पधकतेजतपस्याअतुल ॥ तिनकेअमितचिरत ॥४९॥ छंदप ॥ कीनेव
सिष्टआरंभकाज ॥ विसतारअनलवेदीविराज ॥ देसमधिउचितआकृतीदीन ॥ कृतवेदविदतथा
रंभकीन ॥ छंदतधीर ॥ सबरिषनद्विजसनेह ॥ विधजुक्तराजविदेहउ ॥ निवामदेववसिष्टपरिपा
यपूज्यपतिष्ट ॥ देवसनन्पकदांन ॥ सबनातकतसनमान ॥ अरिवसुअविधनरेस ॥ सोगंधदि
असुदेससबहंसवंसीसाथ ॥ हितपूजजोरिसुहाथ ॥ ब्रह्मादिकआगमनं ॥ दुहा ॥ विधहरिह
रदिग्नाथसब ॥ दिव्यबनावदिनेस ॥ आएमाहउछाहयह ॥ साजसुधद्विजवेस ॥५०॥ संपतिसो
नासुषसमयविषविविधविवहार ॥ मनुपवेदेहकेसुमिसदि ॥ आएमध्यअनिवार ॥५१॥ निरषअ
पूरबचुजतिनहि ॥ आसनउचितवनाय ॥ पूजाअरचाप्रेमपर ॥ करीविदेहवनाय ॥५२॥ रामचं
द्रजांनीरहंस ॥ देवकपटद्विजदेह ॥ कीनीपूजामानसिक ॥ समयविचारसनेह ॥५३॥ पहिचांन
तअपनेनपर ॥ सबमनएविवससनेह ॥ रामस्वरूपपियूषकरसदेषतभूलेनेह ॥५४॥ वसिष्टवाच
छंदवैताल ॥ सुनसमयकसोवसिष्टरिषवर ॥ सतानंदहिप्रेमसह ॥ करवसनन्पनजुक्तकिम्
सवदिआंनकूवेसह ॥ अथब्रह्माणीआददेवस्त्रीआगमनंकविरोवाच ॥ विधविग्रुरुद्रहिआ
ददेसब ॥ विविधवनितातनवनी ॥ तिहसमयअंतरगुरिशवेसतिकपटजेषसकारनी ॥ छिव
राधतिडलहनीसियको ॥ माहदेषनच्चाहुली ॥ कृतकपटरूपअनूपकामनि ॥ मांकरनिरा
सहिमिली ॥ इहवीचकै गुरुरनवासअंतर ॥ सतानंदसुआयविधसहितलग्नविसेषवेला ॥ सब
नकहितसुनाय ॥ तहांसुनतरांनीविप्रवांनी ॥ सुषनचितसमावही ॥ वरविप्रत्रियकुलवधु
हथा ॥ अतिप्रकुलतिआवही ॥ न्पनारकरकुलरीतनिगमविदतकर्मविसेषएयहसम
यरूपजोउनआश्रत ॥ लहतआटकलेषही ॥ छंदप ॥ सषिमंजनादषोडससिंगार ॥ विधुवद
नविलोकतवारवार ॥ लषिसोनाजननीलोनलेत ॥ नोछावरदीनवधवनदेत ॥ निमवंसनिमं
डतमुदसनार ॥ अविलोकिसियदृजलपीयतुवार ॥ न्पपरांनीयअग्यासनेम ॥ पधरावहिउल
हनसहितप्रेम ॥ गुरवधुसमंगलज्ञानगीत ॥ पधरायसियदमंडपसप्रीत ॥ अविरतमांनजुवि
तअनेक ॥ विचलीकविरगजगतिविवेक ॥ निरषनसुषमिलचलिअमरनार ॥ कृतकपट
रूपत्रियमोहकार ॥ रहनातीकवरमंडपहिआय ॥ समजुवतिवंदमंगलसुनाय ॥ तहांप्रेम

सुरुकिन्हाउनीत । संग रामचंद्र बेगरसीत । दोहा । सुतासील ध्वजजनककी । सियाअजोनिज
जांन । नरउरमालाओरसी । बिस्वविदतसुनवान ५५ कृतीकुसध्वजभ्रातके । दैउनिकासुदेस
मांहासुलछनमांडवी । श्रुतिकीरतसमवेस ५६ सीतारामसमर्पिता । साधुनमिलासेष । नरष्य
मांडवी रिउघनहि । श्रुतिकीरत सविसेष ५७ तबबैवारैकमजुगत । बरकिन्हागुरवांमतहावसि
ष्टसुनिष्टमत । करतनएसुनकाम ५८ छंद १ । तहांप्रथम सविधपावकउजाय । गुरदक्षदिस
नधुन्यवेदगाय । सुरिद्धजसबैगवरीगनेस । आचारहीनलागेअसेस । आएजुदेहधरिविबुधवे
द । आनंदपढतसाषाअवेद । मधुअर्कआदमंगलसमूल । कृतहोनलगेसबसानकूल । दोहा
राजजनकपटरागनी । मिलगुरुजुवतिसमाज । आइमंडपमाकृतब । कंथसमीपसकाज ।
५९ । जोरिगांवराजजनक । पटरांनीसउनीत । जोहिमगिरमैनामतीरू । द्याहरसरीत । ६०
वामअंगवनतावनी । ददानराजविदेह । निकटवेदकाआयनिज । दंपतिसहितसनेह । ६१ । देव
दारी । कोपरकनकअग्रलेधरीयो । जालीजतननगनमनिजरीयो । कनककुंभजलजनकमं
गाए । सुविसुगंधबहुविधनवनाए । श्रीरामचंद्रचर्नोहिकमहिमा । जानतसकलसतानंदकी
मा । रांमचर्नकरजनकपषारे । ध्यानसदाइवैसंकरधारे । परिसजिहनइगंगउनीता । विवधविद्यत
नयलोकविनीता । रजजिहपरसतगोतिमनारी । सिलतननतजसदगतहिसिधारी । जिनकेध्यानवि
चसुरमुनिजोगी । विषयविजोइसाधुसंजोगी । नचकूटोपदनषहिउहारा । तिहमगसुरिसरिता
अविताराः । जेनुजुगेससेससिरसोनत । लानसकेतैमैललेतमनलोनत । जेकमलाकुचकुंकम
मंडितवंदतसुरनरपापविषत । जेपटविधविसेषउरधारे । परमसनेहविदेहपषारे । दोहा । जन
कजनएकृतकततहा । रामचरनजसीस । धारतवरषेसुरसुमन । दीनीरिषनअसीस ६२ जल
करिअंजुलिरमुनिजुत । जनकयेहसुनजोग्य । सीतारामसमिर्पिता । हरनमंत्रप्रियोग ६३ चर
नपषारेवरनकेकतकिन्हासंकल्प । दीनीविधजुतसुनदिवस । विगतअनेकविकल्प । ६४ वर
वरनीशिरमोरवनि । मनिमुक्तामयमांन । जानकसोनाजगतकी । एकचोरनइआन । ६५ वरकिना
जुतवेदविध । करकरयहनजुकीन । उचयउतरियचोरतहा । वजजयंयसुनदीन ६६ छंदवे
ताल । प्रतिथिहचारिनिर्वितपरिदारी । कुरंगसुरंगए । तिनमध्यनिरषतराजरमनी । अतिप्रयोदितअं
गए । सोवाद्यकंतीजुवतीअतिसुनगीतमंगलगोन । हगद्दिगधतहिसुकटाषकोलित । जालमीन
सुजांन । यहजालिरंध्रनतरूनिजोवतगोषनगा [illegible] तिसहूमिलफकारिपूरित । सोधसोधसु
नाय । दिसदिसनसेकुलिजुथदासिन । नवउछाहनिहारही । मुषगानमंगलविउलमिलमि
लविविधतर्कविचारही । अथगोत्राचारकृतं । दोहा । गोत्राचारवसिष्टगुरकहत । नएसुनका
जसुनतजथाविधउन्हसुषमुनिवरराजसमाज ६७ वसिष्टउवाच । छंदउधोर । वदीवेद
सम्रतिविचार । इहचल्योसाषीचार । नवनूतहितनगवंत । ईकसमयदेवअनंतप्रभुसेवकु
नपरिजंक । सुषसइनकीननिसंक । वटप्रलयजललतिहवार । अतिसयअगाधअपार । थित
नालकुपसुथांन । मिलपकनीरप्रमांन । करितारनाभीकूं । पउतिपल्लकवलअनूप । कृतहंष
तसहितकाज । समसजिलनालविसाल । जलअतनालसुजाय । सोविकसमलसुनायअ
नुतियपंकजएक । अमोदप्रसरअनेक । तिहकमलनेअवितार । अनिजोनिद्दलउदारउ
तिपनविसमयआप । मनअनमितनोअनमाय । अबकोनकरहांआय । समकोनधोपितुमा

राम ६१

य । कोवरननामविसेष । जरवग्रौ जमनुअसेष । क्विकमलनाल विसेस । तिनिकस्यो बिड

प्रवेस । वकुगएकल्पिविहाय । पिनालअंतनपाय । वनुनानरधप्रचार । क्विकउदरगौतिहवार

नवनीततहां नृमत । तउउरपायनअंत । विधनएअमितविहाल । निकसेसुपंथतिहनाल । ग

तगरननौतिहइपान । महिमासुजांनअमांन । बकुबुध्यगतजोबाल । कृतदीनतातिहकाल

बनुदीनबंधदेव । अनविद्यअमितअजेव । ३३॥ । बरनसोआदसषोड समङकवीसमबि

यआंन । सोसाकुउनजत्नकरि । विष्णुकसोनत्नवान । ४॥ । बदउधोर । विश्वासमननत्नवा

च । सोईकमलनूगहिसाच । तिहकमतबेवसुतांम । कृतसविध्वंसकांम । मनलगीजोग्यसमाध

सबहुधानमासाध । समनायईडीसोध्य । बकुउपजिअंतरबोध्य । परितुरषध्यानस

प्रीत । बसतपहिकल्पवितीत । ३५ । सोइजांनसत्यमनवच्चसमेत । हरिदियोदरसतपउध्य

हेत । तिहबनविदेह गतलषअनंत । करपरसकस्योतवरमाकंत । वितनासक्कतइवदनचार

निजरूपसुघननयनांनिहार । आनंदअंसुरोमाचअंग । उरउपजिनावसातिकअनंग । दि

वाध्यदेवविधनामदीनपददयोसिष्टकरतप्रवीन । विधनएप्रजापतिचितविचार । उतिपन्यते

जमिटगोअंधार । नवबम्बीजउतपतनांम । तहांनएचरात्वरजीवतांम । महिबातगिगन

जलतेजमेलभेत्न्मसलिलचरखितपेल । धरिकालमूलअरिजीवघात । विसतारसिष्ट

वेदनविष्यात । वनषानत्नतनवसीचार । वसकरमजोगपसुबउषविचार । विसैसतारवि

स्वमायाविथाप । अरुरहितसबनतेहरआप । कृतउरधपायपदब्रमलोक । सबबसतब्र

मनयसुरअसोक । बबबरनवेदवानीसुच्यार । कृतकरमलोकउधारकार । उपजेमरीच

विधउदरआय । सुतनएतासकस्पपसुनाय । कस्पपप्रजापउसानकूल । विवस्वाननएम

नधरममूल । मनुवेवस्वुतनएमहीपाल । विस्तारवंसतिनतेविसाल । इहवाकनएआषं

लेस । सुततिहविधबउपजेविसेस । उपजेककुहस्थिअतिबलअनीत । तउनिनएअतेना

प्रथुउनीत । नएविस्वगंधसुतबंदवीर । सुबनासधरमसावस्तधीर । हहदस्वकुवलिपार

त्वकवितीत । उपजेदिहास्वतिहसुनअनीत । हरिजस्वनएसुतउनहेत । महिनएनि

कुमदलबलसमेत । बरवीरनएनृपवर्णाश्व । समधर्मराजनीतिहकुसास्व । सिनजीत

नएसुवनास्वसूर । प्रष्वेसमानधातासहूर । पुरुकुस्वउनदस्वपाय । अनिरणएहरी

यस्वआय । अनुर्णहि निबंधनउनाम । सत्यबृतउनविसिकुसुतामकुबवेदसहा

इकहस्विंद । अवितरेसत्यअविनीसुइद । रोहितासमरेसुतहरितराजचंपकसुदेव

सुवनसाज । उनविजयवृकनएकरुकवीर । बाकुककुधरमसुतसगरधीर । असमंज

सुराजाअंसुमान । उगटेदिलीपतनृपतिभमांन । क्रमनृपतभगीरथउग्रकीन । पुहवीसु

आनिगंगाप्रवीनसुतनएनानउनिसिद्धदीप । असुतासुप्रगटहरनउयीपकसुपए

वनएमहिसुरवेकामनतिह । नएसुवाससोदासताम । असिमकसुतमुलकनएआप

दसरथ ... सुदोलविडपसुदापविश्वसनएषट्टांगवीर । नएदीरघबाकुरघुअजस

धीर । दसरथसुतियनएविष्णुचेव । सविसेषसुरासुरकरतसेव । राजाधराजसुतराम

चंद । अवितारकवरउहमीसुइउ । इक्ष्वाकवंसवरन्योअसेक । बरहप्रहोकुवेनवबि

सेष । जोरीवरवरनीचीरं जीवा दिनदिनबृतापरहाकहहब ... सावोवारब

सिष्टसुत्त। वरणकह्यौरघुवंस। पूरणपराक्रमतिजपन। प्रथ्वीप्रगटप्रससि ६९ छपै॥ निराका
रनिरलेप। नियतनिरछिद्यनिरामय। निकलंकतनिरसंक। नाथनरसिंघनिर्गुनय। वारधजाता
नार। नेहवामंगनिरंतर। निगमहेतनिरवंस। करेनिसेकनिसावर। नयलोकराजदाताअतुलदी
नसहाइकदुष्टदम। सोइवंसधिननरहसुकव। जिहसुरामलीनोजलम॥ १॥ इतिश्री रामचंद्रसा
पीनारवस्कुलवंसवंसवरननं॥ जनकसीलधुजवावदुहा॥ कहतबसीलध्वजजनकसुन
कवसिष्टरिषिस। कहहुकुमारोकरिकृपा। वरननवंसविसेस ७० वसिष्टवा॰ कह्योवसिष्टविदेह
सो। विवरसविस्तरवात। सुनकुन्नएनृपमूलसो। नवकुलजेविष्यात ७१ वैवस्वानमनुकेनयो। नृप
इक्ष्वाकसुनीत। तिनतेनाद्यौवंसवर। परमपुन्यसुप्रीत ७२ कुलमंडनइक्ष्वाककेनिमनौपुत्रन
रेस। तिरैअयुतअविनीतभ्यौ। दुरगमवनदनदेस ७३ तपज्यौपरबतनेमपरसे। कौनकारन
पाय। तातेपायोनामनिमसवैसमृथ्यसुनाय ७४ राजानिमकेपुत्रनौ। महावीरमिथुनाम। प्रगट
करीमिथलापुरी। घरदहनधनधाम ७५ छंदपधौरे। मिलपुत्रजनकविदेहनए। पुत्रवंसदिव्यदे
ह। नृपनंदनवर्धननाम। तिहनन्दसुकेतसुनाम। नएदेवराजसुनाय। तहथेहसिवधनुआय
पुनिवृहदविकुलविदीप। नएमहाविजैमहीप। नएसुधृतराजनरेस। पुतिदुष्टकेतुसुदेसदिव
हरसदेहयदेह। मरुसदासुकतसनेह। पुवनौप्रथीपकनृप। अरकतारथजुअनूप। नयेदेवमी
ढद्याल। विस्वस्थवाहुविसाल। नयोमहाधृतजुमहीप। पुन्यकृतराजप्रथीपनृपमाहारोमाना
म। धनस्वर्णरोमाथाम। नएहस्सरोमाराज। पुवजनकसद्गानाज। दुहा। जाकेसीलध्वजजनक
अनुजकुसधुजएक। विद्याविनयविवेकविधकर्तसुधर्मअनेक ७६ आगेकहीयेनामए। पावै
जनकप्रमान। इहसंज्ञानिमवंसनृप। प्रगटसुलोकपुरान ७७ पावनसीतापुत्रिका। रामचंद्र
जामात। सीलध्वजफलसुकृतको। पायोविस्वविष्यात ७८ कृतजुतदोकुवंसको। साषोचार
सुनाय। होमजथाविधहोनलग। सुभविवाहसुषपाय ७९ कहेवंसनरहरिसुकवि। आप
सुनेअनुसार। विवधचन्द्रलछिमजो। विदुषसज्जनपढकुसवार ८० इतिनमवंससवरननं॥
वंसकीरतं॥ छंदबेताल॥ कहियइनआदसुकृतकरकरसतानंदवसिष्टपुनवामअंगनआ
निवामा। मंगलहिमनइष्ट। परिक्रमएमंगलनाविरीपुरिषानकरिषतपांन। पतअयपुलद
नप्रसपावनप्रीतवथ्यप्रमानतहांदई। विजनपुरनाकुलीवेदविधनएव्याकु। नुविगिन्धुनि
जइजयंतीवाचा। चरअसिषप्रष्टाकु। सुरिसुमनवरषेहियजुहरषे। विवधदुंधुभनवाजही। मि
लगाननतानजुअपछरागन। गिगनमंडलगाजहीनृपद्वारवाजनिसाननिरन्तर। ननननघोरसु
नाद। पुनलहेजाचकदानइरन। विहसजइजयवाद। तरिजनकअतिआनंदउपजे। नइनसु
षजुनिहार। कतकुलाचारसुवामकीने। वारवानेवार। नृपजनकबकुरीपाटरानी। परमआनं
दपाय। गनसिधसबजनुबाधगांवकिमिआपनेयहआय। दुहा। ज्योहिमगिरगिरजाहरहिप्रि
यहरहिजरासत्तो। विदेहरामहिदई। सीतासबसुषरास ८१ सविकाआरुहरामसियियोज
नवासेआय। मकरध्वजरतिप्याहमनु। जइतनिसानवजाइ ८२ कुवरकुमतजनवासक
हमिलसुषमंगलमूल। ननननघोषपनीसानधुनि। सुरगनवर्षतफूल ८३ जनवासेपुलहनसं
जुतउछाहासबैसिधाइ। दसरथनृपतविदेहतबविदाकरेपरपाइ ८४ सबेविलोकविवा
हसुष। उमगतदेतअसीस। अतिआदरआनंदसो। देरनगएरिषीस ८५ सुषदिविहानीसरिव

री। दिनकरि दरसन दीन। सुरइज्यानित कत जु सब। लोक ज्याक मकीन। पद जनक विदेह स
नेह सौ। संजुत रिषन समाज। जनवा से अविधेस पह। आए समय सु साज ८७ सनमुष आए अ
ज सुवन। प्रेम सहित पधराय। धरम सत्य मनु देह धर। बैठे सन्मावनाय ८८ सतानंद वा। छंद पध
त। सबसतानंद सब हिन सुनाय। यह करी विहत विनती वनाय। तुम सबै ब्रह्म रिषवर विनीत
पाउ धारे इह वाज गत पुनीत। निमवंस सरस तुम कृपा कीन। नहीं वरिनी जाय इक मुष नवीन।।
जनक वाचा कवित। साधत सिध समाध्य। जोग आराधित जोगी। तउ नहीं दरसन होत। रहत नि
त विषय वियोगी रूप न रेष विसेस। आद अविसान न आवत। निगमागम कुपुरान। कोउ न कि
ह हेत वतावत। जोच सत निरंतर रहजीय। जुन जानी मुषचारजु त। सोइ जोत देह धारे सगुन
सब नदिषाइ गाध सुन। १। जिनके कुल तप तेज। कृम जल वसुहि विहरीय। जिनके सत सनेह
अविध पुरलोक उधारीय। जिनके सुत पद रज हि। पाय सिल त्रियत न पायो। हर धनु नम्र जोजी
त जिह वर सुज सव ढायो। जिन आ सुर सम स्अनेक जय। रिषसुरेस सद्धा करिय। महिमाप
सिध जिनकी अमित। हम को अमर न उच्चरीय २। राजा दसरथ वाचा। छंद प। डुर लन्न इम
हि रावरी दास। उनि दीनी उची रूप रास। रिववंस सरस तुम जनक राज। कीनो जु अनुय ह
आह काज। पूरन प्रमोद सगपन प्रमान। जुग नए राज मनु एक जान। भारद्वाजो वाच। सुषदु
षजन एतुम एक संग। नृप ता अरु पायो पदअनंग। कोउ एक व नो कुलम हक हाय। कुलकरे
गरब तिह वचन काय। प्रतिउरषत तुम राजा पुनीत। गावत जस जिनके सिध गीत। वसिष्टवा।
को उहोत सुषी यह लोक एक। उह लोक न रयविल सत अनेक। दुष सहत को उ यह लोक दे
ह। सो उहां सुरगत युक्त तसनेह। लोकु लोक संनेतको उगारि दीन। जुवन एनिष्ट अघ जाल
लीन। प्रतिलोक लोक महिमाप्रकास। मिथलेसन की समसावकास। सवईयो। जो गकु लो
गस जोग विजोग किं। पूरन पुन प्रियोग प्रकासे। राज सस्वाति कन्नावन के सुषक। ष्टक रे रिउ
रोरविनासे। र सस्वाद अनेक विषाद विना। पदवी जुग साध्य प्रमोद प्रनासे। अदन्नूत विरत्त
विदेहन के सुनि देव अदेव नरेस समासे १। जाबालि वाचा। छंद प। मन जो तिज दविश्वत
अप्रमान। दिनकर संजोग वाढत निदान। तिह कुते निसाकर वंदनीय। जदि सिंधु लाल महिमा
सुलीय। सुरसरति प्रविव्हार हि सुनाय। पद वावन पावनता हि पाय। निमवंस कुती महिमा
विसेष। सिय आगम पुन्य वाढे असेष। विश्वामित्र वाचा दुहा। कृत सुन जनक नरेस के। वेद
विदत विष्मात। सीता पावन पुत्र का। जग करता जामात ८९। कवि रोवा। दिनक नृपत अव
धेस जुत। मंद स्थान महीप। वैठे नोज नसाल वनि। अविल संग महीप ९०। वेव ज्याक
मषा तिबकु। वरणचार सुनवेष। आस समुद ज्यावकु अवर। वरनन जाय विसेष ९१।
जनक वरन अविधेस के। पुत्रन सहित पषार। अनमोल क आसन उचित। ज्यापुक्त बै
ठार ९२। छंद पैअवरी। रतन जटित तिक कनक चौकी कर। धोय नृपत दसरथ आगे धरी। मन
मय थाल विमल विस्तारन। ता पर धरे मध्य वेलागन। सुर ए रत्नमय थाल सुहाए। नृपति अयधरे
मनलाए। परुस न लगे सुवार सुपावन। लोजन सत रह विधमन लावन। अरुम्रि स्टान विदध
वक आए। जे जु वतिन वकनांत वनाए। सम घन सार अनेक सुगंधन। वंछित स्वाद अनेक
नात वने। पांति पांनि हित नमहि परुसारे। पूरन नए अमित पनवारे। पितन्व कुक वर पिता

इकथा२६ करतजनऐनीजसुनकालहि। दासीजूथजूथमिलेदसदिस। वनीसिंगारवनाय
नेहवस। गावरितिकेजुतगीतसुगावत। सोदसरथनृपसबनसुनावत। दासीवा कहादितगारदस
रथकुवार। सुतनपितासुजससुनियतसुढार। बकुवीरविमारेबीनवाम। कुकलविकरीसोइवि
वसकोमइहकरमकस्योदसरथअवृतपितुकीतसनकुसइतहूत। कबुताहिकरमसुनिय
सनाय। हमजथासगतवरनदिवनाय। ताकेकोजानेचिरततंत्र। मननहीकाकुवसजंत्रमंत्र। उ
रनदिनदयाउपदेषग्यान। सुषमानतकरश्रोनीसमान। छंदसारसीगार। कुकलविकीनीरस
हिनीनी। नितनवीनीनागरी। मनविश्रमानीजगतजानी। अतहिलहसनआगरी। कोगिनेकीनेनि
तनवीने। १ती अवसरपाइकेकृतकिर्तताके। विषमवाके। सर्बकतुसुनाईकेपरउर्षप्यारी
निलजनारी। सुनकुलहासावरे। करनीकुलछनमिलनतनमनरतिपितुसोरावरे। दिवर
लिदेहीरूपरेही। नितनवनवजोबनी। गिररेषकजल। वसनिधजल। अरुनकंचुकीअनतु
नीवननीललरंगा। मोलमहंगा। अतिहीपतिरतआतुरी। उपरेसोहे। मननमोहे। चितवंचल
चातुरी। नागसफनमनरेषसुषगन। सहिजसोरनसुंदरी। दिसउरधपदधरि। अस्तसिरकरि
नोइजुतनितरसतरी। इवलग्योहिरणष। रीफसिषनषकपटइर्नजुतिहकियो। कृतगुरत
पापी। सुतलथापी। लानदइयततिहलियो। तिहकालतिहथलवटवलईजल। उपजअनआ
निओवधी। मिटमषनवअमरअरस्या। ब्रमउरविताबधी। लषिअषलइस्वरवतुदयापरवि
सुदजगवाराहकै। वारिधाविसारीयउर्वीधारीय। छिनकहीरदअग्रकै। नृपवेणुवेलापाई
ववला। नामकरिकछुनोगई। नुवपापनीनीमहिमलीनी। नारपीडततहांनइ। रिहआवरो
रव। दाहमनुदववेलकुजरिवितीयो। सोउतुककनामग्रो। जातबामयोवलतनेकुनषितियो
वहनईवि। कुवलमितुतअघमलरसनग्रसयोहीरही। प्यारीपराइवथुजुपाई। सहितआ
दरसंग्रही। तबहियोरहिपोवेमुवेष्योसुधताकीनीसवै। अंगारिसाजे। वाजवाजेतिहनृ
पतिनुक्तीतवै। परिलोकपायो। अनअघायो। वथुहिस्यानोयचीतसैनहीसोककीनोमन
मलीनो। नियतनेहअनीतसे। तिहसमयजुततपहिरनकसप। दईतअतिबलदेषिके। परि
ग्रेहपेसी। अजकुवैसी। वतुस्वरूपविसेककै। रसतसहिरातीमदमाती। ताहिनहिक
छिनतजौ। अनिआयोपियपरायौ। नांतनातीनसीनजौ। अतिगरनयाके। चितसुताकेअ
नाचारजुआदसोसुतदनतसाधहिअनिपराधहिकर्मअंगीकतिकस्यो। अनरथअैसोअ
तिअनेसो। सर्बव्यापककौसहेदीनहिडपारेलषिसुरारे। कर्तरषहसा। नितरहे। थिरनारि
थंनाअतिअवंना। निकटप्रगटेनरहरी। प्रहलादराष्यो। सुरनसाष्यो। वातनिगमनविसतरी
नयहेतनीनीछीनलीनी। देवहरिवंदहहई। सबसादीनेनितनवीने। नृपतिनकूंनोगईदुष्टा
सुदेषीविधविसेषी। उदकजुतदजआर्पई। प्रथ्वीपवित्रहिविश्वामित्रहि। हरिस्वंदसमर्पई
कुजदीनजान्यौमननमान्यौ। बलीबलदइतहरयौ। सोपीनतापसवरतकेवस। आजन्मव्रत
सुआवस्यौ। परिउरषपावननएउबावन। वनछलविस्तारियो। महिव्रपदमापीपीडतपापी। नृ
गुसुवनविन्हेषनयो। नृपनियमनाध्योबलहिबाध्यौ। अषिलजुवअउनाइके। कृतकपट
करनीलइधरनी। दइइदहिआइके। तिहइदत्याइहौ। मननजाइहौ। सुन्योहेहयअतिबली। वास
वविक्रमोयौ। उपनरोयौ। चिरचापलिउवचली। वरवचोअरिजुनमिलीतनमनसहसवाकु

सुजांनियौ उदमनजुमानीपाटरानी मोदमयरसमांनियौ छिबमदसुछाकौ दितन
ताकौ जमदग्नि मुनिमारियौ तपअनतिहछिनरोषधरिमन करिसरामसुजारियौ व
रवद्दरवाध्यौनियमनाध्यौ छत्रीकुलछलछेदियौ रुधरनन्हायौनिगमगायौ द्विजनमहि
मंडलदयौ हुतपितुरर्पनरुधरतर्पन रहे सरिसरितानरे इकवीसवेरहितुजनदैरहि
कुसमजववरिषाकरे उष्टाविसेषीद्विजनदेषी नीतधरमनजोयहै रहहैनराषीसद
जसाषी बलहिजायविगोयहै इकवीसवारी विचितविचारी मुननिष्ठामीमाषके इकत्र
लोकिकरावणादिक औररहिअनिलाषके दुहा सोकुवामविक्रमसहितकवरवितात
वकीनकरिविनयसुतंत्रअबरामकुवरनअधीन ९३ नृमतरहीनवनूपनजिवैनहाथि
रतापायअबदसरथअविधिसके सदारहैसुषाय ९४ सोकरिरामकुआजतेयाहिन
पावौओर निलरहौनृपग्रहनियत रामकुवरकुलमौर ९५ तर्कनेददासिनतहांगाइसु
नाईगारि रीझेराजाराजरिष रहेजुविवेकविचारि ९६ करीप्रगटनरहरिसुकवि राम
रिझावनकाज दीनीहसिहसनकदट सूरवंससिरताज ९७ छंदअमरारी जाजिगवा
हपंथजुवतीजनदेषतउहहान्दसरथसुवान सुनसुनसोध्यगवाहनसुदरिहस्त
परसपरकरितालीकरवर्नविलोकिताउलहतवनवन संकुचिततर्कगालिसबसुनिसु
न नोजिनवंछितआनंदेनरनर करेआविमनीषरकाकरिकर आएबीरावि वधवनाए
सोमयमदयनसारसुहाए सुंधातेलअनेकसुगंधनधौवारिवारिचरवेसमधीगन कुमकु
मसोरंजनीरअनेकहिनावतसीसअनगनिगहिगहि करिअरिचाइजासबक्रमक्रमयु
हचाएजनवासेप्रियातम विवधविलासअनेकवनाई सोरंजसुतसुषसैकसुहाईसौबैनृप
सुषसव्यासोएसीतलपषापवनसजोए नृपतिविदेहपरमसुषपाए अपरिदिवसजनवा
सेआए दूजवसिष्टअवररिषपावन नृषनवसनदएमनभावन दव्यअनेकजथाक्रमदी
ने करिमनुहारसुषसनकी दुहा कामउघासीउग्धदा बारिलहादइधेनतरुनिसपरक
रवरणसुबेसंजुतवछसुषेन ९८ आनदयोअसेषनरसिधनएसबकाज हेरेविश्वामित्र
के आएमेसुलराज ९९ उजाअर्घदानपन सबविधसहितसनेह वेस्वरनाकीनेवि
दाविश्वामित्रविदेह १०० कोसिकदसरथनृपतकहि मिलगनईसमनाय उतरपरबत
कहचले हृदयध्यानरघुराय १ पधराएतबअविधपति मिदरजनकमहिप आरूडब
सुअयवल ज्यूदीपहिद्युतिदीप २ आएवेहविदेहके समसतबंधुसमाज राजश्रीरवि
नारुचिर रीझेकौसलराज ३ बेवेसनाविदेहवन अरुराजारघुवंस दव्यअसंप्रादाइ
जौ पूरनपगरवसंसथ छंदवैताल परिजंकहेमसुरत्नमनमय जटितरंअनेकजे सु
नरंगरंगअनेकसव्या रीझपटवसनरजे कोसेयजोरिनकसेकूटसुविविधअतिसोभा
वनीकविरहेजटितजरावक्रूरा मध्यसरिमुक्तामनी तिनबैवरायवसियासंजुत सवि
धउनिउलसबै इहांहोतिनौछावरिअसंषित सजनसुषदेषतसवै अनेक द्रव्यमु
रतनअगिनत गंधवसत्रसुकोगिने मंनइवजेकेवस्तमंगल विमलकारजहितवने प
रिचारकानितनिकटवरितन नियतमनुअनगामनी सतचारवससवि न्द्हननसुनसु
दरीहितस्यामनी इकलहसपतिनी आनअरिपत विमलबधविसतारबायारयहक

चित्तचातुर । चीतजुक्तउवार उन अष्टकोटिजुष पराइन । दानदीनेदास । सबकाज साध
कसाधु संत तसा । उथान सहास । गज अयुत करिनी जूथ संजुत । कनकमय कंकन कसी । म
दमत गुंजत मधुपमाला । अचनत टसोरं नवसी । वन अयुत अश्व सुषेत संजव । जटत जीनज
राव जे । अनेक साज विराज अजुत्त । जिन दिगत मारुत लजै । सु बसुषद सहसपचीस संदन
साज संजुत सोनने । जिन वाजजुव जुत उषन जोते । कलस किंकन सोनने । सत सहंस सुरनीस
वबसहती । दयअकाम जुंगुष्वदा । सु ननेवरी अरुघंटसोवन सिचमु नदर सनसदा । ववकी
लसिवका सुषसुषासन । नीलकादसुदेस । अनलक आहुतजान अनअन उरषजुक्त प्रवेस
विधु उर्बिदिर्घजुकनकवासन । गोरबोरनलेवए । सबसमंधिवेषविसेषसोना । नृषसुरहचरज
नए । प्रतिदेस संनवकरन प्रबलिय । अंगगिर उनमान । मुषफैनउग्रालफुरतमद जल । मत्त
घरुत अमांन । करसकट सकटी नारवाहक । नृषस्वामी बकुवनै । सबसो जसंजुतविह
तसाफे । आंन यलथल आपने । कोगिनै महिषीकर्नकुलनां । जितेकीडावतजे । पदचारपं
षीउबलकेपट । अषेटन सुनिअंतजे । तुकरीय प्रथम वसिष्ट पूजा । वामदेव सवाम । वसत्रा
दि भूषन विहत बानी कत प्रमान सुकाम । पद्दिराय दसरथ । नृपति पावन परमप्रीत दिपापरे
मनुहारकरि करि अमित महिमा । नृप मन आनंद नरे । रघुवंस आदि अनेक राजा । विमल
मध्य वरातके । सनमान वसनविसेष सोरंन । जिसुचित सुहात जे । मिल सिध्वार नसूत मागध
दए वंछित्त दांन । करि जुक्तअति मनुहार कीनी । सब दिविधसुनमांन । दुहा ॥ सकल वराती संगके
लघुदीरघ जे लोग । पहिराए पाटंबरन । जग आदर जिह जोग ॥ ५ ॥ दय अनेकन दायजे सीस नमा
न सनेह । मनु विन्तुत नयबोककी दीनी जनक विदेह ॥ ६ ॥ अथ नारद जनक प्रतिप्रबोधनं उ
र्बप्रसंग लिष्यते ॥ बेगीपरबदउनितहां । औरस्हं सजुएक संयुत प्रेम वसिष्ट सो कहत विदेह
विवेक । छंद १ । इक समय आंन नारद रिषेस दम करी विविध पूजा विसेस । वीना सनाद हित जु
रू हाथ । गावत अनंत कृत चरित गाथ । सब नाय नए जबसो नकूल । मोहिक लोगोप मुनि मंत्र
मूल । कारून्य रूप हरि देवकाज । रावनबध षोवन सकुलराज । माया तनु मानुष धरि मुरार । बि
बुध हित्त रांम प्रगट हि विचार । दसरथ सुत रघुवंस दयाल । चव बंधु उपजि बेचरषपाल । प्रगट है
जोगमाया उनीत । तवगेह सुलछन नाम सीत । हरिप्रिया लछि षावीन हेत । सो उवरि है राघव जस
समेत । उनि कहे हम हि परि हम राम । नवत मआया तव सुता नाय ॥ दुहा ॥ एक समय हम म
घअविनकरि लांगलसु ध्रकीन । ताके सीता अयते । पुत्री प्रगट प्रवीन ॥ ७ ॥ ताते सीता नाम तिह पा
योलोक प्रकास । वेदानन मुषलोचनी । विमल सुलछन वाम ॥ ८ ॥ निश्चय मम पटरागनी । तबिस
मपीता हि करि पोषी सो उ किनका । देत जुक्त चित चाहि ॥ ९ ॥ छंद १ । मुनि कहे हम हि उपदेस
मंत्र । तिदेह हीई स्वामिलेतंत्र । कृतच ऐमनोर्थसफलकांम । राजत एकासन सियाराम । को
सिक प्रसाद सबसरे काज । आजनकृतारथ नएआज । अथ कुलदेवी पूजा निमंत राम
रनिवास प्रवेसनं ॥ दुहा ॥ समय सुसाध्य सबंधु सुब । राम आई रनवास । करित जथा वि
धआदकृत । विदा होन सविलास ॥ छंद १ ॥ इहां सतानंद प्रोहित सुआय । कुलदेवदिक
पूजा कराय । पुनि करे कृत वेदन प्रनीत । सुनकारन सबविध राम सीत । कृतसागसवे
सपूरनकीन । पुनसतानंद सह दानदीन । नीनिहार करकर नकनकनार । द्विबनिरष

पियत जल वार वार उनिद्र नितउर लावत अन्न कांन सुन देत जुसि द्धा प्रेम सांन गुर सासु सुसर
सेवा स नेह दिन करकुन उतर फेरदेह गुर सीष क्वन वसर हि सज्ञान दीजै स ब दिन कौमा
न दांन पतिब्रता चित्त अनुसर कु पेम नित्त रहकु क्वन आधीन नेम मिल वार वार सिर सुंधि
माय आसीस देत छ तियन लगाय दुहा बूरा सिंहर हि मांग सिर सदा सुहाग नि होय लोन प
रकु तिन नैन नित जौ ताके अलछो हि ११ दरअसी सअन्न कहां अरु निब रावरि वार बैष
विछुरन कीं दसा कहि कोसकै प्रकास सिर मना सरज कु विधना र १२ विछुरत सीता प्रेम वस वि
कल सकल रनवास दारुन तिह छिन की दसा कहि को सके प्रकास १३ राम गवन सुन नारन र
मन नए विकल मलीन तरफ रात जित तित कतं ज्यों जल हीने मीन १४ जन मदरडी कलिप
तरु पतित उरध पद पाय दीरघ रोगी अप्रति ज्यों सुष हीलहत सुन्नाय १५ तो हम दर सन राम
को पायौ उन्म प्रकास कहत सकल मम जिय करकु नित सियस हत निवास अस्वो रोहित छि
बअमित उल हा हेरन आय पुरजन जुवती प्रेम पर लेत विलोक बलाय १७ छंदप॥ रिषकरे
विदास ब जनक राज सब मान तोष संजुत समाज जान क नदान लहि जथा जोग्य उन्मप
उत ज इत की रत वियोग निर्घोष नगर न चवज निसांन सुष रसुमत बर षद रिषत समान
विध जुक्त विविध नि वजाय पुरस्विले अमर आनंद पाय नृप दोकु न वजे नीसांन नाद वद वि
श्व वदित जइ जय तवाद कृति लोक कुलाहल गवन काज सुन लग्न देस फेरा समाज वव
मोल वदीउल हनी चार वाहन निसकल दासी विचार नए थारु ढ दसरथ नरेस सुत आप
आय रथ चढि सुदेस छंन्नज थाजो इगुर बंधू जांन सब सुनट सूर अपनै समान जुव गिग
न कुलाहल नयो न्नर प्रतिसहू र हे दिस विदिस पूर हय हैषार वग जग रज होय सुनिप रेगि
गन निरघोष सोय यद नोति विलेद सरयअनंग मिल पवन रैन रुधपत पतंग सील धुजन प
तकु सिके तसाथ दि त वलत पयादे जो रिहाय मिल अमित नेह जुत जुगम हीप पकु चायज
नक बकुरे प्रथीप रसर स्वो अषिल्व लअविधपाय वाजे नेजेत मंगल वजाय दुहा विम्ब इत
हां दसरथ नृपत पसिहे पंथ पयांन तहां तह सबै समंथ सुन पठए जनक प्रमान १८ सम
यसो पआनंद सर नृप चलि सुन नाय पावन मिथला पुर कुते इहां जो जन त्रय आय १९ अ
पसगुन आगमनं। छंद प॰। कविरोवाच। प्रथ्वी सुचालि उलका नपात विदिसान दिसा व दिवि
बमवात उडियां सुन्न स्म विरषा अकास अनिमित्त होत सब अनायास उरदरस दिवस आस
अंधार उत पात हाहि दारुन अपार वढ विषम धूम संकुस विसाल प्रति कूल पंचि कुजतक
राल दिन मणि सुमहा पर नेष देष पंषी असोम्प दिग गमन वेष मातंग अंग गति मद हि मुक्क
नए साध नाव गए दान सुक्क मृध मान सुन न स्व्व की असेस परिक्रम नक रे दहिन प्रवे
स। नृपतवाच। अनमित देष सब अवध ईस सन मुष वसिष्ट पूछे रिषेस इह कहा जान
न हि परत आज उतपत कछु कारन अकाज नयहोति चित अति भ्रमत भीत उपजे अ
रिष्ट कछु अब अवीत। वसिष्ठोवाच। बोले वसिष्ट तब बिहित वांन अनिमित न एय हसम
य आंन नृप दैव दहन सुन दमूल सब मंगल सूचक सान कूल। कविरोवाच। यों कहत
माने अवनी असेष साकंप न इथ सि निमत स्रेष मिल्चले समुष मारुत समूह जुत रेणु धि
गत परिवतन जहं अविल तकरीर जवन आंन जन निकर दपिके वव दिन जांन। जमद

नसरूप॥ करलासमांनकोपाधिकार॥ वेकृतनेषभ्रकुटीविकार॥ अपतासमुद्रअकु
लतपनास॥ तपवितदंनकुससावकास॥ मोजीजनमेषलतनमलीन॥ काषापवस्त्रकोपीन
कीन॥ पदतलीफटितवरिजातनपांन॥ श्रोत्रएसरीरपरबतसमान॥ करवामचापदहसन
कुवार॥ धृतबांनप्रहस्तनुनीरधार॥ उरसिलामनकुघनघटितघाय॥ वतुसेषफरसधर्व
तसुनाय॥ वजिलितवेततपतेजसूर॥ समर्थअनुग्रहआपसूर॥ मुषच्यारवेदपाकअ
मोद॥ (छिबमनकुपलयपा) वकसछोह॥ दुजबासुघनाघननीलदेह॥ जरिजरतअस्तदि
तजुतअछोह॥ रूपेकवत॥ जिहेहयकुलषेतमार॥ अरभुनमहिजीनीय॥ अषिलओनअ
कुछाय॥ नदिकनदेवनदीनीय॥ यहप्रकारइकवीस॥ वारवसुपतिनिरवीरा॥ रोषज्वाल
जरिगर्व॥ जालनइअघनधीरा॥ पितुवैरनैयैनरे रिपुहतप्रबलकुरुहितर्पनकरन
मृघगनमहीपमृघराजमनु॥ निकटआयफलसीधरन॥ जटाजूटचूबितअजेयईषु
कंकपत्रचल॥ प्रिष्टनयतुनार॥ नसमलाबिनवक्षिस्थल॥ अंसाश्रतदस्विरमअदि
मालाअविलंबित॥ करकुवारकोनननपैपिलसुकमजुतता॥ षि नवंसविहितनपर्व
तपनमात्रवंसआयधमहंत॥ अजूतनैजोचनंअरुनकोपववनआएकहतैदै
घटीतसरुघनघाय॥ समरतरपीतनपसम॥ कठिनघोरधाराकुगारतीहकर
ततिदाहकम॥ भ्रमवर्जआजन्म॥ भ्रमविद्याहतधाधारीय॥ नयजनाजोघातबि
षमनुवक्तकविहारीय॥ जमदग्नवयर॥ अंतरअज्वलतकृतकुगरतद्दतकर
गवनगजमहीपमघीयाव्यसन॥ मिलेकालनगवानमग॥ १ ॥ दुहा॥ वामदेवदुजआइदेसब
मुनीवरनसमाज॥ विध्वंदनकीनेविहत॥ जामदग्निरिषराज॥ २०॥ फरसरामवाच॥ कापरकोप
कृता॥ तकृत॥ जिहधनुभंगनवेस॥ ताकेदंतनमध्यतट॥ पापीवहतप्रवेस॥ २१॥ षेओकिहनंबि
कधनुषवामदेवमुनिराज॥ केछितनिछत्रीकरूं॥ कैतिहवैगवताय॥ २२॥ वामदेववाच॥ कठि
नसरासननसिवको॥ तोस्योरामकुवार॥ मषजयराष्योजनकपन॥ सीतावरीसुठार॥ २३॥ जाम
दग्नउवाच॥ वामदेवमुनिसैं॥ विहसफिरप्रबूझ्यो॥ दुजराज॥ जिहनंज्योमाहेसधनु॥ सोधोकैसो
राम॥ २४॥ वामदेवोवाच॥ बंदपधरी॥ सरएककस्योताडिकानास॥ फरसरामवा॥ त्रियहतिकहाविं
क्रमकीनतास॥ वामदेववा॥ सेमासुबाहमारीचसंग॥ अतिबलीदुष्टराकसअनंग॥ मारयोसु
बाहुमसकासमांन॥ मारीबउरायोवासुबांन॥ मषरछ्याकीनीअसुरमार॥ कोसिकहिरा
मआनंदकार॥ पदरजतुनितपरसतसपाप॥ गतिउर्धअहल्यालहीआप॥ कृतत्वापनगको
स्यलकुवार॥ सोउरामवेदसविदतसंसार॥ फरसरामवाच॥ कवत॥ जोधनुवटावतजटा
धारअमहीतनउवैदानराकसदेत॥ देवब्रोहिनपकैबवैमिल॥ सहंप्रबतीसमहीप॥ इकसा
षउगाइय॥ नहीनमुकितिहअविनग॥ एबलजाजगवाई॥ यकरिरहेबलीतुवक्रकेसब
विक्रमसुनसजीयो॥ विष्परूपकालिमहिमाप्रबलन्नपबालननरनंजीयो॥ ४ ॥ दुहा॥ मानकु
अहिस्याधरममै॥ मुगीयातजीमहीप॥ नवद्दसतिनपायो॥ अनयप्रघटेपापथीप॥ २५॥ क
वत॥ करतसन्नपयकालकोउजुछ्यागौ॥ किहकारन॥ बालकप्रधप्अवधपतहांबलहीन
बीनतनतुनिसोइअवसरपायकृतबलन्नधहिकमकम॥ जैसेकलिकावकि॥ वडतदावान
लवेषम॥ अनुसरैधरमअहिस्याअपिलवसुधाकरूनीबत्रीसमवधिकदयाजुकरियैस

नसू यहांपरयोसतअब ५ कविरोवाच दुहा तबरथतेदसरथनृपति उतरिमहानयो
मांनकीनअयवसिष्टको आराधेतहांआन २६ चाहिआहिअवधेसतब हाथ जोरिकहिए
जमोहिउनकीपरिछिरव देवदछनादेउ २७ आए रामसबंधुयहां वंदनकरेविसेष
रोषानलजनुजरतसौं दारुनरूपसुदेष २८ नृपपतिअतिकोपहिनरे ऐसेदईअसीस
हैअपिराधीरुद्रके समरअजयचढसीस २९ रामकुवारविलोकतहां कियद्विजरामविचार
संभुसरासनमदनमनुतोस्योवदरविकार ३० भारगववाच कवत नरतहिन्नजह
नारि पितुवयरवकासो तलिहोअरिहांतेलषेलतिहअघनहिआसों लछमांफलछिमन
हि मुनिनरबांनपमुकउ श्रीएककुफनरिसमर किया तर्पननहिचुकिउ करकसकुगर
मुषरामकर वनसमांनकरितोरिहो यहसमयनासोकसमुदहिबोरिहो ६ लछमनवाच
दुहा आपनरूपनआपनो किनराषउरिहराज केसेबोलतहोकुवचकाइद्विजयोग्य
काज ३१ तुमजुकहतनिछत्रीमैवसुधाकियवकुवार तिनमहनृपदसरथतनय कोउहै
रामकुमार ३२ बंदपय दुजरामवचनसुनसुनसदाप इहांहसिकैबोलेलछनआयनित
बालकेलधनुहीनवीनकरिषेवरामवकुषंफकीन छिनकरोनांहितुमयतोछोरमुनिध
नषइहीकवुइधकमोर द्विजरामोवाच बतकहाकहतअतनृपतबाल कोप्योकतातसकै
नकाल लछमनवाच बंदवेताल इहकरमनीतविरोधअविहित हमतुमहिजुधहोय इरथ
नुषदूयौछुवतिहीवदिकहाकरहिअबकोय जिनकेअनुयरकोमनोरथ सबैकरत
संहार तिनसोजुविप्रहयहैअविदित अजसहोउअपार करिवंदलीनेअछितजिनके
करितबउकल्यांन तनसमरसह्वितकिएतिनके तपविरोधकलोकअलो द्विजदेवतिन
सौंदासनावहिपरमकरुनाडीतजयदहिनाकेनहजानउअनघाअनजीत भार्गवा
वा सबसत्रुजुततुमसूरसंनवसबलसेन्यासंगमरनकेनयसत्रसनमुष आपटारत
अंगछितचककहीयतवफं बवियसमरपंफितसूरकिउनातकोहिनजतनकीने मी
चटरिहनमूर लछमनवा मूरहोहअंगीकारकबउनकरतवफेकहायजिमवगटआउन
आपनेजोमारिअयजमाय जितकस्योतुमहुवचकरनजय एकवीसतवारकिहना
तिवलिहैरावरेकर कंवसिसुनकुवार परसरामवा बितषत्रीकोमनछेदेउ रूवहैव
जरामहु अबजवुरतरुनेबालजेते सबकैतिउसयामरूं नरथवाच किहमातबो
लतवफेउयकुलप्रगटजनमहिपाय विसतारतांमसविषमवैकतिपेषस्वातिकपाय
तुमआवनेमुषकहतमुनिगनहसोहेहयराजजससुनतजाकेजियतजुगजुगकेतम
रुतविनुकाज श्रीषफबंफउजुगमधर्षत उवितअनलअमानमतकरिउहमवक
वादहमसोनहिनश्रेयनिदांन फरसरामोवाच इहकहेउनीकोनरथतै सिधांतसत्त
सुनाय आपनेतननतेजअमरष अनलवेझउवाय नविहोजुकाउअंगतैनजियजि
यतनावीजोगप तबजुबिउतनरामसौ धुनषचापनंगवयोग कुफलिया करिउषंफ
नतिहकरग नवधनुजिहकृतनंगकलोइनहीलागेकहासुनटबापरेसंग सुनटबाउ
रेसंग इसअझावसआएदंफपावजोइकरे दोषविधवेदवताए उद्वरूबालअवधहि
नदोषतदिपनांहिनकरौ करुनातजिरामकुमारके करितेहीषंफनकरो रामचधनवा

दुहा। तब रिखि घन बोले तम क। सर को दंड संभार। मुनि बाचन घरि है जनम। बोल कुनेक
बिचार। २३। कहत निछत्री तुम करी। बसुधा बार इकीस बार। सो छाडहु अब बैर लै करियै संग्राम कु
मार। २४। तय बंधुन तब रोष जुत करे धनुष टंकार। राम बिप्र रक्षक कह्यो नैन सैन निवार। २५
भार्गव बाचा कबित। सुनि रघुबीर सुद्ध सील तट दीरघ बंस तव। बेला लछमन सुधाब
नहु तब गत रको तस बक्र कुटि बिकर्म जुन्हमति। सरति मिल सुजन सनेही य। लहर उनत बि
षरो षरतन गुन युति अन रेही य। तब धुति मंगल समुद तेइ जरि जरि जै है लोक जम मरजा
द को पबाड बजु मम करयो वहत अबलोपक मम। श्री राम बाच छंद। कर जोर राम तब ब्र
ण तकी नमन दै वृथा करियम लीन। पाद पल्यो तु द्यौ अविधपाय। बात हि कहा कही यै बि
धवनाय। जीर नपिनाक टूट्यौ अजांन। नहीं टरत कहो नावी निदांन। बिध अपकन बूकत किउ
बिधांन। व तु जानत निगमागम पुरांन। टूट्यौ न जुरै कोदंड तास। व स नावी सिव धनु नो बिना
स। परसराम दुहा। मुनि निज गुन बंस प्रसिध महि परसराम इह नाम। तुम हि कहावत राम तो करि इह
म सो संग्राम। २६। कबित। रे काकस्य निसंक श्रवन अज हूं नही सुनियो। जिह छत्री धमपि
तु वयर है हय नि हनीयो। ता अमर षसागर तरंग। निस्तार बंधु जय। बिषम व सुध व जय सत
छत्री प्रति रोह करे षय। तिह वसा श्रोण आमिषा लिपत। रहत निरंतर सांतरस। अति तिरसम
ह दाबा अनल प्रबल घोर धारा षरस प जिह अर्जन दस सत असाध प्रभुज दंड नयं
कर। रेवा नीर प्रवाह रुघ सह गांम केलपर। तहां दसकंध महाध आन जुत दनुज द्यौ। ध
नुष गुन न बंधियौ। कोपं कर तल मुह कुद्यौ। दैह याधी ससोइ षेतहु न पिता घात अमर
ष बबज। रति प्रबल पर्ब तेइ षंड कर। दिव क्रीत गावत विमल। ए विषम सत्र जय वार मही
किं न्लीय कर्दम मय नृपत मांसु बस पंक सलिल मिल श्रोण सरित मय। वरन तास वैधव्य
दीन बाल बध वनिध। नियत दइ निर्दय सत्रु कुल नास धूम सिध। तुप मूल सिष रजू बपालम
य विवध घात सनाध वर। जम दग्न सुवन सो इह रूस जय। धारा घोर कुवार धर। १०। श्री राम बा
तु म जु स्वच्छ इह मस सब अनय अहनि स अभ्यास हि। बिमल वेद रसवी व कित अमियास प्रकास
हि। कहा जिह तन कवि व। कस्त तु मह महि सकारन। पे पिल वहत विपद्म। व गट सिरदंड व-
चारन। नव गुन व सिद्ध उपवित नित। बिषम एक गुन चाप बल। सयांम कर्न कु जदीन सो को उन
सूर इछ्वाक कुल। ११। फरुस राम बाच। रे ष विधम विप्र जांन मो हि मूलि तिन्नो रे उकुं अैसो दुज
दीन। श्रवन सुनि लै मति नो रेउ। समरि कुं रुकुति तुक्क स रोष सम धिन चतुरंगीय षाद रसुवा
कुवार स कयध नु बांन सु संगिय। प्रथ्वी सुव बल संउष्ट सुसदा होम्प कीने सुभट सयांम जिह
दिह्ना तजु संक परसुरांम बेनन वगट १२। तव कुल नौ मूलक महि पराजा रघुवंसिय तिह
सु घुम्प तु गइय पाई धूरन पर संसीय। छत्री बध व्रत लए उ इम जु पितु व इ र प्रमांनिय सो
वाढो सयाम षेत्र जाचित जुध जांनिय सो गयो नाग पजु वितिन सरन तेइ नइ नासि तत हांवि
स्य स्यो नाम नारी कवच मारन तिहन संसार महां। १३। दुहा। गुर जु तिहारे गाध सुत मम कु
वार नयमो न। तव वक्यो छत्रीय त्वत जि आपन यो भुज अंन। १४। श्री राम बाच कबित। उहप
हार सुबहास कंचकिन परि कुवारा। तन न्हू छन मन न मय अतुल्य उर धर सरधा रा चित्र
साल वरु पिता पहतन हीहोत विमनवित विमल अंग सोरंन विजेउ क्रतु कुप मंहि

त।सिस्वढकुलोक अपलोक समकोउबस्रकातरकहै। सबनायनकबुजवंससो ३
तिरिववंसीनिरबहै।३५।नारगवोवा।छंदउधोर।रेसमरविकुलबाल घरपोसियाघरघा
ल।समविनयमोहिसुनाय।दकहतवातवनाय।धनुभंजजीरनजांन।मनत्रद्यौगर्भअ
मान।नहीसंकमेरीकीन।वित्तनूतिनाथनवीन।अपराधउपज्योआय।सोउटरतनाहिसु
नाय।बेकुदेकुवारहिबाकु।जससहितउनिघरिजाकु।श्रीरामवाच।कुवधनुषटुटन
हार~~सुरेश कहाकरौ~~ शबजोञ्जमिलसंसार।बकुकालगतबलवांन।नहिसमकुदेवनि
दान।इहहोनहार सुहोय।कहाकरिहताकहकोय।गहिकुलिसताञणअंग।नवकुलसञ
णज्यौतंग।अबगुनीआनरुकोय।सिवधनुदेसंघहिसोय।दुहा।टरैनहिनत्तवितव्यताको
टीनकरकुउपाउ।रहिनहारसोपहिरहै।जांनहारसोजाउ।३८।नारगवोवाच।दुष्टवत्रि
कुलसौदयाकाकुकरैवकार।नुयसोइफलचोगवैहै।ताकहधिकार।३९।जोउबरयोबल
छत्रयुतसबकोसंघार।करौनासमोइसोधकै।अदयधर्मअनुसार।४०।छंदपध।सुनराज
पुत्रसहबंधवसाथ।हवसककुबांनकोनंनहाथ।सरछोनतहाअबधांनछेद।बधबाल
नसकुकिहलोकवेद।मुक्कुहथ्यारहाथनसमेत।बगवापसजकिमंनसुषेत।श्रीरामवा
च।गुनंदबांनछोनकुनयांन।सनमुदासरूपुहपनसमांन।करिरोषकंववावकुकुंवार।ह
मयहतनाहितुमसौंहथ्यार।दूवौपिनाकपरसतहिपांन।जीरनधनुभनमयमेनजांन।ल
घुदोषकरतधजअधमकदाप।आचानिततुमपहेआप।हमविपजांनजोरतजुहाथ।मन
वावनिवातहिअयमाथ।दांनवदईतनरनागदेव।सिरनायककुनहीकरतसेव।करिषग्गा
स्वारत्तनहिनकोय।हवलाइलरहिकिनकाजहोय।संकहिदुजकेसुरनीवसंस।हमज
मकुत्रासहिवंसहंस।नारगववाच।निरवीरकरयौमैंजुवनिकेत।इवलागलागवितुवयरहे
त।जिहदइताहिविद्यासुजांन।निश्चयसुनताकुकेनिदांन।कौसिकजुतेरौगुरकहाय।सो
उबाम्नकेवंसौसुनाय।अनबधबांनममगिनकुएह।दुजसुरनिनिजुसकबालदेह।
अरुनारदीनरोगीअनाथ।हथियारमारजोडैसुहाय।दबालकहासहिहैजुताप।अम
रममबांनभयनजेआप।रेबालवाफिवातनवनार।जियलेकटायकरअेहजाव।दुहा
करिकटेविनबेकुकवरि।निश्चयबाफनांही।वातजुअविरअज्ञानवस।मतिचितेमनमांहि
।४१।श्रीरामवाच।ब्रह्मतेजमनकुवह्यो।जांमदग्नजियजांन।जोनावीतक्षसुनाटरैहै
बौरामनिदान।४२।कवित।करयोभंगकोनंनदादतवउरिमहदिन्लो।त्रिनवमानतक्कियै
कछुनतेरोनयकिन्लो।देवदइतराकसनदेव।आषंनलआएमेतेईकीनविमद।सबैनि
जयेहसिधाए।अजकुयहवादौरिणअजर।विषमकरौसयांमवर।श्रीरामकह्यौ।उजरा
मसौसकुकुधोरकुवारसर।४४।महिमंनलफिगमिगकु।विसदविधसिद्धविनासकु।लोक
त्रयञ्वलकुसक्षमिल।सिधसमासकु।तजकुनोमञ्चरञ्चार।नरकुदिगजगिरनोलकु।अं
धकारदिसविदिस।चटकुमोन्निर्णयबोल।कुफिगनोलईसञ्आसनअफिग।नरपिमुकध
सजायनुववेकल्पिबानहोइयेविहत।साविधांनजमदग्नसुव।४५।कुंडलिया।आकंपि
यअगजगअविन।हतलीनोसग्रांम।हाहारवत्रयलोककुवरननरोषेदकुराम।रनरोषेद
उराम।असुरसुरत्रासनपजीय।यकधनुषटंकार।ईकिफरसाकरसजीय।ईकिपीतपट

कसियै । इकजटब्रहटसथपियं । बातवजयविधुरीय । अविनअगजगकंपिय । रविधु
रोनामउपजियरीतविरीतयह । महिसुरनरनयमान । अनवितततयाही समय । विमलज
इननवान । विमलजइनननवांन । बमकरिविनयनिवारीय । निषलसिष्टममनास । वारअ
र्जवजुविचारिय । त्रकुटिरेषचुहनंग । सुकरतुमआयुधससप्रीय । महीनारमुक्कहै । य
हैविपरीतउपज्रिय २ । रुद्रवाच । दुहा । सुन तरुद्रयाहीसमय । आयकीयोउपदेस विध
रवनाइहविनसहै वियहतजकु विसेस ४३ एक जोत स्वबंदतुम नास तहोनवरहा । अ
उनमांकविरोधयह । अनुचितकर्मअनूत ४४ । छंद ।। इजरामसुनकुधर्माधिकार । रघुरा
मसदावरिजतविकार । तुमआदअंतअवसानएक । आकाररचतकारनअनेक । उव
देवनांमएकोदयाल । वितधरमहेतषेचरबयाल । आयुरबउद्योधनुषअ ततद्रोसोइ
अवसरपायतंत । रघुरांमनियतनिरदोषनित । अविकारअंगइरनचकित । अनबधअ
मलतुमहौअनंत । आगमकु निगमनहीआदअंत । विनवयरनेहवरजितविकार । नवनू
तहेतनवहरनभार । आउनिपोविकु समयआज । करीयोवीवीरअबदेवकाज । तजियै
विरोधयहसमयतास । समनावसदातुमसावकास । कविरोवाच । दुहा । रोषपलटहुजराम
केरहैछोहउरआय । अनलसिंधुऊपदेसजो । वादलनएविलाय ४४ दकुरामउपदेस
देतुधनिवारसुजांन । कहिजयरघुकुल रामकृत । हरनएअंतरध्यान ४५ फरसरामवाच । इ
रबङतातअपनोप्रकास । सोपरसरांमकीनौसहास । सुनरामरघौङुध्यांनसाध । आषिरब
नबागीउपाध । तुमकहयोनंगहरधनुषतान । महिसब्रह्मसुन्योमेकोधमांन । यहदेवसरासनक
रकुसाज । आपनोतेजबलदिषकुआज । दसरथवाच । सोसुनतआयदसरथनरेस । न
यजुरकहयोसोइभार्गवेस । रिषवंसउपजतुमफरसराम । तजिकोधसांतछुतनयोतांम
कसिपहीदइउर्वीअसेष । वेरागनेमलीनोविसेष । आकतविरोधअतिकोधअंग । वतु
जानतुहोनिगमावसंग । इहबालपतनसोकोनअर्थ । सुरराजहितुमप्रबनसमथ । भार्गउव
कीन्होनचित्तदसरथकहाव । रामसीकहतस्यातकसनाव । देधनुषर सुनरामदेव
उपराजविस्वकर्मांअजेव । अमरनमिलसिंतुहिदयोएक । विष्णुहिदियइजोजुतविवे
कचगवंतधनुकदीनोअनूत । भृगुउत्तवाक्यकहिनासनूत । जमदग्नहिदीनोवित्तजा
न । मुनिलयोमहामनुमोदमांन । कृजापकरतअनीत्रजाय । हैहयाधीसयहसमयआय
तिलकामउधप्रगिपापकीन । जबसाधविप्रउहगर्वलीन । सहस्रभुजवलैलेयहसुनाय
यहसुनतलछोरुपीवआय । हवकरेउजुधमेसुरनीहेत । बजमासदौहैहयराजषेत । जुं
निमहासमरमेविजयपाय । यहजायोअपनीकामगाय । वाकेसुतबरुयोगलेआंन । मुनि
जामदग्नहतवयरमान । लेगएउछतबधनुकधेन । संग्राम विनापाएसुषेन । मोहिनयौ
उदस्दारुनअमेय । तबगयोचकतीरथसतेय । विष्णुहितकह्योमैतपविसेष । ईइयांदम
नसाधनअसेष । अवलेसचित्तमापकअनंत । ममभरमजांनवरदियमहंत । इस्वरोवा
जिहहेतदयोआतमद्रजेस । विधसबेसिधकैहै विसेस । मनअंसतेजतुवमंकआंन
करिहैपवेसहरनपमांन । मिलतुधहैहयाधीसममीर । पृथ्वीनिद्दत्रीकरिहैषवार । दे
इजनवेरइकवीसवांन मंजनपियोजगतनयकमांन जविकुधरकुतरिपनसनेव

दारुनतुम करि रिसो करि मदेव ॥ जुं यउपजहतो कौं सांति नाव ॥ पृथी कस्यपहि देइ जी पाव
सुतसाध नावत पकरत जाय ॥ सब काज सफल कै देसु नाय ॥ कै त्रेता युग रामावतार ॥ दर
सन तब है हौ तुम उदार ॥ वहां ले है अपनौ तेज अंस ॥ सुनि साधु नाव पै है हो व संस ॥ भार्गवोवाच
॥ बंदन धीर ॥ दे मोहि विंध्य तदांन हरि नए अंतरध्यांन ॥ पुनि कपा मे वर पाय ॥ सब काज सिध
सुनाय ॥ षल दल्यौ है हय षेत ॥ लह्यो सुरनी चाप समेत वेई ॥ विष्णु तुम अवतार ॥ नव भूतटारन
नार ॥ ईह विष्णु चाप अजेव दिजं विजत ली जै देव ॥ कविरोवाच ॥ हरि सु वत्त्व चाप हि हाथ स
बते जह हरष्क साथ ॥ पुनि राम पर न बदीन कीनं इय पुष्प युत कीन ॥ कर्णे ततान्यक राल हि फर
सुधर हिक पाल ॥ अनमोघ सर मप आदि कहि विप्र छेइ का हि ॥ धुर धर्म रांम सधीर ॥ बधवि प्रचित
न बीर ॥ इह नीत जान अषेद ॥ पुनि राम गति कृत छेद ॥ उनि चिरंजीव तिपाय ॥ हरि होय न गुजु
सहाय ॥ भार्गवोवाच ॥ बंद ॥ स्वयं विष्णु रांम तुम वेद साष ॥ तव कंज सक्त नहीं विरत नाथ ॥ है
जन मना थैर नुव हरन हेत ॥ सब नई सरव संता समेत ॥ मम मां फ कृतो तव तेज मूल ॥ सो तल
लो भ्रा ज तुम सांन कूल ॥ कहि नए सबै मो हि सफल कांम ॥ विसम यटर जा नै प्रमरा म तुम दे
व प्रक्रित पार गुनीत ॥ विध वेद अगोचर विध विनीत ॥ उतिपति सथित तन ह्वथ तास ॥ सम ता
बल ई दिय हानजास ॥ जग माया तव षट अंग जांन ॥ एइ सबै सात संन व अज्ञांन ॥ विष्णु तुम स
दा वरिजत विकार ॥ उतपत आद अंत न उदार ॥ जल विमल जथा मिल फेन जाल ॥ विस्तार ध्य
म अनल हि विसाल ॥ अज्ञात तुम हि माया अमांन ॥ सब काज अजत संज्ञा सु जांन ॥ माया व्रत
जो पक लोक मांन ॥ जगदीस नतो लो तुहि जान ॥ अविचार सिंधु उतपती एक ॥ वै रोध्य अवि
द्या जग विसेक ॥ देहा द अविद्या कृत दुरास ॥ तिह मिल प्रति बिंब तहो त तास ॥ चित सक्त जी
व संग म सु ढार ॥ सोइ जीव नाम यह निगम सार ॥ मन प्रान देह आ उं न मांन ॥ अनि बुध व ढत
अन मान आन ति ॥ इह आपक र्तृ सुक्ता कहाय ॥ सुष दुख पात्र तो लैसु नाय ॥ नही आतम
क इ संश्रत विनास ॥ ते बुध्य ज्ञान लहि लषै तास ॥ इव संग चित्त अविवेक होय ॥ संसार जीव
ही कहे सो य ॥ जड चेतहो तजब समाजो इ ॥ वसता सवित्त्वे तहि विजोग उपजे जड त्व जड
संग आंन ॥ जज अनल सजु गयह नियत जांन ॥ तव साधु संग जो लौ न ताहि ॥ अति पन सुष जो
लौ न आय ॥ संसार दुख जो लाघ साथ ॥ नित वनै ती लौ न रघु नाथ ॥ सत संग ग्यान उपजै वि
सास ॥ तव छिन छिन माया तजै तास ॥ उपजै कु संग दुर बुध्य आय ॥ सोइ तुव प्रसाद न्ना सै सु
नाय ॥ प्रगटै तव हर ग्यान प्रेम ॥ निश्चै सु मुक्त पावै सनेम ॥ तस्मित भक्त तुव रहित तास ॥ सत को
टकल्प वेदन विस्वास ॥ जी वेत था पीन हीं मुक्त जो ग्य पावै न सुष कौन ॥ कुप्रियोग ॥ तव चरन
भक्त तातै विचार ॥ मो हि जन्म जन्म दीजै मुरार ॥ जिरहित अविद्या संग जोग ॥ लीला तव ग्यावत
इतर लोग ॥ नव सिधू तिरत तेइ सु नाव ॥ पुन सकुल जात कै सौ प्रभाव ॥ जगनाथ नमस्ते ज
ग निवास ॥ कारुन न नमस्ते सा वकास ॥ नमस्ते भक्त भावन अनीत ॥ श्रीराम नमस्ते नाथ सीत
ईष्वाक वंस वनकुज भांन ॥ दनुवगहन दाहन कृसांन ॥ करतार सुर नि सुर हेत कार ॥ महि
मा अमेय जग मोह मार ॥ जय विनय सील सागर सुरेस ॥ जय दीन बंधु सोभा सुदेस ॥ जय
विजय अगको टिक अनंग ॥ जय राम भूत भावन अनंग ॥ जय आदि मध्य अवसांन
एक ॥ ईषा विपार माया अनेक ॥ जय महा रुद्र मान सम्रुराल षित धरन करन षे वर षया

नमुषवर्सनएकमहिमाअमान। इंकितककऊकरुना निधांनवसरोषकह्यौबोल्योक्त
वांन॥ बिमजेदयालमोहिदीनजांनमैकरेकुंनजगजयतकाजतबबानप्रवेसकुअ
षिलआज। श्रीरामवाच। तहांजएवसनरघुवीरत्तामकरिकृतवहूरनवितकाम॥ ना
रदोवाच॥ ठुजरामकह्यौदेवाधिदेवअतिकस्यौअनुयहजोअजेव। निजसाधसंगत
पजैसनेमपरिब्रमजोतपदपसवेमघतिदिनसचोतयहकरैजाप। आचारजुक्तसबवत्र
आपविज्ञानंजक्तवाटेविसेषपरलांमतुमहिसिवरणसपेष। इतिपरसरामकृतसतोत्रसं
पूर्णं। दुहा। रामअषिलजुवइसअब मागतयहैमुरारपानजोरिहजफरसधर क्वनक
हैसविचार। ४६ सानुजरामसरूपसुनसीतासहितसहास। वेदसहाइककरकुविष्णु
वितममवास। ४७ श्रीरामवाच। तवरघुवीरवसनतिहांतथाअस्तुकहितासजोकहुम
नअभिलाषउजहूरनहोऊप्रकास। ४८ जजुतनैनसुरामजुगजवकरुनारसनीनवा
रवासअतिप्रीतवस जीआलिंगनदीन। ४९ करीपरसधरपरकमणजातिजातसुमन
षवलेमहंदाववलअवलरिदयरामछिबराष। ५० वाजेगिगननिसांनवरगनगंधरबसुप
नछहपवरषाकेयरामपरसुरसुरराजसमान। ५१ मुनिजुसिधवारनमहंत रिषचिर
तरघुदेवकरेषयांनसुथांनकहह। जयजसकहतअजेव। ५२ कह्योफरसरघुरामकोवि
श्वविदतसंवादकरीकीतनरहरसुकवहूरनरहितप्रमाद। ५३ इतिश्रीरामचंद्रफर
सराम संवादा कविरोवाच। कवित। दियपरिजवदजराज रांमविक्रमअद्भुतकिय
श्रीनारायनधनुषतेजयुतहेजमात्रलिय। सुरसिघनसुषदियोजनकपनराषजिद्र
ऊ नय। महिमहीपमथननरूत्रभुंलोकअत्रयनयप्रुरघातवातवदगिमनबितअं
समांननहीअंतरिय घनसेनिसांनघुमरतरसघन। रामअविधपंपसवरिय ५३
दुहा। सुनवेलापंचांगसुध अविधनिकटदलआय। दूतनअगिनितदांनलहि सुष
आगनसुनाय। ५४ पाटंबरमिदरवगटबकुछाएबाजार। बिरकसुगंधनपंथसबउ
वआमोदअपार। ५५ सातदिवसमगसंक्रमिय। दलबललीयेविसेसछत्रवधुनयुतअ
वधउरआएअवधनरेस। ५६ धुजापताकाछहधवलकनककलससुत्तकाज। द्वार
द्वारतोरनउदतविहदसुथंनविराज। ५७ कलसआरतीसाजकत। वनिवनिजुवतीबृंद
मंगलगांनऊबादमन। आगमरामअनंद। ५८ छंदपधरी। निजयेहआयदसरथनरेस
सुतनसवांमकीनोप्रवेस सुनसारसबैविसतारसार। दुजमिलेजथाक्रमराजद्वार कु
लदेवपूज आचारकीन। दुजगरुवसिष्टवंददानदीन। मिलसुतनमातआनंदमूल
सबनासेसंत्रायविरहसूल। नीसांननगरघरघरननाद। विरषामिलमारुतजलद। वि
स्तारहोतमंगलविधांन। पाएमनुविछरेदेहप्रान। अवासउचचढिजुवतिजाल। तनदामिन
दुतिपटजलदमाल। सबयेहयेहवगटेसुगंध अलिनकरत्रमरसोरंजअंध। बहुरंगरंग
उमियतअबीरनजमासमनुऊवादरसनीरसुषयेहरामवैदेहसंग। अतिहितविलास
ज्योरतिअनंगवैकुविष्नूलछमीविलास। तेइजेदजानरसजोगपतास। मिलबंधुमारजि
यएकमूल। सबहिनसोराघवसानकूलनितकृतनियतजुतसावधांन। नहीटरतनीत
मारगनिदांन। पितुपेषतासहरिषतअपारकीडासुधरमजलजनकुमार। वनरामकरतसा

तुज्जविहार॥ आषेटधर्मक्रीडाउद्धार॥ नितगावतहैजिहलोकनाथ॥ सानंदरहिसरमनी
सुसाथ॥ श्रीरामसियावामंगसंग॥ अविलोकअमरआनंदअंग॥ नितश्रीनिगमाहरिरवि तनि
कार॥ विस्तारनिराविधविसदवार॥ नेरासनियतकरुनानिधान॥ मायानुसारकारनप्रमा
न॥ सोउधारदेहमानुषसंसार॥ अबिल्हेसकरतलीलाअपार॥ कवतबपै॥ बालकेल
रघुवीरकर्मविक्रमअद्भुतिकिय॥ तारिवांनताडिकासुबहसग्रामसुसंधिय॥ मषरद्धा
कोसिकमुनि॥ सिलतेत्रियकिनीय॥ धनुषभंजसियवरिय॥ छोहभ्रगुपतगतविनियअ
रअविधपायपूरनपूरषनव॥ अनेकसुषजुगइय॥ काकुस्तवंसदोतकरि॥ कीतसुकवि
नरहरिकरिय॥ ४७॥ दुहा॥ कहेविरतरघुवीरकेबालकंडरुघुवेष॥ विघ्नहरनमंगलकरन
नोसपूरनअसेष॥ ५८॥ इतिश्रीपोर्वैरामायणेमहामुक्तमार्गेश्रीअवितारचिंतश्री
रामजन्मोत्सवबारठनरहरदासेनविरंचतबालकांडसंपूर्णं॥ अथअजोध्याकां
डलिष्यंते॥ मुनीनारदआगमनं॥ कविरोवाच दुहा॥ एकसमयमिदरअजिर॥ सियास
हितश्रीराम॥ सिंघासनसुंदरसुषद॥ मनुबेठेरतिकाम॥ १०॥ मनिमयकंठीसितचवरसी
तापानसवाल॥ विमलविलोकनविधुवदन॥ नारजनइनविसाल॥ ११॥ ससिनजजलफ
टिकतन॥ बीनाकरवरवान॥ तिहअविसरविधलोकतै॥ उतरेनारदआन॥ १२॥ छंदपधरी
दरसनहिमाचउवरामदेव॥ अविलेसआयसनसुषअजेव॥ कीनेसुसीततहांनमस्का
रकरजोरकह्योदसरथकुमार॥ करिअरघपुनविधजुतअनेक॥ विधुवदनवचनबोले
विवेक॥ श्रीरामवाच॥ दरसनतुमदुरलभजगतदेव॥ हमसेसंसारिनसुनजुनेव॥ तुम
नरहतसदाविषीयानमांझ॥ सुषराजसइब्याजोरसाझ॥ ममउदितदुराकृतनएअनी
त॥ तुमदीनोदरसनजगपुनीत॥ कृतकृतनएहमसुनकाज॥ मुनिकहहुआगमन
हेतआज॥ नारदवाच॥ दासरथनकवष्छलदयाल॥ कामोहितुमहीदरसीतकालक
रिकपारामतुममोहिकार॥ सुनवचनकहेलोकानुसार॥ जाजगतआदभूताअजे
य॥ सोमायातवयहलीअजेय॥ तवजोगहोतउतपतीतास॥ ब्रह्मादपजामायाविलास
सोमायातवआश्रयसंसार॥ अगुणातमनासतसहजसार॥ स्वातिकरजतासगुण
निसंकेंग॥ प्रतिअरूपअसितआनासअंग॥ त्रयलोकग्रहसषतस्वासतंत्र॥ महन
हीनहांनवसजंत्रमंत्र॥ विस्तुतुमरामसियश्रीयावाम॥ नवरामनवाज्यानकीनाम
विधरामब्रमालीसियविसेष॥ रिवरामरांणकमैथुलीलेष॥ सिसरांमरोहिणीसियासं
गसक्रतुमहिसचीसीतासुसंग॥ अनलतुमसियास्वाहाअकार॥ सेवतसुनायपतिव्रत
सार॥ यमरांमजयैंदपितुमदेवदेव॥ स्वायमुनीसुसीताकरतसेव॥ नेरितरामतुमजगत
नाथ॥ सरबथातामसीसियासाथ॥ वरणतुमरांमलोचनविसाल॥ नागवीव्यानकीति
लकमाल॥ अमलतुमसर्बसीतासरीर॥ तुमरुद्रनिषलजनवद्धतनास॥ सीतारुद्राली
जुतसहास॥ सबउर्बनामसोइतुमस्वरूप॥ जोबितादेहमायासरूप॥ निश्चैत्रलोकतव
मयनिदांन॥ इहानासितकिंचितहेतआंन॥ गतमायातवसंगउदतप्रांन॥ महतत्वहो
तएकत्रमांन॥ करजुहेतबुधअहंकार॥ प्रांणमिलपंचईंदियप्रचार॥ ईनहोतप्रगटसोइ
देहआई॥ तवजन्ममृतसुषदुःखताई॥ ईनतैजनविद्दुरतप्राणआप॥ भनिवहलउहै

कहुं नहीं वियाप। सब सहत जीव इन हीन संग। अयेहि अयाही बहु अनंग। तुम करी
प्रतिष्टा जीव जोत। कै तुव सतु महिमै लीन होत। तस्मात सर्बकाल तुमेव। दुष सुष न सैं जब वि
कदेव। नृप होत रजु ल्मोनु जंगम्नाय। छिन रहत दिष्ट अग्यान बाय। उपजे प्रबोध ग्यान अनी
त। नृप मटरे रजु उद्दन हिन नीत। अग्यान हेत देषत अनेक। उरचव प्रकास तब तु महि एक। दुष
सुष विनागीय है देह। निरधार जीव सो नहीं सनेह। इह मोहि अनुग्रह कर कुआज। नगाव
तहो उतुव नक्रू नाज्न। तवनानकंज उतपन्न नाथ। सुत कंज जनयो ब्रह्मा सुनाथ। नमजन
क सुपैत्र मामहंत। अब मोहि उत्र ज्ञान कृ अनंत। आनंद सलिल चलि इगन और चाह तमु
षनज्यो ससी विकोर। उनक हौ फेर नारद प्रकास। पवियो मोहि ब्रह्मा प्रजुदि पास। रावन व
धकार नजनम राम। तुम लहौ प्रतंइ पाजु कृतानं। जुवराज पिता करि है अजेव। दे तुमहि राज
निषेक देव। उनि इहनि है को रावन सपाप। अषि लेस प्रतंग पाकरी आप। वर दयो मोहि जुव इहर
न चार। करीये प्रमान दसरथ कुवार। श्री राम वाच। नारद सो रघुवर कहि निदान। मै करी प्र
तंग्या सो प्रमान। कछु काल आहि अविरोध काज। दे रूसुष देवन देवराज। दस च्यार वरस तप
हित सुदेस। पुनि करि है दंड कवन प्रवेस। मैथली काज नारद मुनेस। आसुर अमूल करि है
असेस। कविरोवाच। सो इमान ववन नारद सहास। पद वंद चले सुरपुर सहास। दूहा। करि प्र
बोध रघुवीर कह विधके ववन विधान। हरषवंत हरि गुन गुनत नारद गए स्वसथांन। ६३
इति श्री राम प्रतनारद प्रबोध संपूर्णं। अथ श्री राम जुगराज तिलक लस्यते। कविरो
वाच। दूहा। केके देस नरेस के मंत्री बुध निवास। भरथ कुमार हि लैन को आए अविध प्रकास
६४। पितु अज्ञा ले प्रेमपर भरथ सत्रुघन संग। मातुल ग्रह गिर वज्र तहां आए मुदित अ
नंग। ६५। सब त एक अनेक सुष विलसै राम विलास। जो नव तम्र सुनाट रै थान मिलत
अनियास। ६६। सिंघासन थित इक दिवस राजत अविध नरेस। मुकर माफ देखे अमल सि
रक पोल सित केस। ६७। वर्ष अयुत नृपता विलस अविध निकट तट आय। उचित बुध्य
उत्पन इहां नावीं होत सुभाय। ६८। तैसी ही त्रिजत सुमत संग उदय न वढ सोय। तैसो न मि
लै सहाय तहां जे सी हो नी जु होय। ६९। छंद पधोर। इक समय दसरथ राय। अति नम्र गुर
ग्रह आय। एकांत बैठी अनंग। पुनि कहग्रे इव संग। राजोवाच। गुजन कुइक गुरदेव नवम
नजु अंतर नेव। सुष विनव राज असेष। सब जुक्ति हम सब सेष। किये समस्त अमर सहाय
व नितासु कीरत पाय। विध वेद दान विधान। सब करे इज सनमान। अब और इच्छा एक। अ हि
भिलाष फल हि अनेक। जुवराज पद दे राम। हम करहैं कछु विश्राम। इह मत तिल्क निज
कर देह यह जलम को फल लेह। वसिष्टोवाच। उनि किय वसिष्ट प्रमान मति धिन रिव प्रमा
न। इह सबन को अभिलाष नव सुनत हम जतु नाष। मोहि कहत तुं अवधेस निरधार क
रकु नरेस। इह देष अमित उ बाह सब लेकु लोचन लाह। धरि छित्र राम सधीर वन तिलक
रघुकुल वीर। मन मंत्र कीध प्रमान। नृप ग्रेह आय निदान। तहा बोली मित्री सुमंत। तिह कहे
सब विधवंत। अब करु कुउ द्यम एह। जुवराज राम हि देह। सब करि कु काज सुसिध प
रिमांन वेद प्रसिध। कविरोवाच। सो कह्यो मित्री सुजान विस्तार विहत विधान। संभार वेद प्र
सिध। सब हीन लागी सिध। छंद प। सु नकिं न्पावोड सचु दरीय कन्क नग जटित श्रंगार

कीय । जलतीरथपुरि तउचित जांन । इकसहस कनक घट धरे आन । त्रिय दिन वरम
सिबन बसमेत । सुजन बञ्च चमर हिमकर सेत । मत्तकाउचित फलपत्र मूल । संमीर सिंधु
सुरसान कूल । गज चतुर दंत कूदन उतंग । गुंजत कपोल मद मत्त अंग । वाजी सुलल
छन तन विसाल । सोवर्ण साज मनि मुक्तमाल । सब बस्त्र सुहृद फल युक्त साज । विध विध
अनेक मंगल विराज । १ ततग्रेहमाल वंदन वमांन । विस्तार विविध बंधे वितान । ग्रह कलस
पताका धुज उतंस । बनद्वार द्वार तोरन विहंस । देवालय पूजा बहुदीन । कृत जुगत नगर सु
रव छकीन । किंनर मिल गंध्रब ज्ञानकार । निर्तकी वार मुष्पानिहार । अन्नेक नात बाज
त्र आंन । बहु मिले वजंत्री विमलवांन । गज हय रथ पयदल मिल अथ्यांन । निरघोष बहु
कुल बाजत निसांन । हैनगर महोछव ग्रेह ग्रेह । सुन राम तिलक दरसन सनेह । ग्रह
ग्रह प्रत जुवती करत गांन । विस्तार विविध मंगल विधांन । मनि रत्न दिव्य मुक्तान माल । सु
र्णमय विविध भूषन विसाल । उज्जवर वसिष्ट गुरवामदेव । अनेक सिध मुनिगन अजेव
। दुहा । वेद जुक्त अभिषेक विध सबै सिध संभार । आन करे एकत्र अब राजत राज दुवार
७० । राजावा । कह्यौ नरेस वसिष्ट कह । सो समान सनेह । राम तिलक जुवराज को दिव्य
मकुर यथ देह ७१ । वसिष्टवाच । प्रात विती तैं होय यह । करकु मकुर यथ काज । कस्यौ वसिष्ट
विचार कर । राम तिलक जुवराज ७२ । गुर । दसरथ नृप आज्ञा दइ । गुर अत हरउर जाय
कौसल्या सूं सब कहहु । मंगल विध समझाय ७३ । कविरोवाच । रामचंद सीता सहित ज
हां विराजत जांन । तब वसिष्ट दरसन तहां । अनिवारत हिय आन । ७४ । सीता राम सुजा
न संग । आउन सन मुष आय । करुनाजुत सैंदंनोतकत्त । उनि धोरत गुर पाय ७५ । श्रीराम
वा । सिंघासन दे स्वर्णमय । गुरहि राम गुन थांम । कर अंजुली जुग जोरी कही । धिन्न आज म
म धाम ७६ । वसिष्टवाच । सब विध मांन वसिष्ट सुष । जग करता जिय जांन । लोक धरम बदे
स लग । वचु सोइ कत वमान ७७ । छंद वैताल । परिमात मातु मउर षर्व रन स्वयं सिध स्वरू
प साध हित सुर काज सा फन । नए रघुकुल नृप तुम अमित माया मनुज तन धर देव
दीन दयाल । लंकेस जब हित जन्म लीनो । षल समूल षया लय । यह मंत्र है अति गुढ आ
उन दमो विध वरदांन । अनत्र नहीं जु उघारिबौ । अब । नाथ निगम निधान । पुन सुन
कु रघुकुल तिलक दूरन दूर षर राम प्रवीन । नृप पिरो हित रिवि राज निश्चय । मांनक
म म लीन । मैं सुनौ आगे ब्रह्म कै मुष । वेद विदत विचार । इक्ष्वाक के कुल राम आउ
न आय है अवितार । ता निमत अंगीकार कृत मैं पिरोहित पद पाय । सब नए मेरे आ
ज पूरन सर्ब काज सुनाय । अविजे सई ब्रह्म एक । अब बंर माकु उपजत आंन तब
महामाया मोहनी मम नहिं नमा पनिदान । श्रीरामवाच । यो हिज कै है दइ वइ ब्रा
हमक रक्ष निरधार । माया न व्यापे तुम हिं मेरी हो सदा सुध सार । पितु देंगे जुवराज प
दत वषात अवसर पाय । सुन नोगवी ते मध्या संध्या । सुध लग्न सुनाय । वथी सुक रि
ये व्रथ्व कसव्या सयन बुत उपवास । तहां रहहु संजम नियम युत तुम । ब्रह्म वरज
विलास । दुहा । करि प्रबोध रघुवीर कह । गुरु अत हरउर आय । रानी कवसल्या कौ तहां
सबै तात सुनाय ७८ । कविरोवाच । कुलदेव नपूजा करत कौसल्या सुनकार । दांन

कैयै॥

होमसुनमानदुज वंसजथाविवहार ७५ इजाइदेवौवाच रामहोहितुवराज वनै
केसैंवनजैबौ बिनवनवासविसेष हरनसीताकौ कैबौ हरनजुनसीयहोय आत
ताइकौरावन बिनादोषबधविप्र उरषकरिहैनहीपावन बधविनादुष्टदसवदनकौ
सुरकारिजकैसेसरै सुरकहतदेविसरसतसुनजु अविननारक्यौउतरै ७६ दोहा ई
हअवसरईवादिकन सोचवढ्यौउरसोय पावहिरामजुजुवराजपद हरनसीयकैौ
होय ७७ अवतातेनिरधारइहकरीयेकछुछलकाज जाहिरामवनवासलिहि रोष
भाउतजराज ७८ सकपगाइसरस्वतीकरनदेवसुनकाज कीजेविघ्नविसेषकरि
रामतिलकजुवराज ७९ महाप्रवंकामुथरीकेकइकीधाय ताकेउरअज्ञाततव स
रिसतरहीसमाय ८० मुथरावाच आवितमुथराराजग्रहसोनानगरनिहार उछ्या
उतसबकोनयरहमंगलग्रहग्रहद्वार ८१ उर्जनीवा० जाकहपूबेजिहकसौ रामतिल
कजुवराज सोकैहैमकुरथसुषद दियविहानगुरराज ८२ कविरोवाच उपज्योरा
सीदाहउरमनसुन आगमनीच ज्योकपिलागतकुबरीनाचन लगीनीच छंदपधरी
नारिनसुनावयहजगनिदान उरसहिनसकतउपकारआन सुनिरामतिलकउप
ज्यौसंताप आगविनुजरतमुथराजुआप कंपततनलोचनअसुनकीन भ्रकुटीकु
टिलउरधोहनीन ईहरूपकेकइगेहआय बैरौध्यविसदबूढीबलाय निद्रावसत
हांरानीनिहार पापनीरुदनकीनीउकार मथुरावा० इहसमयनीदआवतअज्ञांनतै
सीनमुढकोउवियआंन केकइवाच सोसुनतउगीरानीअैसबेद नयनीतनईश्रवन
सुनेद मुथरावाच इकवातसुनीमैअतिअनूत प्रियराजदेततवसोतिपूत सुनलग
घातमंगलसमाजरघुरामसुपावहिअविघ्न राज केविरोवा केकइसुनतयहहरषकीन हासी
हवधाईहाररदीन मथुरावा मुथराहकसौमनकमससमेत हरषकियगौरनयकवनदे
त रानीवा करिजोररामबडकक रतकांन जननीतेमीकहईधकजांन धायवा० त
वकेरकसौमुथराहिताहि अविस्यासोढनुधबालआहि ग्रहनृपतजन्मतदपित्र
ज्ञानपांनिग्रहनृपतदसर्थवमांन पतिदेवप्रियपतिएकप्रांन अतनवरलताआस
क्तआन तुमरूपगर्वनहिजांनताहि अमनआपमनअतआहि सुषदेततुमहि
जोलोसमीप पलञोटमित्रकाकेवथीप तुवउत्रपठेमातुलनिकेत तुवसोतउत्र
कहराजदेत दोहा रामचंद्रलछमनदउ एकसहजमतचित पावेरामजुराजप
दलछनमंगलनित ८३ दासनावनजीएकरथ नांतरूदेसनिकार कछुबल
सरधजोकरत मछकुमारहिमार ८४ जाएजननीएकके जूरमरतजगजं
त इचरजकहामातकुमय वियहवादवधंत ८५ एकहिकस्पउपजे देतपद
नुजनरदेव अवरमातधरवेदइहा अजकुलरतअजेव ८६ नातोतनकोउनगि
नत अविनलोमउतपात एकभरतउपजतअवरराजवेधदिनरात ८७ हैसी
कैकुउसहडषदुतुमकौसत्यागृहके दुवनिताकीकथासुनलेनिसंदेह ८८
पधुराकविनताकंदुवसंग सुनकुकथाइकसुदरीय सोतिनकीसवि
सेष सुषपयूषउरविषमविषविग्रहवादविसेष ८९ ... नीयकमातउदर

कद्रु वनिता नाम दक्ष प्रजापति की सुता। रिषि कसिप की बाम ॥९२॥ एक समय संतुष्ट अ
ति जबै भयो प्रिय जांन। निज मन बंछित नाम नीय। दरू मागे बरदान ॥९३॥ कद्रूवाच। क
द्रु मागे जोर कर। श्राकृत विष अद्भुत। सहस्र अनसंष्या अति सविष। पनग हो हु मम सुत
॥९४॥ वनितावा। वनिता बर माग्यो बहुर। दे हु उभ्रै मम दोय। नागादिकन ते अधिक नित करे न
समता कोय ॥९५॥ कसिपउवाच। दए दुवन बरदान दुव कस्यप ये मन प्रकास। ऐसे ही ह्वै है
अविस। बामा करि हु बिसास ॥९६॥ तहां नावी वस गर्भ न स्थित। तद उभय जब नाम कसि
प जु बतिन सुत कह्यो। करियो जतन सकाम ॥९७॥ अविधि ह्वै न गर्भ नए। हित बंछित सब होय
इह विन्नेद न आपते। करि हु चूलन कोय ॥९८॥ मधुराबा। कसिप तिय नय बोध करि। आप
गए उभ उद्यान। तहां साधन कत उग्र तप। वेद जु बिहित विधान ॥९९॥ छंद पधरी। इहां कंदु कि
ये उत्स बनेक। इह प्रसुत नए सहंस्र एक। नौ प्रसुत बहुरि विनता सु न्याय। ईहां हैं उपजे उ
दर आय। ईहा सुधरे मृतकु न आंन। प्रतिरक्षि बध्य जुबती प्रमान। सत पंच बरस बीते सु
नाय। इहां सरप आप बलनिक सआय। कंदु के इरन नए कांम। पाए जु पुत्र बहु रु भुजंग
नांम। ईहां उपजि सोक वनिता अनंत। कि बार बर मिथ्या न्यो कंत। वनितावा। सुत सो
तदेष बहु बढी सूल मैं पायो एक न पुत्रमूल। मधुराबा। कामना पुत्र नहीं विलमकीन। इ
क इह फोरि निंमें नमलीन। अधअंग रहित युत उर्ध अंग। प्रगट्यो तिह इहां अरुण पंग। अर
णवाच। दुष नयो आप अरधंग देष। बिनता दिअर्ल बोल्यो विसेष। अन अविध फोरि अंड
जु आजक कत आप काज मेरो अकाज। बिन कोन जननी अपराध वीक। कि इह हे तमो
हि तै पंगु कीन। अस इह नयदासी हो हु आप। परिनव बसहहों इहै पाप। पंच सत वर्ष दास
लपाय। सुत इह तिय मोबकै रिहै सुनाय। बर्ष सत पंच रह्या विधांन। इह इह पुत बाकरि
प्रमान। इह दुतिय इह जिन करि हुबेद। बिन अविध वितीति विरुध बेद। अरणकरि जन
नि उपदेस एह। सक्रम्यो अरक मंडल सनेह। मधुरावाच। इहां महाप योनिध मथन किय
मिज सुर असुर समान। रतन चतुरदस काढि तत हां कीने बहमि प्रमान ॥१००॥ अस्व निक
स उच्चीश्रवा ससि आभा तन सेत। अमित तेज विक्रम अतुल। सुन गुन लछन समेत ॥१०
कस्यप नरिष की उभय तिय समह इक सुत्र संग। विसद गवाक्ष विसाल वस बैठी येह
उतंग ॥१०२॥ कंदुवाच बाछंदप। बूझे कंदु करि बल बिधांन। वनिता उची अव क वन बान
वनितावा। उतरि फिर वनता दयो एह सरबंग सेत हय कह्यो संदेह। कंदुवाच। पन बाध
कह्यो कंदु सपाप। दिअमर बीच अरु बाह सदाप। कहै जा हय याहि कोय। होर रूपै
ह तब दासहोय। लयन नयो हूम जो देव हेत। करि हो तो य दासी मम निकेत। मधुराबा
कहि पापधरम पन दकुन कीय। नगनी रुसो तिकरि स त्रीय। कंदुवा। सुत बोल ज
संघ्यान साप। यह कारन कंदुक ह्यो आप। दासी त्व बांध पन व्वन दीन। क्रीडा हय वनि
ता हम कुकीन। उच्चैश्रवह्य जो सेत आदि। तुम अंग जु न वर्ण क करि हु जो ताहि। अनि
करे उत्त ब्बल काज एह। हूं कै हू दासी सो तिग्रे ह कर रहै जन्मे जय सर्प सत्र तिनासि कु
पेहो दग्ध तत्र। ब्रह्मोवाच। इह सुन्यो जबै विध सर्प श्राप। आए कस्यप यह तबै आप। स
मझाय कह्यौ तहां समायांन। मति हो हि वियस कोध मांन। जग अहि तत्र आहि त्रह इह ष्टज

तत दुःख अयनादिन परंत। जिह हेत षीन षल होत जादि। मांनिये अयसो इ विम्र मादि॥
विषहार मंत्र विद्या विधांन। पिद एक सियही करि प्रमांन। समकाय तउ त्र कसिप सहेत। त
बगए प्रम अपने निकेत॥ मथरावाच॥ कंद्रु वनता दकुत निदांन। पनयदे दात करिहै प्र
मांन। ऐरहीसो यनिज ग्रेह आय। पनबाध सुनावी जोगपाय। उरसर्प त्रास उपज्यो असे
ष। सबकरत त्र ऐ चिंता विसेष। इह सम कग ऐ विषमु असेस। कियसिषा उत्तरो मन प्र
वेस। प्रगट्यो उ वैम्र व आनरूप। वैवर्णसिता सत चो विरूप। इहां कंद्रु वनिता उ त्रय आय
पेष्यो हयत बसुष सौतिपाय। पन जीते कंद्रु फे पट पाप। अरु वनता हारे स्वन आप॥
वनतावाक॥ कीनौ प्रमान वनिता अकोप। लाब न है साधुन स्वन लोप। पनकस्यो साष
सुरसो इप्रमांन। मिथ्या न होहि अघ त्रास मान॥ कवि॥ गई डुषसहत सब सौत येह। दास्वत क
र म वनिता सु देह। पर त्र व सहत अविहत विचार। मुषफेर न बोलत मांन मार। दास्वत दु
षदारुन इ साध। उनि करत सौत नितन कउ पाध॥ अथ गुरड जन्म॥ सत पंच वरष वीते
सुन्माय। उत पन गुरड जौ समय आय। अविध वस त्र एउ रन फुअंग। त्र वत म देत बल
किये अत्रंग। तिह तेज नई कन ही सकत तास। पायो विहार कू द्यौ प्रकास। महाकाय महा
बल अप्रमांन। प्रगट्यौ सु गुरड प्रथ्वी प्रमान। अग्नि सम तेज तिह देह आप। तिह जरत म
हा त्रयलोक ताप सब देव राम्ब रत्र ए सषेद। वकियह गए अज्ञात न्तेद॥ सुरोवाच॥ सु
र कहत अनलप ह नयसमेत। तुमु विम्र दहिजार तक वन हेत। आउ न जुनीत मांन त अ
षरू। अपराध विना दीजत न दरू॥ अग्निवा॥ उतरत बदीनो अग्नि एह। नहिकार न मेरो
निस देह। वनितासुत उपज्यो गुरड वीर। सो उ महा तेज अमित सरीर। तिह तेज वद्यो इह विम्र
ताप। आरधक रिजु तिह प्रसन आप। सुर आयस बैत हा गुरड साध। अतिकाय तेज देष्यो अ
गाध॥ सुरवाच॥ सुरन सब प्रगट कीनी प्रसंस। कुवधरम है तुम ब्रह्मवंस॥ मथुरावाच॥
सुरलोक गए सुर काज साध। इहा ताप समित त्रयो मिट उपाध। सुन सात रूप करि लघु स
रीर। वनिता पह आयो गुरड वीर॥ गुरडवाच॥ मिल है त जुक्त पूछे जु मात। इहदसा कवन
तुम दुहदात॥ वनतावाच॥ हूं तात कह्यो वनिता विचार। कुनइ दास पन वचन हार। कंद्रु
मिल उ त्रनक ए र कीन। हयरोम पेव कत वरण हीन॥ गुरड वा॰॥ तव सुनी वात कहि गुर
डतादि। अपराधी मेरे सर्प आदि॥ मथुरावाच॥ मन गुरड सर्प अपराध मांन। उपज्यो तिह
कारन वैर आन। तव वैत विनता सुत कै संताप। उरगन नौ त्र हसन करत आप। नयउ त्रनास
दिन प्रति सुनेद। सुनसोकन इ कंद्रु सषेद। अंगार गाव बाधे असंत। अतिदुसह वसन ज
रिहै फुअंत। गति सरप गंध मूसी असंत। वषनास तजे अरु न पै अंत। इस्ये ग गुर रोव त्र अ
ज्ञांन। म दिला ज्ञत सकर सोकमान। उद्धम बल नांहिन करत ग्रांम। परबोध सामसोच्यो
उपाय॥ कंद्रुवाच॥ कंद्रु विनतासो प्रगत कीन। पितुमात एक उत्पति तिप्रवीन। त्रैव हिंन प्रगद
हत नस प्रीत। अज्ञांन जुक्त मोह त अनीत। दासत्व तोहि दीनो कुदाय। कुनइ दोष न जन्म
सुन्माय। दासत्व दुहसतोहि करू दूर। मंत्र ईक जु पेमांन कु समूर॥ वनितावाच॥ कंद्रु के
वचन विसवास कीन। विनतातबहु तपविध नवीन। कहि कंद्रु कारन कवन काज। दासत्व
मिटे मन उपसमाज॥ कद्रुवाच॥ मथ सिंधु सुरासर लिय [illegible] अमृत [illegible] मनत कुनमो दिहे

ऊ आन ॥ वनितावाच ॥ सो फेर कह्यो वनता सुनाय । वस्तु चाक दहां है सो बताय । कदुवाच । लव
णोद धत तट है सं बर लोक । सब वस्त जहां धां णी स सोक । वनता सर हत निषाद वीर । तिन
क रव द र रह्त तसिंधु तीर । एकांत गौर वह गुढ आदि । ता तै जुन जांनत अवर ताहि । यम्रत जु
ध र्यो घ टत हां आन । मन इद ताहि निजीत मांन ॥ विनताबाच ॥ इहां कारन वनता ये ह आय
सब कहे वृत्र गुरड हि सुनाय ॥ मुथरावा । सो सुनत भयो मनु गुरड संत । अनलकि धुपव
न्न व हि व हि अनंत । ईक निमष मात्र तहां गुरड आय । बिज षो द निषाद न गयो षाय । षो एनि
षाद सब कुल निसेष । विगत नही सुधा पायो विसेष । तपक रत जहां क स्प पव जाय । इह स
मय आय तहां गरुड आप । किये वृज पिता पद निमस कार । पहिचान पूत सब गृहवु हार ।
गुरडवा ॥ को इन पितु हि सब व गट कीन । विनता विपत दास त्वदीन ॥ इग पित कह्यो सुनत
कारज व सिध । लेजा कुसुधा कृत करकु सिध । इह कुं जु हु सुधा रत अमत आज । कहु सम
थ नाहि जु करन काज ॥ कसिपवा ॥ रिहस कह्यो यहां इक सरर साल । वन लता ग ह न अनि
तरु तमाल । मद मत्त ड रं द इक मह षमांन । सर वर ति ह आव त जल सिनान । दस जोजन दी
र घ तास देह । द्वादस लांलंबौ निसंदेह । जल पैठ कर तकीडा स जोप । अंदोल सलिल नौ व कु
ओर । कमठ त हार हत इक महाकाय जल है जस द्दूता कह जगाय । व ऊर्ड चौ त्रय जोजन
विथार । कहि पंच द गुन वरतु लाकार । सव ड ष्ट ड रव वैरानुसार । अद्या वद जू फ त्त बल अ
पार । सो करकु जाय भद्दा न स काज । रसनास स्वाद कर पंडा राज ॥ मुथरावा ॥ हरष इह सु
न त षग राज होय । सर आय लरत तहां देष सोय । करि नष र अग्र तिह य ह न कीन । लेनयो
कमठ गज गिगन लीन । कारना न्हूत कि कु सरत कूल । सुरत्र षक ऊ ते तहां अति सथूल । संपा
तपं ष मारु त स चाल । वन वृक्ष गिरत कंपत विहाल । वटवाच । गर्ज युत कहे वट वृषगहीर
वन नासदे त कि तमहा वीर । वटता स सति जोजन विथार । साषा अनेक पलव सुदार । मम
साष बैठ आनंद मान दिनक छु कन्न दाक रियै निदांन ॥ मुथरावा । इक साष अधोमुष
लंब आप । रिषबाल षिलत तहां तपत ताप । साषा श्रित है सुत ब्रह्म संत । अंगुष्ट मात्र
तन तप अनेत्र । संष्या अद्या सीस हंस सोय । ह ठ साध जो हाविदेह होय । तिहसाष बै
ठ षगराज तत्र । परासो तुटु ट नु वलित पत्र । तिह गार वंच य ह उ श्रो तास । तै अतव
ग गरुड मार ग अकास । विसद गिर गंधमादन विष्यात । तपकरत हां कस्प सुतातकि
य पिता देष तिह निमसकार । अविलोक गरुड विक्रम अपार । कस्पपवा । पितु कह्यो सुनकुर
क सुत वनीत । इह साषा लंबित है अनीत । रिषबाल षिलत जे ऊर्द्ध रूत । कै डषि त नते सा
षा सहेत । इहां ते है जोजन लक्ष एक । हिमवंत अद्द कंदर अनेक । ईह साषा राष कु उहां
आज सुष बाल षेल पावहीस माज ॥ मथुरावा ॥ लेगयो तहां षिण मात्र लाग । साषा सुध
री कंदर स भाग । गिर श्रृंग बैठ तिह गुरुत मांन । मातंग कमठ न दे षि अमांन । तहां न यो त्र
पत जब बैनतेय । उ ह्ल स्यो गिगन पंथ बल अमेय । संपा तपं ष सुन अमरधांम । त्रय लोक
भये आकंपतांम । ऊ य अक समात उतपात हेत । सुरत्रास पड्यो सुरपत समेत । देवोवा ।
चतुरंग च मुक बनाहि विन । को उ सत्रू न दीसत को पकीन । उतपात आन असं भाव कहा औउ

देवगुरइछतबंदेवराज ॥ इहसपतवा ॥ गुरकह्यो इहसपत जो इप्रमांन ॥ सहिन्नयो गुरड है
जनममांन ॥ कियउद्यम इम्रतहरनकाज ॥ उहवह्यो तेजवंतपातआज ॥ संपातपंष
तसवातसंग ॥ बुहमंझलौलथिरस्वरविनंग ॥ सुरराजसुन्योआनेयष्टऐह ॥ दुषवह्योक्रोध
अनसहतदेह ॥ भुथरावा ॥ पठयेजुइंद्रचतुरंगपूर ॥ सानंधबंधसुरसमरसूर ॥ सुरआय
तहांसबसावधांन ॥ विस्तारअम्रतरछ्याविधांन ॥ सोरहेरोकपंथसुरसमूह ॥ पावैनपवन
क्विगवनदूह ॥ अवमांनदेहइह समयआय ॥ संक्रमोगुरड अपनेसुभाय ॥ सुरसेनगुरड
रोक्यौसक्रुध ॥ जाजुलपन्नयोबक्रकालजुध ॥ संपातपंषरजचढिअकास ॥ आवर्तन्नऐसुर
विगतआस ॥ दिगमुढन्नऐदिगधदेच ॥ आवैनदिष्टषगपतअजेव ॥ नष्वंचपंषधूरनघहा
र ॥ सयामहोतसुरगनसंघार ॥ आकंपनयोअतिइंद्रलोक ॥ अमरगऐन्नाजअपआपओ
क ॥ सुरन्नएविकलतनसघहार ॥ धरजातनिरंतररुधरधार ॥ सरिताजुवलीअतिश्रोणसंग
तिहमहारुदअविरलतरंग ॥ सुरन्नऐपराजयसमरसिध ॥ पायोषगेसतहांजयप्रसिध ॥ थि
तन्नयोआयतबइम्रतथांन ॥ उहांचभितवक्रअयमयन्नयांन ॥ सोदेषगुरडकृतलघुसरी
र ॥ क्विपस्योक्रूदतिहचक्रवीर ॥ रहिन्नमतिचक्रबाहिरसंचार ॥ धरतिहसविविधप्रयघो
रधार ॥ तहांमध्यसरपद्वैदेषतास ॥ मुषविद्युतचषविक्विअग्निवास ॥ दारुनडजीहअनमे
षदांन ॥ विषश्रवततैनदाहकविधांन ॥ सोउदिष्टमात्रजारतसंसार ॥ आकृतअनिष्टवि
तवेगवार ॥ आघातपंषकृतगुरडआय ॥ सहिवेगअनलजरउफसुभाय ॥ आबननेत्र
अहिन्नऐआन ॥ सूक्ष्मनकबूतमगिगनसांन ॥ नोवेनतेयअनदिष्टनाय ॥ इहअम्रतकु
न्नलीनोउठाय ॥ लेचल्योगिगनमारसली ॥ सुत्रसिधहोतकारजसुसील ॥ मिलविष्णुगुर
ड कहगिगनमाग ॥ अतिवेगदेषविक्रमअनाग ॥ विष्णुवाच ॥ विष्णकहिधिन्नतूवैनतेय
अन्नयष्टमागवरजगअजेय ॥ गरूडवाच ॥ गुरडवरतबैमांग्योअनंग ॥ सिरउपररराष
कुनाथसंग ॥ विष्णुवाच ॥ उनिमागगरुडहरिकहिसप्रेम ॥ निरधारचितवंछितसनेम ॥ गरुड
वाच ॥ मांग्यौसुगुरडआनंदमांन ॥ प्रभुकरऊअमरविनयम्रतपांन ॥ विष्णुवाच ॥ इहत
थाअस्तुहरिकह्योआप ॥ ममध्वजावसऊतुमबलअमाप ॥ सोमांनसाधुमनक्रमसमेत
करतारन्नएतबगुरडकेत ॥ गरुडवा ॥ अतिहरषवंतकहिगुरडऐह ॥ लछमीपतवरकछु
तुमहीलेह ॥ श्रीनगवा ॥ वरलह्यौविष्णुयहजगविराज ॥ रथहोऊहमारौविहंगराज ॥
मथुरावाच ॥ परसपरलहिवरजगउनीत ॥ न्नएविष्णुगुरडवाहनअनीत ॥ दुहा ॥ आउनह
स्विवाहनन्नयो ॥ अरुहरिधजानिवास ॥ सुनसेवकथेस्वरी ॥ हरिकीनोसप्रहास ॥ ९३ ॥ छंदप
उरुचल्योगुरडलहिवरअनंत ॥ सोपवनसरस्त्राकरतसंत ॥ इहांइंद्रआनपऊच्योउदार
परमारवज्रकीनोप्रहार ॥ तवबज्रइंद्रलघुकुसमतूल ॥ मोहिलग्योप्रयानहीउपजिमू
ल ॥ तद्दपदधीचअरुवज्रतोहि ॥ मनमानदेऊकबुआदिमोहि ॥ भुथरावा ॥ इकपंषचंचगु
हिलहीउषारि ॥ दियमांनइंद्रकरदरमार ॥ तिहकहिसुपंषत्रयलोकतांम ॥ निकस्योपरण
तिहगुरडनाम ॥ इहांपस्योबिसांनोइंद्रआय ॥ तारछ्समित्रकिसहिनताय ॥ इंद्रवाच ॥ मिल
सषान्नऐहमतुमसमांन ॥ मोहिकहिकुआपनोबलप्रमांन ॥ गरुडवा ॥ आतमबलविक्र

मनुष्यनंत सरबथा प्रकास तन दिनसंत कहि कृत थपी किंचत जु कोय हूं प्रत्यक्ष तजो
तुम मित्र होय भूगोल चराचर विसद वास ईक पाइ कर्ष तें भ्यो अकास मिलई इनेक तो से
जु मांहि जुत लोक बलि बत न ऐ जाहि ॥इंद्रोवाच॥ विक्रम अनंत यह करहा विसेस सत्र
वहि सबै तम करह षगेस निद चैक रसु नियेधरम नीत उगट हम कहत है विस्वधीत तुम
तो न दिया वृति ईम्रत तास उ निदे हौ कं दुकर हप्रकास पाई है सुतो उत्र नपयूष कंदु जि
ह उपजे सर्प कूष डष्टवे अमर कै है उ साध्य अदिति अनेक करि दिउ पाध्य दिवन इहताते
इम्रत दे कु लोक त्रय रष्या धरम ले कु ॥गरुडवाच॥ वासव हि गरुड जुत कहि विवेक य
म्रत लग हम हि है काज ऐक मम संग इद्र महिमा अमाप अइ पात रूप तुम चल कुआप
करि काज सिध रिकू ऐकांत तुम सुधा कुं न ले जाकु संत करि रूं हम नाहि न बीज कोय
हरि जाकु इम्रत ले अन्त यहोय ॥मथुरावा॥ मंत्र इह ईद्र कीनो प्रमांन आए जु संग करि रू
पआंन ईम्रत घट दयो माता हि आंन पन करयौ गरुड बुध बल प्रमांन अम्रत घट ग्रे
ह कं दु अ सेष वनिता हि गरुड आने विसेष दासत्व बुट्यो हम गरुड दाष सो ई कह दे कं
दु देव सोष ॥गरुडवाच॥ अपराध छिम कु मम बहिन एह हूं प्रान विया तुम निसंदेह सु
नये ह जा कु अपनै सहास तुम न एमुक्त पन बंधतास ॥सुथरावा॥ इहां यम्रत पान कह
नाग आय सुन्न वचन गरुड बोले सुनाय ॥गरुडवाचा दुहा॥ सुन कु मात न्हातासकल
सुधा जु जुक्त सुन्हाय क्रत सुमंजन दान करि आन पिव कुं उनि आय १०४ ॥मथुरा॥
कुसरासन उपरि कलस सुधा धर्यौ सुष संग नाग समूह सु विमलनद आए मंजन अं
ग १०५ गुरड सिधाए आप ग्रह मोष बंध पन मात ताकत कु तो सुरेस तहां तब चूजी
तिह घात १०६ इंद्र लोक ले गे इम्रत कियरा सब सुरकाज सुज सत्र यो त्रय लोक सुन
सुषन ये अमरसमाज १०७ करिकरि मंजन नाग कुल यह आए सुष जोग तदा न पायो
इम्रत घट पूरन नएनयो ग १०८ कहा कथा इह मथुरा सोतिन की सविषाद होत सु
रासु रषे इहव वियह विषम विवाद १०९ ॥इतिवनिता कं दुप्रसंग॥ श्रीरामवनवास
गमनं प्रसंग सु लिष्यते नाबाबा रवनरदहरदासेन वि॥ कवित॥ दिनकरि किरन
मलीन दिवस असमय उरु दरसन कयम कुला हलकरन घरन असन जंबुक घन
केर सद्र फेकार विषम वदि नार अवारन उल्किा दंड ध्वं उ त सविरषारि तु धारन न
वच्र तच्चनम्सकंपत सन्नय प्रलय काल परिमानियो उतपात हेत आगम अगम अस
ह हौ जगदीसन जानियो १ ॥कविरोवाच दोहा॥ कुबजे का नेष जजे कुटिल कुजा
त कुचाल त्रिया विसेष जु दासिका इनके एह इहाल आगे पीठे सोवन हि करे हीअ
नर्थ उपाय इनके वचन विलास मही जग्त प्रलय कै जाय १११ ॥बदपधरी॥ चित गिराइ
है सुरकाज चीन केकइ हृदय परिवेस कीन ततकाल त्रियामति फिरी तास वचना मुषधा
प कीनो विस्वास केकइ वाच कहि जननि करु मेक वन काज अविलंब बुधि मोहि दे
कु आज ॥मथुरावा॥ मथुरा बोली तब कपट मूल कुल देव है हित बसा न कूल ॥कवि
रुवाच दुहा॥ केकइ कन्या समय वचन तिरसकु कीन विप्र साधु तिह रोषवन उपद

आपतिहदान॥१२॥ बालकबुधअनंतबस॥ पायकुसंगप्रकास॥ समझापहिसबलोक
मे॥ कैहेत अपहास॥१३॥ केकइसुजआपको॥ नावीजोइसुनाय॥ मिलीसहाइकसु
थरा॥ अविसरबनोसुआय॥१४॥ आयोदावसुआपनो॥ कुब्जापापप्रकास॥ उपदेसोस्वा
मिनअहित॥ विप्रहनृपविनास॥१५॥ सुयरावा॥ परिन्नवसोतप्रतापकरि॥ तिहजीवनधिका
र॥ अहंकारसोआपनो॥ मरिबोमंगलचार॥१६॥ दएकुतेवरदानदै॥ नृपतोहिसहितसनेह
तेथातीराषेतदिन॥ हवकरिआजसुलेह॥१७॥ वरषचतुरदसएकवर॥ वसहिरामवनवा
स॥ नरथद्वतियवरमागिसुव॥ पावहिराजप्रकास॥१८॥ कविरोवाच॥ केकइहवबोधकर
कुबज्यागइनिकेत॥ अंसांन्नावनाअरथअब॥ कैहेनावीहेत॥१९॥ कवत॥ दयावंतअत
धीर॥ अखिलगुनजुतआचारिये॥ नीतधर्मकरनिपुन॥ वेदविद्यासुविचारिय॥ सत्तविवेकसु
सील॥ सरलसुनवाकसुचंगिय॥ उच्चवंसउतपन॥ विमलमविजयविभंगिय॥ अतिउष्टप
रायनपापपन॥ संगतासजोअनुसरे॥ दिनराततताहिदुखबुधदै॥ कमहिआपऐसोकरे॥१॥ ८१
इतिरामतिलकविप्रोपदेस॥ दुहा॥ मलिनवसनतनकुटिल॥ तरेषकपाल॥ रूपन
तोलोवनअरुविलास॥२०॥ उरधरोमचरकंपतन॥ दरतनइनजलधार॥ मिलआगम
वैधथमनु॥ कैविधसुचनहार॥२१॥ तिहकुबज्याउपदेसतै॥ वनीसबैविपरीत॥ रामगवनरा
जामरन॥ सोकनरथदुषसीत॥२२॥ याकेग्रहयाहीसमय॥ सुषआगमअवधेस॥ सनमु
षनाइसुंदरी॥ दूरबजथाप्रवेस॥२३॥ राजाव॥ राजापूछीसहचरी॥ प्यारीकहांप्रवीन कोधा
गारप्रवेसकिय॥ दासीउतरदीन॥२४॥ राजावाच॥ छंदपधा॥ क्योंगइवलिनातिहनिकेत ह
मजामोनाहिनदेवहेत॥ दासीवा॥ सुनियेनरेसतापैसधार॥ सबकारनसोकहिकूसंनार
कविरोवाच छंदपैसाल॥ नृपदेषसूनोनचनननिहवै॥ तहाउपजहीउरत्रास॥ विष
जुक्तनाईसमुषवास॥ परमप्रेमप्रकास॥ धांकुनोंसुनेग्रहकोउतनि॥ पेखिहीविब्रताइ॥ चि
तविकलवेकूघांचकितचिंतवत॥ लुधितरकवटाई॥ नयउदधिथाहतसेतुनामनि
गेहमहदसरषगए॥ विपरीतनेषविलोकवनिता॥ भीतयुतविस्मयमए॥ कवित्त॥ नह
नइदेषीनसुनी॥ चितहूवचनअगोचर॥ असंभूतअनचित्तदेवदानवकरिउत्तर॥ नाग
सुरासुरविरत॥ ग्रंथकाहूनहगाई॥ विद्यावसनविसेष॥ ब्रमवेदऊनवताइ॥ अभ्यास
नअतुनवआपपर॥ उक्तकपावनपहिहै॥ वामाजुचिरतनरहरसुकवि॥ देलमात्रगह
कहिहै॥ छंदपधा॥ निकटतबबैववकोसिलनरेस॥ वनिताहिन्नएदूबतविसेस॥ राजा
वाच॥ तुयसयनकवनकारनजुनाम॥ तबमोनदेषमनहोततांम॥ तबअहितकीन
तिहकोपिकाल॥ बधदंरुपायकैहैबिहाल॥ करिहैअबधमोइबधकाज॥ औबधजो
गसोमुक्तआज॥ दिरूसम्रधदारदीन॥ धनहीपसुतुलकिंऊकरोबीन॥ रिवकचकब
धस्थजुत्तसुराज॥ ववसवतीअषिलमेरेजुआज॥ भावीसोसिधसोवीरपेष॥ सोरठअ
वितप्रतचीविसेष॥ कोसलमागधबंगागकास॥ उनदप्रदेसऔरोपकास॥ मागकुसुंदे
सजोचितमांहि॥ तवसत्तनियत्तकरिऊनताहि॥ केकइवाच॥ पतिसहसुनतबोलीप
संस॥ वचनतमसूररघुराजवंस॥ वरदांनदएतुमदैविसेस॥ मैनासन्तताषेनरेस॥ सु

देखु सुख अवै प्रियकै दयाल ॥ सपत तुम राम करिहु सुढाल ॥ राजावाच ॥ प्यारी सुमागप
लीजै प्रकास ॥ सुभ दिवस आज देखहुं सहास ॥ अभिषेक तिलक रघुराम राज ॥ सब मि
लि आन मंगल समाज ॥ केकइवाच ॥ दोहा ॥ मन इछ्या सो इमान नीकह्यो ॥ प्रगट तजि
कान ॥ मोहि सपत है राम की ॥ जो न करहु इह जान ॥ २५ ॥ राजावाच ॥ ईहा बे वर्थ दहै देवए ॥
साषी नृत सुनाय ॥ कहिहै जो तू सो करूं ॥ पाइन रेषव मान ॥ २६ ॥ केकईवाच ॥ छंद ॥
वर एक चतुरदस वर्षवास ॥ दंडकारन्य सेवहि उदास ॥ मुनि भेष धार इह लग्न मांहि ॥ जट
जूट बांध वन राम जाहि ॥ इछ्या जो आवहि अवध अंत ॥ सेवहि मन इछ्या वनहीं संत ॥ दू
जौ वर नरथ हि राज देह ॥ संपदा न्रम दल बल सनेह ॥ जन बाज पवग ऐ अति वेग जान
इह समय न नरथ का ईहां आंन ॥ संसार इहै सुन तिलक साज ॥ अभिषेक मकुरथ स कहु
आज ॥ कविरोवाच ॥ दोहा ॥ वचन लगे विषवान से ॥ षाई हृदय दरार ॥ मान कंपकै त बुजह
त ॥ नृप गिरे असंभार ॥ २७ ॥ श्लोक ॥ महद् रत्त बिन समूल ॥ बहु साषा पत्र विस्तर ॥ वध्वी
सत्र विनपचनं ॥ वामा वचवातं विभूतं ॥ दोहा ॥ आधिन राग विमोह ज्यो ॥ विवस होत म
घवंद ॥ नृपति की सो गति भई ॥ देषत मुसेन रिंद ॥ २८ ॥ हस्त कुंभ ज्यों न वरहत ॥ सिधी
करत काम ॥ कह्यो अकारण नृपत कै ॥ वचन मर्म छिद वाम ॥ २९ ॥ सप हेरी बंबी समुष बुं
गीना द प्रकास ॥ विषधर दारुन करि विवस ॥ नग रन्न्धावत तास ॥ ३० ॥ छंद पधा ॥ अनद्या
त किराती पास आंन ॥ मृग बाध तजौ न्रघ बद्ध वांन ॥ केकई नांत तिह घात कीन ॥ नहीं
जांन नराधप मोह लीन ॥ नहीं गिनत त्रिया ह पति विनस ॥ नावी बलिष्ट श्रुतीस प्रतीना
स ॥ दोहा ॥ नृपति गई विना वरी ॥ च्यारूं जांम अचेत ॥ सज्या नृप मीनत कसे ॥ उरध उस
सन लेत ॥ ३१ ॥ जब ही राजा सुर्छित जगी ॥ विषम रूप लषि वाम ॥ कुलकप सीना कंपत न
रटत राम हा राम ॥ ३२ ॥ राजावाच ॥ संपत यह सब राज सुष ॥ धरा अविध धन धांम ॥ मै नर
थ हि दीने मुदित ॥ मत पठवहु वन रांम ॥ ३३ ॥ तेम मराषे वांन तब ॥ मैरै तम हीं प्रांन ॥ ससि
वदनी अब सोक रहु ॥ होहु सब जु कल्यान ॥ ३४ ॥ उत्तर कौ जुव राज पद ॥ पावत वेद प्रमा
न ॥ कुल तौ यातै करत हौ ॥ वनिता नीत विधान ॥ ३५ ॥ नरथ हीं संपत राज जुव ॥ राम हि राष कु
गेह ॥ तुव मन वंछित सब न सुष ॥ अब करी येमत एह ॥ ३६ ॥ राम न ईछ्या राज की ॥ उदा
सीन नित आदि ॥ सो नहीं माया मोह वस ॥ तू कित का दत ताहि ॥ ३७ ॥ केकइवा ॥ पति ले
करि कै वचन पन ॥ भरत छगाई मोहि ॥ अब जु कहत नृप फ्रोर सी ॥ हत्या देहू तोहि ॥ ३८ ॥ उ
ध परतन अरु विष भषन ॥ रसना छेदन दंत ॥ सस्त्र घात जल अनिल संग ॥ तजि हूं प्रा
न तुरंत ॥ ३९ ॥ दैन कहे वरदांन है ॥ राम सपत कत राय ॥ पन मिथ्या कनै परत ॥ सुरन रक
है सुनाय ॥ ४० ॥ राजा करनी रावरी ॥ हम जांन्यौ अब हेत ॥ नेह रप विए नरथ अरु ॥ राज
राम कह देत ॥ ४१ ॥ छंद पधा ॥ दुष उपजिवो रह हतु महिं दिव ॥ नय छ्याफ क रूं घी तुम हि भे
व ॥ मोहि कहा विसाद हाट मांक ॥ बेटान नरथ केकइ बाफ ॥ आगे दधीच वर सक दीन
सो करी सत्पना न ही सो कीन ॥ मर्म छिदा वचन सुन रहे मोन ॥ ले त्रिया जरे पर दत लोन ॥ राजा
विलाप कविरोवाच ॥ दोहा ॥ करि यतक छु ककहु नयो ॥ मनमे वत महिपाल जो गसि

धके समयज्यो करइयो चितन विहाल ४२ जैसे गरुवा के घरत नईअचिंतितनैर न्रलेन्न पसुबु
धबल हाहाकृत हियदेर ४३ उपजित अनिष्ट अनंदथल क्वनन करत विधान सोवन विज्जुरी
के परे थकित विहंगमथांन ४४ छिनही चेत अचेत छिन सो चितमो चितस्वास ज्योवेलीय रियार
की न्नबत तिरत विकास ४५ इह गत विलपति नोरनै उघरे देवडुवार संषादिक कालिरसबद
प्रगट अनेक प्रकार ४६ प्रात दिन अर्क प्रकासतै जो नवत विविहार सुन्नद जथाक्रम क्रम सब राज
तराज डुवार ४७ बंदीजन बोलहि बिरद सूवक वंससुजांन अपने अपने कुलकरम सावधा
नसनमांन ४८ बालवृध जुत तरुनवय पुरवासी नरनार राम तिलक युत रूपरस चाहत चित
विचार ४९ निशालइन नेक निस उरजन प्रेमप्रकास उदितकवै कैहै अरक उरिकवढ्ढ जैसआ
स ५० सुवहि विहांनी सरवरी दिनकर दरसनदीन सुरन्नजानि तक्कृत सबै लोक जथाक्रम
कीन ५१ सबसंभार जुसिधतहां विहत वसिष्ट वनाय ज्वैसुमितउबाइजुत अविनइ सग्रह
आय ५२ इहां सुमित आदेसतै सुन्नवाजे नीसांन मांन कुघुमरत घनसघन पावस रितुप
रिवान ५३ चारन सिधजुचतुर चित ओपत सन्नाउदार कीत प्रकास्त बिरई कदि कुलबंदनज
यकार ५४ राजत न्नन्नसनवसन रंग विक्रम विनय विवेक रघुकुल मंडन वीररन आएवंधु अ
नेक ५५ विवध सुन्नटचतुरंग वनि राजत राज दवार हय हैषा रवगज गरज बढीएकहीवार ५६
ईहां केकई उरअमित वाढ्यो विषम विषाद सुनि निरघात निसांन सुन बंदीजन जयवाद ५७
केकइ वाचबंदप्रधरी॥ केकइपठई दासी कुनाय जयसब्द निवारकु द्वारजाय आदेस सांम
नी सुनि असंत ते गईद्वार दासी तुरंत बाजै निसान मंगल विधांन जनन्नएचकितक कुअसु
नजांन अवचिंत प्रगट भरवात एह गहपरी वीजजनु ऐहपेह मन सोचकरत मिंत्री सुमित
संचरी केकई भवन संत नृवपरे न्नपति देषे कुनाय उरिनयोत्रास अति मिंत्री आय समक्यो
तब इहकृत मंत्रीसार केकइ कह्यो कछु यह विकार रघुराजतिलक यहराज रीत अरुपकी
नआदर अनीत करिजथा धर्मन्नतिनमसकार जीवती वंघजयवार वार प्रभुदसा देषतिह
छिन प्रधांन परिविस्मय व्याकुल न्नयेप्रान नहीं इहसक तरहिसक तनाहि मंत्रीचएसो चित वि
तमाहि मांन निलष अंतरगत सुमंत इहसमय बोल कछु असंत केकइवाच॥ राजा निस वि
लपत रांमरांम जुगजुग समवीती च्यारजांम कारनदुषह मकुनलष्यो कोय रजनी सबवीती
रोयरोय न्नपहून कह्यो कछु षनिदांन हविरामराम कहि कियेविहांन रांम कुले आवहु मित्री
राज केकइ कुकाज उपज्यो अकाज महिपाल दसा देषत सुमित तुमरांम आन मिलवहु तुरत
कविरोवा। सो सुनत महा मित्री सुंन संक्रम्यो कवर यहसावधांन हृत्तत्व हलचल जजुतराम वीर
संदन तिह आय मित्री सधीर उतिराम करे आदर अपार वंदन कृत मित्री सुवारवार सुमित्रवा
परधांन रांम स्यंक हियेम न्नपदरसन कहवलियेसनेम कवरोवा॥ वपरामविवध नन्दानवना
य सुनेसनादर सदी नीसुनाय मिल सषा मित्रवात्री कुमार आरोहउ संदर घुवर उदार सबव
टे जथाक्रम जान साज रथरुढ प्रभुआगे मित्री राज सब दिनको आदर समाधान रघुवीर क
रत उरजन प्रमांन ॥लोकवा॥ सविषाद देष मित्री सुमित्त सोमनऐ विमन जन साधुसंत सोचन
मन मोचत उरधसास उपजे अनिष्ट कबु अनायास वाजत निसांन एकहीवार बिन हेतर

राम॰ ७५

हि केधौविचार।ग्रसिसोकलोकसबग्रेहग्रेह।दुषसिंधुसॆपरेउपजेसदेह।कवरोवा॥दि
नकदिनेसकुलराजद्वार।ईहांरामआनउतरेउदार।पारषदसबनकीनेप्रनाम।स
नमांनकरेरघुरांमस्यांम।केकईग्रेहदसरथकुमार।रघुबीरचलेसंगमित्रीसार॥श्री
रामवा॥नयचकितनएग्रहदसादेष।विपरीतभावउर्धसविसेष।सबहेतविगतदा
सीसमाज।सतसुषनहीआवतडेमसाज।आवतज्यौआगेदिवसओर।गहीसत्रासस
बगेरठौर।मिदरजिहेदसरथमहीप।सुषपायरांमआएसमीप।कविरोवाच।उवपरेदेषद
सरथसुवाल।केकइनिकहुताकराल।दुषअसहपितादसरथहीदेष।विपरीतभइकछु
चितविसेष।क्रोधानललोचनअरुनकीन।मातातहांदेषीमनमलीन।कीनेपितमातहिनिमस
कार।विकलीहोतचितवारवार।लषिरामरहेदसरथलजाय।उरसोकग्रसतनहीबचनआ
य।नरनाथअधोमुषश्रवतनैन।कहेजातबोलनहचितकुचैन।निस्वासझारआवनीनिहार।
मुषमोनरहेनृपमांनमार॥श्रीरामवा।रघुरांमबोलतबधर्मरीत।ईहकहाआजजननीअनी
त।अपराधकहाहमतेजुआज।जिहबोलनहीराजाधिराज।केकईवाच।दुहा॥रांमबचन
तुमसोअहित।कह्यौनअवलोकोय।तातेनृपतसंकोचतिह।साधमौनधरसोय ५८श्रीरां
मवाच।केकईसोजुरांमकहि।कारनकवनसकोच।अज्ञावसहैंउतअब।१गटनलीचापोच॥
५९॥केकईवा।सुनक्रुरांमकारनसकुचसबैकहूंसमझाय।राजावचनपनराखिये।विक्रपबुध
विहाय ६० दएमोहिवरदांनदै।आगेअविधनरेस।मैथापिहराषेमनहि।सोमांगेसबिसेष ६१ दंरु
कवनमहवचउरदसवर्षवसहुतुमजाय।अबवरदांनजुएकयह।मोकहदीनोराय ६२ दुजेव
रमहियहदिवसनरथुहोहिजुवचनूय।पायप्रगटजुगराजपद।अविधविलासअनूप ६३ यातेक
रिबोउचअब।पितुकोबचनप्रमांन।लहौजनमरघुराजकुल।तुमहौनीतनिधांन ६४ छंदपधरी॥
पितुजीयतअषिलअज्ञाअधीन।सोइसुउचकहीयतप्रबीन।दिवप्रतअसष्याअन्नदेय।लाष
नजिमायजगसुजसलेय।वेगयाषेत्रपितुविहदांन।उत्तातबहिपावैप्रमांन।कविरोवाच॥
दुहा॥वनिताकेसुनियेबचन।उतैरपरिजरिअविधेस।जतनजुतनमुरिझजगी।उपज्योसो
कअसेष ६५ प्रियापिसाचीसीप्रतिछ।बैगीसंहितविकार।भ्रुकुटित्रैषानचित्रसुह।लोचनच
टिलिला ६६ जोगपरामउदवेद्गजग।अरुविधवापनआप।मानकुमीचमहीपके।पलपल
गिनतसपाप ६७ वांमाअदसासीविषम।निरषीअविधनरेस।भावीसुचितअसुनसुवसूझा
वतसविसेस ६८ राजावाच॥अलपलाजपातकइधक।सबैअनिष्टसुनाय।एकनदारुकेत्र
रथ।गहिकितकाटतगाय ६९ मेरोजीवनमांननी।निष्टैजांनकुनांहि।काकुवारनदेवकुत।सु
पैरामवनजाय ७० केकइवा।दीयेमोहिवरमांननीनिष्टैजांनकुनांहि।काकुकारनदेवकृत
सुपैरामवनजारदांनदैरामसपतकहिराय।पनमिथ्याकीनिंपरतसुरनरनर्कसुनांय ७१ कवि
रोवाच।छंद ७०।यौकहिरनगोडूवदनआंन।पापनीदएरघुनाथपांन।सिरवंदलएमनुपट
प्रसंस।वरवीररामरघुरायवंस।ऐआदमधिअवसांनएक।ईनकेचिरत्रमायाअनेक।सुष
उदसनचापतनहूसाध।अषिलेस्यनितवर्जितउपाध।सुषराजजोगजोगहुमांन।अनुपमअ
नीहमहिमाअमांन।उपराजराषनवकरहीअंत।ईसानजोइरूपताअनंत।भासतसुसंय

जोतीसु नाय । नव नूतमांझ अनेक नाय । लखि कारन कछु अवितार लीन । महिमा रहहरण कारण
मलीन । सानंद सुत हि देषे नरेस । बहुर नही राज ई ब्या विसेस । देषी अनीत नृप त्रियादोष । राम
दित थापि कछु नही रोष । राजोवाच ॥ सुत सुन ऊक सो कोसिल नरेस । विथवेद टरत नद्यम
विसेस । मोहि राष ऊ कारागार मांहि । हविले कुराजक छु दोष नाहि । रूपति तम हि लजित ल
बिन हेत । बल वित्त नयो अंतर अवेत । बोग वचन कहे त्रियक पटवांन । उपज्यो अनिष्ट सो इमो हि
आंन । श्रीरामवा० दुहा ॥ कष्ट न पहि हव केकई । वनी आन विपरीत । वेद विदत रघुवीर तहां बो
ले वचन विनीत ७२ ॥ छंद वैताल ॥ कत उवित इह दिवसे सके कुल । नां हि अविध नरेस । वथी स
रूके वचन पनिपे । अगट निर्वहि षवेस ॥ कविरोवा ॥ करि विवध मातापित हि वंदन । राम राजिव नैन
उचले जननी ग्रेह को अति वित चाहत वैन । गुरवधू वा० छंद प ॥ अनरथ अनीत जब सुनी एह
गुरवधू आय केकइ ग्रेह । तेकरत नई उपदेस ताहि । अवनी स सुता तुम अगट आहि मन गनत
राम नरथ हि समांन । ईह नई आज क बुद्धि आंन । अपराध राम कहा क स्यो आज । जिह दयो जो
ग तुम देत राज । नृपनीत तुम हि जानत निदांन । पितु राज लहै अय जमान । कृत नीत नीत विपज
य तुम निसंक अन्यथा तद पिन हीं नाल अेक यह होय नरथ तैन हीन आज राम हिनि कारन ही
ले हि राज । सीता न जैर घुनाथ संग । ईह सार रेष जांन कु अनंग । जो राज छाडि वष नरांम जाहि । नि
हचै तो नृपति जिव हि नांहि । उपजै अलान तुम कह अलेक । यह लोक नु कत दे एक एक । नर
घ हि नु वदी जिराजनार । यह हर हैरा मतु वक हा विगार । राम हिन दिलाल चकछु राज । कत कर
त लाग हव कु लअकाज । नरथ कह देऊ जुग राज नाम । मत थप ऊ जिहै वन जाय राम । दु
हा ॥ हव करराष ऊ बाह यह । रामचंद तजि रोष । मंगल वार उबाह मन । सब कुल है हिसंता
ष ७३ । कविरोवाच । केकई गुर वियन कौ । कछौ न कीनौ कांन । कर मीठत धिक धिक कहत
यह नगरजु सु ज्ञान । ७४ ॥ छंद वैताल ॥ सुत राम के जुवराज पद सुन । निकट लग्न निहार । क
त उवित कवसल सुता कुल गत । करत मंगलकार । कुल देव देवी वंदना कर । कुसल्याति
ह काल । बुजदांन विहत विधांन वेदक । विवध तोप विसाल । पधरी ॥ इह समय राम जननी अवा
स । पवधारि चित्त आनंद प्रकास । कियकौसल्या कह निमसकार । अंबा असीस दीनी अपार
कौसल्योवा । है लग्नस मय कब तिलक होय । सुत कहऊ मंगल वचन सोय । उत्र सब करऊं
उछव प्रियोग । जिह होय सगुन आनंद जोग । श्रीरामवाच । जननी है दंक वन ही जात । पितु
अज्ञा दीनी हम हीं तात । मातावा० । जुत स हि हतु म हि जिह लदै ज्वाल । के परऊ वज्र तिन सिर
अकाल । कहा कहत वचन अनहि कुवार । सुन वहत हियेउ सत रउ सार । कहि ये वन दंक
कवन कांम । राजा जिन पव वत तुम हि राम ॥ श्रीरामवाच । केकई मात कछु कपट कीन । दैन्ह
पतता हि वन दान दीन । सो हम हि दंक कारुं न वास । इकौ है लअ विधवा न हि अवास । नरथक
ह दयो जुवराज नृप । आपंक न्है सन्नृपता अनूप । मातावाच ॥ कहौ होय नरथ जुवराज का
ज । यह ~~केस~~ उष्टपर ऊ सिर अवध गाज । वन संग हम हि ले चल ऊ वीर । इहा रहिन जातु
आत म अधीर । वितु तुम हा देउ वार वार । यह उत्र अंधुल कुटी अधार । हम देष हि सुत विन सुन
ग्रेह । निह चैउ रिफूट हि निसंदेह । वनि है न इहां रहि बी विकाल । लेचल ऊहम हि वन संग ला

न। श्रीरामवाच। मम संग मन बन जबी उचित मात। पतिजियत जाकर हिय विष्णु विख्यात। कवि
तवदे। वामनट अधविरूप। विसन दुर वचन विरागी। पलरोगी जड पंग। अंध अंग हीन अ
नागी। कलहकार कृतघात। चोर निर्धनी जुवारी। वेस्तिक पापी निलज वंसब हिक तवि
भचारी। मृत हूं न तजै कयस रगन। अंत अधोगति धरै। इत्यादक अगुन अनेक सुत
पत न हीनारी परहरै ॥ दुहा। पती ऐसे रूप तिब्रता। नां हिन तजत निदांन। जीवत जी
वैधीत जुत। माने सान समान ७५। छंद पधरी। इह राजाजन नितु मही अधीन। नही नील
तजत सुत मोह लीन। साचो सुएक नर था सनेह। दहत जिह संग त्रिय अग्न देह। पति विना
कछु न परिवार हीत। निरधार कहत यो निगम नीत। पति देव नाम पतनी सप्रेम। नित उचित
ता स सेवा सु नेम। त्रा बनाय सफल नर थार सेव। दिन उचित कर्म मांन त छुदेव। पति सेव स
दा पतनी उनीत। पति पावत गावत स्रुती गीत। सेवा जु बंदाप ति विशेष। अलोक नर दू
जित असे ष। डषदेऊ कंथ जो विना दोष। सुष मान लेत जो उर संतोष। नही तजत नार
मृत पति सनेह। दहत जिह संग चहि चिता देह। जे जियत कदा चित देव जोइप। पतिव्रता सु
साधे यह वियोग। तजि मांन गांन वैन व विधांन। पोषत व्रत संजुत कष्ट पांन। तज वलते
ल सक्यातं वूल। मांन दिसु गंध उच्चव न मूल। जलसी तपांन नह उष्णन्हांन। पद चार ढहि
विवर्जति पांन। मुष मधुर उच्च नोतन न मूल। चादैन वितन वरंग चेल। मन वाच कर्म धि
रम हिम जाद। परिवार दया कृपा प्रसाद। उपवास व्रत नित हीन वीन। लज्या अधं क सु
त वचन लीन। इह नां तिद मति ईडी असेष। वैधु जे धरम पालै विसेष। वस अवस जियै तौ
लै विदेह। हव तवै जोग प्र अभ्यास देह। मातावाच। सुत सुनऊ वचन मेरो सु जांन। सुर साष
पिता माता समांन। दस मास उदरधर जा वदेव। सुत जन्म वरस दस करत सेव। है ईधक पि
ता तै मात देत। सब नाय वाच मन क्रम समेत। पितु वचन राष वो जोइ मांन। नही मात व
चन तजि वो निदांन। कंता जित वा तुल्य वधकाल। अन सीच वचन इन के सु आल। हव लेह
राज निसंक होय। क रियै विचार यह पलन कोय। हत बंधु सदा नृप नृप हेत। लोक ऊअ
लोक ते राज लेत। नीत जो छाड बोलै अन्याव। की जैन कोंना को कहाव। न व वेद धरम यह
है अनूत। पितु राज हीपावै वकौ पूत। श्रीरामवा॰॥ कुल कलंक चलै अरु अजस अंग। न
व पिता वचन सुत करै नंग। रिव वंस मात यह नां हि रीत। अब लौ न भई ऐसी अनीत। केक
इ करै छल वचन काज। अन जान नृपत वरदए आज। माता नटरै न वत अमांन। सुप दुष्ट
करम फल है समांन। इह गैरि सोच कर बोन आज। क रियै विचार अब अय काज। विप
दा व सदै अविधे सवीर। सुष लेऊ जाय उनके सरीर। निरधार स्यार दस वरष नेम। पित व
चन सिध मिल है सप्रेम। मन सोच कब ऊ क री येन भाय। हम अवि ध अंत मिल है सु आय।
दुहा। जल कंफन मंगल जलन। लग पित वचन समान। अंबा बुध अनीत अब। अंगी
कार न आंन। ७६। मातावाच। कोसल्या रघुवीर कर। बाधे रछा जंत्र। जिह न आपे विघ
न धै जग। जल थल न्रमत स्तुतंत्र॥ कौसल्यावा॰। छंदप॰। अंबा असे पदीनी अ
सीस। सबेहा ऊ सिध जय चट ऊ सीस। वामन थल रद्या कज ल वारा ह। मधुक इत्न

मर्दनपंथमाह। वनअद्दविषमनरसिंघवीर। सबकालकरहिरक्षासरीर। काकनीन्हत
श्वेतनकराय। हरिहोहूसदासनमुखसहाय। दिगविदिगउर्थअधमध्यदेस। उत्ततुवसं
गकेसवप्रवेस। सुरखसब्रिषिवरसमाज। कृतसिधहोहिसुतससफलकाज। नयदे
वजक्षगंधर्बनाम। रहिहैतवरक्षायुक्तराम। निदावसजागतपंथनिहार। मनवाचकर
मत्रातामुरार॥ कविरोवाच। तवरामआयसीतानिकेत। दिनमध्यजथाउपदेसदेत। श्री
रामवा॥ प्रियातुमरहहुहमजननिपास। विपदादिवटावहुएकवास। करियोतोलासे
वाईकंत। आवहिहमजोलांअवधिअंत। जानोतोजनककेग्रेहजाय। वेषमवियोगपुजा
तेविहाय। सीतावाच। सीतातवबोलीसावधान। विसतारधरमपतिब्रतविधान। मातसोकह्यो
तुमधरममूल। सोसबैसुमोमैसमानकूल। रहिहूनयेहसंगबामराम। मनवाचनजेहूज
नकधाम। पतिसंगनबामहूतजपान। निरधारयहैमेरोनिदान। श्रीरामवा॥ करकसकुस
कंटकजुतकुनाय। पदत्रांनविनापंथगवनपाय। वनजंतुविविधषलजालव्याल। राक
स्पघोररूपाकराल। मनुजामषनोजनमनमलीन। फिरदईपापकर्त्तनवीन। वनसिंघवा
घसरस्नावाराह। अनरोदनालमहिषाअयाह। आरुनकरीमदमतअंग। युनिमनुजनि
हनिह्वीपसंग। कंदरनहंसमहुएकुजीव। उच्चधांमतहांवसिबोदइव। परिधाएपत्रतिए
तलपाय। न्हेअसनसहजस्वातिकसुनाय। हतकदुकअमलफलनहाहोई। संदेहला
नअनलानसोई। मिलपावससहिहैसीतमेह। दाहततुसाररितुसिसरदेह। तपिबोतहा
ग्रीषमडसहताप। वसिबोसनेहवनदुषवियाप। गजिगमिनरहहुतसमातग्रेह। देषिहौवे
गममनिसंदेह॥ सीतावा॥ दुहा॥ जथालाभसंतोषजिय। वनवसिहूरघुवीर। सबैकले
सविलाससम। सुषमानहूसरीर। ७७ जोतषविद्यनिपुनद्विज। कोउसेसबकाल। मोक
हदेषविचारमन। बोल्योवनविसाल। ७९ सुनहूबालनरथारसग। केहैतोदिवनवास। अह
रहईवनअनिया। सोकरिबोविस्वास। ८० आंनिवमोसोउकालयह। विधसुचित्तवुहार। सांम
लियेविनुमोहिसंग। वनैनआंनविचार। ८१ कंवछेदकैपासिहूम। षोजिहलाहलषाहू। तातै
चलिहूसंगतुम। केजमलोकहिजाहू। ८२ श्रीरामवा॥ छंदपध॥ वहुनातियाउनिमुग्धवेस
इनकेतुरंगहवहैअसेस। पतिजानकहयोवलिकुनआप। वनडसहहुउहासबदिनवियाप
॥ सीतावा॥ उनिकह्योसियासुनषाननाथ। सबकाजसमंगलपतिहीसाथ॥ अथश्रीरामवं
दलक्षमनसंवादण॥ कविरोवाच॥ इहांरामसुमित्रेयएहआय। सेषहिक्होधकीनोसुना
य। श्रीरामवाच। तुमरहहुयेहलक्षमनसुतंत्र। मानहुईहमेरोमूलमंत्र। नरथजोकरिज
कहुधेषनाउ। जुगजननिसंगअनियत्रजाउ। पितुसेवजतनकरिबोप्रमाद। ममविरहपि
ताडपअसहमांन। लक्षमनवाच॥ ईहसुनतसेषकोपेउकराल। जारैत्रलोकजुरेषज्वाल तु
उनमत्तह्यातषितउपतआज। केकइवचनसकतअकाज। तिहरोषमारनरथहिसप्रात
प्रतुदेषहिविक्रमन्टतिप्रात। अनिवेषविघ्नतुवकरयोआद। तिहहेतहतहूसकुबता ट
हि। राजाधिराजतवतिलकराज। अबकरिबोमोकहजतनआज। कविरोवा॥ सुनसुन
रामतेलछनवीर। सोकंवलायबोलेसधीर॥ श्रीरामवा॥ सोमित्रसुनहुरघुसारहूज मेंजा

नतत्तवविक्रमसमूल ॥ समयनहीसेषदेषकुसकाज ॥ इहगैरअटिकरहिबोनआज ॥
देषियत्तविम्बइहराजदेह ॥ उद्यमसोजोपैसत्पएह ॥ एनीग्मप्रादिवारदवितांन ॥ सविला
सतडितलेषासमांन ॥ आयुज्योअनित्यअयतसघंग ॥ जुवपरतबूंदजलहोतनंग ॥ अहि
गलसथोपज्योंनेकआप ॥ तडदंसउवेष्याजुजसताप ॥ तोलोकनोगततपरनिलाज ॥ सो
उनीगअसास्वतनियतआज ॥ तनकष्टकरतइह कर्मतंत्र ॥ तिरनोगअर्थअहिनिसस्व
तंत्र ॥ जोनिन्नदेहतेउरषनोग ॥ नवयहाकोनकरिहेस्नोग्प ॥ पितुमातन्रातसुतदारूसं
ग ॥ अन्नेकबंधुसेबंधअंग ॥ ज्योंपाजुंतुबकुमिलतजाय ॥ नदिदारुनकरिवारदविहा
य ॥ श्रीयचपलनियतबायासमान ॥ जोवनहिनीरलहरीसुजांन ॥ सुषत्रियामनकुनिसस्व
प्नस्रूफ ॥ अलिपायुतदिपअहिमिलअबूफ ॥ गंधर्बनगअमतीगुमांन ॥ नयरोग्पविषमसं
कुलनयांन ॥ अतिकष्टसदेआतमअमूढ ॥ ममतानहीबाफततदपिमूढ ॥ आदितगता
गतअहिनयंत ॥ आयुर्बलबीजतजातअंत ॥ नरजन्मविलोकतजरानास ॥ तदपिनही
मानतमुढतास ॥ सोइरात्रीवहैउहदिवससोय ॥ कतकालवेगदेषैनकोय ॥ छिनहीछि
नआयुषहोतछीन ॥ नरआमकुनजलज्योनवीन ॥ रोगाध्मसर्पल्याजहरिसाय ॥ पतिदि
सरीरपदरहलनउपाय ॥ बाधीवअग्रवरितनविसेष ॥ आतमहीजरातर्जितअसेष ॥ सा
मिलनत्सूस्तसावधांन ॥ निसदिवससमयचाहतनिदांन ॥ नतिपलदेहइहअदनाव ॥ रि
वचक्रतपतसैराजारुनाव ॥ इहमांनतहैनिरनयअबूफ ॥ संग्पासुनसमविटनांहिस्व
फ ॥ त्वंगमासअस्थनसरक्तरेत ॥ संजोग्पमुत्रमलजसहेत ॥ सविकारसदापरिणामसंग ॥
आपनोताहिक्योंकहैअंग ॥ वकुकालस्थिततदपिविनास ॥ सबविदतअंतवहअग्तयास ॥
सोदेहपायतुमक्रोधसंग ॥ नवन्नतहनतचाहतअनंग ॥ अनिमानदेहजोकर्तआप ॥ सबदो
षताहिउपजतसंताप ॥ मनदेहजिहैआउनमोन ॥ जगतासुविद्यानियतजांन ॥ अना
विद्यासमृतिदेहआहि ॥ तुमविद्यनिवर्त्तकिगिनकुताहि ॥ तातेनितविद्याजतनतंत ॥ अन
सितमुक्तअरथीमहेत ॥ क्रोधादिकआतमवैरकार ॥ निरधारतासक्रोधहिनिवार ॥ हैक्रोध
मुक्तकहविघ्नहेत ॥ सोतजकुसेषमनवचसमेत ॥ जाकेप्रनावमनुजादजीव ॥ डषदात
पितामातासदीव ॥ मनतापसरबकहक्रोधमूल ॥ संसारक्रोधबंधनसमूल ॥ नितक्रोधधर
मनाकनिदान ॥ सोइक्रोधतजकुतातैसुजान ॥ जमरूपक्रोधसम्पातजांन ॥ उनितृष्णावर्
तनीवमांन ॥ सुषरूपसुनंदनवनसुनाय ॥ गिनियेसुसात्पसुनकामगाय ॥ समसांतआ
द्यतुमनजकुसोय ॥ किकुकालसत्तुउजैनकोय ॥ मनशांतदेहबुधिविषयमेल ॥ बुधा
दविलक्षणहोतहेल ॥ अविकारनिराकृतजोनिआप ॥ आतमासुधअंतकअव्याप ॥ जो
लोनजोततनभिकुजान ॥ अंतकउबतोलौदेतआंन ॥ तसमातसदातुमज्ञानवंत ॥ आत
महिमिकजांनकुअनंत ॥ बुधादवहिस्थितसर्बवीर ॥ सुषवेदरहितवरतकुसधीर ॥
जुक्तयतउराकतअषिलनाव ॥ सुषडुषऐवअपनेसुनाव ॥ करिकुप्रवाहजोकाज
कीन ॥ लिपतनहीनिततेअलीन ॥ दुहा ॥ बाहिरसबकर्तत्तुम ॥ जद्यपवरतविसेष ॥
अंतरसुधसुनावजे ॥ कर्मनलिपतअसेष ॥ ७१ ॥ इहसुदनावजुआपनो ॥ सात्तिककहो

सुनाय। अमित्र अंतर राषकु अषिल। सो तुम सब सुष पाय। ८२। जाते नब दुषजाल की
बाधा कबहु न होय। वारिज पल्लव वारि ज्यो करमन छिपे जु कोय। ८३। लछमनवा। लछमन
राम दुनाम करि। नयनानंद सरीर। बोले वचन विनीत मे। सेवक सदा सधीर। ८४। मेरे अंत
रगति अमित। संसय कुतौ समूल। दीनानाथ दयाल तुम। सो सब स्यो समूल। ८५। तुम
जानत मम स्वांम हृत। सेवक बल सनेह। के चलिहु रघु राम संग। के हु तजि हु देह। ८६।
॥ इति श्री राम लछमन हि प्रबोध। कविरोवाच॥ रामचंद सीय लषन संग। आए मात निके
त। ईहा अग्या मांगु उचित। हर षगमन बन हेत। ८७। श्री रामवा॥ मात पति ह्रपाकर कुम
म। आगम अविध अधीन। कबहु विरह कलेस करि। मन मत करि कुमलीन। ८८। जे अ
नुवती करम पथ। नहीं एकत्र निवास। जैसे पोत प्रवाह परि। सरिता सलिल प्रकास। ८९।
वर्ष चतुरदस मात बन। मो हि जे है छिन मांन। मिंदर दरी निवास मन। सकथा… समान
९०। कौसल्योवा। छंद॥ धरि धीर मैथली रहु कु धांम। बन गवन उचित तुम को न बाम। दुंन
सासु कहौ ढिग जल प्रवाह। ज्यांन की अल्प वयक न जाह। सीतावाच॥ वचन कहि सीया
सासु हि विसेष। पति संग किनो जम तुरव वेष। कविरोवा॥ वंदन कुत राघव वारवार। मिल मा
त बरहिं लाए कुमार। तन गमन समय दीनी असीस। सुत चले सिया जुत नाय सीस। दुहा।
त्रियावसिष्ठ हि अरुंधती। विधवत पूज किवार। अपने सीता आभरन। ताक हु दए उतार। ९१।
अलंकार रघुवीर अंग। जे बहु मोल बनाय। राम दए गुरराज को। धर्म षेम परपाय। ९२। छंद।
महिपाल तब भो मन मुषमलीन। केकइ ग्रेह तहां गवन कीन। जग हारि मन कु सर्बस जुवार
मुनि षोय महा तपवि वसमार। आजन्म पती व्रत नंग अंस। सर्प ज्यो विकल मणि रहत सं
ग। सस्त्र कर्म हा ध्वनी ससोच। परिहरै जोइ जोगी सपोच। जनु साद उदधि मै बेलि हाज
रि(ण?) नृमत जे से सूरराज। धन गए कृपन जैसे अधीर। वध नए यहै अं विधे सवीर। इह दा
सा नृपत यह सनाआंन। बार धाउ षबूत दिकल वांन। क कुल हत न हिन अविलंब
कीय। रघुनाथ विरह दुष उतरीय। इह समय सांम आप हि सधीर। बन गवन दंड कारु
न्य बीर। कृत राम पिता कह नमसकार। वंदत पद चुंबित वारवार। उनि सीता लछमन लगे
पाय। उरि कंपन इन जल नैन आय। उर लाय उत्र बैवा रि अंक। राजा निधि पाई मन कु रंक।
मुष वचन न आवि त मन मलीन। दुष सागर बूडत चए दीन। रघुवंस तिलक लष समय रां
म। धन बाहु उठे सुषध राधांम। दुहा॥ ज्यो परदेसी धाम नौ रापे कुन रहाय। परिजागत संप
त प्रभूत। बाहु चले रघुराय। ९३। छंद॥ मुरिछाय परयौ नृप नृम्प माहि। हियफट्यो म
न कु सुध रही नाहि। हा हंत वान रन वास होय। कछु देत न ही अवलंब कोय। पुरजन उदा
स रोदन प्रकार। नैरास नए सब उर षनार। दारुन जड जंगम समय देष। विरह हि सविहि
स विलष विसेष। षग मृग कु वृषन सुर नी ससोक। तजि ग्राम विकल अपने आप ओक। गज
सनय सहू हृय दुषित देष। विलपात वारवार हि विसेष। जे बालके लहित जीव जंत। तिन
तजे असन जल सुनहु रंत। निरधार दसा यह पसु निहार। हिये लगे फटन नरनार हार। दुहा
वसन अन्न पत जलीन भूत। वंनरु ककरु न पवास। सबै विवर जिन विहत सुष। बैन वराम वि

लास ९४ ॥ ब्रह्म तुचा पत्र बवसन ॥ निश्चक्र तपरिधान ॥ स्वामा जिन त्याजन सलिल ॥ मुनीप
दवीलियराम ९५ ॥ हाहाकर नवासकुवं ॥ नगरलोक सैरास ॥ बिहुरत दारुन दुषविषम ॥ राम
गवन वनवास ९६ ॥ राजा वाच ॥ मांन सुमंत अनंत मत ॥ बोले नृपत बिचार ॥ रथ ले जाई
ए राम कह ॥ विनय सहित बैवार ९७ ॥ बन दिषावी राय मन ॥ करि उपदेस कुवार ॥ किकु
प्रकार रघुवीर कह ॥ आंन कुबुध्य उदार ९८ ॥ बूझत सोक समुद्र मह ॥ अविलंब नन
हीआंन ॥ मरत मिलाव कुराम मोहि ॥ वेम निधान प्रवांन ९९ ॥ बहुरे राम न नियम स ह्व
उरषार थहेत ॥ सीत कुआंनउ फेर तुम ॥ किरू वपं पिनकेत १०० ॥ कविरोवा ॥ रिणविजइ सु
नराज रथ आगे कीनो आंन ॥ मित्री सुमित्र अनंत मत ॥ नृप अज्ञा सिर मांन १०१ ॥ बाहिर न
गर सुमित्र तब राम हि रथ बैवार ॥ सूरवंध वलषमन सहित ॥ संग लिया सुकुवार ॥ १०२ ॥
करि करि वंदन अविध कह ॥ सब गुरजन सनमांन ॥ राम चले आरूढ रथ ॥ विजय निम
तवमांन ॥ १०३ ॥ छंदपध ॥ सब चले तहां पुर लोक संग ॥ अति ब्रुध तरुन जे बाल अंग ॥
वस विरह महा कातर विहाल ॥ वसि हैं समीप जहां वन विसाल ॥ अविध ते एक कोजन जु
आय ॥ नए भान अस्त मित ततहां सु नाय ॥ तहां कस्यो राम विश्राम रात ॥ जन दीन मह्हा
मनु निधहि जात ॥ परवार नए सब आस पास ॥ ससि दिष्ट ज्यो धर सवास ॥ बुध स्वाइ हां
रघुराम वीर ॥ समिये नसीथ जागे सधीर ॥ रथ हांकि अविध सनमुष हि राम ॥ कहीयत
सुमित्र सब सरे काम ॥ ब्रज जात राम यह दिस प्रवेस ॥ उठ चले चित आनद असेस ॥ दि
सद बिन फेर रथ रांम देव ॥ अति सजि वहां क गवने अजेव ॥ तब आय सर तत्त मस सुत्ती
र ॥ वसि निसा तहीं दिग विजइ वीर ॥ रथ चक्र चिन्ह नही पाय रांम ॥ वहि धाव्त पुरजन गामवां
म ॥ अनल जनध अजोध्या लोक अय ॥ विनु राम सबै उद्यम विहाय ॥ अति विकल लोक नए आं
न आंन ॥ जम सदन पाय निज सदन जांन ॥ नर नार धीर मन निहार ॥ भाग तरुर एकन इ
कन यार ॥ पुरजन पिसच मिंदर प्रमांन ॥ जन सजन मन कुज मड्ड लजांन ॥ दिन अदन
दरस मन काल रात ॥ विपरीत दसा पुरजन विहात ॥ पुरजन वाच ॥ दुहा ॥ न इकि
रातन केकई ॥ दुसह दसा दव दीन ॥ दसकु दसा धावत दुषित मनु मघ मा जमली
न १०४ ॥ कविरोवा ॥ छंदप ॥ अविध जन मिले एकें त्र आय ॥ सब करत यु है चिंता सुमा
य ॥ लोक वाच ॥ पद बार राम सीता पुनीत ॥ सहित त्वन स हि है तापसी ॥ विन राम ई हां
वसि बोन वीर ॥ अविलोक अविध चित अत अधीर ॥ केकई वचन बलक स्यो काज ॥ र
घु वंस बुध वुध फिरी राज ॥ राहा सी नई केकई रांन ॥ जिह सबै विनास कबुध्य जांन ॥ वन
रांम उदासी सीता वियोग ॥ पति कष्ट महाव हि अवियोग ॥ बलवान विधाता अंक वाह ॥ य
हमं जन को उवन समरथ आह ॥ मन सोच लोक व्याकुल मह हंत ॥ असह दुषता हिन
हीलहत अंत ॥ कविरोवा ॥ दुषित जन जान मुनि वामदेव ॥ इन मध्य आन बैठे अजेव
वामदेव वाच ॥ इह गैर सोच करी बौन आज ॥ कारन दुरंत अति देव काज ॥ विध जुकु
कहत यौ वामदेव ॥ नावी बली ष्टको लहत नेव ॥ करिये न रांम जांनकी काज ॥ इह सो
च उचित नहीं समय आज ॥ एआद पुरष अमय अंनंत ॥ ग्यान की विया लछमी जय

तपरघुपआद मायाप्रसिध ।सुनीयतनिगमागमस्वयंसिध ।ऐलहपनआदसेषावतार
नवद्दतधरततेअखिलनार ।एईमनएविघ्नअनूप ।रजजुक्तविस्वपावसरूप ।आदि
ष्टसतगुनविष्णआप ।तेइसंस्रुतिपालकहरततापि ।तमजुक्तरुद्रतेइतापकार ।संसार
करतछिनमहसंघार ।एईजनएमीनअवितारएक ।वेवस्वतमनुवरतनविवेक ।कतसेषर
गुनुवनावकीन ।लेबाध्यशृंगजलप्लवलयलीन ।सामदइस्तुरासुरमथनसंग ।सोलीनत्तयो
मद्रासुष्टंग ।आधारपिष्टकमवावतार ।कतदेवकाजवरजतविकार ।जगगड्डसातलर
साजांन ।अवितरेआदवाराहआंन ।रदअयतुलितकर्दमस्वरूप ।तधारइनहीकीनो
अनूप ।प्रहलादबालदुषदसापाय ।दारनसरूपनरहरदिषाय ।कंटकत्रलोकदित
जारकार ।अतिरोषनषरजिहफारफार ।सुरराजसंजातदेष्योसषेद ।वरजाचअदितित
हांविदितवेद ।ऐइनऐतहांवावनअसेष ।बलछलेअविनलीनीविसेष ।हेहयाधीसत्तुव
नारहेत ।बिनमासनार्गवताहिषेत ।सोजएरामरघुराजवंस ।पोलिस्तहतकप्रथ्वीप्रसंस
नरहाथमरनरावननिदांन ।वरदयोब्रह्मयहचातवांन ।आगेजुराजदसरथअजेव ।दारु
नतपसुआराधदेव ।तुमहोकुपुत्रमेरेस्वतंत्र ।मैमाग्योवरयहमूलमंत्र ।वेइविष्णुरामअवि
तरेआय ।बधरावनहततपदुषवियाप ।मुनीवेससेषसीतासमेत ।वरजातहरनतुव
नारहेत ।इहसीतआदमायाअनीत ।यहयांसरावनअनीत ।नृपवामकेकइकृतनि /जना/
दांन ।इहांहेतकछुजानकुनआंन ।गतिदिक्सआयनारदसुइांन ।पुनीरामसंत्रकीनोब
मांन ।इटवचनरामनारदहीदीन ।कष्टनुवहरनवनगवनकीन ।करीयेनसोवरघूवी
रकाज ।सुनमंत्रसुनकुसाधसमाज ।निरधारमांनसाधनिदांन ।इहमंत्रगूटकरिबोनआं
न ।कहिमनुजरामरामेतीकोय ।अपकालम्रतुतिहतैनहोय ।इहवोरमुक्तकारननआन
विनुरांमनांमवेफलविधांन ।करिमायामांनुषरूपकीन ।दिनजांनविनंबनलोकदीनें ।निज
नहेतनक्तनेअनयरावनबधनिरधार ।आम्रतमांनषरूपअब ।रामहरननुवनार १९५
दुहा ।।तातेतिहरघुरामकृत ।साधुनहोकुससोक ।वामदेवउपदेसदे ।आपगएनिजओ
क ।१९६ ।सबजनसाधसमाजसुन ।उनमांनेअविलेस ।उधरीसंसयग्रंथउर ।मुनीरतना
मनरेस ।१९७ ।सीतारामरहिसइह ।हितयुतहियथितहोय ।नवसोपावैइटनकी ।कछु
षनदरसैकोय ।१९८ ।अबरघुवीरचरित्रएआगेजएअनेक ।सिवप्रणितनरहरिसुकवि ।व
र्नैसहितविवेक ।१९९ ।इतिवामदेवोपदेसवर्ननाप्रते ।।कविरोवाच ।छंदपधरी ।तबआइ
रामतमसादितीर ।वसनिसातहांरिणविजइवीर ।पुनिशृंगवेरआएपुनीत ।समुमित्रिय
सानुजसहितसीत ।देवीवनसरवरसुभगदेष ।वटवैवकरैवंदनविसेष ।सीसपाव्रहा
बाया निवास ।कृतरामवंदतहांसावकास ।तहांरामआयसुरसुरीतीर ।वंदनकृतअर्च
नसमरवीर ।तबकरेगंगपावनतरंग ।अघनासनमंजुनअंगअंग ।विष्यातजुनिगमाग
मवताय ।सुसिरप्रनावसेषहिसुनाय ।कोसिलकुमारविश्रामकाज ।सीसपाहृतआ
एसमाज ।कवित ।रघुवरसषानिषादराज ।यहांसुनिगुहाजुआयो ।निजहकोतप्रणं
मकीन ।प्रभुहिलेउरलायो ।नेटउहपफलनदनाव ।करुनायुतकीनेसकलछबि

कुसलात | देवहट आसन दीनो | गुहे कहै सबै कुसलात यह | आज सुमेरे आगम
न | अघ नास भए मेरे अबिलल | चिदानंद परसे चरन | १ | बदपधी | इह दीन कृतारथ
भौ दयाल | प्रभु कर कौ धर्म अवपणत पाल || किये धिन आजु निषाद लोक | सब वस
त देव की कर असोक | प्रभु करि उ धांम मेरे प्रवेस | अब हो हित तो पावन असेस | कव
तबचे || सषा वचन यह सुन्यो | राम कहि षीत परायन | ग्रहन ग्राम आगमन | वर्बर
दस च्यार नदरसन | अन्न दत फल मूल आद | नहीं उन पियासन | सुहृद सषा सज्जन
सुसत | मान कौ अनुसासन | पठव कौ जु बंधु कार जनि उन | जहां तहा बोज सुजानि
ये | जट जूट काज वट षीर वन | इहां मित्र अव आंनियें | १ || छंद उधोरण | वट षीर जट र
घुवीर | सम बंधु बाध सधीर | व्रत जुक्त धर्म विधांन | उनि एक कृत जल पांन | कुस पत्र भ्रा
सन न्यास | रचति ल्क सब सुषरास | निज सइन दंपत कीन | चित सोध सख्याचीन | रहि
बंधु समय निहार | धनुबान जामिक धार || इति श्री रांम वनवास गवनं गुहा समाग
मं || गुत हां रहि सु ज्ञान | प्रभु सेवतत परधांन | वरकर तवच्चा वीर | सुजन सषा बंधु सधी
र | गुहावाच | इह दसा प्रभु अविलोक | रस करुन वढ चित्त रोक | परिन इन नीर प्रवाह |
उरि उमग प्रेम अथाह | तहा लषन सौं कहि तंत | इह देव धिरत उरंत | नित सइन सेक
नवीन | कुस पत्र न्यासन कीन | चित सोध सप्त सुथांन | तुव सइन रघुकुल जान | परह
रेर तनपजंक | इह दसा वस विधि अंक | रवि उ षकारन राम | वन केक इ मत वांम | इह आ
दरी जो अनीत | सुथराह बुध्य समीत || लक्ष्मन वाच | छंद पैता || का कौ वैन सुष दुष हेत को
कौ | कन्यो न हह करतार | नव कृत करम विपाक जुक्त | कुबुध बुध विकार | दुष सुष जं
तुन को पिदाता | निगम यह निरधार | परि द्वध्य पाय कुबुध्य इरगटत | सो इव मानत सार |
करता अहं सब काज कारन | मन वृथा अभिमांन | निज करम सुत्र य तु गग्रस्यत | नहि
न घ्या फिनिदान | किरदे सवा किरकाल | कारन | कुतसु नासुन कोय | सो इतु क्रबू टै
कर्म नव नव | अन्यथा सुन हो य | हित वर्ष वा जु विषाद अनहित | सु ना सुन फल संव
रे | विधि अंक विहत जु कर्म के वस | सो अलंघ सुरासुरे | सुष अंत दुष दुष अंत ज्यां सुष स
हत जंतु सु न्याय | अहनिसा नां दिन परत अंतर | विधि विधान बनाय | सुष मधि दुष दुष मधि
स्थत सुष | इह परस पर अकजे | पंक मह जल ज्यथा पावन | प्रगट जल म्हु पंकजे | नर हो
त तिब कस्वपन अंतर | नरपती किन होय के रंक होत सुरेस कि बाकरत वंछित कोय | कर
रह तहा नित लाभ कबु | जब ना गवऊ घांव हि | जग सो इप पंच जु विन्नय जीवन | अखिल
माया आदि | तसमात धीर ज तत्ववेता | वहत बुध विज्ञाल | इष्ट जो ब अनिष्ट उपजै | काल
कृ अनिकाल | वस हर्ष के न विषाद के वस | विहत नित विचार | माये ती सब संभावनाय रु
सार सम क्रि असार | मिलत त्ववाद जि ह्यादल लक्ष्मन | विमल बुध विचार | कुल रीत वस कु
र्क दिन कीनी | उरवना तप्रकार | दुहा || जांम्यो होत विहान जग | जागे राम सुजान | करे जुवा
सुर करम कुल | मिलस व दिन सनमांन | १९ || श्री राम वा || मंत्री सुमित्र हि राम मुष | कहत
जु नीत प्रकार | राजनीत नर्थ हि विनु बुध उचित जथा आचार | १ | नगर नीत पालण द

जा। रघिन विसेष। राजश्री रिझाकरि रंक। अहंप्रतिव्रधविसेष। १२। कविरोवाच। कीने वि
दा सुमित्र कह। मिलसप्रेम सनमांन। रोदत बिलषबैठ रथ। पुरदिसचल्यो प्रधान। १३। अ
थ कीर प्रसंग॥ छंद प्रपद्धरी॥ इहां रघुवीर सरत तट आए। बोहित लावरु कीर बु
लाए। आंन तनां हिना वइह ओरा। करीये राम अथ कर जोरा। कीरवाच। बोले कीर त
हां मृदुबांनी। जगत प्रसिध हम कुउ न जानी। राम वरन रज परस उनीता। उहि सिला
गई गिन अचीता। तुज सरा पवित्र पाहन देही। सो रज परसत मिली सनेही। का उ
पलते क बुद्ध कहूं। गनि यत काव मां कगर वाइ। वह गत जो मनां वनकाई। वामा उत्र
मति है बिललाई। उनि कू दीन नाव कहां पाउ। जनकुटंब कि इह आस जिवाउ। ओर न इत
मलाह अभ्यासी। बिन व विपत नदी तट वासी। मो हि वहह धनुष तान सर मारउ। पोत चरउ
जो वरन पषारउ। जोगत अविसत मवहि तट। पद रज धोय अगो बाम मपट। कविराच
क वनदीन सुन बेवटके रै। हस हस राम प्रियातन हेरै। मन मै राम लषन मुसकावहि। २
गट रहै तउ नै दन पावहि। दीन जबै रघुपति से देषा। दिन बधु निज विरद विसेषा। श्रीरा
मवाच। तब बोले हस मुर मधु मारन। कर कु मलाह उचित जो कारन। जिह नना व तो री उ
न जाई। यहां उचित सोइ करी ये नाई। कविरोवाच। परम पवित्र सो सरस्वत पांनी। ईहा का।
ले ता नर नर आंनी। मिल मिल पंकज चरन मुरारी। पट न अगो बा पो व पषारी। जब न से
षन इरज जानी। इहां निकट नौका जब आनी। विदुषन षिवटा नाम्प व षाने। सुमन वर
षक रुनार समांने। रुद्र जुचरन कवलउर धारे। पद ते दूपा मर कीर पषारे। जेइ हाद निरंत
र जोए। धरकर षिवटा मिल मिल धोऐ। अविनव कृति हत्र यप दआनो। मेल्यो बल मस्तक
मन मांनो। नागराज सिरवहत निरंतर। राम चरन ते ई कर मुक्त कर। निकसत जिन ते गंग
तरंग। पावन जल तिन ते परसंग। इति संवादकी रर घुवरको। कलुष विना सदान जितिन
को॥ दुहा॥ कली रहि सन रहरसुकवि करुणहास प्रकास। साधु सुनत मन कुलसत
विमल नकु विसवास। १४॥ इति श्री राम कीर संवाद। कविरोवाच छंद प॥ आरोहराम
नौका उदार। प्रभु मनऐ तहां सुरसर तपार। निजसषाय हां गुह विदादीन। अइसा अधीन
उतरन कीन। नृप फिर्यो तहां गुह सजन नैन। उतरन ही समात विदुर न अचैन। सीता सु
मध्य चल अयसेव। वर प्रष्ट राम ता पससु वेष मग चलत राम इक मघ मुमार। ति इह आनस
रो वरत ट उतार। वट तहां महीसा षा विधार। इहां वसे तबै रघुवर उदार। मघ आंन नमो
नो जन सुनाय। वसुमती तल प पत्र व वनाय। निज समयन कीन करुनानिधांन। धर चा
प लषन रहे सावधांन। अथ भारद्वाज आश्रम आगमनं। कविरोवाच। छंद वैताल।
प्रभु नए आत वियाग प्रात हि जहां तीरथ राज। करिका न नित्य विधांन नेगम। वन विलो
क विराज। भेन जग प्रियाग प्रभाव हरन विमल वेदवताय। सो इ प्रियाबंधु सुनाय पाव
न री क कै रघुराय। इहां भारद्वाज रिषेस आश्रम। आगिमन अषिलेस। परिक्रमण करि रु
घनाय उनउन। अरु प्रणम अस्सेष। रस प्रेम मग्न रिषीस रामहि। लीन तब उर लाय यहां प्र
मत दूमानंद उपज्यो। नयौ स्वातिक भाव य। कृत अर्घ पूजा अरचनादिक। वारवार वि

लोक। आनंदसामद हृदय उमग्यो। रिषसुजात न रोक। बैगर आसन कुसल बू
फत। सहित सानुज सीय। यम तम यफ लकू ल अद्भुत। भुज सुरा मदि दीय। कहि
भारद्वाज अनेक भांतन। विनय जक्त बढाय। कृत जन्म जन्म असेक तप के। फ
टफल ह मपाय। चितहर्ष जुत कृत धरमचर्चा। बस्य निसा रघुवीर। उठि चले प्रात रिषि
सु आए। संग समाज सधीर। कवित। ब्रह्मादिकन विसेष। सुगम दुरग मन उपदेस
त। मोक्ष धर्म को माग। दिवस जो देव विसेषत। जीव चराचर जिन है। पूब परपंथ हि षाव
त। जथा करम फल जोग। साध निज लोक सिधावत। इच्छ जनये त्न वन्नूतय है। कहि न जा
य कारन अकथ। तेइ राम प्रगट तउ रष ज्यौ। पूछित गिर वन न्नूमपंथ। १। दुहा। भारद्वाज सै
राम तहां। पूछ्यो पंथ पयांन। इहां रिषउपदिष्ट आचरै। प्रभु सोइ करयो प्रमान। १५। भारद्वाज के
बंद पद। प्रभु तब अज्ञा पाय। चित्रकूट सन मुष सुचित। कीन गवन रघुराय। १६। छंद उधो
र। रिविसुता उतरे राम। किधु देह धरि रतिकांम। जिह निरष मग नर नार। न्नए दिवस काज
विसार। कवि रोवा। अवि लोक लब मन अंग। उनि कहत नीत ष संग। इन छत्रजोग अ
नंग। अरु विकन्न पताअंग। वन देइ लक्ष्पन बतीस। सब सिध ब्रत सुसीस। जटजूट
तिह सिर जोय। हम परम विस्मय होय। व उ जोग व ह्न विलास। तरु तुचा आवृत तास। सु
षसेक विवध विसाल। लष वोर तिह मृगछाल। वाहन मतंग विनीत। पदचार यह विप
रीत। पद सिंघ पीव भमान। ऐन्न तर हित उपांन। देव ज्ञा ब्लन देष। सुत्त राजपात्र विसेष।
सामुद्रक जोतिक संग। ए सर्व मिथ्या अंग। के दइ वजोषपा काज। यह न्नयो निश्चय आज।
छंद वैताल। निश्चै जु माता पिता निष्टर। नीत वर जित नेह। औउत्र जिह वनवास पठए। सह
सघान संदेह। मृदु अंग वय सुकिसोर सूरत। वरन वर वन वीर। अति घोर हृदय कगेर उन
को वज्र ह्न तैवीर। हम कु जु देष तफटत हिहैय। विपरीत उस्सर वात। विन दोष ऐसे बाल
विछुरत। मात उरहि समात। कविरोवाच दुहा। मारग जिह जिह यांम मह। निरषै तै नर नार।
सबै हुतार्थ होत सुष। नर हर प्रभु निहार। १७। पावन करत अपावनहि। जे जड जंगम जी
व। प्रउधारे रघुनाथ प्रभु। सुषद चित्रगिर सीव। १८। अथ बालमीक आश्रम गवनं। क
विरोवाच। चित्रकूट महिमा अमित। बालमीक विश्रांम। मुनि समाज निगम न उनि क्रमीन
रात निकांम। १९। विवध सिध मग व्याह र त। वसत विचित्र विहंग। मत्त भ्रमर गुंजत मधुप। तहा नि
र्झर नत रंग। २०। तरु नव फल ललित फलत रुन। पत्र हरत नित पाय। सीतल मंद सुगंध सुष। सेवत
जंतु सुभाय। २१। बालमीक मुनि वृंद वर। रहत जहां रिषराज। वर्जित वृ रवैरे धवन। सेवत जं
तु समाज। २२। तहा आए सानुज तबै। बालमीक विश्रांम। रामचंद रिषराज सौ। कीने प्रेम प्र
णाम। २३। आलिंगे करुणा उदधि। रिषवर सानुज रांम। अरु चिक अबिलूसए। आप क विश्वस
वाम। २४। पूजा व स्वा प्रेम पर। कुसल प्रस्न मुनि कीन। बेगरे आसन दिहत। दिव्य तरुन फल
दीन। २५। श्रीरामउवाच। कुवर तहां कर जोरि कहि। बालमीक सु वात। पितु अग्या बनवास
पन। जथा जथाय ह जात। २६। काल बेप क भु दिन करहि। रिषवर सो कहि राम। उपदेसहू
तातै यहां। वास सुथल विश्राम। २७। रिषि रोवाच। कवित। जलथल अनल प्रकास। दुर्गनि

रदेस विदेसन। दीपगहनदिग विदिग। सिंधु सरि सरत विसेसन। स्वर्ग म्रतु पाताल। नियत
नयलोक निवासी। ब्रह्म आदिप जंत तुल। सगम मेव विलासी। अम सांत सरब ब्यापक
सुषद। अषलइ सम्भ सरन सरन। जाम्यो अनाथ तुम रोज हां। कदियत तोतिहां ग्रहक
रन। १। दुहा॥ सर्वविस्व ब्यापक सरन। निरगुन कुनिरधार। कहिहोत व पिथ्यांन को ज सा
धारन बुसार। २८। छंद उधौर॥ म। मदिष्ट वात सुनाव। अरु हृदय धेषअनाव। सुषदु
ष्ष रहित समान। तव मंत्र पाव प्रमांन। निभ्रे विनित नैरास। इक सरण तु व अभ्यास। ष
लता अहंपद बोय। करि राग धेषन कोय। अयउपल कलगिन एक। विध अवि नेद विवे
क। प्रियजद पी अप्रियपाय। नहीं हरष सोक सुनाय। सुषदुष्ष जानियसंग। ईह कर्म अ
नंग। अनकाम नित अभ्यास। प्रभु सक्त धेम प्रकास। परिडुष्ट दुषित प्रांन। सुष आनंअ
पसमांन। इत्यादसाध अकाम। रहिहै जुतिहउरराम। करियेनिवास कृपाल। प्रभु इनही
उरष्षतिपाल। दुहा॥ नाथ तुम महिमा नामकी। केतिक कहु कृपाल। राम जन्यो इं तुम रि
द्व। जिह बूटे अघ जाल। २९। अब ताकोसुनिये असील। कारन सीता कंथ। सो वतनाव
प्रनावतै। सबै कहत मोहि संत। ३०। अथ बालमीक रिव पूर्व प्रसंग। बालमीक वा। क
वत। दुर्गम न रन उद्यांन। जिह्न तहा वसत त्रनयंकर। पर हिंसक बित्ता पहार पावी अदि
यापर। उरपथ जारत प्रसिध। लाष नैप सुलावत। लूटत देस सलान। धाडि दस हूं दिसधा
वत। डरहत नित पवन दाह हदर। डुषदन पतकाकु नरुरत। गिरकंदर सेवत वनगहन
करम घोर निरदय करत। १। छंद पा। प्रभु उराकि रातन व्रत पाय। हम रहे विप्रति हवा विहाय
रूव दौ किरातन संग होय। हम जनुम मात्र कह विप्र सो य। उपजे किरात बकु सषा आंन स
मकर मवेस बुधबल समांन। मिल के सुर हे हम चोरकम। धनुबांन अभ्यास तन्नि त्त्रधम। ब
धकर हि जीव सरजित बिकार। मग रोकनि सादिन मनुज मार। पितु मात तहंध तिय उत्तपा
स। सबक रहि एक मम हत्त आस। जन बधक रोकि मैं पंथ जाय। ईह समय सप्त रिष्यत
हां आय। मुनि नासत तप बल अप्रमांन। सोज्वलत तेज दिनकर समांन। मैं तबै आनि रो
के महंत। तनु वसन छीन लीने तुरंत। सप्तरिष बाच। मोहि दिष्यत बेरिष राज मरम। किह हेत
उजाध्यम ईह करम। बालमीक वा। मैं कहे। तबै फिर रो करीस। मम कुटम मोहि आश्रत मुनी
स। सो महा बुध्य तुम कुलसमाज। इहां नयो अतिथ कमकाल आज। करहि कृतादि पोष
त अधीन। कानन गिरहि निवास कीन। रिष्यवाच। मम मन्त्र लभंत्र त बक हि तु नेस। विधकुट
बजाय पूछ बक्क विसेस। वट एवि नाम्प से लहत वीर। सो करि है को उम मकरम सीर। वीवरो
तुम भ्राव कुछ पूछव वात। जो लोह मग दैकहां न जात। बालमीक वा। इह सुनत मात्र हूये
हरषा। सब कुटमन यो पूछित सुनाय। हत प्रांनी जु लावत निठुर होय। सम नाग षात तु
मह बसोय। प्रतिदिवस चढत हम सीस पाय। इह लेक्क कतु विनाग आप। मिल सब हिन
उतर दयौ मोहि। ते पाप कर्म सब लगे तोहि। कुटब वाच। दुष सुष जथा तु आंन देत। हम फल हि
विनागी उदरहेत। बालमीक वा। ईह सुनत त्रास जउपज्यो अमान। मम तए प्रांन कंपायमांन
वेराग्य मोहि उपज्यौ विसेस। आप हि कहत धिक धिक असेस। निर्वेद नाव उपज्यौ विनीत वे

आय जहां रिषि पुनीत । धनुबान तोर उनको अधीन ॥ कतजोग बहु तमे अकम कीन
अनियास निर्य अविरल असेष । बस करम देव बहु तवि सेष । विधसुमेर षर द्वेती वांन
मुनि दीयो अनय मोहि रीन मांन । दंड वत्त चरन मे परयौ देष ॥ वाचो पदेस दीनो विसेष ।स
प्तरिषवा । आलोच परस पर रिचन आप । पतित्त पढजा धूम महापाप । अघ कार तद पियह स
न आय । सत संग हेत करिबो सहाय । उपदेस मोष मारग अनीत । विपतिह सविधक रियै वि
नीत । सोमंत्र जत नराषकु डुजात । विधयुक्त जाप करियै विष्यात ।बालमीक । यो कहि रूरां
मतु वनाम अंक । सुषसद यो मोहि मुनि निसंक ।रिषवाच ।जु तम्ना वरांम रामेती जाप । इ
ह वीर निरंतर करहु आप । आव हि हम जो लों अविध अंत । सम ना व बैठ यहां जप
हु संत । करियह प्रसाद रिषि गवन कीन । निज बैठ तहां मे नियम लीन । सत ना व जथा
उपदेस संत । एकाग्र चित मै जप अनंत । इह दसा काल बहु च एअतीत । सिरसहे उस
न तप सघन सीत । अनसंग असंज्ञा जंतु आय । वालमध जंतु आस्रम वनाय । जुगसहं
अविती ते मोहि जांन । इहां दद यो सप्त रिष दरसआंन ।रिषोवा । मुनिक ह्यो मोहि निकस
हु महंत । सब साधन सफली भए संत ।बालमीकवा ॥ निहार गुर व निजक र निकास
सप्त रिष मोहि देष्यो सहास । बालमीक जात मो कह विचार । निरधार जन्म डुजो निहार
रहा फलेस बैसाधन असेष । बालमीक नाम मम कहि विसेष । करि मोहि अनुग्रह निज
निकेत । सप्त रिष गए दिसि धर्म सेत । प्रभु अहं राम नाम हि प्रनाव । संसार नयौ पूजित सुभा
व उन आज रांम दरसन पुनीत । सुन जो ज्ञ नयो सानुज सुसीत । राजीव नयन रघुवंस रांम
वनि आद सक्त सुन अंग वांम । मम अंग व लक्षु लक्षमन समेत । हिक ठौर वता कवा स हेत ।
बाल्मीकत पोथल दरस एत । श्रीमद्रासानुज सीय समेत ।दुहा॥ आएत बैअ दंडवत । मुनि
सवृंद रघुवीर ॥ चित्रकूट सुरसरित क्वि । तहां सुष दन द तीर ३१ रची परन सालारुचिर उद
य अस्त दिस आंन । तहां वसे रघुनाथ तब । मह अद सुषमांन ।३२ ।कवत । बालमीक मुनि
वृंद । राम दरसन जु निरंतर । सानुज सीता सहत । वस्त सानंद रघुवर । सोभा सिधसमृध आ
नित बतै छिब बाई । चित्रकूट परबत सचैन । आऐद रूमाई । फोलत विहंग मृघ सिंदिन । म
नहि मोद आवत अमित । वन गहन रहत सुष वास वर । नरहरि प्रभु विलास नित १ ।अ
थ वाइस ऐकाषकृत वसंग ॥ छंद ॥ सुन दिवस एक मैथली संग । गिर चित्र राम विह
रत अनंग । उतर विनाग गिर चित्र अंग । इक दरी मनहु साला अनंग । वन गहन विविध
तरु कुसमवास । अलि मत्त भ्रमत आमोद आस । तरुलता विपुल संकुलत माल । सुन
कुज मनु संकेत साल । अतिश्रमत तहां सियराम आय । वन वन विहार क्रीडा वि
हाय । अविलोक धातुमय सिला एक । अति रंग चित्र सो रन अनेक । विमोद चित्र तरु उह
१ पात । वज सीत मंद सो गंध वात । कुंजत विहंग वन वन अनेक । विस्तार सुष हि वानी
विध विवेक । गिर चार जंतु आकृत अपांन । विध विहार क्रीडा विधान । सनाद सुष द निरझ
र निनीर । सुन सलिल चारु अन अन सरीर । १ छत्र चत्र अंकुर म डलपाय । सुष तल पर
चित तिह सिल सुहाय । सियराम तहां बैठे सधीर । विजसत रति मान हु मदन वीर । नवसलि

लमर्दमिनमिलनवीन । करतिलकरांमनिजनालकीन । ठुवजीरिप्रियाप्रियजालदेस । स
मबिदतिलकवगद्योसुदेस । रचनाअनूतकृततिलकराम । बनदेषिविदसत्रनतोरि
तांम दुहा ॥ वासुरएकविलासवन । सीतारांमसुजांन । थितबैठेएकांतथल । विवसमनो
जविधांन ॥ ३३ ॥ नामजयंतसुरेससुत । वाइसरूपविहार । तिह देषिसीतातहां । वाढ्योवि
तविकार ॥ ३४ ॥ छदपध ॥ सोदुष्टजीवअपनेसुभाय । अविलोकतसीतानिकटआय । विह
गाधमआगमवारवार । अविलोकतहांरघुवरउदार । आकर्षईसीकाअसत्रआप । ति
हहेतराममोप्योसताप । पापिष्टपंछीनिकसोपुलाय । ज्वालाकरालसरपिष्टजाय । उ
नचल्योजदपिवाइसअकास । त्रनअस्त्रनबाफतगैलतास । त्रयलोकफिरयोकरित्राहित्रा
हि । ओवमिलेनहकोउआहि ॥ सप्तरिषदयोउपदेसतास । पुनरामसरजईयेप्रकास
वाइससमोकनमिऊनविहाल । करवरनयहेरघुवरकृपाल ॥ श्रीरामवा ॥ नहीहोतरथा
मानऊदिदान । वविहीनअयअनमोघबांन । आकर्षसीकमायाअनेक । अरघाधक
स्योम्वषफोरिएक । द्रगहीनत्रयोजबकाकदीन । करुनानिधानसौंपलितकीन । वाइसवा
एकाषकस्योतउरूअसाध । परिजनवजनकरिहैनिरपराध । श्रीरामवा । दुहा । ताहिकसोह
सिरामतब । जापंछ्याधमपापबदिहैदसागुदिष्टबल । वितरहिसंकितचाप ॥ ३५ ॥ मित्रीसु
मित्रअजोध्याआगमन ॥ कवित्त ॥ रथलेफिरयोसुमित्रतब । दारुनदयअतिदी
न । रामहिबाफजुजातहूं । हाविधनाकाकीन ॥ ३६ ॥ नृपतनिषादविषादवस । मित्रीदेष
मलीनकरहतदुषविछुरनकथा । आतरदीनअधीन ॥ ३७ ॥ मित्रीचल्योनिषादमिल । बन
बाहेररघुवीर । सुनसुनरुदनसुमित्रको । अगजगहोतअधीर ॥ ३८ ॥ हाकेऊनाहिनचल
तहय । अविधसमुषअकुलात । फिरफिरजागतरथहिले । हेरहेरहणणात ॥ ३९ ॥ मित्रीसु
मित्रससोकमन । रामहिफिरअप्वार । आएघालीरथअविध । वरषतलोचनवार ॥ ४० ॥ स
माचाररघुनाथके । बूजतलोकविहाल । मंत्रीनआवतबोलमुष । करकरहननतकपाल
४१ ॥ पटलपेटमुषमननमलिन । कीनोउरदिवेस । राजद्वाररथतेउतरि । आयोजहांअवि
धेस ॥ ४२ ॥ दसैरथोवा ॥ नृपतविलोकसुमिततहां । अधमुषदुषहिमलान । कहांछाडीसी
ताकुवर । मेरेजीवनप्रान ॥ ४३ ॥ कहाकसौमोपततकौ । रामलषनसीयवेन । सुपसुनावकु
त्रियजितहि । लेआएजियलेन ॥ ४४ ॥ [illegible] ॥ दुर्जनविनवविनासं । सज्जनसुषमयआगमन । सं
ततकहियेपथिकप्रमांन । उनिउनिसोसोपिसंदेसं ॥ दुहा ॥ बकुतजीवायेमोहिविध । कृतय
हदेषनकाज । समयतिलकसिनासले । रामजाहितवनवास ॥ ४५ ॥ मित्रीवाच ॥ वारवारवं
दनकरे । रघुवरतुमहिनरेस । ममहितकरकुकलेसमत । दीनोयहसंदेस ॥ ४६ ॥ कुलआ
चारजनीतक्रम । करिपितुवचनप्रमांन । दरसनकरिपदवंदहू । बीतेअविधविधांन ॥ ४७ ॥
सीताजबमनतुमहिसो । वंदनकरेविसेष । पितुदरसनपावनपरम । केहोविधनालेष ॥ ४
८ ॥ रामलषनजटजूटसिर । बांधेवटपयआंन । तनपहरेतरुपत्रतुचा । वेषमहामुनिवांन
४९ ॥ श्रृंगवेरतैगलनकिय । [illegible]रुरथदीनोफेर । मातपितहिवंदनविवध । हितसोकही
यतहेर ॥ ५० ॥ सोरठा ॥ दसारांमसियदेष । जलषेचरजलथलजथा । विसमयपरेविसेष

कुजंतविकलकरालरव। नृपतोवा। दुहा। मैमृगियानश्रवनमुनि। बानहत्योश्रग्यात। ताकेग्रं
धजुमातपित। तिह दुषजरेविष्यात। ५२। कृतवसचिताप्रवेसकिय। उनदीनोमोहिस्राप। उत्र
सोकज्योमरतहम। योनृपमरियोश्राप। ५३। सोयहश्रायोउदहसमय। कर्मविपाकप्रकासज्यो
विधश्रंकलिजाइपट। मिथ्याहोहिनतास। ५४। छंदपा। इहसमयसोकसागरमंकार। नृपग्न
योमग्नततननहिसभार। रोदतउकारकररांमरांम। हाउत्रकहांतूधर्मधांम। हरससमोहिमरत
किनश्रांनदेह। संसारश्राजछूट्योसनेह। लछनहाउत्रममबचनलीन। कितबाममोहियोग
वनकीन। हारामरारमतवविरहहेत। केकईश्रसंचवनपजिकेत। कविरोवा। करिरामदसर
थउकार। प्राणतजेछेऊषसिंधुपार। दुहा। अस्वमेधजाजिगजुगत। यागतधरमनिधान। हमर
धफटिनृपतसोपाइगतिपरमांन। ५५। छंदपा। भरसुन्योनृपतसुरभुरपयांन। हाहंतसहकव
सुवनयांन। हाहारवतबरनिवासहोय। केकइधृककहिसबैकोय। पतिमरनरांमवनवासपा
य। वेराइपनरथजाकैप्रजाय। वससोकचराचरजनऐविहाल। कोवरनसकेबहुदुसहका
ल। गुरबंधुसचवमिलसबसुग्यांन। वससमयमंत्रकीनेंविधांन। दोणिकातेलमहनृपतदेह
सुस्थांनराषतूद्योसनेह। दूतनबुलायगुरपत्रदीन। परजाऊनरथमातुलप्रवीन। उतजाऊ
धारजतनगरदूत। यहनदसुनहवीश्रद्भूत। नरथनसुस्वप्नदेषेनयांन। अनवितश्रसंगत
रूपश्रान। अथनरथस्वप्नदरसनं। नरथवाच। विस्तारसषासोस्वप्नवात। परहृदय
तासोकहतघात। अविलोकसूकसागरश्रनीर। सिसन्नभपतनदेष्योसधीर। धरति
मरपधनमिलनगररुध। पितमुक्तकेसथितजलअबुध। पितश्रदसिषरतेपत्तनपेष। वि
चविसदकुमगोमयविसेष। उन्पकरत्तकराजुलितेलपांन। पेहस्तवारवारहिप्रमांन। श्राहा
रतिलोदनश्रनायास। तवलिप्ततेलश्रवगाहतास। पाषांनपीववेवकप्रमांन। निजकृष्ण
वस्त्रकृतपारिधांन। विंगलाकृष्णप्रमदासप्रीति। राजासोवहसतजथारीत। धावतवियाति
ईसजवधाय। अनुलेपनमालाश्ररुनश्राय। रासभरथजोतेरुदरूप। जमदिसासमुषप्र
यांनजूप। उनभरारोहकोउनरसपाव। अतिश्रातुरईश्रा। गवनश्राप। ततकालचिताधूमा
यतास। अविलोकजातसोश्रनायास। ईहनातस्वांनश्रजुतिविलोक। सोदेषनिद्रावितप्र
तससोक। अहमिपनृपालवारामश्रंत। देषेजुस्वप्नदारुनदुरंत। तिहकारनश्रंतरमाहि
त्रास। उपजैश्रनिष्टकछुश्रनायास। पत्रीवसिष्टश्रग्याजुपाय। अतिवेगनरथपहदूतश्रा
य। दूतवा। बोलेवसिष्टगुरस्वलकुबीर। उविलेनरथसानुजसधीर। कविरोवा। अतिवे
गश्रजोध्यानगरश्राय। सबहोततहांश्रनमितसुनाय। सोनाहतदीसतश्रीसमाज। श्राका
रनगरजेसोश्रराज। नहीबोलबोलबंदिजनबिरदबांन। जिततितहीसोभ्वनमुसेजांन। राजा
गृहनाहीनराजरीत। गजबाजसुनृत्यमंगलसुगीत। नृपमिंदरश्राएसमयनांहि। मनजानपितांरू
वासमांहि। ईहसमयमातगृहनरथश्राय। सामुहीश्रांनकेकईसुनाय। अतहर्षउत्रबैगारश्रंक
नियरायकुसलपूछतनिसंक। नरथवा। रांनीकिहमिदरश्राजराय। सुषलेकुपवबदासीसुनाय
। केकईवा। मुषउतरदीधोतबहिमाय। सुरलोकपिताजसजुतसिधाय। नरथवा। उपज्योश्रनि
ष्टकहिकोनएह। दुषउत्रपितातवतजेदेह। सोउत्रकोनकारनसुनाय। केकईवा। दंरुनिवा
सरामहिदिवाये। नरथवा। कहिधोश्रकाजइहदुषकीन। केकईवा। देवनृपतमोहिवरदांनदीन

॥दशरथवा॥ वरलहे सुतै इह किह विधांन ॥केकईवा॥ नृपता विवेक तुम कहनि दांन ॥ रघुनाथ जातव
न बंधुराज ॥ सो तिलक तुम हि सिर छत्र साज ॥दशरथवा॥ पापनी कहा तैं बाटपार ॥ मार्यो नरेस अब मोहि
मार ॥ मम काज राज माझो जु मात ॥ तिह लइयो इहै फल मरे तात ॥ वनवास राम लछमन वियोग ॥ अवि
धेस अंत मौ अविवियोग ॥ कारुन जिह कीनो कुल अकाज ॥ राजश्री को रितव सीस राज ॥ रांम हि निका
र मो हि देत राज ॥ ईह दइ बुधि तव क वन आज ॥ पापनी उदर उपज्यो स पाप ॥ अपलोक पात्र हूं नयो आ
प ॥दोहा॥ मूल काट तरु पत्र ते ॥ सींचे चित्त कुसाल ॥ मीन जिवावन हेत ज्यो ॥ कोरत सरवर पाल ५६ उ
री अज्यो धावें सरिव ॥ दसरथ पिता दयाल ॥ राम लछमन से भ्रात मम ॥ जननी तूं अघ जाल ५७ ने वरजा
वे तिह समय ॥ अधमा कुल उबेद ॥ रसना गिरी न कंवते ॥ छाती नए उन भेद ५८ ॥ नृपतन समुझे सुधम
न अवलोक पट असंत ॥ जागत ही मूसत जगत ॥ दारुन कर्म डुरंत ५९ ॥कविरोवा॥ इत्यादिक उर
वचन ए ॥ भरथ मात कह भाष ॥ कोसल्या हित वर्णमकय ॥ सुध हृदय सुरसाष ६० वसम लीन सुद्धी
न वप ॥ कोसल्या तिह काल ॥ माहा कल्पितरु तै मनहु ॥ विछुरी लता विसाल ६१ ॥छंदचुपई॥ दंडवर्ण
म भरथ तिह कीने ॥ लए उठाय लाय उर लीने ॥ भरथ सुध कह मम मन ऐसो री ॥ असद गिलान अर कज्यो
औरे ॥ मन विस्वास देत म हितारी ॥ सकत न सन सन मुष दुष्ट पिसारी ॥भरथवा॥ अंबा मो सम पतित न
कोई ॥ हित तिहय तें अनर्थ जु होई ॥ पितिपरलोक राम वनवासा ॥ सो सुन अजहु जीय मन आसा ॥
डर मत याहि दुष्ट किह दीनी ॥ केकइ सुता नबध्या कीनी ॥ जननी नइ जांनय हु जाके ॥ तो सिर पर हू
पाप ए ताकै ॥ काज उदर किन्या विकेता ॥ वाहित मुक्त सुध जनतेला ॥ कृतजो बधक अरुधती गुर
के ॥ सुत पितु घात कनंदक सुर के ॥ गो दुज कुतनु कचरन प्रहारा ॥ हव त्रिय बाल कमारनहारा ॥ स्वा
मध्रोह विस्वास जु घाती ॥ कृतजु विनासक वनदव दाती ॥ गउकुल हरक वछ विद्रोही ॥ देव पिता मात
गुरद्रोही ॥ गुरतल्पिपग जो परयह गांमी ॥ कस्ते इक नक कलिकत कांमी ॥ कृषिकानंसर फोरत को
उ ॥ जन वंचक पंथ घातक जोउ ॥ दुज जो किया निष्ठ हु बिकरमी ॥ घोर पति यह अपद अधरमी ॥ छत्री
जात रिण निर्न अद्धोही ॥ होत विकल देषत छिनलोही ॥ ईत्यादिक अघ असइ असेषा ॥ विश्व परि हू
मम सीस विसेषा ॥ मोहि जो जांन नइय हमाता ॥ देव हू कुतो दु हसफल दाता ॥ जननीय है सुमत है
जाके ॥ तव रिन होकुपराजय ताको ॥ कियअनर्थ जुइहै केकई ॥ तो मम सोक देवही देइ ॥कविरोवा॥ दो
हा ॥ पति घातिन सुर धेषनी ॥ देव वंस दुषदाय ॥ इहै कुबुधिन केकई ॥ माता नव नवमाय ६२ जांन भरथनि
र दोष जिय ॥ कोसल्या हित कीन ॥ लोचन छुबे अंसु जल ॥ नीयत अंक चरलीन ६३ ॥कोसल्यावा॥ सुधेसा
ध सुनावतु म ॥ वर्जित वैर विकार ॥ उत्र कउ जिन स सपन ॥ सब जांनत संसार ६४ ॥ हुत सोक समुद
हो ॥ अविलंबन तुम आय ॥ सीताल छमन राम सम ॥ सब मनु मिले सु आय ६५ ॥कविरोवा॥ दारुन तिन बि
न दुष दुसह ॥ उर उरप गह्यो आय ॥ कठिन दसरन निवास की ॥ जो विधव रिनि न जाय ६६ ॥मातावा॥ क
हि कोसल्या नर्थ कह ॥ अब जिन होकु अधीर ॥ समय विचार जु अनुसरै ॥ सो उउर्ध सधीर ६७ दीसन काज
दीजीये ॥ नाइफलत सत नाम ॥ कर्म काल अतिक वन है ॥ यातै कछु न कवाइ ६८ जियन मरन न रनाथ को
तुम जु कहत धिन ताहि ॥ जल तै विछुरत पंकज्यो ॥ उरम मफट्यो न आहि ६९ सुकृत निसफर सरा
हिये ॥ हव निवहत रकहे त ॥ छिनही विछुरत नीर सों ॥ तरिफत रिफ जीय देत ७० ॥कविरोवा॥ कर्म दसा सु
अनर्थ के ॥ कौसल्या तिह काल ॥ कुचपइ करुना हेत करि ॥ श्रवन लटे मिटसाल ७१ नई विती तीनावरी
सब दिन सकल समान ॥ कठिन काल रन वासी कर ॥ विल मन यो विद्वांन ७२ ॥ आगवा सिष्ट अरुधती

क्वनन्वारिविनीत समाधानसबकोकस्यो पावनवेदप्रणीत ७२ आएतबबाहिरन्नरथ मन
उषवदनमलीन ज्योकोटिकअपराधजुतहोतबिनछिनहीन ७४ गुनबंधवअरुमित्रीज
न मुनिहीमहाजननलोक गतिमअंततजजनअबिल आएसनासमसोक ७५ छंद५। अफायनृप
तिजलगंगअंग सबलेपकरेसोरंनसंग वेदनसुरीतसाजेबिधांन पधरायनृपहितहिबिमान दे
कंधउतराताउनीत बिस्तारवानहरिहरिविनीत हाहंतसबनननगरहोय रविउवेसउषजड
जीवरोय सोजाएसरजूतटसबेद विभउवितसबैकृतसोजवेद श्रीबंनअगरमिंदरसकाय
वस्त्रादविवधसोरंनवनाय उनिकियविवांतिहप्रहप्रवेस विधजुक्तकियोकृतनुकविसेस
करननरतदाहृदसर्थहीकीन उनिअवतकरमउजतबअधीन वउकाइसरितसरजुविष्यात
तहादइजनुजलउदकतात लषसमयरुदितसुरनगरलोक सबआयराजमिंदरससोक इ
तिराजादसरथपरलोकप्राप्तिकविरो। नितुकन्तजथाविधकरसनेम परलोकसधोपितु
तुरूवेम गोलक्षसवबजुतनग्राम सुषसेक वष्टनक्षनसमांन गजवाजअन्नधनअ
येह सबनायहुजनअर्वासनेह अहवादसन्तोजनजगअघाय स्तुतिकनिष्टतिनोसुनसुना
यकृतमंजननउजलवप्रअंग सबनगरजथाविधलोकसंग दीनेवसिष्टगुरवामदेव अनेक
दानपूजाअमेव यहसमयनरथसानुजसधीर बैठेसुसभारघुबंसबीर गुरुमित्रमहाजनमि
लसुदपांन उनवरणच्यारउरजनप्रमांन वसिष्टोवाचकवितबंधै। कहिवसिष्टगुरकथ्या विह
तमतवेदविद्वरसुनकुनरथसंसार प्रबलविधअंकसुसर्वपर हांनलाभहितअहित मरंन
कुजियनसुमंगल विषमपराजयविजय अविनअपजसउजल पावतसुपेसुवसुगव
त जोइजोइउपजेआनजिहां नमबाहुसमयवर्तकुनरथ करिबोसोचनउरषकहू १ सुरस
हायसथांम विषमनिसदिवसजुविलो निषलअसुरकियनास जुरेदसरथरिनजितो निगम
विदतनिसेष दांनपूरनहुजदीनो अविधजोइप्रभजअंत राजनिरकंटककीनो नहीटसौक्व
पननिरवस्यो उपवीसुजसप्रमानियो तिहधिमदेहतजरामहित जियनमरनकुमानियो २
छंद५। करियेनकाजतियसोककोय होनीजुदेवइबसाजुहोय सुराअसुरसिधसाधकदिगेस
सबकहतसुजसदसरथनरेस गुरोपदेसबंदहेअद्वारी। गुरवसिष्टअरुवामदेवगुर
अतिअविलोकनरथउषआतुर जथासमयउपदेसजनावत सानुजनरथहिनीतसुना
वत किहलगकरियेसोकअकारन धस्योसुविनसरदिनइकधारन ज्योंनरतजतवस्त्र
जीरन ततबिनलेधारतपटनौतन तौहीजीवबाहजीरनतन अबिलसरीरनज
तहेअनअन अमयसुधजीवनितअनमर जन्मरासवर्जितहैनिर्जर पितुअथवासुत
पंतपावत वृथामुढनरसोचवढावत विधकृतसिष्टअनेकबिलावही नियतकोटिब्रह्मंम
नसावही सागरऊसरितासोषांही निषलदिष्टसोपैथिरनांही ज्योंजलबूंदपत्रपरिजानहू
प्रतिमातोबिंनसंगप्रमानहू आयुचपचलजलवेलाआही तातैप्रतिपयकेसोताही कोऊ
चलतचलावतकोऊ सबहिनकोमारगकैसोउ जलसमीरवसहोततरंगज्यो ऊपजतना
सहोतहोतसंगतज्यो धरिऊधीरतजसोकधुरंधर अनयदेऊसबहीजआतुर ६३। क्वनला
इरघुनाथवन सानुजवलेजुसीत नेमवचनदसरथ[illegible]पत छोडेप्रांनप्रतीत ७६ यहतुमसम
जोनरथअब सबहीनातउजान पितुलोकपहुचाउगट उतंकनप्रमान ७७ दंडकवनरा

महिदयो । तुमहिश्रजोध्याराज । सोउकहु तुमकहु समझ । करिबोउचितसुकाज ७८ । कवित । न
नवसिष्टसुनत्नरथ । लीकहितराजसुलीजे । पितावचनपरिवांन । कालगतजानसुकीजे । नृपसुरलो
कनिवास । कवनपनपूरनकरियो । रामविषमवनवास । विविधमुनिकृतअनुसरीयो । तुमसाधुनीत
जानतसकल । विकललोकअविलबविन । अबकरहुराजश्रज्ञाउचित । देहितिलकसुतसोधदि
न ९ । छंदपध । अनउचतउचितश्रज्ञाअधीन । पितुबचनमांनसोइप्रवीन । पितुबचनकाजहज
फरसधार । सहसोदनहुतजननीसंघार । जाव्योजुउलनजोबनजुजात । सुतदयोविश्ववादी
विष्मात । उपज्योनउनकुकोश्रजसश्रंक । नृपवाचनरथपाजकुनिसंक । पितुदेहिराजसोलहै
सुत । समृतीयहैवेदउरांनसूत । कोसल्यावाच । यहकोसल्यादिकमानआय । सोइक[illegible]सनय
कारनसुनाय । अविधेसस्वरगवनरामश्राप । वससोकनरथतुमविरहव्याप । करिहैकोरहाजू
मलोक । सुतकरहुराजमनतजहुसोक । आलंबनसबकोतुमहीश्राज । रक्षासबकीजेबेव
राज । पितुश्रज्ञाकररूमानवृतहनीतधर्मजसहैश्रनूत । कविरोवाच । सोरठा । विषमसुनतयह
वात । अश्रुसलिलसींचीश्रविन । अंकुरउषश्ररुकात । नृमजुतउनहेनरथके । नरथुवा । कंपह
दयजलनैन । तहांरोमउनारतन । विकलनरथकहिवैन । काजनमोकहराजकछु । हैअघमूल
श्रकाज । उपज्योकेकरउदर । चाहतहैसुखसाज । उष्टमोहिश्रबराजदे । इहमोतैनहीहोय । राज
लिउरघुरामको । सिरमैमानीसोय । कोउजसश्रपजसकहै । ८२ रामलक्षनवनवासमातावेधवा
पितुमरन । हमहितिलकअपहास । नलीवनाइवातविध ८३ । छंदपध । रघुरामवीरराजाधिराज उ
नकीयहसुखसंपतसमाज । अबमोहिसूझउपायएक । तजिश्रौरबातयहयहीटेक । गुरदेवबल
उलेसबनसंग । आनहुरामग्रहिवांश्रनंग । जननीगुरमित्रीबंधुजाय । श्रांनियेरामजिहतिहउ
पाय । इहमंत्रसबनश्रविलंबआय । नयेसोकसिधबूरुतसहाय । कविराव । कीनोवमांनयहमंकाज
सबउठेयापसञ्जनसमाज । नरथुवावादुहा । कह्योनरथगुरमंत्रकह । १नयहकहुवमांन । सबमंग
लयामहिसमझ । करियेघातप्रियान ८४ । कविरोवा । मांननरथकृतमिंत्रीमन । दूरनवेमवतीत । सोनि
चकइचकज्यो । लोकनविषमवितीत ८५ । होतविहांनप्रियानहित । रांमदरसचितचाव । श्रंबुजज्योदिक
रउदै । उरश्रानंश्रभाव ८६ । अथनरथचित्रकूटगमन । छंदवैताल । सुषसाजसबश्ररुधुतीसंगहि
वनवसिष्टविमांन । उनिवामदेवसवामदूजित । प्रगटरथपरवांन । चवडौलसिवकासुनसुषासन । अय
रानिश्रारोह । वाहनीकरनीविविधवाहन । सकलदाससमोह । सबवीरजेविवस्वांनवंसिय । सचिवसुत
टसमाज । कृतजथाक्रमश्रारोहकीने । सुनगवाहनसाज । उनलोकजांनवनायपूरन । जथामनसु
बजोग । करिहर्षिरघुवरदरसकारन । प्रगटप्रेमवियोग । गजवाजसुरथपदातिश्रगिनत । चालचमुंचतु
रंग । उनगिगनचुंबतधुजपताका । अतिसुरंगउतंग । नीसांनगुहिरननादनिरन्तर । अविनमध्यश्रगास
प्रगटसुरहहमंहहरित । वतिदिगंसवदास । धरिजातधसमिगमिगनच्छधर । कमवकोलसुकंप । सुरसिधसु
हिसमाश्रसाधन । सक्किमतदलसंप । मिलश्रनिलसुररजसुबंधुपूरिमंडल । अगमवहिश्राकास । तमप
सरवक्रिविबोहबिनतह । तरनफंपततास । पदचारनरथसुबंधुपावन । कृतगवनसुनकास । सम
सांतवेषविसेषसोभा । मध्यगतमुनिमाल । दोहा । ग्रीषमरितुगजजूपज्यो । सरवरजातसकांम । विक्र
तषातुरप्रेमवस । रूपदरससियराम ८७ । सेनानामाकवित । मिलसहेंम्रदसउदित । मत्तमातगमहाबल
सुरथवीरसहंश्रसात । पितपालसालपल । ऐकलाषश्रतिसजव । श्रसजोधाश्रारोहित । मिलपयदल

धानुषसमूह अनन्नंगअसिषत धसमसहिथरगिरअंगदहि कमठकोछलअहकंपहह सेन्यासुन्न
रथचतुरंगसक संमुषचित्रगिरसंचरिय ॥ दुहा ॥ अंगवेरसीमासधन बसरसरितविसालघुर
तनिसांनदिसानघन मिलनिहावगिरमाल ८८ ॥ छंद ॥ नीसांनघोषसुनन्तनिषाद वनरांम
अकेलेवहिविषाद सेन्याअनेकबंधवसकेल महिवाटघाटरुधक्रुसमेल रघुनाथकाजगुहकोप
राय इहषेतभिरतहमजुधआज असमरथरामजानतअज्ञांन सोइचल्योसाकदलबलसमांन मो
हिवधमराजकिंकरहिमार वनघाटततोधसिहोविचार कवित न्रम्पकाजन्नवन्नूप बंधुसुतपितावि
रोधितन्नूमकाजनवन्नूप सतबाकितसोधत न्नूमकाजन्नवन्नूप कर्मनिदतसबकरिही न्नूम्पकाज
नवन्नूप आपथापीअनुसरही छितन्नूम्पकाजन्नूपेनरथ कष्टविनाहीकरवचो दियहेरअटंकि
तकर्नहित विषमवइरविग्रहवचो ॥ दुहा ॥ विएहुतनिषादपत सोधलेकुसविसेष कारनआगम
भरथकौ आनकुजाकुअसेष ७९ कविरोवाच विषमपंथपदत्राणविन चरनचारचितचाहि आवतमु
निवरछंदमह भरथअग्रसतनाव ८० स्वातिकवेषविलेषसुन धावतआएधाय सेन्याकारुनस्यामकौ
अषिलनिवेध्योआय ८१ छंद ॥ निश्चयबइहबाम्योनिषाद उनचलेपायवर्जितप्रमाद करिजोरआ
यगुहदरसकीन पदवंदनायदंडवतप्रवीन अतिप्रेमभरथलीनोउठाय लषिरामसषामिलकंठला
य अतिउपजिमोहमुकहिनअंत सानुजमनुभेटेरांमसंत उनहूबकुसलपंथचलेपाय सियरां
मलबनसुधलहिसुनाय गुहावा ॥ प्रभुदासजानकरीयेप्रवेस सदनममहोयपावननरेस भरथवा
उनभरथकलोगुरुसोप्रकास विनरामनआवहिनगरवास रघुवीरबैसाबांतुमअदराज अबचल
रूसंगममउचितआज कविरोवा ॥ जिहन्नातसहोनुजभरथजात कीनोप्रमांनसोइपतकिरातपंथ
विषमजथाक्रमकियेप्रयांन गिरचित्तनिकटआएसज्ञान इहनिसाज्पोनकियस्वप्नआय सबसेष
पातरामहिसुनाय सीतावाच ॥ अन्नेकसेनमिलभरथआय वेकतसरीरदुषदिनविहाय तनषीनम
लिनसबमातसंग तिहरूपआंनअरुआंनरंग कविरोवा ॥ यहसुन्योस्वप्नजबअविनयंद चषअसु
धारचलरामचंद सोइसुनरांमसेषहिसुनाय अविचितआजकछुअसुनआय यहकहिसनीत
रघुवरअकाय उनिदूजजथाविधरूदपाय उतरिदिगसनमुषबैठआय वरवीररामविस्मयविया
प नन्नदूरिधुनदिनीसाननाद वसुमतीकोलमुनिगनविषाद किरातवा ॥ दुहा ॥ सेनेसंगचतुरंगस
जि भरथसहितलघुभ्रात आएयहवनआपने काहूकसोकिरात ८२ श्रीरामवा ॥ आहिअचानकआ
आ गमन इहांभरथकौजोकहिलछमनकारनकवन सैंचतुरंगसमाज ८३ लछमनोवा ॥ सत्रुसेनमादि
नसुषद निगमनीतनिरधार याहीतेअविनीतउर बादतवैरविकार ८४ देसएकमैसांमद्वै होतज
हाकिकुहेत विग्रहविषमविनासको निश्चेतहानिकेत ८५ कवत ॥ षलमारेरिनषेत ङुसहचतु
रंगविकारू सरिताश्रोणसपूर वीरकौतिकविस्तारूं सानुजभर्थसधीर वीरजमलोकहिवासें केक
इउरउत्र सोक ज्वरप्रबलप्रकासो कुलतिलकबत्रअजसुवनकौ रामसीसलेधारिहो कारुनपीव
अवधेसकरि सीहपीवबेसारिहो १ दुहा ॥ प्रभुतुमजानतधर्मपर आउनजैसेओर आवैमनुजवि
न्नूतउंन विकनरहतजीयगोर ८६ पाईन्नपताअविधउर सबपरजागतसाज आएअवसरजांनअ
बकरिनअकंटकराज ८७ वनहीअकेलेतुमवसत संगनसेनसुहाव असहनकोलछनयहै दि
तसमैपरदाव ८९ छंद दैअदारी ॥ कोनराजपदचलौकु वाला बौंकुतराजविनसेबुधवाला सो
मपायपदगुरत्रियगांमी नकुषजोतदुजनोअघनांमी वेणुविषकियेविप्रहारा सहस्रबाहुजम

दस्नसंघारा। षलसुरेसगीतमघरबोयौं। रधुनंदन पांव रोयो। कवित। जटामुकटसिरजूट। वल्क
तरुतुचाविराजत। कंधअजिनकरदंड। रेणुरजितततुराजत। संतनाव अनुसार। विरविपरीतविव
र्जिय। रामवेषआचरिय। संगमुनिवरगुरसजिय। कवित्तवरनरघुनाथके। प्रेमविवसहजनकपन
नयौनक्तसिरोमनिनरथको। याहीसमयजोआगमन। १। रामदिष्टपथनरथ। नयेजवदोउभाई मग
नसां तरसमांक। साथमुनिवृंदसवाइ। चितप्रेमवढिराम। धराआतुरतबधये। बलितदंडज्योपरेउ। राम
लिकंठलगाऐ। तहासजलनैनरोमांचतन। कोउवनतरअंतरकरत। अनविदपीतरसरीतवर। भ्रा
तरांमनेटेनरत। १। छंदपध। मिलसषातहागुहसुषअमाप। उरलायलयौरघुवीरआप। सबबंधुसिया
अपनेसुनाय। आनंदवढ्योअतिमिलतआय। सुनदरसवंदगुररिषसंभार। मिलरामबैठपरषदमंझार।
वसिष्टवा। बोलेबसिष्टगुरविमलवांन। मातासबआइमोदमांन। कविरू। प्रउधारिरामतिहगाउंनीत।
समबंधुसकलअरुवियासीत। आऐसुदर्षराघवउदार। वंदेरेकृतजननिरबारवार। मिलमुदितज
याक्रमसबैमाय। बेवारअंकलेलेबलाय। श्रीरामवा। पितुकुसलरामउछितकपाल। करुनारसव
गद्योतादिकाल। कविरोवा। रहिसकिनजननिसबउठीरोय। हाहाउकाररविविषमहोय। मिलनैननीर
मनुवरषमेह। उपसोकप्रगटननुधरेदेह। धोयौसुधराधरअस्रधार। चतसद्दहोतकंदरउकार। करि
सकनधीरनरनारकोय। रनवासदुषीजडजीवरोय। सुरनाररुदतसंदनसनास। सतनूधरआपतसो
कतास। गुरत्रियाअरुधतिअतिसुज्ञांन। सबदिनकौकीनोसमाधान। अरुधतिवा। हरिईछ्याकबकुन
वृथाहोय। कीनोउपावइहवांनकोय। मायाजुप्रबलदेवीअमांन। सिरवहतसुरासुरनरसमांन। कादै
मगमस्तकपरसकोय। हवहेतबलीसोकोउनहोय। कविरोवा। प्राछालिउदकआननउनीत। सबसासु
अंकनरलईसीत। सविषादरामगुरबंधुसंग। तहांन्हायतरलगंगातरंग। सविसेषरामसबविधसुजांन
दियपितुहिजलंजुलिउतकदांन। अषिलेहेसरामगुरिमतउदार। कहुयहविधउहांवितीत। इकलोकद
रसरघुनाथप्रीत। श्रीरामवा। इहांवचनरामगुरसुउचार। वुजलीकहोतयहविनुउषार। संगमातनरथक
रियेप्रवेस। दलबलसमानउरअविधदेस। कविरोवा। इकदिवसनरथसुनसनाआय। सषागुहसहि
तसानुजसुनाय। मुनिवरगुरमित्रीसुनटमांन। उनवरनआरउरजनप्रमांन। दुहा। यहांसबनमिलयो
कह्यो। अबकछुकरिकउपाय। देषजथाविधसुनदिवस। रामतिलकरघुराय। ९०। नरथोवाव। छपै।
अल्पकाजनवन्नूरि। नहिनवयकरतविचरन। इहानीतउपदेस। गहतसुरअसुरसिधगन। भूरिकाज
जिहनाय। वंसुअलिपविचारहि। उर्षवहैनिवासहमनरथकहि। महाफंकारुनमहि। १। दुहा। अरधग
ऐसबसरहै। मंत्रयहेजुप्रमान। वसिष्टहैमुनिवेषवन। रामवसहिरजधान। ९१। कविरो। नरथहसानुज
नक्तपर। लेआगेमुनिवृंद। मिलसंकपविकलमन। आऐजहांरघुचंद। ९२। कवित। करिअंजुलिजुत
नरथसप्रणिवतकिन्निय। अविनचक्रतुमइस। अषिलसियतुमहिअधिनिय। करिकतिलकअभिषे
ष। बत्रसिंघासनसफहि। मातहोकुमनमुदित। विस्वजयदुधिबवजहि। राजाधिराजरघुवंसरिव। विक
सहिलोकजुकंजवन। करियेवियांनअबअविधकहि। घरघरआनंदहोरिया। [illegible] छपै। जननीममजा
ओकटकजोग। पितुनहिनसमरूयहअवियोग। होनीसुटरैनहीअंतहोय। कहालागतिहैअबकरेकोय
रहाउवकरियेबेवराज। ईहबत्रिधरमहैउचितआज। श्रीरामवा। उनकरतरामनरथहिप्रबोध। पितुवचन
~~वरथकरियेप्रमांन~~ लोपवेदहिविरोध। सुतपितवचनकरिनंगतास। निरधारतादिनरकहिनिवास। पितव
चननर्थकरियेप्रमांन। इहवेरिफिरकहिबोनआंन। नरथवा। तुमनीतधरमजांनतनरेस। विधजुक्तनरथ

ब्वरसो विसेस। उनमत भ्रांत चित त्रियाजीत। अग्यांन अतदिका सुक अनीत। अय ववन तिनके
अकाज। सोइक हत नीत पिहत समाज। उपजे अनृपइन तव्वन अंत। सब उछि कुमुनी वर साधु
संत। श्रीरामच। अपराध न मम तात पिता ऐह। सब नावी कारन निसंदेह। वर्ष दस च्यार दंडक नवास
पितु बचन सत्प करि कुवकास। पित बचन संग जो करत इत। अनसत्र हत ककहियै अन्नत। पि
त घात पाप ब्रथ्वी प्रमांन। यह गे स्फे रकहि बीन आंन। कविरोवा। तब गए ऐन रथ उव गंगतीर। सजिद
स्नासन बैठे सधीर। पन कसो देह ब्रानन प्रमान। निरधार नक्त रघुवर निधान। सुन नियम नरथक
तय हु विसेस। सुरकाज नंग जांन्यो सुरेस। सुरराज सहित तत बसु र समाज। कहीय तगंग सुदेवका
ज। सुरसुरी देह धरि तहां सकाम। मन मुदित आत हां बधव रांम। गंगाउवा। कवित। धेन रूप करि धरनि
असुरि अघ नरि आक्रंत। बहुविधि सो विवर। तास उपक हेतु रत। वर अमोघ तिहां विहत। विध्र कहि दयो
विसंभर। दसरथ नृप के पुत्र। नियत कहै हो आक्रित नर। करि हुत अमूल रावन सकुल। ता दिन पै बीपोज
तिब। अषिलेस विधु दीनो अनय। अविन होऊ निरनीत अब। १। छंद१। इहहेत विष्णु अवितरे आय
संहार असुर देवन सहाय। निरलेप निरंजन निराकार। अवितार लसो कारन अधार। नहीं बंध वका
रू के निदांन। आरंभ आंन कबुक रही आंन। के कह्या जवन वासकीन। निर्धार कछु इछ्या नवीन
एजा तव नदी सुरकाज आज। रावन कौ करि है नास राज। अग्या जु देह रघुपति अनत। सो करकुनर
थह वह्याह संत। दुहा। करि विनास पौली सतको। देवकाज करि देव। अविवती ते अविधपत। अहै अ
विध अजेव। कविरोवा। कियउ बोध मंदाकनी। सब नरथ हि समुझाय। महिमा जथा स्वरूप मिल
सुख हि सुधाम सिधाय। ८४। सुनि प्रबोध सुरसरित को। नरथ उवे सत नाय। आऐ आश्रम आपने
विस्मय यह वहि विहाय। ८५। अथ राजा जनक आगमन। सोरठा। ताही अवसर इत। आए जनक नरेस
के। वह सुन विरत अन्नत। राम जो गदसरथ मरन। ८६। इत दसा यह देष। उन आए मिथुला उरी। वि
नई वात विसेष। सब ही राजा जनक सो। ८७। वढ्यो विषाद विदेह। सुनि सुनि सो वातै उसह। सो कुटंब सु
सनेह। राजा आए चित्रगिर। छंद वैताल। रघुनाथ सानुज जनक राजा। मुदित मन सा जन मिले। सुर
लोक सुदरसन गमन सुनि सुनि। विषम दुष जय व्याकुले। रनिवास उनय उदास रसवस। समय मिलअ
नुसार। रिष त्रिया आन अनेक रानिन। किय प्रबोध प्रकार। कुलराज आज समाज मिलक बु काल बेप
न कीन। चित्रकुंट गिर हि वे सुधरम चरचा। नित होय नवीन। कविरोवा। दुहा। रानी मैथल राज की। वासुर ए
क विष्यात। सीत हि करत प्रबोध सो। जथा समै विध वात। ८८। सीता जननि वाच। छंद१। पित देत राम वनवास
पाय। वस नीत चले तिलक हि विहाय। उष तहा महा सहि है उरंत। अनचिंत कष्ट उपिजत अनंत। आरुनपर्ज
तु दारुन अ साध्य। उतपात करहि निवन व उपाध्य। मनुजासन राष सतन अमांन। सुष वस्त उष्टनवनव
नयान। वय बाल रांम मैं लीला विलास। तातै न उचित तुम संग तास। दव ब्रारु भुवन कारक रूठेह। सब कर
ऊ सासु सेवा सनेह। रघुनाथ विरह अरु सो तिरेस। वसये ह वंटा वकु उष विसेस। यह सु मत हेतु वपितु
प्रमांन। करि यै मम सिक्षा कुवर कांन। सीता दसा। विधउ रध वदन न हि कुरत वैन। नीर दसमांन जलधार
नैन। सुर संग कंप रोम व संग। उपज्यो सियस्वा तिक भाव संग। वैवर्ण देह श्वेद वार। हियवि क्लसियह
जननी निहार। सो दसा देष सीता सत्रास। विपरीत होय कबु नो विसास। निरधार जनेता किय निदांन
ब्रिसर सोदसादेष सीतास नास विपरीत होय कबु नो विसास निरधार जनेता किय निदां उनकह
रू रहन तोत जे प्रांन। पति वे मइ तै माता प्रनाव। उषम असीय उरध सुनाव। वर लाय जननि लीनी उमाय

चषिपो भवात ओरै बलाय ॥ कबित्त ॥ ३ ॥ दुहा ॥ नृपत विदेह निषादपत गुर वासिष्ठ सुज्ञांन मुनिसमाज
महिमा अमित निगम जु नीत निधांन ९९ मंत्री सुमित हि सुनट मिल बीरन रेस विसेस एक समय एकांत
कै देत नरथ उपदेस १०० वसिष्ट उवाच दो० गुर कह्यौ नरथ सौ गुढ ग्यांन सिष समय मान वरत हु सु
जान राकन बधक रन जात रांम करियै न विघ्न यह देव कांम तातै अब आय रहत जु तात मिलरांम व
नकुल अय मात तुम सदा साधु सुमत सधीर विधक है हरामसी करहु वीर गुरपित बंधु जे अस अग्यांन
नहीं वचन लोप करियै निदांन ॥ कबित्त बाच ॥ मन सोच नरथ गुरवचन मांन उबि राम चरन देखे जु आंन दु
हा ॥ हाथ जोर बोले नरथ सुनहु ज्ञांन कुल ग्यांन महाबाहु रघुवीर मोहि प्रतु अग्या सुख मांन १ श्रीराम
वा० पितु दीनी अग्या प्रगट हित वा अनहित होय सो हम तुम करी यै सफल कुल हि कलंक न कोय २ नरथ
उवा० कवित्त तहां प्रथम करि नरथ राम सो कह्यो जोर कर प्रतु अग्या सुख मांन सब हु मम मान लइसि
र परम कृपा पादुका देव मोहि कुदीजे केकइसुत युत कलिक मो दिपुन पावन कीजे सौ पेख मांन नय
लोक सिर राघव दयां राखरी करुना निधान दइ नरथ कर प्रेम सहित निज पवरी १ कबित्त वाच दुहा म
हा पादुका रत्नमय लइ नरथ उरलाय बृज सुराबी सीस पर सो सुख उरन समाय २ अथ श्री राम नरथे
उपदेस दुहा पृथ्वी पालक एक नृप सुनियै नरथ सधीर पांन पांन करिये कमुख वो पत सकल सरीर ३
जैसे वन हो वसंत रितु सब की करत संभार तरवे लीन भपोषत हि फूलित फलित अपार ५ सो रीतु
म करी यो नरथ उरर क्षा सुखनी जांन तहीं रघुवंस ज्यो काराजनीत सबरीत ६ अविनि संभार हु अविध
लो तुम सब नीत सयांन करियो रक्षा लोक की पावहि सुख सब जांन ७ लोक वेद अरु काल लखि ज्यो
वरतै नृपाल ताके बुध प्रथावतै जात विलैप जाल ८ कबिरोवा ॥ नेरे नरथ अरु सत्रुघन विदा करे रघु
वीर कंप ह्रदय अतित नउलक स्वातिक नाव सरीर ९ कवित्त विछुरत वीर विदेह पेम जुत नए परस्प
र उन उन दंडवत ज्ञांन नियत हृत नरथ निरंतर लये राम उरलाय टरत लोचन जलधारा देव सिधय
रषी तदे पत्र आनंद अपारा करि विलेन रथ तहां परिक्रमए संसय मिट्यो सधीर कौ हुम कम अविलोकन
फिर करत कमलवदन रघुवीर कौ १ नाताबाच मागन अग्या मात राम सियलछन सिधारे बारबार ले
ले बलाय गो दिन बय गारे अविलोकित दगन अश्रुपात उर ऐरनको किन मां न हु विछुरी करु उमदि
रिधपाई रंकन चितवहि जु चंद्र चकोर ज्यो २ दिन इक प्रलै री कि है करि तार ही इ ऐसी क वहि फिरविधुव
दन विलोकि है १ दुहा अग्या मागी राम यहां अबांद इ असीस सबे सि हाइक होय सुर गुर गोविंद गौरी
स १० केकइ वा० केकइ तब राम कहि वचन कहे सुविनीत माय वस मो तेनयो पाप सुमिरहु उनीत ११
नरथ सुनाव तन तनव परितसु का दिवबीन अैज्यो पावक वस अबिल जन माया आधीन १२ श्रीरा
म बा० केकइ सों राम कहि मात न अमर वमोहि उन देवी माया बबल है तन या पैतो हि १३ कबित्त वाच
राम चले मातादि मिल सीता लछमन संग उपजे स्वातिक नाव यहां उनय दिसान अनंग १४ सोरठा वा
मदेव जाबाय उनि वसिष्ट को सिक प्रमुष पूजे बरन प्रबालि रामविदा कीने सुरिष १५ करि मनु दार अने
क राम विवध वंदन विहत वचन प्रसूत विवेक कीने विदा विदेह की १६ मंत्री सुनट महीप जीतम सपानि
षाद पत सब सनमांन समीप अंत लेवासी अविध सुर १७ लघु दीरघ उर लोक सेवग राम सुजान कै सो मन
मलिन ससोक विछुरत नए व्याकुल विरह १८ निरनरव जे निसान उस सहत लेत तुरंग दल प्रगट प्यानप
यान सुनिय तन हइजो सबद १९ सम संतोष सुनाय नरथ तपसी निबनी सेन त्रय सतनाय विषम चले जु
वियोग बस २० दुहा चले जथा [illegible]

२१ वासुरचारवितीत वध अविधसी मदलआय नदीग्राम नियत जुत संक मनरथ सुनाय २२
या दिनि बेसत पावरी पूजत मनरथ सवेम करत जथाविधवेदकर सेवानीत सुमै २३ उरषवमान सु
षनिउवि सच्यादर्नसुवार सो वितताम हिन्नरथसुष मोदविषयमनमार २४ मातागुरमंत्री विमन
पतन करेववेस जीवन करूं वहरात जो सिरमिन विबुरीसेस २५ समरुनचाहत सत्रुधन नवर
हसानुवपाय राजकाजमित्री जुमिल सबसाधत रिउसाल २६ रीतकर्तक्रत प्रेमरस कहेसुनेनरको
य रामचरनसिषसुभक्तताके ह्रदय हित मुनिश्चयहोय २७ वसत वीरगिरचित्रवन हर्षदिन छिदि
नहोत रामलषनसियसुनलषन जोजियमन मिलजोत २८ कवत तूरनवंसअवतंस प्रगटअ
वितारअविधउर बाहतिलकजुवराज सजो वनवास काज सुर पिता क्वनपरवान कस्यौक
त जयजुकिन्नो वर ष्वतुरदसज तीवेषलीलाद्रतलीनो क्रीडाअन्नतनरह रसकवि राम चित्रपब
तकरिय विस्तारनीत अरुधरमविध विमलकीतजगविथरिय १ इतिश्रीअजोध्याकांड संपूर्ण अथ
आरन्यकांड लि॰ गाथा आरंभेअरुनं राघववनहित विन्नमविबुध कुलनिश्चरषयकारं कौसल्या
नंदनवंदे १ कवत सघन स्यामतन सुचंग विमलविद्युतपीतंबर वामधनुषआजांन बाहवनिक
टनिबंग वर विमलकमललोचनविसाल जटाजूटविराजत तुवातरुनतनवीर सूरतपस्यातनसा
जत तनजीवजो तमनमुदितमिल राघवसीतोषसक कारन्परूपनरहरसुकवि त्वंनमामिरघुकुलति
लक १ मुनिरीवा एकदिवस रघुराम उनपरषदमिलतापस कहत सबैकरजोर करतउजदोषसुराक
स अनलकुन्न रिअंबु त्रुवनजलपात्ररुधरिन्नरि विवधहोमम षबाध करमअघजातनितकर ईहा
रहतउष्ट रावनअनुज षरनामाजुनिसंकषल वहनयअनंतअविधेसअब थिरनचित्तवुजतजतथ
ल १ जहांपावनछ्जकरतजिग पदत्रांणवहारत रेणुमुत्रमलिरुधर उष्टलीलातिहमारत पाकपात्रकर
परस कर्तअपिवत्रअसंकरह वनफललावत विप्र ताहितबबीनलेततिह अनथाहनीरपदनरअ
तर जीयनकरूं वहरात जब रुतनासहेतरघुवीरकह चाहिचाहिमुनिकहत तव १ कविरीवा दुहा
रिषसमाज मदहिराम रहि कछुककाल चित्रकूट विप्रसहायकदंरुवन जतीवलेजरजूट २९ अथ
अत्राश्रमागमनं चित्रकूटतेरामचलि अत्रतपोथलआय सेतसिरोरुहितनवलित देष्योसंतसुभाय
३० कीनेप्रेमप्रणामकर रामवीरमधुरधीर अनदहैआसिषअषिल दिजेहेकुरनवीर ३१ छदप अ
नुसुयापहै तब सीतआय सबन्नायणितकीनीसुभाय सोदेषतापसीजरासंग उतमांगस्वेतजरज
रतअंग कंपितकरमस्तकविमलकाय तपअतुल्लतेजपतिव्रस्ताय सीतहिलगायउरलहीसंत
उपदेसकरेत्रियहूतअनंत अनुसुयाजुदीनेअंगराम अविकारवस्त्रजेमलअलाग अतदिव्यमान
नगअलंकार वनमालविहतनितनवविहार आतिथविवधकीनेअनेक वनवासविदतभोजन
विवेक कछुकालरांमईहांवासकीन उनचलतमांगअग्या प्रवीन कविरीवा दुहा अत्रविलोकतराम
छिब नेकअघातननैन करुनाप्रभुअस्तुतीकरे विवधप्रेमयुतवैन ३२ अथ अत्रकृतस्तोत्रछंद अर्ध
नाराज नमांमी दिव्यदेवतं क्रपालसीलस्वमतं वदनउवीकासयं प्रनाकरंपकासियं विराजतंकिरुष
यं अलिकचंगजुयं सदिमनैनसोहए तिवारिजंविमोहए सवक्रनूरहसामयं जुकामकंवकामयं
रबंददंसुरंगए सुपक्कबिंबसंगए वसनमुषपंकजं सहासवाससंकजं त्ररेषकंबुग्रीवए सुसब
सोतसीवए भुजाआजान्हानयंभुजे सुपांणिरत्नपंकजे उरंमिणिउहासयं सप्रेमभावभासियं जुनाभ
सोनसंजुरी सुमध्यदेसकेसरी नितंबचारचारए विमर्दनंविहारए पदंअनेजुपिंजरं सरन्यदंसुरासुरं

सदिव्यदेव्यसीसए। सुदीपमानदीसए। सुरासुरंनिवासए। समूलपापनासए। सीयासुवंदनंसजं। पयौ ज
टपावपंकजं। विरतवितवारनं। वनघनंविहारनं। सदैमवंदसेवरं। अनन्यकेधनंतरं। आराध्यमान
जेअजं। सकुंजपादकसजं। सरीरस्यामसुंदरं। पयोधनीलनिर्नरं। विजावबनवासनं। प्रभाछटाप्रकास
नं। जटासुमुकटधरनं। वनंवनंविहारनं। सचापबामपाणयौ। त्रिसेकसयबाणयौ। कटितटिनिषंगए। ज
सशोपमाअनंगए। त्रिविक्रमंत्रलोकदं। त्रकालवंदतेपदं। वेसचापभंजनं। विदेहवंसरंजनं। सुरंसुरे
ससेवतं। जरातकेअजेवतं। इक्ष्वाकवंसशोपमं। सुरासुरनकोसमं। अनंतवियहं। नमामिआपदापहं। ४२२४
सुरण्पदंसुधाकरं। अमोघसिद्धआकरं। सुसेषसक्तसोभनं। सुरारवृंदसोभनं। तुमेवपादपंकजं
नमामिदेवसानुजं। सदासंतसंगजं। निदानबुध्यनिगमं। भजंतमूतभावनं। अपावनंसपावनं। रसेज
रूपराघवं। अमीततेजआघवं। हितंजरामगावही। सुभमलोकपावही। प्रसिंदराममेवमो। सविस्वभा
वनंविभो। दिनेसवंसभासकं। भवाध्यकारनासकं। सुरदुहंविनासनं। अभावभावभासनं। कलिकसुध
कारकं। अकालमृतुहारकं। भवेसभावभाजनं। सुसंतसाधसाजनं। नमामिदेवनायकं। सकेअमोघसा
यकं। प्रसिधजानकीपते। सुसेषसंगसेवते। नमोनमोनाराध्यपं। प्रसंनकल्पिपादपं। प्रसिधसिधजापती। भ
यांनहारभूपती। कुजोनकष्टकापनं। थिरासुसाधथापनं। तुमेवदुष्टतर्जनं। अमोघधुंनअर्जनं। तुमेव
तापदंपदं। अकमनासआपदं। नमामिनितनिश्चलं। अनादसिधअमलं। नमामिकमकारणं। रसाति
भारहारणं। नमामिलोकनायकं। सचापबाणसायकं। नमामिविस्वभासनं। नमामिदुभासनं। नमा
मिदीनवछलं। कृपानिधानकेवलं। नमामिभूतभूपती। महानुभावमेगती। नमामिमूलनायकं। दुलभमो
षदायकं। सतोत्रअत्रभषितं। सुसिधदेवसाषितं। निकामयाभनितयं। विसुधचितकितयं। भवेतीभक्तभाज
नं। सोउर्धलोकसाफनं। कविरोवाचदुहा। कीतकहीनरहरसुकवि। करमनासगतकाल। जथासक्तकरिजा
नियै। रामगरीबनिवाज। ३३। मैअसकपताकोसरन। रामसरनसाधार। मोकतियातिकपतितको। ईह
जुएकआधार। ३४। अथमाधवध। चलेदंककारुन्यकदि। सानुजरामसुसीत। जोजनसारधएकजहां। नि
रखोवाधअनीत। ३५। छंद। पंथ्यमांक्रवाधनामासपाप। देख्योरकराकसमहादाप। विपरीतवरनवष
अरुनवांन। विस्तारअमकणिकाविधांन। जिफाकरालमुषअनलज्वाल। दढासुदिरघदंताकुदाल।
वेरूपवाघ्रवरमावसांन। भुवभारसरबभदहीनयांन। अतिकायदुष्टप्रतिअंगअंग। अयमयत्रसूल
भ्रामयतउतंग। सुलायअष्टअंगनिसधीर। सबमनुजसूलपोएसरीर। निस्वरनिसंककृतघोरनाद। व
सुदासुकंपथिरस्वरविषाद। माधोवाच। आसुरकहहरेतुमकोनआहि। जतिवेषधगटसंगतरुनजाहि। व
नितासुजेगयहतवविरोध। पापीकिहकीनोतपप्रबोध। कविरोवा। आकर्षसियहलेज्योंअकास। तहाजा
यदुष्टबोल्योसत्रास। कोनममआएसुतुमहिकोंन। नरभदपक। निस्वरसुमोहोंन। तपसाधमभा
गकुकेसत्रास। वियलश्बीननहींदेकृतास। सोसुनतमा[illegible]लछमनसमूल। सरिमारकस्योसतषंड
सूल। सररामअसुरछेद्योसरीर। भुवगिरयोभ्रमतमुषरुधरवीर। श्रीरामवाचदुहा। ताकहबूझ्योरा
मतब। रेतूकोनतिलाज। कृतिघनपेख्योकालको। काहेमर्योअकाज। ३६। छंद। इकसमयसुषछबि
लसतसधीर। वैश्रवणछभामिलजछवीर। गंधर्वसुतकिंनरज्ञांनकारि। अपछराआयछबिसोअपार।
गंधरबकृतोकृकरतगांन। तिहसमैविबधसुररागतांन। रंभातिहनाटिकसज्योरंग। अनेकभावछबि
अंगअंग। तिहरूपदेषमनचल्योचेत। कुइदसाभ्रानभवतम्रहेत। कृततहांकुबेरवितभोविकार। वै
षम्यआपदियेताहिवार। कुबेरवा। दुष्टजाहोहिराकसदुसाधअनरथ्यअनीतकारणवाध। वेरहेसबि

नहीसपाप। ३तिकुलधनंददीनौसराप।बाधीव।कैदीनकह्योमेजोरिहाथ। कदश्रापमुक्तकै
रूसनाथ।कुबेरव।रघुवंसहोहिरामावतार। वसकारुनकरिनकरिहैवनविहार। बंधनविमु
क्तहतरामबांन। ३निजरूपजोनलैहौबमान।आ।दिगपतिकुदषमम्बुद्धेदेह। सुतत्रियाबंधु
मित्रज्ञोसनेह। सतरूद्रानांमजननीअसाध। वसउदरजासहोनयौबाध। यहकारजोनपि
सावपाय। अद्यावधीयहवनवसोआय।श्लोक।स्वुयंविष्णुरमासीता। सेषलक्ष्मनिसंजुतं। संब
वर्क्कवताराय। सेवितंनर्थसानुजं।छंद।करिजोरअसुरतबथुणतकीन। प्रभुदेवब्रमरूपकपवीन
करिदेहमनुजतुमधरमकाज। वनविहरतहोपितुवचनआज। भूवभारउतारनचलेभूप। रघव
मैविकौजतीरूप। बह्मांणअर्थयहकियविचार। भगवंतहरनतुमभूमभार। हतथांननयोकूदेह
हाथ। निजपदमेपायोदयानाथ।कविरोव।दरसनाधीनतिहांश्रुयोदेह। आकासवांनतबभइएह।दे
वोवा।ऊषघलदेवदोषीऊसाथ। अषिलेसहतौटरिनियउपाध।दुहा॥ आसुरम्हलअनथायह इद
हिसालअजेव। सोप्रभुमास्योएकसर। ऊंधन्निवाजेदेव। ३७।अथसरभंगआश्रमआगमन।कविरोव।
यावननैजोजनअरथ। आएजबरघुराय। तिहांआश्रमसरभंगकौ। देष्योअतिसुषदाय। ३८।छंद।
सरभंगआयसनमुषसकांम। राजीवनयनकृतदरसरांम। पनकरेनक्तभूजाप्रकार। आसनव
नजोजनदियअहार। सरभंगबेवरघुवीरसंग। ऊनकहतनएवूर्बप्रसंग।सरभंगवा।आगेमेविधमु
षसुनीएह। देवाध्पदेवधरिमनुजदेह। त्रेतामहकैरामावतार। वसकारनदंडकवनविहार। अद्या
वद्यमेप्रभुदरसआस। काननइहसेयौसावकास। तपजुक्तइहांनएजुगवितीत। प्रभुनयोआजदर
सनउनीत। ममनएसुसाधनसफलमूल। कमलायनदेषेसानकूल। रहराउबिनकइहांरम्पगऊ। जोलै
तद्यालतमलोकजाऊं। अद्यावद्यममतपसिधएव। दिटपुन्पसमर्प्योतुमहीदेव। सानुजविलोकवाम
गसीत। अषिल्हेसरूकौअनीत। सरभंजमांऊजौबैवसिध। सीयरूपरामउरधरप्रसिध। जोगबल
बगरतनअनलज्वाल^जटजूटमुकटवनचीरवास। कटतटनिषंगकसिसावकसजुतबांनपांनधनु
जक्तजेव। दरसणकरचामित्तविसकदेव। यहरूपधारिअंतरअकांम। धरदिव्यदेहगोदिव्यधांम। सरभं
गजस्योजोगीसनेम। प्रभुजोतिमिलीसोसहितप्रेम।कविसेवा।दुहा।स्वेतछत्रहयस्वेतसो। सनमुषआय
सुरेस। रथारोहसरभंगसो। वरषतउहपविसेस। ३९।अथमुनिवृंदसमागमश्रीरामराकसंप्रतिवि
नत।दुहा।सरभंगाश्रमतेगमन। कीनोरांमसकाज। वनदंडकवासीमिले। सबैरिषीसमाज। ४०।विहर
तरामसवामवन। वेषेअनुजकपाल। मुनिसबआयएकोत्रमिल। देषेदीनदयाल। ४१।श्रीरामवा।छंद।हे
अस्थपुंजएकवनहेत। सबसेपवकहऊभुजकमसमेत। किहहतेकवनऐकोनकाज। सोकहऊहेत
तुमरिषिसमाज।मुनीवा।सबजोरिकरनभुजकहिसत्रास। रिषिअस्थपुंजपष्यौप्रकास। रषिननषेति
हअस्थराज। नयऊसहऊबरेनाजनाज।कविरोवा।दुहा।सोसुनिसुनिरघुवीरसब। ऊष्टाचारऊरंत। दे
षनासभुजदीनकौ। यवरजनएअनंत। ४२।श्रीरामवा।इहकरेपनदेअनय। विप्रनरामविसेष। दंडकव
नराकसऊस्सह। सबेहतिहूंनिसेष। ४३।अथपंपसरोवरागमन।कविरोवा।सरभंगाश्रमतेचले। वनगत
आंनिविसेष। सानुजसीतानाथतहां। दिव्यसरोवरदेष। ४४।अतिप्रमांनजोजनअयुक्त। सरवरसुषदसुढा
र। जलअथाहकुवियजलज। मत्तमधुपगुंजार। ४५।महामत्जादजरूपमिल। अरुऊचलताबहूओर
वासतविहविहंगमिल। नाचतमत्तमयूर। ४६। तवकीनेविश्रांमतिहां। पंथश्रमितसुषपाय। सुनमृदंग
नूपरसबद। रीकरहेरघुराय। ४७।श्रीरामवा।महासघनउद्यानमह। कबकवपरफंकार। कहतरांमसो

कहिजयोश्रमुनितातक्रोल। उवदिलस्पामजौतनदयाज। वनतोमनकमलायतविसाल

थौक हां। विस्मय चित्त विचार। ४८। रिषरोवा। छंद प। रिषक ह्यौ सुनहु कोसल नरेस। इहां मंद कर्न ना
मा मुनेस। तिह तप्यो यहां वसि उग्र ताप। इक अंतिवर ष सहि कष्ट आप। सो सुन्यौ इद्र तप मुनि विसेष। ईद्रा
सन कंपित भौ असेष। सुरस्मन पंच पव इ सुरेस। रस वस करि षो वहु तप रिषेस। अपछरा आयत पवल
अज्ञात। वन फूलन्न विविध वलन्न विधवात। नाम निकटा हस करि हाव भाव। सरमार कस्यौ मन मथ सहा
व। सायक अनंग निकसे उसार। वसंत ताप सन्यौ मन मथ विकार। सुरराज काज सुरस्म निसंग। भौ मंद कर्न मु
नि धर्म भंग। तिरह तय हां मुनि स्नाप तास। उन्मकर तनित्य नाटक प्रकास। उहा। पंच अपछर तेपगट रहत
समीप रिषेस। सुरनूपर झंकार सुन्न सुनियत अविधनरेस। ४९। अथ सुतिछ्नु आश्रम आगमनं। कविरोव।
विहद सरोवर सघन वन। वसे कछुक रघुवीर। तापस देष सुईवतव। चले धर्मधुरधीर। ५०। रिष अगस्त को
सिष जु इक। तापस सुतिछन नाम। ताके वन आश्रम विषे। आऐ श्री रघुराम। ५१। छंद अपरी। क्रम आतिथ्य
सुतिछ्न कीने। दरस्नासन नवैवफल दीने। कंद मूल फल स्वाद सुहाए। वन भोजन दीने मन भाए। विध वि
ध भक्त सुनि छिन कीनी। राम कृपल मानस वलीनी। ईहां कछुक दिन रहि रघुराई। कीनो गवन मुदित रघुना
ई संग सुतिछन वल्यौ रिषी। कछु दिन गवने मग दिम हीसा। अथ आगस्त आश्रमागमनं। मुनि अघस्त के आ
श्रम आऐ। आय सुतिछन गुरहि सुनाए। मुनि अगस्त जव सन मुष आए। देषे राम नई नजल छाए। मिले पर
सपर सुष मन माने। अति हित राम हि आश्रम आने। कीनी पूजा विविध प्रकारा। जो कछु वेद विदत विस
हारा। वन भोजन फल मूल यमृत वर। प्रभु हि समरपन करे भक्त पर। विध विध कहे सत्तोत्र वडाई। भाव प्र
सन होत दक्षनाई। श्री रामवा। वैगे मुदित रहे सरघुराई। मुनि अगस्त सौ वात्व लाई। त्रकालज्ञ तु समर्थ्य ग
स्वामी। नियत करम वितहे व्रतनांमी। जा कारन हम यह वन आए। सो तुम सव जानत रिषराए। तुम सौ क
छु उरव न ताते। विस्तर जुत कहियेक हावाते। विदतमंत्र सोई कह उविसेसा। सुरद्रोही जिह करू असेसा।
अगस्तवा। तव अगस्त मुनि वात्वलाई। उराव संग सुन हु रघुराइ। अषिल अनादि विभु तुम आगे षीर
समुद्र सईन करजागे। विधतुम सौ भवन्नू तवषांनी। तुम अनंत करू नामन आंनी। दयो अभय तुम
न्रम हि देवा। अविनास न यह रन अजेवा। उनतु मविध हि दयौ वर पावन। नास करो राक सकुल रा
वन। प्रभु व्रत लीनौ सुन्यौ उरंदर। घनउ व वदे वन किय घरघर। जानौ इंद्र यहां प्रभु आवन। मौ हि सौं पे आ
वध मनभावन। सो अवले सुरकाज सवारहु। महा दुष्ट रावन षल मारहु। यह निषंग अह्राय समसाय
क। इह चाप यह तुम ही लायक। षहु सुति दिस रत्नमय सुंदर। कवच अभेद खान रत्नाकर। कविरोवा।
दव्यायुध कुनज मुनी दीने। राम लषन वंदन कर लीने। अगस्तरोवा। उहा। उनि अगस्त रघुवर पते क
ह्यौ मंत्र एकंत। इक कारन सुनिये असुन्न सीदत है जिह संत। ५२। आतापी नामा असुर। वातापी लघु भ्रा
त। मायारचित अनेक मिल षोज षोज दुज षात। ५२। राषस ते अज रूप कर। मुनि भोजन के मूल पेट फा
रि सो निकसउ नि सब हाषात समूल। कविरोवा। छंद प। कुनज यह रामहि विगट कीन। निरदई निसा
चरक तन वीन। आतापी ताप सवेष आय। भोजन हित भौ ते सुनि सुनाय। वनति हवातापी छाग वेष। विध जु
क्त मांस रांधे विसेष। वसक पट रम्पत पथल वनाय। बहु रयो अगस्त ली नौ बुलाय। कुम्भज सो आमिष अ
हर कीन। दारून वातापी हास्य कीन। वो ल्यौ आतापी उरवीच। मुनि लष्यौ निसाचर चिरत नीच। मुनि व
र जठरानल तप प्रभाव। उदरगत भस्म भौ असुर आप। सो दुष्ट करम सुनि राम देव। कीना असेष सुर
ति हि अजेव। ईह नीति अजो ध्यापति अनंत। ई व्वत वातापी कह्यौ अंत। श्रीरामवा। उहा। सानुज राम अ
गस्त सौ। उच्यौ मंत्र एकांत। सुषद वतावहु ठौर सो। निर्भीक रहि कुनिवास। ५३। अथ सीता हितेअपरी। कं

नजमंत्ररांमसोकीनै। दईदसौआयुधदीनै। पंचवटीजुगजोजनपावन। निकटगोतमीतटमनभा
वन। काजह्वैषनातिहवसिकीजे। देवनिब्रतषमांतसुषदीजे। कबिरोवाच। दुहा। अह्वामांगअगस्तपै
षसुजबचलेपकास। अमरबृंदआनंदयुतउध्रिवजेअकास ५४ कछुदिनपदजुमासकछु
अयनवरषकछुवास। बीतिअेकादसवरष। बिचरतवननप्रकास ५५ पावनकस्यौधवेसषत्रु महादंड
कवनमांझ। तहांवसेनिरसंकतब। सानुकआगमसांझ ५६ अथश्रीधजटायुमिलनं। सोरठा। कीनौप्रात
षयांन। तिहथलतेरघुवीरतब। सीतानाथसुजांन। विविधविलोकतसघनवन ५७ गाथा। ज्यौजीवेसु
रजीयं। मिलजुगमध्यनागवलमाया। रामलछमनबेदेही। तबतविजातगहनवनतापस ५८ इहांवि
लोक्योयीधइक। दारुनदीरघदेह। कह्यौरांमसौमित्रकह। है कोउराकसएह ५९ सर्बतउपरपंष
जौ। बडदेष्यौविस्तार। सानुजरांमसंचारतहां। कीनौधनुषटंकार ६० छंदप। जाघातडसदसु
नकैजटायु। यहजांन्यौछुरनन्योआयु। जटायवा। राकसहूंनाहिराजाधिराज। अवितारसफ
जनौदरसआज। विस्तारविश्वबह्माविष्यात। जानिकुमरीचमुनीहमजात। उत्रतिहन्यौकस्य
पजा१। उपराजवरम्बरसिष्टआप। विनतान्हइताकैधरमवांम। निजउत्रअरुणविहगरुडनांम
अरुणकैनएहमउत्रआंन। जगविदतयीधदैबलीजांन। अतितरुनपंषजबअंगआय। सीषतन
कांणहमकुलसुभाय। परभातउदितदेष्यौपतंग। संपातवकौहूंअनुजसंग। उनमानमांसहमअ
सनआस। अतिदर्पगएउडिकैअकास। रविकिरनतापहमजरनरांम। संपातभयौउपरसुतांम कु
ऊतौअबितजूवच्यौअंग। संपातपंषजरिअर्कसंग। संपातगिस्यौतिहलष्योनसोय। हमभ्रातित
बहिवियोगहोय। जीरनजटायमोहिरामजांन। षनुराबिलेकुसिरधरकृपांन। कविरोवाच। सोग्री
धसषादसरथनरेस। बिचारिहृदरसीषगेस। तबरयोअभयरघुवीरतास। वनरहहूयीधयहनिक
टवास। अथपंचवटीआगमनदुहा। विहरतआएपंचवट। वनघनश्रीरघुवीर। मैनकुकांमदेदेहकरि
संगरतित्रियासधीर ६१ पंचवटीतटगोतमी। आएरांमअभीत। अनुसासनकारतअनुज। पतनीसंग
सुनीत ६२ गंगाउतरतटसघन। मिलतडलतातमाल। बुधवंतलछमनविमल। सुभगरचीचीत्रसाल ६३ पु
रणकुटीसुदरसुषद। दिमकाईदोय। सीतारांमसुजानतहां। वसेमुदितमनहोय ६४ एकसमयअपले
सइहां। सोदरलछमनसंग। कर्तसुवरचाधर्मकी। आउनमांझअनंग ६५ कवत। यहावीतेत्रयमास। व
सतसुषपंचवटीवन। एकसमैएकंत। रामसीतासमलिह्यमन। विस्वनिऊनपरब्रह्म। जीवविज्ञानजानवर
विसदविष्णुमायाविलास। उनिमुक्तभगतपर। विद्याअविद्यप्रतिमाविविध। सौंमभजियहोतसुष। सोमित्र
कह्यौरघुनाथसौ। प्रगटवताबकुपरउरष। जोईजोईकह्यौअजेव। ब्रह्मसोमित्रवीनो। सोईसोईउ
तरसमाधांन। करुणानिधकीनो। करिलषमलवंदनअनेक। उरज्ञानउपजिय। वहितविधान
विसेष। स्वांमसेवारतासजिय। मनटरियगयांनअभिमानमत्त। उचितरहंस्पजुबुझियो। हस्ताम
लजोजियहितअहित। सबैतत्वतहांहांसमकीयौ। अथश्रीनारायननारदमुनीश्रापप्रसंग।
दुहा। एकसमयएकांतथल। बैठेश्रीरघुराम। वामअंगसीतावनी। मानकुवनरतिकाम ६६ त्रकालज्ञ
रघुवीरतहां। जानतवहप्रभाव। कारननारदश्रापकौ। सीतहिकहतसुभाव ६७ छंदप। प्रथीस
भ्रमतनारदरिषीस। इकदिवसआयहिमगिरसमीप। सुनदेषदरीतहांअनिविसाल। तरुलताविकु
ससंकुलतमाल। सुरसुरीनिकटतटपुंन्यसंग। मरसषाकुसमगुंजारभृंग। मनमानतहांनारदमहंत
तिहवौरबैठतपकतडरंत। समवित्तउवित्तआसनसुसाध। [illegible]समाधि। निद्रानप्यास

नएह्सुधानास। तपउग्रचिंत्तिश्रोनयोअनदेहतास। सुननारदतपसतबविसेस। सिंघासनकौलतनौ
सुरेस। मुनिसाधतजोतपस्याअमाप। ईद्रपदलेहिमनीबीनआप। संक्रपिवीकल्पनोअबसरीर। उ
पजेचिंताततबचितअधीर। मनमथहिबोलतबदयौमांन। दुषकह्योईद्रअपनोनिदांन। संकूल्यौमदनरि
तुराजसंग। न्रमचितकरनमुनिध्यांनभंग। सकुचल्यौसेनमनमनमथसधीर। विष्यातविदतत्रयलोक
वीर। संगहीवसंतलीनेसहाय। अदिदरपमदनहिमवंतआय। वनफूलविविधपलववियार। गुंजार
मधुपपरभ्रतउकार। वहिसीतमंदसोगंधवात। वसकामजंतुजलथलविष्यात। सुररमनिरचितना
टकसम्पान। विसतारविहवाजंत्रविधांन। कामकुसपंचअनेककीन। मनमनयोनहिनारदमलीन।
कबुलम्पोनांहिबलमकरकेत। सोरस्योहारपरगहसमेत। मुनित्रासमहानयमदनमांन। आधी
ननयौरिषचरनआंन। करविनयसुनारदश्रवतकीन। हवआफकामगयौगर्बहीन। बुतनयोजबहि
दूरनविसेस। सिधपायउठेनारदरिषेस। कृतसुजससुन्योआउनोकान। मनमन्त्थनयौजिहनंगमा
न। सिवसनाबैठसुरगनसमाज। तहांआएनारदरिषनराज। अहमतअतवादीजितअनंग। उनिक
हतनएसोईप्रसंग। आपनीकीतमुषकहतआप। वसमोहरिद्सहिगौरवविहाय। श्रीसिववा। सिवकहे
नार्दहिजुतसनेह। अतिगुदसुनऊममंत्रएह। सबविधसम्रथतुमजोगसिध। दूरनकनावत्रयपुरष
सिध। ईहनातनकहबौकाहूंआंन। समदिष्टसदातुमहोसयांन। करियेउरावजोकहैकोय। हरीसो
नयहैकरूपगटहोय। विष्णूजोसुनईहकहावात। तवश्रेयतिहारेनहिनतात। कविरोवा। दुहा। मदन
दहनउपदेसमन। नारदमान्योनांहि। विधकृतअंकजुभालविच। जथाजतनकुनजाहि। ६८। अटनकरत
नारदअविन। सोकरवीनसनाद। हरिगुनगावितहर्षयुत। वर्जितविषयविषाद। ६९। आएईक्या आपनी
सुषहीनारदसंत। जहांविराजतविस्वजित्त। श्रीयासहितश्रीकंत। ७०। कविवंदनरिषराजकहि। दु
जावरनपषार। श्रीनगवानोवा। दीनबन्धुतदिनतेदरस। मुनिसोकसोमुरार। ७१। वंदप। बैठारपरस्पर
करतवात। विश्वेस्वरनारदसौविष्यात। नारदवा। सुषपायकहतनारदसुनाय। जबबैठेहमहिमवं
तजाय। तिहठौरतप्योमैउग्रताप। आरंभकरआयोमदनआप। तहिउछकरेबकुतेविरत५। मिलउ
निसहायरितुराजमित्त। अनेककराषलतहांउपाध। ममछुटीनहिंनतद्यपममाध। नहुचुकोध्यांन
मेरोनिदांन। बिसगयोनयोमनमथबिसांन। असोकोजननीजन्योआदि। जगअहंकारव्यापेनजाहि
करिमदनविरतनारदवकास। तंबकजेवरिजेकुतेतास। अतिअहमितवायोवित्तअज्ञांन। मननार
दवकुरेमोघमांन। जगदीसतबैमायाअजीत। नवतरहेतपेरीअनीत। दुहा। मायारूपीनगरमह
रच्योसुमायरसाल। जोजनसतविस्तारजिह। गावतडागपविसाल। ७२। सबैसमृधिसंजुतसुनग। न
गरवसतनरनार। करमउरायणधरमधुर। बैनवर्षरहिचार। ७३। सबसुषनाजननगरसुनसो
हरीउरिहस्मांन। नीतनिवतिहउरनृपत। राजासीलनिधान। ७४। नृपतहिकिंन्यासीलनिध
वहलछमीअवितार। ताहितमावेअर्वकोउ। एकविनाकरितार। ७५। छंदद्रुअरारी। इहउरतब
नारदमुनीआए। भ्रमतसुइछ्याभ्रमसुनाए। सबसुरेससमविभवविलोकी। तहांमनुसोभाव
तविलोकी। अबनृपगृहनारदमुनिआए। सीलनिधांननृपतसमुधाए। रिदहिजथजाविधपूजे
राजा। सबविधकरेषणंमसकाजा। नृपएकांतबैठरिषनारद। वातीकरैसुबुधविसारद। नृपकिंन्या
सुसीलनिधनामा। विश्वमोहनीविष्णुकीवांमा। नृपउनीउहांनिकटबुलाई। दुहितालेनारदहिदिषा
ई। राजासीलनिधानोवा। तुमतकालदरसीरघुराया। देषकुयाकरलछनदाया। कविरोवा। ताकी

कररेषामुनीदेषी। विक्रनयौध्वजरूपविसेषी। जिउनसीलकुवरकेजांने नारदतेनृपसूनवषां
ने।राजावा। सीलनिधांनकह्यौतबराजा। हमयहसुतासुयंबरसाजा।नारदवा। नारदकह्यौसुरूपं
ननिहारी। करहुस्वयंबरवेगकुवारी।कविरोवा। मुनिनारदगयौग्रगपापाई। नृपसीलनिधबिबिहि
लुनाई। वाजेबघननृपद्वारिवाजे। कियेग्रारंभैसुयंबरकाजे। मीतनीतनुववनृपबुलाए। बना
वनाइमंडिपछाए। विविधवितानमंचविस्तारी। जथाजोग्यसंभारसवारी। नृमितरिद्धीसविकल
वितन्हारी। मनमुनिवसरहीराजकुमारी।नारदवा। नयौविवसमनविताचारी। किहविधपाउरा
जकुवारी। हिनयोरेतपकर्मकुरंतर। बनेनजतनजांनयहमुनिवर। ग्राजउपायसुगमइग्राही
तातेग्रबेवनावहूताही। जाबौरूपविमलकोजाइ। नृपसुताजिहवरलूनाइ। कालविषमरहस
ककरुनामय। सदाजनएग्रातुरकहिग्रतिसय।कविरोवा। इहविचारहरिरूपधारउर। ग्रटवीवि
कटचमतिमुनीग्रातुर। वर्तविसारविक्रनयौमुनिवर। संवरेग्रंगग्रंगमनमथकेसर। वित्तग्रति
हीग्रातुररिषचीका। दीनदयालदरसजबदीका। नारदग्रमितमिलेनाराईन। परमउदपजेनक
पाराईन।नारदवा। नारदहरिसूंकीननिहोरा। ममप्रभुकरिऊकाजइकमोरा।श्रीहरिवा। कहिह
रितबैकहौतुमकारन। महामनोरथजोउधस्योमन।नारदवा। सीलनिधांननृपतिकीकिंन्या
नांमसीलनिधरूपनिधिंन्या। ताकेपितासुयंबरमांन्यौ। मैवहनगरनिकटहीठांन्यौ। देवस्वरूप
हरीमोहिदीजे। कारनकाजसफलजबकीजे। रमारूपवहरूपरसाला। मेरेउरमेलेवनमाला
भामनिव्याहसबैनृवनृपति। मोकोहीवरेयहैउपजिमति।श्रीभगवानोवा। हसिबोलेहरिग्रा
तुरहरिद्र। तवहितहोयसुसबकरिहूं।कविरोवा। धरनीधरभएग्रंतरध्यांना। मुनीनारदसो
इनिश्चैमांना।श्रीभगवा। ग्ररथीदोषनदेषैग्राही। ग्रागेकबुनवतव्यसुयाही। विष्णुसुमायाव
बलविचारी। होयनइव्यामृषाहमारी। यस्यौरोगसोकुपथमगावे। वैद्यनदेवातनवौरावे। मु
निनौहुट्टदृष्टवसमाया। छद्यनभागमोदिकरवीगाया।कविरोवा। कृपानिधांनकौतिकीकेस
व। भवभंजनतारनसागरभव। नृपतिस्वयंबररस्वरतिलीने। कमजुतजथाप्रकारजुकीने। ग्र
मिलनरेसजुवकेग्राए। बिहतजोइमंचनबेगाए। धरनीधरमांनुषतनधारी। महामंचतहांबैठि
मुरारी। देवसमीपतबेमुनिनारद। बैठेहरषितबुधबिसारद। विकसहिकूजहिबिबहिवढाहि। मुनि
ऊसंपेषविष्णुहुसकाविहि। उकसिउकसिदेषततिहग्रागम। नांमिनवसीजुमनछायौभ्रम। इहांसील
निधकिंन्याग्राई। विवमरुपतनवसनवनाइ। रूपग्रलोकिककरिकैबाला। वंकविलोकतिनयनविसा
ला। किंन्यासोनारदग्रविलोकी। रिषकीमनसारहैनरोकी। उकसिउकसिबैठग्ररुसाही। मुनिकेग्र
तिग्रहमतिमनमाही। उपज्यौरूपगर्बनारदग्रति। परमस्वरूपदयौमोहिश्रीपति। रिषकेनिश्चैरू
परसाला। वरहीसबनभांजिमोहिबाला। महामनोरथमुनिमनमांही। बितेचिंतकिंन्यालल्चाही। कपि
ग्राननमुषनारदकीनो। देवरूपग्रतिनिरतदीनो। कीसवदनमुनिजाननकोइ। सुतानृपतकीदेषत
सोइ। नारदमुषबालाजुनिहारयो। विनभरसउरमहिविसतारयो। नारदवंदरवदननिहारयो। करिगिला
नमुसकोनकुवारी। इतउतहेरविष्णुदिसग्राई। ग्रंगपुलिकस्यातिकरसबाइ। दीनदयालविष्णूजब
देषे। प्रेमनिधांनप्रांनसमपेषे। जगहरताकर्ताजियजाने। पतिप्राचीनकुवरपहिचाने। वदनविलोकतन
इनविसाला। मेलीविष्णूकंठवरमाला। जयजयभयौस्वयंबरजीतो। विधसुतकोग्रभिलाषवितीतो
विष्णुविजयभयोमंगलताजे सीलनिधांननृपतकृतसाजे ... विचारी करयो पाणग्रह

राजकुवारी। हरपवऐगनकीतिकहितए। तिह्जरूपधरेदेषतए। हकुगनअद्भुतयहदेषा। विधसुत
मरकटवदनविसेषा। चन्द्रउबोनयोजबद्दूरन। गिगननिसानहर्षदियसुरगन। विदासुमंगलकतव
रवरनी। करीनृपतनिगमागमकरनी। नारदनऐनिसषिसाने। मनअमरषअतिहीमुरझाने। सि
अधीरमनएरिबराइ। गावकुतेमनुनिषदिगमाइ। विकलनएरिहधावत। वनवनउरअज्ञानव
ढ्योहैअनगन। हरगनसंगफिरतहरषांने। जिहुजरूपननारदज्ञांने। प्रगटजलाश्रयहहांमुनिपा
यो। आचारीसिध्याहितआयो। गनोवा। आयनिकटपहगननउचारी। कहांनइजोराजकुवारी। य
हमूरततजरूपरसाला। मिलीनहीनउवरवरमाला। नृपग्रहजन्मतदिपीबुधनांही। मुढनयहस
मुझीमनमांही। सुनगआपनोरूपगुसांइ। झाषकुनीरनिरषमुषकाई। कविरोवा। नवगनयांकहतत
बिनजागे। नारदछिबहीनिहारनलागे। उषजुतरिषकुषजलमहिदेष्यो। वानरआननउनविसेष्यो।
विकृतआननकीसविलोक्यो। रोषवहतउरतनरोको। वनवनझेजतनारदरिषवर। घरिउरध्यांनरू
पधरनीधर। धर्मआरितबंध्प्रतिपालक। अषिलअविद्यामूलउषालक। हसनारदकहउषतनिहा
रे। प्रियासीलनिधजुतपउधारे। दंपतदिसजबैमुनिदेषे। वढ्योअमितउररोषविसेषे। विकलदसाइह
जुगवतमुनिवर। अतिहीज्वलतक्रोधनिलअंतर। परमउरषतिहमुनिपहिचाने। महारोषउफनतम
नमांने। नारदवा। बोलेयहनारदविषबानी। वगइयहैसदातुमग्यांनी। बलछुतनिवरो। तउग्रहबाध्यो
साचैकुतोकपटहितसाध्यो। मथतसमुद्रबियारीमाया। झहिकसुरासुरसावदिषाया। नकसिनुसब
दनुजन्हमाए। ध्यानव्रमायमहाविषपाए। करनीकरनसुरनसोंकीनी। लक्ष्मीअरुमिणआपहिलीनी
गोबिदअबहैकितकगिनाउ। पनुविरचतुवअंतनपाउ। महाप्रबलरावरीमाया। नहिमोहिक्योवि
योगपनचाया। झहिकझहिकउनपंथदिषावत। वनुकहियेयामहिकोपावत। परमसुतंत्रनहीकोसिर
पर। नावतमनसोइकरतविसंनर। आपनिरंकुसकरतउपाधे। सोतुमअवलोकबकुनसाधे। विस्वमपोतु
मकोउवनवावा। सोपेथ्येयकलहहसबसाचा। वउधरजोममकाजविगारा। आपजहकुनरसोअविता
रा। वनिताकारनमोहिविगोयो। रच्योनिरासमहाउषरोयो। तुमअतिहवनिताविरहविसेषी। उसहुआपतु
रूरूउषदेषी। करीकपामुहिकपमुषकीनो। निधमांगतहोपाथरदीनो। तेइकपहोहिसिहायतिहारी
निश्चयतबपावकुतुमनारी। कविरोवा। हरीतवमाहटकीहसिकर। विप्रनबावतअपनेवसकर। माय
वपेरीकुतीजुमाया। सोनिवारिनारदससमझाया। मननारदसंभ्रमकुबायो। विस्मयमिट्योकलेसविहा
यो। पावनासतमसकमबकासे। नारदउरसंभ्रमतोनासे। नारददेष्योफेरनिहारी। कमलानहीतिहरा
जकुवारी। नारदमननयोतहांमलीना। नयउपजोकरुनारसभीना। नारदोवा। नक्कइसवतारथ। नंजन
ज्ञानविधानअग्यानहिगंजन। कविरोवा। नारदहरीचरनासिरनायो। दीननयोनिजदोषदिषायो। नार
दवा। ममअपराधछिमकुसोमेरो। रिसवसकहेउरवाद्यघनेरो। पापमिटावकुसोप्रभुपावन। नयउपदे
सकअनयनसोवन। कविरोवा। विहसनारदहितपरबोध्यो। सिद्धनजनअनितरसोध्यो। श्रीहरिवा। मषा
वचनतुमनवकेमांने। नोअपहासअषिलअपमाने। नवउपदेसनतुमहीनायो। वगदतिहेकरनीफल
पायो। नजकसहअनामनवकेरे। तवअपराधमिटहीयेतेरे। हरियोकहिनयेअतरध्यांनहि। नारद
गएकरतगुनज्ञांनहि। श्रीरामवा। नारदआपदयोनारायन। प्रगटनयोसोइधरमपारायन। कवता। सु
नसीताइहहेत। आपनारदमुनीदीनो। कारनकर्नसमृथ। हरिकुअंगीकृतकीनो। तातेबमनुजावतार
हमललीनीतहित। सुनगाइदहिजनम। असदिसहिहैवियोगअति। उहसमसवनीअविस्वितमह। अप

हि

योइसतनमांनियै । निरधारकरहुनारद्रवचन । जगत्रमोघकरजानियै १ हितउपाययहकरहु
अनजमहिरावहुआतम । वहतवपीहरआदि । सुषहितहांवसहुपीतसम । बायारूपसरीररह
रहुममसंगनिरंतर । करिहैहमसुरकाज । उतिजतुममिलहु वेमपरि । सियकीनोमंत्रउमानसोई
अनजहिनिजवउआश्रयो । सुरराजटसौजियसोचसुन । भुवनतीनजयजयभयो । दुहा । कोजांनै
नरहरसुकवि । प्रभुचरितअनपार । कारनकरतसमृथहरि । कपासिंधुकरितार ७६ इहचिरतअ
विधेसकी । समझिनलषनसुजांन । अंबुजनवहूतैअगम । नरहरषप्रभुनिदांन ७७ । अथसुपनषाप्र
संग । कविरोवा । कवित । पंचवटीवनराम । वसहिनिसंकवीरवर । विसदधराधरवट्ट । निकरफलहु
लनिरंतर । नदनिर्झनरनीर । वांनवनिचिरसुषपावत । तहांमयूरतंफिवतसघनवहुघासछावत
मिलकुंजपुंजचहुघामधुप । सुषदविहंगमरवसरस । वनकनविहारवंछतविहत । वितत्तकालविला
सवस २ दुहा । सीतासहजसुगंधतै । वासितनएदिगंत । महिमावनसोरंनमिटी । विस्मयभयावस
त ७९ रावनभगनीराकरी । सुरपनषातिहनांम । वनवनरूपअनेकवन । करतविहारसकांम
८० एकंदिवससोआसुरी । अटवीदहकआय । सोरंभअद्भुतवासवस । सोतिनलष्योसुभाय
८१ जैसेलावततहतका । परत्रियक्वचनप्रकास । सुरपनषहिलाइसरस । सौहीसीयासुवास ८२ पा
पनकीनौगंधपंथ । पंचवटीपरवेस । चरनअंककरघुवीरके । दैषेचिरूसुदेस ८३ वज्राकुसध्वजसो
विमल । राजतपद्मसुरेष । वरनविकअविलोकचित । वढिअभिलाषविसेष ८४ अतिसोभाउफना
यअंगवेषविचित्रवनाय । थितवैठेएकांतथल । अविलोकेरघुराय ८५ भ्रातपितामातुलहुसुत दि
षरूपनरदेष । वियासुअनगप्रभावतै । विकुलहोतविसेष ८६ छंदवेताल । सोनिकटआयनिहार
सुंदर । रांमराजिवनैन । करिहावभावकटाछहमतिह । बोलिरसमयबैन । सुर्पनषावा । अविवाक
तामोहिजांनअद्भुति । अमितसोभाअंग । तवसरनजाय्योकांमपीडत । अभयदेहुअनंग । श्रीरामवा
किहहेतअजहुकुमारीकातुम । मरमकहोरांम । अतिअंगअंगअनंगउदभव । भईसुजिह्वानाम ।
सुर्पनषावा । ममसदसवरत्रयलोकमध्य सु । नहिनकोयनिहार । कहिसुपनषाजबसुंदरीकृत
यहजुरहीयकुवार । सुरलोकविजइभ्रातमेरो । सीसदसभुजवीस । रविचकआंनअषंडराव
न । सवैमांनतसीस । चुतकुंभनामजिहवभीहसन । सुरनदेतसंताप । अरुमेघनादकुमारअद्भु
त । ईद्रजीतातआप । हमहिसादससंगसुंदर । कततवितकरतार । नजिमोहिभुक्तहु प्रेमभावन
सवैसुषसंसार । तुमकोनहोइहांकोनकारन । भ्रमतवनअनभीत । वतिअंगलछनराजव्रतिमा
वेषयहविपरीत । श्रीरामवा । तबरामहसितिहदयोउतर । मोहिजांनसवाम । व्रतएकपतनीअकेवं
सित । रामहेममनाम । सुनधर्मपतनीनामसीता । जनकनंदनीजांन । आमनीप्रानहु हूतेवलिभ ति
रतसेवनिदांन । उपउसहदारुनलदयदाहिक । सोतिकोसविषाद । सहिनहिनसकिहैसालसुंदर
प्रनिकहोईप्रमाद । अविधेसकेसुतपिताइद्रा । इहविषमवनआय । भुजदीनरछाकतकोलत । उत्तमा
रतदाय । लघुभ्रातहैममसंगलछमन । महावीरअवाम । तहांजायभजहुतासंग । करहुपूरनका
म । कविरोवा । तिहजायलछमननिकटततछिन । करेप्रेमप्रकार । करिवंकदिष्टकटाछकीने । मनविक
लवसमार । लछमनवा । लषिचिरतहसतिहकयोलछमन । स्पामवेहमदास । प्रभुहिनजकिनलेहुप
भुता । संगममउपहास । सुषषांनपांननसइनसख्या । कवहुनहीअवकास । वसचैनकाहुनसुत
त्रवसिवो । उदासजनदास । नहीपराधीनहिसषनिरंतर । मिलतजसकमांन । भक्तननहिविनया

रनाजन । जनसलोनीजांन । असनीनधिन पत्तसिधमद्यपनियतगुनअनमान । आकासउहिज्यो
उध्यआसन । नदिनशूरनिदान । सोनजकुवनुतमरांमसुंदर । सबहिनांतसुजांन । इतनतकुलौ
लननचित्तअपनो । नांनकुलतननांन । कविरावा । छंदपध । उनआइउधारामपास । उफनातरोमझार
तउसास । सुर्पनषावा । मोहिकहाअमावतहथ्यासुद । गुनगांनप्रकासतहस्तगुद । वेतालछंद । तिह
लष्योनरऐमोहिनरकित । विवधतर्कवनाय । इनसंगहैजुजुवितिअद्भुत । याहिलेरूषाय । हगिबाहिमे
रोकलोकरिहै । अंततरुनअनाव । उपरोयमरिहैकितुउसह । वनेयापेदाव । कविरोवा । करिरूपदा
रुनउष्टकामनि । अनरुलोन्वरनआकुली । मुषफारिदसनकरालदमकत । चकितसीतादिसवली
तबदेषसीतानीततबपति । पिष्टआयउनीत । वगसेनअग्रअनुजकुंदिय । मुसकमुषजिहमीत । सर
तिहपलेकरसेषसंगृहि । काटनासाकांन । विलस्पनदेहजुनईवांमा । नजतरूपनयांन । गिरगुहाजैसे
धातगेरक । श्रवननिरकसंग । इहनातरुधिरश्रहाहुअविरलअरुणताअतिअंग । दुहा ॥ नासाश्रवण
नसायकै । वगटकर्मफलपाय । आक्रदितचावतअधर । पापिनगइउलाय ७७ कविता । षरदूषरष
लत्रसर । रहतथांनेजिहराकस । भुनटसुरंतिहसंग । उगमरनसहअचतुर्दस । विषामिषनोजनविरू
प । वसनिकहदंनकवन । विकतानननजनपदविनास । वतिमातुअपावन । तहांगईसुपनषातुतबहि । रु
दनकरतविकराल रूप । परजस्योसुषरउरनासपरि । महानयांनषदेषमुष । षरदुषणवाक्रदुहा ॥ ष
रदुषरउक्षेजुषल । नरवाहोउषआय । करेसुकहिऐकालकिर । सोममवेगसुनाय ७८ स्रूर्पनषावा । व
नदंडकमहिपंचवटि । बस्तउनयमुनिबाल । आदिनिअंकुसधीवअति । हमहिकरेएकाल ७९ धकपो
रषतुमरेअधम । कुलराकसधिकार । वष्वीकहावतवीरउनि । हाथयरहतहथियार ८० कविरोवा ॥ सोसु
नषरदूषरत्रिसर । उष्टनएतरहांह । कोपेकालकरालमनु । नरसनाहसनाह ८१ छंदउधोर । सानंध
आयुधसाफ । गिरदेहघनसेगाज । धरिलेकुमारकधाय । जिनमाजिकैपलजाय । रथसाकअपनैरंग
अतिकोपथवलिअनमंग । संकमोराकससेन । मिलबेहतनअनुमैन । षेलोकवटिभुरबेह । कुवेवक
चक्रिविनेह । नगनीतुपापहिनीन । कुवेअथनासाहीन । सोअसुररूपसुनाय । अनमित्रसबमिलआ
य । निसचारमांनतनाहि । जमरजुबाधेजाहि । सुनघोररवनीसांन । जुधरामनिश्चैजांन । कहिजटामु
कटसकोप । उष्टारहमुषरिवओप । वनवीरमध्यविनाग । कोदंडचाढकराग । तहांकसेकटतुनीर । स
रजूमितपांनसधीर । श्रीरामवा । सुनलबनराकससेन । सबनिकटआयसुषेन । लेजाकुसीतहिलाल
वनअद्उठविसाल । वनिताहिरछावीर । सबनायकरिकुसधीर । इहकाढिअनुजअनंग । रहिराम
रुपरिलरंग । कतधनुषतवटंकार । नवन्मृम्टारननार । रिलरचौतिहरघुराय । अनेकराकसआय
मिलस्यौअतिसंग्राम । रसवीरक्रीडतराम । इहऔरराघवएक । उतनिरतषलअनेक । परिससनअस्त्रषहा
र । घनमारअसुरसंहार । रघुनाथसरहतवीर । संग्रामगितिसधीर । वढिन्नतविरतविथार । परिएकउ
वतअपार । तिहसजतमायातंत । उठरुंडमुंडअनंत । सरसक्रूतोमरसूल । मिलउपलवृष्टिसमूल । परि
रामसीसप्रहार । मुषसहमारहिमार । बक्रपरतउवतकबंध । अतनिरतमरतमदंध । कहुकालकीडा
कीन । उनिरोषरामप्रवीन । जोइउष्टमायाजाल । करिकरितरूपकराल । सोइकरतनाससधीर । वहरी
वरिणरघुवीर । ज्योउदयभांनअनंत । तमनासहोततुरंत । सररामअनलसमूल । तिहजरतराहस
तूल । वहजलदज्योंवसवात । वढगिगनसघनविलात । षरत्रसरदूषरषेत । सबगिरेसेनसमेत । न
ऐनासअसुरअनंग । ज्योसलनदीपकसंग । अंतावलीयहिअंत । तहांगीधगिगनभमंत । यहकोस्व

गउनाय। सिसु पे रमन कु सुनाय। कहि रांम रांम जु कोय। हुव मरे मुक्त सु होय। रिण जीत वादे रांम
सुरउह पवर्ष सकाम। सुष नयौ विवध समाज। रिण देष कोसिल राज। जय गिगन उध निवाज। सुरनि
रष संदन साज। हित व्रष पलव रहोय। सब कहत जय जय सोय। पलि श्रव जोगनि पत्र। तेई विजगावि
ततत्र। भुंनि भूत प्रेत पिसाच। नन वार मंडित नाच। कहि जई तरघुकुल केत। सुरराज सुरन समेत। ईहं
लछन प्रभु घत आय। सियसंग मिलकु सुनाय। अति हर्ष सीता आंन। पर से जु पति छ्हन पांन। घट मि
टी पीडा घाय। सुष उपजि राम सुनाय। दुहा॥ कहत विजय जस राम को। गऐ विबुधजन येह। मोषन
ग्रह रावन मरन। समझौ निसंदेह। ९४। नरहर प्रभु की डा निरष। सुर मुनी न एस हास। आउंन बाहे री
ण अजर। निकल सत्रू किये नास। ९३। कवित। बरह्रबर षलषेध। सुनटर घुनाथ संघारि। सह स्रव तुरद
स असुर। मिले संग्राम सु मारि। सुर सुरेस सानंद। घुरे नीसांन जु सघ्घन। भो आगमन वतव। विषम जुव
नार विनासन। सग्रांम विजय नरहर सुकवि। विसद कीत जग वियरीय। अद्भुत चिरत पौरष अतुल
कोप समर क्रीडा करीय। ९२। अथ सीता ग्वसंग दुहा। असुभ अरूप अप्रमि गलिक। के स्रुतना साहीन। आ
ई रावन पै यहां। निरलज वेष नवीन। ९४। सुत बंधव मित्री सुभट। बिठे सभा वनाय। दससिर वूंदी नौद
रस। ईहां अवानक आय। ९५। कंटक बहिन बिलोक कै। मन मद नयौ मलीन। रावनवा॥ ध्रुछत ग्रौ उहि
पापनी। कौन यहै गतिकीन। ९६। विष्णु कुबेर सु जम वरुण। किं बादेव जु कोय। ... करिहूं नास विसेष
कुल। हूंता कौ हुव होय। ९७। सुर्पनषा उवा॥ सो सुनि बीबी लीराकसी। रोष जरत निरलाज। परिहूं च
ज्यालंक पर। राकस जे हौ राज। ९८। रावनवा। त्रं अगजग हि उपद्रवति। पावत सोइ फल पाप। पहिले
कहि कारन षगट। पाबे देरू सराप। ९९। सुर्पनषावा। ढुष्टन तब उतर यौ। वदन असुन विकराल। तोसे
भ्राता होहित व। होहि कौन यह काल। १००। त्रिया विजित पनासकत। सब श्रमत सब काल। सत्रुन सू
क तसी सपर। वेष किये मुनि बाल। १। बरह्रबर त्र सराउ सह। सहस चतुरदस संग। आहव त्रुव मारे इ
ते। एक ही राम अनंग। २। छंद उधोर। विनु नीत राज विहाय। जस धरम विनु धन जाय। नरनाथ विन सेना
स। विनु विनय शील विनास। गुन गर्ब मांन दिग्पांन। भुंनि लाज जौमद पांन। व सव्यासन ताहि विहात। रिउ
स्रुक नहीं दिनरात। अरि अगनक णिका आप। सम कौन लघु कर साप। दुहा॥ वे सिम्या सी बालवय। व
स्त पंचवटि वास। पेउन मान तसी सपर। निरअंकुस नैरास। ३। छंद उधोर॥ वे बालतत्पी अजेव व
न राम है कोऊ देव। रावनवा। हत राम कहु किहि हेत। षरसु नटदूषरवेत। सुर्पनषावा। अविधेस उ
त उदार। वंन वन हि करत विहार। आरुन्सदं न कआय। सो वस्त अनय सुनाय। रघुवंस अग्रज रांम
मिल अनुज लछमन नांम। सुंदरी सीता उसंग। अतिरूप रति जित अंग। मै त्रिया ते वन मांहि। न हिसु
नी देषी नांहि। तव काज लावन ताहि। हूं गई चित हित चाहि। अनषीव वदनन आ। कियेना सना साकांन
सब कहत तो हि सुर साल। के जियत तो हि अै काल। नइ वित मोप हआत। सोउ हसत उरन समात। क
विरोवा। यह सुनत परिजर अग। दसवदन ज्यौ वन डुंग। केउ बरचु कियकान। जिह वंप अहि अ
न जांन। ज्यौ साह बूरु जिहाज। रिण अजय ज्यौ नटराज। मन सोच यौ दसमाथ। हियहनत मीड
त हाथ। रावनवा। मुह वाध मिंदर मांझ। सव पत्यौ होत दि सांझ। तिह वद्यौ सोच अतीव। इहकाल
गत जु दइव। अति बलि राकस आप। तिह सदिन सुर कौ उताप। मम भ्रात सेन समांन। नर सिसुन
हते निदांन। इह भ्रात अनय अजेव। भुज रूप अै कौउ देव। विधि विघ्न स्वर जाव। सोइ होत दि
षियत साव। रघुवंस नर अवतार। इह जयौ राम उदार। सो उरांम मारि सग्रांम। वे रक्त रवचकुधा

म॥ कबत॥ इह बिचार पोलिस्त ॥ रामबिके परमेस्वर ॥ अखिल लोक आधार ॥ सर्ब आधीन सुरासुर ॥ ति
तिह बिनोध अनुसरत ॥ तादिसा रूपदेत गति ॥ साधक तप दुष सहत ॥ तदपी फल बेगन पावत ॥ सो पै
बिचार तिह राम सौं ॥ बिग्रह बईर बढायहौ ॥ रघुबीर बान मरि सनमुष रिन ॥ परम जोत पद पायहौ ॥ १
कबिरोवा ॥ छंद ॥ बिल पात ताहि दुसह बिहान ॥ जुगमान भई रजनी सुजान ॥ उन घात उचरो रावन स
पाप ॥ अति रोष अंग पर जरत आप ॥ रथ साज चढ्यो रावन रिसाय ॥ आनि है मन कुमीच हिमनाय
तहां तप तकु तौ मारीच ताप ॥ पंपास र गो रावन सपाप ॥ मारीच बा ॥ एकाकी आगमन कहा आज कार
न प्रकास करियै स काज ॥ कबिरोवा ॥ मातुल सौं कही यो मूलमंत्र ॥ तहां करे छगट सुरपनषा नेत्र ॥ रावण
वा ॥ मामा अब करियै सा हिमो हि ॥ ता को बनि हौ रो स बैतो हि ॥ मारीच वा ॥ मारीच कहौ किरवे मांन बचु
कह कुकहा अज्ञा पमान ॥ अब सो बिचार करियै उपाय ॥ व सहो हि स त्र जिह बल बिहाय ॥ रावण वा ॥
वट पंच बसत द्वै जती बाल ॥ बन तासं ग है लोचन बिसाल ॥ वह ला बहि हरि जिह तिह उपाय ॥ दुष बिरह
रो य मरि है कुदाय ॥ मारीच वा ॥ छपै ॥ मुनि उन कहत मारीच ॥ सुन कु सिधांत रसानन ॥ मान कुराम नम
नुज ॥ कतप अवितरे स कारन ॥ सीयन त्रियास ंज वकु ॥ आदमाया उतपन्निय ॥ अनुज सेष अविता
र ॥ असन निर्धार सुमन्निय ॥ इनसौं न वयर विग्रह उचित ॥ अमर ईस विक्रम अतुल ॥ प्रनु सरकु सिंध
तज रोष उर ॥ करि कु अनंद पोलिस्त कुल ॥ २ छंद ॥ करियै न मंत्र सी सुनियै लंकेस ॥ कुलना सति
होसी बिसेस ॥ रघुनाथ वांन दीपक दुरंत ॥ मत होकु सलन तिह परकुमंत ॥ इह षेलवं सकारक
अमूल ॥ तुम उतहि जो ज्रगो अनलतूल ॥ उपदेस कवन तोहि कस्यो एह ॥ दुष दात घात जिह उपज
देह ॥ कोसिक मष रछ्या करन काज ॥ रघुनाथ हिप विए अविध राज ॥ धरकाक पछ्छ रघुराम धीर ॥ बीरा
र सबा एमोहा बीर ॥ संद्या बिन राकस सेन संग ॥ हम उनय आत आऐअ नेग ॥ कत नेग उपद्रवत हांकी
न ॥ मिल श्रोणरेणु बरषा मलीन ॥ मार्यौ सुबाह सेन्या समेत ॥ षैव जिनि सां न जय पाय षेत ॥ मोहि बिस
कन छ्वबि नने सुमार ॥ दीनौ सत जौजन उदधि पार ॥ सरवड्डो रांम देष्यौ सुभाय ॥ उरि होत कंप सुध ज
बहि आय ॥ नयन सत रहत हो बितनंग ॥ अछ्याव छि जब तै बिकल अंग ॥ सु न कु रांम देषत सुभाय
नयनीत होत मनु मत्तकनाय ॥ निद्रात बकु तैल हत नैन ॥ अतहीउदास आतम अवैन ॥ एकांत रसो
यह वैर आय ॥ पैनिकसत हैं कौउ समय पाय ॥ सुन सुनकु एक हू रव व संग ॥ सो उ सुन्यौ कु तौ मेरि
बन संग ॥ आगै कस्यो हम सो ब्रह्म एह ॥ सुन जाव जस्यौ वरि अतिसनेह ॥ कलाबा ॥ आजुपकै है मनुजा
वतार ॥ नगवंत हरि कु यह तुय न नार ॥ अविधेसय ऐह अवितरे इस ॥ संकुट बहत कु षट चार सीस ॥ मा
रीचोवा ॥ एईन एविष्नू रामावतार ॥ नगवंत हरन तु वनुम नार ॥ बधक रीताड का बालवेस ॥ मष रछ्या
किय कौसिक मुनेस ॥ वन जनक निवा स्यो नं जचाप ॥ अरु करयो बिमद कुजरांम आप ॥ परहू षर त्र
सरा हने बेत ॥ हियहेरत मान कुमनुज हेत ॥ रावनवाच ॥ छंमकस्यो ताहि कस्यो रावन सपाप ॥ ईक सु
न कुरहंस मारीच आप ॥ परउर्षजिदपीरा घव प्रकास ॥ वर दयो बिध हिम मकु तबिनास ॥ मो हि मारु
न मानु बन एमुरार ॥ बनक रुन इह दंडक बिहार ॥ दुहा ॥ यातै सीता हरन अब ॥ करि हौ ज थाप्रकार
तिह कुतह मसौ उन हितब ॥ बढि है वईर बिकार ४ मेरो जो वैरि न मरन ॥ उनके हाथ अजेव पावकु
तातै पर्मपद ॥ डरलन जोग ति देव ५ राम हिमा रैरिन अपजर ॥ कुंजो पेरव होय ॥ सीता तौ पाउ सुगर्मे
करि कु संदेह न कोय ६ ॥ मारीच बा ॥ छंद ॥ बचु रावकु कु ● जमांन रूपबोध ॥ राम सौं छाकवि
ग्रहविराध ॥ ई हू उद्यमत जलं केस आप ॥ उं निजा रूं ग्रेह लुकु रूपताप ॥ रावन बा ॥ क हितबेताहि

राम· ९१

रावनसक्रोध ॥ पापिष्ट करतहमक हुबोध ॥ मन उपदिष्टा ग्रतुमकूं मोहि ॥ ताकौ फल देहौं अबहि
तोहि ॥ ७ ॥ उत्तदिज्यौ जननीरुदतपाय ॥ फर पावत लेजुं जवा दिवाय ॥ तौ मोहि फिरावत विवुखात ॥ वसक
सौ विश्वजित हमें विख्यात ॥ गुरुजयौ हम दितकयत पांन ॥ संसारन को उमोहि समांन ॥ पुहते रैते रीवसीमीच
नहीं देकूं उतर फेर नीच ॥ मारीचवा ॥ कवत ॥ तहां चिंतीय मारीच उभय विधमरन उपजीय ॥ लेषलिलाटवि
धलिषिय जात विधेकूं नहमंजीय ॥ मिलरावनकरमरन ॥ नियत तौ नर्क निवासीय ॥ हस्त रांम जो होय ॥
विमल वैकुंट विलासिय ॥ किन्नौ विचार निर्धार करि ॥ जानजलमय हलेषियो ॥ करउचतमरन रघुनाथके
साइक तिहपविसेषियौ ॥ १ ॥ दुहा ॥ रकूं तौ रावकरमरन ॥ जो उतकौसलराज ॥ यातेराघवकरउचित म
रिबौ मंगलकाज ॥ ७ ॥ छंद वैताल ॥ मारीच मोहिक्के मुदितमन ॥ रघुवीरसानुज उरधरे ॥ जटजूटसिरक
टतटनिषंगसू चापकर वन अनुसरे ॥ संधांन धनुकरि तिक्ष्ण सायक ॥ ममउर सिवजु मारिहै ॥ सुरव
रषसुमनसुहरिष सुरपति ॥ अमरजइतउचारिहै ॥ उंनदव्य रथ्यवठदर तत्वामर ॥ वगटआनंदपाय
हौ ॥ देवीसुरासुरमनुजदुर्लभ ॥ सुषहिं जो तिसमायहो ॥ मारीचमरन हिकरमनोरथ ॥ चल्यौ चित्तवि
चारकै ॥ दससीसयज्ञा मोहि दीजकू ॥ करिकूं सौ सिरधारकै ॥ रावनवा ॥ करिमित्रमिलमारीचकंट
क ॥ ध्ववटिपरवेस ॥ मृघहोकू मामा हे मम यतुम ॥ सजरूरूप सुदेस ॥ कविरोवा ॥ मारीचरस्व अ
द्भुतसुमाया ॥ स्वर्णमृघसुजाव ॥ मरश्रंगसुरवननीलमनिमय ॥ नेत्ररत्ननाच ॥ कृतकनकआ
नाअजिनकोमल ॥ रूपविवरु णहै ॥ अलेकछिवअद्भुत तनुआकृत ॥ अविलअंगअनंगहै ॥ छं
दउधीर ॥ हइनिकटआश्रमआय ॥ सारंगचिरतसुजाय ॥ मृघदेषजनककुमार ॥ अतिलाषपति
हउचार ॥ सीतावा ॥ पियलुचायहैजुपवित्र ॥ चितलइयौ मम मृघ चित ॥ इहमारिआनहूआज ॥ सुष
अजनसज्यासाज ॥ कविरोवा ॥ प्रियलुवाई हजुपविन ॥ उरतबैउद्यमआंन ॥ लछमनवाचाकवत छपै ॥
अविलसिष्टउतपन ॥ आदविधकूं नउपायौ ॥ नहीं देष्यौ नहसुन्यौ ॥ इहजु कंचनमृघआयौ ॥ रामसुन
कूराजेस ॥ असुरमाया उपराजित ॥ कंटकवेषकूं करत ॥ समयलषकारिजसाजत ॥ जुबस्यौ लक्ष
नसिंधात यह ॥ प्रजुष्यापकनवेन्हतपर ॥ विनासकाल जनवत वबस ॥ बुध्यहोत विपरीत वर ॥ १ ॥ आ
यहतजकूअनंत ॥ रामयहमृघकोउराकस ॥ कारनकनककुरंग ॥ वन्यौ सुदरमायावस ॥ नारायन
मतकबुआंन ॥ उरषकहुआनउपासत ॥ जाननकाजअकाज ॥ एकहवहीअभ्यासत ॥ विश्वेसवि
श्वव्यापिकविदत ॥ असुरदुष्टसमस्यअरि ॥ इहवीरवीर अविधेसअब ॥ करीयैकाजविचारकर ॥ २ ॥
श्रीरामवाचदुहा ॥ लछमनहैजोंनत सकल ॥ करिवौ तउसुरकाज ॥ जो उकोउ होयपै ॥ याहिनछांड़ू
आज ॥ ८ ॥ इहकाननराकसघ्रधम ॥ वसतदुष्टसविकार ॥ सावधानरहियेसमझ ॥ वैदेहीरषवा
र ॥ ९ ॥ तवबुधबलविक्रमविदत ॥ वर्तकूंसमयविचार ॥ किकूंकारनएकाकनी ॥ नहिगफकूंवन
नार ॥ १० ॥ कविरोवाचछंद ॥ कटिपटलपेटजटजुटकोप ॥ आरक्तनहत्रकुटीसुओप ॥ करग्रहजुधनष
टंकारकीन ॥ निस्वारबधककरबानलीन ॥ मृघराजचलनकरमृघजुमार ॥ संधांनबांनसुरकाज
सार ॥ कवित्त ॥ रामसीवसुनत्रासमोच ॥ हनुमत्तविजयजस ॥ मयतनियावैधम्म ॥ समरदुर्धनरराकस
ल नद्दसपंचवर्न ॥ महीश्रोणीजरमंजन ॥ अरुजटायुउधरन ॥ अवलधीनाचलउबन ॥ सुग्रीवकनीह
नराजसुष ॥ मृघस्वरूपमारीचमर ॥ संधानइतैनरहरसुकवि ॥ सुकररांमसंधानसर ॥ १ ॥ छंद ॥ प
रत्रासचल्यौतहां मृघडुलाय ॥ पर्वतहिलाघउजुतहांपाय ॥ दुरजायनिकटदरसैजुदूर ॥ मृगकरे
असुरमायासमूर ॥ कीनौ प्रजुकौतिक हूकाल ॥ तरुओटदेषमृघतातकाल ॥ कवत ॥ कनकरत्न

मयक्रांति कपटमग्रदेहसकारन सुंधततनसंक्रिमत निबलदिगविदिगनिहारन घसतकबकु
अघधरन धराधस्वढकरूधावत वारवारथीवाविनंग तनश्रंगभ्रजावत सिरपरीकालबाया
सनय सुपेविरतऐअनुसरन मारीचनीचमायासुमृघ मिल्योआननिहचैमरन १ असुरआयु
जीवनजटायु मंदोदरिभंजन नकुटगाहवारथविहार आसुरआहवतन शृहनबंधतमचर
न गर्बदसकमलकलेवर देवत्रासमामारीचदेह नवनीततनुमनजर सुरराजत्रासनरहरसुक
वि षलषेवरबलछुटिहे रघुनाथधनुषगुणछुटिते ऐसरछुटेछुटिहे २ लंकदाहसामुद्रसे
त मयसुतासोकमन बिघनबालनारदविलास संपातपंषतन डुरगरोधजोधनविरोध विछुरनवेदे
ही कपिउबाहरावनदिराह सनाहसुदेही आसुरसमूलआकंपउर नमस्नारनयनगीहे कर
रामविसषमारीचके एतरलगेलगिहे ३ विधहरमुनिवरविवध तपकूजिहमुक्तनपावत इ
डियकरनिग्रहअनेक वउकष्टवढावत मुनीराकसमारीच विषमविहवैरवढायो तदपिदेवग
तिअगम देहधरिदरसदिषायो सामीपमुक्तपाईसुषद जातउथतपसाधजिह तीहरामबानमृ
घकपट कै मिल्योअसुरसोईरामम‍ह ४ छंदपध वरवीररामसरनैविराम मुषकहेमरतमृघ
रामराम सुररामउकास्योअसुरसोय हालदानम्रातसाहायहोय सोवचनउसहजबसुनो
सीत नयविकतनयोमनमहाभीत सीतावाचदुहा लेसरधनुधावहूलछमन अयुजसंकरआ
य उचास्योआरतवचन तुमकुसुनोवताय ११ लछमनवा तमजानतरघुवरशकत जदपिझा
न कूजात असोवचनजुदीनयह मुषतेकहैनमात १२ राक्षसमायावकुस्वत वानीविवधवनाय
नहीनसुरासुरचयचवन जाहिनरेरघुराय १३ राकसकाकुमरत आतुरवचनउचार कोपै
रामब्रह्मंडकौ नासहोयनिरधार १४ कुवचनभाषेजानकी जोनहिकहिबेजोग श्रुतमुदेल
छमनसुनत उपज्योदुषअवियोग १५ लछमनवा हाचेंहीडरवादनी कहैनयहपैकोय अकिले
कतजावतकलिक सबफललहिहौसोय १६ डुरमतजछमनज्रितवन सायकचापसभार की
नीरेषारामकी डुरगमसालाधार १७ कतरेषायधनुषकी कविनउलंघेकोय सुरआसुरनव
मूतसोइ तहांनसमयेहोय १८ कवरोवाच वरनरामकृतवितवन सोवतचितसुजांन आतु
रचलेविचारउर यहांनउद्यमआन २० कवत क्रियैनाटकसुररमन देवउधनप्रकासदिय
रामजईतनचरीय उहपवषाजुपकासिय अमरलोकआनंद अविनजरसंजनआगम मृग
जुमर्योमारीच वयरउज्योअतिवेषम इहसमयआयसोमित्रउहां रामचर्नवंदनकरे मृघीया
सुसिधलेवीरमृघ सुनआश्रममगसंचरे १ दुहा ताकतहीलंकेसतहां दुजीघातषमांन आयो
दुष्टअसंकज्यां सूनेमिंदरस्याम २१ कवत समयपायलंकेस इहांरावनषलआयो सकौवेषस
न्यास देहराकसदुरायो देवदत्तकियेसह्ल आनन्नसाजाअंगन सियादेषकोउअतिथ साध
विधजुतकृतवंदन विश्रामकरहुकछुछिनविमल महातरोवरछांहमन आयहैवीरअबहीउ
नय उजैतुमहिविसेषभुन १ रावनवा तहाश्च्रौपोलिस्तकवनतुमयहांअकेली दंडकवन
यहदुगम संगसेवकनसहेली किहउत्रीवियकाहि तवसंकोनावषांनहु अंगअंगछविउदि
त जुवतिसमद्युतियनजांनहू वलवित्तदेषतिहसियचकित लगीदैनवनफलविमल अंत
रिषरेषयहअनउचित जतीयहैनहअनजल सीतावा षुसरनपतअविधेसू उत्रजेगैरा
घवपति पिताजनकनपजगप्रसिध सीयामोहितामकहतसत सुरविरतसयांम लछमनदे

वरसुमनलवन। पितुदसरथआग्यापधेस। कीनोइहकांनन। मृघकनककरनआषेटमिल
गिरविचित्रदकछन्हातगत। यहभयोसमयआवनअबै। हैविलंबककिविजयध्वज २ क
विरोवा। उहा। धरविदारजुगम्बरनधर। रेषातरहररीप। हववपहलैगदौरयौरयौ। लोकवेदमत
तलोप २२ कवत। मांनग्रहाश्रमधरम। चित्तवैदेहविचारीय। जतीवेषजिहजांन। पानफलदै
नपसारीय। बाहिररेषाबाकि। विमलकीनोवैदेही। अरूप्यौकरिओव। उछलीनीसुरद्रोही दर
सायवीसजुजसीसदस। कंटकअपनोरूपकिय। रेअधमकौनतूआयरहां। कपटतिष्ठौजां
नकिय २। रावनवा। ब्रमहिनातीजगविजइ। राकसकूरावन। सूकरवीसदससीस। सुरऊसुररा
जसंतावन। काजैतुवग्रहकनक। करयौस्वनाअद्भुतकिय। नपीवेषउपतजऊ। जन्मफललै
ऊजांनिकिय। पावऊनफेरतुमरामपति। जतनकरऊबऊधांनतज। नामनीनरमनुलऊन
मव। भोगविलासऊमोहिनज ४। सीतावा। रेराकसदसवदन। विहतसुनिधोममबोल। ऊ सियवित
वनऊतविषमवात। कऊउरगनफोलहि। सिघंरामतुमसाअंगाल। समतायहसुनसव। कौबलिष्ट
जगकहै। हमहिहैंतोतुकरेहव। रणतूलसदसआकारतुव। ज्वालाबाननपरजरऊ। आवत
कीपआवहगदिध। पापीजांनतकितपरऊ ५। उहा। इगरूतैरेहूनदस। आदितदपिसवअंध
विहतनसिसकहसिघबल। रेकंटकदसकंध २३। रावनवा। जानऊअंधसुजांनकी। मूरषल्न
हमनरांम। अनरछ्याएकाकनी। वनतुवबाफीवाम २४। कविरोवा। छंदवेताल। बलकर्बलिइगाय
विक्कबल। राऊजूसिसरेष। अकुलातअतबलकरतअपनौ। विवससियसुविसेष। मनमथनमी
ननिहेतकिकूमन। परीसंबरपांन। पाषंककरिसिधीकिपावन। अइसवसनइआंन। मिलमनऊ
घमसमूहमघजूं। अनलज्वालाआहि। परपत्रचित्रंतउत्रिका। मनुमरुतवकनमहि। एकादसिद्र
तमार्गिवनवस। सुषचावदवंतार। सुनजीवजोनिअदिष्टसंगिक। अवसनातउदार। आरूढरथ
इहदसाअनुचित। सियारावनसाथ। नवतयस्वचितप्रबलनावी। हैनकाऊहाथ। सीताहिहरलै
चल्यौदससिर। ऊवजगतहाहाकार। सुरराजजान्यौसुरनकौंसावौ। नृमउतरयौनार। सीतावा। ज
गएकवीरसधीरहा। रघुनाथदेवदयाल। लंकेसवसअसमर्थअबला। करिऊअनयकपाल
हार्दनआरतकर्नकारन। दीनरछ्याकदेव। तुमसर्नविजरविजयसवकह। जगतजेवअजेव हार
मआरतबंधुअद्भुत। अंगविजितअनंग। रघुवैराजकुलकीलाजलषमन। आजतोहिअनंग
उहा। रामबलिष्टनराजसम। मोहिसूरुतजगमाहि। जातिकऊग्रहीअनाथज्यो। नाथसुनतकिध
नाहि २५। तवधाएषगराजतज। जानउष्मतगजराज। मेरीवेरजुकहात्तयौ। रामगरीबनवाज
२६। कविरोवाचछंदवेताल। सुनदीनवानीकहतसीता। रामरामउकार। अतिबलीग्रीधजटायआ
यौ। समरधर्मसंभार। अविलोकउतपंथजातआतुर। इहरोकयौआंन। उनिकर्तनीतप्रबोधपं
षी। पतितकहिपुहिचांन। जटायोवा। कवत। इस्लवेसअवितरम। हवनमस्तसुजनहर। उसहस
क्तआपार। दरुसंचारइदसिर। करहितोलकैलास। कंउकसिसवगतकरियो। हैलषेलऊतहास
धराधरधरनीधरीयो। इहकरमनहिनलाजतअवुध। सोइरांवनपतनिसवरन। कियकपटभेष
रघुराजकी। हेतकवनमहलाहरन ६। रावनवाच। उहा। स्वननीतकहिकहिविहंग। करतप्रबोध
प्रकास। तबसमकऊजबदेरूतो। हिसवजममिदरवास २७। छंदवेताल। रिसजुक्तताकहकसो
रावन। रेअधमनजवार। तुहिजानपिंडतवंडवनकौ। किहदयोयधकार। जटायुवा। रिनतिष्टरप

र दारतसकर। सुनयेहसंवार। नमसहिहिगो सबदसकुमुकन। बबलतुरुबहार १७ रुधिरदेह
न्हाइबूरन। सिवाग्रीधअंगाल। हमतुमहिकैहैषेतयहहव। कहिनजुधकराल। कवित्त। रथरो
किपिषलपंषरोक्यरावन। कलहविरथहिकीन। डरवाद कहिकहिलदयदाहक। डुसहपरिनब
दीन। रथकेतहयकतवंकचूरन। चंचपंषचपेट। दससीसकेहतमुकटदसहूं। नहग्रीधहिनेट
सयोमसंगमग्रीधदससिर। नयोपरबिनयोन। सोदेषवीरुषसुरसुरेस्वर। उहपवर्दषमान। सहिसा
रमारषहारसनमुष। आपकतउधार। यहबेतसमरजटायुसोयो। वीरषेतविहार। कछुस्वाससेष
भुरहेसुनकत। दरसआसदयाल। महिगिरयोग्रीध१हा रमोनकु। विगतपंषविसाल। बथेसदसर
षग्रीतहूरन। जन्मकीनजटाय। पंषीसुपायोसुजसहूरन। अनगहूरनआयु। कवित। तोरिधुजारथ
चक्रबेतनिरग्रीधपरयोषग। नयोविरथबलविकल। गहिजुसीयचल्योगिगनमग। ईहांनिकयोगिर
मूक। उपररावनअनियाई। वस्तजहासुग्रीव। संगकपिपंचसहाई। सीतासत्रासआकोतेअपने
नूपरउतरिय। वुतिमानरवोनरअदपर। देषतिनहितहांमारदिय ८ दुहा। तेइनूपरउतरीय। तबली
नेहनुमंतसोपहराषेजतनसो। सांमकाजहितसत २९। सीताकेनूपरबसन। हनुमतबदेजुहा
ष। आगमनोसुग्रीवके। श्रीयवियवैनवसाष ३०। अथहनुमानकीलंकाप्रवेस। लेनचनमारगमेंषली
आयोलंकनिलाज। ताहीछिनतेत्रकुटमह। घरघरसोकसमाज ३१। कवित। सीयाहरीदससीस
करमअतिदुष्टकमायो। परीलंकआतंक। बीजकुलनासकबायो। सियबविसतनहीसदन। वि
वसराषीअसोकबन। तरुसीस्पतरतरल। मलिनतनरहीमारमारमन। नजटादिकरुदनुराकसी
रावननेतेरव्हाककरिय। सिधीसमूहवसज्योसनय। परमज्जोगपकविलापरिय ८। दुहा। सुतावनीष
नकीसुना। निश्चरित्रजटानाम। उरबउनमउनावतै। विल्हूनगतयहवाम ३२। छंदवैताल। इहभ्रमपेरित
तआयआउन। सकदेवसहाय। निसअर्धसमयनिसाचरीसब। परीसोवतपाय। उनिसीयहिमर
मषकासअपनो। करयोअनयषबोध। घृतपानचलकराईहूरन। सबेदीनोसोध। तिहनहीपायेहु
धावला। उनकेपरवान। अज्ञातआसुरआसुरिनतै। सकग्योसुसथान। कवित। अंतहउरआस
न। विमलविसतनअसोकवन। डुसहदसाकतदीन। तहांअधबनमलिनतन। स्रकतअधरउसा
स। आसप्रियदरसनआतुर। रांमरांमसुषरटत। नहनजलधारनिरंतर। सिसकलाविधुतहविय
नसंग। सुरत्नीसिघनजयसहत। निसचरिनमध्यइहरूपनित। रामप्रियाघेरीरहत १०। अथश्रीरा
मपर्णसालाआगमन। छंदवैताल। मघकनकलेयहांरामलदमन। उनयआश्रमआय। सुनरूपसी
तापरनसाला। सोनपायसुनाय। श्रीरामबा।। ममसुमुषनाइप्रियालषमन। सदाज्योसुविसाल
यहआपनौकिधनाहिआश्रम। परेउनलपकास। कवित। वहिअंतरग्रहविमल। नहिनपदपंषी
निहारिय। दिष्टमोहिनआवतसुदीस। मिथुलेसकुवारिय। यहनकिधूआपनी। पर्नसालावनपा
वन। हमनकिधूवदहोय। सबलषलअसुरसंतावन। कहवीरलषनकारनकवन। कछुकनिष्ट
करुउष्टकिय। हवमानतजनचाहत तनहि। सहीनजातवियोगसीय ११। सुनदेषत्रनसाल
जगतपतत्रासउपज्जिय। करुनानिहिनकी। सदनसूकतहितसजीय। इहांअनिष्टकछुआज
मोहिवहरातनदिनमन। एकाकिनअसमत्थ। तुमकुवनताबाफीवन। केसीतहिबाइराकसन
केहरिलेगैदुष्षल। करियैविचारकहमंत्रकहु। वीरलछनतुममहाबल १२। लछमनबा। दुहा। क
रविधसिष्टअराकसी। वेरलेकतबवाम। देषिकुविक्रमदासकौ। राजसिरोमनराम ३३। श्रीरामबाच

दप॥ कीनौ न लछमन तुम उचित कांम॥ बन माझ अकेली तजी बाम॥ लछमन बाच॥ तहां लछमन उ
तर दिय सत्रास॥ प्रभु बान उकारयौ मृग प्रकास॥ सो सुनत न हसी तास बेद॥ नावी अनिष्ट जान्यौ
न भेद॥ धर धन बल लषन धावक सधीर॥ रघुबीर बान किन सुन कुबीर॥ लछमन बा॥ मै कह्यौ राम सु
रन हिन मात॥ तम बाघ रमर तकि रूकरी घात॥ मो हिक ह्यौ जहां उर बाद न्याय॥ जो क रूफेर गर जी
न जाय॥ बंधुन विरोध कौ बीज बाम॥ राजाधिराज सरबज्ञ राम॥ श्रीरामबा॥ चितु उचित करी तुम
इहै बाम॥ त्रियमात प्रमान कछु नहीन तात॥ कि कूहे तक है त्रिय बचन कोय॥ सरबज्ञ विचारियै ब
सोय॥ आकर्षण यौ को उदुष्ट आज॥ कैकरी नष्टा तो पै अकाज॥ श्रीराम लछमन प्रतुदमन॥ दुहा॥
सोक मगन अनुज हि समक॥ रहि समंत्र कहि राम॥ उराप्र संग जु आउनौ॥ उपदेस व बर बाम॥ ३४
तुम रूनह जानत लषन तिह॥ कीनौ गूढ प्रकार॥ कह्यौ गोपतन सीय कौ॥ विबुध कार विस्तार॥ बं
दप॥ ३५ सुन लछमन तौ क रूसोय॥ गहि लै मै राख्यौ गुढ गोय॥ निस्चरी करी श्रुत नासहीन॥ दिन
तिह प्रबोध मै सिया दीन॥ पीहर है तु व पावक प्रमांन॥ दिन क छुक रहु कंता महि निदांन॥ सुरकाज
सिध हम करहि सीत॥ उन मिल कु ~~है तुव पावक प्रमांन दिन क छुक रहु कंता महि निदांन सुर~~
आन हम सौं उनीत॥ मैथली देह निज अग्न मांहि॥ हम सेवा काजै रहु कुबांहि॥ सिय माया रूपी रही
सं ग अनल महि रेष आपनो अंग॥ रहु बुम पिनाती दुष्ट आप॥ उन रावन मारे महा पाप॥ त्रिय हरन न
यौ अब आततार्ई॥ संग्राम उचित यह बध सु भाइ॥ अपराध बिनां हत बौ न याहि॥ तातै अपराधी क
स्यौ ताहि॥ करि बौन सौ च अब सिया काज॥ रावन कौ षोउ वंस राज॥ बरद यौ जु मै बुलहि विसेष॥
सो पेष मांन करि बौ असेष॥ बस सोक बैठ करि है विलाप॥ उन हति है कौ आसुरस पाप॥ उभ्वल कवी
रचित कुनन्यांन॥ जांनकी षोज करियै सुजांन॥ सुचक्कनिमत क रूपाय भेद॥ बित करि है राकस बस
छेद॥ नज बौ मो हि तातै मनुज भाव॥ दुष सोक बिरह लौकन दिषाय॥ नर वानर बर बाहिर निदान॥ उ
न दीक रिम रिहै यह अज्ञांन॥ सोरठा॥ नीत धरम कतरांम॥ तिहमे हिका द्यौ राजतै॥ जिह मम यह बु
ध जांन॥ कहां सोत म्रघ कनक कै॥ कविरोबा॥ छंदप॥ सब भाव रांम जद पि सधीर॥ विलपात करत त
उ महावीर॥ बस सोच चयेसा नुज सु भाय॥ जिह बूह गजग प्रबल य जाय॥ श्रीरामबा॥ कवित॥ अ
हि सिसक चकोर गीकु रंग सुक बिंब प्रजकन॥ पिक कपोत श्रीफल हि॥ मृनाल सर सीत रंग तन॥ सिंघक
री कररंच॥ कंजना रंग मत्तंग गहि॥ सुर च मलय न स्वास॥ रुकम चंपक तन रंग गहि॥ प्रह्यियतै अंसु तत
भजु गिन॥ मिल सम ग्रअ ति छिब मिलिय॥ पदजान त लछमन आज ईन॥ हरी सब न मिल मैथलिय॥ रघ गि
न अरक उगियो॥ लछन न तरु छाया लीजिय॥ अर्क जपा निसि अस नाव॥ प्रभु वंद स उज्रिई॥ चंद उघ
त रहह रहां कवन लछन तुम लेष्यौ॥ न कसंताप न प्रियो॥ देव अघ वाहन देष्यौ॥ हाहा विदेह तनिया विमल
चंद वदन म्रघलोचनी॥ देषहै कबै एदीन दग॥ मम अंतर दुष मोचनी॥ ध्य अंग गिरन तरु सिषर॥ लषन दाव
न जल गिय॥ कंचन ज्वाल माला कराल॥ अनिवारत अग्गिय॥ देव उदय छुप रज॥ न जत्त कुतछ्ह मत अं
स न व॥ पर्तधरि न प्रतिबिंब॥ रह्यौ लग अंकि सु राघव॥ सुष वाम धाम धरनी सुता॥ गुन निधांन कहि
कित गई॥ ईह गोर म आ वित दिष्ट अब॥ नाम न मम नलीन नई॥ छंदप॥ हाहा वेदेही जु पर्म हेत॥ दुहि
त मोहि देब कि न दर्स देत॥ निसनाय बदन हा कवलनैन॥ विश्रांम जीव को किला बैन॥ रद व ज्रबिंब रद
छद सु रंग॥ कंचक पोत्त लोचनक कुरंग॥ भुज जुगल प्रेम पासी जु भाय॥ कर कवल पत्र कोमल क हाय॥ क
रपल व चंपक कलीकीन॥ नष ज्योत हो तिब पन नवीन॥ [illegible] ओप जिय सफर अलि

कवनसीसजोप। नाचीसरसुंदरतानिहार। कीनीत्रेदछिबअसमकार। मृघराज हीनकटिमुखमा
प। अतिगुरनितंबनरअसहआप। सुगजघकडलीमृदुगरजंत। उनराजहंसगजिगतवमांन
वरवर्नकन्ककवपविमोह। अतिसोन्अंगगअगिनतअरोह। रूपसीलव्रतवित्तसुझान। सुनलक्ष
नत्रियनहकोसमांन। धानममगइलेत्रियउनीत। सुनदरसआनकिनदेनसीत। रटलगीएकहाहासुरा
म। विष्वासवीजकहागईवांम। वनवनहिकरतयहवितविलाप। अतिउषतफिरतषोजतसुआप। ज
लथनमचारीजीतेजीव। द्रुमलतात्रनकूबूझतदईव। अगजगजहवेतनआदअंत। जगवंततिनकु
दछितभ्रमंत। ममप्रियावत्तावकुधरमवांम। नियरायभ्रमतवितलेलेनाम। अतिविषइज्यों विहीअपान
वसुकरतमनुजलीजाइमांन। विधविधसमझावतलेषवीर। अतिविरहतदपिरघुवरअधीर। कवि
त। ब्रह्मादिकसुरअसुर। विष्ववरवीरमहाबल। परिदेवीमायाप्रपंच। वसरोदतविकबल। ज्योंअछे
यअजेय। अमितअनविद्यअनामय। अगमअरूपअनाद। अषिलईस्वरअजअमय। ततपलिपे
षनासनअविन। तेजउजस्वामीत्रदस। सोईमानुषलीलाअनुसरत। वनवनरुदतवियोगवस।१६
अथग्रीधजटायसमरसक्यासित्यदरसनं।बंदप। वनषोजकरतयहांरामवीर। सानुजसषेदआ
एसधीर। रथधुजापताकाछत्ररांम। सहछत्रनगनदेषेसयांम। श्रीरामवा। अविलोककह्योरघुराम
एह। सोमित्रयहैरहकवुसदेह। जोकुतोज्यांनकिहहरेजात। ताषलकरउपजीवीवघात। कोउ
मिल्योतिहैराकससक्रुध। ज्यानकीकजदकुम्रिरेजुध। सोउअसुरउनयकीनोसयांम। वहिगिरेसो
जुयहवामगाम। कवत। वनगहनविचारतजातवीर। संग्राम ग्रीधसोयोसधीर। सोदेषदेहपरबतसमां
न। अतिकायबलीपोरुषअमांन। श्रीरामवा। सुनभ्रातयहैजिहहरीसीत। अतिजुधसमतसोयोअनी
त। करिग्रीधरूपयहअसुरकोय। सीतहीषायउनरह्योसोय। कविरोवाव। रघुनाथवचनसुनयीधरा
ज। आनदकह्योहूधिन्यआज। ईहनिकटततबैरघुनाथआय। सोपैजटायजान्योसुनाय। लीनोउ
वायउरलायलीन। करिकृपाग्रीधकतकृतिकीन। श्रीरामवा। कुहउसहदसाकहकिकूरूहेत। षगरा
जकोनसोभिरचौषेत। जटायुवा। रावनहरिलेग्योसियहिराम। सोभिरचौउइहमोसोसयाम। करिमहाजु
धमैविरथकीन। रूगिरचौनयोजबपंषहीन। सुनमारगदषनदिसनिहार। मैपुलीगयोलेमोहिमार।
तुमआदब्रह्मअवतारआय। कारुनभ्रूतधरिमनुजकाय। षतुदयोदरसमोहिचलतप्रांन। निजजोति
लीनकैकूनिदांन। जटायसतोत्रवेतालछंद। अनगिनतगुनअप्रमेयआदिजनेतष्वितजुगनासनं
नितरमानरनकप्चूननिरविध। सुषअसेषविलासनं। उषदेवमनुजवभूतदारुन। नियतविवधवि
नासनं। परिब्रमरामभिउरषसु। रमज्योतप्रकोनमनवरदसरकोफिरुमंफित। सांनिजन्हिवलंबए
ममसीसकटितुनीरसफित। बिहतभारनितंबए। रिवकोटसुरजिप्रकासराघव। दानवंछितदायकं
नररूपरांमनिमामिनिरजित। नियतसंतनिनायकं। भवसिधूतारकपोतप्रभुपद। उषविपनदावान
लं। रिवसुतातनविबरामराजित। गिरसउरगतिमंगलं। पतदनुजकोटसहंस्रपापी। विषमसमरकिा
सनं। उतिजलदरेहनमामिरामदि। विनतविद्युतवासनं। प्रभुप्रगटपरिहितनिरतप्रतिमा। पतितपाव
नसुरपरे। रघुवंसतिलकनमामिरामजु। गुरउअयजममगते। दनुजंदसेवतत्वरनमोषद। नियतह
तरघुनायकं। मुषकूविरुहासविकासअंबुज। प्रासुधारसदायकं। भवसुलननित्पनिकामनाज
न। निरवेदसुचाबित। तनस्यामरामनमामिसंतित। सुषदसुरमुनिसाबितं। विधविघ्नरुद्रह्नीतविय
ह। नेदप्रतिमानासए। तुमत्रगुणमयअनुसरतआतम। उरषप्रकितप्रकासए। तुमदिव्यप्रितजलपा

नदायक। सोपिसोषिकसमतं। तुमगुरुड क्रुतेगरुडगामी। त्वंनिमामिपतिपति। सिवहृदयसुषदनिवा
ससंतित। स्यांमघनतनसुंदरं। भुजभारआयुधधार आजित। मुषपदममनोहरं। अनविद्यअगुन
अरूपअद्भुत। अगुनपरकसावरे। सुषधांमरामनमामिस्वांमी। धर्मउंजतपावरे। दससीसकेभुजबी
दंडन। कीनगवनसकोपए। आजान्हभुजतनमनुजआकृत। रनविजयपनरोपए। धरनीउधारवि
हारवारिध। जनतनितमुनिगनजपं। उषहरनदीननअभयदायक। त्वंनमांमित्रलोकपं। जिहजोतिनि
गमउम्मजांनत। अमितएकअषंडए। जपहमरुदभुगाद्यजोगी। षोजकतनवषंडए। वितऊनआ
वतदगअगोचर। रहेहारिविषसुरा। सोइदेहधारिमोकहदिषाइ। त्वंनमांमिनरेस्वरं। पंनजंतुधीमकु
जोनष्वेवर। षांनहिसुअपावनं। उनिरहतताकतनहतपर। नमतदायाअनावनं। पलपिस्तअ
संतनयांनपतिमा। उरातुनपकासनं। अविधेसरामदयालहरसन। टरीअंतकत्रासनं। कारुनरू
पअकांमनाकर। कर्नकारनकेसबे। संसारकरिउधारस्वांमी। नूपदसरथसंनवे। जोउलजजोगीज
तीनजापहृ। सततनिगमनसाषिये। इहरूपअसमअनूपअद्भुत। रामउरममराषिए। सतकोटर
तिपतिअमितसोभा। संतविघ्नविनासनं। विश्रामममेकअनेकवियह। षेमनावपकासनं। इहसुन
रांमसतोत्रसानुज। पदमधैसीतापते। वरदयौयीधदिचितवंछित। प्रभुसुरासुरउजते। श्रीराम
वा। ममलोकनिरमलपरमपदतुम। पायहौसुउनीत। नवसिंधुतिरकुषगेसनिरनय। गावहैजग
गीत। पढिलिषैवानीपावहूरन। करहिवरतजुकोय। ममपराइनमुक्तमहिमा। स्वारूपपावहिसोय।
कवरोवा। इहसतोत्रजटायुविरंचित। मुक्तमारगमेक। उनिकल्पोकविनरहरपराकत। उपजिन
कुअनेक। करिजोरजाचनाकरीमम। सबलषलअघसाल। गतिदेकुदीनहिआपनोगनिदेव
दीनदयाल। श्रीरामवा। कवत। तुमजैहौसुरलोक। सुनकुषगपरमसयाने। उहांदसरथअविधे
स। पीतजुततुमकुपिछांने। सीताहरनप्रसंग। सभाजिनजुलिषकासकू। करबौमोहिसुरका
ज। साधुतुमचितसमासकु। अबचिरतकुकबकैहैअचिर। जससमेतजगजानहै। कुलसहित
सुपेरावनकथा। विबुधलोकवषांनहै। ९७। कवेरोवा। छंदप। प्रभुहेतषांनतजिमुक्तपाय। सुरलोक
वजेउधनिसुभाय। दगनीरढरतरघुवीरदेव। इहांअगनदाहकीनोअजेव। करअरपनकियम
तसेहसकार। पितुसषायीधउधारपार। वरचढविवांनहतसमरवीर। धरिविकसंषवकायधीर।
सुनअोरसमरढारतसहास। विहगेसनयोयोसुरगवास। दुहा। रामस्वरूपप्रभुचितधरि। कीनोप्रां
नपवेस। जोगतउरलनजोइतै। सोपदलहौपवेस। ३७। अथकबंधवधप्रसंग॥ छंदउअषरी॥
वनघनषोजतचलेवैरागी। अतहिविरहपजरतउरआगी। जाहितादिहिषूबतघरजाई। छातीवि
रहविषमनमबाई। सोचजुक्तउषदिसरसरता। सजनकुवतावतावकुसीता। दसाउसह
रघुवरकीदेषी। वरनिनजायविरंचविसेषी। जांनकीविछुरतयोदुषजोइ। समकतएकराम
पेसोई। छंदप। चलदिषणदिसातवरामचंद। अतितापविरहअविधेसइंद। वनगिरउतंगतरुव
तासंग। नरलताउहपहुंजारंग। मिलविवधकुसमभंजरतमाल। वनवरणवरणनूरहविसा
ल। वजसीतमंदसोगधवात। अनेकवि~~[illegible]~~संगवांनीविष्यात। नगदरीगहरनीकरनजी
र। तरुलताकुंजयनतीरतीर। सर। ताअनेकचलिसलिलसंग। तटविकटनमणनिरमलतरंग
सरवरविसालघनवनसरोज। मनरहेनन्हूलरतिसोमनोज। विस्तारगंधअंबुजविराज। रमतन
मतमिलनंगराज। जलजंतुविविधलगुदीरघजात। नाषाअनेकअनेकजात। गजमतजूथगरजत

गहीर निरघोषगरिजअंदोलनीर। तरजतापंषि अनेकतीर। सेवततरछायासुषसरीरवन
जंतुविविधवनघनविहार। बतिमाअनेककोजानपार। न्त्रधरनसिघ[illegible]तनयां मिलहोतदरीवु ना
तिसह्मांन। जुगम्रातसनयवनचलेजात। विस्मयजुलछमनकहीबात। लछमनवा। उदविघ्नहै
तमनअकस्मात। दृगबाहफुरककबुअसुभदात। अनमितहोतरघुनाथएह। संभ्रमतचितउपज
तसदेह। सफचलकुरामकोदंडसाज। अनमिरहेअसंजवमिलेआज। कविरोवा। योकहतएक
राकसअमान। नयकारूपदेष्योनयांन। कयक्कोधमानअंतरकबंध। उतमांगअगअनलावअं
ध। अतिघोरअसंजवरूपआप। सनमुषहिपंथरोक्योसुनाय। मुषकाद्पजुमस्तउदरमाहि। बिस्तार
सुजोजनमात्रबाहि। अनमस्तकआसुरउष्टअंध। कहीयेसुनामसंज्ञाकबंध। गिरमानदेहघरे
मराज। बानीसुमेघगरजाविसाज। घननीलवरनतनरोद्रघात। करकसकबंधआकतकुबारउ
ववाकुमध्यअंष्ट्रादईव। जोउपरैन्त्रम्पनचारजीव। गहिलेततादिनषकरेगात्त। नवन्त्रूतजोन
पावदिननाज। अविधेसुरसानुजनिकटआय। पादिष्टपेषसंदेहपाय। श्रीरामवा। करसंकटआयेये
हकुवैर। ईहनांदिनलछनजतनओर। नयअतिविहंतफिरबोनवीर। सयांमजनतकेसोसरीर।
पंथरुक्योनआगेजांनपाय। पैदेषूत्रीविमुषपाय। निकलछषडगरलेनिधांन। संग्रामवीरमएसावधां
न। रछनभुजकाट्योरामदेव। अरुवामभुजालछनअजेव। घह[illegible]रयकस्योघननादघोर। अ
तिदीघबाकुपरिद्रुनओर। कबधवा। बलउपज्योविस्मयसमरषेत। हतबाकुविचारतन्नयो
हेत। ममभुजाहतककुवक्रमांहि। निहचैसुरआसुरकोउनांहि। वनमाऊकवनतुमनरवराक
धसिजातधरनममपरतधाक। कविरोवा। धरहरतदुहनदिसरुधरधार। पाविष्टमनकुवाढोपहार
श्रीरामवा। अविधेसनृपतदसरथअनंग। सेनाअनेकचतुरंगसंग। सुतजासरामलछमनस
धीर। वनवनविहारहमकरतवीर। मैथलीसंगममधरमवाम। निसचाररहरीकछुसियानांम। अब
षोजतताकहइहांआय। संकलितकहेतुवभुजसुभाव। इहरूपकवनतुमइहांआप। वगद्योजु
कहाप्राचीनपाप। कारनकिहतवसिरबीनकीन। नहीसुनीदेषीयहछिबनवीन। तहारांमचंद
हसवूबतादि। यहप्रतिमाकारनकवनआहि। कबंधवाचबदउअदारी। अंधककबंधवसंगउचा
स्यो। धर्मधीररराघवउरधास्यो। जद्दराजक्रुकुतौजगतपत। वूरननेहयेहसुषसंपत। अतिस
रूपजोबनछबिअंगअंग। सोमोहिगरबवढ्योजोबनसंग। धनतनमनमदअतियक्षकाम्यो। मम
छिबकोउआननमान्यो। वेमनिधांनप्रियामेपाई। यहमदमोहिअहमितइधकाई। दिअवोरस
निताहमदेष्यो। विधजुतनहानिविधांनप्रियामेपाई यहमदमोहिअहमितइधकाईवासविसेष्यो
कवलसुवनहितवकुतपकीनो। देवप्रसिनमोहिवरदीनो। मैअविधपदविधयरुआयो। नयोअजयवि
वरतमनभायो। रूपगरनहमदंपतिचिढरथ। वेमपरायनजातगिरपंथ। आवगौरतेविकृतआतम
अष्टावक्रनाममुनीउतम। भुजवहजातनमपंथदेष्यो। वसइचरजहमहासविसेष्यो। वनितासो
मैतर्कवषांनी। आपरूपहममतयक्षकोनी। इहपैउरषककहावततआपन। मिलनियकहामोदहे
हैमन। तिहभुजसुनवितीयोतबहमतन। मस्तजातमुनिकोधकयोमन। अष्टावक्रोवा। श्रापरिवेस
द्योमोहिरिसवस। रेउरमदकैहैतुमराकस। अधमजोनपिसाचनआतुर। सबदिनरहकुस
नयत्रासतसुर। कबंधवाच। उसहश्रापमोहिमुनीवरदीनो। निजअपराधमांनमेलीनो। हमरथबाजदं
फवूतकीने। अरुदेषतिकहिवचनअधीने। देहप्रमासरप्रमानभुजेस्वर। जतुसोइकस्योसुमसिरउ

१२ ॥ उनि उधारकहकु मुनिपावन ॥ तातै फिर जे रूअपनी तन ॥ रिह्मावाव ॥ दीनवानहमबोलेदंपत
अष्टावक्र दयाल नएअति ॥ करहै रामनरदेहसकारन ॥ त्रेताजुगजु अवतारउतारन ॥ पितदसरथअ
ज्ञावनपावन ॥ ईहांकै है दंडकवनआवन ॥ मारही तोहि छेदभुजउरमद ॥ उनि तुमकेरलहकुअपनो
१८ ॥ कहतमात्रममबुद्धोकलेवर ॥ षान्वलेधुकिधर्नपयोधर ॥ सुरसानांमरम्हपीसुंदर ॥ उदरतास
हमवसोसुरअर ॥ अविधषायनांमाअाडुदन ॥ जनमीरूराक्षिदिसकजन ॥ जुगलभुजाहमजो
जनजोजन ॥ परबततमांनसरीरअपावन ॥ विकलचेतजनध्यानविनासक ॥ उनपरामुषपापउपास
क ॥ करोअनीतलोकभयकारन ॥ नियतव्रतमषहोमनिवारन ॥ फिगनलग्योव्रहमंडरानो ॥ सुनउत
पातसुरेसरिसानो ॥ इहांइंद्रमोपैचढिआयो ॥ भयोजुधदोऊनमनभायो ॥ तातैजयउपज्योतबकाऊ
उरसंकनमनतबभएसुरासुर ॥ राजातबवज्रसंभार्‍यो ॥ महाक्रोधमोहिमस्तकमार्‍यो ॥ तिहप्रहा
रकूभयोअचेतन ॥ सिरधसगयोउदरमोदितिहबिन ॥ भएनितंबजवरममनीना ॥ कूनयोमस्तकचर
नविहीना ॥ तहांअविसेषकबंधरसोतन ॥ अतिहिविरूपकुषमहिआनंन ॥ प्रथमव्रममोहिदयोअमर
१९ ॥ मरयोनहीतातेकू डुरमद ॥ महाविरूपदेषसुरमोही ॥ दानवहसनलगेसबदोही ॥ विबुधवृंदतहान
एकरुनावस ॥ कोजिूहैभक्षविनुइहराकस ॥ मुषअन्नावनषकोइहमाने ॥ यासकककह्योदयारसआंने
ईंद्रदयालभयोतिहअवसर ॥ वेकतदेषमोहिदीनोवर ॥ कुषहिमुषकैहैतुवराकस ॥ बाकूहोहिगतषा
ऊततबेतस ॥ भवजोमृतआहिभुजजीतर ॥ सोपैसकैनबाहिरसंचर ॥ तबतेइहकेतकालवितीतै ॥ जुध
जुरेसोपैहमजीते ॥ षगमृगपव्रवजजंतुमैषाए ॥ अंतरदेहभुजसकटआए ॥ गिरवनवसबकुकालगमा
ए ॥ आजअविधवसवभुयहआए ॥ नासभुजाममश्रापनिवार्‍यो ॥ अंधककबंधकुजोनउधार्‍यो ॥ देवल
हनकहअज्ञादीजै ॥ करीअग्ततरूसंचपकीजै ॥ तरलअग्नमहदाहयहैतन ॥ वभुपैरूअपनोपद
शरन ॥ कविरोवा ॥ कांवसदनलछनतिहकीनो ॥ ववस्पीतामहअसुरववीनो ॥ ज्वालानलउसहपरजार्‍यो
अधमजर्‍योमुषरामउचार्‍यो ॥ परमदेहअपनीतिहपायो ॥ सतकंदर्पनितेजसवायो ॥ अंगअलंकृत
बिबईधकाई ॥ व्रबजहसजोनतिहपाई ॥ डहा ॥ निकसअगनतेदिव्यतनकरिपरिक्रमणअनेक ॥ राम
हिंदंडवतमत्तहां ॥ विधजुतकतविवेक ॥ ३७ ॥ कृतवंदनजुगजोरिकर ॥ उनिवादोहकपाय ॥ करतरामको
गुनकथन ॥ विवधसप्रेमवनाय ॥ ३९ ॥ लोचनननरआनंदजल ॥ उरउबाहअमाव ॥ तेजविराजतविपुलत
न ॥ भयोसुभ्राातिकजाव ॥ ४० ॥ अथजहसस्तोत्रं ॥ बंदवेताल ॥ तुमअनादअनंतअव्यय ॥ वितवाक्यगो
चरं ॥ अवगटस्क्षमरूपअचुत ॥ नाथजोतिनिरंतरं ॥ दगरूपवभुतुमसबदेषत ॥ आपअदसअ
कामयं ॥ सुनसगुनधारतदेहसुदर ॥ अषिलवगटअनामयं ॥ सबगुननसाषीभूतसाचे ॥ एकतुम
जुअनंत ॥ जगदीसजानतनहीजडातम ॥ तुमहिअबुधअसंत ॥ मनवचनकूतैनिकमाधवस्व
यंसिधसरूप ॥ भगवंतकारनकरनअनुनवरूपकूकेरूप ॥ एकज्ञताजबबुधआतमजीवसंज्ञा
जांन ॥ अविकारअध्ययअजअग्राही ॥ परमउरषवमांन ॥ सुचरूपसुषदअनादसुक्षमसर्बवा
पकसोय ॥ भुवकमलभवकेहृदयभासत ॥ जोतिमयजोकोय ॥ उंनिश्रुतियरूपसमूलप्रतिमा ॥ विहद
रचितवैराट ॥ त्रगुणमयमयभाव्नातुम ॥ घडतअद्भुतघाट ॥ महातत्वआवृतसर्बमयतुम ॥ भूत
भवकीभवहा ॥ एसकललोकपलोकअवयव ॥ दस ॥ रूअनदस ॥ पदमूलतवपातालप्रतमा ॥ १ह
मह्रातलपावनं ॥ पदगुल्मषभुराजतरसातल ॥ जंघअतलजनावनं ॥ जुगजानसुतलप्रमानजगपत
अरुवितलविभावऐ ॥ जवजंघनचरतललोकराजत ॥ नाचगिगनवना ए ॥ उरदेसमिलसिसुमार

मंडल ग्रीव गत मद लोकपं तव वदन सु नजन लोक राजत अखिलत प अविलोकपं सिरसन
लोक विसाल सोभित बाकु दृग दिगदेव ए श्रवण आसा धरम श्रोता तिह मुंजाद लमेवए आघ्रा
ण कारक तनय आस्वत मुष महान लमंडितं तव नेत्र सवित सहंस्र करतिह बेव मष तनमंडि
तं मनु मुदित द्रस्नं चंद्रमा तुह नंगका लकरालं सव बुधि सुर गुरू महा अहिमितं प्रभुजपानि
कपाल नविवाण विंटं भ्रम विमल वेदी दाढ दृढ जमदेव मिलदंतपंत ननषत्र माला हास माया
मेव कारुन्य देवक दाद्धक मसुत उतिपति म्रषल अनंत तव अथ नागअजेवह ससु धरम गवत
संत प्रभु पिष्ट पानु नमेषह अन मेष होत अपार सोइ वहत निसदिन नित निरमल करम कार प्रका
र तव कुद्दास नसमुद्र विसतर नाडनंद निरधार अतिरोम न्द्रस औषधी ए अखिल जगआधार
तव रेतु विर्षा विडल रितु वस होत है सब देत महिमा जु तव अन मान माधव ज्ञान सक्त सचेत यह दूष
ल देह अथूल उतिपति करैं ध्यां नजु कोय संसार बंधन काट सुषदी हिति मुक्ति सु होय कविरोवाच
कवत यह कबंध अराध सुगम सत मग उपदेसन करम छेद नवकरन प्रगट परलोक प्रवेसन
राम रूप रतिकरन धर्म मूरत उरधारन नव नवस चित विषय मोह कृत कर्म बहारन जनहित
कबंध ज्यो रूप आपलहि सा बरिव कृत करम नास हित राम के कहे विरुद नर हर सुकवि ३९ ज
हसउवाच सवरी परम तपस्वनी रहत नियत व्रत नीत सीता को कबु सो ध्यसो उनिक बुक रिहै स
प्रीत ४० कहो जहसउ नजोर कर सुनियै हित उपदेस पंपा सरवर तीर प्रभु सुत्र गिर मूकसुदे
स ४१ परबत तिह सुग्रीव कपि वस्त बाल भयवीर सखि वबली मुखचार संग सेवक हनूसधीर
४२ सषा अग्नि सुग्रीव सो मित्री करीयै राम मरकट जुथ पजूथ मिल करियै सिध सुकाम ४३ कै
है सीता षोजत हा उरतीन कुपरजंत अखिल राम प्रभु क्वक यह उन तै अगमन अंत ४४ कत
प्रबोध रघुनाथ कह उन अपनो पद पाय वरषत तिगने उह षवन सुत्र रथ वह्नौ सुजाय ४५ जाय मिलो
त्रिय बधु जनि अपनै वंस अधीस ऐसे राम दयाल अति अधम उधारसौ इस ४६ अथ सवरी प्रसंग
छंद प । दर्सन हिसग वनै राम देव अति विरह दसा आपत अजेव पंपा सर विश्रम तीर पाय मातंग
तपो थल राम आय सिष्य सचेस जट जूट साज कारना चूत हित देव काज कोदंड बांन करिक
स निषंग अभ्यास जोग वन वसन अंग नवलद य रूप धित गूढ भाव आराध करत नव सुभ भ्र
माव सीय षोजत आए भ्रात संग अविलोके सवरी बिब अनंग इह आतुर सवरी सुष पाय
सो परी पाय सा तिक सुजाय आनंद नइन जल कच त न्हार प्रस्न लिब रन नवनई पार विधवार व
रलीय चरन गारि अविलोकत आन बारबार पधराय राम अम्भु नीत विसतारे दर भासन विनी
त इह बेव राम सानुज अनंग अविलोकत सवरी अंग अंग उतमतरु पल्लव दिव्य आंन उन अध
धरे अत हित वमान प्रभु काज प्रथम संचित सुजाय इम्ह तम ई स्वाद फलद एआय तरु तु साव
सन अंब रस वलाय विस्तार पवन लेले बजाय रघुनाथ न्हसकि य फलर साल देवाधि देव दीन
दयाल सुरव दत धिन सवरी सनेह अविलोक कृपा रघुनाथ एह मह जिहा उरवजे तव भू
ल सवरी फल षात जु स्वान कूल अपले स्वर वन भोजन अघाय सवरी कह पूछत नये सुजा
य श्रीरामवा वन सवरी कार न कवन वास किह हेत वसी यह साव कास सवरीवाच करिजोर
कहत सुनियै कृपाल देवाधि देव दीनन दयाल कृ अधम जन मम सवरयेह हे ताकु मे त्रिय
आसु चिरेह श्रीरामवा । सुन सवरी मेरै वैन सिध प नजुक्त वेद समृती प्रसिध नवन्हु तसु साधत

नक्तनाव| समस्वांतसदास्वातिकसुनाव| कुजमोहीनजानकुवयसकाज| चातुर्जकला
संपतिसमाज| मायाग्रजितमनमांनमार| गुरगिनेसबनसहिरकुंगार| अदिमतनदिखावे
कबकुअंग| परहरेसंगविषियावसंग| दिनदिनजानजिदलछहान| मातासमजुवतीसबमा
न| सबजंतुब्रमदेखेसुनाय| गहनगरवासवावनविहाय| सोनक्तगिनतकुसाधुसंत| उबाद
सुक्तजीवनहूअंत| सुनककूनक्तनवधासुनाय| लषतलईहैत्रचितलाय| गिनप्रथमनक्त
सतघरससंग| अघनकुपाथवरतजुअंत| ममकथाश्रवनमनमोदमांन| जगनक्तनएहूसरी
जांन| संजुमसुरूपदकरेसेव| नक्तयहतीसरीगिनसुनेव| तजकपटकरेममगुननगांन| मनला
यसुवोथीनक्तमांन| ममंत्रजापविस्वासमांन| विधपंचमईहनक्तीवषांन| सबजावजुसंजमध
रमसाध| यहसमकुकुपष्टमनिरुपाध| संसारब्रममयजानसंत| इहनक्तगिनकुसप्तमअनंत
सुनजथालाजमानतसंतोष| आवहीनक्तइहपईअदोष| बलछदरहितअंतरअधीनह
रषनविषादमनअनमलीन| विस्वासएकममनहिनआंन| नवमीसुनक्तजानकुनिदांन|९|इसा
दकुसाधेपरमप्रेम| नहिनारपुरषकारननेम| जपहोमदांनतपनियमजाग| अधियनवेदवनव
सविराग| इवकरेसबेएनागहीन| पावेनफलदिजदपिप्रवीन| इहांनहीनउद्यमहुतीयआंन
परलोकहेतपावदिप्रवीन| इहानहीनउदिमहुतीयआंन| परिलोकहेतपावदिप्रमांन| त्रियपुरषवा
पितिर्यगकुजंत| इकनावसिधइहांआदअंत| सोइनावसिधतुहिमहअनीत| परलोकहोकुममद
रसप्रीत| सवरीवा| करिजोरकसोसवरीसकांम| रघुवंसतिलकइहसुनकुराम| छंदब्रअद्धरी| म
हारिस्सइहांवस्योगुरमोरो| अतुलतेजतपबलतिहकेरो| कालबकुतगुरसेवाकीनी| एकदिवतदा
सत्वअधीनी| करतगवनगुरब्रमलोककह| मैबिषादकीनोतबमनमह| परमदयालदयामोहिदे
षी| विप्रदईसिषद्याविसेषी| महरिषोवाच| देवआयहैहैतनदसानन| कहिनिसनयरहितोलोकांन
न| सबरीवा| बसतइहांमोहिकालविहाए| नलेआजसाधनममनाए| देवदयालदेरसमेदेषे| बेद
वचनमनअगमविसेषे| ईहांगिरमुकनिकटहैआगे| तहांसुग्रीववसतग्रिहत्यागे| रिषब्रनावनि
रनयवहगिरवर| सर्नसुताकेकंवकपेस्वुर| बालनिकालिदयोवहबांदर| वनवनन्रमतसंगमं
त्रीवर| नासोजायकरिकुमित्राई| वेदेहीसोदेहवताई| कछुबिनयहांविलंबनकीजे| देवमोहि
अबसदगतदीजे| कविरोवा| कावविघलसंवयतिहकीनो| नियतचितातिहरचनवीनो| सवरीके
तपवेसतिहसाला| उवीकलेवरज्वालकराला| कृतबंधनजरगएअकामा| विमलसरीरमुक्तन
ईवांमा| ऊरधरिरामरूपछबिअधय| मनकुसुधतनचौकुदनमय| दुहा| तिहजोगानलजार
तन| कीनोनस्मअकाम| मुक्तनइसाजोतमिल| रांमरांमकहिराम|४७| जोगतउरलनजोगतै
कीनेजतनअनेक| निहतिजोनतयापविय| विलसतसदितविवेक| छपे|| कवत|| जोगानलउ
पजाय| जतनसवरीतनजास्यो| पावननक्तप्रसिध| अंतबिनरामउचास्यो| अधमजोनअसमथ
करमउतमतिहकीनो| दयारूपदेवाधदेव| दांनअमरपददीनो| कहिविजयकीतनरहरसुक
वि| अमरवृंदजयउच्चस्यो| वर्षाघसपनअकासवहि| कतत्रलोकउबवकस्यो| अथसवरी
परलोकप्रापति| छंदब्रअद्धरी| अतहीविषादगवनकियआगे| गिरकंदरवनढूंढनलागे| इहा
पंतुपंपासरवरआए| सुषदविलोवतवोरसवाए| सरमृजादसरनरूहसोना| सुबिबनिरषमद
नमनबोना| मंदसुगंधचलतमिलमारुत| तहासुनविवधसुहावनषटारित| रंगरंगपजवमिल

मंजन सोरंजसुमनअमलफलसंचर वारगुहरवारजविकसांही मिलमधुमतजुभ्रमर
भ्रमाही करतमधुपजंकृतकोलाहल जलदवितानमनकुछायोजल मीनजातनिहवि
हरतअनमित आपआपकीडतउछवअति मकरयादकमवीअनमांनहि जलचरजातअ
नेककोजांनहि दारुनरवसुनीयतुवरकुंदिस वनकुआमरटतवरषावस पंकुमहिषवाराह
जंतुबल विहददेहमातंगमाहाबल जहांतहांगजमदमोषसुगाजत सलिलअगाधनमंजनसा
जत ववरीगायगवयमृघचित्र जातअनेकअगन जियजितितित सींहादिकजेनषीपलाह
न विग्रहविसदविषमषगवनवन जलपंषीहिस्यादकजेते आकृतवरणनेकुनएते तीरतीरमु
निबृंदतपोथल मिलमषधूमगिगनधुनिमंगल प्रथमविलोकपंपासरपावन सजलतीरगिरमूक
सुहावन सबरितुसुषदअगाधसरोवर नाचतमत्तमयूरनिरंतर कवत तहांसुषदसरतीर नि
कटगाढेरघुनंदन कविनविरहज्वालाकराल संतापततीतनपरसरामतनपावन असहतपन
योयोजुआतुर पवनजासरजरत कंफलीनीपंपासर सुध्कियोसरोवरअनलसंग विगतवरहज
लजंतुवर नतुनीरसत्रसतपत्रिनही फरफरायजरिजरिसफर १८ दुहा अवनविलोकतगमअ
गम वनवनअदविसेष ककुअनपावतज्यांनकी उरसंतापअसेष ४८ ईहआरुनसमियो
अषिल धूरनजयोउंनीत कवनरहररघुनाथकोसत्रुहरनवनसीत ४९ इतिश्रीचतुर्वीसा
वतारविरचेमहामुक्तमारगेपोरषेरामायणे भाषाबारवनरहरदासेनविरचितेआरणयेकांडसंपूर्ण
अथकेकंधाकांडप्रारंभ कविरोवा दुहा अबकेकंधाकंडयह वरनतजुतविस्तार रामविरह
पयूषरस आतमहितउधार ५० कवत मारुतजातकोमिलन प्रीतिरविसुवनप्रकासन वस
नदरसवैदेहि सप्ततरुताडविनासन दुंदहेहदुछवन बांनउरवेधनबालिय श्रीयुतराजसु
ग्रीव सहितताराकोमाश्रिय रितुउनयमबरायगिररहन महाजूथजुष्यूपमिलन मैथलीसो
धहितबलीमुष चकितवीरचकुदिसचलन १९ सघनसांमतनसुरंग बाकुआजानुमहा
बल ध्वनीवरविज्ञानध्यांम रक्षकदुजगोकुल मायामानुषवेष धरनधरधरमउधारन विहत
विषमसमाविष वनवनहिविहारन अधरोइपहरनजेषजुअतुल सूरवंसअवधेसमक सुजग
तहिदेननरहरसुकवि तंनमांमिरघुकुलतीलक २० दुहा कोसमात्रविसतारक्रम पंपासरसो
पांन तासनिकटगिररहूकतहां परबतमहाप्रमांन २१ अपरदिवसरघुनाथहदां सममुनिवे
षसुदेस सानुजसक्तितचापसर परबतमूकप्रवेस २२ तिनहिदेषसुग्रीवतब मनमहबाल
प्रमांन भागगयोगिरमूकतै मतियावलजयमांन २३ मित्रीचवहनुमतमिल सोवेमनसुग्रीवक
पटबालरिहनेषकरि सोआयोयहसीव २४ सुग्रीववच छंद संपेषइनहिउरउवीसूल
ममचितनयह गहरातमूल केवेषविपरजयकियेबाल चितवैरमानआयोसुचाल सबल
योबीनमोहिराजसाज कहुतदपिसरेहमतेनकाज रिउअमनसेषराषहिनराज इहअंत
अविषवसहेअकाज तिहवेदविदतहेराजनीत निजकाजकरतनीतकुअनीत प्रथ्वीसु
सत्रुउनसमयपाय अतिबलीअसंकतइहांजुआय हनमतजाकुतुमविप्रहोय करियेनिदा
नइहहेजुकोय सोउष्टजुपेदेषकुअसंत तोकरकुहसंसंज्ञातुरंत हसिहोतुमकिकु
पेचिरतहोय करिहेनततोहमत्रासकोय धरिविप्रभेषमारुतसधीर राघवपहआयोमहा
वीर कियरामदेवकपनिमसकार उनविजयमंत्रआसिषउचार हनुमंतवाच रसवीरनयनस

न्यासरूप सतनिद्रपनावश्रतिमासरूप जटजूटजदपिसिरछत्रजोग्प वष्वीपत्र्यंगग्हुरनवियोग्प
तनजोतहोतदीपतिदिगंत अवतारउरबतुमकोअनंत जनकरनसरननासनजयंत रविकोटको
टआभारजंत नरनारायनतुमहीनिदान नुवनारहरनअरितिमरत्तांन किऊंकारनमनुजाका
रकीन नरनाथनेषनिह्सकनवीन तुमकोनदंरुवनकवनकाज रससोकलीनअरुविकराज
श्रीरामलछमनप्रतीवाच सुषपायरामकहिसुनकुसेव विप्रयहआदिविदितविसेष सबविद्या
पारागतसुजांन उनिकहतवचनसोपेषमांन श्रीरामहनुमानप्रतेवाइको कुजसुनकुकसौत
रामदेव अवधेसपितादसरथअजेव ममरांमनामविश्वहिविष्यात नटमहावीरएलषनभ्रात
पितुअज्ञाहमवनवासपाय आश्रमाकृतपंचवटीहिआय मैथलीसंगममधर्मवांम निश्चारह
रीसीताजुनांम सोतनतफिरषोजतसषेद कुजजांनत तोककुंदेऊभेद तुमहोकोअपनो
मरमतेत सोहमहीसुनावऊब्रमसंत हनुमतवाच मुदिजातकुमारुतबलअमाप अंजनीगरभ
सिंत्रतआप हनुमंतनामकृधरमहेत सुग्रीबहूतमनकृमससमेत कविरोवाच कियमारुतअपनो
तमप्रकास विष्यातरूपवेदनविसास हनुमतवा· सुग्रीवनामराजाकपीस सोउवसतइहागिरमू
कसीस करिधीहभ्रातदीनोनिकार निसंकबाललईछीननार सोईहांपंचमंत्रिनसमेत कैदीन
रहितहिनासहेत सुग्रीवसषाकीजेसनेह ईहसुतमारिअथयजअरेह याकीत्रियाकूदेहुआं
नपनरोपकरूवाचाप्रमांन सरणतुमविजयपिंजरसुभाय राजाधिराजरघुवंसराय तोसिया
सोधकरहैदिगंत करीयैसहायउनरमाकंथ श्रीरामवाच ईहदीनबंधुबोलेदइव अबसषावेग
मिलवऊसुग्रीव कविरोवा· हनुमंतसंगतबसुरनहेत सानुजप्रभुगवनेधर्मसेत रिषमूकअंग
तहांआयराम विजपातकरतजुतविरहवांम दुहा कियअपनोउधारकप प्रभुकोकाजप्रमांन
हनुमतसुग्रीवसोमिल्यो पायोअतिसनमांन २५ कारनआगमरामको सबैकहीसमुझाय म
एमनोरथसिधसब सीतानाथसहाय २६ सुनतमात्रसुग्रीवसुन दोरउठेसानंद दिष्यनएरघुदे
वतहांदूरगएदुषदुंद २७ कपितबदंडवतमकत आनंदउरनसमाय आयसमुषअवधेसयह
लियउठायउरलाय २८ उपजेसात्तिकभावअंग दऊघातुलकतदेह सीतापतिगिरमूकसिर
कोसुग्रीवसनेह २९ सुग्रीववाच·बंदबअदरी लागचरनकपिकहिनरलोचन सुनहूरांमप्रणता
रतिमोचन समयएकगिरमूकअदग्निर बैठेहमतिहतांषटबांनर नभमारगकोऊपरवसनारी
दीनभईअतिजातदुषारी रामरामहारामलगीरट पटदूपरतिहकारद्योपट पटनूपरसोदेहम
पायो ईहापवनसुतआंनदिषायो कविरोवाच लषसीयवसनलायउरलीनो देवलोकलषनकर
दीनो नदिनिरिनदनदेषदहूभाइ षानसमांनमनकुनिधपाइ नइवतीतविलोकितभूषन सुरकभु
रकवहरातकऊनमन बूझततिरतज्यो घटिकाबेली आंनरहीसीयआसअकेली पवनहूतमंग
गलपरजारूपै राममुककवतहांपवधारै अनसाषमित्रत्वउपायो भावषरसपरजोमनभायो
वढविस्वासउरनसुषवाढै कहिकहिदुसहनाटसजकाढै श्रीरामवाच हसकहिरामसषादुष
हरिहूं करिबधबालनिकटककरिहूं मारोबालभरोसोमोदी नवसुग्रीवराजद्योतोही इहां
मित्रसंदेहनआनकू जोममवचनसुनिश्चयजांनहूं कहीयेअबअपनोदुषकारनवसजि
हत्रासनमतहौवनवन सुग्रीववाच कहततहासुग्रीवजोरकर प्रभुतेअगमनलोकइहैप
र सुनऊतथापीकहांकबुस्वांमी जगतवरामवरअंतरजांमी वहीबालकृपअनुजमहाबल दैत्रा

ताकपसंगअमितदल। उरष तनआकारअबंधा। करतअटंकतराजकेकंधा। जूथपजूथक
पीमिलजिततित। मित्रीदितहनुमंतमहामत। अतिबलदेतउदनामाइक। हवीउपापीजि
नहिंसक। मनमतवाह्योगरजअमांना। मांनतकाकुनआपसमांना। जुधजुरतजिहजिह्वतजा
ई। पायविजयअहिमतइधकाई। जिह गजमरांमहाबलजान्यो। मोसोवहनिरदेमनमांन्यो। अंत
कघारउकास्योआसुर। आयोसुनतधरमउहांआतुर। उदीवाच। मेरेनुजाअजातनिरनजम
मोहितुमसोवनहेरिनसंगम। कालबलीतुमसेनहकोउ। सेअतउपजपचतकरसोउ। जमराज
वा॰। देषसमयनतरजमहीनो। कुंनयोजरायसतबलहीनो। तनजोबनधनमदअनतुल वि
वधबालतुमउदमहाबल। इहहनुवचकबलीनटऔसो। तुमसौंमिरेबालकपतेसो। मिलत
बलीमुषदलअनमिधा। कपीवहराजकरतकेकंधा। वेगजाऊसबबाऊविकलपन अबस
ग्रामअवततमसोउन। सुग्रीववा॰। इहसुनउधकेकंधाआयो। बोहसधीहगरजमनबायो। देत्य
अरधनिसमदोहारे। भगटबालहीबालउकारे। कहाविंयनमिलगढोकातुर। वृलसिष्टकक
रीअवांनर। महिषरूपषलबलअनमंधा। कुटिलषरोघारेकिसकंधा। समयसकसुतवीरसंना
स्यो। विषमबेतवढडुदवकास्यो। दकूसग्रामममच्योतहांदारुन। धावदावकीनेमहाअतिघन। १
करिअंगसोउबालपबास्यो। मांनकुरजकवसनसिलमास्यो। कपिलिफस्योउदकलेवर। जोजन
अंतगयोजोजरजर। परिवतरिदसमूकसोपरियो। असुररुधरिनेजाउछरियो। तिहगिररिषीमा
तंगतपततप। जतीसमूहकरतजहांतहांजप। परबतरुधरउवलअपावन। आसुरमृतक
कोतनजोआवन। मुनमातंगजयोउदसतमन। श्रापद्योताहीबिनअसहन। इहवकारजिहमृ
तकचलायो। वहमरिहैयहपरबतआयो। इहगिरमृकबालजोआवे। पापीतिहबिनपंवतत्वपा
वे। असुरहिमारबालघरआयो। वाजावाजेवीरवधायो। डुदउनमायावीदारुन। पितावयरला
ग्योसोकृतपन। वहषलनितसरोसहआवे। पकरिबायसोइवानरघावे। उनिपरबतकंदरमह
पापी। पेवरहेहारेसिलथापी। कंदरावहपावतनहकोइ। हवकपरसोनिरुद्यमहोई। निसासंघा
रकरेवहनिसवर। वासुरकंदरलहेनवादर। बलविक्रमजद्यपीबुधबोधा। जगतेअजयका
नतेजोधा। मिलेबालहमसचिवमहामत। ऐकसमयबेठेमिलहनमत। बालवाच। नीतनिउनत
मसबदलनाईक। बलीविसेषकहोयहबायक। काजविचारसमयअबकीजे। सत्रुनपरिन
वसबलसहीजे। सुग्रीववा॰। एकनिसामुषगुढगेरगहिकपिराजाबेठेमित्रनकहि। ईहांअसुर
मायावीआयो। बालबकारसुउष्टबोलायो। विषमजुधजोआसुरवानर। जयोसदेहदकनस
मरमिर। मास्योबालअसुरसोमुष्टीय। जुधबगऊग्पेलिअपनोजिय। उष्टनागपैवैगिरकंदर। बा
रसिलालेदीनीउरधर। संगहमबालहनुमतनिसम। मिलदोरेसबसोकतकमकम। देषविक
पदकिदरवारै। वीसविसेयामांऊविचारे। मासअवधदेबालमहाबल। सोतिहधसोवारटालीसि
ल। बालवाच। तुमसबरहकुवारथिततोलं। जतनकरकुहमआवहिजोलो। कोउपलआन
मुदेकंदरताते। तमवसरेनहीनीतर। कविरोवा॰। कहोषवेसबालतिहकंदर। सनमुषअसुर
आयजुरसमहर। दावघावबकुनऐदकुनदिस। वीसोमासवसेषअविधवस। धरबाहिरनी
कसीरतधारा। नहिनबालजांनोनिरधारा। अविधवितीतबालनहीआयो। सवहिनकोमनसंभ
मआयो। कपिपतजूम्यो। निश्चयकीनो। भ्रातसुग्रीवकरुनारसभीनो। दईसलामिलकंदरघारे

मारयौबालसरहमाहीमारै ॥ परमदुषितह्वाबालतकारै ॥ ईहसबहमकेकंधाआए ॥ सबदिनकेम
नसंत्रमझाए ॥ बालमरकारुनतजुबताए ॥ घरघरसोचडुभतरोवतघन ॥ देषीनजायसमयसोदारु
न ॥ कर्यौबालकोअंगदमृतकम ॥ जथाधर्मसबसंजुतसंजम ॥ भयोविरदईतनसौनारी ॥ दिसअरा
जकलोकदुषारी ॥ सजनसुभटमित्रीमिलदिसब ॥ तंतविचारमंत्रकीनोतब ॥ राजभारअंगदअवि
धारै ॥ बनबनबालविरत्रविचारै ॥ हनुमंतवा॰ ॥ कह्यौमारुतमेरोमतकीजे ॥ दिसराजसुग्रीवहिदीजै
अंगदवयबुधबलथ्धकावहि ॥ तोलाजुकमसुग्रीवहलावहि ॥ लोकवा ॥ कह्योसबनइहमतअति
नीको ॥ करीयेसबसुग्रीवहिटीको ॥ मेयोबातसुनतमनमांही ॥ निश्चैसोभवकह्योसुभनांही ॥ सुग्रीववा
होतबनव्यौराजनहीलेऊं ॥ जोहवकरिहोनिकसपैजेऊं ॥ इहजीयतकबकुबलआवै ॥ बालमार
मोहिजेतवजावै ॥ निश्चैबालमरयौकोजानै ॥ ममकरयहकुततेभनमांनै ॥ त्रकालज्ञहनुमतमहा
मत ॥ बचनसरुरअरुवहेवीरवत ॥ करगहिहनुतिलकमोदिकरियो ॥ सबदिनतबबलबुधअनुस
रियो ॥ कीनोइहयनकपसबकोई ॥ हमहिसुगदेएकमतहोइ ॥ परिजागतसंपतमैपाइ ॥ भूपराजभा
मनमनभाई ॥ विनवदयोमोहिसबनवीचारयो ॥ बालअंगदगोदहिबैगरयो ॥ विनवपायमासद्वैवीतै
जुधजुरेडरजनमेजीतै ॥ मांहिविवरमायावीमारयो ॥ निकस्यौबाहिरसबननिहारयो ॥ आयौबालमै
सुनीअवानक ॥ घरकमोहितनकंपितधकधक ॥ सुनतबचनमनुवज्रपरयोसिर ॥ तजसबहोभागेअ
तिआतुर ॥ सचिवचारहनुमंतसहाई ॥ एकुभ्राजामिलेमोहिआई ॥ भयकंपितहमसबमिलभागे ॥ ल
षेबालउवपीछेलागे ॥ भ्रमतभए गिरगिरकंदरभय ॥ मनडुरहेकीटभ्रंगीमय ॥ यहांरिषमूकसरणत
बआए ॥ यांनविस्वाससासजहांपाए ॥ पछुकोदरसआजहमपायो ॥ उरआनंदभयोमनमायो ॥ अहि
निसरहतत्रासमोहिवाको ॥ त्रियलईबीनमहादुषताको ॥ मोहिसनाथकरिबालकुमारकु ॥ नदधसो
कबुहतउधारकु ॥ श्रीरांमवा ॥ भयौसषालहमरुतुमभाई ॥ सबविधकैहैतोहिसहाई ॥ सुग्रीववा॰ ॥ बकु
रसुग्रीवबचरनग्रहबोले ॥ देवबचनहिमगिरनहीडोले ॥ वयकिसोरतुमअतिबलवानर ॥ नहीसग्रांम
उनहितुमसमवर ॥ देवपतह्वाहेमनमदीजै ॥ पायभरोसोचित्तपतीजै ॥ सातताससबेधकुजोइकसरक
रयहिमारकुडुधकलेवर ॥ कविरोवा॰ ॥ वदनभफोरिचरनज्योबावन ॥ ततछिनलीनभयोबावनतन
बाढधनुषतहांबांनचलायो ॥ अगमताडहतपछुकरआयो ॥ मारफारपरबतछिनमाही ॥ संपाज्योफि
रनभहिसमांही ॥ पछुलेधानपअग्यपहारयो ॥ डुददेहजोजनसफारयो ॥ देवअग्नुतपराक्रमदेष्यो ॥ वि
स्वईसपरिब्रमविसेष्यो ॥ श्रीरामवा ॥ मनसुग्रीवसंदेहनमांनकु ॥ जोअभिलाषसत्पसोइजानकु ॥
बंदप॰ ॥ उपजतमनमेंरैआनिएह ॥ सुग्रीवसषासुनिनिसंदेह ॥ जगविदतजनमरघुवंसजांन
अवधेसयेहउतिपनआंन ॥ अग्निदेसाषअरुदेवऔर ॥ अविनसोकरीमित्रीकिसोर ॥ मारिबोबकु
रिमरकटमलीन ॥ देवहतनयोअरुजेतुदीन ॥ बंचलसभावअज्ञांनचित ॥ निरलाजनिठरअनसो
चनित ॥ करियेबधवानवारुकांन ॥ अपिलोकलोकमोहिलगेआंन ॥ जोकापवादतैजगतलाज ॥ इ
हसमकहोतमनचकितआज ॥ करिबोत्त्य।पीअबमित्रकाज ॥ अरुयहौसरनतैदीनआज ॥ हं
सरविनयपिजरसुनाय ॥ सोभाषितनिगमागमसुनाय ॥ अपराधीतेरोबालआहि ॥ तुमजायबका
रकुवेगताहि ॥ कविरोवा ॥ ईहांकेकंधासुग्रीवआय ॥ सबकोधबचनबोलेसुनाय ॥ बालजबलष्यो
सुग्रीवबैन ॥ निकसौसकोपआरक्तनैन ॥ जाजुलिभयोदरुवीरजुध ॥ हतदावघावअतबल
सक्रुध ॥ मुषरूपअेकआकृतप्रमांन ॥ बधमित्रदोषमोष्योनबांन ॥ मुष्टहकरयौसुग्रीवमार ॥ गोरू

द्य बालमिं दरस्मेकार। सुग्रीवहोतमुषरुधरआव। सोभ्रमतदेहआयोसुदाव। सुग्रीवोवा।
छंदक्अक्तरी। सत्रुहाथपत्नुकहासघारऊ। ममबधकाजतोआउनमारऊ। पत्नुकरमरूसहग
तपाऊं। जानअनंथानर्कहिजाऊं। श्रीरामवा। देषेतुमएकाकृतदोऊ। सोअवनयोमोहितातेसोऊ। मित्र
घातपातकमेमांन्यो। तातेरुयोधनुषसरतांन्यो। संकेतिहमोषेनहीसायक। प्रियजनघातउसहयह
पायक। करिऊंविक्रकबुलहसनयाकै। तिहविस्वासहतोपलताके। कवत। लषनआपनीकुसमर
साला। मेघसुग्रीवकंवनमाला। करिवजविक्रपतीतजुकीनी। देवसुग्रीवहिअपादीनी। हहसुग्री
वकेकंधआयौ। सुनिकुपवासोभत्नुबलपायो। वहिरसवीरनयोरोषारुन। उसहबालउग्रोषल
दारुन। तारावाच। ईहतारापकसोकिरअंवर। पत्नुसुनीयेहमंत्रबुधपर। अवहिसुग्रीवराजयपा
यो। अतिबलसफबकुसोफिरआयो। उपजोकोउसहायकवाके। ततबिनईहआयोबजनाके।
बालवाच। त्रियासुनावअकारनकारैं। विस्मयकरतरजुतेविषधर। ईहसहायविष्णुमहेसुर। सुपे
करैतिहमारूंसमहर। तारावाच। तबफिरकहोताहित्रियतारा। सुनऊनाथममवचनविचारा।
गएअषेटककीडाअंगद। वनमहविहरतबुधविसारद। सुनीनिषादनमुषसनैसी। तत्कहत
ऊसुनियैतैसी। जगपसधदसरथकेजाए। रामलषनईहकाननआए। तिनसोकरीसुग्रीवमित्राई।
नयेसहायवीरदऊंमाई। उनकेबलहहगंयहआयो। सबपसंगमैतुमहिसुनायो। कंथसमयल
षईहमतकीजे। अबकरग्रहिभ्राताअांनीजे। तजिविरोधवयररसलागऊ। लवअपनोहितकारिज
दी लागऊ। देसुग्रीवजुवराजपंनी। बालगोदअंगदबेगांनी। उनितुमकरऊरामपदपूजा। देषऊयह
उपायनउजा। वरनयहेरोघवहितवाहत। होतदयालवचननिरवाहत। तिहबिनरुदतवरनगहि
तारा। त्राहित्राहिवहननरथारा। लएउवायअंकनरिलीनी। षेमजुक्तकहिवानपवीनी। दंपतिमो
हिनहीकारूनर। सबमेदेषेबलीसुरासुर। काहिदयोमैपापीकातर। कैसेलाउताहिपकरकर। वि
स्वविदतरूबालमहाबल। उरगमजूथपजूथमिलहिदल। कऊकदापीवनजोकातर। उदय
नहोहिततोरविअंबर। बचनदीनजोबालहिबोलै। फिरैकमवअहिधरगिरडोलै। कविरोवा। म
हलपबोधबालनहमान्यो। अंतकग्रसतगरनउरआंन्यो। सिंघनादकरिउठ्यो सक्रसुत। अतिब
लअतुलपराक्रमअद्भुत। देषसुग्रीवहियोदारुन। मानीनहिनरामनयकबुमन। जुटेपरस
परदऊवैजोधा। कालकरालमनऊनयेक्रोधा। निरतकरतअतिनादनयांनक। धसकतधरन
लोकउरधकधक। फिगतसुग्रीवरामजबदेष्यो। विटपओटपत्नुदयाविसेष। करिकोऊंतांनक
तकुहल। मोष्योविजयविसकषमहाबल। स[illegible]नमुषलझोबालउरसोईसर। रुधरवमतधुक
वीरपस्योधर। ईहांदयालरामवहांआए। सरधनुपांनसरूपसुहाए। धरिजटजूटवसनवनधा
रे। मंफितकटितुनीरमुरारे। वांमपांनधनुसरबियैसोहत। मानऊमदनचराचरमोहत। वलच्
कुटीअंबुजदललोचन। वक्षविसालविमलमालावन। तनघनस्यामजान्हलंबितभुज। पकु
लतमुषरोषारुनपंकज। ईहिसअनुजवित्तअनुमांनी। दिपतसुग्रीवमध्यउरसांमी। गोअवेत
मुरबाजबजागी। अरुननईनिकपवरषतआगी। महानादकीनोतहांमरकट। अविनसकंपअ
दघटओघट। हिमस्वरूपरांमतबदेष्यो। वद्योबालउरसोपविसेष्यो। बालवा। बालवचनबोलेत
बबेषम। अतिसक्रोधपजरतउरआतम। रामकाजमैकहाविगास्यो। कहाअंगालसुग्रीवसुधास्यो।
रघुकुलउपजकहावतराजा। करतनीतयहधरमअकाजा। समरलरतहमदऊवैसोदर। तुमतरु

औरबिपेएकंतर॥ कवनधरमयहवीरअकारन॥ मिलदेजातएककोमारन॥ बानसाफमोहिसमुष
बुलावत॥ पोरषततोपरद्यापावत॥ कैतरुऔरराममोहिमारयो॥ यामहिपोरुषकवनउधारयो॥१
नकरकहासुजसतुमपायो॥ निसचरज्योसरमोहिनसायो॥ दुषनेदतुममोहिनदीनो॥ कातरयाहिस
हायककीनो॥ त्रियाहरनजोवसतपंचवट॥ लेगयोलंकदसाननलंपट॥ जगतविदततुममोहिनजांन्यो॥
पीडतविरहनतत्वपिछांन्यो॥ कुलसमेतरांवनजोकंकर॥ आनतबांधरजुबिनअंतर॥ विषमलंकसं
जुतबैदेही॥ तुमहीआंनसूपततबतेही॥ तुमहिकहतजगजीवचराचर॥ धरमपरायनरांमधुरंधर॥
मोहितुमव्याधकरमकरमारयो॥ विदतनजक्तअक्तविचारयो॥ दुहासोरठा॥ आदमध्यअवसांनहेतऐक
तुमसोकहतसबकहसदासमांन॥ हत्योमोहिअपराधकिह॥ ३०॥ श्रीरामवा॰॥ छंदद्रुअडारी॥ हमरघु
वंसधरमरषवारष॥ धरमपरायनपापप्रहारक॥ नीततजेतिहमारनसावहि॥ विषजुतधरमीताहिव॥
सावहि॥ दुहिताबहिंनभ्रातसुतदारा॥ सदाअरूपमवेदविवहारा॥ इनकहजोकोउजजैअग्याना॥ पापी
कहीयतवेदपुराना॥ पापीतेलघुभ्राताकपतनी॥ ताहिविकारजजीकरअपनी॥ जथापराधदंडन्रपदे
ही॥ ताहिनदेहीतौपातिकतेही॥ पापदसाअंसन्रूपतिपावे॥ ताहिप्रजाकहपंथचलावै॥ दंडउसहता
तैमैदीनो॥ कायकदंडउचित्तयहकीनो॥ कविरोवा॥ प्रगटेबालउराकृतपावन॥ मुर्छागईग्यांनउपज्यो
मन॥ बालवा॥ देहकदंडदेवमोहिदीनो॥ नियतप्रमांनसीसधरिलीनो॥ कोऊदुरिवादक्रोधवसकीनो॥
नाथषिमऊअपराधनवीनो॥ कहककरैतोपेसंतापै॥ पिताप्रत्रकहितदपिजुपोषे॥ कविरोवा॥ बोल्यौबा
लदीनजबबांनी॥ इहांदयालदयाउरआनी॥ हमसुग्रीवसरनागतकेहित॥ बध्योबालतोहिरायोकु
लकृत॥ तनकरिअमरजिवावऊतोही॥ मरनक्वायबालनजमोही॥ बालवा॰॥ जतनकरतजवजन
वमुनीजोगी॥ व्रतसंजुततपविषमवियोगी॥ विधविधजोगप्रियोग्नवधावत॥ अंतकालमुषनामनआ
वत॥ सोइतुमरामदेहधरस्वांमी॥ मोहिदरसदियअंतरजामी॥ रामनांमजोकासीसंकर॥ सिववत
नरनमरनकेअवसर॥ नामडुलभतिहदरसननरहर॥ आगेकहांवनैईहअवसर॥ प्रभुतुममममनए
मनोरथहरन॥ देवसमयईहपायोदरसन॥ जगतईसतुमरघुपतजांनै॥ पूरनप्ररषजुवेदप्रमांने॥
तुमप्रसिधमापकतुवप्रांनी॥ मायाआद्यमइथलीमानी॥ यहममतुलबलीहैअंगद॥ प्रभुअपनोक
रियेसेवकपद॥ नाथविजयपिंजरसरनाई॥ ईहप्रतिपालकरिऊअपनाई॥ मोहिलकरऊकरु
नामय॥ जोतजारूयजन्मनयोजय॥ कविरोवा॰॥ सरकाढ्योजबसरनसहाई॥ परमुक्तिबालकपि
पाई॥ श्रीरामवावइहा॥ सरनागतहितसकसुत॥ कियेतवबांनप्रहार॥ सेवदलोलेऊसुषद॥ हमऊ
अवितार॥ ३१॥ कविरोवा॰॥ छपे॥ विषमबांनउरविध॥ बालरिणअन्पावानर॥ कैदयालरघुदेव॥ सुक
रकाढ्योअपनेसर॥ प्रगटग्यांनकीनोपयांन॥ अपनोपदपायो॥ ईदमांकमिलइदअंस॥ वप्रकीसविदा
यो॥ वाजेचलोकविधविधविजय॥ वदीकीतसीतावरन॥ सुजगतिप्रसादनरहरसुकवि॥ रामविजय
पिंजरसरन॥ १॥ छंदप॰॥ प्रभुसुनेबालमारयोप्रमांन॥ सबमिलेसुभटमित्रीसमांन॥ कलकजारवनंद्र
कारकीन॥ अतिरोषकीसगरजितअदीन॥ कोउकहैकरऊरदाकुवार॥ सुग्रीवसकलकरिहैसं
घार॥ प्रकारघाररुध्यतप्रमांन॥ थितनएसुभटसबथांनथांन॥ दीजिकपाटतबचतुरद्वार॥ कतजत
नमध्यअंगदकुवार॥ सबनगरअमंगलसहहोय॥ सुरडसहसुनौरनवाससोय॥ सिरमुक्तिकेसता
रासत्रास॥ उरहनतपांनमौचरतउसास॥ सासोकसिंधुबूडतसषेद॥ तबतोदिहारसिगारभेद॥ रिण
जुमप्रआयतारारुदत॥ तहांदेषवीरसभ्यासुवत॥ रजरूधरलितसोनासुनाय॥ विश्रामसमरपति

गहेपाय॥ हाथातनाथयहकवनहाल॥ सुग्रीवनिवारेहृदयसाल॥ पियचरनधरतरोदतउकार
मोहिधांननाथकिनचलेमार॥ अंगदनगरधतराजआज॥ कहुनाहिनमेरेइनहीकाज॥ सुनत
जरूदेहनरथारसंग॥ आनंदसहितदहिअनलअंग॥ करमीजतरोवतसबैकोय॥ सुनियतइ
कहाहारवनसोय॥ इहसमयरामतिहनिकटआय॥ रसरोषनरीतारारिसाय। ताराबा। निहतैा
जिहसायकधाननाथ॥ हथिकजुमोहिअबतिनहीहाथ॥ परिलोकजायपतिमिलसप्रेम॥ नित
करूचरनसेवासनेम॥ पतिनीबिनपतितुसहतपीर॥ वरततसोतउरजातवीर॥ पतनीउषसह
तजुविनापीय॥ समफिहैसुतीयहसमैपबीव॥ बालतुमनिहतोमारबांन॥ दीजेअबताकहिवि
यानिदांन। कविरोवा। सुनसोकबचनरघुपतिसधीर॥ विश्वासदेतजिहसमयवीर। श्रीरामवा।
पतिकाजरूदततुमकरिबलाप॥ वहपतिस्कौनमोहिकहहुआप॥ समफतपतजियधौसरी
र॥ सोकहहुहमहिधरचित्तधीर॥ जउदेहपंचभूतकवियोग्प॥ ततमांसअसथश्रोणीसंजो
ग॥ सबदेहपरयौतवअयसोय॥ कहुहतौजीवदेष्यौनकोय॥ भूगिगननीरमंगलसमीर॥ संजो
गपंचसंज्ञासरीर॥ संजोगजीवकेसोजुसीर॥ अबरोवतताकहिकैअधीर॥ हितजानतजोसब
थदेह॥ अतिजतनचलकुलेग्रेहएह॥ जांनतसबंधजोपैखुजीव॥ सोदेहनिक्रमायादइव॥ ताकेनरू
परेषानरंग॥ उपजैनमरैअमयअनंग॥ तिष्टैनजायसबदिनजुतंत्र॥ मांननैजतनकहुजंत्रमंत्र॥
निरधारबंफनहीउरषनार॥ वियरहतसर्बव्यापकविचार॥ सबंधसकलमिथ्यासंसार॥ विस्तारवि
वधसबौविहार॥ हैमनहीबंधनमोषहेत॥ चीकेजुसुन्नासुन्नवहैचेत॥ सनबंधनजीवहिकहुसरी
र॥ इककाजमरहीरोवतअधीर॥ कोजीवदेहकाकौकहाय॥ जगविदतनिकसकैविनसजाय॥
कविरोवा। प्रभुवचनउपजताराप्रबोध॥ सबलहैाज्ञानअज्ञानसोध॥ सोसुनतसबनकोगयो
सोक॥ लहितत्वसांतिजिनतयेलोक। छंदअक्षरी। देवसुग्रीवहिअज्ञादीनी। कियाजथाचितबा
लहिकीनी॥ करेस्नांनसुधिसबकोइ॥ हाथजोरप्रभुआगेहोइ॥ सुग्रीववा। सोकसमुदहिबू
फलस्वांमी॥ जगमोहिकाटकुअंतरजांमी॥ प्रभुममनएमनोरथपूरन॥ रामविनाकिहबालम
रैरन॥ देचरनमरैसिरदीजै॥ केकंधाउरपावनकीजै॥ अविधनाथवैठैअंगनइह॥ जनमपवि
त्रहोहिमेरोजिह। श्रीरामवा। सुनसुग्रीववचनतोमनसुष॥ रांमविहसिबोलेताहीरुष॥ नहीं
नप्रवेसहमहिपुरपतन॥ वरषचतुरदसवासउचितवन॥ अषिलराजकेकिंधालैअब॥ सक
समांनचित्तवविलसहुसब। श्रीरामलछमनप्रतिवाच। लछमनगमनकेकंधाकीजै॥ देसराज
सुग्रीवहिदीजै॥ पदजुगराजाअंगदपावै॥ करिहुविधानजुवेदवतावै। कविरोवा॥ ईपारामल
षनयहांआए॥ सचिवबंधुसुचढसमकाए। लछमनवा। इहगंरोषककुबनवितआंनहु॥ प्रभुअ
ज्ञासोउसीसधमानहु। कविरुवा। इहसंनारसारसबआंना॥ निगमप्रणितकरीविधनांना॥ लो
कवेदसुमतसबलीनौ॥ देवतिलकसुग्रीवहिदीनौ॥ पदजुगराजसुअंगदपायौ॥ विहतसुकंवगो
दवैठायौ॥ उपसंजुतअतितारादेषी॥ वीरलषनसिषदईविसेषी॥ सेवइहैतारासमुफाइ॥ रांमव
चनसिरलेहुचढाइ॥ तुमहिदोषयहवोरनतारा॥ वनतिर्यगजियनहीनविचारा॥ सबैयहालषम
नसमुफाए॥ दयोराजनीसांनवजाए॥ परिजागतसंपतिकपपाई॥ अविनराजश्रीयवियजु
तआई॥ लोसुग्रीवअंगदहिलषमन॥ मित्रीसुन्नटहनुमतमुदितमन॥ अषिललोकहरषतइहां
आए॥ लछमनरामहिचर्नलगाए॥ देवसुग्रीवसीसकरदीने॥ करिअपनोकपिराजाकीने। श्रीरामवा। उह

इहरघुनाथसुग्रसौ अगपादीअपनाय संपतनुकछुराजसुष जथाजुकयह जाय ३२ अपना
बकउदलबलअषिल सबवसकरकुअसेष वरषदिवपर्वतवनवाटेतेजवसेष ३३ इमकुवबर
षनगिरवसहि वरषाकालवितीत करहिवरषपर्यककबु सहिहेबिरहविनुसीत ३४ समयपा
यउद्यमसबै करिहुउचितकपराज तौलारसविलसकुअतुल रीतविविधसुषराज ३५ सुग्रीव
कहिकपिराजाजोरकर सुनियैरामसुजांन हेप्रभुवरषाकालइम मरकटअबलप्रमान ३६ देव
लबैआवहिसरद करिहैउद्यमकाज सरगमृतुपातालसिय इमतेआगमनराज ३७ कविरोवा एं
मप्रतंग्पाविजयरिव वरनकरीप्रमांन कविराजाअंगदकुवर आएराजसथांन ३८ श्रीरामप्रव
रषनगिरआगमन छंदभ्रमरी रामप्रवरषनगिरतहांआए अंगसुषदअविलोकसुहाए निर
फरजहांतहांसोभतनीरा विउललतासंकुलतरुतीरा मंजरउहपरंगसोरमिल अतिमधुमत्त
भ्रमतगुंजतअलि फलितईमृतमयस्वादविविधफल दुमभिलसघनछांहपल्लवदल सबसुष
उजतविविधविहंगम ईहाकतरितुवसंतकोआगम वसतअनेकजंतुतिहगिरवर चित्रविचि
त्रनषीश्रंगीवर काननगिरतिहवरणनकाई ऐसीबुधकवननकवपाई सिषरउत्तंगप्रवर्षण
गिरसिर राजतसिलजुकटकमणिकंदर सिलारतनमयइकतिहअंगदर नगअनेकमिलसोभा
निरझर वसेजहतबतेसीतावर वंछितसुषतबतेतिहगिरवर रितुरह्यांजुकरैरघुराई इह
गिरसोइसुषवरतैआई गीरइह रहतकछुदिनग्रीषम विरहसियाडुषसहिसहिवेषम इहां
उसहपावसरितुआई जोविरहीतिहसहीनजाई श्रीरामवाचकवत पंचतत्वमहप्रकृतिजु
वनतजिएकतत्वनय महीव्योमजलमरुत मनुकुवरततेजोमय वासुररजनीविषम व
हैसमकालविपतवस तरुकंपरफरपत्रतहानपाईबायातस दसदिसागिगनगरजितउसह
आगमरितुवरषानयो कीनौनसोधकऊज्ञानकी यहग्रीषमहूवितीयौ १ अथवरषारुतव
रनन श्रीरामप्रलाप छंदवैताल घहरातअतिघनघटासंघट स्यांमवरनसुहावनी दिस
दसऊंमिलतमप्रसरदारुन नयदविरहअभावनी धरनीरजिततितजलदधावत अन
लवसअतआतुरं गजमत्तमनुदलअग्रगामी अषिलअनुबलअनुसरं बगपंतिदंतसओप
उजल अविधसरनउदारही मदझरतवरषमंदमंदहि विरहीनयविस्तारही चपलाजुचकति
छुटतवरषी गरजगाजितगहनरे तडताजुलंबितरकिविभ्रम ध्वजाबकमनुरंगधरे कहुस्वे
तअंबुदस्वमरआकृत रूपबकधनुरंगए सिंदूरबिंदरअरुनसोभा मुदितघनमातंगए लगिव
जतघंटलोहलंगर किंकनीजुवकारनी दिसविदिससुनाददादुर फिल्लकफिंकारनी वटवरन
वानअनेकवादर अनलपेरतआवही वांनैतनरमनुवटकवाजी दौरिअयादिषावही च
ढिघटाकारीवौमवकुघां वालवमृवतुरंगनी गहरेनिसानसुगिगनगरजै औरऔरसुसफि
अनी बकनमततरुतरुउपतनजाल हरषमोरउकारही तेमनकुसदियावसनफहरि
त सेवघनसंवारही सावधांनजुकरितनबको विरहीतनुजोवनाय सरनवछनागुहा
सेवकु अंतनघनदलआय तनगोरवसुमतीअंकुरति नणवघनीलवनाय अतिलोलनद
हारावली श्रंगारसहिजसुभाव जुक्तवत्रचापपलासउहिपत सुनगनासासोह सुषसास
सहिजसुगंधमारुत वहितपतिहविमोह गिरअछितअंजनरेषदगजु कटाछिविडुतिकीन
मनुविमलथलवतुलवरजित प्रगटउरजसपीन करसुनगवरषाजातकुंकम विंदुराजित

नाल ॥ अतिअरुनगोरकयातअधुन ॥ सुसरजुनैनविसाल ॥ कवित्र वेनी ऊनीतकंबरी ॥ कुसम
कैनजुकीन ॥ छुटिअलकसुदृपमधारधुरवा ॥ नादमनदरलीन ॥ वनविसदथलजुनितंबवानि
क ॥ सहजअंगसुवास ॥ रसरीतवानीएकिछकारवि ॥ दरषतडितादास ॥ छूटिमलजलरद्दिचम
कन्दूषन ॥ अंगअंगअधीन ॥ करितटिहिवारधमेषलाकसि ॥ नानसरसनवीन ॥ कतिकंदलिवेन
जंघकोमलि ॥ रूपअनुसराजही ॥ कंकारपरमुषदादुर ॥ विवधनादसुंवाजही ॥ सोदेषलछमनऐजु
सुक्रत ॥ उन्पक्रतफलपाय ॥ हितमिलीईदहिमांनतीमनु ॥ वर्षविरहविहाय ॥ दुहा ॥ कहुलछमनप्रसं
गकहि ॥ कवनकटावतकाल ॥ रामतदपिसीताविरह ॥ वीततचौसविहाल ॥ ३५ ॥ कविरोवा ॥ छंदउधोर
॥ ईकसमयरघुकुलईंद ॥ नगसिषरथितआनंद ॥ सबनायततपरसेव ॥ नएलबनश्रुवतनेव ॥ ल
छमनरामप्रतप्रबोध ॥ इनुवरणधरमविचार ॥ उंनिकहकनकप्रकार ॥ आराध्यप्रतमाईस ॥ संबकरही
जनधरसीस ॥ दिढनावशूजदईव ॥ जिहतिरहिनवजडजीव ॥ त्रपनीतवरतवैराग ॥ विधयुक्ततत्वविं
भाग ॥ उनषत्रीधरमप्रकास ॥ वसहोऊवित्रविसास ॥ कछुप्रघलबमनकीन ॥ देवैसउतरदीन ॥ सबस
माधानसुनाय ॥ रससांतिक्रतरघुराय ॥ श्रीरामलछमनप्रति ॥ उअबरी ॥ देषलषनसियविनुउपदाय
क ॥ सघनबूंदलागैमनुसायक ॥ गहतैरउरंतगिगनघनगाजत ॥ विरहविजयवाजेजनुवाजत ॥ वऊ
घांरटतजुपिवपीक्वात्रक ॥ घावकरत्तमांनऊजियघातक ॥ मनवधघटेतमनोरथमेरे ॥ करिअभील
षदरीदीकेरे ॥ तरिकउरित्ततडितारईहरीती ॥ वगहिगुपतिज्योषलनप्रीती ॥ नरेनीरवारिधधरनघन ॥ सम
धपायविद्याज्यूसज्ञान ॥ दुर्जनवचनउसहसेदारुन ॥ लगतमोदिघनधारालछमन ॥ अलिजनदीगरज
तजलआए ॥ उरषकूपनज्यूबऊधनपाए ॥ फाबरसरजलआवतदिसदिस ॥ जगसज्जनजैसेआवैज
स ॥ छिंतमगमिटेजुत्रणघणछाए ॥ पावंकवेदधरमज्यूपाए ॥ अरकजुपछवबासनसाई ॥ ज्यूकुराज
जनउद्यमजाई ॥ तमनिसभ्रमतनिकरज्योत्रगनिजुरतसमूहदंभज्यौकलिजन ॥ मिलजलअविनमृजा
दामेटी ॥ चलतकुलबधुज्यौमत्तचेटी ॥ पावंकूलजमुरालउलाए ॥ अषिलधर्मज्यौकलजुगआए ॥ उपर
उपजिवनहीत्रणऐसे ॥ जगविकारसाधमनजैसे ॥ जहांतहांथकेपथकपरिवारा ॥ ग्यांनउदयज्यौ
विषयविकारा ॥ वातविलासतजलदविनरावही ॥ ज्योकौतुरकुलधरमनसावही ॥ कबऊकवगटि
जुउरतप्रकैसे ॥ सुनमतसंगकुसंगतजैसे ॥ दुहा ॥ वरषानुहिवीतीविषम ॥ विनुवलनाजुविसेष ॥ कुर
पसेवानिफलज्यौ ॥ नरअभिलाषअसेष ॥ ४० ॥ इहहरितुऐसेहीजगई ॥ उषइसंजुतदेह ॥ जातजुअफ
लउजासज्यौ ॥ दीपकसुनेग्रहधर ॥ हनुमतसुग्रीवप्रतिकवत ॥ हितप्रबोधहनुमंत ॥ कह्योसोक्वनक
पेस्वर ॥ बालबलीकृतिविघ्न ॥ राजतोहिदीनौरघुवर ॥ सुतौप्रवरषनसिषर ॥ सहतआतपघनसानु
ज ॥ अनयबाऊआजांन ॥ तुमहिदेषेनारथनुज ॥ कृतिघननहोऊअपानकरि ॥ इहालानलीजेअ
तुल ॥ कृतमांनकाजरघुनाथकौ ॥ करिऊकृतारथजन्मकुल ॥ १ ॥ कह्योनासतडिका ॥ सुबहमग्रा
मसंघास्यो ॥ धरनंज्योदरधनुष ॥ गरजनहुजरामविगास्यो ॥ हस्योमाधजगअहित ॥ असुरवातापी
इल्वन ॥ कस्योकबंधनिकंद ॥ उदकास्योदसजोजन ॥ जुधहत्यौबालत्रणमात्रजग ॥ कृतअनंतजि
हसतुलकम ॥ सुग्रीवआपजांनतसकल ॥ तिनकहिकहाअवधतुम ॥ २ ॥ छंदकअबरी ॥ पवनउत्र
कहिक्वनप्रवीना ॥ हितउपदेससुग्रवहिदीना ॥ बालबलीतुमहेतेनिपाता ॥ दसरथसुतअद्दायनि
धदाता ॥ कीनरामतुमस्यूऊपकारा ॥ सोतुमसंपतपायविसारा ॥ तुमपइउरलनरोमारारा ॥ विवधक
रतरसविषयविकारा ॥ कहसियसोधप्रतज्ञाकीनी ॥ वहलनलेनिधपायनवीनी ॥ कविरोवा ॥ कहीनीत

हितम्यार प्रकारा॥ हेत जुक्त सब बिधि बिरहारा॥ मनसुग्रीवमहा नयमोन्यो॥ मारुतमेंत्र सुकीस प्रकामै
~~कारा हेत जुक्त सब बिधि बिरहारा~~ वयन सत्रास कपीपति बोल्यो॥ देहु कंपि अति आतुर होल्यो॥ सुग्री
वबा॥ कतह हनुमंत उचित सोई कीजे॥ इत्ति बलदिश्र बेआइस दीजे॥ एक पक्ष महि कपि जो न आवै पैसे
उप्राण अंत दंड पावै॥ कबिरोवा॥ डहा॥ सुषमित्री हनुमंत मिल॥ प्रभु की आज्ञा पाय॥ हुतसहस सदसद
सजदिस धातुर दीये बलाय ४२॥ मारुतवा॥ मारुत कलो संदेस सुष॥ कत गौरव प्रभु काज॥ जु
थ न न आवे अविध ज्यो॥ रोष हत दिति हराज ४३॥ बानर बाल विसाल वउ॥ पौरुष विक्रम हूर॥ आन
ऊजूथ प जूथ यह॥ सप्त दीप गत सूर ४४॥ कबिरोवा॥ आतुर धाए हुत अति॥ दस दिस देन सदेस॥
तिन की नौ नुक्क तब॥ प्रगट दिगंत प्रवेस ४५॥ श्रीरामलछमनप्रतिवार्ईका॥ गुरदा सीसी रिन गति॥
नृप हि जगावन आंन॥ पावस बीति सरद प्रभुनि॥ प्रगटी यह प्रमा॥ ४६॥ छंद उधोर॥ बस बिरह एक विहाय
रहउ तिय रितु भन आय॥ कृत जुक्त पक्कलत कास॥ रितु सघन राज प्रकास॥ नम रहत जजनरने
क वसबुध ज्यो अविवेक॥ वहि रहे नीर निवान॥ अति लाज विय दृग आंन॥ कै यही ज्यो धन हीन॥ महि
नीर घर दुषमीन॥ जल गहर मीन सुजांन॥ मम सरन जे दुषमांन॥ टरि त्रिषा चात्रक त्रास॥ कऊ अवित
स्वाति प्रकास॥ चष चित्ति तेवंद चकोर॥ मिलमोद चित्तमयोर॥ नयो सरद अमल अकास॥ वसजीव
हरविस्वास॥ कंकलु बपथवी पंक॥ मिट जलद ओट नयंक॥ सत गुरही मिट जो साध॥ बऊ होत सं
जमबाध॥ ईह समय षंजन आय॥ सुनह तरित सतनाय॥ पुनि प्रगट नृपत पयांन॥ दिग विजय है
तनिदान॥ इह सरद रितु पुन आय॥ पे कबु न सिय सुध पाय॥ जो जियत है कऊ जोग्य॥ अब जवि
तवलन बियोग्य॥ श्रीरामबिरहदुहा॥ परगट ज्वाला पेषियत॥ स्वास धमन अवंत॥ हिय रो अगिअ
नाव ज्यो॥ पिड मितर पजरंत ४७॥ कवत॥ सुवा पत्र घनतरल॥ उहप साषा फल श्रुन॥ तरु रेव जिनत
हरित॥ अबिल सोमा अंकुरतन॥ उपजि मध्य कुलकीट॥ षात का वहि अ सेषवनि॥ वहे दसा मम आ
ज॥ बिषम वर तत असी वन॥ अंतरगति मेरे विरहउर॥ छेदत जु गन्तर जात बिन॥ सुन लषन ब्रथाव
हित असह॥ महादुष सहियत मन दिमन॥ त्र सिस पद्म कदिनकर समान॥ वहि वात वप्र वर॥ सुम
नहार स्त्री संचार॥ मलय जबे स्वान॥ कमरजनी सत कलप॥ पान असह न नारी पम॥ विथव सहासी
ता वियोग्य सिंगार काल सम॥ वरषा रितु वितई अति विषम॥ अहो सरद निय रायअब॥ कौउ सुनैनक
हि बे जोग्य कछु॥ सुषदन ए दुषदात सब॥ ४ रिमकर धुज उर निवार॥ विकसत वारिज वर॥ करतबां
न संधान॥ कवन पौरष ईह मोपर॥ सियविजोग्य संकूप॥ अनल ज्वाला उत्तपनिय॥ तिह असेष दहि
देह॥ मोहि मृतदसा सुमनिय॥ नव कृत विजय ध्वनी अनय॥ महावीर त्रय लोकमह॥ नहीं स्त्र धरम
यह कहि निगम॥ करिबो घावन मृतक कहि ५॥ दुहा॥ हा बेंदान न ज्यांन की॥ कब देख्गो तोहि॥ जे
तुम बिछुरी जा कऊतै॥ मनो कलपलषमो हि ४८॥ जो कहो जीवत ज्यांन की॥ दुषव सहै अत दीन॥ तो तैके
रि हौं नासतिहि कष्ट सह तव सदुष्ट है॥ क सत नु वह्म मलीन ४९॥ मन प्रतंग पान्हात मम॥ जिह हरि ज
नक कुवार॥ तातैक रिहौ नासतिह॥ सोकु लम्लसंहार ५०॥ इह सुग्रीव जु निरदइ॥ दसा जु मोहि दिन
देष॥ पाय अकंटक राज पद॥ विलसत भोग्य विसेष ५१॥ त्रिया सकर सपांन रत॥ कत यन निरसंक॥
सरद ऊ आयो नाहि सो॥ है कनाल कुअक ५२॥ विसर्यो मोहि रस भोग वस॥ कतम्न लौ उपकार॥ पा
यो बालप्रवेस पंथ॥ हैति हि चालनहार ५३॥ छंद बेताल॥ सुग्रीव लहि सब राज संपति॥ नारि सुष अनेक
सो उपस्यो विविध विलास के वस॥ वहे सेवक एक॥ जिह बान मेह वद त्यो बालहि॥ वह अमोघ अगुद

उदवान सकुलसुग्रीव साफ इक्त मस्यौ वाद तसुद ॥ कवित्त ॥ करि नैं आरक्तकु टलि भ्रकुटी ॥
क्रौध लक्षनकराल ॥ जारि देहैं त्रयलोक जैसो ॥ कोपि काल कराल ॥ तहां देषि रांम सरोष भ्रातहि नैन
सइन निवार ॥ नहि उचित हम कों इहै लक्ष्मन ॥ मित्र कहि उनिमार ॥ दोहा ॥ लक्ष्मन धनु तुनीर लै इहां
केकंधा आय ॥ विषम श्रम रूनद्र गरोष वेस ॥ जम हूं सहै न जाय ॥५४॥ लक्ष्मन वीर सरोष लषि साषा
मृघन समाज ॥ किलककिल कचहि कंगुरन ॥ गह सहकत गाज ॥५५॥ इहां कोदंड चढाय कर की
नो गुन टंकार ॥ उरी कि केंधा सहित प्रभु ॥ ब्रिन मै करूं सुन्यार ॥५६॥ आगम सेष सरोष सुनि ॥ सुतहि
कह्यो सुग्रीव ॥ अंगद तुम आधीन ह्वै ॥ जाय क्षावह जीव ॥५७॥ छंद उधोर ॥ इह दोरि अंगद आ
य ॥ उनि ग्रहै लक्ष्मन पाय ॥ दे धीर सिर कर दीन ॥ कहि क्षवन निरनय कीन ॥ सुग्रीववा ॥ कहि त्रियास
कपिराज ॥ सुनक लसदीपक साफ ॥ तुम जाहु सकि सुनतंत ॥ आरती कर हु अनंत ॥ मिल जुवती
जूथ समांन ॥ गुन गीत मंगल गांन ॥ कवित्त ॥ हनुमंत संग हि होइ ॥ सुनकलसदीप संजोइ ॥ करि
मोद आरिती कीन ॥ दे तिलक अक्षत दीन ॥ तारा सुरोमा त्रीय ॥ करि जोरि दीनत कीय ॥ तारावाच ॥ प्रभु
कर हुये इह वेस ॥ सब लहि है अनय विसेस ॥ कृत सकल हूय कपिराज ॥ करीये जु अज्ञा का
ज ॥ धरि पांन हनमत धीर ॥ विचि सदन आऐ वीर ॥ कपिराज आय सकाम ॥ मिल करे दंड प्रणांम ॥
प्राकर्ष नु जसु उगाय ॥ लऐ लषन कंठ लगाय ॥ ग्रह सु षद बैठ सग्पान ॥ दुव दूछि कुसल निदां
न ॥ सेषवाच ॥ हित रोष कि वितहास ॥ पुनकह त लषन प्रकास ॥ सुग्रीव चन्ऐ अनसंक ॥ इह पाय
नृपता अंक ॥ रिथ संग तारा राज ॥ सब गए भूलि सकाज ॥ सठ विसर रघुपति सोय ॥ हत बाल पि
ह थहि होय ॥ बध बालकि येजिह बांन ॥ सोइ आहि धनु ष संधांन ॥ कवत ॥ प्रगट विम्बन तपति ब
तवस जास विनासन ॥ कारन हू तु अहूतु ॥ प्रबल अन्पथा प्रकासन ॥ हूत घन तोहि निका
स ॥ करे ॥ राज्य अगद कहि ॥ कोउन बेध तिह करन ॥ मोहि न सूऊत त्रलोक महि ॥ आकास हाहि अ
विनी उलट ॥ धरसुमेर दक्षन धरे ॥ रघुवीर धीर कपिराज रे ॥ जो आरं नै सोउ करे ॥ ५ ॥ सोरठा ॥ बाल
वली जिह्न बीर ॥ समर निपात्यौ एक सर ॥ सो रघुवीर सधीर ॥ तिह कहा मारन कवन तुव ॥५८॥ सु
ग्रीववा ॥ छंद उधोर ॥ करि जोरि कहि कपिराज ॥ अपराध छिमजे आज ॥ नह विषय मम मद अं
न ॥ उनमन हूं मोह प्रमांन ॥ उन राज धन मद पाय ॥ उपजे अनर्थ जु आय ॥ हूत घात हि सक
लंक ॥ अरु लह्यौ नृपता अंक ॥ पर विषय रस हि सपाव ॥ इहमां कुनरक्यौ आय ॥ कुइकूतै
मम सिर हांन ॥ मै सी सुली नी मांन ॥ वनरांम वरन विजोग ॥ सो अकृत मम संजोग ॥ हित अहित
अज्ञा होय ॥ सब करूं सिर धर सोय ॥ लक्ष्मनवा ॥ कृत जिह प्रतंग्या काज ॥ वह करहु इह तजा
ज ॥ मारुतवा ॥ दोहा ॥ तुम हि जु इह थाप्यो सुथिर ॥ राम चक्र कपराज ॥ तारक संघारक तुम
हि ॥ कहि हनुमत सु काज ॥५९॥ दूत पगाए दस हू दिसि ॥ दस सहस्र समुदाय ॥ तत पर याहि
का ज्यतै रह्यो सदा कपिराज ॥६०॥ कवित्त ॥ वगी सो कजु दिगविदग पो ह विरहीनत्तह्न ॥ नै
अद्भुत संपात सुर ॥ सेमा आवन सूर ॥६१॥ यहै कहित है आगमन नौ वनवार विरूथ जगत असुर
सुर अंस जे प्रगटे जूथ प जूथ ॥६२॥ कवित्त ॥ अगिनत गुन बल अतुल ॥ गिगन सु वजित मारुत
गत ॥ अद्भुमान आतम उतंग ॥ अनेक जु आकृत ॥ मिल वन वन वर मुष्प ॥ काल सूक कहि वि
षम कहि ॥ स्यांम काज संग्राम ॥ मेर विलय तह त्यमहि ॥ षयकार वंस राकस अविल ॥ अमर
वंस नु वक्ष वितरे ॥ आए जु अहार त पमयह ॥ कपिराज हि वंदन करे ॥ ६३ ॥ सुग्रीववावा ॥ दोहा ॥

करि ह्जा आतिथ्य क्रम करि जोरे कपिराज। लछमन ल्यावलि ये मो हिते जहा राम रघुराज।
६३। तद सुग्रीव अंगद सहत मिल मित्री हनूमंत। अयुकि एह नूमत उमग आए जहां अन
त ६४ भेरी दुंधन सुन्न सबद श्वेत छत्र सिर सोह। चहुं ओर उजाल चमर मिल प्रभु चरननि मो
ह ६५ बिसद खबर बन गिर बिषम दुरगम कंदर ख्हार। सिलम णि मय बैठे सुगम राजा राम उदार
६६। छंद चौपई। स्याम वलेवर अंजन सरीरा। विकट जटा मुकट रघुवीरा। नैन विसाल सं
त मुष सोभा। जबन तन संतन मन लोभा। सिया विरह अति तपत सनेही। दीन मलीन षीन दु
ष देही। जद्यप आद ब्रम जग जानंत। तद्यप मानुष लीला वानंत। देव सुग्रीव दूर तैं देषे। विस
स्यो देह सनेह विसेषे। रूप अनूप देषक पिराजा। सकल नए मंगल सुष साजा। अति आतु
र कपराजा आयो। मन आनंद न यौ अनमायौ। कपिपत दंड वणाम सु कीना। निरष राम सोउ
रधर लीना। सुकृति कोउ सुग्रीव समाना। प्रभु रघुनाथ हृदय लपटाना। अंगद राम चरन गहि।
आतुर करी कृपा बहू सीस दयो कर। पूछ सकल की कुसल पियारि। राम सु कंठ निकट बैठा
रे। नील आदि मिमित नित सिर नाऐ। प्रभु सनमान पवन सुत पाए। प्रगटी जब हित कथा परसपर। वि
न संषा आगम भौ वानंर। विश्व विदित बन्वार विरूथा। प्रभु हित आऐ जूथप जूथा। छंद तधीर।
इह समय आय अनंत। दल दिस देस दिगंत। नव सुभट मरकट जाल। सब सैन आय सवाल। जू
थप जूथ नाम। दुहा। देस पराक्रम नाम दल। बुध विक्रम विवसाय। ईहां सुग्रीव रघुवीर सौं सब के
कहत सुनाय ६४ जाबवंत बहु धनुत। सह्हंस कोट दल संग। कुंभ राकसषय कारकर। आयो
रीछ अनंग ६५ सेनापत विजइ समर। एसतबली सुषेन। आऐ उर आनंद अति। संग असंषा से
न ६६ छंद पा। केसरी नाम यह कपिस काज। अगिन तले आयो सैन आज। यह कपि गवाख्य गोल।
लंगूल। संग एक कोट सैन्या सभूल। यह पनस संग दस कोट आय। है तार सह सकोटी सहाय।
दुबिद यह मयंद षलि उरन दाह। दस सत्त कोट कपि संग उ बाह। गंधमादन यह बल बुध गहीर।
सत कोट संग मरकट सधीर। इह सुकनाम सयाम सूर। उन सात सहस पर गहस दूर। यह कीसद
री मुष रन असंक। एकादस कोटिन सुभट अंक। यह नील धुम्र अरु कुमद आय। सो मद विनीत
सकुस यसु नाय। सो दरीमुख अरु गुल मसंग। मणिव ग्रस्थल अलु मुष मतंग। दध मुषा बली बल
मुष दुरंत। अनन्नंग अंग जूथप अनंत। सरभ गजग वय वाह रू सीत। इह संग कोट दस दस
अनीत। ईह हनूमान रुदतार। कृत सुन काज कारक कुमार। नल नील यहै रचना निधान। वस
याहि विस्वकरमा विधान। कपिवर नंनं नाम। कोउ फटक पयन वंदन वकार। अंजन घन आभा
को उदार। को उकन वरन को उ अरुण काय। को उ धुम्र पांन सो भा सुभाय। अंगार वरण कोउ
दीरघ बाल। को उ सटा सिंघ लंके सलाल। मुष स्याम अरुन को उ अंग सथूल। लघु दंड को उक
दीरघ लंगूल। को गिनैं रंग आकृत अनेक। विवसाय बुध विग्रह विवेक। कपि सेन करे संषा जु को
य। हव बुध यहै कवकवन होय। इत्यादि कवि वानर भाल आय। उन गिनैक वन किय अंत पाय।
दल असंष मिलि कपि अंस देव। नव नूत नपायौ तास भेव। गज बल दस सत कोउ अगन गांन
मिलकी सको उ बल अप मांन। छंद चौपई। विश्व विदित बन्वार विरूथा। प्रभु हित आए जूथ
प जूथा। ले ले नाम सुचनि रंतर। राम चरन ला ऐसब वनर। प्रभु ते अमर अंस पहिचाने। मिलए
कहि वैरासन मांने। देव जया क्रम आसन दीने। अविलोकित ते प्रभु हित अधीने। बहु वन वीर

करतब्रूंकारव । अतिउनमादजुधकेतब्ब । मोदतकूदतकपीगिगनमह । कहे[illegible]
तउजाततुजानारथकह । कहेअबनाथविलंबनकीजै । देवदेवअबअग्यादीजै । एकएकवि
क्रमअनुमानै । असुरसमेतलंकग्रहिआंनै । जामवंतजोधाजरजीरन । आहवसत्रुजएजिन
अनगन । संष्पारहितनालनटसंगी । आकृतवरएंअनेकअनंगी । अतिबलक्रोधन्नकुटउषा
रक । कलहहरष राछससषयकारक । कूदतनचधरनीअकुलावहि । षन्दकारजअग्याकब
पावहि । देषतरांमनालअप्रबलदल । मननोमुदितवसेसमहाबल ॥ श्रीरामवा । [illegible]मकहैतब
सुनिकपिराजा । करीयेसीतहिसोधसकाजा । क्वनरामकपिपअबधास्यो । ईहसबहिनसो
मंत्रभ्यास्यो । सुग्रीवोवा । काजरांमअरुममहितकारन । आपकतारथवंसउधारन । अमरअं
ससबमिलतुमआए । धरिकपरूपअविनहितधाए । करिरूपवासषतंज्ञाकीनी । देवदेवतब
यज्ञादीनी । विधलेक्वनषगटवरपाए । अेहरीमनुजदेहधरिआए । सविताक्वकदिगंतसंचार
रू । निश्चैकरिज्यांनकीनिहार रू ॥ जूथपजूथीवाच ॥ छंद ॥ सोसुनजूथपजुथ्यसब । उठबो
लेसिरनाई । अग्यादेऊकपीसअब । जोजोउजिहदिसजाई ॥ छ० ॥ अथसीतासोधकोकपिगव
न । कविरोवा । छंद ॥ वानरविनीतअतबलविसेष । दिसपूरबपठियोहितुदेष । पचवीसकोट
वांनरक्वार । संगदएएकअेकहिसंनार । पठियोसुषेणपछिमषजंत । सनमान्योतारापितासं
त । सुग्रीवसुसरअपनौसुजांन । पेख्योउक्वंनश्र्जाषमांन । संगदएकोटपैतीससूर । षत्तंग्याव
वीनपेरिषकऊपूर । उतरदिगंतसतवलियआप । सोपठियोउरजनदियसताप । त्रयवीसको
टदलसंगतास । साषामृघसेन्यासावकास । सुगराजजाग्यपदकाजजांन । पवएदिछनदि
सबलषमांन । दसकोटसंगजूथपउबार । रिनरोदवंसराकसनराह । जगविदतनालनारथ
जयंत । जरजीरनजोधाजाबवंत । गजगवछिगंधमादनअनंग । सोराष्टनीलनलगुल्मसंग
तहांउबिदबिंदुरथसुरनतार । मिलस्यामकाजसाधकसधार । अविलेसविश्ववापकअजे
व । नवन्हतलहतगतवित्तनेव । विष्यातनामहनुमन्तवीर । सोउस्यामकाजसाधकसधीर । मा
रुतहिज्ञानबुधबलअमान । नामांकितमुदरीदईनिदांन । पेकरषजाऊमुद्कापेष । विश्वास
देऊसीतहिविसेष । मुद्कालइमारुतमहंत । सिरनायरांमपदपरमसंत । सुग्रीवकह्योसबहि
नसुनाय । इकमासअवधिथलेसोधआय । अवधिसिरजोनआवेअषंड । देऊवहनिश्चेपाए
दंड । षत्रुकाजजुपैसाधेषमांन । सोउधिन्यनकोताकेसमांन । इहवल्योमुषीअंगदअनंग । स
रनाइषत्रुहिलेसुनटसंग । कूछवसबहिनगवनकीन । अविधेसकाजअग्याअधीन । व
नगहनगुफापरबतविथार । वससोधसीतजलथलविहार । विंदाचलवनमद्धसेवीर । सं
पेषमहाराकससरीर । इनजानयहेरावनअनीत । सच्चोरगयोलेसतीसीत । कोतुकहअ
सुरसंघारकार । मुषमुक्वपेटनलयोमार । षथ्वीतलहतकोउअसुरपाय । जिताहिलेह
हसनिकटजाय । ईहन्नातफिरत्षोजतअसंक । गिरषोहसरिततरविवरवंक । वसुमती
भ्रमतरहेमहावीर । नहीएकपाद्यकहांलह्योनीर । नईत्रषानपायोसललन्नेद । स्रकत
जुअधरतारूसबेद । चढिअंगदपरबतसिषस्वाहि । तनब्रुटत्तत्रषाकरिवाहित्राहि । कव
त । कहांयहतराघवकुवार । वनदंडकवासियमृघजुकनकमारिव । हरकहासियाजुहा
सिय । कहांसुग्रीवगिरमृक । वनैमंत्रीसुरघुवर । कहामोहिसियषोज । काजपठियोलंकापर । रू

अविधकूरकरमीहगी। तातेविरतउरंततुव। अनचिंतप्रसंनावितअरथ। सोईसोईघटत
सरोजसुव॥ अथकपिसुयंप्रभासमागम॥ इकपरबतव हनुमानआय। वारहिअविलो
कितत्रिषवियाप। विवरतहांएकजोजनविसाल। तरुलताधारआवृततमाल। देषेतिहनि
कसतविवरद्वार। पंषजलऊरतपंछीअपार। उनमांनकरेहनुमंतएह। हैनीरविवरइहनि
संदेह। इहजानहाकजबदइआप। तहामिलेआंनसबत्रषाताप। मारुतोवा। निश्चैयहक
दरमांऊनीर। धसीयेनिसंककरिचित्तधीर। करकरहिजोरतिहगवनकीन। तेअग्रहनून
येविवरलीन। विषमतिहपंथउरगमप्रवेस। देष्योसुतहाआश्रमसुदेस। जिहमाऊसरोवर
मणिमृजाद। सुनफलकमलजलमधुरस्वाद। तरलतातरलमिलमोदतार। निमसाषउहपफल
नरनिहार। गुजारन्हमरकलकंवगांन। सुबसकलमनऊसुरउरसमांन। जलपानकरततहां
लषेजीव। देबिइकमिदरकियेदइव। रिवक्राततेजमणीरंगरंग। अतिसेप्रकासदसदिसअनं
ग। उंनिकस्यौकपिनतिहयहप्रवेस। देषीसुएकतिहत्रियसुदेस। कहिप्रभाअतुलपूरनप्रकास
वन्कीरधरेतपतनविलास। दिढजोइप्साध्यअतिदमितदेह। निरकामरहतविषियादनेह। क
पिसंकततांहिपरणामकीन। नीरषेसुवीरवानरनवीन। तापसीवाच। कोनतुमआयइहांकवन
काज। इहांवीवरआगवनगुढआज। जगकवनपठेअरुकहांजात। विस्तारयुक्तकहियेसुवात
हनुमानवाच। रघुवंसराजदसरथनरेस। अविधेविश्वविजईअसेस। उत्रतिहरामजेगेप्रुनीत। सु
नलछनवामासंगसीत। पितुअज्ञादंडकवनप्रवेस। संगलछमनमृषीवनप्रवेस। पंचवटीवसत
रावनसपाप। उरसीतहिहरलेगयोआप। सोधतिहकाजजुवराजसंग। एपवएमित्रीदसअ
नंग। अतित्रिषावंतइहविवरआय। दरबउन्पतुवदरसपाय। सुयंप्रभावा॥ संतोषकरुऊपायहै
सीत। नवतमहैंतउषसह्योनीत। हनूमंतवाच॥ पुनइछ्योताकहपवनपूत। यहस्यौनवनको
नैअनूत। कोनैजुतुमहिउपदेसकीन। एकाकिनइहतपस्याअधीन। तापसीवा॥ जलपांनकरऊ
फलनहसजाय। अरुसुनऊइहांविरतातआय। कविरोवा। कपिकिन्पाक्वनप्रमांनकीन। उंनसबै
आंनबैठेप्रवीन। तापसीवा। ~~कपिकिन्पाक्वनप्रमांनकी~~ एरचेविश्वकरमाअवास। तिहउत्रीहेमा
नामतास। कतनक्ततिहैहरीप्रक्षकीन। देवेसदरसइहगोरदीन। पुनवसीयहैहेमाउनीत। गाव
तसप्रेमहरिचिरतगीत। दुहा॥ करन्याऊगंधरबकी। सुयंप्रभानाममनांम। विद्धूदितसा विमल। मे
साथीयहगाम। ६८। हेमासोमोसोहरष। प्रीतवढीअनपार। एकपांनअरुतनउनय। विमलसुतप
विचार। ६९। छंदप। तपमहातपदिमासुतंत्र। मनवाचकर्मजपहिममंत्र। वसअयुतइहादसव
रषवांम। धरध्यानगइयहविष्णधांम। हैमामोहिकहैपरबोधएह। दिनकबुकजोइप्रवसराषदेह
त्रेतायुगकेरामावतार। प्रभुदरसपायतुमहोऊपार। इहगोरवसततैबतैअकांम। मनआसए
कमनदरसराम। तुमकहतनयोरांमावतार। अबफलेमूकसाधनअपार। कविरोवा। वनतासु
कहेइनऊतैवेन। निरसंकहोऊंब नमुद्यनैन। दुहा। सुयंप्रभाकेवचनसों। कपीचषमुंदनकीन
षारसमुद्रदितटषरे। चषउघरेतहाचीन। ७०। गइप्रवरषिनगिरगुफा। तपबलसुदरतास। की
नौदरसनरांमको। सुयप्रभासुहास। ७१। जायबदकाजोग्पनी। प्रभुअज्ञासुप्रमांन। तहांगइजो
गम्मासतेपायो पायोपरमनिधान। ७२। अथषारसमुद्रतटकपिमंत्रबलप्रकासनं। छंदप। तेवान
रषारसमुंदतीर। बैठेविचारमिलकरतवीर। अंगदवा। जुगराजयहांअंगदसुजांन। बोल्योसुनी

तवायकविधान। कंदरवनपरिबत्तभ्रमणकीन। दिगंतिमनकुं परिक्रमणदीन। पेंककुनज्यांनकी
सोधपाय। इकमासअवधसोपैसिराय। भ्रमनयोवृथानिरफलसमान। प्रभुइज्ञानादिनमइश्र
मान। कुलराजसदामित्राधिकार। सबजानतआपुननीतसार। बाढ्यौविरोधसुग्रीवबाल। निश्चै
सुग्रीवदीनोनिकाल। फरतिहसुग्रीवचनटकौदीगंत। कृतजोन्नमिलेज्यांनकीकंत। इहदीनतबैप्र
भुसरनआय। रघुनाथबालमार्‍यौरिसाय। उहसमयमोहिलीनोउबार। महिमाअनाथबंधुमुरार
बालिकौपुत्रकुजगबिष्यात। सुग्रीवदियेनाहिनसमात। कीनौनकछुमैरांमकाज। याहिमिसमोस
रवन्योआज। देहैसुग्रीवमोहिप्रांनदंड। याघातउपजिमोकौअषंड। ममपितारालजिहलयौमा
र। सबदेसकोसलियत्रियसभार। नहीसत्रुसेषराषतनृपाल। सबकालरहतसौहृदयसाल
उनजांनउनदिसुग्रीवपास। निश्चैसुकरिहैप्राणनास। मारुतवाचाकुहा। अंगदकौहनुमत्तयहां
देष्यौसचयसबेद। पौरुषरामप्रभावपन। नऐकहतसबभेद ७२ रांमनमानुषमानजे इरनब्र
मप्रकास। सीताजगदंबासती। वेदवचनविस्वास ७४ लछमनसेषजुदेहलबि। इहगतिहैआधार
भूक्तदिविधवरच्छेदए रामनुजअवितार ७५ इनतेउसक्करकरमकोउ। इहहोतिविक्रनआदि का
रनवससोइकरै चितहीजोपैचाहि ७६ तुमसबअज्ञाविष्णुतै देवधरेकपिदेह। रांवन बधलगअव
तरे सोरघुनाथसंदेह ७७ कपतनइहरनकाजकरि। सबैहोहिस्वसथान। उनअपनौपदपायहै।
देवस्वरूपनिदांन ७८ अबबलपौरुषआपनौ। अरुवानरअवतार। सफलकरौकारजसक
ल विस्वसुजसविसतार ७९। कविरोवाच। छंदपधरी। सबैसुतटमारुतसमकाए। धरिधीर
जसीयसोधनधाये। अतुलतबलसुरकपिअवितारा। बोजतचलेअसुरषयकारा। विंध्याचलत
बआऐवानर। करतसोधवहिवनघनकिंदर। ईहांमहिंद्राचलसोआए। सागरदछनतीरसुहाए
इहाकुसाधउदधअविलोकौ। रहतनचित्तमहानयरोकौ। सलिलअगाधभयंकरसागर। तहां
जलजंतुविषमत्तनविस्तर। नऐसबकीसमहामनभंगा। उद्यमनाहिनकुरतअभंगा। महिंद्राच
लक्यकगुफाअमांना। तहांतरूसोचित्तलतावितांना। अथसंपातकपिसमागमं। कृतनिवास
पहिलेतिहकिंदर। बसतमध्यसंपातग्रीधवर। इहकिंदरमुषकपिजबआए। पेषितनांहिनेदवि
नुपाए। इहविधायकुसबैवेनिरभय। समयनिहारमरनकियनिश्चय। अंगदवा०। हाय सुग्रीवम
रनहैअनहित। करीयेदेहत्यागराघवकृत। कविरोवा०। ईहसुनग्रीधनिकटचलआयौ। पेषेकपि
नपरमसुषपायौ। देवआजयहभछमोहिदीना। निकसेबहुदिनप्रभुधाअधीना। वचनग्रीध
सुनिकंपितवानर। मरनउभयमहिउपजित्रतियमर। अंगदवा०। छंदप०। कृतरामसुग्रीवनसरेका
ज। उपज्योजमसादनगवनआज। अपमृत्युमरेसबवृथाआय। ईहवैरओरनाहिनउपाय। हनु
मंतवाचाकुहा। उचार्‍यौहनूमतयहां। जन्मसुधिन्पजटाय। कृपासिंधुरघुनाथके। अरथनवेध्यो
आय ८० जोगतिदुरलभनजोगपते। कष्टकियेकुकाय। रामप्रसादजटायरिन। प्रगटदिमपदपाय
८१। संपातवाचाछंदप०। ईहसुनतमहाषगनिकटआय। संपातभयौव्रवितसुनाय। तुमकोनइहां
लगकवनकांम। ममश्रवनसुनायौयमृतनांम। कहिकहाजटायुतुमवातकीन। कोवहजटायुति
हकहाकीन। हनूमंतवा०। उनअविधईसदसरथउनीत। सुतरांमचंदतिहवधूसीत। पितुअज्ञांदं
डकवनप्रवेस। वसिपंचवटिसुकिसोरवेस। वनगहनरांमआषेटवीर। धरिचापगतेसानुजसधीर
उहसमयआयरावननिसंक। लेचल्यौसीतहरिदुष्टलंक। कहिरामरामसीताउकार। सोसुनजटाय

उड्यौसंचार ॥ षग निरष्यौ ग्रीधलंकेस षेत ॥ सबतोरि छत्र रथ धज समेत ॥ जूझ्यौ जटाय संग्राम सूर
न ह्वैगिगन उहपवर षीसन्दूर ॥ कविरोवाच ॥ दोहा ॥ श्रीरामा अवितार ष्ट्रव ॥ सुन्यौ यहां संपात ॥ ततछि
न भयो सपंषतिहां ॥ जथा जनम बगजात ॥ ७२ ॥ तव सुग्रीध गयो समद तट ॥ दि जटाय जल दान
कहत लग्यौ वितथी रकर पूरब कथा प्रमान ॥ ७३ ॥ हनूमानवाच ॥ छंद पा ॥ सियविरह भ्रमत सानुसधी
र ॥ वन मांझ मिलि सुग्रीव वीर ॥ भयो तहां राम सौं मित्र भाय ॥ सुग्रीव करत सेवा सदाय ॥ आज्ञा सुग्री
व ह्व मय हां आय ॥ उन अवतक ह्व सीता न पाय ॥ संपातवाच ॥ तब कह्यो ग्रीध थिर कर ह्व चेत ॥ सीता दि
वता वहु थल समेत ॥ जूथप जूथोवाच ॥ दोहा ॥ सब कपि स्रवत यी धसौ ॥ पंषविनासप्रकार ॥ मायावर
जित साधु तुम ॥ सूरविदत संसार ॥ ७४ ॥ संपातोवाच ॥ छंद पा ॥ पूरब वतांत यह समय पाय ॥ संपात क
हन लाग्यौ सुनाय ॥ हम भ्रात उभय अनजान नेव ॥ जो बिना रुह गवि नत अजेव ॥ अतिगरव्न
कह्ये सनमुष प्रकास ॥ जो जन सहंस्र गवने सजास ॥ पर जरन लगे रवि ताप पाय ॥ सिस भ्रात ज
नक रिबो सहाय ॥ जान्यो जटाय मैं जरत ज्वाल ॥ कर जतन भ्रात लघु हीतकाल ॥ आछा द्य पंष हम
करे आय ॥ सो अनुज रह्यौ तर रह रसुनाय ॥ मम पंष जरे रवि तप समूल ॥ तिहां भयो देह पल विकल तू
ल ॥ यहां पस्यौ विंद परबत हि आन ॥ मुख्या गति भए तन मृतक मान ॥ विधु स्यौ जिन टायु तिह समय
वीर ॥ सोग यो कहां सु धनही सरीर ॥ दुष पात तन अति व्यादेह ॥ अनि अविध नबूटै प्रान एह ॥ सब
रह्यो देह अवसेष स्वास ॥ दिन त्रितिय जगी मुरछा दुरास ॥ विन पंष सक्त ह्व यानो विहंग ॥ अरु दग्ध
भए सब अंग अंग ॥ वषत उधस्न यो जब कहु सचेत ॥ सुन आश्रम देष्यौ जल समेत ॥ क्रम क्रम
हि चल्यौ हौ दुषित काय ॥ अति कष्ट तपो थल निकट आय ॥ तहां तपत स्वछ मुनि उयताप ॥ इहां
नाग मो दिन द्वै नेट आप ॥ मो दिक सौंत पस्ती बाम मोन ॥ कह कह करी दसा यह हेत कोन ॥ मै कहे स
बै वरतात मूल ॥ सो भयो सुनत मुनी सानकूल ॥ देष्यौ मैं मुनिवर अति दयाल ॥ कैदीन कहौ अ
पन काल ॥ विन पंष व्रथा जीवन विहंग ॥ आहार विना क्यौ रहै अंग ॥ आहार सुतौ पंषन अधीन
करतार पंष सो उनास कीन ॥ विन पंष मो हि देष्यौ विहाल ॥ दीनो प्रबोध उजकै दयाल ॥ चंद्रमुनि
रोवाच संपात प्रत ॥ छंद पा ॥ नाजन जान ह्व देहवान ॥ सब काल आद मध्यावसान ॥ इह मूल आदि
नव ह्वत देह ॥ ईह आश्रत कर माकरम एह ॥ यह करम मन पेरत देह आंन ॥ मन लेत जंतु अहंत्ता
व मांन ॥ अन आद्य आदि जड अहंकार ॥ पै होत अविद्या तै प्रचार ॥ जड होत त्वै तब या संजोग
यो लो कै ह पिंड अग्न हि वियोग ॥ अप पिंड अनल मय होत आप ॥ उन देह चेतना सत प्रताप ॥ यह
बुध उपज जब बुध एह ॥ सब नाय उपजता सो सनेह ॥ वस अहंकार यह दुष वियाप ॥ आपनिक
र जानै देह आप ॥ मान ऊ संदेह संश्रति हि मूल ॥ सुष दुह्स व है साधक स सूल ॥ अविकार जीव सब
काल एह ॥ अरु दसा मांन मिथ्या सु देह ॥ महि होत देह जीव हि मिलाप ॥ अपनी करमांन तता हि आप
करम मसु देह ह्व करम कार ॥ संकलप सदा हित गनत सार ॥ जिय करत करम जे अहं जोग ॥ उनि
बंधत तिन हि केवस वियोग ॥ अधउरध भ्रमत ते फल अजअधीन ॥ नित पाप पुन्य करियत नवीन
बहु करत दांन मष्ट विध विवेक ॥ अनि लाष स्वरग सुष हित अनेक ॥ उन तिह भाव सदगति
हि पाय ॥ पुन्य हि मन वंछित फल सुभाय ॥ इह उन्म सबै जब षीर होय ॥ कृत ईछ करम पेरत स
कोय ॥ तब गिरैं तहां तै ताहि काल ॥ वलि आव हि सिस मंडल विसाल ॥ विधु मंडल वस अविध हि वि
दाय ॥ अवितरे बहु रिम्रलोक आय ॥ जीय होय उरष कि ऊ करम जोग ॥ पुन्य हि अनेक रस

स्वादभोग। सततदसदिसभोजनसुढार। कंम्महोतइमतमयवंबप्रकार। तातेजवथऊबलबि
रजताहि। वित्तहोतकांमवसवियजुचाहि। उनप्रेमजुगतजुवतीसुपाय। सेज्यासुभोगविल
सतसुनाय। रितुजुवतिजोनिजोबितसमेत। कैहैजुसबंधासोरजहिरेत। नयोरजसुरेतसंगम
सुनाय। उंनगरभमध्यतिहठधपाय। ईकदिवसकलिलनामाउच्चार। कहिपंचरात्रीबुदबुद
कार। उनिरात्रीससपैसहपाय। इकपद्धरूधरिसंचरसुआय। पैसपचीसजबरात्रीपाय। सब
उपजितहांअंकुरसुनाय। सिरग्रीवाकंधरपिष्टसंग। इहाउदरजुक्तभएपंचअंग। मिलपानच
रनतनदुतियमास। पार्श्वकटिजंघनजुगप्रकास। क्रमत्रतियमाससबसिधकीय। अरुचतुर
मासमिलअंगुलीय। मिलघ्राणश्रवनजुगद्रगसमास। रदमूलगुह्यानषपंचमास। स्रुतरध्रनिक
सषटमाससंग। मिलपायमेढअरुजोनिअंग। नाभीत्वचरोमसुछमसुदेस। हतमाससप्तमै
सीसकेस। अष्टमेमाससबसिधअंग। वधयादिक्रमदिगभेहिविहंग। मिलदेहजीवजबनवम
मास। तहांहोतगवनचेतनजुतास॥ दुहा॥ नाभीछिद्रजुसुत्रनिज। अलिपगर्भकेआहि। माता
भुक्तेसारमुखतिहमुखपोषततहि ८५ अबाकीजठराअगिन भोजनपचतसुनाय सोनप
च्योकऊकर्मवस पोषसुदिनदिनपाय ८६। छंदप। पैहोतचेतनासक्तपाय। तबसिवरनद्रूब
जनमताय। वसजठरकष्टजलश्रोणजीव। अतिदुषतकहतहाहादइव। अन्तेक उदरवतार
आय। मवकष्टभएअनुभवसुनाय। सनमंधउत्रदारासंसार। अन्यायन्यायलेधनअपार। कुट
बतिहतरनपोषनजुकीन। इगधरमपंथकबहूनदीन। राघोनरुवनक्तंविद्दरूप। कतिघनीप
स्योरूउदरकूप। उरनागनचीनेपजुदयाल। केततौएहमोहिमांफकाल। सबअदितआपनो
आपसाध। आतमहितएकोनहीअराध। ताकेफलमैभुक्तेसुतंत्र। जननीबऊपीडतजोनजंत्र। नि
रयोपमसतयहगरभनार। ममभोद्धसकदीकैहैमुरार। उद्धयातेरूंक्यांजुदूदेवसमकरमवाच
मनकरूसेव। चंद्रमुनीवा॥ जबजांनजंत्रपीडतजुजीव। दिनअविधकरममोद्धोदइव। बलगह
यमधजुक्तमविताप। अनुभवितअषिलभवन्दूतआप। वरम्यौनयीधयातैविथार। संसारविद्त
जोबनअसार। छिनभंगहोयजोअम्रबांहि। जलअंजुलिगतजोनिकसजाहि। जराउषउंम्पउ
सारजांन। अनवितकष्टसबमिलेआन। बालापनआदिकबधवेस। सबुतुमहिआहिअनुभवषगे
स। करिकरिअक्रमअज्ञांनकोय। सठगरभवासफिरपरैसोय। यातेयहकरिबोतुमहिआज
रहिएकचितसुनविहंगराज। हैआहिथूलसुछमजुदेह। उनकउतेन्यारोहैअनेह। उनिप्रक
तीऊतैभिंनपार। निरलेपनिरंजननिराकार। सोउधरऊवित्तकेसावधांन। गदिवाचकरममन
तत्वज्ञान। दिनकंबुकजोम्पबलराषदेह। समधरऊसरपकंचुकिसतेह। कैत्रेताजुगरामाव
तार। भवतमरूपभ्रवहनचार। अज्ञापितुदंडकवनहिआय। सानुजसुसीतवसिहैसुना
य। लंकेसआयतसकरनिलाज। करिहैजुहरनसियनिष्टकाज। अज्ञासुग्रीवकरिवीरआय
सियसोधकरतअपनेसुनाय। दछनसुमंद्रतटतुमहीदेष। वसदेविमिलनकैहैविसेष। ते
कहिहैरामावतार। दससीसहतनजुवहरननार। शोसुनतपंषअैहैसमूल। मोहिकयो
वेदमुनिमंत्रमूल। ववनमुनीव्रथानहीहोयवीर। सोनएपंषमेरेसरीर। नवपंषग्रीधतनकपी।
निहार। विस्वासभजिकतहितविचार। सपातवा। संपातकह्योकपिसुनक्तसूर। इस्माथउदधहै
लंकदूर। सतजोजनजलअंतरसंचार। विश्रामवीचकरूनहीविचार। जातीस्वभावहमग्रीधजं

त। तिह आहि दूर दरसी दिगंत। वनका असोक द्रस सिर विहार। सुष नित फलत फूलत सुहा
र। सीस पाहन प्रति हम मध्य सोह। अवितरल सघन छाया अरोह। सियबैठी हैं विरह संग। नयजु तिह
क्कमलिन तन चित्त नंग। होदि बत दोवह सिया होय। करी येन तासरं देह कीय। अब कर कुठद
दधि लंघन उपाय। वनु कार जता तै सिध पाय। कवित। जिह रघुपत निज नांम। मात्र सुमिर तनु वसा
गर। दुष्प मूल दुष्पार। पतित निरजात लोक पर। सो इन्न लोक गति पति। नासल बहैत विसंतर।
तम जु राम प्रिय नक्त। नास कारन हैत पर। तिह कहा तुब बाधि धि तिरन। उब समत्थ अस मत्थ
हिय। करिहै सहाय जिह धनुष की। विजय जिहसी गवरिय॥१॥ कविरीवा। बंद ५। सपात मिटैन
व दुषसं पंताप। यह करि बिबोध उठ गया आप॥ अथ कपि बल लक्षकासनं। तहां आय सकल क
पि उदधि तीर। वैवे विचार वस महावीर। नय उप जिदेष सागर नयांन। मक्का द्रस्वक्क आक्कृति
अमांन। क तघोष गिगन बूवत किलोल। उस्सा धि चूमण वस सलिल कौल। उलंघ देष सागर
उरंत। इहां न एक पिन बिसमय अनंत। मन विकत कसो अंगद कुमार। सब सुन कुक्वन
मम बुध्य सार। बलवान सकल तुम महाबीर। सुर स्वांम काज साधक सधीर। करि नियम सिं
धु लंघे जु कोय। सब नई न धांन दातार सोय। छपै। जब यो कहि जु गराज। आप बल सबन उ
दस चास्यो। दस ते दस गुन दिषाय। विक्रम विसतार्यो। मिलस तजो जन मध्य। कारू क्रम उपरन
कीनो। उन राग वन प्रसिध्य। उगम यह उत्तर दीनो। यहां न को काज साधक नयो। बेव अधो सुष
तोल बल। चाहत सुन्न मबल चु कियो। चाहत वित अति बल विवल। तव हि जामवंत तत कियो॥१॥ जा
मवंत बा। उहा। जामवंत बोल्यो जरव। उठ सुन कुबल पार। ममत रूना पन तिह समय। नौ
वामन अवितार। ८७। कत जु वमंरु जतीन क्रम। वउ वेराट विस्तार। देव पद हस नपद रउव। वि
मल सत त्रक वार। ८८। केसव वामन रूप करि। जाच्यो बलब जजोग। विम्ब निवा सौक्व
न बूत। सुरन उनि वियोग। ८९। कलपंतर के ते जु ए। अब जु जरा ग्रस आंन। वहै प्रतिमा देह यह
ऊई बल विक्रम हान। ९०। अंगद बाच। नीके हि कूहू नीर निध। अंगद नाख्यो एह। आवत बनैक
नावनै। यह पैजिय संदेह। ९१। जामवंत बाच। बंद श्रेअपरी। उधरी बतब समय विचार्यो। अंग
द सूं इह वचन उचार्यो। नीत निउन तुम अंगद नांमी। सम सुग्रीव सबको स्वामी। जन केर
हित स्वाम जो जांही। निस्कै नीत धरम यह नांही। जाबवंत हनुमंत हि जांना। नीत निउन ब
लबुध निधांना। तह हनूमंत रुद्र अविताए। बल विक्रम विसर्यो इक वारा। जात मात्र कीड
त तुम बालक। कृत अमृत राक सबय कालक। प्रात समै दिनकर तै पायो। अरुण स्व
रूप तिष्टत व आयो। मान आ रक्तुपक्क फल मान्यो। जिय महि तच्छ प्रभूत जोन्यो। महा वेग क्रू
दी तू मारुत। बिस्यो फ्व सत जोजन तै बिन। पर्यो न हू मूर्छित। तुल पराक्रम। कूदत फिर्यो जथा
कपि कुल क्रम। इत नेव रुद्र काज के आगम। साध मोन कौर ह्यो अवरसम। स्वाम काज साधक
तुम सम मैरथ। कपि जियरा षज गजा हर कथ। कविरावा। हनुमत बालअवस्था होई। करु
संता योता पसकोई। देव काज कारक सो दिष्यो। वानर हर अवतार विसेष्यो। साधु याहि हनुमत १०५
सुनावै। अपनो बल तो दिन सुध आवै। जो को उक हि इजो सम का ही। अपनो बल तब तो सुध आ
ही। सब हि पराक्रम नाच सुनाए। इहां बल हनुम सो सुध आए। हनूमान जब हर्षित होई। सिंघनाद
गर्ज्यो कपि सोइ। सिंघ समाधि टरी तिह सुर संग। अचल मोल ह्नगोल क पत्र अंग। तत वाह्यो कनिका

चलसोतिहां। ज्योजगदीसबैराटदेहजहां मारुतजबैप्रकास्यौविक्रम कारुनकंफअतुल
साक्रतक्रम हनुमंतोवा। चढिमहिंद्रागिरवचनउच्चारयौ। सांमकाजधमनेमसंचारयौ सुरन्नी
पदजलचरज्योसागर करिक्रममरघुवरासिरपरकर लाधिसमुद्रनस्मकरलंका सकुलहतु
रावननिरसंकारजुबाधकंवनसवरावन पकरिजथाकरस्यानअपावन परबतसहततउवायुलं
कउर विहतअयलेराघूरघुवर सियसोरामसंदेहसुनाऊं अन्नयविजयजुतयहगंआऊंध
रिकुधीरकपिन्नालधुरंधर विषमकालममस्हाकरघुवर। जामवंतवा। वेगतुमहीगतिअमवीर
वर जबलासीयाजीयतदुरजर करतगवनतुमराजकत कैहेसंगपवनकारनहित जाम
वंतकहेहनूशीतजुत सुमनतवहोदिगवनमारुतसुत करिमितमंत्रसबनजयजैकहि राम
काजतटसिंधुवासरहि कविरौवा। कवतबपै बालमरनवेनवसुग्रीवजुत राजाअंगद केकं
धास्वांमित्वपाय तारासुहागपद वसवियोइरघुवीर कालछेपनगिरकंदर महासेन्यसेमि
लन कीसज्यांनकीसोधकर संपातसपंषपावतसुषद वरननवानरवेगबल आरोहफंफ
लंघनउदधि मारुतआयमहेद्रचल १ दुहा दहकेकंधाकांडअब जोसंश्रवनजांन सुनेसोज
थानरहरिसुकव वरनीकथावषान ९२॥ इतिश्रीचतुर्वीसअवितारचरित्रेपोरबेरामाय
णेमहामुक्तमार्गेनाथाबारठनरहरिदासेनविरचितेकेकंधाकांडसंपूर्णो। अथसुदरकांड
आरंभते। कविरौवा अवदुहा॥ अबसुंदरआरंभियै। श्रीतासुनऊसुजान करिहौउलंघनउदधको
हनूमांनबलवांन ९३ सीतासोधजुआगमन महाविजयदिकरांम मिलअनसंभ्रादलक्रमन क
रितसेतजयकांम ९४ छपै। कनिकाचलवुतिमाकपीससोवरणविराजत अरुणवदनविय
दसमांन चलरोमअचलचित सबनमानबढियौ काकुंनकपिविक्रमकरियौ महावीरहनुमंत
अतुलपौरुषउधरियै क्रमसाक्रितनीरघुनाथकत प्रबलसुरासुरपिबियौ सामंदडुगमनरह
रसुकवि इहफंफनहनुदबियौ २ अंजनेयउरससिय सीसआयासपरसीय अतिप्रचंडविय
दसअच्छत हनुदेवदरसी रामरूपचितधरियपायपरबतधस्वंपिय कमठकोलकसमसियअ
विनअसहनआकंपिय दिगदेवडरियवहमंडलिग च्चवनतीनजयजयभयो सियसोधका
जनरहरसुकवि जबमारुतक्रमसजियो ३ जइतजयतराजीव नइनरघुवसउजागर ज
इतजइतदेवाधदेव पलछीनषयंकर जईतजइतराजाधिराज धनुसाईकधारन जइतजइ
तधर्माधिकार वरदंडकविहारन उरिधाररामसानुजउभय नवअमांनवियइन्नयौ कारनसु
सोधसीताकवर कपिहनुमानजुकुद्दियौ ४ दिर्घनालगेलासुदिर्घ बेहमांनऊमनुछुद्यो
मिलेअसतनिसगिगनमग्प तारामनुतुद्यौ रामसरासनबान मनऊमोछोरिउमारनकन
काचलदिसदच्छन कियोकिधूगवनसकारन ज्यांनकीदरसत्रनिलाबजिय छिजतजुगन
रबिनऊछिन करिरूपवीरहनुमंतकौ मांनऊधायोराममन ५ छंदपथ सहसफनआरतिहज
ग्योसेग उनमागधसेलगकमठअंग पदमारुतचंप्योगिरप्रमांन उहचलेधातुअनेकआंन जन
कंतधातगिरफटतचूर विरपटीकरतगजचनचूर गिरवरनचंपफंफौगहीद निसेषलीनज्यो
उपलनीरपरबतसजोजनदसप्रमांन मिलगयौधरनमद्धिधसअप्रमांन। अथसुरसाप्रसंगहनु
मानप्रतै। छंदवअद्धारी। जातिगिगनमगमारुतजान्मै। अमरनमनसंदेहजुआन्मै। उदधउलंघ
नकूंटगवनउत समरथहैवाकिधुपवनसुत वियदअमितः बुधवरवामा नागजननिसोसुरसानां

मा॥ मायारूपजुपेरव्या। मन॥ ततबिन रचेव्रतिमावहितन। दिवावाच। सुरनतहांपवहरवहसुंदर॥ क
पिंकी लेऊपरव्या बुधक॥ रजुपेकाजतुम सरत सुजानऊ॥ पवनपूतकोबलपहिचांनऊ। कविरोवा॥
सुरसापंथरोक्योतिहसागर॥ कीनोरूपस्वरूपभयंकर। सुरसावाच॥ इहकोउजंतुअचांनकआ
यो॥ तहमोहिदैवहेमनभायो॥ जहमोहिदैवहेमनभायो॥ ममसुदमाकपेवरेमरकट॥ कवनहु
धानयोपांनजुसंकट। हनुमंतवाच। हुतजातसोधनवेदेही॥ सोहमपठियेरांमसनेही॥ काजदेवअ
विरोधनकीजे॥ देषसमयमातामगदीजे॥ सीतावेषमोहिजपजेसुष॥ मेफिरआयपेवऊतवसुष॥
सुरसावाच॥ लंकाइरलीलपेलेऊ॥ जतनकोटकुजानदेऊं। हनूमानवाच॥ ब्रधविधियासर्बथावंदि
त॥ हमतुमवादउचितनाहिनहित॥ वानरसदाअनदसविचारी॥ नहसऊतोमुषफारऊमारी। क
विरोवा। दैजोजनमारुततनदेषा॥ वदनविथारजुपंचविसेषा॥ विग्रहजोजनचारसुवादर॥ वदन
वीसजोजनमोविसतर॥ क्रमजिमजिहवउवढ्योकपीसा॥ दुगुनतासुरसामुषदीसा॥ जबसुर
सामुषनौसतजोजन॥ महाहर्षउपज्योमारुतमन॥ कपिंअगुष्टमात्र तनकीनो॥ पेवगयोतिहनद
रषवीनो॥ रदसंकटजोलोवहरोके॥ बाहिरगहेहनुविलोके। हणवंतोवाच॥ पनअरु वचनकस्यो॥
मेपूरन॥ तुममुषपेवसुनिकस्योततबिन। सुरसावा। पौरुषबलसुरसापहिचांन्यो॥ पूरनकारजदेव
षमांन्यो॥ विजयहोऊकारजतुववानर॥ पविसऊजाईकुसललंकाउर। कविरोवाचदुहा। करिप्रणं
महनुमंतकम॥ साधुसाधुकहिसोय॥ सुरसासुरउरसंवरी॥ हरिषतचितहिहोय॥ ९५। अथमैनाक
प्रसंगाछंदप। सियसोधजातहनुमंतसाध॥ उधमुदलष्योअंबुधअगाध॥ तुहिनाचलकोमैनाकपू
त॥ अतिबुधबलीआकतअभूत॥ मैनाकउदधिगतभयोमूल॥ सुरराजपंषछेदतसमूल॥ वहव
चौसिंधुकैसरनआय॥ सुरराजत्रासछुट्यौसुभाय॥ तनतासहेममयरत्नतास॥ वनछ्वउहप
फलसुषविलास। सामुद्रवा। सामुद्रकह्यौपरबतसधीर॥ विश्रामदेऊहनुमंतवीर। कविरोवा॥
सबउठेतबसललसीस॥ करिमनुजरूप॥ ढोनिकटकीस। मैनाकवाच। विश्रामलेऊममश्रं
गवीर॥ तुमस्वामकाजसाधकसधीर। हनूमानवाच। हनुमंतकह्योसुप्रसनहोयकछुअर
थनमोतेसस्योकोय॥ अवकासकहांविश्रामआज॥ करुनानिधानविनुसरेकाज। कविरोवाच॥ मै
नाकहिकीनीमनुहार॥ करसिषरछुयोसंतोषकार। सिंघकावाच॥ सिंघकानामआसुरीअसाध
विऊनदसुमाताधरमबाध॥ सिंधुगतनइआसुरीसोय॥ हनुमानविघनकारकसुहोय॥ दुष्टाभय
कारनदेवद्रोहि॥ इहांरसोहनुथिरथकअकास॥ तरवंधफेरज्योवंगतास॥ सिंधुकाकरीतबम
तसचेत॥ हतवेगभयोहोकवनहेत॥ इतउतसंपेषयतकोउनआंन॥ कुनकरीअसुरमायाप्रवा
न॥ उर्धदिष्टनिहारयोजबैआप॥ सोपरीदिष्टदुष्टासपाप॥ अतिकायघोररूपाअसाध॥ वसकपट
करतभवभूतबाध॥ तिहांदईलातहनुमानताहि॥ अनिवेतभइसुधिऊनआहि॥ उलंघउदधमारु
तअनंग॥ सुनभूम्पदेषतरुलतासंग। दुहा॥ उलघ्योमारुतउदध॥ चितभयौसुखैन॥ दिहनए
मसुवामसिय॥ ताबिनफुरकेनैन॥ ९६। छंदप। वनसघनविवधउद्यानवाग॥ तटनिकटरूपसर
तातडाग॥ वनमुदितनचतबोलतमयोर॥ रसमतरत्तकलिकंवसोर॥ सरसरनफूलसरसजस
मूह॥ जिततितहिगुंजअलिमत्तजूह॥ पंषीअनेकभाषाप्रचार॥ सोउपठतअनगमनुवटसार॥ आ
मोदउद॥ पविकसतअनंत॥ कलरवमदंधमधुकरकरंत॥ वनजंतुविवधभाषाविहार॥ वतिमाकु
वरणअनिअनिप्रकार॥ परबतईकओघटविकटपाय॥ ईहांभवढ्योताहिहनुमंतआय॥ सबदीप

मांन लंक सुदेस। विस्तार विवध रचना विसेस। विश्राम कस्यौ तहां हनू वीर। तरु तर लंक्यां हगिर उ
दधि तीर। दुहा॥ महा संकल्प विकलप मन। मनु चिंता हनूमांन। पेक पिंरूप प्रवेस उर। ना दिन जुक्ति नि
दान॥ ९७॥ करी प्रतंग्या वचन कहि। एंगदादि सौं ऐह। करि हूं सोध सुजुग्त करि। सीता निसंदेह॥ ९८॥
मारुत तहां विचार मन। उतिम मत्त गिन एह। करि कर विंदन रांम कौ। हूं सधस्यौ तब देह॥ ९९॥ तर उच्च
स्ति गत अद्रतै। उतस्यौ मही असंक। हूं सस्वरूप अनूप उती। कपि आयौ गढ लंक॥ १००॥ अथ लं
का प्रवेसनं छंद उअबरी। करि विचिया रूप जो आइ लंका। अति बल रोकयौ पंथ असंका। विग्रह वि
सुध विरूपा वांमा। निसचर घोर लंकनी नांमा। अलिप सरीर वीर अविरेषा। आपे नहीं कबु हरजु
विसेषा॥ लंकावा॥ कोतुम जातक है कि हकारन। चोर समय निसगढ संचारन। निज मो हिकह
त लंकनी नांमा। विकटा चोर भछनी वांमा॥ मारुतवा॥ कपि हूं रांमचंद्र को किंकर। करत सोध
सीता गिर कंदर॥ लंकावा॥ देषत तो हि जांन न दीहूं। पंचन मांझ कहा पति पेहूं॥ हनुमानवा॥ हम
तुम विग्रह उचित न होई। कां मन बधत उरष न हकोई॥ लंकावा॥ उरप्रवेस मो हि अबतन पेहै। जो
अति बली तो फिर घर जेहै॥ कविरोवा॥ रोष दिष्टि तिहलात उपारी। मुष्टक रि मारुत सो मारी। परी
सुमुरछित विषम प्रहारा। रुधर स्रवित मुष अविरल धारा। जागी मुरछा चेत नई जब। तहां कुर
विनय लंक बोली तब॥ लंकावाच॥ दुहा॥ रवि विश्वकरमा रुचिर। हूं लंका निज हाथ। पाई उरी बेर
प्रभु सुष विलसे जब साथ॥ १०१॥ कंटक काहि कुबेर कों। बीन लई यह बोर। नारन अघ पीडंत न
ई। देव धरम उज डोर॥ १०२॥ कवल सुवन को ध्यान किय। मेत बछ्य तिउ षमांन। विधत वदी नौमो हिव
र। मैं सो ई कस्यौ प्रमांन॥ १०३॥ विधरोवाच॥ त्रेता जुग महि अविन हित। राम मनुज अवितार। ह उपंच
हि सियसोध कौ। वानर जूथ विचार॥ १०४॥ ऐहैं हनुमत उरंग यह। करि तुव विघ्न निसंक। यानि श्चय जान
कई हां। लेहै वनी हानलंक॥ १०५॥ अग नदाहक बौ औ बैमृतक सरीर हि मो हि। मारुत धर्म निधान मि
ल। ता कील ज्या तो हि॥ १०६॥ मारुतवाच॥ कीनो अंगीकार कपि। रांम प्रताप प्रमांन। ऐसें इकैहैं अबै नि
श्चर मान निदांन॥ कविरोवा॥ देष्यौ मारुत गढ दुगम। बहु धांक विन संचार। कंटक येह प्रवेस कौ। चीसो
चित विचार॥ १०७॥ छंद प॥ सो रचित विश्वकरि मा सुभाय। पौलस्त वंस तिह मोद पाय। परबत त्रकुट उ
परि प्रकार। परिषा जुगहर जलनिध अपार। थित द्वार ढ्रगट प्राकार घाट। कहचा रोव प्राकृत क
पाट। संकलन सूल अग्र गाटसाज। बहु जंत्र नाल कंकुर विराज। नीसांन द्वार घार हि सिंनाद। प्रतज्ञा
मज्ञा मत्त प्रमाद। रच्छक अनेक राकस सरोष। घहरात चवन ज्यों गिगन घोष। उत्तर दिस द्वार जु मध्य
आय। सब देषविधि हनुमत सुभाय। कनक मय ग्रेह अपार कार। पुर रचत हाट पट पटन प्रकार। स
बमि त्रिन के घर करे सोध। पेन्यो कहुं न सीता प्रबोध। यह कुंन करण सोध अग्यांन। थित स्वरण रवि
तसब थांन थांन। सुत रावण यह सो भौ सुभांन। निसंक एक एक हि निदांन। दसकंध ग्रेह तब गयो हु
त। देस कैं अविलोक विविध रचिना अदूत। सहंस्र रच्छक तहां सावधान। सनाथ घुरत जहां तहां नि
सान। अरु बजहि विविध वाजे अनेक। आकत घन सजित सुर विवेक। गजमत बरुत घूमत गही
र। सो पवन वेग परबत सरीर। अनेक देस संभव उतंग। प्रतिमा सुजाति बहु रंग प्रमंग। वामी विसा
ल तन नार वाह। थल जग वन वेग जे बल थाह। वन जूथ षरन भस्मी कुवांन। करक सरवरो मादि र्घ कां
न मद मत्त करन घूमत अमांन। वउ ब्रषभ बध अनेक वान। सो गिनत को नवाहन विसाल। रथ जल
ऊथ लज्ञ अति गति रिसाल। आषेट अवैर थजेनित अनेक। कहि कवन जु संषा एक एक। प्रतिजाम

करात्स संक्रु छेम नितरहत निरंतर स्याम नेम । सब ग्रेह कनक प्राकार साज । विस्तार विहित रचना
विराज । प्रतिहार बध्यजे द्वारपाल । कंचुकी कुब्ज काया कुढाल । अंतहपुर प्रवसी हनू आय । सब
वेन वदेषत नय सुनाय । हिम मय अवास सुन सहथांन । विधविध गवाक्ष पजाली विधांन । सिसत्र्यूर
क सिमि मणिमय प्रकास । वातायन बिबअद्भुत विलास । थित तहां प्रवाल मणि नील थंन । अनेक चि
त्र रचना अनंग । मुक्ता पट गजरद जुत समांन । पट नक पाट सोभा प्रमांन । गृह गृह गवाक्ष द्वार नसु
रंग । पट्टुरेण रचित परदा प्रसंग । प्रति सौध पताका ध्वजा पाति । कनकमय कलस मणि दीप क्रांति । आ
सुरी सुरी वनिता अनेक । किंन्नरी नरी विदुषा विवेक । पन्नगी नगी प्रतिमा अनूप । रुद्रनी जक्षनी
अछर रूप । गंधरबी देव किंन्या सज्ञांन । तंत्री मृदंग सुन गांन तांन । क्रीडा के उमुग्ध्या मधि पेष । अमिर
ति रमत बिक बल विसेष । थित जा सुविलास तवांम वांम । नार थर तिजी ते मनकु न्याम । यह ग्रेह म
ध्य हनुमंत आय । सुषसयन जहां रावन सुनाय । सोलष्यो सेऊ रावन अगूफ । सिर काट चिताम
नु मृत्यु रूप । मयसुता सती साद समांन । वेतनी निकट वर तन प्रमांन । ईह विधनिद्रागति देष आ हि व
ष मुदत सुअसमय फिस्यो चाहि । ईत्ला हगैर षोजे अ सेष । वामा न राम पाइ विसेष । दुहा । रावन वि
विधविलास रत । पावै कव को पार । कहु अकसुनी सुहमकही । सुन ज्यो मत अनुसार १०९ । अथ मा
रुत वनीहन मिलाप । मारुत नोल तलंक महि । गयो वनीहन ग्रेह । तब देवालय देषत हां ~~उपज्ये~~ ^ओर विलोक्यो^
मन संदेह ११० यह तिह अंगन आगमन । जो मारुत सत न्याय । तुरछी घन मंजर तरल तहा आय ११
सदन जु सुंदर साध को । ईह पायो अनियास । विधक्रत राम प्रताप वस । वाढ्यो उर विस्वास ११२ । छंद पा
ध्ह जह्यो वनी बन अनावित । उचार राम हरी हरी अनंत । धरि विप्ररूप हनुमंत धीर । कवि अंगन
ठाढो संतवीर । तव देषवनी षन विश्रतास । सो आय निकट मनसावकास । कियव्रम जानतिह निम
सकार । विधजुक्त नऐ पूछित विचार । वनीहनोवा । ईहां कुरी वसत राकसअचेत । कय ईहां आ
गमन कवन हेत । कैआवन नौमम नाग पकाज । को उदित भाग कृत नऐ आज । कविरोवा । स्याति
क सुना व वडि दरू संग । आनंद अंसु रोमंच अंग । इह गौर हनुजिहहेतआय । सब कहैक थाकार
न सुनाय । वनीहनोवाच । तब लह्यो वनीहन कहन तास । विधसुन कृहमारी रनवास । रदसंकटवि
च्वर सना निवास । सोरहित सदा हम सदित त्रास । सब जानत कपितु मव जुसुनाय । अन्नाथ को
उजो सरन आय । करता कह अपनो जनक पाल । देषे सुदिष्ट का रूदयाल । दारुन सुनाय वनिर
दय निलाज । रात्स सी जोन ता मसी राज । आसुर अज्ञांन चंतर अचेत । हमसो जो आवहि कहुहेत
अन्नाथ नाय कहियत अनंत । सो रीकैक रू हनुमंत संत । मारुतवा० दुहा । सरनाई पिंजर विजय रां
मचंद रघुराय । कपिं जो सुग्रीव हिसो करी । नाय प सहज सुनाय ११३ जो को उलेहि अजान जो वांन
र नाम सवेर । ताकह चो जन दिवस तिह फलैन का कुफेर ११४ सुनि वान रसुयी वसो आय सरन अ
कुलाय । बाल मारता कह विजवरा [illegible] जद यो रघुराय ११५ कारण वरण वरण को । ना हिन तुहां निधांन
सो सुग्रीव कीनो सखा । भूप नान कुलन्नांन ११६ लंक विलोकी ओरला । सुन कुवनीहन संत । कहां
नपाइ जांनकी । चित नयो अनवित ११७ वनीहनवाच रावन की कीडार हस । इह असोक वन आदि
तहां दीन अतिषीन तन । ततबिन लहि रूता दि ११८ कविरोवा । जिह असोक वन जांनकी । वितव
त विहत विसेष । अब हनुमत आये ईहां । षोज्यो नगर असेष । २० । छंद वैताल । वन कोट कनक वि
साल विरंचित । विस्वकरम वनाय । चित हरन द्वार कपाट चंदन । सुन सुगंध सुनाय । तरु तरल

किसलयविउलपल्लव सुभदमंजरसंग आमोदउहपअनेकआकृत रंगरंगसुरंग फलयमृ
तस्वादअनेकफलनुवनिमतसाषाचार नितकुसमफलबटरितुनिरंतर उदितछिबअनपार अ
नविवधकुंजसउंजवेछिय कुसमफलअन्नेक मधुमत्तगुंजतमधुपमाला कोकिलारिवकेक अ
न्नेकरंगविहंगआकृति नाचअनअनन्नेद करिछत्रनाचतमोरकीडत अतदिमत्तअषेद मिलसी
तमंदसुगंधमारुत सुबदछायासंग अद्भुतियवनअविलोकअद्भुत उदितजहांअनंग मरजाद
मंडितकनकमयसुन रचितमणिमयपांन जलअमलकुंडवकुछजलसह गहरमधुकरगांन न
गरस्वतथंनाकुंचनिरमित वगटकुंदनपंक मिलईटमिणमयरचित्तमहिमा कनकपटपरिजंक
तरुसीसपातिहकुंडकेतट सघनपलवसाज तहांरहितघेरीसतीसीता सत्नयदुष्टसमाज तन
मैथलीससिहजकेसी जगतवंदितजांन अतन्मीनअगमनकलाअकिलन निमषजुगहिवमां
न।बदप। राक्षसीरहतरक्षकसरोष दुष्टासुदेहअनदोसदोष सोरहतनिसादिनसावधांनअ
विकासनहिनविस्वासआंन दुसाधरूपसुनसुनकुदेह करहोतकरतधरधरसुदेह रतछुधत
मुदितराकसीरंक रुढाअरुदिचितविरत्नवंक वतिमानुजसीसअनेकपाय श्रुतनैनवदन
करकससुनाय करीदंतीकीउदंतीकुदाल रक्षाप्रलंबकुदाक राल कोविकाउदरसिर
उरधकेस वनअधअधररसनाकुवेस दारुणदुजीहकोउदिरघदेह साषामृघवदनीनि
संदेह विषधरनमगरवदनीविष्यात गजमहिषमुषीकेउदिरघगात मुकुतसिरकाउकहैअ
मुंड तारुसकक्षकोउदिरघतुंड सूकरकोउकुकरमुषश्रंगाल कोउकाकमुषीवंचाकराल
गजश्रवाकोउकविपरीतगात दंतावलिनलिकोऊडद्दादात ज्वालामुषकोवकतडितजी
ह सर्लकीरोमकोउमुषीसीह दुगजलतअनलकोउपलयडीह विषवचनवांनविषमयवि
मोह हवधुरतसुलोचनपापहेत देषतनरनारीप्राणदेत नववदनश्रवनपदरीअनांत जाने
कोराकसजातजात अतिदुष्टअमंगलवाचएक अंगारनहदाडरसुषअनेक मुषसरपजुवानी
श्रवनसाल गलधूककोउककोउकाकगाल नषसुपनिरदयकूपनैन कचकपिलअरुन
नैनाकुचैन गजकरनचरनकोउसिंघगाव वतिमाअनेकअनेकपाउ आकृतअन्नेकउ
छाअधीर साकारकरमगोधीसरीर पैपीतरुधरकोउसुरापांन वसमासचहैविनदावांन
इत्यादअसुरकारकअनीत नवचूतहोतअविलोकनीत ।दुहा। इनकेसंगरयोरहत जैसे
दंतमेंजीह कबुअविलंबनज्यानकीदिहसहतउषदीह २१ अथमारुतअसोकवनआगमनाबंद
कअषरी। ईहांअसोकवनहनुमतआयो बिपनरहेमनसंभ्रमबायो तायसीसपतररहतसुसीता
नामनचेषीअतदिसनीता असीरामप्रियाअविरेषी दीनमलीनजातनहदेषी वनपटवस
नमलिनइकवेनी ययनन्मपअतिपरनवसैनी मोनकुदीनगंगरितुग्रीषम सतीसोचितनाथ
विनुसंगम तयोवियोगपअनलकंचनतन छीनदेहवहितापविनहिविन सोकसुधाकामनुसो
लकत प्रेमपतीतपीरपरिपाकत कष्टकसोटीरेषाकींजत छीजतदेहनसोनाबीजत कलपल
ताविछुरीकलिपतर मनमलीन लीनैमुरजांनैमंजवेदवानज्योअरथविपरजय श्रीहरीविछुरि
महाचिंतासय गिनगिजीमनुसिवहीवियोगिन सचीविछुरईदअविसोगिन सावत्रीसुबुदेविधसंग
हि आरितरतीजुविछुरिअनंगहि रिवहीविबैवैजैसेरांना बिनबिनहोतषानकृबिना निश्चलवि
तसुसीलअनंदा विछुरीजनुजालंधरबंदा मनुमुरीकातिउसासनकत सोविपंकनलनीलैसुकि

त ॥ तरफरातसोचतजियतेसे ॥ जलहीबिनुरतसफरीजेसे ॥ धीराउष्टराकसीनघेरी ॥ हिरणीमन
कुकिरातन्हेरी ॥ सुरनीबालसिंघनीसंघट ॥ रहितरामईकरांमलगीरट ॥ ग्रसीबुधमनरूचिताग्रय
मीलमनुहोतकीटभ्रंगीमय ॥ कलाद्रूजसिससीअविलोकी ॥ रहतत्रियनमिलमनरूरोकी ॥ मानकु
जीवजोतिमिलमाया ॥ बईसुविद्याकुविद्याबाया ॥ कनकलताअतितरुनसकोमल ॥ मानकुआव्रतकं
टकमंडल ॥ रहेयरहनज्यौसंगटरोहन ॥ छीजतदेहविवसन्तईबोहन ॥ लितपंकमानकुमुक्ताफल ॥ कन
कसलाकलपेटीकज्जल ॥ केतिककीकंटकबसकीनी ॥ अहिगनमानकुमनिजुअधीनी ॥ फिरेनावमा
रुतबसडोले ॥ बसत्रिषवात्तगपीवपीवबोले ॥ रामहिरांमएकलागीरट ॥ सीतपरीअतिउसहसंकट ॥
ऐसीरामप्रियाअविलोकी ॥ सीतन्रूघनसहतससोकी ॥ दुहा ॥ देषदसावेदेहिकी ॥ वाहित्राहिकरित्रास
मारुतअतिहीविषादमन ॥ सोचत्तमीचतस्वास २२ ॥ तरुसीसपपल्लवतरल ॥ साषातरलसमांन
तिनमहिदुरिबैठेतबहि ॥ हनूमानबलवांन २३ ॥ छंद १५ ॥ मारुततरुपत्राछिपतमांहि ॥ निसचरीसुका
तुलहौनांहि ॥ निसअरधवजेजितततनिसांन ॥ उहांजझौउष्टरावनअज्ञांन ॥ तनसिथलविटसचि
तरसहिरत ॥ आतसयअसंकमदपांनअत ॥ अथरावनअसोकबनआगमनं ॥ कहिसियासियाष
टचारकंध ॥ मनअतिअधीरआयौमदंध ॥ नूपरिनहोतझंकारनाद ॥ वतिसहहरहिमयपसाद
सतजूथसुजंगवनितासुसंग ॥ रसरूपरत्तअनेकरंग ॥ दियेसियाअंगसोनाउराय ॥ नहउरधवद
नमुषपराजाय ॥ रावनवाच ॥ मोहिदेषकहाकृतमनमलीन ॥ लेकरकुअंगदीअंगलीन ॥ ममवचनसु
नकुसीतासमोह ॥ दिलरामकाजकरिकूनद्रोह ॥ आकासवासदेषेनकोय ॥ हवतासकाजकहा
हतौहोय ॥ कृतघनकुदावकरनौकुकृत ॥ अरिपैसरबतिहबलैअंत ॥ मुराजदीनकौमहामित्र
चाहेअनाथरीकेचिरत ॥ दुषीजु[illegible]महिमा[illegible]कूलोकदेय ॥ अतरउदासउहचिरतएय ॥ निरगुनि
अनाथलीजेननांम ॥ विकनांहिनजाकेवैरगांम ॥ जाकेनमातकोउपिताजांन ॥ नित्तषोजकरतमु
निगननिदांन ॥ उद्यानवाससंपतिअवस ॥ साद्सकाकुककाकुअदिस ॥ तुमहोधौकरिहौकहा
तारि ॥ उहविषयरहतनिसदिवसआहि ॥ निसपेहमदातुमसोनिरास ॥ तुमकरतहतौउषहेतता
स ॥ नरगुणवहपइयतककुंनांहि ॥ मुनीरहतषोजत्रयभुवनमांहि ॥ तुवकाजजततनमेकियअनेक
आनीमैतोयभुजबलहिएक ॥ अजकुनहीतेरेषोजआय ॥ सोउहीनसक्तकातुरसुनाय ॥ निश्चेजु
नराधिमबुधिनांहि ॥ मनुहेतनतौसौचित्तमांहि ॥ निकामरांमनिरगतसनेह ॥ अनिकाजेआग्रजक
हाऐह ॥ कुआदिकामकिरसहेत ॥ वहरहतसदातौमांकुचेत ॥ मनतजकुविकलनिरनजकुमोहि
तातैमनवंछितदेकुतोहि ॥ दुहा ॥ गंधरबीजछीनरी ॥ सुरकिंन्रासुरगांन ॥ करिहूतवपरिचारकामा
नकुवचनप्रमान २४ ॥ सीतावा ॥ सुनिसुनिरावनवचनसिय ॥ बोलीत्रणदेबीच ॥ मिदरिसूनैमहिहरी
रेनिसचरचितनीच २५ ॥ बपैकवता ॥ विनुप्रकासरविबिंब ॥ तमननुकचकनटरही ॥ बिनप्रकासरि
वबिंब ॥ नदिनदेवलउघरही ॥ बिनप्रकासरविबिंब ॥ मातवबानगउमिल ॥ बिनप्रकासरविबिंब ॥ उध
रिकंजनउफिहेअल ॥ तववचनरचनदसकधरे ॥ ममनचित्तमूलैअमल ॥ उद्योतजोतिजोतिलंके
सबल ॥ ककुनपरसकछ्वहिकमल ॥ १ ॥ रेअंगालससस्वांन ॥ सींहबलवहतअधमसठ ॥ रहसीस
ससिरेष ॥ हरणवटकोझकरतहठ ॥ धरणितादिधनुरेष ॥ जदिनककुलधिनजाकी ॥ संगमरिणसरघा
र ॥ तिहासहिहैकिमताकी ॥ अपराधकुवैअविधेसकौ ॥ रेयकसनिसचरनिलज ॥ संमूलनासकेहो
सकुल ॥ अबनवचकुन्नूतेसअज ॥ २ ॥ छंद ५ ॥ हरीलायोमीकरसुन्प[illegible]येह ॥ अनिउचित

चोरक्रमकरयोएह पेरस्वकपरित्रियजुवहार गिनतिनहिअधमधिकारगार याकोसुगहैफल
निकटआय घटन्नस्योपापपूरनअघाय सुढलरामतुममनुजमांन जमलोकवलाउनऐजांन
सरपंजरवाजलबंधुसेत करिपंथउदधिरघुवंसकेत सामंदसोपकिबाअसेष वरवीरराम
आगमविसेष असुराघवसानुजरामआय तुमवंसनासकरिहैसुनाय बलकरेलंककेउदधबोर
जेहैमोहिलैकरसमरजोर उणिजाकुदुष्ट ह्यांतेअज्ञान निजदोबनासकेहोनिदान कविराव
(डुहा) सामादिकउपचारसब करियाकीलंकेस कादोसुगडुधारतद्द लग्योरहनकरिकेस २६ दिष
समयमंदोदरिय आईतहांअकुलाय जोगपउपदवजानकै पकरिरहीपायपाय २७ मंदोदरीवा॰ द
ग्धनइयविरहदव आविनमहजियआय देहिआपकेअतिउसह कैमरिहैअकुलाय २८ वगदि
सुरसुरउवका नगीपनगीनार गंधरबीजहीजुयह अवरपीयतजलवार २९ कवत विरहनवि
षमविरहवहतजियएकपतिव्रत दीपसिषासीदेह रहीकैदीनरामरत रोषानलउठरोमरोम ह
वपरजरिमरिहै वलयकालसीवगट कोपकुलनासजुकरिहै वियबोल्यालआकोअप्रिय करि
यहवणतअनेकक्रिय नरियारवबोधहिअंसजुज मिलगवनीमंदोदरिय ४ वदहिअहरी सीता
वेहिमक्वनसुनाए नयोविसानोमननहीलाए रावनवा॰ सवराष्पसिनीकहोसुनाइ वहैमास
दैअविधवताई सर्वउपायकरऊसमझावऊ मानैजहूतिहनातमनावऊ तरजनवामनुहारऊ
ताइ कहिअसुहाइतया सुहाई सबकिअविधमेदीनीसीता नजैमोहिनहीजुपेअनीता कहुदि
नअविधप्रतंज्ञाकरिहौ टेकआपनीतोनहीटरिहौ मान्योनहीक्वनजोमेरो करूंनहसतोसीताकेरो
कविरोवा यौकहिदससिरमिंदरआयौ कह्यौहृदयसियक्वनउषायौ वधराकसीवा॰ इकराकसीसी
तहिउपदेसा विवधवनावतक्वनविसेसा सफलकरहुजोबनतनसोना लंकापतितवरूपहिलोना
छीजतजोबनजोघनछांही नीरकरंजुलिषिरगतनांही दुस्सहक्वनलागैवैदेही तबहीदयोप
रिउतरतेही सीतावा॥ जोकोउबिनपलमोहिजिवावऊ निलजवचनफिरनाहिसुनावऊ देवह
धनहोसानहिदीजे कबईहऊअभिलाषनकीजे कऊउच्छिष्टकतनुषनलहैकन नालतुल
बिचंदरसमरपन दुजन्ञनसजेनषेजुदेही विमुषरामतोकैवेदेही ठिगसुमेरजोबहमंडलै
लै वसबलजोमिथ्याविधबोलै चितह्युधसिंघघासजोचरही अचरमतोसीतनआदरही विश्रम
गंगप्रवाहउनीता सीलधरमतौबाहैसीता वधनहतुमसमयविचारऊ योअधर्मसुषनहिनउचा
रऊ कविरोवा॰ कीनोसईनजायदसकंधर मणिमयपरिजंकहिमयमिंदर दारुणस्वपनदसाननदे
ष्यो वंदरआयोलंकविसेष्यो कपितिहमहाउपद्रवकीनो दुस्सहरावनपरवदीनो सीतहितेराकसी
समझावत दारुणदंतदिषायडरावत कोउवकबोलतक्वनकराला हसततलिदेपीवतहाला उ
स्सहलोचनअंगुरूनदिषावत गरजतकोउसुरकरकसगावत कादबडगजमदाढचयानक आ
वतमनजचऊदिसअंतक रविरविविरतअनेकऊरूपा संषनिहस्तनिजेनषरूपा नैनूनामव
नीषनउनी विघ्ननक्कवहपरमविचित्री रहितज्यांनकीनिकटनिरंतर दिननिसडुहावटावत
डुस्तर त्रजटावा॰ बोलीत्रजटाक्वनविसेषा दारुणस्वप्ननिसामैदेषा ममक्वसुनऊराकसी
माता तुमहिअंतहइकेहैनाता अनुजसहितआरूढऐरावत इहगढरामविलोकिआवत सा
मअंकआरोपतिसीता यहमैदेषैपरमअनीता दग्धालंकाकछादेषी बधरावनकोसुतनबि
सेषी रावनतेलाम्बंगदिगबर विरगोमयनदसुतजुतबर चलदलपछ्छवमालाबंचल तिलहि

चावतमुष्टाकरतल॥दससिरमुष्टितमुष्टिकटेदग॥महिपारुढचलेदक्षनमग॥भरीवनीक्ष
नलंकापाई॥सानुजरघुवरजएसहाई॥अनिसंष्याकपिसेन्याआई॥दसदिसफिररघुनाथ
दवाइ॥नजटास्युनसुनतउरतासी॥सीयरहीनिसचरांउदासी॥मुषनिस्वासनइनजलमो॥चित
सीयासनीतमनहीमनसोचित॥उनिकोउमरनउपायनपाचित॥तातेबुधचितरकवहावत॥विष
नक्षनकिबाउधबंधन॥सस्त्रघातिजलअनलसजोजन॥सीतावा॰॥हेसीसपममओरनिहा
रो॥हैपरिकैहितजनमतीहारो॥कावमांकहीअगनकहावत॥वेदहिलोकसुसत्यवता॥चितअ
गनारदीजियहअवसर॥कहतनिहोरनिहोरजोरकर॥कविरीवाचदुहा॥हनुवंतबलवंततहां
हित॥जुतसमयनिहार॥अवसरजानजुआपनो॥दीनीमुद्रीडार॥३०॥करिधरिसीतामुद्रका॥आतुरल
ईउठाय॥एवजुयहकैसीअगन॥सियरीलगतसुनाय॥३१॥छंदहैअपरी॥छिणकनिहारसंनारजुदे
षीयहमणिमयमुंद्राअविरेषी॥रामनामअंकितअतसुंदर॥धरउरबातीकंपितथरथर॥स्वरणरल
मयबडुतसवारी॥रामसदापद्दवअविधारी॥आयहगेरहेतकिहआई॥सोचितअतिमनसंभ्रम
बाई॥दिष्टउरधतरुतिहदेष्यो॥वानरवेगेडारविसेष्यो॥इहांज्यांनकीअतिअकुलांनी॥वानरदेष
विषमकहिवांनी॥रेकपिकैआयोतूरावन॥पापीपाप्रकासअपावन॥कविरीवा॥ईहसुनउतरव
क्षतेआयो॥करिपरणांमजनमफलपायो॥रामदूतमारुतरूवादर॥उपज्योसाधुअंजनीकेउर॥
सीतावाच॥कपिसोनृपतिमित्रताकैसी॥असंभावयहवातअनैसी॥हनुमानवा॰॥मोहिअपनोकिंक
रजांनक्रमन॥करुजननिसुनीयोसोकारन॥कपिराजाहैबालकेकंधा॥अनुजसुग्रीवहिनैअ
नमंधा॥देसनिकारसुयहीदीनो॥कैगयोचित॥चितबलहीनो॥वसधजगतउरांनभ्रमांनो॥रघुवं
सजयोदसरथराजा॥विमलछत्रउरअवीधविराजा॥वचनकपटत्रियनृपतिविनासा॥अविधेस्व
रगिरमूकहिआए॥तापसवेषविरहतनताए॥वहांसुग्रीवसरनजबआयो॥लेकरयहप्रनुकंव
लगायो॥तहांनईरविसुतमिताई॥नाझउदयरघुवरकहिनाई॥सरनविजेपिंजरहतस्वामी॥जीव
चराचरअंतरजांमी॥नियहबालपरमपददीनो॥कपिसुग्रीवहिराजाकीनो॥कपिपतपैजकरीयह
कहिकहि॥मिथलिसुनासोधआनमहि॥प्रबलकीसवडुओरपठाए॥धरसिरवचनदिगंतसुधा
ए॥अंगदहिआदसकलदमआए॥द्वादससुभटसंगसमुदाए॥दुहा॥नाझउदयमेरेजएे॥मातवुरा
कतमूल॥दुरलजपायोतुमदरस॥सबसंसयमिटसूल॥३२॥इत्यादिकप्रह्लिहिदए॥सियमांनेविस्वा
स॥आवहजविरंजीवअब॥देवसिरोमनदास॥३३॥सीतावाचमुद्रकाप्रत॥मनसकल्पविकल्पमति
विभ्रमप्रछितवात॥सानुजदसरथसुतनकी॥कहिमुद्रीकुसलात॥३४॥नकाव्यहैधातुमय॥जडमु
द्रानिरजीव॥कमयहलक्षनविरहको॥चकितटरतविनुपीव॥३५॥हनुमतबोलतनाहिए॥अनिष्ट
होकुकहुआहि॥तातेहोतअधीरचित॥दुसहउपजतदाह॥३६॥हनुमतवा॰॥कहाउबितुमतमु
द्रिकाहोतमूनहहित॥नामविपर्जयआपने॥तिहउतरनहीदेत॥३७॥करपद्दवमुद्राकठिनजो
हीतत्वसंजोग॥सोयहकरीआवतसुगम॥जननीतोहिविजोग॥३८॥मुद्रीकंचनरत्नमयसोपैघडी
सुनार॥विस्वीकरकंकनविरहं॥पुनरपजनमप्रकार॥३९॥सीतावाचछंदअरुदारी॥तहांहनुमंतहि
कहतजुसीता॥नयरावनकेवचनसहीता॥निठुरजएमोप्रतिरघुराई॥नाइजोप्रसुनहनुमत
नाई॥कबकुनधेरईतीप्रनुकीना॥देष्योजबदुचितकोउदीना॥दुक्षपेक्षादहीयंनविदारा॥तहां
जुनएेनरहरअवितारा॥षांनकष्टजराजहिपाऐ॥आतुरगुरडबारुप्रनुआए॥सुरनसहायसैं

हासतनसांध्यो बोलबलेबलराजहीबाध्यो परमसोवितरुद्रतबपायो बुंदांइनरूपबनायोवि
दविगतजबचितविचारी मीनरूपतहांभएमुरारी रतननिकासनसुरनविवास्यो धरिगिरपिष्टकमव
तनधास्यो रसात्रसेबहरीजबनिसवर करुणासिंधतबदिनऐस्कर हयग्रीवहिउनिनिगमह
राए नैसोईमारिविधहिपकुचाए कोटिकलपकीबिरदकहानी असीकितिकगिनेंसुधआनी जनहीअ
गमिनहीकबुअनकर वेदपुरानकहतयौविस्तर नैरीकष्टककुसुनहनुमत जानतहीउघ्रततैजा
गत तनममदसाबिपीनहीतीतै मुषसोकछुकहीजातनमोतै तबजिउकुतैषांनममताता दुसह
तेईअबभएदुषदाता कवत कंटककइरनभएकोतिकचयानकसे हारअहनभएअधियारमयोआर
सो नाहरसेरूपरपहारसेपदरभए सेग्यासमसानचईन्हलपनसुनारसो आकसोतंबीरसिरवाइसी
सुवाससब वीरभयोकेवचसोअर्जुनअंगारसो विपतदुसहअैसीकपिअविधिसविना बानभयोपा
कनेसोविमनोवहारसो १ सषीकोनवसकाङ्कवनितपिसाचीककी पांचरूनमेरेजिहिआपनोजाव
ती वधाविघआविसुतीधीरजधरावेजोपे धीरजकुहीतकहाऐतोदुषपावती देहभयोरूनोदिनरेनजरे
हुनेदुनो रसनाहिनगीरटरांमरामगावती उद्यमसुधाकेरहेनऐवानआकेबाके गईनिदातजिगांवसु
नेकुमिलावती बंदबेअदरी सनमुषभएपरामुषसोई रांमवियोगदुकरूकिहहोई वनतरसकलेनेनअ
ववरकालरातसीरातभयंकर वहतसमीरगरलमनुविषधर सतपतेलसेसघनबुदेसर विनपत्यावि
कउबीवभावस दुसहधाववोलवसेरसदिस कछुककोकिलकंवशुकारत तिछ्नसरदुसारनि
सारत बोलतमतमयूरविहंगम सबनहोतदुषदरवसंगम मारुतवाचदुहा जानततुमनीकेजननी
रामपराकमरीत सोधविनाउनकुदुसह वासुरईतेविती त ४० विषमदसारघुवरविरह दुषवसभएवि
देह मानकुकीदनुभूंगमयकैहैनिसंदेह ४१ छपै निरषतसीगुननश्न सदृअवविधसुनतसम कह
तकछुकअनमृक गवनमगआदिसुजंगम सबकृतजुवेसचेत गंधयहिलेतघ्रांनगुन स्वादमधुरकटु
रसन बुचातपसीतत्वेदतन ईसीनषकितमिलअनुसरन मोहिनश्चाराहिमनवविरहगता गतमहि
रगत बरुतमतिहितिहजातछिन २ बंदबअदरी अज्ञातमातभयोविलमएह सुधलहीनकहूतुव
निसंदेह नेजाउंतुमहिजदबोरलंका सोहेनमोहिलेकेससंक अज्ञानरामममोहिमातएह सोवित
जीयपातेनिसंदेह माताग्रहवायकसत्यमांन अबमिलहेराघवबेगआंन सामिलअनेकजृथपहि
वृथ वरवीरधीरवानरविरूप उत्पवहिलंकाएकएक अैसेअसंगकपिमिलअनेक सीतावाचपति
माबलपौरुषतोहिप्रमांन तनसमतानुधनजातुधांन संदेहहोतममचितस्तत तमउनहिकहाप्रतियुद्धत
ल कविरोवाच महादेहभयोतबहनुमांन प्रतिमासुमेरपर्वतप्रमांन नवदेषचराचरहोतनीत पैचईचिंत
सीताप्रतीत सीताव जसजुक्तरावरतूचिरंजीव हटभक्तरांमवछ्लसदीव सुप्रसिसीतदीनीअसीस क
रिविजयजाहुप्रभुवनंकीस दिनदसादेषतुमजातदूरिं प्रभुअग्रसवैकहवीसद्रत मारुतवा अविन
योजनितुबदरसआज कृतकृतभयोकुसरेकाज प्रभुकारजतोलाहुधाप्पास आपैनमोहिप्र
ज्योविसास इहउपत्योमनसंतोषआय मोहिदिवाधतदेअबहुसुधानाय सीतावाचसुनउहहनूहकह
तसीत तुयपरेसुफलभहदकुअमीत कविरोवा दुअदरी सजतनुतहासमयअनुसारा वनअसो
कहनुमतविहारा धुमधकढुनतफलनुवकारति ईषतस्वादतेईविवधआहारत उरधमूलअधसाषा
आनत नूवत्रणवालकेलज्यामानत मतकुरंदमौलतामरीरत्तं तानतएकप्रदिहोरत वनवदसकरे
विध्वंसजुवानर आयजंबूमालीतिहअवसर लोहर्षनकादिकपिलीनोकेलिहिकरिअष्टकासोजुकी

नौ। मुरु हि मुरु सो मत्त हि मार्‍यो। पर्‍यौ जंबु गत प्रांन उकार्‍यो। इहां आतुर तिनिस्वर आई। सीत हि बै
र रहत सदाई। दारुन तहा ऐक कपि देख्यौ। वाग विधुंसन कर्‍यो विसेख्यो। निसचरी वाच· सीत हि वहरा
क सी सुनायौ। इह कप कवनक हा से आयो। सीता वा· विविध कपट माया विस्तारत। राकस रूप अने
क विहारत। जो कोउ है ईह सो तुम जांनत। पग ट गुहत अपनो पहिचांनत। जननी रूतो इह न ही जांनौ।
उह्यो या हि तुम हि पहिचांनौ। कविरो वा· धरि कतच्छाती राकसी धाई। अति सभीत रावन पह आई। रा
कसी वा· वानर वाग असोक विगार्‍यो। माली जंबु पछा र्‍यो मार्‍यो। कविरो वा· इह सुन वहां दसानन
आयौ। अरु नन इन अति मन अकुलायौ। पन्नु ध्वा रिसु भट तब पेरे। वानर ते सब मारि निवेरे। पव केद
स सिर तिन हि पछारै। मारुत ता हि हिल ही मारे। इहां सात सेना पति आए। सो उह हनुमंत संसे नन साए। पं
च मित्री सुर सूर सौ स मह र। बिल हि मार पछारे खेचर। अषै कुवार यतै व हि आयो। अगिनत राकस ले
अकुलायो। नारथ अषै कुवार न जागे। इहां अनंग पवन सुत आगे। मिरे उपर सपर समह र दकुंजर।
अषै कुवर जूझ्यो ईह अवसर। राकस हन्नू अन्नेक संघारे। महा प्रमान सुथंत्तन मारे। दारुन अरुन
बयन कपी दीजे। परम भयानक दंतन पीसे। षिलमा गिंगड हि षलषेचर। चावै बांकु रो सभट वनचर।
राकस असी सहस रिनमारे। उनि कुडुष्ट अनेक पछारे। अति ही सरोष इद्र जित आयो। लोहि तनैन नगेद
उर लायो। भ्राता बध सुन महा भयंकर। सीस नमायो आगे दससिर। रावन वा· करि अति क्रोध कह्यो।
तव कंटक। इद्रजीत तुम जा कु अवांनक। बांधि लिऊ मारकु जिन वादर। करि है बीय हकोन कहे
कर। कविरोवा· दुरजन इद्रजीत जब देख्यौ। वनचर मन आनंद विसेख्यो। विषम प्रहार थंन हथवं
नर। स्वार धीर थ नांजे जिह समहसमहर। सुत कंटक कपि जूझत समहर। देवराज देवन नौ अति
हर। नरे ऐ प्रहार दरूं घां नारी। वानर निसचर वारी वारी। मेघनाद कहि मुष्टी मार्‍यो। उनत रुच ढ हनु
मंत पचार्‍यो। जाइ मो मुरि छाई इद्रजीत जब तेष विसेष आन जूझ्यो तब। राकस ब्रह्म पास तहां गा
र्‍यो। वायु तनय तब धरम विचार्‍यो। ब्रह्म पासन विना सदेव विध। सुरकार ज हित कंव पहरी सिथ नी
त धरम विधक षिसिर नायो। ब्रह्म पास तब हनू बंधायो। आनो गहि लंकेसर आगे। लोक अबिल
कपि कौतुक लागे। मेघनाद पौरुष मन मांन्यो। विक्रम बल दससीस वषांन्यो। रावन वा· सुन कु प्रहस्त
कहे लंके सुर विध कारन पूछो यावांदर। ईह क पिकीट कहां ते आयो। के धौ का पहि कवन पठायो। मा
रुत वा· सन्मुख वचा होपूछ तदससिर। ईह हनुमंत देष प्रतिउतर। हनूमान वा· राम दूत रू हनुमत
वांनर। सो मकाज वसक रूं सुरासुर। मारुत अषैक वर मै मार्‍यो। सोई रू जिह तुव सेन संघार्‍यो। रा
वन वा· रामकोन रिह्स मषवा र्‍यो। संघ मारी व सुबाकु संघार्‍यो। राम को न जिह हर धनु भंन्यो। जो अ
साधि तीन कु उरजांन्यो। कावतो रपौरष कहाक रियो। धरते टर्‍यो न तुम कु धरीयो। राम कौन छत्री
त्व उधार्‍यो। परसराम को गरब प्रहार्‍यो। फरसराम वह कौन कहां तौ। हेहय राज मारकियहां तो।
हेहय कौन महि षउ रगामी। सहंस्र बाकु बकु सेन्या स्वांमी। रेवा जल भुज बल ति हि रोके। विथुरी
प्रवाह सू तुम हि विलोके। अति बल गरभन तहा तुम आए। नए स ग्राम जथा मन भाए। नि स्रेवा पष
त्या नांधे। बाकु वी स तुम हि लेषा धे। हनुमंत वा· दु बी देष तुम सिंधु न्हाए। वहु बिबविसर गए घर आए। राव
न वा· राम कौन कहां धौ रे वानर। सब लबा लजि ह हन्यो एक सर। बाल कौन कहा उह कीनो।
नाव सुन्यो हम आंजन वीनो। हनूमान वा· रसा परिक्रमण करत सांत रस। वानर सिधा भयो ध्यान
वस। उहां दिग विजय करत तुम आए। पैवह जोग्य निद्रा वस पाए। विघन ध्याव वसत मविस्तार्‍यो। प

करिकधतहन्त्रमपत्रासो॥ काषचांपतुवपरिक्रमकीना॥ लीयांफिरयौतुवकौतुकलीना॥ योहीतो
२ हिलीयाघरिआयो॥ तिअंगदपलनालैंकायो॥ करिधरबालअंनयतौकीनो॥ दयाकरीबिटकाय
जुदीनो॥ रावनवा॰॥ रामकौनरेअधमवनेचर॥ नयोगरजतीहिजाकोनिरन्तर॥ हनुमानवाच॥ सबल
ताडिकाबांनसंघारी॥ रावनवा॰॥ नदिनसंगबलत्रियानिहारी॥ हनूमानवा॰॥ सुनदिगविजयहेततदद
ससिर॥ साहसतोलनगयोरसातर॥ बीसन्नजादससीसविलछिन॥ देषविरूपजुबांध्योदेतन॥ कहि
उखादतुमहिवसकीने॥ दासनमुहनबोलादीने॥ राजाबलआगललेराषे॥ नलेन्नलेवहांसबहिन
नाषे॥ बांधेआनथंनसोबाहिर॥ हसतसरूपदेषजनदरदर॥ कछुदिनबंधेरहेतनकोमल॥ भुध्याल
गीअतिनएविकलबल॥ सबदासीजनस्वांनेसिगारी॥ तुमअविलोकहसतदेतारी॥ बलिराजाकीविन
वविलासन॥ देदेकवलनचावतदासन॥ कछुदिनयोदिगविजइकीनी॥ लटकरहे सुधकोउनली
नी॥ वहांजबसुक्रवारजीआए॥ दयाकरीतुमबोहदिवाऐ॥ सुर्पनषान्नगनीतुवसुदर॥ ताकहिफिरतव
ननकामातुर॥ दंडकवनतिहराघवदेषी॥ सोन्नामनमथकोटविसेषी॥ करिकटाछसडगहावनावकृत
होतविहबलरसविषीयारस॥ श्रीरामवा॰॥ वसतपस्याहमऐकनारव्रत॥ राजाकोउषोजऊवैनवरत
क्रोधस्वरूपराकसीसोकर॥ सीतहिषांनधसीसोनिश्चर॥ कांननाकहतिलछनबांनकर॥ श्रवतिरुधर
जागीतिहसुंदर॥ जानऊसोतुमनांहिनजांनी॥ हसिहसिकूकतरामकहांनी॥ बरदूषरत्रसराजुधषोए
रोसन्नरेतुमरूसुनरोए॥ कलहकबंधनिपातनकीनो॥ उहितदेषउहनिजपददीनो॥ उसरमारवाता
पीइल्वन॥ क्रीडाइहकीनेवहकांनन॥ निश्चरव्याधहिमारिनसाऐ॥ पैतुमसोऊसुनेननपायो॥ रामपता
पवगटूबरावन॥ उनत्रयलोकसाषतिहपावन॥ ब्रह्मवंसतुमपायवनाई॥ तुवदपपालधनंदसोनाईतु
क्तिसूरताअतहितनाषी॥ सिरकृतहोमसुरासुरसाषी॥ सूरदयहकृतकोउनसराहे॥ अतिसूनैंमिंदरअ
विगाहे॥ तसकरकरमहरीतेसीता॥ नामनरहिकविनाअंनीता॥ तजपैबुधिरामसीअनुचित॥ दवस
वबांधविचारऊतुमहित॥ राजसबुधनहीतुवराछस॥ महावंसअराधतितामस॥ न्नतन्नवहावतं
मनन्नाषे॥ रामरजात्रऊउरसिरराषे॥ यहेजुकाल्वरावरयाही॥ सोउपैरामकुदिष्टनसाई॥ ममसत
सुनऊविसारदुष्टमत॥ सीतसुदेऊराषकुलसंपत॥ रावनवा॰॥ कबहितोहिमेमिंत्रीकीने॥ निजलश्वो
धतमंत्रनवीने॥ षोयोवागसकलफलषाए॥ इहांतुमकौकुनसौतबुलाए॥ हनुमानवा॰॥ नलेस्वादलागेम
नन्नाए॥ भुध्यालगीतववनफलषाए॥ वानरस्वंचलजातवषांन्यो॥ चमतफिस्योत्योतैवनन्नान्यो॥ रावनवा॰॥
रेकिहदोषअहतेमास्यो॥ हनुमानवा॥ पांनसरबधरमोहिप्रचास्यो॥ रावनवा॰॥ बलीऊतौतोकेमबंधायो॥ ह
नुमानवा॰॥ बिनअज्ञातदोषडगबायो॥ रावनवा॰॥ रीतनहीजोपापउरावऊ॥ सोअबज्ञातअज्ञातसुनाव
ऊ॥ हनूवा॰॥ संगतुववियाअवासहिसोई॥ ऊंतआयसुदिष्टनुहोई॥ उहैपापलाइयोमोहिअवहित॥ तेज
विहीनबंधायोताहित॥ पासबमहास्योईहांपापी॥ धितऊरलैसोसातरसथापी॥ नजोषुबमपासअनुजी
ता॥ उपजेदोषअधमअनीता॥ निहचैमैंताते सिरनायो॥ बह्मोसोकतवआयबंधायो॥ कवित॥ सिप्पादेन
समरथ॥ तोहिऊनिलजनिसाचर॥ ममऋवंकजुजदंड॥ सावतिहबसुरासुर॥ हगउगयजुवगोलबिल
कंडुकसमबेल्ह॥ फांदफांदनन्नफाश॥ महिरहिमकरमुषमेल्ह॥ आकर्वलंकबोरूउदध॥ दइतदेव
काऊनहरो॥ अंजनीदुधअलजिऊअवस॥ कहिनजुपैएतीसरो॥ १॥ कविरोवा॰॥ छंदऊअवरी॥ यहसुनिरांव
नजरिविनुआगी॥ गरज्योमनऊंह्रदयदवलागी॥ रावनवा॰॥ न्नजबाहोरेयहकपिन्नाई॥ उंनिकहादेषऊअ
ज्ञापाई॥ महितरटांकताजनामारऊं॥ रजरजकाटदसऊदिसहारऊं॥ इतजांनमैसहेऊवीदा॥ मरकट

त्यात्पालोपम्रजादा। कविरोवा। यौकहिकै वाबालत्र्प्रत्रागी। गरजगरजबोलतननलागी। मित्रउवाच।
सविवसुनटकहिकहिसमझावत। पांनदरुपत्रुहुतनपावत। नाषेहुतजपेमननावे। याहीत्र्प्रबधन
जियहुरत्र्प्रावे। कपिइककीटमारिकहाकीजे। बीजैबूंदनसागरछीजे। वनीदानवावउहा। कहोवनी
हनजोरिकर। नए उलस्तकुलत्र्प्रांन। हुतत्र्प्रबधसदोषहूं। नहीजुनायविहान ४२ कामारनकपिकिी
टकौ। हुतउदरनरहास। कारजनहीनसिथकहु। कैयातेत्र्प्रपहास ४३ १ नलमहागजमत्तपर। जूथ
पपीलकजांन। कपिसमूहएकत्रकरि। त्र्प्रंतकपेरतत्र्प्रांन ४४ सानुजरामसुग्रीवसंग। नासकरहिनि
र्नाम। त्र्प्रबतीकरिबीमंत्रयह। वेगमिलैसंग्राम ४५ कपिकेत्र्प्रंगकोचिककरि। काढिदेउछितकाय। क
रित्र्प्रविलोकनिहुतकौ। त्र्प्रेहेनकोत्र्प्रकुलाय ४६ सवरावनइहमंत्रसुन। उमड्यौचित्तत्र्प्रपार। कह्यो
वचीषनसुकरहु। बिझनलावहुवार ४७ रावनवा। हैवानरकेहूबहितसौंना। त्र्प्रंगसुनाय। ताहिनि
कासहुउरगते। ज्वालाहूबजलाय ४८ कविरोवाच बंदउधीर। सुनवचनइहलंकेस। वदित्र्प्रसुररो
सविसेस। सिनसुत्रतुलनसंजोग्य। पटरालतिलप्रियोग। सष्पानवस्तुसमेट। लंगूलथूललपेट। रावनवा।
लेदेजत्र्प्रग्नलगाय। ईहनगरमध्यफिराय। निरघोषपदहहननाद। बांनीसुकहिउरवाद। कविरोवा। वेदयौ
त्र्प्रनललगाय। सोलइयौउबसुनाय। उनकाटलियविधपाय। हनुमचत्चित्तउलास। हनुमांनोवा। ईह
नयौईछितत्र्प्राय। कपिदेवसबसरकाज। कविरोवा। दिसहूदपबिमवार। चटकस्यौकपिसंवार
ईहउचितउचितत्र्प्रनूत। हूरहूमत्तमारुतहूत। सबगैरवोरसंनार। जबदयौउरपरिजार। थितयेहस्ये
हसुथांन। मिलज्वालमालत्र्प्रमांन। फहरातपवनकोर। त्र्प्रतित्र्प्रनलजगचहूत्र्प्रोर। करित्राहित्राहिउ
कार। नजवलेसबतजनार। प्राकारकनकप्रसाद। उरनयोलंकउमाद। गिरकनकगढउरगांम। धर
वलेधांमनिधांम। नदन्हूसज्योधनमाल। षलकेजुहिमयषाल। बत्रानबिनत्र्प्रस्तझोर। मिलज्वालमा
लसमोर। करिकरिसुरासुरसंक। कुवटकनमानउकंक। उघल्योजुकनकउकास। वढिवार
वारविलास। ब्रतधांमत्र्प्रग्नसुपेष। वनदीपमालविसेष। नफारनांतिननांति। परज्वरेपांतिनपांतसो
गंधसालसुहाहविन। मलयगिरदवदाह। सुकसारकाषगसाथ। उदाजरेमनउत्र्प्रनाथ। हयकरत
जरजुहेष। विहकालगयदविसेष। सबजरेजंतस्यांन। त्र्प्रविकासकोउत्र्प्रेनत्र्प्रांन। हामाततातजुहोय
रटजरेबालकरोय। ईहरूपपसरीत्र्प्राग। जनुप्रलयपावकजाग। कहित्राहित्राहिसत्रास। वससोक
सबरनवास। दससीससोवनिहांन। षलनयौत्र्प्रतिहिबिसांन। सबसुनटमिंत्रीयसोच। हरिउलटजो
कतपोच। कोउगएनजतनकोट। उनलईजलनिधत्र्प्रोट। उनवासमारुतत्र्प्राय। त्र्प्रधजरेफेरजराय
कतकपटलपटकराल। वीजलातबालाहिबाल। कियष्पाललंककपीस। तहांजरे[illegible]जोजनतीसमि
लकहतषलमुरकांहि। हेदेवकोउकपनांहि। दहिहूबसासनदीन। लषसबनफैत्र्प्रबफललीन। त्र्प्रविलो
कजितततिउक। कृतिजातुधांनीहूक। लंकावाचकवित। हूतधियाकौनबापपतीपतिनीनहूकौ। भाईभाई
कौनमित्रमित्रकौनमांनिये। सुहनउघारेवउवसनविसारेवार। धूमत्र्प्रंधीयारेमांझत्र्प्रंधउरमानिये। हेषत
जरतहयगर्जितफिरतगय। विकलव्वराच्वरहैसुकहांलौरषांनिये। बूढेबारेतरुनत्रियासुविललाा
तबेव। पांनीपांनीकहहैकोजबांनीपहचांनिये १ कोउमरेफाहेकोउत्र्प्रधजुरसेसेकाढे। कोउकरमीजै
वादेकहैत्र्प्राग्नौकालहै। नीतरबाहिरत्र्प्रधउरधदिगनन्नाग। वानरविलोकेवहेदेहकेविसालहै
कपीमइनरमानोविधजुकीसिष्टकहै। दष्टहूवरमइगसोहसुकैसालहै। मानोरित्र्प्रनागेसबनस
वांनदेषी। कहतहैत्र्प्रागमत्र्प्रबैहैवाकेसांमकौ। वाह्यौहैविषमवैरत्र्प्रबलाचुरायत्र्प्रानी। कौनौनाजतन

४ क्हेहोकीटनृंगीमय नागकउगतकाउजोइलिष्योमालहै २ हतएकत्र्प्रायोजोउनइसोसबX उनो१

कुलधराधनधामकौ । रूपवाढे देषे इहां लंकाजरिबारनई । वरकुविती लोजोदयौ होस्वकामकौ ।
धीरजछुटेतेरोइरोयकहैजातधानी । जैहैरजधांनीनासकैजायेजांमकौ । २ । देषतहीउरफट्यौका
कनकबुनकाढ्यौ । बालकविगोहैदिलजातीफिरैबालका । झरोषांअटारीघनअंगनकरालकाल
चौकीचोकनांमनीपलांनीगजचालका । रहतउपांनजातथांननकीवछनाजे । पायनपयादीसदा
पोढीसुषपालका । अगजगजांनौरविवक्रमांउजारोननयौ । केसरीकेनंदऐसीएसीरूजीदीपमा
लका । ४ । धामधनजरैउरहाटपाटपरिजरै जरैपटकपटसीकरालज्वाललगिहै । अवबोनअ
जफेलीआगवकुनागफिरी । नागरूरेबाल जैअनागेकबनागिहै । फेरतहैलंरलकपिफे
लतअंगार फूटि । लरकेमरेगेजोपैकाकुउफिलागहै । आरतपुकारतहैलंकाकेवसइयाअति । आ
जकीवलयसीअनेसीकेसीआगहै । ५ । मंदरबुझावततोसेकजरउठैमाक । वसनबुझाहैसबदेह
बीववरिये । ब्रताकौउक्वैनागनामनीनसमनई । मातकुसरातजुतोउवजरिमरिये । नाईलघु
काढ्यौतवौदीरघकौनासनयौ । नाजगएमांमातोनांनेजनासंनारिये । सुनीकुनदेषीऐसीआज
कीअनैसीआग । अवबौनकाकुकहैकहाधौविचारिये । ६ । नयौकहाहोयगौकहाधौकौउजा
नैनया । चितमैविवासकैवकारचुनियतुहै । एककपिआयौतिहेगढहीजरायौगादौ । आगमता
केस्यांमआयबेकौसुनियतुहैगढपटपेहजरेपटनासबकेपरे । घनगएलागीवाईसीसधुनियतुहै । का
ढीअधदाढीकहैप्यारी निस्चारनीकी । हितवाहैबेतजेसोधानछुनियतुहै । रानीवासवा । नांतनां
तिआजतुम सबहीसयानेनये । कालकाकुवरजेनकुलकेकुगारकौ । रूपचारवानरकौविहस
हसलाएबांध । कहाकरूयाहिइइजेतारेउतारकौ । रोयरोयहायमीनकहतमंदोररानी । बोहहै
फटतबातीदेषीलंकाबारिकौ । बापरेतोरिकैधुधारथनऐबाएफल्ल । वंवलतालदानहैकीस
वनचरिकौ । ८ । रानीअकुलानीहाहावानीकहैरोयरोय । रामजुकेआयेकहोहमैकोउराबिहे
एककीसआयोअवआगमकहतओर । सुनियतुपदमअदारेकुकीसाबिहे । सोतोनविलोक्यौ
कहूलंकाकेजरतसव । आनीहमसोइधकसोधताकीअनलाबहै । तबतोकहाएतुमसविवसुन
टसूर । साचकीकहेतेअबकौउमनमाबिहे । कविरोवा । छप्पैकवत । रुतन्नकुटगदकुंन । सौजसम
ध्यांकरसोई । प्रलयकालपावक । ज्वालमालासंजोई । कररा कससाकुलि । ढुंगिफलतिलजवयल
य । बालिधश्रवाविसाल । होतस्वाहाकोलाहल । पथ्वीपसिधहोतापबल । इहांलंकामारुतनय । कीय
कुंड
वंदनपाटननसम । जसदीक्षतहनुमंतजय । १ । करिकडावगढलंक । लसतदरबीलंगूरन । रेहकन
कथितमध्य । नागपवघलेघृतहूरन । जातिधांमपकवांन । तलेतिहतायततछिन । ज्वालापंकतजोरव
बलपावकप्रियपावन । पवमानपरोसाप्रेमपन । प्रगटेसोरंजनदाहउर । हनुमांनधिनपवनारहत । स
हैंअनोजकियन्नपतसुर । २ । कुफउलालअबीर । धूंमज्वालारंगधारिय । दवगउछलललघुदिर्घ । चलेच
रूघांप्विकारिय । नादित्रदिहैरूजहोय । हाहारवहासिय । निरलजकेपतिप्रिया । विलकधावतउरवा
सिय । आगमवसंतराघनअदिनपुरीहोलिकापरजरिय । केसरीनंदजीतोकलह । कपिंजुफागकीडाक
रिय । ३ । वढियकंकदिनवंक । लंकआतंकजुलगिय । प्रलयकालसीप्रगट । लगीअंतकालहिअगिय । परि
अपारपतनझुकार । नयनीतसुनारि । यहअसुनउसनियत । नेरतिहसमेनिहारिय । परवेषकोटप्राकार
उर । अनदाहनकोउउबरिय । कारनअनिष्टदसकंधकौ । कहसवदनलंकाकरिय । ४ । नादित्रादिकोउता
त । सद्यदजहांसुनियै । मातताततसिसुमुक्ति । गऐककुवनधनगुनियै । सोचमोचदससीसा । करनधर

नीधरि कुटिय दिलमलीनक्के दीन गोरजियत्रासाबुटिय कतिअतुलकाज सुरराजको दाह
दसाननउरदियो कपिबलप्रतापरघुनाथको नवनतीनजईजयनयो ५ ।कविरोवा। करेकोपलं
केसत्रबलबोलेतिहपावस कतअकासमिलजलद मालदारुनघनवादस वारिधबिनेविसेस
दयाकरिअज्ञादीजै कसौदसाननजरतलंक कबुउद्यमकीजे गजसुंड मूसलधारागरज घो
रघोरवर्सेसघन विपरीत ज्वालवाढत विषम मनकुनयोघृतसो मिलन ६ वरषवरषघनवा
र मेघमालाआकुटिय सोनअनलजलसाधपिसिजलधरबलछुटिय चकूंओर जलचलत
वहिन सगुनवाढत जुवअनूतयहनर दूरकूजलदजुफानत गुनईवनीरबलगरबगो क
हाआंनकीनाकरत सोउनएबिसानिमेघसब चलेनागफिर फिरचहत ७ ।छंदुवा। मिलजु
कहियघनमाल उससहपावकईहदेषो रिवबाडवअरहमुदसअसाध्य ज्वलियानलपेष्यो इहांनक
छुआपनो नियतबलज्वलत दसानन सोउसुनसुनसुतसुनट मिविमुरफांनंमनहिमन सबकह
तनाथपोलस्तसुन कारननहिनहंसांनकह अनुसारबुध्यजनमानियत अदयरुदविकारयह ८
।कविरोवाचडुहा। दससिरदसहीरुदहित करेहोमलंकेस मारुतएकादसमसिव कीनोकोपविसेस
४९ जुकतनयाकतनेदको करिबोकीरूपकार लंकादहजरायकपि कीनोअंत विकार ५० तपनल
ओहनुमंततव लंकाजरीसमूल वासवनीदनकोक्यो सोरांवनउरसूल ५१ कूद्योहनुमंतलंक
ते अगिनबुफाइआंन मंजनकरे ~~बैकुंठै~~ समुदमह अविधेसुरउरआंन ५२ तहांफिरकूद्योउद
धतेनमारगहनुमंत आंनकरेबकुस्यौअग सीतादरसनसंत ५३ ।सीतावा। काजरामरिनजयअवि
ल होऊसदाहनुमांन पर्मचक्रतुमराम प्रिय सीताकह्यौसुजान ५४ ।छंदप। रुसोकउधिकूरतसुना
यअविलंबनयोत उतआय योबानजात तुमहीजआदि वहरातवितनहीकरूगादि मिलकहा
जरतघनआंनमेह देषकुचलेममदसादेह छतियांजुफटतयहविरहबोह नयचिकतनउन
जलनरसमोह दसकंधमासदेअविधदीन लषदिवसषानमोहिवतलीन उनिआयकहाकरिहै
कपाल सोउनषहेमेहिअबसुरनसाल ।हनुमानवा। मतकरउसोचजियजननिमूल सबहरिहै
राघवविरहसूल सहिनाननमातमाहिदेउसोय हितजाहिरामविस्वासहोय ।कविरोवा। मिलगत्यक
वरीगोपवांन सोलइओरिसीतासजांन मनिदीनीलेहनुमंतहाथ सोसीसवंदलीसनाथ ।सीतावाच
सुनिप्रतिपयईकदेऊसुनाय उनकहेवजुएकांतपाय ।कवितबचे। चित्रकूटपर्वतविचित्र महिमा
तिह निरमल मिलबैठेदंपतमहीप तहांफटिकसिलातल ईद्रकुवारदईत काकक्रैकरेउछ्रहम सु
कियसिकारिउकाक कियअतुलपराक्रम तिहसमयकरेमनसिरतिलक नालनालव्रतिनिहोयो
सोकहिबोमारुतरामसो देवगुटपतयदयो १ ।हनुमांनवाचछंदप। उषदारुनअबलोकसहोदेह
अबककुछकदिवसनवतअएह अगिनतदलवानरनालआय वारनिधसेतबाधहिवनाय निसच
रसंघारगटलंकनांन अबदरसनराघवदेहआंन मतआंनउमनकबुसोचमाय सबनातिसा
मकरिहैसहाय ।कवित। सियहिपारककसाध दाहलंकेसउवरदिय ननबिदार मिलअषयमार सु
रकारजसधिय रामप्रियासंदेहकाहिलेचलेसकारन करिवंदनपरिक्रमन नियतसियलोकनिवा
रन आगमनगमनलंगनउदध नयोजुविक्रमअतुलनुव सुरराजहरिषनरहरसुकवि हनुकीत
तयलीकउव २ ।दुहा। पायप्रतछ्यासीतयह चूडामिनदिनसेन काजसांमकोसिधकरि उचक्यो
कपिनउरेन ५५ ।छंदप। कपिमहागरजकीनीअकास तिहगरजनिसावरश्रवततासम्मुननद्रमल

तातरुनिकरअंग । आकासकुतेउतस्यौअनंग । इकअद्भुतसिजीजनउतंग । तटसिषनिकटअतित
६ रुलअंग । तबवमैकूदहनूमंततास । उनिकस्यौउदधिकंपनप्रकास । सोलईकंफमारुतविसेष । अ
दवरनृपधसिगयौअसेष । कपिगिग्नकिलकिलासद्दकीन । निस्चैसुसुनौअंगदनवीन । कविरोवा ।
दुहा । इकदिनसरमाआपनै । सषीसमाजयहसंग । कहिनरांमसियविरहको । उनिसोउचल्यौवसंग ।
५६ । रामरामसीतारटत । धरतनिरंतरध्यांन । अविलोकीकिकुआसुरी । परेहुसेभ्रमभांन ५७ राकसीवा ।
सरमासोकहितिहसषी । यहपेवन्यौअजोग । कारनकीटीन्हगको । उनिधौकवनप्रयोग ५८ कवित
रांमरांममुषरटत । नियतउरध्यांननिरंतर । नवनवद्दाजोकीटन्हंग । नईटरतसुरकुनर । रांमहोयजोर
मनि । विरहसंकटपरिपरवस । सहिनजाययहपरमसाल । हियअतुलितपरहंस । सरमासोपुछीयक
सुषी । अबिविचारकरियेइहां । जिहकारनदकुघाहोतजुध । तबकैसीवनिहैतहां । ३ सरमावाच । तहां
सरमाहसिताहि । आपउतरदीयेऐसो । तिजुकह्यौसबतत्व न । जगतमैसुनियतुजैसो । सीतरांमहिस
नारहितध्यांनधरतहिय । जपतरांमज्यांनकी । जतबकुकरतमिलनजिय । सोकैहैनारीनाहहव
नारिनाहकैहैनियत । ईहवौरसषीनहीसोमअब । रसवनिहैविपरीतरत ४ दुहा ।। सरमासषीस
माजसुष । समयविलाससमेत । तर्कवितर्कवढायचित । हसिहसिउतरदेत ५९ अंगदादिमारुतउनि
लगमन । प्रसंग । छंदप । आनंदकपिनउपजेअनंत । जांम्यौजुहनुआयौजयंत । सबनऐमहाहरषितसु
नाय । इहवीचमिल्यौहनुमंतआय । लेलेसबनेटेकंठलाय । षकुलतमनुनीतनजन्मपाय । अंगदवा ।
कूरुतजिहाजज्यों आंनवीर । अविलंबद्योहमहैअधीर । मनतलफतहमज्यांविकलमीन । निरघोषमि
लेतुमघननवीन । कविरोवा । उमव्वलेसबैरघुवंदओर । चित्तमोदमनकुधावतचकोर । अंगदवा । मिल
सबजिनहूबेहनूमंत । विधजुक्तकहुअपनोवृतंत । हनुवा । ज्यांनकीदरसकियेनिकटजाय । अविलो
कदसाननवहांआय । कविरोवा । सुग्रीवसुषदरक्षकसकाम । नियरायतबैमधुवनसनाम । कपिवा । मि
लवलियेअंगदषसहिमांहि । षुध्याअतिलगीवनफलहिषाहि । अंगदवा । जुवराजदईअज्ञासुजांन । क
रीयेफलनहानग्रारुकांन । कविरोवा । कियेफलअहारमधुपांनकीन । निसंकस्वादलेलेनवीन । ईहांआ
एवनरक्षकअपार । मुष्टीप्रहारतिनलएमार । दुहा ।। कपिंराजासुग्रीवको । मामादधिमुषनांम । सोमधु
वनरक्षकसदा । कीनोप्रनुहितकाम ६० वागविगारयौवांनरन । मधुदोणिकासमेत । सोदधमुषसुग्रीव
सौ । हेविनियौसबहेत ६१ सुनतमात्रकपिराजसोई । विश्रौउरविस्वास । निस्चैपाईज्यांनकी । तिहफल
षाएतास ६२ सबकपआएतिहसमय । अंगदअग्रसुओर । विमलप्रवरषनगिरविषय । राजतरघुकु
लमौर ६३ कपितबदंडप्रणामकरि । कह्यौजयाक्रमकाज । प्रनुतवअतुलप्रतापतै । सुध्यनएसुष
साज ६४ अंगदवा । त्रनवनरांमप्रनावतव । उसकरकहुनदेव । सबकहिहैमारुतसमझि । न्हतनवि
द्दतनेव ६५ हनूवा । वहतटलंघरमुद्रका । मिनलाईयहओर । रांमप्रतापरुसीयसत । किलेमनोर
थमौर ६६ दरसमातकीनौउलन । देअसोकवनमांहि । तहांविलोकीषीनतन । जुगनरछिनछिनजाहि
छंदप । उनिप्रभुहिहनुएकांतपाय । सबकहतनएविधजुतसुनाय । सियदेतदईमणिसावधान । उ
नकहैजनयप्रलियप्रमांन । चित्रकूटतिलकमनुसिलसवीन । वाईसतहांकीनौचषविहीन । सियक
हेक्वनसुनियेसुनाय । राजाधिराजरघुवंसराय । सीतावा । अतिविरहसिंधुबूडतअनाथ । दितदे
जनाअवलंबहाथ । दुहा । उधारयौप्रहलादतुम । प्रगटसुवेदपुरांन । अविधवितीतेमासदे । उनको
कहेप्रमान ६७ अथलक्ष्मनप्रतेसीताप्रसंगवरननंहनुमानवाचा । छंदप । लक्ष्मनरघुकुलकीतो

हिलाज । अनउचितवचनसुधकरनआज । पतिसासुजन निनहीसुनप्रबोध । वसकरमक
रैमैनयविरोध । बियजनमनिकसबनवासबीर । परिपाकसहततैविरहपीर । उरघोजत हूजौकु
मतिआप । सोसहतविरहदुससंताप । श्रीरामवाच । सोरठा । दुहा । हैजीवतकिंजहेत जनकसुता
हनुमतजो । कहीएएहसकेत । देषीतुमजेसीदसा ६९ । अथहनुमतसीताप्रसंगदसावरनन
। छंद प । इकवेनीचिंतामलिनचीरसबन्हायसहतपरन्नवसरीर । परिवेषराकसीआसपास । ति
नवीचरहतसीतासत्रास । देषीनजातदुषसहतदेह । सुषघटतवधततूतहसनेह । जैसीअविलोकी
मातजाय । वचनहूकहतनाहिनवनाय । अवसेषरहेकहुप्रांनआय । सोमींत्रजोककरीयेसहा
य । जेहैनप्रहूयहसमयजांन । प्रनुसुनिहौसीतातजेप्रांन । कवत । मेरीतोदुसहदसादेषतुमह
नुमांन । जबतैविछोहानयोसावरेसनेहीको । नेनपेनहूटगएप्रांनहूनबूटगए । दुहतोसोसह
तनरोसोकेसोदेहीको । जलतेविछुरपलमांझमीनमरजात । तातैवेदलोकगावैधिनपनतेही
को । दीनकेदयालसदासंकटकेसाथीदेवप्रांनसौलझोंहैमोहिवचनविदेहीको । १ । दुहा ।। जोलौ
सीतानईनजल । सागरमिलहिनआय । प्रनुतौलायासिंधपर । वाधहूसेतबंधाय ७० प्रनुतवना
मजुपाहरू । ध्यानकपाटधरांहै । प्रांनसजंवितनेत्रपल । निकसनपावतनांहि ७१ । छंद प । मोहिच
लतसीयाअतिदीनमांन । द्रगवहतनीरयोकहिनिदांन । मनरांमचरनअनुरागमोहि । तविसरक
वनहितकहूतोहि । मारुतयहअवगुनएकमोर । कियनांहिगवनजियन्योकवोर । छतियानफ
टीविछुरतसछोह । मनबथाअबैसजांनमोह । सबजाननतुमसीतासनेह । अबकरूकहालगक
थाएह । कबुछिप्योनहीतुमतेकृपाल । दिनदसाजुसियतुमतैदयाल । जगनाथजगतपतसर्बजां
न । छिनजातसियजुगजुगसमांन । प्रनुसीतातातनमनकष्टपाय । जगदीससुमोपेकहीनजाय
अेसोअनथमेदेषआप । प्रनुदयोधीरतवबलप्रताप । ममदिष्टमात्रसुनियेजुमाय । सबनांतिरा
मकरिहैसहाय । अनसोधनयागतिदिवसएह । सोनयोरामसानुजसदेह । आयहैरामलिछमनअ
नंग । साषाम्रघेससुग्रीवसंग । अंगदअसंकजुगराजआय । सोसदारांमसेवकसहाय । अनपार
जूथजुथपअनीत । सबआएदेषकुमातसीत । बांनरसमूहसरसेतबंध । करिहैजुनासषट
चारकंध । सवदुष्टसकुलरावनसंघार । मिलहैकृपालतुमप्रनुमुरार । विधविधअनेकदीनेविसा
स । इकसियहीरहीतवदरसआस । कविरोवा । कपिराजसहतअंगदकुवार । सबवैठजूथजूथ
पसुढार । जाबवंतोवा । तवकहोरांमसोजांमवंत । प्रनुतवप्रतापमहिमाअनंत । कीनोतथापिहनु
मंतकाज । देवनजोदुरलनदेवराज । सियदेषपुरीलंकासंघार । मलिमांनदसाननअषयमार । हू
तकरेजुमारुतउरधका र सनाइककेतिककहूरांम । सुग्रीववाचदुहा । प्रनुकोमेरोआपनो । सुर
सुरपतिसुषसाज । कहेसुकंवयहरांमसो । कृतमारुतहितकाज ७२ सतजोजनसागरसलिल । कूद
गएजुनिसंक । आएसीतासोधले । करेदाहगढलंक ७३ कीनोदरसनजांनकी । दीनीलंकजराय
मासौअछयकुवाररिन । उंनिदेषेप्रनुपाय ७४ हनुमानवाच । छंद प४ । मैंतेनयोकछुमाहाराज
कृततवप्रतापसबसिधकाज । वानरकोबलप्रनुयहविष्यात । जोसाषकूतैपरसाषजात । जारी
जुलंकअघचारजांन । प्ररुहतोबालअछयअज्ञांन । जदनावदागविनसोजुजांहि । यामेकिये
विक्रमकवनआहि । नियहोमोहितहांमेघनाद । छुनछुटोजियतप्रनुकेप्रसाद । श्रीरामवा । छंदहरी
देवनहूदुसकरयहदारुन । काजहनूजोकस्योसकारन । सतजोजनदुसतरजोसागर । जलअगा

धषलवसतजतुवर। नयौसुग्रेपदमनकुनिरच्चर। कूदगयौलंकागढकंगुर। वीरमहाबलत्तु
धवुविसेषी। उरगमवैरजांनकीदेषी। सुनीसुग्रीवकहतसबाही। हनुमतसेहमतरनंनांही। ह
नुमानवा। कवित। छपे। पाथोनिधनहांप्यौ। बबलनहींकैलैपलटिय। आनौनयहअवधेसअय
कंटकसिरकुट्टिय। संगदासीमयसुता। ईहांसीतानहींआंनिय। सुनकुदेवदेवेस। मोहिनपोरषप
रमानिय। करिजोरचरनवंदनकरो। सौक्रुतकिकरअनुसरिय। अषिलिसजुलावितमोहिउर। कवन
सुमैविक्रमकरिय। छंदप। कविरोमा। बेवारनिकटकरियद्दिविष्पात्त। वरवीररांमकपिकहैवात। श्रीराम
रा। कैसोगढदेष्यौविकट्टवंक। लह्हसनप्रकारकपिकहकुलंक। मारुतवा। कन्कमयकोटमिदरसकं
क। वहांवस्तउष्टकंटकअसंक। सुतबंधुसविवसुभटनसमाज। सुषसमृधवित्तवंछितसुसाज
धिरहारच्चारतिहविकटथाट। उनिसंजुतवजाकृतकपाट। अरिगलासूलसंकलिअपार। राक
सतहारहसकद्वारद्वार। अविध्यासुधनुरधारीअनेक। अनगिनतकंगुनएकएक। संष्यासहंश्ररा
कससनंध। पिष्षिमहारहपकप्रसिध। मदमत्तगयंदचढचोरमार। दिनरातफिरतजोधादवार। उ
तरदवारअस्वाआरोह। साहंससकुधसनाहसोह। पूरबदवारपयदलश्रवंह। दसकोटधनुरउ
सहांदंग्नि। इकावीससहससचटरथसवार। दारुनसुउष्टदिह्हनदवार। परषातिजोजनसतप्रमां
न। नरनीरगहरसागरत्तयांन। आवरतसीमसागरअगाध। सबजंतुवस्ततामसैहअसाध। अति
कायनक्रचक्राअनेक। अपआपतिमंगलयाहएक। प्रनुआहिसाधसबतवषताय। अषिल्हेस
करिऊअबगवनआय। श्रीरामवा। सानुजप्रनुबोलेसानकूल। सुषसाधसबेकुहैसमूल। कपिरा
जकरऊअबगवनकाज। जुतरोषकह्यौयौमाहाराज। सीतादिदेषआयोसधीर। वससोववित
मकरियेनवीर। जूथपोवा। यौसुनतजुथजूथपअनंग। गिरमात्रदेहफंफतविहंग। चितवढेहरष
अतिजुधवाह। हम्वढेलेहगढलंककाह। अथश्रीरामचंद्रलंकाप्रतिगवनप्रसंगवरनंकविरोवा।
छंदप। जटजूटक्रसेसानुजसधीर। वनपटलपेटकटतटनवीर। गहिमध्यनाङ्गबांधेनिषं
ग। आकर्षबांनधनुमनुअनंग। नयौरेषउतारनभूमभार। सकुटबकरनरावणसंघार। हव
उवेरामआजांनबाह। अतिवढ्योजुधआहवउछाह। श्रीरामवाचवंदउधीर। अबयहैमकुर
यआय। पंचागसुधसुन्नाय। कवित। सुकलपष्पारितुसरद। मासअस्व निदिह्हनायन। सुत्र
कारनपंचागसुध। मिलसुकरनजथ्यामन। मुषसुग्रीवसाषाप्रधेस। अंगदअतुलीतबल। अ
बिलरीछवादरअनंग। दससीससीसदल। आकंपिअविननरहरसुकवि। नियतनागपतिफ
ननमिय। दिगविजयविजयदसमीदिवस। सैनलंकदिससक्रमिय। १। समरचलतकपिसेन
सजलमिलपंथसरितसर। पयसपानिरफरनिवान। नएकुकपंकनर। रहिनपंकछुररव
न। गवनसमविषमन्मृमन्नय। वातसरसनाविलास। सोहर। वनगिगनगय। विसमयजुवक्कयविबु
र। तहांअविरोधदिगततम। सुरहंदहर। षनरहरसुकवि। क्रुतरघुनाथपयांनक्रम। नागराजफ
ननमियकुवनलगिकमवपिठकहि। दसनटंकमुषउसह। तिषपरिअंकपतितिह। कालदह्ह
नरिकसंपमरकटन्नटसंगम। धरनगां। नपरन्नातुधांन। अविधेसरआगम। दिगपालझोलदिगं
तझर। रहिजुवक्कित्तसमासरिव। आकंपकुलाचलननअविन। कहिजयजयनरहरसुकवि
। कवित। पदहंतउबतगिगनमगरैनश्थी। उरियत्तसिंधुसरसरता। प्रमांहे। दद्दितउरन्नवहिम
हाजूथतरुनके। मूलकूनरहैमहीहोतजुमैदानहै। फाटतपहारकपिवरनवहारपाय। झिगे

बुहमंद नारग्रसह ग्रमानहै। मंत्रजो मव क जात प्रविनीके अंगमूल। वथ्रीपतिरांमजू कौद्र
बलपयानहै। २। छंद उधौर। संक्रम्यौ सेन अ संब। कपिंमनु रूपर बतपंब। वन अग्र पिष्टविरु
ष। जुगपरसजुथ्य व जुथ्य। गज गवयमध्यगवाह। ७ व बिंउतारु जदाबि। नलनीलसबल
सुषेन। संगजामवंतसुसेन। ईतादिजूथपधोर। सब वऐगौर सगौर। इव बहुपरबतहाथ।
सबचलेसेन समाथ। संक्रम्यौ विजईसेन। खगिग्न पूरितसैन। कुतिश्रंतरतिरक्विवक्र। बनिदि
वसकंटकवक्र। हलहिलतधरनरहोय। सवालमंचसजोय। ऊरैन कुपदिस अंध। धरगिग
नघनमिलधुंध। पातालसातसकंप। संचार कपिदलसंप। दिगिभिगतधरनत्नीलकासमसतक
मवीकोल। सरसूकरैनसहूर। नऐनीरकरदमन्हर। मिलनालमरकटभाल। आकासपंथत
बाल। अंतरीषसोनाअंग। अनेकरंगउतंग। बउवरनविसाल। जनुउनयजलधरजाल। जुध
हेतमरकटजूह। मिलपंषअदसमूह। तरु तूटउरवटतास। बनगहनजूथविनास। कपिसे
नवहतसकोप। पाथोदमनुहदलोप। बितउगीनत्नवदषेद। कुवैचकिचकीसनेह। बूंकारकं
फितबीर। मिलगिगनगतजुसमीर। वढवीररसनुजबाह। अतिकुधजुधउछाह। कोउकहत
ढारूलंक। कोउउदधबीरअसंक। कोउकहैयहदसकंध। बिबुटहैनवगढबंध। मंदोदरीग
हिमूल। दसकंधअग्रदकूल। सकरकुवदनबिलोक। कपिमधराषरूरोक। सुतबंधुसहतसं
घार। निसेषकरिनिसचार। उदमादवहिजुधअंग। योर्वलैदलअनंग।। कवत। वीरषेतबे
ताल। भूतपितरपिसाचनुष। रुवरुपांनरुकनिय। हरबजदिनजुगनकुव। पविरविल्हगहजी
प्रसिध। पंषीपलचारिय। सिवाआदिवध्रगनअंगाल। नषजेतुनिहारिय। संग्रांमआसआहा
रसुष। धावतकौतुकमनघरिय। संष्यानतासनरह रसुकवि। सिनपीठमिलसंचरिय। ३। निसी
वाव। नहिनसस्त्रसनाह। वसनवतधनुषबानधरि। नहिनवाजरथनाग। चमुचतुरंगवरन
वरनहिनराजरचनानिदांन। जटबानजुगमजन। वनविन्दूतअविधूत। तदपिनपलहीन
गुनतन। घातमेमातदेषैउउरष। कपिसमूहविचगिरकुहर। आविरजपरसपरकह। नईहवि
हसविहसरमनीसुवर। ४। अंबावाव। जयकारिजलंकाअजेय। पाथोधितरनपद। सबलसत्र
दससीस। महाभुजवीसजुउमंद। देवआपसानुजउबाह। कुलराकसषयकर। उनिसिहा
यइहामिलेआय। वनचारीवानर। संसारसपोरससोधसब। परिकरिनांहिपमांनियै। कृतसि
धहेतनरहरसुकवि। पूरनफलपहचांनिय। ५। कुलराकसनयकरिय। अमरआनंदउपजि
य। संकलंकलंकेस। विकलजियआसनवि। वर्जियमपतनियाअहवात। आसउरछुटउ
दासिय। घटविलासघरघरनघोर। विनताउरवासिय। आगमअनंतअविधेसकौ। विदतवा
तजवित्थरिय। कपिजालप्रबलदलरामकौ। आनसिंधूतटउरिय। ६। कविरोवाचदूहा। पारमि
तिअष्टादसपदम। कपिदलजालअसंक। तेसबआएसिधुतट। जैनहारगढलंक। ७५। देब
गएसोई दूतदग। सांवनपिदलराम। सुवैवातलंकासुनी। मांनकुवज्रविरांम। ७६। छंदपधरी।।
घरघरयहैलंकाउरीधैरं। वससोचसबैसंध्यासवेर। दिनरातउसहनिदाननैन। विसमयग
तकाकुनकुरतवैन। इहदसाचरजबलंकआय। जुवतीसत्रासरनिवासजाय। स्त्रीयोवा।
मंदोदरिआगेकहतमूल। सुनिहूतवातउरउठतसूल। आगमनरांमउरपरिउहाव। सुनिहो
तअसुरवियगरनआव। ईहांआयोहनुमतदूतएक। उहकरेककरमहूसदअनेक। वि

१रीतकालवरनतविहाल। विललातदध्य जनुतरुनबाल। करिसिंधरांमसोंदेऊसीत। तुजप
रिकरिकहरूपतिसोंअनीत। पटरांनीतुमआउनप्रबीन। इहमंत्रआजतुमहीअधीन। कवि
रोवा। मंदोदरिदितबचनमांन। सबकरीविकरिसावधांन। इहसमयदसाननग्रेहआय। सनमु
षमिलमंदोदरिसुनाय। थितनएजदपिपतिमध्यथांन। विसतारमंत्रदितवितविधांन। मंदोदरी
वाच। न्रपनीतकंथसुनियेनिदान। नयलोकहोतअंतरनयांन। आगमनरांमउतपतअला
न। रजनीचरथहनीगिरतगात्र। उरतजकरोषअरुकरऊएह। डुषटरेरांमकहसियादे
ह। उनिस्त्रतबंध्यह्रदयऊप्रधांन। उनिलोकब्रध्यजेबुधप्रमांन। कुलकंजविपनतुवदाहका
र। इहआईसियउतरबयार। दीनेविनुसीताअवरदाउ। विथरुजहिनहीअपनोबचाउ। ओवे
नरामसामुद्रवार। विततोलोकरियेयहविचार। रावनवा। तवबोल्योरावनकियेटेक। अहंका
रथगटनरूलोकएक। अबलायहजातीसहजअंक। सुषहीमेस्त्रूवतहरससंक। अंतकवसम
रकटकटकआय। आसुरसबबेहैतिनअघाय। छंदउअषरी। कंपततीनत्रवनममत्रयकर। सो
वकरैक्योताकीसुदर। इहसुनकेहैलोकउदासी। हेअनहितसोकरिहैदासी। मंदोदरीवाच।
दुहा। दिष्टरूतीतवरूपरति। गुनअगुनबलवंत। तोरसरासनसिंघ्रको। कोनवरीसियकंत ७७
चोरजुलाएरामत्रिय। साककपटमुनिवेस। वडमीचकीवेलयो। लंकमाकलंकेस ७८ बालब
लीपरिदोषजिह। रनमार्योकरोष। क्योवविदोतुमसोकहो। जिहसिस्त्रअपनोदोष ७९ ति
नकीधनुरेषातनुक। लंगीगइनराजउनसो। रनसागरअगमयहिकिमलंगहोआज ८० उह
तोस्योकोदंरुहर। मांनसुरासुरमोरि। सोकहातेरोलंकगढ। तेबिनमेदेतोर ८१। छंदउअषरी। ज
गतइसताआपहिजानत। अतदिगुमांनताहितरआंनत। बातनसुनतकंथअरुमतबल। फि
रअघायपैहोताकेफल। मनअतिमंदोदरिमुरिझांनी। विधविपरीतवातसबवांनी। अतिहिगर
बुजुतबाहिरआयो। बेठसिंघासनछत्रबनायो। इहांसविवसुतबंधवआए। निजनिजनावबेठ
सिरनाए। छंदपधा। तहांकुंभकरनआयोअनीत। वंदनकुतरावनकहिविनीत। अयुजतसमीप
बेगेजुआय। सबसुनीहृतवातेसुनाय। कुंभकरनवा। न्रपनीतकहनलागोनिधांन। सुनियेत्र
जुकेबिनसावधांन। आरंभकरेतुमकरमएह। हेनासहेतसोनिसंदेह। देषततुमरांमहीमनु
जदेह। अव्ययअनंतभगवंतएह। सीताहेलिछिमीआदसोय। हरीवियामहानारीनहोय। हैमू
लनिसाचरनासहेत। मीनहीजक्रूविनसीषलसमेत। तुमसबैनीतविद्यासुजान। इहसमयकोउ
कहाकहैआंन। दुहा। समकततुमआउनसकल। कहीकरतनहीकांन। परत्रियहरिआंनीप्रथ
मजादिनमीचनजान ८२ जिहवरतुमलीसोजगत। वाहिवितीतोआज। किद्धतुताकोसोचकहा
आनवनीजबआज ८३ तिहकाटिचवदहरतनषीरसमुदमथा। कहयहबुदसमुद्रकहासंके
नसेबंधाय। ८४। रावनवाच। काचीनिद्रातुमहिकीद। अधुमजगाएआज। उघसंतावतहैयध
क। सहनकरऊसुषसाज। ८५ कहामिनषकपिधोकवन। षेचरजानकषाज। करकरतिनको
उतकरष। कुंभकरावतआज। ८६ नक्तनृतहमनोगता। नरवानरहइन्माय। बंधेजुरस
रीकालकी। ओघरबेठेआय। ८७ कविरोवा। देष्योरावनकोअदिन। हितउपदेसनहोय। तहांते
सीनवतपता। कहाकरेअबकोय। ८८ छंदउअषरी। याहीसमयबभीषनआयो। प्रभुबेठेजहां
आयसपायो। इंद्रजीतवा। इंद्रजीतबोल्योइधकारी। नरवानरनहीदिष्टहमारी। राममनुषसो

इन्हसु हमारे। वानर रीछकि तिक विचारे। स्वामी देहु अज्ञा लंके सुर। अविनीक रहै तो अनरु अ
वानर। रावनवा॰। दससिर ईहां अनुसासन दीने। निज मिंत्री तुम सबैन वीनि। करिबो आज सस
बमिल कहियै। रोष जुगत्व उपसांध न रहीये। कारिज के आगम जो कीजे। मंत्र वहै उतम मांनीजे।
परे नीरत बमंत्र प्रकासे। नवसो पेम तिमधम नासे। वीतै काज जो मंत्र विचारै। वह अधिमम तजग्त
उचारै। आज मंत्र करियै सो ईउतिम। तत्व जांन स्वांमी हित है तुम। प्रहस्तोवा॰। राम तु महि नयकैसो
रावन। सुर असुर राज साज संतावन। जीत कुबेर जथा तुम जांनै। अरु बसो टउह परथ आंनै। उ
स्सहज यो जमनै दुख दीनो। कालदंड को नयन हीकीनो। करु बसो ट उह परथ आंनै। उस्सह
जयो जमनै दुख दीनो। कालदंड को नयन हीकीनो। कोइ तुम सो बल वरनन कीनो। दुषपरि नव
तुम ताकह दीनो। प्रगट असुर मयक वरषवीनी। देव तु महि मंदोदरि दीनी। महा सुरासुर जो म
हिमंडल। वरतत तव अज्ञा वस तजि बल। सिन्ध्रुमत मसदा सहाई। अवर देव कहा गिणती
आई। भट महा कुंभकरन तुव भ्राता। देवराज देवन दुषदाता। इन्द्रजीत तजे गो सुत अतिबल
देवराज बांधि तिहि तद दल। मानमरद वासव मद मोस्यो। बुवि चरन तुव तब सो उबो स्यो। इहांव
नी बन लषे अमंगल। बोलत सन्मा मुढकर कर बल। नाग दसानन विपरत भारी। सब दिक हतु
है तकुर सुहाती। सविवक है गुर वेद सुहाई। नीत देत न पथ रमनसाई। ईहां वनीबन जुग कर जोरी
मति अनुसार करूं कछु मोरी। प्रभु को जो अनुसासन पाऊं। सामदि तु उपदेस सुनाऊं। दुहा। सर
दनिसा नाइ सुकल। वोथ वद वित चेत। तासम परिविय सुष उरष। हिरत नदी कि कुहेत। ८९।
काम क्रोध मद लोभ कत। है जु नरक सम हेत। सुष जस चाहत तज तसो। मन क्रम वचन समेत।
९०। सिष्ट उपाजक लोक सुष। है नास कजिहि हाथ। तासो वइर विरोध विध। नीत कुसल न हीना
थ। ९१। सिया न त्रिय संभावना। राम न नर उत्तुव पाल। प्रभु प्रतिमा भ्रम मतप र कहै। काल हु को का
ल। ९२। रावनवाच। तोए को उहै कहु तुम। निरनय करि निरधार। पंच भूत की प्रवर्ति सो सब दे
षत संसार। ९३। वनीहनवाच छंद पा॰। परिब्रम रांम संगल छन सेस। सुग्रीव अरु अंगद सुरेस
नल विश्वकरम अरु अनल नील। सतबली वरन अज अजस सुसील। मिलह द्विविद मयंद अ
स्वनि कुमार। मारुत सो इ मारुत अषय मार। गज सरभ गंध मादन गवाक्ष। सो तै इतात सु
र कहत साष। ईसादि सबै अमरावतार। नवभूत तन एसु वहर न नार। दुहा। जो ड जवेद सहा
यवउ। निश्चय कृपा निधांन। भूम उतारन भारत व। भए मनुज भगवान। ९४। सुमति कुमति
दो उएक सी। वसत सबन के चित। तिन ही के फल भोगवत। निगम कहत यौ नित। ९५। सुमत
जहां तहां संपदा। कुमत जहां विपरीत। काल निसा सी असुर की। स्याम वसी वन सीत। ९६। स
मय निहार विसार रिस। प्रभु उर धरी कृपाल। सरन आइ विजय विजय। है अति दीन दयाल
९७। सिंधकर क्रूर रघुनाथ सो। अरु वैदेही दिह। जुगत जु लंका सुष अभय। है तज लम सुष ले
ह। ९८। रिषु कुलस्त इह मंत्र करि। सिष पठियो सम भाय। कारन तिह तामो कयो। सु मैं तुम
हि सुनाय। ९९। मालवान यह सुन समझि। उन कह मन सुष पाय। कहत व भीषन सो करहु
यह प्रभु श्रेय उपाय। १००। रावनवा॰। मालवांन अरु एव्र धवय। है अति हित हमार। सात्रव पष बो
लत सब। देहु धार निकार। १०१। कविरोवा॰। दस सिर जब कोपे उसट। अति अनिष्ट गति एह
मालवांन सुनि सकुच मन। गया तबै निज येह। १०२। रावनवा॰। कुल दुषन रिपु उतत करष मो

दिसुनावतमूढ।कोनेएमंत्रीकरे।पांनप्रबोधकगूढ।१०३।कवत।दुरंगलंकषाईसमुद्र।निज
स्यामदसाननसुतभ्राताराकसराय।रिसमनकुकालरन।तिहविजेतनरजुगबराक।प्रतिमा
तापसत्रुनै।सविबसुननटवांनरसहाय।सोइआयहमहिसुन।विषकजयहपरिगहहासत्रुन।अरु
मेरेग्रहिआवनहि।ताकोनयवारमवारतुम।रेसवदाषतरांवनहि।१।छंदप।अदिजहसुरासुर
जएआप।ताकोनरवांनरकहाताप।इहमुढकहतहमकोफराय।उरसबकैउपजीनीतआय
उलमुषहिदरसदामनअग्यान।उनओसबूदपावसप्रमान।उजताकोचाटतगमटअंबू।वाघ
हिजोत्रासदिषवायजंबु।तारषकोलघुअहिकहात्रास।वाचतजोमैनुकअहिविनास।छंददुपरी
कहतपपीलकनयजोकुंजर।अतिहीआषदिषावतअतडर।रजुज्योमिणधरसमअविरेषे।दी
नसम्यासीसमहमदेषे।गहिसंतोषजिहराजगमायो।उदधपारकपिदलेआयो।जगसुनाव
कातरहैजाको।तुरकहादिषावतताको।नयजोगायषिपसोनाजै।सद्राअनाथनमित्री
साजै।जाकेनाहिनवीरगिकानो।मुहकहाताकोनयमानो।आतुरनेलीनीसरनाई।सोपेन
योसुग्रीवसहाइ।वनीषनवा।कुंभकरनघननादनकोई।जानपहस्तमहोदरसोई।कुंभनिकुं
भमहाअतिकाया।महापचंडअजतअतिमाया।सनमुषरामबांनसरसोइ।किकुपकारन
रहिहैकोई।सनाबेवएसबैसयांने।मारतगालनकालहिमांने।लंकनजोलांकपिदललाए
होयवीरनहीकोटहहाए।गिरतनमांननालकपिगोंदि।जोलावीरनघारेगाहे।अंगदहनुमा
जोलाआवहि।वहिकंगुरननहीसिलाचलावहि।वनितासिषानऔचतवांनर।घनहारवहो
यनघरघर।रांमअमोघबांनअनियारे।जोलांतववपुनहींनविदारे।जोलांनहीनलयोग
रघेरो।मांनकुपलुतीलामतिमेरो।उदधिलंघजोलांअविथेसुर।करिकुसिंघतीलांलंकेसुर।
कुहा।दुधाराअतितिजदुहु।वज्रोपमसुनवांन।रांमहिसीतदेकुफिर।जोलालगेनबांन।१०४।है
कुलकीरतनासहव।सोतजिहैलंकेस।सीतारामसमपसुष।विलसकुविनबविसेस।१०५।रा
वनवाच।छंदहैअपरी।सिंघवतावतमोकहतसव।हैमजगजएसबैमैअपहग।अहंकारमोरोज
गउपरमानषसरनजाउंकोफरमर।विनबूबैहीनीतवनीषन।उपदिष्टाहमकहनएआउं
न।मित्रनावपैसत्रुहमारे।रहतसमीपहोतनहीमारे।जातिजातिकावैरीजानकु।पसनविना
सकबुधापमांनकु।दारुहिपंषजगतजबचकुदिस।तीरतबेपोइचतपंषीतस।कविरोवा
वा।छंदपध।सबकहीवनीषननीतसांन।मनकंटकवाननएकमांन।रांवनवा।उनबोलेराव
नरोषपाय।सवहमहिडबोदकनोसुनाय।पोष्योमेदेदेकवलपाप।औरसोइसत्रुकैनयो
आप।रिलवरतोहिआवैनलाज।अरिकोवढावजोकहतआज।यहैजगतसुरासुरकवन
आहि।जुधजुनबलमोजीतौनजाहि।तपसीनऔरबोलतसुनंत्र।मोहिकहाउपदेसतमुढमं
त्र।कुलकलंकतूजोपिंडतकहाय।सोनीतजायतपसिनसिषाय।लघुभ्रातजांनकेचतुल
बार।करिसत्रुपक्षबोलतकुवार।वनीषनोवाव।सहोदरजोजेगेपितुसमांन।प्रभुकहोसर
बथासोप्रमांन।कविरोवा।सुनतदपीवनीषनवचनसूल।मस्तकलटेकेचरनमूल।पायकु
परतकंटकसपाप।यहहनौवनीषनलातआप।पापिष्टकरेसिरपरप्रहार।नोविकलहे
हिन्लयौसंभार।दुहा।जहांकबुमुरबाजगी।उग्रौतबैअकुजाय।हितउपदेसतलातह
नयोकुसंगप्रनाय।१०५।रावनवाच।छंदहैअपरी।धुकतोहिहैराकसकुलअधम।जानतन

हिनमुदकोप्योजम।रिसकरकहोताहितबरावन।इहादिभायनवदनअपावन।बनीषन
वा।कालत्रदोषबयोदसकंधर।श्रोबदलगतप्रबोधनऊपर।अथबनीषनश्रीरामचंद्रपासै
रनचितवनंशसंगवरननंदुहा।बिनबदलेउपकारहरि।करतकोसल्याधीस।दीनबंधुजाकोबि
रद।जगतपिताजगदीस।१०६।चरनकवलकतचितवन।पैसबबाझविकल्प।सरनरामजे
कंसुषदमनकीनोसंकल्प।१०७।बनीषनवाच।इहबोल्योरावनअनुज।प्रभुमोहिकियेअपमा
न।दससिरसीताबिनुदियै।नांहिनकुसलनिधांन।१०८।सुनककसभासदबंदसब।डुषनमो
हिनंदेहश्कुरसुहांतीसबकहै।अबताकोफललेह।१०९।कविरोवाच।इहांआयोग्रहआ
पनै।संकुचबनीषनसंत।मित्रीरावनकेजुमुष।लीनेबोलतुरंत।१०।गयोबनीषनगवनमग
प्रभुपैसागरपार।महाउपद्रवलंकमह।कैरहैहाहाकार।११।लोकवाच।कह्योअहितहितकी
कहत।दिवसफिर्योदससीस।जोपूरनविधदतवर।दारुनकालसुदीस।१२।हितवकताम्हा
ताकृतो।साधकमित्रीसुजान।चलतेकगोरामपह।देहैभेदनिदांन।१३।घरघरघोरजसोच
घन।नएलोकनयनीत।देषकरावनकेअदिन।बनीसबैविपरीत।१४।बनीषनवाचबंदक्षअष
री।मनमहकरतविचारबनीषन।डुसदगएममआएसुनदिन।१रिकजाइरामपदकंपज
अहितिवसजिनहितपाजतनवअज।पदजेगंगानिगनपषारि।ऊनप्रवाहसंगपकुधारि।पद
रजनइअहल्यापावन।निषलजनमपतआपनसावन।तिकमलाकुचकुकममंडित।बिन
केनजनअषिलडुषषंडित।कपिसुग्रीवसषापनकीनो।दंडकवनविहरतसुषदीनोमाइ
मोहिमहिमात्रतिनाषी।रहिकुचरनसरनचितराषी।दुहा।जिनपदपावनपाउका।सेवतन
रतसुचार।जिनकोकरिकुहेतजुत।वंदनबारमवार।१५।कतमहिमासमनागकी।जोनहिव
रनीजाय।देषहगेतेईपदद्वुलन।आजअघायअघाय।१६।कविरोवाचबंदक्षअषरी।योचित
वततनिकटजबआए।पकरेकपिनजानहीपाए।कपिरोवा।कोतुमईहांकोनपेआयो।क
हापयोजनकवनकहायो।बनीषनवा।नाम्योहैरावनकोनाई।आयोसडुषरामसरनाई
इहकपिराजसुपैलेआए।सबैबनीषनबचनसुनाए।सुग्रीववाच।कपिपतश्रगटरामसोकीनी
देवसमजतबअज्ञादीनी।कपिपतइहांउचतसोइकीजे।उनिनीतजिहजगतप्रतीजे।बनीषन
वाच।विगतपायतहांबोलबनीषन।जईतदयालदेवपालकजन।सुग्रीववाच।कुसमयबाझे
बंधुकह।आजसहमपहआय।रविहैमायाराकसी।जेपैरचीननजाय।१७।भेदहमारेकट
कको।सोन्हातदिसमझाय।रहैनिरंतरकटकमह।करैप्रपंचउपाय।१८।मेलहियाकहमि
गटमहि।घनकपराषकघेर।जोलांमारहिरावनह।तोलांजहिनफेर।१९।श्रीरामवाच।करै
नषंडनमानकत।तजिबोकनहिताहि।हमबवियकुलनिगमहित।ईहसरनागतिआहि।२०।
सुग्रीववाच।जोपैहोइहनिरकपट।रह्योसाधसुनाय।जबरांवनसीताहरी।बाहीदिनकिन
आय।श्रीरामवाच।मित्रकह्योतुमनीतमग।सोहमसुन्योप्रकास।याकोगोरवनंगतै।होयजग
तअपहास।२१।सरनागतकेसागतै।उपजतपापअपार।अबज्योत्योकरराषियै।मेरेयहहै
विचार।२२।कोटिविप्रबधदोषकह।सोकाढेकरनाय।जोयहहोतोडुष्टमन।यांनहमोपैआय
२३।सुग्रीववा।साचेकराषोसरन।याप्रहिप्रभुअपिनाय।कहिसुग्रीवअविधेसको।अबतोय
हेउपाय।२४।श्रीरामवाच।जोप्रवियोदससीसयह।भेदलेनचरनाय।कविननहमपैतदपिक

बु रहनिश्चय कपिराय २५ हनुमत आंनकुहाथगहि जो असा धजो साथ नावसआप
नो नुगति है अनकृत कृत असाथ २६ कविरीवा चलिसुलेरघुवरवरन अंगदहनुअंग
करबकुआदरकरकरिष सीलिआऐ संग २७ कीनी दरस नरामकी ईहांवनी खनआयउ
पजोअतिआनंदउर नैनरहेजलछाय २८ वनीषनवावाकवित वंसपिताएकवसोजननी
उदरवास अयजकेसंगदोषअघनअघायोरू दीनानाथदीनबंधुदीनकेदयाल देव द
सानतवचनउसदुषपायोरूं नयनीतकहतहैवनीषनउगायनुजा करियेसहाय
नाथरावरोकहायोरू सरनाईपिंजरविजैतुमहीअवधईस याहीतेअनाथरूसरननाथ
आयोरू १ महावेरवाद्रीमनरांवनसीमिटीमेरु सबेदिनमीसोसवनिवहीसरोसोहै दीन
बंधुतुमदुषदहनकेदावानल माहादीनआधीनउचीनकोउमोसोहै पायनपरतमोहिपाय
सोपहास्योपापी मोनजेगुनजेयोमनमारितुमसुसोहै मोहिनत्रलोकमांऊगैरआजमाहारा
ज नावीएकरावरेचरनकोचेरोसोहै २ कविरीवावावंदवअषरी दंडपरणामवनीषनकी
ने नाथउगायकरिबकरलीने निजनिजजनसुउरदिलगायो तिहप्रभुकृपापरमसुषपायेहि
वेदेषबिबउपजतआनंद नैनबिसालदयालकोकनद सामगातअतिअतुलितसोभाल
बनतनमनमनमथजोभा भ्रकुटीनेरेष जांन्दलंबितभुज कोमल अरुनवरुनकरपंकज
मध्यनागमृधराजमनोहर सुकरधनुषनामितविजईसर सिरजटजूटवसनवनसुदर वि
कसतकुसमनमालवनउरवर वदनप्रसनसदासविराजत रूपअनूपरूपछबिछाजत व
नीषनवा आदवाराह जयंतअषलेखुर दरबीदंतअयधर उधर जयसनकादिकरमतप
कारनक तअवितारजनहितकारन जयजयमषविद्याविसतारन जोइध्यानजयनरना
रायन पीवबदरकासिघपरायन कपिलदेवजयजनहितकारक सावसहेंसनपउत्रसं
धारक दतात्रेजयजगसुषदाता वरदायकपितमातविष्याता जयजयरिषभदेवजोगे
स्वर परमविदेहत्रलोकभ्रमनपर जयतदेवधुवरदनांमजस तिहबिनउरधलोकपायो
तस अबिलईसजयपृथुअवितारा पृथीसोधनउपनीतपचारा जयहयग्रीववेदविसतारा
माहाअसुरहयग्रीवामारन जयजयकमठपयोनिधिपवसन देवनईमृतलीनउपदेसन
मछजयतसंषासुरमारन वेदविमलत्रयउरविसतारन जयप्रहलादवतंगपालक कालनेमि
धअसुरघरघालक जयकारनबावनबलजाचे रीझेसततिहघरेराचे जयजयग्राहमोच
नआरजुजाहरिपंकजलोचन जयतीहंसविधसोचविनासन मायाभ्रमप्रकारप्रमासन इ
सजयंतुजयंतअवितारा प्रगटत्येविस्यारप्रकारा जयतधनंतरजगतजिवावन निजओ
षधबलरोगनसावन जयहुनरामउग्रअवितारा करनीछत्रियनुवमारकुगरा जयजय
भासपुरानप्रकासे विद्याश्रोताअज्ञानविनासे अबजवतबुधजोअवितारा दुरषपुरातन
पंथप्रकारा जयजयकृष्णदेवजदुराए घोषउपद्रवनिषदैनसाए जईतबोधमतअसुर
भ्रमावन नियतिविविधमक्रियानसावन जयजयकिलंकीदुष्षयकारक वेदभुजा
दधरमविसतारक सोतुमरांमअनंतअविधिसुर जगतकरनजगसरनजगतगुर जय
जयजगकरताजगजेता सुषवनविहरतअनुजसहेता जयजयजनकसुतामनरंज
नजकूवनलपणतारथचंजन जयजयगोकुलद्विजहितकारी जयहरिहितवंदा

वनविहारी। जयजयसुरमधुकइटभमारन। विमलरूपभवसिंधुविहारन। जयजयपरु
मउरषजगपावन। विधहरसुरत्रयतापनसावन। सीतापतजयकरुनासागर। जईतजई
तरघुवंसउजागर। जईतजइतप्रभुभवक्रतकारन। ईसमकविनरहरउधारन। देवबनी
षनकहसुषदायक। लिबेगरिजथाथितलायक। इतिस्तोत्रसंपूर्ण। वभीषनवा। हमराक
सतामसमयदेही। सुपनेहूनभएधरमसनेही। आदजनमतामसत्रारा्धौ। साधभाव
कबहूनहसाधौ। सबदिनरहीकुसंगतसंगा। करीनकबहूसाधप्रसंगा। हमसमऋ
धमनकोजगमांही। जिनकहपापकरतभवनांही। पापीतमवंसरुधरपलासी। दिसावांन
साधसोहासी। सबअकरमअविद्यासाधी। अबलौंनीतनदिनआराधी। असेहूजसनेप्रभु
आयो। लेकरयहप्रभुकंठलगायो। इहतौतवमहिमाइधकाई। आद्यअंतरविकुलचलआई
नईतअनाथनहीकोउजाके। तुमप्रभुभएसहायकताके। नकहीनरावनकोनाई। सरन
हेतप्रभुभएसहाई। कविरोवा। विनपदीनतासुनयहवानी। ईहांरघुनाथदयाउरआनी। कहि
लंकेसतिलकसिरकीनो। उरभनराजवभीषनदीनो। बिनमहिक्रियेलंकेसवभीषन। भनुर
घुवंसधिनमहिमापत। दुहा। रावनकाटेसीसदस। करकरहोमजुकीन। सोलंकादसरथसु
तन। देवसरनहितदीन ३९। विधहितकीधौतपविषम। मसतकज्वलनजलाय। रांवनवरष
सहंसदस। उनलंकागढपाय ३०। छपेकवत। वर्षसहंस्रदसतपविसेष। कीनोदसकंधर
करनकाटसिरहोम। करेदसवारआपकर। देवब्रह्मकैतबदयाल। देवदरसनतुवदीनो
करिसंभारकरुनाअपार। लंकेसुरकीनौ। सोउधिनरामपोरषसुकर। इवछिनहिकहीसरन
हित। वहिक्रीतलंकजुवभीषनहि। अनलीनेदीनीउचित १। पंथजदपिदस्वारपटपरधांनतु
चापर। सईनअविनसथरिय। अजिनकासताउपर। मिलभोजनफलमूल। नसमअंगराग
सुनतिय। जुतकिरीटजटजूट। मृघजुनटसभामिलंतिय। क्रतउरथयहैनरहरसुकवि। रां
मचंद्रदिगविजतरिन। हितरीझसुदानवभीषनहि। देवलंकदीनीयतदिन। दुहावभीषन। ईहां
वभीषनआपनो। कस्योरामदेलंक। ताकेनासेअदिनतन। उघरेभालसुअंक ३१। श्रीरामवा।
धरिअगजगदिवसंधरा। अरकगिगनउरुराज। थिरजगजौलागमकथा। रिधूवभीषनराज
३२। कृपासिंधूयहवचनकहि। अरुकरयहिअपनाय। जानउपतअतिदीनजन। सोराषोस
रनाय ३३। कविरोवाचछंदउधोर। यसमयश्रीरघुराय। सबबैठेमित्रीसुनाय। श्रीरामवा। विध
ढूबतहांरघुवीर। तुमसबहूबुधसधीर। कपीराजउदमकाज। इहउचितकहियेआज। अ
तिअमननीरअगाध। बहुविधपंथहबाध। अहिकमवमगरअमांन। जबचारजंतुएजांन। क
षसुसीहूनीयजोर। ईत्यादकहीयतओर। दलप्रबलपंथनदीस। क्योलंघहिसिंधुकपीस।
सुग्रीवोवा। दियकीसपतिउपदेस। सरअनलतवअवधेस। मुक्किहूसुसिंधमभार। जलसोष
बलजियजार। वभीषनवा। प्रभुकरिहूएकउपाय। सवसिंधुकहसमकाय। तुवआदकुलगु
रयेह। उजजानसिहपादेह। लछमनवाच। मतएहलषननमांन। हमजावनानहिजांन। श्रीरा
मवा। जहांअनुजकहसमकाय। अवधेसजलतटआय। कविरोवा। करदरभआसनकी
न। प्रभुतहांबैठप्रवीन। दुहा। तजीवभीषनलंकतव। पाछेहूतपगाय। तिनसंबलीनोसोधतहां
उलटलंकफिरआय ३४। रावनवा। सुबिततांकहलंकपत। ग्रातकेसबभेद। गयोउहातजे। लं

कगढ करियतुकहनिवेद ३५ कहेइतकपिकटको समाचारसमझाय तिलककरैरघु
नाथतिह लंकबभीषनपाय ३६ उनकेमरकटकटकमह यहमैसुन्योअसेस तहांवष
नआततुव कदियतहैलंकेस ३७ रावनवा॰ हसिबोल्यो रावनइहां बातसुनीसविषाद उइ
जायनिरलाजवह पायोबुधप्रसाद ३८ करतबवीरीनालकपि कहिताकहलंकेस को
उजोहोरीरावकहत नरसबहसतनरेस ३९ कहिबेकोलंकेसहै काजनसरिहैकोयक
हिकहिराजाधूककह हांसीजगमहिहोय ४० कहाउलंघनउधदको चितवतकहाबि
चार विधककरतजुनावनै यहैकहाउपचार ४१ आयोकपिजनसाथउह करमचोरक
रिकूर उनकेमरकटकटकम सुपैकहावतसूर ४२ मारयोअषयसुबालवय आपछद
धनतआयतरुतोरेजदतास ताकोमारुतजाततहां पौरुषकरयोप्रकास ४३ इबमंत्रभम
चातपह आपउदधतटआय पंथसुजाचतपायपर बैठेफासबिछाय ४४ करमसन्या
सीरामका पौरुषबलइमपाय पेरयोधरनासिंधुपर अरुचाहतयहआय ४५ कबिरोवा॰ बा
सुरतीनजुबितीयि रामकरतमनुहार जांनसमुद्रहिदीनउज रहेबिचारबिचार ४६ जगप्र
सिधजडनावजल मानतनहिमनुहार उवलउमनअकुलायइहां सरकोरुनसनार ४७
"जगप्रसिधजडनावजल मानतनहिमनुहार" x उरपरित्रासमुद्रअति जांनबिकलज
लजीव अंतरइगअविलोकउर देषेरामदइव ४८ छंदउधोर बुजउदधधारेदेह निजराम
नक्कसनेह अलेकरलउदार थितनरेकनकसुथार उपहारक्षियअनेक विधजुक्तबिहत
बिवेक अरुकरीप्रणताएव दनुअधयन्नयममदेव इहहेतकरअज्ञानकबुसनतजुनहि
कांन अनउचितकरमअनेस ममबिमकुरामनरेस सबकरउएकउपाय सुषलंघऊनी
रसुनाय नलनीलउदवीप्रसंस इहबिम्बकरमाअंस सोस्वहिजलपरसेत मिलजूथ
जुथ्यसमेत दुहा कपितिनरिषसेवाकरी पुनअसोवरपाय पाथरकरिहैकरपरस सोजा
तिरहेसुनाय ४९ येबइहै नावीववल आगेहीलषआप करुनानिधकारनकरन प्रभुसराम
प्रताप ५० अरु उषकहेजुआउनो सुनियेअविधनरेस मेरे उतरतटवसत करतअनीत
असेस ५१ हेदुमकलपजुथलउहां अबलवसनआनीर तिनहीचलावऊरामतुम तेजअ
नलमयतीर ५२ कबिरोवा॰ अनलबांनआकरषयह मोष्योराममुरार उतरतटवासीअधम
जेसबआयोजार ५३ कतजुपराक्रमरामको सागरपेषअसेष सुरकारिजकीसिधसब ब
नीसुनीतबिसेष ५४ सिक्षवा॰ रामसुजसरावनमरन ग्रीवबभीषनपाय लंकदूटनसियमि
लन अविधनिकटप्रभुआय ५५ कबिराव॰ नलनिधकरयोप्रवेसजल देरामहिउपदेस कार
नसागरसेतको निश्चयकरयोनरेस ५६ अथश्रीरामेस्वरंसथापनं रामेस्वरसिवथापना य
हाकरीरघुराय सेतमूलसुनसिंधुतट वेदप्रनीतबनाय ५७ गुजाअरचाप्रेमपन सबबिध
करेसुनाय श्रीरामिसुररामके सोइनएसहाय ५८ श्रीरामवा॰ सेतबंधरामेसको करदैदर
सनकोय जोउपजघातकपातकी ईहांहतकलमतहोय ५९ करिदरसनरामेसको अरु
सामुद्रअन्हाय उनिजैसैहैबानारसी संकलपयुतसुन्हाय ६० लाविगंगानीरफिर सिबसिर
धारादेह मेलेसेषसमुद्रमह लाभजनमफललेह ६१ ताकइगतपापततहां देवीनिसंदेह श्री
रघुनाथसुरसुरन उपदेस्योमत एह ६२ कबिरोवा॰ उमगेजूथपजुथयह अज्ञामांगीआय

करिहै बंधन सेतको। लंकादि कूदहाय ६४ इहां तुरघुकुलयंद को। दूरन आदरपाय से
तबंधकारनसकल उद्यम कीनो आय। श्रीरामवाच छंद वैताल। कपिबोलत हांनलनील
हितकर देवयह अज्ञादई बलबुध करकर सेतबंधऊं महाद्रदपरबत मई जलसी
सबबलपषान जोरऊं अखिल गिर तउतंगए कपिकरऊं भुजबल मिलऊ कीडा आ
प आपअनंगए। कविरोवा। मिलनील नलबल अतुल मरकट सेनसागरसकियेक
लोलजलवहिन्नम ननयकरि गहरस्वऊ घां गजाए कपिनालअदंडबालकरिकरि
केलकं डक ज्यौ करे धरियोंन पोन अमानभूधर धाईनल आगे धरि बलसुभटमिलयौ
सेतबांधत अतुलपौरुष अंगए पंथगिगनभूवबहमं रुपूरित सम्मरस्तूरसुसंगए मिल
प्रबलराम प्रताप महिमा तिरतुपलति हताल जलऊपर तरवरपत्र जैसे लसत परबत्त
माल लेस लिल बारत सिला संगीय सहज जाति सुभाव तेतिर तआउनअवरतारत प्रगट
रांम प्रभाव। दुहा। कपिके गिरजप जीवका सोहजांनत संसार कपिते मेलतकरकरष याते
तिरत अपार ६५ हैलघुता लघुसंगते यहजुनीत उपदेस ताते गिरलागे तिरन पाथ रनीरख
वेस ६६ छंद वैताल। दसच्यार जोजन प्रथम ही दिन सेतबंधसुनाय वहिवीस जोजन दुतियेबा
सुर विवध नातवनाय जुरित्रति ... यहदिन इकवीस जोजन हरषवित्तहिहोय चवदिवस
जोजनसे तरूचरवि दुगमवीस ऊदोय मिलवीस त्रयतहां दिवस पंचम होयऊतसुरहे
त जसरांम प्रगटियबंध जलनिध समविषम जो सेत। दुहा। आदिअंत जां सेतयह दूरनन
यौ प्रमांन सतजोजन दीरघ सुषद मध्य नागदसमान ६७ कवित। औ मसे तबंधियो कपिन
अतिविक्रम किनौ अमर अखिल आनंद दाहकंटकउरदीनौ सरन आय अन समय लं
क वनीषन लिधीय कविनरहरकि यकित प्रगटत्रय लोकसिधीय जलजलधतिरेतर पत्र
ज्यौ ऊतप्रमान पाषांन कुल राजाधिराज रघुनाथकी। यह प्रताप महिमा अतुल १ दुहा।
रह सुंदरपूरनभयो देवउजन सुषदाय नारउतारनरूमकौ आगमनयो जु आय ६८ ए
ती श्री पोरषेरामायणे माहामुक्तमारगे नागवतेनाषाबार रह रहरदासेन विरंचत सुंदरकं
ड संपूर्ण। अथ लंकाकांड आरंभते। कविरोवाच। दुहा। आरंभो लंकासमय रावनरनअ
धिकार गढतूटन बूटन जुयह कुलराकस षयकार ६९ अथ सेन्या सेत उलघन। सेतमू
लबैवेसहज सानुजरामसधीर कौतुक मरकटनालकौ विहसतदेषतवीर ७० कपिदल
लंघत सेतकह अपने अपने नाय कूदत गरजत क्रोधकर सहनननहि समाय ७१ कोउ
गिगनउडांतकपि सेतनपंथसमात मांनऊ जलधसमूहमिल जलवरषनकहजात ७२
चलेजात जलजंतुचट कोउकपके नककाज मांनऊ जलधरउपरउ सहजमजमातसी
जात ७४ रांमदिवाढो हासरस देषदेषयह दाव तारीदेदे हसततहां रीजकरनकपिर
व ७५ वीरनयांनकहासरस अदभुत रौद्र अनेक अतिकौतिक याहीसमय भांनभएसबएक
कवित। आपबूरुहिलि आंन उपलकुलल बन औसौर परीत्राहहाउकार घनलंकाघहै
रघर सुनवानरवार धवारगुन इहां संदेहन आनिये कारन प्रतापरघुनाथको सोत्रयउर
नप्रमांनियौ। दुहा। कटकपार भौ सेतके। यहद्वतनकहि आय सानुजसषासुमित्रसब उतरेराघ
व आय ७७ तहा मद्लान भौ सिधतट आए विजई वार परिआतंषजु लंक उर प्रतिय रयहनउका

कीरतकपीनकीजु अंगदकोसिंघसु
केगनसितनायक

२।७९।कवित।आपबूनहिलेआंन।उपलकुजलबनअसोतिनकोसागतिरन कहोविसवास
सुकैसौ तेईपर्बतजलतिरत वारनिधलांघतवांनै।धन्नतावनीषनकीदिवसनाई।देवनकीद
सादेवराजसुनदायकी।मारुतकीविजयडोमवलकीचिवलताई।देवनकीदसादेवराजसु
नदायकी।कुंभनकीविनिद्राइद्रजीतकीविनासकारी।तजटाकीईछ्यासुषसियाकेसंहायकी
कालकीसीयातासबराकसकीसाढसाती।रावनकीमीचआईसेन्यारघुरायकी।१।श्रीरामवा।दुह
।।कोसलदेसकपिंनालकह।अज्ञादइउदार।कंटकरबितवाटिका।वनवरकरहुविहार।७०।क
विरोवाच।आइसलहिअविधेसकौ।जुथपजुथवनजाय।षातमधुरफलअनिहरष।हवहवबमह
लाय।७१।छंदउधौर।धसरीब्रमरकटधारि।असुरिसवननउजारि।कछुलहतराकसकोय।गहित
जतताहिविगोय।तिहअवननासाकांट।पुंनलेतमूबउपाट।मुषकहतजबजयरांम।करितज
ततादिअकाम।उहन्नाजवनरषवार।दसकंधआयदवार।वतिहारलेपकुचाय।जहांऊतेरावन
राय।कटनाकनासाकांन।वनपालदेषविवांन।रावनवा।सवश्रुतितिहलंकेस।कियवदनयहनै
स।मालीवा।कहितबैमाजाकार।कृतकरनकपिनविकार।वन्नुसिंधुबंधीयपाज।मिलकीसन्नाल
समाज।इहश्रीररायवआय।सुषसिंधुलांघसुनाय।दियलंकहीमहलांन।मिलकपिंनदलअवमा
न।कविरोवा।वढसोकसुनसुनवात।असुरेसअउतपात।सगयोउवरनवास।वससोवमोव
तस्वास।अतिक्रोधजवयहआय।त्रियलछ्मीपतिहियताय।मंदोदरीवा।कवत।मंदोदरिमनमलि
न मंत्रहितकहतपतहिमिल।अनहितवकताएजु।नागवससबन्नाडुष्टमिल।वल्लरुद्रवरविहत
जाहितुमसबजुगजितौ।अविधपायवसअदिस।आजसोईसबैअतीतो।हितअहितनजांनतहे
रहिय।एकगरनसेवतअतुल।सोईछाडसिंघकरिरामसो।करियेअनयउलिसतकुल।१।वियसुज्ञं
नमयसुताराजहितनीतउचारिय।देषअहिनदसवदन।नयोउरसोवजुनारीय।कहतक्वनहित
काज।सोनमांनतलंकेसुर।घटचीकटजोसघन।निदतनहीवारधारनर।ओषधवथाअनरोग्य।
अंगकहाकरेउपदेसकर।अतिगरबकुमतिदससीसअंध।नसौजुघटकृतदोषनर।१।छंदप।
तुमरांमअंतरएहछुचो।तदिनमणिदेह।मधुमहामुरजिहमार।सबअसुरवंससंघार।बलबांध
पठयेपताल।हिकालकुकीकाल।रनमारहैहयराज।कतरुघरितरपनकाज।यहसिंधुबंधियेसे
त।हैहवैतुवप्रतुहेत।अवतरेमानुषआय।न्नवनारहननसुनाय।वढलंकदियक्चतुरंग।एनाल
कविअननंग।तुमनमनुजमानतताहि।अषिलेसब्रमजुआदि।सियजोइमायासोय।किहियतत्रि
यनहीकोय।उनिगहरूरघुवरपाय।अबचतुरआश्रमआय।छंदउअपरी।कतन्रपसुतौसबैतु
मकीने।देवअदेवनपरनवदीने।तिहषोजतमुनीवरजगजोगी।ब्रह्मगिनांनीविषयवियोगीव
हअविधेसग्रेहतुवआए।देहमनुजअगजगहिदेषए।वनुमीतादेवरननपरिऊ।कंथसुहागअ
षममकरऊ।रावनवा।लोकलोकपतिमैजयलीनो।कवनहितेनामनजयकीनो।कविरोवा।सीया
दहनजबसुनेलंकेसुर।बलतहृदयआयौतबबाहिर।सन्नावनायछत्रसिरसाजा।रोषजलत
बैठेषलराजा।दुहा।सन्नामधपतेहीसमय।इहांसुकसारनआय।कीनेलंकानाथकहि।वंदनवि
वधवनाय।७१।पवएलैहतजुलंकपत।सुकसारनसमुझाय।विसतरजुतआंनकुविवर।नेर
कटककिऊनाय।७२।कारनमरकटरूपकरि।कियेसुककटकप्रवेस।ताकलसुनितनिपुनता
सोधलेतसविसेस।७३।कतदेषतकपिरूपकर।नेदजलतननाव।कोलतदलहिदिसविदिस

इतसकियेउराय ॥ ७४ ॥ तदपिंपिबांनेकपिनते ओचकपकस्यौआय उननआनेसुग्रीवपैह उष्ट
सुसबनदिषाय ॥ ७५ ॥ तिनह्विविलोकसुग्रीवतब बोलेसमयविचार अंगअंगकस्विारईहै निरल
नदेक्रनिकार ॥ ७६ ॥ दपध ॥ काटनजबलागेनाककांन ईस्वरनदईरघुनाथआंन बक्रस्यौ
वरलछमनलियेबुलाय कीनेनवारपैभेदकाय ॥ लछमनवा ॥ इहांलछमनपाती दइएह इतपत्र
जायरायरांवनहिदेह तुनकेकुदीपकसलभनतूल मतषोवक्ररावनवंसमूल जोनइतिहा
रेकरमजोग उनताकौयइएकोप्रयोग सीतासमपिस्वातिकसुनाय परीयेबआंनरघुवी
रपाय ॥ कविरोवा ॥ वरवीरनीतलिछमनविचार करिदयादूतदीनोनिकार तेगयोदूतरावननि
केत तहालगेकहनसबकरमहेत ॥ रावनवा ॥ कहिदूतबतरावनचितविकार सुककहकुच
नीषनसमाचार ॥ सुकोवा ॥ उहांगयोवनीषनअतिअधीन करितिलकताहिलंकेसकीन सो
कटकमोंहिकहीयतलंकेसविधअंकवधीमहिमाविसेस ॥ रावनवा ॥ कहियेगतवानरीबकेर
घरमेरैलायोकालघेर ॥ सुकोवा ॥ दलप्रबलजाकपिअंसदेव सुग्रीवसहतरतम्बरनसेव मन
तिनकरवनुअसीगुमान एकएकलेहगढलंकआंन अतिबलीवीरयहरूपआय जोनिरे
षेतनुमसौवजाय असेअष्टादसपदमआय सबरोषरतअपनेसुभाय आकतअद्भुतपोर
षअमोन मांनतजेतुमकहतिनप्रमांन कूदतकरिछबबजुधकाज यहगरबमनकुगढलेह
आज घाटकपिदेहपरबतनठेल कालकसोमंहैसमरकेल अबरामलषनबलसुनकुराज
उनसमनसुरासुरउरषआज सरएकसातसोषदिसमुद्र बीलरकहाताकहषारबुंद तव
न्हातदिषूबेमंत्रताम सागरपरकीनोवंधसाम ॥ रावनवा ॥ सुनबातहस्योषटआरसीस कहा
ताकौबलतिहकटककीस सबजायसदाकातरसनीत मुषमित्रवनीहानमिलौमीत का
लनयछाहकुलसंगकांन इहसमयसरनरिपुगहोआंन पैहूबितादियहमंत्रपाय जल
निधपरधरनौदयोजाय तूकहहतकूवातैवनाय हमरामप्रराकमपारपाय ॥ कविरोवा ॥ ई
हवचनसुनतसुककोधआय सोदईकाढपत्रीसुनाय दससीसवाचदेषक्रनिदांन उनक
रकुमंत्रपोरषप्रमांन सोउपविसुनतबातीसिराय चितलायपयादिदेषकुवचाय करवाम
लेकुपत्रीकुचार वाचक्रकहिमंत्रीकरिविचार मंत्रीजुसुनायेवाचमूल तिलगेवचनउरबां
नतूल ॥ पत्रीवाचक ॥ रावनजिनषोवकुवंसराज अजइसनसरनैवचकुआज कररांमबांन
धाराकराल जरिहैकुसलभमतिक्रोधजाल कुलराजकरकुरछासकांम मुकिकुविरोध
गहिसरनरांम रावनसुनपत्रीसमाचार विहसांनहसनलगिवारवार लछमनकोदेषकुचि
तकुचितकलास सोयोजन्मनकरषतअकास ॥ सुकोवाचछंदउअवरी ॥ कहिसुकदूतसुनकु
लंकेसुर तुमअतिगरबजगुरकुतेगुर तजियेकोधविरोधकषाया अतिबलरामसिंघलयआया
पिंजरविजयरामसरनाई दयाप्रकतनिगमांगमगाई कुलकुलसतकीरछाकीजे देवफेरसी
ताफिनदीजे नईजुपैनाइअनमाइ सोसबछिमहैरामगुसांइ ॥ कविरोवा ॥ सीतादिकुसुन्योजब
हीसव हन्योसुकहितबलातमहाहव ॥ रावनवा ॥ मतफिरवदनदिषावकुमोहि तवकृतपापदेकु
फलतोही ॥ कविरोवा ॥ इहांसुकदूतआपयहआयो छकहवरावनकालदिषायो अषिलसुनटसुतमि
त्रीआए तिसवरसनाबैठसिरनाए ॥ रावनवा ॥ सिंघलाघकैबालसिन्पासी हेरसुमोहिआवतमनदा
सी वनचरकटकलियेअंतकवस सुनेतुमकुआएहैमानस कारनकहौअबैसोइकीजे बलब

लजि हउ रजनद लखीजे। सखावाच। इहास नामद क्खन उचारे। मांन सबोरे लषह मारे। हती
कटक के बल हम जाने एक पिनाल काल गहथाने। कहलंके सतु महि नयका के। जगत सबे बस व
रती जाके। इहां प्रह स्तनृप नीत सुनाई। सखा कहत सब गकु र सुहाई। उदधि कूद ईकयहा
कपि आयो। जिह बुध बल गढ लंक जरायो। यह की उधा गइ कहां वा दिन। षायो किन हनमंत
तहां बिन। जव राग न सब की अबजागी। जेबा कू नरक पिह वजागी। ईकपि वे उती पात उगए
अब तो पदम आवद स आए। सिंध करहु अब दीजे सीता। परम मंत्र यह नीत उनीता। जु पैपाय
त्रिय फेर न जाई। विग्रह करि कु निसांन वजाई। कविरोवा। सो प्रहस्त नृप क्खन सुनायो। अति दिरि
ष रावन उर आयो। रावनवा। प्रहस्त नीत कहा यह पाई। गुरु प्रसाद विग्य गरबाइ। सिध नाम फि
र मोहि सुने है। उनि प्रहस्त विग्य फल पैहै। कविरोवा। उह्रौ प्रहस्त अन षउर आनी। मांन तनां हिव
न अन मांनी। प्रहस्तवाच। कानन वचन सुनत हित कंटक। आंन परी सिर गया अंतक। कविरोवाच।
छंदपध। महा वृध आई यह मालवांन। निसचार नीत विद्या निधांन। रांवन को नांनो वृध ८० नेस। ईहस्सम
य करे पर षद प्रवेस। अति हित सुवेगे ब्रम्ना आंन। मन महा दसानन मोद मोन। मालवानोवा। विध
जुगत बोलइ हां मालवांन। कछुक रू क्वन जो देकु कांन। उन लंक नयो सीता प्रवेस। विपरीत सगु
न व रतै विसेस। करत जो हो मउ जअ गन काज। जागत सोनो दिन महाराज। आवरत धूम संकल
अ सेष। वहिनी उलिग वरिन विसेष। मिल वस्त्र अस वसालान माफ। सत जष्य गुजंगम नोरसां
क। परज्वाल पपील कहू वनपात। गत षीर सुरन्नी नइ षीन गात। मद मत मतंग हय हेष मूल। क
न्न बरत्नि नरोमा सुरूक। स्वा भाव रहत निस अवनसाल। कुल काल असु नकुंजन कराल। दीस
त वि वांन आका सदेस। उन अयग्रीध करियत प्रवेस। सनाथ सिवा घडि सिवा संग। अति असु नयां
न थित कुयउतंग। जंबूक कूक कक्रूव्या धजाल। कुंजत निरू टवारन कराल। रोध रीबुंद आव
त अकास। नयकार रूष्य गंध रन कुनास। सुर लिंग अवतस्वेद तसु नाय। प्रेत निसन गर मूसि
त जपाय। कालिका से तदंतन कुनाय। अति येद ग्रेह सो उधसि तआय। दीरघ सथूल सिर वपन
साजि। वउ रोद्र क्रम पिंगल विराज। एक काल उरषइ हरूप आय। दिन जौ रात जात अति नय दिषा
य। मूषकों नकोल वरगो हवसूत। अति जुध होत करक स अमूत। अपसुगन होत इत्याद आय
ति इनि मित सांत करियै सुताय। या निमत सांत है य है एक। ज्यांन कीदे कुकुल रहै टेक। वतु रा अ
म आयो है अ वित। ताको सबसा धन समय तंत। कै बांन प्रहस्त नृप बुधवेस। निसतार करत अ
पनो नरेस। सुत देकु राज सिर छत्र साज। करिये अपनो उधार काज। त्रियस हित आप करि अय
सीत। अविधेस सरन ग्रहीये अनीत। है यहै मंत्र कुल वृध हेत। तुम्व तुरन्नृप सबविध सचेत। मनरू
वैस करिये महाराज। अनुसार बुधि हम कहत आज। सुनि वचन एह परिजन लंकेस। उर क्रोध व
ढ्यो अन सहि अतेस। रावनवा। मत एक वभिषन तुम कु मांन। जो आज हमै निरधार जान। वहगयो
तुम कु जैसे ही वअंत। मन मांनी सरनागत महंत। हम जांनी राम हि मिले आहि। यह वास व सत वि
त उहां चाहि। विन बुध तुम कु जो न एवध। पनवो थे व रतत है प्र सिध। वचि हो न मी चिते कि कुवि चा
र। सर नै कु मरि है अंत सार। सुन रावन के जब वचन सूल। मन मालवांन पर जरे मूल। मालवांनवाच।
करि जतन इध सि विकु जो कोय। हवै तन दिन फल फूल होय। अति गरन तुग हिवनि अदिन आ
य छक राज मद बुध हेतु गाय। कविरोवा। मन मलिन ऊवत ब मालवांन। आयो ग्रह सोचित अत

अमांन। इति मालवांन रावन दिप्रबोध॥ अथ श्री राम अंगद दूत प्रबोध। छंद दिअहरी। प्रभु बै
ठे वेला द्र सिषर पर। सानुज सहित कपीस लंकेसुर। जामवंत अति नीत सुजांना। सबै वीर बैठे
सु सथांना। श्री राम वा। रहि समंत्र भूबे रघुराजा। करीये अबै जुधकी काजा। जाबवंत वा॥ जाम
वंत तब कहि कर जोरी। मम प्रभु सुन कृपा नत इक मोरी। तुम सरबज्ञ लोक त्रय स्वांमी। जगत चरा
चर अंतरजांमी। तुम ते अतिन दुरी कोउ देवा। सुर नर नाग करत सब सेवा। कहा प्रहत क बुत
द्र पिक्र पाला। सम दरसी तुम दीन दयाला। थित वित याके अहि मत थाती। पापी दससिर खमयि
नाती। याहि काल की बाया आई। सना करहु तसब व कुर सुहाई। याके नयन गरब मद बायो। अज
कुन जांन तराघव आयो। पापीनि जंक तनास ही पेहै। जगत विदत जम सादन जैहै। दुहा। मरक
ट नाल अगंग मिल। आयो दल अनपार। याको मारन का अगम। सबै करहत संसार। ११। छंद तुबरी
राम सदा गे दुजर षवारे। स्वामी वजतनीत अनुसारे। प्रभु इक वार वसीठ पठावहु। सठ रावन
बहु स्यौ समझावहु। निरैमति तौ याहि न मारही। सीता दे तौ वयर विसारही। हे दुज वंस पुष्टकु
लदीही। आप करम करि है षय स्रोही। प्रभु अंगद द्विव सीठ पठावहि। सरब भांत याक हि समझा
वहि। तत बुध अंगद बहु भांती। सो कहि है अहां ती सुहाती। श्री राम वा। रांम कह्यो अंगद कपि
राजा। करि कुव सीठ हेत मम काजा। नीत निपुन तुम सूरसयांने। दिकु प्रबोध सु समय निदांने।
कविरोवाच। छपै। अति दुरमद किबा अज्ञांन। कहु अदन ज आगम। सुन ग्रेह सीता सनीत क
तहरन चौर क्रम। सो बहू रूद सस सीस। कर हू अंगद यह कारन। नाती लब मन सरस मूह रिसस
हु कु महा रिन। बिद कंवद सकूर तउ बलत। भ्रत सुत नाती काल वस। संपति समाज यह बाफि सुब
अंत कउ रजै है अविस। १। छंद अवरी। चले सु अज्ञा सीस चढाइ। राघस रूप हृदय रघुराई। प्र
भु प्रताप सब सिध प्रकारा। अंगद चलय हु वचन उचारा। वार वार कपि वंदन कीने। आयस वस
अति नक्त अधीने। कविरोवाच दुहा॥ चले जात ईह पंथ छिव। अंगद दूत अचंग। कीडत मिलर
वन क वर। सषा लिये बहु संग। १८। छंद अवरी। कंटक सुत अति घन मद ताके। जग जनस
मन न आवत जाके। रोषवात तिह वचन उचारयौ। सुनत तहां जुगराज सन्मारे। वात हि वात विरो
ध वधायौ। अति तिह क्रोध दकु नव ढिआयौ। अंगद कह तिह लात उगाई। अलिप वेद प्रनताई
ध काई। पकिर चरन तिह धरन पछार्यौ। रांम दूत रांवन सुत मार्यौ। इहां जुगराजन गर मह आ
यौ। अति अनसंक बोह मन बायौ। राकसका कुन जात पचार्यौ। चले जाय घेरे हि सचारौ। दिष्ट
से रोष निहारे जा दिस। रूक जात सो इपै राकस। असुर आसुरी वा। उह कि धुको उओर कपि आ
यौ। जिह वानर गढ लंक जरायौ। घर घर होत कुलाह लघेरा। वनिता पति सो लेत नवेरा। लंक चल
टि काहू सै जरि है। कपि को उबहु उपद्रव करि है। कविरोवा। असह दिष्ट वितवत जिह ओरा।
निज रथं न ही करत निहोरा। विन पूछे ही पंथ वतावत। सना नेद पहि ले समझावत। सना सा ऊबै वै
लंकेसुर। दूत सुनट सब सचिव ततपर। इहां राकस संभा को आंने। वाढे सायुध विग्रह गंने। याहि
समय अंगद नौ आवन। चवनल ज्ञो प्रतिहार वनावन। कवित। अजगुर पढ कुन अलप। याहि स
नाय दन हि मुसुरेसुर। रहि गेस थिररहु कु। ईतिक हान्च ऐ तु आतुर। गंधरब करकु न ज्ञांन बिरद
तु बर जिन बोलकु। नारद समय निहार। बिन कपरदा जिन बोलकु। स्वसथान न वित लंकेसवर
अहकत आजन संधियो। मैथली रूप अटकौ सुमन भ्रमत कि कुविह बलनयौ॥ छंद दै अवरी।

अंगदअसुरद्वार जबआयो। सोस्यामदिशतिहारसुनायो। बेगेरावनसभावनाए। बालसुतन
कौमध्यबुलाए। दुहा। मतगयंदनजूथमद जेसेकेहरजाय। महापराक्रमधीरमन अंगदसभा
जुआय ७९ सिलाफटिकपरतिहसमय बेगेसभावनाय। अतअदिमतपोरुषअतुल रावन
राकसराय ८० रावनरांवनरूपकर प्रतिमाच्यारफवीस। सोसमआकृतएकसे सजेमुकटदस
सीस ८१ अंगदमायाआसुरी देषीकपटकुदाय। यहगढरांवनएकहै ईतेकहांतेआय ८२
अंगदवाचकवित। रेमदंधदसकंध रसापरकेतेरांवन। सबैहतेहमसुने परमपापिष्टअपावन
धरयौजुहेहयधीस प्रथमतिहकृतफलपायो। बलदासनडुबैबंध निलजदेकवन्हवायोबांध्यो
जुत्रतियममपालने मोहिसुलज्याकहतमन। उनमांफकिथौउपजैअवर। कहियेएलंककव
न।१ कविरोवाचछंदपा। इहसुनतअवरसबगएविलाय। एकहिसोरावनरह्यौआय। बेगेसुपरासु
षकेरपीव। अंगदउरपरिजरिमनुअगीव। सिलहनीलातफिरगईसोय। हसिबोलेरावनसमु
षहोय। रावनवा। किहपठियौकपितोहिकवनकाज। इहबातरआवनभयोआज। अंगदवाच
मोहिपठियोताहिइतरांम। निरसंकवीरअंगदजुनांम। ममपितातोहिआतातमांन। कहआयोता
तेछाडकांन। कविरोवाचदुहा। अंगदयापैहआयइहां। सनमुषबैठसधीर। रामप्रतापअनीतउर
वातकहतवरवीर ८३ रावणवा। जोबाध्योघननादजुध अरुदियेशछजराय। वहकपितुहीरे
अधम। केअवरेकाउआय ८४ अंगदवाच। गिनगिनदाहीलंकगढ मारयौअषयकुवार। कौह
नमतमिथ्याकहत। रेदसकंधगवार ८५ हैदौरतअतवेगउह पत्रीवाहप्रमांन। रूमसमदलसंभाव
ना नांहिनवीरनिदान ८६ रावनवाचछंदउअषरी। रांमकोनअंग। जिहहरधनुतोरयौ। महा
मांनभ्रगुपतिकोमोरयौ। बपै। बंजनकियहरधनुष। बालसंग्रामविनासिय। सप्ततालसरइक वे
धसोइउनिकरवासीय। अतिप्रबंडगिरआंनवारनिधसेतबंधायो। सुषहितरिकुपिसेन इहां
दहानतटआयो। उरधरप्रतापबलतेजयह। कबकुनवियहकीजीए। सुषसिर कुसि धर
घुनाथसे। देवसियाफिरदीजीए।१। रावनवाच। कृतविनासधनुकाव। बालमारयौसोइबांनर
तीरएकसततालं। ताहिजदजोनसुतीतर। सेतबंधमिलकपिसमूह। कहौकहाविक्रमकीनो।
करहितोलकैलास। बेलकंडुक [illegible] जिमलीनो। सिवदेविसनससिसुरसरित। सिवासेषवनजं
तुसंम। आकरषकवतुककाजवह मेजाननतबलबाहुमम २ छंदउअषरी। जीरनसिनूपिं
नाकहिजान्यौ। नयौकहाजोताकहमांन्यौ। बाननफरसधरनकैसोबल। दीनजातअरुसंग
नदिनदल। अंगदवा। बांननफरसधरनकोसुंनबल। मारिनिब्रत्रिकरेजुवमंडल। सातदीनवे
राप्रतिऔरस। रुधरनितिरपनकरेवीररस। बिनधरसहंसबाहुकोषोयो। जग्तप्रसिधवराबर
जीयो। रावनवा। सहंसबाहुकैसौरिकपिसठ। अंगदवा। हाथबांधपीड़ौतुमहीहठ। रावनवा।
काकोसुततूतपसीकिंकर। वांनअनेसीबोलतबनचर। अंगदवा। बालउचरूवेरविहंडन
षेतमाररावकसकुलबंडन। रावनवा। बालकवनधोहमहिबतावहु। कपिताकौतुमहतक
हावहु। अंगदवा। बालकरतहोसंध्याबंधन। मुदितनईनध्यांनवसिहैमन। निदाजोइकुतेते
निश्चल। तुमदिगविजयआयताहीथल। कंटकतुमतहांबलताकीनी। मनउपजीकबु
बुधमलीनी। पकरिकंधतुतबेपबारे। मिलेकाषमाफअनमारे। कृतनेमयुतसिंध्याकीनी।
दीपअंतपरिक्रमणजुदीनी। कृतप्रवेसग्रहकाषहिकाडे। गेलामुडदएकरवांडे। नलउहा

बुटेकुयनाई। बालहीयूतवहीवनाई। रावनवाच। अबकहबालकहांरेअंगद। अंगदवा। प्रां
नबानहतलसौपरमपद। रावनवा। माहाबलीवहकौनेमास्यो। अंगदवा। रामहत्यौरिनस्वर्गसिधा
स्यौ। रावनवा। कवनदोषयहजातेकीनी। अंगदवा। देववेदमतसिष्यादीनी। तुमजोवहैकांमक
रयेरत। रातदिवसरहतोपरत्रीरत। देवताद्विजोदंडनदेहै। तोदसांसपोहचैफलतेही। रावनवा
जाकहधिकतिहपैतजायो। अबपितुहतकहतकेआयो। सावकुकरतसत्रुकीसेवा। कुलक
उतविसर्यौसबकेवा। नमदलसंगलेरामकुमारकु। अपनेपितुकौवयरउधारकु। कपिसुग्रीव
कौतोरकुंकंधाकरकुतोहिराजाकेकंधा। अंगदवाच। वगईबहुसदासनवानै। परमधरमअप
नोपहिचांनै। राजादंडदेहिअथबावर। प्रभुजोडकरेसुपेसिरउपर। हमपहयहकबकुनहहो
ईकरिकुनइथाकलपनाकोई। आगेइहांजहनुमतआयो। जयपायोगढलंकजरायो। रिन
वढअअषयकवरतेहमारयो। सेन्यापततुवसेनसंघारयो। रावनवा। कीडतंबयकवरसो अ
बालक। अतहीनीरदबनस्यौअचांनक। यहांहममारुतपूबजरायो। अनलउबलतिह
गदसुलायो। अंगदतुजवसीठीआयो। कहकुसिन्पासीकहाकहायो। अंगदवाच श्रीराम
रुपा। डहा। दमजुवचनविधवंसहित। रेकंटकदसकंध। जिनपावहिकुकेमजर। अजकुस
मजमदअंध। ८७। अंगदवा। यहसंदेसअविधेसकौ। सुनदसकंधसंन्नार। डसनयहेतृणदंत
जो। मारिकुनहीमुरार। ८८। छंदप। पौलिस्तउरधकुलजलमपाय। सिवकरीउग्रह्मजासुन्ना
य। विधरुद्रपायतुमवरविसेष। अविनीसुअसुरसुरजयेअसेष। संततहितसाधतरतिसमा
ज। संततजपाजन्दपन्नोह्मसाज। जियअरथकांमनाधरमजाल। नवमोषहेकसाधतजुवा
ल। उपदेसकरतहितसुनतआज। रघुवीरआयराजाधिराज। वेरोधबाहकुलहितविचा
र। सीताहिअयकरबुधसंनार। मंदोदरीजुतअपराधमांन। प्रभुसरनजाकुजुगजोरपांन
त्रिनगहकुदंतकंवनकुगार। हवबाहचरनधरमांनहार। रावनवाच। वनचररेबोलतकवनवां
न। जगजेतारावनमोहिनजांन। जनमतुवबालयहवत्थाजांन। गरनगलगयोकिनरेअज्ञां
न। सरहतौबालजिहसमरसाज। आयोवसीठतिहकरनआज। गहिदुतकरमकहिग्पांन
गुढ। मुषमोहिदिषावतकहामूढ। अंगदवाच। छंदउअषरी। आंषकानहैवीससुन्पतर। आधौ
बहिरतदपिरेआसुर। सिवविरंचवंछितहसेवा। दीनउधारनरांमहिदेवा। रावनवाचछंदपधा। क
पिदुतदुष्टबोलतकराल। सहतहौनीतवसवचनसाल। अंगदवा। जगतुवसयनतासीलजां
न विधरीकीतसोईवांनवान। काटेनगनीकेनाककांन। मुषदेषनीतदुषनमांन। रावनवाच।
सेन्यातुवअैसोकोसमाथ। सग्रांमतिरेजौमूकसाथ। कुवरामविरहवियतेजहीन। मनल
बमननैतिहदुषमलीन। सुग्रीवतुमहिनिरबलसुन्नाय। आश्रयौसन्पासीसरनआय
ममन्हातवनीषनजनममूढ। गहौजिहसत्रुकोसरनगूढ। अतिजराग्रसततनजाबवं
त। सोउनयोहीनबलजवरसंत। नलनीलसिलपिकरमहिसयांन। जुधकरमजुपेकबुवे
नजांन। इहांआयोकपिहनुमंतएक। ताकीहममानतकबुकटेक। नियहौकुतौतिहमेघ
नाद। वदननहिदिषावतसोतिहविषाद। अंगदवा। एकतेएककपिबलीआहि। ढंढौरित
विहिगढदेहिढाहि। सुनसवनरामनोनुषसरीर। नहीगंगसरितहसललिलनीर। पसुकां
मधेनतरुकलपरूष। पंषीनगरुडपोंणीपयूष। मननांहिउपलअदिसेषमांन। जगलोक

रूनवैकुंटजांन। रावनवाच दुहा॥ हरविध शूलेवा रबकु। सुकर काटमे सीस होमेकर
लेअनलमहि सुंनमेरोबलकीस ८९ अंगदवाच कवित्त। प्रगटसीसबरूप काटनहीस
रकहावत। दिष्टहेतजरदीपपतगमन व २दवीनपावत [redacted] स्तारवहतगरधवा। कहा
अतिबलीकहावत मुरुचीरमांगयतु घाघदेवनकरुरावत। हम्छेदछेदकियसिरहवन
अरुकेलासजुकरधरिय। ईनमांफसुपेदसकंधअब कवनवीरलषनकरिय १ दुहा देव
जांनतोहिदीन ड्रपविययवसीवीमोहि बुसपिनातीमतिविकल तातेहनतनतोहि ९० चौप
टसालहिसमस्वद मारतनहिमृगराज विनसमताविग्रहव्रथा लेकुजातहियलाज ९२
तहांउवगढोवालसुत अरुइहवचनउचार सचामांकतुवकोसबल सकेचरनममटार
९३ वेलहिजोकोउवोरते मेरोपदगहिमूल तबसीताहारतती तमकुमनहिसतूल ९४ ईहार
वनअतिहीअनष उरचितिअकुलाय नररिसकंटकवीसजुज पकरनअंगदपाय ९५ धर
मरकटपटकोधरन निकसहिप्रांननिदांन अपनेबलदसकंधइह मनकीनौअमांन ९६ क
वित्त॥ तुमविसेषपोलिस्त कुलसुउपजेयथकारिय ब्रमरूदइजाविधांन सबचातसुधारियच
रनपरकुमनुरांमवंद अपराधनआनत हितनगतवसहोय प्रगटचितनावृमांनतपैगृ
हकुजायरघुनाथपद कतअकरमवतचुक्किहै सिरतोहिनमायोकालसोई ममपदगहेन
मुक्किहै १ कविरोवाच दुहा पस्यौबिसानौलंकपत थिरवैवोफिरथांन कर्मजुअंगदबलकस्यौ
मनसवत्तयौमलांन ९७ सोगाढोक्विराकसन अतिबलअंगदआप पायोजयजीतोजुपन २
रनरामप्रताप ९८ अंगदवा॥ ममवचननहितनहमनत रेकुबधीलंकेस कंटकचकुजुका
लकोसिरपरभ्रम्योविसेस ९९ चपै॥ सुनपवनसालपवेस कततसकरयुतकरियो जगतमातजांन
कीहरीअनहितअनुसरियो इहजिहबलआगियो सुतीकुलदलबलसफकु नईसुतीअ
बतई तेषअहंकारनतजकु मांनैनवचनमेरोमुगध अबकोसरनउबारहै आयोजुसेत
बंधियउदधि हयौरामतोहिमारहै १ रावनवा॥ दुहा॥ कादिकाटिअपनेकरन कदततोहिसुनकी
स मिलेकुतजुककुरुमहि मंगलफलसमसीस १०० अविलोकेमैआउने पावकजरतकपाल
ताहिविधाताकेलिषत नउवगटजलचाल १०१ मैतेईअदारमालका वाविकरमविधान निश्च
यहैमेरोनिमत नरकेहाथनिदांन १०२ करमअंकजेवमके अंकनमिथ्याहोय सुरआसु
रमंजनसमथ कौटिजतनकुनकोय १०३ सोपैरूजांनतसबै लोहसमरचहिलेकु कैहैजु
कबुननवितव्यता अबतोसियानदेकु १०४ कवित्त॥ कालसेवममकरत हैजुरिवतपतसी
तहित इरहितेडिगदेव विहतपदरजनितवंदन वंदहासममषडग देवसुरनारिनागमरि
~~ते इरहितेडिगदेव विहतपदरजनितवंदनें~~ श्रवतगर्भअनसमय नियततिहांकोवराकनर
दिषहंसुउनयतपसीअरुर दीनजतुकपिमेउदल सुनमोहितपतगढलंकसिर षत्रियधु
मतिहआयबल १ सापामृघदलसाफ अरिजुलंकागढआए उदधसेतबंधियो आंनगिरनी
रतिराए अबनसिधईहउचित नीतअंगदतुमजांनत हउमेरोत्रयलोक विदतसुरअसुरवषां
नत सिरपंचइननाएसिवहि सौनआंनदिसनायहौ चितरहैरामसरधारचढ पैसुउरधपद
पायहौ १ कुवकलिया उतरपतिउतरइधक डसहबालसुतदे उवरावनतहमांनहत हि
यपरजरयतहेत सबलसोकउनवसाई मांनताहिविमान करतअंगदयधकाई ड्रइस

नाजितीयहुसह तिरिसागरस्नुउत्तर कपिन्न नंगयहकरेउ असहहउतरथतिउतर
।डुहा। ब्चनबानउरविधीयो बिवरन्नयोबिसरान पतिबोहकु विपंचमहहहकोपोत्रज्ञा
न १०५ रिस ।हडथोरा। सुनब्चनजबउरसूलमनताप असुरन्नमूलरिसकलौराकसरा
य जिंनन्नजवानरजाय गहिलिऊयाहिअज्ञान कपिसुनेयहजबकान ।कवत। विसरबा
लसुतबीरसूरअविसानसंभारय इहअंगदअनत्तंग महीउवहथजुमारियधरायसक
धुजईय पसीमुहन्नरलंकेपति कनकरतनमयमुकट गिरेविथुरेदेवीगति सीउमुकटइ
कलेबालसुत कटकओरधरमुक्कियो बुरलंकअसुरञातंबपर भवनतीनजयजयन्नयो
१ नभ्रमारगआवतनिहार इवखउपजिय उलकपातकेअसन समयविनुरुदसुसजि
य महातेजमयमुकट कुदहनुमतआकरख्यो रामअग्रर्षियो हेरकपिदलबलहरख्यो
सोइदेषमुकटदसरथसुवन सीसबनीवनसमधरिय सबदेवविजइविजरसरन कविनर
हरजयजयकरिय ।कवित। जईतरांमजगदीस अजयविजरनाइय जयतरांमजगदी
स ~~बालसस~~निषलजुबन्नारनसाइय जइतरांमजगदीस डगमहरधनुधरवंन्यो जयत
रांमजगदीस बालसरएकविहंन्यो जयरांमदीनबंधवविरद प्रजुबन्नावञ्जुवनअनय ब
सनन रहरसुकवि जइतलईतरघुनाथजय १ ।डुहा। मारिमतगहिबेतमह ज्योनिरन्नयम
घराज उविगहोंओन्तअति जयपायोजुगराज १०६ ।अंगदवा। कंरकसोदसहूतकहि
दीनोयहउपदेस वनमतब्रानैआवनो करसमहरलंकेस १०७ असुरकहायोआजलों
सुरसुरेसकौसाल सरनगएउबारुरिस कबकुनवविरैकाल १०८ मूलमंत्रयहमांनमन
मिलसनमुषरनरांम आनवनीउबाहउर सफिरावनसग्रांम १०९ हमतोहिमारनकोह
वे बनुकोथेवीपाय ~~नवक्तापरघुकुलतिलके~~ अबतौमंगलसौभरनरन रेमहरावनरा
य ११० तबवलअंगदलंकते परेञानप्रजुपाय तवपतापरघुकुलतिलक सुथरीसबैसुनाय
१११ वितारूपगहीर सोकअरहटसीउस्तर विषमसहहारांम सोवसंकोचधुरधर नइन
जबघटिकासहिदीजुगन्नरतहरतजल नासावंसवनाल अैसुधाराबलिअविरल करिए
हयेरहनरहरसुकवि श्रमअनेकपरन्नवसहत रघुवीरधीरतवरिउरमनि वारउर
जकुन्नविवहत १ नहिनरागरसरंग हाससविलासकैवुहल नहिनसुषदऋंगार
केलमंगलकैतूहल सूरवीरसनाह सारआयुधतसंभारत रांमवईरदिनरात अव
रनहीवातन्वारत मृघराजत्रासमृघजूथमनु जियनआसबुटतजथा कुलराकसवा
सीलंकके कहतकालआगमकथा १ ।इतिहृतअंगदबसंग।कविरोवाचडुहा। सिषरत्रिकुटाच
लविषम रावनवाढीआन देबतबेलाचलदिसा महारोषमनमान ११२ परबतवेलाअंग
पर उतगढेरघुरांम दबिनन्नमावतबान हढ विसषासनकरवाम ११३ ईहदिसदिनक
रकेउदय उहलंकाअहवास बतिआमाडुववादपर बतबिबन्नयोबकास ११४ तहांवि
लोकबिलोकतनु सानुजरामसचेत कलपतसोनानगरकी इगनमहासुषदेत ११५ ।छ्दप।
वतहारघारतोरनषचंन्न दुतियेहग्रेहवन्निधजादंन्न कनकमयकलसनगजटितकीवनि
तवढतअमितसोनानवीन बाबारयेहहिमिमयपमांन थितउरधविराजतसत्थांन झूरन
यहकिहकवबुध्धपाय बरनैजुलंकसोनावनाय गढोतहांरावनउरथथांन निसंकरामदे

भ्यो निदांन। कविरोवाद। समस्तक मुकटकिटद्दे। सोइ स्रवनी षनकद्द विसेष। धनीषनवा।
रावन यह्वादो असुरराय। सिरछत्र सेत चामर चलाय। इह सुनत राम आ ज्यांनबाह। आक
रषधनुषसर गुनउबाह। कीमंरु करे कुरलाकार मोभ्यो। जुबांन निसचार मार। दसमुक
टमूलकाटे निदांन। सोजडोता हिवजुद्दि समांन। छंदतुअषरी। लाजित मनतिह बिनलंकेसु
र। परिछत्र नजिगे अंतरुउर। वेलाचलउपरश्रुपावन। वसेनिसा विय तापनसावन। लब
मनपउवदरसनविभाए। विहत अनिन सेफावनाए। सीसकपीस अंक अवधेसुर। मारुतचाप
तपावमनोहर। वामपांन को फंरु विराजत। सरअमोघ दिषनकर साऊत। निकटनिषंसव्य
दिससोहत। महिक्कि तसयन चतमन मोहत। सावधांन लषमन वीरासन। बैठेमित्र कपी
स वभीषन। रावनअषाडोवरनन। सोवतनिसा नइ यह अवसर। लंकासिषरम नोहरमिंदर
वनबैठे ताउपर रावन। नामनि मंदोदरिमन भावन। राजत छत्र वितानमनोहर। धुर
जनुघटा धुमंरु तजलधर। इहा किंनर गंधरब जुआए। विधनाटक संगीत वनाए। बाजा
विवध गहर सुरवाजे। गिगन मन कुप्रतिधुन मिलगाजे। नाचत अबरकरतकैतुहल
होत निसानगांनकै ज्ञाहल। कंटक मुकट किरीट कनकमय। मंदोदरीकुरुलनग
हिम मयमनहि रीफजुतसीस चमावत। तडितातरक मनुकुबिबबावत। राघव लंका
ओर निहारे। इह रावनघर होत अषारे। कस्यो उदय यह समयनिसाकर। कुमदनिवि
कसचकोर नहित कर। देष विसेष छत्र घन फंबर। विद्रुमवियकुरु लतडितावर। श्रीरा
मवाच। रामक सोदिष कुलंकेसुर। दांमनिद मंकलंकपर फंबर। मनहि विभीषन आवत
मोरे। ज्ञनियोधन लंकाचक ओरे। बोलेलंक विलोकवभीषन। मेघनहि नयह रघुकुलमं
रुन। सजि वितान बहुरंगसवारे। वहांरांवनघरहोत अषारे। घुमरत नहिन मृदंगस
धुधन। गिगन शूरप्रतिधुनतें बकगन। नाथ दमकयह दामननांही। कुरुल मंदोदरिचमकांं
ही। रतनकिरीटचमकवउरावन। नहीचपलात्रयतापनसावन। कविरोवा। विज्ञयबांनमो
भ्यो तबरघुवर। सोहनिमुकटकरहि आयोसर। तहांकाहु नदेष्यो सरतान्यो। निजकोति
ककपसेतन जांन्यो। धारेसिरलेमुकटपरेथर। मन असुगनलषपैठेमिंदर। पकरिहाथत
बहीपटरांनी। सक्याले बैगारसयांनी। मंदोदरी। मांनकुवचनकहतमंदोदरि। असुकनहो
तनिकटआयोअर। रावनवाचउहा। रावनकहतमंदोदरी। सिरकुगिरेसुनसूर। छंनले
धरिछंसीसपरी। मुकटन असुगनमूर। १६। बोल्योइह दससिर वचन। हसिहसराक सरा
य। वियमोहि माया प्रबलता। सोकहा वसाय। १७। छंदपध। सबकहतनीत वियगनसमास। उ
रजा सअष्टलबननिवास। साहजअनृतचपलतासंग। अतिमाया नयअविवेक अंगअ
नसोच अदयमिल अनाचार। वनितासनाक अष्टाविकार। प्यारीहमकीनोयह प्रमांन
धरिवितकवनतवनयनिधांन। सबअमरसत्रुजेमोहि सुनाय। सोसबैफंरुबाफै सुनाय
। उहा। सीतामहमाया सती। रांमब्रमहि हियेहेर। निश्चयहै मेरोमरन। तोपैदेक नकेर। १८। मंदो
दरीवाच। कंथजुमाया कालकी। निसंदेहघरनास। तातेमांनतनाहितुम। व्रथाप्रबाध प्रकार। १९।
रहिससमय मंदोदरी। रांनीकहउ षरोय। अंगदकुकी एक तुम। कहीनमांनीकोय। २०। हेसुतम
रेवानरन। पतिकहउपजीघात। अहंकारपियरावरो। मोहि नयो फलदात। २१। छंदतुअषरी।

अंतकंथतोहि धरअवितारा। नयोरामटारनसुवनारा। दियसुनियेतिनकीअसुताई। ब
तीतोहिगरनमदबाई। अमरअबिलजिनकेहैअवयव। दिवसहायदुष्टदानवदव। वैराटस
पवरननबंद उधोरा। प्रतिमासुत्रयउरपाल। सिवहमध्यांनविसाल। नवकालअकुटीविलास
वनदगविनवसनास। कचमालघनआकार। कृतघ्रांनअस्वनीकुवार। निसदिवसजास
निमिष। अरुदिसाश्रवनअसेष। वलियवनसासफ्वंन। सुवलोकअधरअपंन। कृतांतदं
तकराल। जसहासमायाजाल। दिगदेवबाकुदंन। उन्मवदलफ्वंन। प्रसुरसनवरनप्रत
क्षा। उतपतपलयसुईब। वनरोमराजविसाल। करकवनगिरकंकाल। जिहसरितहैनसजा
ल। वनउदरउदध्यविसाल। अधअंगगोउनमींन। पातालचरनप्रमांन। विधता सबुध्यविलास
उनमनहिंवंद्रप्रकास। सिवअहंकारसथांन। प्रसुपिनयहजतप्रमांन। वउरूपविसदविरा
ट। घटघटतनंततधार। यहरांमसमरूझसोय। करिकलपनाजिनकोय। बंदउअपरी। विस्व
रूपयहरांमविसंभर। वाहतदिष्टप्रसादचराचर। तिनस्रुवयरअदितहितहितोरा। मांनकुनाथ
वचनयहमोरा। गरनारमतराजगमावकु। प्रसुनजरांमअनयपदपावकु। रामहिसीय
देपायपरीजे। दिनअवासअचलमोहिदीजे। रहीबीनकुयजनककुवारी। मरिहैविरहवृथा
अनमारी। अपनेअदिनहोयजोऔसी। करियेसिधकहोतवकैसी। फूवदेहयहदवमत
गानकु। मांनुषकरेरांममतमानकु। रावनवाच। दुहा। बोलियहरावनवचन। हसहसराकस
राय। त्रियामोहिमायाप्रबल। तासेकोनवासाय। २२। कविरोवाच। करितप्रियप्रियवतकही
विषमनिसासुविहाय। अनहिबुलायोयासमय इहांआयोसुकं। नोरनएरावनअनय।
बैगोसनावनाय। २३। इतिरावनमंदोदरीसवाल। सुकदूतउधारन। अनहिबुलायोयासमय
इहांआयोसुकदूत। नीतनिउनहितनाथको। अरुसाइंसअन्नूत। २४। सुकोवाच। बंदप। कहि
पतियेमोहितुमदूतकाज। मोहिजयोपकरतवकपिसमाज। मारनहिलगेमरकटअमांन
केकाटनलागेनाककांन। तनकाटिलाटिलावतअपेट। नलननईमोहिमरकटनचेट। परउर
षअनुजलबमनप्रवीन। करिदयामोहिछिटकायदीन। कह्योतुमनोकहिकरअकाज
अनबूझेबकुस्योकहतआज। प्रसुसेतबांधधरधरपहार। आयेहैराघवउदधवार। अंग
दसोजोधाइतआय। समझायतुमहिबैठोउनिरिसाय। गढहोयरोधजोलोनगांम। सीताहि
देहप्रसुकरकुस्यांम। विसतारवैरवियहवढाय। कैअंतदेकुचटबेतआय। सबदेबैमैवा
नरसमूह। जुथहरषकरतवरवीरजूह। कैलंकसमुषचाजततलंगूल। सोसिंघनादगरज
तसमूल। सुग्रीवसेनपतजितसग्रांम। रहतनितनिरंतरनिकटराम। यहनीलअगननंद
ननिसंक। नलप्रबलसेतुकरतानियंक। आगेटउबसिरनमतआंन। सुवराजाहैअंगद
सुजांन। हनुमंतहैलजिहलंकजार। मिलअषयकवररिलबेतमार। यहपनससरनअरस
रनसूर। पौरुषउबिदमयंदसूर। कपिकहनपारकोकविकहाय। अनसंषसेनअतबलीआ
य। विस्वेसरांमविस्वहिविनास। जगजननिज्यांनकीप्रियाजास। तिनसोविरोधनहीउचततो
हि। हठकूववांनमतनासहोय। संसारअथिरयहनासमंग। नवन्नूतअंतबिनमांकसंग
पंचन्नूतप्रवर्त्तिदेहप्रमांन। अरुमिलततत्तपंचवीसआंन। मलमासअस्तपलगंधमूल। नौअंग
वारअनेकसंग। सोईदेहसहजउतपतिसंग। उनकरतबहुहिताघ्यापाप। यहहोतअविद्या

संग आप ॥ वो लिस्त वं सतु मजलमपाय ॥ इधकारलयो लंके सआय ॥ दुहा ॥ अलंकार तजि बुधय
हरांमनजकि रघुराय ॥ पावकुउर जन परमपद ॥ सुरउरवास सुनाय ॥ बंदप ॥ सुक के बचन सु
नतर ससाने ॥ उर अति क्रोध दसानन आंने ॥ रावनवाच ॥ अन बिअति मो हि देत अचागे ॥ गुर कुय
बचन प्रबोधन लागे ॥ सिष्य हुं न जगत हो सा कत ॥ ताक ह दिष्पा देत न लागत ॥ कहत अधमत
जगत नीतकथ ॥ सो क्रुनह सुन बैके समरथ ॥ उन जो कहे नीत फल पावहि ॥ दुष्ट बदन कि
रकुन दिषावहि ॥ सुकोवा ॥ प्रभु मै सब सेवा फल पाए ॥ यो कहि सुक कंपत घर आए ॥ अथ सुक उ
रबजनमकथा ॥ कविरोवा ॥ आगे कुतौ ब्रम रिष सुक यह ॥ बसत बनही बनतासु संग वह ॥ अगन
हो त्रिवेआदि जु उतम ॥ करत हो मन उचित सोइ दुपकम ॥ बज्र दुष्ट राकसयक वेषम ॥ ईहां सो ब
सत निकट सुक आश्रम ॥ पापी असुर द्रोह हुउ जततपर ॥ निस दिन ताक तघात निरंतर ॥ यहां अग
स्तरिष सुकके आए ॥ पूजस विध आश्रम पधराए ॥ सुक भौजन हितनूत रिषिसुर ॥ आउन गयो त
बैयह नीतर ॥ करि अधस्त को रूप सु आसुर ॥ कह्यो सुक हि बीनती सुन दुजवर ॥ वप्ताइथोवा ॥ बा
गामष भोजन मम ईछ्या ॥ कहुक काल भए एक रत व्रतिछ्या ॥ कविरोवा ॥ सुक अप कर हि रूपतिह
राकस ॥ तहां सुक त्रिया साक दीनौ तस ॥ नांत नांत भोजन मन भाए ॥ मिनुषा मष तिह मध बनाऐ ॥
इह कर औपाक असुर यह आयो ॥ बामन यहां अगस्त बुलायो ॥ बकुत तुगत यह मै बैठारे ॥ उं
न लै अयधरे पनवारि ॥ लै सुक आप परूसन लागे ॥ परम विचित्र अन्न रस पागे ॥ आमष नरता मह
लै आऐ ॥ अंग प्रतिष्ट दिष्ट मुनि आए ॥ अगस्तोवा ॥ भवमे धर नरमास अभागे ॥ आन धरे भोजन मम
आगै ॥ पापी मो हि भरु स अपावन ॥ सुक तुम होऊ मनुज मा सासन ॥ सुकोवा ॥ देव मांस भष अज्ञा
दीनी ॥ बिसरे सो यह बुध नवीनी ॥ बिन पराध श्राप दियेस्वामी ॥ जगत प्रभु जतुम अंतरजांमी ॥ दयो श्रा
प किह कारन देवा ॥ मै सतभाव करी तुम सेवा ॥ कविरोव ॥ जोग ध्यांन करत बरिष जांनो ॥ मुनि सु
क कौ अपराध न मांन्यो ॥ सुक अदोष मुनि मन अनुसरियो ॥ कबुविकार दुष्ट का कुकरियो ॥ अग
स्तोवा ॥ दुज अज्ञात श्राप मै दीनौ ॥ कत अविचार अनौ चित कीनौ ॥ मेरो बचन अमोघ विचार दु
निश्चै सो भवत अनि हारक ॥ रौद्र देह राकसि को धरिकु ॥ करम सहाय दसानन करिकु ॥ रांम
जबै मानुष तन धरिहै ॥ कारन बध रावन को करिहै ॥ तिता जुग राघव अवतारा ॥ तो ला राकस दे
ह तमारा ॥ ईहां रघुवीर लंक गढ आवहि ॥ सैन रीछ वानर सम धावही ॥ जब सुक इत रांम पे जे
हो ॥ हेत बचन कंटक सम जेहो ॥ बात नीत कहि अन षवटे है ॥ दुष्ट तबै तो हि गत रदे है ॥ इह उनरां
म सरन तुम जेहो ॥ प्रभु पद परस आपपद पेहो ॥ कविरोवा ॥ आगे कुतो भव द्वा जुग ऐसो ॥ तातेमि
लो सुक हि अब तैसो ॥ इहां सुक अनषराम पह आयो ॥ सब अपनो बिरतांत सुनायो ॥ दुहा ॥ क
रिवंदन रघुनाथ कह ॥ परम प्रेम परपाय ॥ कृम जुत कीनी परिक्रमन ॥ सुषन चित्त समाय २६
उन सुक पायो आप पद ॥ धरम देह दुज धार ॥ अधम उधारन अघ हरन ॥ ऐसे रांम मुरार २७
है अनाथ के नाथ हरि ॥ पततदीन से बीत ॥ अबिलम्ब रम्बर गति अगति ॥ नरहर प्रभु की रीत
२८ इति श्री सुक इत उधारनं लंका विरोध सुग्रीव वाच ॥ कवत्त ॥ जोरि पांन कपिराज स्यां ॥ मसो वि
नियो ऐसो ॥ तव प्रताप रघुतिलक ॥ कहा रावन गढ कैसो ॥ सहत बंधु सुत त्रिया ॥ रजु बांधि यग
ल रावन ॥ गढ उथाल बल गर्ब गाल ॥ पार हि पद पावन ॥ आजानबाहु अवधेस अब ॥ रिन जय
दिछ्या लीजीये ॥ कपि जाल करत उबक लह ॥ देव सु अग पादी जीये ॥ श्रीरामवा ॥ हसि बोले

अविधेस॥ रामधरमहिरखवारि॥ तुमकारनकपिअमरअंस॥ अविनीअवितारे॥ ३६३७१॥
ज्योपरहमबंस॥ पापिष्टअपावन॥ जानउहेजुवराज॥ सवहिपवियोसमफावन॥ तिहजए
अबैनिरदोषतुम॥ कपिपतसोचनकिजीए॥ करिअनीचारवलकटकहि॥ उइकरमफलदी
जीए॥ २॥ कविरोवा॥ जईतजईतसुरसरन॥ अषिलदलखवनउवारे॥ उवेउवीरअनन्तंगकुल
हिराकसषयकारे॥ रामरूपअवतरधरिय॥ त्रिकुंटदृगबंकनिहारिय॥ वितऊलासआयासलग
सुरवैरसंहारिय॥ संकम्योसेननरहरसुकवि॥ कोलाहलजुधहरषकरि॥ आनंदअमरप
तउरउपति॥ उरहिलंकआतंकपरिय॥ १॥ छंदउषरी॥ उरगमलंकाचारदवारा॥ वज्रकपाट
थूलविसतारा॥ चारचमूचऊओरखलाए॥ अतिदलसाकहारचऊआए॥ दछिनदारआयउ
गअंगद॥ पायजिहैजुगराजविजयपद॥ दारउबेदिसनीलअबलदल॥ चालेवरनरनकरेसु
अनचल॥ २९॥ पिछमदिसहनुमत्तविजयपन॥ रामचगतवयकरराकसरनि॥ आयरामलिछ
नदिसउतर॥ चगतसहायविनासकजुवनर॥ सबदिसचऐकपीससहायक॥ कपिसमूली ह
नेमधनायक॥ सिलपरबततरनिकरसुहाऐ॥ आयुधवांनरचालउवाए॥ कुदहिगिगनकरही
कोलाहल॥ उसहसीससहियनमरकटदल॥ देतवनीदछनचोकीदसदिस॥ राषितपीछकपि
नकीराकस॥ घनदलचयोलंकगढघेरा॥ कालआयराकसकुलकेरा॥ ३०॥ ईहांरावनकृतकोप
अतसऊआयुधसमाध॥ उरगमदारनचारदिसआएअसुरअसाध॥ ३०॥ छंदउअषरी॥ इहांव
हस्तपूर्बदिसआये॥ जंत्रविवधघननालसकाए॥ दछिनघारेआयमहोदर॥ वीरविषमदलरोके
वांदर॥ ईदजीतपिछमदिसआयो॥ विकटकपाटनद्वारवतायो॥ उतरदारदसाननआयो॥ सक
किरीटदसमुकटसुहायो॥ वीरपाकसोमध्यरहोवक॥ करतसबनसिहायनिरंतक॥ कंटक
दुरंगसुरछिककीने॥ दारदारजिहआयसदीने॥ आयुधसकलसाजषलआऐ॥ सोईसोईजिह
असासमुहाए॥ छंद॥ करफसाऊआवधकुवार॥ जमफटषडगषंभाडुधार॥ सक्तीसुसांगचुरका
त्रसूल॥ मुदगरागदाहंगमसमूल॥ धनुबानविविधतोमरसधीर॥ वसचिरूपालपरिघाजुवीर॥ परसाकु
वासचुगरषांन॥ घरघाटषबलपटिसषमांन॥ हलमूसलफाहकतबलहाथ॥ मछिकावकविछु
समाथ॥ करगहेसूलचल्लाकुदाल॥ जेकपटजुधआयुधनजाल॥ अरुदेसकालपरहरअनेक॥
इत्यादगिनेकोएकएक॥ वाहनहयवारुनरथविसाल॥ षरकरचसिघचित्रकनिषाल॥ चढहेष
नमहिषरोकहिकुचीत॥ अनेकजंतुवाहनअनीत॥ वाजतनिसानचक्रघाविसाल॥ नेरीमृदं
गरवसुरनसालगोमुषावचआनकअजांन॥ उधचीसंषपटहनिदांन॥ ३१॥ कावचमेमयतेत्रको
उनपजधातधकार॥ इत्यादिकवाजेत्रअवर॥ वसकिहगिनतविचार॥ ३१॥ समहरवाजतवीरसुर
सुनसुवसहरसा॥ ऊमगतपूतलचितअति॥ नटराकसकपिचाल॥ रावनवाच॥ छंदउअषरी॥
चोपटमारचजावकुवनचर॥ षावकजहांपावकुबेचर॥ सफदलगहकुबालसिन्यासी॥ होहि
वंसबत्रिनमहहासी॥ छकाटबाहहिगेकपिपत॥ धकरवभीषनकरिहैगढपति॥ कविरोवा॥
दससीसवचनराकसउबाह॥ रोसजुतमिडेकपिदलनराह॥ रसवीरउनयदलपेजरोप॥ क
पिलरतविसाचरसमरकोप॥ पटकहिगहिराकसकपिनवेष॥ फारहिउचारदिसरांमदेष॥ द
लमरकटकोइहचितफोल॥ पिछिमदिसतूटतनहिनपोल॥ अथहनुमानअंगदगढमध्य
जुध॥ छंद भुजंगी॥ दऊओररघुनाथरावनउवाई॥ करेमारलोमारलंकालराई॥ जिरेवांनरा

रीबनि सवा रन्नागे। लरै राम रैवीर असमांन लागे। धके मुक दूटै धरारु रुधावै। परे एक उठै
महामुक्त पावै। चले जंत्र जंबूरकं गुरजेति। तहा वंचावै कूदि कपि अंगतेति। ईहा कूद हनुम
त गढ मांझ आयो। पस्यो ईंद्रजित दिष्टि धरि रोस पायो। जुरे पवन कौ पूत लंके सजायो। नयो प
बसयां मनो मनन्नायौ। महावीर जूझै सिला सारमोषै। चढे रो बढे रूव ढी वितचोषै। छंद पधरी
सिल मारतो रस्थ हय सधार। वासव जित वाहो विरथ वीर। सारथी अवर रथ लिये सजाय। ई
द्रजित ताहि आरोह आय। हनुमंत सुमास्यो लात हीय। जरजरत देह नयो चूलजी। सुरस्यागत
आंन्यो मेघनाद। दससीस देष उपज्यो विषाद। विचलंक जुर तह हनुमंत वीर। सुन आयो तहा
अंगद सधीर। सुत बाल मिल्यो मारुतहि संग। अतिबली उत्तयवा नर अनंग। उ साध वीर कपि
निरतदीय। हाहंत सद्द गढ माझ होय। पीढहि उरमस्त करो पपांन। धावहि सनी तअति जातु धां
न। परत्रास कहहि बालक उलाय। हा मात तात कहहसरनजाय। षीरोदधलंका मध्य दिषेल मद्
बलमरकट उनय मेल। एई वढे कूद रावन अवास। तहां धूंन गिरा एक लसतास। हो है जु ऐह
धुजनं रुधा हि। कैरही लंक गढ हाय हाय। मारुत अरु अंगद बल अमांन। अतिहर षकरे र
घुनाथ आंन। अवधेस जय तजय नृप अनंग। नय पस्यो सुनत रांवन हिनंग। जुध मार कपिन
बकुज्जात धांन। सुव निरत अस्तमित नयो नांन। अरवा सथं नलीने उषार। सुजकरे समर
आयुध संभार। सकुर्ंफ गिगन मग कपि सधीर। क्वि आऐ अपने साथ वीर। जागी जब मुरछा
ईंद्रजीत। अतिहरष नयो रांवन अनीत। उनि दुष्ट निसाचर निसापाय। सबहिन कौ वाढ्यो बलसु ६
नाय। अथ अंत काय अकंपन जुध वरननं। दुहा। ईहां अकंपन उरउमग। अरु अनीत अंतका
य। उगयो ऐसेन्या पती। सोग विने सिरनाय। ३३। छंद पधरी। अब अंतिकाय अकंपन आए
गह्यो जुध अरु मंगल गाए। तिन आसुर माया विसतारी। अरु घन मिली रयन अंधियारी।
औन दृष्ट कीनी अतिराकस। दारुनतम पसरे दस हूं दिस। अंध नये कपि व स अंधियारे। सूज
त नाहिन कहा संभारै। नये निरुद्ध मम रकट जाला। रुधर नदू मिल जलधन जाला। जाने रघु
पत अंतरजांमी। संकट हरन के स्वांमी। पचुत हां कर सहाय पठाए। अंगद हनूमांन कपि आ
ए। अगनबांन रघुनाथ चलायो। अंधकार तिह निषल नसायो। निसवस्य हा जु माया नासी। पा
वक जोत जोत हिगंत प्रकासी। उससह हाक हनुमंत जुरीनी। गरजन गिरे असुरी नयनीनी। रा
कस आयुध सस्त्र संभारत। मरकट तिहि परबत तर मारत। धाई लेत गहि गहि वानर बल। क
रत निसाचर समर कुलाहल। नयो कलह कपि राकस भारी। चौपट गिरै भिरत पचार पचा
री। उहां सुनट अंतकाय अकंपन। घायल नए अघाय अघायन। परे उठाय लंक पहुंचाए। अंधा
यल रावन पह आए। पनिहित मरे असुर जसपाए। उबरे सु पेउ रंग मह आए। रिन विवहार सु
नत जब रांवन। प्रजरत हियो सरोष अपावन। सुत नद्द्या मित्री नट साजन। निरनय पूछत
नयो दसानन। रावनवा। करिबो काज अबै सो उक दियै। सब लक्ष्य आपपर नवकौ सहियै। ड
सहक्वन सु निये तिह दिन दिन। रोस वढे राकस बीजत रिन। मालवांनवाच। दुहा। मालवांन अत
हितमन। बोलत वचन विचार। समत विनस यामसज। होहि अंत पहहार। ३४। हिरनाद्य देत्या
दिहव। आसुर सुर अवनीस। अगिनत मारे राम यह। सुनतु मकुद ससीस। ३५। लीनो तिह तव
अंत लग। अब मानुष अवतार। हत लागै है देव हित। नमतनतारनहार। दुहा। कविरोवा। वचन

लगेविषबांनसो। मालवांनकोमूढ। उतरदीनोफिरइहां। इहदससीसअगूढ।३७। रावनबा॰। जमहीतोहिचूलोजरउ। सोनहीकरतसंभार। इहकारनजीवतअजू। वचननीतवीसतार।३८। मालवांनबा॰। इहांगयोतबरिहउग। मालवांनदुषमांन। देषकुगेरांवनदुसह। अबजुवनीहेआंन।३९। अथइंद्रजीतजुधबरननं॥छंद पा॰। इहांबोल्यौरांवनसुतअजीत। जगजइतबिरदजिहइंद्रजीत। करियेनसोकलंकेसकीय। दलकीसकहानरजतीदीय। आकासढाहिप्रथीउथाल। करिडुअवांनरीसिष्टकाल। योकरतमंत्रपितुसुतअनंग।४०। ग्रीवनातलगेपतंग। दललगेलरनवडुवेदवार। मिलबीरहसबहसुषमारमार। सेनापतकैआयोसकोप। अतवढीवदनघननादओप। यहदिसाआयअंगदअजीत। जुधजुरेअसुरकपिसमरजीत। राकसतबबाल्योवयत्ररोष। मरकटकरपरबतकरेमोष। तिहटरेवजरथधजाटूट। छोहबलगएघननादबूट। राकसप्रजंततत्रयबांनरोप। संपातकीसउरवनैसोप। तरुदिरघमारसंपाततास। सोगिरयोबेतझोमूलसास। अंतकायअसुरआयुधउगायसोजुरेआनेसमहरसुनाय। वनचरविनीतअरुरंनवीर। धरवृहसमारकाटेसधीर। सरहनोमहोदरकपिंसुषेन। तननयोविकबलबथातेनका। सोसुषेनपरबतडरंत। तुटेरथउगनागेतुरंत। मकराछसअसुरसरजालमेल। कतजाबवंततिहसमरकेल। संग्रहिसिलायकउरसवीस। सरजालविनास्योमारसीस। जुधहनेविसिषयहांबिंद्रजीह। उरफारिसतबलीकपिअबीह। लीलोउषारद्रुमसरलवीन। दीनीसिरआसुरगयोदीन। सग्रांमघूमराकसअसंषकपिकुलमिलेरसरोसकंक। परिअगिनतसरपाथरप्रहार। खुरगिरेसमरकुवेजुफार। तहांदेवातकनवबांनतांन। आहवगवाहउरलगेआंन। वांनरतिहमारेताडचहस। परबतप्रमांनतनपरिप्रतहस। सरमुक्तअसुरसारनसरोष। सोलगेरिषनउरषांनसोष। हबहतककरेतिहअसुरवीर। सग्रांमकीसगरज्योसधीर। रावनसुतनसरागजारूढ। अतिकोपअसुरआयोअमूढ। हततोमरकीनोसरनहेल। षेवरतिहमारेविरछषेल। समजुरेनिरतककपिनसारहवकरेदकुनसरतरप्रहार। अरिसमरअकंपनिकुंनआंन। परिमारउनयमुष्टासुपांनधुमरछाकेसरीमिलेधाय। उहबांनमारइहगिरउगाय। सुकआसुरकीनोसराजाल। तिहवलीवेगतरतोरताल। आसुरनरकांतकजुरेआय। कपितपनसरनतिहवेधकाय। नलहन्योसघापटनिसाचार। धरगिरेसमरदरूवेजोधार। नागांतकआसुररिननिहार। मरकटमयंदसौलल्योमार। दुस्साधनिसाचरसारदूल। कपिदुबिंदमिलेसंग्रामकूल। राकसनिकुंनवानरजोनील। समसकतजुरेसग्रामसील। सजिकैप्रहस्तआयोसधीर। गजगवाषिगरजमरकटगदीर। उहओरसुरांतकअसुरआय। इनरांमदुरीमुषलगेदाय। जाबालवीरहनुमंतजोध। करयापहनेमुहअसुरक्रोध। उतवीरपाकनिसचरअनंग। सौमित्रहन्योरिनबांनसंग। संतापनअरुघनक्रोधसूर। मक्रोधनकतपनसकसमूर। चढिषेतअसुरऐउष्टचार। मुहचढेलएसोउरामभार। परबततरुआवधघावपूर। सग्रामअसंष्पागिरेसूर। गिनकरेकवनदरूसेनज्ञांन। पतिहेतदएजिहसमरप्रांन। बपतुटतबुटेआतमसबंध। कलहयहउनयउठेकबंध। पलश्रोनपंककरदमअपार। धसचलेसरतमिलरुधरधार। पलचारनत्रिआहारचाय। सबनयेनबीपंषीसुनाय। जोगनीपत्रसररनजाल। कोलहनपारजयजयकपा

ल।रुकनीनयांनकदरनाक। हरनारदकौतुकवीरहाक।अथमेघनादजुधनागपासबंध
ना।दुहा।।मेघनादअतिक्रोधमन।सकुआयौसग्रांम।मारपञ्चारतमरकटन।रनहीप्रचारत
रांम।४०।षेचरगढोषितमह।रुवरजतरिसहीय।चितवतजादिसकुटलचितक।पिनवकार
कोय।४१।अतिसरोषहनुमतइहां।आयोअदअमार।सोमारयोघननादसिर।नागपोनहिनसमार
४२।छंद५।तिहवो रतुटेरथहयसमेत।चलनयोविरथतजगयोचेत।इदइदजीतचढिदीअका
स।तबहीअदिष्टनैउष्टतास।आवैनदिष्टमायाअगाध।वहअसुरसबनमारैअसाध।करस
स्त्रअस्त्रवाहैअनेक।अवधेसुरकाटेएकएक।दुरवादकदैनहीलगेदाव।उहकरेउष्टषल
बुधउपाव।विस्तारअसुरमायाविकार।अतिनइश्रोणविरषाअगार।मलमुत्रअसितकउपल
मार।नइरष्टपांसुउयाअपार।इहसमयमिलौननअंधकार।१सरयौदिगंततमलदिनपार
तिहनएनालकपिअतसनीत।सबकहतत्राहिपांनेससीत।तिजमयबांनरघुनाथतांन।जा
तुल्यसमौष्यौसमयजांन।तममायानइविनासतास।उथीउसिधजयौरिवउकास।विधदऐव
सनकैरिउविनास।१हिलेदसकंधहिनागपास।श्रीरांमचंद्रलछमनसमेत।षललदेबाध
अहिपासषेत।ब्रलाउन्नावरघुनाथवीर।सोपासनहिनकाटेसधीर।रिनगिरेसमुरछितअ
विधराव।प्रनुकरेयहांमांनुषउनाव।दुषनयेसनयकपिनालदेष।षेचरनहरषवाद्योअसे
ष।दससिरपहआयोमेघनाद।ब्रतांतसुनायोसुरविषाद।रावनवा।पापिष्टकयोतबसमय
पाय।ज्यानकीदिषावकुकंथजाय।कविरोवा।रथारुढतबराकसन।कीनीजनककुवार।रा
मदिषाएरिनअजिर।पौढेपायपसार।४३।सीतावाचछपै।मनहिदेषमैथली।इहांअतिसोचउ
पजियै।कालचालयहकठिन।मनुजसुरज्यायनमंजिय।पायसरपतेउगट।नांमतिनकोनि
सतारन।नवसागरबूडतअनीतधरबांहउधारन।नवउब्रजअहिनवतव्रता।कवन
तासअपवसकरन।सोउरांमबंधेअहिपाससौं।राजतसोएसेफरिन।१।जांनसमयज्यांनकी
नियतसुरकाजनिहारिय।परमनगतअतबलप्रवंड।इहांगरुडसंचारिय।गरुतमांन
आगम।जबकुपंषारवबजीय।नमगपासगएनाज।विषमभायासुवितछिय।रघुना
थउवेसानुजरिनहि।सुरनउहपवरषेसमय।हियपरेधाहइरुसुनतही।नयोतहारांव
नसनय।२।कविरोवाचछंदउअपरी।वनअसोकआनीवेदेही।सिवरततहांहारांमसनेही
।धुम्राछ्यअकंपनजुध।उहांधुम्राछअकपनआए।इहदिसअंगदमारुतधाए।नयोसग्रां
मपरसपरचारी।नटतेइगिरतसंचारसंचारी।परेषेतधुम्राछअकंपन।रोषहियेपरजरे
सुरावन।दुहा।अनकंपनधुम्राछरिन।परेजुझजसपाय।इदजीतरावनइहां।सोचन
वितसमाय।४४।ईहांरावनअतहीअनष।वीरबनाजुवनाय।सुतभ्राताम्ंत्रीसुभट।अगि
नतबैपददूरनपायौ।४५।छंदउअपरी।महोदरनीतप्रबोध।ईहविचमित्रीमहोदरआयौ।उहउ
धांनपददूरनपायौ।रावनवा।समयपायबोल्यौलंकेसुर।मौनसाधक्योरहेमहोदर।हितव
कतातुमसदाहमारे।सबैकाजबलबुधसुधारे।कहीयेइहांउवतसोकारन।रिउलागेराक
सबीजतरिन।महोदरवा।देकरजोरकहतमहोदर।प्रहूतुमचतुरसुबुधनीतपर।पेहि
तअहितजनपहिचांनत।जांनतकरतकिधूअनजानत।समकहमझयानैचुपसांधी
आजहूबईहमंत्रउपाधी।जोहितकहतसोअनहितजांनत।मनमहितारिउष्टकरिमांन

त। आजउबतुमतिहआयो। विहतप्रबोधजुसुककवतायो। सुनियेनाथकरुअबसोइ।।
हवतजिसुनरूबिनकथिरहोई।।दुहा।। जुवपतिप्यारप्रकारके। मंत्रीच्यारप्रमांन। मंत्र
जुच्यारप्रकारनिज। प्रगटसुलोकउरान।४६।नृपनीतअंगवरनं।छंदपा। नृपसुनरूनी
तनिधांन। परसिधनीतप्रमांन। महिजयोवेनमहीस। उहआपमानियईसपदयहेलोकपा
यपरलोकनीतनसाय। उवनृपतजऐहस्वंद। अतिबलीवध्योइंद। उहसतसाधोएक
रूतकरेउरधअनेक। सोइहलोकसतउपाय। साईवजोतिसमाय। जवत्रतियराजविदे
ह। उषइहांसहितपदेह। परलोकतिहसुषपाय। सबजयेदेवसहाय। इक्षाककुलइकअं
क। सौजयौऽनृपत्रसंक। यहलोककरिअनरथ। उहलोकसरजनअरथ। सोउजयलोक
नसाय। ह्रौधरमकीतगमाय।अथमिंत्रीअंगदवरनं।दुहा। इकमिंत्रीनिजस्वारथी। ईक
प्रनुस्वारथप्रीत। ईकदोऊसाधकअरथ। इकदऊहतकअनीत।४७।छंदउधोर। इकज
तोमित्रीअसाध। बऊकेप्रनुहितबाध। तिहनांमसुरथसुतंत्र। मनआपप्रनुमिलमंत्र। दिये
निषलसुनटनिकार। सबहसोराजसंमार। प्रजुकाजहतियप्रमांन। निजकाजनासनिदां
न। हवसहीलोचनहांन। जोसुकबलहितजांन। कपित्रतियहनुमतकीन। प्रनुआपका
जप्रवीन। सुनदरसकतरघुदेव। सुग्रीवलायोसेव। तवउत्रमित्रीएतेष। कृतउजयअहि
तअसेष। समतुमहिनिजकुलनास। प्रनुकरतबुध्यप्रकास।दुहा। काजसुमित्रीच्यारकहि
जथ्याकरमगुनजोग। अबसुनियेएकांनदे। प्रनुनृपमंत्रप्रियोग।।मंत्रप्रबोध।। विषदाडमक
नसेविहत। गुडसेनीबगिनाय। कविनमंत्रयहच्यारकहि। स्वादगुननसमझाय।४८।छंदउधो
र। विषस्वादगुनउसाध। वउनासउतपतबाध। अतस्वादकरकसअंत। दारमीबीजउरंत
सुषस्वादगुनमिलसंग। वियमंत्रगुडजुप्रसंग। कटुस्वादगुनहितकाय। सबनीबमित्रसुना
य।दुहा। राजामिंत्रीमंत्रसब। जथ्याकहेगुनजांन। देवनकबुतुमतेउस्यो। निरनयनीतनिदान
४९।रावनवाच।छंदउधरी। राजमित्रीमंत्र। रीतहमसुनीमहोदर। तदपिमनोरथनहि। नीतय
हरहतनिरंतर। रामसमारिनषेत। ईदआसनतैटारो। वासवउरकरवास। अमरजडमूल
उषारो। जबसुनीप्रतंज्ञाइदजित। यहकीनौरावनअफर। सानंधबंधसफसारसब। उनअ
योरनषेतपर।१।अथइंदजीतजुधवरननंमारुतइमृतलायकपिजिवावनं।छंददेअषरी।।
ईतअंगदमारुतकपआगम। कुंमदनीलनलसरसक्रोधकम। तारुकेसरीउबिदमयंद
तहां। जामवंतदधमुषआएजहां। एतेजुध्यपजुध्यसुआए। सजगिरतरसिलजिरतसवा
ए। समहरआयुधअसुरसनारत। मारमारउचरतअरुमारत। विषमजुधजयोराकसवां
नर। श्रोनपंककर्दममविसमहर। घायनजुघउछादजिरतघन। रोषसियाजारतराकस
रिन। अंसवतुर्थरहेरिनआसुर। उपजिसोवजबईदजीतउर। तिहराकसमायाविस्तारी
मेघनादगयोगिगनमंझारी। नजसोउजयोअदिष्टनिसाचर। हमअस्त्रसोईमारेवांनरक
पिंनमाररराकसह्रोलंका। सोसुनमिटीपितातरसंका। ईहांकपिगिरेषेतअविलोके। सानु
जरघुवरजयेससोके।श्रीरामवाच।छंदपध। रिषनाचलषीरसमंदतीर। वसतओषधीय
मृतवीर। अविधेसदइअज्ञाअनंत। सोलावबेगहनुमंतसंत।कविरोवा। हनुमंतओषधी
आंनहाय। सबमरसुकजिवाएसुमटसाथ। उमतहांमेलआयोप्रमांन। मारुतसोओषद

बिन कमांन। दुहा। जेक पियमत जोग्पतै। मरैत वैसंग्रांम। सिंघनाद गरजत सबै। सुषन्ना पत
जयरांम। ५०। पस्यो जु विभ्रम लंकपति। वाढ्यौ चित विरांम। जे अब मारे इंद्रजित। सो गहै संग्रांम
५१। रावनवा। जप तजु मंत्र संजीवनी। सुक्र उन कु साहाय। मरकट जीए जु रिन मुवै। इह धौ
क वन उपाय। ५२। कविरोवा। ईद्रजीत गढ मा कयह। मेल्यौ सहित समाज। सज्ज आयो संग्रांम सि
र रावन राकसराज। ५३। अथ प्रहस्त जुध छंद उधोर। इह ओर रांम अनंग। सक्रिया लक पिंद
ल संग। उह ओर प्रहस्त असंक। कपि नील मिल सम कंक। रिन नील मुष्टी मार। प्रहस्त षेत प
बार। रावन जुधागमनं। ईह गिरत मनुअ कुलाय। अति कोप रावन आय। रिन षड्यो राकसराज
सक्र पुत्र बंधु समाज। श्रीरामवाच। सक्र चाप रांम नरेस। सम ह्वै तिह लंकेस। अके कौन क वन जो
आय। ते कहु वीर वताय। कविरोवाच। दुहा। कंटक सुत बंधु न तिके। गुन बल विक्रम गिनाय
कहत वभीषन विधि विवर। सुनत रांम मुसकाय। ५४। छंद उधोर। वभीष। रथ वाघ वा घ्वन केत
त्रय सुल रोष सचेत। तिह अति कुबेर संताय। अतकाय यह रिन आय। रथ कन्क ध्रु जमिल
मोर। जए अमर समर सजोर। सो ईस्यो मकार्तक साल। करधरि सक्ती कराल। इह महोदर रथ
रधीर। वन वृकोदर को वीर। क्रत रथ हि अर्कप्रकास। जिह केत अद्रि रथ न्यास। दीए देव अ
तकउ ष्ट प्रतिअंग पा पसउ ष्ट। तन दिरघ हंसन केत। कर वग्गा षल थित वेत। सो उ समर विंन
त सूर। कुल असुर कर्म करूर। व सजिह सुरासुर वांम। लई बीन जिह संग्रांम। षर सुवन ईह म
कराक्ष। संसार पौरुष साक्ष। अथ रावन प्रथम जुध वर्ननं। वसौ वनकं किंनवाज। रथ जुग्त न
गमनि राज। सिर छत्र माल सुसोह। उह दुष्ट गरजन अरोह। नई लोक कंटक त्रास। ईह कर मन जग्त
उदास। यह आय रांवन आप। त्रयलोक प्रगट प्रताप। जुध कपिं न राकस जोर। अति नार परि दुउ
और। अप आय सन मुष आय। घन घाय घाय अघाय। सिर दू हियत कटि संध। फटि तवर अं
त्रा कंध। मरकट न गिरत रमार। सो ऊन यौ असुर संघार। रिन जुटै रावन रांम। मन दकुन ज
य संग्रांम। निसवार सर संघान। हिय मुष्ठि हन हनुमांन। मुरछाय मुष्टा मार। सो उछल रिन
संन्नार। उन चेतना नई शांन। उछल छ्रौ वल असमांन। दुहा सोरठा। सर मूके अवधेस। काटे मुकट किरी
ट कर। लजित नयो लंकेस। विसपै गौ गढ मां कथल। ५५। रावनवाच। बपै। ईहां रावन यह आय। कुंसे
मंत्र प्रकासिय। राकसरन संघार। सब लग ढेस न्यासि। मेघनादवाच। बली बोल बिर दैत। ईद्र जेता
उमंगे तर। मारि रिछ मरिक टन। समर निरसे षक रूसुर। करियैन सोच लंके सकबु। कहि न जु
पहऐ तीसरो। षप्पी व सिधपौरुष व बल। प्रगट नांम मम परहरो। १। अथ मेघनाद युध जोनाव ल
आगमनं। कविरोवाच। पिता चरन वंदन स प्रेम। करि जोर जोर किय। ईद्रजीत उ व चल्यौ। सबल दल रा
कसस ज्रिय। सिंघ केत जेता सुरेस। पौरुष पदपायो। महारथी साहंस अमान। अन संक तिआयो।
सोक लौव नीहन रामसो। सावधान रहीये समर। परम सपरम वूरन वूरष। सक्र कुनाथ को दंन
सर। १। छंद पध। कर सस्त्र समर विरुत सक्रुध। जा जु ह्वि करत नौक प्रट जुध। कै दिष्ट कब कुअन
दिष्ट होय। कृत चिरत कपट देषैन कोय। जामवंतोवा। वाक है जु बकारे जामवंत। दिढ चरन हो
ऊ ममव ढ कुदंत। मेघनादवा। निक गरजन बोल तब मेघनाद। विनसम तासो कैसो विषाद। तोहि
जरव जांन बाकत कु जीव। उपज राजु मास्यो दै दईव। अब जाओ हम पै जुध जांन। पग मांक सुदि
ट करर हकु धांन। कविरोवा। तब असुर को पवा चौत मर्म। मिल रीछ अ वलीनौ समूल। ताहीत्रस

लफिरहन्यौतासि॥ पगपकरिन्नूमपटक्यौधकास॥ मुरछागतराकसघेतमांहि॥ होवरश्रावतिहम
स्यौनाहि॥ कालंतरमुरछागइकरूर॥ सोइउठ्योन्रिरतसग्रांमसूर॥ ७४॥ ~~विषमवीरघातनी~~ समरकनी
घनसंत्र॥ दुसहघननादजुदेष्यौ॥ जदपित्तुसुधजांन॥ वयरषलउसहविसेष्यौ॥ विषमवीरघातनी॥ सक्ति
अनमोघसंभारिय॥ यहजुदेषलिछमनअनंग॥ चितधरमविचारियि॥ करिअजयपाहिलंकेसकहि
रांमभ्रतंज्ञाक्यौटरै॥ उरलगेवजीषनसक्तइह॥ राकसतोनिहचैमरै॥ ७५॥ दुहा॥ जांनवजीषनकोजतनस
रनागतिहसधीर॥ वीरघातनीसक्तकै॥ क्रिनएलछमनवीर॥ ७६॥ इंद्रजीतवाच॥ कवत॥ नटमरकट
नयनीत॥ नालनयनीसुनाजत॥ इनकेममसायकसतेज॥ लागतमनलाजत॥ रिनसुरेसइनकुम
विषमबकुवारविदारियि॥ जहासुरासुरजुध॥ करमतहांजयजयकारियि॥ सुदिहांमततोउजेजु
मन॥ रांममिलेजोआयरन॥ धतनटधसिधमहिमाप्रबल॥ नांहिनहमतुमसोलषन॥ १॥ रिनविचार
सेषावतार॥ अरिवीचजुआयौ॥ मनुपरबतधतमाधमांन॥ दरूसेनदिषायौ॥ सोईअमोघअसुरअ
साध्य॥ इहांसकतवलाई॥ लषनवीरउरलगउ॥ दुसहदरूघांदरसाई॥ नरन्नावजरेषियतसुर
नरन॥ हायहायत्रकुलोककुव॥ रघुनाथविलोक्यौवीररिन॥ न्नाईसोयौसमरस्तुव॥ १॥ यहांअवेत
सेषावतार॥ लगेबलीसबलेकुलोथ॥ इहवचनउचारियि॥ इंद्रजीतलेआद॥ असुरबलबुधउपाई
लोथनहत॥ उतवलीय॥ सबैतजिगएधिसाई॥ हनुमंतलषनधरजायहिय॥ रांमअगलेरषीयौ॥
बलंकअपिलवापकविसन॥ देवसोकईहदषियै॥ इंद्रजीतवाच॥ दुहा॥ सक्तजीतलंकेससो॥ वि
जयसुनाईवात॥ सक्तहनीलछमनसमर॥ तुमसुषमांनकुतात॥ ७७॥ अथश्रीरांमविलोपात॥ छपै॥
हालछमनप्रियप्रांन॥ नइनममजुलानिरंतर॥ भ्रातमित्रमित्रीअनीत॥ सेवकनटसमहर॥ कवनक
वनगुनकरम॥ जन्नूतववहुनजाई॥ सदारहोसुषसंग॥ समयसमविषमसहाइ॥ संसारसुन्मला
गतसकल॥ मोहिनककुवहरातमन॥ सोमित्रनसोवनयहसमय॥ लागकंवबोलकुलषन॥ १॥
षगटविलापप्रलाप॥ करतनवन्हतन्नमावत॥ नरलीलाअनुसरत॥ दुसहदुषसोकदिषावत॥
अधरसुकआकंप॥ महानिस्वासनसोवित॥ म्रूरजदपीसग्रांम॥ सन्नयमनहीमनसोवत॥ रो
दतविषादहाहारवन॥ नीरधारदृषतनइन॥ वरवीररांमलिछमनविरह॥ विषमदसाकुरतनव
इन॥ १॥ हामवेसकहानयौ॥ हितमोहिजीवननांही॥ कहाकरूकितजाहू॥ धांनअविलंबनपांही
कृतकारनसोईकरन॥ आदिसोइपरआधीनो॥ वजीषनबाउरो॥ काहिलंकेसुरकीनो॥ आरं
नअवरकछुअवरनो॥ प्रथीकालमहिमाप्रबल॥ ममरहेमनोरथमांकमन॥ षितहूरेहस
कंधषल॥ १॥ अरकबिंबअथियौ॥ नयोतमविषमचककजुव॥ विछुरचक्कचकवी॥ हेतमुदित
सरोजकुव॥ षलकुछियपेचार॥ वारनिधकुमहिविकासिय॥ मिलषलवरवसमांस॥ हरषजुग
नंकरहासिय॥ अतित्रासनजुयपजुयउर॥ हियविषादसुरगजकुव॥ कुपिरहेअसुरकपिवी
ररिन॥ नईनिसासग्रांमजुव॥ १॥ श्रीरामवाच॥ जामवंतकपिराज॥ समयउद्यमचितकुसब
ईहांजोइकारनउचित॥ अपलमिलमंत्रकरकुअब॥ समुषवजीषनसला॥ सुग्रीवबेकुनात
समक्रियय॥ देसकालगुनदेकु॥ सकलविधतुमकुसुक्रिय॥ उवस्योवजीषनतिनदीयह॥ जानेसे
नसचितजब॥ हैमहावेदगढलंकमह॥ आनकुलसपलसअब॥ १॥ श्रीरामवाच॥ दुहा॥ उवस्योरां
मविषादउर॥ सुनकुपरमहितसंत॥ तुमकरआवहिवैद्यते॥ महावीरहनूमंत॥ ७८॥ कविरोवाच॥
अज्ञाअवधनरेसकी॥ मानसीसहनुमान॥ धस्योलंकलघुदेहधर॥ विहतबुधवलवान॥ ७९॥ पाएेतु

सपतुसतहा। सोवतमिंदरमाहि। कोलाहलकेसंकतै। नहिनजगाएजाहि। ५९। सोमारुतमि
दरसहित। बैवजगएवीर। आनधसौउववकाययहां। जहांरामरघुधीर। ६०। छंद पा। इहसमयववमी
षननिकटआय। बाहिरविसासलीनेबुलाय। वमीषनवाचवैत। जपतै। करियेविचारउपचारकोय
हियबाझिकंपअरुसधरहोय। परजागनितुमइथकारपाय। सबजंतहमारेहितुसुनाय। तुसपत्
सवा। इहतुसपतुसजुनिकटआय। विधदहवमीषनकहवताय। द्रोणाचलपरबतदिरघदेह। है
बीरोदधतटनिसंदेह। ओषधीसजीवनगुनअमोघ। वहआयनिरतरउपजओघ। संजीवन
आयेकाजसिध। परभातजयेविनरिवसिध। अबकरहुवमीषनजतनएह। उपटरेरामसुषनिसं
देह। वमीषनवा। सविसेषवमीषनसुनसुनाय। अविधिसअयसोइकसोआय। ओषधीदिवआवै
अनंत। तिहबुवतलषनउठेतुरंत। श्रीरामवाचउहा। अज्ञादीनीरामयह। सुनहुवीरसबकोय।
असमालीकेविनउदित। आनहुमूलीसोय। ६१। यहातेद्रोणाचलअविन। जोजनअंतरजान।
सावलाषतुरगमसनय। परबतवरनप्रमांन। ६२। रांमबचनसुनहुनेटसब। बोलेसमयविचार।
अपनौअपनौबलजवत। सोईसोईकहतसंभार। ६३। नलतेरातआवनगवन। द्विविदमयंदनिस
दोय। नीलकपिंसुरएकनिस। हवजुतआवनहोय। ६४। आवनगवननजोआपनो। जांमवारप
रजंत। अंगदविक्रमसमजउर। बोल तहांबलवंत। ६५। सबहिनकोबलवेगसुन। मारुतबलअप
मांन। समयदेषकहिरामसो। प्रनुअज्ञासुवमान। ६६। हनूमांनवाच। छपै। अबनसौवअवधेसक
रहुममरहतजुकिकर। पेवअगमपाताल। ईमतआंनबिनअंतर। निसानाथयनपीड। सुधालिब
मनमुषमेलू। तवप्रतापरघुतिलक। बेलजुजबजयहबेलू। दिनमनमोहिआयेविनदरस। देवद
इतकाकुनहरो। कहिमारुतौबादसअरक। करनमिंजचूरनकरो। १। श्रीरामहनूमानप्रतवाचछंद
पा। इहसुनतरामकीनोउछाह। जसरातजनमहनूमांनजाय। सुनकाजजोपजेतुमहिसंत। मूली
लेआवहुहनुमंत। हनूमानवा। कीनौप्रमांनप्रमांनप्रनुवचनकाज। जयजयतरांमराजाधराज। मि
लवेदनबूजेहनूमंत। तिहमूलीकहियेविकृतंत। तुसमतुसवाच। तववैद्यवताएविकृतासप्रत
पत्रपदीपकप्रकास। कविरोवाचदुहा। पवनउत्रतहांबांधपन। उच्यौगिगनमगआप। तरधायोअवधेस
कोप्रगटसरूपप्रताप। ६७। सोकविरोवा। सोसुनमंत्रहतनसुनाय। धरिचितसुलंकागएधाय। दूतवा
उतनरांवनसोकहिनिदांन। मूलीकौपठियोहनूमांन। कविरोवाचदुहा। सुनौजरांवनदूतसोमंत्रय
देउपमूल। करमीजतअतिक्रोधकरि। सहिनजातउरसूल। ६८। एकदेसबलबुधअति। नेमकाल
तिहनाम। वाकेग्रेहजुनिसअरध। धेषचितआयोधाम। ६९। कालनेमदसकंधकहि। उवतहांसनमु
षआय। करवंदनजुगजोरकर। तेनदूबेपरपाय। ७०। कालनेमवा। एकाकीप्रनुआगमन। कोबअ
रधनिसकीन। रूलघूकिकरराव री। अरुअज्ञाआधीन। ७१। रावनवाचछंदपा। सुनकालनेममनोहिउ
पजसोच। उनदेहुनउतरकेरपोच। हनुमंतजातओषधीहेत। वानरअसंकबहुरिनवीजेत। करि
येनिषेदओषधीकाज। इहकारनतुमहीसरैआज। कवितछपै। इदजीतसक्तीअमोघ। लछमनउ
रलगिय। नौअचेतरिनभूम। ताहिगएधानसुतगिय। महासंजीवनमूली। गोपउतसद्रोणागिर
अमरनरनअज्ञात। रहततिहवीरनिरंतर। ताहेतजातहनुमततहां। करिकुविघ्नबलबुधकर। आ
वेनप्रथमजोरिवउदय। सत्रुकाजतौनहिनसर। १। कालनेमवा। कालनेमकरजोरकयोसुनहूं
लंकेसुर। आवुंनतुमईदजीत। वीरसबकुतेमित्रीवर। विदमांनहनुमांन। उनीलंकापरजारिये

जाहि ताहि सिसु बिया। नयो कोलाहल नारिय कवन कृत्यास विग्रह करन। हेलमात्र सो हिमा
रहै। सुर असुर नाग जिह न हि तुसम। हव तिह को न निवार है। १। अब मम उदध कूं कियो। निष
लतु वधांम निहारो। मारि अछय कुमार वन सुबद विगारो। उरग मलंका दह्यो। उ स्स हतु मस
बहिन देष्यौ। ब्रह्मपास वस परयो। बंध्यो तेउ सबन बिसेष्यो। हनुमंत इत औ जाको जु हवी। रावन
चित विचारियै। भुज बल त्रलोक जाके अनय। विग्रह तायन वधारियै। १। रावन वाच। दुहा। तांहि
कलौ लंके सत बमहा क्रोध उरमेल। आज हम हि तुम गुर नये करत काज सो केल ७२। कालने
म। दरू घां आयो मरन दिन। सो औ असुर सबांहि। याके करि मरिबो अगत। उहां मरन गत आ
हि ७३। कविरोवाच। छपै। कालनेम तिह काल। विविध माया विसतारिय। परबत है मालयसमीप
सुषथांन सवारिय। तहां वनाय मुनि वेष। आप बैठे तप आस्रम। सिष अनेक तिह संग करत वि
वहार कपट क्रम। हनूमंत आय अज्ञात यह। कर जोरे वंदन करिय। सिध होऊं वीर वंछित सकल
भुज सरूप आसीस दिय। १। कपटी वाच। बल राकस उठियो। कवन तुम काज जात कित। सूरवीर
लहिन सथांम हैगि स्यो सकत हत। सलप विसल्या मूलि। आहि द्रोणागिर उपर। अन न्यास करउद
य मो दिलेजै बौ मुनिवर। अति वढी त्रषा हनुमंत इहां। करविसासल गोक हन। निरफर निवान
करू जनिकट। विप्रवता वकु वेग वन। १। कपटीवा। कपट विप्र वह कह्यो। कपि जु इह न स्यो कमंम
ल। करियै पांन निसंक। जतन जुत है सीतल जल। महावीर हनुमंत। आप फिर वचन उचारिय। अ
लपनीर तिस इधक। विषम नदी घटत विचारिय। सो इसु बषद वताव कुसर सरत। कर मंजन जलपां
न कर। सुन्न कथा सुन हि मुनिराज सुष। बेग ईहां आवहि बकुर। १। कविरोवाच। दुहा। संग दयो इ
पकरैया क कपट सिष। आयो वार वताय। सरवर तिह मारुत धस्यो। मकरी पाय ७३। तव काढी गदि नीर ते
वारवरी बलवंत। मारुत उर जन पत्र ज्यो। विन कीनी सत षंड ७४ तिह पायो पंचतत्व तिह दिव्यल
ही उन देह। चाल तस्वर्ग विवांन चढ। उवरी मुषते एह ७५। मकडीवाच। इह लोक की अपछरा ध
न्यामाली नांव। रिष्हि सराप न इराकसी वह रानी ईहि गाव ७६ कीनो मकरी रूप कर। तव बाधक नै
तंत। अब पद पायो आपनो। तो प्रसाद हनुमंत ७७ कालनेम है दैत्य यह। जिह आश्रम तुम जात
प वियो लंके सुर पत न। विघ्न काज विष्यात ७८ ताको न्हल विस्वास तुम। मत करियै हनुमांन
याहि मारि ले औषधी। प्रभु नुक्त करि कृपमांन ७९ इह लोक गई अपछरा। दे कपि कह उपदेस
आयो मारुत फिर ईहां। मिलत तिह कपट मुनेस ८०। कपटीवाच। छंद प। करि माया बोल्यो कपटका
र विश्राम बिन कक रियै विचार। गुरमंत्र प्रसाद हि अबल ज्ञांन। मो हि न्रूतन वदसत वर्तमांन
कूं हि वदे हदे षत दिगंत। तहां लषमन उहां उग्यो तुरंत। लान है संजीवन मंत्र लेह। द छिना मो
कविरोवा। हि गुर जांन देह। यो कहत मात्र सिर था पमार। सब लेकु दद्दि नाउ रसंन्हार। मार्यो कपि यां पटफ
टे मुन। तब लगि जाय धर असुर तुन। मुष वहत रूधर धारा अमांन। पापिष्ट दइत तत हां दए प्रांन। मु
षक ह्यो मरत तिह रांम नांम। धर देह दिव्य इरी दिव्य धांम। कवत। कालनेम को मार। सबल लंके स
सहायक। कालदंड तिह नांम। देत देवन दुषदाइक। वहद्रोणागिर आय। असुर माया उपरजीय
तरु सलिप पत्र पत्र। समदीप संजीइय। मिलन्नौ प्रकास गुच्छ क्रम है। मांन कृ परबत अनमय
स्व दुष्ट कपट माया रहित। नाज सु अंतरधांन नय। १। अथ सुमित्रा स्वप्न प्रसंग वरननं छंद पध।
सुष सदन सुमित्रा करत सेन। इह सु पदेष उपज्यो अचेन। सम लतां मनु तुलग्यो माय अकुलाय

असुनलषतगीआप। सोसुनअर्धनिसपैसुनाय। इहकस्योकुसत्यासअयआय। बोलेबसिष्ट
तहांगुरविचार। सोउसुत्तसुनाएसमाचार। भुजकहसांईतहितहोमदांन। विप्रजद्दीकरनवेद
नविधांन। ईहबेदहोमथलनरथआय। सुतअनलकुंप्रगटेसुनाय। समथीमिलियागरअगर
संग। उद्धारवेदसाषाअनंग। सुतनारियेरनीरजम्रनाल। घनसारघ्रतपटजवप्रवाल। कृततति
लकपूरसबहोमकाज। विधजथाजुक्तसमदव्यवाज। पूरनकृतिकीनीप्रमांन। दीयेनरथउजि
नतहांउचितदांन। परबतलेआयोपवनपूत। अविलोकेद्रोणचलअनूत। आसुरीनादिमा
याअमांन। प्रतिदेषेदीपकपांनपांन। कपनयेमनकुविसमयअनेक। औषधीप्रबविकज
नएक। लीनोद्रोणगिरहाथमेल। कंडुकज्योबालककरतकेल। उचक्योकपिंद्रोणचलउगाय।
अंतिरिषगिगनमगलएआय। दीसतजुदीपमालादिगंत। सबनयेसुरासुरचकितसंत। इहनि
कटअजोध्यापुरजुआय। जान्योजुनरथकोउअसुरजाय। दससीससहायकदुष्टदेव। सर
मारयोदारूनुबविसेष। मारुतसुगिरयोकहिरांमरांम। तिहानयोअचेतसुधनहिनतांम। रघुनाथ
नांमजबसुन्योवीर। अतिनयोनरथअंतरअधीर। अकुलायदोरतिहनिकटआय। उरलाय
लयोमरकटउगाय। पुरछाजबजाझ्योहनुमंत। विधजुक्तकहेकारनब्रतंत। भरतवाच। अज्ञा
नघाततोहिनईआज। कपिकरियेअबैसुसिधकाज। ममबांनचढकुगिरलेमहंत। तरनविन
उदयपक्रमवकुंतुरंत। हनूमानवाच। उंनकहेहनूरघुवरप्रताप। विसषमोहिश्रयानाहिनविचाप।
कविरोवा। वंदयहांनरथकेचरनबीर। सोऊंफ्योपरबततलेसधीर। कवता। द्रोणगिरपत्रपत्र। सा
रंगसंजोइय। दुष्टअसुरमायाउरंतकहुचिक्रनकोइय। उदियादिसजनुअरक। उदयअ
तिजोतअभ्यासिय। नमनुलियचंग। प्रगटतबतनत्यागनतकियो। २। तदाअवधेसअनत। जी
वमारुतवतजांनित। अरकउदयज्यांअविलनिवडतमउंजनसावत। ज्योमारुतमिलजलद
मालबिनमहिविषरावत। नगवंतसुअंतरध्यावध्यम। नकुविवितनवनजियो। नहीसहतदुस
हदुषदासकौ। भुवनभुवनजयजयनयो। २। छंद प। इहमनुषभावरुघुनाथआप। विसतरविप्रा
तरोदतविलाप। यासमयअरधनिसनइअतीत। नगवंततदविमनदुषअनीत। योकरतवीरहनू
मंतआय। सोधरयोअयपरबतसुनाय। लगकपटदीपसोगएविलाय। औषधीअलीनसोरहेआय।
आलंगनकीनेरांमआंन। पुनपोरुषमारुतकृतवमांन। करिजतनवैदउपचारकीय। सोछुवतमात्र
भुलीसजीय। सोवतसलछमनउठसधीर। रिपुमारमारमुषवदनवीर। तहेषांनमनकुनरलषनला
य। रसद्दरषवद्योरघुवंसराय। इहसमयवजेदुधनअकास। सुरकाजनयोजान्योप्रकास। तिहप
स्योचितदसकंधत्रास। निहचैसुजांननिजकुलविनास। लेतसपतसनमांफलेक। समभिदरभुहचा
एससंक। दुहा। हनुमतगिरद्रोणतहां। सजीवनीसमेत। मेल्योलेछिनमात्रमहि। नगसोइअपिनिके
त। ८१। प्रातसमयनरहरप्रभु। करतधनषटंकार। सानुजजगदेक्विसमर। दिषेरांमउदार। ८२। माल
सुग्रीवादिकजुभट। वांनरवीरविरुथ। सिंघनादगरजतसकल। जयद्दितजूथपजुथ। ८३। कवत
कालनेमबधकरिय। धन्यामाल्योउधारिय। हितस्यामहनुमंतद्रोनपरबतउपारिय। अरुविसल्य
औषधीपरेरिनषेतपरसिय। लषनकालवंचियो। उसहहनुसेनदरसिय। पदवैरनकारनआ
दरस। होतनकंकनहाथके। सबकाजसिधनरहरकविकृतप्रतापरघुनाथके। ३। इतिहनुमंत
द्रोणगिरअवधारना। दुहा। कोलाहलकृतबालकपिंआनदास्वकूऔर। विषमनकूंदावलवि

षय। घरघर सुन्यो सघोर ८४। रावनबाच। कंटक सानुज राम रन स्रमपरे जरदाह। मो घन इमयद
तरू सुषे सक्क जर जाह ८५। बीरघातनी जो बिषम निरषल भ्रम इनिदांन। रावन जान्यो दिन फिरो
बिपरित होत बिधांन ८६। सोरठा॥ कुल राकस धिकार। कोपद सानन तहां करो। अैतीत बस्र अहंकार
करत जु नर बानर कलह ८७॥ अथ धुम्र निधुम्र जुध बरननं॥ छपै॥ धुम्र निधुम्र नधीर। अनषगदबादि
रस्र आए। सर तोमर असगदा। सूल षरग आयुध धाए। इह ओर परबत उपाय मारुत ले मार्यो। ईन बांन
न बिधियौ। उग्र मर जर जक र स्यो। यावीचत भयद हनुमत इक। हाक मार मुष्टन हये। पलगिरत षे
त राकस निरष। नाल की सद्दर षित भये ५। छंद ऊअपरी। असतन्ना जल लंका मह आए। समाचार रा
वन दिसु नाए। रावनबा। इहां रावन जो भाइ लकारे। राकस तुम लंका रषवारे। बिबध उसद माया बिस
तारउ। संन्यासी यह कपिन संघारउ। प्रहस्तबा। सुन प्रहस्त बोल्यो तब सूरो। पौरुष बुध पराक्रम
पूरो। बा मघवजित माया बिसतारी। नाग सुरासुर उगम निहारी। ता करु माया मरे न तापस। रिन मारिहै
तिनही को राकस। देवधारज्यो अज बल दीजै। कहो तौ जाय मरन सौ कीजे। कविरोवा। निकसय
हां प्रहस्त निसाचर बग्र मुष्ट संग अनुज सहोदर। सुन स्यार उह दिस समुदाए। एक री ब बानर
त्रय आए। जामवंत जोधा जर जीरन तार उरी मुष उबिदम यंदतन। दैनि सचार चार बनचारी। बिष
म वाद कियेवा रीवारी। उसह प्रहार प्रहस्त जु दीनै। कपि बियरी बमुर षित कीनै। ईनही गिरत क
पिराजा आए। अतुलित परबत पांन उठाए। सो परबत कस्यो उर जन सिर। समर अवेत भए दो कुनि
सचर। सन मुष बज्रक गिस्यो रिउ संघट। न्यूलौ जीव प्रहस्त महाभट। बग्र मुष्ट रिन मर्यो बिसेष्यो।
दउ दल अतुल पराक्रम देष्यो। प्रहस्त पौरष जग्त प्रमान्यो। असुर अचेत लंक मह आन्यो। प्रहस्त
गिरत उचित लंकापत। उतमंग धुन तहन तक रिस अत। ईहां रावन चतुरंग बलाए। बाजे अगिन
त बीर बजाए। सुत बंधव मित्री भट साजे। बीर असुर रिन भूम बिराजे। श्रीरामबाच॥ पूछै तबै बभीष
न रघुपत। मो दिए सबै बताव कू महामित। बभीषनबाच। नग मिन जटतक व वक सनि सचर क्रुतर
थजि हच वदंती कुंजर। षडग पानक इमेघनाद पल। बाध्यो इद्द समर जिह तुजब। पिता अयवा
हो अतिपौरष। रोषदिष्ट चितवत आउन रुष। दंउ कनक मय सीस दस। रावन ग्रीध ध्वजपद
राकस। असुर असंष्पा समद्र आये। बिबिध बिक्रत इह सबै बताये। कविरोवा। बाजे बीर धनुष टंका
र व। असुर समूह सगाजत आहव। बांनररी ब असंष महाबल। करत सयाम हरष के तुहल य
हां सुग्रीव आय रिन अंगन। रिस उफनात बकारे रावन। अतिबल की स अंसुर महा आयो। अद
तरो वर सार उगायो। नील गवाछ मयंद द्विबैनल। बीस्यार बांनर एअतबल। द तक पिराज उत अ
सुरेसुर। वीव आंन गठो नयो बानर। चार सिला तिन कपिन चलाई। उभय उभय जोजन इधकाई
रन तुव सरन मार ते बानर। काटि सिला की नीष लक नकन। ईहां उमार मुष्टीन ल आयो। अनलबां
न सोइ मार उठायो। उसह सुग्रीव अदक पिरास्यो। रावन सोद बांन बिकास्यो। इहां इक बांन चला
यो आसुर। अतिस तेज लाग्यो कपि पत उर। गिर्यो सुग्रीव घाय रिन अंगन। राकस कहि गरज्यो ज
य जय रिन। सुन्यो जबै उदस स्ट पवन सुत। उतौ अनी अवरे तहां इनमत। इहां अंगद हनुमत जु
आयो। अतिरिस महाबीर अकुलायो। षेत गिर्यो सुग्रीव हि दिष्यो। बिषम बैर अतिरास बिसेष्यो। इहां
ध्रिबाहक पीस उबायो। पकुल गले ह नमत पोह चायो। छंद उधोर। हबि फिरे उन हनुमंत। दस
सीस के बढ दंत। रिस करे रांवन राय। उहां जु जावीस उबाय। मारुत ही मुष्ट मार। सो गिर्यो तुलसं

नार करिकोपमारुतकीस समजुटेरिनदससीस धरवयरहनुमतधीक हवहमोरावनही
क परदसकुमुषनअपार धकधकतश्रोणियधार तवकबुकरावनचेत हसउग्रोपोरुषहेत
ईहांअगिरूपसुआय नटनिस्योनीलसुनाय जलबानपंकितजाल कृतदसानंनकराल
तिहनयोनीलअचेत बितपस्योकपिरिनषेत इहासुहेनवानरआय अनचेतनीलउगाय
रिनदेषरांवनरांम कियेकोपदुष्टसकांम धायोसआयुधधार ननमपत्रदूटनिहार अविधेस
क्षितबआय कुवौलषनवीरसहाय सुधपस्योदकुनटजोर अतिवाहनइरिसओर कर
सकृतजोलंकेस सबरोससारविसेस हवीरलछमनहोय सरनिकरछेदतसोय स्वारथीह
यरथसंग यहांहनेलषनअनंग सकृद्वतियरथदससीस आरोदआसुरईस विहवानची
रविधांन दक्षओरसमरसमर निधांन इतलषननरलंकेस वधदावघावविसेस इहवीचहनु
मतआय धरअग्ररथकरधाय कतमनमणसोईआकास प्रतहमोधरनप्रकास दससीसअ
तदेष क्षिगयोलंकविसेष अविधेसविजयउदार कपिनालकृतजयकार दुहा ॥ रघदुग्रो
कूह्रोजुरिन रावनराकसराय मुहलेआयोलंककमद हितुसुनआतहताय ८८ ॥ प्रहस्तवाच
घायलकृतोप्रहस्तघर विषमसुनीयवात निरनयलंकातेनिकस वीरनयो विष्यात ८९ ॥ ग
योप्रहस्तजुस्रूरगत मिलसनमुषसंग्राम जगपायोउजलसुजस मरतसंहारेराम ९० ॥ कवत
मस्योप्रहस्तसग्रांम कीतराकसकुलकिंनिय दलसमूहकमदए ऊयनकहपिषनदिनि
य हाहारवघरघरनहोय लंकानयलझौ सुनीवातलंकेस नयोउपउब्रवनझौ उबरेजुअ
सुरनिरनिरअवर नएआनएकंतजुव सग्रांमविषमनटमरनसुन हायहायरनेवासकु
व ९१ ॥ दुहा ॥ करधरपीटतसोककर रावनअतिदुषरोय कृतअपनेदूरबकरम सबनसुना
वतसोय ९२ ॥ रावनदूरबकृतप्रकासनं ॥ ब्रपेकवत ॥ दिवसईकसिवदेव कृतौरूंगयोदरस
हित परमरम्यपरबत थांनकेलाससिधथित सिवगनदेषसमूह परषदअप्रतिपावन इकनंदी
नांमागनअद्भूत आकृतकपिआनन बोलोतबनंदीगनविहस करतमोहिकबुहासक्रम वि
धस्योसंतुष्टजतोहिवर हेतिहबाहिररूपहम १ कपिआननगनकस्यो रोषजुतसुनियेराव
न पोलिस्तकुलजतपन सहजत्रयलोकसंतावन अवरअंगपसुग्रीप वदननरकैहैवानर
यहेसिष्टउतपत हरसतबकैहैदुरधर अवतरेसुयावानरअमर ब्रुधानहरसेवकक्वन
नवतयसबैअबहोकुजुव राकसकरकुअनंगरिन १ यकराजाअनरिन विरधब्रनीरिवबं
सिय तनपूरनवयताहि प्रगटजुवकीतप्रसंसीय मैअहिमतबलमांन कलहजावम्याकिवी
य उहजरजीरनअवल लसेजियओटसुलीवियै मुहनरसुपस्योदियटिलमे गरबताहि
कुलकोगयौ ईहसोतहांनिरसंककुय नूपमहालजतनयो श्रुनरनवाच अनरन्यमो
हिज्वस्यौ सुनकृधनमलंकेसुर महाबीरममवंसमाफ निजदेहधरहिनर सोतोकह
कुलबलसमेत समदरसंघारही अमरबंदकरअनय अषिलजुवनारउतारही अवित
रेरांमरिववंसरिव हवलायोदलजालहरी नहीहोतवचनमिथ्यानियत कलोबत्रीजुतकोधकरी
१ वरदीनोमोहिवह्म मैंजुलीनोमनमांने नालकीसहमनदस एजुगिननीकनआंने धनुषबांन
संधान नीलआयुधश्रेमाषे नरवराककहानियत राजमदवित्तनराषे यहरामधनुषधारी
अनय वानररीछअसंकबल करिकोपलंकघेरोकस्यो दसदिसलगेउसहदल १ वेदमती

नांमा विचित्र ईकबाल अजीनिय विवरधारत प्रविदित महासाअतरदिमो निये मेवाकोतप
बल अमांन कृतपंकन किनौ ऐ दहनरोषदहिदेह दिवीमो हिआपजु दिनौ ए अवितरीजो
गमाया सु यह सीतानांम विदेहसुत जगविदत सुजांन कुज्यांनकी हरीवसममना सहित ए
मोहि कंचनमारीच प्रथम जु कहैनी तपर कुंनवरजौ हित वित प्रमांन वनी हन बुधवनेंरीगन
अनरनन रेस ईकबाल अजीनिय नहीं नटरत निरधार अंत कैहेसो उहोनिय अनंगगवी
रजुगृझे अनय रहे कछुक अवसेष रिन मेंकरे करमसोइ मांनमन मिजसुंजोग प्रआयो मरन
१ कुंनकरन बल अकल अपन निद्रा अभ्यासिय एकछधा आराध विषम लोलप घरवासीय
अषिल सुरासुर नर अनूप किंना अनुरागिय अजकु सोवत अनय आंन सिरवनी अनागिय
पौरुष प्रसिध किह काज पुंन दिन पलटे कुनदबिये कहिकु चजगावन जतन किह रिवमें फलज
सराबिये ८ कविरोवाच छंद प॰ ईह सुनत असुरदौरे अपार पुंन करे आंन बहुते प्रकार हस्ती
पदमरदन स्वरन होय सुष सयन जद पिजागेन सोय हठ करत अंग मुंदर षहार सोल पौघुराव
नवितुं संन्नार निरन्नय बहु वाजत सासनास आसाढ मन कुगरजत अकास न्नलावाच रावन सौ
दासनक हेराज कीने अनेक हमजतन काज सोवे असंक जागेन सोय हव रहे बहुत दमक
लुनहोय पुंन तिन दिकहौ रावन प्रकास त्रियजतन वते है कहुतास त्रियाओवाच वलनाकु
न ● उढे विसेक उन कहेजगावन जतन एक निद्रा वध छुरन नइनादि जागेन तउ जो कालजा
दि अब सुन कुमर मकहि कछु उपाय जामि है श्रवन जो नाद जाय कविरोवा॰ सुन किंनर गंध्रब मि
लसमाज सुर किंन्ना नाटक करे साज वाजत विवेक सुर विवधवाज यह शृह प्रति धुनि मिलगिग
नगाज बंधान राग नाटक बिधांन गति नेद ताल संगीत ग्यांन सुंनजहो अलप निद्रा सधीर विस्म
यमन उपज्यो कुंनवीर आयौत बरावन पहअसंक उठि लगे भ्रात उरलाय अंक आपने गेरबे
ठो जु आय पूरन प्रमांन आदर जु पाय कुंनकरनोवाच ईह कुंनकरन बोल्यो असाध विन अवध
करे निद्रा जु बाध कारन लंके सुर कहा काज अनसमय जगायो मोहि आय रावनवाच सुन कहै
तबे रावन सक्रोध वांनर नर राकस वढ विरोध बनचरन केरे मिलसे तबंध सुषहीपल आएलांघ
सिंध ज्या ज्यु लिप होत त्व कुधार जुध कपिसेन लंक लागे सक्रुध सुतबंधु सुभट मिंत्री जु सूरप
रिषेत प्रबल पौरुष सहर करवाल सिन्ना सी उन्नय कंक निसचर न मारगा ढेनिसंक आसु
र अनंग जूझे अनेक यहांमरत नहीकपन्नालएक जो मरत लेतताक हजिवाय आंन तसंजी
वन गिर उवाय दुहा करिबहु जतन जु ज्यांनकी कुलायो हवहोय रिसविसार मोसो रही स
मुषन बोलत सोय ८२ जोर करे जो रोषजर जमसादन मर जाय कहि कुकुंन विचार कर
या पहकवन उपाय ८३ रांम रांम वाक हर टत जुग नर छिन छिन जात चातक ज्यो घन बूंद वित
विपत सहत विललात ८४ कुंभकर्नवा अबकर कुजु उपाय इक सुन रावन बलसाज क
रकु रूप तुम रामको करकु जथा सिधकाज ८५ जालंधर को रूप जुत विदरूथ रयो जु वेष आं
न अवांनक समय इक बुंदाबली विसेष ८६ रावनवाच छपै सुन कुकुंन मैं समक यहै उ
दम अनुसरियौ हित जु सय निहार कपट तापस तन करियो विमल वसन तरुत्वचा तरनव
नमाल स्यांम तनु जटाजूट कटि कस निषंग धरि पांन बान धनु कृत रूप अनुपम रांम को पत १
नीट स्यो न एक पन परत्रिया दरस किबापरस मिरे म्वसो न मूल मन ८७ छंद प॰ इह हेतज

गाए तुम हीं आज । करियै जु कुंभकरन सु नास काज । कुंभकरन बाच । इब्रोन मो हित उतम पथ मपोत । हव सो
वकियो अबक हा होत । जांनकी हरी उपजो जंजाल । करी यै ब कहा सो व लोकाल । अब कुजो
इबत मो हि आज । मत लो क वेद सुन माहाराज । कबत बपै । राजा अरु जुवराज । प्रगट औ हित मि
त्री पर । इन ही कुल बनइ ते । सुन कु स्रुत देलंके सुर । कांमी कुटिल कु संग । कृपन कु तर हत क कुबुधी
सो उषदायक न हीन । सब जिन वेद विरोधी । पावे न जगत सो न्नासु पे । कारन संपत नास के । सुरअ
सुर नर पिनर हर सकवि । दि नाज न उपहास के । ९० । छंद दैअदरी । कामी वाम कुटल कुलद्रोही
कोढी कुप रुबह ठीअरोही । कृतघन का तरक लही कु संगी । कुरकुट लिअ रसी एकंगी । देवदोष दु
जदोषअदाता । दुर वच मुष दारुन विसनी विषाता । षंफ कूर षल निलज निर्मोही । वादी दइ
व कुवादी द्रोही । वक्रुत बली कृतेज ढपापी । अजसी लोभा आतम थापी । सरबभषी अविवेक
असोची । अजसी अदइ व तिमापोची । वातुर बधर गुग तन वामन । अंगहीन कोढी अनपावन अं
धअविद्या अधुम अमांनी । गतनिष्ट अविष्ट अज्ञानी । इते अल बनन उपजो आही । तिरसकारस
बक रही ताही । कबिरोवाच कुमित्री वरनन । दुहा । मिले न लोकु सर पमुष । व उ रंक तन विसेस
मूधन पुजा न राजपद । तहां दुरमति प्रवेस ९७ । कबत बपै । नृप दियै सिर भार । सचिव जो यई ब्रा
वारिय । काज मनोरथ करत । विवधफल लान विचारिय । जूरबिक मंजार जुथ । पलविसत पल
यपय । जतन ज्ञांन मनमोद मौन । नृप सोवत निस्नय । फिर षाय अधाय सु कुबधफल । महिप
त सोवत मन ही मन । अति दुसह अगिन अवाह ज्यो । करित दाहे वं तह ठि रन ९९ । मदन दलौनि
र मूल । उमा तिह हेत वाम अंग । काल कूट कृत कवल । सो मता काज न्नाल सम । पलय काल पा
वक ध्रुव न । दगध स्यो जु दारुन । ताल गगंग तरंग । सीस जट जूट सकारन । वस करे सबल न
य इधके । विवध जतन निज तन वहत । कोतुकी रुद्र तउसन्नुकृत । राजनीत तत पर रहत १२
उषटेरो पे आंन । कुसम भुन लेह काल क्रम । लघु पोषै वितलाय । सरलतर भेदक रत सम । नि
वत उवायनियत । महा कंटक करि मंफल । विषम संग करि विरल । जतन जुत समय देत जल
कृति उचित जु माला कार कौ । निश्चय तिह सा कै नृपत । सुष अ न्नय राजन रहर सु कवि । व
ष्वी तु कते उहविपत । छंद प । नारद इह मोसो कसौ निदांन । गहिवर नक हत हूं गुढ ग्यान
रांम हि मनमांनुष ग कराय । सीता नमांनुषी है सु न्नाय । सा षा मृग नां हि नभट सु न्नाज । भैया
मरवंस अवतरे आज । अब कुजो इबित मो हि एह । दुषटेर सकल मैथली देह । सिधांत य है
ले के स साध । अति क्रोध तजि कुटर है उपाध । राघ सो करियै सिधराज । अपराध सबै छिम है जु
आज । सम न्नाव सुरासुर करत सेव । दीन के बंधु देवाधदेव । दुहा । अरथ उपाजित धरम हित
संतत हित रत साज । सुत उपजै तप साध कै । जुक्त होत माहाराज ९८ । कबिरोवाच । छंद पध । इह
सुनत जस्यो दससीस अंग । घृत मनकु न्नयो पावक प्रसंग । रावन बाच । सामरष इहां बोल्यो अ
साध । बुध तुम हि करत निद्रा जु बाध । सुष सेकु जाय घर रह कु सोय । करियै न कुंभकलि प
ना कोय । दुहा । कहा चलाइ नीत की । अनइछै उपदेस । सुनियै को मो हिन समय । विय हव
न्नो विसेस ९९ । कुंभजगायो जु थक रह । न ही पढा वन नीत । सो वन सी रुचइ धक सो । उन न्नै
जन सौ जीत १०० । कै तोल रिकु उन्नाह कर । धरिकु कै सुष थांम । करि कुवनी हान संग के । रि
न वाट ऐर घु रांम १०१ । सोय रहकु घर जाय सब । करि अहार अनपार । कोट कीट मर्कट कहा

मेघनादकीमार॥ १०२॥ मंदोदरीआगमनछंद दोअबरी॥ आईमंदोदरियहअवसर॥ करतवि
षादमीजतकरसौकर॥ हाजवदाजावीकहाहांनी॥ कंथनसुनतहितकुकीकांनी॥ कुंभकर
नसमहितुनकोई॥ स्यामकरैअबमांनकुसोई॥ गरबसुरासुरइनदीगमाए॥ अबहितकाज
जगाएआए॥ कहैसुमांनकवनवियकीजै॥ देवसमयकुलअनयदीजै॥ नावीवसजेमरेअ
सुरभट॥ स्वरसहतस्वांमीहितसंगट॥ रांमनमांनकुमांनुपरावन॥ निगमहेतभुवभारनसावन
अबलियेकाजतुमहिअवतारा॥ सुरतेतीसकुकोटसंभारा॥ भएभालकपिदेवमहाभट॥ सम
हरकरतलंकगढसंकट॥ कवित॥ दीनबालप्रहलाद॥ दुसहतिहपितकष्टदिय॥ प्रांनसोषअहि
फंक॥ दुरंतनयगिरतेफारिय॥ जलकुज्वलनसंजोइ॥ प्रांनजबजातउकास्यो॥ दीनबंधुनरसिं
घदेव॥ अतिदुषितउधास्यो॥ कीनोसहायनरहरसुकवि॥ थंफट्योधरथरहरीय॥ इहांफारहि
रनकसपउदर॥ कृतस्वरूपअद्भुतकरिय॥ १३॥ जलअगाधतेतानसंत॥ गजग्रासुग्रहीयो॥ बर
षसहंस्रदसमंकवार॥ अनआहारसुरहियो॥ घटबीजोबलघट्यो॥ समयतिहदुरंदसंभास्यो॥
जलअलीनरहिमुष्टमात्रसुम॥ प्रभुदहरीकुउकास्यो॥ ब्रतिजासससरनपिंजरविजय॥ गहिसमूल
लषिनगाहिहै॥ निजदोषविसरनरहरसुकवि॥ छिमपराधकुबहिहै॥ १४॥ जामदग्नयजांन
कवनवियवेषनकीनौ॥ करिनिछत्रीइकवीस॥ दुजनमहिमंडलदीनौ॥ मथितास्कोमांन॥
गरभबिनमांजगमायौ॥ वानरबालबलीविष्यात॥ सरयकनसायो॥ कोगिनैअविनटारेक
सट॥ राकसमारेभाकरन॥ ववहिहोनतुमकुजोरोषवस॥ निसचयममांनकुवचन॥ १५॥ प्रथहै म
रनदईत्रिया॥ जोगमायासियजांनकु॥ अहिपासनबंधेअनंत॥ वहपैसुधआंनकु॥ सक्तिहयो
लबमनसग्रांम॥ रिसरांमसहोदर॥ अवरदोषइत्याद॥ प्रगटतुमकरेगरबपर॥ विधवंसविस्व
वंदतविहत॥ आवुंनरावनअवितरे॥ कृतमारनदुजतादूरकर॥ कुमहिआनिताईकरे॥ १६॥ ह
रीसियातुमवनहि॥ नागपासनसुतनांधे॥ सकुदरमारेसांग॥ सबैअपराधजुसाधे॥ वामनमं
गत्रपेकछमहा॥ नबलसरबसुदीनौ॥ पठियोबांधपयाल॥ आपरहताहिअधीनौ॥ अपराधविन
धरदोषउर॥ करतअकारजआंनकों॥ ववहिहोक्योअतेदोषवस॥ नरहरक्वननिदानकों॥ १७॥
॥रावनवाच॥ दुहा॥ कुंभकरनदेवरअकल॥ सुतजेतासुरराज॥ तूतोरांवनकीत्रिया॥ इतोकहा
करआज॥ १८॥ कालनवातवहावकौ॥ कुंभसुनकुदेकांन॥ करियेजोपेमनकुहै॥ उभघाबा
कनिदांन॥ १९॥ गुडमीगेसरितागहर॥ तंतउभैसमतूल॥ चाहतदोयदेषचौपि॥ सूतोवनैनस्
ल॥ १९॥ छंदपध॥ जौमिल्योवनीत्तनबलहिजाय॥ सोतंततुमहिसाधौसुभाय॥ यहसुनतकुंभत
नलगीआग॥ नांज्वालितरोषवतरोमजाग॥ कुंभकरनवा॥ सप्रेमकुंभबोल्योसुभाय॥ लंकेस
मोहिमिलकंठलाय॥ इहअंतमिलनमांनकुजुआज॥ रिनतीरथतजिकुंप्रांनराज॥ बपै॥ त
जिविषादपोलस्त॥ उचितनहीसोकसमययह॥ जियतकुंभकरनहिअजेय॥ जगविकल
कस्योजिह॥ कवनकालदिगपाल॥ रांमसानुजकपिराजा॥ कवनकीसइहकोट॥ समरमिल
अमरसमाजा॥ मिलजदपिवनीबनअस्तमुह॥ कवलकलेवरकालकौ॥ जगजेतकुंभकोप्पो
जबै॥ समरवीरसुरसालकौ॥ कविरोवाचदुहा॥ देत्तुचल्योपरिदिषना॥ कुंभकरनअतीक्रोध
कवहाहारवलंकमहि॥ उनकोकरतप्रबोध॥ १९६॥ छंदप॥ मिलकुंभभ्रातउरलाइमोहि॥ बि
नतासससबनउरलग्योछोह॥ रसवीरकुंभनिकस्योरिसाय॥ कुवसहलंकमहहायहाय॥ रनिवा

ससबै उठांउ सदरोय। हाहंतवानघरघरनहोय। उग्रौजंनातअरुसातअंग। अनअवधजगपो
राकसअनंग। ईहादएसहअदसकलसआंन। मदपांनकरेमनमोदमांन। मिष्टानआरसतम
नमगाय। बलगयोबकुतमेवाजुषाय। सतअष्टमहिषमांनवईकीस। अनजंतुसुसंष्याजानई
स। अनेकअननोजनअघाय। सोनयोकलेवैसोसुनाय। पुनकरेपवावरुधरपांन। ततप
तस्वादकबुआंनआन। यांकरतअसुरनग्रौघरोकार। आघातउठेपंषीअपार। विधरंगरंगबा
गोवनाय। चितचौपविवधस्तंधोवहाय। संनाधबंधपतिअंगसोह। मिलअसुरमहोछवस्वरगमो
ह। इकसहंसअस्वपतिरंगओप। रथजुक्तपताकाधजारोप। आरुढवीरतिहकुंभआय। कतह
रषजुधवषरतकाय। आघातवजूगरजतअनंग। इहाआयकुमरिनन्नमरंग। जुजधरिवस
लइकसहंअनार। ईकलदाऊरथआकृतउदार। सतधनषमांनचौरोसजोप। ऐसोत्रसूल
करकूनओप। मिलसघनघटातनमांनमूल। समविजयलतावमकतत्रसूल। आरक्तनइन
दलअधरदंत। विषषेतसुआयोक्रोधवंत। रघुनाथहिबोजतरिनसरोस। नटकुंभकरनअ
पनेनरोस। यहसमयवभीषनअनुजआय। प्रियभ्रातदेषसोलझोपाय। नियरायआपनोक
छोनांम। तिहलयोअनुजउरलायतांम। वभीषनवाच॥ बपै। कसोवभीषनकुंभ। बीरतुमहोनि
जावस। रेनायरतटरांम। सेतबंधनदियेआयस। मेगहरावनचरन। वाहिहितवचनउचारो।
सनांमांकअनदोष। मोहिपदलातप्रहारो। कादीउंनषडगउधारकर। घातमोहिमारनच
यो। इहहेतनागपअविधेसको। तबहीसरनमैतकियो॥ १८॥ कुंभकरनवाच॥ कारनसुनतबकुं
भवचनपतकसोवभीषन। कुलविनाससिरकालचक्र। रिसतजतनरावन। रिषकुलसतके
वंस। धिनतूनयोधुरंधर। कुलकलंककटियो। सरनलीनोअवधेसुर। मुहिकलोइहेनारद
मरम। महानाझतअसुरमिन। मनकरमवाचजुतमहामत। जगतइसपदतजिकजिन॥ १९॥ कु
जकालगृहहगृसौ। दगनरोषानलदाहे। अबनयोक्रोधान्नंध। विभ्रकबुपरतनचाहे। पतिमा
अपनोअपर। जियहीनिरधारनजानउ। विषमदिसाचितयतपेनहितअहितपिछांनउ। हमे
मिलिजायनिसेनमह। कुलबलरिछ्याकिजीए। करस्वरनसेवअबिलेसके। जनमसफलक
रलीजीए॥ २०॥ कविरोवाच॥ दुहा॥ कतपरदहसनकुंभकह। ढरतनयनजलधार। ईहांवभीष
नआवनै। सेनकियोसंचार॥ १०७॥ छंद॥ पुंनआयवभीषनरामपास। पतिदेतवचनबोलेप्रका
स। दीनकेनाथरघुनाथदेव। यहकुंभकरनआयोअजेव। संग्रांमहोऊपचनुसावधांन। आ
सुरअसंषअतिबलअमान। चौपटजबकुंभहिरांमवीक। करिधनुषचाढटंकारकीक। हव
चलेरीछवानरहकार। धररांमधनुषकरबांनधार। आगेवजुजूथपजुथ्यआय। सबसिंधना
दगरजेसुनाय। कुंभसौजुरेवांनरसकोप। राकसरिनवाहोपैजरोप। गिरतरवहारक्रूत
ककपिजुअंग। मीलीतकूटतसिनतंग। इहनातलागगिरअसुरअंग। सीसीमनुकूटनसि
लासंग। उठलगअंगमरकटजुआंन। पहारदंसमनुगजपमांन। मिलदैतकीसतरवरनमा
र। परबतपरमानऊतिपहार। कपिकबुकमीठठारेसकोप। उठगएस्वासकेउतलओ
प। पकरेजकुंभकपिनालपांन। आहारकरेमुषमेजआंन। इह वीचवीरहनुमंतआय।
उरहयोकुंभमुष्टीउगाय। सोइजांकनारपरउग्रौजुध। कंटककौजाअतीसक्रुध। तिहमा
रयौहनुमतउरत्रसूल। तिहलगतसुमुरिछितमतकतून। जोधातबजानोइहनुमंतलेन। सब

राजतहांकपिनालसेन अंगदनलकेसरीनीलआय सिलस्या स्वकुमारीसुनाय सोइस्या
रगिराएमारसूल नटननएसुमुरछितधांनसूल दियपरीत्रासससबविमनहोय कपिनालकुं
भमुहचछनकीय मुरछाजबजागीहनूंमंत तहांवीररोषउग्रोतुरंत इकलयोदीरघपरबत्त
उवाय अतिरोषकुंभसिरहन्योआय तिहघायअस्वरथधजाटूट नौकुंभविरथबलबोह
बूट कुंभवषरतदेष्योसकोप रिनसूमविरथरिसपेजरोप सग्रांमभरनसोचेसधीर वढिको
धनुवाहोकुंभवीर छपेकवत कुंभविरथअविलोक समरसुग्रीवजुसकीय रिसराकसकपि
राज जुगमहरिनादगरजीय गिगनकंफसुग्रीव महापरबतसिरमारयौ पकरिपायनिसच
रवचंर सोपकमिपछारयौ तबनौअवेतकपिराजतहां महावीरजांन्योमरयौ सोयसोका
ववाप्योउसह सबलंकदिससंचरयौ २१ तिहनिहारहनुमंत रोसघनकुंभरोकिरिन हवल
ताउरहयो घायवहलझौघूमन तहांसुग्रीवनचेत निकटतबउसहनिहारयौ मुबहीना
नाककरउनयश्रवन संग्रहेजुसमारयौ गोगिगनतहासंकोचतन बोइबदमकरछटियो
कुंभाजुभ्रा तलंकेसको भुवनबुचनकटाभयो २२ कुंभकरनकेनाककांन दलमधजुरा
रे कोतुकदेकरताल हसतकपिनालनिहारे छलोकुंभराकसगिलांन पलमहाबिसायो
अंगभंगनोअनवि ओपअंतकफिरआयो विनअवननाकवेरूपवप परमभयानकपि
षियो संसारयसतसोकालसोइ उसहन्नालकपदेषियो २३ छंदहेअषरी यहांकारिमु
षसनमुषआयो स्वरकपिपायोसोइषायो नासाअवननिसरतेवनचर बलकरनिकसे
आवेबाहिर छंदउधोर मिनकनकमुकअमूल सिरधरेपांनत्रसूल वनविवधभूषनवृंद
उरउपजिमरनअनंद अतिरोषरिनभुवआय भयत्रासकपिनसभाय निस्वासउरुतअने
क लरस्वासपेवतएक तेनिक सअवननास परिछिद्रकूपप्रकास बलजितेमरकटषाय
सोइहसतनिकससुनाय सुररथनबायअकास उनिवगटहासप्रकास सुररमनिकोतु
कसंग अदभूतरसवढिअंग बलकपिनपटकतषेत लषगिगनकोउगहिलेत छंदषअहा
उवेदलसोपेकोतुकदेषे बंबीनिकसततांफविसेषे कपिदलकुंभत्रासबकीनो निस्वर
देषतरूपनवीनो कुंभतहांदेषेरघुनायक सांधेपांनविषमधनुसायक आसुरवेषमव
चनउचारत आयोरांमओरस्वषआरत कुंभकरनवाच कवितछपे नहीनताडिकानार
मैनहरधनुषदारुमय नहीनरामउजदीन मृघनमारीचकनकमय बालनवनचरवरा
क जडताडनजानऊबर दूषरत्रसरासुबाहु पौरषनप्रमांनऊ पाथोदकुनबाधौउप
ल नामसुरासुरसालको रनकुंभकरनकाकुस्तरे महाकालरूंकालको २४ मेलनालम
रकटनबऊलजलसेतबंधायो तूयनकेबलअंत अबजुलंकागढआयो वन्योइदैन
वतव्यवीरजूऊराकसरन ताकोमरकटकटक महाअहमेवकरेमन नरअमरनालवा
नरनिकर इवसोइगिनमारिद्ध रिनवद्योतोदिरघुरामरे अबसोइगरनउतारिहूं कवि
रोवाच छंदउधोर रिनवीररांमनिहार नटधिस्यौसूलउचार अविलोकपलज्योईद कृ
तवयरघायकलिद रिनतोहिबोलतरांम सकिकरऊमोहिसग्रांम त्रयलोककारनत्रास सु
रअसुरगबविनास नरअमरकिंनानाग नयोनोगकारसनाग सुरराजसुरगनसाल होकुं
भकालअकालयहसुनतरघुकुलइंद गंजीवतांनगोविंद आकरनषंचअहक महाविज

यसा इकमह्क। कवत। अरथवंदवंदजिमजनय सरजुमुकेअवधेसुर महावीरसग्राम कुनबे
देदीरूकर धुंनत्म्रदिजदऊपाय काटिचौरंगीकीनो डुसदल्यौरघुदेव देवराजदिसुबदीनो
अतिरीषजरतलोचनअनल महात्मयांनकफारमुष नवछूतयसतसोकाल मटराकसधायो
रामरुष२७। दुहा। कुंभदिलागसरनिकर अरुरूटतउहवोर दामनजेसेजलदडर विरसब
होरबहोर१८८ रतधाराधरनीदरत षलकेजनुजलषाल गिरकजलमनुगोरका वहरीख
लतधनाल१८९ कुंभकरनमुषबांनकर रामनयौरनसंग पूरनकीनीजानपमु षेवरवद
ननिषंग१९० कवत। सीजानेअविधेस असुरउरभिरनसुआयो कतकुरलकोदंड अवधवि
धबांनचलायो कुंभमुरुकटियो डुसरजुसबदिनदेष्यो डुरगडारकियो विसषहतसी
सविसेष्यो कतजदंनदसनवनवज्रकन आजितराजितलिपनुव काकुस्तजयतनरद
रसकव हाहाकाररजुजंकऊव२८ माहावीरहनुमंत करनधरकुंभकलेवर परयोषेतप
रबतप्रमांन रदिश्रोटलंकगिरगदिमुक्योमगगिगन म्रतकतनपस्योउदधमह देहदिर्घज
लजंतुनाल तिरकालदखेतिह तहांदेषहन्वविक्रमअतुल अमरबृंदआनंदअत संसार
नयोजयकारसुर परिपहारउरलंकपत२९ वीरबाकुमतुवेष रामनादेविजहरिन करग
बांमकोदंड डुसहसायककरदिछन अग्रनाज्ञथितअनुज हसतकपिसेननिहारत जां
नकीसजयजयत अषिउसुरबृंदउचारे सुमहोतगिगनबरषासुमन बाजनसुरउधनि
विजय कतनासकुंभनरहरसुकवि जहतजहतकाकुस्तजय३० छंदवेताल। रिनभूम
गहेरामराघव अंगश्रमकनसोभए वनवसनलागेरुधरबुंदन बोहराकसबोभए रिस
चुकुटीभंगतरंगरेषा कटीतटिन्नाबीथाकसे कोदंडनामतवांमकरगत रनजवीरारसरसे
रतिलिमसायकसव्यकररहि रकआननरोषए वतुवंकवितवतनकुंटपतिमा षेमक
पिदलपेषिए सुरसिधचारनजयेजयजस परमकरुनामयपिखे विष्यातवीरत्रलोक
वंदित विश्वजितपालकविनो यहसमयआयरिषेसनारद गिगनमगगुनगावते नग
वंतहितनवछूतनृपति भुवनत्रयमनभावते। अथनारदरिषकृतअस्तुती। जयराम
तनघनस्यांमसोभा अरुनअंबुजलोचने सरचंदअंकितपांनसव्यसु माहारिउमदमो
चने जयजगंनाथअनाथबंधव देवदेवसनातने नारायनेनरदेहनिरमत घायनिसचर
घातने जयविश्वसाषविसुधबुधे विश्वमायावंचने जयमायधीतनमुतुजमहिमा सु
षउवादिकसेवने जयमाईयागुनगुहजमूरत सरवआतमसावधे जयसर्बकारनर
हितसबते विश्वसिमृतत्वविधे जयसयंजोतिविसुधबुधिय विक्रमव्यापकविश्वए जनमी
जनेदगलोकउतिपत जग्तपोषतश्रेजए तवमीलनेदगनाससंश्रति चारबांनचराचरंम
नव्वनकरमनसाधमाधव ज्ञानध्यांनअगोचरं जयब्रमणेजयदेववरि बकतउरषेपाव
नेअविविक्तविक्तसरूपअेदमुत न्रवनत्रयसंभावने जयग्पानरूपविकारवरजितज
इतजगदाधारए जयदीनबंधुदयालदेवा विश्वजितअविकारए वेदेयवेदकवेदवाद
न निरनयनवनिश्चयं तवप्रसादविनयहत्रलोकिय अबुधबुधआवअयं जयअषिलमा
याजालमहिमा जथाजलरविकरहरे ष्ठतबेबजल भरमतपकलिम अग्पअगमअगोचरे
षतुकथंडसअदरसप्रतिमा होतविनसतदेतए अवितारतवमिलजोतिअदमुत त्रगुनतत

राम १३४ समेतए। महाबुध्य सुध मनन्न जत माधव। तिरतन्न वरपरोरवे। दद्दिकामक्रोधदि आदिउससह स
बलसन्नवसालवे। मं जारज्जे सें आयुअनंदित। कहतहैसबकालवे। तवनामसरनैनिततत परर
हतह गतवरूपये। षत्तुवेमयुतनव्वरनशूजा। श्रुतीकथान्नवत्तूयये। तवरामअगुनस्वरूपसुंदर
धाय है वितधार। तवनक्रू जेहै मुक्त माधव। विनावार जवार। तुमरामकत यहकरमअतुलित। सुर
सुरेससहाय। तुवन्नारयस्वोनक्रूलीन। समयकुंभसंघोर। कुंभकरनबध। अथइंद्रजीतब
धनंदुहा। इंद्रजीतकौमरनअब। कैबोलिव मनहाय। कंटकबध अवधेसके। निश्चयन्नावीना
थ ११ कबित्त। कुलमृजादपितुव्वनकाज। वनदंरुकवासिय। कुंभकरनराकसनिसंक। वर
विसषविनासिय। सुरसुरेसविबमयविसेस। दुषहूरजुकीनौ। दुसहदाहरनलगेराह। दस
सिरउरदीनौ। अविधिसअमरगावतअतुल। क्रूतषतापअवितारकौ। आगमनन्नयोनरहर
सुकवि। क्रमविनासन्नुवन्नारकौ २१। दुहा॥ कुंभमरयोगढ घरहरयो। तहापरिआसुरत्रास
न्हू॥ लेसेजिततितन्नमत। अरूबूटीजियआस १२। कविरोवाच। रामबांनहतकुंभरन।
जोतिमिल्योषलजाय। मारउधारतछिनकमह। असेराघवराय १३। रामदिकरउपदेसरिव
सुरमुनिनारदसाथ। अबिलगएग्रहआउने। गावतहरगुनगाथ १४। रावनउरपरत्रासरि
स। करतविलाप। अनेक। करथरपीटतसोककरि। दरीनअहमतंटेक १५। रावनवाच। हाहा
कुंभअवंनयह। सबविधसूरसमाथ। तेरीयहनवतव्यता। होयमरननरहाथ १६। ईद्रजीत
वा। कुंभमरनरावनविकल। ईद्रजीततहांआय। सोकसहोदरबधसमर। करऊनराक
सराय १७। ममजीवतघननादमहि। सोवनउचितलंकेस। पोरषदेषऊपुत्रको। नएवि
हानदिवेस १८। कविरोवा। रोसेंनिरतसुरअसुररिन। नएअसतमितनांन। रहेन्नालकपि
समररुप। डगमदिसाविदिसान १९। अथइंद्रजीतगुढकपटहोम। श्रीनिकुंभलादेवीस्थां
नक्रूतिअंवरनं। कवतबपे। नकुंटावलकेमध्य। गुढइकगुहाअज्ञाता। निजनिकुंभला
नाम। विवरनुवूंतविष्याता। रक्तपालवासनविसाज। लेपनअनुररजिय। मौनव्रतन्नषमु
दित। जथाविधआसननसजिय। कृतकुंभविसदनरहरसुकवि। पोरुषरिसबलबांधप
न। मिलवाचकायसमएकमन। करमहोमलागौकरन २२। इहांविवररथआंन। सवीधवा
कर जा जीसंजोइय। सस्त्रअस्त्रसनाह। सकलपरिकरियुतसोइय। लेमिल्योरथकुंभमाफ। पावक
परीय। सुरध्रोहीआसुरअसंक। गुरमंत्रउन्नारिय। अभ्यासअसुरमायाअगम। अग्नधूम
नभेसंचरिय। सोदेषधूमधारासघन। प्रांनवभीषनन्नयपरिय २३। वभीषनवाच। छंदपधरी
ढुंनयहांवभीषनवरपवाय। यहकवनधूमसुधकरहऊआय। किहकीनकवनधूकहा
काज। यहलेकसुधमोहिकहउआज। हूततहांगएअतिवेगदोर। पेवैकरूबलकरी
मधपोर। सुधलतीगढमांऊसोय। कृतहोमइंद्रजितकरमकोय। इहसुनेहूततहांफेर
आय। विधकहेवभीषनसोवनाय। निजसुनेवेसढामेघनाद। वढिमहावभीषनउरवि
षाद। अतितीतवभीषननिकटआय। सबभेदविवररामहिसुनाय। वभीषनवा। रथहो
मतदैषलमहाराज। इहधूमगिगनमगवढ्यौआज। जहागूढविवरगतइंद्रजीत। इह
करतहोमअंतरअभीत। अनलमहजुपेरथनिकसआज। आपनोततौनिश्चैअकाज। आ
रुढरथहितिहचढअकास। तौहमहिदिष्टनहिपरैतास। सवदिनउदहदेषहिअमरसाल

करिहै संग्राम काज दिअकाज । आसुर अदिष्ट कै है अजीत । मंत्र यह सुन कमो हि जगतमीत
है मरन इंद्रजीत लछन हाथ । सो पठ रू दे वह मजेह साथ । करिये बविघ्न जिह होम काज
रघुबंस तिलक लछमन यराज । श्रीरामवाच । हमच लहै कह्यौ यौ रामराय । सुन बोल बभीषन
फिर सुनाय । बभीषनवाच । वरदयौ याहि ब्रह्मा विसेस । सो सुन कुक कुअविनी नरेस । वरष
जि हच तुरदस कुगमवीर । सम छुधा सुनिंद्रा जय सरीर । कै अंत जु या को ता सहाय । निश्चय य
ह जान कुअविधनाथ । जब तें तुम बा मही अवधराज । सोमित्र तजे सब सुख समाज । कृत निय
म असन निद्रा न कीन । अग्या विदर हि सेवा अधीन । श्रीरामवाच । दीनी तब अज्ञा रामदेव । जा
कु तुम संग लछमन अजेव । दुष्ट षल रवत माया दुरंत । मत नाग पजाय राकस अमंत । सुन वी
र जतन करिबो संघार । बकु और सुभट राषकु विचार । लछमनवा । करि जोरे लषन तहां प्र
णत कीन । कु अविधनाथ अग्या अधीन । संकलप कस्यौ लछमन संघार । मघवाजित राषै
षेत मार । प्रभु यह है वचन मान कुप्रकास । देवाधदेव तव तौ दास । प्रभु सबै सिधर घुवर प्रताप
अति प्रेम लषन उर लाय आप । परिक्रमन दइ यह लाग पपाय । उमचले लषन तुज बल उठा
य । संग दए सुभट एते संघार । विभीषस रांम अति बल विचार । वय पूरन बध सुजामवंत । सयां
म सूर महाबली संत । उन दयो बभीषन संग प्वार । मांन्यो सुनेद दाता मुरार । नल अंगद के
सर अरु नील । सम कपि मयंद मारुत सुसील । षल इंद्रजीत चितबेद । बाढ्यौ विसेष उन अ
विध वेध । श्रीरामवा । इहां उचित बभीषन जतन आज । लिछमन है सारी तो हि लाज । कविरो
वाच । ए सुभट जु लछमन संग आय । सो होम सालपा यो सुनाय । जुत मौन मंत्र षल गुढ जाप
अति ध्यांन समुद तन इन आप । सत कुन रुधर बल देत सोय । हित विजय माहि आकृती हो
य । इह उवेद्वार र छिकरि साय । इन मार वीर छेम धन आय । नही उवत निसाचर तद पीनीच
मुहिचढे सत्रु सिर वढी मीच । दिन नयो कुलाहल उसह देष । षल नयन उघार तन ही विसेष
रथ । कृतदेष बभीषन अम्न कुक । तिह निकस अयर रथ अम्ब तुक । आकृती जु उरन नएए
व । इह दुष्ट सुरासुर तै अजेव । बभीषनवा । रथ निकसत है लछमन निहार । मुहि चाह रहे क
हा सत्रु मार । लिछमनवा । निरस्हार नीत पौरुष निदांन । बधन दिन उचित अन सावधांन । अंग
दवाच । उव दुष्ट वीर सोमित्र आय । विधरुद्र सरन कुन ही बचाय । जुध जाच तग ढे सत्रु जा
ल । कहि षल अब जीवन किति क काल । धिकार ता हि जीवन अधीर । वेरी जु वकार त सन
र वीर । कविरोवाच । जिह है मउद्यो इहां इंद्रजीत । अन नंग असुर आतुर अनीत । इंद्रजी
तवाच । अन समय प्वास्यौ मो हि आय । पौरष हि प्रकासो मांह पाय । सब सूर कहावत तत्मस
धीर । वद कु जो रहि है पगन वीर । कविरोवाच । अन नए दो मउद्यो अनंग । अपवाद उवार त
अनय अंग । इह वी बभीषन निकट आय । रस वीर कव र बोल्यो रिसाय । इंद्रजीतवाच ।
धिक्कार बभीषन बध वेस । ई ह समय करम कीनो अनेस । जब जुरे जुध दकु दलन जोर । उ
वगए नाज तब सत्रु ओर । उवग अे अस त मुष जद पि आप । उन छिद्र बता वत कहा पाप । ब
कुकाल रहे अन उचित बोल । नए षरा रुढ अरु दए ढोल । कुल गेह दुरंग की बाह कांन । अ
र सो मिल दे नो नेद आंन । निरलाज इकै है वंस नास । पापी है ते रो बुध प्रकास । मोहि उत्र हि
मारन काज मुढ । अरि स्मिय कस्यौ ते पन गुढ । ये सो करम करि फेर आय । षलक हालंकम

रिमुह दिषाय कहा मारीं तौ कहकुल कलंक अपराध जिहि सिर पाप अंक कविरो वाच ॥ र
ताद मर मछिद वचन उचार संग्राम सूर गही संघार कृत घोर रावण परि धरन कंप जग जीव
चरम्चरन एजंप ववरत विकट भ्रकुटी सचास अधरन फसंत सिर लग अकास इह रूप
इंद्रजित सिधोर आय बोल्यौ सरोष प्रत भट बुलाय जुध लछमन इंद्रजित नयो जोर अति
सस्त्र अस्त्र बहि दुहू ओर परसार नार सम हर प्रहार मुष हाक कहत भट मार मार ईभहए
तबे सेषावतार द्रुवगिरयो निसाचरन ही संघार जब भयो स्वेत न इंद्रजीत उठिलडी लर
आसुर अभीत दस बान हए बल सेष देव अरु दए दस हिमारुत अजेव वलदए बभीषन
बांन वीस कीने प्रहार सब सुभट कीस हव महा सुरासुर समर होय कहि रलो अछितन
ही वीर कोय सत बांन लषन मुक्किय प्रकास तिह कट्टि काटि घननाद तास धाबु षइंद्रजेता
संधांन तह बुहि वार इक सहस बांन सन्नाह सेष बेध्यो सधीर विनु कवच भये तब उभय वीर
परसपर होत प्रचण्ड प्रहार वसरो स विविध रिन बार वार आघात घाव पूरत अकास तन भ्रवत रु
धरव दिसो नतास स्वारथी रथवा जीथ नुब संग नुव एक वार किये लषन नंग रिन भयो विरथ
जब मेघनाद बसवय रविषम वाद्यो विषाद रथ छुतिय अस्व स्वारथ्य सकाय आरोह इंद्रजित
करे आय धनु अपर करे धनु सर संधांन बिबर्षं रुस की नो मार बांन ततकाल तृतिय धनु प्रस
रतांन आकर्ष मुष्टकर लेत आंन सत बांन हए लषमन सधीर सत धार रुधर खलिष लसरीर
कवत ॥ ईद्र बांन अनमोघ निसत सत सजिय रामानुज कतकु फल कोफन भरिय करण
त महानुज राम रूप उर धरिय धनु प्रताप बल प्रगटिय जय जयत उचारिय तिरखो निहार
घननाद तन चित्त विरोध नही छुक्किये आजांनु बाहु सोमित्र इह महावीर सर मुक्कियो ३४
कंच छेद तिह करिय बांन घननाद महाबल कन्क रत्नमय मुकट दिसद कुंयांम्रु कंफल द्रग
फटिय रह सिदंत भ्रोंह मिल मूछ निरत्तिय अरुन वरुन आनन्म उजास रिस अधर फसंतिय
दसकंधर सिध्धा मध्यदिन आन हिदिक्कत अनुसर्यो करि अंजुलि मस्तक पुत्र को पिषयतु
संभ्रम परयो ३५ उनिसंग्गार पेषियो उत्तमस्तक पहिचांन्यो हा न वेस कहा भयो ईंद्रजुन वितव्य
अजान्यो वंस नास लंका विनास राकसर जधांनिय सुर संतोष मिल गृहन भौष मै निश्चय मांनि
य कुल कलंक कुटागठ तिलक सीस बभीषन सारबो जुध मरन एक इंद्रजीत कै नही कहा
निहारबो रह विविध वृंद मिल अमर आज आज आनंद करकु उर सुर समेत सुरराज सी
सगन तिलक करकु सुर पुन समस्त दिगपाल विमल निज कं विसतार कु अमर रमनि गंध
रब साज संगीत सुधार कु सियरांम बभीषन लंकसुष रुमजिझा भुजवरकु कारा ग्रह बूटीज
गत कह करमन उपद्रव ग्रह हक रकु ३७ बांनर रीछ कुजीव सेत सागर तिन सज्जिय देस प्रासी दी
न वाल उनवयर उपज्जीय महाकाय राक समह प सो तक पिन संघारे कुंभकरन अरु इंद्र
जीत मांनव रिन मारे अनन्त असंभव करमयह अनुचित को सुनबो अब हव्व भवभीजे
इक हतजग सोई हम मानी आज सब ३८ ज दिन वीर जनमियो धसक दसदिस धुजीय धर
गहर नाद ग्रजियो गिगन कुलियक पित गिर सुरासुरन विय हस संघार समहू भय संध्यो ईंद्र
जीत भयो विजय अंक वासव रिन बंध्यो दिगपाल साल दारुन डसह जग विकार च भुवन
भरिय का कहिये महिमा काल की मेघनाद न रक र मरिय ३९ बार बार मस्तक कुवार लि

यनुरहीलगावत टरत्रपास्वषत्रंसुधार उंमयाहनपावत उर्धसासजियबुटित्रास परि
त्रासत्रपावन हियविहारहाहाउकार रोवतरटरावन अबईद्रजीततोविनत्रषिलराक
सकुलउषरोयहै दगपालसालटरउसहदिन सुरसुरेससुषसोयहै ४ण कविरोवा रिनि
यदिनत्रयरात न्रुमनिरपरेनयंकर जयपायोलछमनत्रजेय विक्रमत्रतुलितवर करि
हीवापटंकारकीन जयसंषवजायो सुनौनालकपिनटसमूह उरहरषउपायो आकास
अषिलप्रमुदितत्रमर रनजयकितसुउचरिय उधनीगिग्नवजियसुषद राऊहपवषी
करियै ४१ उष्टमारघननाद सहितकुसलानटसंगिय मिलेआनरघुपतहि सोमित्रअंगी
ये कृतवंदनकरिजोरि रामलेकंवलगाए धिनधिनलषनसधीर हितक्वनसुनाए साधते
एनतुमकष्टसब वरषचतुरदसवीरवर अतिबलीअसुरघननादयह सुकोवीरमारत
समर ४२ अथरावनविलापप्रसंगमंदोदरिआगमनं छंद प॰ विलपातकरतरावनविहाल
सुतसिमरसिमरउरत्रमरसाल धरलुटतपरत्तउवतअधीर पाविष्टसहितमनमनहिपीर अ
तउषतमंदोदरईहाआय उरमसतकपीटतनहीअघाय परनवसहिरोवतकरिउकार
विललातसनारतवारवार हामेघनादद्रगओटहोय कितगयोवतावतनहीनकोय मिलकं
वलागकिनउत्रमोहि तनसुदरदेषूकहांतोहि लरसमरगिरयोअनंतंगलाल सुरराजसुरन
अवटरेसाल आक्रंदकरतरोवतनाथ श्री कैविहबलकबुलागेनहाथ उषसागरबूडतसेनि
दांन पावतअविलंबनकरूधांन रावनवाच रांवनसमझावतरोयरोय नावीबलिष्टकहाक
रैकोय निश्चयसरीरथिररहतनांहि जगजंतुउपजउनअंतजाहि जतनकुकियेनहीरहत
जीव देषीबलिष्टमायादईव मंदोदरीवाच छंद अपरा निसथिरदेहजुपेपियजानकु
तोनअनीतइतोहवंनकु वेषवनायजतीकोजेसे अरुविरुधमेकै कीनोऐसे जुगतन
सुंनेमिंदरजाइ परत्रियतहांअकेलीपाई रछक विनाकतीसोनारी उनिआंनीहरकपट
पवारी चोरकरमइह करीकुचरचा ऐसोवरपायोविधअरचा यहअनीतपरत्रीलेआए
षोटेपिवमनलहुवाघाए सुपैनहीपियतुमसेराची करीअनीतपरीसबकाची नागविषम
विषपासननांधे बंधवउनयपरेरिनबांधे लगितुमरहेधराधरलैना वनिदहैअरुकहैकु
वैना सत्रुहयोरिनत्रातातातकौ ईद्रजीतएफलहैवाको उनितुमलरेष्वारष्वारे मरकट
सस्त्रअस्त्रगहिमारे तुमकहजांनहरनदईसीता नामास्छाकवनिहिसनीता मद्यलिकी
पानलयांहिमानो जस्योतेजतुमकोसबजांनो अबलोरिननहीमारेयाते तुमहिआततताई
कियेताते होकबुब्रह्मअंसतुममांहि सोसबदूरकियोमदजांही कुलविधकारनहातो
कीनो तुमहिआततताइपददीनो जेतुमकरमकरेमनजांनै पापसबैतेरांमप्रमांनै सुतो
आहिवेवेदस्रूरे पोरुषनीतधरमबलपूरे कंपतोहिअपराधीकीनो नासतिहारेकोहत
लीनो अथआततताइअंगरोकवित उष्टकरेवनदाह विषमविषदेहवयरवस सस्त्रधार
संग्राम रोषमुहआयवीरस परधनपरघरसमयपाय परत्रियापहारिय उचितप्रांनबध
इनहीं इहजुमतनीतउचारिय संसारविदतनरहरसुकवि पातककरमपिछांनियै अबसु
नकुकंथषटपुरषयह जेअततिताईजांनियै ४३ दुहा लंकाराजवभीषनहि मुषकीनोकहि
रांम तुमहीहतेविनसुनकुसो केसेकरिहैकाम कविरोवाच कवत इद्रजीतकेमरनअब

नएकामसबनांम।दूरनकै है रुवनपन मुषउचरेजिहरांम।कविरोवाच।कवत।मेघनादरिन
मरयौ।अमरजयसद्व्वारिय।परीयलंकआतंक।नयोराकसकुलनारिय।वरनदेसद्ग
देव असुरकुलनासजुआयो।वरवामदेववेध्मव।दुसहआगमदरसायो।कारनत्रयोत्र
यलोकजस।नक्षवबलतिहबिरदनन।कविनरहरदातामुक्तके।माहाराजरघुवंसमि
न।४४।इतिइद्रजीतबधप्रसंग।दुहा।देषबोधमंदोदरीय।आपसनामहआय।सुरजतीजेबंधुसुत
इहनइमंत्रबुलाय।रावनवाच।बंदउअषरी।सबनसुनायकह्यौलंकेसुर।अबतौआंनबनीसिर
उपर।मेयहकरीनरोसैमेरे।होतकहाअबइतउतहेरे।मेअपनेबलवयरवढायो।उतबं
गनारसुपायनआयो।दुरजनकौउतरअबदेहो।लोहसमूहसमरचढलेहे।सबतुमसु
नटसमरजयसूरे।परदलदलनपराक्रमपूरे।सुरनरमैत्रयलोकसंतायो।अबलौकियो
जुपैमनभायो।रिवसनमुषजोपैरिनरहिहो।लोकलोकसौइजसलहिहो।दुवदलमिले
जुचितदुलावै।सोपहिलानागेसुषपावै।अबअपनोपौरषउधारहु।मिलअनियनमुषउ
रजनमारहु।उतसोकउरदजरतआगी।ज्वालारोमरोमप्रतिजागी।कविरोवाच।उठअ
सोकवननरावनआयो।सीतासिरकाटएसमुहायो।निठुरनिकालषडगकरलीनो।कम
लसियाकाटनमनकीनो।यहांसुपारसमित्रीआयो।सुकरगह्योदितुमंत्रसुनायो।सुपारस
वाच।बालाबालजुअबधविचारहु।महाउरवत्रियकबूनमारहु।समरअनेकजएतुम
दससिर।सेवाततपररतसुरासुर।तुमतुवनगतधरनंदसैनाई।बलअंसउनवनीवनाई
तोयहउचितकरमनहीतातै।जगउपहासहोयप्रभुजातै।कविरोवाच।मित्रीवचनजबैष
लमांन्यो।इहकरकरषकैरगहआन्यो।इहएकांतगयोअनियाई।औसीतहांकुबुधउपाई।उ
ष्टनकोतबअग्यादीनी।निसचरजपजीबुध्यनवीनी।रावनवाच।मायामइज्यांनकीमंरहु
बलकपिदलदेषतसिरषंरहु।कविरोवाच।सीताअसुरनकपटसवारी।मरकटदलदेष
तिलेमारी।कपटसीतमिलहातोकीनो।देवकटकमहरूरसुदीनो।विमनन्नएदेषतसिरवा
नर।वरतंतयहैसुनायोरघुवर।प्रभुतहांमानुषभावप्रकासौ।तातेसुरवानरतनत्रास्यौ।अब
हनुमंतकूदवनआयो।सीतादेषिकुसलसुनायो।मारुतवाच।प्रभुइहमायाअसुरप्रमांनहु
मिथ्याविरतकबुनभयमांनहु।कविरोवाच।हनुमतवचनसुनतसबहरषे।पापीकपटद
सानन्नपरषे।उनयहमंदोदरिसुनपाई।इहांआतुररावनपहआई।मंदोदरीवाच।कहांत्रै
विरतकरतहैकंटक।इद्रजालतैहरैनअंतक।मंदोदरिपनकहसमझावत।दुषरोवतहित
हितमंत्रदिषावत।नटसोकुंभकरनसेनाइ।इद्रजीतसुतबलयधकाई।रिनसोउमरेजंग
तजसरहिहै।गढयधकारकवनअबगहिहै।प्रभुसीतादेसिंधप्रमांनहु।उगबाहकितोजु
धगनहु।अपनौबेलकियोप्रभुएसो।कुलहीनासकरजिवनकेसो।मकराछवा।घरसु
ततबमकराछमहाबल।बोल्योइहाकोपमहाबल।सीतादेनकहैकोदससिर।प्रभुमोजिय
तनकुंटदुरंगपर।कुंभकरनघननादधरमकत।हतरिनएधिमएपतहित।उनजरपेटसयन
अभ्यासी।उनघननादकपटप्रकासी।कहासोकतिनकौअबकीजे।देवमोहिजुधअग्यादीजे
रामहिसानुजमारमहारिन।बांधौपकरिसुग्रीवबभीषन।केतोवासअजोधाकरहु।महावी
रपदलहिरिनमरिहु।कविरोवा।करिप्रतिग्यावंदनकीने।लायहृदयरामनतबलीने।ने

रनिसानबजायनयानष। आनंदछौरिनषेतअघानष। दारुनरूपताहिकपिदेष्यौ। बलअत
बलअंतकसोलेष्यौ। बभीषनबाच। सुषेनजीवनसुदिसुनायौ। ईहमकराछमहाबलआयौ।
राघवसावधानहोयजैरिन। राकसयहैजतीजारावन। षरसुतमोनसुरनकोषंच्यौ। इहमकरा
छसमरपनमंच्यौ। ताकहदेषहरेरिनमरकट। भिरतनयानकरूपअसुरभट। भिरतनबलसु
ग्रीवमहाबल। षेतवटैरीकेराकसषल। इहांअंगदमारुतदोऊआए। सकिनधरतररोषसवा
ए। नयेजुधराकसकपिभारी। वहैजुदहरनबारीवारी। इनदुरुक्यौरसोनहीआसुर। आएस
रोषवनीपनउपर। जुरेजतीजाकाकोदक्रुजुध। जनयअनेकअवाहेआयुध। समरवनीपन
सुलसंत्रास्यौ। इहमकराषगहासिरमास्यौ। तदपिनगिस्यौ। वहारवीरतस। रिनलागेलषमन
गजराषस। लषमनतिहभुजकाटनलागे। भिरतनसस्त्रअस्त्रअभागे। पहलैउहबलावरपा
यौ। समहरमुरतनभिरतसवायौ। लेयदिवल्यौलषनकहलंका। यहमायातनस्वेअसंका। अं
तरनभनहनयौअंधारौ। सोअपनोपरनांहिसंभारौ। हाहाकारगिगनजुवहोइ। काऊउपायकु
रतनहीकोई। यहातेजसररांमचलायौ। अंधकारसोउनिषलनसायौ। अंगअंगकाटेषनुआ
सुर। धुकेतहांमकराछपयोधर। रांमदुष्टमकराछजुमास्यौ। अमरवृंदजयसबदुउचास्यौ। ज
यअधभिसुरगिगनबजाए। अतिआनंदउहपवरषाए। लषमनबाच। छपै। इहांलषमनकरि
जोर। उचिततिहितक्वनउचारि। तुमदयालदेवाधदेव। हौसंकटहारिय। कवनपरोजिहकाल
षलजुसुरसाधसंताए। तहांतहांचिततमात्र। भेदरिउदीनदुहाए। करुनानिधानकारुनकर
न। कोउनसमवरकिजिये। सबविधदयालनरहरसुकवि। देवनकफलदीजिये। ४५। इति
मकराछबधप्रसंगजनीराछानीप्रसंग। कविरोवाच। इहांनिसारिनअजर। रांमनिद्रागतिनि
रजर। मांनवयरअनसमय। सकीषजतालंकेसुर। नागपनंजननिसचार। अतिकपटअमासी
रचैसुमायारूप। विवधजगजीवविनासी। पवइसुरावनबांधपन। रामहिसानुजमाररिन। हि
तकरक्रमानमेरेजुयह। मांनुतवउपकारमन। ४६। षग्गापानषेचरी। देहदुष्टाअतिदारुन। स
मरभूमसंचरिय। ताहिकियरूपगुप्ततन। पछिचांनीअंगदप्रबुध। करयहैउनगिय। धरीअवांन
कवीरधाय। मृघपतमनुमृघियु। जुवराजचरनग्रहिगेदजो। पाविनपटकीनभूपर। आसु
रीगईजमलोकउहा। सुनीसुषभ्लेकेसवर। ४७। अथश्रीराममायामस्तकदरसनं। सीसरां
मसोमित्र। करेमायामयराकस। चिरतरुचित्रंरूप। सहितजरजबनतापस। भोनधारग
लअग्रवत्त। नेत्रफटियविकृतानन। वारवारहिकोउबास। रतलिइरेनुरिन। मुषरतबान
नुहमुबनिर। अरुअनुतबिबअनुसरे। अतिदोषदंतपीडतअधर। धरनिसुताआगेध
रे। ४८। छंद्प। मसतकसोदेषिअकसमात। सियअसहसोकउरनहीसमात। परित्रासम
नकुसिरवज्रपात। वधसूलहृदयनहीकुरतवात। सिरवारवारउरलायसोय। रसरुद
मगनउंनउवतरोय। सीताबाच। जगदेववीरहाजगंनाथ। अतिदुषितकुतीकीनीअना
थ। रघुवंसतिलकराजाधिराज। इहउसहकवनगतभईआज। सुनीयेउकारसमसुरस
माज। धरिचित्तमीचदेधरमराज। नहीसयोजातयहदुषनिदान। पापीनप्रानकरिहैप्रियांन
कविरोवा। निम्ब्रैजबकीनोमरननेम। परिजनअतीउस्सहचित्तप्रेम। देवोवाचकवतछपै।
उसहदसासियदेष। देवअतित्रासउपजिय। इहनसीसअविधेस। सीसहसमायासफिय। कवि

नकालकोकाल। बेततिहनिकटनआवै। नवकुदिष्टनवचूत। नियतछिनमांझनसावै। मैथ
लीमांननहिचोजुमन। देवनतबधीरपदई। इहकपटचूतमायाबिल। नवअकासबांनीनइय
थए। कविरोवाच। दुहा। सो सुनउपज्यौसीयकै। साचौमनविस्वास। मिथ्याकरिजनमां नियै
अमरगिराआकास। २२। सोरठा॥ मायाअसुरअमांन। नयोनिरदमनयपस्यौ। नहीक
बुचलतनिदांन। कंटकरियाकोकपट। २३। राबनमायाराकसी। सबकररसौसमूल
एकउकुरीनअदिनतै। करमनएप्रतिकूल। २४। अथदूतप्रवारन। काचीपरीजुसबकरी॥
विद्याकपटविधांन। तबरावनरुघनाथपह। पठियोदूतप्रमान। २५। कवत। समयपायलंके
स। तहांबलदूतपठायौ। देवकटकमहउष्ट। असुरआतुरसोआयौ। ताहयहेतत्तकाल॥
कपिनप्रभुआगेकीनौ। धरमजांनअवधेस। निकटतिहबोलसुलीनौ। सुरकाजरामनर
हरसुकवि। राकसवंसविनासरिन। तहारसहसहेरतदूततन। महाराजउच्चाहमन। १०।
राकसनामलोहितास। अतिबलीबुधबर। विहनदूतव्यापार। समझपठियोलंकेसुर। इह
असंकअविधेस। जगतपतआनजुहारे। दयासिंधदेवाधदेव। गाहरबैगारे। सुतबंधवराव
नकुसलसौ। कहौकवनकारजकरत। आगमनहेतकहीयेअषिल। कहाजुतुमरूवि
चारकृत। ११। तबदससिरकेदूत। समयउतरअनुसरियौ। अपनैप्रभुकोपाय। उबिगोर
ववरियो। ब्रह्माअरुसुरगुरविचार। उहारावनपैआये। जुगकरअंजुलिजोर। संकजुतव
चनसुनाये। सबकसपकोवंस। कोपकरिनासनकीजे। देषजथाअपराधदंडदीरघल
घुदीजै। दनुदेवमनुजकहअनयदे। प्रभुकबुकरिसपरहरिय। करिसमाधांनविधजीवकौ
कहिवचनअज्ञाकरिय। ५२। दुहा। कारनतुमपैकहनकबु। मोहिपठयोराम। रांवननितधूजा
निमत। आपगएसिवधाम। २४। श्रीरांमवा। करिआदरतबहूतको। योंदूबौरघुराय। कसौ
नकबुलंकेस। जोमनरुचैतोकीजियै। निरबैरामनरेस। पेष। तोकहपठियोकाजतिह। सो
धोहमहिसुनाय। २५। दूतवाच। सावधानचितकै। सुनह। कह्योजकबुलंकेस। जोमनरुचै
तोकीजीयैनिरवैरामनरेस। २६। कवतबपे॥ सुरपनषाजुविरूप। करियतुमअवतनकीनौ। हम
सीतातवहरिय। हारुनतुमहिउषदीनौ। अंबुधजलपरआंन। सेतपरबततुमसांधे। सुत
मेरेसंग्राम। नागपासनतुमनाधे। नुवटरेनहीनवतव्रता। प्रगटकरमफलपाइयै। देष
तुषदुहमहिदुजरामकौ। सियलेआपसिधाइयै। ३३। [illegible]। सिंधकरिकुलंकेससौ। य
हजोपैअविधेस। समरसुरासुरकौउसह। कटिहै ततौकलेस। २७। परसरामकोचापगुन
पायौविनहीप्रियास। साटेताकेलेसिया। उनग्रहजाकप्रकास। २८। करीविदातबहूतकी
रामचंदरघुराय। नीतधरममनकोनिमत। सबैकह्योसमझाय। २९। श्रीरामवाच। मंदोद
रिरावनमहल। आपहीयएकंत। समाचारएदूतसब। कहीयेतहानिचित। ३०। कविरोवा।
आयोफिरवसीठउहां। सुनरघुनाथसंदेस। ताहीबिनप्रतिहारतहां। लेगुदरस्योलंकेस। ३१।
रावनअरुमंदोदरी। बैठेसदनसुजाय। सुनिबैकहसंदेससो। लीनोउतबुलाय। ३२। दूत
वा। मोकहचलसंदेसमुष। आपकहेअवधेस। कहिरूप्रभुसोजोरिकर। सोसुनियेलंकेस॥
३३। रावनवाच। तुमअविजेकेरामतहां। सानिधसुभटसमाज। कैसैबैठेजुकहहु। कौन
करतहैकाज। ३४। इतलोहिताजवाच। बदप। मघतुचाकनकमनिरतनमांन। चनमंडु

लविवधविधवीनत्रवांन ॥ सोदइलबनन्हतलविबाय ॥ राजततिहपौढेरामराय ॥ वामंगधसीजय
धनुषवीर ॥ रजिदबिनदिसत्रहायतुनीर ॥ बधकारईइजितईइबांन ॥ त्रामितकरदहिनवंस
नांन ॥ काटेसुकुंनतिहनाककांन ॥ लुवकाटरूपकीनोनयांन ॥ समजवामुगटतिहगोदसी
स ॥ अनसंकतसोवतअविनईस ॥ जिहअबयअकंपनहतेआय ॥ ज्वालानललंकादइज
राय ॥ तहांधरेअंकपायनउनीत ॥ वातसुतपलोटतपदविनीत ॥ देवाननरातकहतकदे
ष ॥ विस्विसरामविहसविसेष ॥ कबुकहतवभीषनबचनकाज ॥ सोइरीझसुनतहैमहारा
ज ॥ इहभ्रातविलोकेअविधईस ॥ कृतमंभलवकुधांनालकीस ॥ दीनोसंदेहजुरामदेव ॥ सो
तुमकुसबकहिकृसनेव ॥ श्रीरामवा ॥ वामनदियइइहास्वुरगवास ॥ सुरनिवाससबसु
षनिवास ॥ पुनबामनबलकहदियपताल ॥ सोविमलसततहांवैनवविसाल ॥ हुजराम
इजनतुवलोकदीन ॥ करिमिलजउदकसंकलपकीन ॥ हमरइवभीषनलंकहाथ ॥ सोइ
सेवाततपररहतसाथ ॥ लेदीनीएतोतीनलोक ॥ अबऔररहेनहकरूंथोक ॥ सोदेवहि
तुमकौसिधकाज ॥ जिहवोरबैवतुमकरकुराज ॥ सबनीतआपजानतसकाज ॥ रहगैर
नसंनवसिधआज ॥ दुहा ॥ सिधइहांनसंनावना ॥ यहतोकबकुनहोय ॥ सोरावनसमफंत
सकल ॥ कहाकहैअबकोय ३५ ॥ इतिहृतलोहितासहपवग ॥ अथरावनवतमंदोदरीवाच ॥ रा
वनसोमंदोदरी ॥ एहकहेअकुलाय ॥ अबतोकबुऔरैभइ ॥ तासीकहावसाय ३६ ॥ समय
कतीजबसिंधकी ॥ तबतौकीनीटेक ॥ आयौअंगदहृतयहां ॥ आपनमांनीएक ३७ ॥ रांव
नहितुजोरावरे ॥ सबैरहैसमझाय ॥ जीनकेमंत्रजुनीतजुत ॥ एककुवितनआय ३८ ॥ कव
त ॥ उदधसेतबंधियौ ॥ उतरिइहतटरिउआए ॥ वारवारदलउसह ॥ रोषसयांमसझाए
भ्रातछत्रनटनिरे ॥ सुतौकबुकाजनसरियौ ॥ धरमसामतउरधर्यौ ॥ कृतरिनउर्धजस
करियौ ॥ कीनोकुलनासउलिस्तकौ ॥ अरुषलसोबाढीषइ ॥ कहाएवियकारनसिधकी
नलांजुपीवइब्यानई ५४ ॥ दीनदेषनगनीसउष ॥ नासाश्रुतनासीय ॥ वीरभ्रातमातुल
विसेष ॥ सुतमित्रविनासीय ॥ उरंगदाहवारुधहिबंधसेनासंघारिय ॥ नयोवभीषनजि
यततोहि ॥ लंकाइधकारिय ॥ एतेअनरथसुनसुनअसह ॥ हमकुवियादाहतदियौ ॥ पवि
योजौअबकूहृतप्रिय ॥ कवनसिंधउबवकियौ ५५ ॥ दुहा ॥ कुंनभ्रातसुतमेघसुर ॥ रि
नमरननएजुराष ॥ आसापियबलवांनअब ॥ अबकुजियनअभिलाष ३९ ॥ छपै ॥
समयवितीतसिधि ॥ कंथयहमंत्रजुकैसो ॥ लेरलगावतलोन ॥ जरेउपरकोजैसो ॥ भा
वमंऊजोविषम ॥ सोककागीतसुनावत ॥ सबैसुरासुरसुनत ॥ इहांकबुवितनआवत ॥
संसारवगटअहंकारसोई ॥ अपनौऔरनिवाहियै ॥ जलडूबतगहरतरंगज्यौ ॥ हाथ्रिय ॥
हाथनवाहियै ४० ॥ कछुकालअतिकलह ॥ नयोदेवासुरन्नारिय ॥ कबुवितेतहांक
लपउसहनवनृतउषारिय ॥ बलविधानवितिय ॥ मनकुहरीहरनयमान्यौ ॥ महासक्त
कौत्रास ॥ उवरसुनधानजुआंनौ ॥ रामसौकूंबलरिहौरनहि ॥ यतुताजुरूकुलंकपत
ज्यौलरीदेविदुर्गासकप ॥ असुरवयरकपिनासअत ४१ ॥ रांवनवाच ॥ सुनबोल्योलंकेस
कपटमंत्रहृतजुकीनो ॥ परससरांमकोचाप ॥ दावमैलयनजुदीनो ॥ नारायनकोधनकबां
न ॥ अपनैकरआवतवासवसंयुक्तविद्दुनियततरिनमारनसावत ॥ तोप्रियाकाजतेरे

१करि॥ लिब मीदासी जावती॥ तौ काढि अमर निज लोक तौ॥ वड्कुटअ सुरषसावती
४२॥ ज्यौं म्रघेस गजमार॥ थापक टियकुंभस्थल॥ लेत कवल रत्तलिष॥ कै जविषरि मुक्ता
हल॥ यह जु राम अपांन॥ मेलवन्न वरदलमरकट॥ मैं नुज बलमै थली॥ सो जु आनी अति
संघट॥ सिस कट्तकंव बंधे सफल॥ जतन कर ततिहि देत सो॥ नन मौ रकषाय अघाय मु
ष तपसी ई बतसियहि तौ॥४३॥ अथ रावन गुढ होम प्रसंग वरननं॥ कविरोवाच॥ दुहा॥ जो
र जोर कीनै कपट जुध॥ निरफल गए निदांन॥ दससिर वाद्यौ दुसह दुष॥ उद्यम करै न
आन॥४०॥ छंद उधोर॥ अकुलाय रांवन आप॥ परित्रास उरषद पाप॥ इमौ विकल चित गुर
थेह॥ निस अरध मक्कस नेह॥ सुक कउ जुना एसीस॥ उह दई स्वस्ति असीस॥ उनजोरक
र पर पाय॥ सब डसर डु डस सुनाय॥ रावनवाच॥ बे आय बत्तीय बाल॥ वनजती वेषविसाल
जटजूट सीसे सजोप॥ कर धनुष बांन सकोप॥ कटिकसे सुभ्रंग निषंग॥ तर पत्र आवृत अंग
लस उर नतु रषी माल॥ वउ भुजा कंध विसाल॥ वनदिरघ नई न कवित्र॥ मनुरत पंकज पत्र॥ मु
ष कमल सोभ अमाप॥ प्रतिअंग दीप प्रताप॥ आजांनुबाहु अंग॥ उपमेय वर जित अंग
संग भालकीस सहाय॥ यहां जूथ जुथप आय॥ सिर जलध बंधियसेत॥ सुष उतरि सैन स
मेत॥ इह लंक घेरिय आंन॥ प्रतिद्वार जुध प्रमांन॥ परिविषम युध प्रहार॥ सब नयो असुर संघार
षल सार सहि परषेत॥ सुत बंधु सुनट समेत॥ रनकुंभ मरि जसराष॥ सुत ई इ जित सुर साष॥
अब रहे चतुरथ अंस॥ सब विनस राकस वंस॥ कहु चलत नही बल कोय॥ हम माक यह गत
होय॥ महि राम कप दल मांझ॥ सोर सौरि न दिन सांझ॥ दुहा॥ सुढ विवर रांवन गयौ॥ सुक जु तुम
से गुर सदय॥ हम मह अैसी होत॥ सुन सुन दससत सुरेस सुर॥ ईह कछु करम उदोत॥४१॥ सुकवा
सुक कहौ लंकेस सो॥ होनी होय सु होय॥ नुववलिष्ट न वत व्यत्त॥ कहा करै तिह कोय॥४२॥ नही
सुरासुर वस नियत॥ संत अंतक कउ संग॥ अकंनाव संभावना॥ नावी करै अनंग॥४३॥ सुक्राचारि
ज सुन सबै॥ दए मंत्र उपदेस॥ जाय करउ यह होम जप॥ सिंध काज लंकेस॥४४॥ अविघन जो
पै होम इह॥ हुर न होय प्रमांन॥ ताते कै हौ अजय तुम॥ दससिर यहै निदांन॥४५॥ कविरोवा
कवत॥ सुक मंत्र उपदेस॥ यहै रांवन सुन आयौ॥ वसगुर रचन विसाल॥ बौह उरग रन सु बायौ
मन अपनै त्रनमात्र॥ जगत नव न्हूत सु जांनत॥ अब कउ दीउ र अंषि॥ पतित पन्नद्र रूनविआनत
ससि ज्यौं अंगाल मृघराज सौ॥ कुदिन हेतक्रीडा करत॥ कंटक सौ बल इह होम कौ॥ आपनास
कत अनुसरत॥४४॥ दुहा॥ गुढ विवर रावन गयो॥ कपट होम के काज॥ आंन करे सब सिध यह॥ समेत
चित मष साझ॥४६॥ छंद उधोर॥ गति विवर नौ दसग्रीव॥ सो लग पयाल हि सीव॥ एकांत अजौन
अवास॥ निसकर तहै होम निवास॥ अनपरस मंजित अंग॥ आरंभ होम अनंग॥ विधवसन ध
त वनाय॥ यहां थप्यो आसन आय॥ संकलप कत रत साथ॥ हित नदक संयह हाथ॥ कत
कुंड विहत विसाल॥ किय अनल प्रगट कराल॥ समधी जथा विध साध॥ परज्वाल रहि उपाध
हत मौन सज्जीय वीर॥ धर ध्यान मुद्यत धीर॥ विध द्रव्य वार हि वार॥ आहुती मंत्र उचार॥ रथमा
हाह यजुत राज॥ अरु सकल परकर साज॥ सम सस्त्र अस्त्र निसंग॥ उन चाप अप्रब निषंग॥ प्र
तिअंग कवित्र प्रमांन॥ इत्याद नारथ आंन॥ कत अनल कुंभ मझार॥ यहां उचित मंत्र उचार॥ धु
ब अनल उठियधौम॥ वसवाव तैं वट वोम॥ दुष नौव नीष नदेष॥ वाढ्यौ जु सोक विसेष

वभीषनवाच। हैगुढथलयहहौम। धाराजवढिचढधौम। तबकुरगपविियेहत यहलाकसो
धत्रन्हत। कविरोवाचाडुहा। सुपैड्तसबनेदसुन। यहांकपिदलमहआय। विवरवभीषन
सोसविधि। बातैकहीवनाय। ४७। वभीषनवाच। कह्यौवभीषनजोरकर। रामसुनकृमाहारा
ज। इयौलंकेसनिकुनला। कपटहौमकेकाज। ४८। काढतरथलेहोमकर। अगनकुडतैओ
र। आयुधसककवसोजसब। वीकवौरकेगौर। ४९। गवनतासरथन्हगिगन। जथागुप्तकैजाय
उहरथजौषलआरुहै। अपनीदिष्टनआय। ५०। आयुधधनुषअनंगते। सेहीअदसयतुनी
रविसषमोघजोकवचवउ। सहजअनेदसधीर। ५१। जोयहनिकसतरथसजय। अजईहो
ऋषलआप। देनसुरासुरसाधइह। पापीत्रउरथता। ५२। अबयनुसुनियेमंत्रयह। होमवि
घनजिहहोय। याकेसबकारनअफल। सिधनकारजहोय। ५३। श्रीरामवाचाबंदउअषरी।
रामकह्यौतबसुनकपिराज। करियौहौमविनासनकाज। हवमरकटन्नटबलीपठाव
ऋ। होमविधुंसकरीफिरआवऋ। कविरोवाच। सुग्रीवनएअंगदहनुमांना। वानरसंगसुन
टबलवांना। निकसचलेप्रभुकौसिरनाए। ~~वांनरबुरेजिरिदिमतबल~~ रिदयराषमूरतरघुरा
ए। उहांकपिलंककोटचढआए। भेजदएगजवाजअबाए। वांनरबुरेजिरेहिमतबल। हवधा
वहिगढन्नयोकुलाहल। यहाजितेराकसमुहिआए। समहरकपिनसौमारनसाए। उनसो
उहौमविवरनहीपावहि। दूढतफिरथाकारढहावहि। होमविवरषोजतकपिहारे। दसदि
सधावतहोतडुषारे। सरसानैमराकसीसुदर। कृतीवभीषनत्रियान्नकहर। दिसदिसधा
वतमरकटदेषे। विकलनएतिहत्रियाविसेषे। वनितानैननसैनवतायौ। डुगमविवरद्वारद
रसायौ। दएैकपाटविकटसिलद्वारे। निकटआयसोवीरनिहारे। बालउतसोसिलाविदारी।
महावीरपदलातजुमारी। विवद्वारसोउघर्यौविसेष्यौ। दससिरहौमकरंतौदेष्यौ। इहांक
पिहौमविवरमहआए। सबैउपद्रवकरतसबाए। चषमुदितजुतध्यांननिसाचर। बैगोइढआ
सनसाधेबर। रुरैनरावनफिगैनफेलै। वीरपचारततदपिनबोलै। बाकारनकपिजुधमहा
बल। षेवरडूतनहीतजतमौनषल। यहांअंगदयह मंत्रउपायौ। आसुरकैअंतउरआयौ।
दुहा। अंगदपैगैकूदउहां। रावनकैरनवास। फेलतयहहयहहअतिअफर। त्रियनदिषावत
त्रास। ५४। अकमासतदेष्यौइहा। वांनरदेहविसाल। जूथपन्नगीमृघराजज्यौ। वनतानइविहा
ल। ५५। सुरआसुरकिंनरसुता। नागजहसुतनार। समयविचारतअतिसनय। रतियहउ
रीउकार। ५६। कवत। अंगदअतिबलउमगउहांअतहउरआयौ। कवहाहायहयहनउस
हनयजुदरसायौ। नामनतिहबिननाजनाज। वतिमिदरपैसी। त्राहित्राहिकरिरुदत। क
हैहहनईसुकेसी। जुवराजफेरदूढतसजय। महलमहलमंदोदरिय। पावतनकहूप
टरागनी। परवतचितचितापरिय। १। चित्रयेहथतिमाविचित्र। वनिताजुवनाई। मयतनियाति
हयेहमांक। उरकंपतआई। मिंदरतिहउतरीनमांक। मिलगइमंदोदरि। अंगदषोजतअं
गअंग। सोलहतनसुदर। कपिपकर्यौजुसंभ्रमचितकछु। हाथनमेलतचकितकुव। हेविम
नसुधाकोषोजहव। नटवाडौतबद्वारनुव। ४१। सुरकिंन्नाइकतहां। उचितअविलोकतअंग
द। नैनसैनसंज्ञानिदान। तिहंडवतांइतद। फिरपेगैतिहयेहफांद। अंगदईधकाइ। उर
कंपितअनुसार। त्रियालंकेसुरपाई। करिकरिषबेचकादीसुकपि। जानमृगीमृघराजज्यौ।

धकधकीपरीवतिपायधक तरनविलोकतनीतज्यो ४६ डहा फककोरतगदिगदिगपट
वानरतियाबिहाल जलजलतागजमज्यो अदीलतअसराल ४७ कवित अवसमनह
अबेअोचेत इहांबादिरआनी बुदघंटकागरबुटि टुटिनीबीसथलानां फटिकंचु
कितनपत्ताफेल हारावलटुटीय मदनउरीमनुवईरमांन लीनीसिवलुटिय आनीकमो
रकुचकरषयहां दोमकरतरावनजहां हाहाबलिश्रजावीअसह तिहनसुरासुरबलतहां
४७ मंदोदरीवाच सुतबंधबरनंत्रीजुसुरा जूझिजगजांमो रिषपोलिस्तकोवंस पथ्वीजयो
नासचमांमो उनिजुवनीषनअनयपाय चनतागउपायो करकरषिकवकपिन उसहउ
षवियनदिषायो इममांफ विपतएहोतहे प्रियमंत्रमीनजुपहिहे तिहवलविसिसलंकेस
तुम कितेककालअबिकहिहे ४८ अरिकिंकरघरआय अबलकृतमुरउघारे केरफेरपट
रमनफेर इमअंगनिहारे सकलहारसिहार तोरफारेदसदिसतन सुनीकरतअनसुनी
मंत्रतुमजपतमोनमन जिहजीवनहेथिकारजग जुपैकजपसतजीजिये अचहिआनउ
जनउसह कियपराकूसअबकरिये ४९ कृतमेघनादअोनहीयह मरेउतजुमेघनाद सोजु
नांहीयहअवसर मोजेसीतिहमात वीरसोयोरिनद्रूपर करगहिकचतिहकपिन अैचपति
आगेआंनी कंथमोनजपकरत आंषषोलेनअज्ञांनी गुनअहंकारलज्यागए होमकरत
जिहजियनहित कहिनीतधरमनरहरसुकवि वरनातेमरबोविहत ५० करमरकटकर
मांफ रटतहाहामंदोदर इमअनाथजोयही कहाकरवदोहोमकर कंथपानयहकरे
अबलतुमआदजुआंनी करतेईवानरकच धायलूटतरजधांनी अनमईननईहममाफ
अह सोत्वसुरासुरसाषिहे उषसीकसिंधरुबतउगम इमहिकहोकोराषिहे ५१ कविरो
वाचछंदपैअषरी चोलीफटीतुटीहुडावल वि[illegible]गलतवसनदगनअंजनवहा अंसु
अषिनतउरघउसासा उरनासीअहवातनआसा छटेकसनतन धकधकछाती
रोमउनाररीषद्रगराती करमरदतविलियावलकरकी तनरोमांचकंचुकीतरकी चकि
तमृघीसीवरूथांचाहत थकीविपतसिंधुसोथाही मगनन्चहउषसागरमाही चकितमृ
घीसीवरूथांचाही निरषतकछुअविलंवजुनारी पटरागनमरकटपरनावत विषअम
रकिंनासुषपावत नानेकनकरतनमयनूषन करीसुजंगमुकतावलकनकन ज्योज्यो
कपिकरषहिफकफोरत मिलमिलसौतनसतमुषमोरत असीउषदहसाअकुलांनी रा
वनआगेवाहीरांनी [illegible] तबतुमकंथकरीबुधतेसी अबइममांफननईगतिअेसी
आपमोनगतवषनउघारत मरकटइमहीअसहउषमारत कृतयहहोमवियक
रिहो मांनगमायउनहितेमरिहो सबसुतघातननीजसंघारे मित्रीसुभटमरकट
नमारे असोपतितुममंत्रउपायो रिषपोलिस्तकोवंसनसायो इमहीपकरिअेकपिलि
जेहे कोजांनेतेकेसीकेहे किहकाजेतुमकरतहोमक्रम देधीकहानदिनमनजतहमु
रहीउकारमंदोदरिरानी यहमनमांफगिलाननआंनी परमदुषितमयसुताउकारत ई
द्रवृतहेतनआंषउघारत डहा पावतजिह्वसादरूप कुलवेनवअहंकार सोतोतु
मयहदुधसी करैसबैषयकार ५२ कविरोवाचछंदपैअषरी देषत्रियाविललातदुषारी
जोहनुमंतक्रोधअतिनारी विहतहोमसामांनविथारे साकुलिलेदसकूदिसफारे

वारमेलकतकुंऽबुझायौ । उनरावनकबुअनपायौ । मुऽअवाकरयहेतुमास्यौ । उ
नथापटदसमुषहि स्वास्यौ । उसहलाततबनरमहिदीनी । कपीइतादअनेसीकीनी । विन
स्यौहीमसुमनदिविवास्यौ । कैउद्यमहतरावनहास्यौ । काजहीमकपिहांतौकीनौ । उनकं
टकतवपापवीनो । जोगनीझातेजाम्पोजैसौ । कालकरालवलयकोकैसौ । उष्टगदालेक
रमरकटदिस । रावनधायौचित्तमहारिस । अंगदमारुतबाहिरआये । धीवदसाननपीवैधा
ए । कौतुकहोमविधुंसनकीनो । निसचरउरवहिदाहनवीनौ । कोटकुदकंटककेसंकट । मारग
गिगनगएतेमरकट । एविजइकपिदलमहआए । नलेनलेसबहिमननाए । रामचरनतिन
लेसिरनाए । कवत । सुनेसुकउपदेस । करमआरंनहोमकत । विवरगुढगढवीच । हवजु
तहाबैववजयहित । मारुतअरुजुवराज । सुग्रीअंगदयहआयौ । करउपदवअनेक । उष
उसहदिषायौ । सोइटरैसमयनरहरसकव । उरनयपस्यौअधीरकै । कीनौजहोमविधुस
कप । कृतवतापरघुवीरकै । अथरावनमंदोदरीप्रतीज्ञांनप्रबोधकरनं । दुहा । हैउपजत
हवकरमहित । उषसुषनावउरंत । जुगवतहैनवभूतसब । तितकेफलऽहीतुरंत । ५० । क
विरोवाच । छपै । देवाधीनउसाध्य । सबैहितअहितसुंदर । आंनमिलतअनवित । अषलस
जनअसहनअर । सुषउषकर्मसंजोग्य । इष्टअनिष्टअभासत । वसनवतअविसेष । प्रग
टमिटअोपप्रकासत । सबगतिजुएकनरहरसुकवि । लघुदीरघनहीलेषहै । जोजियतजं
तुबकुकालजग । उससहकहानहीदेषहै । ५२ । बद उअपरी । करिमाधीनअहितहितकारन ।
मांननज्ञांनप्रकासकु । निजमन । सोकमूलअज्ञांनसुजानकुं । पुनतिहनासकज्ञांनप्रमांन
कुं । उपजतहैअज्ञांनहिअहमत । मुढईनहीअपनोकरमानत । देहीदेहउत्रधनदारा । हैसबं
धसबकुरमवुहारा । हर्षसोकभइयक्रोधजुमोहा । दारुनलोभमहाद्यद्रोहा । जनमजर
रुमरनरुजमांनकु । पुनतिहनासकज्ञांनप्रमांनकु । देहाधीनइतेसबदेषकु । लोवनमध्यउ
घारसलेषकु । जगतत्वरावरविनस्तजांनकु । यांनीपिंऽसंजोइप्रमांनकु । निश्चयप्रांण
सुतौअविनासी । पूरनजोतअषंऽप्रकासी । सुधअलेपकसाधसुसंगी । आनंदरूपअरूपअ
भंगी । भावअभावविवरजितभांमन । हैवितरकसंजोगविजोगन । उहतनमैतौलौअपनाई
सोविछुस्यौतबगईसगाई । उहतौगयौकुतीजिहअहमत । रांनीअबकिहकाजैरोवत । हेत
बंधुसुतउनहमारे । जीवगयौतबतनलेजारे । जीयतकुतेसुजोतनजांनौ । वेदनप्रगटउरान
वषांन्यौ । सोकतजकुयहजांनसयांनी । पिंऽविनासविनासनप्रांनी । प्रियेकुजातबांधवयरप
न । रांमहिसानुजहतौमहारिन । यहतकुंटगदजीयतऔरकु । विपवसिधजगतजसपेकु । रांम
बांनलरिवाधमहारिन । रामजोतमिलहोंकैरावन । तबरघुनाथमाफमिलजाउ । विधयहक
रियोतोहिवताउ । वेदप्रणितक्रियासबकिजकु । दांनजथाविधदेषसुदीजकु । हमअज्ञासी
तहितुममारकु । धर्मपतिव्रतनिसचयउधारकु । कावचितावहिमौसंगकोमन । नवदकुवैजि
तकुतुमभांमन । सुषसाधेअहलोकसुनावक । पुनपरलोकसधकुजरपावक । मंदोदरीवा
चा । कवत । कहिमंदोदरिसुनकंथ । तुमकरतप्रगटपन । नएनकैहैनृप । रामसकोउविज
इरिन । बीसभुजादससिरविसाल । जदपितुहोजगजेता । मानकुअपनकितिकमात्र । सबकु
लकुसमेता । अैसुयंबलनरहरसुकव । आपधरमहितअवतरे । नवभूततत्रपुरदायक

अनयहेतुबनरहंताहरे ५२ ।छंदउग्रधरी। प्रथमकलपतनमछधकासो। वारबला
यमहसंषबिनासी। अरुनएकमगअसंषाआतम। भ्रमनअदक्कपिष्टसयनजम। आ
दिवाराहनयेअनुओही। महीअषिलरहअग्रविमोही। एहीनयेनरहरिअवतार। सनु
हरनकसपसंघारा। सुरपतिहितवामनतनसांधी। बलत्रयलोकहएतउबांधी। अ
सुरजएषलछत्रिआकृत। बीनलइइकबीसबारछित। सोइउजरांमदुजनदेरीनी
करजलमेलसंकलपकीनी। विहरांमरघुकुलअवितारा। अतिसुयंत्रसुरुपउदारा। कंथ
हतनतोदिनरतनकीनी। लोकप्रसिधजतीब्रतलीनी। तुमजोहरीसियात्रियताकी। वन
दित्रकेलवसतबराकी। पियपहकीनीबुधअपावन। राकसवंसनासहितरावन। रावन
ना। पारब्रह्महूजांनतरघुपत। सीतालिछमीयहेक्वनसत। मेरेमतयहसतिमंदोदर
मिलहुरांमरांमकरसरमर। सनमुषरांमबांनउरसहिहू। लोकउलजपरमपदल
हिहू। अबतौप्रियायहेमनआई। जीपेरहेजायसोइजाई। कविरोवाच। लंकापतीमरन
ब्रतलीनौ। कांमनितहंमौनमुषकीनौ। दुहा। होमगुढविधुसकृय। सोदंपतिसंवाद। सुरासु
रननरहरसुकवि। वादोवयरविवाद ६० इतिरावनकपटहोमविधुंसनंप्रसंग॥ देषबो
धमंदोदरिहि। रिसरसराकसराय। बाहिरआयोबलतसेवेगेछआवनाय ६१ युत्रजतीजे
सुनटउन। पौरषहेतसहूर। मारतक्वेजुमरकटन। सोमिलबैठेसूर ६२ रावनवाच। रि
नमारेजेएकसन। हेरहेरहवहोय। आंनजिवाएयमृनउन। कपितेमरेनकोय ६३ हेस
बहूकैसांमहित। विषमजुधकरिवीर। अंसवतुरयमआपने। सेन्यारहेसधीर ६४ निस
चरतुमविद्यानिपुन। कपटजुधबलकाय। कारननासजुअमरकुल। असीकरहुउपा
य ६५ कविरोवाच। बैचरवंस पधारबल। रनवटबांधी रामन। हूइहाहारवलंकम
द्दे नीथससहनिसांन ६६ छंदपधरी। उतमजलमंजनकरियअंग। तुंनकरेमंत्रविजइप्र
संग। विधवरनवरनवसननवनाय। वितरुवितविवधसुधोचढाय। सनाहकसेपतिअंग
सोह। उनरियमबहूहनअरोह। तूटतकसनतनफूलतेष। रसवीरविकटभृकुटीत्रे
ष। आरक्तनइनतनकचउनार। संसारमनहुकारकसंघार। कवित। दसनिषंगकटिक
सीय। दससिरषलदारुन। भृकुटीदसकुभ्रुदजंग। सकललोचनअतिसारुन। दसद
स्तनकोदंड। विषमविजइटंकारव। धुनितबांनउधरा। अतीरावनरिनउबब। सऊसयसि
धसकल। विषमवयररिसउरवसिय। हितसमरमरनआनंदहुव। हवकंटकहडहडं
हसिय। दुहा। ईषेमरनौआपनौ। अरुमातापहआय। पाइअज्ञापदवंदे। वेमआसीसजु
पाय ६७ मिलरावनरनवासमह। सबदिनसूरतसाज। आयोबाहिरआपइहा। वीरजूफ
उवाज ६८ छंदप। मिएमयकिरीटनगमुकटमंड। दससीससबत्रवनिकनकदंड। रथ
धजाजुक्तधजमंडरोप। आवरनसस्त्रसनाहओप। करबाजचषचसंजुक्तकीन। नगज
टतकनककंकननवीन। समरमुषचढोदसकंधसाज। वजवीरजुफाउवीरवाज। नेरीमृदं
गपनसंषतोल। बाहलीतूरतंककरालरनश्रंगनेरिफंडगरबद। सहनायढोलगोमुष
सद। दाकमयघातमृगश्रंगबाद। निरधारविविधअनसंषनाद। प्रतिदेसषंडसंजनवग्रमां
न। वाजंत्रविवधमहिमाविधांन। इत्यादिगिगनगतधुनिअनेक। वाजतिविधांनकरमुषवि

वेक। अह्लाद सबोहनमिले आय। सबसुधरवजती जे सुनाय। आरोह सुरथ रावनत्र
नंग। सुवकीलकमग्र अदिराजनंग। डिगमिगत दिसा ब्रह्मंड डोल। त्रयलोक त्रास मंनीत्र
तोल। धसमसत धरा परबत नदादि। अतिवेग पवन जल थकि अथाह। छंद तधीर। अनवि
वित असुन एक। इहां होय असुनग्र अनेक। रिवकिरन मंद धुवार। वहि समुष पवन विकार।
वट अजय सुर नन वांन। जहां गिरत आयुध जांन। नट होत नय वितनंग। अरुषिसत सं
दन अंग। कुंजतक गेर कुवास। वनजंतु काज विनास। धजअय बैबीथीध। पतिअहितसुवि
ध सिध। पलवार पंबिय उंज। गोमुषाब रहबगुंज। अनमित जोग पअनेक। तोउतजतनांहि
नटेक। दूहा। संबजंतु कुजत असुन। करकर सहकु नाय। मनुअंतक के दूत मिल बोल
त हेत विनास ६९। जो अपराधी रांमको। तिह सुन सुगन न होय। लोक वेद कौ धरम लष। कह
त यहे सब कोय ७०। छंद पधरी। सज चलेसे नव तुरंग सार। रज उडे गिगन चह नौ अधार। वि
तनिसा चकिच कि वियोग। सेना रज वट मारुत संजोग। सुर पंष धनुष टांकार सूर। प्रति अ
नीव जैवाजंत्र सद्द। हय हेष गरज गज वीर हाक। डहडहे नव रुजोगिनि नियडाक। सब
नए नाद मिल एक संग। श्रुति अकास मंडल पतंग। घन वलय काल जनु गिगन घोर। अति परी
त्रास सुव लोक ओर। मिल सातु सिंध मरजाद मुक्क। सरसर त गहर गए नीर सुक्क। दिगपाल उ
रि द डिगमिगत डोल। अतिपवन गवन थकित अलोल। गज मत्त वले अत दिरघ गाज। वस
वात मन कु वाद रविराज। बिरदैत मिले असुर उबाह। रिन उछक पन जुधर विनिराह। रिन
[illegible]चढ़ौ आंन रांवन सरोष। दिगपाल साल रत देव दोष। कवत। देव राम तन दिष्ट
रोषरव मार मार रिन। डगफ टिय हहसदंत। निरषत नवरन सुअंजन। अतिअवंक स फियअ
लेक। आयध अभ्यासी। पाप नयान षरूपवेष। तिहांमरक त्रासत। नय चूत वरा च
रमां नैनय। दिय कातर आकंप कुव। दसवदन अरुन दारुन उसह। नट आयो सयांमनु
व। अथ रांवन जुध वरनन। रावन वाच छपै कवत। सो ऊं रांवन समर सूर। कंटक त्रयलो
किय। गिरत सुरासुर ससत्र। विषम रिन मोहि विलोकिय। मैकं उक जिमकय जास। केलही
हरजु तकीनौ। क द्विमांनु षतकवन। दाह सुरपत उर दीनौ। करिजूथ सहाय कहीनक
पिं। लांघ सिंधु आये लरन। अभिलाष ह्रिकरि ऊं अबै। महागर नवाढ्यो जुमन ५४। त्रिया
जाति ताडिका। दीन द्विज राम विनद्दल। मिरघ कनक मारीच। बधसु उहकि कियो कहा बल। सप्त
ताल जह तरु। छुद सुदेह मृतक डिग। बाल साषा मृघ वराक। हतिग रन ताहि लग। को जयौ
वीर तै जुध करि। मिथ्या अहमत वहतमन। कोदंड बांन संहारकर। रेका कुस्य संहाररिन ५५
कवि रो वाच दूहा। राघव वदा देवि रथ रिन। रावन रथ आरोह। दिषी वनीषन नौ उचित। दियवा
ढ्यौ उर बोह ७१। वनीकन वा। रांवन षोड स चक्र रथ। सजि सन्नाह सधीर। कै सैं जीतऊं गे क
लह। विना कवच रघुवीर ७२। श्री राम वा। सुन ऊ सषह मयह सुरथ। जगजीत दिबलजादि
जद पिद ससिर वीस सुज। यह केत षल आदि ७३। अथ ग्यान रथ बोधनं कवत। सुरातन धीर
ज सुचक्क। सील सत धजा दंड थिर। उरपरहित कृत बल विवेक क मनु गत वाजकरि। छिम
दया समता संजोग। कन राम जुबंधिय। विम्वइस सिमरन विस्वास। स्वारथ रथ सधिय स
तोष षडग दांन सफरस। वीरत चरम बुध सक तवस। संसार विषै विजइ समर। सुकवि कहै नर

हरसुजस ॥४६॥ सुनजहान मिलसुनद ॥ ज्ञानबंधवगलगजिय ॥ बिग्यविदतविज्ञांन सदृढकोदंड
सुसजिय ॥ मनथिरतातुनीर ॥ नियमसंजमदमसायक ॥ सुरगुरनितपूजासवेम ॥ सोईकवचसहाय
क ॥ अबरनउपायया समअविल ॥ देजुविजीबिनविजयहित ॥ सोउरथारूढनरहे रसुकवि ॥ नि
गमहेतहमरहतनित ॥४७॥ दोहा ॥ मांनवचीषनवचनमम ॥ सषासदितविश्वास ॥ अबदसकंधर
उधयहु ॥ निजकृतपैहैनास ॥४८॥ कबित्त ॥ छंद अषरी ॥ उतरावनईतरंभअगंजिय ॥ समु
हेरवदेसेनधनसजिय ॥ असुरसमूह जालकपिआए ॥ सांमअग्रअतिरोषसहाए ॥ रहुघां
सेनघटादरसाइ ॥ अतिबलजलजरिनवरषनआई ॥ असुरअनीगजघटासुआवही ॥ दंतपंतम
नुबकदरसावही ॥ तपतकुंतहिनकरकरतैसे ॥ जलदवितांनसुरंगरंगजैसे ॥ अनलफिरेडलसमु
षआए ॥ दिघजमबदजादरसाए ॥ नेजासुरंगमेघतहांताने ॥ पवनवीरअनकूलषमांने ॥ विवधजु
झाउवाजतवाजे ॥ जैसेजलदमेघघनगाजे ॥ आयुधचमकतकरनअधारे ॥ विजुलिताचमकतवर
षारे ॥ अतिसरलैसुरयीधजवारही ॥ पेकिधूमतमयूरउकारही ॥ इन्द्रधनुषसेधनुषजुआहव
रोषसघोषहोतटंकारव ॥ पवनरोषचढिअतिछिबपावेत ॥ धीरसुजटवादरजनुधावत ॥ अमरचमूरी
ब निकोआवन ॥ स्यांमघटाउनहीमनुसांवन ॥ कपिजटवरनवरनउनकैसे ॥ जलदअनेकसुरंग
मिलजैसे ॥ अटकनिवारनिकटदलआए ॥ रोषारोहबोहबलबाए ॥ सघनघारसेछुटेअसुरसर ॥ झीक
सस्त्रमनुझलागीझर ॥ कपिउरलागनिकससरकैसे ॥ परबतमनकुपनगसेपैसे ॥ धरिहैदरतरुधरघन
धारा ॥ झरनाअरुनधातसेझारा ॥ रोषकपिमसिरअसमरहुटही ॥ बदामनकुपरबतपैछुटही ॥ अंगनबा
नतैनिकसतऐसे ॥ तूटतनबत्रगिगनमनुतैसे ॥ तोडतकपिराकसमुहनतर ॥ असनपरतमांनउगिरउ
पर ॥ धायनकंदररुधरचलेघन ॥ परबतसिरवरषतमनुघूरन ॥ बकुसरधावसुभटघटबीलत ॥ झरना
मनकुपवनककफोरत ॥ वरषततरपाघरनटवांनर ॥ काटनचरनअसुरबाहरकर ॥ हयहैषतमा
चोहाकूबव ॥ कातरकंपवीरमनउबव ॥ बानररनेषदंतनबाहत ॥ वकुघांकूदलातदेचाहत ॥ मुहरा
कसघापटकपिमारही ॥ उनिअतिबलमुष्टीनप्रहारही ॥ पकरिपायकपिराकसपटकहि ॥ हियचढवी
रदउदिसहटकही ॥ देहउबारबलीगहिननदिस ॥ महिपीदढाटहिकेतेमिस ॥ फारहि
उदरनषनगहिफिरही ॥ मुहषलचढेसुमारनवेरही ॥ महिलोटहिमरकटकेमारे ॥ दिवसन
येमांनडुमतवारे ॥ छितमुषरुधरधारघटछूटे ॥ फबैकसरबमाटमनुफूटे ॥ करवतधायअ
रधधरकाटत ॥ वीरडडूघरआघसुबाटत ॥ गरजचजतमनुगोलीगोल ॥ आयअसाढदी
रघलघुओला ॥ सोनादेतसघनरितुसमहर ॥ नाचतमत्तमयूरधरनधर ॥ चरूघाघुमरषेह
चढनचल ॥ महाअंधारमनकुरजनीमिल ॥ दसदिसितेपरबतकपिझारत ॥ महावीरराक
सनमारत ॥ काटितपांषईद्रहाकिय ॥ नाजचढेगिरगिगनमनकुजय ॥ करदमनचेम
हीरुद्रकैसै ॥ घायनश्रोनीचलतघनेरी ॥ पूररुधरपरसरबहार ॥ धरिनचलीसरितासत
धारा ॥ छंद पा ॥ कपिजालअधधरकटेकोप ॥ रिनदूकनिरतनपायरोप ॥ महिपरेमुझकहि
मारमार ॥ धरधसहिरुझकरिधरउधार ॥ उरफटेवीरधरिकेलअंत ॥ उरझतअनंगज
नुचरनजंत ॥ वांनरकरेनषउदरवाढ ॥ पवगांनमंत्रकूलाहिपढाढ ॥ केकांनश्रोनवच
कंतकूष ॥ मनरूपषालछुटिउनयमुष ॥ धरधरनिपुरेलोटतसधीर ॥ वीररसैसेउविजित
तवीर ॥ जालकपिनएनिरउनयजाग ॥ बलदेरउवहिकेईटेकषाग ॥ आझवटहैतकेउउ

रथअंग। अतिक्रोधनाल मरकट अनंग। करवत नकाव मनुषंनकीन। नट नटनाङ्गि बि
बरोषनीन। सिरकपि अवाहत असुरसार। बिजुलाकरत परबत विहार। कटि अंगहोत उ
टेकराल। षितपाल अयमनु निकपाल। पदपांन सीसविधुरेषमांन। जुधई दजाल बकूरू
पजांन। कपिसीस निक टिपरिरी बकाय। सिररी बदेह मरकट सुनाय। विपरीत सिषषग
धारवांन। अदभूत विरत जुधनयोआंन। परिवीर षेत बतिमा पहार। अंग अंग धावआयुध
अपार। उतर हि रुधर षित पंथ आकाल। षलकै जनु परबत दिरघ षाल। विपरीत बिनयोरत
विहांन। अवनीचय योनिध अवमांन। मिल रुधर सुपेम हिन हिसमाय। सतधार चली सरिता
सुनाय। कपिलात मारकंपदहि अकास। तिनकर दहि बगा बिबषंफतास। धर गिर हिकटे
मरकट सधीर। वीर रस रसे उविनि रतवीर। निसचार नाल कपि जुधनिधांन। नूतनन
वस्त तयहनयोन। जय जइतराम कहि कीस जोध। कहि रावन जय जय असुर क्रोध
दुहा। सह जमिलै परकर सकल। नच रावर नीत। अब बरनत अदभूत यह। रिन स
रिता विपरीत ॥६७॥ छंद वैअषरी। तहां उनय दल बनै विकट तट। सरिता नर्ई सहजरिन
संकट। रुधर प्रवाह सलिल चल राते। मंतत वीर वीरार समाते। तिरत कबंध तरंगन मिल
तन। जलक्रीडा सेकरत म्रतक जन। कटी कुंभगज मकर किलोले। दिसदिस कमवढाल
मनुफोले। पान कटे असी बिबपावत। धारा मिल मीन कुनु धावत। सित तिस्व वर फेनत
टसोहत। मिलक चउर कू सिवाला मोहत। ग्रीध काक हंस चक बागन। जलमानस सेकीड
तहकजन। सिलास दिरघमध्या तिरसिंधुर। तुटे ज्याफ तिरत रथ आतुर। चमनचक्र रथ भ्रम
तनयानक। वसन तरंग रंग बकुवांनक। ढाहा गिरत परत कुंजर टहि। वारु रुधर तिर उपर
बहिवहि। अतिस वेग तिर उपर आए। बन पन उहपन सेबाए। विसक सकत तन निक सफूर
व उ। सोह नए लघु दीरघ मनु अउ। पवन चव फाड विवध सिकसे। निरमल कमल नीर से
निकसे। बदिगज वालअंबारि विराजै। बतरी तिरत सरत विचवाजै। वीर उदर फटि अंतवह
वेत। मांनकु ग्राहतंत मुकरावत। अंत्रावलि जंबुक मुष श्रैवत। बेलमीन बनसी सीषेवत। जोधा
गिरे संबधारी जहां। तेइ तिरस बंध सरितातहां। महा सरिता चलि समर संकारी। नरे रुधरम
बरसरचारी। दरूत टसरिता घायलनारे। मनु कुअरध जल मरत उतारे। घित पांती पलवर
थट। तेइ मनुसहंस नोज सरितातट। विवध अहार लहै आमष वेस। दाकुर सिवार टतत टद
उदिस। नूत पिसाच बोलमन नाए। मरतातिह षेलत सुषपाए। पंषी नषी जुजंतु पलासी। विहरत जु
थ जूथ बनवासी। देत विलासरा सरस फाकन। हडहड वीरकरिहाकन। नूत अनूत जुकुं रहस्त
जनयानक। विकट सरी ~~बतरंगनतैतै जलचर म्रतक वहततन~~ जेतै रच नैसी वांनक। हर
षत नऐ सुबोलत हसहस। धावत समर विलोकत धसधस। तिरदिष नुषत रंगन तेतै। जलचर
म्रतक वहत तन जेतै। कटत धार रतसु नटकरारे। नूम गिरत लेजारत नारे। मंजाफेन सेत ति
हमोंहि। जनु वसवात तट नवट जोंही। बकु षग मनु षधरन परबैसे। जलरूप षेरत चवट जे
सै पत नरही जोगनि पनिहारी। तहां माजहित भ्रमन उरारी। दूटत कमल समर विवधावत
पेहर सरिता थाहन पावत। विहस पिसाच नवाजन सावही। जनु कपाजकरिता लवजावही
गहगह सुरसांम गावत रासदे तरिन विरत ... आवत असी ... की तहांवि

हसतहैनाथत्रलोकी। पलचरन्नयेत्रपतन्नबपूरन। रामहिहेतअसीसमहारिन। इतरु
घपतउतिराकसराई। दकुदलजूफतहैतदवाई। नावतमुषअरिनागेनागे। लरतरोसरस
अंबरलागे। नागेअसुरकपिकुननागे। गहिचटलरहिसिंधुजूगाजहि। मारमारकहिअ
सुधमारत। आपआपप्रभुजइतउचारत। कालरूपकपिमारहिराकस। भगटदेहरावनउरप
रहेस। गरजहिविषमनालकपिगाढे। बेलहिबलराकसदलगाढे। निरेनिसाचरमरकटनाला
करैपरसपरजुधकराला। राकससबैनिरेहितरावन। नयोमहासंग्राममनयावन। अतिबल
सांमधरमउधारहि। विनईरिनकपिनालविहारहि। इहादससीसवेलदलआयो। उससहमनु
परबतदरसायो। मनिमयकनककिरीटविमोहत। सिरदससवेतछत्रबिबसोहत। रथसिर
धजापतकाराजहि। विविधसस्त्रभुजवीसविराजहि। सोवतस्रवनकनकनगकुंडलमिल
चषरोषजरतमनुमंगल। तानतबांनधनुषटंकारत। अतिउससहविषवचनउचारत। विषम
धोहजादिसकरिवंकट। मनमुरझातजातसोइमरकट। छंदउधोर। हठईहांकपिहनुमांन
उनिआयजुधपमांन। दससीससोंचढदंत। वढवीररसबलवंत। चषरत्तषलहिपचार। उ
नहयेमुष्टीप्रहार। रथमधराकसएथ। तिहगिरयोचोटवितायं। कबुजबैवीतोकाल। सोउउ
ग्रसुरपतसाल। तिहषलहिदेषतुरंग। हसिकहोतबहनुमंत। करमुष्टीममधिकार। लहिजु
पैचैतलबार। लंकेसमुष्टीलाय। घटच्रमोकपितिहघाय। बिनमात्रउगिबगोह। हनुमंतरोषा
रोह। मुहुचढौउवहनुमंत। तजषेतअसुरतुरंत। हनुमंतवा। दहकहोहनुमंतआप। १गमाफ
उष्टसपाप। कविरोवा। उरपरयोत्रासअसेस। सोइनाजिज्ञोलंकेस। चितहनुधरमविचार। लागैपै
ननागललार। अथअग्निवर्णादिजुधवरननं। छंदउअभरी। सोचितअतिरेष्योलंकेसु
र। उठेसंनारस्यारतबआसुर। अग्निवर्णअदिरोमाअतिबल। षडगरोमविभुकराभाषल। भु
भुदिजुहारबांधपौरुषपन। रोषचढेआएराकसरिन। औचारूराकसउतआए। धरउरकोध
इतैकपिधाए। वीरबालसुतमारुतअतिबल। निकससेनतैसुनटनीलनल। राकसआर
चारनटचोनर। आपआपजूटेरिनअवसर। अन्योअन्यप्रहरेतरआयुध। जुरेवीरराक
ससनमुषजुध। सस्त्रअस्त्रउतइततरपाथर। नटकोउहटतनलटतसमरनिर। मुरेनहिन
परषेतमझारे। सोईषलवारूकपिनसंघारे। इनरिनगिरतदसातनआयो। बलबलमोहम
हामदगायो। दसतअधरदसरूमुषदारुन। सोकयसतलोचनअतिसारुन। रांमरांममुषक
हतलंकहतलंकेसुर। प्रलयअनलमारोषदिष्टपर। आसुरमनऊविलोक्योअंतक। धीरज
बुटेकपिनउरधकधक। अथइंद्ररथआगमन। दुहा। रथारूढदससीसरिन। विरथरामवनवी
र। ईइतहांअविलोकयह। अंतरनयोअधीर। ६८। सुरपतिअपनोस्वारथी। मातुलयोबुला
य। मेरोरथलेजाऊमहि। रामचढऊरघुराय। ६९। हरितबरथजोतेहरब। वेगपवनजुतवाज ई
दधनुषनाथाअवय। सदिटकवचरथसाज। ७०। मातुलवा। रिनविजइहितदिवरथ। इद्रपठायो।
आज। कहोजुमारूतुलजोरकर। रामचढऊमाहाराज। ७१। कविरोवाच। करेजथाक्रमपरि
क्रमन। वेदनविविधविसेस। रामचढेतिहदिवरथ। निश्चयविजइनरेस। ७२। रामनएआरूढरथ।
संपेषेसुरराज। महउपज्योविस्वासमन। सिधनएसुरकाज। ७३। छंदउअभरी। रथआरूढरा
मकहरावन। देषेउसहदेवदुषदावन। नयोसोचरामनउरभारी। तबराकसमायाविसतारी

ड सहअसुर मयअवनीदेषे । रावन रांम लषन अवरेषे । देवही सतुसैन मह देषत । विपरित
अद्भुत विरत विसेषत । नह के लब मन नाल की सदल । चित्र लिषेसे रहे चित्त चल । एक ही राम
न व्यापी माया । देष्यो राम विव सअपनो दल । विस्व स दीनन के वल । माया दूर करी बिन मांही ।
निरषेक पितहां कहू बनांही । दस सिर क्रोध नयो अति दारुन । रुप्यो काल के रूप महारिन ई
रघु
तरघुनाथ हां कआये । सकि सारंगबांन समुहाए । श्री रामबाच बाच्छै । कह्यो नास ताडिका सबल
षल त्र सर संघारे । सुपनषा श्रुत नाक बेद । माया मृघ मारे । कुरि मंजन तिह रुधरि । कुनघ
ननाद श्रोन घट । कलह नित्त कलकरिय । भगट मम चाप वे विपव । दससीस स्वाद अमषड
लन । सोइ पेह तअमोघ सर । विंजन अनेक राकस विवध । पाल दिघी रिनन मधिर । ५८। श्री
रांम बांम नुज बाच कं । मिले राम रावन संग्राम । दारुन अति उरधर । सुरविमान आकास ता
सबिन बयो निरंतर । करता न्यो कोदंड । रांम लंके सुर मारन । वधि दहिन सो बांम । कह्यो तिह
क्वन सकारन । नोजन सुदंान समिये अनय । सदा अथ वरती सुकर । अबन नयो पिष्ट गति
आपतै । ममय विषम अवलंब सर । दहन नुज बाच कं । करद ह्सनत बकसै । बाम कबुतंत
क्विार रूं । अनसम ऊँकार न अकाज । बकवाद वधार रूं । ममपल वनुग मुकत । यजत तौ
तौ लग अहै । मुष्टि ब्रुटि रिन मोऊ । नियत षलजालन सेहै । वनुअवन लगि उबत । पगट कं
टक मस्तक बेवकर । इक इक हतौ के धौ अबिल । इक हवै रासीस अर । ५९। इति नुजा संव
दक विरोदाव छंद उअषरी । धायो रावन अगनबांनधरि । काढ्यो राम सुअनिल बांन कर
इहा दिवत सर असुर अभ्यासी । विसक राम सोइ देव विनासी । सकै ससत्र जोइ जोइ
लंके सुर । सोइ सोइ बंकर तअविधे सुर । अबद ससीस उपाधा उपाई । सरपाकार बांन
समुधाई । सुरन चित्र विषव दन महा सर । पंक तअ सहपर त राम पर । वीषधर बांन दसान
वरषत । [illegible] हसत राम कौतुक कर हरषत । मुषते बांन अगनक नमोचत । सोला
गत तन नांहि संकोचत । विषमय विसषजाल षलवरष्यो । पापी कपट दसानन परष्यो । जि
ननित नाग समूह निहारे । समय राम तिह गरुड संभारे । इहांअपअरन बांन अवधेसुर ।
धरघुन मुष्टि दिष्ट सारंगधर । कवन चाप रघुवर कृत कुरुल । बाकू श्रवन मै लग तान महा
बल । छुटे गरुड बांन न नबाए । वकू वे दिस अवधेस वलाए । गरुडाकार अरिन तहा
गिन गिन । षाए सरप रूप रस बिन बिन । षगपत वयर नाव जगषाए । नाग सुबांन निसे
षन साए । छंद उधोर । रिस नयो राकस राय । सस्वाप करन सजाय । देवेस रथधज दंड
बिजक रेह तस तषंड । मातुल हिस रइकमार । पुनि अम्वसर न प्रहार । ड साध राकसदे
ष । वट उत्र सोक विसेष सुर राज सिध सुसंग । नये विबुध गनमन नंग । नयो व नीषन
उष नाय । कपिराज कपतकाय । जुधरांम रावन जोर । सो नयो कपिदल सोर । दकु वीर नै
रति वाद वद । विषम वय रविषाद । षलगरिज तहां षे चार । कहि क्वन सहित विकार ।
रांवन वाच । तेह वेरि दुहव होय । कहि तहां मो सो कोय । छंद उअषरी । रांवन रूं दिग वि
जई राजा । किये सुरन केस बेअकाजा । दीगपत कारा ग्रह गहि दीनै । कुविनय हन
पुरिपायन कीने । नांषत फरनगर न सुरनारी । विनता मैत्र य जो विहारी । सुरपत मोन
यसुषकुन सोवत । रात दिवस उषसासै रोवत । तै मारे त्रस राषस उपन । आधक रमकर

बालबिभूखन ॥ बाधक बंधकि तिक बिचारे ॥ महा आलसी कुंभकुमारे ॥ मेघनाद सो असम
यमारयो ॥ बसहै ध्यांन सुपैन बिचारयो ॥ दुसह बैर सबनि को देहो ॥ जु पैरा मनाज नहीजे
हो ॥ मोव सपरे नलिस मफै हो ॥ उनहु वक्र तजम सादन पैहो ॥ कपिराजा की उबक काट
रू ॥ आजब नीषन नुजाउ षाटरू ॥ कहा नाल कपि मारो कि किर ॥ बवलज्जात वराकव
नैवर ॥ श्रीरामवा· ॥ १४ ॥ वसिधतिहारो पौरुष ॥ मांन गरब सो ईक रह तत आप मुष ॥ कृते कि
रततु मदिग विजइ हित ॥ करे बालतु मम हवे सेकृत ॥ धुन बलवार गए करपौरष ॥ सुतौ
तहा पाए तुम सब सुष ॥ ताते वरूप वारे तेरे ॥ मुह तोरि थापट कपि मेरे ॥ निठुर कपिन गहि
नार निवाई ॥ वाहि समय तुम री सन आई ॥ याकहत तांह मन लज्या आवै ॥ करे कहा जो तुम
ही कहावै ॥ तेइ तेइ रावन बिरदति हारे ॥ सो तौ लोक प्रगट है सारे ॥ दुहा ॥ अब उर घात न अ
पनो ॥ दससिर वेग दिषाय ॥ इत उत कौलत चितय हां ॥ जब रनाज रू न जाय ॥ ७४ ॥ नाहि नत
निस्वर निमत ॥ विधसिव सरन नवाय ॥ परी आंन अब सीस पर ॥ अबसन मुषलर आय ॥ अ
रो षे रावन राम रिन ॥ बल बोले बलवंक ॥ धरिक वराम्बर धरन धसि ॥ फि गन लगे वहम ॥ ७६ ॥
कवत ॥ ईत ही राम अवधेस ॥ उते रांवन लंके सुर ॥ इत दिधरम आधार ॥ उते बल धरम षयंकर ॥ ई
तउजवेद सहाय ॥ उते उजवेद सुदोषी ॥ इत हि पापपरहार ॥ उत हि कुल पाप सु पोषी ॥ इतब
वियउत राकसधम ॥ महावीर संग्राम मिल ॥ सम लोप अगरु नरहर सकव ॥ निरन मन रूग
ज मत्त नल ॥ ६० ॥ श्रीरामवा· ॥ वीरबाकु रघुवीर ॥ रो सवस वचन उचारे ॥ रहअसाध असुरेस
वाद सो वयर वधारे ॥ बल या कहत वद षेत ॥ षोद जर मूल उषारो ॥ सोध सोध संसार ॥ माहारा
कसर न मारो ॥ सुरसाध विदत नरहर सकव ॥ अवजीरन उतरा है ॥ दससीस मुरुमा जाउ
सह ॥ हर हि आज पहिरायहै ॥ कविरोवाच ॥ स्वारथ मातुल फिर संनार ॥ सुरपत रथ सांज्यो ॥
धजा बैठ मारुत सधीर ॥ गहरे सुरगाज्यो ॥ कृपादिष्ट प्रभु करिय ॥ वाजवर ब्रथा विनासिय
सुर सुरेस टरि सोच ॥ सिध विस्वास प्रकासिय ॥ जांनकी नाथ काकुस्त जय ॥ जइत रांमन
भुवन जई ॥ संग्राम समयन रहर सुकवि ॥ भुव अकास नाषा नई ॥ ६२ ॥ इद धनुष आकर
ष ॥ चाढक रबान चलायो ॥ काटि सीस लंकेस ॥ उलट राम दिक रआयो ॥ ईको तर सतवा
र ॥ नवज्जुष उभुरु नसाए ॥ अक्षय नए अनेक वार ॥ आकास हि बाए ॥ संज्यान रात स्रफै
दिवस ॥ परियना सभ्रम परे ॥ दिग मुढ कहत कपि नाल दल ॥ हाहा तुम रछा करे ॥ ६३ ॥ क
टे सीस दस कंध ॥ अधिलन नमंफल बायो ॥ उरु असंष सिर असुर ॥ डसह दल विरत दिषा
यो ॥ दारु न भूम न उरंत ॥ सीस भिर रहे भयानक ॥ रुधर वै श्रोत रव मार मार ॥ यह होत अ
चांनक ॥ अति त्रास पस्यौ कपि नाल उर ॥ असह विरत असुरे सकै ॥ को पिन मनु आए राह
कुल ॥ कृति सहाय लंकेस कै ॥ ६४ ॥ छंदप· ॥ ज्यो ज्यो सिर भप जत असुर जोय ॥ हरि काटत
लो त्यो हवहि होय ॥ यह कीडा लागे अवधईस ॥ सो इक टेच वट त आकास सीस ॥ इह भांत
वटत षल सिर अपार ॥ विबियान भजत ज्यो चित विकार ॥ न वहो तन मस्तक बुधरंग ॥ सब म
न ऊ अविद्या उष्टसंग ॥ कौतुक यह देषत नाल कीस ॥ सहसक रचंतरित नए सीस ॥ नई
तरु नात वटत षल सिर अपार ॥ अन सह न गिगन मिल अंधकार ॥ वलवद्धौ असुर माया वि
थार ॥ तिह मांफ डुरत रथ रवि उदोत ॥ थकि वात घात जो कुह रहोत ॥ षल पैव जातत मन न अ

बेद नालक विलहतत तिहनांहि भेद देषेनवीरतिह डहदेह सोरहेयकितत्वितपरसनेह
पापीहकरे सिरपरप्रहार कपिन्हएविवसवसत्र्यंधकार कंटकअदिष्टनोवहत्र्प्रकास तह
लष्यो रांमकपिदसत्रास बंदवअषरी रांमकहालषमनकपिराजा मारमाराकहिमुहसमा
जा धुनियहसिरमरकटदिसधावहि पगनरहततेकी सतुलावही देवतुचितमरकटभट
देषे वीरसविसमयवसही विसेषे तहामोवेसायककुलरघुपति हातोकरेमुहसबहतत
त मुहपरेतेजलनिधमांही बोजषोजजलवरसबषांही कबुलेमुहमालसिवकीनी जेहेस
मरसोउवीनजुलीने निसवरमायाकपटविनासे प्रगटजोतदिवसेसप्रकासे दससिरतबै
वनीषनदेष्यो बालतुलतत्वषलवाविसेष्यो धरिकरसक्तुन्रातपरधायो यहांरघुनाथवी
क्वलआये जाकोपननिगमागमजांन्यो पिंजरविजदुबिरदपमांन्यो डष्टवनीषनसनमु
षभारी असहअमोघसांगअनियारी सागलगीरुघनाथगुसांइ ओटलहत्रनकीसीनां
ही इहांरांमकहमुरछाआवत देवमनुषसोभावदिषावत कोप्योतहांवनीषनराकस प्रग
टविषादबाधनरपरहंस कहनलङ्गोवसकोधकराला क्वनविषमविषमुषसेविसाला
वनीषनवाच अरेअनागेअबुधअन्याइ चितआइसअनीतत्वलाई सुरनरनागसुसाध
संताए प्रभुत्रलोकपतिविक्रनपाए डष्टब्रमहतसीसजुदीनो कृपाकरीतिहअस्यकी
नो सिरतेकाटहोमतेसाऊं एकएककेकोटउपाजे याहीगरनतएतुमअंधे सबजोयेबष
वीसकसंधे अजक्रतादिनदेषतआसुर आंनकालनाच्योसिरउपर जोसिवविधक्रुपतु
करजान्यो पापीसोतेनांहिपिछान्यो जगतसबैतेजिहबलजीत्यो अबतेरावनसबैअती
त्यो कविरोवा। निरतसजान्योजेगैभाइ चितरिसरोकनसदाखलाइ रावनवाचडहा का
यरसेवासत्रुकी करतबाळकुलकोध मुहकोनेफिरआंनमोहि पापीदेतप्रबोध ७७ कुल
डोहीकातरकुबुध क्रूनहीमारततोहि कोटतज्यो नयमीचके मुषजुदिषावमोहि ७८
बंदपध अतिजरतक्रोधआतमअनीत कंटककुजोनतामसकुचीत उंनकरतबानवर
षाअपार मरकटपहारमुषमारमार रिनरोषसुभटहलकाररांम मरकटनसरोकेगंमधां
म उपराजकटमायाअभूत ततछिनभोअंतरधांनधूत इहांनोअदिष्टषलरूपएकआ
योसुडष्टरूपनअनेक एकतेनएरावनअपार करवीसवीसदससिरकुचार बंदडअषरी
रिनकपिभालभालतिनरोके बीरवीरदिसदिसनविलोके विकलकीसदलकबुनबूजे स
बदिसरावनरावनसूजे हलसिषमनुगइविलाइ यहरावनमयनववनआइ भालकी
सजितहीतितभाजत रावनरूपरोषघनगाजत घोररूपराकसक्रियेघेरा विहवलभए
अमरतिहवेरा धरेससवलकोटनधावे पेकपिकउअविकासनपावे कपिवाच सुरकपि
भालसरूपपरेसंककहतअसाधएकहोकंटक पापीइहसबदेषपजाए अबतोडष्टय
तेक्रुपआए निसवयथापहिक्वचदयाला दिनकरकुलमंडनजबदेषे वांनरभालसनीत
विसेषे रिनबानररघुनाथक्वारे अतिबलपोरषवचनउचारे जेरघुराजप्रतापहिजाने
सोनिस्त्रयनटनिरतसयांने नीलहनुमंतनूपैअंगदनल वीरलरतलगगिगनमहाबल
विमनभ्रमतररघुवीरविलोके राकसमारसरनतहांरोके रामबानडससहअनियारे माया
रूपदसाननमारे रहेविलायकपटकेरावन एकरहोजुक्वकनयावन प्रभुसबमायारू

जुधछाममशिरकंदरजांही मयभचकितकीसदलमाला देउना

पविनासै ॥ ज्यो रवि उदय निषलत मनासै ॥ रावन एक रह्यो अविरेषो ॥ देव समाज गिगन अ
वरेषो ॥ रावन वाच ॥ निरन्नार थ सब अमर न जाए ॥ अब निरलाज साज रथ आए ॥ अमर पगन
रहीयो रूआयो ॥ धर करि गदा गिगन मग धायो ॥ कवि रो वाच ॥ नय पर अमर गिगन रथ नाप्त
गहिच टपीव सिंघ ज्यो गाजत ॥ अंगद अमर लषि जब आतुर ॥ कूद्यो पंथ अकास नयंकर ॥ क
पि गहि चरन पबारे कंटक ॥ अविन गिरे ज्यो मारे अंतक ॥ ईह रावन कह मुरछा आई ॥ वगट ज्ञेत
अंगद कपि पाई ॥ दुहू एक महवेती दारुन ॥ सुरसंनार उग्रीव उसारुन ॥ बंद उधोर ॥ रिनउ
वे रावन राय ॥ धरि स्थ्रंष चक्र धाय ॥ रथ राम चंद तुरंग ॥ सो ज हये सूलनि संग ॥ सरती स धनुसं
धान ॥ नरनाथ मुक्ति निधान ॥ तुलसी सकट जुनयांन ॥ सो उवटत उफि अ समान ॥ दिस विदि
स पूर दिगंत ॥ तेइ रहे गिगन अनंत ॥ सिर राह मनुकर केत ॥ कुयक्रोध विग्रह हेत ॥ रिव राहच
य रविराम ॥ रिव वंस वेधजु राम ॥ सो उ आद्य वयर संनार ॥ मिल जूथ गिगन मझार ॥ नवराह
केत सुनाय ॥ इहां राम घेरे आय ॥ सर अनल तत्व अवधेस ॥ वसक्रोध मुविसेस ॥ जिह जरे मा
याजाल ॥ कर असुर जूथ कपाल ॥ बंदप ॥ दससी सवनी बनसमर देष ॥ बसवयर असुर
धायो विसेष ॥ यह वीच वीर हनुमंत आय ॥ रोके चटहि य लंकेस राय ॥ उरद इलात ऊफे
अकास ॥ तिह पकरि दूव ध रिपटक तास ॥ बाहेन पूछ रांवन सबोह ॥ दुवे होत परसप
र वांदा वडोह ॥ कपि लहै बल दिकूदे अकास ॥ तिह च ले विलंमतत सुरतास ॥ तद दिघ
दसानन करत ताक ॥ हनुमत करीय हवीर हाक ॥ कपि फेर गिगन हनुमान क्रुध ॥ जाजु
लीनयौ बिकूबा कूजुध ॥ उनकर तलात थापट प्रहार ॥ महा धार वज्र मुष्टका मार ॥ सयं
ममघ समरो वसंग ॥ आसुर कपि जूटत जुध अनंग ॥ कपि लल गकनक गिर मनुकलं
द ॥ दहू वीर करत न नवी हदा उ ॥ निरघात पात वज ही निहाव ॥ अति रिथ जुध अदभुत
अनंद ॥ कपि ललगि कनक गिर मनुकलंद ॥ तिन देष अमर उर परी त्रास ॥ सोइ रघनले
रनाज्यो अकास ॥ इह कर रेद्रा व मारुत अनेक ॥ तउ गिरेन रावन गही टेक ॥ रघुवीर देष
कौतक रसाल ॥ सर हने दसानन अमर साल ॥ तिह घायन यो रावन अचेत ॥ पलपरे नूमसं
ग्रांम षेत ॥ कंटक गत मुरछा उच्यो कोप ॥ रिन रोद्र मरनन नटपाव रोप ॥ बंद उ अपरी ॥ अमर
विमांनन अंबर छायो ॥ कंटक [illegible]ति न हीदेष अकुलायो ॥ रावनवा ॥ निरे त हां मोस्तु तुम
नागे ॥ अब सोइ मम कौतुक अनुरागे ॥ तो सुरराज वदो बल तोही ॥ मो हि पग आवन देमो ही
कवि रो वाच ॥ कहियो चह्यो गिगन मग कंटक ॥ धरि के उरसुरपत को धकधक ॥ अंगद इ
द्रादिक अविलोके ॥ सब नागे रपद्यां कस मोके ॥ सूर महा जुवराज संन्नासौ ॥ पकरि पाव
दससीस पबासौ ॥ देउ रलात कूद गयो अंगद ॥ दुष्ट अचेत नयो तब दुरमद ॥ इहां दसानन
उग्रो आतुर ॥ अत ही बिसांनो रो बजर तउर ॥ गहरे सुर गरज्यो रिन गाढो ॥ वोरे नुजा प्रचार
तवाढो ॥ तहां दस धनुष दस रूनु ज तांनत ॥ मरकट दलवि णमात्र नमांन ॥ महा सुनट दसद
सस रमारे ॥ दुसह लगे सो उबं ट दुसारे ॥ आवध वीस रूकरन उवाहत ॥ चक्र दिसान कुट लिद्र
गचाहत ॥ मुह जो उवटे ता हि षलमारे ॥ पकर नाल कपि धरिन पबारे ॥ असुर पाण यदि गिगन उ
गावे ॥ षसै हसै रिनवजरै धावै ॥ मुसल कपीस परघ नलमास्यो ॥ पटसु नील सरो षवहास्यो ॥ जाम
वंत असतो मर मारुत ॥ परस सुषेन कूतके सरहत ॥ सुलगवाहसही गदा व नील्सन ॥ मुगदर हि

बिधकुंभंरनेजामन तारुकुवारन्निकपालागज। बिटपगवयजुवराजसिलासज दधमुष्व
कसरन्नरनिश्रंकुस। सेषसक्तह्तकरेजगतजस। वीरकबुककरपथरविनासे। इलादिक
सबसरत्रअमासे। श्रीरघुनाथहीमारतीनसर। इहांगरजतगहोरिनआसुर घायलन्नयो
सबीनकपिघेस्यौ मरैनमास्यौफिरैनफेस्यौ। दुहा॥ काटितषलकेकोपकर। स्वाटरांमसरचाप
तूलतूहैतअनेकतहां। परवसज्यौमनपाप १७६ उसहततहांरघुनाथदल। धाएसुभटरैवधी
र॥ मरैनकरसिरकटतरू॥ विहसलरतरिनवीर ८० छंदअबरी। इहांसुग्रीवजुअंगदआए
धसनलनीलद्विबिदबलधाए। हनमतआयएकादसमहर। वीरअनेकजालनदवांनर मा
हावृषपरबतसिरमारहि। दंतनउनषदेहविदारहि। कूदजाहिदेलातअवानक। करगहि
लेतपबारतकंटक। करतवारकपिनालभयंकर। ज्यूगिरश्रृंगविहारतवनचर। चढेसीसन
लनीलवनैचर। दांतनषातकपालनहीफर। दससिरकोपकरेतहादारुन। कपिनविरारकरे
रिनकनकन। भयेभालकपघायलभारी। क्रोधनिसासमहरनयकारी। निसातमीनिसचरम
नमांनी। ततनीही सुसहायकजांनी। इहनिससमयरीबपतआयौ। सांमवरनदललीयां
सवायौ। धरमारुतकाटितधरधावत। याकीदिष्टरंगफुनआवत। हवलाझोरावनरिनहव
कत। पावततात्रिन्तूपरपटकत। जांमवंतजरजीरनजोधा। कालसरूपनिरुयौउरक्रोधा
कूदलातउरमारेकंटक। ऐसौहन्यौवज्रमनुअंतक। हरतदससरूंमुषश्रोनीधारा। परबतजे
सैरद्वहारा। रथपरगौमुरझागतरावन। परयौअचेतनअसुरअवावन। घेररहेराकसपत
घायल। हाहाकरतभएसबहायल। जबैअचेतनरावनजांन्यौ। इनरथहाकलंकमहआन्यौ। दुहा
काटेराघवसीसकर। पलजीवततउषेत। निसरावनसबसेवकन। आंन्यौयेहअचेत ८२। अथ
सीतात्रजटावसंवादत्रजटावाच। अरधनिसात्रजटाआसुरि। इहांसीतापहआय। समहरकी
वातसभय। सीसबकहतसुनाय ८२ त्रजटावाच। काटतसिरभुजसरनकर। उनउनहोतअपा
र। कहत्रजटाकैहैकहा। क्यौंइहमरैकुवार ८३ रांमबानकौनहीमरत। सिरकरकटैअसेषआ
दिकछुविपरीतयह। विधकृतजननिविसेष ८४ एतेहीदुषमहिअजौ। मोहिजिवावतमात देष
कविधस्वनाउसह। घायक्वतष[illegible]लघात ८५। छंदउधोर॥ जिहकनकमयमृगकीन
हिनउष्टबधमोहिदीन। कहिवनकटुककराल। लगहियेलछमनलाल। मोहितजअकेलि
यमात। जोभयोरहसकजात। भवकरमफलममभोग। विधदयौरामवियोग। नपराजजिहक
तएव। दुषदेतसोइविधदेव। एकरैचिरतअनूव। सबभयोताहिसरूव। त्रजटावा। सिधांतमम
सुनसीत। उनीसवचनषतीत। सवहृदयतिहतववास। भवरांमभयउरन्नास। तिहरमउ
दरत्रैलोक। उहअबिलघिरचरओक। तिहहततनहीउरताहि। इहमूढनावजआहि
विनुबेदउहउरवांम। नहीमरैषलनिरनांम। यहहेतरामअनंत। सरउरनहनतअसंत। रघु
वीरकररिनरोष। जबमहासायकमोषव। तिअंगयहषलपाप। अविधेसकाटदिआप। पेम
हापीडापायसवहोयविकलसुनाय। वटलीहबाकअचेत। पलहोयजबरिनषेत। निस
चारतनतुवध्यान। उनिहोहिपरवसज्ञांन। जोविसरतोकदजाय। रनमारिहैरघुराय। नवक
रहिअबतरभेद। बिनहोहित्रभुवनखेद। प्रभुधहनतनहीयहजांन। प्रभुविस्वपालपमांन
तिहभेदत्रजटवताय। भयोसियहिस्वातिकनाव। इहविरहरांमभयांन। सोनिसाकलपसमां

न।ससिरथहिनंदितसीय।हाप्रातकबलांहोय।बिधकरमदेषदुरंत।ईहांसियायंब्रतअंत।
दुहा।कबिनकालवेदेहकै।वनकुरकेअंगवांम।सुगनविचारतआपसुन।सहीमिलहैघन
सांम।७६।कबिरोवाच।छंद१।इहानयोधातनमम्बरप्रकार।दुधनिनिसांनवजिदेवद्वार।सु
नसोरजद्यो रावनअसाध।बिपरीतविरतकृतधरमबाध।उनदेषकनकमिंदरप्रकार।रिसद
नतधरनकरवारवार।रावनवा।रिनषेतबुलायोमोहिरात।धिकारतोहिकाल रकुजात।क
विरोवा।रथसाकबकुरखललंकराय।अतिवेगहाकरिनन्हूमआय।दलनालप्रबलमरक
टदुगांम।मंरुलमहसानुजदेवरांम।यहांदुष्टस्वीमायादुरंत।ततबिननेअंतरबितदुरंत।र
नकरेकपटमायाविथार।पाबंरुचंरुदुसहप्रकार।वेतालभूतषेचरभयांन।आकृतअनेक
तनआंनआंन।विनुसंष्याजंतुपिसाचवीर।सुरविषमवं नवेकृतसरीर।करजोइ्नलं
बनतनरकपाल।बिकरालतुंरुधरश्रवदिर्घवाल।परिषूरपत्रकरिश्रोनपांन।गहगहैकंवबि
परीतगांन।ननमारमोरवानीकुनार।यहसद्धूररधरनीअकासषेचरीधरहिमुखवायषांन।प
रित्रासरीबबांनरदुलान।नटकीसजायजिहदेषनाग।आगैतहांदेषैजरतआग।कृतपिष्ट
रूपजोगनकराल।घसषाहिषाहिबोलतकुदाल।रजब्रष्टकरहिकचरुधरराष।नयका
रगिगनवांनीकुनाष।बिकरालचिरतकपिनालवीर।इहदेषभएअंतरअधीर।पाबंरु
अवरइकस्वेपाप।छाकृतअमांनहनुमांनआप।यहरूपनिसाचरनिकरआय।लंगू
ललपेटेरांमलाल।दुहा।मंदरअचलमधांनहित।जनुआहतअहिराज।सोहवगढेतिहस
मय।रनमैराघवराज।७७।कसौविचारजुवसकरे।निशृहनिसचरनीव।रांमहितेनउच
कावरिन।बोरैसागरवीच।७७।जांमौराघवअसुरजब।मायातनहनुमांन।तिलतिलकाटौ
बतब।वीरहनेउरबांन।७९।पुनबलमायाअवधपत।ज्वालामुषसरजार।कपटनसायौअ
सुरकौ।मारयौरामसुरार।८०।कवित।करसिरकटिलंकेस।नहीनतउमरतनिसाचर।वारवार
बंदतविचार।उपजअंगआसुर।रिनकीडारघुनाथ।करतअगजगनयकारिय।सुरसुरेसउ
रसिध।नएतहांत्रासतचारिय।विषियादिकसेवतनरविसन।वहतकामज्योवामवस।आसु
रीकपटमायाअगम।तौसौउपजतअगनेस।छंदुअषरी।सुरनसुरेसजगतपतसांने।प
सुरनषेलनिवेरप्रमाने।जनकीरांमव्रतंग्पाजोई।हसेवनीषनसनमुषहोइ।वनीषनवा।सुन
रूमंत्रइकत्रजुवनस्वांमी।जगतचराचरअंतरजांमी।जांनवनीषनजुगकजोरे।मरमदसान
नसुनप्रभुमेरे।नाभकुंभलीइमृतनिरंतर।याकोजीववसततिहअंतर।यमृतप्रभावनमर
तअनाद्यौ।लरतकटेसिरअंबरलाद्यौ।कटतबांनधारमसतककर।अंगअसंष्याउपजत
आसुर।मारकुजीवमरमतौमरिहै।कंटकविरतविवधपरकरिहै।कविरोवाच।निसचरहत
नरांमपनकीनो।नानाअसुगनहोतनवीनो।करहीसबदभवभूतकराला।समयविनाष
रस्वांगश्रगाला।परबविनाउपरागप्रमाने।अरकसोमकहसंकटआंने।दीसतराहकेत
प्रतमाहिन।उलकापातगिगनतारागन।धरिनकंपदिगदाहसधूमर।उननिरघातवात
पोहमीपर।प्रतिमाचलजलनयनयमुकहि।कुथलअकासनषीषगकुकहि।वरषाके
सरधीरजवानर।अतिविपरीतमारुतचलआतुर।महासोकउरकंपमदोदर।प्रगटअका
रनतनभूषनपर।इनहीआदअमितअपारा।वरततभूषनविवधविकार।देववाचदुहा।अ

विलोकितअनमितए। अमरसिधअकुलाय। कहतसुधीकैहैकहा। हारघुनाथसहाय ९१। क
वरीवा। कृतरघुवरत्रकुटीकुटल। रोषवदनचषरत। अविलोकतराकसअषिल। प्रलय
कालसंप्रत ९२। छंदउअषरी। इहबानरघुपतिकरआयो। पायसमयमातुलपठवायो। भ्रम
मदतसुरपतहासकारुन। उसहस्वस्तविषधरसौदारुन। महाप्रमांनसरीरगिगनमय। तेज
अरकपावकमिलफलतय। मदरमेरसगोरसमानो। पवनरउदिससजवप्रमानो। लोकपाल
जिहपवनप्रकासत। तेजजाजुलपअरकअभासत। लोकलोकनयनिषलनसावन। पर
मप्रसिधद्विअरसपावन। सोप्रभुवेदमंत्रविधसांध्यो। निरनयचापपनवसरनांध्यौ। तहांर
घुवीरइदधनुतांन्यो। अवचापकरनालगआन्यो। दोहा। तांनसरासनमुकितहां। अगनबांन
अवधेस। नाभकुंभनिसचारकै। सोष्योईमृतअसेस ९३। सरपावकजारेसुधा। जीवजस्यो
तिहजोग। त्रयलोकीकंटकतहां। रावनमस्यौअरोग ९४। छंदउअषरी। जबहतषांनदसा
नजांन्यौ। तहांरघुनाथउहैसरतांन्यौ। छोड्यौबांनत्रयांनकतिहछिन। उप्रमुरुकरकाट
दसानन। परमप्रसिधबांनजयपावत। असुरविनासअगफिरआवत। करसिरकटे
असेषनकंटक। असहरुधावतजौअंतक। धरउरवाढसुकपिनधकावत। परिउपरि
मरदतसुषपावत। मुरुकटेतेंउष्टनमरही। कंटकविरतअनेकसुकरही। रुरुमुरुरवि
होतयहैरह। मारमारघरघरनरमरकट। कहांएंमसुग्रीवबभीषन। प्रबलप्रचारतफिर
तकियेपन। उष्टविरतउसहयहदेष्यौ। अमरसिधअतिनयअविरेष्यौ। कपटकबंधकी
सरुकजोरत। रुकरतहांइद्रादिकजेलत। इद्रादिकोवा। सोचअमरगनप्रभुहीसुनावत
षितपतकहापिसाचबिलावत। नासैयहमारोत्रासनिवारो। माहाउष्टअवतौरिनमारो। कवि
रीवा। जबैसुरेससत्रयप्रभुजांन्यो। तवधनुअरधवंद्रसरतांन्यो। कुरुलकोमंरुतांणसुकी
नौ। दिव्यबांनरावनतनदीनौ। बानलग्योसिसमध्यमहाबल। धंरुउत्रयकुयपस्यौधरनष
ल। वपनिवाहावपरतबलव्याकुल। तहांधुनिधसकेधरनीतल। फिगतकुलाचलनत्रग
जेलत। बिकलचराचरहाहाबोलत। इहांकपिराजरीछपतआयो। प्रभुप्रतापसेवफल
पायो। मस्योलंकपतहरिषतमरकट। त्रयोउबाहविहसनालनट। धायेकपिषलसीसक
रनधर। जारेलेआगलमंदोदरिपिष। त्रियनतहांविसमयपायो। देवविरतयहविषमदि
षायौ। कवत। इहरांवनवउआंन। सन्नासतअरकप्रकासिय। देषतसोदिक्देव। प्रगटअ
तितेजप्रनासिय। जोतरांमगहजाय। परसोइवहगतपाई। नावएकयहांनयो। जांन
कछुनेदनजाई। अदभुतकपाकारनअतुल। तवसोचतनवनतिह। संभ्रतविनास
रावनअसुर। मिललियौप्रभुआपमह ९६। छंदउअषरी। देवनदरषउधनीदीनो। कुसु
मनकीवरषानत्रकीनी। विवधहोतजयजइतसुबांनी। दुरिधरनबहमंरुप्रमांनी। सुरसं
तुष्टचयेमुनिसिधा। प्रभुपदचारनसुजसप्रसिधा। गदिगदिकिरनगंधरबगावहि। सुरकि
न्नातहिसुषपावहि। इद्राद्यवाच। छंदउधोरा। सबकहतसुरगनसिध। प्रभुसुनकुप्रण
तप्रसिध। यहउसहषलजुउसाध। प्रतिदिवसरवितउपाध। उरिमतिउरातमउष्ट। जनपा
पकरमसउष्ट। सुरसाधस्वातिकसिध। प्रभुकपापात्रप्रसिध। भुवत्रिमतहमजसनीतते
सहतउषअनीत। दससीसयहउरबोध। कृतिघातकुटलसक्रोध। उजहसततामसहे

राम॰
१४६

है हवजगतपरवियनेह कं टकवजोककुवेत संसारधेवसहेत नवन्हतदेषतन्हप सो
नयौतवसारूप मिलजीतजीतमिलाय ज्यौदीपदीपहिजाय।कविरोवाच।इहसमयनार
दआय सोउकहतसुरनसुनाय।नारदवाच।इहदेवकरमद्ंत तुमसोनजानेतंत सब
देवतुऊसुजांन निजसुनहुनिगमनिदांन दससीसकीनोरोष रघुनाथसोवहिरोष
वाहिसुवररविरोध उनसुमोनांहिवबोध नव्येतथाधेषव्नाव रहिहृदयकोसिव
राव तिहरामनमयनवन्हत अविलोकभिवअदन्हत जागगर्तसुभ्रसुनाय रसवित
राघवराय विस्विसवर्ईरविवार मुलरलोवित्तमकार रिनहतोसोइरघुवीर सगरहे
पावसरीर अविनासजोतअनंत तननासमोतितंत महजोतिजोतिसमाय निसेष
करमनसाय निसेषकरमनसाय।कवित।पापरतपरदार पतत परवितवहारी न
यसेनेहकिऊनाय धरेउरसारंगधारी सोकैअंतर सुध पापसत जन्मवहारी साधु
यहैसाधत उवितमतवेदउचारी सुरसिधसबैनरहरसुकवि निंदतकरमनसायहै
उरपकविवांनवरषतउरप परमसुपैपदपायहै ६७ मिलसंजोइमेथली मिलयौअ
विजोगपमंदोदरि इकहारसिंगार ईकहावलितउतरि इकबलियाकरवनिय ईकबलि
यावलिकुटिय इकहिरतअभिलाष ईकअभिलाषअकुटिय नयटरयोन्हमित्रनुव
नअनय नारअसुरकुलकहनयौ सुरसिधहरषनरहरसकवि हवजुरामरावनह
यौ ६८ सिरजुसिन्हकूनमे अवरसुररहेअनामित काटिकाटनिजकरन हवनकीनो
विस्वदित अगनकुंडमहआप जथामंगजफलजारे वरवसहअदसतपविधांन अ
तिकष्टउधारे सुरराजअभयनरहरसकवि समहरतन्नअमोघसरिवथ्वीवसिधपौ
लिसकेकटेसुसिररघुनाथकर ६९ वारपालयमदेव मीचदासीनयमाने ब्रितानाथक
रस्वत्र अवघनमालाआंने दंडधारकुतवार वेदब्रह्माधनवाचतः दासन्नावदिवसेस न
तसुरकिंमानावत आधीनककारीअमन अनिलबुहारतअंगनहि काकुस्तवयरनरहरसु
कवि रावनसिरविघुरेरिनहि ७० नरआकतत्रयलोकनाथकवसल्यानंदन वेदग्रलितपि
तवचन विषमसियोदरुकवन सेतबंधमरकटसमूह लंकागटलगिय सुरनसोगृहबंधमोचके
दससिरदसदिसबलदए ७१ जिहफरसवीउसास सरितआकासजुसुकिय जिहफरफर
हिगदेव महासुखनिद्रामुकिय जिहफरवियउरतरनि रहतसेवाहिगठुकिय जिहफरमुनिग
नमषविधान विततानसुचुकिय जिहफरनकोलङ्हमंहफिग अमरखंदमदउतरे सोइ
रावनुसोवतसमरसुष न्समसेफुमुषरजनरे ७२ अमरनए आनंद अमर छरवजेव
धार्ई कुलनंगनयोगढलंकनयांनो विसतारधरमनोवेदविध अरुनरहरकवउधरन
करनयोवानरनरामके रामजेतरावनमरन ७३ परिउकारगृहगृहअपार आतंकलंका
परि परेसमररकसवंकं आतमबलउधर परेमत्तमातंग परेदयवंजसवषर नालपरेअ
टअनय वीररनविजईवानर पुरतीनवोटनीसानपर सोकडष्टउरसंचरिय काकुसथ
विजयनरहरसुकवि पांनरामरावनपरिय ७४।कवत।अधूमउधास्योधतेसैंहीकवंध
तासो विजयउचास्योदेवजजैरघुवीरको जबतीनअसीजांनीअगनैंजगदयाआंनी धुंजे
धरानजातधांनीउरधारको आगेआगेआपआएसेनाकपिलेसहाए वेदनवताएसो

× नएजिह्नआरंभ नएविघ्ननमनजाए जौरघुकुलसैसोनाम महीन्नर टरत्रपमांन्यो जौराकस ×

नरासानुजनारकौ। धनुताइनष्यौपायोताकतकु तेचितायो कालकुवतायोपंथरावन
केघरको। ७५। कविरोवाचछंद उअधरी। इहेभाइलंकामहआए सबनिदसाननमरनसु
नाए रावनमस्योसुन्योपटरांनी अविनपरीमुरछितअकुलानी इतांग्रहग्रहतेजुवतीआइ
अतिअवितमयसुताजवाइ निकरनिकरआइपुरनारी उनिरोवतिअतिदुषीदुकारी राज
लोकतहांआयौरोवत सज्यादिनरावनतहांसोवत पतिगतिदेषत्रियाअकुलावत पा
रजुसोकसमुद्रनपावत। मंदोदरियवाच। रोवतकहतमंदोदरिरांनी विगलतमहाबलइ
हगतकेसे अबलांहोतनजांनीऐसी अरकनिसाकर तुवतपआगे लोकविलोकहीन
सेलागे दसदिगपालद्वारतुवडोलत बाहिरवादेउचनबोलत सुरगनकरतजकमसेवा
दीनसवासरहेच्हूदेवा अमरसमरनहीसनमुषआवत छियतीदिस्योसुनतउलावत
कालजीतजिहअपवसकीनौ उसहदाहतपलोकनदीनौ कारायहसेवतशहकातरन्ह
यंगकमवनहीसहतकोलनर धसकतकंपअघनरधरनी करीसकलमदवससोकरनी
सोअनुतुमधरनीपरसोवत जाकीक्रपादिष्टजगजोवत पतिअदिष्टअनीतउकारा रहे
नकुलकोउरोवनहारा रघुकुलपतवयरउवितयहरावन छिद्रघसाटतजोतअपावन
स्वानश्रंगालसिवामिलसंगहि अवतषातअघातहिअगहि क्वननीतजेकहेवनीषन
षारेलगेतुमहिकुलदूषन सुयंवमनवन्द्रतसंपेषे देवतुमहिमांनुषकरदेषे पियताको
यहफलतुमपायो गढसमेतकुलमूलगमायो अतहीगरनयहआमौआयो उनगढ
राजवनीबनपायो सवपतिकाजेएकहीसीता विधवाकरीइतीवरवनिता वामाआनी
वीरविरांनी राकुकरीअपनीसहरांनी इनकेभूषनविवधउतारे सीताअंगसिंगारसवा
रे पिययहअहंकारफलपायो रिषउलिस्तकौवंसगमायो बिनमहसतषितमिदरषोए
सोतुमससमरभूमसुषसोए ब्रमआदिवासवसिरनावत पतितजगततेऊगतपावत
दुहा। पापउपासेजनमधत यहकोकहैगिनाय तोऊदीनौपरमपद ऐसेराघवराय ८४
सुनतसुरासुररामसम हैदयालकोउनांहि जोगतदुरलभजोगते मारदइबिनमांहि ८६
सबतुमकीनीरामसौ सोजानतसंसार ऊनतमसोऐसीकरी ऐसेरामउदार ८७ मावी
प्रबलताकवत। गढनकुटपरषापयोध स्वांमीदसकंधर भ्रातकुंभघननाद उत्रविते
सवितधर सुनटबलीराकससमूह अज्ञाआधीने दहितलोकअहिसुरअदेवक
तउकरकीनौ संजीवनमुषविद्यासुगम सुक्रगुरजसाधतसमो हाहाजुकालमहि
माअमल नवसोइरावननिष्टनौ ७६ जिहकयलासससुसिंजुपांनधरइकतथप्यौ ति
हकरकसवहरनभवंन कुलअमरजुकुप्यौ जिहविसेषतुजवीससरवसकरेसुरा
सुर नयजिहनामनिगरन वगटदैश्रवनतत्रजुउर देषकुसंतापिमांनुषडनुज जगज
सलीनौमारजिह विधजाकीयहकरनीविषम तातैदेवनमामितिह ७७। कहा। कहासी
ताअकलंककुलवंसराकसअपवादलाजकरमविपाककौभराअदिष्टवसाद ७८
कवत। जेहमगीतसंगीत सुयततहांहाहासुर जहाविलाससुषवासपदेअदिनलं
काउर जहासुषदमारुतसुगध वसमांसजुवासीय सुचमयूरपिंकसबद वगटत
हांयौधवकासीय रनमरतएकतंकेसकै उरसुनयांनकपिषियौ डषरोयकहतमंदो

दरियहानवेसदहकहानयो ७९ दुहा ॥ जिह बिनरावन बितियथो । जगतरतनयजा
हि अर्कनतपतरसोईअब । यहकछुउरषाआहि ८० कबिरोवाच दबअछरी । रावनज
हांपरेरिनअंगन । बिकलचित्ततहांआयबभीषन । दिषीमंदोदरीदुषारी । रोवतिहीब
ऊनातनिवारी । यहांबभीषनप्रभुपहआए । रामबिलोकनइनसियराए । रोबतसुनीमं
दोदररांनी । अबिधेसुरकरनाउरआनी । श्रीरामवा । रावनभ्रातरांमसमझायो । उपज
तजंतसुअंतनसायो । निश्चेतादिजतनकछुनांही । जांनहारनवभूतसुजांही । दाहव
भीषनभ्रातहि दीजै । कुलअपनेआचारसुकीजै । बिनबिन कियाकालहि छीजै । दाह
जुकृतजलअंजुलिदीजै । जसनदिनलबमनतुमजावहू । सोकबिकलरानीसमझा
वहू । कबिरोवा । ईहांबभीषनजबमंनआए । महासुगंधजकावमगाये । देहबमानस्वेरि
नमिंदर । सोरनतिलसीचघृतसुदर । रावनअंगअंगपरन्यारि । दिसदिवीनचितामहकारे । ह
वीमंदोदरीमोहिजलावहू । बीजतसमयनसंगबुलावहू । सोलिछमनबहुबिधसमझा
ई रानीतुमहिलगीबकुराइ । सबहीराजलोकसमुझायो । तबबोधजीवेदवतायो । मंदो
दरिवाच । रामहिकसौमंदोदरिरानी । उरतबबिरहदथाअकुलानी । दुहा । दुषजुतबचनमं
दोदरी । रामहिकह्योरिसाय । याकोरावनहारकोउ । रष्योकनरघुराय ९१ । ~~दुषजुतबचनमं~~
~~दोदरी~~ उवनतीजाप्रातपै । कुलरावनमहकोय । रघुवरएककुराषते । रहतेजोदुष
रोय ९२ श्रीरामवा ॥ कोउगावेजुकंवकबु । नहीजामेहरिनाम । सोरावनकुरोयबो । मांन
हुबचनविराम ९३ कबिरोवाच दबअछरी ॥ इहांमंदोदरिमिदरआइ । सालनएनहीहृद
यसमाइ । पिटहि उरसिरबियालंकपुरि । सुनियतजहांतहां रोदतिसुर । रिनअसेषहते
कपिराकस । बनितातिनहिसंभारतदुषबस । हाहारवसुनिउनिदुषहो । जीवकहाजट
जंगमरोवै । पुनरावनतनअग्निवजारे । सोधजथाविधअंगसकारे । देसकालकुलधरम
जुदेषे । विधाजुतकीनीक्रियाविसेषे । भ्रातापितानछत्रसन्यारे । एकराजलोनहिअनु
सारे । जदपिराजनकाकुजानत । पैकछुदेतपन्नावपमांनत । भयोसोकमनमलिनव
भीषन । अंतभ्रातदुषीअतिअसहन । जहांलिछमनबहुविधसमझावत । ताकह
नीतधरमदरसावत । लिछमनवा । कालकवलहेअंतकलेवर । होतमरतनवद्धृतमही
नर । वढततरंगजलजूहीवातवस । हूनवभूतविलातउपजतस । ताकेकाजसषातु
मसोचत । मांनतदुषनइनजलमोचत । कोयहहैकोधौतुमकाको । जीवसहलदुषकार
नजाको । आगेअबबहुस्यौयहांआइ । इनसौतुमसोकहासगाई । केइवारबाहेतुमइ
केहि । तुमइनतजेअनेकवारतइ । सरतनावस्योकावसगाई । योसमंधमिलतसबआ
ई । वातविडतकउनल्योरजकन । विचरतनवसंजोगविजोगन । योहीउपजिनासससंग
मअरि । करमकालवसभ्रमतकलेवर । देहदेहसंनावतदेषो । जैसेवीजहीवीजविसे
षो । देहवंधतहासबैसगाई । नामनिउन्नपितमित्रनाई । देहदेहसगपनदरसावे । क्सिे
तहांनकछुविसावे । देहविनासगयोजबदेही । तहांसबंधनकोउसनेही । समझहुमिथ्या
देहसगाई । भवतीपांनभ्रातीजननाई । पांनहिसबंधपमान्यौ । सोकितगयोनकाहूजांन्यौ
देहबुधतजहवहिनवांनहुपूरनदेहीबुधपमांनहु । कबिरोवाच । सबबिधज्ञानल

ह्यनसमफाए। यहांतबकऊविजलाश्रयआए। दुषितजुभ्रातजनंखुलिदीनी। क्रिया
वभीषनकुलक्रमकीनी॥ इहांलछमनसंगदिलिआए। सोकवभीषनदुषनसाहै। वभीषन
वाच। वंदस्वरनतहांकह्यौवभीषन। देवदीनकेविपतनिकंदन। नाथअनयपिंजरसर
नाइ। सदादयनिधजगतसहाइ। श्रीरामोवाच। छपै। बीरलषनसुग्रीवबोलि। अंगदनल
नीलहि। जामवंतहनुमंत। समकनिरनयगुनसीलहि। दीनबधुदेवाधदेव। वाचाउतिपाल
न। सरनविजयपिंजरसुनाय। बलमूलउषारन। अविधेसदइयज्ञायनहि। जाकुडरंगन्र
पथेरजह। क्रमजुक्तराजदससीसकौ। तिलकवभीषनदेकृतह॥८०॥ मोहि अवतनहीन
गरमाहि। आवनयहअवसर। भ्रातसषाअरुसुभट। सबैतुमदेदधरेसुर। मंदोदरिमंत्रहि
जुमांनि। सबहिनकोसुमत। देसकोसदलडुरंग। सकलराजश्रीसंपति। मोहिमिल्यौवभीषन
वहसमय। पेषकह्यौमेलंकपत। सुभलगनआजनरहरसुकवी। सुपेक्खनममहोयसत
८१ लंकआनआंनलंकेस। दिव्यसिंघासनदीनौ। रांमअनुजकपिराज। कपिनमिलतिलक
जुकीनौ। विदइनीतविसेष। साऊअभिषेकसकारन। वजनिसांनमंगलविधांन। घुमरऊमांन
ऊघन। परिजागतिसंपतिराजपद। तहांपायोगढलंकतिह। अभिलाषवभीषनमिलअषिल
उनिआयोरघुनाथपह॥८२॥ श्रीरामवाच। दुहा॥ कह्यौरामहनुमंतकहजहांसीतातहजा
य। कुसलहमारीउनहिकहि। उनकीहमहिसुनाय॥८४॥ कविरोवाच। मारुतकूद्यौगिगनम
ग। इहांअसोकवनआय। सियहिसुनायोविजयसुष। सियाकुसलरघुराय॥८५॥ हनूमंतवा
च। बलबोयोनिरमलबिन। जुक्टारेनरनार। अबसीतहिअवधेसवर। हीजकऊदरसउदार
॥८६॥ अथसीताश्रीरांमदरसनंउनरागमन। छंदछेअषरी॥ कहहनुमांनजुगलजोरेकर
सुनियेकछुविनतीअवधेसुर। जिहजितकरमडुरंतरकीनौ। लोकप्रगटरनजयपदलीनौ।
जुधनबमपिनातीजोयो। बलदससीसवंसबिनषोयौ। सोइफलउदयभयोअबस्वामीजी
वसकलतुमअंतरजांमी। सबविधसमरथरांमसनेही। वंछितवरनदरसवेदेही। कविरो
वाच। छंदउधोर। सुनवचनरांमसुजांन। हितकहेजहनुमांन। सुषउपजिरामसुभाव। नयोतह
स्वातिकभाव। श्रीरामवाच। तहाकहेप्रभुहनुमंत। सीयवेगलावरूसंत। जुवराजतुममिलजा
ऊ। इहकाजआजउबाऊ। कविरोवाच। सकलंकपतदियेसंग। उम्हलेवीरअनंग। छंददु
अषरी। इहअसोकवनमारुतआयो। भिनतिहनइनरुदनजलछायो। कपिगतिदेषज्यांन
कीकेरी। हियखहिकंपजातिनहीहेरी। मगनविरहतनवसनमलीना। दृगजलधारवचनमुष
दीना। वेनीएकअधोमुषवांमा। सोचतस्वासविमोचतसांमा। रहतससोकराकसिनघेरी। हि
रनीमनकबधकवियहेरी। सरमाजटासाधसुलबन। बोलतिनहियोकह्यौवभीषन। मि
लसुषसियहीकरकृतनमंजन। अंगसुरंगवसनदृगअंजन। वानकउचितसिंगारवनाव
ऊ। चितरुचितसोरंजवढावऊ। अतिअनमोलकवसनदिव्यआंनऊ। पाइनधरिबऊ
जगतप्रमानऊ। कविरोवाच। भूषनवसनवनाएभामनि। देहधरेमनुवाढीदांमनि। मिलअ
देसुतसोजनककुमारी। निरषतौरितननिसचरनारी। याहीसमयसुषासनआंनी। जइ
अरुदरांमपटरांनी। जकुटद्वारतेनिकसतताछिन। पटहीलपेटीसिवकाचहूरन। असुरवि
याकोतिकअनुरागी। लाषनधावतपाछेलागी। धसेववरकरमारुततारत। अंगदजयज

यजननिउचारत। वेत्रपांनलंकेसवजीबन। आगेचलतपयादेआउन। निकटआय
कपिजालनिहारत। निठुरकंचुकीताहिनिवारत। इहांहनुमंतहिरामबुलायो। अंतर
पावकमंत्रवतायो। श्रीरामवाच। जोहमकहैंपमांनसोजानऊ। अबसीताहिचरनचर
आंनऊ। कविरोवा। जावरामअनलष्यो आनीता। सिवकाबाऊच रचचलसीता। देषतलो
कनवदनडराई। इहांसीतारघुपतिपहआई। देवलषनकहज्ञादीनी। कावबकुल
सज्यातिहकीनी। यहांसोइसालपजारीआगी। ज्वालाकालकरालहिजागी। सीतादि
व्यसमंदिही। कवत। चितऊकरमममवचन। सुनअबोधनिद्रासग। बिनराघवरसभा
व। अनअविलोकपरसअंग। दऊनततोइहदेह। प्रगटसुरमुषतुमपान। कारमुसा
षततिमनिकष्ट। संसयजुनसावन। देषतसुरअसुराकीसदल। अनसुतासतउधर्यो।
मनमोदविकासतकमलमुष। अनलप्रवेसनआचर्यो। ९२। शककविरोवाचदुहा। कीनेवं
दनपरिक्रमन। अनलहिसीताआप। आननरिवक्षादसउदत। मनवहिहर्षअमाप
९३। बंदअपरी। प्रगटस्वाहाज्वालापरजारी। कियोप्रवेसविदेहकवारी। ऐसीकबु
हब्याअवधेसुर। सोपावतनहींभेदसुरासुर। हाहाकारलोकत्रयहोई। कहतसुनत
समऊतनहीकोई। त्राहिरांमनवनूतउचारत। असहनविरतदेषनयआरत। दुहा। दे
वअसुररिषनरनदियपत्तपरामप्रकासजानसमयसोज्यांनकी। वाद्यौउरविस्वास
९८। कवत। प्रलयकालसीप्रबल। मनऊजगीयज्वालानल। परवसपरलोकापवाद
लगिचितनावषल। वउबायामयविसाल। सियरूपसकास्यो। लोकविलोकतसतल
गज्वालानलजास्यो। पहिलैतनपावकमहप्रबन। इवराषेरावनहयो। करुनात्वराम
कारनकरन। देवउसहप्रतिपदद्यो। ९४। विकस्योमुषारबुंदअंगअंगसोजाअति मं
गलमेकीनोमानोपीहरप्रवेससो। जावीसोनबलकबुकियोवाहेसोउकरे। सोपैसमैंदे
षसिरघुनतसुरेससो। हाहारवतीनलोककेरलोवसातनांही। उपज्योचरावरकैउर
मैअदेससो। रामरूपउरिसीताअंतरअनीतअति। लाज्योनवसनकरूपावककैले
ससो। ९५। राकसीवाचदुहा। समयविलोकिनिसाचरी। नरपतकरतअनीत। करमी
ऊ रअतिसोवउर। नइवकितनयनीत। ९९। कहतपरसपरराकसी। पायोसत्यप्रमां
न। नइनकैहैनऊचवन। सीतासतीसमान। १००। कविरोवाचकवत। धरमरूपप्रभुजदे
हधार। वासंधरआयौ। सियाउविकासंग। विहतउरहरषवढायौ। पयसागरलिछमीछि
वीन। अरवीनारायन। यौसीतारघुपतही। आंनदीयेप्रेमपरायन। करिवामअंगरघु
नथके। बाजितअतिछिबिजांमनी। नवनीलजलदमिलनेहनव। देहवनीसियदामनी
९६। भयोहोविजोहरांमसीतामनत्रामनि। भवकैसेटरैजोकरमरेषाभावनी। अन
लमेराषीदेहपायपतिअज्ञाऐसी। छाया कीनी पंचवटीप्रतिबिंबभावनी। काविग्रे
हबेवजार। छायातनबारकीनो। सुधिकैनिकसिसोसतीनसमझावनी। पावककेसा
थआयप्यारेकोदरसपायो। पिताकेसेग्रेहसेपधारीप्रत्रीपावनी। अंगनवाचाछपै। कंम
कवनरघुदेव। एहइब्याउपजाई। साधसतीसियसमऊ। प्रबनममग्रेहपगाइ। कह्यो
समरजयकाज। महाराकसबलमार्यो। कंटकपततकुजोन। अंतसोउउष्टउधार्यो। स

बनायकरनकारनसमर्थ। देवविससुषदिजिये। ग्यांनकीजोइमाया। अजय। कृपाअ
नुग्रहकीजिये। ८८। श्री रामवाचदुहा। यग्यादीनी राम यहां। मातुल। द्विजविवांन। उकुचावकुसु
रराजपह। उनिकहिकाजषमान १। कविरोवा। लेरथस्वार थिपेचल्यौ। इवलोकतबआय। रा
मविजयरावनमरन। सबैकहैसमझाय २। मातुलवाच। कांमारतवामीकुटल। दुष्टविस्वरत
द्रोह। सोरावननिजदोषसव। बिनमहगयोसबमोह ३। सुरद्रोहीहवगरनसंग। सदाकुमारग
साध। नासन्नयोदससिरनिलज। अपनेकरमनपाध ४। छंद त्रुअषरी। कविरोवाच। देवसबैद
सकंधरकेडर। सकनआयनिकटलगसमहर। सुनषलमस्यौविवानसफाए। ईद्रकुमेरवरन
यमआए। ब्रमरूद्रमुनिसिधसुवारन। साधककिन्नरपितरसकारन। रिद्दागंधरबरुनाग
दिगेसुर। मिलइत्यादिकअबिलचराचर। सबैआईसुरत्रियासयानी। महाहरषसीतादि
तमोनी। अमरकोटतेतीसजुआए। बाजतगिगनविवांननबाए। हसतपरसपरकरतकै
तुहलषेवरमस्योदसाननसोबल। कयआनंदविवधगनहरखहि। वारवारनचउहपह
वरषही। विविधविधांनतांनसुरवाजत। विहसततालमृदंगवजावहि। गहगहकंचवरीराम
गुनगावहि। ब्रह्माउवाचछंदवैताल। तुमआदब्रह्मअनाद अदजुतएकआनानासनं। अ
जअकलअगुनअरूपअनजित। अनगतनआवासनं। कर्त्तानरूपत्रलोककरता। ब्रम
तुमविश्वंनरे। च्चजुजगतरछिकनरनपोषन। विष्नुतुमलिछमीवरे। नवनासकारनरुद्र
नावितरुद्र तुमहीराघवे। सुरथानलीने बीनइनसब। माहाबलषलमाधवे। सुनसकतसद
त्रिपनवनस्वांमी। सुरसहायसदादयं। संग्राममास्यौसकुलदससिर। असुरदसत्रसाधयं।
अबदेवहमस्वस्थांनपाये। प्रजुप्रसादसपावनं। तुमआद्यमध्यजिअंतरूलौ। नकृहितम
वनावनं। इद्रोवाचछंदभुजंगी। नमेरांमइंदीवरंनीलआनं। नजेअंतनिरंजंतपदमंसु
नानं। माहापातकंकामनंदाहनामं। जयौरुद्रवन्दस्यतंरूपरामं। नवानावसंनाव
नंन्दपन्दपं। अकामंअवांमंअनामंअरूपं। निराकारदेहंसुरंदुषनासं। उरानंदपायोजयंत
प्रकासं। कपीसेसमित्रंदयारूपदेवं। विदेहंसुताजोगमाजंसनेवं। सुयंबमतरांमवेदास
हाया। सियावामनागेमहाजोगमाया। अहंकारीमद्यान्मतंमहीसं। अनाचारचारीबलीबा
कुवीसं। त्वयंक्रोधदीपानलेजोपतंगं। दसोदेवदोषीसुतंबंधुसंगं। तनमनीरदंनीलसोभं
तस्यामं। बटापीतवासंकलाकोटकामं। जटाजूटसीसंवपंवनवासं। द्रगंअंतरतंसुषचा
रहासं। करंवामकोदंडनामंसकामं। भुजदछनंबानसोन्टामं। कटंसिंघतुनीरसोजंसको
पं। भरंसुदरंतुलसिकामालओप। रुद्रोवाचछंद१। तुममोहसघनकेविषमवात। वनसं
सयकेपावकविष्यात। तमअंधकारकेरिवउदार। विषियादिकनंजवनषयतुषार। मनम
यमतंगकेसिंघमांन। नववारधमिंदरगिरवमांन। दुहा। तबदेषनृपतातिलक। अविध
पुरीचलुआय। सिन्दकल्योयहरामसो। दीनसघनसुषदाय ५। अबनहीउचितविलं
बयह। राजराजरघुराय। रिनजयपायोमाररिपु। करेसिधसुरकाज ६। सुरमुनिवारन
सिधसब। जथाजावमतिजास। कलहजइरघुनाथको। कीनोकीतप्रकास ७। कविरोवाच।
छंदउअषरी। इहांपितादसरथनृपआए। पिताआगमनसुनसुषपाए। करिपरिक्रमनदं
ड्वतकीने। आपरामनएछेमअधीने। लेदसरथसुतकंवलगाए। पिजुरविजुरेषानजुपाए। नृ

पविलोकनइनजलनरनर ॥ अतिआतिंदरोमतनउनरि ॥ जयश्रीरश्रानंदश्रमाए जेसुष
सकवनकहेजाए ॥ विगतमारस्तुवसमयविवासो ॥ ईहांदसरथनृपवचनउचासो ॥ राजाद्स
रथवाच ॥ सतवतीश्रकिलंकितसीता ॥ पावनपरमवसिधउनीता ॥ अद्यावदिश्रवसांनअरेही
विश्वविष्यातसुध्यवैदेही ॥ रांमकृपाइगसियहिनिहारे ॥ उचितहितश्रनुसारे ॥ कविरोवाच ॥
उजेरामपितासुषपऐ ॥ इहांदसरथवैकुटसिधाए ॥ इद्रवाच ॥ इदवचनकरजोरउचारे मोहिकछु
रुपादेकमुरारे ॥ श्रीरामवा ॥ रामाकह्योतबसुनसुरराजा ॥ करियेएहउचितममकाजा ॥ मो
हितकछुइकयश्रुतमंगावऊ ॥ जुकेरिनकपितिनहीजिवावऊ ॥ कविरोवाच ॥ इदइमृतवर
षाश्रनुसारी ॥ वांनरूतिकजियेश्रविकारी ॥ जथासबेसोवतसेजागे ॥ लीलारामउचरनउठि
लागे ॥ दुहा ॥ सुरसमुहसुरराजसम ॥ वाजतविजयविसेस ॥ अपनेअपनेलोकयह ॥ कीनेव
गटप्रवेस ७ ॥ श्रीरामवाचछंदत्रधीर ॥ रुघनाथसुनटनीहार ॥ इहकृपावचनिउचार ॥ अविलो
कलिबमनवीर ॥ कपिराजअंगदधीर ॥ श्रूरुजाबवंतसवध ॥ नलनीलहनुमतसिध ॥ इत्याद
जूथपजूथ ॥ थितसबेवीरविरुथ ॥ अरूकुटलंकानाथ ॥ हितजुक्तजोरेहाथ ॥ श्रीरामवा ॥ व
जुकह्योकृपाप्रसंस ॥ अबआदितुमसुरअंस ॥ तमबाऊबलबिरदेत ॥ जुधलहैहमसजे
त ॥ रनहयोरावनराय ॥ लियलंकविजयवजाय ॥ सबराजउरगसुनाय ॥ वनतावनीषन
पाय ॥ त्रयलोककीतप्रकास ॥ तवहोऊकारनतास ॥ दुहा ॥ जोलोसिससूरजजगत ॥ उदित
होहिश्राकास ॥ तोलोजसकपिनालको ॥ वतत्रयलोकप्रकास ८ ॥ पौरुषमहिमाश्रापनी ॥ क
पिसुनहीकबुकाल ॥ मेरैचलिहोसंगमिल ॥ सुनवैकूंटविसाल ९ ॥ मोसमकीरतकपिनकी ॥ सु
नकहिहैसविसेष ॥ नवसागरतिरहैनगत ॥ सोश्रतियासअसेष ॥ १० ॥ श्रीरामबनीहानंवरद
ना कविरोवाचकवत ॥ प्रभुनरहरिइहकैप्रसन ॥ वरदयोबनीषन ॥ ममप्रसादगढमांऊ ॥ म
हासुषकरऊश्रनयमन ॥ पायप्रगटप्रभुताप्रताप ॥ प्रनिपायनपरियो ॥ करिश्रपनोराक
सकुलौन ॥ धरकरउरधरियो ॥ अदभुतप्रनावमहिमाश्रतुल ॥ अजादीनीजीतअर ॥ जगराम
नांमजोलौसजय ॥ कलजुगनिरनयराजकरि ॥ ९९ ॥ वनीषनवा ॥ कह्योवनीषनजोरकर ॥ सु
रसुरपतिटरसाल ॥ मंजनविजयसुथेहममकरीयेदीनदयाल ॥ ११ ॥ श्रीरामवा ॥ अबतोविन
भूरनअवध ॥ ~~परथमानुजममन्हात अलंकारमंजनवसन~~ वाधिसुनऊ ॥ सत्पलंकेस ॥ मे
रोश्रावननगरमह ॥ वनहैनादिविसेस ॥ १२ ॥ जतीधरमपालजथा ॥ नरषश्रनुजमनन्हात
अलंकारमंजनवसन ॥ वाविनकछुनसुवात ॥ १३ ॥ करिऊसुश्रेषाकपिनकी ॥ जथाउचितवि
धजांन ॥ इहांवनीषनश्रानइह ॥ सबकीनोसनमांन ॥ १४ ॥ कविरोवाच ॥ कवत ॥ माररांमरावन
सयांम ॥ लंकागढलीनो ॥ असुरवनीषनसरनश्राय ॥ दीनहितिहदीनो ॥ माहावीरहनुमंत ॥
सेवसुग्रीवकपेसुर ॥ अंगदइतश्रनंग ॥ नालकपश्रसुरनयंकर ॥ मिलश्रनयजूथजूथ
पसमर ॥ हितत्रलोकश्रानंदऊव ॥ नवचूतश्रबिलनयनंजीयो ॥ नयोजैतटरनारनुव ९० ॥
समपसिवहिदससीस ॥ श्रीरामनरधरनसमपिय ॥ विसचमांसपलचरन ॥ अनलकंकाजलश्र
पिय ॥ वीरप्रेतकौतिकविनाग ॥ वध्योउतनबांनन ॥ ज्योतजोतिसंजोगप ॥ पवनलेगोमिलषांन
न ॥ कृतसरनहेतनरहरसुकवि ॥ दीनवनीषनलंकदिय ॥ कंटकघरवैनवउरंगकम ॥ कोपि
रामधुरचाटकिय ९१ ॥ एकउनयदसश्रयुत ॥ नागहयचरनचारनर ॥ इतेगिरतनुवइक

निरतत्रवेतकबंधन्नुवर। त्रवहिकोटकबंध। तांमवज्रियटंकारव। सुकरविजयसारंग। रोष
सकतरिनराघव। कृतश्हव्अन्नतनरहरसुकव। समरदसाननसजियौ। रघुवीरधनुषटं
कारवन। वारत्रयोदसवजियौ। ८२। तापकंटकनयटस्यौ। लोकलोकमिलमंगल। कुलराक
सषयकस्यौ। षेतमास्यौ रावनषल। महाश्हनश्हमोष। नयो थिस्वरमननायौ। वेदधरम
विसतस्यौ। समयसोरिषनसुहायौ। त्रकूलोक सोकनगोतदिन। अमरसमरजसउचस्यौ। सा
धौअसाधलंकेसवर। कृतिअन्नतरघुपतकस्यौ। ८३। रिपरांवनरिनरोद्र। महागढलंकाउ
रगम। पदलघनपाथोद। उसहमनदेहदसादम। नटसहायकपिनाल। सस्त्रतरपाहनध
नुसर। वयसुबालवनतावियोग। जलफलअहारकर। मांमोयहपौरुषवेदमत। मुनिसंपति
तिनषमांनियै। सुरअसुरननतरहरसुकवि। नियतकाजसुन्नजानियै। ८४। निसाचारकियन।
सकवनकोदंरु बांन्कर। रिनअंगनरघुनाथ। सबैफिरतविजइसर। रोषनइन्नवषरत। वि
वधषित देहविकासित। श्रीनबिंदवनवसन। वनारिवकोटप्रकासत। कपिनालमध्यमंक
लअकल। करिगढेश्रनुबिजयक्रम। करुनानिधानकारनकरन। महाबाहुउधारमम॥
इतिश्रीरामचंद्रविजयरावनबधवरननं॥ अथअजोध्यागमनं। श्रीरामचंद्रआगमनं। दु
हा। अांनबभीषनअथकिय। पुहपकनांमबिमांन। तिहबैठेरघुनाथतहां। सीतासाथसुजान। ८५
॥श्रीरामबा। कस्यौरामलंकेसकह। भूरनकपावचार। आपसंभारहुजाययह। राजश्रीनं
मार। ८६। बभीषनबा। अबिधबल्हगैसंगअब। सेवाचरनबिसेस। दरसनबिरहदयालको
सहिनजायअवधेस। ८७। कबिरोवाचछंदहेअषरी॥ दिवसुजथाजोगपरथदीनौ। कपिपत
अंगदआरुहकीनौ। विहतआनरथदएबभीषन। तहाआरुढनएजूथपतन। सुनरथ
चढेबभीषनसोचत। हितबंधनकिवितविमोहत। आपपयानुकरेअविधेसुर। बाजेगिग
ननिसांनगहरवर। बाजाविवधलंकमहवाजे। गोमवोमसुरमिलंतिहें गाजे। मिलउतरदि
वचलेविमाना। कृपानिधांनसहितकल्यांना। रांमप्रतापरूपउररावे। अमरननैटरजयज
यआषे। इहांरिनभूमध्यप्रभुआवत। तेइतेइसीतदिगेरवतावत। श्रीरांमवाच। राक
वारविलोकमहारिन। कुरमदस्रोणअलंकृतअंगन। मिलकपिरीछनराकसमारे। एतिन
केवउषरुविथारे। इहलिछमनघननादलराइ। लषनगिरे षलसकतलगाई। कुंभक
रनकोसिरयहांकाट्यौ। घारडरंगजिहपरतहिदाट्यौ। गढलंकापरयहवेलागिर। स
महरमध्यप्रभुमारेदससिर। मरकटमिलेनीरनिधमाप्यौ। थिरअयनागरांमेसुरआप्यौ
इहांबभिषनसरनैआयौ। प्रभुतासहितलंकगढपायौ। यांहांप्रवरषनगिरकपिआए
लसकरजूथपजूथचलाए। कपीपतकोयौनगरकेकधा। इहांबालस्यौमदअंधा। पं
पासरयहांमृकनुपरबत। हमकहआनमिलेयहांहनमत। तदिननइसुग्रीवमित्राइ। पा
यलन्नपरियहिसुपाई। सुग्रीववाच। कहिकपीराजसुग्रीवजोरिकर। यहांकहुनहकेकं
धाअंतर। रघुपतिआज्ञाइहापउधारौ। कैपावनकुलयेहहमारौ। कृपानिधांनअनुग्र
हकीजे। देकवरनमेरेसिरदीजे। श्रीरामवाच। दीनबंधुबोलेहितदायक। कपिपततु
मसबहीकेतलायक। जोपैअवधवितीतेजाउं। प्यारेनरथनहीनतनपाउं। मेवनवस
तपकरमप्रकासौ। उनसोउग्रेहवसतअभ्यासौ। अबनविलंबउचितमोहियाते। जोत

नपंषकुतेउवजांतै। कुनादिक एक सभय कीनो। रावनमार लंक गढलीनो। पुनताउरंग
बनीबनपायौ। नौसुरकाजजयामनभायौ। दितअजिलावजुद्रहमारे। तेबलबुधक
पीसतुमारे। निकट ~~सुमारै~~ इहांतैतवरजधांनी। पुरीकेकं धासुषदवमांनी। अबयहज्ञा
ऊकराऊसुषअपनै। उनसमकपानहीनयसपनै। जूथपजूथ सबैहज्ञाकु। कबऊ
संकनमानकुकाऊ। सुग्रीवअंगदवाचदोहा। कपकवेसयहांजोरकर। विनएवचनविसे
स। अपनैकोगोरवअबिल। आपदेतअवधेस।१८। कछुसहाइगुरडकौ। दितनसकपै
होत। कबुदिनप्रभुसेवाकरी। यहममभागउदोत।१९। करुनानिधयहसबनके। ईश्वर
हैअविधेस। रांमतिलकसुषअवधपुर। दरसनकरिहैसुदेस।२०। कविरोवाच। कपिपत
जूथपजूथकप। सबैचलैसुषपाय। सीयतारारोमासषी। लीनीसंगबुलाय।२१। जिहजिह
गोरनजगतपत। सुषकतविरतसुनाय। उनसीतहितेजातपंथ। विहसतदेतवताय।२२
श्रीरांमवाचछंदउअढारी। वनकीनोतपवेसविहाइ। सवरीइहांसुरलोकसिधाई। दंडक
वनयहसेवततापस। इहांकबंधहतेषलराकस। ईहांजटायूग्रीधउधारयो। मादाजुधनेरा
वनमारयौ। वैदेहीयहविमलपंचवट। तबैवसेहमगोदावरितट। यहजुअघस्तसुती। दिन
आश्रम। दिव्यसत्रहमलहेउष्टदम। इहजोपंचसरोवरअदभुत। जलरुहफूलेनिरम
लजलजुत। इहांसरभंगपरमगतपाइ। आपदेहजरअगनउचाई। कंटकआधनासय
हकीनौ। देवउजानजिहअतिउषदीनौ। अनुसीयाअरुमातमिलेप्रियभ्राता। बालमीक
आश्रमइहविदित। दैउजकुंजहमारेअतहित। तरलतरंगविमलजमुनातट। काटतसक
लपापउषसंकट। सियरयहत्रपतरगांमनिसुरसुर। इहमंजतइधकारकउधर। कविरो
वा। आश्रमभारद्वाजकेआए। दूतकुसलपरमसुषपाए। श्रीरामवाचदोहा। दिव्यदिष्टगुर
आदिद्विज। पावनसंतकृपाल। भ्रातभरतसानुजकुसल। कहियेदेससुकाल।२३। भार
द्वाजवाच। सुनकुरांमसबहांकुसल। प्रभुतवकृपाप्रसाद। आजदेवआगमभए। देसवंस
उदमाद।२४। भारद्वाजतपनभरथ। देवहिकहीनिदांन। आजअवतुरदसवरषए। इरनहो
तप्रमान।२५। गाधीवाच। आजअवधइरनअवधेसुर। पिततवइज्ञाहोतधरमपरै। इहैविचार
भरथगतिऐसी। कोजानेथोकैहैकैसी। रांमरांमरटसुषवषरोवत। जथासलातबानकमु
षजोवत। कारनकरनविलंबनकीजे। प्रभुतुमआगमसुनतपतीजै। भरथ...दसा। महा
विसादभरथचितमन। दिषतरघुपतपंथनिसादिन। आजअधिहरनदिनआयो। पैक
हुरामसंदेसनपायो। सोचतमनमोचतउस्वासा। आंनरहीयकनिसदिनआसा। अजहू
तौरुघनाथनआये। दारुनआगमपंथदिषाये। दगभुजभरथकुरेयहदिदसन। नअयच
योविस्वासमनहिमन। कहुधीरजकहुचितअकुलावत। उविधासिधपारनहीपावत। श्रीरामव
वाकवत। उरविचारअवधेस। वरषदसच्यारविहाइय। अवधउसहहउह। आजवहैपंचमति
थआईय। सुनकुवचनहनुमंत। संतअबवेगसिधावऊ। ममआगमभरथहीसमहल। सुषवात
सुनावऊ। चंचलअतिनादिनरहतचित। हमपाछेहीआयहै। सुषकै हैतबनरहरसुकविद
तभ्रातहिउरलायहै।२६। कविरोवाचछंदउअपरी। धीरवीरहनुमंतउ~~कर~~धाए। अतिसवेग
नंदीउरआए। आनमिलेभरथदिखअतिआतुर। कहीहूतरूंरघुवरकिंकर। हनुमानवा

आजरांमसियलिबमनअैहै २ लबलकु सजदरसप्रनुदेहै। भरथवा। हमसेरहेभरथ
सुनभ्राता। बातसबनकिह्यसत्य विष्याता। कविरोवाच। रामदूतसूंनजवउरलाए। स्वातिक
जावनइनजलगाए। अैसेरूपभरथअविलोके। हमबिवरसमउरषससोके। दरजास
जमघबालामंडित। षितबैठेतपसअनषंडत। ननमलपंकवसनतुवार। संतभावमन
जटाजूटसिर। अदिनसरनफलमूलअहारीधर। मदासंसंतब्रतधारी। कामक्रोधमदमो
हनसाया। कीनेमनबवदुरबलकाया। अंतरहमरहेएकासन। एकरामरटरामउपासन
प्रनुपावरीसियासनहूंजत। केकीज्योघनआगमकूंजत। रामरामरटपंथनिहारत। तहांकलप
समपलपलटारत। साघअन्यानसरांमउपासी। हूरनवनासरीरप्रकासी। कृतरूघनाथजुवन
वसकरियो। सोउभरथयेहअनुसरीयो। नएअधीरमिलनकहनाई। परमनिधीविहुरीम
नुपाइ। धरमधुरंधरसानुजधाए। सिरपरवरनपीठसुषदाए। पायफटेअरुरहतउपना
धाएउरधरकृपानिधांना। आगेहनुसजवफिरआए। सानुजआगमभरथसुनाए। हरहि
तेभरथदिजबदेषे। प्रनुसोषानसमाननपेषे। वारवारकपिपतहिवतावत। वेममग्रातभरथ
हीआवत। इतरघुनाथहांकरयआए। धीरनरहतभरथउतधाए। उतरेरथतेरामअनीता
समधासीपीबेहीसीता। कतहितभरथदंडवतकीने। जायउगायनाथउरलीने। प्रनुनएन
रथमनोरथहरन। उनयभ्रातसुषउपजेअनगन। दुहा। मिलतभरथरघुनाथमन। उपजेजे
सुषआदि। तासुषकेपरिपाकतब। तेईजानततादि २६ यहतकेज्योगुनअषिल। पानकरेस
प्रमांन। हैबेगोजोनिकटही। जनओतांकहाजान २७ जैसेवारजगंधगुन। जानतभवरसुजां
न। भेषरहतनितसंगजव। पावतनांहिप्रमान २८ कहिनसकेनरहरसकव। अनुभवविनुअ
ज्ञान। करुनासुषदकुभ्रातके। विहुरेमिलतविष्यात २९ छंदपधरी। सियचरनभरथयहांना
यसीस। इनदइउचितअहायअसीस। पुनलबमनलागेभरथपाय। लियहरषकरषकरकंठ
लाय। नमरामचरनउरहासनेम। प्रनुलायलएउरसहितप्रेम। भरथवा। भरथकहिषिनलबम
नअनीत। जसरातजनमतुजसजीत। निजरामचरनकीनेनिवास। प्रनुकरीसंगसेवाप्रकास
श्रीरामवाच। दुहा। कहिकहिसबकेगुनकरम। प्रनुसेवासुषपाय। कपिनमिलावतभरथकह
रीझरीझरघुराय ३० छंदहेषरी। मित्रपरमसुग्रीवहमारे। संगरहेसबकाजसुधारे। काननाक
इनहीहातीकर। महाबिसातकुभबूड्योमर। यहजुगराजमहाबलअंगद। मलोसनामहदस
सिरकोमद। इहहनुमंतसोधसियलाये। विक्रपायहमसेनचलाए। जामवंतअैनोधानीरजप
थीप्रसिधबुधबलहरन। एनलनीलसेतजिहसांध्यो। वाटकरीगिरसायरबांध्यो। जूथपजूथप
हाकविमांनहूं। वोरुबईनकेअमितप्रमांनकु। एममसरनवनीषनआए। तिनरिपुकेघरमरमब
ताए। दुहा। कृतपौरुषहनुमंतके। करेसिधसुरकाज। भरथकुसलतुमसोभवस। आंनमिलेह
मआज ३१ इनआंनीसंजीवनी। लषनजियेरनमांहि। नातरमेरोजियनतह। निसचैकैतौनांहि
३२ कविरोवाच। उअवरी। आपसमीपभरथबैगाए। वहिरुघनाथविवानचलाए। अंगमेरपरब
तआएसुष। मह्मिारामवतावतसनमुष। श्रीरामवा। अंगमेरयहपरमसुषाश्रम। हितनिसव
सेजटाकीनीहम। कविरोवाच। ईहनिषादराजागुहिआयौ। लेरघुनाथसुकंठलगायौ। वदर
यमिलतैअतिवेगचलावत। प्रनुमनमनविहसतसुषपावत। अनुक्रमनिकटअजोध्याआए।

दीरघधजा कलसदरसाए। श्रीरामवा। वामाकरूकरसाषवताइ दिषकुअविधउरीसुषदाई
लोकश्रसिधउन्थलषलेषको वंदनउनरागमनविसेषको। दुहा। कियअज्ञा हनुमंत कहं अ
विधप्रवेससुआज कहोजायमाताकुसल सानुजसेनसमाज। कविरीवाचछंदउअषरी। इह
हनुमंतअजोध्याआयौ सीताराघवकुसलसुनायौ आगेजननीहनुबुलाए यहशुभमंगलउ
ववगाये। कौसल्यावाच। कहकुउनसुनरांमकहांनी कवअैहैंघातनकेपांनी। हनूमांनवा·। सु
ग्रीवसतपंचवटिपावन राकसकरैउहांबलरावन इहांनालकपित्रगिनतआए सेतबां
धगढलंकलगाए दिसदिसरीकेदुरंगदवारा पदमअठारहवानरधारा उससहजुधपजू
यविषमदल षितरांममारेरावनषल माहासयामसकुलरिउमारि ईंद्रादिकजयसबद
उचारयो सानुजसीतानाथसुनाए अबपुरनिकटजननदिहआए। कविरीवाच। सुनतज
थाविधमंगलसाजे वाजेविहदअवधउरवाजे कमचौफेलपंथसुनदायक लेलेदएज
थाविधलाइक गुरत्रियवलीअयसुनगावत इनपाछैमातासबआवत गुरमित्रीअरुसूरसु
नटगन इहांचतुरंगवलेदलअनगन लोकमाहाजनजोहितलायक साजवलेवाहनसुष
दायक कृपापात्रविषविधकृतकारक पायसमयप्रभुविरहप्रहारक पंथपंथजनपतिपरस्वा
री प्रभुदिषिलनपरज्ञुताषसारी बालकतरुनवृधपुरवासी प्रेमसहितचलरांमउपासी इ
हांहनुमंतरांमपहआए सुनजननिआगमनसुनाए सकववहाकरथनभुवनसांमी आएलो
कउचितअनुगामी जननिविमानदिष्टपरिजबही तज्योरामपुहपकरथतबही धरअतिवे
गधराप्रभुधाए उरआनंदमातपहआए क्रमजुतरामकंठचतकीनि लायजननउरहीतबली
ने अतिप्रियहरषप्रेमअधकाइ हूरनमनकुरंकनिधपाई सुरनिवछमिलमनकुमनागी ले
तबसायलैनहितलागी आकुलमीनजांनजलपाए दादुरउबिनसघनदरसाए महामनोर
थरटतमयुरा पावसआयसुआसापुरा ईहांजयेदकुघारसअैसो तेकविनदिनसकतक
दितैसो कासुनमिलनसुषकहिकिहजाई सासुनचरनलगीसुनसीता गहिउरलायलइसु
नगीता नरथलषनअरघनत्रयजाई जननमिलनसुषकहिकिहजाई सबजनकेउरहर
षसंवारा विश्वइसमिलएकहिवारा मोहनमिलेरामसनमांनी जुगतलोकपरकाजनजां
नी आउनवलेजननिरथआगे अविनपयादेतरअनुरागे अज्ञामानरथनआरोहे समबं
धवदिनकरसेसोहे। नंदीग्राम आगमन। नंदीयामहीरांमनरेसुर आएनरथयेहअवधेसुर
वाजेमंगलद्वारवधाइ आसाफलीरांमयहआइ उरमाताशुभमाकुपधारी समसीतातारासु
षकारी। नरथवाचछंदप·। करजोरनरथतहांपणतकीन प्रभुविश्वहिर्दयव्यापकप्रवीन
चितमध्यवसत्वरनावचित तुमतेनअगमकछुहैअनंत केकइकरेअनुचितकाज रा
जापहजाचिकपटराज सोराजतिहारेवेदसाष रघुराजविनाकोसकैराष यहराजतुम
हिसोहैअनंत तुमदिषतपालकआदअंत अबकरउजग्वरहाअजेव तुमदीनबंधुदेवा
धदेव रस्सकतुमतुमहीवनेराज रघुवंसतिलकराजाधिराज पावरीयष्टइजाइमांन इह
रामअयलेधरेआंन। श्रीरामवाच। तुमसाधसदानिरमलसुनाय लएरामनरथकरकंवल
अप्रसाल नंत य तबदइरमित तुमकरकुनरथमंजनतुरंत कृतनरथजटामोचनसकाज सानुज
सुनमंजनवस्त्रसाज आवरनवसनभूषनअनेक वनिविविधगंधलेपनविवेक विधजु

गत सा स्त्रव सनन वनाय । सम अनुज वडी सौनासुनाय । इहां न रथ सत्रघन नगत नाज
रघुराम तुहारे महाराज । उन राम नमामौ वनधकार । सानुज तन मंजन कृत सुहार । इह न
इत्र विध धूरन नमांन । सिनास नाव बाह कुसुलांन । सौगंध सलिल मंजन सुवार । तन वसन
धौत अवधेस धार । नित कृत जाय सूजा सने म । प्रभु करे जथा विध सहित पेम । अती मोल वसन
आवरत अंग । स्वरनमय सुत्र विचित्र सुरंग । आभुन समल बमन वसन ओप । मृगमद
नमंन कुमिल पेम जोष । कनक मन रतनमय पचत कीन । वनि अंग अंग भूषन नवीन
अरचित सुगंध आमोद अंग । भ्राम त सुस हू मिलमत भृंग । सम रूप सरव अग्र वर नसुधार
चित बैठ मिल बंधु च्यार । विय बहन ध्य म मंजन सुतंत्र । सिय अंग साधी त्रिया संत ॥
कोसल्यावाच दुहा कौसल्या अग्र पास कल । मिल विय चतुर समोद । कृत हित मंजन न्यांन
की सलिल सुगंध स सोह । २४ आभूषन वासन सलिल । भ्राजत अंग विभाग । सासु वरन्न ल
गी सिया । सत्प अतुल सोभाग । २५ सहज सुवास सरीर की । उवत रंग अपार । भामन पर मधुक
भ्रमत । करत मधुर झंकार । २६ मांनकु लि बमी पिय मिलन । सज सोरह सिंगार । प्रगट विराजत
सा सुपह । अद्भुत रूप उदार । २७ सकल सुमंगल द्विज सुच । सुष मिल देव संजोग । कीने मंत्री
उचित क्रम । दुरही प्रवेस प्रियोग २८ छंद पधरी । इह वजे विविध वाजत विसाल । मनु गरज गिगन मि
ल जलद माल । आनौ विमान पुहपक वनाय । आरूढ नये तिहां राम आय । अति पेम अनुजाध
रत रथ आप बैठार निकट मनु सुष अमाप सबके ढेभ्रात वाहन चढाय सबसे षवडी सोना सु
नाय । सुग्रीव वभीषन सुनट संग । आरूढ जथा क्रम रथ अनंग । आरोह जन निरघष बखान
सीता समेत तारा समांन । अथ अजोध्या प्रति गमन । रसव दौव लेच ढ अवधराय । घन परे गहर नीसां
न घाय । सत सहस्र अस्व आरोह संग । रथ अयुत अयुत मिल गज मतंग । दुन वीस लछ पयदल
प्रमांन धानुषी सु सेवा सावधांन । चतुरंग चली सेन्या सचाल । मिल पदम अठारह की सनाल । इक
को समान अंतर जु आय । पुर अविध सनंदी गांम पाय । सुन वाग विविध वनि सुषद संग । अविलो
कित उदीपन अनंग । तव आय अजोध्या पुरी तीर । वंदन कृत उन राग मन वीर । छंद उअषरी सगुन
नये रघुनाथ हिं सौई । हित जो पै सुनत ह्यां होइ । पुर पैवत दरसन दिसपायो । अरुन गरुड उन्न
ति ह उल आयो । आ एक लस समुष मिल औसे । जु वितिग्पांन मंगल मुष जैसे । बिरकी गली सुगं
ध सुहाई । अति सोभा जित तित यथकाइ । बिब वढ हाट पाट अवबारे । वाट वाट सौगंध वियारे । वं
दनमाल यय गृह बंधे । सबैस मंगल समए संधे । तोरन धजा पताका अंकित । जन अविलोक हरष
व ढजित तित । उज्जल धवल उतंग अवासन । प्रति गृह गृह बिब अतुल प्रकासन । पुर मह कस्लोप
वेस देसपति । जथा जोग्य सुर हज्जा साजत । घार घार प्रति नेट दिषावहि । यह यह सोध सोध चढगा
वहि । वनिता सुरंग अबीर उडावहि । उह पहर पराध वर रथ उपर । कर तप सार प्रसार कमल कर ।
घर घर वजत वधाइ अति घन । मिल नारी नर मोद मद्दामन । छिन ति हि गिगन विवानन बाए । अ
मर समूह अविध उर आए । वोम नगर वाजे बकु वाजत । गहर अखाढ स घन घन गाजत । वि
वध दुंदकु समावलि वरषत । ह सत पर सपर सुरत्रिय हरिषत । इह बिबरा जदार प्रत्तु आये । व
निता मंगल कलस वंदाये । विध जुत धार पूजि कृत वंदन । कस्यौ प्रवेस जु असुर निकंदन । छंद १
परिब्रम राम मिंदर प्रवेस । आनंद नये त्रकु उर असेस । कपि जाल उचित नररूप कीन । निसे

षविलोकतसुषनवीन। अविधेसबनामिंदरहीआय। बैठेजुरामपरषदवनाय। आदरहि
जथाक्रमबैठआंन। वानरनरराकसन्नालवांन। मंत्रीसुमंतदेआदमोद। सबकरेराजकार
जसमोद। उनजननीअंतहपुरपधार। कुलदेवनहजेदेतकार। श्रीरामवाचउह॥ इहांअनंतसु
मंतकह। अग्यादीनीएह। सषासुग्रीवहिआद्यसुष। फिरासबकहदेह॥ ३९। छंदउधोर। हैकवर
पदमग्रेह। सबसोजसहतसनेह। जहांराषियैकपिराज। सनमांनसहितसमाज। छंदपा। सुच
येहनरथपरकरसमेत। सोदिहलंकपतगतसहेत। जूथपजन्सजूथनजथाजोग। उराषकरक
सेवाप्रियोग। कविरोवाचछंदउधोर। सुग्रीवसहितसमाज। रघरोहराकसराज। प्रभुविजयअ
ग्यापाय। अतिहरषफेरनआय। कपिनालनैरतकाज। रहिजोरकरजुतराज। जिहजथामनसु
षजोग। प्रतिअन्नक्तिसुनोग। प्रभुन्हातसुभटप्रवीन। देमांनअग्यादीन। लहिजथाआदरलोक
उच्चितेअपनेओक। इहमातगृहअवधेस। उनकरेमधप्रवेस। छंदउअषरी। क्रमजुतजननन
हिवंदनकीने। लायसुछेमरामउरलीने। बंधुसमेतनिकटबैठारे। आंनआंननवछावरवारे
आनंदसलिलनईनननस्राए। उनमिलेतनमनसुषपाए। पैयहबुधकविकिहपाई। विहतमि
लनसुषदेनावताई। दूहा॥ इहांरामगृहसुषउचित। सानुजकरतविलास। सक्रजथासुर
लोकसुष। विनतावसनसुवास ४० कलहजरावनरामको। ताकीहरनक्रीत। करुनाजुतम
नक्रमन। नरजोपढिहैनीत ४१ लिषेसुनैवाचैनियत। कहैसुनावैकोय। विजयविन्हतविसु
धमति। हरिप्रसादतिहहोय ४२ अवरहिदेवउपासना। कारनविषयविसार। तातेनरहररांम
ते। सासोससंभार ४३ तिकीनेभनवचनवअकृत। जीकबुजांनअजांन। करतविजयरघुरा
मकी। कैहैनासनिदांन ४४ कवतछपै। सेषनागकुफलसिराव। तनवरतमेरतहां। सघनतेलमि
लसिंधु। जोरतिहादसदिनेसजहां। कोलकमवआधार। धोमजुवचक्रसधारिय। नयनवा
तसंभाव। प्रगटनिसदिवसप्रचारिय। आकासअसितकजलविल। केवीजरतपतंगकुल
काकुस्तरांमनरहरसुकवि। तवप्रतापदीपकअतुल ४५। कवित। मायामृघमारिमोष्यौ बा
लिसौबलीविदोष्यौ। सुग्रीवसंतोष्यौ अंगदाहि अपनाएहै। वारवारम्याफ्यौसेतबांधरामेसुर
थाप्यौ। सुक्रहीसंताप्यौदेवउधनिदिवाएहै। रावनसवंसमास्यौवाहीछिनसोउधास्यौ। प्रथी
भारटास्यौनवभूतसुषपाएहै। लंकागढलीनौदीनवभीषननेसूपदीनो। अविधेसरांमयो
अविधउरआएहै ४६। छपै। सबलरांमरावनसग्रांम। चितक्रितविचारहि। सारदनिगम
गनेस। सेसधरध्यांनउधारहि। कलपकोटस्रमकरहि। पारतहिपनहीपावही। सुनहीं
जथायंथनसुनेद। गुनमांनुषगावहि। मैकह्यौजुकछुअनुसारमत। साधसुकविपिंह
तसुनऊ। करिजोरजोरनरहरकहत। गुरतुममोहिसिषकरगिनऊ ४७ कलहक्रीत
काकुस्थ। कहनमनसाहँसकरियौ। आपसकतउनमांन। अगमकारनअनुसरियौ। आ
करषनजौअकास। उवमसकाअन्नासौ। उदधतिरननरकरउगाय। पोरषतप्रकासै।
करुनाप्रसादगुरदेवकै। हितितिह सतमारगलह्यौ। रघुपतविलासरनवीररस। इहैक
छुकविनरहरकह्यौ ४८ इतिश्रीपोरषेरामायणेमाहांमुक्तमारगेयाम्नाबाबारठनरह
रदासेनविरंचितंलंकाजुधकांडसंपूर्णं॥ अथसप्तमोउतरकांडवरननंकविरोवाचउहा
अबउतरआरंभियौ। राजतिलकरसरीत। प्रथीदिद्याधरनपन। उरवासिनकीरीत १

कवित ॥ महा उजन सनमांन राज सिर छत्र जु धारिय । पाय बीर रन जय प्रसाद उर हर
ष धारिय । बध लवनासुर विहत उत्र लव कुस उतपने । अगट न्याव प्रसु पंहि । करम हय
मेध सु किनै । कुल राज वर षद सहंस कृत । अखिल अविध उर उधरिय । कीरत सुनीत र
घुपत करन कवित तर आरंभन किय १ । कवि रीव । दुहा । सत सुर पत के सीस ना बेठे रांम
विचत्र । बंध व मर कट ना लवनि राक सभ मित्री मित्र २ दुज वसिष्ट गुर आद दे बामदेव जा
बाल । बालमीक गौतम विमल आय षेम व तिपाल ३ । छंद पधरी । कस्यप अगस्त [illegible] गु
अत्रव्यास । अंगराक एव दुज हुजयास । मुनि विस्वामित्र पवित्र संपेष । इत्याद आय रि
षव्र असेष । उव द ए राम आदर अनंत । सो उबे कत थाक मप र म संत । दुहा । पाय सम
परिषद उसिध उन आय सत्र मांन चारन सिध जु वतुर चित गुन गीर व सुग्यान ४ । अथ
श्री रांम नाम रधकार व्रह्म सत्र वाच । सत्रघन ह्व बिव सिष्ट सो सनामध्य सानद रामना
मयह नाम के कहियै महत मुनिंद ५ । वसिष्ट वाच । इहै पिता सो मे प्रसन कीनो दोई कका
ल प्रांनी को उधार पद दे कु वताय दयाल ६ । छंद दे अपरी । जो गजि ग्पकी सकुन जाके ती
रथ गमन दान नही ताके । उन गुरगम ज्ञान न ही पायो । नटक तफिरे कुसंग रमायो । विनु
बल उद्म दीन विचारो । ताको प्रभु कैसै निसतारो । ब्रह्मा वाच । यह जुग बीते कलजुग ऐ
है साधन तव सब सिधन सैहै कर हिहै विप्र सुद्र की करनी । वार विषमनो दिज्ञातन वरनी
दुहा । नव चढि है कलजुग नरन विनसे वेद विचार । धरम हो हिअ व छीन धर सिध हि
साध संसार ७ । कवित ॥ निगम पुरान निदांन सबै निरमूलन सैहै कृत हु जगो रधकार
महंत तीरथ मिट जै है । तपस्या संजम नियत ध्यान अभ्यास प मुकहि । वर्ण धर्म कुलक्रत वि
धांन चतु राश्रम च्युक है ईत्याद करम वस काल के जुग निसेष तजाय है कलि केवल
रघुपति नाम के हि ध्यान परम पद पाय है २ जदिन ध्यांन तप जाप नियत व्रत दांन न सैबौ ॥
पिता मात सेवा प्रकार जुंन षो जन पैबौ सत संगत सेवन साध सरधा सुन लछन नक्ष
न्याव पोरष प्रताव मानि न मूलमन साचौ विस्वायन रहरसु कव सब तव काज सुधा
रिहै करुना निधान रघु राम कौ एक नांम उधारि है ३ । छंद दे अपरी । कहि है सुनि है हि
त चित कोई । कै दुज वा अत्यज किन होई । इह न वर्ण आव रन विचारे । अग जग हि पस
पंखी उधारे कुंजर कव नन ने मछत कीनो देव या इयह मोष जु दीनो कहा सर वयज
गर की करनी विदुष पुरांन ता हिगत वरनी अजामेल कहा करम अराध्यो सुत हि
त नांम मरत सो साध्यो करम अहल्या अनुचित कीनै देवता हिता को पद दीनो गि
नका कहै कहा जस गायो निसके जागे पाप नसायो व्याध करम की कोन वड़ाई प्रभु के
हेत परम गत पाई कीर कहा साधन जु कीनो देवक वो ता जल नरदीनो दुष्ट कबंध
कवन सुष दीनौ कर हत करगंधरब जु कीनो देवक वो ता जो निग्रीध हि किन तत पद
यो लिष रुधरत न प्रभु उर लायो कुंभकरन षल मागत केवा दइ देवगति ताकु देवा कं
टकरावन दुष्ट त्रलोकी विधता की नव चूत विलोकी कहि ईसाद मुकत की करनी वेद पु
रान तिन कु गत वरनी जगत उधारन नाम सो इजांन कु वार वार खल बाफ वषांन कु गहि मन

वाच रांमगुन गावै पतित सुपेहूर पनपावै ॥ दुहा ॥ रांम नाम पयूष रस षग लखु वेद उदांन
ताकी भेद सुतत्वगुन जांनत सिवसुजान ॥८॥ पायमरन कासी उरी जीव किकृतजोइ ह
रता करउपदेस है शत्रु को नाम वियोइ ॥९॥ षांनी कहि है हेत पर भरत रांम यह नांम पापी महा
उनीत पै मोदल है हरी धांम ॥१०॥ इति श्री रामनामाधिकार ॥ अथ दानयधिकार षष्ठ श्रीरम वाच
नारद्वाज सो मन कुजुत यह श्रुती रघुराय कहीये पथ्य तदांन की तेसी वेदवताय ॥११॥ नारद्वा
ज वा ॥ पापकरे षांनी उदवि जो कबु जांन अजांन भूमदान गोचरम गति नास जु के हैं निदान ॥१२॥
कवत ॥ त्रयजव अंगुल यक मुष्ट अंगुल चव मंझिय षट मुष्ट न कर इक सप्त कर दंड अषंभि
य मुष मुष विसतदंड मांन गोचरग नजिय दस गोचर मध प्रमांन भूम दुज दीन जु दिजिय ति
ह चरम मात्र महि दांन ते विपत नहो तविषाद वस सो लहे सकल मह ताखरग जगत रहे उ
जलसुजस ॥४॥ दुहा ॥ देव जषोडस आदि दे करियत दांन अनेक हे प्रथ्वी सम को नही वाचत
वेद विवेक ॥१३॥ दांन सकल फल दात है षेत्र पात्र दिन देष पे सब ते पूरन करष वसुधा दांन वि
सेष ॥१४॥ ताते तुम रघुकुलतिलक दांन भूम को देहु लिष्यो उरांन न जुगत लौ अद्वयउनसु
एह ॥१५॥ आतम पर दत्ता अविन हरे जु काऊ हेत ताके पाप प्रभाव को ला मनरक पति लेत ॥१६॥
अविनीपत अग्या अनय पतयाह कहि ताप कुल तिहसा तदकुन के उरधा जुक्त हे पाप ॥१७॥
थी उदक प्रलोक के वादत पाप विधांन ताके मोचन जतन तहां निगमन कहे निदांन ॥१८॥ अ
बलौ अतुल अनरथ एहां कि ऊ नृपत नही कीन वाय थ्रित ताते षगट वेदवताय न दीन ॥१९॥
अथ उतिमादिक दांन ॥ उतिम मध्यम कष्ट अरु देव अफल जे दांन सो सुनिये अविधे ससब
निरय कहत निदांन ॥२०॥ दुज घर जाय अवित दिन पूज जथा विध पाय जो कबु दीजे सक्त
जुत उतिम दान कहाय ॥२१॥ पात्र आन यह आपने समय सहत सनमांन करे जु दित वित मा
व कृत देव सु मध्यम दांन ॥२२॥ कीने जाचना कबु दिये जु पात्र हि दांन ताते कहत कनिष्ट तब
प्रथीनाथ प्रमांन ॥२३॥ कीने सेवा कष्ट के पात्र दांन जो पाय ताते यह हे त्रलोकपत कृत है अफल
कहाय ॥२४॥ स्वातक राजस तामसी नियत त्रे विधश्रेदांन आद मध्य अवसांन लौ उमसो सु
न कृप्रमांन ॥२५॥ अथ त्रविधदानप्रकार ॥ जो रंगा व त्रियसौ जुगति पदि विध मंत्र प्रयोग अपनेक
र दीजे उवित स्वातिक दांन संजोग ॥२६॥ कबु जु दीजत आंनिकर मांन पात्र सनमांन आल
स वाद स्व जति दूसो राजस दांन ॥२७॥ पात्र अनादर हित रहित है कछु दीजत ताहि धरम सुज
स हित हीन विध तामस जान कु ताहि ॥२८॥ अथ नेमितदांन ॥ कारन कि बा नियम करि देत मही
पत दांन निगम कहत नेमित्य ते देव यथक नित दान ॥२९॥ पात्र हि बा कुपात्र कहु दान वि
बांन न देत जस ताको नही वदत जग महिमा धरम समेत ॥३०॥ अथ अकाम सकाम दान उ
दासीरना ॥ देव त्रय विध दान हे वरत संसार मह निगमन कहे निदांन एक अकाम सकाम
इक ॥३१॥ त्यात धरम के हेत समृत वताय अकाम सो तिक बु इहां न देत यह तसु पे परलो
क ॥३२॥ करमन ईस्रा कोय का कु कारन दांन किय जग सकाम इह जोय ताको फल विव
सत इहा ॥३३॥ दुहा ॥ कही जया विध दांन की नारद्वाज रिषराय इहां नयो संतोष अति सुनि
श्रीरामसु नाय ॥३४॥ इति श्री दानप्रश ॥ अथ श्रीरामराजभिषेषाक विरोबा ॥ मुनि वसिष्ट

द्विवज्ञ मिल | सुत लछमन दिन साध | धरयो जे ◼ गन पंचांग सुध | उतिम रहे तत पाध ॥ ३५ ॥ सुनिस्रव
उजसब दिन अह्लाद इ | सुन कउन रथ सुज्ञान | रांम तिलक अभिषेक अब | परकरक रि कउ द
मांन ॥ ३६ ॥ नराच ॥ मित्री राज सुमित्र सो | कह्यो भरथ सुन काज | करियै रघुबर तिलक हम | सक
ल समंगल साज ॥ ३७ ॥ कबित्त ॥ भरथ सुमित्र सुग्रीव संग | मिल अंगद हनुमांन | जामवंत जूथ
प सजय | हुत तउ ग्रुम कल्यांन ॥ ३८ ॥ छंद उअषरी ॥ हांकपिन्ह लक पीस पवाए | जे बल बुध उवि
त यहां आए | सब सरिता सागर जल संगम | सप्त दीप मृतिका महा उतिम | सरब अउखधि
धात जथा सुन | देव ब्रिछ पलब फल उरलन | पत्र अधार सार बन पावन | मिल पंचांग जथा मन
भावन | सब तीरथ के नीर सकारन | आनेता रक नक घट अनगन | औषद मूली उचित अ
सेषत | दिव्य वस्त जे विहत विसेषत | अतही रांम भक्त कपि आतुर | वस्त षोज वन वन प
त नउर | उतिम वस्त सरब लिआए | ते वासिष्ट गुर मंत्र बताए | जथा अंग न षसिष रीम नजुत
आने सिंधव रमत्र यत्र अदभुत | विध वत चतुर दंत सित वारन | गुंजत मत्त कपोल मधुप गन | सु
नल बन तन बरण सुहाए | बाज उतंग सुराज बनाए | उहर काव समय सिघ आए | विहत वि
चित्र सुपीव बनाए | किन्पा षोड सविप्र कवारी | सो हत न्हसन रतन सवारी | बतिय द्ध ज पताका
तोरन | वंदन माल विचित्र पत्र वन | कलस कनक यह ग्रिह बतिकीनि | नग मनि जट त उतंन बीने | कि
न्नर गंधब ज्ञान ऋतिकर | आन मिले मंगल मय अवसर | विवध विता न निसांन जु बाजैत | गह रम
न कु नाद बघन गाजत | हय गय रथ पय दल अनगांन दि | भूरन मिल तुरंग बमांन दि | सुर मिंद्र स
ब भूज सजाए | महि मा षेडा देव मनाए | छंद प · यह ग्रिह उर मंगल जुवति गांन | बाजत्र विवध बाधे
विधान | मूलाग्र सहित कुस पत्र मेल | तुलसका माल तरु तरुल केल | तेतीस कोट यहां अमर आ
य | बिब अमित विमांन नगिगन गाय | अपछरा न्रित उबाह अंग | आकास च्यो नाटक अनंग
सब नए आन संचार सिध | प्रभ तिलक समय घटिका व सिध | अथ तिलक उछब | तहां सुलग
होम सो लाउनीत | बिठे वसिष्ट रिष बर विनीत | इहां ब्रम देव उज रूप आंन | बोलत विष्मा तब
व वेद वांन | कर रहे रष जथा विध तिलक काज | सुन देहया र सुरगन समाज | दुहा | रांम तिल
क आनंद उर | सुर कवि नरतन साज | जट संगम भ बम्भ्रूत जे | विध क्रम जथा विराज ॥ ३९ ॥ छं
द प · उठ हरि के पीन बेठ आय | औषदी सकल जलस्य अन्हाय | सुन्म मंजन कीने राम सीत |
परधान वसन भूषन पुनीत | असरस होम मंगल दिआय | विध जुक्त समय भूषन बनाय |
सिंघासन दसरथ न्रिपत साज | कंचन मत रतन मय तिलक काज | वन बैठे रघुपत सिया वाम | का
रुना रूप रती मन कुकांम | हुत कुरु अग्र दीपक सकाज | सिध समय सा कुतुर मुनि समाज | छं
द दे अषरी | रिष बर वेदो मंत्र उचारे | विवध विधान होम विसतारे | देव जथा ह्ल मम अकृति दीनी | का
रन उत्सौ त जु पूजा कीनी | साषोचार पढे विध संजुत | सब्बे वसिष्ट गुरु ब्रह्मा सुत | कह्यो वसिष्ट तिल
क सुन कारन | रामचंद्र मस्तक विजइ रिन | मरकत मनि याल न मुकता गनि | मनु जल विदु जन्नग
ति उर्जन | सीर हकम्यास हत सुवासन | तहां आरती करत अदवातन | इह गुर वधू अर्ण द्युति आई |
करी आरती पूजा पाइ | आइ जननि सब प्रेम अधीनी | देष तिलक सुन आसिष दीनी | उन माता सग्रे
हपधारी | करत गांन जुवती सुनकारी | भरथ लछमन अरघन त्रिकुनाई | राजतिलक कीनो रघुराई

इष्टदेवकेमिंदरआए। राजतिलकबैठेरघुराए। कुलदेवनमिंदरहितकारन। प्रभुकीनिसुनहोमसु
रूपन। ससत्रअस्त्रपूजातहांसाजी। विधजुतइजप्रभुरथगजबाजी। इहांप्रभुराजबनामहआए। बै
ठसिंघासनसनावना। तहांसुग्रीवबभीखनअतहित। जामवंतअंगदसमहरजित। जूथपहनुमान
संमजेते। तिलककरेदेषतसुषतेते। रघुबंसीनरपतिजोराजा। करेतिलकमिलमंत्रसकाजा। बरनआरब
सुबरनसुबंदत। आनतिलककीनेआनंदत। प्रजाप्रद्रसप्रभुपाए। आदरलहिआनदउपजाए।
होततिलकइड्रादिकहरषे। विबुदनविजयउहपनबरषे। वसुधागिगननिसानजुवाजे। गिरकिं
दरप्रतिधुनमिलगाजे। बाजेघरघरनघरवधाई। प्रभुअविषेषमहासुषपाई। अथदांनप्रमान। नि
यतसवांमइजपदगुरगन। प्रथमहीकरेमनोरथपूरन। नगरसहसतसांसनकीने। देवउदकक
रविप्रनदीने। सुरभीलक्षसोहनसिंगारी। उदकजुतविप्रनअविधारी। असवउरंदरथजुतआभू
षन। उरणसुत्रपाटंबरअनगन। अनसंष्यातरेप्रकृतअर्पन। त्रयसतकोटिकनकमुद्रातन। इष
नसहंसचारगुनअतिबल। हेतउजनदीनेसंजुतहल। नावसहतजोजिहमननाए। प्रभुअमि
लाषसबनपहुंचाए। प्रथवीवकजावकजनपूरन। याहीसमयदांनकतउरन। स्वेतछत्रसुमक
नकदंडकरि। विमलचवरसुग्रीवबभीषन। हकदिसढारतमहामोदमन। दरपनलेजुवराजदिषा
वत। विधयुतलिबमनपांनषवावत। जाबवंतनलनीलजयाक्रम। हनुमंतादिसेवजुतेसंजम
वेत्रपांनइगपालविचहिन। अग्रानरथकरतअनघन। दुहा। आनंदेसुरविषअषिल। समयवि
लोकसुनाय। करजोरेअस्तुतिकरत। प्रेममगनसुषपाय॥४०॥ अथब्रह्मास्तुतिछपै। तुमहिमहाम
नोद। विस्वकेहितविस्तारिय। सोपेटरतअसेष। धर्मकारनतनधारिय। रजसततामसत्रगुन
आपरब्राउपजाए। एकतैरूपअनेक। बर्नलछनजुवनाए। अदभुतअनंतमायाअतुल
रामदेवप्रभुरावरी। सुररहेभूलतामहसकल। काऊनसोपैवसकरी॥१॥ रजगुनतेतुमरांम। न
एविधसिष्टबनाइ। सततेविस्नसरूप। विवधकृतपोषबढाई। तामसगुनतेरुद्ररार। विषअंसतजुविना
सिय। आदनमधअंत। एकतुमहीअविनासिय। अनवद्यअनोपम असहअति। रघुवरईब्रारव
री। करनीउरंतकारनकरन। उरधारीसोइअनुसरी॥२॥ माधवतुमजगमांझ। जगततुमहीमहजा
नो। चारषानइकवीस। चौकनवखूतप्रमोमो। जथाकुंनसतजलसंजोग। प्रतिबिंबप्रकासतप्र
गटचंदप्रतिमाप्रमांन। आनाआनासत। घटनिष्टहोतमहिनीरमिल। काऊकालवसेषबस। सबंधर
हतनरहरसकवि। सुपेएकआकाससिस॥३॥ तुमहिआदवाराह। अषिलअवनीउधारिय। सफर
रूपवेदनसहाय। षलसंषसंघारिय। कमठपिष्टकविन। महामंदाजुष्टमायो। सुधाकाढिमथषीर
सिंधुअमरनअविवायो। नरसिंघफारिहिरनाकस। रिनहिरनाकुसमारियो। वैगरअंकबाल
कअबल। अरुप्रहलादउधारियो॥४॥ बामनतनविसतरयो। बांधवलदेतविगोयो। विप्ररांमइक
वीसवार। षत्रियकुलषोयो। रांमतुमहिसमासरूप। रिनरांवनमारयो। यहअवसरपूरनअसेष
धरधरमउधारयो। कैहकप्रतुमहिब्रजविहरियो। बोधदयाविसतारिहो। कलिअंतकलिकीअविता
रिकर। सबैअसुरसंघारिहो॥५॥ दुहा। रांममिटतमरजादमहि। करतसरूपअनेक। सिधनएनर
हरसुकवि। तुममतोएकहिएक॥४१॥ छपैकवत। नकअनिनजुनाव। तिलकउछवगुनकृततव
सुनेलिषेवाचेसप्रेम। रनविजइराघव। लोकविषयलहिलोक। सकलसंतानसुसंपति। आयुकी
तउद्यमअमोघ। मनसाविसुधमति। अधासमेतनरहरसुकवि। इहांजतीकोउगायहै। तेइसाध

×सीतलसुतिजलनिसुभमर सबघुनंदकेबन्नसोइसोहत मजुपावनकेजगदविमोहनत×

बिरतत्रयलोकतव प्रभुप्रसादइपायहै ५ दुहा करुनानिधतवभक्तकरिपावतपंथउनीत
तातेउषसागरतिरत भवभवसंतअनीत ४२ इतिबलअस्तुतसंपूर्ण। इन्द्रादिकअमरअस्तुत।
छंदवैताल जयरामदेवअनुदेवरहक अविननरतनअवितरे रिनमारदुष्टमदंधरावन हेतसु
स्तुवनरहरि जयनिराकारनिरीहनिरगुन निकटनिसंनिरंजनि जयसक्तकायसुसक्तसं
जुत बरणनीलघनाघने तवमाइयावसवनेनिरंतर नागसुरअसुराननरा भवभूतभावहत
भावन भारवरणविराभवरा तेन्हमतनिसदिनउदासभाजन करमवससगुनकालके जगदीस
दिष्टप्रसादजगती जनमकृतभवजालके संसारनासकदुष्टआसुर भक्तधेवीअघभरे रिन
मारियेहमदेखिरायव अखिलपापीउधरे मुनीत्रियापदरजपरसपावनु भरपतिमनभावती
सिलदिहतजगोविंदगुनगन गइनिजपदगावती बिधसिवसुअमरसुरेवंद्यत चरनसबचराचर
धुजवजअंकुसपदमअंकित लंनमामिनरेसरा बनदंदअविनसर्कंटकरकर दिवसनिस
नहीजांनिये प्रभुभृमितआतुरमघनपावे इसरहितउपानए मषनावअमरनदएमाधव
गंधहारसुहमयहे मिलविवधरससबहवनसुरमुष रिष्टष्टसहारहे मषबाधकरेअसेषद
समुष नागवरजितहमनए अबपापसोइनए भदापूरनमांनजुतकरुनामए सुषहरेजि
हलंकेसराकस देवहमभयदीन रिनमारिचंद्रध्वंदरावन निषलनिरभयकीन तजआसत्र
वरउदाससबतेहे ततवगुनगावही प्रभुनामसकृपतापहरन परमपदसोउपावही दुहा प्रभु
यहमांगतबांधपन नएविबूधवरभाग कीनोदरसनभगहत अबवरननअनुराग ४३ इतिइ
द्रादिअस्तुत। अथरिषअस्तुतिबरनंनं। छंदउभअषरी। रामनमामिस्यांमतनसुदर नीलकमलदल
वरणदेहनर रामनमामीदुष्टदलदुषन भ्राजतअंगअंगभूतिभूषन रामनमामिसिघासनरा
जत वामअंगज्यांनकीविराजत छंदपा तुमआदमध्यवसांनएक आकारचवितमायाअनेकदु
स्साध्यसुरासुररूद्ररंत अषिलेसुरतुवमायाअनंत तुमतिहअलिषमायाउदार इछ्यासुकरत
लीलाअपार तवअंसअविनअवतारलेत हरिसहतजुसंकटदीनहेत अन्नादकओकध
आपअंस प्रभुअजहेतआमयप्रसंस उद्भजहितससिदरअन जआप मिलपोषकारम
हिमाअमाप भोजनहितप्रांनीभूमभूप वावकप्रसिधक्रुतवहस्वरूप जलआवकसोष
ककिरणज्वाल भवभूतहेतदिनकरभुवाल सूरतनभनाधीरजसुभाव प्रांनीजुवहतसो
इप्रभुप्रभाव विधविस्तूरुदतवतनविभेद संसाररचतपालकसबेद मिलकालकरमअहि
निसामान महिरसिसभूतआयुषप्रमांन तुममीनरूपकीनोमहत उधारवेदआनेअनंत
इदधरमअषिलवेदनअधीन महिकस्योप्रगटतुमवेदमीन प्रभुधरमदेततुमहीप्रमान आ
धारउपाजककोउनआंन दुहा तवमायापेरतअगम नहीजांनतअज्ञांन भवतातेभूलेभ्रमत
हेभवभूतभयान ४४ अथदगपालस्तोत्रछपै दिगरछाहितदेव हमहिदगपपतपददीने जथा
नीतविमहार जोइन्द्रकतउक्तितजुकिनो करमदुष्टलंकेस पापजबकरतपयांनो भवनबाफ
दसदिससनीत भुवपरतभयांनो काकुस्थरामनरदेहकरि जगअजीतराकसजए सबदरेसा
लनरहरसुकव आजअकंटकहमनए अथवेदस्तुतिकबिरोवाच दुहा वेदयहांदुजरूपवनि
आयेसहितउवाह हरषविषदजुमधिहिय हितइगनीरप्रवाह ४५ वेदवाचकाछपैकवत हरे
हमदिहवहोय दुष्टसंघासुरदारुन निष्टभयेधरधरम ब्रह्मदइमुदविचारन जिग्नहोमजपजोग

विश्वविघ्नासुविनासी। भुजपायोसुङत्त होतजितहीतितदासी। विवहास्वलतनहीवेदवित। इहविरं
चवितसोचअति कीनीउकारकारनकरन। नादिनाहिनेयलोकपति। ७ धरमसहायकधरउधार। ग्र
तिकजपनकीनो। दुषितदेवजनदीन देवनिरभयपददीनो। नएमहातनमीन अवलषितनिगमउ
धारि करमदवकमाद। विवधहितजगतविचारि। करुनानिधांनविधवेदके। उसहस्त्रलसंसयदम
न। सम्तसहायनरहरसुकवि। रामजयतसीतारमन। ८ अथजषस्तुति। दुहा। कृतेजुवाहकनार
दम। रांवनकेघररांम। निंदानयनभसयननिस। नोजनसुदानभाम ४६ सभयरहेदहदुष्टसो
षतिबिनकंपतिभांन। सोरावनमारयो। सकुल। नरतनकृपानिधांन। ४७ मुक्तभएदुषजालदम
टरेसवैभयताप। भयोजदामफलअभय। प्रभुरघुनाथप्रताप। ४८ पितरस्तुत। कवित। गयाश्रा
धकृतकुंनकरत। जोमनुजउचितक्रम। अनपिंनतिलउदक। दबककव्यादलहतहम। सुपेच्य
सुरदससीसबधकीनेजुकरमबलदलकुलजुतरघुदेव। षेतमारयोसुमहाबल। हमपितर
लोकसुषपायहे। कृपानतरघुरायके। आनंदपितरगनउचरे। करनाक्वनसुनायके। गंधर
बस्तुती। दुहा। कृतेनिपुनसंगीतहम। गावतनितगुनमे। आनंदमृतपूरउर। रामतिहारेनांम। ४९
उष्टदसाननदरउसद। भूलिगएदुषभाज। गांनकलासंगीतगत। आइसबसुधआज। ५० उ
रगअस्तुती। सीसतपेजुवनारसो। पीडतभइसुपाप। कलोउरगयोजोरकर। दुसहटरेदु
षदाप। ५१ पंथीअस्तुती। सुरभीरूपवसंधरा। करहितप्रणियतकीन। महानारटरिअसुरमृत
देवअभयमोहिदीन। ५२ पसुपंषीभवभूतउन। जेजडजंगमजंत। कंटकमारयोसहितकु
ल। टारयोउदसडरंत। ५३ अथसिवस्तुतछंदत्रोटक। जयरामअनादअनंतरियं। अनविद्य
अषंनअजंअवियं। निरलेपनिरीहनिरंजनियं। अविलोकततत्वदगंजनियं। निरभीतनिराम
यधर्मनिधे। नउभेदसिवेनहरेनविधे। अधमतमतंगमृधेसमहा। प्रणतारथपातकउंजपहा।
भवसागरतारनपोतभए। जगतीअधउष्टसमूहजए। अननीतनिसासजनीनिरियं। महितेज
सुताहिदअरकमयं। अघउजअधारनवारनयं। अनिषंफितजीतसुदीपकयं। अधवरण
वहेतसुमेरहरे। ईद्रादिकभावदरीउबरे। तवनामउपायनआंनतहां। जनयासतआमय
पापजहां। वनपायविनासकृतासविनो। घनपातकघातनवातभनो। भवमंगलरोरवभंजन
ये। जलधारनिवारनरामजये। विषियाकृषउतरवातवहे। दलकूपलसेअभिलाषदहे। रविको
टप्रभासेप्रतापरजे। भगवंतअनंतजुसंतभजे। विधकोटभवंरचनारचनं। जमकोटविनासक
वैरजनं। बलकोटप्रभंजनरामबली। थितकोटसुरेसविलासथली। गंभीरतकोटसमुदगि
ने। वुहमंफिद्रविजयकोटवने। महिद्धिमाकोटनमोहमने। मिलसीभएकोटितनंमदने। पद
तीरथकोटिसुपापदहा। मिलसंगतरंगजुगंगमहा। हयमेधसुरेरवकोटहरं। कलिपतरकोटन
सिधकरं। गिनकामदकोटिककांमगवे। चिंतामनिकोटिकवेदरवे। रघुना[illegible]मअकामजु
नामरसे। विपदासमवैभववितवसे। रघुवीरसधीरजुभक्तरए। भवसागरपारसुधारभए। पर
सेपदपारसप्रेमभए। भवभूतकुजोनसुजोनभए। जगपावनपातकहापदजे। असुरासुर
वंदतसिद्धअजे। भवहंततहांउतपतभई। मंदाकनिमूरतउन्मई। श्रुतकुंडलसीसकि
रीटसजे। भुजवामसकामसवामभजे। कमलायतलोचनकारुनयं। मुषवांवसुधासमसत

मयं पटपीतविसाल सरीरवनै। तड़िताघनमानकुसोभसनै। कटवगगविजेजमदारक
सी लीलादिसवांमजुवर्मलसी सुजनालजुजाजुपवाननसे। कटिसिंघअनंगनिषंगक
से। करकुंजमहाधनुबांनधरे। कृतमांनकुकांमअभ्यासकरे। जिनक्रोधसुराकसजुथजरे
हितदेवनमांमीनमामीहरे। हवर्वीसजुजादससीसहयो। नवनूतसनीतअनीतनये
महाराकसरावनषेतमर्यो। तवरामकृपाजुवनारटर्यो। कृतरेसअसेसदिनेसकुलं अजु
रेसअसेसजुमांनमतं। वथवेसनरेसद्विनेसकना। जुवनेसुविसेसदिपेसबना। सिवगृंथक
लौंस्तोत्र। छंद। रामतिलकउछवरसाज। सुनपढैपदावै। उराकलपकृतपाप निषलछिनमांक
नसावै। संपतविजयसमेत। आयुआरोग्यअनंद्यत। सर्बदिवसंतुष्ट। वंसमहहोयसुवंदितवं
धापिऊत्रपावैविहत। पतिसुहागपदपायहै। सरधासमेतनरहरसुकवि। हितरांमगुनगाय
है ५० अरथधरमअरुकांम। मोक्षवाचाजुकरेमन। रहिसरांमसुनरीक। रसकवाचैपाराय
न। उरविसुधप्रतिअंग। नियमजुतरहेनिरंतर। जतीब्रतीसंजमी। यहीषदविराज्ञवरकतवि
जयरामनृपतातिलक। सोमनवांछितसंभारिहै। निश्चेनरेसदसरथसुतन। वहअवधेसउधा
रिहै ५१ दुहा॥ कृतिरघुपतिअविषेकको। क्रमसर्धाजुतकोय। सुनैसुनावैप्रेमसौ। हितवंछि
तफलहोय ५४ सोपावैसुषसंपदा। आयुरबलजसआप। भरतरामकोनामसुष। वगटेजज
नघ्रताप ५५ विषयवरजितभाववस। रामरूपउरराष। साधैदृकवैभवसुगम। सुषपावैसुरसा
ष ५६ प्रजुतवनकभावते। कासीवसतनिकांम। सबषांननिपरमोधकू। रामतिहारोनाम ५७
सोरठा॥ रामनामयहमंत्र। चतुरहारतारकअतुल। सोभवनूतसुतंत्र। अंतकालउपदेसहू
५८ दुहा। कविरोवाच। करदसननृपतातिलक। सिंधुगएकदलास। रांमजिनहिरसरूपको। स
बविधउरविसवास ५९ छंद॥ ईहांअविधउरआय। निषलत्रकूलोकनिवासी। देवमहोबवति
लकदेष। अतिनक्रउपासी। चारनसिधप्रसिध। गीतसुभिरद्दहिगाए। सुरनवरषनसुम
न। विजयनीसांनवजाए। पायेजुनिकंटकआप १९८ कृमयहयहमंगलकरे। कृतविजयक
हतनरहरसुकव। सवस्वसथांनकसंचरे ९९ अथविजयप्रसादप्राप्तभयविजयहिवगव
न। श्रीरामवाच। दुहा। कस्योदिवसपरमासकौ। प्रभुकपीजनकीप्रीत। सेवाफलपावतस
कल। रामजनीतयहरीत ६० रांमकहतकपिराजसौं। सुनहूसषासुजांन। मेरेकीनेकाजतुम। के
तेकहूंवषांन ६१ सुषममहितग्रहसंपदा। सोसबतजेसुजाय। हममनकसेवाकरी। वगट
जुधजयपाय ६२ कविरोवाच। छंद १। पहरायवसननूषनअमोन। धरिपांनसीसकरुनानिधा
न। अर्पियकुबेरमालाजुआंन। प्रभुदईयरीकसुग्रीवपांन। दुहा। अंगदकपिकहआप
नै। अंगजुदईअनंत। हितकराअतिबलहरी। सेवकपरमसुसंत ६३ छंद १। उनअंग
दमस्तकदएपांन। जयवंतजोधिअतिबलीजांन। श्रीरामवा०। कीनौसुविद्याकपिमहाका
य। जुवराजकेकंधाकरकुजाय। अबविजयसहतयहजाकुवीर। सुषसमयनीरविशेषवि
लसकुसरीर। किकुकालकरकुनयनदिनकोय। हमकृपावसकुनिरसंषहोय। सुन
ताराराेमाकेसनाथ। सियवंदचजीनरथारसाथ। दुहा। जामवंतलैआदयै। जुथपज
यसुजांन। सबनदएनूदसनसमकु। प्रभुबकुमोलप्रमांन ६४ कविरोवाच। छंद १। सनमां

नजथाजूथपसजूथ। वरवीरचलेवानरविरूथ। जरजीरनविजइजामवंत। सनमांनकि
योसोविदासंत। दुहा। देवनजीषनकोद६० आभूषनसबअंग। जुनकीनीमनुहारप्रभु। इ
रनप्रेमप्रसंग ६५। श्रीरामवाचबंदप। अविधिसवितलंकेसओर। कहिकृपाचलनदसरथ
किसोर। हितसहितवभीषनग्रेहजाय। सुषलंककनजकुसंपतसुजाय। कुलउचितकरऊ
कमजुक्तकाज। राकसदलसंजुतत्रकुटराज। मतकरऊविंककोउचित्तमांहि। बितपा त
लकृतवममबनबांहि। करअचयवभीषनविदाकीन। देवाधदेवसिरबनदीन। नरपत
निषादनिजसषाजान। पहरायसुभूदानआपपांन। गुहाराजबालसेवकविचार। नरलाय
अचतचवननचार। अज्ञायहदीनीअवधइस। महिग्रेहजायजुक्तकुमहीस। सुषपायच
लुऊकुनिहमहीसंग। अबकछुककालविलसऊअनंग। कविरोवा। सबहिनकोकरकर
समाधांन। प्रभुकरेविदापूरनप्रमांन। नरथादिकमिलरघुवीरस्नात। उहचायप्रगटविनि
योप्रनात। दुहा। केकंधाजुवराजकह। इहकपिराजाआय। विजइजूथपजूथकप। सब
ग्रहगएसुनाय ६६। पायअकंटकलंकउर। आयवभीषनग्रेह। परजागतसंपतप्रभुतवि
लसतसहितसनेह ६७। मंगतजनआसामुषी। प्रभुप्रसादसबपाय। जाकेजियवंछितज
था। आदरसहितअघाय ६८। श्रीरामवंदवा। रामदिष्टितेहनुमंततन। दूरनकृपाप्रमान। वर
मागऊवंछतविहत। मारुतजोमनमान ६९। देवनजोप्रभुताडुलभ। तीनलोककीलेहस
ववीधमारुतसंतसुष। जुक्तऊसहितसनेह ७०। मारुतवा। कहिहनुमतसुजोरकर। दूर
नवूलप्रनीत। विस्वनरममतउरवसऊ। मानुजसंजुतसीत ७१। नैनदरससुषनामरटहित
मोहित्रपतनहोय। इहमेरेअभिलाषउर। संततकरियैसोय ७२। रिवमंफलजोलौरिघु। रामति
हारोनांम। मेरोतनतौलौअमर। करऊसहूरनकांम ७३। कविरोवा। प्रियदीनौसीतहिश्यम
हितमुक्ताफलहार। नैनसैनकृतजांनकी। अज्ञारामउदार ७४। सीताहारउतारसौ। पहरायौ
निजपांन। हेतसहितहनुमंतकह। जननिधरमसुतजांन ७५। सीतावाच। कह्यौसियासुनउत्रक
पि। जहांरहिहौकपिजौगप। जरामरनवरजतसजय। भवमनवंछितजौगप ७६। श्रीरामवाच। अ
ज्ञादीनीरांमयह। तपकरियेहिमवंत। ताकेफलभुक्तऊअतुल। मनवंछतहनुमंत ७७। अथ
श्रीरामराजप्रतापवरननाकविरोवाचबंपै। सिंघासनदसरथनरेस। रघुरामविराजतस
घनवरनतनस्याम। तडितपटपीतसुसाजत। प्रभाकोटद्दिनकरप्रताप। ससिकोटसुसी
तल। मदनकोटसोभामहीप। वादतप्रतपलपल। राजाधिराजरिववंसरवि। विस्वइसममउ
रवसऊ। करजोरकहतनरहरसुकव। रूपअनूपमदगरसऊ ७८। सुनतसोकसंताप
उत्रपितुभक्तपरायन। बालबाधवैधव्य। जगननयचोरचोटजन। अदितसोकअनकाल
अंतहरषेतनझायन। रिउअनरथनयरहत। सकलबलचलतसुभायन। ववरएच्या
रआश्रयअचल। एकधरमव्रतआवरत। वानिक्विचत्रवासुव्रत। रामराजजनुअनुसरत
७९। फूलफलतवनवाग। क्वित्रषटरितुहिविराजत। सुभीडुग्धबऊश्रवत। सिंघगज
वयरनसाझत। सरससरितासंततसुनीर। सरससरिसजसरसावहि। सदामतमातंगपाव
फलपापीपावहि। मोचनइकमांनजुमांननी। गुरबालकसज्यागमन। नवनहिनअनय
दालद्नय। राजरामसीतारमन ८०। त्रविधरोगकफवात। पित्रसबरहतप्रांनसुष। नीनता

सूनिद्यासुनतपराई परीमहानिधमांनकुपाइ मनमत्यपहि मोहमदमाते जाहिनिष्टउरग
तजातैकामक्रोधवसलोनमहामद दिवसनिसानहीजांनततुरमद मिथ्याकपटलअहिमत
मनै जगतअकारनवैरीजनजन असमयअनुचितवचनउचारै आपदकैपरकरमउधा
रै मृषवचसनाजलजेममलीनै कबकुनथिरताहितकुनकीनै कीनेकृतमांनतनहीकाहू
ताकतछिद्ररहतनितताहू उष्टकरमरततनितपरद्रोही आपकरमविलसतफलओही प
रदारापरधनजोपावहि आपपरम ~~स्वामिनपर~~द्रोही सुषनहिनअघावहि परसंपतदेषतउष
पागै आगविनानरजरतअनागै परअवगुनलेसनाउकासै हितविनवचनविचारहिहासै
अनतषनतषैअगमागांमी सिंघासनबैठेहेस्वांमी वसुकाजेबकुनेषवनावत उरउरभ्रम
तसुउजापावत स्वारथहितलेमंत्रीसाजे अषिलअनयदअनउपराजे स्वारथविननदुषी
तसगाई मांनतअगृजपितानमाई वेदविरोधदेवउजदोषी उंमविनासपापमतपोषी दु
हा ऐसेनरपापीअधम नरकपात्रनिरलाज नुक्तहिकर्मअनेकजुव कोऊसरैनहकाज
८४ अथसाधसंगतश्रीरामवाक मनसावाचाकरमना करैजुसंगतिकोय पारसपरसतहीष
गट हेमलोहतैहोय ८५ रामसरणगहिनीचनर वचनतउचपदपाय साधसनामनसुधसो उ
परबैठैआय ८५ मलियाचलकीनूमनह अनरतरुचंदनहोय ताँतैसंगतसाधकी करिदेषहु
धोकोय ८६ जलनिधथंनजिहाजजो उरुषगगिगनअपार कवनरहरमतमंदके एकरामआ
धार ८७ अथअसंतसंग असंतसंगकेफलअषिल सुनियेनरथसुजान जातेहोतसुनावही
निद्याअहितनिदांन ८८ छंदपा मननैनसंगमिलचितमोहि अविलोकत्रियातनछिबअरोह
मनवधैजबकुहवरूपमांहि नवबाकमनहिद्रगजाहि मनुसहैउरकरउष्टमेल षलनैन
याहिसानावषेल कीनेकुसंगगोधुमकेर घनहोतचूनपरघट्टघेर घटिकानजंत्रवेलीघरिया
रि मिलसहतरुनरीमुरुमार पेबंधसहितअंकुसप्रहार कुलछेदकावरुकाकुवार वनका
टकरतयहदेविकार ज्यौसुरनीसाधहरियार्यअंगं सुकलीनत्रियाकुलटानसंग आवरेअ
कतपेरीअनंग सरहोदिजबेमिलपंषसंग उरगिगनअधवेधैविहंग वैनिष्टआपओरैहिन
साय ज्यौउपजनाववोरैबुराय कवित बूडैनवसागरमैबोरैजाकीगहेबांह बोलैमुषवा
नीसोकहांनीअपराधकी स्वारथकीप्रीतसाधैविस्वसेविरोधबांधै कारनविनाहीकरेकीडा
उनबाधकी काहूकौनकृतजांनै आपनौहीमनमांनै एकबुधनजैसदाअविद्याअराधकी
राचौवाटैमुषहीविराचौकाटैपापीपाव स्वांनकीसीसंगतहै संगतअसाधकी ८६ दुहा इसा
दिकप्राणीअसित कततेतानहकोय हाउरविषैजुएकद्वै होयतकबकुहोय ८९ उपजहि
गेकलजुगअषिल ऐसेमनुजअनेक साधसुलबनतिहसमय कोटिनमैकोउएक ९० पाव
हीतबचूजिबे वनवनवेषविसाल साधहिसाधअसाधसुष कवनकालकलिकाल ९१ छंदे
अलपआयुअनुसरही उरषजेउनपरायन दिर्घआयुजुक्तहिउरंत मिलपापमलिनमन दा
ताउषीदरिद्र करमअनुचितनकरिहै कृपनधनीवरजितकलेस धनधानसुधरिहै अकुली
नराजनजिहैअषिल कृतकुलीनसेवाकरहि ऐसेजुकजुजुगधबलअति एतेषटगुनअ
नुसरहि ९३ अथअसाधसाधजुगमलक्षन दुहा संतअसंतसनावसब सुनियेमिलतस
माज एकसहजगुनअनुसरै अवगुनएकअकाज ९२ छंदपा काटैजुवृक्षचंदनकुवार

गजीहसी औरनजहतअनंग ७८। अथभरथप्रश्न। श्रीरामज्ञांनोपदेस। चौपै। एकसमयए
कांत रामबेठेरघुराजा आयभरथउहसमय संगसेवगनसमाजा तहांभोषकोतलभ
रथइबेमनभायो रामहृदयगतिरहंस्य विधजुक्तबतायो आधारविस्वनासकअबित्त प्रग
टउदयरिवघातके ज्ञांनोपदेसअज्ञानगो भोप्रकासमनभ्रातके ७५। अथसाधअसाधल
छनवबित। भरथश्रीरामचंद्रजीप्रति। दुहा। साधअसाधजुसहजही विधयुतदेऊबता
य भेदयहेइबौ भरथ रामचंद्ररघुराय ७९। अथसाधूलछन श्रीरामवा। कोउअस्तुतिनिंद्या
करऊ जिनकेसबैसमांन उपजेहरखनसोक उर प्रालीतिममप्रांन ८० संतनकेलछमनेऊ
सुनऊ सीतलसरलसुभाव प्रेमपराइनभक्तपन परहितवचनप्रभाव ८१। छंदअबरी।
मूलरूपउरषचवननहिभाषही रामचरनचितनिश्चलराषही परदुषदुषीसुषीपरसंपत
अवरकीतसुनविहसतअतिअति परनिंद्यानहीमुषह्रिकासत तनमनसुधकुसंगहिनास
त परदारापरद्रव्यपरामुष सदूककहिपरमारथकेसुष पापविवरजितधरमपरायन नि
श्चयएकभक्तिनारायन लाभहानकछुचित्तनलेषे पारब्रमभयविश्वसंपेषे पगवंदेजोधर
मबोधै वैरकरैताकुनविरोधै साधसदासबदिनसुषदाइ पावहीदुषसुनविपतपराइ
सत्रअजातसात्वकेसंगी परिउपकारीअमपबसंगी आपतिरेअरुऔरहीतारै ऐसेईमु
षतेवचनउचारै संगजोकोउआयअनुसरही काठनाव [illegible]पारहीकरही अवगुनकी
नेगुनहीउपाजत जषकोउनिजजआपहीलाजत जसथापतहियअतिहितजांनत प्रभु
विस्वासजुसत्यप्रमांनत परसुषसुषीपरदुषदुषारै परअपवादमुषपरहारै जथाला
भसपतसुषजानै परत्रियमात [illegible]मानप्रमांनै गिनहिसदासमअस्तुतगारी कारनचंदन
जथाकुवारी उहकाटेजरमूरनसावै वहलेधारसुगंधवसावै चढततिलकदेवनकेचं
दन घरियतदाहअदनअहरघन पावैसाधसदाउतमपद दुष्टदुसहदुषसेवहिदुरम
द भयवरजितअरुविमदविरागी अमरषक्रोधरहतनितत्यागी कामनक्रोधमोहम
दमाया अकारनदयानेनउपाया सीलसरलतासमदमसजम आस्रत[illegible]तअषंरुत
आतम हिंसाविसनरहितहितकारी संतनकेगुनइतेसंभारी सांमभजनरतसदासु
संगी अहमतरहतअकामअभंगी तेनरसुषदऊवेभवतिरहै कीरतधरमसुसंचय
करिहै। दुहा। ऐसेसाधूजनअविन अंतरसुधअभीत सुषविलसहिभवभवसकल
पावहिमुक्तपुनीत ८२। अथअसाधलछनबंदवअदसा। परसंपतसुषदेषतपापी उरप
रजरहिआपमतथापी परनिंद्याजोसुनहीअपावन सबदिनलागेबऊरसुनावन क
रहिजगतसोवैरअकारन मिलहिसाधतिहताकतमारन मिथ्यावादीकूवमनोरथ प
रद्रोहीअरुगमनपापपंथ बोलहिमधुरवचनमुषबांनी अतरथाटकपटअभमांनी अ
पठअहितअहिमितइधकाई ओतममतसूचकअनिआयाई पतितनन्नदासअनदापे
बांनै मिलतेहीभोजनमनमानै अतिपाषंडचंडउपराजहि संपतकाजनेषबऊसाजही
विदविदुषकविप्रविरोधी कजाहीकुटिलकलंकीक्रोधी परसुषभएमहादुषपावत पर
दुषआपसुषनअघावत सहजकुसंगकुविद्यासाधे अनुचितविसनसदाआराधे वह

वाकेएकपावनोआयो। विविधभतीतइपाकवनायो। लीनोमेरोबापबुलाइ। पाकनितउनकीनीउर
साइ। ताकेघरकेधोलवतांही। ममपितुनषनअंसरहमांही। वादिनइलकरकेघरआयो। रसा
लुटतहमकोधरिसायो। लाठकरेमोहिगोदहीलीनो। इधकटोरानिजकरदीनो। षरोउसनमेंइ
धनषायो। सोपितुअंगुरीमेलसिरायो। वघल्योघृतजबेनषतपायो। वाकोअंसइधमहआयो।
उहपयपीयोमेंउधाअधीनो। जोंनअन्नेकनजीमेजांनो। पापताहिस्वांनतनपायो। अबकिंह
नागअजोधाआयो। कछुएतोअपराधनकीनो। दंडइथकहमतापसदीनो। अबसोउभवको
दुषअथेहै। उनकलपांतृयहेपदपेहै। दुहा। अनमवीअननोजनी। तातेज्ञातअज्ञात कीजेउ
तअगनको। तदपिजरावैगात ९ कोउअमस्सको। करिहैनइनकोय। बतवंड्रायनकरस
विध। हितसुधातोहोय १० परसैजोदुजमवपतहि। ततोसचेलसिनान। करमधरमनितनेमकी
पावैसुधुभमांन ११ पत्रउहपजलफूलफल। दबअन्नमवदेव। उससइनरकइकवीसदुज। सोप
रिकरिहैसेव १२ देवमहेसहीआदहे। देवलवस्तुविसेष। करे जुमवापयकरम। उपजेदोषअसेष
१२ देववंमकोदव्यदुज। हरेजुकारूहेत। लाभअधोगतिसौलहै। हमउरषानसमेत १३ राजास
तकेतप्रसंग। विकजन्नृपकीवारता। सुनियेरामसुजांन। अवधपुरीसोवसतअब। वंसकारके
वांन १४ सतकेतनामानृपत। भोकासीकिछुकाल। सूरव्रतापीधरमधुर। वाचासत्तविसाल १५
छंदप। दुजकस्योएधरमाधिकार। पापीसुतदकविताप्रहार। गिनकानद्रुष्टरंडासंजोग। जुवकरेवि
वधदासीनभोग। सकलप्रदव्यमृसेअसेष। विनदयोसुतोविलसेविसेष। नृपसत्तकेतदलबल
दिसाज। वांनैतबीरतीसानवाज। संग्रामभिरेदकुंबलीसेन। मिलदिवससेरअंधारमेन। तहांगिरो
जूझनृपससकेत। मिलधायसुजनटमित्रीसमेत। सग्राममस्योजोपेसमृथ। हवयहे जदपिजमइ
तदथ। नृपसत्तकेतस्वातिकसुजाय। जमअयकस्योजमदूतजाय। द्रुब्रोकतातआदरभमांन
नृपसत्तकेतकदियेनिदांन। यमोवाच। दुहा। कहियैनृपतविचारकर। अविलकरमकृतआप। क
हीयेविलसोगेकहा। पहिलेउनकपाप १६ सतकेतवा। कीनेजमममेनहीकछु। अपनेजांनअधम
तुमहीकछुजांनततो। मोदिवताबकुभ्रम १७ जमोवाच। तुमकस्योविषधरमाधिकार। सकलपद
वदुबीनसार। सबषायदव्यरंडानसंग। अतिमतवितसेयोअनंत। अघपंथदवातिहनज्योआप
सोपस्योविहारैमुढपाप। करमधनयुतसंकल्पकीन। उपज्योसुपापविश्नअधीन। उहकुतोराजतुम
हीउधार। वसलीतक्यूनकीनोविचार। जोकस्योधरमतुमवितजांन। सोउपापपुंजउपज्योप्रमान।
दुहा। कविनधरमहैराजको। दारुनषग्गाउधार। आलसकीनेतेअविल। दकघांविषमविकार।
१८ जांनेकोकेतेजनम। नजेनर्कतिहनृप। अवधपुरीमेवसतअब। पापकालकेरूप १९ अथउ
तउत्रजीवतप्रसंग। कविरोवाच। गाथा। कृतजगेवरषकरिय। उरषलषवर्षआयुप्रमाणं। तेताअ
तजप्रमाणं। द्वापुरेसहंस्रवरषा। १ विहतसवासतवरषं। कलयुगेआयुअलिपकरनी। सुषदुषजी
वसमांन। जुगवेकरमंनावनं २ छंदअरदारी। बांमनएकअवधपुरवासी। अविलधरमषटकर
मअभ्यासी। मोहकुटंबबकुतमनमांनै। पोषनअनरनविसेषप्रमानै। बांमनअरधआयवीतीज
ब। ताकेनागपुत्रउपज्योतब। एकहिपुत्रपिताअतिप्यारो। जाकेदेषजेउजारो। सोरहसेवरसनको
सुंदर। नयोवढेसोजादिनदिनअर। इकदिवसदुजबालकअंगन। लीलाबालकरेसुनलबन घुटर

घनसोक करैसोगंधधार ॥ उतिपतिसरपमुषविषअपार ॥ पैपानकरायेहितधकार ॥ सुनवसन
बिदसूवीसंजोग ॥ उनकरततागढंकनवियोग ॥ जारियतआगरलेअनलज्वाल ॥ तउउपजत
सोगधतातकाल ॥ बिनपीलीदेइयतइषदंड ॥ अतदेतमधुररसतउअषंड ॥ कृतदाहकनककज्वा
लाकराल ॥ तउवढतवांनमहिमाविसाल ॥ करवेधनमुक्ताफलदीकोय ॥ हितकंगान्रूषनतदपीहो
य ॥ बऊजंत्रबनोराषढक्विहाल ॥ वउढकततदपिवासनविसाल ॥ विधजुगतक्ताएसमृतिवेद ॥ म
वनूतजुउष्टाउष्टनेद ॥ इसारवताए१मुअनंत ॥ श्रीमुषसुनावअनसंतसंत ॥ उहा ॥ उरजनबुरेउ
जीहते विषवाटैपैपांन ॥ कुचपरधरीजलूकज्यो ॥ पीयैरुधरपरमांन ॥ ए३ ॥ अथश्रीरामराजनीतध
रमवरननसन्यासीस्वानप्रसंग ॥ कविरोवा ॥ इमसन्यासीज्ञातसै ॥ मगमहसोयोस्वांन ॥ ताहिप्रहारयो
दंडतिह ॥ अनकारनअज्ञान ॥ ए४ ॥ विकलनयोतिहचोटवउ ॥ कूकरकरतउकार ॥ १२१२ ॥ उवत ॥ म
तयो ॥ उषतआयनृपद्वार ॥ ए६ ॥ समफकुजीवनसंवरे ॥ देवनृपतगुरद्वार ॥ उषजुतगदोइरतेष
जुस्सकरतउकार ॥ ए७ ॥ स्वानवा ॥ सोवतलोकनविलसब ॥ एकनरोसेआप ॥ जागतजोअहिनिसस
जय ॥ पृथ्वीनाथप्रताप ॥ ए८ ॥ श्रीरामवाच ॥ दीनस्वांनजांन्योउषित ॥ लीनोमधबुलाय ॥ आगमकारनआ
पनो ॥ कहीयेस्वांनसुनाय ॥ एए ॥ स्वांनवाच ॥ उरसन्यासीतनउसट ॥ विचरतनैजनवार ॥ राजरा
मकेनयरहत ॥ वरजतवयरविकार ॥ १०० ॥ होसोवतबाजारमहि ॥ वसनिदाअविचार ॥ कारनबिन
मोकहकस्यो ॥ पापीदंडप्रहार ॥ १ ॥ कविरोवाचछंदउअषरी ॥ प्रनुयहसुनतहीदूतपवाये ॥ आतुर
तपसीकहलेआए ॥ श्रीरामवाच ॥ बूक्तधरमतुमनाहिविचास्यो ॥ स्वांनविनाअपराधप्रहार्यो ॥ सिन्यासी
वा ॥ तबसुनईमकयोसुतापस ॥ वासुरसंध्याऊतोषुध्यावस ॥ यातेअतिहोजातजुआतुर ॥ कीनो
सयनपंथमहकूकर ॥ चितमेयांमकुसिंधविचास्यो ॥ पेतानयमेस्वांनप्रहास्यो ॥ श्रीरामवा ॥ सन्यासी
तुमअमलकहीसब ॥ एनप्रमांनेवातमानेअब ॥ मारगसिघषुधाअरुनयमन ॥ एतेतापसकहअ
पलबन ॥ नीतरांमइहकहैसुनाई ॥ इहविधतौतापसअनियाई ॥ वसिष्टवा ॥ वासिष्टयहैबोलगुन
वांनी ॥ वेदविरतईहनीतवषानी ॥ देहकदंडउजननहीदीजै ॥ कूकरकहैसुतौअबकीजै ॥ स
नावाच ॥ उहा ॥ नीतप्रबोधकबधजन ॥ सोतिनहूब्रोस्यांन ॥ याकरदंडउचितअब ॥ पैसोइक
होप्रमांन ॥ २ ॥ स्वांनवाच ॥ तापसकीजेमठपती ॥ हितमेरोतबहोय ॥ कूकरयहतिनसोकह्यो ॥ करोवि
चारतकोय ॥ ३ ॥ कविरोवा ॥ करेपीतपरधान१८ ॥ उनगजरूहपोचाय ॥ कीनोमठपतसिंघूके ॥ सन्या
सीसुषपाय ॥ ४ ॥ गयोदिवालयतापसी ॥ गीतसहतत्रीयगांन ॥ जहाकरेआनंदजुत ॥ दूजारूपप्रमा
न ॥ ५ ॥ देवालयकोजुसुदब ॥ संचैपायविसेस ॥ तातेदबप्रसादतिह ॥ अतिसुषवढ्योअसेष ॥ ६ ॥ काऊ
गिनैनद्यकर ॥ बएनैनधनबाक ॥ जांनेननजूहीजगत ॥ देसवजीयहूनाक ॥ ७ ॥ छंदउअषरी
परमसन्याइस्वरजयहपायो ॥ इस्वरजपरमठमायहआयो ॥ बऊरयोस्वानसुफेरबुलायो ॥
सन्यावा ॥ पैहमहीकबसमऊनपांही ॥ स्वांनतोहिक्षबतसतमांही ॥ दुजकहजोमठपतपददीनो ॥ निग्र
हकिधअनुग्रहकीनो ॥ स्वानवा ॥ स्वांनकहैसुनीयेअबसाची ॥ कहियेआदअंतनहीकाची ॥ दि
वकनोजएकदेवालय ॥ अमितउतंगमेषलाअतिसय ॥ एकविप्रताकोइधकारी ॥ विप्रनवनजुजदे
वविहारी ॥ अवनीस्वरजबहीकोउआवे ॥ वागेबीरेदेववनावे ॥ आजकरषत्रियकोउनआई ॥ जउ
देवालहकहघरजाइ ॥ पूजानावहीहीतप्रकासे ॥ नहितदिपसेवाफलनासै ॥ मठउपराजितध
नअनमानै ॥ जनकपात्रनैसबजुगजांनै ॥ मेरोपितापरोसीताको ॥ साधसुभावजगतहितजाको ॥

बिनु बैर बिहंग बालक बिनास । बिहगाधम बायस बिदित बेद । षल अषल षांण डोही सषेद । रघुबी
र परायन ग्यांन रत । कौ है यक है कोऊ बाकु चित । रघुनाथ कथा रत दिवस रात । कौ भयो कहो का
इस कुजात । कहा लसौ राम नामाधिकार । सो जीवन मुक्त बिहरत संसार । सब काल निकट बरते
सुमांन । स्वांमी सौ सेवा सावधांन । हरि भगत गरुड़ हरषत हेत । बिस्वंभर बाहन जग बिदेत । काक
सो संग कहि भांत कीन । पृथ्वी सौ बास मुनिवर प्रबीन । संभावन हिन उचित जु सोय । हित काग गरुड़ कि
ह भांत होय । अनगारि अ संभव कहत एह । सुनि नाथ मो हि उपज्यौ संदेह । रुद्रो वाच दुहा । सिभ्भल
वांनी सो समझ उतर दीनौ एह । सुनौ जथामति दसमै [illegible] य । सब बरजित संदेह २६ । आदि अं
त लौ रहि सयह । कहि है प्रिय सकांम । सुनौ जथा क्रम दे श्रवन । रूप बिरत रघुराम २७ । सती जु ई
ग्या सुनन की उपजी तौ उर आय । धनधन तत्व धर्मधुर । सिंभु कसौ सुषपाय २८ । काकभुसंडि गरुड़ को
सुषद मिलन संवाद । आरंभौ सिव कहन यह । दूरन रहि सषमाद २९ । छंद प । प्रथम तुम दछघर ज
नम पाय । सु नस सतीनाम पायौ सुनाय । दीनी तुम मो कह पिता हांन । उन भयो आदर बड मान । सब
भायन सेवा सावधांन । संग रहत मो हि षांनन समांन । पितु ग्रेह जि हुन तुम सो धपाय । सुर जात देष सुष
मो सुनाय । अन मौ ता पितु ग्रह गई आप । मै बरजी तदि पद व ग्रमाप । मष भयो अनादर मष मलीन द
हि कोधा नल तुम षांन दीन । उनि कृत संगम मगन समाज । करिकै पति जिद्ध बिधु सकाज । प्रति दुषत
भयो मो हि सुन तएह । दिन रात दहैत ब बिरह देह । बहरायन ही बितक कुवेर । अनबित अ संभवन
इ ओर । तुम जरी कोध उपज्यौ संताप । बन बन कुमैलत दुष बियाप । सरिता स गिरवर बृछ संग । अति
भ्रमौ बैरागी अंग अंग । दुहा । उत्तर नाग सुमेर के । नील सयल जिह नाम । चार सिषर तिह हेममय । अति सु
दर अभिराम ४० । तिन सिषरन पस्यारतर । बटपीपर बिस्तार । पाकर आब सुपछ बित । मत भवर गुंजार
४१ । तिन सिषरन के मधतट । सरभर सुषद समांन । जल अगाध बिकसे जलज । बति मन पयसो पान ४२
मीन कमठ अषी मकर । बिबध प्रकार बिहंग । बनप कुपतिव कुओर बनि । संजुत गंध सुरंग ४३ । तरु त
रु लता अरु फल तन । सफल सुधामय स्वाद । बिध अनेक जहां जंतु बसी । बर जत बयर बिवाद ४४
रुद्र वाच बद्ध अद्धरी । काकभुसंड बसे तिह कानन । सरवर गिर तर परम सुहावन । मोह मनोजन
ही मद माया । छुवै न ता हि काल की बाया । ब्यापै अंतन काल बेतीते । जिह माया करु भन गुन जीते
तीन काल च्व छ ब बन तर हर । बायस भक्त ऊपासे रघुबर । पीपर छांह बेव सुष पावै । ध्यांन अषंड रा
म पद धावै । पाकर हेठ जिह्न तप पावन । नित करे अघ तापन सावन । मांन सीक पूजा मन मानी । बिधि
आबि तर करै बिज्ञानी । बट तर राम कथा बिसतारै । तहां जो सुनै ना हि निसतारै । बायस आश्रम
आय बिहंगा । पतदिन सुन हि सुराम प्रसंगा । एक दिवस रुति हंसर आयो । प्रगट राम जस सुन सु
ष पायो । सब बिहंगम देष सुहाई । रीझ्यौ कथा सुनै रघुराई । पुन हो हंस देह धरि पावन । बस्यौ काल कछु
पाप बिहावन । परषद तिह हम बस सुष पावै । यहां कैलास सिषर फिर आए । अथ कागभुसंड गरुड़
प्रसंग समागमन । बिधप्रह कागभुसंड बिहंगम । मिल सुष भयो गरुड़ सत संगम । सुन कुव संग ज
था क्रम सोई । हित जिह राम चरन रत होइ । नर तन राम धस्यौ रघुराई । देव सुमाय प्रबल दिषाई । ते
ता जुग मह भौ अवतारा । अषिल सुर रघुनाथ उदारा । अग्या पितु दंडक बन आए । पंचवटी बस कु
सुष पाए । तहां हरी दसकंधर सीता । परम सती अति प्रेम उनीता । इहा कपि पदम अगर आए लेर घु

न्ववैक रैकिलकारी। सुषदैबेदरषैमहतारी। जोगदेवकबुकहीनजाई। वाकहमीवत्रलपजोत्र्आ
ई। बालत्र्अकालमस्योसुतबांमन। घरकेसिरपीटहीरोवहीघन। दुजलेउत्रबाहपरफास्यो। आनमृ
तिकनृपद्वारउतास्यो। राजसभाबैठेरघुराई। देवरिषेसतहांसुषदाई। दिवक्वृमुनिविदुबविवारहि
विधजुतनीतधरमविसतारहि। ब्रह्मादिकसुरसभावनाई। राजमध्यसोभ्रतरघुराई। दुजसोईम
तकलिवैनृपद्वारै। पस्योरांमहारांमपुकारै। विप्रउवाच। मस्योत्र्अकालबालयहमेरो। नाहिनाहि
रघुनायकतेरो। कविरोवाच। आरतवानसुनीत्र्अवधेसुर। बोललयोभ्रितरसोईदुजवर। दुजो
वाच। रघुवरगोउजन्मूरषवारे। महाउष्टदनकेहितमारे। छपैकवत। वरषसहसदसविहत
उरषआयुषषमांनै। तेताजुगकेअंत। चरनवोथेजगजानै। वद्धसोरहसैवरष। रमतत्र्अंग
नक्रीडारस। कारनकिऊत्र्अकाल। देवम्रोबालकालवस। पितुमातकिधौएबालकत। प्रभु
निदांनकबुपायहौ। दुजकस्योरामसौरोयदुष। हवतौमृतकजरायहौ। १९। कविरोवाच। दुहा।
संजुतइद्रादिकसभा। बैठेरामविनीत। भ्रातमित्रमित्रीसुभट। त्र्अतिसोभ्रतत्र्अनभीत। २०। श्रीरा
मवा। कस्योरामजमराजकह। इहसबजांनतआप। मरेबालजिहनगरमह। उरधीकैसोपाप।
२१। करमपितात्र्अरुमातके। आतमकृतत्र्असराल। कहित्र्असोनिरधारकरि। बालकमस्योत्र्अका
ल। २२। धरमराजोवा। कस्योधरमतबजोरकर। सुनियेत्र्अवधनरेस। तिहउरसाधतसुद्रतप। सोसि
सुघातविसेस। २३। छंदउत्र्अपरी। कहियोतेताअंतजोरकर। इहकारनकहियौत्र्अवधेसुर। सुद्र
दिकअंतजतपसाधै। त्र्अभिलाषाधरिदेवत्र्अराधै। करिमनमांऊकांमनाकोई। हठदुषसाधैताप
सहोई। करैत्र्अधमनरसिलापरसकर। धरमविरुधकरमयहदुरधर। सुद्रकरैतपस्मातिहपा
तक। कारणरांमयहैसिसुघातक। दुहा। जिहैविरुधाचरणजग। उरतिहहोतसंताप। पितामात
जीवतप्रगट। पुत्रमरेयहपाप। २४। कविरोवा। रामउवेसोरहंससुन। विदुषसभावहराय। त्र्अस्व
रोहितत्र्अविधपति। आपमहावनत्र्आय। २५। आराधिततपस्यात्र्अगम। प्रभुतहसुद्रहुपाय। पद
परलंबितउरधपद। सिरनीचेसतभाय। २६। मंगलजास्योनिकटमुष। धुम्रपांननिरधार। नासात्र्अ
ननैनमग। एकयहैआधार। २७। कविनतपस्यासुद्रकी। यूदेषीत्र्अविधेस। तहां मूरयोप्रभुकोनतु
किहकतकरतकलेस। २८। सुद्रोवा। हेतकस्योतिहसुद्रहूं। साधततपस्वछंद। देवकरतदेहीद
मन। त्र्अतिसंजुतआनंद। २९। कविरोवा। याकोमस्तकछेदइहांकीनौरामकृपालताकहदीनीप
रमगति। त्र्अैसेदेवदयाल। ३०। जियोततछिनबालदुज। सुद्रमस्योतपसाध। आनंदेसुरमुनित्र्अषि
लप्रभुलीलाजुध्रसाध। ३१। त्र्अथकागभुसंडगुरउ॰प्रसंगलिषते। श्रीरामवाच। कहतरांमसुनिये
भरथ। साधभ्रातहितसंग। रुद्रत्र्अवांसीरहस। त्र्आगेकहीत्र्अनंग। ३२। त्र्अनंगारिसंजुतउमा। एकदि
वसएकंत। रामचिरतवरननकरत। सिंभूपरमहितसंत। ३३। रुद्रोवा। एककथाहैगुहत्र्अति
सोमैकहूसुनाय। काकउपासकरांमकौ। संततसाधसुभाय। ३४। छपै। वाईसबुध्रविष्यात
भयोइककागभुसंडी। जुगजुगाद्यतिहजन्म। आयुकलपतत्र्अषंडी। रामनामरटरसन। नई
नछिबरामनिहारत। श्रवनरामजससुनत। चितहितरामचितारत। मिलअएग्यानरघुनाथ
मय। उपतिवादत्र्अद्वैतउर। आनंदमगनविहरतत्र्अविन। प्रगटगमागमतीरउर। २९। दुहा। का
रनकाकभुसंडकौ। रांमरूपरसरत। रुद्रत्र्अवांनीसूरदिस। विनीयोविषयविरत। ३५। भवानीवा
ब दप। भगवतीफिरपूछ्यौभवेस। संदेहयहांमेरैसुरेस। कुकृतीकुजीवकुछितकुभास

वित ५८ सरवर तट गिर नील सिर बेवेस नावनाथ काकभुसंड अषरू कत गुन गावत रघुनाथ ५९ बा
लक जुवा जुब धवय सकल विहंगम संत काक वचन सुन राम के मन क्रम सुनत महंत ६० छंद अषरी
याही समय गुरड इहां आए परिष दविहंग देष सुष पाए विहत सभा समउ वे विहंगम काकभुसंड क
रे आतिथि कम आज भाग्य मम षगपत आए पायो दरस परम सुष पाए करी हित आगत स्वागत कीने
देष जथा विध आसन दीने वाय सब षगरुड षग वांनी कारन आगमन पूछक हांनी विहस गरुड मृदु बाय
क बोले षगपत अंतर भाव सु बोले गरुड बा० उपज संदेह एक मेरे उर घिरो फिर तलिये मोहि घरघ
र धूम्रो मे नारद मुनि पांही नियत संदेह मिट्यो तहां नांही तब नारद विध पिता बतायो अति सुष ब्र
लोक कु आयो कहे तहां मैं मन भ्रम कारन महा विचार विरंच कसो मन दुषी त देष मोहि अग्यादीनी
मोहि नई षग बुध मलीनी देव राम तुम मानुष देष्यो विसमय पातक यहा विसेष्यो काकभुसंड वाच
राम प्रभाव सुनक षगराजा कुबुध विनास सरै मन काजा दोहा रत उपजे रघुनाथ के चरन क
मल वसक्ति भ्रम भाजे उपजे भगति माया चापन मित ६१ काकभुसंडी राम के चरित जथा क्रम
चीन्ह वेदपुरान जु वारही कथा षका सजुकीन्ह ६२ कबिरो वाच कारन रघुपत जनम को बाल
चरित विसेष तीन लोक लोचन तप अतुलित राज असेष ६३ कहे जनम दसकंध के प्रथम दु
तिय प्रकार जाग गीरवपा सनय भ्रम न सहि अघ भार ६४ बसुधा विध सुर राज सुर प्रभु सुक
री पुकार हा हा नाथ अनाथ हम अब तुम ही आधार ६५ श्री भगवांनो वाच भाषा नभ नभ वतम
ता असी भई अरे हर करक रूप सुरभा लक प हो धरि कू नर देह ६६ कीजे यह क्रम जतन करि
सवरा वन संघार कारन सोक त्र लोक को भ्रम उतारन भार ६७ कबिरो वाच बंद ५ आजनम वि
रत रघुवर अषंड भवलगे कहन वायस भुसंड प्रभु जात मात भोजन प्रकार कवसल्या देष्यो
कत कुवार विस्तार बाल लीला विसाल दियमात पिता कह सुष दयाल विद्या विनोद आरंभ
वीर सुन सस्त्र अस्त्र धारन सधीर इह समिये विस्वामित्र आय संग राम लछन लीने सुनाय
अति बली बली विद्या अनंग सीषे सो इ विस्वामित्र संग पंथ जात इथी ताडिका पाव सो इ भ्रदरा
कसी दिष सराप वीरासन बैठे जिठ्ठ वीर सह दिन करी रिछा सधीर सब असुर मार जीते सथांम
वय सात बरष रघुवंस रांम आरंभ धनुष मष नृप अनंग सो उ देषे विस्वामित्र संग रसही रष ब
द्यो उरह रष रांम सुर काज भवले विजई सथांम आश्रम गोतम के आन आप सो सुने विलोक्यो रि
षसराप तर फुल फले तहा तरल तुंग व सभ्राप विना वन भ्र वर विहंग पायो जु अहल्या इव पा
प सो उ भइ सिला गोतम सराप रज भ्रवर णधार तिह सीस रांम धरियो ब देह गइ देवधाम तब
आय रांम सुरसरित तीर करिक पाद कारे ना नकीर सिल देह अहल्या त जिस कांम रज
चरन परस उधरी रांम सो विरत देष षेवट सुनाय भय गए सु लेनौ का भगाय उधिग
र सिला पद बुव अकास यह नाव उडे हम कु यनि रास कोउ भाग तब यक तभए कीर नि
कट भर कवै ता आन नीर रज झार पषा रे चरन रांम कत कीर सपूर न भए कांम बेगार
नाव राघव विनीत पो दसु तपार कीने पुनीत विहसा तह सतम गजात वीर करि करि चिर
भसुन क्वन नकीर दिष संग जनक उर आय रांम भुव धनुष भंज सियवरी भांम सीता विता
ह लछमी सरूप प्रभु भंज सुरासुर गर भ भूप यह चले राम नीसान गाज संग पिता अतुल
चतुरंग साज इहां रोक पंथ उज राम भ्रांन प्रभु मान भंजकी नौ प्रमांन जुवराज तिलक अभिषे

नाथलंकगढलाए। दारुनजुधमयौवकुधारे। परिपरिउठिवीरपचारे। सांमहेतदहूंघाननटसूरे
परेअसुरकपिवीरबहूरे। याहीसमयइंद्रजितआयौ। सुरनपचारतनिरतसवायौ। नागपासतिनसं
घटनांधे। बिहसरामलछिमनदऊबांधे। इतसीतातहांगरुडहकारे। विषमुषपासककाचविदारे। दे
ष्योविरतअसंचवडोसतर। यवरजजयोसमातनहिनउर। भयोसंदेहगरुडकहभारी। विसमय
पस्यौविचारविचारी। गरुडवाचदुहा। भवबंधनतेरामभज। भएमुक्तजवभूत। रामबंधेअहिपासर
न। यहपेअभमअभूत॥५५॥ छंदचौपाई। एकसमयऋनवितैआए। तुंनषगराजसुनारदपाए। मि
लेगरुडनारदमगमाही। भयोमिलापसहजसतमाही। सोसंदेहगरुडनारदसम। विधजुतश्रवो
राजविहंगम। विश्वरामअवितारविसेष्यो। देवतइहककुहनदहमदेष्यो। प्राकृतनरज्यौपीडापाई
रिनजुवबंधपरेरघुराई। मनअवितारहेतकिहमांने। सोनारदतुमकहोसयांने। नारदवा०। तबमु
निचितावि रंचवताए। ज्ञांनवंतनिगमागमगाए। इबकजायपरमसुषपैहो। नियतअग्यांनसंदे
हनसैहो। इहागरुडविधलोकहिआयो। भेदवदौमनसंभ्रमबायो। ब्रह्मलोकसुरसभाबनाई
देषीजायगरुडसुषदाई। करेषगेसप्रणामसुकारन। आदरपायसुबैठेआसन। कहिरुघनाथ
प्रतापकहांनी। गावतप्रेमसहितमुनिज्ञानी। गरुडवाचदुहा। रामविलोकंमांकरिन। परेबंधेअहिपा
स। कारनयहअवितारको। सुपेनमोहिविसवास॥४६॥ कस्योषगेसविरंचकह। विसमयचितविषा
द। मेरेमनसंभ्रमभिटे। प्रभुकेकियाप्रसाद॥४७॥ विधरोवा। हरिवाहनवडभागबली। साधपरमहितसु
ध। काकुकरमकुबुधकरी। उपजीवेदविरुध॥४८॥ कहेविरंचषगेसकह। अतिसंभ्रममनएह। असी
तोहिनाहिनउचित। साधनकेसंदेह॥४९॥ अतिबलमायाइस्वरी। अधभुतविरतअगाध। कवैनका
ऊतेविषम। जोअसाधजोसाध॥५०॥ जतीव्रतीमुनीसंजमी। जोगीजगतअजेव। सबेनचाएकरमसं
गबुजनरराकसदेव॥५१॥ छंदचौपाई। विहसयहेब्रह्मातबबोले। षगपतिसोमायागुनषोले। य
हमोकहबकुवारनचायो। उनिमैयाकोथाहनपायो। विश्वचराचरजोयवाचै। नयकरेकीकोनह
नावै। महामोहनीदेवीमाया। बिननहीबाधतजहतनछाया। रथतरुनसबहीनविगोवत। रातदिव
सयाकेवसरोवत। महाप्रभुरषतुमहीयहमाया। भक्तमहाबलतदपिजमाया। रामहिमनुषभावकर
विदेषत। दीपकलेकरदिनकरदेषत। मनभ्रमजोउबोतुमभोहीं। ताकोजतनवताउतोहीं। दुहा।
कृतमहिमारघुनाथकी। अदभुतअगमअनंत। पावतभेदनपचिरहे। सबेसुरासुरसंत॥५२॥ उतर
नागसुमेरके। परबतनीलभुवंग। वसतजगंतअनेकवहि। सुषतहांकाकभुसंड॥५३॥ बानवि
हगविहगकी। समजेसहजसुभाय। उनकेतुमसंदेहयह। आपनश्रवोआय॥५४॥ रामषभावजु
रूपरस। भक्तरहैमनभोय। तिनकीमहिमागुनअतुल। सिवजानेकेसोय॥५५॥ रघुवररूपप्रत्यष
रस। अतिहितभजनअषंड। गरवततताकेस्वादगुन। समझतकाकभुसंड॥५६॥ समाधांनकहिहै
सबै। जोतुमश्रवकुजाय। कारनभ्रमरहिहैकबु। सुषहीमिलतसुभाय॥५७॥ छंदचौपाई। विनु
सतसंगमकथाविहंगम। जाजेकथाविनानमहाभ्रम। भ्रमभागेविनभक्तनभावन। नहिनराम
अनुरागउपजमन। विनुअनुरागनमिटैविकारा। रहितविकारमुक्तभलवारा। जोगविरागग्यांन
विग्याना। सबैनाहियकभजनसमांना। ताकोकाकभुसंडनिरंतर। इकबिनरामभजननहीअंतर
कविरोवाचदुहा। तबब्रह्माउपदेसतै। सिवकरतहरिसंत। आश्रमकाकभुसंडके। आयेगरुडअ

याविधव्रतपदीनो । हतो बालसुग्रीवसषाहित । करअपनेदेराजतिलककृत । पायोराजकेकंथाक
पिपति । तारासहितसबैसुषसंपति । अबरघुनाथप्रवरषनआए । बिनविरहपरबततनबाए । बसतहा
वरषासरदविहाए । उनलछमनकपिलेनपठाये । अविलोकेलछमनकंपेउर । कियेआगतस्वाग
तकपिईस्वर । बादरजूथपजुथबुलाये । यहांअष्टादसपदमजुआये । अबसुग्रीवप्रवरषनआ
ए । लेकपिसुनटरामपदलाए । सीताषोजतवीरसयांनेपठियेचहुदिगंतप्रमाने । जामवंतजुराजस
मरजस । दछिनदिसपठियेजोधादस । इहांकिकुपरबतदनमतआयो । पेठ्योविवरनीरतहांपायो । सु
नअवितारसुरंमनरेसुर । नयोसंपातसपंषीसरस्नर । इहांसंपातयीषसुधआई । वनअसोकमहसी
यावताई । अबकपषारसिंधुतटआए । तहांअपनेबलबुधवताए । बोलोतबहनुमतमहाबल । षेच
रकितियकमातरावनषल । कापितहांऊफैल्यो । गिगनअसंका । लांघिसामुद्गयोगढलंका । कपिलंका
मुहथापरमारी । मबरतनधरधस्योमंझारी । आतुरग्रहग्रहफिरअकुलायो । उनिकपिरावनसोव
तपायो । देख्योआनवनीषनमिंदर । मोरेअंगनतुरबीमंजर । वनअसोकमहसीयावताई । ईहांव
नीषनमिलसुषदाई । आनअसोकसियाअविलोकी । सिसपातरवसमहासुसोकी । वनअसोकक
पितोरविगास्यो । मिलरिनअषयकुमारसुमास्यो । दससिरकहउपदेसकुदीनो । कपिलंकागढदाह
नकीनो । सिंधुकूदआयोमारुतसुत । अंगदादिदेख्योबलअद्भुत । आयेवीरजहारघुराई । वैदेहीकी
कुसलवताई । सकमरकटदलसियासहाए । अवधेसुरसागरतटआए । मिल्योवनीषनवदनमली
नो । करसिरदेलंकापतकीनो । वनचरसुकरवारनिधबांध्यो । सेतआंनपरबतबकुसाध्यो । सेतम
लयावेरामेसुर । जिहदरसनत्रयतापमिटेजुर । सेनअठारहपदमअसंका । लांघीसेतलगेगढलंका
जुधजेतारिबालकोजायो । ईहांवसीठीअंगदआयो । दलकपिलागेचकुदवार । सारमारपरस्पर
संघार । राकसजबअवसेषरहेरिन । वासुरफिस्योविलोक्योरावन । ईद्रजीतयहांआयअचानक
मिरकीनोसग्रांमभयांनक । बकुरसंमअदिपासबंधाए । देवसुलीलामनुषदिषाए । परेअचेतसमर
नवपावन । राकसदेषहरषनयोरावन । याहीसमयगरुडतुमआई । वलविषमुषनसेषनसाई
लागीसक्तगिरेरिनलछमन । धांनपयांनकस्योपेरुषउन । यहामारुतदौणगिरलायो । जरीबुच
तदीलछमनजिवायो । याहीसमयजगायोआयो । समदरनिरतजुकूंभसवायो । महादुष्टराघवस
रमास्यो । धारेलंकताहिसिरमास्यो । रोयोयहामहादुषरावन । सुरनसालसुरराजसंतावन । लषघनना
दविजयव्रतलीनो । दुष्टपिताकरुधीरलदीनो । कपटहोमकंटकसुतकीनो । देवहितभेदवनीषनदी
नो । उनलछमनरघुनाथपठाये । अंगदहनुवीरसंगआये । मेल्योरथदयजुक्तअगनमंह । तिह
षलगुढजुमंत्रजप्योतह । छपेकवत हवकीनोरथहोम । बकुरतपज्योसुमंत्रबल । अग्नकुन्डयतु
न जरेनिकसेज्वालानल । तिनदिदेषहनुमंत । बारलेअनलबुझायो । विगस्योहोमविलोक । ई
द्रजितबाहिरआयो । करसारमारमेरकटन । कलदमहादारुनकस्यो । करसरषहारसोमि
त्रकै । महादुष्टराकसमस्यो ॥ २० ॥ छंदडअषरी । भ्रातउनतीजमहाभट । सूरसुनटजूकेरिन
संघट । दाहपस्योदससिरउरदारुन । महासोकसोचतमनहीमन । इहांषलमायाकपटउपा
वै । जोइजोइकरैसनिरफलजावै । राकसमायास्वरचरावन । उनउंनपीटिमुरुअपावन । मि
ल्योआनराघवसोसमहर । भिस्योप्रचारप्रचारभयंकर । कबुदिनजुधनिरंतरकीनो । दइवलो
कत्रयसंभ्रमदीनो । सुरोवाच । षेचरजोज्योरामबिलावत । लछइंद्रमहादुषपावत । प्रभुकरत

कजोग। उनदसरथकृतमंगलश्रीयोग। केकइयदबलमंत्रकीन। दुषपतहिरामबनवास
दीन। रघुनाथचलेजबबाहरराज। पुरजागतिसंपतसुषसमाज। संवादरामजबमनसनेह
बतसियासंगकवरीविदेह। जबगमनसमयकीनोजुहार। इहामातमंत्ररद्दाउचार। बहुवि
रहनगरवासीविषाद। मिलचलेरामसियकुलमृजाद। द्वाहारबघरघरनगरहोय। कारन
अनर्थनहीजांनकोय। सियरामलछमनउचलसकाज। सुरराजभयोसुषसुरसमाजउर
सुनीजबेघरघरउकार। अविधेसदुषउपजोअपार। सोमित्रबोलनृपकहिसकोम। रथजाउ
वेगलेजहाराम। सोमित्रआनरथसमयसंत। आरोहसियासानुजअनंत। सुनश्रंगवेरआयेसु
नाय। इहांनृपनिषादगुहमिलोआय। सीसपाइषतलसुषदिसाम। रहिगुहसमेततहांनिसारा
म। जटजूटकरेवटपत्रसजोग। पटपत्रआद्यतपसीवियोग। करिकृपासुमंत्रहिविदाकीन। पद
चारभएरथतजप्रवीन। प्रभुउतरगंगआयेवियाग। भवभूतकरतहरतनसभाग। बसबालमी
कआश्रमविसाल। कीनेतहांफलभोजनकृपाल। उनचित्रकूटआगमपुनीत। बसककुकदि
वससंगलषनसीत। मित्रीसुमितफिरअवधआय। जरहृदयसोकनहीबोलजाय। प्रभुअग्रज
बेआयोप्रधांन। रटरामरामनृपतजेप्रांन। कृतरामविरहनृपकरयोकाल। भावीनमिटेजोअ
कभाल। अविधेसमरनउरदुषअसेष। सुनबरनचारदुषितविसेष। इहजननिबंधुचित्रकुटआ
य। अविधेसमरनरामहिसुनाय। क्रमजथावेदविधकीयाकीन। दुजदानतिलोजलपिताहिदीन
मिलमातभरथमित्रीसुमित्र। सबजोरसुकरकहिसुभटसंत। भरथआदिकवाच। अविधेसबल
कफिरयेहआज। रघुवंसतिलककरिअवधराज। जगअवरकौनयहराजजोग। प्रभुकरजप
ध्वीरहाबियोग। कहरहेसबेमानीनएक। तहांतजेनहीरघुनाथटेक। पादुकादइभरथहि
पुनीत। बनचलेरामसुरमुनीविनीत। सिरधारपावरीभुसुनाय। इहांभरथजुनंदीग्रामआ
य। अत्रगृहआगमनअवधइस। सुषमिलेमुनेस्वरदीयेअसीस। विस्तारगहनबनबसवि
रोध। सरभंगभस्मोज्योजोगपसोध। सुजमिलेसुतीछणरामदेव। आयेअगस्तआश्रजेव। राषे
अघस्तकेदेवराज। सरधनुषदयेरामहिसकाज। उनकीनोदंडकबनप्रवेस। यहामिलजटायुपौ
रषअसेस। अविधेसपंचवटीवसेआय। विधजुक्तपरणसालाबनाय। दुजकियेसनाथसबरा
मदेव। अनेकमारआसुरअजेव। इहासमयइंद्रकोसुतजयंत। सोइकाकरूपआयोअसंत
सरसीकमारतिहदुष्टसाल। करिअरधअंधभाग्योकृपाल। पावनीफिरतपदविकृपाय। अ
विलोकेसीतारामआय। सुर्पनषाधसीसोसियहीषांन। काटेगहिलछमननाककांन। षरदूष
णराकसजुरेषेत। सोमारलयेसेन्यासमेत। छंदकुअपरी। इहांविरूपसुरपनषाआइ दुष्ट
बिबरावनहिदिषाइ। अरुषरदुषरमरनसुनायौ। पापीरांवनअतिदुषपायौ। दुहा। कंटक
यहमारीबके। अरधनिसागतआय। षरदुषरकोमरनबल। सबेकयौसमकाय। ६५। माया
मृघमारीभ्रमत। वाद्योवयरविषाद। दवछायासीताहरी। रावनमरनररहाद। ६९। छंदकुअपरी।
पंषीजटायपरमपदपायो। निस्चरबाधसोमुलनसायो। प्रेमजुगतसवरीगतपाई। वेदविदतजो
समृतिवताइ। बनबनभ्रमतविरहसियरघुवर। सानुजसदुषआयपंपासर। बहुरामनारद
सबाद। मरमबतायधरममरजाद। रिखमूकगिरआगमनरघुपत। मिलहनुमतबसीभमह
मत। मारुतआनसुग्रीवमिलाए। राममित्रकहउरहीलगाए। निस्चयबालबधनहृतलीनो। देवज

धउरध। क्वनयम्र तमोहतमनविधविध। नासाविमलकपोलविराजे। स्वासविलाससुगंधनसा
जे। सर्दचंदजून्हासप्रकासे। नियतविलोकजगतजयनासे। कमलायतलोचनफलकाही। मीन
मनकुनबलतजलमांही। जुगलभ्रूहवंकगतिजैसे। बालमधुपभ्रमतमिलवैसे। नालविसा
लवनीछिबनारी। राजतस्यामअलकघुघरारी। तिलकवन्योगोरोचनतैसो। जगजनमनमो
हतहैजैसो। लसतकुटिलभ्रुकुटीचलचंचल। षत्रविरत्रविलोकत्रसतषल। बकुलतवद
नसरदससिदूरन। तेजपुंजचादसरविसमतन। नीरदनीलनवीनवरनतन। कुंचितकेस
सुदेसस्यामघन। भ्राजितअंगअंगसिसुभूषन। लीलाबालबतीससुलछन। किलकनहसन
चलनजजितवन। क्वनविलासतोतरीबोलन। नाचतनिजप्रतिबिंबनिहारत। बालकेलन
पअग्रविहारत। निकटजातकरूपनिहारत। पकरनमोकरहभुजापसारत। रूपजछिबलध
रिनमहिधावहि। हाथपसारहीरूपदिषावहि। आउनहसहिनिकटजबआऊ। पैरोवहि
जबदूरछलाऊ। आनजबपरसैंपदअंबुज। नाजहिजयकिलकारमहाभुज। मनुजबाल
ज्योंविरतमनोहर। करहिअनेकरामभुवनकर। दुहा। रघुवरवेरतयहसमय। मायाव्या
पीमोहि। नाचीवसजेसीजड। तेसीकहूअबतोहि। ७४ मायावससबमानवी। जगतचराचरजी
व। तिहमायावसत्रगुणमय। देहनअगुणदइव। ७५ रहेअषंडितज्ञानजो। सबहीकेअंगरा
य। ईस्वरजीवहिभेदतो। केसेकेकहिजाय। ७६ जेअभिमानीजीवहै। तेमायावसतानि। सोमा
यावसईसकै। नीयतकरमगुनषान। ७७ विनाभगतरघुवीरकी। मुक्तहिवाहैकोय। सोनरहू
बरकानविन। जद्यपगपानीजोय। ७८ जोषडिसिसनभनगहीं। सबउडगनमिलसंगजो। अनेक
गिरदवजरहि। रविविनुरजनिनसंग। ७९ मायाव्यापीमोहितब। जानीरामसुजांन। करनसदा
यजुदासको। भ्रमभंजनभगवांन। ८० चउपई। बकुस्योमोहिविलोकोरघुवर। करकिलकार
पसार्योनिजकर। धरिनमोहितरवनिचरधाए। सुदरस्यामसरीरसुहाए। मैंउडिनाठ्योगिगनम
झारी। रामयहालघुभुजापसारी। जहांजहांउडनभवढहार्यो। नाथहाथसोतहांनिहार्यो
होजबगयोब्रमपुरमाहीं। तबदेषेंअंगुलबीचतहांहीं। जोअपनीगतिलोनभगांमी। सहावरण
भेदकेस्वामी। भ्रमतभ्रमतभैव्याकुलचारी। उहाबलघट्योसुनउरगारी। जबगतिथकी
आपनीजांनी। मुदेनदनहारमैमांनी। यहांदेष्योतोअविधपुरआयो। बोहघट्योमनसंभ्रम
गायो। मोहिविलोकराममुसकायो। उदरमांझमेरोजियआयो। देषेउदरमाहिब्रहमंडा। अ
ति षिललोकपैलोकअषंडा। सिववरिस्वसूरजससिसागर। उडगनसरिताभूमीभूधर। नां
तअनेकसिष्टजवस्तुता। अगिनतमुनिसुरजमअविधूता। नगिनतनकालकरालनाग
नर। आरषानविधसिष्टचराचर। जैानहदेषासुनानाजांना। वरतमानभवभूतवषांना। ज
नमनवचनअगोचरजोई। कहिनसकैरचनातिनकोई। दुहा। एकएकब्रहमंडमहि। सतसत
वरषविहाय। रचनविमप्रअनेकरंगवहेविलोकअघाय। ८१ छंदप। प्रतिलोकलोकविधभि
नपेष। दिननाथनिसाकरभिनभेष। भुमिभिन्नविधू सिवनिसापाल। विकरालभिन्नतिस्परवे
ताल। आसुरनरकिन्नरऔरऔर। गं[illegible]प्रपंचसबवोरवोर। सवअंडकोसप्रतिनिजसरू
प। भुनअविधऔरऔरअनूप। कोसल्यादसरथअवधराय। सबदेषेभरथादिकसुभाय। बहरा
यदेषमैगमनगमर। रघुवीरनदेषोएकराम। भ्रमलोकलोकरूसहतभीर। तहांगयेकलपसतएक

रिनक्रीडापावन। माधवदम थिरनादिरहतमन। अवधनाथसुवन्नारउतास्यो। माहा राजउ
छहिकिंनमास्यो। अविनआररघुनाथउतास्यो। मूलउषास्यो रावनमास्यो। विहतलोकत्रयवजे
वधाई। गीतविमलसुरत्रियमिलगाई। रावनमरनमंदोदरिरोवन। विवभषंदसुबराजवन्नीवन। सी
तारांमदरसहितसज्ञन। मिलसरमादिककीनोमंजन। कट्यौविजोइन्दरसपियकीनो। दारुन
दुषअगनव्वदीनो। यहासाफउषकरथआयो। चढरघुनाथविवांनचलायो। अनुक्रमराम
अजोध्याआए। विमलनगरननवजेवधाए। मातनातमिलघरघरमंगल। तैसेसफरमरनर
तपायौजल। क्रमजुतजटाविमोचनकीने। निजतनभूषनसेफनवीने। बंधुन्नालकपिस
भावनाई। रामचंद्रबैठेरघुराई। कस्योतिलकअभिषेषराजक्रम। साथसकलगुरमुनिवर
संगम। नीतधरमनृपकरमनिरंतर। वेदवनीतचलेसीतावर। कीनेन्यावस्वानदुजकेरे। नीतध
रमरघुनाथनवेरे। निहत्यौसुदकरततपसाधन। बालकजियेतांदिछिनबांभन। न्यावपसुपं
षिनकेकीने। नीतधरमवजुपरमनवीने। उंनितवधरमचलौचकुपायन। सबैचलतकुलरीतस
नायन। जनमविरत्रअनुक्रमजेते। तुमसबसुनेकहेहमतेते। विवररामरूत्तकवनवषानै। स
हसवदनकहिथकेसयांने। जोइनमेदेवतनजानक। मनअवतारविरत्तनमांनक। सुपेषका
सरूयहाषगेस्वर। ताकोतुमदिदेषहहमउतर। काकभुसंडक हेकतकारन। मेटेसबैसंदेहग
रुडमन। गरुडभागउदयमनसंभ्रमभागे। गरुड़पायवायसके लागे। श्रीरघुनाथउयअवितारा। नयेमनुजदारतनु
वन्नारा। नियतत्रलोकनाथपतजांने। पुंरनवेदपुंरानवमाने। काकभुसंनोवाच। जगतपितामं
हकहेनजिनके। क्रतकोजानअनुक्रमतिमके। मैममबुधवमानवमाने। जगउधारजितेकबु
जाने। दुहा। पौरषरामप्रतापको करैसदेहजुकोय आगमनिगमनिदानयह सोपैसाधनहोय
७०। गुरडवाच। उपज्योमनसंदेहअति दूरबकरमप्रसाद मोहिन्नयोतुमसोमिलन विसमयगयो
विषाद। ७१। काकभुसंडवाच। मायादासीरामकी यहन्नवन्नूतवियोग इहकाकवसनानर रहे
सबेरदरोय ७२ निसाकरेवकुनेषनट नांचैतैसेनाच क्रततिहमायारामकी सोपेदिवसन
साच ७३। छंद प। वरनीनजायदेषीविचार कीडाबलादिकमोहकार। जहांजहांरामविहरेजयं
त। तहांतहांसंगमोलेतुरंत। जातीसरूपतजिककनषाउ। षिसपरेफूठलेलेसुषाउ। इकदिवस
बालक्रिडाउदार। अवधेसकवरकीनीअपार। सोन्नवनमनऊदुरगमसधीर। सुधहोतहोतवुल
कतसरीर। अदभूतविरतमायाअमांन। उनकहिऊकबमनबुधवमान। वृथ्यीपग्रेहअंगन
पवीत्र। ववबंधुकरहिसिसवैविरत्र। विस्तारवीरबालकविनोद। पितुमातदेहवंबितवमोद
घनस्यांमरंगसुंदरस्वरूप। अतिअंबिलसोभाअनूप। राजीवपमहुचरनराज। विचविन्हजुकु
सल्पादिकविराज। छंद छैअषरी। ससिदुतिहरनषरअतिसोभत ललितचरनपदवमनलोभ
त नूपररूनितचारुरवराजै विमलजंघजुगकंदलीविराजै रतनकनकमयकंकनिराजत
श्राजान विहतवीरकटिसिंघविराजत नाभीगंभीररुचरत्रयरेषा विम्बविमोहकरूपविसेषा बाकु
पलिबैंआयतउर सिंघनषरफूलतमोहितसुर अरुनकंजबिबकरतलऐसे मकरकेतर
थनोदनजैसे ग्रीवत्ररेषविराजतगाढी करबिबसीमाढांनककाढी कंधविसालमनकवनि
केहर अविलोकतलिसकतमदगगजअर विबुकबिहमेचकबिबबाई अषिलजोकसोन्ना
जनुआर अरुनअधरजुगराजतऐसे सुभगसपकबिबफलजैसे दोयदोयदंतअरुनअ

बोधअति। करिअवधेसकुवार। कीडासिसुलागेकरन। नरहरकेआधार ९२ करि रूषोमुषनैनभर
चितेमातकीओर। लगीछुधाअंगनलुटत। कोसलरायकिसोर ९३ आतुरजननिविलोकयह ली
नेकंठलगाय। दियसुतहिकुचदानदे। बकस्योलितबलाय ९४ छंद। करवेषअसुरसनजसुषदि
काज। रतध्यानरहतनितभूतराज। निजपुरनिवासीपुरषनार। रसमगनरहतनितमुषनिहार। हित
रूपनिहारतसुपनमाहि। नितवेसुसुषरगसुषगिनतनांहि। कूरस्योकालकबुअविधमाहि। अवि
लोकतसुषनहीदगअघाहि। इहविरतनकाकुलस्योऔर। मोसौंजुकह्योरघुवंसमौर। प्रभुकेप्र
सादवरनकपाय। आनंदमगनरूयेरहआय। व्यापेनमोहिमायाविषाद। प्रभुरामकस्योकरुना
प्रदौसाद। दुहा। तातेअबतेगरुडतुम। संसयतजकुतरक। रामचरनजेप्रेमनासहै रजनिउदैजर
अरक ९५ सोरठा। सबनिजमतअनुसार। प्रभुप्रतापकरुनाप्रगट। कहीजुबाकविकार। सोषगेसतुम
कुसुनी ९६ मैसबनैननिहार। गरिमारामप्रतापगुन। यहजुकहीउरगार। मायाभ्रमजातैमिटै ९७
मैअपनेउनमांन। रामचिरतगायौरहिस। जोविधवेदनजांन। पैसुरमुनीसंसयपरत ९८ स्वादतुम
हिपगराय। लीलाउरुतजुदेसच्यो। पागिगननहिपाय। आपपकुनगतिआपनी ९९ करिरोकावाउ
दा। कारनबोधभुसंडकौ। यहांसुन्योषगराय। ज्योंनौरामप्रतापउर। विस्मयबुधविसराय १०० मा
याजुनितसंदहमन। उपज्योहोकबुआय। सिवरसिवरअग्यानसो। उनिषगेसपवितताय १ आदिब्रम
अबिलेसयहां। जान्यौरामसुजांन। नयेमनुजतनहरनभुव। नारविषमभगवांन २ भ्रमनाहीवा
हीनगत। नौउपदेसभुसंड। रामप्रतापषगेसउर। उपज्योज्ञानअषंड ३ छंद। करिकाकप्रसंसा
हरषकार। वाहनहरिबोलेउनचिवार। गरुडोवा। इच्योभुसंडकहलागपाय। संदेहचितउपज्यो
सुनाय। तुमसाधसंतसममतसुजांन। विद्याविवेकपूरनप्रमांन। छंदहैअपरी। ससभक्ततुमभै
रामसनेही। केतकवनतुमवायसदेही। उमहहरामचिरतअपार। सोकहांलस्योजगतनिसतार।
प्रभुकोबालविलाससपावन। निस्चयमोहिकुबुधिनसावन। सिवमोकहतवचनेदसुनायो। ~~सिवके~~
~~वचन~~सुनि प्रलयकालक कूकालनपायो। महाकौप्रलयवीतेभवमांही। निस्चेनासतहांतवनांही। सिव
केवचनसुमिथ्यास्वामी। गिनियेकबूनाहिनगामी। मनबुधमत्तमोहनीमाया। कबकूतोहिनव्यापेका
या। जीवचराचरहैजगजेउ। कचिनकरमवसकालकलेउ। सोकारनकहिमिटेअंदेसा। व्यापेतुमही
नकालकलेसा। यहबलजोगकज्ञातअभ्यासा। नियतकालतुमतेजोनासा। काकभुसंडवाच। जो
तुमहीपूछीहरिजांना। निगमप्रनीतसुतुमहिनिदाना। जोगदानजपतपमषसंजम। विषमवेराग
सातइंद्रियसम। पूरनप्रेमरामपदपंकज। अनिअलेपनीरज्योंअंबुज। दुहा। रामचरनरतरूप
रस। आनैचितनआंन। सुषदुषसंगनिवर्तसब। जीवनमुक्तसुजांन ४ छंदहैअपरी। मैयहदे
हपरमसुषमांन्यो। जीवनमुक्तआपकहजान्यो। समझ्योसाधसबहिमोहिसाधन। एकहीरामभक्त
आराधन। नीचकुरामभक्तजोजानै। विस्वातादिकहिसाधवषांनै। पाटकीटसंभवसबलेषो। विषल
पटंबरहोतविसेषो। पावनहोततासपाटंबर। सुषदसुरगपरधांनकरतसुर। पाटमूलउतपतअ
पावन। गतसुनजगतलगेगुनगावन। विमुषरामब्रह्माकिनहोई। करैनताकहवंदनकोइ। रामभक्तय
हतनाउरगारी। पावनमोहिलगतअतप्यारी। तातेकूंनतजूयहदेही। साधगनतसबरामसनेही। वि
वधजन्मबकुमोहिविगोयो। राघवविमुषमहादुषरोयो। करमअनेकजन्मबकुकीने। जोगजि
ज्ञानपदानदीने। जोनिकवनजिहमाकनजायो। योहीभ्रमभ्रमजन्मगमायो। दुषसुषसबैकरमव

बीत दुष दंड मांझ सब बिरत देष। बिभ्रमो दे ब माया बिसेष॥ सोरठा॥ बिहस राम बरबीर छुनिक
सो सुष धारके प्रभुता नत पर पीर सदा करन कारन समर्थ ॥६२॥ छंद उअषरी॥ इहां बिलोक मोहि मु
ष आगे लीला बालकरन उन लागे। अतुल प्रताप देष यथ काई स्वातिक उपजि दसा बिसराई
छू बिहाल कै धरन पस्यो धस। त्राहि त्राहि करि कंप पांनतस। आतुर राम मोहि ग्रिह बिलोक्यो। कंत
अपनी माया बल रोक्यो। देव कमल कर मम सिर दीनो। लीलादी भ्रम सब हरलीनो। मोह बिगत मो हि
कस्यो मुरारी। हित दायक सेवक दुष हारी। नियत देष प्रभुता रघुनायक। कस्यो हरष मैं मन क्रम
कायक। भरे नयन जल रोम उभारा। बिनय करे बहु बार म बारा। सहित प्रेम मैं बचन सुनाए।
दीनदयाल दया दरसाए॥ श्रीरामवा॰॥ इहां श्रोष प्रभु अधम उधारन। काकभुसंड मांग मन कार
न। अन मादिक सब सिध अनंतर। सहित तन वै निध मो षडुल भसुर। बिहरत ग्यांन बिग्यान बिबेका।
उर अभिलाष जु होय अनेका। मांग कु काक जु है इछ्या मन। निश्चै सबै करूं पन हूर न। काकभु
संडवाच॥ दुहा॥ कहुन उरज भराम कह देत लोक त्रय दांन। दीन उधारन हरन दुष भ्रम भंजन
भगवान ॥८३॥ कसो भुसंडी जोर कर नाथ दीन पर नेम। हूरन भक्ति आपनी देव दया कर देह
॥८४॥ अवगत उचित बिसुध अति बेद पुरान बषांन। जिह षोजत जोगी जती भक्त देहु भग॰ वांन
॥८५॥ श्रीरामवा॥ करुना सुनी भुसंड की एकमस्तक हि आपु। जो देवी माया उसर वा इसते यन
आप ॥८६॥ माया संभव भ्रम अमित मन क्रम सिमरत मोहि। देवासुर नर रुउ षद कबहु न ब्यापै
तोहि ॥८७॥ सुन वायस सिधांत यह जो बिध बेद बषांन। मम माया संभव सकल जीव चराचर जांन
॥८८॥ छंद दैअषरी॥ संभ्रत मै सब भूत सवारे। नष सिष अंग सुन्यारे न्यारे। उंन कूकरत भरन अरु
पोषन। षोजत दुष सुष तीन के छिन छिन। समाधान निज कर मन सारे। पै तिन मांझ मनुज मोहि
प्यारे। नव तिन मै दुज है अत भावत। बेद धरम षट करम बढावत। तिन कू मद नो बिषय बिरागी।
तत्ववान सुत संपति त्यागी। तिन मह जे मम सेवा सावै। अवर आस बिस्वास न चावै। तिन मह मोहि
भक्त प्रिय भारी। निस्वै हो य ध्यान ब्रतधारी। हीन भक्त जो बिध कि होई। सब प्रांनन सम लेष सोई।
जो पितु एक पुत्र बहु जाए। पृथम सील गुन लछन गाए। कोउ तापस कोउ ज्ञानी पंडित। कोउ
आचारी धरम अषंडित। कोउ सुचीस्ट दयापर दाता। कोउ गुनवंत संत कोउ ग्याता। कोउ धन पा
वद रदी कोउ हित कोउ अहित दुष्ट किन होउ। आन वकत गुन लछन आए। निगम पुरांन जु ष
गट बताए। जद्य पिपिता अकरमी जाने। तद्यप क्रोध तिन दिन ही ठांने। करे तथापी भरन पोषन क
म। सब ही पुत्र न दया एक सम। पिता कहु जो धेषषका से। नियत तो सब संपत नासे। जो पित मात भक्त
अति तत पर। निहचै सेवा करे निरंतर। भव सोई पुत्र पिता कह भावै। प्रांन समान परम सुष पावै। जीव
चराचर यह बिध जोइ। अमर असुर नर तिरगय कोई। ईस्यादिक मैं सबै उपाए। गोर गोर गुन लछन
गाए। मोहि न जेत जअहि मत माया। करै भक्त मनसा बच काया। जदपि निपुंसक वा नर नारी। जी
वचराचर विश्व विहारी। सरब भाय यया कमम विश्वासा। आने चित न दुजी आसा। सत्य कहुं तव
वाय ससोई। करो न तोसु अंतर कोई। दुहा॥ आसन रोसो तज अवर भजमो कह सत भाय। का
कन ब्यापै काल तोहि संतत साध सुभाय ॥८९॥ कबिरोवा॥ सुंधा बचन प्रभु के सुनत स्वातिक पुल
क सरीर। आनंद न हिन समात उर नयन सह हुरित नीर ॥९०॥ सो सुष जांनै मन अवन जीह न वर
नो जाय। राम परम सुषरूप रस अतह गलेत अघाय ॥९१॥ काकभुसंडवाच॥ इह बिध मोहि ष

हामारी सकलग्रंनी संघरे विहंगेसवरत्तविषमविधविध उनिकपटहवपाषंड मदमोहमा
रजुदंनअहमत्त पापवकु हहमेंह तहांवदेअविहितधर्मतामस निठुरत्तामषदान इहदोवदि
वत्तवरषअविनी नहीनजामतधांन वउरोड्डपीडतधरमवरजित लोकसुषनाहिनलहै अ
भिमांनविषमविरोधअविहित्त सतवादीदुषसहै सबन्नायजातकुजातजाचक एकलोन्नहिआ
न्वरे करिहरषाबकुदोषकारक षबलदुषउरपरजरे गतबर्णआश्रमधरमधारण मलिनतन
मनदुरमती सवदुष्टदुष्टसदोषतामस जगतन्नयेजावरजगी कवततवपै सत्तव्रतसतजुगहि
कतत्तेतातपकीने दाउरअतिजुतदांन देवदानवन्नपदीने जबजैसोजिहकस्यौ षगटतिहते
सोपायो स्वरगम्रतुपाताल गुणजुनिगमागमगायो संध्पान्नकालनरहहरसकव संततसाधसंभा
रिहै कलिजुगदुरंतरघुनाथको एकनामउधारहै १ दुहा करैजुकलिजुगमाऊकोउ उनिमांनसि
कपाप ताकोफलसोपैतहां अंतनपावैआप १ याजुगकोयथकारयह करिविश्वासजुकोय रां
मरांमयहमंत्ररट अंतमुक्तसोईहोय २ ताकलिजुगमहवरषबकु रूजवसौकबुकाल न्नये
तहांडरन्नषन्नय गयोविदेसविहाल ३ छंदप: जबवसौउजैलीउरीजाय दारिदहसातनम
नदुषाय उनकबुतहांमैवितपाय न्नवनतकरूसेवासुन्नाय सिवसेवकदुजईकअवरसाध
अतिहेतकरेपूजाअराध परमारथसाधैसहितप्रेम निदेनविष्णुदेवहिसनेम संकष्टकरूकृत
हांसेव न्नयोसोदयालदुजलष्योन्नेव कहिउत्तमोहिअतिदयाकीन उनिसोरपदायविद्याप्रवी
वि न अरुरुद्रमंत्रद्दीनेअनेक उपदेसविविधविधकरिवेक जपकरूसिवालयनित्तजाय सोदं
न्नहृदयअहमसुन्नाय होनीवजातमनग्रसतमोह हवकरूविष्णुसमहाद्रोह निजसाधदेषम
मजरहिनैन वितवदेधेषउपजैअवैन गुरकरैमोहिदिनप्रतप्रबोध कुलकेसुन्नावतउवदेको
ध कपटीकेनीतहिकहांकांम रसकामरत्तनहीन्नजेरांम इकवारमोहिगुरलियेबुलाय सबनी
तधरमविधविधसिषाय गुरकह्योउत्तसुनगुढज्ञांन निरधाररुद्रहृजानिधांन आराधयैरुद्र
फललहैएह सुतवदेविष्णुचरननसनेह जिहविष्णुन्नजहिसिवद्रुलसाध अरुअवरजीवषि
रचवरअराध जिहविष्णुन्नजहिन्नयउरविष्यात बकुस्यौनरपामरकितिकबात दुहा हरसूज
कहरिद्रोहकर पावैसुषनप्रमांन समतसावसहंअसो करहैकीटनिदान १ हरीसेवासत
गुरकहीजागीममउरज्वाल इहअनीतसुनिअतिअसह वाद्योक्रोधकराल २ कबकुप्रबोधकु
जातकह हितसिष्पानसुहाय वाढेअहिमुषविषमविष कोउपयपानकराय ३ छंदप: पाईकुजा
तविद्याप्रमांन इहवढीमोहिअहमतअमांन यधकारविष्णुजबसुन्योएह सवतातेवाद्योमोहि
संदेह घटघाटक्विास्योगुरहीघात विषलाग्योमोहिसोसुनतवात पावैकुजातजिहतिहप्रमांन दु
ष्टतिहमूलषोवैनिदांन वित्तमोहिजदपिदेषीकुचाल कबुकरनक्रोधदूसीन्नकालपेध्रमअग्नितेज
न्नपाय बाढेसुआपअग्नहिबुझाय गुरमोहिसिषावैनीतज्ञांन सोलगैसुनतमोहिविषसमांन
इकदिवससिवालयजपजाप उहसमयतहांगुरआयआप मैउवनकस्योआदरअजांन अति
हीदयालगुरजियनआंन अविलोकअनादरगुरअनीत पैसहिनसकैसिवधरमप्रीत न्नभवान
न्नरतहांसिवनिकेत सिवनिगमसहायकधरमसेत सिवोवाचदुहा हेतवगुरउरकोधनहदुजसो
इसाधदयाल अनुचितअतहिअनीतयह सहिनरुद्रउरसाल १ तातेदेऊंश्रापतोहि मोसोक
छोमहेस नीतविरुधनकुसहो उरवाद्योअंदेस २ करूनतोकहहूंकबु जोइतनेअपराधउ

सदेष विश्वत्रासत्रूसुषनविसेषे ॥ मो दिन्नेकजन्मसुधमेरे ॥ तहांतहांदेषु दुषबक्के तेरे ॥ दुहा ॥ क
थाजु पूरबजन्मकी ॥ सो सबकहों सुनाय ॥ अबकैसुनिए कंतचित ॥ रहं सकथाषगराय ॥ १ ॥ अथका
कभुसंडपूरबजन्मप्रसंग ॥ कलजुगभोपहिलोकलप ॥ सोअपनेजु सुनाय ॥ रूजनमोजबसुदयहद
अवधपुरीमैंआय ॥ २ ॥ छंददोआहारी ॥ सिवकीतहाकरू रु सेवा ॥ दुष्टभावनिंदूसबदेवा ॥ अतिवाचा
लउयबुधआपन ॥ दंभकपटमदमत्तमहापन ॥ वसूअवधपुरिजदपिविसाला ॥ कुबुधीतदपिकुच
लकराला ॥ नहकवनसाधनसबजायन ॥ दुरषनारतहांपापपरायन ॥ कलियुगग्रसेधरमसब
केरे ॥ गयेलुप्तरिषग्रंथघनेरे ॥ निजमतकलिपतदंभनिनाना ॥ प्रगटकरे बहुपैदप्रमाना ॥ चारबर
णनहीधरमविचारहि ॥ वेदविरुधकर्मविस्तारहि ॥ बेचहीवेदब्राह्मनबांभन ॥ सरबायहीन्त्रपति
परजासुनि ॥ अज्ञानिगमनमांनैकोई ॥ जगतकरैजियभावेजोई ॥ जोवाचालसुपिंडतजांनै ॥ महादंभ
तिहतापसमांनै ॥ जगवंचकमौनव्रतजोई ॥ कहतसंतवाकहसबकोई ॥ परधनहारकसुपेसयांनै ॥
जोईकपटीआचारीजानै ॥ बोलझूठफोकटबहकावै ॥ कलिसोइअदभुतगुनीकहावै ॥ विनुआचा
रसुपैवैरागी ॥ तिउगुनीनिगमनमगत्यागी ॥ नषजटबालजुकाषवढावै ॥ कलिसोईपरमगुहंसकहा
वै ॥ करिहैभेषअसुभभयकारी ॥ नियतजोगरततेइनरनारी ॥ भषीअनदप्रअपेपसुभावै ॥ कलिजु
सोइअबधूतकहावै ॥ जोइलबारविक्रतिहजांनै ॥ महाधनेसवहीसोईमांनै ॥ रहतअन्नेकएकति
यराचै ॥ निसदिननरमर्कटज्योनाचै ॥ दुजनसुदउपदेसदिषावै ॥ वाचैवेदपुरानवषावै ॥ द्रूजैसिल
नेउपहरै ॥ चाहिकुदानविश्वकूहरै ॥ ~~चाहिकदानवै~~ करिकरभेषजगतबहकावै ॥ धरमजतीवाद
नचढावै ॥ विधवाविवधसिंगारवनावत ॥ पैसोहागनवस्त्रनपावत ॥ नरपरत्रीरतपरपतनारी ॥ आ
पआपईछ्याइधकारी ॥ सुनहिंनपूतपिताहितसिक्षा ॥ देहिचमारदुजनकहदिक्षा ॥ पितामातजोइ
बालपढावहि ॥ सिष्याउदरभरैसमझावहि ॥ बृह्मघातनरनारविचारहि ॥ हेतवराटब्रधगुरमारही ॥
वरणधरमजेवेदवषांनै ॥ सुनकलारकहारकहांनै ॥ तेलकबीपाकोलकिराता ॥ जेईसादिकलघु
कुलजाता ॥ नासीसंपतमरगईनारी ॥ जोगीभएमुंडतजटधारी ॥ ऐसोमैकलिजुगअविलोकौर
हेनजीवन्नमतअबरोकौ ॥ बांनप्रहस्तकीनेवनवासी ॥ नसेदिवसकछुयेहनिवासी ॥ हसिदहसदुजसत्व
रनद्रव्यावही ॥ आपनिष्टनयेऔरनसावहि ॥ विप्रनरहेसुरीकियाविसारे ॥ रवहवलेतकुदाननहारे
सूकेकलिपतधरमचलावै ॥ वेदविरुधसुपंथवतावै ॥ करहिवरसंकरअहंकारा ॥ बेठेमध्यसुनोजन
बारा ॥ धारहिमधिकुमारगधावहि ॥ पापवियोइरोगदुषपावहि ॥ छंदवैताल ॥ बहुदहसदेहजतीविध
विध स्वर्णधामसवारही ॥ विषियादलंपटविरंतविसरी ॥ विप्रकांमवधारही ॥ धनवंततापसयूही
निरधनकुलवधुनिकारही ॥ यहराषिवैरीकुपंथगामनि ॥ सुनसिंगारसवारही ॥ सुततबहिलोप
तमातकेवस ॥ भवनमामनिवसभए ॥ दुनिभाहकेत्रियलेपियारी ॥ यहसुसरकेभवगए ॥ पितुमा
तभ्रातकुटंबपरहर ॥ सुषनिवासीसासरे ॥ संभौसुषायषबायसालन ॥ भयेनिरधनदिनमरै
रूपसावधानअनीतनिरभय ॥ प्रजादंडभवारही ॥ मतनीचकीलेचोरमोषही ॥ साधुमारसंघारही ॥ दु
जसुतमातअवग्यतपसी ॥ प्रगटविक्रमानियै ॥ मालानतीरथवेदमांनहि ॥ जगअनिसुजां
नियै ॥ कविपिंडतहितन[illegible]रीकभांडनसोरही ॥ कलिकालधर्मविलापकीने ॥ सुरनइजाघट
सही ॥ परिवारवारदुकालपृथ्वी ॥ मेघधारनमोषही ॥ अंकूरग्रासितअविनआतुर ॥ सरसरतज
लसोषही ॥ विनअन्नत्रणबकविदिताचापत ॥ मनुजयसुतिहडुषमरै ॥ महिपरतदुरभषम

य सुनराम चरित्र उपजी सुनाय ॥ उनि भ्रमत जौन कुजन्म पाय ॥ सब भांति उछन्न निगमन सुनाय
बकुलेरु संग बालक बुलाय ॥ सब करो रांम लीला सुनाय ॥ उनि सम कहन इक बुध अवध पाय ॥ पितु
मो हित हां विद्या पढाय ॥ वासना गइ सब चित विकार ॥ सो इराम प्रेम उर व सो सार ॥ ऐसे अज्ञान की धौं
अनेव सुर धेनबा रु करि षिवरी सेव रस राम मगन हो दिवस रात ॥ सुष अवरन कछु विद्या सुहात ॥ ह
वर देमात पितु सबै हार ॥ विद्यान कछु पाइ विचार ॥ पित मात तजे वैपंच तत्व पाय ॥ उह समय तबै उ
द्यान आय ॥ जिह जिह सुथान मुनि लखौ जाय ॥ सुनराम रूप अद्भुत सुनाय ॥ गुर सबै जु दीनो इहै ग्यां
न ॥ सर्वमय रांम व्यापक सुजांन ॥ निरगुन हि चित्त मम लगे नांहि ॥ मन रहौ अटक भिव अगुन मांहि ॥ र
घुवीर चिरत गात उरसाल ॥ वनवन हि फिरू पर्बत विसाल ॥ दुहा ॥ मेरु सिषर वट वृक्ष वर ॥ लोमस आ
श्रम आय ॥ सिषर रसन की नौरदिस ॥ उनि हौं लज्यौ पाय ॥ १ ॥ लोमस इह ब्यौ निकट लै ॥ कारन आगम
काज ॥ कह्यौ तबै मैं जोरि कर ॥ सुन सब सिध समाज ॥ २ ॥ जान पुरातन मुनि जथा ॥ मैं वरन्यौ श्रुति
सार कल्याण करघुनाथ की एक नाम आधार ॥ ३ ॥ अगुन व षान्यो मैं सम कहु मुनिवर निरगुन मांन
उर भिन लोमस के उहां उररिस उपजी आंन ॥ ४ ॥ साधकु के का कु समय ॥ उपजे कवन व षाय ॥
जसुवंदन के चरन जुग ॥ अति घस अज्ञन उवाय ॥ ५ ॥ लोमसुवाच ॥ याते लोमस के यथका ॥ उग्यौ क्रोध उर
र आंन ॥ मै उपदेसौ निगुन मत ॥ मूरष सुतै न मांन ॥ ६ ॥ वति उतर उतर षगट ॥ कर्त मोहि जन कांन
त्वाय सत्रु न्यय त्रसत ॥ मन विस्वास न मांन ॥ ७ ॥ तातै वारि सहो कुतुम ॥ करव कर कु बकु काल
वनवन मोल कुमन विकल ॥ वरु दिस विहंग व काल ॥ ८ ॥ काकउवाच ॥ मुनिवर दीनो श्राप मोहि
दारुन दुसह दुरंत ॥ मिटैन सो मांन व अमर ॥ भावी जो भगवंत ॥ ९ ॥ तब हि भयो हूं काक तन मन क
बु क्रोध न मांन ॥ नव जे सीज वत व ता ॥ ऐसी मिली जु आंन ॥ १० ॥ छंद प ॥ अथ ज्ञान विज्ञान वरननं
काकवाच ॥ विहगेस ज्ञान नवधा विभेद ॥ विष जुक्त वता वत षगट वेद ॥ वैराग्य जोग ज्ञांन र विज्ञान
जनविजोग्यतांक
एउरव अंग ज्ञान कुपमान पषप्रताप ॥ अवस्ता जरुता अवल आप ॥ वन्मैं बल ज द पित दपी अ
विलास ॥ तजि सक्त सुष विषय तास ॥ सुष त्रियात जत विकृत सधीर ॥ अविधेस विमुख त्रियवस
अधीर ॥ निज मुनी जद पिज्ञांनी निदांन ॥ मृगनैन वदन निरषत प्रमांन ॥ तजि ज्ञान होय वस तेतु
रत ॥ सोइ नार विष्णु माया धुरत ॥ माया रु जगत निज नार रूप ॥ उनि चित्र परम प्रिय हरि अनूप ॥ मा
या जुन रक्षक लता प्रमांन ॥ विज्ञान कूल जगत हिव षांन ॥ इक सुन कुरहं सषगनाथ एह ॥ नरनार
परसपर वस नेह ॥ निज उर व पुरुष नारी रु नार ॥ वसक तबल नवाट तविचार ॥ नित जीते जा वत
कव लैनेन ॥ नवधा देवट ता कृपा ऐन ॥ कृत रहं सइहै रघुवीर केर ॥ रघुवर व तापल हि हृदय देर ॥ ग
त अवर भेद पुन भक्त ज्ञांन ॥ व ढिभ म्ब वर्नहरि विमल वांन ॥ गुन हौत्याद उन उलक गात ॥ निज सम
रूप रत पेक हत जात ॥ निज इस जीव अविनासनित ॥ चेतन अमल जन दवै अवित ॥ वस इस जद पि मा
या विलास ॥ ज्यौ वुधा बंधक पि कीट जास ॥ परि ग्रंथ जद पि चेतन ही पाय ॥ है व्यथ जद पिन ही बुटत
आय ॥ छंद वैताल ॥ तव जीव भैं संसार वस पुटग्रंथ विनु सुष नालहै ॥ सोइ ग्रंथ बोरि उपाय विधइ
हे कवि उरान पिरत कहै ॥ मनु उरुक सुर जितअधिक सो कित मोह तम कि विसेषता ॥ जे पुट्त की
उर ग्रंथ षग वर परत न ही अवरेषता ॥ संजोग्य जव अस इस कर वित ॥ तद पि कि चत निरखै सुनसु
रभि सातिक सुधा जे हरि ॥ कृपा वरव सहिय धरै ॥ जप नियम तप व्रत सजम अतुल ॥ धर्म सुंज निगमन
कहै ॥ तेह रत तृण चक वाय गायन ॥ भाव वछियन सुन लहै ॥ व्रत नोइ कज विस्वास नवजन विमलम

छहोयकुतौपंथनव सहितसकेसुरसाध ३ करैअनादरगुरनकौ अथवागरनअज्ञान नजेसुरे
रवनरनवपावैदुषअवमांनं ४ मिलैसितरइकजोनमद प्रभुतजन्मतिहपाप पस्योरहैविनुन
त्सनुवसीपैयजगरसाप ५ महाविटपकोटरवरष जामैवसहोजायरै अधमाधमअंतलौ पापी
अधगतपाय ६ वाइसवाच ममगुरयहकरिमलनमन सुनसिवदारुनश्राप महासकंपविलोक
नोहिपायोद्विजपरताप ७ गुरउवाच करिप्रणाम कुजजोरिकर सिवसनमुषगुरसंत एअनादर
वगतिअमित अद्भुतरूपअनंत ८ गुरपनीनसिवस्तुतबरनोटक सिवदेवनमामीसुरेसुरि
यं अवल्हेसमहेस्वुरईस्वुरियं नयमूरतव्यापकएकतनं जगदीससहायकसंतजनं निगु
णतमसत्परजंतमसं रतध्यानविज्ञानसुजोगपरसं श्रोउँकारउदारसुमारअरे संसारविकार
हरेसगरे महाकालहिकालकपालकरं धरजोज्ञवियोज्ञत्रसूलधरं गुणपारनवारसंसारग
ती हिमवंतसुताप्रियप्राणपती पाहारतुषारसरीरवना नुतैसुरमंडितभूतसना बंदभुज
गीप्रियात लसैसीसगंगाजटाजूटलागी जस्योकामत्रयनेत्रआगजागी चलंकुंडलंभुजता
सोमभालं सुधाश्रावकंचैननयनंविसालं विरूपंवपंविम्बहारविकारं सदासिन्दूसामंसंसार
सधारं रदनंबदंबिबरीतंविराजै मुषंमंदहासेरदंव भ्रराजै कृतंनीलकंठंमहारूंडमाला
वनेबाऊदंडक्ष्वंडविसाला उरंओपतंमध्यनागंमुधेसं पदंपंकजंसाधवंदेसुरेसं धरेस्वेतवि
भूतत्रसूलधारी वनअद्दजावांमनागंविहारी मृघाधीसंचर्मावृतंदेहमांने कटीपट्टकृत्तंजिनं
कोविंयाने प्रसन्नंवदनंमनीधारमाला करषकृधारं मनुजंकपाला क्ष्वंडं प्रनाकोटिकभानं
प्रकासं विरागीविनोथानंउद्यानवासं अजंत्र्यंगअहिकै नमत्तंअनतं नषैमन्त्रबीजंसुगतीज
यतं कलंकालकुटंसुकल्यानकरता हरंहेलहालानैयंतापहरता सिवंसांतिरूपंसदासाधसं
गं अकामस्सकामंसुदाहंअनंगं कृपासिंधुसिन्धूविदानंदकारी हितंसाधुसंसारसंतापहारी
नतोहंसदाईसअविधूतअंगं पिनाकीवियोजोग्नेगंप्रसंगं हरंनाथअनाथपायोधहारी विज्ञानं
विधांनंमुसांनंविहारी जराजन्मदुषंविसुषंविनासी निराकारआकारकयलासवासी निजाना
मियंज्ञानजोगनजावं वियमेसदापादपूजाप्रतावं प्रभूतुंनपूजाकरूंनित्तवेमं महादानमागू
कार यदेहौसनेमं ९ दुहा कहोसत्तोत्रमहेसको नरहरमतअनुसार काकभुसंडीगरूडकहद्रवक
थाप्रमीन १ काकउवाच दुजकीदेषीदीनता प्रभुभूतेसअपार कीनोउनितिहकरिकृपानभवांनी
निरधार २ सिवोवाच मांगकुजोकछुमाफमन दुजकह्योदयाल हितअभिलाषापूरिकैकह्यौ
भवेसकृपाल ३ दुजोवाच प्रभुतवमायामांफपरि यहभुप्रमोअज्ञान यातेक्रोधनउचितअब
नतैसुरभगवान ४ हैप्रभुसुद्रकुजातयह मनमायाभ्रममांन कस्योजुयहअपराधकछु निय
तबिमकुभगवांन ५ सिवोवाच मैदेष्योपरमारथीबांभनतोहिविसेष कृतअकरमयासुद्रकेसो
मैबिमैअसेष ६ सोरठा सुलपकालमम श्राप सोपैहोयनिवर्तसब यहदुजजानऊआप का
जसिधयासुद्रके १ छंदप· जोदयोश्रापमैदोषजांन नहीबृथाहोयइहसतमांन यकसहअज
न्मदुषदेषआप सोपैनिवर्तमोहिह्रोदिश्राप काकवाच नवन्नएजुअंतरध्यांनभाव कहिविद्र
सुद्रसोयहकहाव होकालकरमपेरतकराल विध्याचलमेंवसन्नयोमाल जोजन्मलसोवस
करमजोग उनितजतदुष्मसहिअवियोग्य परहरजन्ववसत्रनवनवप्रमान उनउरवजानगमि
उरान इहभांततजेतनधरअनेक विसस्योनज्ञांनपहिलोविवेक जिहजियाजोनिमैवसोजा

बनक हरि अरु कवन पाप । इनके प्रभाव तुम जान आप । मांनसिक रोग्न के सो मर्हंत । तुम तैन कुरहि कैसु तु

त । काकउ ।। बिहंगेस सुनहु संषेप बात । तुम बन्हसा तब हू मेजु तात । दुर्लभ संसार मांन षी देह । है जा सराम्बर नि

न संतेह । जा बिजिह थिर स्वर अवल जीव । दीजे जिह उपमा समद ईव । बंदहि अपरी ।। नवन र स्लोग न लोग को न्त

जन । अस्वमेध लौ धरम उपाजन । आसुनउ नय वंस उधारे । सो तन लहि रघुनाथ संचारे । मुक्त पात है एक के

मानुष । साधे स्वुरग सहै तन सुष दुष । हैन अवर नर सम सर देही । सहज साधरु घनाथ सनेही । दरिद्र सम को

उ दुष नाही । जिह सरूप सुष संपत जाही । जीयत मृतक ताक हि जग जाने । पेन सषा इह बंध पिछाने । नगर

वसहि जिहै घर सूनो । आय अतिथ्य सु जावे ऊनो । साध समागम यह है परम सुष । मन जाने कही जाय न हिन मुष ॥

नल ऊन जनता ही संग नाई । प्रेम सहित सो पै निधपाई । संत सहज भव सूत सनेही । दुष सुष सोक हरष ऊन

देही पर सुष देष आप सुष पावे । निध कुल हिन ही गरनज नावे । आप लघु सब गुरू अनुमाने । जग नव नू तब

मन य जाने । पर सुष दुषी अनागे पामर । सो अ संत परधो इन तत पर । स्वान नूष लप रवि घना साधे । अगउ

ष सहि परदुष आराधे । षल बिनु स्वारथ पर अघकारी । तकत रहत जू मुषक मंजारी । परसंपत पेषि दुष पावै

निरूपैताकी कोकाज न सावे । अहि मुष आमष कवल न आवे । पासै ताके थांन गमावे । निंद्य केअमर अंत कृतनं

ही । है ते आन अंत गल जांही । दया समान धुन्य नही दूजा । प्रेम नेम सो सुरगुर पूजा । मन जिह वेद मृजा रामा

ही । अहनिस नीत धरम अवगांही । त्लक वेद विरोध न भावे । कम तुक्त सो उभुन्न कहावे । परनिंद्या स

म पापन षांनी । जिह नर हरगुरु सन्त न जांनी । निंद्या सिध बुजन जो करिही । धीरज बिनु बाद सतन धर

ही । निगम देव निंदक जो इन र । रोरव नरग न्हो गवे दुष चर । स्याम द्रोह पति निंद्या साधे । आप अलु षहो

य दिन आंधे । फल बिनु पर अवगुन करि कूलै । कु यवाग लत रअधमुष कूलै । जिन महए अवगुन जग

जांने । पापयहै अत वेद षमांने । अथ नव धा जगत । चुलरी बर देपक रक्त तनदीप अरु जुगत कीन निरवि

घ्नै न ठा वलै धर षर्वीन । सुष नो प्रकास इह बिध षगेस । आतम सुतत्व अनन्त वन्वेस । नव मूल महा नू मनेद

ना व परवार अविद्या षब ल दाव । इत्यादि निषलत मनासपाय । यह विधि प्रकास नोपषराय । निर वत्त ग्रंथ

उर बेव वृध । आतम सुतत्व अनन्त वविसुध । निरवाह ग्रंथ सषि संत सोय । इह जीवत तौ कृतकृतु होय । ज

तु षो रिसक न छुनक वन ग्रंथ । विघन बकु करन माया न पंथ । बुध वत हि फेर रिधसिध विसेष । अरु विषय

लोन दिषीय तअसेष । जो होत बुध अतिसय प्रवीन । निज धरत नाव बिषियान वीन । बुध जद पि विघन वसन

ई नांहि । अन्न मेष विघन बकु करी आंहि । वट चतुर धार इडीवी कांन । जहा तहा विराज करअमर थांन

आवरत देष विष विवर बयार । हय मगक पाट स बद है द्वार । उर सदन विषय जब पर न आय । सोइ परम

ज्ञान दीपक न साय । किम हूट ग्रंथ न ना से प्रकास । बुध नइ बकु र वि षियाविलास । समीर विवध बुध ना व्याहि

निज दीप पघट कर समय ना हि । वटि बकु र जीव माया विसेस । संभ्रत विनास पावत कलेस । उसतिर एउर

षमाया दुषार । विहंगेस कवन इसकु वै पार । वसइ सकृपा जापर विसेस । तिह बवत मकत नहीं विषय ले

पंषे सवे स तुम क लोपंथ । समफा य कहो कि हमत सु ग्रंथ । मन जो तजग तर घुवर सुमांन । व ढन वधा वित्रा

मन व षांन नवनीत देवा वृत ब हियनांहि । नित वसत वातन ही विघन जाहि । कृत सकै लम स विद्या काम को

ध एनि कट जात जरि विरअबोध । दुहा ।। दीपक ज्ञान प्रकास सम । विषइ विघ्न अनेक । नव धाम न उ जासक

रि विघन प्रगट न हुए एक । १ । जैसे जल बिन सिथल कछु । निकस य थिर न रहाय । त्यू षगेस हरी भक्ति बिन जग

तन मुक्त न जाय । २ । अथ मानसिक रोगा ।। दुअमरी । सुनि कु मांनसिक रोग षगेस ुर । पूछ्यो जो तुम मो हि ज्ञान पर

। उरद । है आदि व्याधि कौ मूल एह । सब सुल बन उपज बोह । कफ लोभ न विवध वसकांम वात । घन क्रोध

नसुअहारयं निजदासपरमाधर्ममयपय दुहितसुंदरभावयं अवहायअनलअकामवायूबिमातेद
बेरावही समध्रुतजांवनदेपिबकुविधसुजननजनसुजमावही सुविचारमथनीदंडम्रमुबिवानससुर
सुकरी नवनीतकविमलउनीतकाढतमथतअतिमुदिताकरी दुहा करमसुभासुभइंतकरिजोगानि
लजुथताप तवतज्ञानघ्रुतबुधकर विषयतलजरपाय १ वहैनृमलघृतलेयतवदीपकचितप्रचार समता
आश्रयसुनगकर दमतातरकनिवार २ जाहृतसुषोम्रसुन्नता नगुनविनीलप्रकास तामैघ्रुतनिकाल
कर करतब्रुतकाजास ३ तिजराषविज्ञानमय वादतजोतविसेषमदाद्धकाजुपतिंगजरि उपजतज्ञान
असेष ४ छंद उअपरी रिषइषननादिनषगराया महाप्रबलरघुपतकीमाया दारुनमलीमसकहदीनी
नाथव्रुतब्रामेरीलीनी मोकहरामदासनिजमांना ईहमतबत्तुलोमसउरआंना उत्तजबमोहिसाधअति
देषा विगतक्रोधविस्वासविसेषा मोकहफेरकह्योतबलोमस विप्रभयोसोविहृत्तदयावस करीकृपा
परतोषनकीनो दुजमोहिरामममंत्रउहांदीनो बालविलासध्यानजोरघुवर पैमोहिकह्योरिषीसद्याप
रकबुककालमुनिराष्योमोकहु तारकरामचिरत्रकहेतह गुप्तप्रभावजुवेदनगाए सबरघुवरकेमो
हिसुनाए लोमसवाच उरउपदेसरामगुनगावकु सोनअसाधहिंन्चलसनावकु अविगतराममग्नग
तउरअैहै नियतसबेदुरबुधनसैहै हितयुतरामभग्ततुमक्षैहै इब्रामरणपरमपदपैहै तुव
आश्रमजोजनइकताइ सदाकुबुधनआयगुसाई आपनकबकुताहिनवंका कालकरमगुन
जनितकलंका अपलउरानअरथइतहासा पैहौतुमतवनहिनप्रियासा रामभजनतस्परनितर
हिहौ हरनमनइब्रामरिपाहिहौ सुनसुनवांनप्रेमरससानी गिरागगिराततबब्रह्मवषांनी कहियोसब
कैहैमुनिकैरौ मनक्रमवचनभग्ततमेरौ वाइसतदपित्रनम्रवैरागी गतमतयाकीमोहियेलागी वा
इसवाच सुननचवां निज्नयौविस्वासा अबजनइमोहिदूरनआसा पदमुनीवंदपरमसुषपायो इह
मैरैरूआश्रमआयो वस्तइहांमोहिकलपविहाए सातवीसउपरसुषपाए प्रेममगनहूरामपराइन
स्र मिलहीजेत्रुचुंजलजलमन मतिगतएकरामहीमेरे करमबालदेष्योतिहकेरे विधविधचित्रवषांनूर
घुवर सुनिहैविहगआंनसबसादर रामअवधतबनरतनधरही बालविनोदविचित्रविहरही अवध
उरीमे हूतबआऊं प्रभुदिविलोकबहुतसुषपाऊं धरिसोइबालरूपउरधाऊ अविधपायआश्रम
यहांआउ काकदेहपायोजिहकारन मैतुमसेविनियोस्वामन पेयहदेहमोहिकोप्यारी रामचरनरतिअ
तिउरगारी जियहभक्तबाप्रअज्ञानी ग्यांनभजहीसमकरविज्ञांनी कामगावयहभीतरत्यागी करहीं
आकपयषोजअभागी चितजेबाप्रभगतसुषचाहै इकरआनधरमअविगाहै तेइसउसिधनावबिनु
तिरही पारनलहेभ्रमनभ्रमपरही सुनसुनांपकेवचनषगेसुर उनबोल्योमृदुवांनप्रेमपर गुरडवाच
हितप्रबोधवाइसपततेरै मतभ्रमकछुनरह्योमनमेरे संसयएकमोहिसुनस्वांमी तुमहिजनाउअंतर
जामी संतकहैसबज्ञांनसमांना नाहिउपायमिरनकछुआंना ज्ञानभक्तकहिकितोकअंतर निश्चय
वायंसकहोनिरंतर काकविरोध सुनेगुरडकेवचनसुहाए उलकतकाकपरमसुषपाए काकवाच ग्यानभ
गतअंतरनहीगाएपैदकुहरतसंदेहपराए इनमहभेदकछुकहआंनै वाइससुन्योमुनीसवषांनै क
विरोवाचदुहा इब्रौकाकहुसंप्रतिजोकछुगरुडसुजांन ग्यानभगतकेभेदगुनइरनकदेप्रमांन रास
तपसंगगरुडवाइसपत कह्योगरुडतहांजोरकर सुनकुसुनाप्रसुन्याय प्रश्नसप्तक्रमयुतप्रगट
तेमोहिदेउवताय २ छंदप. सुनप्रथमप्रश्नवायसरसधीर संभ्रतमहदुरलभकोसरीर १ दुषकहाकवन
दारुनदुरंत सुषकवनभषांनेजाहिसंत २ भवकहासंतअनसंतभेद गुनदोषवताबकुविहतवेद उनक

याजोगसुमैथली ॥ लछमनसेवसुजांन २२ ॥ कबित ॥ अगुनब्रमअवितारप्रगट रघुनाथधमांने ॥ महासक्त मैथली ॥
जोगमाया जगजांने ॥ बलरावनषयकरचौ ॥ लागलंकागढलीनो ॥ सर्नविजयपिंजर सुनायउ ॥ रजनक ह
दीनो ॥ सुनरामचिरतनरहरसुकवि ॥ नाइउदयमेरेनए ॥ बाइसप्रसादतवअतिविषम ॥ मोहजनितभ्रम तज
ए १ ॥ कविरोवाच ॥ दुहा ॥ आश्रमरहोजुआपने ॥ बाईसप्रेमविदेह ॥ संसयमिटीप्रबोधसुन ॥ गरुडगएनि
जगेह २३ काकभुसंमीगुरडको ॥ साचअगुनसंवाद ॥ कहौसुषदनरहरसुकवि ॥ श्रीरघुनाथ
प्रसाद ॥ इतीश्रीरामचिरतकाकभुसंमगुरडसंवादसंपूर्ण ॥ अथवासिष्टआगमने
ज्ञेये ॥ एकदिवसअविघेस ॥ रामइंनदपुरराजत ॥ नामजनककजावांम ॥ नागजुतप्रेमवि
राजित ॥ दुजवासिष्टगुरदेव ॥ दरसनतमोरगआये ॥ प्रभुप्रनांमकरिपीन ॥ विरतआस
नबैगये ॥ करिक्रिपानदांरघुनाथकहि ॥ नकवछलजुगजोरकरभुव ॥ गुरराजनिह
रेआगमन ॥ हमजुआजकतकातिकुव ॥ १ ॥ वासिष्टोवाचदुहा ॥ दैनलगेमोदिदुषन्रप ॥
पिरोहितपदधीन ॥ नादिनकाचौ ज्ञनवे ॥ नयउपजेमननीन १५ ॥ पुन्यमोहीले नोपरै ॥ उजसु
षकारनदांन ॥ न्रपअज्ञामोनीनही ॥ नटहोरचौ निदांन १६ नबबुहामेरेपिना ॥ ईग्पादीनी
रहयामेअनुलिनफलश्रेयक ॥ हैसुनानिसंदेह १७ ॥ ब्रहमावाच ॥ हेदेह रिरघुवंसमहनेना
नाजुगआविनर ॥ रामचंदनरदेहधरा ॥ तुहरिहेसबनार १८ जपनपसंजमजोगजिग
मैरवादघटनंग ॥ इनइनजोफलपायहै ॥ यामैहैजुअनंग १९ पुजपिरोहितपदप्रगय ॥ लेहु
अवश्रिनलाय ॥ आगेयानेफलअतुल ॥ जोमोकयोनजाय २० जगतपितामेहअजअमर ॥ मेरोपि
तुहितमांन ॥ नदमिथ्यानाकेवचन ॥ पेयहवेदप्रमान २१ नबेपिरोहितपदप्रगट ॥ भैलीनोहित
मांन ॥ नाकेफलपूरनपुरष ॥ पायेअबेप्रमांन २२ जोपेदरसनजोग्यनै ॥ उरलनतुरगमदेव
मैसोइपायोसुगम ॥ अविघेसुरअनजेव २३ नवप्रनायमहिमाअमिन ॥ दिव्यअमानुषदेष
सबविघपरमानंदसुन ॥ बाढनचित्तविसेष २४ प्रभुदहवरमांगूप्रसव ॥ पिरोहितपदयाय ॥
जन्मजन्मतवचरनकजस ॥ ममनुररहेसमाय २५ रूपअलौकिकरावरो ॥ अषलइयअनंग
मेरलोचनप्रानमन ॥ सदारहै छिबसंग २६ ॥ श्रीरामवाच ॥ कह्योरामनवजोरकर ॥ प
रेवसिष्टकेपाय ॥ करतमनोरथतुमकहु ॥ सोसबहोइसुनाय ॥ गएवसिष्टजुगिनम
ग ॥ पुरीअमरसुषपाय ॥ गावतमहिमारामिगुन ॥ मनआनंदनमाय २७ ॥ अथविघआ
गमनंश्रीरामप्रतिनुपदेस ॥ कविरोवाच ॥ दुहा ॥ सोरठा ॥ एकदिवसरघुराय
संगसकलसहुदरसुहदजनमयतनवनआय ॥ सुषसंजुतबैठेसभा ॥ १ ॥ अविलोकि
तपथुओर ॥ सबैनिरंतरवदनसिस ॥ जैसेचंदचिकोर ॥ पलककजटारतप्रेमपर २ वेदघरमर
घुवीर ॥ उपदेसनज्ञानअषिल ॥ धरियेचितसधीर ॥ नूपतजानेनरपतुव ३ ॥ श्रीरामव
चनंदहुअषरी ॥ मेरेमनअनुसारसुमीने ॥ सोममवछतसाधसयाने ॥ काविरोवाच
यहाचतुराननमुनिसुरआये ॥ बंदनकरिआसनबैठाये ॥ श्रीरामवाच ॥ कहोविरंच
आगमनकारन ॥ तुमजगपूजजगनविस्तारन ॥ विधरोवाच ॥ कहेविरंचनहोजोरक
र रामदेवसुरह्मकेसुर ॥ सुमनसनायसहायसुर ॥ अरतपवेसपेइयोनअगावर ॥ सुर ॥
विघतुमवेदपुरानवषाने ॥ जिनकीमहिमालोकनजाने ॥ तुमनिजइछालोकउपारे
विस्वविदलजियनवनवनाये ॥ नजरहोनजुपेअविघेसुर ॥ करनतिनकोसुनउक्रपा
कर ॥ ब्रमकुमेरविष्णूपुरवासी ॥ निषरनहोतचक्रवरतनिवासी ॥ अविघपुरीमेआन
वसैअब ॥ सुषसंपदाविनासकरनसब ॥ कोउअघरमाचरनउपासे ॥ नरतनाते
आयुरबलनासे ॥ आयुघटी ॥ विनमीचनआवे ॥ पांनीकोउनअगतगतपावे ॥ नरक
सुरगकेपंथनिरंतर ॥ वहतेरहेसुनउसीनाबर ॥ श्रीरामवाच ॥ आपरांमहसवच
नकयोयह ॥ हमसमनेसबमरनाविनामह ॥ करिहाविरंचनाविनाकोई ॥ हितनुमवै

पितजगजीबघात ॥ नवमिलहिजाहिएतीनव्रात ॥ उपजैत्रदोषउनसनीपात ॥ विषियादमनोरथकुब
थमूल ॥ सोउनांतिनांतिमिलसकलसूल ॥ ईरषावादअहिमतउपाध ॥ एमिलतआननअतिग्रहअसाध ॥
दुषषइजरनपरसुषहिदेष ॥ करकोटदुष्टताषलविसेष ॥ हरुवाउसहअहंकार ॥ अंगमदंदंत्रक
पटसबनहरुसंगवढलोभजलंधरउदरबाध ॥ तेजरागरनपैप्रतिअसाध ॥ अविवेकअसद्गुर
अनउतार ॥ ईत्यादिकमनआमयअपार ॥ जगबाधमरहीअलेकजीव ॥ अनकालदुसहदुखादईव
वउदहै विषममानसिकव्याथ ॥ सोयानजांनओषधअसाध ॥ अथश्रीपद ॥ जपनेमधरमतपजोगजाप
आचारदांनब्रतजांनआप ॥ इत्यादिककहैभेषजअनेककहिकितेगिनाउएकएक ॥ एगमहिकदा
चितमनसिरोग ॥ नवजहै जीवतबकरमजोग ॥ मानसीबाधदुषसहतमूढ ॥ नवसोकविरहगनिडी
तगूढ ॥ अतदुषदपरानवअप्रियोग ॥ रघुनाथक्रपातैजायरोग ॥ याकोउपायहैयहैएक ॥ अज्ञांनभर
हिकरकरअनेक ॥ सबजपैअविद्यामिलकुसंग ॥ अज्ञानउपजऊयविबसअंग ॥ दुनउपजैविबि
धूकुकतपाय ॥ सोइरोगपदुसहसंतथसुनाय ॥ अवधेसक्रपाफिरकरैआप ॥ सतगरूवैद्यमिलहरि
संताप ॥ उपवासयहैतजविषयआस ॥ सतगुरवचनउपजैविस्वास ॥ रहिसंजमतोपेजायरोगप ॥ पे
तजैकुपथईद्रीप्रियोग ॥ रतिचरणसर्णगहिअविधराय ॥ प्रभुभक्तसंजीवनमूलपाय ॥ अनरोगपहोयत
हसकलअंग ॥ अनुरागवदैअतिबलअनंग ॥ विधयथासुमतनवनवनिधांन ॥ सुमगांननीरउपजै
सिनान ॥ दुरबलतानासैउरदुरास ॥ वधदेहपुष्टउपजैविसास ॥ सुषसाधमजकरिहरसनेह ॥ अवि
कारवेदमततत्वएह ॥ विनरामभक्तजायनविकार ॥ श्रुतीसाधकहतयहमंत्रसार ॥ हरीभक्तविनां
नहीमुक्तहोय ॥ करिजतनआनहवफलनकोय ॥ जगजीवनभ्रमतविनगतनजाय ॥ अनभूतअसंत
वमिलतआय ॥ मिलउपजैकमठीपीवरोम ॥ वरहोतमुष्टगतिअगहवोम ॥ उनबाऊकदाचितउत्र
पाय ॥ अरुमृधवधातैतषाजाय ॥ फूलैउनिवलदलविमलफूल ॥ ससीसीसअंगजामैसमूल ॥ रविउ
दयतनासैअंधकार ॥ अरुअवैनिसाकरकरअंगार ॥ करमथनबारघृतकाढकोय ॥ हविसिकापी
लनहीतेलहोय ॥ इत्याद्यअसंभववनैआय ॥ उनिभक्तविनागतकिऊनपाय ॥ करिदेषऊबकुतेज
तनकोय ॥ हरीभक्तविनानहीमुक्तहोय ॥ हरिकरिहिमैवतैतूलहाय ॥ समभेरकरहितूलहिसनाथ
हैसमृतीवेदसिधांतएह ॥ हवबाऊकरऊरघुवरसनेह ॥ हरिआदिअषलमायाअजीत ॥ मोसेकु
जीवसोपरमभीत ॥ तुमरामकथापूछीसुतंत्र ॥ मैकहैविरतसबमूलमंत्र ॥ अगुणाधममोकहकसो
साध ॥ अरुदइभक्तअपनोअराध ॥ दुहा ॥ जदपिअपावनजीवजग ॥ मुनियेक्रपाषगेस ॥ महाभक्तत
वदरसमोहि ॥ आनदयोअवधेस ॥ १ ॥ करमउदयरघुनाथके ॥ पारनसुरकुपाय ॥ अपनीबुधअनुसार
यह ॥ मैसंषेपसुनाय ॥ २ ॥ क्रतप्रतापरघुनाथके ॥ अदभुतअमितअगाध ॥ नेतनेतजाकहनिगम ॥ सद
वतावतसाध ॥ ३ ॥ कोउसुनैजुयहकथा ॥ पढैलिषैजुतप्रीत ॥ सिधमनोरथहोयसब ॥ उरआयैनअनी
त ॥ ४ ॥ करमकथारघुवीरकी ॥ सुनश्रुतीसमृतीसार ॥ गोपदज्यूभवसिधगिन ॥ उगटभयेजनपार ॥ ५ ॥
इहांजुसंसीआपनो ॥ दूरबजन्मप्रसंग ॥ कारनवायसदेहको ॥ सबैकह्योहितसंग ॥ ६ ॥ कविरोवाच ॥
सांतउद्यहुवैसमफ ॥ वायंससैविहंगेस ॥ समाधांनतिनकेसबै ॥ कीनेनासकलेस ॥ ७ ॥ गुरडवाच ॥ कह्यो
षगेसजुसंसकहप्रभुतवबोधप्रसाद ॥ मायासंभवदुषदमन ॥ विस्मयगईविषाद ॥ ८ ॥ मैअबजांन्योज
न्ममम ॥ मोक्रतककतसुनाय ॥ क्रतप्रतापरघुनाथके ॥ अषिलवसेउरआय ॥ ९ ॥ प्रभुमायासंभवप्रगट
उरवादेअज्ञांन ॥ तिवायसतवबोधतै ॥ विषमविषादविलांन ॥ १० ॥ रामकुवरनरतरूपर ॥ सउपजेचितअ
पारमोहजनितसंदेहमम ॥ किनसेवीवधविकार ॥ ११ ॥ आद्यब्रह्मअविधेसजे ॥ पूरनपुरषप्रमानमा

भमनगेरह आय। समधरमनिसा अपनेसुनाय। सिवका आरोहनकरीसीन पुनचले
गहनवनकोपुनीन। रघुबीरवीरनयेगंगपार। उद्यानसघनदेष्यो अपार। सीताव
च। वनमोदिकेहोलेचलेवीर। धरकतउरनांहीधरनधीर। कविरोवाच। अति
दुषतनबोलेलपनआप। परवाहनईनजलनमननसंताप। मिलसेषविलोकननूम
मांहि। निस्चेकछुआवनबोलनांहि। सिवकानजनतरिवृहांसीन। भयचकितगिरी
अतिदुयसमीन। विडबलविलोकसीनादिवीर। सोलझ्योदेहत्यागनसधीर। कर
थावरजंगमहहंकार। यहगिग्न नइवानीउदार। अकासबांनवायक। करिवे
नसोचमनलषनकोय। हरिईछ्यासोमिथ्यानहोय। विलपानकरनमनमहावी
र। सियछाडचलेलछमनसधीर। सुरजायगियोसोधरनमांहि। नेहचेकछु
चैननरयोनांहि। सियदुषितदेषनहा आयसाप। उहकरीछाहफुनऊनआप। वे
होबालमीकरिषचत्रमनआय। वनगहनमाजमाज अपनेसुनाय। तिहदेषपरीछ
बलाअवेत। मुनिसोकनयोमनक्रमसमेत। यहकरेपवननपुनिनिकटआय। योत
योविप्रपूछिनसुनाय। सीतावाच। मिथलेससुतामोहिसीयानांम। विस्वेस
रपत्नीधरमवांम। निरधारयहेमेकछुनजांन। यहदसाछाडगयमोहिआंन। तह
बालमीकसोकयोसीन। पुनकवननाम अपुनपुनीन। बालमीकवाच। मिथ
लेसगुरूहमबालमीक। यहआश्रमहेवराजिनअलीक। कविरोवाच। दुहा। सिय
आनीसनमांनसे। बालमीकेनिजवास। राषीपुत्रीहेनकर। पूरनधरमप्रकास।
रिषपतनीसोरिषकहे। इहलछिमीअविनार। करजनमेकछुनजोरकर। पूजाविवध
प्रकार। छंद। इहानइपूरनभोविधसुनवीनेदसमास। लवकुसनामाहंसकुल। प्रगट
पुत्रप्रकास। जाएसुनहेज्यानकी। एकदिकालअनंग। जगतविदनजुगजोरवर।
अरुलछनजुनअंग। बालमीककनजातकेम। वेहनसुवेदविधांन। कहेजपाकम
लवकुसीयेदुषनामप्रमान। उदहुअपरी। पुनिमुनीविद्यासकलपढाएस
स्त्रअस्त्रजयमंत्रसिषाऐ। अरुनिजराजधरमअभ्यासी। बालमीकरिषवनन
विलासी। इतीलवकुसजन्मउतपति। अथअस्वमेधआरंभनो। कविरो
वाचदुहा। एकसमेरघुइंदसुनमंनपवेठेसभा। वासिष्टादमुनिंदसोभनवि
स्वामित्रसम। १। श्रीरामवाच। सुनउवसिष्टसुजांन। कयोरामजुगजोरकर।
सीताप्रीयासमांन। मेकीनेसबदानमष। २। अबइछ्यामनआय। करराजिगपहय
मेधकहसबरिषहोउसहाय। सुपेकरावउकरिक्रपा। ३। वासिष्टवाच। उद
धरी। उनरववसिष्टनवदयोऐह। सुनयजुवेदविधनिसंदेह। करियैजुकर
मधरमाधिकार। सुरस्वाषहोनजियजुमतसंसार। त्रियविनजुकरियैधरमतं
त्र। अंगहीनसुलेषउहोनअंत। श्रीरामवाच। पुनकयोवचनयो अवध
भूप। स्वरनमयरचउसीनास्वरूप। वहअंगवांममम धरउआंन। सुनजोरग
उपटजुगसमांन। कविरोवाच। कीनोप्रमांनगुरजिगकाज। संनारसिधन
येसकलसाज। सबबोलरामसुनिवरसमाज। कीनेनहांजिझ्यारंभकाज। सिन
वाजकरणछोरषस्यांम। ननदिरघसुलछनजुकनाम। पूजेसुजपाविधबां
धपट। मुकलायदयोसंगसुनटघट। दुहा। हयमुकोअवधेसयहा। करम
लकमषअंक। बछुविधजोनृपजेबली। सोपैयहोनिसंक। सजधनपठिऐ
संगविदहयरछाकेहेनपाडेपाछेफिरतसो सभ्यासबजनसमेत। उदधरी

छिनसुयेजुहोई॥यहांविरंचसीतापहआऐ॥पूजेचरनपरमसुखपाऐ॥सीतावाच॥चि
तहितसीतावचनउचारे॥ऊयेपुराकनसफलहमारे॥विधरोवाच॥दोहा॥राकसमा
२०छ्या स्योदुहरिन॥नवटास्योलुवनस॥सुरकारजकीनेसफल॥रामुमनुजअवितार॥६॥तुम
२५८ अबसीताआजते॥कीजेयहउपकार॥करिहेगमनबैकुंटको॥रामुलोकरखवार॥५॥कबरो
वाच॥कंरछुबोयस॥ज्यानकी॥ब्रमगयेनिवास॥रामचंडकेराजमहपूरनपु
नप्रकास॥६॥उपवननिंदरमाजयहसीतारामसुजान॥राजतमुनऊमदनरति॥
बिवधविलासविधांन॥७॥ब्रहमाहूकेहितवचन॥सीतारीतसमांन॥कहेसमयल
षरामको॥प्रभुसोइकरउप्रमांन॥८॥अथसीतापरत्यागलवकुसउतपती
कविरोवाच॥छपै॥गिनसीतागरभनिय॥चितरघुनाथविचारिय॥मिदरनृप
जोगरभमेघ॥यहनिगमउचारिय॥जन्मपुत्रउछवेसंजोग॥छटततादीछिन॥नि
गमबंधनरनार॥जुक्तअपराधकरजन॥बंधेसुकरमबंधनविषम॥जेनव
भूतविहारनजग॥छेमबेतनेनरहरस्तकव॥सबेतबेहीअगममग॥१॥दोहा॥
कारनजनितसकांम॥प्रभुरचिहैमायाप्रबल॥सीताकोश्रीराम॥परित्यागकरिहैप्र
गट॥१०॥एकसमयएकानथल॥सीतारामसप्रेम॥बेठेसुखविलसतविवध॥मनुरति
मदनसनेम॥११॥सीतावाच॥सुकरजोरश्रीरामसो॥कह्यो॥विदेहकवार॥ब्रहमाके
वायकविहन॥सोप्रभुकरिऊसंभार॥१२॥छंदपधरी॥सीतावचनसुन्योअवध
सुर॥ब्रहमाजुपेसुकहैबुधवर॥बिहसवचनरघुनायकबोले॥गुढभावअंतर
गतषोले॥श्रीरामवाच॥तवपरत्यागकछुकदिनकरिहौ॥तिहदुषविरहपयो
निधतिरऊ॥बालमीकतपध्यानविनीता॥तहांकछुकालरहउतुमसीता॥सुतनव
दोयहोयगेसुंदर॥कुसलवनांमपितापिनकुलकर॥पुत्रनयेकछुकारनपेहो॥हम
तुमबहुरसमागमहेहो॥कविरोवाच॥स्यामसगरभाजांनीसीता॥विस्वविद
तसुरसिधविनीता॥राजनीतरनरहतनरेसुर॥धरमसहाइकरामधुरंधर॥वेदवच
नवहरिषनवतायो॥यहअवधेसुरमंत्रउपायो॥जनमेपुत्रराजपदजबही॥तहांका
रागृहछूटेनबही॥मेरपुत्रजन्ममाहाउछव॥लनहसनजुकहोयहेकुसलव॥त्रकाल
ग्यप्रभुरामत्रलोकी॥यहउतवतव्यवानअविलोकी॥जमगहबंधकरमवसजेते॥तेन
वबूतबोमिहैतेते॥जोममवचनछूटिजहजंगम॥सुरपुरजायवसहीसुरसंगम॥बं
धेछूटिहीकरमकेबंधन॥जनममरेनतेमुक्तहोयजन॥यातेधरमराजपुरजर॥है
हैसाषसिधसुरसंकर॥इहांगरभवधनिकटजुआई॥सदारामत्रयलोकसहाई॥
कारनमंत्रअबेयहकीजे॥दिनकछुसियावासवनदीजे॥छंदपधरी॥यहाची
तादरसनहेतआय॥नरपादिकरैवंदनसुनाय॥श्रीरामवाच॥उच्चरेसोनर
पसुवचनरेह॥देषऊजिनउतरफेरदेह॥मेघलीगहनवनमांजमेरल॥उहठोरछाम
आवहुअकेल॥नरपवाच॥हितवचननरपकहिजोरहाथ॥सोउसांमधरमरहस
कसुनाथ॥सियसिधसतीअउगरभसंग॥नवनाहिनजेपातकअभंग॥यहगरभअव
धेहेनिकटआय॥जनिहेजोकहाधोवनहिजाय॥याकेजोपुत्रीप्रसवहोय॥किहहाथ
वढेजानेनकोय॥प्रभुहोयमहालोकापवाद॥विवस्वांनवंसउपजेविषाद॥श्रीराम
वाच॥ऐसीकछुईछ्यामोहिआज॥जोकहुबातसोकरहुकाज॥करिहैयहउनर
फेरकोय॥हत्यामेमपातकतासहोय॥कविरोवाच॥पुनकहेरामलिछमनपुनी
त॥सिवकावचढायलेजाऊसीत॥मेघलीनजऊउद्यानमांहि॥निहचेविचारक
छुअवरनांहि॥इहफेरवचनकहिहनआप॥पेहेदेसासनभंगपाप॥इच्छासुनलि

सुंजानजब ॥ ऐसीतासुनआदि ॥ लईलज्याकह्यनीन नय ॥ रदेअघेसुषवादि ॥ वसिष्टादिदुज
कहविमल ॥ मुनिवर ॥ विस्वामित्र ॥ राघवमायोरावरी ॥ नाकेअमिनचिरित्र ॥ रहेसुरासुरषोज
सब ॥ साधरिषिसुरसंत ॥ मायाअतिबलमोहनी ॥ याकोलह्योनअंत ॥ पावनपरमपवित्रन
सीताध्येसुनसाथ ॥ औनक्रमिंदरआपने ॥ हेनजुक्रगहिहाथ ॥ परनीताअनुपदमनी ॥ मिल
संगचरमकुवार ॥ अतिमंगलकरिआंनिये ॥ आदरयुक्तउदार ॥ छंदपधरी ॥ सुनवचन
जथाविधअवनईस ॥ सुरगुरकेवंदेचरनसीस ॥ प्रभुकियेवचनसबकेप्रमांन ॥ ज्यानकी
हेतरघुवरसुजांन ॥ सत्रुघनहिबोलअंगदसधीर ॥ वानरसुषेनहनुमंनवीर ॥ इनकोप्रथम
स्यादहएह ॥ सियआनअआदरजुनसनेह ॥ सोचलेनहांवबमोलसाज ॥ बाल्मीकरिषीआश्रम
विराज ॥ आरेहतबेचवमोलआय ॥ पतिव्रतासतीपावनप्रताप ॥ सोआयजिग्यसालासमी
प ॥ पवधारसासुहसबरिषीप ॥ करिबालमीकआगेरिषेस ॥ पुनकरेजिग्यसालाप्रवेस
रिवतेजविष्णुरघुवंसराज ॥ लिछमीसियासंकुलितलाज ॥ निजवामअंगआनीनिहोर ॥
जुगवक्षविमलगुरगंठजोर ॥ क्रतजिग्यजथाहयमेधकाज ॥ पंनारग्यारयंपतसमा
ज ॥ विधवेदकरेसबमषविधान ॥ पूरनाहुतीदीनीप्रमांन ॥ मषनयोसिधपूरनतज़ा
दनीसानसघननयगहरनाद ॥ जयजयातिसबजक्रलोकजांन ॥ पुनवजेगिगनदु
घनिप्रमांन ॥ सुररमनसजेनाटकसमूबल ॥ तंबिसमयहरषसुरवरषफूल ॥ नन
नूनिसान ॥ मिलएकनाद ॥ पुंनिदएरामसुनिमषप्रसाद ॥ विधजुनवसिष्टपूजावि
सेष ॥ अनिलाषकरेपूरनअसेष ॥ जिग्याधिकारदुजवारजोन ॥ पुनतिनदिप्रथम
पूजाप्रमान ॥ गजअयुतएक बेअयुतवाज ॥ त्रय अयुतसुरनीदुजएकसाज ॥ सं
तुष्टकरेसबदिनसमांन ॥ गिनकोनदानतिनकोअग्यांन ॥ अतित्रप्तगांमजाचकअ
नेक ॥ विधजुक्तेदानआदरविवेक ॥ मषनयोसपूरनसांगसिध ॥ पुरतीनवजवाजा
प्रसिध ॥ वनरामराजबेगेविवांन ॥ सूरजप्रतापसीतासमांन ॥ नरतादिचानवनिअ
प्रनाग ॥ सुनपुत्रववरहारनसनाग ॥ सजपिष्टअमरचतुरंगसेन ॥ मिलगिगनरे
नमनुदिवसमेन ॥ निरघोषवाजनूननिसांन ॥ वधअवधपुरीमंगलविधान ॥ रघु
नाथपधारेराजद्वार ॥ आरतीकलसेसाजनअपार ॥ हितयुतनोगवरज्यहोये ॥
कउवारयारयावेनकोय ॥ प्रभूयहांमानग्रहपावधारे ॥ अन्तेकपीवहिजलवारवा
रपुनिलेगेरामजबजननिपाय ॥ नरलायहरषलीनेगय ॥ क्रमजुक्तजननिसूमि
लनकीन ॥ पगलगीसियासासूधवीन ॥ सुनसनासाजबेगेसधीर ॥ विस्वेसरामर
घुवंसवीर ॥ नटवानरराकसमनुजनाल ॥ सुनसनासबेबेगेसुढाल ॥ इंद्रादिदेव
घरमनुजअंग ॥ सबसोनतबेगेसनासंग ॥ बसादसकलसबरिषसमाज ॥ विधक्र
मविसेषआसनविराज ॥ सबकीकरियूजासमाधांन ॥ सुरपूजासिधवारनसुजां
न ॥ किनरबंदीजगानकार ॥ वाजंत्रविवधेनाटकाविचार ॥ रघुराजकरनयोअव
धराज ॥ सबंधुसुनटसेन्यासमाज ॥ अथलवनासुरबधप्रसंगकथिनेवा
दुहा ॥ सोरठ ॥ एकदिवसअवधेस ॥ सोननबेगेनृपसना ॥ मिलनसंगाविमलमुनेस
पुनदुजआएरामपद ॥ १ ॥ गढेदेवदवार दुजकालिंद्रीकूलके हाथजोरप्रतिहार करे
विनयमालमकरी ॥ २ ॥ दुहा ॥ कह्योआनरघुनाथको ॥ तंप्रभुसनसुषआय ॥ कीनेवं
दनजोरिकर ॥ लीनेमधबुलाय ॥ ३ ॥ श्रीरामवाच ॥ यहांसुकारनआगमन ॥ दुज
सोईकहोनिदांन ॥ अतिलाषाजोमांझतर ॥ पूरनकरिहूप्रमांन ॥ ४ ॥ दुजोवाच ॥ छंदप
हमवसतविमलकालिंद्रीकूल ॥ सुरस्याधकरतसेवासमूल ॥ नवराजदुषतनहीकोउ
देव ॥ नवनूतसुषीसबआपनेव ॥ मधुनामदैत्यकृतजुगकुवार ॥ अतिहीप्रतापजोब
लअपार ॥ तिहकरीसिवसेवासमूल ॥ करिक्रपातादिदीनोत्रसूल ॥ सुरअसुरसीसयद

गुरुक्रमनजहांदयआपनाय। घनघुरनपिष्टनीसानघाय। जिह शिर जुगेर करतनछवि
तजोत्य पछिसुहोतपूरनप्रियोज्य यह नोन मोहयअष्टितखेन। तहांवीनवरषस
अस्तु बमिलेनतन। यहां आपनेसरजआय। सोउपैगेमषसालासुनाय। करिअरचापू
जाविवधकीन। पुनरागमरुयदुजदानदीन। दुहा बालमीकमुनीयहसमय।
रा॰प्र॰ २५९ मिलबहुविप्रसमाज। आयेलवकुसअग्रले। रामजिगरिषराज। देवेजयपा
विधपूजदिय। बालमीकसुनवास। होममेजहानहांदरष। पुरआनंदप्रकास
मुनिवरबालकसंगमिले। गावनलवकुसगीत। सरतावनेसरवरसुषद। पुरजहरम
तपुनीत। कतिचिरनरघुनाथके। बालमीकबाषांन। सुपेपढायेलवकुसहि।
विप्रबालसुनवान। करनवजावनकिनरी। सबगावनमिलसंग। सुननहोनघि
रचरथकिनउपजनहैसुषअंग॥ ॥छंदउअषरी॥ सुनतश्रवननिहरईचक
सुहावन। नृमनसंगविछस्योनहीनावन। सालाजिग्यमाजआविबेसुर। वसिष्ठादि
सबबैठेमुनिवर। इहांलवकुसरिषबालकआए। संगफिरतजेसबसुहाए॥ बा
लमीकवाच॥ बालमीकलवनव्यविचास्यो। इहलवकुससोवचनउचास्यो। गाव
उपुत्ररामगुनगीना। पावनपरमप्रसिधपुनीना। गुनरघुनाथचिरतमिलगाये॥
सुननसत्नामनपरमसुहाए। गुनजोबालमीकमुषगायो। सोपेनोननगीनसुना
यो। मनआनंदनयमहामूनीमन सुंदरसुषदगीनघुनसुनसुन पुनरघुनाथ
परमसुषपाए सिसुनअपूरबपावसुनाए। जंत्रीरिवबाजतमिलनेसी। जथगांनईमृनघुंन
जेसी। मनआनिरीजरामतोषमुषे॥ सुन्यो नगीनआजलोयहसुष। नियनरीजहिनद
सरथनंदन कह्योनरथसोरोरनिकंदन॥ श्रीरामवाचदुहा॥ अयुनसुवनसुड
वयअब। ईनदिसमयउआंन। दुजबालककेगेहदिन। होहिदरडकीहांन॥ ॥कवि
उवाच॥ दुजसुनजांनरुडब्यदिय। नारदयोईनहर। करिभृकुटीबंचरनकुटिल। मन
हाउईविषमूर॥ लवकुसवाच॥ सुनउनरथययाउव्यसो। कछु नहमदेकोज। करजा
वमालेनकोउ। रीजदेउजिहराज। हमतोजाचकनांहिदे। हाथेओमउनरनेत। उषि
नदरडीदीनको। देवकृपाकरदेह। जाकेकुलजेसीजुगन हेतसहितसो होय लाल
चपांसाअंनलो करिहेअकरनकोय। ।कविरोवाचछपय॥ बालवचनसुनदिवि
वेक नयोईचरजसुनारीय वाननरकयुतकरत। विप्राचिनहोनाविचारिय चिंत
वदनलबरामचंद लवकुसहिविलोकिय ज्योचकोरनिसचंद रहेइकटगपलरोकिय
दऊघांनिहारताइसवदन रीजरीजरघुनाथरुष सुनिकहनपसेपसेसकरनमिल
मनउमुकरथनिविबमुष १॥रिष्युवाच॥ पतिकीनोपरित्याग निसासियअर
धनिकारीय। सुनपुरअवधअनीन। नयोहाहारवमारिय। बालमीकआनविचर
आश्रमलेआये। पुत्रीमावपुनीन। विवधहितचित्तवढाये। तिहगर्भसोषपायेउत
हां। उपजेद्व बालकअतुल। सुदरस्वरूपअहिजसबे। कियप्रकासदिनेसकुलर
आपवदनअविधेस। हसेअविलोकमुकरमेह। अरुलवकुसकीओर। हेतजुतचित
चिंतेतिह। चूकनेदसंतापु। नहीकछुइहानिहास्यो। बालमीकसोहसिविसेषयह
वचनउचास्यो। कोअंअंनूतनुपजेकहां। संयुनसहजस्युनावरे। अपिलरूसप्रवे
लमाया। अजित। रांमपुजअेरावरे ३ बालमीकवाचदुहा। वामाधर्मअरुपति
व्रता। गरवतीगुनग्रांम। ताकोकियेपरित्यागतुम। मनईछ्याईहराम। मेरेआश्रमतो
जनम। सीनागरलसंतन। कतिईनके। मेजानकम। पिताआपअेपून। जोनेराम

सतिहमध्यकह्योतुमसेषसेन॥निजईछ्यारघुवरकवलनैनेन॥नवनानकवलनेकव
ननालवड॥नयोवह्यावारघाविसाल॥वह्वारजनैमोकहजुपाय॥सोदयोप्रजापतय
दसुनाय॥निजमायामेविसनारकीन॥निश्चरदुपराजेह्व नवीन॥मधुकैटमरुना
मामलीन॥भुवनयेअसुरद्वैपापनीन॥षवरसोनागेमोहिषांन॥देवनुमकरीरछ्यार
निदान॥मधुकैटमरुदह्वउष्टमार॥मोहिराषलह्योतुमहीमुरार॥असुरनकेनिकसी
मेदअंग॥भुवरचीमेदनीनाहिनंग॥अस्थनकेपरबनकरिअमांन॥पिनमोहिप्रजापन
थप्योयान॥हिरणाकहिरणाकस्यपसहेन॥नेउपजेअसुरदुष्टवेन॥सोमारेतुमहीसुरस
हायराजाधिराजरघुवंसराय॥अतिबलीभयोबलदैत्यऐक॥विस्तारधरमविद्यावि
वेक॥सुरलोकलयोतिहदुषसाध॥अरुकरननितनवनवजुपाध॥तुमबांधनाहिपठि
योपतार॥सुरलोकलनहैटरइडसाल॥पुनभयोदुष्टराकससपाप॥तिहरांवनकीने
सुरसंताप॥सुरकाजतिहेमारनसुनाथ॥नरदेहभयेतुमअवधनाथ॥तहांवरषस
हसइग्यारहविनीत॥प्रथीसनारटास्योपुनीत॥अविधेसअविधअ बनिकटआय॥
नगवंनकरहुजोविननाय॥कहुअजहुप्रथीजोराजकाज॥रघुनाथकरहुअंतन
रदेहराज॥सुरलोकगवनजोमनसुनाय॥करियेसुनाथसुरदेवकाय॥करकालपु
रसयहविधकहाव॥रीजेहरबोलेअवधराव॥श्रीरामवाच॥जोकह्योकालतुममं
ग्रजांन॥मेरीजोईछ्याइहप्रमांन॥रघुनाथकह्योरघुवंसराज॥हमकरजथाविधदे
वकाज॥अबइछ्यामननेरेजुरहि॥सेवकसहेमोहिअनिसनेह॥अबमनुजनालवांनर
समाज॥करिवैअबइनकोमुक्तकाज॥सामीपमुक्तममरदेसंग॥अबयदेकाजकरि
हुअनंग॥कविरेवाच॥दुरवासायाहीसमयआय॥सोइराजद्वारगहेसुनाय॥मां
गजबजानलागेमुनीस॥सोमित्रकयोपदवेंदसीस॥लिछमनवाच॥हेराजकाजुग
हमांजरांम॥उहरहुविप्रयहछिनकगांम॥कहियेमोहिजोकछुहोयकाज॥रघुपानिहि
निवेडरिषराज॥दुरवासावाच॥याहीछिनकरिहुदरसआज॥कैदेउस्रापकुन
केअकाज॥दुजकह्योसुदारुनवचनदेष॥बससोककयोलिछमनविसेष॥यदांआ
यरामपहलषनआप॥दुरवासाआगमकह्सिदाप॥कविरेवाच॥यहसुननमाजर
घुवरप्रवीन॥पुनकालपुरसकहविदाकीन॥श्रीरामवाच॥अविधेसनवेसमुदे
आय॥पूजेदुरवासावंदपाय॥रिषकहनवपूछ्योमाहाराज॥कहियेमुनेसआगनका
ज॥दुरवासावाच॥मोहिसहसवरषउपवासमांन॥जगदीसपारनोदेहुजांन॥
वहविवधभोंननोजनअनाय॥जुक्तस्रूरामरिषवरजिमाय॥अन्नकनानदीनीअसी
सहुयत्रह्नगयोआसनरिषीस॥इनीकालपुरषप्रसंगलिछमनपरित्यागछंदपध
रीकविरेवाच॥विस्वेसकयोयहविधविचार॥देववचननंगपानकअपार॥दुषसो
ककुलितरघुनाथदेष॥विस्मयभमनलिछमवढिविसेष॥जगदीसरअंतरजाव
जांन॥पुनकयोलछुननबजोरपांन॥लिछमनवाच॥करियेनप्रतंग्यानंगकाज
अषिलेसरहुबधयुजोगआज॥ममआदिकलेवरकवलकाल॥पुनभइअविधप्र
रनकपाल॥जोकरिहैनाथमेहिनककेस॥निरपापरहेहुजबहुनरेस॥श्रीरामवा
च॥बोलेवसिष्टमित्रसुमिनन॥नहांकहेपुरषआगमनतंत॥वसिष्टवाच॥प्रभसुंवसिष्ट
कहिजेरयांन॥असीहीमाबीवनीआंन॥सुनअसुनरवैअनेकरूप॥नावीनटरैअन
नरूप॥प्रभुवधनेदुस्सहपरित्याग॥सोकरियेलिछमनकहसनाग॥विधवेदकहीसो
गुरविचार॥मांनसोइयहैमनकमुरार॥विस्वेसप्रतंग्याटरविसेष॥सबधरमनास
हैअसेष॥विधधरमटरैमानउविसास॥नरनाथहोयजयपुरविनास॥नमसदा

परेसूल ॥ सोई जसुतनादिह्ने दे समूल ॥ आयदेफेरनवदायऐह ॥ दुरजनदिदादिकरनिसं
देह ॥ मधुसूनजुस्योदुजेफरसराम ॥ सुनतासेनामनजंह्योसगांम ॥ निष्करीलामकुनीलक्षी
य ॥ तिहदइ तगेहवक्षमाजीय ॥ संनवनतुदरनिहअति[श्रति]असाध ॥ जयज्योलवनासुरसु
रामा तअगाध ॥ सोमहादुष्टअतिबलीसूर ॥ सुरंसुरनीमिरादिसकसमूर ॥ अतिदुषतनापीदुनअको
९६० धीन ॥ देवकेसरनदुजआयदीन ॥ श्रीरामवाच ॥ विस्वसदइवाचाविसेष ॥ अब विप्रअ
नयमोनकुअसेष ॥ वचनममाविप्रकरियेविसास ॥ निहचैलवनासुरहोयनास ॥ गदि
॥ विनधीरदुजजाक्षगेह ॥ अपनेअक्रमषयहोकुऐह ॥ प्रनुकस्योनहांकदुनाप्रचार ॥ नृत
हिकोदीनैजुधमार ॥ श्रीरामवाच ॥ हमदयेदुजनकोअनयदांन ॥ येकेरिकुवीरस्योतू
प्रमांन ॥ नरथवाच ॥ करजोरनरथबोलेसकाज ॥ अज्ञायदमोकुदेहुआज ॥ नहांतमके
निवेदेसत्रुघान ॥ विस्वेसुरसुनियेमोहिवान ॥ देवाध्यदेवपावरीदीन ॥ करिकथ नरथ
वहसेवकीन ॥ सुषरहेलषनवनवाससंग ॥ उनकरीसेवदुषसहेअंग ॥ मोयआयसदीजे
ऐहराम ॥ करिहैप्रतापनवसिधकाम ॥ श्रीरामवाच ॥ नगवंतकयेसुनवचननृात ॥ तुमक
हबजमेंमहनदयोनात ॥ निजकरिकुजायमुपरानिदान ॥ पुनपुजयोजोवसिहप्रमांन ॥ पेकि
कुजुगोनरहैनपाय ॥ अविनरकुक्तजदुवंसआय ॥ तिहमंमरनलेकहइआवनार ॥ नवनूत
सुबदनूवहरिझनार ॥ मेरेवहवक्षनहेसमान ॥ जहांवेदादेवीवासजांन ॥ दीनेवजमे
मलतुमहिदेव ॥ अनियेककस्योनृानाहिअजेव ॥ निश्चेकरदीनौ ॥ दिव्यबांन ॥ प्रनुदइता
हिसिदेप्रमांन ॥ सोअसुरानित्यपूजनत्रसूल ॥ मनकरकपिष्ट उपरसमूल ॥ पुनजानअ
पककुहतनप्रांन ॥ वनजंतुविवधनदसनविधांन ॥ उष्टरोकतिहसमयद्वार ॥ नयरहत
तुमकुआयुधसंनार ॥ लषतुमहिद्वार परवेसकाल ॥ करिकुधजुधनिरदेकराल ॥
तिहअवसरमारकुअसुरनाहि ॥ जहांतेनअसुरहोनागजाहि ॥ पुनमधूपुरीवसवायप्र
रासग्रामजीतमोहिमिलकुसूर ॥ कविरोवाच ॥ हितकरिषबोधप्रनुप्रश्नहोय ॥ संगप्र
बलसेनदीन्हीसजोय ॥ वनसहेअपंचनटसजिववाज ॥ तिहअरधोवमरलसंदनविर
ज ॥ मिलअग्रेसरषटसतमतंग ॥ अरुअयुतनीनपेदलअनंग ॥ सत्रघनकोकीनोसमाधां
नपठियेप्रचारदलबलप्रमांन ॥ षरदूनदिवससंक्रम्योसेन ॥ रिवदुघगिलनगचढी
रेन ॥ सेन्याअनंगसमहरसधीर ॥ तिहदिऐमलांनरिवसुनानीर ॥ लवरोसुरकरिपूजा
त्रसूल ॥ मिलअरचनवंदनमंत्रमूल ॥ पुनकस्योनिसामधुवनप्रवेस ॥ इहआनद्वाररोको
असेक्षस ॥ पूस्योअहारषलत्रपतपाय ॥ अनुसातगानपुनद्वारआय ॥ समउष्टपस्योत
नहांसत्रसाल ॥ करिकोपआनजुद्योकराल ॥ कछुकालनिस्योसग्रांमकुध ॥ जाजुलपनये
दक्षओरजुध ॥ नबदिव्यबानजुरहन्योनास ॥ सत्रुघनजे[redacted]तवाजेप्रकास ॥ दुपदस्ये
विप्रनऐहरषवंत ॥ सुषवसेनहांरिषिसाधसंत ॥ दुहा ॥ मधुवननिकटजुमधुपुरी ॥ रिव
ननियाकेतीर ॥ वस्योसुपतनअतिविहद ॥ नदकालंडीनीर ॥ वसेजथाक्रमपुरविम
ल ॥ मथुरामंमरनमांहि ॥ चिंननसुषलहवरणचव ॥ जिषरनयनैनयनांहि ॥ कुलल
वनासुरनासकर ॥ वाजाजईनवजाय ॥ कीनोदरसनरामको ॥ यहांसत्रुघनआय ॥
अथकालपुरसआगमानेलछमनपरित्याग ॥ दुहा ॥ धरमराजदुजेदहधर ॥ काल
पुरषइककाल ॥ पुनिसोआयोरामपह ॥ वेगेसनाविसाल ॥ २ ॥ छंदपधर ॥ प्रनुनवेराजनि
दरपधार ॥ सोविप्रबोलनीनोसंनार ॥ नरनाथलषनसोकहिनिदांन ॥ निजद्वाररह
ननुमसावधांन ॥ इहाअवरगेहआवेजुकोय ॥ कुहनूनासनिरसंकहोय ॥ श्रीराम
वाच ॥ दुजनाहिपूजनवरामदेव ॥ नयेयहांआगमनकवननेव ॥ केहपठीयोहेन
वकवनकाज ॥ कुनसंककरहुविरनानआज ॥ कालपुरसवाच ॥ मोहिकालपुर
सजानकुमुरार ॥ कारनाविनासनवनूनकार ॥ प्रनुपासमोहिवृहमापठेय ॥ संदेस
कहायोसुनसुनाय ॥ विस्वसकस्योसिवजिगविनास ॥ उहांवधोनीरनाग्योअको ॥

येलिछमनकोविरदनामनमेरैनाय॥सुन्यनयोसंसारसुषु॥२॥कछुकदिवदिनकालनहु
मयोब्रिदाआयदि॥सुरगप्रयांनसुढाल॥करिवोदेपुर॥आविर्थको॥३॥एकसमयश्रीरांम॥
सोननपुररिषवरसन॥मिलवेहरघुराम॥घरनीधरसिरछत्रधर॥४॥अंतरनावअनंगजा
न्योपतिकोज्यानकी॥अनदरषनअंगअंग॥आनमईगढीयदां॥५॥सीतावाच॥छंदपधर
पुनसूरजसनमुषजोरपांन॥विचनेदकयो॥सियविमलवांन॥सुनमानधरिनममवच
नसार॥विस्वासमांनदीजेविदार॥कसनीजुपेपलवनासाच॥अंतरगनममरघुवरअराघ॥
कविरोवाच॥इहसुननसतीवाचाअषंम॥प्रथीदरारषाइफटंम॥पातालदैवदिनविन
प्रमांन॥विचविवरदिव्यआन्यो॥विवांन॥पुनधारदेवमैषरनीपाल॥आरोदिनदिवास
नदिआंन॥नीसानगिगनयुनयोनंद॥संसारअषिरनजयजयनिसद॥पातालविव
रमारगप्रवेस॥वेकुंठगईसीताविसेस॥सुरकरेपुहपवरषासदास॥पायोसुरेस
आनंदप्रकास॥इहविघसुसीतासरगआइ॥सोलनईविबुधवननावचाइ॥अथ
श्रीरामचंदपुत्रभ्रातपुत्रकोजमीराजस्थानविनागवरनंन॥कविराव
च॥दोहा॥सोरठा॥ग्यानादिकलघुरूपकरनजपग्यानपदेसक्रम॥रागआपअन
रूपमनक्रमवाचातपधरम॥१॥दोहा॥पुत्रभ्रातपुत्रादिप्रथीवारदईविस्वास॥अ
विनवसाइसुषसादिन॥विघजुतदेसविसेस॥२॥नामजुधादितुनरपको॥इहवि
वमातुलआय॥गयोसदायानिमंतले॥प्रभुकीआइपापाय॥३॥तहांगंध्रबननसूनयो
नरथादिजुध्यनयांन॥तीनकोटमारनतहां॥अतिबलनसत्रुअमान॥४॥षिनलीनीयहांमा
रषलनारथ॥नरथअनंग॥नगरवसाए॥इनले॥तहांकरिकोटअनंग॥५॥तिहसि
लापुदपावनी॥नगरीदइधरनांम॥तिहपुरचकरकवर्तहां॥कीनेवाससकाम॥६॥
गंध्रबनसोजीतजुध॥पुनआयेप्रभुपास॥करनेजुसेवारामकी॥संतननरषप्रकास
७॥पुत्रजुलवकुसआपनेराजधरमरघुराय॥तिनकूदीनेवाटतहां॥देसनगरसुषद
य॥८॥अपनीरजधांनीअषिल॥पुरीअजोध्यापाट॥दयोजुलवकूदए॥निजकरानि
लकलिलाट॥९॥कुसकूपुरीकुसावती॥दुरगममालव॥देस॥सुषदराजदलबलस
दित॥आपदयेअवधेस॥१०॥पायरामआइसप्रगट॥आगेलपनअनंग॥सत्रुहनजीतेस
मरसेन्याबलअनसंग॥११॥कयोजुलोभनुलपनक॥दनुनरादिसाअनंग॥मल्लाल
कअनेकमिल॥वसनतहांबलवंम॥१२॥कस्यो॥तिनहांनिरमूलकुल॥सुतवसाय
तिहदेस॥आनमिलउदमपैअनुज॥वछ्नप्रानवसेस॥१३॥लापनजयमलालषन॥मारषेत
मदीप॥लियधरवरसमदलममलीकियनिरमूल॥१४॥कारनअइपारामकी॥सेन्यापवलसमीप
१४॥लियनरधरसमदलगा॥मल्लाकियनिरमूलन॥उहांवसायपुरजुने॥सत्रूनरापिसूलन॥१५॥लछम
नकसुनसुनलषन॥पोरसअंगप्रवीन॥जेगेअंगदजांनवा॥चंद्रकेतलघुवीन॥१६॥अंगदपुरदी
यअंगदहि॥सोनासमृधसजूप॥चंद्रकेतचंद्रावती॥नगरीदईअनूप॥१७॥देससत्रुघनको
दयो॥व्रजमंमलविष्यात॥पुनवसाएतहांप्रबल॥पुरीरादितनपात॥१८॥पावननूनजुम
धुपुरी॥देतिहवलसुबाद॥सत्रुघातकनव्रजवस्यो॥नरअनंगरिपुराह॥१९॥प्रबलनसुदीव
करप्रथी॥इहविघपुत्रवसाय॥कस्योअकंटकराजकुल॥एकछत्ररघुराय॥२०॥छंदपध
री॥पुनकरनयहांसद्धपप्रबोघ॥सुनजवनभ्रातसुननीतसोघ॥मिथ्यानवचनबोलनमदीप
संगनजियेमुढमित्रीसमीप॥देरकरफेरलीजेनदांन॥नहीनारमिंत्रसूदितनिदांन॥पुन
सानविस्नवरजितपूजाकास॥प्रबलामदुष्टदुरजनविसास॥मित्रीसुवेदवयव्रधमां
न॥कबहूनविष्णुरलजऊकांल॥आषेटकरमफिरबोअकाज॥रिपूनमनमांहिनहीनविनराज
मरषसूनजियेमूलमंत्र॥सबनानमोननजनसुनंत्र॥विघगंढमंत्रकरियेविसेस॥षटकरमउ
देहविनसेविसेष॥अनकारनअनुचिनहतपाघ॥आरंननिअपीकजननपाघ॥अहिनिसापु
जारदाअषंम॥दीजियपात्रअपराघदंम॥नयेसावघाननृपनीतनेद॥दुष्टनानजेपरमरम
भेद॥कुजरदबालत्रियअविकार॥विषअनजानननजियेविचार॥पीडेयंजनदुजनिरपराघ

घरमरछकत्रलोक। सौकरजदेवअ बनजऊसोक॥ कविरोवाच॥ गुरवचनमांनरघु
वरसझांन। निरधारयहेकीनौनिदान॥ इहसमयसबैवेठेउदार॥ हिनकस्योआनलि
छमनजुहार॥ श्रीरामवाच॥ वससोकहैलषनसोकहिविष्यात॥ तुमजाऊजहांमनहुवेन॥
नसोसुनतमात्रलछमनसधीर॥ निजग्रेहवंदपदगयेवीर॥ दियेवेदविहनबऊउजन
दान॥ सुनराजानिलकदलबलसमांन॥ कविरोवाचछंद॥ लेलिछमनवैराग्यवन निरछि
नसरजूतीर॥ करिकुसपछववकेतल्य॥ बेगेनिरनयधीर॥ १ कस्योसासअविरोधक्रम॥ धरम
धारनाध्यांन प्रभुअस्थालिछमनप्रगट पायोपदनिरबांन॥ २॥ ईद्रादिकसुरसिधसब
इहांसासुहेआय॥ सिदेहीलिछमनसुषहि॥ दिव्यासनबेगय ४ चंवरढुरतवरषतकुसमसु
रगनसंगसनेह॥ लिछमनअज्ञारामले॥ आयेसुर्गसिंदेह॥ ५॥ इतीमानाकोसल्यावेरह
गमनंककविरोवाचदुहासोरग॥ ऐकसमयऐकंत बेठेरामवेरागवस॥ कहुनानिधस्त्रीकें
तध्यांनावस्थितधरमधुर॥ १॥ छंदअषरी॥ इहछिनकोसल्यावहांआई॥ वमजानसुत
नावविहाई॥ नमसकारकेरबेठीनिश्चल॥ पुत्रजदपिपेषेहेपलपल॥ नियतयहैसुत
व्रमनिहारी॥ निश्चेपूरनब्रमविचारी॥ तुवनहीआदमध्यअवसाना॥ जगतआदतुममां
हीजाना॥ पूरनपरमानंदपुरानम॥ स्कतुमेहीव्यापकसबआनम॥ जदपिमनुजदेहमेजा
ऐ॥ लेलेअंकनिसंकलमाऐ॥ अंतआविधअबनियेआई॥ मोहनमोहतधापिमिटाई॥
बोधनतपजिछेदनववंधन॥ मुक्तहोयजानेक्रमवचमन॥ जुक्तप्रबोधकरिअब
जाने॥ तुमपरिब्रमदिष्टऊयनाने॥ कविरोवाच॥ जननिववनसुनअंतरजामी॥ समय
जानबोलेजगस्वामी॥ श्रीरामवाच॥ मातमोषमारगत्रयमानऊ॥ प्रथमहिकरम
जोग्यपहिचानऊ॥ दूजेग्यानजोगसुषदायक॥ समफतीजीनकसुनायक॥ सुपेजेगु
~~नमसविस्व~~विष्यातन॥ मारगनकसुगमहैमाना॥ सुपेत्रगुनमयेविस्वविष्याता॥ स्वानि
कतामराजंससंगी॥ असाधुतनवहूनअनंगी॥ हित्याअहिस्यादेनमिलमाभर॥ को
धविरोधानेददिष्टकर नहपेनामबैसुदिष्टकहावे॥ प्रानीकरेनाहिफलपावे॥ अंतर
नेहदिष्टआराधे॥ साधकहावेनकोहिसाधे॥ राजसनक्तयहैजुनअहिमत॥ पुननाकी
वेनिमननाराइन॥ प्रभुहितपरमनजनपारायन॥ इहविधवतैमुक्तपावे॥ क्रमसो
स्वानिकनक्तकहावे॥ मनजिदवनरहेमूनमाही॥ होतकबऊपेअंतरनाही॥ जेगंगास
गरपहजांही॥ रहेऐकऊयतहाठहराई॥ प्रानीसबैब्रमम्यपेषे॥ दयाजुक्तसमन
वहिदेषे॥ सदाकुसंगनवजितसोई॥ हेतप्रीतसतसंगतहोई॥ हेतप्रीतसतसंगतहो
ईवेदमृजादसततमुषवानी॥ पुनमोमाजमिलेसोप्रांनी॥ नातेपुत्रनावसुषदाता॥ मम
मूरतहितराषमाता॥ कविरोवाच॥ रामधरममूरतअविधारी॥ धिन्यसुरगसेदे
हसिधारी॥ दुहा॥ हैसालोक१सारूपसुनर मुक्तसाजोतसुऐव॥ वेदविदतऐचार
विधउलनकहेउजदेव॥ ६ तीनमुक्तअैलाघतब॥ मिलनतनिगममरजाद॥ कोसल्याचो
धीमुकतपाइरहतप्रमाद॥ ७ जोगनक्तसाधेजुब्रततन केकइनिहकाम॥ पायेसुरगस
नेहपुनमातप्रबोधितराम॥ ८ साधुसुमित्रासंतसंगत॥ पावनयहेप्रकार॥ सुरगसिधा
इहेसो अज्ञारामउधार॥ ९ ईहांसुमित्राकेकईपतसमीपपदपाय॥ तनमनसेवा
करनतेसंगदसरथसुहाय १० कोसल्यादिकमातकह॥ दीनेमोहसुदेह॥ सफलन
येसाधनसबेरामप्रसादसनेह॥ ११॥ अथसतामकाप्रस्थान॥ कविरोवाचदुहासो
रग॥ कापतलछनवियोग॥ रामअगनप्रजरतउवर॥ पेनदीफुरनधियोग्य अछल
छविषसेनये १ रहतसोकवसराम॥ नरफलघायलसेनवे॥ सोसेरहनजुस्यांमन
वमनुजदाषतनवत॥ २॥ श्रीरामवाच ~~छंदपद्धरी~~॥ ऐकदिवसअवधेसमंत्रगुढ
कहिमेपत्नीप्यारीकरिहुप्रवेस॥ आगेतुमवेकुंटअव ३ जियपेकयोनजाय॥ व्या

करिबौप्रयांनम ध्यानकाल यादीवि चजुप्प पजुप्प आय सबकरे चरन बंदनसुनाय
कविरोवाच ॥ आयो जु वभीषन सरन आप पावन सिरजा के राम गाप सुर आय अषिल
मुनिवर समाज रघुनाथ बंदराजाधिराज ॥ वभीषनवाच ॥ हिनजुक वभीषनजोरहा
थ मोहि साथ लै जु कीजिये सनाथ ॥ श्रीरामवाच ॥ मनकहै वभीषन फेरमोहि हगकस्यो
नतोमम सप्न होय प्रथीयहजोलोनहथपाज जुचकरहु वभीषन लंकराज ॥ सुग्रीववा
च ॥ हिनकर कपीसकह जोर हाथ सरबथा न त्याग नू चरन साथ अंगद हिदयो मैं तिलक
आप पुरवास केकं धापनु थनाप ॥ श्रीरामवाचहनूमानपते सुष लैंहि नगयो नृपिय
सीन पद अमरदयो तोक हपुनीन सो वचन वषान नही होय संत महिवसहु न केसुष
सोमहंत जग्रदीसक ह्यो सुन जाबवंत अविनपर रहहु सुरला अंनकालनंनर
कारनकरकीज हमतुमहि जुध्यमेरी छंराज ममहाथ निरनतुव मलननमांन
पुनपैहो सदगतयरहपमांन ॥ कविरोवाच ॥ रघुनाथ सषा गुह आयं राज करिय
बेगवनको संग साजे निरधारकयो यहनृपनिषाद प्रभुकर हु चरनसेवा प्रसाद
डढबुध सबन की राम देष विस्वेस दइ अज्ञा विसेष ॥ श्रीरामवाच ॥ ईब्राम
षमाजि हचित रहसंग चलहु मेरैनिसंदेह ॥ कविरोवाच ॥ पुन अवर दिवस वे
ल प्रत्नान तहां गुरवसिष्ट कूकहे नान ॥ श्रीरामवाच ॥ हमकाज महाप्रस्थान रह
न मुनिक रिहु हो मसुन विधसमेत ॥ कविरोवाच ॥ परधांन वस्त्र धोतापुनीत
आयवसिष्ट अंनर अनीत कुसपान करे सब सिधकाज संग यांन रूप मुनिवरस
माज नगर तेग वन त्रयलोकनाथ हरिचले नरपकोग्रहे हाथ प्रभु अर्क कोटि प्र
नमाप्रकास ससिकोट सुषदसीतलसहास मामंग संग कमला विसेष आव
रनवरण भूषण अमनेष महरवरी सुलज्या सुनगसंग अली मनक रनगुजार
अंग गायत्री अंबा सहित गाय सबवेद देहधार सुनाय पुरलोक चलेसुनत्रिया
संग पुन बाल व्रध पुरजन प्रसंग अंनह पुरवासी दासी दास पुंन चलेवरणचार
प्रकास पुरद्वार चलेंग्राम प्रसिध वैकुंठ हेत चलबाल व्रध नव जनत चलेमिल
संगत्रूप जढथावरजंगम मनुज रूप पसुपंषी सूकर स्यालस्वान क्रमकीट अधम
जन अषिल आंन ईत्यादिक जे प्रांनी अनंत सब चलेहरष अनसंन सन रघुनाथ
रूपमनमांज राष नवजनत चल जयजय ननाथ प्रांनी नरसे कोन ग्रहह अमीन नैनगर
सुन्यलागन नयान नब आयसरजू सरतनीर विस्वेस राम रघुवंसवीर सबदनक
दी अज्ञा नरेस पुन कसो सरन सरजू प्रवेस मंजन करि आरुहित विमांन सबचले
जंतुसुरपुर सुथांन गनकल मुष गुन रघुनाथ गाय सबगए सुरग अपने सुनाय ब्रहमा
दि सकल मुनिगैंवर विसेष आनंदयुक्त आय असेष मिलकोटकोटन नसुर विमांन
आकास नयो आनृ न अमान पुन अरककोटि तो न न प्रकास योगंधपवन चल सा
वकास हितपुर पवद्दसत तहां गिगन होय सुर दहररषउ धनि सजोय सुर किंनर मिल
गंध्रब सुगांन पुंननाटक सुरकिंन्या प्रमांन क्रनराम चरनमंजन कपोल सरजुज
लनिरमल अघनसाल ॥ विधरोवाच ॥ विधकह्यो न हांवानी विनीत परपुरष जतहं
जगपुनीत परमीस्वर पूरन जगतपाल देवाधदेव रघुवर दयाल अनवित अ
नामय चित अरेह विस्नू नमन तत्व वेनाविदेह आनंद युग अवगत उदास अन
नंग अनूपम न नअवासि आकास लिंग तुम रूप एक अंउकरन देहकारक अ
नेक सुनियेविसेष मुनुबद वांन अबपविजकरउ विधलोक आन ॥ कवि
रोवाच ॥ जाचन्या सुनयहक वलजान प्रभु कियेप्रवान वाचा पंविधात र
घुनाथ पलटन व नरस्वरूप यंहान यचनरनु जदिव्यरूप अनुलषन देह
सेषावनार व्राजनाजिदफु लपर कम नार नएनरपसत्रुघन मनसंनार

सुविमांनतंगकरियेनसाध मदक्रोधलोभअरुकाममोह दुरवादतजैनृपजानहोइ अन्नवि
सुषननजियेअसंक करियेनदीनस्रूकलदेकंक पर त्रियादिष्टगुरत्रियप्रमांन करियेन
अगमागमनकांन ईंड्रीरिपुनिग्रहकरिअसेष विधधरमसुजस निग्रहविसेष विस्तारकर
ज्ञनितसाधबुध सबकालषकासज्ञसाधसुध मांनियेहितू सिष्यामृजाद वरजितकुसंग
मिथ्याविवाद पापीनबाकनिंदाप्रमांन अनदोषदोषदीजेनआंन करअकरसीसकरिये
नकोय हितवंननिकटवर्तीसुहोय पुनदुष्टबुधीवरजतप्रधान निहश्चेनइतकरिये
अज्ञांन सेन्यापनगढवेनचिंतसूर दुतद्यागतनजियेसुनटइर कामीसलोभदुजअक
तकार करियेनतादिधरमाधिकार संकलप्पडवसोसावधांन दीजीयेआपनेहाथदां
न राजश्रीआपवससकरेराज वसनासनयांनुपजेविसाद अकाज विस्तारकरमविद्या
विसेक इत्यादइईसिदाअन्नेक सबनायरहेसुनसावधान निननीतधरमसाधज्ञ
निधांन॥ दुहा॥ इहविधहितुउपदेसऐ दीनसुनाहिसुदेस प्रथीसुरहनकरप्रबल न
रहरप्रभुनरेस १॥ इतीमातसुथानअजोध्याउधरनंकविरोवाच दुहा॥ लि
छमनकेपरत्यागने सोहाव्याकुलतअसेष रघुपतमित्री मित्ररिष व्रधनबोलविसेष
श्रीरामवाच॥ कहेवसिष्टसुमित्रसे॥ आविधेसुरमनएह॥ आविनराजअविबेककर
नरपाहिटीकोदेह॥ ३॥ बालेलषनविवानवढ हमहीबालननेहार महावीरताबंधु विन
सूंनोलगतसंसार ४॥ कविरोवाच॥ करुनावचनसुरामके सुनपुरवासिनसोय
परियरिलोटतभूमपर रामरामकहिरोय ५॥ छंदपधरी॥ विस्वेसवचनसुननरथवी
र अकुलायनयेअंतरअधीर दारुनसुनवायकनयेदीन करजोरनरथ करजोरन
रथनहाप्रस्नकीन॥ नरथवाच॥ देवाधदेवदीननदयालसुनउस्सहवचनजरन
येसाल रघुनाथप्रथीवाइइराज करुनानिधानमोहिनाहिकाज तवसथसुनज्ञम
मजीवतंत्र अषिलेसवरनगम्नअंत रघुनाथदेउअबेलवहिराज सबसुमटमि
त्रीपूवेज्ञसमाज॥ वसिष्टोवाच॥ बोलेवसिष्टगुरविमलवांन प्रभुकरिअकोजस
मियेप्रमांन तवविरहनयेकातरसनीत सुरलोकगवननबदेषसीस लुवगिर
विकलनाहिनसंनार पुरलोककसोकरोदतपुकार धरदयाकरिज्ञतिनसमाधांन
प्रभुअबेकवेकरिबोप्रमांन॥ श्रीरामवाच॥ करिदयालोकबोलेक्रुपाल विनियेजु
मनोरथवृधेबाल॥ लोकवाच॥ ईहसुनतलोक बोलेअसेष विस्वेसाविरहदुस
हविसेष सबवसहिदेवतवचरनसंग इछ्यायहसबदिनकेअंनंगपुरसुरगव
सझ्पावनप्रमांन जगदीसस्मरनराघवज्ञसुजाने॥ कविरोवाच॥ अनुरागजांन
सबकोअनंत विस्वासदयोतबदयावंत कररघुवरनिश्चयसमयकाज लवके
स्योतिलकदेआविधराज अनषेककरेगुरमित्रीआय सुनत्रत्रसीसचावरचलाय
छपेकवत॥ सहंस्रआठगजसुरथ सहस्रइकजुथपसंगिय सहंससाठहयस
जव अषिलअसवाहअनंगिये यहप्रमानसेन्याअरुंगीन दुवपुत्रनदीनियसमृध
संगसबराजसाज निधविवधनवीनिय पितुविरहसमयदारुनदुसह लुवरहातन
परनयेकरनिमसकाररघुनाथकह ग्रहनयहांलवकुसगये १ सजवहनअवधेस
ईहासत्रघनपहआऐ कालपुरषआगमन सहीदुरवासासुनाऐ प्रभुलछमनपरत्या
गपुनरामहिपरतंज्या विषमलोककोविरह आविधपनकीहितअज्ञा सत्रुघान
वांनईहदुसहसुन दउपुत्रकज्ञराजदिय सुरथासुरगरघुनाथसंगक्रमप्रयं
ननिश्चयकरिय॥ ॥ दुहा॥ सुधरामंमलनकोकस्यो हितकरनृपनसुबाहकीनोस्यं
मकनोजको सत्रुघातसुनाह॥ ६॥ देसतनयपुत्रनदयौ सेन्यासंपतसंगसमाधान
करिसबनको आऐअविधअनंग ७॥ सत्रूघनवाच॥ करिबंदनरघुनाथकह
सत्रघनकह्योसुनाय दुपुत्रनकूराजदे हाँप्रभुपावाआय ८ प्रभुकरिकृवरनसेवा
प्रमांन नहीतजहूसंगकुनानिधान॥ श्रीरामवाच॥ हठजनजांनबोलेदयाल

अघवनकेकुगरहरि ॥सिघानसंघार नरहरकोसरनदै ॥दुहा॥ जगरछकरघुनाथजब॥
प्रभुवेकुठपधार॥पुरीअजोध्या उधरीय॥सबजनवचत्रसंभार ॥छंद अभरी॥ द्वापुर
आदमध्यअंनकाला॥असुरवढेवऊकरमकराला॥वसुधामहापापविसतारे॥नियंत
सोधसबधरमनिवारे॥नीहअघपीडनप्रथिपुनीता॥नाराकलनईनयतीना॥सुघनरहीक
ऊअघनरकेसंग॥अतविरहबलछेगइविकलअंग॥प्रथीधेनकेरूपपुलाई॥आनमविक
लवृलपेआई॥सबउपकारनविधहीसुनायो॥नयोजुकलनायोअननायो॥यहसुनसो
वनयोवृहमाउर॥संगलयेइंद्रादिकसुनिसुर॥ईहांषीरसागरतटआये॥अविनसहलसु
रमुनीअकुलाये॥कवलजानप्रभुसिवूरनकीनो॥अनजियलयोसरूपअधीनो॥सोयेऊने
मध्यपयसागर॥अषिललोककेरषकईस्वर॥करीवेदधुनवृहमसकारन॥नरहरप्रभुजा
गेनारायन॥दयानिधानदरसप्रभुदीनो॥कारनवृमनिवेदनकीनो॥अथअकासबाणी॥
यहांआकासबाणनईअैसी॥नबेसुनीवृहमादिकतैसी॥ सबेदेवतुम
नंमसराइ॥जदुकुलमैअवतरहुजाइ॥दुहा॥ जहांमैहेवसुदेवनृप॥नूवमंमरलनवत्नू
नताकेअवितरहेनरहां॥नारायननरहूपार॥सेषनागतेहीसमय॥सुभबलनइसनेहप
नहेहेअग्रजप्रबल॥प्रानऐकहोदेहे॥४॥रामकृष्णयहनामकर॥होअंसाअविनार॥
व्रजमंमलमेविहरहे॥नयहरहेभुवभार॥५॥मायाजोगमहेस्वरी॥पूरनप्रनाप्रनाप॥हिनयु
तनंदअहीरकै॥वहअवतरहीआप॥६॥कविरोवाच॥यहअकासबानीनई॥धराहेननिरधार॥
सोसुनवृहमादिकसबै॥विसरेसोकविकार॥७॥वृलआदसुरन्मसंघाग॥सबननयेसंतो
ष॥आयेधांनकआपने॥मनहरषतदुषमोष॥८॥रजधांनीजदुवंसकी॥व्रजमंमरलविस्तार
कृष्णतहांकीहाकनेसदानकसुषकार॥९॥अथजादवउतनपतकाविरोवाच॥छप
सोमवंसराजाधिराज॥जदुनयोनरेस्वर॥तातेजादववंसवढोसंसारयापसुर॥तिह
साषामहसूरसेन॥महिपतकुलमंमन॥ताकोसुनवसुदेव॥विजइरिनवइरविहंमन॥नृपा
लराजश्रीनोगवत॥सहजविजयपिजरयरन॥सुततासकृष्णहैहेसुषद॥कृतअद्भुतक॥
रनकरन॥१॥दुहा॥ परमरमनिथलापुरी॥सबसंपतसुषसाज॥करततहांजदुकुलति
लकराजाबाहुकराज॥२॥छप॥ देवककेदेवकी॥साधकिंन्यागुनसुंदर॥वसुदेवहिमागी
विचार॥पुत्रीसुषप्रेमपर॥ बाहुककेसुनउग्रसेन॥राजासुधरमरत॥देवसुनामाउनिय
सरदानीवाचासत॥देवककेदेवकी॥साधकिंन्यागुनसुंदर॥वसुदेवहिमागी॥विचार
पुत्रीसुधरमपर॥मंगलविधानवैअरमिल॥अरुआनंदतपजेअतुल॥घनसेनिसानघुम
रेसघन॥कियउग्राहजुजानकुल॥४॥दुहा॥ यहक्रमजादवअवतरे॥मुघरामंमलमाहि॥सुरम्य
माजरमनीसहित॥बासुरसुषहिविवाहि॥१२॥कृष्णनेलिषजड्पेसापल रछे॥इकसम
यसुषदरितुवसंतआय॥सबफूलफलनवनघनसुहाय॥तिहकालविमलबहुविधवात॥सोगंध
मंदसीतलहिसुहात॥नतुलतगुल्मकोमललमाल॥वनरंगपुहपमंजरविसाल॥सरसरसरोज
फुल्लियेसुगंध॥अलिजुथभ्रमतमदगंधअंध॥वनवनविलासवननानवृंद॥जललकेलज
धाआतमआनंद॥सुनवनविहारनृपउग्रसेन॥मिलसमयसमयसुषदिवसमैन॥छंद अ
भरी॥ आगेएकलवोकोईअसुर॥पहिलेलयोऊनेजुगद्वापुर॥सोनिरमूलहनोनारायन॥पापीजिह
जियबांधवयरपन॥बऊस्योसोउग्रपज्योमायाबल॥षेचरकालनेमनामाषल॥वैरनावरहअ
सुरबिचास्यो॥विसरेनांहिविरोधवधारे॥चिंततधानरहेसोइनिसचर॥अविलोकेआनअपनो
अवसर॥राजाउग्रसेनपटरानी॥मंजनरितुबेवीमनमांनी॥पापीयहजुअवसरपायो॥आसुर
कालनेमसोआयो॥हगयहनमारगरथहाक्यो॥निहषलविइयहैजोताक्यो॥दुरजनाति
याअवस्थादेषी॥विषमविरोधअनंगविसेषी॥उग्रसेनकोरूपकस्यो॥अर॥निसाअमयआ
योसोइनिसचर॥गयहकपटरूपजोईगन्यो॥पटरानीसोनहीपिछांनो॥इहरितुदानदयो

रामा १८३

घरदेहुवतरनुजचक्रधार॥रघुनाथचीह्ननयेमहावीर॥सियघस्योनहांरिन्छ्मी
सरीर॥ईड्रादिदेवरिषसिधआय॥मुनिपितरपितामहहरसपाय॥जोगेसजद्दसपरव
नप्रचंम॥अंबोधुसरंतपरबतअषंम॥दुहा॥मिलसबांहिनकेलोकमहपावनकरतसप्रे
नप्रनुआएवें~~कुच~~व्रकुलोकपत॥पुंनवेकुंठपुनीत॥४॥पुजमानघतिलोकप्रब्लुस
बहिनकरेसनाथ॥आयअपनेलोकेयहांसानुजसीतासाथ॥रकारनवानररूपकी
य॥अमरअषिलनुवआय॥काजसुरपनसिधकर॥पुनअपनोपदपाय॥३॥निरजगादि
नवनूतनहां॥सदगंतपायअसंक॥नवबंधनकटिकटिनये॥तेनिरबंधनिसंक॥४॥
छपै॥ रांमचिरतरसाल॥यहजुअद्भुतचिनगायो॥पूव्यो॥सिवासपेम॥सुगमनूत
ससुनायो॥लिषसुनेवाचैनिसंक॥पुनतावपकासे॥जन्मसंदेह्क्रियेअक्रमजा
ल॥निरमूलसुनासे॥सोलहेमुकनरहरसुकवि॥अरुयकोतरनुच्चरे॥कहुनानि
धानरघुनाथको॥एहचिरतकृततउच्चरे॥१॥धरमरूपअविधेस॥वप्रसुप्रक्षविवि
राजत॥द्रगनसुधाभ्रावनदयाल॥सिरछत्रसुसाजत॥उरअयुतआजांनबाहु
सोनतसिंघासन॥प्रगटकोटदिनकरप्रताप॥मिलछिबजुमदनमन॥अंकूरधरम
कोतेउदित॥रच्योअटकमनरूपरस॥कोटअक्रमनरहरसुकवि॥जथासक्रनाथ्यो
सुजस॥२॥सघनधाररजरेणकेवन॥नवरनत्रप्यांनकर॥अकलनपंथकिहकल्यो
धराधरमनुज~~मनुज~~करदिधर॥उदधकवनपारदियो॥पानाकिहघस्योप्रनंजन
तावतवननक्षत्रकगनक~~जन~~वसकीनोकाकुल॥सनकोटरामसंष्या॥सुजस॥क
वसुकवनपूरनकहे॥सुनरनहेनकनरहरसकव॥रामचरनहितचितरहे॥३॥
दुहा॥ दससहंस्नअरुवर्षसय॥रहेमनुजननरांम॥तीनलोककउछवअषिल॥सुर
मुनिलहविश्राम॥ ॥इतिश्रीपोरषरामायणेमहामुक्तमारगनाथावारह
तनरहरदासनाविरचितेउतरकांमसपुरणं॥इतीरामावतारसपूरनं॥
अथश्रीकृष्णावतारआरंभतो॥कविरोवाच॥कवतछपय॥ गवरीपुत्र
गणेस॥बुधदातालंबोदर॥वारनवदनविसाल॥सकलदेवांअग्रेसुर॥वरन
अरुनविषुरिय॥सीससिंदूरसमंगल॥गंडिकपोलमदरेष॥करतमधुकरको
लाहल॥कीनेउछहनरहरसकव॥कृष्णदेवजयजसकरन॥सिधदेजुवि
घ्नविनसतसबे॥धुरवंदियफरसीधरन॥१॥दुहा॥ब्रह्मसुतावाघेस्वुरी॥
सारदासरयत॥कृष्णचिरतमंगलकहत॥मातादेउसुमत॥१॥गाथा॥ जय
जेरताजयंती॥ज्वालामुषीजोतिज्वालपा॥जगजननीजयकारी॥जुगकरि
जोरकहूंजाचन्या॥१॥लोषजुगलरचनद॥अछरबद॥अरथगत॥उतमपावे
सुकवषमांन॥भगवतीनकानावेनम॥२॥छपय॥ब्रहमविष्णुअरुविस्वने
य॥रिषसहस्रअगासी॥अमरकोटतेतीस॥पंचपालगरप्रकासी॥नवदुरगा
नवनाथ॥दुजसुरगुरुदिक्षन॥दयाकरिज्ञानेजजानदास॥हरविघ्नमानदि
न॥कीउसुकृष्णजदुनाथकी॥जोपुरानमतिजानहु॥हरकृपाजन्मन
धारदित॥बुधप्रमानवषानहु॥२॥दुहा॥ महाकवेसुरजेमनुज॥सज्जन
सगुनसुजांन॥कविनरहरवंदनबहुत॥मांनहुप्रेमप्रमांन॥ ॥कबतं
क्रमनकेसनहरिकिसवक्रूपालहरी॥करुनानिधानहरीकार॥नकरन
हेतनवकेतिरनहरिलयकेहरनहरी॥कवलनयनहरिकमलावरनहे॥व्रजके
विहारहरिकंसकेसंघारहरि॥गजकेउधारहरि॥गिरकेधरनहे॥दुष्टकेषयार

नविदाकीनेउछाह संगचल्यो हरषसोकवरकंस पहुचावनवहिनीहितपसेस नगनी
रथहांकनचितनजायहनयौ स्वारथीकंसआय तहांआयएकजोधुजनवरानवसकरम
वनीनवनव्यवानजेसीकुबुलावीदइजोइय पुनमिलेआनसोइपयोग्य॥आकासवौवा
चे॥ गिगनगिराअतिगुढ नइयासमयजुअैसी सुनीकंससोसबे तहांउरदाहकनेसी
रेमहंधमनमुढ करतनतूस्वारथजाको तेरोहतनअहित गरनअष्टमजुययाको इहसुनी
गिगनवानीअसह पीषीकंसउरत्रासपर परज्वरनचितरपतेपिसुन यहांदुष्टगहीअसु
रा॥ंदउअबरी॥ काढोषुगसिषागुहिगाढी कंसदेवकीरथतेकाढी काटनसुमजुलज्यौ
कलंकी।विसस्योसगपनदिष्टसुवंकी अबलात्राहिजाहितचारी नयोसबदकोलाह
लनारी यहावसुदेवनिकटनवआयो पापीचिरतदेषदुषपायो महाअनरथाविलोकध्य
रममतकरजोरेघरचरनउरकंपत इहांवसुदेवाविचास्योअैसो कंसकुवारनरोसोकैसो
यहलोपतिनसरापीपापी महाअतिवली सुअोतमथापी।अवनोकोउमंत्रनुपाउ।विषम
कालतेत्रियावचाउ जेसुतजामेकछुनजामे आयमहासंदेहजुयामे जोपेयहदेवीचमर
जेहे हेकछुकरनकछुपुनहोहे नयोहोतनवनव्यजूजेसो नाकोकोजानेउयतेसो।वसुदे
ववाच॥ सुववत्रीजउकुलमहजाए अरुनृपनीतचलावनआए अवलावंदिनवाह
कोअवसर घनआसाजुनचलीआपघर वालाविप्रगनअरुबालक इनकोवधअपनो
घरघालक ऐतेअवधनृपतउरआनो।निजअपराधिकवेदनिदानो।निदनकरमसुधरम
विनासी सोसुनकरऊजगनुमेहासी जोतुममहामीचनयजानो पापवमोयहाचितपिगं
नो करउजतनबउजविकारन दिनकनदुष्टिरैनहीदारुन आसुरवलयहदइवाची
नी कलिजुगवरषसवासनकीनी परमाविजोनृपतपिवांनो जगमेअधर्मधरमसुजोनो
जननकेरजिहजिहनृपजोई कालवलिष्टनछामोत्राकोई पापाचरनकेरनहीनृपत सुषहेदीरघ
उहसुरमत॥कंसवाच॥ याकोवधमैरोहितनामे जीवनरहेननोसुनजोमे करियेवधयहजेज
नकीजे जोनहीओपहिजमहिसुदीजे॥वसुदेवोवाच॥ जोतुमउस्सहमीचनेमरऊ कंस
जतनहमकरेसुकरउ याकेजोकोउबालकहोई सुपेआनहमदेहेसोई॥कविरोवाच॥
निहचेयहवसुदेवसुकीनो दुहदेवकीअनयसुदीनो ग्रहवसुदेवदेवकीगए नयजुत
वसनतहांसुनए जोसुनप्रथमदेवकीजायो कीरतवंतसुनामकहायो॥छदपधरी॥ इह
प्रथमपुत्रवसुदेवआन पनजुहदयोसोकंसपांन बहुसोनृपअविलोकबाल यहउष्ट
कंसकहोहेदयाल जबवचनसाचवसुदेवजांन पुनदयोबालवसुदेवपांन नातेहहसोपत
बालतोहि मांगूजबदीजेआनमोहि बसुदेवचलेलेग्रहजुबाल कंसपहआयदरसोत्रका
ल॥कविरोवाच॥ कंसजोहतेनहबालकोय सुरकाजहोनअविनाससोय।चितमाहियहे
नारदविचार सुरकाजआजजेइसवार कंससमंत्रनारदसुंकीन दारुनविसेषउपदेस
दीन॥नारदवाच॥ करिगिननीअष्टमगरनकोय आगमोगरनतोयदेहोय।निस्चेनवाल
वाम‌उनरेस अवकहनउजितेदेषअसेस नंदादिगोपजादवनजांन अेअमरअंसअव
तरेआंन ईनकोविसासकेरिइनआज कछुकहतओरकछुकरनकाज नृपज्योतृषत्रिय
वंसआंनमतकहेपितासूवचनमांन॥कविरोवाच॥ वाननअनृपनारदवढायपरघ
रहिघालपुनगोपुलाय जोलोनहीपहुच्योग्रहजाय वसुदेवफेरलीनोबुलाय वसुदेव
लियेआयेसुभवाल कनजाइयसीसतिहत्रमोकाल पुनलयोबालवसुदेवपास निहस्यो
सिलाउपजीनत्रास वसुदेवदेवकीपकरबांदि मेलेलेकारग्रेहमांहि पुनजरेलोहवसुदेव

१२२८
२६४

तिहअसुर ध्यानअध्यानअनंदलयोउर। उग्रसेनसिच्यागृहआयो। पेखोउयाहिमरमनह
पायो। अअसुरग्रतधितलयो त्रियाके। नवतेउदरनापवढि नृपवढि नाके। देनत्रियाकोगर्भजुद
रुन। करततासअभिलाषसुकारन। विवरनवरन देहअनविष्णवल। दिनदिनहोनसुरानीउ
रवल। नृपतत्रियाननदसानिहारी। पुनताकीयकसषीप्रचारी। सखीवाच॥ निहपूछ्यो।
स्यांमननेरेननषीनहोनकाहेतेषिनषिन। रानीवाच॥ सुनसषीनोकहनरमसुनाउ
पतिकोकिउकलेजापाउ। मनअभिलाषफलेनोमेरे। नौमानूमेसषीगुननेरो। सखवाच
सषीनृपहिविरतातसुनायो। बहुरनृपनइककुगुनीबुलायो। कागदमयपुतलानृपकी
नो। देहमध्यअजकालजदीनो। नृपनवसनसुगंधवना दी। उग्रसेनमांनूनृपयाहीसो
नउनिधपाई। बेठीउचकहियेपरअतिबल। षायकलेजात्रपुनइषल। समंत्रीराजाउवाच
राजासुनिसषीरहसा। सबैकहीसमजाय। दुष्टगरतयाकेदुस्सहाकोउअरिष्टहेआय
१२ राजोवाच। इहमंत्रिनसोमंत्रअब। रहसकहेसबराज। हेअनिष्टतनपतयहेकरि
उजतनसकाज १३ कंसमंत्रीवाचमंत्रवाय। उग्रसेनसोमंत्रकयोयहमित्रीसबेबैठमि
लयहअनिष्टकहुआदिनयोमाह्वीसंजोइमिल। वासंधरअरुवयरव्याध। दिनवढउन
नदीजे। जथाजतनकोचेसुजांन। निरमूलकरीजे। प्रचीसव्यापप्रथवीप्रगट। यहेनीनमार
गअकल। आपनीराजरद्याउचित। करतनरहेराजासकल १४ राजावाचछंपे। सचिवमत
सुनउग्रसेन। इहमंत्रउचार्यो। कुलजादवनिकलंक। वंसकोघरमविचार्यो। अबलअ
बधअनिउचित। इहजुहमयेनहहोई। देवीमायादुगम। करेनिहलागनकोई। सुनअसु
नकरमअद्भुतसब। जगतसुरासुरजोयहे। योटरेनां। हिनरहरषकव। होनहारसोहोइ
है १ अवधपायउहअसुर। अंसयहकंसउपज्यो। वरनचत्योनयाचिन। चिंतजिहदोषजुसु
ज्यो। देवीकोदेवलनहिरघ। षेचरषेलनहिषरल। नृतप्रेतवेनाल। करहिरजनीकोलाहल। कोउ
सुकंसनिहमिलकरत। वेसीहीबुधआचरे। मानेनदेवउलोकमत। अहितकर्मसोअनुसरे
इतीदेवकीवसुदेवविवाहनं। देवकसुताजुदेवकी। सुंदरसुगनसुजांन। दईउनीवसु
देवको। पहिलेपीनप्रमान २४ लिषगियोनाकोलगन। पंचअंगसुषपाय। करमंगरनवसुदे
वकह। विप्रआंनवंदाय १५ छपै॥ वनवरानवसुदेव। आयमथुपुरीउछाहन। कन्क
कलसतोरउतंग। मिलषंनराचितमिन। सजचौरीमंमपसुगंध। विवहारजथा। विध वर
वरनीसोभा। विसेषसुलजोइमहासिध। कृतहोमउजनेनरहरसुकावि। वेदमंत्रवानी
विहतजुगवसनगाठजोरेजतन। कुयआनंदविवाहदिन ३२ करसंग्रहकरकवल
रमनरमनियरंगरस। विवधवेदविस्तार। विमलविस्तारविप्रवस। पारिजावरितेनोकि
कपजाव सुनकाजसवारिय पूनीकुन्ती प्रगट अषिलजगजसउधारियं नृपउग्र
सेनवढहरषनिज दिव्यसकलदायजदिये मिलजुवतिगांनमंगधवलजगवंद
नजाचकजये कन्कअष्टदसअतरथकीने देवकनृपतदायजेदीने
गजमदमतनृवरगुंजारत वहतउरितमनुसरतविहारत वनपटवसनकन्कम
यकिकनघावतघराजिग्नप्रातिमिलधुन। निकसरतरायलसहतनवीने। दुरंदम
तंगच्यारसतदीने सोभाजीनजरायनसाजे। विवधसोजपटदोराविराजे उपजसु
षेतजातइधकारी असीसहंसपमंगइधकारी कारनवसुध्यानकिहकीने दिव्य
अनेकदायजेदीनेदासीदासजयसनइधकारिय असीसहंसपमगअसवारीय
सबेकन्कघटवस्त्रसवारिय विधयुक्तसबेरयरहिविवाहयहजो

कंसी

॥ अथ कंस उतपती। कबिरोवाच। छंद पधरी। इक समय सुखद रितु बसंत आय। सब फूलि फल
तबन घन बिहाय। तिह काल बिमल त्रबलि त्रिबिध बात। सो गंध मंद सीतल सुहात। तरु लता गुल्म को मलत माल ब
न रंग उदप मंजर बिसाल। सर सरस सरोज कुद्दिय सुगंध। अलि जुथ भ्रमत मंद गंध अंध। बन बन बिलास ब
नितान ब्रिंद। जलकेलि जथा आतम अनंद। सुन बन बिहार नृप उग्रसेन। मिल समय समय सुख दिवस रैन। छं
द अडिल्ल। आगे एक लवा को उग्र असुर। पहिले निज यो कृत तो जुग द्वापुर। सो निरमूल हत्यो नारायन। पापी जि
ह जीय बांधव यर पन। बहु स्यौ सो इक रूप जमाया बल। फिर कालनेम नाम महाबल। वैरना ब बढ असुर बिबा
रे बिसरे नांहि बिरोध बधारे। चितत घात रहै सो निसवर। अवि लोकै को उ अपनो अवसर। राजा उग्रसेन पट
रानी मंजन रितु बेवी मन मानी। पापी इह जो अवसर पायो। असुर कालनेम सो आयो। द्रव इहन न मार
ग रथ हाक्यो। तिह षल बिद्र यहै जोताक्यौ। उर जन तिया अवस्त्रा देषी। बिषम भये कै बिरोध अनंग बिसेषी।
उग्रसेन को रूप करयो अर। निसा समय आयो सो निसचर। उग्र यह कपट रूप जो वान्यो। पटरानी सुनं
हि पिछांन्यो। इहां रितु दान दयो तिह आसुर। ज्ञात अज्ञात नयो आनंद उर। उग्रसेन संध्या ग्रह आयो। पे
ता कुन मरम यह पायो। असुर ग्रहन स्थित नयो त्रिया कै। तब तै उदर ताप बढि ताकै। दैत त्रिया को गर
न सुदारुन। करत उष्ट अभिलाष सकारन। बिवरन बदन देह अति बिकबल। दिन दिन होत सुरा
नी दुर्बल। नृपत त्रिया तन दसा निहारी। पुनता की इक सषी पचारी। सहचरीवाच। तिह पूछ्यो स्वामन तेरो
तन षीन होत काहे तै षिन षिन। रानीवाच। सुन सषी तो कहूं मरम सुनाऊ। पति को कहू कले जा पा
उ मन अनीला षफलेती मेरो। ता हि षाय गुन मान तेरो। कबिरोवाच। सषीन पदिव्रतांत सुनायो। ब
हुर राय को उगुनी बुलायो। कागद मय राजा तिह कीनो। देही मध्य अजका लज दीनो। नृपन बस
न सुगंध बनाइ। उग्रसेन मान कु नृप याइ। सो पुतना एकांत सुवायो। बनता कहले सषी बतायो। इ
हां रानी मन हरषीत पायो। पंथ परी मान कु निधपाई। बेबी उचक हियै पर अति बल। पायक लेजा
न इव्रि सषल। सषीवाच उहा। राजा सो तिह सषी रहस। सब बेक ही समझाई। दुष्ट गरब याके उसरह
को उग्र अरिष्ट है आइ। राजावाच। इह मंत्रिन को मंत्र अब। रह सकहै सब राज। है अनिष्ट उतपति यह
कर कुल लसो काज। १। अथ कबत मंत्रीवाच। उग्रसेन सो मंत्र कयो यह मित्री सबै मिलै। इह अनिष्ट
करु अहि नयो नावी संजोग मिल। वासंधर अरु वैरी बाध। दिन बदन नदीजे। जया जतन कान्वेसु
जांन। निरमूल करीजे। पृथी सवाप प्रथवी उगट। यहै नीत मारग अकल। आपनी राजरछा उचित
करत रहै राजा सकल। उग्रसेनवाच। सचिव मंत्र सुन उग्रसेन। यह मंत्र न्यारो। कुल जादव निक
लंक। बंस को धरम बिचारो। अबै लाबधअ नित चित। इह जु हम पै नहीं होई। इह बी माया उगम क
रे तिह लग कहा कोई। सुन अ सुनक रम संन्हत सब। जगत सुरासुर जोइ है। सो टरै ना हिन रहै रसु
कबि। होनहार सो होइहै। अब धपाय उह आसुर। अंस इहां कंस उपज्यो। बरन बज्यो नय चिंत। चित
जनु दोषा न्प्रजसुज्यो। देवी को देवल सदिर्घ। फिर खेल ही षल। भूत प्रेत बैताल क। रही रजनी कोला
हल। कीडा सु कंस तिह मिल करत। बैसी ही बुध आचरे। मानै न वेद कुल लोकमत। अहित करम सो
इ अनुसरे। अथ बसुदेव देवकी बिवाह। दुहा। देवक सुता जु देवकी। सुंदर सगुन सुजान
दइ कुती बसुदेव कु। पहिले प्रीत प्रमान। १४। लिषप त्रियोता को लिगन। पंच अंग सुध पाइ। क
रमंगल बसुदेव कह। बिप्र आंन बंदाइ। १५। कबत। बन बरात बसुदेव। आइ मधुपुरी उग्राह
न। कन्क कलस तोरन उतंग। मिलथं न्नर चित मनि। फूल चौरी मंडप सुगंध। बिबहार जथा बि
ध। बरबरनी सो ना बिसेष। सुन जोइस महा सिध। कत होम इ उजनन रहर सुकबि बेद मंत्र बांनी

पाय जिहगेर अवरको न जाय पोहरायन राषेच ज्ञपास विष्यानवीर जेमन विसास
सुनतनयो जन्म इजो सुषेन सुतनीजो उपजे नद्रसेन सुनचौथो भद्र उनामा सुभरूप अरु
पंचम सम दन नो अनूप पुन भगे नाम निहत्त इ पाय इह कम सो उपजे पुत्र आय कंस
हीय ते तेहत कवार पापी सो मारे सिलप बार जादव सुध रम जु तजि तेजांने अविरोधक
रे तेसबे आन ॥ उग्रसेन वीरोध ॥ जरभ इउलोह पायन जंजीर पापिष्ट पिताको दइपीर
संकट महादीनो उग्रसेन ॥ षलकंस पाट बैगेसुषेन ॥ वसुदेव रोहिनी नंद वास ॥ पहिले लेराषी
अप्रकास ॥ देवकी गरभ माया हरंत ॥ आकरष गुढलाइ अनंत ॥ ईहमे स्यो रोहिनगरभ आन
जगमरम सुपे का हु न जांन ॥ दुहा ॥ अतिसइप बलभद्र यह पाये जन्म प्रकास जानकनेकी
ने जुगत अपुन नंद अवास १ नंद महर के ग्रेह सब होत सुमंगल होय दुतिय नाम बल
देव को संकरषन कहि सोय ॥ २ ॥ इती श्री भागवंत महापुराणे मुकमारगे दसमे स
कंध अनुसारे भाषा बारह उनर हरदासेन वीरचिते कंस उतपाती देवकी पुत्र
बंधनो नाम प्रथमो ध्याय ॥ १ ॥ कविरोवाच ॥ छंद उअवसी ॥ इह समय मिले यव इ
ष्ट आंन पापीन जेन धरम हि पिछांन सग ससुर कंस को जरासिंध अब आन मिल्यो सो मदु
अंध अघ बकी बकासुर प्रलंब आय त्रनवर्त कषरासुर केसि ताहि इत्यादिक पापी जु रे औ
रै र गये अरिष्ट सब गेर गेर जब लह्यो जादवन दुष देन को उन गये देस तज चित अवे
न अकरूर आदको मन न उदास देष्यो जु समय हेर रहे दास माने न अदिन मिल दिन स
माज जो कहे कंस सो करे काज ॥ दुहा प्रसुतक ॥ भयो जु सप्तम गरभ गत प्रभु कउ हेका
रन पाय कंस हिक स्यो प्रसुतिका सो ऐकात सुनाय १ गरभ देवकी को गयो पाय कहु उतपा
तमु थराघर घर नगर मह वात सुनई विष्यात ॥ २ ॥ इती महामाया जसुदा गरभ उतपती
ईहा माया जस वदउदर आन वसी अज्ञान पल पल सोवा घत प्रबल ब्रजम हनइ सुवा
न ३ ॥ अथ श्री कृष्ण देवकी गरभ ॥ उतपत दुहा ॥ तब ईस्वर अंसन सहित कृत कारन
करतार कृपासिंध वसुदेव के चित्त कस्यो संचार १ कीनो प्रभु वसुदेव के मन हि प्रवेस प्र
मांन ता छिन मउ नमान कुउ दत भयेस ध्यादस भान २ ॥ छंद पा ॥ मन भाव धरे देवकी मांहि
निज घात हेन सब धन नांहि भगवंत हेत देवकी भास सुन मत मह जो दिनकर प्रकास
आभासो मिंदर माहि आइ जो मरम हद दीपक जोत नाई ॥ छपय ॥ देवकी गरभ दयाल अषि
ल भुवन तारन तारन अष्टम गरभ अनूप कृष्ण प्रभु आय सकारन ईह ब्रह्मादिक आंन गर
भ स्तुति गुन गाए जइ त जइ त जदुनाथ अमर मुनि हिय सु आए ब्रज के अनेक हरि दो विघ
न अरु वन वन हि विहारहु करि पावन न रहर पनत को हठ कंसादिक मारिहु १ अविध
पाय कलिजुग हि आय पूरन रितु पावस नभ जु मास रोहिन नषत्र वस सिध विभावस
असत पाष अष्टमी हेत मिल सिध जोग यह अरधानिसा वन बुधवार श्री कृष्ण जन्मा जेह
कृत उग्र करते वसुदेव के भाग उदय सन मुष भए त्रय लोक नाथ सुन अविर्भयो ग्रह अ
रिष्ट सिगरे गए ॥ १ ॥ कविरोवाच दुहा ॥ गरभ स्तुति ब्रह्मादिकन जो कीनी कर जोर गावे सु
नै सु गरभ के बंधन परे बहोर ॥ २ ॥ इती श्री भागवंत महापुराने भाषा बारह उनर
हरदासे ॥ न वीरचिते ब्रह्मा स्तुत न द्वितियध्याय ॥ २ ॥ कविरोवाच छंद पा ॥ जब
भयो कृष्ण को जनम जांन पय वदीन इय हरि ताप्र मांन महिमंगल घर घर अकसमा
त सुर सिध हरष मन नह समान पूर स्पर स्पर राजफु ल्लियस सरोह मिलन कुसम लतान
रहि तमोह ॥ चल पवन त्रा वेधा दिया दिसन चाहि अति सुषद रितु कृत वसंत आहि इह
वुझी आगन भग जरे आप प्रगटी सु जोत जनु प्रभु प्रताप अनंद भयो अमरन असेस वो
जे अकास उच धनि विसेष जिह समय हरष वड वरष फूल सुर लोक लोक मंगल सम ल

श्री मग श्री वान्तरी

वनसाथवसुदेवजांन। उनिद्यो फेरबालक प्रमांन। तातें अबसोपतबालतो। दिमांगजवदीजे आंनमो
हि। वसुदेव लेलेगेहबाल। कंसपहआयदरसीजकाल। कविरोवाच। कसजोहतेनहीबालकों। ससुर
कारजहेतेविनासेसोइ। चितमाकयहेनारदविचार। सुरकाजआजजेरूसवार। कंससौमंत्रनारद
सुकीन। दारुनविसेषउपदेसदीन। नारदवा। करिगिनतीअष्टमगरनकोई। आठमोगरनतोयहहो
ई। निसचैनबालबाकउनरेस। सबहतकजितेदेषउअसेस। नंदादिगोपजादवनजांन। एअमरअंस
अवितरेआंन। यनकोविसासकरियेनआज। कछुकदतओरकछुकरतकाज। उपज्योतवबियउत्र
आंन। मतकहैपितासोदवनमांन। कविरोवाच। बातनअनर्थनारदवढाई। परयरहिघालिउनिगोउला
ई। जोलोनहीपकुच्योयेहजाई। वसुदेवफेरलीनोबुलाई। वसुदेवलीयेआयोसुबाल। कतजोइ
सीसतिहचुमोकाल। उनिलयोबालवसुदेवपास। सिलहन्योउष्टउपजीनत्रास। वसुदेवदेवकीपक
रबांदि। मेलेलेकारायेहमांहि। उनिजरेलोहवसुदेवपाइ। जिहगेरओरकोउनजाय। पोहरायतराषे
वकुपास। विष्यातवीरजेमनविसास। सुतजन्मनयोइजोसुषेन। सुततीजोउपजेतदसेन। सुतच्यौ
थोमृदुनामासरूप। अरुपंचमसमदननोअनूप। उनिछठोनामतिरचदपाइ। इहक्रमसौउपजेउ
नआई। कंसहिएसेतेहतकुवार। पापीसोमारेसिलपछार। जादवसुधरमजुतजितेजांन। अविरोधक
रेतेसवैआंन। अथउग्रसेनविरोध। जरसदहलोहपायनजंजीर। पापिष्टपिताकहदइपीर। संकट
महादीनोउग्रसेन। षलकंसपाटबैठोसुषेन। वसुदेवरोहिणीनंदवास। पहिलेहीराषीअप्रकास। देव
कीगरनमायाउरंत। आकरषगृहलाइअनंत। इहमेलीरोहिनिगरनआंन। जगमरनसुपेकाहूनजा
न। दुहा। अतिसरूपवलनइहह। पायोजनमउकास। जातकरमकीनेजतन। आउननंदअवास।
नंदमहरकेग्रेहसब। हेतसुमंगलहोइ। दुतीयनामबलदेवको। सकरषनकहसोइ। २। इतिश्रीभाग
वतेमहापुराणेदसमोस्कंधअनुसारेभाषाबारतनरहरदासेनविरचितकंसोतपतीदेवकीपु
नबंधप्रथमोध्याय। १। कविबंदउअबरी। इहसमयमिलेसबदुष्टआंन। पापीनजिनधरमहिविबांन
सठससुरकंसकोजरासिंध। अबआनमिल्योसोमदाअंध। अघबकीबकासुरपलंबआइ। त्रनवक्र
षरासुरकेसीताई। ईसादपापीसबजुरेओर। वाएअरिष्टसबवौरवौर। जबलहोजाउवनउषदेन
कोउगयेदेसतजिचितअचैन। अकरूरआदकोतमनउदास। देष्योजुसयकैरहेदास। मानेनअ
हित। मिलहितसमाज। जोकहैकंससोइकरहीकाज। दुहा। प्रसुतकि। नयोजुसप्तमगर्भगति।
प्रजुकछुकारनपाई। कंसहिकयोप्रसुतिका। सोएकांतसुनाई। गरनदेवकीकोगयौ। पायकछुउ
तपात। मुथराघरघरनगरमह। बातसुनईविष्यात। २। महामायाजसोदागर्भतिपत। यहांमायाज
सवतउदर। आंनवसीअज्ञात। पलपलवाधतसोप्रबल। व्रजमहननइसुवात। ॥अथश्रीकृष्णदे
वकीगरनउत्पतदुहा। तबईस्वरअंसनसहित। कृतकारनकरतार। कृपासिंधवसुदेवके। चितक
यौसंचार। कीनोप्रभुवसुदेवके। मनहिप्रवेसप्रमांन। ताछिनमनमांनकउदत। नयेसुरुपदसनांन।
छंद। मनमावधरेदेवकीमांहि। निजधातहेतसबंधमाहि। जगवंतहेतदेवकीमास। सुजनमतमह
जोदिनकरप्रकास। आनासोमंदिरमांहिआइ। जोकरमहदीपकजोतनाइ। छपे। देवकीगरनदया
लअषिलजुवनारउतारन। अष्टमगरनअनूप। कृष्णप्रभुआयसुकारन। ईहांब्रह्मादिकआनगर
भअस्तुतिगुनगाए। जइतजइतजदुनाथ। अमरमुनिरच्छकआए। व्रजकेअनेकहरिहोविघन
अरुवनवनहिविहारिक्त। करिपावननरहरपतित। कोहवकंसादिकमारिकृ। २। अविधपाइक
लजुगहि। आयवनरितुपावस … अस्तपावअष्टमी

श्रीमता
२६५

विहत । जुगवसनगाठजोरीजतन । कुयआनंदविवाहहित । करसंग्रहकरकवल । रमनरमनीयरं
गरस । विवधवेदविस्तार । विमलविस्तारविप्रवस । परिनावरिलौकिकप्रकार । सुनकाप्तसवा
रियपूरनआकुतिप्रगट । अषिलजगजसउधारिय । न्रपउग्रसेनवढिहरषनिदेज । दिव्यसक
लदायजदिए । मिलजुवतिगांनमंगलधमल । जगवंदिनजाचकजए । छंदअरधसरी । कन्कअ
ष्टदससतरथकीने । देवकन्यपतदायजेदीने । गजमदमतभ्रमरगुंजारत । वहतछरितमनु
सरितविहारत । वनपटवसनकिनकमयकिंकन । धावतधरागिगनप्रतिमिलधुन । निकरतरा
यलसहतनवीने । उरंदमतंगच्यारसतदीने । सोभाजीनजराइनसाजे । विवधसोजपचदोरवि
राजै । उपजसुषेतजातइधकारी । असीसहंसपमंगअसवारी । कारनवस्तुइंनकिहकीने । दि
यअनेकदायजेदीने । दासीदासत्रयसतहितकारिय । सबेकन्कपटवछ्नसवारीय । छंद ।
विधजुक्त सबेरसरहिविवाह । यहांजांनविदाकीनीउछाह । संगन्वल्यौहरषसौकवरकंस । पंकु
चावनबहिनीहितप्रसंस । नगनीरथहाकतवितनाइ । यहांकुयौस्वारथीकंसआय । तहांआय
एकजोजनवरात । वसकरमवनीनवतअवात । जैसीकहुनावीदइ । जोगपउनिमिलेआनसो
इप्रयोइ । आकासवांनाछंद । गिगनगिराअनगुढनइयासमयजुऐसी । सुनीकंससोसवे । तहां
उरदाहकतेसी । रिमदंधमतिमुढकरतत्स्वारथजाकौ । तेरोहताअहित्तगरन । अष्टमहैयाकौ
यहसुनीगिगनवानीअसह । पापीकंसउरत्रासपर । परजस्योवितरथतैविसुन । इहांदुष्टमाढो
उसर । छंदउपरी । काढ्योषडगसिषागहिगाढी । कंसदेवकीबाहिरकाढी । काटनमुकुलझोगु
कलंकी । वितिजोसगपनदिष्टसुवंकी । अबलात्राहित्राहिउचारी । नयोसबदकोलाहलभारी
इहांवसुदेवनिकटतबआयौ । पापीस्विरतदेषदुषपायो । माहाअनरथविलोकधरममत । क
रजोरेधरधरउरकंपत । इहांवसुदेवविवास्योऐसो । कंसकुवारनरोसोकैसो । यहतोपतितस
रापीपापीमहाबलीआतममतथापी । अबतोकोउमंत्रउपाउ । विषमकालतेवियावचाउ । जो
सुतजामैकहुनजांमे । आयमहासंदेहजुयामै । लोपेयहैलीचमरजेहैहै । कहुकरतकबुउन
कैहै । नयोहोतनवतमजुजैसो । ताकौकोजानतहैतेसो । वसुदेववाच । नुवछनीजदुकुलम
हजाए । अरुन्रपनीत्वलावनआए । अबलाबहिनबावकोअवसर । धनआसाजुतवली ।
आपघर । बालाविप्रगउअरुबालक । इनकौबधअपनोघरघालक । एतेअबधन्रपतउर
आंनो । निजअपराधकवेदनिदानो । निदतकरमसुधरमविनासी । सोनकरहुजातेजगहासी
जातुममहामीवनयजानो । पापवमोइहवित्तापिबानो । करहुजतनबकुजीबेकारन । दि
न हतनदपिटरिदै दारून । आयुरबलयहदइवअधीनी । कलियुगवरषसवासतकी
नी परमाविधजोन्रपतपिछानो । जगमेअधरमधरमसुज्यांनो । जतनकरेजिहजिहन्र
पजोइ । कालबलिष्टनबाच्यौकोइ । पापाचरनकरेनहिन्रूपवि । सुषहैदिरघदुषदु
रमत । कंसोवाच । याकोवधमेरोहिततामे । जीयतरहैततोसुतजामे । करियैवधयह । विलम
नकीजे । जोनहिआपदीजमदिसुदीजे । वसुदेववाच । जोतुमडुसहमीचतेरुरहु । कंसकरू
इहजतनसुकरहु । याकैजोकोउबालकहोइ । स्रपतुमेहूंदेहूंसोइ । कविरोवाच । निहचय
यहवसुदेवसुकीनो । दुष्टदेवकीअनयसुदीनो । यहवसुदेवदेवकीगए । नयजुततहांवस
सोनये । जोसुतप्रथमदेवकीजायो । कीरतमंतसुनामकहायो । छंद । इहांप्रथमपुत्रवसुदेवआं
न पनजुक्त दयोसोकंसपानं ... इहांइकंसकबेनोदयालं जबव

बनजथामैसतकीन। इमहरहरूपप्रतियहदीन। अबकछनामनूरतउदार। व्रजमंकविय
धकरिहोविहार। कब्बवाचदुहा॥ करतमहा नयकंसको। जोतुममोकहज्ञांन। करिकुजतन
जोकछकहत। पेयहसमयपिबान। महरनंदकेग्रेहमोहि। अबदेकुषकुचाई। हितजसुमत
जहांपोषिहै। कुचपयपानकराई। कविरोवाचा॥छंदप॥ करिकुइमतहांतनतन्ककीन। उनवा
लन्नावववर्तेप्रवीन। इहांलियेमातदेवकीउचाय। लेलेवलायग्ररुकंवलाय। तहांदेषेअद्भुतचि
रततास। वसुदेवनयोग्रंतरविस्वास। ग्रानंदसलिलवढउरग्रमांन। समतासकस्योस्तकसि
नांन। इकग्रयुतधेनविधजुतनवीन। करिमनिहिगुढसंकलपकीन। दीनेलपेटपटजननिदाइ
लीयेपिताकछ्तवउरलगाई। जंकीस्वर्नछुटिपरीजांन। वसुदेवउत्रदेवतप्रमान। गोकुलग
मन। वसुदेवगोदलएजिहैवार। दुरगमकपाटषुलगएदवार। इहपरेपहरवाकछुनज्ञान। नि
द्रानुकालझंकेनिदांन। घननिसाग्ररधवजगिगनघोर। ग्रंधारइसोमिलकुग्रोर। बाएन
न्रवादसघनदुरंत। पसस्योतमहिगदिगंत। मघवाजलवरषतमंदमंद। छुतिजोतवदनग्रा
नंदकंद। इहांसेषनागफनसहंसग्राई। बितनाकरिलीनेचलेबाई। दुहा॥ मायाजसुदाउदर
मह। ग्राउनवसीजुग्राई। नयोजन्मताकोग्रनय। पेइहग्रवसरपाई॥ २॥ ताकहलेसोइतबे
माताग्रतहितमांन। देष्योसंततिमुषउलन। जन्मसफलकरिजांन॥ २॥ छंदप॥ नबतरिनसुता
केग्रायतीर। वसुदेवजुवाढेनयेवीर। जलबढ्योतटनमिललहरजोर। ग्रावरविषमपरिग्रोरग्रो
र। पावेनथाहकछुघाटपाइ। इहगौरफिरतनाहिनउपाई। वसुदेवकछचिंतवनकीन। नदज
मुनातबहीथाहदीन॥ नंददुग्रदारी॥ उतरनदीतबगोकलग्राए। उब्रवासीनिद्रावसपाए
दुगमकपाटषुलेयहद्वारा। समयकस्योवसुदेवसंचारा। पलकापरसोवतउसांपाई। जसु
मतलीयेसुताजुजाई। इहांजसुदाढकछसुवाए। ग्राउनसोकिंन्यालेग्राए। पुनिवसुदेववि
दघरपेसे। जुरगयेविकटकपाटजुजैसे। पाहरजंजीरग्रापनेपाइन। सोइरहेवसुदेवसुनाइन
दुहा॥ कछजनमवसुदेवके। देवकिगरनदयाल। कियेनिवासयहनंदके। प्रजुजगकेरष
वार॥ इतिश्रीना॰महा॰द॰स॰भाषाबाख्यन॰॥ श्रीकछनिजरूपप्रकासन॥ त्रतीयोध्या
या॥३॥ कविरोवाच॥ छंदेकवत॥ इहमायाग्रंसावतार। कियेरूपजुकन्या। दयारूपदेवकी
धरीलेगोदजुधन्या। बालरुदनसुनसहू। जगेजामकसोजान्यो। ग्रातुरकंसहिग्रान। विद
धइहमरमवषांन्यो। ग्राठमोगरभनयोमोवयह। सुन्योबालरोदतसही। करिजोरकंससहूसे
वकन। कथवृढाइसगरीकही॥ १॥ ग्रतिजंनातग्ररुसात। उठ्योसफातजग्रातुर। सुरापांन
वसविकल। गिनतनहीबुधमंत्रीगुर। नयजिहग्रष्टमगरभ। सुपेनयोमोषसुनायो। रोषन
इनपरजरत। धरेकरषग्गसुधायो। ग्रायोग्रसाधिग्रविवितइहु। जनकाकुनहीजांनियो
प्रतिमाविलोकउरत्रासवर। प्रांनविनासप्रमानियो॥ छंदप॥ इहांकंसजुमिंदमांकुग्राइ। उ
निवहिनगोदउचिकापाई। ग्रवकायलइकीन्याग्रनीत। कछुनाहिदयालज्जाकुचीत। किंन्या
सुपवारीसिलप्रकास। उछिगइकरनतेछुटीग्रकास। सोजइदिव्यग्रपनेसरूप। ग्रतिप्रनाम
हामायाग्रनूप। महामायावाच॥ बोलेसुगिगनमहविमलवांन। पापिष्टनतेहंताविज्ञांन। सो
घुगव्योहैप्रथीप्रमांन। मारिहैतोहिसमकासमांन। ग्रनकाजबालमारेग्रनाय। हथ्यारा
ग्रायोकहाहाय। कविरोवाच॥ इतनोहिमहमायाग्रनीत। उनिग्रपनेथानकगइउनिंत वि

श्रीमुखा
१८८

हेत मिल सिधुजोइयह॥ अरधनिसा बनि बुधवार॥ श्रीकृष्णजन्म जिह॥ कृत उग्र फल लेष सुदेव
के॥ नाइ उदय सनमुष नये॥ त्रयलोकनाथ सुत अवितर्यो॥ ग्रह अनिष्ट सग रे गए॥ १ ॥ कवि
रोवाच॥ दुहा॥ ग्रन स्तुति ब्रमादिकन॥ जो कीनी कर जोर॥ गावै सुनै जु गर्भ के॥ बसन दुपरै ब हो
र॥ २ ॥ इति श्रीभागवते महापुराणे दसमस्कंध नुसारेण भाषा बारवन रहरदासेन विरचि
त ब्रह्म स्तुती द्वितीयध्याय॥ २॥ कविरोवाच॥ छंद॥ जब भयो कृष्ण को जनम जांन॥ पयवही
को उ सरिता ब्रमांन॥ महि मंगल घर घर अक समात॥ सुर सिध हरष मन न हसमात॥ सरसर
सरोज कुलिय ससोह॥ मिल कुसम लतात रचित मोह॥ चल पवन त्रविध दिस दिसन चाई॥ अ
ति सुषद रितु कत वसंत आई॥ इहां बुकी अगन उबजरे आप॥ प्रगटी सुजो छिजनु प्रभु प्रता
प॥ आनंद नए अमरन असेस॥ वाजे अकास दुध विसेस॥ जिह समय हरष बरषै वरष फूल॥
सुरलोक लोक मंगल समूल॥ किनर सुर गंधर बज्ञान कीन॥ नाटक सुर किन्पार चित वीर॥ देवकी दि
सा प्राची अनंद॥ दीपत भयो पूरन कृष्ण चंद॥ सिर कनक मुकट मनि मय सुदेस॥ कुचित अति सुदरस
घन केस॥ रतनमय अवन कुंडल सुरंग॥ अरु मंद हास अक्रत अनंग॥ मनि सो भउर ज मुक्ता
न माल॥ वन अंग अंग भूषन विसाल॥ तन स्याम स घन वन वरन तास॥ करि पीत वस्त्र तडिता
प्रकास॥ चक्रादिक आयुध भुजा च्यार॥ निस्सि बित सुभ लछन निहार॥ देवकी तबै सुत ओर देष
विस्विस पुरष लबन विसेष॥ बकुवार वार लेले बलाय॥ सुत जन्म हरष उर न ही समाय॥ दुहा॥
दुष्ट कंस को दुसह डर॥ हित बिब पुत्र निहार॥ नरन नर लोचन प्रेम भर॥ धरन देत जलधार॥ २ ॥ दु
सह दसा स्व देवकी॥ देषी दीनदयाल॥ कृष्ण तबै हसि बोकलै॥ करकुन भय इह काल॥ छंद॥
वसुदेवोवाच॥ वसुदेव देष अदभूत बाल॥ करि वार वार वंदन कृपाल॥ प्रभु परम पुरष पूरन प्र
मांन॥ पायो न भेद वेद कु पुरान॥ अन पंक जोत तव अनाधार॥ पेल हिन सुरासुर वार पार॥ धावत
जिह मुनिगन ध्यान धार॥ चित वंत अगोचर रहि विचार॥ निगमागम बोलत जोन जांन॥ अवितरी जो
तममु ग्रेह आंन॥ करु भाग्य वान मो सो न कोई॥ हित कृपा अंत पर कहा होइ॥ दुहा॥ है जाके कच रू
प महं॥ मिल ब्रह्मंड समात॥ ते प्रभु मेरे अवतरे॥ ब्रज कै है यह बात॥ रूप अलोकक रावरो॥ वेद
विदत ब्रजराज॥ समय निहार विचार सुष॥ यह उपसमी ये आज॥ अब तो अद्भुत रूप इह॥ दुरि
न हि जइ देव॥ वह हत्पारो आय है॥ नव करू लहि है भेद॥ आगे मारे बाल इन॥ निरदय निठुर अ
नीत॥ सुध आए आवत सहम॥ पापी कहा व्रतीत॥ श्रीकृष्णवाच॥ कालंतर आगे किकु॥ नो रिष सुतपा
नाम॥ ताके भइ प्रभु पतिब्रता॥ विप्र सुनामा वांम॥ तप साध्यो अति उग्र तिह॥ मिल रिष त्रिया समेत॥ देव
न जो दुरलभ तर रस॥ हरि दीनो कर हित॥ छंद॥ इह कह्यो वचन भगवंत एह॥ जिह देत कह्यो वचन
द वन देह॥ या को अमोघ फल लेकु आज॥ कृत करकु जु इस न चित काज॥ रिषरोवा॥ कर जोर क
ह्यो हे पतिसकांम॥ वर देकु हम दियह धरम धांम॥ अवितर कु नाथ मम उदर आई॥ सदा तुम देव
दीनन सहाई॥ श्रीभगवतवा॥ मै दीनो वर तुम कूं मदंत॥ यो ही जु हो य है कहि अनंत॥ वर दयो
जथा वं बितव सेष॥ स्वस्थान पधारे सदन सेष॥ दुहा॥ विप्र मात सुत पापिता॥ विहत धरम विश्राम॥
प्रगट भए पूरन पुरष॥ विष्णुगरभ यह नांम॥ कालंतर वीतिक बुक॥ जनम सुइ जो जान॥ कस्यप भ
यो प्रजेसपत॥ पतनी अदिती प्रमांन॥ अदितगरभ कु अवितर्यो॥ वामन विप्र विनीत॥ कियस हाय
जब इंद्र को॥ पुन बलब बस्यो पुनीत॥ ते कस्यप वसुदेव तुम॥ अदित देवकी माई॥ तीजे जन्म सु अवि
रै इह ब्रजमंडल आई॥ छंद॥ मै जयो जन्म तब उदर मात॥ वर दयो कृतो पहिले विष्यात॥ करेव

समात ॥ गोकुल कुयमंगल ग्रेह ग्रेह ॥ महि द्धन वरषे मन कुमेह ॥ बन बन इह आवत तुव
ति बृंद ॥ मिलवलत उर दग मंद मंद ॥ गह गहे कंवमंगल सुगांन ॥ वारत न वई निछ्वन विव
धवांन ॥ आरती कलस मंगल बनाय ॥ ब्रज वधु नंद रानी वधाई ॥ कै निकट वदन बाल
क निहार ॥ आनंद पीवहि जल वार वार ॥ दे दे असीस जाचहि दइव ॥ ज सुदा के बालक चिरं
जीव ॥ यह यह तै आए गोप ग्वाल ॥ सो लीने दधि नाजन विसाल ॥ आनंद मगन सुध नहि न
आंन ॥ सब कर तपर सपर दधि सिनांन ॥ बन दही हरद मिल पीत वांन ॥ मनु अंगन काच
हीरे अमांन ॥ इह वही दही सरिता अपार ॥ दध करद ममा औनंद द्वार ॥ आनंद के लक
रकर अन्हाय ॥ पट वसन नंद पैस बन पाय ॥ अरु गांम गांम तै आइ गोप ॥ आनिद तन
बनवसन ओप ॥ इह आपन दसुर गुर अराध ॥ सुन कीनोन दीनु बसराध ॥ ब्रज विकत
कुल बोलि विख्यात ॥ पगधोयक रीइ जाव नात ॥ सुविनीर नंद कीनो सिनांन ॥ आवरत व
सन पट बकुत आंन ॥ कत जातकरम विधि विहत वेद ॥ अरु दांन उनि कीने अभेद ॥ जेष
थ मवस्तता सुरन जांन ॥ आकृतन ततांव कुरंग आंन ॥ कंचन मय भूषन उचित कीन
बन विमल पाट नोइ नवीन ॥ सुन घाट दाहनी कनक संग ॥ आबादि पूट बरउतंग ॥ ई
तादिक परक अवत आंन ॥ द्विजन्ह धेन दिये दुजन हांन ॥ अरू न्हराहि बना दिये अरो
ष विधवत विधांन कीने विसेष ॥ जाचक जन मागनै स्तत जांन ॥ बकु पाइ बोल जयज
यत बांन ॥ ध जन कल सबनेउ तिथां मधाम ॥ वहि विंदन मालागं मंकाम ॥ सुनथं नथपेखं
गनउतंग ॥ नीसान नाद पूरित निहंग ॥ संगजुवती जन सजि थन सनेह ॥ गावति फिर गोपी
चली गेह ॥ किय अविध पाय इरन सकांम ॥ नहि तिन जोइ दे योक धनाम ॥ इति श्री नागर
तानदासे नाभा रतन श्री कृष्ण जातकरम कृत पंचमो अध्याया पाकविरावा
देदुवा ॥ इक जुवती हतनाजियय साथ ॥ उनक सकरन पवइ उपाध ॥ विधजुक्त वसन भूषन वना
व ॥ नामनी करत अतिहाव भाव ॥ लटिकुटी सुभोतिन सरस वेन ॥ निरसंक भ्रमावत दिरघ नैन ॥ उ
वकत कुचसो ना अंग अंग ॥ मुरिमरि हि चितव तगत मतंग ॥ पापनी षात मुसकात पांन ॥ उफनात अं
गसोता अमांन ॥ वग वगे रहे सब गोप वाम ॥ वसमोह परे छबि देष [illegible] वांम ॥ तन रूप अनूपम
वसनता हि ॥ चक रही गोपका वदन चाहि ॥ वसनावी का कुनपूछ वात ॥ तू कौन आहि अरु क
हां जात ॥ इह सम यनंद के येह आई ॥ वकुधां जग चितवत चितवा हि ॥ कनक मय विहित पालना
कीन ॥ नग लटकत मुक्ता सर नवीन ॥ घन मोलर तन मनि जडत घाट ॥ पट वसन विराजत तरो
रपा टप तनाति ह फूलत कुधपाई ॥ उहां उ छतनानिकट आइ ॥ उर बालद सामह रहे देव
न समजै पो अगन कनका सन्नेव ॥ विसलेप कुचन अंतर विकार ॥ पापनी लगीय इक रनप्यार ॥ ली
ने उवाय तहांनंद लाल ॥ पल बाल लरू वत करत षाल ॥ पापिष्टा दीनेउ रजपांन ॥ पय संग सो षर
तनाशांन ॥ मुष मंक कि धक कुच एक मेल ॥ कुच उतियग सौ कर मुष्टि केल ॥ कुच पांन करत आनंद कं
द मुसकात मनोहर मंद मंद ॥ अति वृथा वहीनये विकल अंग ॥ गए न्हूतना वबलबुध नंग इहल
गी कुल्हावन कुच अधीर ॥ प्रतिअंग अंग नइ विषम पीर ॥ बूटे षनिज बेबलबल अबेह ॥ दुष्टा सुक
री बक उदीर्घ देह ॥ इहांक धंप पयोधर धर उबार ॥ दीनी सुबाहि रनगर कार ॥ सट परी को सब टपाय
सीस ॥ वंकर करी तिदमर ब्बीस ॥ तरलता टबेजे परतता हि ॥ एते सकब रनन एआहि ॥ जीय जात

श्रीमत
१८६

लपातकंसकरनौविहान ।निसनइदंनदैवरषमांन ।करिसनाकंसबैगैकुचित ।चति
उष्टमिंत्रहाजरअनीत ।सुधकरिकरिकिन्ना वचन साल ।करिकंसको धमनमहक राल ।त
हामिलिआंन नवतम्र तंत ।मीविनसंपूब्रोम्रलमंत्र ।किंन का वचन सब प्रगट कीन ।सुनि
मित्रीमिंत्रबोलेप्रवीन ॥मित्रीवाच॥ करियेनसोमवइहवोरकंस ।अविताजपेजउअमरअं
स ।अमरनकेदेषिबलविधांन ।निरनयपयलअतिपोरषनिधांन ।मिलत्रासकंप उठचितमां
हि ।जबपरेकवनतबनागजाई ।ब्रह्मासौतपसीअबलबुध ।पूजेनताहिकोतयहप्रसि
ध ।केरुद्रनिहारीरहितराग ।वनवसतइलाव्रतजुतवैराग ।हरउस्योरहतएकातहोइ ।
कऊताहिदिष्टदेषैनकोइ ।मुनिआपदग्धलज्याइमांन ।सुरराजरहैकऊनयसमांन ।हैस
त्रवजदपीमहाहीन ।पैसंकनियततद्यपबवीन ।प्रभुदेषतैऊकंटकतनप्रमान ।पदगंकृत
करतहैंविकलप्रांन ।अगनकनअलपआमयअसाध ।अेहोयबधउपजैउपाधा ।वहि
परेतबैकबुनहीवसाई ।प्रभुकरिऊसमकपहिलेउपाइ ।निहचैसुरपोषकमषनिदांन
सोकरऊबाधविप्रनसमांन ।अमरनकेसाधकइहउपाय ।रावरैअेयलगकहतराइ ।इ
कमंत्रसुनऊप्रथीसआ[illegible]ज ।करतैनविलमयाजतनकाज ।ब्रजमंडलमहबालकवि
सेष ।दससद्यौसउरैजनमेसुदेष ।उनिहतऊतितैजिहतिहप्रकार ।बलबलकरिअवतोइ
हविवार ।हैनिउनपानसिस्पानिदान ।प्रभुतिनहिदेऊअज्ञापमांन ।कृतउष्टतितैसबविदाकी
नपरिप्रांनघातविद्याप्रवीन ।पूतनाआद्यदेवलेपापबलकारक ।बांधेसीसबाप ।पापिष्टचले
आदेसपाय ।अजजूथजथावृकउधितआइ ।गतनइअगमइहविरतगुढ ।मायाप्रपंचजां
मौनमुढ ।मषबाधकरेअसुरनसमूल ।सुरराजसुनतउरउवतसूल ॥दुहा॥ इहांकिचासौ
कंसइह ।जोबनमदधनराज ।बालहतेमैदोषबिन ।कबुसस्योनहीकाज ।वचनअमरवि
स्वासतै ।मैजुवहिनकेबाल ।सुनकज्योमारेसबै ।करयोअनरथअकाल ।कहिहरअष्ट
मगरनकौ ।अमरवांनआकास ।नयताहरकिन्यानई ।सुरनकहाविस्वास ॥२॥ कारयहतै
देवकीदएकाहिवसुदेव ।कंससुस्पामउपायकर ।नाषतवचनसनेव ।नलीदीनवतव
ता ।होनीहोयसुहोय ।अमरऊबोलतकवअब ।कहाकरेतिहकोय ।नवनटरेनावीअ
नय ।सुरासुरनऊसाध ।करियेषिमासुसरकृपा ।इहमेरोअपराध ॥७॥ ॥वसुदेववाच॥
दो कसौजोरिवसुदेवकर ।चितमहसमयविचार ।नावीवसजोकबुनयो ।वाहिनकबुउपचार
॥७॥ ॥कविरोवा॥ गएतबैवसुदेवयह ।मानकुसलयहमोष ।कहानैसोजोकंसकोदेतअदोबन
दोष ॥८॥ कंसहिकोकूनरनकह ।आएनंदअहीर ।समजायोवसुदेवसो ।वेगसिधावऊवीर
करियेरक्षाबालकन ।अहोमित्रयहकाल ।अबब्रजमेउतपातअति ।सुनिहोअंतरसाल ॥९॥
॥इतिश्री भागवतेम० मुक्त० भाषाबारवनरहरदासेनविरचितं ॥किन्याचनेनंद्रजब
लबंधचतुरथोध्याया ॥४॥ ॥कविरोवाच॥ ॥छंदप॥ अबनंदमहरकेघरअनूप ।सुतनएसां
मसुंदरसरूप ।बतीसमुलबनउरषवेस ।अंगअंगविराजतहैअसेष ।अरधायुविती
तेसुतअनंद ।निरष्योमुषसुतकोमहरनंद ।प्राचीनकर्मफलअबिलपा[illegible]इ ।उधारउनय
कुलउत्रआइ ।दावानलपसस्योजोउरंत ।अरुधरनधांनसुतकअनंत ।बऊऔरवरष
घनवितवाह ।पूनयोमहरघरघरउबाह ।मुषदेषउतारेलूनमात ।सुषनदौसुपैनहीउर

री॥आयअसीसनदेती॥ब्रजवनितावाच॥नएमहरअहीवरुभागी॥लालहिदीवोटजुनेकनलागी॥
कविरोवाच॥दुहा॥गोदानादिक दानगिन करे नंदतिहकाल॥मंगलवजेनिसांनमिल वचोकुस
लसुबाल॥२॥असुरत्रणाव्रतकोयहां॥नासकसोनंदनंद॥मंगलघरघरघोषमह उपजेअतिआनंद॥
त्रणाव्रतबध॥कविरोवाच॥दुहा॥असुरनकेबलकायअति अरुसुतकेवयअंग क्रमयुतमनमहि
महरके ईचरजनयोअनंग॥३॥सिसुदेषतकौतनकसो॥अतिपौरुषबलएह॥मनहिसमातनमा
नके॥सोकउपजसंदेह॥४॥घटघटव्यापकस्यांमघन॥अंतरजामीआप॥हारकसदासुनावईह॥परति
तकोपरिताप॥५॥छंदचुअखरी॥एकदिवसजसुदाअनुरागी॥सुतहिखिलावतअंतसभागी॥ईहां
कृष्नकहिआयजंभाई॥दिवीमायाअगमदिषाई॥वदनकोटब्रह्मंडविलोकौ॥रहतनविस्मनिरषम
नरोकौ॥सरसरतापरबतवनसागर॥धरनअकासदहंसउडसिसधर॥षांनष्यारत्रवनूतअवंकृत
महिचोरासीलाषसुमंफित॥जगजडजीवचराचरजेते॥तिहछिनमातनिहारेतेते॥तहांजसोदामंत्र
लोकी॥कांनरकेमुषमांझविलोकी॥उत्रहिहृरनव्रमप्रमांनो॥जगआधारजगतपतजांनो॥पुनप्रनुमा
याप्रबलप्रकासी॥वहेमातसुतहितअभ्यासी॥इतिश्रीभागवतेमहा॰पुरुणंदस॰भाषाबा॰न॰
इतीकृष्नमुखेविस्वरूपविलोकनंसकटासुरत्रणाव्रतवधनौनामासप्तमोध्याय॥७॥क
विरोवाचछंदउधोर॥जबलगेईहवनलासे करटेकचलतकृपाल॥हवरिगतअंगनमांहि॥ज
वकबुवाहिरजांहि॥यहलेतमातउठाई॥जिनबालबाहिरजाहि॥कचस्यामसघनसदेस॥व
नअलकबिथुरविसेस॥सुनविकसवदनसरोज॥मनुलजितवेषमनोज॥जुगनैनषंजनजोप
अतिनेदहिष्टअनोप॥मिलकुटिलभ्रूहमरोर॥जुगजानमधुकरजोर॥अधरनरतअनूप॥रदव
जुकणिकारूप॥विधजुक्ततुतरवेन॥मनपटतमंत्रजुमैन॥रहिकंठसुषदत्ररेष॥वनरूपसीवचि
सेष॥उरसिंघनषरसचाल॥बियजोइसिसुमनुबाल॥लसकमलकरतललाल॥वनबाहुदंड
विसाल॥कटिकन्ककिंकनकीन॥नगजटतिऔपनवीन॥सुनफनकनूपरसद॥वनचलतपैन
विहद॥लगिजबेदोरनजाल॥ढिचकाबउरफविसाल॥मुषहेरषनिरषतमाय॥सुषअतुलउपजि
सुनाय॥इहसमयनंदकुवार॥ब्रजकरतबालविहार॥अवरामकृष्नअनूप॥सुनगौरस्यांमसरूप॥
संगलियेसषासमाज॥वयरूपसमरूविराज॥इकगोपकाकेआइ॥उनसुनिमिंदरपाई॥मिलध
सेग्रेहमझार॥नवनीतपात्रनिहार॥छीकाप्रलिबतसोइ॥इहहस्तगतकुनहोय॥उचोसुउरगम
आदि॥तिहकरनपऊचततादि॥इहकृष्नकरतउपाय॥इकधसोउषलआदि॥वेवारतिहपरवा
उ॥ताकंधचढततकाल॥निरसेषमाषनलीन॥निजसषावांटजुदीन॥इहवीसग्वालनआय॥सोबार
रोकसुनाय॥मुषमांझदधहरिमेल॥कियकृष्नबलयहकेल॥व्रियनयनमांहिनिहार॥दियेवदनलेप
यसार॥रहीनइनमीहतनार॥मिलसषाभाजमुरार॥छंददैअषरी॥अवरदिवसकाहूयहआए॥
उनदधइधनबाहिरपाए॥तहांयकसषाधस्योग्रहिभीतर॥अविलोकेभाजनतिहअंतर॥अंधियारेसो
अतिअकुलाई॥बाहिरसंतिहकिष्नबुलाई॥नयोप्रकासरत्नमयभूषन॥वाटदयोदधअसुरविदू
षन॥यहेषायदधबाहिरआए॥मटकीचानेयहनीतहांपाए॥मटकारीतादेषेमिंदर॥करश्लाघमी
हतकरसूंकर॥इकदिनकृष्नअकुलेआउन॥हेकोउसंगसषातनादिन॥यहगोपीकेग्रहमधआ
ए॥पैमाषनवकुतेतहांपाए॥मिलमुथंनमाफमनमोहन॥निजप्रतिबिंबविलोकचकितमन॥श्रीकृ
ष्नवा॥लक्षोकइनतिहबिंबहिलाले॥हमतुममिलबेदेइहमाषन॥इहममभातकुतानसुनावकु॥अ
रुहमसंगनितषेलनआवकु॥एककवलमुषमेलतआवन॥तामुषदेतइतियप्रकलतन॥क

करीपापनिउकर। सुनगिरिजोकुन्हलेसंभार। इहांआयगोपगोपीअज्ञांन। सोपरीदेषपरबतस
मांन। उरउपरदेषेकृष्नआई। सुन्नषेलतहैअपनेसुभाय। उरलाइलयोजुवतीउठाई। बहु
वारवारलेलेबलाई। उनदयोपूतजसुदाहिआंन। मातायहसुतकीकुसलमांन। अविलोकलो
नराइउतार। अरुदेतकृष्नपरदिबवार। गोमयमिलगोरजलायअंग। गोमुत्रन्हवायोनीरसं
ग। बहुधेनदइविप्रनबुलाइ। सुरककवरामरक्षासुनाय। सुतकुसलजानिबोलनसुनाइ।
उनमनकुजसोदापानपाय। लालदिखराइउरलायलीन। दुषटरेउससदकुचपांनदीन। क
रन्नरदेकंसदिसावकास। इहांचलेनंदसोचउदास। नंदवाच। मिथ्यानहोययवसुदेववांन।
जिहदयोनेदषलमरमजांन। कविरोवाच। सोचतसेमोचततउरधसास। इहांनंदमहरआएअ
वास। दुहा। कृतोदसोवनकोदिवस। इहापूतनाआइ। करेजुजेसोकमकोइ। उनतेसोफलपाइ
गोकलआएनंदग्रह। करनरयाहीकाल। पाएमांनकृपानसे। कुसलविलोक्योबाल। २। मरीपूतना
कृष्नकर। उनितिहसलगतपाइ। हेसोसाषजुदसममह। सुनिहैसंतसुनाइ। ३। एकमासकेजब
नए। कुलदेवश्रीकंत। महाउपद्रवघोषमह। उपजनलगेअचिंत। इतिश्रीनाग० महापद्स०
नावा० पूतनाबधषष्टोध्याय। ६। कविरोवाच। दुहा। देवस्थलइकदेवको। कृतोमहावनवीच।
षेलततहांमिलकंसषल। निसाचरनसोनीच। इहअवसरवेदिअसुर। मिलेसषासबआई। म
हाउपद्रवघोषमह। करिहैकंससहाइ। २। छंदउअषरी। इहमायाबलकलउपायो। जसवद
जांमोमेरोजायो। स्यामदिमातनूघाइसुवाए। पलनाकन्करत्नबिबबाए। विबमनागसकटके
पलना। नेतिहबादसुवाएललना। सुतकेगरनहिमहरसनागी। ग्रहव्यापारकरनसबलागी।
निसचरआयसकटदिगनिरदय। कीनोआंनप्रवेसमहाकय। पूजीघातजुअसुरप्रवीनो। कृष्न
हिदावनिद्रावसकीनो। अंतरकृतोनिकटलगआवन। प्रभुतहांदेष्योदुष्टअपावन। मोहनवामच
रनसैमार्यो। प्रबलप्रिष्टनरधरनपबार्यो। अयनागधरनीमहअटक्यो। पेसोइसकटउलटलेप
टक्यो। दुहा। सकटासुरतोर्योसहज। अंगविभुसेवकुओर। कीनीएकहीमासके। कीडानंदकिसोर
३। इतिसकटभंजनं०। कविरोवा। छंदअषरी। इकदिनगोदलीयेआनदही। मातषिलावत
तबालमुकंदहि। जबप्रभुउसरआगमनजांन्यो। आवततृणाव्रतउनमांन्यो। भारीकर्योमाततै
आपन। उतरगोदतेलोटतआंगन। याहिसमयतृणाव्रतआयो। दारुनवातचक्रदरसायो। उरेपात
तृणचक्रप्रकारो। अरधदिवसतहांनयोअंधारो। उरयतरेणुकंकरीऐसी। जिहतनलगतगिलोलाकै
सी। दुरजनलाजग्रहनमुपेठे। जथाबालतरुनेबुधजेठे। पापीअसुरदावइहपायो। अतरिसन
र्योतृणाव्रतआयो। यहांषेवरतिहकृष्नउठाए। मरूतचक्रमेहयालनुमाए। सीसप्रकासलगेपीति
हस्आसुर। संगहिलगेपानयोरहसकसुर। कंठग्रहनबालककीयताको। इहाकपटबलबूड्योवाको।
सिलपपर्योनिसाचरसोई। अतिदारुनरवबृजमहहोइ। तृणाव्रतकेप्राणततबिन। निकसेनइन
बाटबूटेतन। कृष्नबालकोतकयहकरीयो। पर्वतमनकुवज्रहतपरियो। इहांघोषजनआतुर
आएप्रभुतिहुउपरषेलतपाए। नंदउठाइलायउरलीने। कुसलपायसुतहितैसीकीने। पुत्रइहांज
सुदानहीपावत। मनसोचतसबदेवमनावत। अबषेलतबालककितगइयो। हाहदईकहाइहुउ
इयो। याहीसमयनंदग्रहआए। पूतकुसलषप्रांनसुपाए। धरनीकहलेदीनोबालक। घरकोसरज
अरियहघालक। ... जयजयब्रजवनिताजेति दो

पहिलेद्वापुरयुगप्रगट हुतयह्नयोप्रकार मुनीनारदकेस्रापमर नयेकुमेरकवांर १ सुतदेकुतेकुबेरके
नलकुबरमनग्रीव धरजोबनमनमदमहा सोउष्टनकीसीव २ त्रियनसहितिअवस्ततेकरतगंगजलके
ल सुरापानबसमनमदन मनतनलज्यामेल ३ मुनिनारदयाहीसमय सरतातटसतनाय वीणापानजु
वानवर सोकाकलिलसुनाय ४ सोरठा लएवस्त्रवसलाज देषोजबनारदद्विवस संकुचेत्रियासमाज
नामननयत्रासतन ५ दोहा ऐकुवरमहामदअंधआप परदरनयलज्यापगटपाप इहामिलोअसु
जनवतअग्रोन कहुकरीननारददेषकान करजोरनवंदनप्रणतकीन बुजवरविसेषआसिषनदीन
तनकुतेनगनमनमदमत्त ईहीजरहेरसरंगरत्त नारदवाच रिषरोषवचनबोलोरिसाय पापिष्टबकेअ
तिविनवपाय बकुड्बयेहवैश्रवणबाप यातेधनाधितमनयेआप तनरूपगरनतुमबकेतास सोउना
सहेतकेसोविसास पोषतजिहनिसदिनसमयपाय नवअष्टदयानोजनवनाय सोगंधविवधवासनसुरंग अन
मोलकनूषनअंगअंग सुषवासकुसमसज्यासमांन सतजूथदासिकासावधांन वनितामुगधमध्यावि
सेष अतिरसविलासविलसतअसेष इहदेहगरनतुमवढोआज सुषपायराजसंपतसमाज ऊनसु
नकुदेहताकेप्रकार बिनमांफकलनजलहोतबार जलसहंसकारकृतकरूजोग नवनहसततो
बलजंतुनोइन अरुषातकिकुकमकुलअघाय विटहोतकलेवरसोसुनाय परलोमपिफयत्रयप्र
कार तिहदेतगर्नमांनतगवार इहदेहउष्टतुमतजकुआप तुनहोकुजमलअरजुनसपाप पेम
धुरमंडलजनमपाय जदजोनसुगोकलनजकुजाय निसदिवसनगनतननिराधार उनिसहौसी
तजलतपअपार मिलजोरजमुनअरुजुनसमूल कृतिजोइहोकुकालदीकूल कवित्त बिनमांफ
उतरजबगइबाक वउकंपवदननहीकुरतवाक पहिचानीतहांनारदप्रनीत सअरहेजोरकरअ
तिसनीत नलकूबरउवाच वसहीनजावकहिविमलवांन मुदयोआपहमजयोमांन तुमदंडअनुग्रह
जोइदेव नवकहोहमकुउधारजेव नारदवा सतद्यसवरषजदजोनसंग पाविहरदकुउरमदभ
संग कलिप्रथमवरनकछावतार नवहोकुउतारनब्रह्मनार अंबाकरकुवलबंधआपउनकरहे
तिहारेनासपाप कवित्त रिसदेसरापनारदरिषेस पुनकस्तोबदरकाश्रमप्रवेस नलकुवरअरु
मणिग्रीवनां कुबेरउनयकिंकरसकाम उंनतदांतासवंचतनपाय जदजोनसुगोकलजएजाय
लहिजोनजमलअरजुनअजांन नारदसरापजुगरतनिदांन इतिश्रीना०महापुराणेनवमो
ध्यायाए दुहा सुतकाजेमाषनसुकर मथ्यकादितदधमांहि हितकदमकेजननहित बिननप
तावतबांहि ६ बदडुअषरी मातप्रातहीमांडमथांनी अद्भुतनेतरहीतहांआनी मधुरदहीमेस्रो
तिहमांही सुषहीकरतमथानसनांही सबहीतेउममहरसवारे दहिबिलोवतअवराधारे करत
आपश्रमसुतहितकाजे बिमलकरनविलियावलबाजे सुषसज्यासोवतहोसुंदर कुवरजडोच
षमीडतजुगकर कहतसुआयोकवरकनइया मोकूमाषनदेरीमईया गहिरस्तोकानमथनि
याकोगाढी चकितजसोदाचितवतठाढी महरवाच लेउबलायमथनदेलालन मेरेद्रुतहिदेकुमा
षन कवित्त कान्हरकाजेरुधकढायो याहीवीचसुपेउफनायो मथनीबाकजसोदामाइ यहा
देरिमिदरमेदआइ बदडुअषरीडुहा हुतसाधारनजकुकर पायोसुतपरवान सुतहेनुगतव
सेषगन देरीमहरनिदांन ७ बदडुअषर लिदरबीकरडुध्वलायो वारबांटदेतनवनायो कान्ह
उधावसअतिरिसकीनी दहीमथांनीफोरजुदीनी अंगनकीचकेलदधऐसो सोभितमहीसरोव
रजैसो दुहासोरठा तबैकलअतितास नाजउरयोउजेमवन यहपायोअनियास नाजनषन

दोहा। वाग्बदकौ नव स्याम घन आई मोहन चिर नंद मुसकाई। नागर चाय लाय रज लीनौ। क्र
तहर बन लन सौदा कीनौ। मदिर बलाय जब मुसकावै। आनन अपनौ चित लभावै। चौपाई।
मुद्रित नच यौ नावम ह्या। काहे पर घर जात कन्हाया। मैरे दृग सदी घर मावन। प्रतिमुनलाल
वदथे आवन। वर घर जाय कव ह्रावद पावत। कानरमा बन नौ रक रुमन। कवित्त। अपर दि
सकाऊ गृह आयै। संग सखा नंद लाल सवा सुहाए। जन सब बछा जेपेरम नंदपसे। नन वंचन क अचुनगी
तिने से। जन नन घरे सौ काद धन नाननं। मोरन न लग विलोकन कलमन। अतिन पाव विलोक जै। पति
न लगन हीलात पढुंचे। कहन लसे अदभुत मत कीनो। नवीन कुटी कर धर लीनौ। सब पदकन तर
लकुटी संचारी। न पैठि तिसु मरदन नारी। धृली लहो अविरल द धारा। पर स आङ्गा दकर
कथारा। चक माद सब सपा अघाए। पानघ रेवध अति सुखपाये। वादी समय पेख नी आई। कवि
वौ तीन जगायक कन्हाई। किन धपाव सुछि निहारत। विपमनचाल सुनि रत चिनारत। दिन सक्षप
रज सुदर्श नंदन। आनेक रित मृतिका नछिन। करत उदां कि समपा विजो बीरा। रखो नहीं ना कुम
राको। दृश्ये बाल सो दरे वरि मायो। नहिं निकस जमुदाप आयो। जोर पन्यो बालक नाई छिन। वाह्यो
कहन कान कनदान। दोहा। मैरे ष्यो अबही रीमह्या। करत उपमाही पान कन्हैया। कवित्त।
लेत छिका करन सबै नागी। सो आइ तहाँ दीर सनागी। नीजर्ड मुखमारी लालन। तिहु बर घर स
पन लाग्यो तन। सवैया। मनर सि प्रल नज सबम आई। पलक ओ लेपारी वाई। श्री कृष्ण वाच। दग
जल नैन लकुटीया के। करधर न निहारत कापत घर पर। तेलन कै उसास सब न्यारे। मई पामोहि छिन छि
न समारे। रोय हम पारि माग्यो मोहि। तिहल वा र वरद काचन नीहीं। सबनि कुकरे देखा न मिलाई।
मेरो मुख अवि लोक रीमाई। कवित्त। उन पौक दिन मुख नमपसा सौ। नित नमा नतिर सो विस्मय
हासौ। उन न गौ जनिद को पावन। मझ री पन वपद सुहावन। नात समंद निहारी स री ना। सनप
पात नुपन मसरता। अविल वना सपति ना रहसारा। परवत अष्टकुली अनपारा। सो लख आवि
हार स दिन कर। न धन पवन तारा गिन न गर। निगम क्यार नन रुन उरानां। मिलन चनां नचर
न रमाना। दिवे राव क सरित कदा न वा। किनर जन स गनै सर गंधुव। सगन फोरं नेतौ स सबै सुर
सरै स अच्छा। सीतरांरि छोप्य। मेघ वर्यो द सन न मन मालां। उन न तहां पग स अष्ट दिगपाला।
प्रण पवनद कप हरदि न दिसि पर। मास अयन रितु सबै सम सर। पन सलिल बयका लक्ष
न जन मय। मारुत मंद सुगंध सीतमय। प्रसुन दैव त्रय पंच तत्त्व तिक द। जीवी न कहू अचंद
तह जिह। जीव जोनन चउरासी जेते। नहाछि विलोकि जसब दते ते। इत्यादिक सुवन कहू अव
ला। वदन को रदेव वरू मंगा। बृह्मसिष्ट जौने रचयोनी। जनी सुर विजो कीनी नी। मुख मुदी
उनक पर मनोहर। अदभुत रसउप ज्यो पद अबसर। उर विमाना चरन पमांगौ। जगनक रत
हरता मा जान्यो। देवत अदभुत बाल दिखायौ। आद पुरष सागर नहीं आयौ। पनु तत्त्व ही मा
यापैरी। हैन जननि निलख सुत गत दैरी। नाव यमनंद रानी नजी। फिर सजसो दा कृ जी कृ जी
दोहा। लीनि सखा अनेक संग। सानय रूप समानि। सावन घर घर कृष्ण वक। मोहन छवि नसुमान। १
कुंजन ज्यो सुवन अति। पद पद गोप जगी मा। मिलमिल करत माली न मध्य। वंदे नंद बजाम। २
ना जनि नौ हलिन त्रय चर। अदभुत कत अपार। निवस अगोचर मन वचन। करत कजिस करता
र। इति श्री नानक तेन मत्ता सुरत सुत नारे मोद सर्ग। सक ब्रह्मा नुमारे नेना वा वाद
न तरवर वा सन्नि वियेनाद इति श्री कृष्ण लीला दिखावन नाम अष्टमी अध्याय ॥ ८ ॥

दोहा। तहां कछ्योउपनंद तब। घनजलइरनघास। चष्यौ बृंदावन प्रगट। बसियै तहसुषवास॥ १४ दिषत्तरल
ताइमनकी। बालकवेसविचार। विनापावनहीटूटिवौ। अवरजहोतअपार॥ १५ कवित्त बृंदावनक्रीडा
विमल। मनजनवधरीमुरार। नंदादिकब्रजगोपके। पेरेचित्तविचार॥ १६ सबनकह्यो निरधारसो। बृंदावनको
वास। अपनेअपनेसकटसज। करतप्रथानप्रकार॥ १७ साधदिवसपंचांगसुन। निरनयगवनेनंद। आ
कतरंगअनेकअति। बनिगोधनकेबृंद॥ १८ मिलसुषगोधनकेसमय। बृंदावनपरवेस। सबकेसमतसु
नसुगुन। कीनोवासब्रजेस॥ १९ इतिबृंदावनवासप्रवेस अध्याय। महरवस्योबृंदावनमांही। सुरभीजु
धनधरकसमांही। आकृतरंगअनेकउतंगन। सौभावनीविविधसरसुभगन। मतब्रष नउजलरवराजे
गहरजलदसेदिसदिसगाजे। बबराबृंदअनंदवढावत। उरधष्टबमिलधरबछुधावत। बालगुपालजु
हरषवढावे। धरनुजनुजननजुअंगनधावे। घुमरतदधमथानघरोघर। धरनिधसेमनुगाजतजलधर।
संपतदेषनंदयहसोहत। वरणकुबेरसुरेसविमोहत। गोपवसैसबगावनगावन। परमविलाससक
लसुषपावन। कृष्णनयेइहांपुंववरषके। हितकहिजायनजननिहरषके। एकदिवसजननीपेख्या
ये संगसषामिलकृष्णसुहाये। कृष्ण वाच॥ कहतमातसोकवरकन्हाईया। अबकृवनौनयोरीमइया
जननीहौवबरनसंगजैहूं। हेतसहितवछुओरवरैहूं। मोकहपनइनइमगावहु। आनकंवरिया
अरुनओढावहु। लालकुटीयाहूकरलेहूं। बंसीदेमोहिवननवजैहूं। कविरोवाच। इतनीसुन
तमहरमुसकाई। लयेउवायलालउरलाई। जसोदावाच। बारवारलेमहरबलइया। करहूजोकबुकह
तकनईया। कविरोवाच। बालविनोदवबसंगवनवन। महिमामनुजविहारतमोहन। अषल्हैसुरअैसी
कबुइच्या। उष्टनदेतदंभमयदिच्या। सरवरसरतगहरवनसुंदर। लतावितानपत्रमिलमंजर। कुसम
तफलतसदासुषकारी। कुंजकुंजसुषविपनविहारी। फूलेसरनिसरोरुहसोहत। मिलमधुमत्तमधुप
मनमोहत। अतसुषनोमविहगमअंनअंन। तरुवमत्तमयूरविनतन। मिगीनषीजुदंतीसुंदर। करतकेलव
नजंतुनयंकर। जंतुवरनजातकोउजानै। मिलमिलजुथभ्रमतमनमांने। साषामृघतरुंपतिसोहे। जूथ
पजूथमहामनमोहे। वछराकृष्णचरावतवनवन। तहांबलदाउसंगगोरतन। सषाअनेकवंसवयसुंद
र। बालवनावविचित्रकिमेवर। वनवनझोलतवंसीवजावत। षेलतआपसषाचषिलावत। आयोवछरूपक
रअसुर। निकरवछमहमिलङ्यो निस्चर। पापीसोकाहूनपिछांनौ। जगव्यापकमोहनपैजांन्यो। ओवकह
रिताकेढिगआये। प्रभुकिछुसंगसनहपाये। आसुरसौगहिचरनउगायो। महाकोपकरिगिगनभ्रमायो।
पटक्योषेलदीधरनअपावन। तजगएप्रानअसुरबूड़ौतन। महाअमानमछासुरमास्यो। रोदसरीरस
षाननिहास्यो। दोहा। वछासुरमास्योविषम। प्रभुनरहरिगहिपाय। बालविलोकविलोकवपु। निरनयम
एसुनाय॥ २० इतिवछासुरवधनोनामाध्याय। नयोबालकनयव्रजचारी। निस्चरदेहनिहार
निहारी। बछरूपोएकसमयविहरतवन। गयेसरोवरत्तटबालकगन। मोटोयकबगुलातासरमह। बैठो
तीरउष्टताकततह। तहांनयेवछबालत्रषातुर। सीतलजलपीनोअतिसुंदर। बालकोवाच। विसमयनया
विहंगविसेष्यो। षगएसोअबलौनहीदेष्यो। कविरोवाच। याहीचितबलदाउआये। संगकृष्णसबअंगसुहाये
नयेपीयतजलदोनूभाई। क्रमबगकेढिगगयेकन्हाई। लीलहयोतिहवगनंदलालन। घाटघरनआसु
रघरघालन। बगकोकछवरनजबलाह्यो। ततछनतिहमुषकैमगतान्यो। चोंवनजारलह्योबगम्वाबन
उष्टचलौतनचरननदाबन। कृष्णवंचउटजुगमगहेकर। निठुरत्रणज्यूफास्योनिस्चर। तीरनीरछैनागवि
हगतन। बालविलोकतपरेअपावन। दोहा। बकमास्योटास्योविघन। नरहरिप्रभुनंदनंद। प्रगटकंसउ

दस.
१७९

सोजसो। ५ बीका दयो बिपाय। सो पेमा षन जतन सो। वद्यौ उलूषन आय। का दिषात रूष सो कव
र। ९। बंद ड अषरी। इहां जसोदा जब फिर आइ। कक्न विलोक्यौ कचर कन्हाइ। महीगिस्यौ अरु फू
ट्यौ मटका। बौहव द्यौ कर लीनी बटका। दूढत सुत दिफिरत अतिधाई। मनरिस आकुल जसव
तमाई। मदिर जबै आइ तह मिदर। माषन चोरत लष्यौ मनोहर। लालत हा मन कापन लागो। नयतैती
न तवन पत नाशो। इहां मह रगहि लीनो आतुर। मरदन महाबली षल मधुमुर। मुह पर दीनी चन गटमा
ई। यहा सुत अषियान लनर आइ। मद मद रोवत मनमोहन। गिरत मन रूअस वा मुक्त गन। मातावाच। अ
रेधीवत्व बिगस्यो असो। ताको देऊ अबै फल तैसो। जानत फिरत दुध दध नाजन। मुसि मुसि षात पराये माष
न। कविरोवा। उषल यहा निकट गहि आन्यौ। वाटपूत कहबांधन गन्यौ। ईहां पाट की नोइ आनी। तासू
बांध्यौ उषल तांनी। नौई अरध नाग ले नाध्यौ। बाल मुकंद हीचारत बाध्यौ। सुत कुटक सी दांवरी सोई
हवऊ किये न पूरन होई। सर लदावरी डुजी साधी। वऊ स्यौ गावन पूज तबाधी। नांधी वृजकी जितीक
नोई। हीन तउ दुवै जु अंगुल होई। नयो जसोदा कहश्रम भारी। देषी जननी हो तदुषारी। कृष्ण कृपाल
दयातब कीनी। दावरि गांठ जसोदा दीनी। जाको आद अंत नही जांन्यौ। ताकह बांध अलूषल तांन्यौ। देव
जुनर विध दया दिषाई। गुढ शगट निगमागम गाई। प्रेम जगत केवस प्रभु पूरन। अति सुषकर तदा सकह
उरन। जाकी गत न सुरासुर जांनी। रसरा स्यौ बाध्यौ नदरानी। लहै परम सुष व्रजपत ललना। पय कुच
पाय कुलायो पलना। बालगुपाल जसोदा बाध्यौ। सब व्रज जुवति हास रससांध्यौ। व्रजवनतावाच। व्र
तदिन माषन मुसत पराए। पारे लाल सुपे फल पाए। कविरोवाच। नैन सैन दे नौहन चावत। बिलत आउ
न कृष्ण बिलावत। गोपीवाच। लीने अबै कर मफल लालन। मुसमुस बऊ स्यौ बेहो माषन। कविरोवा।
सुत कह उषल बाध सनागी। ललित कर न यह कारज लागी। सिंधु रमहामत्त ज्यु संकुल। असो बालक दौर
तउषल। नाथ यहा तरु जमल निहारे। देष जड्ह जट जौन उधारे। प्रभु नारद सोवच नउमान्यो। अगिलो क
रन सो सुध आन्यौ। आन निकट तिर छौ करि उषल। क्रिचरे दमक्रिच बाल महाबल। उषल अट क्यौ दुवदु
अंतर। निकस गए उतसो मीन रहर। तहां जमला अरजुन दवतोरे। विप्र आप ते जड्हा विभोरे। ईषदं रूजे
हप उषारे। पाप आप हतधरन पर्नगारे। भए मुक्त तहां दोनु भाई। सुत कुबेर के कृष्ण सहाई। उषरस
रत रूअति अररानो। नयो सह व्रज लोक नयांनो। यहा जसुमति दौरी आइ। मानु धान निकसहै माई। महरिव
लोक्यौ कान अनयमन। उषल बांध्यौ फोलत आंगन। नोई छोर लाय उरलीनो। कहत जु हाहा मैं कहाकी
नो। वडौ विघ्न टास्यौ जु विसंभर। कुसल लष्यौ मेमेरो कांनु। मुष रज फार तचुवत मइया। बार बार सुत ले
त बलइया। तरुन मांऊ ते निकसत तबिन। तत हां जल दोऊ दुरप धरे तन। अति छबि ते जवि राजत असै
ज्वलन का वते निकसत जैसो। जहाअस्तुत। जइ तजइत ज दु वंस उजागर। स्यांम सरूप जयत तनसुंद
र। कृष्ण जईत व्रज जन सुषकारी। हित जुत वृंदा विपन विहारी। नागर जइ तजसोदा नंदन। निगम हेत व्र
ज विघन निकंदन। कविरोवा। देह जड्ह धर स्वाता दोऊं। स्वसथांन कहरि षित गये सोऊ। त्रभुवन ना
थ अधोगति तारे। यो कुबेर के उत्र उधारे। दुरा। आप दुबिदुष और के। असे कृष्ण उदार। सरनागति पि
जरविजय। नरहर के निसतार। १०। जाग विवरजित भागवत। करै श्रवन जो कोय। दवीपरु सत सर्व वि
तु हेत स्वाद नहीं होय। ११। इति श्री भागवते भमला अरजुन धरनो नाम दसमोध्याय। १०। इहां उप
द्रव होत यह व्रज माहे विपरीत। मह र क रत सब मंत्र मिल। नंद हि कजुत नीत। १२। ~~इहां उपद्रव होत यह~~
अब चलिये आन ठ कऊ। गोकुल तजि ये गाम। बाल उपद्रव आति वटै मनय हइ सह विराम। १३। अपन

अषिलदेसयेहआएअजेव । वनषिरतकहैलरकनवनाय । रसअदभुतवरनौनंदराय । बाजहिउर
जावतवारवार । अरुकरतदानदीनीअपार । दुहा । नंदजसोदाकेनिषल । उग्रउराकृतकोय । बजमहजो
उपजतविघननासहिपावतसोय । २६ । वीतेयहविधषटवरष । सिवैवक्ष्यघनस्याम । प्रद्युनरहरदेवत
प्रगट । करेसहरनकाम । २७ । अथअसुरमास्योअघ्रम । राषेबबराबाल । प्रद्युनरहरहरनउरष । देवन
देवदयाल । २८ । इतिश्रीद्वादसमोध्याय । १२ । दुहा । कहेंअबबबाहरन । ब्रह्मावित्तविचार । काजषतहाक्र
मकी । क्रमउतारनभार । २९ । छंद । इकसमयसुषदरविसुतातीर । बबारानबरावतजनयवीर । बनसं
गसषाबकुगोपबाल । रसरतरमतबानीरसाल । बकुकरतबाललीलाबिनोद । उनबदतचित्तनानाप्रमो
द । कीडाअमनोमभांनकाल । बैठेमिलमंडलग्वालबाल । जबनयोबाककोसमयजान । अपआपसु
पंकतबैठआन । दोनामरविजनविवधहीन । क्रमजुक्तसबनआहारकीन । दुहा । कछदिननईअवेर
कछु । नीजनकरतसुनाय । बबराजमुनाकबचि । चरतऊतेचितवादि । ३० । ताकतऊतेविसंबतहां
चूलीघातप्रमांन । हरकीनोबबराहरन । सुरहितकाजसुजांन । ३१ । कछबबासुधलैनकह । इहांआ
आउनवलआयतहानपायेवबातिह । सोबतनयेसुनाय । ३२ । तबब्रह्माआयोतहां । जहांसषास
बजांन । बालहरेतेउबकुर । प्रगटअसेषपिबान । ३३ । उहानबबराबालयह । पायेकछकपाल । अ
बदरवमायाअषिल । पेरीव्रजप्रतिपाल । ३४ । वैसेईतादिसअषिल । बबराबालकवृंद । सबअपनेप
रिकंरसहित । कीनेबालमुकंद । ३५ । मातपितासुदितमिले । वैसैंइसबआंन । अदभुतईब्राआउनी
प्रभुसोउकरीप्रमान । ३६ । बबरारावेएकविध । वासुरदेवउराय । सकरषनकृतासमय । पेषोइमर
मनपाय । ३७ । छंदउअषरी । विबुधनकोवीतोजबबासुर । इहांआयेब्रह्मातबआतुर । तनघनस्याम
कमलदललोचन । मुरलीपांनमदनमनमोचन । वसनकंबरियावैत्रवषाना । निरषेमोहनरूपनिधा
ना । ग्वालमंडलीमिलमिलगावत । विहतवांसरीमधुरवजावत । हेकोइदुमबदबबराहेरत । फिरकि
रलटवाबकरफेरत । सरिताकबनबबरासोहत । मिलधावतमारुतगतमोहत । बकुधालरतचरत
चितचायन । सोभतषेलतआपसुनायन । तेईबबराब्रजबालकतेते । जातसरोजहरेहैजेते । उनबेई
हांविरच्छविबांने । आपहरेतेउतहांआने । दकुधाजूथदेषविधदोउ । कृतमोकहेजातनहीकोउ
प्रतिमावइसचेहनहीपावत । विषमनतर्कवितर्कवढावत । वारवारप्रतिमाहिविलोकत । स्योकमल्मदृव
पलकनरोकत । ब्रह्माअंतरभावविमासे । सोसबकछमदअभ्यासे । इमदिष्टब्रह्माजबदेष्यो । विष्णुम
लश्रीकछविसेष्यो । मोहनकेप्रतिरोमनमंडित । अषिलतहांब्रह्मंडअषिंडत । व्रतिब्रहमंडचराचरषांनी
षेवरन्रवरचारूषांनी । आदिब्रहमसुरसंकरआसुर । पंचभूतफ्ववीसप्रकृतिपर । अषिलविभूतनो
डदषदेवा । सर्बरहतेआयसवससेवा । जोतिचक्रमहादिकजेतो । कालकरमकारननवकेते । महावि
लोकिदईवीमाया । बिनकब्रह्मपरपरीजुमाया । नयोमोहवसचेतनभूल्यो । लहरअज्ञानसमुदहीझू
ल्यो । आपनसुधबुधरहीनअैसी । जगकीरचनादेषीजैसी । अषिलप्रपंचविलोक्यो अद्भुत । स्वातिकमा
वनयोवारिजसुत । इहांविरंचनयोजबआतुर । सांमदयालनयेरहकसुर । मायाविषमनिवारीमोहन
चेतनयोत्तिहबिनचतुराननं । दिष्टउघारप्रमतबदेष्यो । वहैजुबृंदारुनअविरेष्यो । सरिताकुंजपुंजव
नसोभा । लहरतरंगकमलवनलोभा । नाचतमोरमदनमदमाते । कलरवकोकिलगनकहिकाते । नां
तअनेकविहंगमभाषा । सोभातरिप्रतिसाषासाषा । वनजंतअनेकविहारत । गुहागुहामृषपतिघुजार
त । फलयमृतमयतरवरफूले । झिलतामधुरीमधुकरफूले । वांदरबृंदअनंदबढावत । इकद्रुमकंपत्र

रहासपर । अमर नये आनंद ।२१। छंद तुअबरी । बछबरायबाल वृंदावन । आये कह्य संग गहि आउन
बछबकासुर मरन बषानौ जांनौ न दिन सब नमन जानौ । ऐसे थे दंते मिल गोपीगन । आइ सबै जसोदा
अंगन । लेत बलाय कंवल पदावत गह गह कंठ सुमंगल गावत । वंदत मदरकी नाम वधाई । विघन उप
जसो ईजात विलाई । मरमर जात तुआवत मारन । कान्ह कवर सो उभ्रर ष सकारन । यहां क तुयहदेवी
ईब्रा । दुष्टन देत दरुमय दिब्रा । दुहा । वृंदा रण पविलासवस । नितविहार नंदनंद । कविनर हर उधारक
र अमर वृंद आनंद ।२२। इतिश्री एकादसमीध्याय । कवित । बछासुरबकासुर बधनोनाम । छंद । बकीना
म इक बहिन । असुरी अलतायध काई । अधमबकासुर एक । नयो अघ ह जो भ्रात । प्रथम बकी हत नाज
बे बल नाव जनायो । ताही छिन तिह तहां । पापफल कस्यो सु पायो । इ जगर धर देह सु समय यह । अबे अ
घासुर आय है । कविनरहर नंद जु लालकर । प्रगट करम फल पाय है ।२१। छंद तुअबरी । मिलनिक सेबल
दाउ मोहन । सषा अनेक संग ब्रजसोहन । सुंदर बछरा वृंद सुहाए । अपने अपने संग ले आए । नंदघोष
ते बाहिर निकसे । विमल सरोरुह से जनु विकसे । करत विलास हास के तुहल । मिल धावत बोलत मुष
मंगल । विहसत नाचत बीन बजावत । गोपकुवार मधुर धुन गावत । छंद १ । ईसा द करतक उतक अपार
कीनो प्रवेस वन घन कुवार । वन गहन धसे तब बछ वृंद । अपने सुभाव संजुत अनंद । दिन मध्य बितीते
पहर दोय । कै क्षुधा बाल एको न होय । याही छिन विजन बाक आय । उ बनक रजननी दिये पठाय । उनि
बैठ सबै सिसु पांत पांत । नरिदी ना नो जन भांत भांत । कर जथा छाक भोजन कुवार । सब ग्वाल बा
ल बैठे सुढार । यह समय अघासुर कर उपाय । प्रजगर कै रोक्यौ पंथ आय । मग मांक परयो तन अद
मांन । प्रतिमा जुती सजो जन प्रमांन । दुष्ट तिह धस्यो उरमाक दाव । जाता कर जगनी वैर भाव । सारूप
देषपरबत समांन । मुषको सविवर कंदरा मांन । अघ उरध अवनि सो मिलत अंग । उन उरध अंबर धन
नसो प्रसंग । दढाकराल विकराल दंत । उपमे सताहि कविलहन अंत । कतमध को सघन अंधकार
पावै न कवन कहुवार पार । बकुजहयजह पउठवब बाल । बिलवले जात मिलकर तष्याल । अघअसुर
प्रनगतन देषयाहि । वितवकितत रहे सब बालचाहि । बालकवा । कहाय है नया धोक हैको य हितय है
वताव कऊ सन रहोय । कह परबत है को उ महाकाय । पष्वीते निकस्यो है तपाय । कविरो वाच दुहा । मनमन
तर्क वितर्क मिल । बालक रहि सुबिचार । प्रभुमाया प्रेरित प्रबल । मुष तिह धसे मंकार ।२३। बालकोवाच । क
रिहै कष्ट सहाय कहु । निहचै नय को उनांहि । नई जु पैन वतव्यता । मिल चलए यामांहि ।२४। बछासुरमा
र्यो विषम । दुष्ट असुर बक देह । करिहै तेही कष्ट कहु । उन हिन डर गम एह ।२५। कविरोवाच । छंद १ ।
इह समय कष्ट उनय हा आय । सब बाल धसे देषत सुभाय । प्रभु कस्यो कष्ट आउन प्रवेस । अबिलहेस
विश्वरक्षक असेस । मुषरोक सरपको सरप मार । कर जतन तहां जसुदाकुवार । पजगर मुष संकुट
जटत आय । सुरनासस्वास रुधत सुभाय । निज ब्रमरध्र फुट्यौ निदांन । पनगकेतिहै मगवन प्रांन
पापी मरिओ असुर यह प्रकार । कृत अमरवृंद जयजयाकार । बज इहां देव दुंदभि विसेष । आकासकु
सम बरषा असेष । वसउदर वचाए बछबाल । करसुधा दृष्ट मोहन कृपाल । निकसे तहा विहसत नंद
नंद । वनि पाबरा बाल वृंद । यह रूप कष्ट प्रभु निकस आय । सब काल ग्वाल बालक सहाय । जो कुतीअ
सुर महादइ व जीत । बलविक्रम ताही देत हीत । वह जीत निकत बगइ अकास । उन नयोतासइ रन प्र
कास । सोइ जोति उलटन नतेसमूल । तब आय उलिका पात तूल । इह भांत कष्ट महिमि जी आय । समवा
दर ज्योधन मह समाय । करकष्ट हरे जे दुष्ट कोय । हरि मांक रहे एकन होय । रहु दुष्ट विजय कर कष्ट देव

रलए ताते अजेव तुम अगुन रूप मारग वताय। करदेत सुगम उधार काय। छंद उअपरी। धन सुरलए
[illegible] रावत। लेलेनाम उहत तुम निजकर। सुगुन सरूप स्याम धन सु
दर। जिनकी कृपा लोक त्रय जीवत। ते द्रुम दाक पात पय पीवत। गोपी ध्यान निगम यूं गावत। कृष्ण हित जो
पेट हल करावत। सषा धिन ए षेलत संगन। पल पल फुरत प्रीत परसपर। मह रजसोदा धिन तुम इ
या वदन विलोकत लेत बलइया। पय कुच पांन पिवाए पोषे। सुत के नाय लकाय संतोषे। मह रनंद की धि
न्य कमाई कहीयत जाके कवर कन्हाई। व्रज गोपिन के उन व्हारो। होत जु तुम सो इत विहारो। धिन
धिन्य यह व्रज की धरनी। वेद चर न अंकित यह वरनी। प्रभु ए धिन्य उगत पद पंकज। रिषवा मा पावन रज इति
हरज। तिहवन धिन धिन सोइ तरवर। बैठ जिहां बाया सुंदर वर। जमुना उलनिधि नते जाने। मोहन जहां
विहरत मन नमांनै। विहंग धिन्य ते प सुवन वासी। निरषत जिन हि कृष्ण अविनासी। सरवर धिन कमल वन
सो न्हा। लालकर तक्रीडा जल लीना। वारज धिन जु व्रज पर वरषे। हेरतिन हीनंदनंदन हरषे। धिन्य घ
टा वादर मिल्व धावत। इत उतिते वृंदावन आवत। वहत स नीर धिन्य वृंदावन। प्रतिदिन करत हू रूप पद
परसन। जेव्रज धिन्य वषस्व वरजांने। वरतमांन यह काल वषांने। प्रभु रूधिन्य दरस जिह पायो। नयो सबै
मेरो मन नायो। कृपा निधांन कृपा यह कीजे। देवचरन्क्रद मोक रदीजे। दुहा। कमल जात अस्तुत
करि धरी सुछि बनुरध्यांन। कवि नरहरि वर्नन कियो। जथा सकत हित जान। ४२। इति श्री चतुरदस
मो ध्याय। ४। श्री कृष्ण गोचारनो नाम कविरीवाच। छंद अपरी। बाल दसा बीती जुत बिक्रम। यहा
किसोर वय नयो सु आगम। यह अभिलाष कृष्ण मन आयो। सुपे जसोदा मात सुनायो। श्री कृष्णवा
रू मइयाअब गायचरैहूं। हित कर संग सषा सब लैहूं। कविरीवाच। इहां नंद देव द्रुज बुलाये। पंच | विप्र
अंग सुन लग्न उबाए। भूषन वसन विचित्र वि[illegible]जे। विहत निसांन सुमंगल वाजे। गीत जुवति मिल
उबवगाए। सुषद आरती कल स सजाए। कुंकम तिलक दुजन सुन कीने। दया अवेध सुमुक्ता
दीने। प्रगट होम दुज मंत्र पढाए। पुन गोदांन बक्रुत तिन पाए। इह विध कृष्ण गवन वन कीने। लरि
का संग सषा सब लीने। गोधन चंद वृंद करि आगे। पाछै बाल प्रेम रस पागे। कैकन हेम रूपमय की
नी। वनी सुगायन कंचन वीनी। धन रव वाजत घंटा घूघर। झमक झुमक वरनन सुर झंझर। सिंगन
षोजिक न्क मय साजी। वरन उचित के उतार विराजी। क्वि रत च दिस हिस गोधन टंदा। असे इ सुंदर ग्वालन अ
नंदा। तैसे इक वनपर नव ताबै। ओपत सीस वंड का आबै। रंग रंगमय लोइ रजत। तैसै इ वसी मधुर धुनि
वाजत। धरकर करन ग्वाल मिल धावत। गायन हेरी दे दे गावत। मह न बाथ को उ निरत महाबल। दाव वि
दा उ करत मीर तदल। व्रुष नलरत को उ अ तव लवाढै। गरजत को उ बक धडुकत गाढै। सरिता कव
स्व ब अति सोहत। मिलष गजूथ जूथ मन मोहत। सरसर विकस रोज सुहाए। भ्रमत समूह मधुप मन ना
ए। बांनी मधुर को किला बोलत। तंड व करत मयूर किलोलत। लता तरल तरवर लपटांनी। सब ऋतु फू
लत फलत सुहांनी। सीत सुगंध मंद चल सुंदर। त्रवीध समीर अलिंगत तरतर। इह विध षेलत हस
त अलोले। करत जात वन बालक लोले। धावत दूर जात जब गोधन। हेरा देत बुलावत मोहन। ग्वाल त
रलत रबैठ वट गावत। वसन भ्रमावत वं स वजावत। नाम सुरन्नि केले ले निरमल। बोलत बाल गोपा
ल महाबल। काजर हे पियरी हितकारी। अेनम जीवी प्रांनपियारी। हे गंगा गोदावरि गोरी। चावरि हे
सोना चितवोरी। धोरी हे हे धुम्र विधना। इत्यादिक उनरूप अनंना। या विध ले गोधन यह अवसर। स
घन कुंज महकाये सुंदर। पंथ के चलत महा सुष पाए। यहां निकुंज उंजम हकाए। फैली वरत धे

वरतुमआवत इत्यादिकवनसो ताअनगन चिततमगन नयेचतुराननमाहात्म्यामंगलचितमो
हन अतुलितछबिप्रफुल्लितआनन आदिमध्यअतअवसाना जगकरताहरताविधजाना इर
नइरबनंदसुतपरख्यो हितविचारविधाताहरख्यो रविनादेषब्रह्मअनुरागे पायपरीतप्रेमरसपा
गे ठरतनइनआनंदजलधारा नोअद्भुतरसरोमउभारा कमलसुवनपदवंदनकीने लइतउवा
यलालउरलीने हरेहरेचितवतहरमांही ईषतछबिबनहीनयनअघांही विधरोवा विनियेसहृत
बोलविधवांनी प्रभुमहिमामेनदिनपिछानी सापराधकृतभुवनस्वांमी जगकरतातुमअंतरजा
मी देवउचितमोहिदंडजुदीजे कारनकरनविलंबनकीजे कृअज्ञानअबुधअपराधी सगतव
मायाम्वाहतसाधी अगिणतकणिकाउबिलअपारा वह्निदिषावतजूविसतारा वारूपदहतजा
केवाढे वलिताहीकेसिरपरचाढे तूदिकमैअज्ञानतुमारी लेनवतब्राबुधविसतारी बलविक्रमम
मसकजविलाए रापककाहितादिजउरए मेउरमदवबहरेमुहारि तेईअैबालकवबतुम्हारे सबे
संभारिलेउअबस्वांमी जुतिपरकरिजगअंतरजांमी दुहा करिकरिवंदनपरिक्रमए ब्रह्मानकृवि
धान अतुलकृपछबिधारउर नएसुअंतरध्यांन ३८ आयेवबराबालजे संध्याग्रहघनसांम की
डाकौतुहलकरत मनवंछितअभिराम ३९ मातपितासुतहेतमिल ब्रजथाप्रकार वबरावा
बीथेनवन बरततप्रेमविहार ४० वबाइहविधहरनवन कर्योविरंचविकार नरहरप्रभुमायानि
यत पायोतदपिनपार ४१ इतिश्रीनयोदसमोध्याय १३ अथब्रह्मास्तुति छंद महिमाकिधौंअमे
व निरषथकरहेअजोनिज सयननीलतनस्यांम परमकरुनाद्दिगपंकज विमलवदनकवंक
करुणमंडितकलकुंडिल भ्रकुटिनावभ्रूह नंग लसतमनुअलिसुतकंवल आमोदस्वासनासा
अतुल अरुनअधरदाडिमदसन सोभाअद्भुतनरहरसकवि मोहतमहामनोजमन २ कटीकं
धमृघराज कंपच्छुजजांनवलिबत उरदरेषसोभाअनूत उनतउरआयुत वननितंबनरविहृत
कंदलिजंघाकटिकेहर वरनसरोरुहनवरतकतवालमत्तकर कमलाउरोजकुकमकलित कर
पल्लवमरदनकरे सबनायहोउकदिकमलसुत हितममपदपंकजहरे ३ छंद ९ वनधातचित्रमं
डितविचित्र तरतरलपत्रवैजंतितत्र सुभसिषसिषंडिसिरमुगटसोह अंगअंगउचितभूषनअरोह
आनातवनीरदनीलअंग सभवसनअंगतडितासुरंग उधारमूलअवितारएह डुषदेवहरनधरमनु
जदेह अपराधमोहिछिमजेअनंत कृतकार्नकरनजोरमाकंत यहदेहधर्योममहितउदार सिहा
मोहिदीनीजक्तसार पावेनहिमहिमावारपार पचिमरेजदपिमोसेअपार डुषसाधजोइमषतपड
रंत आवेनहीइनकोकरूअंत तजिग्यांनआंनसाधनअनेक अनुसरेचिततक्वरनअेक सुष
साधज्ञानउधारसोय कृतगावेउजलीलाजुकोय एचिरततुम्हारोआदअंत सुषलहेध्यानकरिपर
मसंत उधारमूलसाधनाएह हवमरतजोगकरिदमतदेह वयबालतिहारोब्रजविहार सोइगीत
आहिउधारसार करसरधागावेजुपेकोय सुषवंछितपावेसाधसोय कहुनाहिज्ञानविज्ञानको
ज आचारविचारनदेतओज करिनिरगुनसाधनपवेकोय स्त्रनोअकासपावेनसोय जाकेनरू
परेषानरंग द्वनक्रियाकर्मसंगनप्रसंग मनकर्मअगोचरवाचमूल साधेकहापानीसानकूल निर
धारपारतिरगुननिदांन पावेनकहुपरमरेषांन परहरदिध्यानंकुटहीपराल कनहाथनलागेकि
कूकाल तजिजोगजोइसाधैजुतंत अगेअनेकपरमरेअंत हवकअसाधिलषतसतहोय उ
निसगुनउपासीनयेसोय तिनलयोसुलभअतिसगनतंत सुषलयेभक्तजीवनसुतंत अविता

मजुत वर्जतकामकलेस २ एकसमयषगपतभुधित इहधहनिकसोआय परयोदिष्टलीनोपकरि
यहमीननकोराय ३ मुचमुचक हिवामीनको जीलगिसोनरजान गयोनिगलतोलागरुड मबमहा
नषमांन ४ उदेसफरपविगोउदर जवरानलमहिजाय समैबितीतेसुरनरू पेनहीवलितउपाय
५ सोनरवाचदोहरा सोनरमुनीदीनोतबैश्रोप अतिदयासरनहितजानआप इहगोरहतेकोउ
जीवआय सोतबेयहांमरिहैसुनाय सोनरयहरष्यादइसंत षतिदिसाएकजोजनप्रजंतयहान
सुरह्यतवधरेआनीत सुषवसतजतुतहांघामसीत कविरोवाचदुहा सर्पकुलीअरुगरुडसो जात
वेरजगजान बाढतदिनदिनक्रोधवस महाउपद्रवमान ६ मिलअहिरमणिकदीपमह नदपिवसे
सबजाय कविनमहाभयगरुडको सोनहीहियेसमाय ७ जितेकपावैगरुडजह तितेहतेतिह
काल उरगबलीरूपैअबल वाचेब्रधनबाल ८ मारेबहुतअकालमिल तहांथोरेकबुषात नाग
नकेघरघरनिषलविषमभइयहवात ९ कसौतबैमिलनागकुल उनहितमंत्रविचार्यो सिधकर
कअबगरुडसो जीजेतबसुषजोग १० वेनतेयइहविषवर अहिनपठायोएक बारबारदुरबल
वचन कीनीविनितअनेक ११ सरपाउवाचछपै ससत्रधारअरुमास षगटसमताकूपावै उसहम
हातमदीप निबलबिनमांफनसावे जदपिमत्तगजराज सिंघकोवेरनसाकै गिरैकरिनवनगरजन
जुपेकेहरगलगाजे इमभन्दरूपतुमजोगता कैसेसरनरकीजिये करिदयागरुडअहिकुलन
कोदेवअभयपददीजिये १ सरपएकप्रतिमासदेत आहारजूऐहै नवैकुलीमिलनागसबनह
महीसमजैहै किहतवचनबंधांन उसहअदिगनजबदीनो सोप्रमानमानियषगेसअंगीकृतकी
नौ ताहीकमतरूवरदीपतट एकएकअहिआयहै विषमुषसबरमणिकदीपवहिइहविधवंस
बचायहै २ कविरोवाचबंदचैअषरी इहकरनागहूतफिरआयो उननवकुलीसुनिरभयपायो
एकएकप्रतिमासजुआवे षगपततहापनगसोइषावे नवकुलमहयककालीनागह भयकुन
मनेदियेनइनागह जाकेसतफनहैसतजीहा अतिबीषमहाबलीअनबीहा अपनोनागनही
पकचावे षगेसकेउननागदिषावे याकीवारीषगपतआयो पैअपनोवलअंसनपायो तिहबिन
गरुडक्रोधकियेतेसो जगतप्रलयकारकह्वैजैसो जबनागनयहकारनज्यांनो पंषराजसोमरम
प्रमानो सरपवाच हैषगराजनदोसहमारो कालीकोयहविरतकुचारो बिलसोघरजानीकोबेलै पै
षगधारकवकरिपेलै प्रनुहमसोकबदुषजिनपावै सरपाधमवाकोसमझावो विषधरसबय
हनेदवतायो उनकालीअपराधीपायो इहागरुडकालीकेआयो सतफनमाफदुष्टसमुहायो
द्वेसतलोचनताकेदारुन सोवरषतमनुअनलसकारन जीहालहलहातविषज्वाला क्रमदेस
तअतिदंदकराला विषमजुधभौतारषविषधर चकितभयेनवन्हतत्वरम्बर वामपंषदिमम्यवि
सतास्यौ मुषपरगरुडभुजंगममास्यौ भ्रमतभयोतबकालीनाझ्यो लसेसंगषगराजनलाझ्यो अ
दिकालीवृंदावनआयो पैसोधहनिरभयथलपायो मननिसंकवसोफनमाली कहियतसोतबैते
धुहकाली बिनुसंकातहांरहेमहाविष चढेगरलजलदेषतहावष याकेजोईनिकसेषगउपर अ
तिविषव्हैगिरैसोइआतुर जलकीबांटलगैजबजाके ततबिनदगधहोततनताके महादुष्टविष
मयफनमाली कुटमसहेतरहतउहाकाली सोनरश्रापजुसंकापावे याधहगरुडनतातेआवे
इतिकालीधुहप्रसंग जमुनाइहमेकालीजबिते तारषत्रासआनरहीतबते जोजनजोजनचहू
घांजेते तिहविषजरेस्वरावरतेते अथकदमतरप्रसंगवरननं दुमकदंबयकतहानदाद्यो विमल

कृष्ण· १८२

नवन फिर फिर घनतर छाया आवत घिर घिर मिल मिल ग्वाल बाल करि मंजुल बैठे वन कुंज यूथ
महाबल सब नवीन मध नायक सोहत दितबल नंदकुँ छम मनमोहत वह्नु नबी यातल पवनाये
वीन वीन तहां उहपविभाए सदांमा केजु गोदध रेसिर वनविश्राम करे सुंदर वर काऊ सषा अंक
पदकीनो देवदेवते वनसुषदीनो सषा पलोटत चरन सभागे लब अनविंके विलोकन लागे महा
हरष उरन हीन समाई परम उनीत मनकु निथ पाई करीत लपब लदेव सकोमल पल्लव उह पवि
का सत परमल सबै सषा चकु ओर सुनायन मिलमिल सयन करै मन भायन इहां कबुक
समय पाअनुरागे जागे सषा कछबल जागे तहां उग्रो श्रीदामा आतुर ततबिन जाय चढो उत्वेत
र गाअेन षोज करत अनुरागे लेत हावं सब जाकुँ न लागे हेरी देगायन दिस हेरत फिरकर लेर दकू
लन फेरत उहां तालवन पावन आए सो रंनले फल पक सुहाए श्रीदांमा जुतालवन सुंदर गंध पा
र कर लषो अगे चर उतरत बै श्रीदामा आयो सबै तालवन मरम सुनायो इहांते निकट तालव
न है इत उपजत जहां ईमृत फल अद्भुत सदामावा जो बलदेव तालवन जईये छुधा लगी है ते फ
ल षइये सषावाच बकु सो एक सषा तब बोलो दारुन भय मंने वित डोलो यह वन माऊ बसे इक
असुर धेनुक नामा पाप धुरंधर सकुल रहत है इह वन सोई जंतु विना सत पावत जोई कविरोवा
यह सुन कछ वीर अनुरागे ले करि वे तता हि मग लागे योहीं रमत तालवन आए पके मधुर बरवन
फल पाए हाथन धरि धरि बिब हलावत षित ते चुनि चुनि वनफल षावत विहस विहस तरधु नितमहा
बल कै रलो सद्द महा जु कुलाहल यह सुन धेनुक अघ न अघायो अति रिस हियो जरित सो आयो
षरि को रूप कियो तिहबेर आयो धेनुक नांमा आसुर धसकत धरन नवर्नहि तथ मथम आकुल नये
षरासुर आगम नयक र वोम विमानन नगाए परीत्रास उर अमर उलाए याही दिस बलकृते जु अ
गे अतयवीर अति रिस अनुरागे आकुर परी डु हां दग अैसे जुग मम मतंग अगरु तज जैसे यहां ष
ल निकट षरासुर आयो पापी हाथ यहै तब पायो पिछले चरनं डुलात यहां सौ पकर लए पग असु
र पछारयो महावीर बल गिगन भुमायो पटक्यो धरन पंचत लपायो मस्यो षरासुर मनमुर जांने
आये षर सम्ह ब अकुलाने पकर पकर पद धरन पछारे दस हू दिस रुल से कारे कुल धेनुक
निरमूलत कीनो हाउ बल ग्वालन सुषदीनो लेले कछ सुकंव लगाए पाए विजय हरषानव ता
ए इत उत ग्वाल बाल सब आए परयौ असुर देषत सुष पाए विहसत हसत चले बृंदावन ग्वाल
पिछे धर आगे गोधन दोहरा· सुर नीरज रज तवरण स्याम करसम ताल ज्ञत होत कांम यहां मात
जसोदा समुष आय सुत वसन वदन छबत सुनाय बलराम साम मंजन बनाय सब विविध वस
न भूषन सजाय इहां धरे थाल भोजन सुआंन परुसत तहां माता आप पांन तब कहत सषा धे
नुष बृतंत बल नंद कस्यो जिह असुर अंत उन नंद दांन कीनो अपार कर तार भये रहस कुवार
दुहा धेनुक आसुर सवरनधर दुष्ट हतो बलदेव घर घर भये उछाह घन आए कुवर अजेव धर छ
षय मह दिव स ब्रजराज उत्तव लिये नवरावत ग्वाल बाल मिल सषा संग ज्ञातामन भावत इहां ता
लवन आय विवध विक्रम विस्तारयो पकर पाय धर पटिक महा आसुर षल मारयो कीनो सुक
तनर हर सुकवि श्रुतिस पेम मन अनुसरीय बलवीर कछ यह वतालवन क्रीडा निरकंटक क
रिय १ इति श्री पंचदसमो ध्याय १५ दुहा बृंदावन की सी वक्षि कालंदी के कूल ते ति हदिर घव
षा धधह सब उषदांन समूल १ ति ह यलकर तअबंक तप सो भरनाम में विसे जपत पसंजमने

सास । श्वासौ उबारत बहु दुख दूर । पटको लेत तट सो री वहूर । यह समय नयो कालीअचेत । मुरछा
गइ उग्रो बल समेत । कर फन उभार फुंकार कीन । महिमा विलोक नयो मन मलीन । वढ गये कृष्ण
फन माल वाहि । तह भारि दन लागे सीस ताहि । अहि करम ऊव तजो इजो अमान । निरतंत ता उपर बल
निधान । प्रति फन फन उपर नंद पूत । ईहस्यौ महा नाटक अनूत । मिल करे जो जरे चरन मार । अहिसक
तन ही को उफन उभार । कुन फटन लगे मुष रुरत फेन । नही सूझत मुदत होत नैन । मन गिर रत फ
नन ते विष मार । तह लेत मान पद तल प्रहार । अहि नयो विकल जब अंग अंग । नय उपजे जान्यो देह भंग
पती के जब निकसन लगे प्रान । मिल आइ नागन दीन मान । नय कंपदे हद्दूषन विनात । मन मांही सोक
न उर समात । स्वकंत अधर स्वद उरथ सास । विपरीत काल जान्यो विनास । बालिका बाल बिललात बा
न । अविछेद सथ्य लेधरे आन । नाग निवाच । कहि त्राहि त्राहि कीनी पुकार । करि ये सहाय जसुदा कुमार
दुर बुध दुष्ट कह दंद दीन । करता अनंत तब उचित कीन । दुष्ट को देह राजा न दंड । अवनी अनर्थ उपजे
अषंड । ब्रज तजे नीत अनुसरे पाप । अवनी सकरे तिह जतन आप । कविरोवाच । विषधरी वचन सुन सु
न विषाद । प्रभु दयो उहां निरभय प्रसाद । उतरे फन माला ते अजेव । दंड रूद दयो सामरथ देव । श्रीकृष्ण
वाच दुहा । कृष्ण कहयो हस नाग कह रेपामर षल जंत । औसे दुष्टन को यहां उचित न वास अनंत १८
कालीवाच । तन विह बल काली तहां बोलो समय विचार । अवतार षके त्रासते मो दिव्वा कु मुरार १९
श्रीकृष्णवाच । ब्रज मंडल में यह विहत बृंदावन मम वास । पावन प्रगट पुरान श्रुति जपत साध नित जास
२० ताते जाय अनित्त बसि कुसब सविकार । बृंदावन मेरे विमल है यह नित विहार २१ तामस जो नतु
जीहतु वयस अकाज विसेष । मरे न स्योत उरकु मुष दंतन जो कुदेष २२ सिर ते रे मैरे सदस है पद चिन्ह
पुनीत । ताते तुष गरा जते यह मव नयो अनीत २३ अब तू रमणिक दीप हि बसि रू सकुल विसाल प्र
भु की अज्ञा पाय पुन तह गयो तत काल २४ कविरोवाच । काली दमन जु कृष्ण की कहि है लीला कोय
ततौ संतन वस रषते हित युत निर्भय होय २५ क्रीडानंद किसोर की कविन रहह रजस कीन । नने सुने ता
कह जगत नित नित वढे नवीन २६ इति श्री भागवते महा पुराणे सुक्कमार गेषोडसमोध्याय । मात जसो
दा कह मिले इहां मनमोहन आय । उरलाये आनंद युत प्रान मृतक मनु पाय १ सबे विहारत हेत सु
एक कृष्ण की ओर । सुधा पियावत नइन सुष जैसे चंद चकोर २ मनहु कृष्ण दुजे जनम आये ब्रज अव
तार । पाइ निधरंक न प्रगट सुल भनये सुसार ३ वहे उपद्रव ते बच्यो मोहन नंद कुमार । वेद प्रति तज
धरम विध उनसो इन एअपार ४ धेन धुरंधर वसन धन मन गन रतन अमोल । कोउ कछु जुवंबा करत
ति इते इलहत सतोल ५ कर रिकरि नोबावर कनक दान जथा विध देत । गोपी गोप[illegible]गुन लाल धरम सु
पजेत ६ ईह विध करत उछाह अति नयो अस्त गति भांन । तहन नपसरे विषम तम मिल वनघन अप्रमा
न ७ चल न सके तिह समय चित पंथ गमन सो पाय । बेवरहे जिह तिह विहत सब ही सहज सुभाय ८ न
यो इरष अमद दिवस न र आपन क्षुधा विराम । सोय रहे जहां तहां सुषद करि वन तल सकोम ९ छंदपध
उन अर्ध निसा के समय पाय । अज्ञात उपद्रव वनमो आय । चहुं ओर असुर माया प्रचार । विस्तस्यो अनलव
रूं धाविकार । ब्रज नये विकल जड जीव जंत । उवदाह मन कुप सस्यो दिगंत । अद्भुत अनल गीत अकाल
कृत घोष दुसह ज्वाला कराल । मिल अनिल अनल वढ गिगन अंत । जहां तहां पुकारत जीव जंत । दुरज
नवा । हा कृष्ण कृष्ण यह वान होय । करु मात तात त्रातान कोय । कहि त्राहि त्राहि रूक तक राल प्रभु कृ
ष्ण राषली जे कृपाल । कछु दम हि नो दिनय मरन कोय । हा हा विजो इत वचन होय । कविरोवा । प्रभु उ

रुक्म· तरह्वपलवफलवाढ्यो। छंद उश्रवरी। तादिक दमकोसुनऊब्ब तंत्तर आगेकिरूकलपकेअंतर
१८२ कविनसुरासुरक्रीडाकीनी निकमांउपजीबुधनवीनी नुजाछुजालगीजबन्यारी चित्तमांफयह
वातविचारी कविनमथानपयोनिधकीजे लानरत्नचवदहजबलीजे कमथमथांनजथाविधकीनो निकससुधाघटतहानवीनो दिमकुंभसोउगरुडहदिदीयो नजितजुजातगिगनमगम्नीयो
ईहनिकस्योवृंदावनआई अमममगताकनयोसुनाइ याहिकदमपरबैगेआंनहि महासुषद
जमुनातटमांनहि यथ्रतभनावनयोसुनाइ याहिकदमपरबैगेआंनहि महासुष दमयाकोत
रलगरलफलनागनताको आसपासतरजरेअनेकऊ यहेफलतफूलततरएककऊ। छंदप। धरत्र
यदिवसयकन्हयधेन चलग्वालबालवनचितचैन वनपंथसमातनधेनवृंद यहांचलीदिगरजित
तितअनंद पाबेनवीचकऊनीरपाय याहीदहनावीजोइआय निरदोषकरनयहदहनिदांन
षचुदब्राकहुऐसीथमांन बकऊनयेत्रषातुरधेनबाल तिद्दपियोयहांजलतातकाल विषवढ्यो
सुरनीगोबालवृंद दिटपरेसबनजनुकालफंद करिनोजनतुनजसुधाकुवार विनदाउगवनेव
नविहार तरलतातरलकुसमतितमाल मिलमदनमत्तन्मिम्रमरमाल देषतचनसोनाकलरे
व जमुनाथहआयेतहांअजेव कालंदीकेतटयसेकाल बकपरेविलोकेधेनबाल करिसुध
दृष्टचितीयेसकाम सबउवेकहतघनसांमसांम बालकवाच जलपियोसबनहमत्रषाजांन अब
कृष्नजिवाहेतुमहीआंन याजलद्दीमांफ दैकोउअरिष्ट आगेसुनजांन्योहमअनिष्ट श्रीकृष्नवाच
सुननंदनंदबोलेसकाज इहनीरकरौनिरदोषआज कविरोवा। सुनकिकनमिननगमयसमेट
पटपीतवसनकटितटलपेट उरुकदमसिषरपरचढिउबाह अविलोकनीरतहांअतिअथाह
उनलइझंफपौरुषथमांन जलजनवजेआघातजांन सतधनुषनीरवऊदिससुनाय पसरयोअ
गाधअवकासपाय अविगाहसलिलगजमत्तओप कैधौमंदावलकृष्नकोप कोलाहलसुनिचऊ
घाकराल कालीसुजइओमनुथलयकाल रसनासचालज्वालाजुनैन फूकारसहूमुषगरलफैन
अरुसातअंगमोरतअनीत उफनातरोसआयोअनीत इहांकृष्नबालअविलोकएक अहिवढ्यो
गरलअरुबलअनेक लीनोलपेटतननंदलाल करिकोपमहाकालीकराल श्रीषंफवछ्छजरूपन
गसंग आवरतकृष्नअतिअंगअंग ग्वालबालीवाच ग्रहगयेनागकोउबालग्वाल कहिकृष्न
नागलीलाकराल हाहंलसहूतबघोषहोय कहांनयोकहुजानेनकोय सबगोपनंदआयेस
त्रास पवैनकृष्नकरुनाप्रकास जसुदामिलरोहिनजुवतिजाल वितपातकरतआइविहाल
बलनंदआयतहांमहावीर तबरहेविकतत्कैसरततीर आवरतसर्पतहांकृष्नआंन जलउप
रनिकसेसारयजांन यहदेषनंदउपज्योअचैन निकसैनबालसूफैननैन छंद। जसुदादेष्यो
कृष्नजब अहिलपटानौअंग उंनचाहतजलमहपरन उपज्योसोकअनंग ९२ देष्योजाततनय
उसह सुतहमअहिकेसाथ दौरदौरफापतउसह इवबलपकरतहाथ ९३ जितततफा
फतबुजिजुवति तहांगोपीगहिलेत विलपतरोदतअतिविकल हाहामोहनहेत ९४ सुरनीतन
वविषमसुर वाजीवबराबाल हाहाकवनघनदमरि लेवलरेनैननाल ९५ वृंदावनकेस
बविकल देजदजीवजितेक मिलमिलफापतनीरमह एकनपकरतएक ९६ देषेमोहनजबउ
चित एवृजजीवअनंत हूरनलीलाआपनी करतनयेश्रीकंत ९७ छंदप। अहिकृष्नजसमहर
अनंत दऊओरदऊघावतदुरंत निग्रसोदेहअपनोनिहार महिमाअमेयकूलेमुरार वामंतक
रगहिउबवेव दविनकरगहियोफनजढेत दहनतननलागेपनगतास सोनयोसियलआवेन

हन निग्रहस्वासनिदांने पटक्योलेषसिलहपर पिंङगयेतजप्रांन १३ वज्राहतमांनकुविवस
परबतपस्योश्वंन महाविषमनुववक्रमह गो आघातअषंन १४ आतुरआयेकुछयहां सुष
दसषासकन बसंग तनअविलोक्योअसुरतिह इचरजहोतअनंग १५ अतिहितदाउलायउर बार
मवारविसेष नरहरप्रभुलीलानिगम सोनजानसुरसेष १६ इतिप्रलंबासुरबधप्रसंगअष्टादसमो
ध्यायः १८ दुहा वनवन करतविहारहृज रामकृष्णघनस्यांम गोधनबृंदगोपालगुन अतहितजुतअभि
राम १ घातहीगोदोहतप्रगट करिकरिग्वालसकाज षोलहएजिततितषरक सुरनिनिकससमा
ज २ अरगलिकरबूटीअटक धेनचलीसबधाय तबेहेरितऌगंधते इहमूंजावनआय ३ तरतसको
मलघासतहां वढिवढरहेविसाल मूंजासरवलिगिगनमग मिलमिललतातमाल ४ छंदप संचारन
दिनरविकरप्रकास अंधारमधवनआसपास निरधारयहैपसुकुलनिदांन त्रणतरलजुपावत
गंधंज्ञांन मिलधसेसुमुंजारुन्यमांझ सूझेनतहांकछुदिवससांझ बकुधसेसंगतहांगोपबाल त्र
णसघनउरजमुजानमाल पावतनहीगोधनमनसपीर घनगएअरूपनजूनएअधीर पहहतत्रण
लहैविहनपाय सुरनीनसंगलीनेसुनाय पावैनकछुवनवारपार करधेननामलेलेउकार करुण
हेनहीजबकछकोय हाकृष्णकृष्णअबकहाहोय देषेनिरउदमसबादीन करुनानीधानतबदयाकी
न भवेहुमनउपरस्वछेआप हूरप्रनावपीरुषप्रताप विधउरबनजथावंसीवजाय लेलेजुनामसुरनी
बुलाय पयश्रवतथननईमृतप्रकास सबवलीहरषमनसावकास हांनारकरतआइअनंद वं
सीरवगोवरधेनवृंद इहमोहनजुमतेउतरआंन पयपानकस्यौदोनाप्रमांन ऐसीकछुइछाजइअ
नत दावानलजाङ्योवनउरंत फिरगइआगनचहूओरफैल गहनवनकछुलाजेनगैलतरवृंद
जरतवेलीतमाल मिलअनीलअनलवहिज्वालमाल वनवांसजरतपटकतविसाल तटकतत्रिणमृ
जासरतराल वढधूमगिगनअंधास्वीक दिननएउषतगतबालदीन प्रतिग्वालबालकीनीउकार अ
बकृष्णदेवतुमहीआधार अबिव्हेसुरगोधनजरतएह रक्षाकतुमहीतुमराषलेह घनसांमसमययह
तुमहीतात जरिदावानलहमअगतजात विनसतअकालगोबालवृंद निरमयप्रभुकरियेनंदनंद
श्रीकृष्णवा धरिचित्तधीरतुमवालधेन निरभीतहोकुयहमुदनैन इगरहेमुदसबउषउरंत इहाअ
गनपांनकीनोअनेत प्रभूकीनोदावाअनलपांन निसिषगिगनवाजेनिसांन दुहा मोहनमूंजा
जारुन्यमह पीनोवहाग्निविसेष देषेबालकषोलदृग इहांनकछुअवसेष ५ तैसेइवनजरततर
फलमंफरमिलफूल कृष्णकरतअद्भुतकछु कुजतषगअनकूल ६ दावानललगोउसहजरतग्वा
लगनजांन नरहरप्रभुकारनकरन प्रभुइछ्याजुप्रमान ७ इतिदावानलपानाकर्नेनांमऊगणीस
मोध्यायः १९ अथवर्षावर्नन कृष्णयहीक्रीडाकरत वृंदाविपनविहार पावसरितुआगमप्रगट सुषदा
यकसंसार १ छंद उधोर आसाढजलदअकास प्रतिरंगरंगप्रकास घुरसघनमिलघनघोर अरुघटा
वदवउओर दिसमत्तसनसदाप वदिरंगसुरपत्चाप बगपंतउजलवांन प्रतिघटामध्यप्रमान च
कृओरवीजचमंक नदिदुरतनन्नहिनिसंक संबरसिसिषरसलाउ प्रतिमाअन्नेकप्रनाउ मि
लजलदपवनमरोर अतिगरजघनचहूओर सरसरतदाउरसोर फिलकरतमोरफिगोररजअ
रुनबूंदनरंग अविलोकवढतअनंग अतिश्रवतजलआकास प्रथ्वीसुदूरप्रकास छंदप त्रण
गुलमलताअंकुरतमाल वसुधासुनीरअंबरविसाल पांनीनिवानप्रथीप्रसंग आच्छषनमांन
कृअंगअंग महिहिम्नयौसघनदंपतिमिलाप रतिवदीविविधगतिविरहताप छप्पै महिवियोगसहि

वेतहां दृगमीचपांन जगरह्वाक कलिपत अंत जांन ईहांएक सक्तपेरी अनंत दुसाध अग्नकाटी दुरंत त
हांजरेलता तनत्रणतमाल दृगदिष्टसुधासीचेदयाल तरतरलपत्रमंजरसतल फलभारनिमतबऊं
गफूल दुहा टरीअमंगलकालतहां गावतमंगलगीत ब्रजवासीसबषातही आएघरनअनीत १०गो
दोहनब्यापारयह करनलगेसुषकाज जथाजथाक्रमघोषजन मदरनंदकेराज ११ महिमाकृष्ण
मानुषी देवीसक्तदुरंत हजमाहेजोकोउविघन उपजतपावतअंत १२ यहलीलहरिअनलकी क
विनरहरकहिकोय पापअनलके दुजपद साधनपरिहेसोय १३ कालीअहनिरदोषकिय निग्रह
कालीनाग कृष्णकृपातेघोषके भएभवन्हतेसभाग १४ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेसुक्कमारगेस
तदसमोधाय १७ छंदपैंअरी वनघनसुषदवसंतविहारी ईहक्रमऋतुग्रीषमरुतआई नरहूं
टेवेलीध्रुमफलभर झरेपत्रकांननभयेकूंषर भारतऋतुतबगहेगुणनिश्चय मिलसबभयेएकतेजोमय
षथीअकासपवनअरुपांनी महाप्रकितततजअनलसमांनी जंझामारुतकैसीजपटै लुवांवहतअ
तिताती लपटै सरवरलघुसरिताजलसुके कमभवन्हतत्रषातुरकुके सूकसरोजलतासंगसरवर
जहांतहांदुबितदसाभयेजलचर सफरमरेजलघटेसुषदसर दुरदुररहेपंकपहदादुर उरगमक
रकमवीअकुलांने जलविनुप्रलयकालसेजांने सबेजुलाश्रयकररहमसूकत कहिकहिसघनसिंव
लीकूकत सलिलभावधरउसरकेसंग मृघत्रषाभ्रमभमतजूथमृग संगसुभावकूलीनेसोहन मिलव
नथेनचरावतमोहन तहांविलासतरनतनियातटि वनभांझीरसमीयमहावट मायाबेलसुहछ्यामोह
न करतभयेब्रजविघननिवोहन जबमिलग्रीषमिवनियाबेलत झपटतदुरतचीवगहिकेलत वदव
टसाषामधघनचलावत हवहवकुसमितलताइलावत षसतमलजुधको उषेलत प्रबलअंसअंसन
धरिपेलत वनगजराजमतकोउवानक आनअगजबदभिरतअचांनक वाकृक्रुतमहबनवनावत मोर
स नदसहसंषारमावत दरूघांग्वालचमूदरसावत चतुरवेलफलविसस्वलावत तितेबलकरकरसब
टारत मांकअधरगहिलेफिरमारत वानरक्रूयकोउबालबिहारत तरफुरसाषफाफबूकारत मोरमुक
टधरकोउवकमाथे सबनृतंतमोहनमिलसाथे कोवकग्वालसरलसुरगावत विवधमधुरधुनिवेनवजा
वत कोउकबाधतरफूलाफूलत फिरफिरहसततालदेफूलत इत्यादिकलीलायथकारी हेतअसुर
बधस्वीविहारी असुप्रलंबग्वालकैआयो पुनमिलवलतेकाकुनपायो जगतकंपकजनहिसकजानो
पेयहबालमुकंदपहिचांनयो श्रीकृष्णवाचदुहा सांमकसोबलरामसो दाउसुनकुनिदांन अबतेबिल
कपेलयह चित्तलायचौगांन १ कबिरोवा एकओरदाउभये अरुमोहनयकओर अर्धग्वालइतअ
र्धउत नायकनंदकीसोर २ आपदिसालीनोअसुर कृष्णप्रलंबकुभाव रमनलगेयहागेदरस देत
दानपरदाव ३ पनकीनेदअोरप्रभु हारजीतजबहोय एकएककोकंधकरि वटप्रकुचावैसोय ४ नि
हचैएसैनेमकरि बेलनलागेग्वाल भारीकोलाहलभयो गोपबालगोपाल ५ लेगोदाउदावलग्र देदोट
बलदेवें हरहजेरजीतेपोहरष अहिअवतारअजेव ६ काधेलेलेकृष्णकह बलकेबलाजुबाल पकुवा
वतवटलाप्रगट तहांहस्तदेताल ७ आसुरकंधप्रलंबयहां श्रीग्रोबलयहाआय अपनोलीनोदावअ
वे सोदसवटेसुभाय ८ कंधकीयेबलदेवको असुरअविधतजआय इहसुनल्लैआपनो दीरघदे
हदिषाय ९ अंजनतनकारोअसुर दारुनदंतकुदाल विवरनासदृगकूपवनि विकटवदनविकराल
१० कपिलेकचभ्रकुटीकुटिल अरुवरषतदृगआग तरकतजीहातडितसो वारबारवजराग ११ पदि
वान्योइहतोपवल बलजदिपबलवान मारोमुष्टामुंडमहि कतसतपंकजपान १२ गाढोकरिकंगग

विकलभइब्रजवधु। भुवनभ्रलीसुकाजभुव। रूषधरनचितवन। विवधश्रलापबढावत। प्रेमसमुद्रहिपरी
प्रगटकरूयाहनपावत। धरध्यानश्रतुलउरबिबधरिय। जथाजोइजोगेसवर। नजिकीटभ्रंगतनमयभई
ग्यानमदनउपदेसगुन।१।छंदउधौर। धरिचितश्रद्भुतध्यांन। प्रतिमास्वरूपप्रमांन। बनविहतनटवरवेष
सबश्रंगश्रंगविसेष। रजमुकटपंषमयोर। कचकुटिलस्यांमकिसोर। जटरत्नकन्कसजोप। श्रतिश्रवन
कुंडलश्रोप। कृतिरुचिरजुगलकपोल। लसवक्रश्रलकसलोल। नयरेषभ्रकुटीभाव। भ्रुहचापवक्रकच
टाव। सुभनासस्वासस्गुगंध। मुषश्रधरश्ररुणसमंध। रद्वज्रकनसमराज। विधवचनरघ्रतविराज। रचि
चिबुककंवुत्ररेष। सोइरूपसीमश्रसेष। वैजंतिमालविसाल। मदमत्तचालमुराल। मुषचंदबिंबसमांन।
उननेत्रकमलप्रमांन। लसश्रधरश्ररुनप्रवाल। रववेनुरुचिरसाल। श्रुतबांसरीधुनसंग। उनिनैनदर
सप्रसंग। नइबांसरीजिहवंस। उचिश्ररुनपल्लवश्रंग। रोमाचवृहसुखंग। कुलग्वालमंडलकीन। वन
मध्यसांमप्रवीन। नदध्यकितनीरनिदांन। उनपवनगवनप्रमांन। पसुपंछिउतपतप्रेम। नितसुनतवैन
सनेम। दुहा। ईत्यादिकरवनाश्रषिल। श्ररुसोभाप्रतिश्रंग। करिकरिसिवरणगोपिका। द्रवनप्रेमप्र
संग।२।इतिगीपीस्यामछबिबरनंनाइकवीसमोध्यायाः२१।दुहा।उपजीदसाश्रनंगकी। रूपनयनश्र
नुराग। कृतदेवीवृतकिनका। गोपसुताबडभाग।१।पंकमईप्रतिमाप्रगट। कातायनकीकीन। पूजाश्रर
चाभक्तपन। कीनीनितप्रवीन।२।सबमिलश्रर्लीदयसमय। श्ररूकसुताजलन्हाय। कमजुतभक्त
विसेषकर। हितव्रतकालविहाय।३।हिमरितुश्रगहनमासहव। व्रतकीनोब्रजबाल। कृतिदेवीकाताय
नी। वासुरनिसाविहाल।४।गोपकिमावा।व्रतसिनानपूजासविध। भगवतभ्रयेसभाय। बंछितफलमागत
विहत। यहैमनोरथश्राय।५।जगजननीजोगेस्वरी। हितजोभक्तसनेह। किन्याजाश्रोजोरकर। हमहि
कंघवरदेह।६।कविरोवाच।छंदहश्रवरी। द्रवनभयोमासजबपावन। भक्तसनेहमिलनमनभा
वन। श्रर्लीदयग्रहग्रहतैश्राई। समवयकिन्यामिलेसुहाई। पूरनव्रतदिनमाससमांभो। जनमकृतार
थश्रपनोजांन्यो। गोपीवलीकृष्णगुनगावत। भुजधरिश्रंसश्रंसमनभावत। हासविलासकरतको
तुहल। जगपावनदरसोजमुनाजल। वसनउतारतीरधरिवामा। करतसिनांनविधांनसकांमा।७।दुहा।ईंद्र
जोइजोगेसवर। समनिहकामसभाव। स्यांमलषेदेवीसगत। भामनिश्रंतरभाव।५।घटघटव्यापतसांम
घन। श्रादब्रमत्रणश्रंत। भूतनवतद्यवरतमन। तिनतेकछुनदुरंत।६।छंदउधौर। भामनीश्रंतरभाव।
श्रनुजांनिजोइप्रभाव। यहांश्रायकृष्णश्रवीत। वरदांनदेतविनीत। भइमग्नजलमहंनाम। कृमकंव
श्रविधसकाम। हवबाललीलाहेत। तहांकृष्णजदुकुलकेत। लेवछ्तबनंदलाल। सोचटेवृद्धविसाल
।छंदउश्रवरी।कृतकदंबश्रारोहकन्हाई। चितवनकरतवदनचतुराई।७।स्वदेदुमचीरदिषावत। हस
तश्रापश्रबलानहसावत।श्रीकृष्णवाच।उनबोलेश्रीकृष्णप्रवीना। वेदभइतुमतनव्रतपीना। एकए
कभावैतुमश्राव। जोसबश्रानवसनलेजावहु। देषकृपाविधश्रंबरदेहु। जथाजतनकरघ
रलेजहु।कविरोवा।सोसुनवचनहसीसबस्यांमा। विषसोलड्डोलज्जितभइवामा।गोपीवाच।बोजीकु
लबललियेवकाई। कहाकरतवदनीतकन्हाई। जानतनंदमहरकोजायो। पोषमहरकुचुपानपिवायो। जु
पेलहैतोसबवृजजानै। वेसबगोपीज्ञानप्रमांनै। कहाभयोगोधनरषकांनै। सबैगोपकुलज्ञातसमां
नै। कैदमजायमहरिसेकहिहै। स्यामउपाधनश्रेसीसहिहै। लछनश्रेसीपेनंदलालो। बकुतेहसतघोष
कीबाला। प्यारेकिहइहनीतपढाई। महरवडेहैजसमतमाइ। तनकमहीकेकाजेताइदिन। महरश्र
नूपनर्षाश्रोमोहन। कटिमहगहईदवरीककर्स। सुनतुमरहेबंधेइपरवस। श्रांगनफिरेकहोरत
नषलश्रंतमहरहीषोलेश्राकुल। देहचीरमहतेरीदासी। होतसवीनमहश्रप्रतिउपहासी। सांम

अष्टमास। गनिजलधरआगम। रहिसबिद्यासतअंकूर। सहिसीततापसम। प्रियआगमपतिब्रता। सक
लश्रंगारसुसाजिय। मिलदंपतिरतिमांन। अषिलआनंदउपजय। सुनतजोसंकनरहरसकव। मासच्या
ररसमांनियो। निसदिवसप्रियाप्रियनेहनवद्रूनपेमप्रमानियो॥१॥ छंदपा। विरषावटतरवेलियविसेष। अति
सघनकुंजउपमाअसेष। सोभाबरूपछ्ववतरलसाष। नवसफ़ततीफ़पंषीसुभाष। परबतनलतातरगह
रकुंज। गिरगुफागहरअघराजगुंज। बनजंतुविविधअनेकवास। सुषवसतवंसवहिसावकास। रितुकालत्रि
यापसुपंषीरंग। अतिसयप्रसंगउद्भवअनंग। जलवरषगिरनमिलजलदजाल। थलकेदरीनचलविसाल
बाल। अतिसयप्रसंगउद्भवअनंग जलवरषमिलनेगिरगुहावलीसरितागहीर। निसिषतभावरनरनीर। सिष
रनसिंषफ़ीकुंजतसुभाय। अनेकजलदमिलघसत्तआय। धरवरससघनषफ़ेनधार। फ़िलीरविजिततितत
फ़कार। जलजातविकसन्रमममधुपज्वाल। गुंजारविद्दतवानीविसाल। मिलमीनमकरलघुदिरघमांन। प्रति
माअनेकविहरतप्रमांन। कमगीजुमकरतंतीकुजंत। आकारलाषजलचरअनंत। औषधीअनउतपत
असेष। कुलधरमरूषीवरततविसेष। नवरूतवधअनेकभांत। जगषानभारअनेकजात। वधसरित
नीरसामुदवृध। सबप्रानीपावतकरमसिध। सिसरजसतमारगसमोह। आछादितवादरनअरोह। मि
लसघननीरकुद्दीयमृजाद। बरजितप्रयानन्रपवयरवाद। दलचलतनहिनचतुरंगदेस। निरउद्यमरूतुवि
लसतनरेस। गतमंदउधपेकुचनगाव। सरस्थूलअंगअपनेस्वभाव। मिलपियोकिरनजलअष्टमास। उनउग
लतरविमानरूप्रकास। वर्षानिसिसुकालतविसेष। आवरतजलदघनननअसेष। पेकरतएकचानकपुका
र। अतिनदजलदवरषाअपार॥बपै। वरषाजथाविसाल। विवधकीनेविहारवन। सामरामिलसषा। संग
प्रथ्वीउजपावन। बृंदावनगोधनविसेष। चरूओरचराए। हितसुतजमुनाजलविहार। आनंदअमाए। फ़ूत
फलेजसोदानंदके। नावनरूसुतहितनदय। श्रीकृस्नदेवनरहरसुकवि। इहवरषारितुवितदय॥१॥इ
तिविरषरूतवरनन॥दुहा॥ सुषहीनयोआगमसरद। क्रीडतकृस्नकुवार। पदअंकितपावनप्रथी। बृंदारु
एपविहार॥२॥छंदअवरी॥ इहअतिसुषदसरदरितुआई। उजलनभसोभाइधकाई। निस्नयचातिकचषान
साइ। प्रमुदितस्वातबूंदजलपाई। उंजपवीरद्दिवत्रविहाए। सीतसुगंधपवनसमुहाए। किन्पारासआगम
नदिनरूत। पितरप्रतोषहव्यकव्यावति। देवानरूनिसानवनवदिन। इजादसमविजयसहितपन। होत
यांननरेसविजयहित। कारनसंपतसकलविलोकत। मालादीपविराजतमंदर। घनउब्बजनहरषत
घरघर। जांम्योसीतनयेनिरमलजल। प्रतिदिनघटतवथतनिसपलपल। पंकमुकंतप्रथ्वीसंपेषी। स
तमारगउघरेसविसेषी। सुरनीषीरश्रवतअतिसुदर। परमविचित्रवरनसोभापर। निरमलनीरगिरन
चलनिरझर। कुफ़नरेजिततितअतिसुषकर। सालंबेत्रमरजादसवारी। कपीआसपूजितहितकारी।
प्रगटसकलउद्यमफलपाए। दिसदिसअनषेत्रदरसाए। इह्नांहंसअविनीतलआए। सूकेकरदमनी
रसुहाए। उहपवतीवियलताप्रनूता। संततिसफलप्रसूतउंनीता। द्रूरनकलासिसीकेप्रकासे। नवउ
रूजोतिवंतअतिभासे। सरनसरनकुमुदिनवनिसोहे। मिलनिसजोतसरदमननमोहे। दिनकरउदयप्रफु
लकमलदल। करतमधुपनिकसतकोलाहल॥दुहा॥ सोभायताादिकसरद। बनेवनरूस्नविलाससंप
तिजथाअनेकसुष। कहिनरहरकवदास॥३॥ इतिश्रीमहाभारतेमुक्तभारगेव रूसरदविहानोदसमो
सर्कधेमुसारेनेभाषाबारवनरहरदासेबविरचितेवीसमोध्याय॥२०॥दुहा॥ एकसमयकीडाउचित। कृस्न
गवनवनकीन। महाअनूपसुरनीनविन। उनब्रजबालप्रवीन॥१॥ वेनवजाईविमलवन। सुंदरस्यांमसुजा
न। धिस्वरवगमयसनियकत। सुधाअननवूरपांन॥२॥बपै॥ जथासुननभयजथा। रसविनसवेनरव

औरिषपतनीसबयहआई। विवधफेरमषसोजवनाई। पतिनीएकदओरयदयेसी। तासदईता
केपतितैसी। उहतजेदेहसुवतिअतिअकुलानी। सोपेखहसहीमाफसमानी। जोगजपागजपतप
व्रतसंजम। देहत्यागतीरथआतमदम। एसबविवधविनृतवढावत। औकेनावकिनूतवढावन। १२।
तिनरिषपतनीनकृते। करेसफलमनकाज। प्रभुनरहहरद्रनदुरष। रामकृष्नव्रजराज। १। इतिश्रीभा
गवतेमहापुराणेतेइसमोध्याय। २३। कवितछपै। सुरपतहितवतिवरष। करतमषगोपजथाक्र
म। दुनवचनावतिहअविधपाय। सबनयेसउद्यम। सकलसारसंसार। करतघरघरहितकाजे। विप्र
वरनवेदकविधान। सुनमंगलसाजे। बोहितप्रधांनमित्रीउरष। आपआपकारजअनय। सबकरत
सिधनरहरसकवि। महरश्रेहआनंदमय। १। श्रीकृष्णवाच। अषिलदेषउछाहत। कृष्नपूछोजुनंदकह
कवनजिग्यकिहकाज। हितफलतत्वकहातह। सरबमईसरबग्य। सरबआतमसंज्ञाकर। तदपी
बाललीलाविचित्र। कियकृष्णजुपावन। पितकलोमोदकरिकेकपा। धरमपरायनधर्मधुर। वतिग्रेह
ग्रेहमंगलप्रगट। प्रभुयहउद्यमहोतपुर। २। नंदवाच। छंद। अंगरसनामयकमषअनूप। रिषादान
सुपेवरवमरूप। हमकरतईद्रजगवानहेत। द्विनबंबतसोफलअषिलदेव। जांनकृतुमईद्रहजल
दजाल। वसअविधमिलतहैनविसाल। बधोसुईहांरितवंतिपाय। सुरराजमोदउपजतसुनाय।
मषनागपायसंतोषमांन। अतीतुष्टमिलहिजलजालआंन। सुषप्रवतिसघनजलरेतआव। आ
नंदउपजदरूंधाअमाव। रजबीजजोइदंपतिरसाल। सुनकालगर्नथितकृयसुढाल। औष
धीअनविणतरअपार। सुवउजवषांनअढारभार। नवनूतनदहतदिहसुषअनंग। संतोषपीषआ
नंदसंग। श्रीकृष्णवाच। पितुसुनकृकर्मवसअविधपाय। अवितरतजीवकिकृजोनआय। कछुकालबा
ललीलाअकाम। अज्ञानगमावतदिनअयाम। उनअंगहोतजोबनप्रवेस। बलसंगवदतविविधविसे
स। बषअवनरसनकरिचनर्चाय। सबहिनकेवर्ततमनसहाय। इद्रीसंजोइमिलमनअसाथ। ईहां
करतनएनानाउपाध। एनएकरमकारकअनीत। निसदिवसकरतनीतकृअनीत। सुनअसुनकर
मसाधतसुनाय। उनविलसततेईपरपाकपाय। उतिपतिनूतकरमहितदोत। हेसाधकरमम्हलीनहो
त। दिनहोतकरमकरदिव्यदेह। हैनासकरमवसनिसंदेह। सुषदुषसुलाभअरुहांनसंग। एसबैक
रमकारनअनंग। करमाअधीनकाजकृअकाज। ईहांइद्रप्रयोजनककवनआज। करिताजोपेरककरम
काल। दुषहरतदेतसोरदुषदयाल। अबपिताबाफकलपनाआंन। दुनिकरियेमेरोमतप्रमांन। विश्राम
हमहिवनषंडवास। पसुजीवहैपरबतप्रकास। निरझरसरझाबरझरतनीर। नगउदधहोततहांतीरती
रधनमहाहमारयहेधेन। सोउजियतबढतबस्वरिसुषेन। विश्वेसबराफकृअवरनेम। पूजकृगोवर्ध
नसहितप्रेम। ईश्वरीदेहमयजांनयाहि। तातेप्रसनअबकरुताहि। कविरोधा। पूजायहवल्लभमो
हिप्रमांन। निस्सेषकलोतुमसोनिदांन। पितुयहमंत्रकीनोप्रमांन। संसारसारनरिसकढसाफ। कृत
गोपगवनमिलबलिसकाज। इहांगोपीसबगिरनिकटआय। विस्तारकरेभोजनवनाय। करस्नेहस
नोजभुजप्रपतकीन। वनधेनजूथविचनवीन। मिदरनसीसनिसदीपमाल। वाजंत्रविविधउछवावि
साल। इहांआंनआंनभोजनअसेष। बलदीनीपरबतकहविसेष। आवरतअइनयोचकृचोरक
भुरलोनषालीकिकृकोर। कीनोगोवरधनअनकूट। लेकृष्णप्रवाएसपालूट। संसारप्रपतनयो
अंनसंग। परबतहित्तपूजासुनप्रसंग। इहजातमहोबवकृयअनंद। मषनागइद्रनयोगरनमंद
कृष्णमिलगोपपरिक्रमएकीन। मननयोदेषवासवमलीन। सपूजाहूरनकरीसुनाय। इहांकृष्ण

हमही अब सीतसंतईया॥ करिहै जु तुम कहो कन्हईया॥ श्रीकृष्णवाच॥ तुमही कहत हम दासी तेरी
मांनऊ तो यह अग्या मेरी॥ एक एक न्हावे सब आवऊ॥ जानो तो अंबर ले जावऊ॥ गोपीवा॥ करत परस
पर मंत्र जु किन्हा॥ थरथर रसना दंत जु धन्हा॥ सुनऊ सखी तुम सबे सयांनी॥ यह वगते ऐसी अब मनी जि
ह तिह विध कर अंबर लीजे॥ कठिन परे तब कहा न कीजे॥ कविरोवाच॥ कर संपुट मदनालय कर कर॥ बेप
यते निकसी तब बाहिर॥ ऐसे सब जब के कदब तर आई॥ इत ते उतरे कवर कन्हाई॥ जो ऐसे सुध न्हाव त्रियजांनी॥
बोले मन मोहन यह बानी॥ श्रीकृष्णवाच॥ इह जल तो तुम नग्न अन्हाई॥ पय देवन सो अवग्या पाई॥ तुमहि न
यो अब दोष सु ताते॥ ऐसी जतन करऊ अब याते॥ मसतक लाय जोर कर हित मन॥ वरण देव को करिये वं
दन॥ ताते यह अपराध जु टरिहै॥ के जलदेव कोप अति करिहै॥ नयते त्रस्त नइ अति नांमन॥ कर जोरे ह
त वंदन कांमन॥ सुध न्हाव जानी किन्हा सब॥ तहां प्रसन्न भए मोहन तब॥ उपज्यो तबै हास रस ऐसो॥ जांन
त कृष्ण किन्ह काज्ये सो॥ दीनबंधु न सुध मन देष्यो॥ दूरन प्रेम अनंग अरेष्यो॥ श्रीकृष्णवाच॥ दुहा॥ कारन व्र
त बुज किन्ह का॥ हव कीनो जिह हेत॥ सो फल तुम लेहो सरब॥ मन क्रम बचन समेत ६॥ सुकल निसा रा॥
का सरद॥ हम स्वदेवे वन वास॥ तब केहै सब की तहां॥ पूरन आस प्रकास ७॥ कविरोवा॥ वनता पूरन मा
सब्रुत॥ उन बंछति वर पाय॥ सो केत नमय कृष्ण सो॥ अति हरषत ग्रह आय ८॥ वासुरथे न्हराय वनक
रे जथा क्रम काज॥ सिंधा आए घोष सुष॥ राम कृष्ण बृजराज ९॥ समय जु वस्त्र हरन सुष॥ कीनो नंदकुवार॥
कह्यो सु पेन रहर सुकवि॥ आप सुमति अनुसार १०॥ वस्त्रहरनं नो नाम॥ इतिश्री बाइसमो अध्याय॥ २२॥ अथ
दुहा अरी॥ मिल सब सषा अपर दिन मोहन॥ गए सघन वन गोधन गोहन॥ कुंज कुंज मिल कीडा कीनी॥
नाव अनेक उचितरस भीनी॥ बड्यो घांम दिन व्रज वरावत॥ वन वन विहरत बैन वजावत॥ अष्ट लविह
र अमित अकुलाए॥ इहां अ सो कविपन मह आए॥ मंद ग्वाल बाल मन मोहन॥ सागर कृष्ण मध्य तिह सो
हन॥ बदामावाच॥ कहे बदांमा कवर कन्हाई॥ अज ऊ विलोक त बाकन आई॥ नये उधार थह मतो न
री कछु मगावऊ चित हितकारी॥ श्रीकृष्णवाच॥ धर्नु सरता तट निकट प्रमांने॥ जिग्य करत रिषवरत
हां जाने॥ पुन मोहन तहा सषा पगए॥ भोजन ले आवऊ मन न्हाए॥ सषावाच॥ जाचन्माह मतो नहीजा
नी॥ प्रनु यह जान्वक हत प्रमांनी॥ इह सुन सषा करत नये उतर॥ देव हम दियह तो कत उत्तर॥ श्रीकृ
ष्णवा॥ जिग्य प्रसादन निस्याजांनऊ॥ पेय हग्र अन्नपवित्र प्रमांनऊ॥ कह्यो कृष्ण अब कारज कीजे॥ रिषक
फेरन उतर दीजे॥ कविरोवा॥ इह सुन सषा जिग्य थल आए॥ रिषक हदे प्रचरन सिर नाए॥ सषावाच॥
करजुग जोर कह्यो तिह कारन॥ मुनिवर यहां बेठे है मोहन॥ भुजवर कछु प्रसाद जु दीजे॥ कारन
उचित विलंब न कीजे॥ कविरोवाच॥ भुजन मोन व्रत लीनी दिक्षा॥ सो ऊन बोजत गुर की सिक्षा॥ इहा ते
ग्वाल बाल फिर आए॥ सबै कृष्ण को मरम सुनाए॥ उन वह मोहन फेर पगए॥ कारन मषपतनी तक
हाए॥ यहा सो रिषपतनी पहआए॥ कहै वचन वसो कृष्ण कहाए॥ ग्वालओवा॥ माता भोजन कृष्ण मं
गायो॥ सब ग्वालन हता त सुनायो॥ रिषपतनीवा॥ यह सुन रिषपतनी अनुरागी॥ नव हम ते को त्रियव
भागी॥ जिग्य उरष निगमागम गाए॥ उन हम पे सिधांत मगाए॥ कविरोवा॥ उन त्रिय भोजन विविध प्रकार
पूरन करे विसद पन वारा॥ चार प्रकार अहार सचिकन॥ कीन्हे ऊते जिग्य के कारन॥ प्रेह ग्रेह ते त्रिय गजगां
मन॥ भोजन ले निकसी मनभांमन॥ आंन कुटंब करे अविरोधन॥ उनिय हमांन्मोन ही सहित पन॥ ईहां वि
याते आई आतुर॥ मुष छवि बनि रिषत मनमनोहर॥ भोजन अय धरे मन न्हाए॥ जिग्य उरप हित सरत जिम
ते मोहन बाल गुपाल मुदत मन॥ इहां लहे सब हिन जज अवचन॥ श्रीकृष्णवाच॥ सुव तुम नद नत्त
हित उरन [illegible] जाऊ प्रवीनी

सु वर्जे

कृष्ण आए। विषया दीग रगवताए। दुहा। कलिजुग कहि है कृष्ण। वासुदेव यह नाम। नवउधारन एते ये वि
हत वेद विश्राम। ७। वादिन तें जानें य नहि। मैं पर ब्रह्म प्रमांन। ब्रज हित चिरंजीवी विदत। विलसहु वे मवि
धांन। ८। कविरोवा। अघनासन जग उधरन। कृष्ण कथा हित काज। कविन रहर सुन नजे करि। साधन
है सुषसाज। ९। इति श्री भागवते महापुराने मुकुमारगे। चवीसमो ध्याय। २४। सुरराजा सुरधेनस
ग आए याही काल। अविलोके एकांत यहां। मोहन मदनगोपाल। १। इद्रोवाच छंद पैअवरी। करि
जोरे प्रभु वंदन कीने। इद्र नये ईहां अति आधीने। तीन लोक प्रभुता मे पाइ। याते गरब गरन रथ काई
तिह मद अंधन यो होतासौ। जग करता जांन्यों न ही जासो। माया वस कहु ईस ता मानें। कारन को धजो न
यथ कीने। जाक ह उष्ट करमतु मजानत। प्रभु तिह दिद्वा दंड प्रमानत। याते पंथ चलत सुर आसुर। गो
बिंद तुम गुर हकु कैगुर। ते षल ईश्वर मांनत आतम। ता हि ते ह्यं ब्रा रूप धरत तुम। मै अपराध कस्यो
वै नवमद। प्रभु छिम्या करि दे कृपा अभयपद। यह मत नाथ मोहि फिर नावै। प्रभु दान यह वंछित पावैं। गो
कल नाथ चरुन अनुरागी। नवत तेउ भूत नये वडभागी। मेरो जिझ निवासौ मोहन। मोक दह उप जो को ध
महामन। प्रलय मेघ मैं पवन पठाए। या ब्रज नासकरन कह आए। हवि तेउ वरष वरष गन हारे। मैं हत
उद्यम नये मुरारे। श्री हरुव वा। सो सुनि हस बोले जगस्वांमी। मद कर होत जु उत पंथगामी। संपति भ्रष्ट
करो हु तिह सद। है निश्चै मेरो अैसो हठ। अब सुरराज जाउ ग्रह अपने। उन अैसीन विचार हु सपने।
दुहा। ईहलोक वसि ईद्र अब। करत जु इद्र अधिकार। करि ये हित सिष्टकी। सब विलसहु सुषकार। २।
कामधेनवाच छंद द्रुतदारी। कांमधेनु बोली धीरज करि। हो तुम अगुन रूप निरगुन हरि। जगतपिता
जगदीस जगतगुर। वासुदेव ब्रजनाथ विश्वंभर। ईद्र कह्यो हो उद्यम अैसो। जन गौ बीज रहै न ही जै
सो। ब्रज गोधन जो प्रभु न बचावत। तो इन को कोउ नाम न पावत। नचै नइधेनन नंदनंदन। ब्रजवसि है
सुषसो जगवंदन। कविरोवाच दुहा। सुरपत सुरसु रभी सहित। सबे विगत संदेह। प्रभु नरहरि गावत प्र
सिध गए आपनै ग्रेह। ३। इति श्री भागवते महापुराणे दसमो स्कंध। सत्तावीसमो ध्याय। २७। दुहा।
एक समय एकादसी। निराहार कियनंद। कालिंदी असिनान कत। आये सहित अनंद। १। असुर का
ल सिंधा सकल। वेद लोक विवहार। सलिल पै सु जु यह समय। सो न उचित संसार। २। छंद पैअवरी।
ईहा वरुण के दूत जु आए। उन तिह नंद नीर मह पाए। गहे नंद जिह दूतन गाढे। करि प्रभु गल करजा ते
काढे। पलमह वरुण लोक पहुचाए। उन सेवक वहा नंद नपाए। सेरक आरत वचन सुनाए। इहा हुंड
ह आतुर आए। विरह विलाप करत ब्रजवासी। अहो कृष्ण ब्रज हित अविनासी। कारन दुख कृष्ण करनाक
र। वरुण लोक आए जु विश्वंभर। मन सुष आंनवरन सनमाने। पूजा कीनी ब्रज प्रमांने। वरुणवा। सनयदीन
ता वरुण सुनाई। प्रभु यह देह धिन मैं पाई। दरसन भयो कृतारथ देवा। सदा देउ पद पंकज सेवा। प्रभु मेप
थम न मरम पिछांन्यो। इहां नंद अन जांनें आन्यो। ईह अपराध छिमक्त अखिलेसुर। गोबिंद दीनदयाल
जगतगुर। कविरोवा। उनके संग नंद पहुचाए। यहां लेके घोष मह आए। नंदवाच। गिरधारी ब्रजलन गोपाला
परमातम पूरन प्रतिपाला। सब गोपन कह नंद सुनायो। लोकपाल यह बालन वायो। कविरोवा। गो
प सकल गोबिंद गुन गावत। प्रभु पोरष कहि कहि सुष पावत। दुहा। तात कृपा यो वरुण ते। इहां भयो
आनंद हरष लगा एमा तहिय। कृष्ण कवर सुष कंद। ३। इति श्री भा० म० पु० मुकुमारगे दसमा स
कंध अनुसारे भाषा बारवन रहरदासेन विरचित अष्टविंसमो ध्या। २८। पंचा ध्याइ कवित। सरद
काल निस सुकल। विमल कुछिय सरोज वन। विह्वर्न सोरंन विसेष। कुसमत भय कांनन। एकाकी उ
द्यान। यहां मोहन ... अगमगिगन

गोपमिलग्रेहआय। दुहा। कलौबाधमघइदकौ। नरहरप्रभुनिदांन। वासवकस्यौविरोधवस। अतिब
लकौधअमांन। २। इतिश्रीभागवतेमहापुरांणेदसमासकंधनुसारेणचत्रविंसोध्याय। २४। बदवधा। अ
बइंद्रकोपकीनोअपार। पवयेजलवारलप्रलयकार। सावर्तकनामाघनसचेत। हतपेरघोषविनासहेत
घनवरखनलागेअतसघोर। आटोपजलदमिलओरओर। इद इदकस्योवतिअमरईव। धनमदअबालगोप
धीव। इनकेयकउपज्योउअग्यान। वतमासुकृष्णमांनुषप्रमांन। आश्रयलेताकोएअग्यांन। मघनंगकस्योमेरे
अमांन। वादेसगओताकेविसास। निरमूलसकरिहैघोषनास। बाम्बालबालकारोविवांन। मनमेसुगरतअति
ग्यांनमांन। जलबिबकरकुतुमसघनजाय। ओरापतआरुहहमहिआय। धरअवतबूंदगजसुंडधार। परमा
नथंनदेवलप्रकार। पंचपवनगवनसंघटपाय। नयकारघनगरजतसुनाय। कृतघटास्यामनत्रअंधकार। क
रकासिलवरषाप्रलयकार। भुनतडितलताविभ्रमविहार। चकुओरकरतअतवमतकार। नवनूतनएकंपित
सनीत। संपातधारमिलविषमसीत। गोबिंदगोपगोपिकाग्वाल। कीनीपुकारलषप्रलयकाल। करित्राहित्राहिकी
नीपुकार। अषिलेसकृष्णतुमहीअधार। नवनूतसरनमहीसुनाय। स्वामीत्रलोककरीयेसहाय। सोसुनत
स्यामब्रजकेसहाय। इहागिरगोवरधननिकटआय। सोलियेउठायपरबतसमूल। तिहकालबालजैजाल
तूल। कमवामपांनपल्लवकनिष्ट। प्रभुधस्योअयपरबतप्रतिष्ट। देवाधदेवदीननदयाल। करिदयाकृष्णबोले
कृपाल। मतसहोकष्टजलसीतमांह। बिनरहोजीवअबअदबांह। वरषाविसेषसुरपतविकार। जेहैविलायचै
अबजंजार। मतकरकुजंतकोउत्रासमांन। परबतहैदृढममअयपांन। नवनूतसर्बमननयेअनीत। अंग
पायछांहपरबतउनीत। निडानदुधानषव्यापनाहि। मनरहेसरबआनंदमांहि। गोपिकागोपगोजूथग्वाल
पसुपंकबीसबवित्तपाल। सप्तदिननइवरषाविसेष। ब्रजवेअद्धायाअसेष। वयवरषसाकृष्णहिविलोक
रहिचकित्तईदमनबुधहिरोक। विथक्योकरउद्यमहृतविनास। तबईदविसांनोपरीत्रास। जबरहेवरषस
बजलदजाल। ब्रतनंगनयोसुरपतविहाल। संकलपभ्रष्टजहानैसुरेस। इहगैरनिवेरेघनअसेस। फटज
लदनयीउजलअकास। पुनकिरनमहादिनकरप्रकास। हविझोसुरेसबलनंगहोय। कृतउद्यिमनाहिन
फिस्योकोय। प्रभुदइतबैअग्यापमांन। निकसेजनबाहिरसबनिदांन। थितकस्योधराधरधरनथांन। गोपाल
वेणरबकीनग्यांन। रोहनीजसोदानंदराय। यसादिकनेटेसकलआय। दुहा।। अतिसनेहकातरअषिल। ब्र
जनरनारविचार। स्यामहिदेतअसीससब। चिरंजीनंदकुवार। १। सुरन्नीकतहनारसुर। धरनअवतपयधा
र। कृष्णहिवितवतएकटक। उरआनंदअपार। २। मुनिवरसिधप्रसिधमिल। अरुचारनपितवाय। करजोरे
अस्तुतिकरे। वारंवारनवाय। ३। पुहपवरषहितदियहरष। उधन्निदिजयवजाय। कीनेवंदनपरिक्रमन
अमरवृंदयहांआय। ४। महरआदसबघोषमिल। सुनजुकृष्णसहाय। अपनेअपनेघोषवहां। सबआयेसु
षपाय। ५। राष्योब्रजगिरवरधस्यो। मांनहस्योमघवांन। प्रभुनरहरहरनउरष। नएनरतनचआवांन। ६। इति
श्रीभागवतेमहापुरांणेपंचविसमोध्याय। २५। दुहा। समासुनगमिलइकसमय। बेठेगोपविनीत। कृष्ण
चिरतविसेषक्रम। प्रगटनलगेउनीत। १। गोपवाच। कहतनएसबनंदकह। विसमयवातविष्यात। कहाव
यसुयहकृष्णकी। उनब्रजेउपात। २। छंदअपरी। विहसतकहतनयेब्रजवासी। वासुदेसकेबकीवि
सी। मासत्रतियसंकटासुरमास्यो। प्रतितेबाकुचरनप्रहास्यो। भाजवरषत्रणवक्रजुमारे। अरजुनजुगवृिय
वर्तउधारे। वछासुरअघबकरअद्भुत। अरुप्रलंबकालीअहिअनहित। महाउष्टसबयदकृमारे। अरुगि
रगोवरधनचविधारे। कीनेसातवरषमहऐहृत। हैअवतारकृष्णब्रजकेहित। नंदवाच। तिनकहनंददये
फिरउतर। एहकयोहोमोहिगर्गगुर। आयोतजुग्रीतमवितारा। सेतअरुनप्रीतसुधारा। इहचौथेजुग

जुतत बैअदिष्टकुय हरि त्रयेअंतरध्यांन ५ नरहर प्रभुके तबनि उन यहाअगम अपार बिलपत ब्राली
ब्रजवधू ऐसे बिरत उदार ६ इतिश्री भागवते महापुराणे गुणतीसमोध्याय २९ गरजविगतगोपिगना
धरउर मोदन मांन करित भइ लीला किसन जथा समविजियजांन १ छंद उधोर गतिहास ना गतज्ञांन
अविलोकतं नवतांन मिलपरसपरभुजमेल करिकृष्नतादिसकेल जजमदनमोहननाव सोविञापी
यसुभाव अतिप्रेम विकबल अंग इहसमय पाय अनंग सबनई बोजतन स्यांम अनभिंन भिंन अका
म नवन्तत अंतर भाव सबमांऊ वसत सुभाव विरहनीओवाच ईहजान हून आय हे वृक्ष वनघनस्य
सोक कुदवैसांम विललात तजगएवांम हे तुलसिकाप्रियतो हि ममलेगयेमनमोहि हे प्रथ्वी उनक्वीन
कृमतीन वामनकीन रदअयधरवाराह उधारसालिजअथाह वेर्दकृष्णप्रगटे आय वसुमतीदेऊव
ताय हे मत्तवित्तमयोर कऊलषे नंदकिसोर नवचूतरे सतभाय ब्रजस्यांमदे ऊवताय कबरोवा
तिसकलकृष्णबिरत ब्रजवधूकरतविचित्र छंद ५ अखिलेस विस्वव्यापक अनंत तिहांन सो गोपिका
हृदयतंत वनओटनिकटतब आयवीर ईकप्रेमविवसजांनी अधीर बालका सु पैलीनी बुलाय लेग
एकृष्नतिहसंग लगाय उहां लीये फिरतइब्रा अनूप वनवन विहाररतिकामरूप योकरत श्रमतन
ईबाल एह दिन तुछ सूम हाऊ मारदेह सोचलिन सकअतिश्रम तिसंग आउन उगाय लीनी उछंग
अनेकऊ समय हां वीन आंन प्रियगुथ पियाकंबरी सुधांन भुजमेलपरसपरअंस नाय सोइव लेपंथरं
पतिसुनाय आधीन निहारत वदनआप बिश्वेस विवसमनमयवियाप गोपिकाकस्यो तिह अतिगुमांन
आधीनभए मोहि भाग्य आंन कृष्णयहलष्योतियगरवकीन प्रभुगए छाडि तिता रूपवीन छंद उधोर वे
अवरगोप उदास प्रभुदइ बाफ प्रकास इहां भ्रमत तेप्रियआय पतिबिरनपंथित पाय ब्रजिंद चिकविसेष
इहां देष अतुल अ सेष एव लीतिह अनुसार उनिचरनवार प्रचार देकृष्णपददेष अरु उनयवियष
विरेष पदजुवती जानप्रमांन उर बढी सूल अमांन अरबवनितावाच वृक्ष नाइए को उवांम संगलियेजात
सुस्यांम निसेषहम अप्रमांन एप्रियाएकप्रमांन वहतजी गोपीएक वन भ्रमत सोई सविवेक वनितासुक
रतविला यह एक वनघन आप दोहा बिलपत इढत सघनवन वनता विहबलवान यासे विरहविषा
द अति ईहां मिली सब आन २ गावत गुनगोविंदके विषगइ जमुनातीर इहां निहारत आगमन अंतर
विरह अधीर ३ कविरोवाच इह इच्छा अखिलेस की लीला अगम अगाध कविनरहरजैसीकही सुनी जथा
गुपसाधु ४ इतिश्री भागवते महापुराणे मुकुमारगेतीसमोध्याय ३० कविरोवाच दुहा सोरठा म
नन आसा संग सोधसोधन वनसकल उपजो तापअनंत विरहदुषा वाढी विषम १ गोपिका नाम छंद उ
धोर प्रियवदनकमलप्रकास अलीनयनसोरंभआस रवरवक सुधास्वरूप प्रियदेकुलेक अनूप सु
नवचनयमृत स्वाद प्रभुकरकु श्रवनप्रसाद तवदिष्टनेदतरंग इस्तुलगेमनकु अनंग भ्रूहभंगभ्रकुटी
भाव उसाधवसकलदाव करजानलंबित लाल कुचपरसकरकुकपाल तुमसगुनस्यांमसरूप आलिंग
करकु अनूप प्रभुचरनपंकजप्रेम मिलसुरनी संगसनेम वनसीसकालीनाग कलवरन अंगकपाल सो
चरनमम कुचसंग प्रभुकर रूपरसप्रसंग आलापहास अनेक वनदिष्टभेदविवेक रसरद रुविविधवि
लास अनेक प्रेरेकु आस तेइ भयेफिरविपरीत भ्रमउपजमनभयभीत सोइविरह अंतरसाल प्रभुह
रकुमिलभुजपाल दवगरलजलनयदेष ब्रजलयोराषविसेष अवहम हिमारतहाय विनुसत्रुकत
ब्रजनाथ कविरोवाचदुहा इह विधकरतविलाप अति उरधस्वास उस्वास कविनरहरप्रभुदरसकी अ
तिवाढी उर आस १ गोपीवाच करिअपमांन कुटंबको वनआई निसवांम कपटीतुमविन अवरको अ

तेउतरिय | बसत्रेमनेमविछबलविकल | सकल्लचलीब्रजसुंदरीय ||१|| गोपंगनागति | छंद पधड़ी ||
कोउ अंजन मंजन अनकीने | अरु कोउ यह विमहार अधीने | कोउ पितमात नतीजा आई | अधनोज
नदीनेउव आई | यहां कोउ धेनदुहावन आवत | धरपय पात्र धरन उठ धावत | बाहेपय कि रुचलैवढाए
ते अनजतनगये उफनाए | कोउ अरधा असनान कीने | दधकु कोउ जावन अनदीने | इत्यादिक अश्रे
षाआरज | कोन गिने छाडे यह कारज | इह गति प्रेम मगन बन आई | अति आतुर मनमथ अकुलाई | विहि
त कुटंब मात पित वरजी | तो उन दिर ही जु पै पुतितरजी | उहां यक तिय यह मैं अविरोधी | विकट पाट
जटिकं यविरोधी | करि हाहार वदीन तकीनी | दुष्ट गोप पति जानन दीनी | प्रेम विवस नइ जानन पाई | व
हत्रिय पान तजे अकुलाई | करि सो इध्यान धारना कामन | गइ कृष्ण मद्धि मिल गजगामन | अथ अनंगम
सदसा वर्ननं | कवत बपै | गन्यो प्रथम मने नानुराग | चित संग विछन गिय | प्रेम विवस संकलपि | नाव तिह
निद्रानगिय | तन सुषीन विधियाविवर्त | तदात्रपान सावै | मिलत अनंग उनमाद | यदां भ्रम मुरछा आवै
पावै जु पान पंचत्व पै | यह अन्त तगत अंग की | सुरसिध कह त नर हर सक व औरदसदसा अनंग की ||१|| छं
द उअरी || मिली प्रथम जोरो की मिंदर | यह कहु प्रेम न्नाव च्य परमपर | आगे चली सु पाछे आई | आतुर ज
दपि मदन अकुलाई | ईहां मदन मोहन अविलोकि | रही एकटग दृगपल रोके | श्री कृष्ण वाच | नजे
जु तुम आई ब्रजन्नांमनि | कारन कहो आगमन कांतन | ब्रज है कुसल ग्वाल सब गोधन | अब यह स
मय न यो क्यो आवन | कठन निसा उद्यान भयंकर | निकसे काल बाल यह निस्चर | जे त्रिय चतुर वं
कुलजाई | नामन निसा वन कवन न लाई | तुम हि कुटुब सुषो जत ताते | अनपाये दुषषो जंतयाते
डरलन्न वन सो ना निस देषी | वेगजाकु अब न बनविसेषी | वेद विदत रिष वरयह वांनी | वनितापति
देव ति वषांनी | पति सेवा हित सो करि प्यारी | नियत लहै सद्गति सो नारी | जड जोगी बल जवर जु वारी
बाबन वंस भ्रष्ट विभचारी | विगुन विरूप विराग विसेषी | निदक दड़क दुष्ट द्वजधेषी | दयाहीन दुरमत
दुर्वादी | वे संक विद्दीदरिद्र विवादी | कलही कुटिल कूरकम कातुर | पाप आपद नि पतित कुपातर | अं
ध अलस अंगहीन अभागी | आतम मत अन बिध सुष त्यागी | कृतघातक कृतघ्न चोर कुकरमी | ध्रूत दिष्ट
सगाह्य अधरमी | नार तथापित त्रेपतनांही | महा कुलम न ओजिन मांही | दुहा || परमधरम पति ब्रत को | प
ति सेवा फल पाय | पतनी पावत सुध पद | साषा वेद सहाय ||१|| गोपीवा | हाहा हा ब्रजनाथ हरि | उचित क्व
न नहीं एह | ताते अ सरन सरन तुम | देवन उतर देह ||२|| कवत | उर कंपत सूकत अधर | द्रवत नयन जल
धार | गद गद सुर गोपंगना | वादे स्वास विकार ||३|| गोपंगनावा | पद पल्लवन षन्द लिषत | बोली सहित वि
वेक | तुम मति तुम पति तुम हि ति | अंतर नाव जु एह | छंद प || एमन इम गनन तुम माफ आय | सुत कंथ ग्रेह त्य
के सु गाय | जगदीस कहो अब कहा जाहि | निस्से प्रचरन कबु चलत नाहि | उपज्यो जु ताप न स्मरन
आय | सुनदिष्ट सी चवु झव ऊ सु न्नाय | नीत रयह विरहाग्न तूल | मिल देह दग्ध कै है समूल | म
न जोग ध्यांन धरि मूल मंत्र | सब तुम हि माहि मिल है सुतंत्र | तवर माउपासित पद उनीत | वनव सह मसे
वत है विनीत | पद रज तव तुलछी नई सप्रेम | निह चै हम पाइ सहित नेम | करि कृपा हम रू पकु श्रणतपाय
हासिक चावक रिये दयाल | ऐसी को त्रियां त्रयलोक आहि | तव मुरली सुर वमन न चमनताहि | सब अंग अं
ग सुंदर सरूप | रति रंग रमत मनमथन रूप | कवि सेवाच | इहां दीन वचन सुन के दयाल | करुना निधान
प्रभु तुन एक पल | वनता विलास करि महावीर | तहां आये दिन मणि सुता तीर | रत करत विविध रसरीत रंग
अविलोक हास करपरस अंग | विध विध विलास वनिता विहार | करि त्रपत सकल जस वत कवार | गोपिका
रीफ यहा वैण ज्ञान गरव बढनउ अति रत गमांन | दुहा | इनके मद मोचन तत्रभा धरत नु बिबय हध्यान दित

वरसतसहास ३ निवजेअमरउधनिप्रकास गंध्रबमिलकिंनरकरतज्ञांन अपछरातानरसआनआन
अविलोकरासमंडलअनूप सससिनयोमोहव्यापकसरूप गतिपंगनएग्रहगनिनिसिंग नहीचलतथकित
रहरथनिहंग निसबढीयहेकारननिदांन ३ नननईअअपनहूरनप्रमांन रचकृस्नदेहतेतेसरूप अविलो
कजितीगोपीअनूप एकहीवारसबहितअनंद मिलहएमदनमोहनउमंद हेएकजदपिनितनिंकार आ
काररचेतदपिअपार अविलेहेसआपहआअनंग एकतेसकृतअनेकअंग श्रमस्वेदबूंदक्रीडासुसंगआ
नदहरिब्रजतवरूनअंग ईहांपलसहितरमनीउदार विम्बेसआयजमुनाविहार जलमांऊधसेलेजु
वतिजूथ वारनजुमतकरनीविरूथ अविगाहकेलजलतटनिधंत करिआएउपवनरमाकंत उहा ब्र
जकिन्यालेमासव्रत सरिताकेरसनान संपूरननयोमागसर वरदीनोभगवांन ४ सरदनिसाराकासमय
विचमरासविलास वाकेफलश्रनइहांपायोप्रेमप्रकास ५ हितगोपीवस्त्राहरन कृस्नप्रथमजोकीन अ
बताकोअभिलाषइहां देवकृपाकरिदीन ६ परीक्षतोवाच इहप्रब्रोसुषदेवसो रहिसपरीक्षतराय हैना
रायनधरमहित संततवेदसहाय ७ तेईनारायनअवितरे अबकृस्नअवितार कुलजादववसुदेवके
गृहहरनअघभार ८ अविलोकनपरत्रियउमंग परसनवचनसप्रीत साधनकोअनुचितसदा यहतो
परमअनीत ९ मुरलीसुनमहामोहनी पटपठमंत्रवियोग अरधनिसावनघनअबल सोनधरमसंजो
ग १० कहीयतजोगेस्वुरकृस्न तेजोमयजगतात असीकैसेआदरी वेदविरोधकवात ११ मनहिविचारवि
चारमम असंभावनाएह तुमकरिमिटहैजीवते दुषदायकसंदेह १२ सुषदेवोवाच छंदउधोर नृपकसीनी
तनिधांन यहसाधमतसुज्ञांन द्रब्रोजुराजप्रवीन उजव्यासउत्तरदीन अजीतमयजगदीस अरुकरन
कारनईस एअजतपालतसंत एईनासहेतअनंत इनआदमधअंत मतयहेवेदमहंत ईनकोनउन
नपाप अनविद्दअनगुनआप छंदप अग्निजोसरबभछीअमेव दाहकतउसुरमुषअगटदेव विवहार
वेदविद्याविवेक अगनविनकर्मनहीहोतएक आचमनकरयोजोपैअसेष आपोनसिवहीतउविषविसे
ष जीस्वयंजोतपरउरषज्ञान पेकर्मदोषतिनहिनप्रमांन कबुकरेअदेवतकरमकोय हवहेततासते
नासहोय हेनलीवरीजोग्रहेहाथ नियततउकृस्नत्रयलोकनाथ अपवित्रतानअग्निहियकाल नरूलो
कतदपिवंदतत्रकाल आचरेहलाहलकोउअज्ञांन निस्चतेसुनासपावेनिदांन श्रीकृस्नमाहाजोगेस्वु
रेस यहषेलमदनजीतोअसेस आगेजुविधवासवअमांन नरदेहकृस्नकीनेनिदांन योकरीअतुललीला
अनंत सकमनुजदेहउधारसंत गोपिकागइसबआपग्रेह निहचैमनवंछतसहितनेह यहअजितदेव
मायाअमांन जांमोनमरमकाऊसुजांन निरगनाआगमनगोपनार समझोनकिरूमनबुधसार उहा
कृतव्रजलीलाकृस्नकी अद्भुतविरतअनंत सरधायुतगावेसुनै सुषपावेनवसंत १३ कविरोवाच छप
क वनवजायनिसवंसकृस्नईछ्यायहकीनी अषिलचितआकरष नारब्रजबोलिजुलीनी विचमहास
विलास रासरससुषदरचायो नुवब्रमासनिसनई इहाअद्भुतउपजायो कीडाविलोकश्रीकृस्नकी आ
नंदेथिरचरअमर सुन्नहांनयहेनरहरसकवि पावेमुक्तप्रसादपर १ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेद० तेतीस
मोध्याय ३३ छंदप सकुरमनंतअपनेसुनाय इकदिवसअंबकाजातआय सरस्वतीसरकरसिनांन वि
धजुक्तरेपूजाविधांन दिवसैअंबैकागतिनयोदेष वसरहेगोपतिहगविसेष उपवासदानतीरथअनंद नि
सकरयोसयनतिहगैरनंद यहांएकमाहायजगरअसंत नषोअतिआयोतहांभ्रमंत नंदकहयसनला
क्षौनिसंक इहांवनेआनविधलिषतअंक उननंदउकारेकष्टपाय हाकृस्नकृस्नकरियेसहाय ईहसुन
तगोपआयेअपार पन्नगहिकरयोअनुमुकप्रहार इहांकृस्नआयत्रयलोकईस सोहयोलातअहिफण्योसी
स प्रभुवरनवूवतसबगएपाप अपनोपदपूरनलसोआप सोउद्धारितहांयजगरसरीर धरिद्युअरेहवा

स

बलातजैत्रकाम ३ महासघनउद्यांनमद विलपतबाकीबाल कहियतवेदउरानकरि नीतनिउनं
दलाल ४ इति श्रीभागवते मं॰३ कतिसमोध्याय ३१ करतमनोरथमिलनको वनिताविरहविराम चित
चितत जोवानकी स्यातबूंदघनस्यांम १ प्रगटिहब्याआउनी यहांसमयघ्रविलेस गोपीमंफलमध्यगत
सुंदरस्यांमसुवेस २ छंदउधोर उठसकलसिनमुषआय मनुपरमनिधिप्रियपाय कोउधरतकरकर
धाय कोउमिलतमृदुमुसकाय तहांलेतकोउतांबोल बडुनरकरसमयबोल सुनकष्भवरनसरोज
आलिंगकरतउरोज सुवक्रंग भ्रकुटीभेद अरुदगकटाक्षअषेद कोउधरतउरप्रियथांन इगमुद
मनिदांन मबविरहहरउरनांम कृतउदितअंगअंगकांम व्रजगोपवनितावृंद निसजोरमीजनंदनंद
हांरविसुतातटआय सवभांतसुषदसुभाय वनकुमदकुलिसुवास वहिपवनत्रविधविलास मधुम
तमधुकरमाल रससहभ्रमतरसाल वनितानउतरवास प्रभुलएप्रेमप्रकास तेइवसनपीवनाय सु
षवैवस्यामसुभाय जोगिंदउरजगजेव जिवसतदेवनदेव सोइमध्यराजतस्यांम सुवसभावनचूजवांम
तेइकछजमुनातीर क्विगोपिमंफलवीर गोपीवाच तहांक्वनकहिव्रजवाल वसरोषतर्कविसाल हित
सवदअमरषहास उनदिष्वकप्रकास प्रभुकसोनीतप्रकार वसकपटछाफविकार दुहा कोउभज
तेकूभजै कोउभजतेनभजंत भजतैअनभजतेनजे कोहैसोध्रुकत श्रीकृष्णवाच हसिबोलेयहसुन
तहरि नीरसुनऊनिदांन ततजुष्ब्रौमोहितुम पेसोइकहौप्रमांन १ छंद प॰ भजतेकूजोकोभजैभ
यकृतवदैआपस्वारथकहाय सुरभीजोजोजनपायसुध देहेतदनंतरततोदुध भजतेनभजेजोवि
रूभाय कृमउदासीनजोपेकहाय नदीभजतजुपेभजअभजमान निरधारस्यारतिनकेनिदांन सुनियै
जुमांनसीप्रथमसोय हितपूरनकांमसुद्वतियहोय कृतघनसुपेत्तीजोकहाय सववघ्रहृदचोथोसुभ
यईक्विवकूंनमांझकूंनहीअनीत गोपीयहजांनऊगुदगीत कविरोवा॰ पतिव्रतनिउनपहसमयपायस
बहसीपरसपरत्रियसुभाय जगदीसगोपिकामर्मजांन प्रभुततवृतावनवकूपांन श्रीकृष्णवा॰ धूरनदरइ
जौनिधहिपाय जगवढेगरनसबभूलजाय निधनासहोयजबपहनिदांन जुनअटकैताहीमांझपुं
न तातेतवकीनोपरीत्याग सोसमकलेकूगोपीसुभाग ममहितलांघतुमकुलमृजाद मनक्वनकरमक
रिअप्रमाद हितबाकृतजीवननिठुरहोय करिबोविषादताकोनकोय रिदलोकवेदसंकलउरंत
तुमतोरमिलीमोकहतुरंत प्रीतीयकारताकेप्रमांन मोपेनहोतयहसत्यमांन सोअबेतिहारैही
संतोष सोकैहौअनिरिणदोषमोष इहधीरजतननहीकछुआंन यहपरमप्रियमोनऊप्रमांन दुहा सु
निईत्यादिकस्यांमके वनिताक्वनविनोद उमगेप्रेमसमंदउर पूरनपरमप्रमोद ४ इति श्री भागवते
महापुराणे मुक्तमार्गे बतिसमोध्याय ३२ कृतआरंभजुरासको सऊमोहनघनस्यांम सरदनिसारा
कासिसी उदितनयोअभिराम १ हैनिकुंजमंफलतहां विद्रुमलतावितांन सीतलमंदसुगंधसुषप्र
वनचलतहितप्रांन २ रंगभूम्पराजितरुचिर पावनविविधप्रकार भामनिमिलनिरतलगनए मोहनन
दकुमार ३ छंद प॰ प्रियमध्यस्यांमसुंदरस्वरूप अरुदरूऔरवनिताअनूप ईकएककानगोपिकाए
क अविलंबकरनकरबिबअनेक रसवढ्योहोतविसालरास अमरनविवांनछायोअकास सुरराग
भेदगतितालसंग अन्नेककलासंगीतअंग नरकुचनितंबकटिषीननाय जनुभ्रमणसंगमततुटजाय
नूपरकटिमेषलबलयनाद सोमिलनभडधनितुमुलसाद मिणनीलकनकमणिकाजमाल वनमनरूरास
मंफलविसाल श्रमस्वेदबुदमुषहासमंद अरुउफततवासवासनअनंद चमकततकपोलकुंफलसचाल
मिलकंचलहारावलीमाल उरुअंवरउघरतउरजओट जनुदरसदेतजुगसंभुजोट मिलस्यांमजलदमधु
तडितमाल घनमंफल [illegible] प्रेमवांन सुरत्रियाऊस

जयमान । ब्रषभासुरकौ देष्यौ विनास । सुन आए नारद कंस पास । नारदवा । मुनि कहो कंस सौं मुलमं
त्र । तहां मिले आंन सुरका जतंत्र । रिस करि तुम किंन्या इतौ राय । उह मइर जसोदा गरभ आय । रोहणी सु
त बलदेव राम । सौ न यो नंद कै ग्रह सकाज । देवकी ग्रंस भयो कन्ह देव । सु वसुदेव जो मैं तुम दिनेव
इह बल कर पठियो नंद ग्रेह । सो उपोष्यौ जस वत अति सनेह । जो हती देवकी सुता जांन । उहा माया धरि
गहि इहां आंन । अनसम जबालह त्या अजांन । मुनि करी सु पैतु मन्न मांन । वसुदेव उत्र दै महावीर । सो उ
आय नंद कै ग्रह सधीर । निश्चै सुक हावत नंद नंद । वितौ है जादव कुल अनंद । वसुदेव नंद हे मित्र वीर । सु
त राषि ले ब्रज मै सधीर । कविरोवा । रिस भयो सुनत यह कंस राय । धरि षग्ग दुष्ट आयौ सुधाय । वसुदेव
मुक्त काटत विताय । सो वरज्यौ नारद मुनि सुनाय । देवकी सहित कर महा डोह । ले जरे बकु ष्ववसुदेव लोह
ष्वस थांन गये नारद सकाज । करि सिध यहां सब देवकाज । यक कै दैत नाम के सीध स्नाध । विपरीत करम
करि धरम वाध । कंसवाव । कन्ह नाम सुत नंद ग्रेह । सो हत कु जाय तुम नि संदेह । पठियो सु कंस केसी
श्वार । मिल आय मो हि सो बाल मार । कविरावा । ई हासा कस भा बैगै सुनाय । रसरो सभ स्यौ अति कं
सराय । यहां आय मिविमै त्राय सेक । विध जथा थान बैगै विसेक । गजपाल बोलली नौ सज्ञांन । सन
मांन कस्यौ अति तिह समांन । चाणुर मल्ल मुष्टिक स्वेत । सलत सल मिल पर गह समेत । कंसवाव । ई
हां क सौ कंस तब ब्वन एह । हैराम कृष्ण दो रू नंद ग्रेह । छल करत हारा षेहै बिपाय । ईहां मो सो नारद
क लो आय । सो वासुदेव है उसर साल । करउ न कै मेरो लिष्यौ काल । उनके अब मारन कौ उपाय । सो
कर ऊ सबै मेरो सहाय । निरभय यक मिंदर सुष निधांन । थित कर ऊ यहां अब सस थांन । कर धनुष
जिज्ञ सो कपट काज । सब आन लोक मिल है समाज । कविरोवाव । सवफिस्यौ दिवस उरवदी स्तूल
मारन सिसु अह्लाद इसमूल । उवत बै ग्रेह एकात आय । अकरूर इहां लीनो बुलाय । अकरूर एक हि
त काज आज । सो करियै मेरो बुध साज । ऐ जादव है जितरे अनेक । इन मै हितकारक तुम हि एक । कार
न तो हि राषत वरु काज । उरस्यान कन्यो संजोग आज । दूहा । है दै सुत वसुदेव के । राम कृष्ण यह नाम । यहां जू
स्त करियानियै वसत नंद के धाम १ कारन कहि कर वरषकौ । सो नंदादि समाज । इहां सो ह गले आइयै
कपट धनुष मष काज २ कितु कव लिया पिल कर । मारिहै निश्चै मुढ । कै मल्लन कर मारिबौ । यह दोऊ स
गे गुढ ३ भोजन सार ह आदन व । जितेक जादव जांन । करि सब दिन कौ नासकुल । मैं यह मंत्र प्रमांन ४
जरा यस तमै रौ जदपि । उग्रसेन पितु आदि । कछु रख्या उन राज की । तदपि घरी नता हि ५ ऐतो हत वै
है अवसि । देवकी अरु वसुदेव । वाकी पुत्री है अवसि । वाको उन अजेव ६ हव ऐस बही मारिहो । विरन
आद देवंस । अनकंटक करि आपनो । करूं राज ततो कंस ७ । छंद १ । सुमरो है मेरो जरासिंध । संचर नरका
सुर प्रातसंध । अति बलबांण सुर उविद वीर । ऐसंग सषा मैरै अधीर । एकंत्र करूं ऐस बेद्याज । सम्मूल
उषार कू सुर समाज । दान पति सुन कु यह निसंदेह । है अनि षाय मम वित्त एह । अक्रूरवाव दूहा । मीच
क्याक नके मरम । अब तो यह है उपाय । यहां क्वन अकरूर इह । सु पेक ह्यौ समझाय ८ परम मनोरथ
आपनै । प्रति दिन चिंतत षांन । सिध असिध तुसुन असुन । देवाधिन निधांन ९ । कविरोवा । सुफलकसु
त आए सदन । तहां या पी मद मंत्र । नव जैसी नवतव्यता । तै सी इमिल है तंत्र १० । एती श्री भागवते म० द०
कंस पृट उद्यमो । बवतीसमोध्याय । ३२ । दूहा । अपर दिवस केसी उसर । यहां ब्रंदावन आय । पात स
म परै कौ प्रगट । सुरनी पंथ सुनाय १ कारन अश्व सरूप कर । दिरघ भयानक देह । बिहीविदारत
अयषुर । षे मग वदी सु बेह २ । छंद १ । तहां धुनत संटाले धूल तास । ई हे पवन जलद विघुरे अकास
नव नील जलद तन करन ग मुष विवर रोषर तरंग । इह सम यधेन संग कृष्ण आय । देष्यो सो इ आसुर

दोसधीर। श्रीकृष्णवाच। ईहद्रुब्रक्क कृष्णकह्यौकीनआप। उनलह्योसरपतनकवनपाप। विद्याधरवा।
विद्याधरनौ हूंमहावीर। सुंदरसनांमराजासधीर। मोकहजोहूबेतुमसुरार। विरतातसबेसुनियेवि
चार। देष्योमेसुंदरआपदेह। सुनरूपवेसवाढ्योसनेह। तपसाधतमुनिसरस्वतीतीर। समरजितनयेज
रजरसरीर। ईकदिनहौंनिकसोतहांआय। सुनरथारूढअपनेसुभाय। तनतुरवलतापसदेषता
स। हवककरह्योवगटमैताहिहास। रिषरोवाच। इहितकह्योअंगरातबरिसाय। कृतदुष्टहोहितूसर्पकाय।
विद्याधरोवा। ततकाललहीहमजोनतास। उपनुत्कैअबलाजोउरास। अबउदयनयेममकर्मआंन। प
रसीसहमौमोहिचक्रपांन। उषबुटेआजमोहिदुष्टदेह। अपनोपदपायोवगटएह। कविरोवा। पनुक
रिचर्नवंदनपनांम। सुनदेहपायआयोसुधांन। अविलोककृष्णदेवतअनंत। सबहरषेब्रजजनसा
धसंत। करिसफलदेवजात्रासकांम। धीरजसहूआयेनंदधांम। बंदउधोर। इकदिवसजुतबलदेव
वनआयकृष्णअजेव। वनसंगबङब्रजबाल। कृ तउदेसिससतिहकाल। वनफूलविविधविसाल। मनमुदि
तनृमअलिमाल। सुनकंजकुंजसंजोग। उनिवदसुप्रेमप्रियोग। ईहांकृष्णवीणउदार। वजसहसुरङ्ग
कवार। सुनिगोपकारसरंग। अतिन्नइविवसन्नमत जोषिसतन्नूषनजोट। अंगउनतअंबरओट। न
इश्वेमविकबलनाय। सोजानपरिनसुनाय। यहसमयआसुरएक। कृतदुष्टकीनीटेक। नरिबाथलेवल
नाम। निजसंषचूडिसनांम। कियचियनवाहिउकार। हांकृष्णदेवउदार। नयसङ्सुनिजदुन्दूप। उम्चि
लिसंगअनूप। जवकृष्णपठूचेजाय। उनच्लोअसुरउलाय। मुष्टकामास्योमुक। तिहलङ्गोधरनीतुरू। पा
पिष्टबाहुदेषांन। मदिपस्योपरबतमांन। सुनकृतीमिणतिहसीस। सोउकादिलीजगदीसमणिकंद्रसीस
नमान। अथजहींदीनीआंन। इतिश्रीभागवतेमहापुराणेचौतीसमोध्याय। ३४। अथदुहा। वीतेविविधविलासवन
सबनिससांमासाम। विषमनयोमिंदरविहत। वासुरविरहविराम। १। बंदपध। गोधनसंगआयेवनगोपाल। ब
ङसषासंगब्रजगोपबाल। गोपीवाच। वसविरहपरसपरकहतवांम। सुनसषीअबैयहरूपसांम। करवा
मबाहूउपरकपोल। धरअधरवैनअतितनअमोल। करपल्लवहूरिताबिङकीन। उनिवंसवजावतअतिप
वीन। सुरवधुजदपिनरथारसंग। अतिहोतसुनतवसमोहअंग। तनषिसतवसनसुधनहिनतास। वंसीधुन
सुनचूलतविलास। तहांकवनमात्रहममनुषदेह। सुनिहोतवंसधुनवससनेह। वनजंतुसुरनीतजवन
विलास। यहरहेदंतत्रणपत्रयास। वङ्ओरग्वालकरथारचित। वांसुरीवेतकरधरविचित्र। धरमोरपंषसिरगु
ञ्जधार। सुनगुहपमालउरधरसवार। जलजंतुविहंगमविविधजांन। रहलीरूपविलोकतनिकटआंन। यताद
कृष्णकेविरतअंग। सुधकरदिनवितियोप्रेमसंग। कविरोवाचदुहा। सुरनीरजरंजितसुचंग। सांमसुगोधनसंग। सि
ध्यासुषआवतसुयह। अद्भुतसोभाअंग। २। घोषघोषगोपंगना। वढचढचितवतचाहि। विह्वुरीजैसेकरमवस
प्रेमसहितनिधपाय। ३। गोपिकादिवसविरह। इतिश्रीभागवतेदसमस्कंधनुसारेपंचतीसमोध्याय। ३५। बंद
प। आसुरअरिष्टनामाअनीष्ट। तिदुष्टकुटिलकपटीकुचीत। इहांकृष्णमहामहिमाअसेष। बृषसहित
सकोसोसुषविसेष। धरवृषकनरूपआयोसधीर। वउद्दिरघककुतगिरशृंगवीर। चषअरुनकु टिललंबू
लचाल। कवितसमुद्रवतिमाजुकाल। आकृतअनूतमुषविरकआय। नयकारगरजकीनोसुनाय। नर
गरनआवसुरनीसत्रास। वियगरनगिरेसुनसुनसहू तास। उरपैवतहीब्रजजनउलाय। सोदेषकृष्ण
निकसेसुभाय। बितबिनतगुरननचढीबेह। अविलोक्योमोहनदुष्टएह। श्रीकृष्णवाच। वसरोसकृष्ण
बोलेविजैत। दुष्टनकूदहादंडदेत। वृषमाधमजोतूसमरवीर। सकआवपवारत्तहैसधीर। कविरोवाच। इह
सुनतअसुरताडितसक्रोप। कृतपूछउरधधायोसकोप। धरिसिंगउनयमोहनसधीर। वसुवतीपबास्योमहा
वीर। यहांजदेअंगनेहु [illegible] मोहनगृहआएवि

अजपोषत जैसे सुत नआंन। पुन हत तत तिन दिआप नै पांन। है करत पाप सो उर हेत। मानै न त्रास मन रुम
समेत। दुहा। कारन जीवन राज के अनरथ करि है अनेक। ऐसो कंस असाध्य यह है कलजुग मह एक।३। सब
नगनी के सुत सुता कीने नास अकाज। ऐसो महा अधरमि यह करत राज के काज।४। बसियत वाके सीव ब
सि पुन मुष देषत घात। हम कह जो छूटत महर कहो कहा कुसलात।५। नात नात नो जन सुगत। कीनी नंद अ
नेक। अति सुष युत अकरूर यह बसे निसस विवेक।६। इति श्री भागवते महापुराणे अकरूर घोष आगमन
नाम अष्टती समो अध्याय।२८। कबिरोवा। सुफलसुत सभ्या सुषद बिमल करयो बिश्राम। बैठे निकट सु नंद
बस सकर षन घनस्याम।१। मिलन मनोरथ चित मह कत अकरूर सकाम। मिल कीने संजुत महर सबै
सपूरन स्याम।२। पुन पूछे अकरूर सत बासुदेव यह बात। सगट सुनाव कुदान पत कुल जादव कुसलात।३।
अकरूर बाच बंद उधोर। कहि बचन तब अकरूर। सुनिये सुजदकूल सूर। जिह बंस कंस कुरोग। बसुदेव हत
रहत बियोग। तिह बंस की बिष्यात। कहा पुछिये कुसलात। पुनि कह्यो कछस पीत। अकरूर सुन कुआनी
त। मम सात भ्रात ही मार। पैब हिन सिलही पबार। मम हेत पुत्र हि मार। पुत्र का सिल ही पबार। देवकी अरु बसु
देव। जरि पग न लोह अजेव। दुष सहित दुसह देह। ग्रह द एक आरा गेह। सुन नयो आवन साथ। ब्रज दुसह दु
ष अबबाध। आगमन कारन आज। कम जथा कह कुसकाज। अकरूर बाच दुहा। तबै कह्यो अकरूर तहां
सुनिये सुंदर स्यांम। जातै कंस रु जादवन बाढो बैर विराम।४। कबि कबत। कंस ये हन नारद स कांम अवि
चित आए करि ह्वा एकांत बिहत आसन बैग ए मुनि किनय हयूह मंत्र। सुर काज सुधारन करत कंस नि
रबंस निष्ल ब्रज बिघ्न निवारन देवकी गरभ तब जन मदिन कह्यो मर मरि बकंस कह पापिष्ट सुनत उर
पर जरयो मिलो घृत जनु अनल मह।१। कारन तिह षल कंस बिषम जदुबंस विरोध्यो कोउ कादेहत कबु
क सबै ब्रज मंडल सोध्यो जरि पायन जंजीर रोष राजा लै रोके सब पारे उर साल सहत सो दुरहत स सो
के तव अंत काज उद्यम अबिल करत जथा कारन कुमत विध लिषत अंक नरहर सुकवि मिथ्या होत
नहि साधमत।२। बिषम धनुषमष ब्याज तुम हि बोले अति आतुर पाट हसत कवलियां पिडि हरि द्वा
र निरंतर महा मुष्टि चाणुर मल रंग भुम्म रहाए अरु अरिष्ट अनेक सकल जहांत हांसजाए बलदेव गोपि
नंद दासब जथा भेट संग जीजिये करि है तब रष्या देव कुल कृष्ण गवन अब कीजिये।३। नंद दैअ षरी। य
ह सुन कृष्ण नंद पह आए सब अकरूर वचन समझाए बिषम कंस के मरम बताए अपने हित अकरूर सु
आए कृष्ण कहियेगवन बिलंबन कीजे जथा भेट आगे कर लीजे इहां नंद ब्रज गोप बुलाए सबै प्रियान मै समु
झाए। अकरूर बा। प्रात चपाल करहुं मथुरापति जथा जोइ कि कहि करि सोइ साजत नहू बात यह घोष अ
नाई कहियत वलि हे कवर कन्हाई घेरु बल्यो सो इह ब्रज मह घर घर परम दुसह त्रिय सोव परसपर ऐ
सी बृज बनिता अकुलांनी बिषम दसा सुन जात बषांनी मुष हि बिलाप उसास न मोचत सो सम भान मन ही
मन सोचत कंपत हृदय बिगलत करि कंकन नीर अषंड धार चल नैन इही बिकल जन इअकुलानी पैन
परसपर जात पिछानी तारु अधर सोषक टकत न अरु मति नंग नइअति अन अन उपजी बिषम दसा के
बु ऐसी जथा सक बिकही जात न जैसी कहि उर बाद बिषाद सकामा बिथक हि दोष लगावत बांमा बिम्व
उपाजक जग्त बिसेष्यो दारुन करम उदय हम देष्यो महा प्रेम जुत न्रत मिलावत बिनु अभिलाष नये
बिछुरावत कृष्ण बदन बिबमोह कराए अब एउ सह बिरह उपजाए साधु करम यह नाहिन स्वांमी ज
गत उपाजक अंतरजामी जग अकरूर नांम लह जैसो कूर करम यह कहियत कैसे हे एमोहन नेत्र हमा
रे सो नजा कुले दइ सवारे हम बिनु नयन आधरा कै है जा दिन रात मृतक से जे है सबी परसपर कहि क
हि सोवत बंप अपंड जलधारा मोचत निगम लोक कुलकान न साई करे यष्ट हम कवर कन्हाई पति गति

द०स्कं:
१७१

वयदाय। अविलोककृष्णयहनिकटआंन। गुणलातचलाइवजजांन। आकरष्वचरनलीनीअनंगअरु
गिगनचमायोअसुरअंग। हरिदियोमारिहरिकुधरीय। सतधनुषमात्रदयपर्यौसोय। उनउगेअसुरक
भुचेतपाय। धरकृष्णसमुषआयोसुधाय। कंदराकारमुषमत्तिकीन। दिष्योजुकृष्णसुजमाफदीन। करक
स्योव्रधतिहमध्यकाय। सोउफाट्योकिरिकटज्योसुनाय। दुहा। इहंमास्योकेसीअसुर। पोरुषकृष्णप्रका
स। अतिहरषेनंदादिउर। उधनिवजेअकास॥२॥ छंदकुंधेरा। इहवोरनारदआय। सबचिरतदेषसुनाय। ना
रदोवाच। करिजोरअस्तुतिकीन। प्रभुपरमपुरषप्रवीन। नवकूपतनावनरूप। अद्भुतरूपअनूपतुमआ
द्यमध्यजुएक। अरुकरतरूपअनेक। जोगेसतुमजगदीस। अप्रमेयआतमइस। तुमवासुदेवविनीत।
जउदेवत्रयउरजीत। तुमसरबआतमसिध। प्रभुसायंजोतिप्रसिध। सतपुरषमायासंग। नवकूतअजतअ
नंग। सोइराद्वकरतसंघार। ईश्वरासुआउदार। इहउष्टमास्योआज। कियकृष्णतुमसुरकाज। इहावीच
परिह्निएक। अरुकरऊकाजअनेक। कृतउष्टमारऊकंस। निसचारकरिनिरवंस। इहसकलविधसफ
ल। अरुगएगृहरिषराय। कविरोवा। वनचद्योगोधनवृंद। चलसंगसबब्रजचंद। छंदउअपदी। विवधप्रकार
करतक्रीडावन। मिलसबग्वालबालसंगमोहन। कृत। ममेषजूथसिसुकीने। देवग्वालकाउरबिकदीने। ल
लबालकोचोरलगाए। नावअनेककरतमनभाए। कबुपसुचोरचलेतलेतसकर। पुनकोउबालहोतरषा
पर। उपरानीक्रीडाकबुऐसी। जीकबुकानआइमनजैसी। समयदियतकोउत्रमहाबल। षेचरजोमासु
रनामाबल। तबतिहरूपअसुरआयोतह। मिलइगोबालआनचोरनमह। लेलेजायमेकसिसुलंपट। सोरोके
गिरकंदरसंगट। सबहरएकहुबालकसब। तहांकृष्णदेषेघोरेतब। प्रभुतहांजोगपधानपछिचांन्यौ। जनदं
सकवोमासुरजान्यौ। उनिलेचल्योमेकसिसुपामर। पोहचेदोरकृष्णतातापरपकर। कंठसोअसुरपबास्यौ
मषपसुज्याउष्टहितहमास्यौ। पदपरधतकंदरमुषपाइ। करसिलकनकनथस्यौकन्हाई। उनतिहमा
रूग्वालसबपाए। इहानंदनंदतिनहीलेआए। महाउष्टवोमासुरमास्यौ। अमरवृंदजयजैरतउचास्यौ। इ
हाबलदेवकृष्णयहआए। सिधागोधनसंगसुहाए। इतिश्रीभागवतेमहापुराणेमुक्तमार्गेकेसीवोमासु
रबधनोनामसैतीसमोध्यायं॥३७॥ दुहा। सोरठा। अज्ञावसअकरूरचितहितवृंदावनचल्यौ। सदादांनपत
सूर। नीतधरमपालकनिपुन॥१॥ छंदप॰। सुजरथपरआरूहसाधकूल। साइतरसनकउपजीसमूल। उ
रकृष्णदरसकीवदीआस। वसवेमचितउपज्योविसास। देरसनमोहिपुरजनकृष्णदेव। नेवचितनमनमह
पुदनेव। अबनावउदितममनयोआज। कृमतातैदूरणहोतकाज। अविलोकनकृष्णकोमुषउदार। पुनकैदे
नवसामंदपार। ब्रह्मादिचिरनवंदतविधान। सेवतनितकमलासावधांन। मेरोसिरधरिहूचरनदूल। करिधरि
हैमोहनसानकूल। ममफिरीषद्धिनिनगनमाल। जेहैविलापअकरमनजाल। अंबरीषआददेनृपतओर
थितराजतिरेजगोरगोर। दुहा। राच्योसुदरसांमरंग। उधोचितअनंग। जतनऐउकारीउनज्यौ। यहैनउजोरंग॥
१॥ छंदप॰। योकहतनंदकेघोषआय। यहांसुफलकसुतस्यातकसुनाय। अविनीविलोकहरिचरनअंक। र
जलहीनिधऊजेतुमहारंक। लेलेरजलावतमुषलिलार। वेरतजनुप्रेमअरसमुद्रपार। पाएगोदोहनभुप्रवी
न। करिवंदनदंडप्रणांमकीन। अविलोककृष्णमूरतउदार। पावैनउदधआनंदपार। लीनोउठायअरुकंठला
य। सुनरामकृष्णनेदेसुनाय। देषेतबमोहनबालदेव। अकरूरनयोसंदेहएह। कहाउष्टकंसवहमहाका
य। प्रभुबालकृष्णनेसुनोयेतानपायकरिकरषद्दिषायोवकअंक। सबमिटेहृदयअकरूरसंक। आक
रषंकरहिकरग्रेहआन। पुनधोयचरनआसनप्रमांन। अतीहरषमिलेतबनंदआय। सोकरनलगेवाते
सुनाय। नंदवाच। तहांरहिवोनेरकुसलाततादि। उहउष्टनिकटक्योरहतआदि। किरव्यातततुमहिराषतकु
चीत। अघतेनरतअंतरअनीत। अकरूरवा। आकरूरकहीतबवचनएह। सुनियेजुनंदयहनिसंदेह

अपनेसोइ विद्याबलअनंत सहितषसुषबूटतपरमसंत तवअगुनरूपआपकसंसार उनिसु
नियेप्रभुताकेप्रकार मुषअनलअवरनप्रथीप्रमांन दृगसूर्ससंचनासतनिदान अबलेसुरनाभी
स्थलअकास प्रभुश्रवणदिसाआसाप्रकास पावनजुस्वरगमस्तकप्रमांन इंद्रादिभुजाचवु
सुरअमांन परमीसहूषतवअंकुपार प्रभुप्राणपवनप्रथीप्रचार त्रतिलोकदेहकलिपतप्रमांन
जलमध्यजथाजलजंतजांन मसकाज्यूंउंबरफलनमांहि सबलोकतथातवतनसमाहि तव
जीवरूपअवितारएह होदेवतकारनधरतदेह कैमीनपलयजलकृतविहार हैयीवरूपमिलअ
सुरमार मंदराचलधरपयनिधमथांन प्रभुकछिपतनकीनोप्रमांन वाराहरूपकीनोविनीत रदअ
ग्रधरीप्रथीउनीत अवतारउग्रनरसिघआप प्रहलादराषलीनोप्रताप इजरामभुजनभुजवक्र
दीन करिकोपछत्रकुलछेदकीन ईलादकरेअवितारआंन प्रभुरूपनयेगुगतुपप्रमांन हजमा
रूनयेतुमवासुदेव अबरामकृष्णकरिकरिअजेव अबदयारूपबुधावतार किलकीमलेछकुल
निधनकार तवमायाकरमाहतमुरार संसारभ्रमतकरमानुसार बूटतनहीममतालहतमोहअ
रूप्रद्रहरद्वादएह कामोद्यमकरिकरिकरतकाज सुषहेतसबैतेदुषसमाज अज्ञानतिमर
आवरतआप पावननहीसूझततवप्रताप मायाप्रपंचजबतुटेमोह अविलहेससरणतवलहै
ओह तवनमोनमोकरुनानिधान उरषेसद्धांभूरितप्रधान दुहा सकलतेअनंतअनादसिध अ
जितसुरासुरआप स्वांमीहूआयोसरन प्रभुतवचरनप्रताप १ तुममोकहकृमबंधते राषले
हूव्रजराज कविनरहरविनतीकरत आतुरपतितअकाज २ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेद
समस्कंधेभाषाबारवनरहरदासेनविरचतअक्रुरस्तोत्रसंपूर्णचालीसमोध्यायः ४० कवि
रोवाच दुहा सुफलकसुतजलतेनिकस वंदनकरेवसेष तवप्रतापमहिमाअतुलसकिन
बरनसुरसेष १ जलमहरूपदिषायजो हरिभएअंतरधांन नावतनावअनेकनट प्रतिमा
आदिप्रमान २ जलअकासथलवाअगन कहुदेष्योअकरूर मनमहत्रतीतीभयोभ्रम दे
वकयोसोईहर ३ छंदपधरी चितवेगतबरथहिचलायो इहांअकरूरनिकटउरआयो
तबअवसेषपहरदिनजान्यो प्रभुअकरूरमरमपिछांन्यो श्रीकृष्णवाच सुफलकसुतअ
बयेहसिधारो सुषजुतमनजनवसनसवारो अकरूरवाच कहीतहांअकरूरजोरकरी रा
मकृष्णचलियेमेरेघर करुनानिधपावनमोहिकीजे देवचरनममस्तकदीजे करिचरणोदि
कपरसकन्हाइ प्रभुसुरपितरपरमगतिपाई नयेउंनजलपदसंभावन उनसोउकरतलोक
त्रयपावन श्रीकृष्णवा प्रभुतवबोलेपापपरायन जदुकुलद्रोहीमारदुष्टजन हितदारसंघ
टसुषदेहै अतहितवमंदरिकृऐहै कविरोवाच उहांअकरूरकंसपहआयो सिध्यन
योकारजसमुझायो स्यामरामभिलग्वालबालसंग अरुबनवेषबिराजतअंगअंग सरि
तथाटपटरजकसकेलत पोटसवारवाथउभमेलत याहीसमयकसयहांआए पटउज
लवकुरंगसुषाए धोवतहाकंसकोद्दरत कपापात्रयद्दभनकरभूरत श्रीकृष्णवाच दिव्य
वसनयहहमकोदीजे लालचजुपैमागमुषलीजे रजकवाच राजगरजनहीसमयसंमारो
इहांरजकजुकुक्वनउचारो हैकोअैसौबसननिहारे राजवायकेबनवसवारे उपजी
राजद्रोहकीइच्छा दईकहनतुमअैसीशिक्षा ईनवस्त्रनलायकतअैसो कारोकृदि
नरूपहेकैसो अबजोराजहरषकोउअैहे जनपदमाफबांधलेजैहै कविरोवाच

नंदकुवारखचीने रासतजथाप्रानतनदीने तेहमविरहसिंधकूतिरहै कृष्णगवनजोमुथराकरिहै
कृष्णअनाथहमहिजोकरिहै तोहमअनमारेहीमरिहै करिसुधरासविलासकनाइ विषमदसाब्रज
वधुविहाइ सोरठा अरुणउदयअकरूर रामकृष्णबैठाररथ सतपचवनरसूर लेमथुरासनमुषचलै
१ जथासकरथजोय मिलमिलनंदादिकमहर सुनउपहारसमोय गदगृहतैकीनोगवन २ सबैस
षा चलिसंग ग्वालबालगोपालकै श्रुननकृष्णसंग मिलेकृष्णमदनैनमन ३ छंदप हजवधूकरतवगी
विलाप उरहरतकरनकरघसतआप जूसाहतदधबूतजिहाज निधषोयकृपनजैसेनिकाज सग्रा
मपराजयसूर पनगमनिषोयज्योसीकपूर यहसमयतियनकीदसाएह उषसिंधमगनन्हइविसरदेह
अनदिष्टनयोरथधुजअकास अबलाअवेतआनीअवास जसुदाअरुरोहिनविरहजोन कवितासकह
नसामरथकोन दुहा रामकृष्णयहहाहाकरथ अरकसुतातटआय बटसमूलविलोकवर नयेवाटेसतन्हा
य ४ वासुदेवअज्ञाविहत नंदहीकरीनिहार करियोउपवनमांझकछु विधविश्रामविचार ५ नित्यनेमकार
ननियतकरिमेंजनअकरूर जौअवगाहतमतगज पैठजमनजलभूर ६ छंदप मनसोचबूझलेनीरमाह
निरधारकछुवहरातनाह कहाबालकएसुदरकुवार पतिजुअमन्नबलतनअपार इहसाधकरमनहीं
धरमअंग सिसुजातलीयेकुविवससंग सोचतचितलेउरतासस विस्मयवढिपावतनहीविसास उषदस्या
जबैअकरूरदेष विस्वसविरहअपनैविसेष सुनरामकृष्णसुंदस्वरूप अविलोकेसोईजलमहअनूप
अकरूरदेषिउनरथहिओर कारुनासुपेरथपेकिसोर निरधारदानपतिजलनिहार वेइतहांमदनमूरतउ
दार अविलोकतबैजलथलअनंत तनगोरस्यांमउधारसंत सबसुनंगभूरषलबनथमांन स्यांमघनव
सनतडितासमांन चारचुजचारआयुधसचाल वनविमलकमललोचनविसाल हिमनगमयभूषनमं
दहास षचुकोटभांनसोभावकास नागेसअंकथितजदुनरेस दांनपतिदेषमूरतसुदेस सनकादिदेष
परषदसमांन अस्तुतिकरतसबआनआन ब्रह्मादिरुद्रवसुनागदेव सबजनयेमुक्तसोइकरतसेव
श्रीगिरातुष्टमिलपुष्टसंग नवकांतिकांतिविजीयाअनंग विद्यस्वसक्तीमायाविसेष ईस्वादिकरतसेवा
असेष दुहा यहांदेष्योअकरूरइह अद्भुतविस्तअनंत महानयोविश्वासमन स्वातिकउपज्योसंग ७
कृष्णचनावसनावकुल देवीसक्रुदयाल सोचतमनसंभांवना सबैमिटैभ्रमसाल ८ इतिश्रीमाहाभा
गवतेश्रीकृष्णमुथरागतिगमनंगुणचालीसमोध्यायाः ३९ एक विरोपावदुहा सुफलकसुतसज्यासुषद वि
मलकर्यौविश्राम बैठेनिकटसनेहवस सकरषनघनस्यांम १ अकरूरसतोत्र आदपुरषअपयअ
मरनारायननिजनांम तुमअनंतमहिमाअतुल संतरूपघनस्यांम १ छंदउधोर पचुनाभकुंडस्थान
नीरोजउपजिनिदांन नयेब्रह्मवेदविष्यात तिहअमलअंबुजतात कियेब्रमजिहसबलोक सोईवस्त
अपनेओक जलअनलअनिलअकास पृथ्वीसुतत्वप्रकास मनमिलतईडी यमांन बुधिअरथदेवप्र
मांन नवअंगगतिपततास प्रभुमाहातलप्रकास तवरूपअगमअनंत सुनज्ञानविधसुरसंत गुनतीनतै
गोपाल तुमपरेपरमकृपाल तुमज्ञानरूपगोविंद अनविद्यनित्यअनंद कोउजपतजोगप्रकार कोउ
वेदपंथविचार कोउजपतज्ञानीध्यांन कोउविदितमतविधांन सिवमंत्रकोउवकसाध आराधरहितउ
पाध अन्नेकनावअनंत सबजनपतनतुमकहसंत तुमएकरूपअनेक विसतारविविधविवेक ज्युसथ
नवादजसाज एमिलतजलनिधआय सबनजतमारगसंत तुमहीयोमिलतअनंत अन्नेकपंथअ
षिलदेस जोहोतउरहीप्रवेस सुनकरमकरिकरिसंत सोतुमहीअरपनअंत छंदप सतरजमिलता
मसत्रकतिसंग ईस्वरीत्रगुनमायाअनंग उनिब्रह्मआदिदेवतापजंत एत्रगुणमांझप्योएअनंत साषीमम
इडीयज्ञानसार नारायणतुमकहनिमसकार उनमांझअविद्यापरिगुपाल सुरमानवतीरजगसहतसाल

तिह छिनसीसनाहिउपरतन ससिनषत्रप्रतिमादीयदीयसम विरचकनकमयदीसतविभ्रम श्रुत
सुदेनहीनअनहदसुर आतमबाहसबिद्या आतुर द्रिष्ट आपलेचरणनदेषत इहाकहुनिसारही
अवरेषत उनकंससुरनिद्रापाई देषेसुपनमहादुषदाइ षरारूढ षेतनमिलषेलत मालाजपाउसम
उरमेलत कंसतईलतनमरदनकीने नषतिलकरतपापउरलीने उरनिमंतड सघयेदेषे बीतीरजनी
प्रातविसेषे प्रातनयेकरिपापसहरन दीनोघोषवैवत्रतिदरसन ईहांसुमरटमित्री सबआए विहत
जथाक्रमअंबनाए ईहाबुलायोमलअपारे निरत्नयकौतिकबेगनिहारे महावीरजोधामंडलेसुर
नगरनिवासीचतुरवरणनर विहतइहारंगभूबनाई अतिबलमहामंडलीआई सहसमलनिरनय
कंसासुर महाउष्टबेगीवनमिंदर मुष्टमलचाणुरमाहाबल मुष्टिककूटसंगसलतूसल उपाध्या
यनायकगनआए सबमिलकरतविलाससवाए नंदबुलायोसहितगोपगन जथाजोगबेगारेबप
जन बाजनलगेविवधसुरवाजे गहरमनडअंबरघनगाजे दुहा सिधनयेउद्यमसकलकंसम
मोसिरकाल आ~~हुरवाजे गहरमनडअंबरघनगाजे~~तुरपगियेहासयह लेआवउनंदलाल २
इतिश्रीभागवतेमहापुराणेरगभूमारचनबयालीसमोध्याया ४२ दुहा करेजथाक्रमनित्यकृत लो
कवेदनंदलाल मलअपारेकेमहा वाजंत्रवजेविसाल १ रामकृस्नवदिवीररस विकसेनयनविसा
ल क्रोधहरषभ्रूकुटीकुटिल कसोरूपषलकाल २ छंद वाजित्रगहरजदुवंसवीर सुनिचलेस
मरविजइसधीर अनगंगईहांनृपद्वारआय सबसंगग्वालमंडलसुभाय कुवलियापीडकुंजर
सकोप आगेमनुगादीकालकोप तहांकषोरूपगजअनुतहिटेर रैरेकुजातगजराजफेर हव
रोकौमारगकवनहेत जमसादनजैहैगजसमेत कियकोपवचनसुनकैकठोर ईहपेलोकुंजरकि
सओर गहिलहेतहातिहगजगोपाल करिकोपदसनचंपैकराल उवदंतमध्यरहिवासुदेव अरुच
रनमांऊनिकसेअजेव निपलोटकेयौनिदान पववीसधनुषकुंजरप्रमान मंडलाकारफेरयो
मतंग उहनयोसिथलसबअंगअंग गजबाहदयोलीलागुपाल करिकोपबकुरआयोकराल मा
रयोमतंगमुष्टासमुंड तहांभयोविकलधरगयोतुंड सोउग्रीजबेहस्तीसंसीनार पेरयोसुवकुरग
जजवतपवार लीनेलपेटगजसुंडलाल संकोचिअंगनिकसेसुढाल सोईसुंडमंडपरबंडस्पेम गहि
लयोविलोकतसकलगांम ववि गगनभ्रमायोवारवार पटक्योसुनमभमानकुपहार दरूवीरउषारेउ
रदहंत अबिलेहसवटीसोमाअनंत संग्रामविजतआरूढसंग मारयोतिनदंतनसोमतंग दुहा विह
तवदीअतिवीरछबि बनेबसनरतबूंद यहांकवलियापीडहत गजनिहत्योगोविंद ३ अनिषायजि
हमतयथा तैसेंद्रसेताहि एकअरूपअनेकअंग अविलोकतजगआहि ४ छंद देषेबन्नु
मल्लनिवज्रदेह सबगोपनसंजनअतिसनेह नरवंदेदेषनरवरनिदान वनिताविलोकमनम
यसेधान मानतअसाधिसासनसमान पितुमातउत्रप्रतिमाप्रमान उषवदोकंसमनमृत्युदेष
विडुषनवैराटरूपविसेष जोगीनजोगीकोतलजांन उंनजादवकुलदेवतप्रमान दसरूपश्रगट
देवाधदेव नवनृतविलोकेजथाजेव विश्वेसकस्योवारएविनास तहांपस्योकंसउरमहात्रास
करिदंतमहाभुष्पकंधकीन उनिरंगभूमआयेप्रवीन वनिसनाजथाकमलोकवंद अविलोककं
सउपजेअनंद चौकजनवा देवकीगरभअष्टमद्याल कहियैसुकस्यहकंसकाल वृजकेअने
कविघननिवार महाबुष्टगए सोलएमारहैपबियौबलकरनंदगेह आववोदेवकीगरभएह व
टमहरयेहअगुरवाल विश्वेरद्दकहियतनंदलाल विषऊचाआदिउरजनविनास वनकरेरा

कृ.स्क:
१९२ क्रीडाकीनीकृस्नसकारन।उग्रसेनकसिरकट्यौसुदारुन।पदजोजयजोड्डसोपायेपेसबग्वा
लबालपहिरायेधोबीनज्योघाटलूट्योधर।परीवुकारउस्सरह्मथुराउर।नगरद्वारआयेनंदनंद
न।निरषतसोभाउदुष्टनिकंदन।परिषाकोटकांगराभूरन।पोलकपाटतरनवनतोरन।महाअमूल
कंसकेलायक।वसनवनायचलिलेवायक।दिव्यरूपतिहचायकदेषे।वीरउचयविबक्रअसुरैनतुल
विसेषे।उनितिहवस्त्रजुगलपहराए।उनयमदनमांनकृवनआए।देवहस्तसूजीसिरदीनो।कहि
निकृनकृकृतारथकीनो।सुंदरस्यांमसषासंगसोहन।मालीयहांविलोकेमोहन।उहपसुगंधस
रसुनपावन।हेगुवलौकंसपहिरावन।मालीनामसुदामसोचमन।श्रबकरमउदयभयेभूरन
हाररामकृस्नहिपहिराए।उनतिहसबवंबतफलपाए।इतिश्रीभागवतेइगतालीसमोध्याय४१
दुहा।निरषतसोभानगरकी।स्यांमचलेमथसाल।प्रतिद्वारेद्वारेपगट।मंडितत्तोरनमाल।१।कनक
कलसधजदंडकर।सोभतसोधसुदेस।वंदनपाटकपाटवर।वनेउतंगविसेस।२।जालीमणियका
चजुत।प्रतिप्राकारप्रमांन।विधजुतवातायनविमल।वारनदंतविधांन।३।पंचप्रवालिगवाषिथिर
विधपरदाबकुवांन।कहनजुसमरथकवककेन।वरनेनगरवषांन।४।छंददुअषरी।मिलमिलव
रनक्यारमनमोहन।जथाभेटलेकरतनगरजन।गोषगोषचढचढगजगांमन।मनमथरूपनि
हारतनांमन।विधुरतउदपकमलकरिवांमा।सुनमंगलगावतसुषस्यांमा।कुबज्यानामत्रवंका
कांमन।नृपमलययधिकारननामनि।प्रतिदिनघसचंदनपहिरावत।राजकाजकरिकंसरिझावत
पावनसौधसचंदनभूरन।गुजततासुसुगंधमधुपगन।कुबज्याआवतराजद्वारकह।ताहीसम
यमिलेमोहनतह।श्रीकृस्नवा।कहाजाततुमकौनकहांकी।तोपेकहाकहकृविधताकी।कृस्नदे
वघ्न्योयहकारन।चलीजातआतुरकुबरतन।कुबज्यावा।देवनरेसकंसकीदासी।सेरंध्रीवर
ततसुषवासी।कंसकाजचंदनअतिहितकर।मेयहलीयेजातनृपमंदर।श्रीकृस्नवा।जदुपतिक
होहमहीजोदीजे।जोकछुईछ्यामागसुलीजे।दुहा।तुमजुवसतउरकंसके।निसदिननयजुतना
थ।कमयहजुततुमराजको।नहचेवितनिजनाथ।छंददुअषरी।कुबज्यावाच।वजुयहतुमहीजोग
पदारथ।करिअंगीकृतमोदिककृतारथ।कविरोवा।चितअतिहेतसमरप्योचंदन।वंछितकृपाक
रीजगवंदन।पगसोपगचापेसुषपायो।अरुकरपल्लवचिबुकउगायो।सुधीकरीश्रेवसोसुदरम
दिमानईत्रलोकमनोहर।कांमविवसविवगरिबतकांमन।नावसहितपटपकस्योमामन।कुब
ज्यावा।कछ्रकृपायहमोपरिकरीयै।धांमपुनीतहोयपगधरीयै।श्रीकृस्नवा।वासुदेवहसिकस्योवि
वहिनमोदिकबुकाजवियहताहैमन।काजसिधकरिसबेसकारन।उनतवकरूमनोरथपूरन
कविरोवा।धनुषसालजबधसोचक्रधर।अटकोद्वारइहांबलआसुर।असुरनवेलमध्यप्रभु
आए।सषाग्वालगनसंगसुहाए।लीलाचापउगायसुलीनो।कस्विढायटंकारवकीनो।ततछि
नयहकर्णविधतान्यो।नयोअतिसब्दसरासनभान्यो।रह्योगिगननरधनुषभंगरव।उष्टकंसउर
परयोदावदव।कंसकोपकरअसुरहकारे।मोहनधनुषषंडसोइमारे।धनुषतोरआएगिरवरधर
सुषदनंदआश्रमजहासुंदर।नंदचरनभेटेनंदनंदन।कृस्नकृपानिधदुष्टनिकंदन।दिव्यसुधा
जसुभतसंगदीने।कृस्नसवनदेनोजनकीने।सुषसज्याविश्रामसामघन।वसेनिसानंदादिक
उपवन।सोयेजदपीकंसमरयासुष।नावेनिंद्राहदेदुसहदुष।इरिनिमंतदेषेअतिदारुन

पाल । मात पिता मैं हम गन । कहू न ये तत काल ॥ १ ॥ श्री कृस्नवाच । दोहा । दुष सहे हेत हम तुम हउ उर
तें । यह पिता माता सोक किये अनंत । बालक किसोर वय सुष विष्यात । तुम लह्यो हमारो कछु न तात । हम
कौ सिसु माता पिता हेत । सुन जान लाभ संपत समेत । मिल सो जनम तुम तउ दर माय । पितु मात तब दिति कष्ट
पाय । सुत जानन हिन पितु मात सुष । देषे जु कष्ट मह माहा दुष । विता य हउ पजत दहत तेत । हम तउ रन के है
कवन हेत । सब जानंत तु पे हम सापराध । सो छिमा करिकृ हम परम साध । ईस्वरी दिष्ट उपज्यो अभाव । तए न
जत मात पित मनुज भाव । सुंदर विलोक मुष छबि सुहास । पितु मात जंत्रि तु मोह पास । उग्रसेन बंध मोचा क
विरुवाच । दोहा । तब माता पितु चरन ते । विषम संकला वाद । उग्रसेन आनेय हां । कारागृह तै काढ ॥ ३ ॥ श्री क्र
स्नवाच । देस कोस गज बाज दल । नलरी ओली वेन व राज विचार । उग्रसेनय आपने सब सुष करहु संभार
॥ ४ ॥ कंस उपावन आपने । प्रगट करम फल पाय । मिल अलोक सोई लोक मह । भयो विनास सुभाय ॥ ५ ॥ देव
वेद निंदक दुसट । पिता विरोध स पाप । या तै ताको सोच अब । उचित न करिवो आप । छंद दुअपरी । कविरोवाच ।
उग्रसेन फिर बचन उचार्यो । विषम काल लष समय विचार्यो । उग्रसेनवाच । उग्रसेन फिर बचन उचार्यो । वि
षम काल लष समय विचार्यो । मोहि न राज सकृ मन मोहन । गहे गिलान अषल यंदी गिन । तुम सर बड़ सरब
मय स्वामी । जथा लोक त्रय अंतरजामी । कहो समरथ औरन तु को है । सा मराज यह तुम को सोहे । पोषन भ
रन उर्ष तुम पूरन । राजतिलक लीजे विज हरिन । श्रीकृस्नवाच । तुम ही उग्रसेन सब जानत । उरषा कुल को
धरम प्रमानत । त्रपत जु जात जु निश्चय कीनो । देस राज सो तुरब हि दीनो । हम जदुवंस विहि तन हा हम को
ता तै राज उचत ई है तुम को । हत यह उग्रसेन अब कीजे । लोक व सिध राजपद लीजे । इज्ञा न पत्रु तात उ
तुम सिर है । करहु राज हम सेवा करि है । राजा हम करि है तुम रष्या । साथ कुकारिज मान कु सिष्या । कविरो
वाच । जादव गए कंस नय जेते । तहां सब कृस्न बुलाए तेते । लोक वेद सब के मत लीने । हम जु तउ उग्रसेन
नृप कीने । वो हय करि आसन बैठारे । सांन आप करतिलक सवारे । सेत छत्र च चामर ले साजे । बाजा विविध
मंगलिक वाजे । अपनी वृति हम पइ धकाई । उनि सब ही जादव कुल पाई । महा धर्म वर्त्तनु वमंफ ल । उ
ग्रसेन राजा आषंफल । बकुत मांन देनं द बुलाए । जथा बचन कहि सुष उपजाए । श्रीकृस्नवाच । पुत्र भाव
हम को तुम पोषे । सब विधि लाड लडाई संतोषे । हम न समृथ सु पेक हिबे हितु । प्रेम नेम जो कीनो तुम पितु
पिता नंद अब ग्रेह पधारो । तहां सकल ब्रज के दुष टारो । ईहां करि काज कुमहि उनि ऐहे । देव जननि ज
नक हम सुष दे है । कविरोवाच । दिव्य बसन भूषन सब दीने । करि मनुहार विदा सब कीने । वसुदेव कुल
गुर गरग बुलाए । बकुत मांन दे द्विज बैठाए । कम उपनेम आ घ सब कीने । परम धरम जे वंस बखाने । दे
गौदान द्रव्य बहु दीने । कुल गुर उर द्विज हरषित कीने । कृस्न जनम संकलिप जु कीनी । उहां वसुदेव ल
षग उदीनी । सांदीपन ग्रेह गवनं । श्रवन सब विद्या सांदीपन । वसै उजीन पुरी सो बांचन । उहां सब दूस
दिस के आवै । प्रगट सुबं छित विद्या पावै । ईज्ञा गरग पाय यहां आए । राम कृस्न संग सषा सुहाए । क
र बंदन गुर पूजा कीनी । दुज सांदीपन आसिष दीनी । उन मो सिध अनाद जु अछर । संथा दई पाहि का
सुंदर । सब विद्या पाराबर स्वामी । जथा जुगत गुर अंतरजामी । तद पि लोक विवहार तत पर । टहल क
रत गुर ग्रेह निरंतर । उन गुर विद्या सकल पढाए । सेवा सिष परम सुष पाए । आतम विद्या ॥ १ ॥ धनुष उपा
सन ॥ २ ॥ ब्रह्म ज्ञान ॥ ३ ॥ पंथन्याय प्रकासन ॥ ४ ॥ वेद धरम विद्या विध्येस्वर ॥ ५ ॥ राजनीत सी वे राजेस्वर ॥ ६ ॥ रा
जनीत सोड षट विधान रस । वेद उणित विहन पोरुष बस । उचित सिंदे ॥ १ ॥ विग्रह ॥ २ ॥ अरु आश्रय ॥ ३ ॥
द्वैभाव ॥ ४ ॥ जान ॥ ५ ॥ आसन ॥ ६ ॥ जय । पारीयक संथा जब पाई । लीनी पढि सु निफेर लिषाई । इक दिन
एक कला अभ्यासी । बासु रचौ सब गुरय ह बासी । दोहा । दोय मास अरु चार दिन । कुलयह र रहे स्याल

कृस्न: १९४

समंफलविलास बिवेस्सुसभा पुर जनविष्यात तिकरत परस्सपरकांन वात। कविरोवा। चाणूंर बवेन
कुधा विसाल चाणुरमल्लबोल्यौ सवाल। चाणुरोवाच॥ सुणराम कृस्नतुम कहसुजान हम निउनम
ल्लविद्यानिधांन करिकृपा बुलायेहै काज इह अवसरअदभुतवन्यौ आज रसरहै रिझावकुमहा
राज उतिपति किनौविपरीत आज। श्रीकृस्नवा। देवाधदेवबोलेस्याल कहिउचितवचनसोइदेसका
ल तुम मल्लनिनोजपतिके विष्यात वनवासी हमतहाकि तिकवात मल्लन सो सिसु नहबलसमान सया
मवनै जोपेसमांन असमानविलोकैजुधआप परषदक्यांकौतकहोऊपाप। चाणुरोवाच। दुहा॥
दसहजारगजबलउगम कुतोउरंदजिह्मांहि सोतुम मारयौ षेलसौ हौतुम बालकनांहि पमुष्टक
सोबलदेवमिल विहमतुमहिविरोध जानकुयहतोधरमजुध पौरुषनीतप्रबोध। इतिश्रीभागवते
महापुराणेकुवलियापीडवधनोनामतयालीसमोध्याय।४३। छंदप। अतिरोषमल्लचाणुनआयकृ
तातिरूपअरुमहाकाय कृस्नसोआनजूट्यौसकोप उलंघअगगमातंगओप बलवंतमुष्टकाम
ल्लबाय सोजुरयौ आनबलदेवसाथ आघातचरणमुष्टीअनंत दारुणकौलाहूलजानौदिगंत प्रतिअंस
गअंगघाहारपूर सुरअसुरन्युरवसंग्रामसुर मस्तकसोमस्तउसहमार परअंसअंससउरउरप्रहा
र मुष्टकामुष्टउरुवानिमिल प्रतिमल्लबालनइवेलपेल घटषावदावअन्नेकघात विस्तारमल्लविद्या
विष्यात कलुकालमल्लक्रीडाजुकीन उनिकलसमयजान्यौप्रवीन यहांकंसनासघटिकाजुआय
सोकालआनवरतौसुनाय सिरहन्यौमुष्टतनछुटिसंधांन उनिचलेमल्लचाणुरप्रांन यहांमहाम
ल्लतारयौमुरार आकासअमरजयजयउचार महिकाआदसबमल्लमारि निसेषसेषकीनौनिहार
रंगन्नूमसषामिलकृस्नराम सोरचीमल्ललीलासकांम यहविरतदेषजनवहीआस तिहसमयकं
सउरपरीत्रास नीसांननिवारेवजतनाद सबदुष्टकंसकहिवगटसाद दुष्टयहबालहविकाटदेऊ
लानौत्रजवासील्यूटिलेहू बांधयहनंदहिउसहबंध कृतवयरतोरवासुदेवकंध अरुउग्रसेननृ
पहनउआज सबन्यानसुनटमंत्रीसमाज सुनवचनकंसकेश्रवनसाल चढगएमंचमोहनसवा
ल आविलहेसउचकचढगोषआय परित्रासकंसघटनस्यौपाप धरिवडगवर्मआसुरसधार वरिअ
तुलकोपसोमहावीर सिरतेकिरीटगिरमुकटसंग इहादइककलथापत्अनंग गहिकंसकेसूंढेउपाय
सवगिगननुमायोअमरसाल यहरानौमिंदरसथांन पनुमरिद्योवथीप्रमांन दिपरूंफसंगतिह
वासुदेव उरवैरसासरोकौअजेव पापिष्टकंसकेगयेप्रांन यहान्नयोसहजपआसमांन पुनिन
ईअहपवरषावसिध सुरवृह्मकरतअस्तुतीसिध वसवयरकृस्नमूरत विनीत उरकंसवसीनि
सदिनअनीत देषीप्रतछिमूरतदयाल कीउकरमउदयनयोअंतकाल संकेअनुजआयेनैंस
काम निग्रोधकंककैवीरनाम सोउजुटेआंनदाउसमांन प्राहारपरिषतिनदएप्रांन करमफलपाय
तहांकंसकूर सबमिलेआंनजदूवंसस्हर उनकलोरुस्नकरियेप्रमा मृतकर्मकंसविधवेदमां
न कुलजादवकृतसवउचितकीन उनशूरजथाउजगुरप्रवीन रिणविजयपायबलदेवराम
धरीधीरगएअवि वैधधांम मिलबंधनौ वैषकिये। पितामात विश्देसकरे पौरुषविष्यात पितमा
तकेघ्रदेवपमांन जगकरननरनअरुनासजांन। दुहा। कस्यौ विनासजुकंसकौ मातपिताग्रह
मोष मुषरामंफलमनैमहा घरघरमंगलघोष।१। इतिश्रीभागवतेमहापुराणेपुस्तवदंकंसव
धनोनामचवमालीसमोध्याय।४४। श्रीकृस्नवाचदुहा। मोहविलोकौमातपितदेवतनावविधां
न कृस्नलष्यौ ... ... । कविरोवा। देवीमायातहांउगम पेरीपरमक्र

गोदोहन मात हि आं वदेत मन मोहन । संध्या धर मये स्तुति साधत विविध झालरी घंटा बाजत । सुनि सुनि
घोष घोष के सुंदर । उधव बढ़्यो अति आनंद उर ये उर । गोपवधु मोहन गुन गावत । धरि धरि दधि पात्र करि धावत
इहां नंद उधव पह आए । चकरि सुजान तीर बधराए । कम जुत आदर पूजा कीने । दिव्य तुचित ले आसन दी
ने । उधव जुक्त भने कहि माए । वक्त लो सुष सज्या बैगए । नंद बाच । दो० ॥ कुसल वात सुष देव की । उ
वन सहित उनीत । उधव को पूछी यहां । नंद महर सब नीत ॥१॥ नंद उवाच । के सेना स कंस को कीनो । दुष दी
यो जादव सुष दीनो । गोकल वस गोपाल गुसांई । चित हित वंछत धेनु चराई । ब्रज अरि ह उपजे जे वन वन
मारि विनास करे ते मोहन । ब्रज के विघ्न अनेक विनासे । ये सुत हमारे जतन प्रकासे । कविरोवाच । माता जसो
दा उपजे मोह मन । सुनि यह बोली वचन प्रेम पन । इह हित रांम कृस्न सुध आए । छोह मोह नैनन जल छाए
हरि गुन कहन दधि की धारा । भूत भूत तहां करी उकारा । इत ही नंद लो रत अकुलावत । प्रेम थाह जसु
धा न ही पावत । मगन भई उष सागर मांही । दे कहु रही तिन ही सुध नांही । उधव दसा विलोकी इनकी । नेह
नम्र मति ते सी तिन की । गए काल कछु सुरत जागी । नए सचेत नंद व कुनागी । उधव यहां सुवचन उचार्यो
वेद स्मृति को धर्म विचार्यो । उधव बाच । जि हरि सो हम तउ पजाई । महर नंद की धिन कमाई । देह धरी को
धर्म दिषावत । विधि यह वेद पुरान बतावत । निश्चय यह है कृस्न नारायण । परम पुरष अरु भक्त परायण
उनके प्रिय अप्रिय अपनो पर । अति मम धिम अधिमन अंतर । सबन समान सदा वे स्वामी । जगत चराचर अं
तर जांमी । निरगुन रूप उन हि मग जांने । पे किछु कार न अगुन भ्रमांवे । वे रूव सतत सबन के अंतर । निक
ट प्रेम हित रत निरंतर । जो उन सो अति रत उपजावे । प्रेम भक्त परम पद पावे । अब वे सम प्राय इहां ऐहैं
देत सबन मिल है सुष दे है । करि है वचन प्रमांन कन्हाई । मति दुष करहु जसोदा माई । देव मनुज तिरज
गम य देही । है सब व्यापक सर्ब सनेही । मानहु उनके पिता न माता । तिन के कोउ हत कन तातां । जन मन क
रम कहु मति जांनो । पे न सुनासु भाव प्रमांनो । देहन दस सुता सुत दारा । भक्त तउ रष व कहु रूप उका
रा । स्मृतीस्वर हित सुनायन । निरगुन अगुन होत नारायन । सत रज तम त्रगुनमय स्वांमी । का हु बंध
न कम अकामी । है ई न विन जो पे कछु नाही । विलपत है नव नूत व याही । या हार मत आपनी इच्छा । दुष
न कछु देत है दिच्छा । कविरोवाच । वात करत ही रैन विहानी । वोले तम चर अपनी बांनी । प्रह्यां चार करत
भई गोपी । अति सुंदर भूषन तन ओपी । मा के संदन सदन मथांनी । पाट नेत कर रही प्रमांनी । नरन र आन
ज धार दधि नाज न । उधव हे न लेलै गोपी अन औ नैगन । ई हां मथांन करत अनुरागी । लीला कृस्न सु गावत ला
गी घुमरि रहे मथ्यान जथा घन । तहां सोभत सुंदर सुंदर तन । वनी करन वलियावलि राजत । नूपर
श्याम
जुत किंकन रव राजत । देही गोर ^ अंबर कारे । उबलत हार सुत उर जउ धारे । सुन उधव सोई घोष सुहाए
प्रात ही उवेव कृत सुष पाए । मिले ग्वाल गोवच्छ मिलावत । पय दुहि दुहि मिदर पकुचावत । द्वार नंद गृह
रथ देष्यो । वनिता आगम कृस्न विसेष्यो । सो न कै रै सोई तय जा पताका सोई । हित उपजो मोहन रथ होइ
गोपी वाच । इहां वले मोहन कहि आवत । सिध करे सोई वचन सुहावत । दिय वचन जब उथो देष्यो । वनिता
मन अति कोध विसेषे । बायक को ध गोपका बोलत । वच्यो वाक्य उधव उर बोलत । इह अक रूर फेर कित
आयो । का को रथ पुन कौन पगायो । राम कृस्न ले जाय लगाए । महाराज उहां कंस मराए । आयो दुष्ट सबन
उर दाहत । है अब कहा कियो धो चाहत । करि कृत नास कपा अब करि है । हैं मम आम स पिंड जुथ रिहे । स
रिता करि नित नहत सुहाए । उधव इहां नंद के आए । इति श्री भागवते महापुराणे सुक्त मार्गो उधव घोष
गमन नाम छियालीसो अध्याय ॥४६॥ दोहरा ॥ देष्यो भूषन वसन वे वैसे ही उनियार । अविलोकित गोपिय धक र
ही किचार विचार ॥१॥ आंन विलोके निकट यह वनिता कह्यो विचार । पत्री वाहक इत पै हे य दको उ प्रतिहार ॥२॥

गुरअविलीकेदेवगति ॥ प्रनपुरषकृपाल १ ॥ गुरपतनीसोमंत्रगुन ॥ श्री सेकसौउपाय ॥ अपनोउत्र
जुमृतकवर ॥ नाचीयनपहजाय २ ॥ श्रीकृस्नवा ॥ प्रभुहमसोप्रनक्रपा ॥ आतुनकरीअसेवद
योसुरासुरकुकलम ॥ विद्यादानविसेष ३ ॥ सेवकजनकरिसमझबे ॥ हेतसहितमनमांहि ॥ हु
जमांगऊगुरदछिना ॥ हमसोइदेयहजाय ४ ॥ कविरोवाच ॥ छंद ५ ॥ पत्नीगुरतबयहसमयपाय
सोकीनीजाचनासुनाय ॥ गुरवाच ॥ बितबारसमुद्रप्रभासषेत ॥ हमआएतीरथजातहेत ॥ विधलि
षतहमारोपुत्रबाल ॥ कतजोगमरयोतहांसोअकाल ॥ प्रभुहइहजोगुरुदछिनाप्रमांन ॥ अबरामकृ
षवहदेऊआंन ॥ कविरोवाच ॥ सोइकरिप्रमाणप्रभुधरमसेत ॥ बिणमात्रआयपरभासषेत ॥ उदधसे
कोपकीनौअनंत ॥ हुजरूप उदधआयोउर ॥ समुद्रवा ॥ नीरनिधयहबोल्योनिदान ॥ प्रभुअज्ञाकी
जेसोप्रमान ॥ श्रीकृष्णवा ॥ बांभनकोतोमहमस्योबाल ॥ करिसोधआंनऊयहेकाल ॥ प्रभासषेत्रोवा
पंचजननामसंबरसपाप ॥ यहांसंषदेहउपसतआप ॥ कविरोवा ॥ यहसुनततउतररथतेअनंत
जलमांकहूदपैठेजयंत ॥ पंचजनतहांमार्योपछार ॥ फेरयौजलअंतरउदरफार ॥ उनअसुरउद
रबालकनपाय ॥ इहांकृस्नदेवजमलोकआय ॥ जमराजकृस्नजगदीसजांन ॥ पूजाअनेकअरचा
प्रमांन ॥ धर्मराजवा ॥ आगमनहेतकहियेअजेव ॥ दीजेसोअज्ञादेवदेव ॥ श्रीकृस्नवाच ॥ बांभनसांदी
पनउत्रबाल ॥ कीनोप्रनातिहपैत्रकाल ॥ उहआनदेऊजमराजआज ॥ करीयेनविलमयहविप्रका
ज ॥ प्रभुबचनधर्मराजाप्रवीन ॥ हुजउत्रबलहिपैलायदीन ॥ इहारामकृस्नजेनआय ॥ सुतदीनो
सोगुरकहसुनाय ॥ उनवासुदेवयहकहउनीत ॥ विप्रकबुफेरमांगऊविनीत ॥ गुरवाच ॥ दछिनासुतदी
नोवासुदेव ॥ अबतौतुमअनरिणभयेअजेव ॥ दुहा ॥ वेदउक्तिगुरविश्वर ॥ आसिषदइअपार ॥ कसोज
घाविधयेहकौ ॥ करियेगवनऊवार १ ॥ कविरोवाच ॥ रामकृस्नतबबैठरथ ॥ यहआएगोबिंद ॥ मातपि
ताअतिहेतमिल ॥ उपजेउरआनंद २ ॥ इतिश्रीभागवतेम॰पु॰श्रीकृस्नविद्याप्रवतअग्रसेनबंधमो
छना पैतालीसमोध्याय ४५ ॥ दुहा ॥ नीतधर्मविद्यानिपुन ॥ बचनचतुरहितवंत ॥ उधवलयोबुलायई
हां सषाआपनोसंत १ ॥ रामकृस्नउधवहिस ॥ बैठेकरतबिचार ॥ कृस्नसंभारतप्रेमकर ॥ ब्रजजनको
विहार २ ॥ श्रीकृस्नवा ॥ हेअतिकांतरममविरह ॥ व्रपितमातअधीर ॥ कमऊकमउधवबचनकहिविधहरऊ
पुपवीर ३ ॥ छंदउप्रभरी ॥ गोपवधूगोकुलगजगामन ॥ भ्रमतनकुंजकुंजपतिमांमन ॥ रासविलासथलीय
विलोकत ॥ रहतउदासविषममनरोकत ॥ मोकहनैनप्रांनअरपेमन ॥ तजेसुगंधअसनभूषनतन ॥ म
हितजेसेकलसज्यासुष ॥ मांननिहारसिंगारपांनमुष ॥ विविधवसनग्रहकाजविसारे ॥ विनसेलो
कधरमविवहारे ॥ दसोवावरीसी भईडोलत ॥ विकबलकानकांन्हकहिबोलत ॥ जुवतीवृंदवृंदमि
लजेसी ॥ तलफतमीनहीनजलतैसी ॥ गुरजनबचनत्रसतगजगामन ॥ जोमृघराजगाजमृघगामन
जथाधरमहितमुषराजेहै ॥ इहांकरिकाजवेगफिरऐहै ॥ जबमेरोयहबचनसुनैगीजिह ॥ उनकेप्रान
विसासरहितइह ॥ समासमयविधबचनसयांने ॥ जथाधरमतेतुमसबजांनै ॥ करिऊप्रबोधजायहि
तकारन ॥ महाज्ञानउपजेगोपीमन ॥ कविरोवा ॥ अपनेदएवसनआभूषन ॥ मुकटकिरीटदैनवंछि
तमन ॥ आरोहितअपनेरथउपर ॥ इतगवनेबकुतेकरिअदर ॥ नानअस्तवेलामनुजाए ॥ यहांउध
वबृंदावनआए ॥ उहगोरजआबिदितअंबर ॥ परतजांनताहीअपनोघर ॥ दुहा ॥ उधवकरसोध
वेसप्रन ॥ जनकाऊसुनजांन ॥ महरनंदकेवगरमह ॥ इहठोहरथआंन १ ॥ छंदउप्रभरी ॥ यहांसि
ध्यागोधनकोआवन ॥ सुनियतसहअनेकसुहावन ॥ मोहितकोमडवनमदमाते ॥ गर्जनमत
रोसरसराते [illegible] दधधारवाजल

स्यागाई। सुषपतजागतसुपनसुहाई। मायागुनकेभेदवषानत। सोकहउनकैभेभिंनप्रमानत। कहीयततु
रीअवस्थाकोई। सिधस्वरूपहमारोसोई। महास्वरूपप्रानहेमेरो। हेतविनासदेहकोहेरो। तादेहीकेषरगु
नतेसै। जातसिथितबरधतहैजैसे। वधरहतअपषियितवषांनो। नासअवस्थाबटीनिदानो। कृआतम
रूपीअविकारी। नासहेतआदेहनिहारी। मारगत [illegible]पिर्सतजरूमांनै। सोसबमोहीमाकसमानै। अपगा
जथागिरनतेआवत। सबैसमंदहिमाकसमावत। गोपीवाच। अगुनसरूपसकलगिनसुदर। महरनंद
केकवरमनोहर। चितचुरावतमाषनचोरत। दूहिपातदधनाजनढोरत। तिनकोविरहदुसहअतिदुस्तर। के
सेअबलासहैसुमधुकर। जोयहविरहकरतअंगीकृत। तिनकोजायदेकुकरिहितचित। श्रीकृष्णवाच।
हेतवडगतेदूररहतहम। ताकोइहैनिमतसुनरूतम। दिष्टअगोचरतवमनमांही। हमतुमतहांविछोवानाही।।
निकटरहैतबदूरसनेही। दुरितहांअंतरनहीदेही। रासंसमयगोपीपतरोकी। सोपहिलेहीमिलीससो
की। हमतेदूरिजुपैतुमकेहो। जथाभ्रंगकीटीमिलजेहो। गोपीवा। उधवयहचवसाअसुहाती। विनकनि
वारकृजारतछाती। हमतोजोइपावरसजोगही। जोगीनाहिजुसाधतजोगहि। अहितकंसजदुम्लअसा
रे। सबैआपनेकाजसुधारे। सामरामकोकुसलसुनावहु। बोधआपनोगांवबंधावहु। किचनगोपीकृ।
उधोकृस्नकबकुब्रजऐहै। घोसघोसमाषनदधषैहै। हितवनधेनचरावहिमोहन। येहकरहिसिंधागो
दोहन। कबकृककहिहैकवरकन्हईया। मोहिबकुतमाषनदेमइया। बनब्रजवधूनिकरनिसनिरमल। क
रिहेरासविलासकेतुहल। उनिइकगोपीबोलपवीनी। किहजानेजेसीउहकीनी। पकरिमलचाणुरषछा
रे। मातुलकंसबेलहीमारे। उनिपरव्यागतिवैजवमायो। सबैमिलैजदुवंससवायो। किन्यानृपतक्रियावब
कुकरिहे। सुषअनेकतिहसमअनुसरिहै। मिलवसुदेव देवकीमाता। भोगविलासकरतदरूभ्राता। वा
सुदेवनयेजदुकुलवंदन। निषलवंसहितकंसनिकंदन। अबकिहकाजघोषमहआवही। काहेनंद
कुवारकवावही। श्रीउनकेअरधंङ्गासुंदर। नगरजोवितावकुतेनागर। ब्रजवनिताहमतोवनवासी।
एकहिगोधनवृतिउपासी। तिनकहदुरलभमिलवौताको। जथानाममधुसूदनजाको। अबतेरा
समहासुषमांनो। जथापिंगलागिनकाजांन्यो। कामीवामीलब्धोनकोई। मुनिगिनकासुषनिद्रासोई
गिनकादतनेयकीनीगुर। वाहीसमयज्ञानउपज्योउर। इहांएकगोपीकहिऐसो। जथाविलोक
ज्ञानकहिजैसो। जदपिकृस्नमहाजोगेस्वर। ज्ञाननिधानगुरिनकेगुर। तदपिरमानतजतसंगनि
नको। जानतजदपिमरमगुनजिनको। तोहमकवनमात्रहैमधुकर। आसाछिबदरसनबायोउर।
निषलनिकुंजविबधसरितावन। पनुपदअंकितमृजुपावन। जहांजहांदिष्टपरेएजरजूं। तिनको
विरहसंतावततूतू। उनकोहासविलासविलोकन। मोहनमंत्रमनकुबरततमन। उनकेरूपवि
रतअनुरागी। नईतिनमेनीपीवृतनागी। अतिविरहातुरवचनउचारत। सामरूपसंनारिसजार
त। हाकुंतनाथदीनकेबंधव। अबलापरीविरहदुषअर्णव। सामआपनेविरहसंनारो। अबला
देहरसंदधारो। कविरोवाच। एकअनयवृत्तभैवसउधै। सबदिनकोदेषोमनरूयो। प्रेमनेममनसा
मनपूरन। कालविहावतगावतहरिगुन। निश्चयपरिमानंदनिरासा। उनकीतद्यपिछूटतआसा। कृ
स्नमहाजोगीजोगेस्वर। उनकेमायामोहनचतर। कृस्नविलासजहांजहांकीनो। जामनसंगप्रेम
रसभीनो। नरनिकुंजकुंजवननिर्झर। सुषदायकगिरवरवापीसर। चितहितसहतनहांजोवाहत
दुषहिनएतेइकिरहाहत। गोपिनकेगुनउधवगावत। चरुएरैएलेनालगावत। गोपीजवैकृस्नगु
नगावहि। प्रेममगनतनसमतापावही। ग्वांनवसवयकरिगरवाई। सदासांमकेमित्रसषाई। जदुप
वहेवकेकेनाए। अरुगुरज्ञानप्रवीनआए। गोपीप्रेमनेमअनुरागे। आउनउवउनकेपायलागे। ७४

उवाच॥ धिग्सदेहयनगोपिनधारी॥ मनक्रमकर्मभजुनजतमुरारी॥ जोगीजतीतपीसिंन्यासी॥ आतमदरस
नवैरागउपासी तेइयहनाव्रजुवंछततातें जमआधबधनेछूटतजाते॥ व्रतसंजमतपमांनवन्हाइ
ज्ञातिनकरमनिगमरूगाई॥ कृष्णकृपासबकाजसुधारे॥ अघअरएवबूरुतउधारे॥ गोपवछपसु
पालकमनगन॥ इन्हनावनिनचारदिक्षत॥ जिनकछुकृष्णनावआजांने॥ मनक्रचकरमसुपित
गनमांने॥ जोअनऔजानइमृतसुषजावे॥ पांनीतदपीअमरपदपावै॥ गोपीकृपाप्रसादजुगायो॥ प्रभुकौ
श्रीयानसुरत्रियपायो॥ उनकेनागजुमहीमाश्रीई॥ कहनसमृदनाहीकविकोइ॥ वनगोपिनसंगरास
वनाए॥ प्रेमनावमनवंछितपाए॥ अबतोयहैमनोरथमेरो॥ वृंदावनमेहोयवसेरो॥ विणद्रुमलतागुल्म
औषधतरु॥ ममउतिपतिहोइयान्यूमहि॥ पदरजइगोपिनकीपावन॥ मेरेतनपरसेमनभावन॥ कविरोवा
गोपिनसौयहअज्ञामागी॥ अबकृष्णयोन्यूवनवकन्मागी॥ मनक्रचउधवअज्ञामांगन॥ आयेनंदजसो
दाआंगन॥ गदगदकंवसोकगहराई॥ काढुयेकछुकसोनजाई॥ दरसनइनअविरजलधारा॥ क
ष्टकष्टहाकृष्णउकारा॥ उधवरोवतजायचढेरथ॥ प्रेमदसामुथुरापंथ॥ नूलेज्ञानविकलतननारी
जानकुन्नान्योहारजुवारी॥ इहांजोप्प उपदिष्टाआए॥ गोपिनकेसिषहोयसिधाए॥ प्रेमसमुंदहीथाह
नपायौ॥ यहांउधवमोहनपेआयो॥ दुहा॥ नंदजसोदामुषवचन॥ स्यांमहिकहेसंदेस॥ कोटिकलपके
लौराजकरि॥ निधनुवनजकुनरेस॥ ८॥ तौहमारेचितकी॥ एकहिनावअसेस॥ जगजंहांतहांथिर
चरजनम॥ प्रभूमहहोहषवेस॥ ९॥ नारमउपदेसननिर्गुन॥ उधवगएजुआप॥ आएगुनउपदेसले॥ ऐसो
प्रेमप्रताप॥ जविहतजुनंदादिकनवन॥ सुनसुनउधवसाध॥ मथुराआएमुग्धह्वै॥ करिमोहनआराध
ए॥ कीनेवंदनकृष्णको॥ उरऊपजेआनंद॥ नरमाआघातनरूपरस॥ मोहनमदनमुकंद॥ १०॥ नेमप्रेम
गोपंगना॥ सुनपितुमातसंदेस॥ नरहरिप्रभुहितसुसुनै॥ सोनुवचकनरेस॥ ११॥ इतिश्रीभागवते
महापुराणेदसमस्कंधनुसारे॥ उधवगोपीसंवादभ्रमरगीतासेतालीसमोध्यायः॥ ४७॥ दुहा॥
समसर्बज्ञसर्बातमा॥ सर्बसुआपकसिध॥ कुबजाकोअंतहकरन॥ पायोप्रेमप्रसिध॥ १॥ कारनकार
जसिधकर॥ हमऐहेतवयेह॥ वंछितकुबजाकोवचन॥ आगेदीनोएह॥ २॥ सैरंध्रीकेतिहसमय॥ आये
सहितउधव॥ प्रभुऐसीइछ्याप्रबल॥ हेतवचननिरवाह॥ ३॥ छंदउधोर॥ उहदरषसनमुषआय॥ परि
कमनपरिपरिपाय॥ संगसषीव्रषसुजांन॥ उनआंनग्रेहप्रमांन॥ अनेकसोजअनूप॥ सुषजथासम
यसरूप॥ निजगंधवसनतवीन॥ करिकुसमसज्याकीन॥ तहांबैठकृष्णपाल॥ दुषहरनदीनद
याल॥ सुनपांनमलिघनसार॥ अरुविविधव्यञ्जनपार॥ सुनकरतचंदनसेव॥ द्रियजथावंछितदेव
कांमनापूरनकीन॥ उनिकसोकृष्णप्रवीन॥ श्रीकृष्णवाचदुहा॥ कुबज्यामनवंछितकछु॥ वकु
सौमांगविचार॥ करिहैपूरनकरिकृपा॥ मुषहसिकहीमुरार॥ ४॥ कुबज्यावाच॥ कुबज्याजाचेजोरि
करि॥ तुमप्रभुवेदविनीत॥ वासुदेवकछुकालवस॥ उरयहवमरूउनीत॥ ५॥ श्रीकृष्णवाच॥ इहयोहीकै
हैअवस॥ ऐसोवचनउचार॥ कृष्णदेवकारनकरन॥ प्रभुनिजग्रेहपधार॥ ६॥ कविरोवाच॥ छंदप॥ इहदि
वसर्पतीवेलाअनंत॥ सतकरनवचनसुषदेनसंत॥ संगसककरषिनउधवसनेह॥ गोविंदआयअ
करूरग्रेह॥ अकरूरईहासनमुदिआंन॥ पदवंदनकरिपूजाप्रमांन॥ प्रभुयहामध्यमिदरपधार॥ धो
एसुचरनजलसीसधार॥ बेगरउचितआसनविनीत॥ उनिकरतनयेचस्वाउनित॥ अक्रूरवाच॥ दे
वाधिदेवदीननदयाल॥ बिनभारउतारनषलषयाल॥ मिलसमरषेतषलकंसमार॥ तुमजादवकु
लकौकष्टटार॥ विवहारलोककीनोविसेष॥ अवसुनियेपरमारथअसेष॥ सततउरषप्राणव्यापकप्रसि
ध॥ सर्बातमसोमीसदासिध॥ आपनी [illegible] वियाप॥ उतपतिहेह

मायाअनूप रचिएकदिषावत अनंत रूप त्रगुनमयरचितुमलोक तीन चवषांनवरनचरचितवीन
होतुमनदेवगुन बधहाय निर्लेप निर्गुन निर्मोहनाथ पाकंरू पंथ वेद कुछरान उपजत है जब बाधा अ
मांन संसार हितनुमस्वयंसिध प्रभु धरत देह पावन प्रसिध दितमये आन बसुदेव ग्रेह अदितारमार
नूवह रनएह मोहि कस्यौ कतारथवेदमित पउधारे ममदिरउनीत तव हू देसे वमनक्रमसमेत ति
नकौतुमवांछितसर्व देत ममकरत बांधमायाप्रमान करियेनिवर्तकरुनानिधांन प्रभु बोलियतुम पि
तियप्रसिध वंदनियबकुत अरु वंसबध हम है तवबालक घरसहित सोक रियेरिछाधरमसेत वैराग
प्रभुतुमकहविसेष श्रोदासनावतजियेअसेष मरजादवंसरछकमहंत सुरतीरथसेतुमसाधसंत सु
रतीरथफलआराधसेव तुमदरसमात्र आराधदेव श्रीकृष्णबाचदुहा तातेअबअकरूरतुम पुरमा
तंगपधार हितहमारेहै तहां लावकु सोधसंभार ७ पंवतलपायोपंडुनृप देवाधीनदुरास जाकेतिय
सुतसोकजुति नियतनयनेरास ८ सुषविलासधत्राष्टसो पृथ्वीविनवषनाव पांडव अरु निज उतव
ति नहिसमदिष्ट सुनाव ९ तिहकारन अकरूरतुम चलियेतहां तुरंत उनकोसुषदुषदेषसब वरण
कुआनव्रतंत १० पाछेसमकुविचारपे करिहैतिनकोकाज आनसयेएकतयहां सबैअसाधसमाज ११
श्राउनराजाआथरोउनमदांधसपाप तावसवरतीहैइहि विकलतआप १२ कविरोवा करीविराअकरू
रकी गजउरकहगोबिंद सकरषनउधोसहत आयेयहआनंद १३ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेमु
तमारगेअकरूरहथणाउरमवनंअठतालीसोध्याय ४८ दुहा वारनउरअकरूरयहा आये
सहितअनंद कारन अज्ञाकृष्णकी गावतगुनगोविंद १ छंदपा अकरूरयहागजउरहिआय सबमि
लेआनकोसबसुनाय धत्राष्टरनीष्मविदुरबुध उनिमिलेकरनकुंतीप्रसिध गुरुबालरकरण अ
नंग सुतसोमदत्तसोमिलेसंग दुरियोधनगोतमनारवान भुजद्रोणसहितमिलहितसमाज सुतप
दुमिलेपांचौसधीर वयअल्पतयासंग्रामवीर इतादिविप्रवनियअनेक मिलबालवृधवनिताविवे
क सुकुसलप्रांनवैठेसुजान परसपरकुसलप्रश्नपमान तववितरतजथाअविलोकसूर क
छुमासरहेगजउरअकरूर पांडवबलपौरुषबुधप्रमांन मनकौरवदेषैअसहमान प्रजहेतवि
नयप्रतिपालरीत निरलोननिरंतरधरमनीत सोदेषलोकपांडसनेह दुरजोधनदाहतदुष्टदेह दु
रजोधनदुष्टावरनदेष अकरूरउपजिविस्मयविसेष भीषमहिआद्यकौरवकुभाव दिनदिनप्र
तिरचितदुष्टदाव इकदिवसविदुरएकांतआय सबकारुनअकरूहिकोसुनाय कुंतावाच अ
पनीदसादुषसहदुरंत इहांकुंतावरनीआदअंत सुतबालकमेरेविनसहाय अरुवासस
तुसोचनौआय तिसासउरथजलढरततनेन वढिहृदयकंपआवैनवैन मिलम्रगीजयम धरजूथ
मांझ सुषसासनपावतभोरसांझ होकुफीहौपतिविनहीन दुरयोधनपरनवसहतदीन अषिलेस
कस्नमायाअजेव हैदीनबंधुदेवाधदेव इनकीसुधलेहैकबकृआय हैसदासांमवेहीसहाय जोगेस
जगतभावनजयंत अषिलेसविस्वपालकअनंत उनहीकोहमकेसरनआहि करिहैविघनविनास
बकरूकाहि कविरोवा अतिदुषतदेषकुंताअधीन इहिबोलकहोविस्वासदीन अकरूरवीदत्र
तिसोचआप जलधारनयनमुषकृष्णजाप पांडवनपिताकहिकहिप्रनाव सबहीजुनयेसातिकस
नाव धतराष्टपासअकरूरधीर विचपरीषदवैठेसांनवीर अकरूरवाच उनिकहतनयोजुनियेन्
पाल यहअविनविचारजुकरमकाल पंवतनजबैनृपपंडुपाय यहअविनराजश्रीतुमहिआय तातेनरे
सतुमसहितनेम प्रजापंडुबालपालकुसखेम समदिष्टविलोककुसबनिसूर सुनिवधैवंसधनधरमपूर

तिता

निसिषअनिथाधर्मनास। विष्पातनकर्रईकवीसवास। सबन्यातभत्रवरतरूसमान। प्रतिपालकरिहूरहा
प्रमांन। अपनेपरजानकदापीआप। सहवासनहीतिनसौसंताप। यहजथादेहअपनोनजांन। उनिता
रूंसोविछुरनप्रमांन। काकोकुटंबसुतबंधुकौन। एकाकीजामनमरनजोन। करमाअकमनागीनको
य। सुषदुषअकेलोनजेसोय। प्रभुछन्नसुतोवितापद्दारा। उनकरमदसोकरियतप्रकार। जलजंतज
थाजलसंगजांन। प्रतिबिनबिनसोभ्रततजलप्रमांन। अधरमकरपोषतउत्रआप। सोइततजेअंततउपजेसं
ताप। चिरजीवीआउनतनकुन्वादि। इकहाथअधरमेरहैआदि। परजामकुटमपोषनप्रियोग। सुपनै
कीसंपतकौसंजोग। संसारउरषसोइसुइांन। समलावसबैनवरतेसमांन। धृतराष्ट्रोवाच। धृताष्टतहां
बोल्योसधीर। वृतांतसुनहौअकरूरवीर। कल्यांनवतीवानीअक्रूर। सुनततेअवनमांनेनसूर। पेम
रनसीलज्रूसुधापाय। इहहांतनममनमेरौअघाय। समतानमियतममबजसुनाव। नावीसोवरत
तविषमनाव। थिरचितनममस्वंबलसुनाय। जुतडितितरकघनमांकजाय। सोकृह्नकरनकारन
समर्थ। हिदेवीमायाउनहिहथ। प्रभुकीजोइछासोइप्रमांन। अविलोपननांहिनसमर्थआंन। माया
प्रपंचउनकोसमूल। सुनजांनसुरासुरसहततूल। नारायनउनकौनमसकार। जोवासुदेवब्रज
न्रूविहार। अबजांनन्रपतिमनअभिप्राय। अकरूरफेरमधुपुरीआय। कविरोवाच दुहा। इहांधृता
ष्टरआदिदै। कौरवकुलकोकर्म। समजिजथाअकरूरसब। मोहनसोकहिमर्म॥२॥ इतिश्रीभा
गवतेमहापुराणेमुक्तमार्गेअक्रूरधृताष्ट्रप्रबोधगुणपचासमोध्याय॥४९॥ दुहा। उभौमागधराज
कीअस्तप्रीयातिहनांम। सोपटरानीकंसकी। विधकतविधवावांम॥१॥ कोधाधिकसोकाकुलित
जरासिंधपहआय। कारनजोवधकंसकौ। सबैकहीसमझाय॥२॥ जरासिंधवाच। उभौदुषसुनिके
पिता। सकलचतुरंगसधीर। अविनीकरौअजाहिदवी। वचनप्रतंग्यावीर॥३॥ अष्टादसोहिनीसंष्याक
वत। इककुरंदरथईक। प्रयतुहयपंचपदातय। प्रथमपतयहनाम। त्रगुनकरिसेनामुषत्रय। ता
सत्रगुनगनगुल्म। त्रगुनतिहगिनजुगिनप्रिय। तियतत्रगुनवाहनी। कमसुतिहप्रतिनाकिंप्रि
य। मानीसुत्रगुनप्रतिनावमन। अरुतिहत्रगुनअनिकनी। सोदसगुनकरिनरहहरकैसंव। यहसंहा
अछोहिनी॥१॥ छंद उधोर। अछोहनीदसतेवीस। सकुचल्योमागधईस। हयहीसगयमदगाज। वाजं
त्रवीरसुवाज। चितचढीप्रुरहतषेह। दिनन्नयौनिससंदेह। चतुरंगसेनसवाज। करिगमननममक
छुकाल। अतिक्रोधमधुपुरआय। सबनगरघेरसुनाय। तबरामस्यांमसुतंत्र। मिलकरतविजमं
त्र। श्रीकृष्णवा। रिनषेतमागधमार। यहसकलसेनउबार। केमाररनचतुरंग। इकबचेमागधअंगह
थजरासिंधहिहातै। अरुमारसेनअनाथ। पनजुथतीनप्रकार। इहांकरेवीरविचार। मिलहैजुलो
हसुमार। रिनदेकुअबरिविकार। मगधेससेनमिलाय। इहबकुरिलरिहैआय। योन्ननपचारअमांन।
निस्सेसहोयनिदांन। बकुदुष्टउपजैबाध। यहनागजायअसाधि। अबउचितएहउपाय। निस्सेष
सेनरहाय। इहहेतमैअवितार। न्रूवलयौटारनभार। उनयहैमत्रप्रवीन। कृतनियतउद्यमकीन।
कविरोवाच। इहसमयमगआकास। प्रभुविजयहेतप्रकास। संनाधआयधसंग। रथउनयआयअनं
ग। इहांदेवइछाएह। सोइसूतआयसदेह। सफिकवचआयधसिध। प्रभुरामकहलवसिध। आरोह
रथतिनआय। ईहाविजईसंषवजाय। तबपरीअरिदलत्रास। विपरीतदिनविस्वास। जरासिंधुवा
। मगधेसबोलगुमांन। नहीबालजुधसमांन। तिहकमलभ्रातततोहि। मनहोतलज्यामोहि। मनरा
मजोउनमाद [illegible] बलदेववाच। बलन

इकदितबबोल तुमसुष दिकहिनिजतोल ॥ जोसमरबीरसमृथ ॥ कबुबक तनहीकहिकथ ॥ कहिबोसुमिथ्या
मांन ॥ तुनिकोयोसाचप्रमांन ॥ कविरोवाच ॥ इहांरामक्रिस्नसुआय ॥ लीयेसत्रुघेरसुजाय ॥ ज्वलदितकरजो
नपरवेषमध्यप्रमांन ॥ कृतधनुषचक्राकार ॥ पत्रुमोदबांनअपार ॥ यहांसुनटहयगयसीस ॥ महिपरेलुट
तमहीस ॥ चलिसर्तश्रोणीसंग ॥ तहांउच्तरुइतरंग ॥ सोइस्वरनटसुषकार ॥ हियोफटतनिलजनिहार ॥
मधेधेसकोदलमार ॥ अवसेषदएतविफार ॥ रिनजरासिंधरिसाय ॥ ईहांक्रिस्नसनमुषआय ॥ दकुओरदाव
विदाव ॥ घनघोषवजियघाव ॥ सरनिकरमारसग्रांम ॥ रथतोरतहांजुराम ॥ नोविरथमागधवीर ॥ सोइदेष
रामसधीर ॥ दुहा ॥ जरासिंधबलनइजब बाधनलगेविचार हसिकेनैनहिसैनतहां नरहरिप्रभुनिवार ॥४॥ श्री
क्रिस्नवाच ॥ क्रिस्नप्रभुभाएसेन करिमुषयोकहिधनस्यांम ॥ हियासोकरनीहमहि ॥ रिनकीडा बलरांम ॥ कविरोवा
पैस्यो विसांनोमगधपत ॥ सेन्यागरबनसाय ॥ चल्योतपसाकोतबै ॥ इहांनाइमिलआय ॥ ६ ॥ करिकरिनीतप्रबो
धकबुधरकरआन्योधांम ॥ मिलसंकल्पविकल्पमिल ॥ सोनलहतविस्रांम ॥ ७ ॥ क्रिस्नदेवरिनविजयकरी ॥ ग्रहआए
गोबिंद ॥ करीसुरनवरिषाकुसम ॥ इइजयोआनंद ॥ ८ ॥ छंदउआपरा ॥ याहीक्रममागधफिरआयो ॥ साकुवाज
चतुरंगसवायो ॥ लेलेदलमथुराप्रनलाज्ञो ॥ नयजुतनारसहदसनाज्ञो ॥ अष्टादसमजुधकोउद्यम ॥ करतन
योबकुस्योअमरषक्रम ॥ अथकालजवनप्रसंग ॥ इहविधकालजवनयकआसुर ॥ पूछ्योनारदसोअहिमत
पर ॥ कालजवनबा ॥ तातेमुनिपूबतहोतोसो ॥ मुहचढकरेउदजुधमोसो ॥ वीरवताबकुकोउमहाबल ॥ तुजाभुजा
तफिरतखोजतषल ॥ मनअभिलाषजूझूजेमेरे ॥ तातेगुनमानंक्रमुनितेरो ॥ नारदवा ॥ निगमहेतबोलेईहांनार
द ॥ वातनवैरविरोधविसारद ॥ जदुवंसदेवदेवकीजायो ॥ वासदेवयहनामबतायो ॥ कहियतसांमवरनतनकारे ॥
पीतवसनकचगुघरारो ॥ ताकोअग्रजभ्रातगोरतन ॥ सबलबनसंजुतसकरषन ॥ अबहैपुरमुथरासोआए
धुरबजवसेइथकेधाए ॥ अतबललेतसुफ्रूउधारे ॥ महामल्लमुष्टिकसेमारे ॥ हैमथुरामहनीकेहेरे ॥ तहांमनोरथ
फलहैतेरे ॥ तुमसोजुधजोगवहजांने ॥ अवरनकोउमनमहआने ॥ कविरोवाच ॥ प्रतिनटसुन्योमहासुषपायो ॥ उब
वजुधअमितदलआयो ॥ मिलेमलेछकोटत्रयमुना ॥ प्रतिमापोरुषदेहप्रचंडा ॥ घनदलत्रयोमथुरापुरीघेरा ॥ दिसदि
सकरेउप्टपलफेरा ॥ अतिबलकालजवनजबआयो ॥ पुरवासिनतबअतिभयपायो ॥ जाकवाच ॥ इहविधजरा
सिंधजोछेहे ॥ पुनजादवदक्रुधांउषपैहै ॥ श्रीक्रिस्नवाच ॥ कालजवनआयोअतिरिसक्रम ॥ अबहैजरासिंधको
आगम ॥ क्रिस्नविचारतबेमिलकीनो ॥ नियतवनीतहांकष्टनबीनो ॥ कविरोवा ॥ रामक्रिस्नमिलमंत्रविचार्यो ॥ निर
भयवीरनिवासनिहार्यो ॥ विसकरमाकोभ्रातविचछन ॥ सिलपीतुष्टानांमसुलछन ॥ श्रीक्रिस्नवाच ॥ क्रिस्नजुताक
हअज्ञाकीनी ॥ निरभयनगरीरचकुनवीनी ॥ विहतदुगमसोगेरविचार ॥ सुंदरमिदरकोटसवारह ॥ कविरो
वाच ॥ ओषामंडलतुष्टाआयो ॥ दुनिपनासपेचततहांपायो ॥ डंरीविचित्रद्वारिकापावन ॥ सागरमंभसुरचीसुहावन ॥
कृतपरवेसुकोटसकारन ॥ जिहपरिक्रमाद्वादसजोजन ॥ महाविचित्रसुषदसुनमिदर ॥ कनकरतनमयसंजु
तपरकर ॥ दुरगमकोटच्यारदिसद्वारा ॥ वज्रकपाटसूलविस्तारा ॥ कपिसीरषप्रतिजंतत्रयांनक ॥ उपलअ
नलमयचलतअचानक ॥ बनउपवनअतिसुषदबनाए ॥ सलिलजंत्रतहांचलतसुहाए ॥ मिदरध्वजापताका
जथा मंडित ॥ तारहेममयकलसअषंडित ॥ जदुकुलदेवदेवालय ॥ मंडितयहयहप्रतिमामणिमय ॥ वरच्यारब्यापार
वहतवर ॥ कारननिउनअसेषकरमकर ॥ अंतहपुरमिदरसोभाअति ॥ रुचिरजथापरकरखंबितरत ॥ सभासु
धरमानामसुहाए ॥ प्रभुसुषकारनइद्रपठाए ॥ सभामनुष्यतिहबैठेसाई ॥ हानछुधताकहनहिहोई ॥ पारजातकेबछ
सपावन ॥ नोगजस्यामनवंबितभावन ॥ अदभुतसावकरणयहआए ॥ वरुनजक्रदितवरणपठाए ॥ दिव्यकुवेरअ
ष्टसिधदीनी ॥ क्रमयुतजक्रक्रिस्नकीकीनी ॥ निधनामा ॥ प्रथमपद्मअरुमहापद्मपुनि ॥ क्रूरमओदकमवनीलसु

कृष्ण:
१०००

नि। संषमुकुंदनामानिधमांनी।३। निश्रैअष्टौरिपनप्रमांनी। जिहदग्यपालपदारथुजोइ। आ
नसमरपेदितजुतओइ।२। इहांप्रभुदेवीसक्तदिषाइ। वीचनिमषरवनासुवनाइ।३। दुहा। देवसुजाद
वआद्यदेलेमथुराकेलोग। तिहबिनमदहारामती। पवियेजोगवियोग।१। तिनरहाबलमदतहांसो
मपवाएसंगकछुओसीइछ्याकिसन। अनुतसक्तअनंग।२। कालजवनजांनोनकछुलष्योनसो
उबैरलोक। नयटारयोनरहरप्रभू कीनेसबैअसोक।३। इतिश्रीभागवतेमहापुराणेमुक्तमारगे
दसमोस्कंधअनुसारणेभाषाबारवनस्हरदासेनविरचतद्वारीकाप्रुरीरचनोनामपचास
मोध्यायः।५०। दुहा। कीनीयहमायाकिसन। कालजवनबधकाज। आपरह्योउरधैरहह। महामलेछसमा
ज।१। रचनाबिनअतररची। कह्योउसहसोदाव। इहओसीइछ्याअतुल। पूरणदेवप्रभाव।२। निसचरकेद
लसोनिकट। उरतैनिकसेधात। कालजवनदेषेकिसन। जथापरामुषजात।३। मुनिजुवतायोहोमरम
सुंदरसांमसरूप। वेहीगुनलछनअसम। प्रगटवसनतनभूप।४। कालजवननिरधारकर। पाए
कछप्रमांन। विरषअसस्त्रविलोककै। उपज्योहर्षअमांन।५। यहांअसुरस्थतेउतरि। अरुअसस्त्र
कैआप। पाछैहीधायोप्रबल। पूरनगरनप्रताप।६। कालजवनवा। आपअसस्त्रअसस्त्रअरि। विरथ
हीविरथविधांन। अबतोपौरुषधरमयह। हैप्रतिजुधप्रमांन।७। अथकालजवनपूरवजनम
उतपतिप्रसंग। बंदउधौर। किकुकालआसुरकोय। जवनिदनामसजोयक। कुजादवनकेजाय
परम्योसुकारनपाय। इहकरेजदपितपाय। उनिकछुनसंतितपाय। गोसुसरकैतवग्रेह। सबमिले
रहितसनेह। इकदिवसपरषदआय। सोसजनबैगसुनाय। कनतरकसालेकीन। हैतूजपौरषही
न। अतिभयोलजितआप। तिहअसुरउरवढताप। जवनिदगौतजयेह। सबबाफराजसनेह। य
हसघनवनआराध। सिवहेततपस्यासाध। भयेरुद्रदेवदयाल। कुनदरससुप्रतिपाल। रुद्रोवाच
हरकह्योजिहमनहोय। सुनमांगलेवरसोय। जवनिदोवाच। जवनिदजाच्योजांन। प्रभुदेरूक्ष
प्रमांन। जिहभिरेजादवजात। रिणहोयअजयप्रात। सिववाच। सिवकह्योदयासमांन। तवहोहिइन
प्रमांन। कविरोवाच। इहसाधआयौगेह। सुषराजभजतसनेह। जवनिदसुतरिणजीत। भयोकालज
वनअभीत। वरपायआसुरवीर। सोइकरैराजसधीर। यहजातकृष्णअनंत। तहास्वामायातंत। ज
दुवंसउतपतजास। पुनभज्योजातप्रकास। अथकालजवनदग्धप्रसंग। जवनवाच। इहइह
निसचुरहाक। कहिवचनउसहकाक। पुरषलखाफप्रमांन। नहीवचेमीचनिदांन। इहाअचलए
कउतं सोइगिगनपरिसतअंग। तिहदरीदुगमरंत। मिलअंधकारअनंत। अथमुचकंदसयन।
मुचकंदतहामहीस। अतिअलसविवरअधीस। यहांगुफासोयोआंन। एकांतथलउनमांन।
कलपांतवीतेकालें तहासप्रपायनरेस। यदपीतवस्त्रउढाय। भएकृष्णअंतरभाय। पदवि
कादेषसपाप। इहांधस्योनिश्चरआप। पटपीतवस्त्रप्रमांन। इहहतोलातप्रजांन। अनअव
धजाइओआप। मुचकंधरोषप्रमाप। दुगकोधअग्नउरंत। तिहजरयोअसुर [illegible] असंत। तन
जवनमानकुतल। सोभयोभस्मसमूल। अथमुचकंदउतिपतसयनप्रसंग। विसा
तजलमइस्वाकवंस। जुवानासपितामहजगप्रसंस। पितभयोमांनधाताउनीत। मुचकं
भयोतिहनपअनीत। सुतभयोनाममुचकंदतास। विधजुक्तवेदवाचाविसास। भवभंत
हेतमुचकंदभूप। जगजेततपेधुरधर्मभूप। सुरअसुरआद्यविग्रहसमाज। कियेदेवासुररिण
विजयकाज। इहांइउआयनवजोकआपमचकंदमिलेमनहितअमाप। सुरराजनृपहि

४ मुचकुंदजबोंदेहसवाल नंदकालडालासंग घटेपाकेछरखपनत उठकसोविवरप्रवेस ४

जाचौसुनाय। अविनीसमिलहूहमभांकआय। सुरसमरजुरेमुचकंदसंग। नुवनयेपराजयअसुर
संग। सग्रामविजयपायोसुरेस। इहांवजेगिगनबुधनिअसेस। इदवाच। सुरराजकह्योतुमकियेसहाय। अवि
नीसआपसुरलोकआय। बीत्योजुकालसमहरसधीर। वसरोसनजान्योतुमहूवीर। जनप्रियाउतअरुवं
धुजोय। नयेकालकलितनहीरह्योकोय। सोअमरहेतएतोअकाज। अविनीसउपतवरलेउआज। सुषग
फराजसंपतसमाज। रह्याजुहमारीकरीराज। कविरोवा। सुनिसुपैविरतिउ[1]जीनरेस। इहांनयोसोकव्याकु
लअसेस। वैराग्रनयोअतिविरहवीर। सोकाधिकारसुधगईसरीर। मुचकंदवाच। चिरकालजग्योहैविक
लचेत। हैनिद्राबाधतताँसहेत। अबहोतसइनइब्याअपार। वरमागतहोयहपेविचार। कहुआनजगावै
मोहिकोय। हनदेहदिष्टममनस्महोय। इहनयोनस्मजबअसुरएह। दियदरसदीनबंधवसदेह। कविरोवा
जोआदिरूपअपनोअनंत। सोउनूपहिदिषायोजांनसंत। मुचकंदवाच। इहांवूझिराजअपनैसनाय
तुमकौनयहांकिहहेतआय। ससिसूरअगनकेधूसताप। अरुआदिकोउदगदेवआप। विधविष्णुरुद्रके
धौविचार। यहविवरनसायोअंधकार। अतितेजपकासतअंगअंग। पनुकहौदयाकरिनिजप्रसंग। इब्रोक
दापीमोकहकपाल। तुकोननयोयहांनयोकितीककाल। इक्ष्वाकवंसमोजनमआंन। ममपितामांनधाता
प्रमान। मुचकंदनाममोहिजगतमांन। सुधजुस्योउचितसुरकाजजांन। केउकल्पजायनोअलसआय। उन
रह्योसोयहविवरपाय। कहुआयकालसंजोइहाकोय। इहनयोनस्मममदिष्टसोय। कोउहुकहांआयो
अकाज। तिहमोहिजगायोमाहाराज। ममदिष्टअनलसोइजलसमूल। तिणहोतनस्मजूपस्योतूल
तुमदीनबंधमोहिदरसदीन। करिक्रपाकृतारथजनमकीन। इहजनमकरमगुनगोतआप। पनुकहो
जथाप्रूरनप्रताप। श्रीकृष्णवाच। इहकहकहौलबहवचनएह। सुनिराजकहतहूनिसंदेह। ममजन
मकरमप्रतिमअनंत। एकहूनुपेकहुहोहिअंत। कणरेणबुंदघनगिनेकोय। हितजनमकरमसंष्यान
होय। कदिकालजन्मअरुकरमकोय। सुरसिधब्रधजानैनसोय। निहचैकहुकहिहूवरतमांन। प्रथी
प्रसिधवेदहुप्रमान। न्द्ववनइउषितजबअसहनार। कियेथीनरूपविधसोउकार। तबजाचन्याकिय
कमलजात। वरविष्णुउनयदीनोविष्यात। इहहेतलयोअवितारआन। जदुवंसजन्मनरदेहजांन। दे
वकीकूषउपज्योअजेव। विष्यातनामहूवासुदेव। उतिनाप्रादकंसदिअजंत। सबहतेउष्टजेतेअ
संत। यहकालजवनसजुतविकार। तबदिष्टजसोअतिउग्रवार। दयाकरितोहिमेदरसदीन। उन
इब्यासोमांगहुप्रवीन। मुचकंदवाचछंदउअषरी। इहांपरउरषधनुजानेयह। तहांनरूउरलनजा
चीतिह। तबअस्तुतमुचकंदउचारिय। हरषनयोअतिजोतिनिहारिय। यहसबतममायाकर
मोहत। हैकुटंबसोकरतमहाहित। जोसंपतअपनीकरमानत। उनतिहथानसमांनप्रमान
त। उरषत्रियात्रियउरषहिहृतै। पतिकोब्याहवढावदिपूतै। मनहितवसेयेहतेहीमाही। नारायनक
हविकतनांही। जनममनुषइूरलनहीजावर। पनुतेविमुषउपासतहैपर। कामादिकसुषसूक
रकूकर। संपतिराजनज्योघरसुष। मुदरह्योतचरनपरामुष। जनमगयोनिरफजअबजांन्यो
मैअमनोतनमृतकप्रमांन्यो। संपतयेहबंधबाधोसब। हैसोइजियतकरतअपनोहव। हूमकिहि
नस्मदेहकेकारन। संग्पातीनअंतसोजोजन। पिहदसाइहवेदप्रमांने। जियतमरतअज्ञानन
जानै। सबयहरूपस्योमोहयहसंगट। मायावसनावृतजोमरकट। नागपउदयमेरोसंनाकन। प
नुसबकृपानइजबपावन। पांनीनरूलहैमनकचपन। विषमतबेबूहतनसबंधन। राजउष्टको
हेतनिरंजन। बकुस्योकौनपरेतिहबंधन। बंधनराजनजेबहूतेरे। मोहनदरसनागनएमेरे। ह

पासिंधुमनरुद्धाकीजे देक्वरनसेवादिटदीजे प्रभुतबोलेकृपापरायन अगुनस्वरूपनिर्गुननारा
यन श्रीकृष्णवाच पैहोन्रपतभक्ततुमशरन मेरोध्यांनकरकुवाचामन दुहा आषेटकक्रीडाअ
षिलपसुबधकरैन्रपाल अघनासनताकोअबै करकुचमनएकबुका १ देवालयतीरथउगम
जुन्यषेत्रजीपाय स्नानमंजनदानउन कैहौसुधसुभाय २ कमयुतजोग्राभ्यासकरितजिहौदे
हउनीत हममहमिलहौध्यांनतहां विख्यिष्यातविनीत ३ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेकाव
नमोध्यावा पा दुहा कृष्णहिवंदनपरिक्रमण करिमुचकंदअलोक तबनिकसेताविवरतै यहांकलि
वसएक १ भूतविपर्जयदेषभुव नरपसुधुमतेनांहि व्रतिमालघुपिस्वरवगेट मननयविस्मयमां
हि २ कलिजुगआयोजानकै धरिमनमोहनध्यांन चितहितउतरदिस्वले लषिविपरीतविधांन ३
आयंबदरकाश्रमईहां नरनारायणथांन करतभएतपध्यांनकृष्णपरबतसुबदष्षमांनैगंधमादनतहां
देषगिरअद्भुतअगमउतंग तपस्याहितबैठेतबै आसारहितअनंग ५ इतिकालजवनदाह कालज
वनकौदाहकरि क्रोधदिष्टमुचकंध प्रभुनरहरिमुथराउरी आयेजुतिआनंद ६ छंदपधरी यहांकिंशत
ष्षेवीनेईहांबलदेवकृष्णरिनआए निषलजवनदलमारिनसाए रिनरैन्नारवादकंसबलीने कसि
सबसौंजसुआगेकीने ईहविजरासिंधचलिआयो सकिदौदनितेइससवायो सत्रैवारजुभाज्यौस
महर अष्टादसमसोआयोआतुर यहांकृष्णतबमंत्रउपायो बलकहमांनुषभावदिषायो आगेकुयमा
गेअषिलेसुर पीवलझोरहांदमछापुर धरतरामकृष्णधरधावत अरुबलपीवविलझोआवत पर
बतएकप्रवरषनजथाउर्धएकादसजोजन गोकुलइसआयतिहगिरवर आउनचढेसिषरउहउपर
आतुरजरासिंधउहांआयो परबतघेरीसेनपगायो जबहरीयापरिबतमेजांनै उनषलदारुनमन्त्र
षमांनै गिरवरतिहदवदाहलगायो प्रभुतिहसमयदावसोपायो गिरउतंगतेफंकेगिरधर उतरेद्वरसे
नतेअंतर जरासिंधसोमरमनजांन्यो मोहनबेलकरेमनमांन्यो ईहांकृष्णद्वारावतिआए नयेहर
षसबदिनमननाए जरासिंधनिश्चयकरजान्यौ प्रसनजरेदवदाहषमांन्यौ ईहांविजइनीसांनबजा
एअतिसुषजरासिंधग्रहआए अथबलदेवविवाह दुहा राजारेवतदेसकौ रेवंतताकोनांम ताकीकिं
न्यारेवती भईसोजिग्रानांम ७ पुछेब्रह्मासोप्रगट न्रपरेवंतसग्यांन किहदेउमकिंन्नकाप्रभुअग्या
सुभमांन ज्ञहलाबाव सुनबोलेविधन्रपतसो सबभवभूतसमाज तुमदेषेतिनमहतहां रसोनकोइ
राज ९ कविरोवा ब्रह्माकेपरषदविहत बेठेरेवतराय कारुकारनतेतबै कहुविथघटीकहाय १०
विधोवाच रांमकृष्णहैद्वारिका दोऊसुतवसुदेव कारनअंसअनंतकै अविताअजेव ११ तिनमह
जेवौहैतहां रूपअतुलबलरांम ताकहकिंन्यादेऊतुम करऊसिंधयइकांम १२ कविरोवा तबव
हकिंन्यारेवती गुनलछनसंजोइ कियोब्याहबलभद्रको पूरनवेदविधोइ १३ अथरुषमणीप्रसंग
जुववेदरनदिछनदिसा उरकुंदनसउनीत करतराजन्रपभीषमक विद्याविनवविनीत १४ उन
पंचपकउविका सुतलबनगुनराज कुलसुधर्मकीडाकरत संगसमांनसमाज १५ छंदपा कदिष
थमवकौरुषमीकुवार उनरुषमबाकुसोन्नाअपार तीसरोरुषममालीसग्रध उनिरुकमकेसचौ
थोप्रसिध पंचमोरुषमरथअतिअनूप रुषमनीउनिकाश्रीयारूप सुभलछनगुनमहिमासमांन
नितप्रीतनिगमवाचानिदांन गुनरूपसीलबुधबलसुभाव व्रतिमाप्रसिधदेवतप्रभाव सुनवासुदेवम
हिमाअमांन पेनीतवषांनीसोपुरान रुषमनीउपजिप्रीतानुराग भइदरसकाजइछ्यासभाग सि
वसिवाहेततिहकरेसेव दीजैवरमो... कृष्णदेव क्रीवरप्रापतिनइपेष नहिपिताचित्तचिताविसेष

×ब्लेजुधराष्ठाए छुनआवृसौघवेषडुवपाए कालजवनदलघेराकोनै उरखैलिकसेकृ×

सूरसाम्हमुषसंघरिय १ सबलसेनसंघरिय धराधुरघातनधंषिय कौलकमवक्रसमसिय वर
वरचित्वमकिय सेनसूरसामुहिय बीरहुंकारबजीय हयगयनरदलमिलिय प्रथिपलचारग
रजिय रिनचयेधनुषटंकारवत संषनादसक्रियसघन माधवअभंगसिसपालमिल भूभ्भारट
रिहेभुवन २ मारमारउचरिय महासंग्राममतुमचिय कतिकुंडलकोदंड बेधलहीगुनषंचिय सरबु
टियदकुसेन तासआवासहिअंतर हयसुमिलियधुरषेह भयोतममहाभयंकर छतपतिआसरुष
मनिकरहि रोमउघ्रहतकोपतन वियलषियहउ धकातरतबहि मोहनसंभ्रमछायमन ३। श्रीकृष्णबा
च्छाबोलेउअषिल्हेस भयनमहेसंभावन अंधकाररजउडत नियतइहसमहरलषिन करूउघत
बकाजमानमर्दनरिनमारू ४ बलसेनसिसपाल वीरसमसषाविह्मारू सकर्षनमिलेजादवसक
ल कविनबानवरषाकरिय कुंडलकिरीटसंजुतमुकट धसनरयहिषिसत्रूवपरिय ४ समरबा
नसंधानसक्रिय सारंगसारंगपानसमवैरसंभारिय समरबानसंधान कविनमुक्केभयकारि उनिह
यगयनरपरियलोथपरलोथजुलगिय परिकायरउरकंप भुवनजियआसाभ्भगिय पलचारिषेत
पायेत्रपति नारदकौतुकरवियो सुरकाजसिधनरहरसुकव भुवनतीनजयजयभयो ५। छंदउअ
द्धरी। जरासिंधदेआदितुआये सबैनृपतसिसपालहूभागे। जसोवंदेरीमारगलागे। दुहा। सम
हरभाजेराजसब आयभयेएकांत्र विषमजथापरिवातवातवस तरवरबिहुरेपात्र २ देष्योजब
हीअतिदुचित पोरषअतिसिसपाल मागधताहिप्रबोधमिल करतभयोतिहकाल ३। मागधेसबा
चवदिनयहचिताउचित उनतुमपरमप्रवीन जथावानकहिजयअय निसदैवेदेवाधीन ४ काव
मइज्योउत्रका नरवसनचतनिदांन समझोयोधांनीसबै प्रभुवसआदिप्रमान ५ सत्रहवारसके
लमह अठोहनितेईस लेलेजादवसोलरयौ अजयदयोतउइस ६ आयोबारअठारवी सोपेद
लबलसाज तबजादवमोसोतहां भयकरिनिकसोराज ७ अबतोकालवसीसए इतेनृपतिमि
लेआय लघुसेन्यासोषेतलरि प्रगटपराजयपाय ८ कारनकालप्रबोधकरि समझायोसिसुपल
अपनेअपनेग्रेहयहां पुनसबगयेनृपाल ९। इतिसिसपालपराजय। कविरोवाचछंदअधोर।
करिकोपरुकमकुवार करवीररसविस्तार सन्नाहकसितनसूर उनसकलआयधपूर
थरनगरसुनयहधार वरिकुवरराकसवार पुनप्रगटसुभटप्रवीन कहिमुषप्रतंग्याकीन
रुकमयवूबरोवाच। सबमारउयनअसेस उनकरूंग्रहप्रवेस ईहांकेरकिमात्रांन उनवैद्य
बाहप्रवान। कविरोवाच। अतिक्रोधरथआरोह संगसेनचढतछोह। रुकमईयोवाच। षलकू
षसीयहषेत संघरातसेनसमेत। कविरोवा। रथहांकरुकमकुवार अवनिकटआनउदार ई
हउछकंहिउरवाद वउरतरोषविषाद इहकृष्नसनमुषआंन उनसज्योबाणप्रमान। रुकमईवा
अबमांझपगजुअहीर किहवंसउपज्योवीर जेसंगनिसवनजाहि हैगोपकावेनाहि सरनिकर
बेधसरीर नहीअवनलुटतअधीर देकुवरतोलोबाझ ममसमषकैपगमांझ करिकपटजुधकर
ल करूविजयपायअकाल अबतिहीधोषेआज करिसमरसरनअकाज। कविरोवाच। करिको
परुकमकुमार सरतीनमुक्कीयसार तहांकृष्णहतरथतास कियविसषमारविनास चववांन
बेधियबाज सोइसूतजुगसरसाज इढधुजपताकादंड वलकरेत्रयसरषंड उरचापसक्रियआं
नछबबेदकृष्णप्रमान जोईउसहसकको्दंड बितकृष्णकरतसुषंड उनिपरप्रघहसुपांन स
करसलजोपेआंन अरुसक्तितोमरआंन उनिकविनचरमप्रमांन ईत्यादआयुधओर सकऊते

बसुंदरसामसुजान करहितधारकसोकल्यौ बियरथसकचमान ४ मेघपुहुपसाथीवमिल सेनबलीह
कसंग कमच्यारूहयजुक्तकर आंमोरथअननग ५। छंद ५। गहिताहीउजकोकरगुपाल च्यार
थआंनबेवेद्याल आनंतदेसतेचलितदार आएविदरभमहिमाअपार ज्यौतोरजनीमुषरथज
यंत यहाप्रातसमयआयेअनंत उपवनककुउतरेआनआप भद्रदेवसकुहुरनवताप सबउ
तनृपतनीषमवसेष उछाहहमाहकीनेअसेष करफोराकाकनविवधकीन विवहारवंसहूजापवी
न निस्सिबनगरसोभ्नामिहान बाजेअनेक बाजतविधान सुरहूजाविप्रनदानसाध आपनेदेवदेवी
आराध। दुहा। नगरवंदेरीकोनृपति सोदमघोषनरेस ताकोहेसिसपालसुत दलबलपूरनदेस ६
जरासिधपीठकजया वीरसालविष्यात दंतवक्रनृपआदिदे आएविदतवरात ७ कह्योवधवाअनि
कर भनुआगमसिसपाल आगेकैनेउमग कवररुकमततकाल ८ जनवासोदीनोजबै मनवं
छितमनुहार होनलगेमंगलहरष सबैसंनारसंनार ९ सकरषनजबहीसुन्यो कृष्णगवननिसकी
न सेन्याचतुरंगीसजी पऊवेषातप्रवीन १० छंदकआवरी। करतविकल्पमनहीमनकीना धीरन
रहतकहतयोधुन्ना। रुषमणीवाच। आयोविप्रनमोहनआए इहकछुकारनदेवसुपाए कबकृ
धेरनएतोकीनो दीनहीदरसनततछिनदीनो दीनजहांजहांदेषउधारे ठूरनभरषपावतहाधारे न
यनमुषधरध्याननिरंतर हाजदुनाथसांमघनसुंदर। कविरोवा। बामनेत्रभुजऊरकेवांमा सोइवि
स्वासभयोवरसामा याहीसमयविप्रसोईआयो पहिलेजोरुषमनीपठायो किन्पाउजकोवंदन
कीने लबनदेषमानसुनलीने कुनितिहविप्रवधाईपाई संपतिजीकछुचितसुहाइ कोउवाकेजु
वंसकहावे अजकुताहिदरिद्रनआवे रामकृष्णआएसुनराजा कस्योविदरभरायहितकाजा
दीनबंधुनिजउरजनदेषे वरकिन्पासमजोइविसेषे सुपेपरसपरकरतसुनाए औन्नपअवरष
याहीआए। रुषमनीअंबकादेवीलेआगमन। पायनचलिअंबकापूजन जधासषीसंगलीनी
गुरजन सहजसिंगारगंधघनिसोभा लीलादेवीपतहितलोभा संगसेनचतुरंगनसाजे वीरचलेबकु
बाजतबाजे करयौप्रवेसदेवदेवालय सेवाफलवांछितउरआतिसय करिहूजाजाचन्पाकीनी नाथनि
हायजोररसभीनी। रुषमनीवाच। किंकरिजांनकपायहकीजे देवीमोहिकृष्णवरदीजे। कविरोवा।
लहेप्रसादतिलकफललीने किन्पापरममहात्मकीने यहदेवालयबाहिरआई सोभासहजसिंगा
रसुहाई महामोहनीदेवीमाया कियविस्तारसुलनकाया इहांवीररहाकजोआने प्रतिमामनकु
पषानप्रमाने भावीजोइमोहपासनट सबैपरेमायाकेसंकट याहीसमयकृष्णउहांआए साध
सजनमनइधकसुहाए पियकीप्रतिमादेषपवीनी किन्पातनछिबअर्पनकीनी महाहर्षकरक
र्षमुरारी रुषमनलेरथपरबैगारी मलेसबनकेमदमनमोहन चतुलेचलेकिनकापावन अपनी
बलधरलेतअचानक ज्योम्रघराजविहारतजंबक इहसिसुपार्पकूकसुनिअंतर महागरज
बोलोमदमंतर। सिसपालबाचदुहा। देषकुबालअहीरद्वैमुठिमहामतिमंद करिचोरीनृपकेनिका
उहपरेजमफंद ६। इतिश्रीभागवतेमहापुराणेमुक्तमारगेदसमस्कंधनुसारगेरुषमनी
हरणोनामतेपन। ५४। औवकपरिवुकारियह घरघरिघेरकुघाट आरमोकहुओरनै
वयोदईवहवाट १। छंद। छप्पै। सेनउमैकैसावधान रसनाहसुसकिय वीरविकविकैरियग
हरसुरतंबकगज्जिय हयहेषारवगजनगाज भटमारमारमुष परिकयरउरकंप सूरसुरलो
कगवनसुष सैवदीवेदरहनअषिल अरकजोरतिहुअंतरिय सिसपालसघनचतुरंगसजे

हैकांमावतार । उपजेघरनरुषमणितदार । प्रद्युमननामयहकरनहत । अरुअंगअंगसोभाअ
नहत दिवतअनावयहसु नि निदांन । उननयोदेहधरनपमांन । कविरोवा । भामनीविलनरथारस
वयहसाधधरमसकिहैसुभाव । इक दिवस ग्रेह बेठेअज्ञात । विधयुगतकर तयहसाधपात । कर
हावभावदगनेहकीन । निरधार उपजिमायानवीन । प्रदुमनवाच । प्रद्युमनकह्योकरवुधउचार
कवुआज विलोकनमदविकार । इहनाहिन समज्योपरतआज । कछुक हियेकारनजयाकाज
मायावतीवाच । मायावतिउतरदयोमूल । करितारनयेमोहिस्पान कूल । जेआदजनमलियेज
धाजोइ । उनिकहेसबेपूरनप्रियोइ । तुमउत्तकरूरूषमणिकुवार । अवितारसुमनमथके
उदार । प्रदुमानकमोकहरतिपमान । नारदरिषमोकहकह्योनिदांन । इहसंबरतेरोसत्रुआ
हि । तन नगकरकअबवेगताहि । जनमांतरधारीदेहजांन । अबनोसंजोइविधलिषतआं
न । असुरजनिनीतीहिपरजरतउक । कुररीविहंगज्योकरतकूक । कविरोवाच । उनिसमियेमाया
वतीपाय । प्रद्युमनकपैविद्यापढाय । करमरैजदपिउपचारकोय । जिहहेतचूतमायानहोय । प्रद्यु
मनइहैअवसानपाय । संबरसोजाविजुधसुनाय । निसचारवरनहतमनऊनाग । सोउग्रोगर
जआकासजाग । करिकोपअसुरआयोकरूर । प्रद्युमनसिरवाहीगदाभूर । निस्चारचोटवाही
निघात । प्रदुमानानयो सोउवजपात । करवीरकवरपोरुषविसेष । सोगदानंगकीनीअसेष
प्रद्युमनगदाकीनीप्रहार । चढगयोगिगनसंबरकुवार । गहिजकपिसाचगंधर्बगान । अरुगे
रेराकसअप्रमान । इत्यादकरीमायाअनेक । इहवेरकाजनहीसरयोएक । तोउद्यमदततबमां
नतेग । नुवलोकअसुरआयोअनंग । करदुकाटप्रद्युमनकुवार । कतसीसछेदसंबरकुचार
सुरकरीसुमनवरषाअकास । उनिवजेदेवइंधनिपकास । रतिपहादेहेइअतिरीतरूप । अरुदेव
बिवकियेअतअनूप । सोप्रदुमननगमारगसुनाय । उतरयोअतहउरमांफआय । दरुवाढेअं
गनमांफदेष । नरराजरमनिविसमयविसेष । समझतदेवप्रदुमनसरूप । अरुपीतवसनभूषन
अनूप । इहारुषमणिअंतरसोकआप । उनहिसंहारकीनोप्रताप । उनैनोनिष्टतिदसुधनपाय
सुतध्यांनकरयोअपनेसुनाय । रुषमणिवाच । दरसवनलगेकुचउथधार । वेदर्भीकीनोतब
विचार । सारंगधरप्रतिमातनसरूप । वेसीहीचितवनछबिअनूप । कहूंनयोनिष्टसुतबाल
काल । सोउसिवरहोतममचित्तसाल । उहजियतरयोकरूकरमजोग । सोदईवआनकी
नोसंजोग । अरुवामनुजाममकुरतआज । कछुसोचित्तकैकिम्यांनकाज । सुतधसोग
नमिजोइसनेह । हैवहेबालयहनिसंदेह । तदकमिककलिपमननयोसचेत । सुनसुमन
होतप्रीतहिसहेत । दीनोतबदरसनवासुदेव । अंतहउरआयेभ्रमभेव । अआपविस्वव्या
पकअनंत । कछुतदपिनबोलतरमाकंत । नारदउवा । उहांनारदयाहीसमयआय । सुनदर
सदयोअपनेसुभाय । नारदप्रसंगसबकहिनिदांन । प्रद्युमनरयोसंबरसुथान । ओरतिही
दयोउपदेसजाय । सोबातइहांसबहिसुनाय । कविरोवाचाकुरा । अरुअपनेनारदगयोस
बउतांतसुनाय । बालकजकोउहीलयो । यहाप्रदुम्नसोआय । इ । माहाराजहतहारुषमणी
लयोउनउरलाय । मातापुत्रसप्रेममिल । खातिकनयेसुनाय । उकानवसुदेवसुदेवकी । हित
उआदसुतहेत । कमलविलोकोउनको । सुदरवधुसमेत । परिणमारयोसंबरअसुर । मनमदर
षेसुरसंत । नरदरअनूकेग्रेहनव । उछपनयेअनंत ॥ इतिश्रीभागवतेदसमेस्कंधभाषा

कह्यसुवीर। इहउतरिरथतेआपधरिषडगकीनीधाप। इहरुकमपरजरअंगपरिजयाहीपपतंग। उ
नषडगवर्मश्वीन। कमकहतिलतिलकीन। सरुकमबेदतमांम। नयउपजबीलीनाम। जोगेसतुम
जगदीस। अप्रमेयअमरअधीस। रुषमणीवाच। इहभ्रातमेरोआज। नहीमारिबोजदुराज। इहांचित
रुषामणिओर। कह्युहसेकवरकिसोर। कविरोवाच। रुकमकीपाघउतार। दीयेमोरखंधमुरार। दुहा। उर
कंपतसूकतअधर। नहिआवतमुषचैन। नयोविलोकतत्राको। चितरुषमणीअचेन। १०। छंद। मुषमुछ
अर्धअरुअर्धमुंड। तिहमुंडकस्योविपरूपतुंड। सबगएनाजसंगसुनदसाथ। इहाबांध्योरुषमीकर
अनाथ। उहसमयइहाबलदेवआय। सोउबेदबंधदीनोछुडाय। बलदेववाच। संकरषनकीनोसमाधा
न। दुषसुषकरमफलदेनिदांन। करीयेनसोकरुकमीश्रमांन। यहषत्रिकर्मडुरगमनिदांन। स्यामसुंद
रमुहरवदैसिध। उनहतेभ्रातन्हातहिभसिध। त्रियन्हमतेजअहंकारहेत। षलजांनतिहैसयांनषेत। य
हषत्रीधरमदारुननिदान। उनहमुहिदोषनांहिनश्रमांन। मनमोहकरैमांनुषमलीन। यहपैअनीत
मायाअधीनी। भ्रातिकेंद्वैतपतिस्नाव। सोत्रियाधरमनांदिनसुनाव। उतपन्नसोकतवचित्तआं
न। कैदेहअग्यानकरितासहांन। प्रियवचनसुनेजदिपिप्रबोध। तउकवररुषमछूटैनकोध। रुकम
यकवरवाच। वसरोषककवरबोल्योविचार। हवगइप्रतंग्यानइहार। अरुदेहदसाइहनइआज। उरद
हतइतेउपजेअकाज। कविरोवाच। रिणजीतकह्यजदुवंसराज। सबकुसलसंगसेन्यासमाज। रि
णषेतमांहिरुकमीकुवार। इहांनगरवसायोअतिउदार। भोजकटदयोतिहनगरनाम। धनवधं
जयासुषधामधांम। सुषवसोतहारुकमीनरेस। उनकस्योनकुदनपुरप्रवेस। दुहा। हठकीनोरु
षमणिहरण। जीतसबैराजेस। कस्यपधरिद्वारिका। सोसुनसुगननरेस। ११। हितयुतकीनोब्याह
जहां। वंसजयाविवहार। वनयहयहद्वारावती। रचनामंगलचार। १२। रुकमनहरिजीतिजुरिन
घातगहनसुउनीत। मिलसुषतीन्हलोकमहगावतउछबगीत। १३। इतिश्रीभागवतेमहापुराणे
सुकमारगेदसमेस्कंधानुसारेरुषमणीविवाहचौपनमोध्याय। ५४। कवतछपै। अषिलइसकोअं
स। मदनजिहनांमप्रमहाबल। नियनपषकोउनांहि। दुगमचतुरंगदल। विषमपकुपधनुबांन। महा
मुरवीमिलमधुकर। कृततत्यापित्रयलोकविजय। चितविकलचराचर। करिकपटआयतपन
गकहि। सतुभावसाध्योसभो। सोईकामदेवनरहरसकवि। नवदहमंगलनमस्मनो। १। दुहा। काम
जस्योहरक्रोधकर। अंगीन्हयोअनंग। कलपतरवीतेकेइक। भयेएकत्रसबअंग। १। कह्यदेवइस्रा
करीमायादेविप्रमांन। कारनजोतिमनोजकी। उरमहप्रगटीआंन। २। नावीवसरुषमनगरभ
उपज्योअंसअनंग। प्रद्युमननामापरम। अतिप्रियसुदरअंग। ३। कृतउछबवसुदेवकुलग्र
हयहमंगनद्वांन। जातकरमकीनेजथा। दीनेविप्रनदांन। ४। आद्यविरोधसुसुरअसुर। संबरदे
त्यसंभार। हरयोबालदसदिवसमहि। दयोउदधसोमार। ५। छंद। इहबालगिरयोउहामबआं
न। परमबसुपेजालहिश्रमांन। कालतरआगेजस्योकांम। वनितारवैसहेतिनामातासवांम। पुनि
आगेतिनकेउजनमपाय। इहाजनत्रियाइकन्नइआय। निहचैसुमायावतीनांम। कतनिपनसु
भोजनकारकांम। संबरकैसोपेपरुसकार। सबनांतकरेभोजनसुधार। वहमीनसमप्योकीर
आंन। इनिसंबरदीनोदासपांन। मिलतहाविदास्योउदरमछ। प्रद्युमननिकस्योतहांप्रतछि। ज
बमायावतीअउतजांन। उहदयाजुक्तदियेबालआंन। इहकरेबालरछाअनेक। उहांत
रहूआयोसमैयेक। मुनिकीनोमायावतीमंत्र। तहांसबैवतायएहमंत्र। नारदवाच। यहबालक

बवंतधसा | कृसनजुतसुताविदा बकीनी | दिभदायजेउदमिणदीनी | इति जाबवंती विवाह | बादस
दिवसरहेमुषकिदर घनआलसवसगएआपघर | दिवकीवा | इनहिदेवकीबूझनआई | कहो
कहांहैकवरकनाई | जादववाच | इनतबसमाचारकहिऐसे | पेहवकृसनविवरमहपेसे | सामही
किहरामाहिसिधाए | अबलोफिरनबाहिरआए | इहांसबैहाकलउचारत | तेइसत्राजितहीधिकार
त | अबवसुदेवदेवकीआतुर | स्यामकुसलहितआधावतहैसुर | देवीनामचंडकाणादिन | इनतता
कहकियेनकृपन | एदेवीमोहनजबऐहै | हमदितसतुमपूजचढेहै | वीसअष्टदिनतहांवितीते
जुधकीडातबमोहनजीते | ईहकिदरतैमोहनआए | पेतेइसंगीतहानपाए | लषिअंसडुलहनसंग
लीने | कृसनप्रवेसद्वारकाकीने | कविरोवाच | उहमनिलेमोहनघरआए | वाजेमंगलकलसवंदा
ए | उग्रसेनराजापैआउन | मनिसोलीनीआयेमोहन | बैठेजादवसभाबनाए | यहासहजसत्राजि
तआए | कृसनदेवजोमनिकोकारन | नृपजुतवरनोकलेनिवारन | प्रगटसबनकरकृसनदयाप
र | सत्राजितहिदएमणिसुदर | अपनोमिथ्याकलंकनसायो | चहूजदुनाथपरमजसपायो | सत्रा
जिततहापस्योषिसानो | अतिलज्याउपजेअकुलानो | यहाआतुरअपनेघरआयो | उनसबसो
मिलमंत्रउपायो | सत्राजितवा | कृसनअपराधहरनोकीजे | जोकिस्याममणिकृसनहीदीजे | कविरोवाच
भावसरूपसहितसतभामा | सामहिकरीसमिरपतस्यामा | जथाविवाहवेदविधसंजुत | करेसबै
जोमंगलकुलकृत | कृसनदिनुक्तजथाहितकीनी | दिभसुमणिदायजेदीनी | दुहा | सतनामाकोपा
इसुष | पूरनप्रेमप्रसंग | नरहरलषजुतअबवनियत | रलोजथारसरंग | १ | कृसनवहैमणिदेतकर | हरन
नीतप्रमांनततछिनदीनीफेरतब | सत्रजितहिसुजान | २ | इति श्री दसमस्कंधे महापुराणे मुक्तमार्गेसत
भामाविवाहनोनाम अठवनमोध्यायः | अथदुहा | कीनोलावायहकपट | डरजोधनडरबोध | कारन
पंनवदाहकृत | सामलसोउनसोध | १ | घटघटव्यापकस्यामघन | त्रकालज्ञकरतार | इहानदपिक
रिबोउचित | विदतलोकविवहार | २ | चंदक्रिआवरी | इहांहस्तनाउरकुनुआए | सबहीनरामकृसनसु
षदाऐ | भीषमद्रोणविदुरगंधारी | मिलहत्ताकसबनमुरारी | द्वारावतीकृसनविनदेषीय | कृतब्रमाअक्रूर
वाकिय | इहांपरसपरदावउपायो | प्रगटविरोधसमयतहांपायो | कृतब्रमावाच | सतभामाभ्रातीस
त्राजित | हमहीदइहीमांनपरमहित | दोहितासीकृसनहिलेदीनी | कहुदमारीसंकनकीनी | बहरतास
अबकलहवधारो | मणिहीलेसत्राजितमारो | कविरोवाच | सतधनायनफेरपवायो | अरथरैणसोबल
करआयो | महानिसासत्राजितमार्‍यो | वीरधरमनहीचितविचार्‍यो | मनउपजीतिह बुधमलीनी | जोन
देतमनिबीजजुलीनी | रापतेलमहपिताकलेवर | अतिउपद्रीसतभामाआतुर | इहांहस्तनाउरसो
आई | सबकृसनसोवातसुनाइ | रामकृसनबैठेतबहीरथ | उन्यरोक्योद्वारावतिकोपंथ | इहाजादवस
तधनाआयो | आगमरामकृसनअकुलायो | सतधनावा | कृतब्रमासनेहजुकीनो | अबकोनयपड
योअधीनो | मैंतबहीसत्राजितमार्‍यो | नियततिहारोवयरनिकार्‍यो | अबतोरामकृसनदोउआए | सु
कोनरहैयहविनासहाए | कृतबरमावा | कृतब्रमाअक्रूरतासकरि | हैनदजुधसमांनहमहिहर
गिरिजरासिधजिनसोनाह्यो | नित्यदोदिनसतरलाग्यो | जगकरताहरताजगजांनो | वेदमसमनजुध
प्रमांनो | सातवरसबालवयसुंदर | राष्योलघुअंगुलीपरगिरवर | तिनकुदिष्टजगततिहवीजे | कल
हकरूतिनसुनदकीजै | कविरोवाच | सतधनायहमणिलेसुंदर | अकरूरहिदीनेकेआतुर | भय
करतबसतधनाभाग्यो | ग्रेहनेहतजमारगलाइयो | जबजुतअस्वगयोसवजोजन | तहागिरयोत
बसकृसघटीतन | यहावलकृसनद्वारिकाआए | उनिसतधनासुनेउठाए | लीलाराम कृसनसंगला

मं॰मुक्त॰प्रद्युमनसंबरदैतबधनोनाम पचावनमोध्याय ॥५५॥ छंद ॥ सतसनामा कोमादसुषद
निजादवप्रतिपाल ॥ हितजामवंतीपांनग्रह करिहैकृपककपाल ॥१॥ छंद पैधड़ी ॥ जादवनाम
सत्राजितजाको ॥ तरिणउपासक हैव्रततताको ॥ सेवामननतनक्रम करकीनी ॥ दिनकरतां हिमहाम
णिदीनी ॥ मनिजुश्रवतकनकमहानिरमल ॥ ताकेतेजप्रकासतनतल ॥ वहमिणलेसत्राजितआ
यो ॥ यदुअनावसबदिनसिरनायौ ॥ देवलमहराषीमिणसुंदर ॥ प्रतिदिनसेवैताहिनक्तपर ॥ सो
ब्रतआष्टभारमणिआवे ॥ पैसोइनितसत्राजितपावे ॥ अथभारसंष्या ॥ च्यारव्रहककरिचिरभ ॥ पं
चगुंजापणपिषिये ॥ पणसअष्टइकधरण ॥ धर्णजियकरषविसषिय ॥ करषभारपलकहिय ॥ पल
जुसततुलाप्रमानिय ॥ सततुलामिलविदित ॥ प्रगटइहभारभ्रमानिय ॥ करनआदराजाजुक
लि ॥ करनदयेतिहकीतकहि ॥ कहिगिणतीजथ्थानरहरसुकवि ॥ एकभारपरमाणइहैर ॥ छंद उअ
परा ॥ एकजुहीयहमिणइधकारी ॥ उरनषननयेसकलभयटारी ॥ अद्याविदसबअसुजनि
वारन ॥ समतकमणिजहांएहसकारन ॥ वासुदेववाच ॥ यहावसुदेवकसौइहअैसो ॥ जोजिहजे
नृपदारथजेसो ॥ सोमिणउग्रसेनकौदीजे ॥ कारिजनीतधरमयहकीजे ॥ मणिकेगरबनक्वनन
हीमांन्यो ॥ जथाअसुभआगमनहीजान्यो ॥ सत्राजितकौअनुजसहोदर ॥ सुपेप्र[illegible]ननामयह
सुंदर ॥ लषयकहिवसतायमिणलीनी ॥ कंठबांधआभूषणकीनी ॥ असआरोहतहरषउपायो ॥
आषेटकसघनवनआयो ॥ पकरिकिंधतांहिधरनपंभासौ ॥ मिलम्रघराजप्रसेनहिमास्यो ॥ मार
याहिलेचलोसिंघमिन ॥ तहांकंठसोपैबांधीतिन ॥ आयमिल्यौतीहरीबअवानक ॥ नइसिंघस
नेटवयांनक ॥ जामवंतजोधाजरजीरन ॥ इहांसिंघसोइमां[illegible]रचियोइन ॥ मणिलेपेवीमहाविव
रमहि ॥ जांबवंतको येहकुतोजिह ॥ जाबवंतसुतकेहितजाइ ॥ लेसोइपलनेमिणलटकाइ ॥ इ
हासत्राजितदेवलआयो ॥ पेमिणसहतप्रसेननपायो ॥ असहमानमननावधस्यौयन ॥ मारिप्रसे
नकृष्णलीनीमिन ॥ नगरमाऊयहवातभ्रमांनी ॥ जहांतहांवसुधासबहीजांनी ॥ कृष्णविचारतबै
यहकीनो ॥ उससहदोषकूवोमोहिदीनो ॥ गयौचितचिंतावढिगाढी ॥ कृष्णतहापदपथतकाढी ॥ जाद
वबुधसंगलीनिजन ॥ तहांजउनाथसुआयतत्तछिन ॥ इहाप्रसेनम्रतकनपायो ॥ सबदिनकेमन
संभ्रमबायो ॥ चरनचिनलेसैवेलेसचेतन ॥ तहांसिंघकीम्रतकलषौतन ॥ पुनपदअंकरीछकेपा
ये ॥ अबसबद्वारविवरकेआये ॥ उरगमतहांविलोक्योकिंदर ॥ तामेषोजनिहारनिरंतर ॥ गतिपर
वेसकस्योतिहगिरधर ॥ हवजादवजनराषेबाहिर ॥ आपकृष्णतहांधसेअकेले ॥ षवषेलअैसोत
बषेलै ॥ पलनाबाधीसोमणिपाई ॥ काढिलइसोकवरकन्हाइ ॥ प्रतिमादेषीत्रियाउकारी ॥ नयो
तहाहारवनारी ॥ इहछिनजाबवंतसोइआयो ॥ वढ्योविरोधक्रोधमनछायो ॥ जाहनाथप्रभाव
नजांन्यो ॥ इहकौप्राकृतउरषप्रमान्यो ॥ हरुमिलजुधकियोअतिदारुन ॥ घावदावतहांनयेसिथ
लघन ॥ परसिमानजथापलउपर ॥ सतवोकवासुरत्तोसमहर ॥ कृष्णरीबमुष्टाहतकीनो ॥ वेग
योसिथलदेहवलहीनो ॥ जामवंतनारायणजाने ॥ पूरबवचनसतपरमाने ॥ देहधरीजाकार
नजाने ॥ प्रतिमाप्ररनउरषप्रमाने ॥ जाबवंतवाच ॥ कृष्णदेवकरताकेकरता ॥ होतुममहाकालकेह
रता ॥ रामहोयरावनसोमारे ॥ अवतुमकृष्णदेवअवितारे ॥ जबमेजुधकरतनहीधायो ॥ अबतुम
मोहीप्ररअधायो ॥ कविरोवा ॥ दीनभयोपरिकरिमादीनी ॥ कमनवचनसुवंदनकीनी ॥ नयेवि
घातकयावनयंकर ॥ कृष्णदेवप्रसेजवनिजकर ॥ कृष्णहितीहाथवाकेकिन्या ॥ धारेसोधजा

सुषपाए सबकुंतीब्रितांतसुनाए। कुंतावाच। प्रभुजबही अक्रूरपठायो। भयोकुसलतबतेमनभा
यो। तुमसमदिष्टसबनकेस्वांमी। जगजडजंगमअंतरजामी। दुरलभजोइनिकोजोदरसन। पेषु
मद्योप्रतिक्षसुपावन। होतसुरात्रतउदयहमारे। प्रभुयहगेहआपपउधारे। कृष्णकृपाओरैञ्च
बकीजै। दिनकबुरहिजैदरसनदीजै। कविरोवाच। बरषएककोरहनविचारयो। सबदिनकोअ
भिलाषसवारयो। एकसमयगिरधारीअरजुन। प्रभुनिकसेवनक्रीडापावन। मोहनरथहाकरतम
नमानें। पारथबेठेमधधमांने। निजगांजीवधनुषकरलीनो। नियतकसेतुनीरनवीनो। वनवनघनअ
षेटविहारे। उग्रजंतुदेषेसोमारे। मघचित्रकवनमहिषमनोहर। षडगीसुसकमृघाधपस्कर। जलन
भ्चारगनैकोजेते। तहांनयेआषेटकतेते। प्रबलदिरघजेतिकबुपाए। सुदरवदनघनदेषसुहाए। दि
षतहायककिंन्नादेषी। विहततपस्याकरतविसेषी। पुनअरजनतहांकृष्णपठायो। भेदलेहुयाको
मनभायो। ध्यांनकरतइहीदमधिन्ना। कोधूसहांकाकीहैकिंन्ना। अबअरजुनयाकेढिगआयो। पूछ
तभेदसमयसुषपायो। अर्जुनवाच। इहअरजुनपूछीगतिऐसी। कोतुमआदिकिनकाकेसी। यहांक
हीसुरकवनअराधत। सोइहहेतयतीहवसाधत। कन्याओवाच। पारथहौसूरजकीपुत्री। पुनका
लइीनामपवत्री। कृष्णचरनहिततपस्याकीजत। छिनछिनकालसुदुरलभबीजत। कृष्णचरनको
निश्चयकीनो। लोकपसिधयहैव्रतलीनो। इहांजमनातटवसतसुहाया। प्रभुदरसनकीकरतप्रतिज्ञा।
कविरोवाच। इहफिरपाथकृष्णपेआयो। सबकिन्नाकोमरमसुनायो। नियतकृष्णसौकरधरलीनी।
किन्नारथआरोहितकीनी। इदप्रहस्तताकहलेआए। धरमसुवनकहमरमसुनाए। विश्वकरमा
किरूविवक्षवतायो। वासुदेवयकनगरवसायो। कन्याराषीतहासकारन। अद्भुतरच्याादीनउधा
रन। पांडवप्रसंग। सकृविपनइकभूतलसुंदर। उदभदिषांनअषिलतिहअंतर। विहतनांमताकोषं
डीवन। नएमनोरथताकहनस्पन। मयप्रसंग। प्रथमजुगंतरसुनकृपाकारा। असुरहिरणकसप
अवितारा। दैतभयोआषंडलदारुन। करिसिश्वतिहनइसकारन। कुरमजुक्ततिहदिगविजेकी
नी। निश्चररापेदिगननवीनी। मयनामायकदैतमहाबल। विश्वकरमपदद्योविसंभल। षंडूवन
मेवसेसुनिश्चर। सहितकुटंबनजेसुषसुंदर। प्रनियकदिनषंडुवनपावन। जड्यौअनलसोल
ह्योजरावन। याहीसमयसघनमिलआए। बूंदमुसलजलअनलबुझाए। ज्वालानलउद्यमकि
येजेते। तिहवनदहनकुरतनहीतेते। करकरथकोमनोरथमंगल। बल्योषंडीवनतनहिनवले
बल। ईद्रप्रहस्तजबकृतनुकआयो। पारथजाच्योसमयसुपायो। धनुतुनीरपाथजबधारे। उ
नतिहवैरनरथबैगरे। महाविपनपतकोमनमान्यो। जाचन्याहितसुपैनजान्यो। इहअरजुन
षांडीवंबनआयो। सरपिजरवनसीसवनायो। जितततिदुसहदावानलजाड्यो। लगीउधाअति
ज्वालनलाग्यो। ह्वैगयौतहांईद्रउद्यमहत। सघननीरबरषेघनसंजुत। दाहहोतवनमाऊदुषा
रे। उग्मतहांमयकेपुत्रउकारे। आरतवचनसुनेजबअरजुन। जरतराषलीनेआसुरजन।
बहिजिकस्योचरूओरदावन। मिटीउधाअभिलाषफलेमन। भयौसंतुष्टअगनमनभा
यो। विहतपाथसुहेतवढायो। अषयनिषंगदिव्यधनुदीने। निर्भयकवचनैसुपरमनवीने।
सेतवाजजुतरथअतिसुंदर। पार्थहिदीनिअनलबेमपर। इहांजवमयषंडुवनआयो।
उनपरवारकुसलसोपायो। अरजुनभयोतुष्टसोआसुर। सभादिब्यदीनीअतिसुदर। भ
वजलथलभ्रमपातभारभ्रम। कारनबकृतविलोकतक्रमक्रम। ऐसबनैअर्जनयहआयो। भ

कृष्ण:
२०५

९॥ परम पवित्र वीर रस पागे ॥ उठ जबै माधव रथ देष्यो ॥ बिकल बाहु रथ गयो बिसेष्यो ॥ दिव्य सुरथ बल
देव दि दीनो ॥ कृष्ण उतर तिह ता रो कीनो ॥ चतुभुज वेद हसी वत पायो ॥ जग करता करता क जगायो ॥ धर
कर षड्ग सामदी धायो ॥ चक्रपाण तब चक्र चलायो ॥ सिर काट्यो अरु वस्त्र संभारे ॥ नहीं न मणि बिसेस बि
चारे ॥ श्री कृष्ण वाच ॥ कह्यौ संकरषन कुत कन्हाई ॥ बृसण हतौ पै मणि न पाई ॥ कबिरो वाच ॥ तहां बलभद्
कषाय व धारयो ॥ मणि या लै सतधन्वा मारयो ॥ कृष्ण कियो हम सो बल कोई ॥ सतिन्ना मा मणि दे है सोई ॥ वाके पि
तु कहै मणि आही ॥ ता तै लै मणि दे है ताही ॥ यहा बलक स्यौ रोष जुत अंतर ॥ रिणजय न इक कृष्ण जा कू घर ॥
हम हि विदेह मिलेन पत्रै है ॥ है हम ईत क ब दिन रहि है ॥ इहा उतर मिथुला पुर आए ॥ उनि विदेह मिले
सुष पाए ॥ संकरषन वहा रहे सुहाए ॥ याही थल दुरजोधन आए ॥ तहां दक्कु न मिल नई मित्राइ ॥ सो
मिल षेलत संग सषाई ॥ गदाजुध विद्या अविगाही ॥ पेन्द्र पजनक यने पठवाही ॥ सी बिदुर यो धन सक
रषन ॥ अनग राज तै विद्या आउन ॥ सतधन्वा को मारि महारिन ॥ मिले आन सतन्नामा मीहन ॥ श्री कृष्ण
वाच ॥ तेरे पित तहत हतौ निहंता ॥ ता तैन मन काज सब चिंता ॥ ब्रजक रे षल मूल मार षिन ॥ मै तुहां पाई इन्नम
हा मिन ॥ सतिन्नामा वाच ॥ कृष्ण दिसत न्नामा रिस कीनी ॥ मनतुम सही अग्य जकू दीनी ॥ नाथ हम हि सक
पट वनाए ॥ षाली हाथ हम हि दे षाए ॥ कृष्ण सुसर को मृतक कत कीनो ॥ दाहक जेवर को ले दीनो ॥ कवि
रो वाच ॥ हसो न्नबै सतधन्वा रिण हरि ॥ कृतब माख्य करू रतास करि ॥ नयते बाहु द्वारिका भाजे ॥ कासी ग
ये जीव के काजे ॥ सो मणि पूजत षात दिन आवै ॥ अष्ट भार कंचन नित आवै ॥ सब षरचे अकरूर सुहा
यो ॥ याते नाम दानपति पायो ॥ ज ब अकरूर यहां है जाम्यो ॥ उन सब हि न सोक पट वमान्यो ॥ जाइ बात
करत जो जन जन ॥ मणि दे का दिदयो वह मोहन ॥ यहा घन साम सोच किये ऐसो ॥ दइउ पज्यो अपवाद अ
नेसो ॥ माया ऐसी पेरी मोहन ॥ उसद हो त अरिष्ट सो दिन दिन ॥ देवस कारी रक अति दारुन ॥ उपजे को उ
क मानसिक कारुन ॥ उग्रसेन की सभा एक दिन ॥ जादव स बैठ्ठ मिल पुरजन ॥ उन दिक्क कृष्ण ज ब स्ब्यो ऐ
सो ॥ कारन असुन होइ है के सो ॥ बुधजन वाच ॥ पुनत हां बोले इध उरतन ॥ अनावृष्ट कासी नर अस
हन ॥ तनु कासी ऐसी सुध पाइ ॥ लीने सुफलक सुवन बुलाइ ॥ पुत्री अपनी परम प्रीत पुन ॥ नाम गाधिन
सरब सुलंबन ॥ सुफलक सुत को ब्याही सुदर ॥ कछुक काल वसहां हेतकर ॥ घर घर आनद बरषे अ
ति घन ॥ डर नष गये अरिष्ट उसद दिन ॥ सुफलक को सुत साधु सुनाई ॥ लीजै यहां अकरूर बुलाइ ॥ क
विरो वा ॥ उन सब हिन मिल दूत पठायो ॥ इहां अकरूर द्वारिका आयो ॥ श्री कृष्ण वाच ॥ दुहा ॥ वासुदे
व बोले विहस ॥ अहो दानपत आज ॥ सब के तुम आवत सरे ॥ कारज टरे अकाज ॥ ३ ॥ सतधन्वा तब कह
समझ ॥ मनि दीनी कर मोह ॥ सब के तिन कारन सरुह ॥ भिन भिन वाढत बोह ॥ ४ ॥ अब अक्रूर सुमत
इह ॥ दिषल सब के देह ॥ मिथ्या उपज्यो है जु मन ॥ सो नासे संदेह ॥ ५ ॥ कविरो वाच ॥ महा समंतक नाम
मिण ॥ पत रवि जोत प्रकास ॥ दीनी काढ सु दानपत ॥ सबन भयो विस्वास ॥ ६ ॥ न्नम अरघ संभावना पै
मणि दीय श्रमांन ॥ कृष्ण कह्यौ तिह वाइ गट ॥ नासे अरथ निदांन ॥ ७ ॥ यह अख्यान जु हेत युत ॥ पढै
सुनै सुष पाय ॥ ताको मिटे कलेस तब ॥ सो निरमूलन साय ॥ ८ ॥ कारन लीला कृष्ण की ॥ अद्भुत अग
म अपार ॥ कहीज यान रहरसु कवि ॥ अपनी बुध अनुसार ॥ ९ ॥ इति श्री भागवते दसमस्कंध अ
नुसारि महापुराणे मुक्त मार्ग सतधन्वा बधमणि प्रगटनो नाम सतावनमो ध्याय ॥ ५७ ॥ सोरठा
एक समय आषलेस ॥ माहान क्रक पंडव मिलन ॥ द्वारावती नरेस ॥ इंद्रप्रस्त आए अबै ॥ १ ॥ चंद्रव
अपरी ॥ इहां पांडव सुत सन मुष आए ॥ नेह प्रसु हित त्याम न नाए ॥ जुधष्टादिक जादव जेते
तहां मिले जो ... पृष्ठी कृष्ण कुसल

रदासेनबिरंचितकलंदीआदपंचकिंन्माबिवाहा॥अथावनमोध्यायाय५६॥कबियोवाच॥दुहरा॥ कीड
यानकईइंकौ मणिपरबततयहनाम बिबिधजनाअयसघनबन सोनासुषदबिस्रांम॥२॥**छंदप॥**नर
कासुरनामानिसाचार अतसयअनीतअरुबलअपार ईंद्रसोलस्योयहगोरआंन उनअसुरबिजे
पायोप्रमांन हरलीनेकुंडलबनहेत सुरपतिकेमणिपरबतसमेत इहांभयोपराजयईंद्रआप
सोआयोद्वारावतिसुदाय सतिनामाकेतिहसमयस्यांम मिलदंपतिबैठेधरमधांम तिहसमयईंद्र
आयोसमीत प्रभुकस्योजथाआदरसप्रीत बरतांतकस्योबासववनाय उदभवलउसरसोअज
यपाय सुनतनयेगरुड़आरूढस्याम नामनिसंगलीनीसतनांम पुरअसुरप्रागजोतिषप्रसिध
घनस्यांमआयतहासमरसिध॥**अथकोटबरननं॥** गिरअस्त्रसलिलमंगलसमूल करपवनपायजो
ध्यानकूल इहभांतसहसआवरणएह रिधदूरकोटआगमअरेह रिणकोटबंदरिणपैजरोप यहां
कृष्णदेवआयेसकोप यहगिरदुरंगगदाहतकर गोबिंदनिस्सेषजंत्रबानननिकंद आवेनअग्नि
धुजकोटअनलसोभोजयंत उनिमरुतबिदारयोचक्रमार दुरगमनपोरबिसखबिदार प्राकारगदा
हरचक्रपांन अपिल्हेसुरलागेनिकटआंन आकासअविनअंतरअमांन नररलोसहस्तल
नयांन मुरनामदैतईकमुखमूल सिरपंचतासआयुधनसूल निकसोसोजलतेनिसाचार उन
कस्योसूलगरुडहिप्रहार मुषपावककेसोमारमार परिसह्योतासधिरस्वरअपार सिरचक्र
छेदकीनेसधीर रनहतोकृष्णसोमहावीर सुतवयरबलीपितुकोसंभार मुहिचढ्योकृष्णति
हलतोमार निश्चरसेनापतसप्तनाम सोजुस्योमारलीनोसग्रांम सेनासमूहचतुरंगसंग य
हांनिकस्योनरकासुरअभंग छिबसमहरदेबेकृष्णबीर सतधनीसक्तवाहीसधीर जाजुल
पन्नयेसबसेनजुध करिअस्त्रसस्त्रप्रहारक्रुध प्रभुबानचलाएजबअखंड खंडरथकीनो
खंडखंड नरकासुरगजआरूढनिसंक कृष्णसोभिरयोबलआनकंक कृष्णहितसूलवा
ह्योकराल सोविसखामारछेद्योविसाल बसुदेवकबरदीयेचंद्रबांण नरकासुरसिरकाट्योनि
दान फुनिवेनरकासुरघरहायहाय सुरउदभवरखउधनीवजाय॥**दुहरा॥** नागसुरासुरजच्छ
नरकिनरगंध्रबकेर किंन्माआनीबलकरषघरमहराखीघेर॥२॥ सतउपसोलैसहंस्र एकहीए
कअनूप पलपलवाढतगुनवतिब वतिमालछिनरूप॥३॥**छंदप॥** ईंद्रादिअमररिषमिलेआंन
बंदअस्तुतीजयजयतवान ईंद्रस्जुस्योआगेअनीत जयपायोनरकासुरअजीत ईंद्रकेजथा
रूपनअसेष करिबिजयबीनलीनेअनेक उनआनभूखनतेइहदपाय बंभितभोजयदुधनीवजा
य उपज्योजुभूम्यकेगरभआय भनिभोमासुरजिहनामपाय नरकासुरताकोदुतियनांम कि
रूकारनकेधोकहुकांम इहहेतजन्मधरिदेहआय जयजुकरीबिनतीसुनाय नरकासुरसु
तभगदंतनाम सोपथ्वीमेल्योसरनस्यांम प्रभुपेरनलगायाजुबहुनीत भगदंतनामपोतोसनी
त प्रभुसीसतासकरिथरिप्रवीन दीननकेबंधवभयदीन अविल्हेसतबेरिणवासआय
संपतसुषदेषेतिहसुनाय सतएकसहंस्रअबोडससरूप अविलोकतहांकिंन्माअनूप सुरअ
सुरनागकिंन्मासुदेस बयलछनगुनसीमाविसेस बलकरषजुआनीप्रबलबाल बितशुक्ल
नजांनीकालचाल बिधपांनग्रहनकिंन्माबिचार सोकरतरह्योउद्यमकवार कीतकरमउदित।
भैयहकराल लैगयोवीरवहीऊपटकाल अविलोकीदेवीछबिबअनंत किंन्मासोउमानोकृष्णकंत
सिवकाअरोहकरिकरिअसेष वनितासबपठइयहविसेष सुनचतुरदंतअरुसेतअंग मदमतप

योदर्षमाधवमननायो। अर्जुनसनानृपदिअविधारी। देअनुतसोसबननिहारी। कद्ध्वारिका
आयेजयकर। संगलीनेकालंदीसुदर। दिवलग्नसुन्नविष नदीने। कालंदीसूव्याहजुकीने। क्रम
वसुदेवदेवकीकीने। नियतन्नयेत्रबाहनवीने। ॥दप॥ इकनगरअवंतीकौनरिद्र। विहततिहनामबि
दानुबिद। तिहबहिनमित्रविंदाविनीत। पिनइसयानीगुनउनीत। सबश्रिनृपतितिहकुलसंभार
आइकोकृष्णसौकियेविवार। विदानुबिदकौमहामीत। आगेहीउरजोधनअनीत। सनमंधकृष्णसै
तिहअसाध। वातिवनायषलकस्यौबाध। उनिस्यौसुयंबरसमयपाय। अन्नेकनृपतिहमिलेआ
य। वनुकृष्णकस्यौतिहउरववेस। निसंकसनाबैवेनरेस। वामासुविलोकितअषलवीर। धरिबा
हकृष्णलेचलेधीर। नृपनकौकीनोमानभंग। यहाकृष्णयेहआयेअभंग। सुनलगन शुबमिलकु
लसमाज। कृतवासुदेवतिहव्याहकाज। एतीमंत्रबंदाविवाहनं। अवधेसनग्रजिततासनाम। धन
विउलसविलसैधराधाम। उत्रीतिहसत्यानांमपाय। सुंदरसुन्नलछनगुनसुनाय। नृपलयोनग
जितव्रतनिदान। कोउसत्तवृषननाथेसुजांन। वसकरेवृषनगदिएकवार। सोउवरैकुवरसत्या
सुदार। पनकस्योसुयंबरजगवसिध। सबमिलेआननृपसमरसिध। हगरहेनृपतसबमलेहाथ।
नादिन समृथकोउवृषननाथ। विधसुनीजबैयहवासुदेव। यहाआयअजोध्याउरअजेव। सु
नवासुदेवआगमनरेस। विधजुक्तकरतइज्जाविसेस। कृष्णनहिविलोकसोनृपकवार। वरवंछा
कीनीचितविचार। नृपकसोनग्रजितयहनिदांन। वनुपरमउरषवेदनवमांन। पनकस्योवृथ
ममेयहश्रमांन। देषनउत्रीकुलबलनिदांन। सतवृषनयहेजोएकसंग। एकहीवारनाथेअभं
ग। किन्यायहताकोतातकाल। वरमालकंठमेलेविसाल। वनुबाध्यपीतपटकटउनीत। अषि
ल्हेसउरेअंतरअनीत। धरिवृषनसत्तनसत्तधार। मायाअनंतनाथेमुरार। कन्यावरमालाह
रषकीन। पहुरायवासुदेवहिवीन। रसरीतवेदविधअविधराज। करिसत्याकवरीव्याहकाज।
दायजोनृपतकमयुक्तदीन। सतसहंश्रसवबीधेनसीन। दीनीधवीनत्रयसहंश्रदास। वनिवस्त्र
कनकनृषनविलास। दसअयुतदियेसुनदासदान। परवीतजांनचितहितवमांन। नवसहंश्र
तरुनमदमत्तनाग। वनतिनतेनवगुनरथविभाग। वलतिनतेसगुनदयवियार। चलतिनतै
सगुनचरनचार। वरनीवरराजितरथारोह। सबअंगअंगअंगरतिमदनसोह। निस्सेषविसाने
अतिनरेस। उनआंनपंथरोकेववेस। यहांनयौजुध्यतिनसोअपार। सबगयेनाजकेउनएसंधा
र। करिसमरविजयपरिउष्टदाह। आएविमाहसत्ताउबाह। दुहा। केकयदेसनरेसकी उत्रीपरम
अनूप। नद्रानामसुन्नामनी श्रवनगुनतनरूप। १। किंनादीनीकृष्णकहि वांछितनयोविवाह। क
मजुतिआयेद्वारिका कुयघरघरउबाह। २। इतिभद्राविवाह॥ मददेसकौमहिपती विद्याविनव
विनीत। लछनश्रवनलछमना उत्रीतासउनीत। ३। कस्यौसुयंबरकिंनका मद्देसुरहितमांन। दे
सदेसकेनृपतदल यहांमिलेसबआंन। ४। एकाकीरथवदियहां आएमद्दउदार। हवसबवि
वकिन्याहरन कीनोकृष्णकुवार। ५। किंन्याआनीसुद्वारिका यहांजुनयेउबाह। कृष्णलिछमना
सोकस्यौ विधराकसीविवाह। ६। अतिउरंतमायाअतुल जोनिगमागमजांन। आवेजसुरासुर
किअगम नरहरप्रभुनिदान। एतीलछमनाविमाह। रुषमणिजामवतीरमणि सतन्नामासविसेष
कालंदीवृंदाकवरि सत्यासत्पअसेष। ७। मिलनद्राअरुलिछमना लछनगुनजुतलाज पटरांणी
आगेप्रगट कृष्णदेवहितकाज। ८। [illegible]बारवनर

सुरही अग्रमसुनाय ।३। इति श्री नां० दं० भाषाबारवनरहरदासेन विरचित । कथग्रहरुषमनी
प्रतितर्ककनैनामसा० मोध्याय ।द०। कविरोवाच । दुहा । गिनी आवपट रागनी । वयगुन रूपबखा
न । सौरहसहंसरु एकसौ । भुनएवरी श्रमान ।१। एक एक त्रियके उदर । दस दस भुत्र सदेस । यहक्रमसं
ततको उदय । जदपिहै जोगेस ।२। ग्रेहस्थित गजगामनी । एतीजदपि अनूप । मोहनकी जीतीमन
हि । सोनसमर्थसरूप ।३। अथ रुषमनी पुत्रप्रसंग । छंद प । प्रद्युमन चकोविद्या प्रनीत । पुनि उति
यचारु दष्मक विनीत । कुच्चारु देस अरु चारु देह । पंचमसुचारु अजु तत्र रेह । हैचारु गुर
जअरु चंद्रचार । तहां चारुचंद्र सुविचारु चार । यह क्रम जुरुषमनी पुत्र एह । दसजांन ऊक
विजननिसंदेह । जामवती पुत्रसंष्या । इक जनयो साव कुजो विचित्र । पुरुजीत तत्र तिय सत विध्वत्र
कहि विजयहंसि जित विक्रंकेत । वसुमान द्रवणक्षित्र रिणविजेत । सतनामा पुत्रनाम । गौप्र
थम जांन दूजो सुजांन । सुरजांन भगरस्चौथो प्रजान । मांनकुसुत पंचम जांन मांन । ननु १९२
इक्रमवंद जांन । नवम मजा रतिजांन रूप । श्रीजांन दसम प्रतिमा सरूप । इहक्रम सत्यनामा
पुत्र आंन । पिंछित कवजानत सब प्रमांन । कालंदी पुत्र । जयो चंद जान अरु सील रूप । यहवेग
वांन चित्रग अनूप । हक संक अमाव सुकुंतवीर । सुत कालंदी के दससधीर । सत्या पुत्रनाम ।
पहिलो प्रघोष गतिगात्रचांन । बलप्रबल सिंघ उरध गसुजांन । महासक्त उरजस हिसक्रमां
न । अपराजित दसमो बलप्रवांन । सुत सत्याके ए ते सुजांन । प्रतिमात्र रूप विद्या प्रमांन । अथ न
ग्ना पुत्रनाम । वृषअनल अरक अलवंस धीर । धुर धमलनाद वरूर सधीर । वनसिंघ वहिन पुन
पवननाम । पुनक्रम युतनग्ना सुत प्रमांन । लिछमना पुत्रनाम । सुतनौ सग्राम जित वृहदसेन
सयामसूर श्रहरन सुषेन । अरिजीत सुचंद्रय धामआय । अरुजात दसम सातिक सुनाय । लछ
मना पुत्र एते सुलछ । प्रतिमा प्रनाव हूरन प्रतछि । उतसो रसहंसमे मुख्य एक । रोहिनी नाम ववनि
ता विवेक । सबहिन के दस दस जए सुजांन । इह भांति पुत्र संतत प्रमांन । कुवे एक लाष इक सव
हजार । कति असीता सउपरकुवार । प्रद्युमन कुवर रुषमनी सुत । अनुरुध जनयो ताके अचूत
अथ अनुरुध विवाह । जावन्माकी नीचावत जांन । मन आन रुषमनी हेत मांन । रुकमीकी पुत्री सुज
सरूप । अनुरुध हिदीनी अति अनूप । सनमंध निकट जद्यपी समांन । पुनतथा चवनकीनो प्रमांन
रनिकूमन गरकीनो रसाल । वननाम भोजकट बिबविसाल । विधजुक्त रोचिना को विषाह । आरं
जरुकम एति उछाह । विवहार वंसकीने विसेष । वारिका लग्न प्रिथियो सुदेष । अनुरुध वरात सा
जे अनूप । सुवमिले सु जादव नृप नृप । मिलरामकृष्ण रुषमनि समेत । वन कवर प्रद्युमन रि
न विजेत । इहांजांन जबहि तोरनजुआय । सब जांत करी इजा सुनाय । हितयुक्त भयो किमा
विवाह । अरु कहूंसे घरघर उछा । कालिंगराज आयो प्रकास । जुतसंग दिदिस कालिंग जास स
मदंतवक्र राजा असाध्य । उनिकरी चैंदि मिल सब उपाध्य । मनकपटरुकमसो कसो मंत्र
तिन सर्व वताये हृदय तंत्र । दंतवक्रवाच । यहकहिय तस करषनअनंत । डरविग्रहतयाक
हउरंत । मिलकर कुअक्ष क्रीडा कुवार । सब इनकेजीते सोजसार । कविरोवाच । बलदेव रु
कमबल करविदांन । मिलकरत इतलीला समांन । सतद्रव्य दाव कीने समंत । उन सहंस अ
युत रूपक प्रजंत । तहांरुकमी जीतो दावतीन । कालिंगराज हसतर्क कीन । सरस करषन मन
हकषाय लषिकोटदाव दीनो लगाय । जीतिसु दाव बलचंद जांन । गरुकमीजबही कपटवांन । रुक

वचौसवमतंग। अथपारजातआगमन। इहांकृष्णपधारेइंद्रलोक। आइदनदईवहिदियोओक। क
हनारदआगेकिहकाल। सुनउदयपारजानकविसाल। उजवरईहकृष्णहिआंनदीन। पवनुरुषम
लिग्रहबैठेप्रवीन। नारदकोपठियोउजनाथ। हितपुहप नेयोरुषमणिहाथ। सोदेषसतनामासुजा
न। मोहनसोकीनीतबैमांन। सतनामाबा। कोमनीउनयअरुपुहपएक। विसेसुरज्ञाताघमति
वेक। श्रीकृष्णबाच। माधवकहत्रियसौवचनमांन। याकोतोदिदेहूवहांआंन। कविरोवाचा। नरदेह
इदउरआयनाथ। सुंदरसतनामाकुतीसाथ। दुमपारजाततिहगेरदेष। वनितासुधकीनोवरवि
सेष। सोवृषव्लेलेहरीसधीर। विरहगेसपिष्ट धरिमहावीर। कृतपंथरोधमितृअमरकोध। जाजुलि
कृष्णसौंनयोजुध। दुहा। महासुरनकेमाणमलि। दुमआनौ जदुदेव। कृष्णसुरोपेहेतकरि। सतिना
मग्रसंनेव ४। षोडससहस्रअकिन्याविवाहन। मकुरतसुनमंगलमुदित। अरुवेदकआचार। कृत
वसुदेवसुदेवकी। वंसजथाविवहार ५। कृततोरणबवरीकलस। रचेविविधबहुरंग। कारणजेतीकिंन
का। एतेयंनउतंग ६। कृष्णकवरदेवीसकत। यहअद्भुतअपार। नरहरपहुएतीकिनका। ब्याहीएक
हीवार ७। एकलगनबिनएकदिन। इहाधरिदेहअनंत। पहुनरहरप्रेसेषबल। नएईब्याहभगवंत। प
सबदिनकेअभिलाषसुष। पूरनकरेपमांन। भावहावविलसतनए। नरहरपहुनिदांन ८। इतिश्री
भागवतेमहापुराणेपुरुकमारगेदसमस्कंधनुसारेएषोडसहजारएकसोकिन्याविवाहन।
गुणसपमोध्याय। ५०। सोरठादुहा। एकसमयअषिलेस। वेदर्भीकेग्रेहवनि। बैठेसेजविसेस। क
रतपरसपरहासकृत १। श्रीकृष्णउवाचबंदपधरी। ईहावासुदेवकहितरकवात। सोरुषमणिआंग
नादिनसमात। थितराजवंदेरीराजथांन। मनुवैनवद्रिइपालनसमांन। सुनलछनगुनतनवयसरू
प। अतुलितपतापपतिमाअनूप। वरवीरधीरसोइद्रवंदवंस। सिसपालनृपतत्रघ्वीपसंस। जानोय
हभ्राताहेवजाहि। तुमवस्योनहीकिरदोषताहि। पतिमागुनवरजितवयपमांन। उहबाऊवरयोतुम
मोहिआंन। जदुवंसकहायधकारजांन। नृपतापदहमकहनहिनिदान। उग्रसेनबाजुजानकीनोपमां
न। उनिजराप्तिषनयत्रासपाय। इहांवसेसिंधुकेसरनआय। राजनिषेकनहीराजथान। तुवभ्रम
तरहतअतिहीभयांन। जिनकेनहिमारगजानजाहि। हमतोनलोकविवहारमाहि। पतिमागुनवर
जितवयपमांन। निसप्रेहहमहिजांनोनिदांन। विवहारमित्रतावयरवाद। करियेपमानसोतजिपमा
द। निकामनिगुनकोतजैनार। पेनहिनमनोरथचढैपार। आचारउचितवृतीनएह। दुष्टनकोदिष्या
दंडदेह। हिम्विलेस्वयवरजीत्यालेह। कारणतिहमैतवहरएकीन। हेतुष्टकरेतबमाणहीन। क
विरोवा। वलभामुषतैसुनअप्रियवेन। इहांउपजरुषमणीपहअवेन। अधवदनवरनतुवलि
षतआप। परनीरनयनअंतरसंताप। वढिउर्धस्वाससुधरहिनचीर। डरकंपरोमउठियअधीर। इ
हपायप्रियामनअभिपाय। अकुलायकृष्णलीनीउवाय। श्रीकृष्णबा। कछुकहेवचनहमहासका
ज। अपराधछिमासोकरहुआज। ईहउचितयहांश्रमवचनआहि। जनकालाछेपनकरतजाहि।
रुषमणीवाच। उनजांनहासरुषमणउनीत। विधयुक्तवचनबोलीविनीत। तुमअंतरव्यापकहो
नंत। तिहजानतसबकेहृदयतंत। विधरुद्रविष्नमहिमावषांन। सबकेतुमईसहोसमांन। ऐसी
अभाग्यकोत्रियअग्यान। अषिलेसतुमहितजवरेआंन। श्रीकृष्णबा। उतिधिन्पतुमारोसुनकुवांम
कीनोसुकरयोपूरनसकाम। दुहा। कीन्होभ्रातविरुधपकम। भारसेनहतमांन। तदिपतुमहमसो
तहां। मनकुनकरयोमलान २। कारनकरनसमरथकिय। प्रेमकलहसुषपाय। पहुनरहरईब्याहल

कोन। आजानुबाहु घनबरन अंग। अति दिर्घ नयन मनु छबि अनंग। बनमाल कंठ बनि उरबिसा
ल। मुद्र बाल ब्रिंगकुतंग चाल। यह प्रति मा मे देष्यो जु आदि। तब ते मन दूतत फिरत ताहि। पाउं के
ताको किद प्रियोग। के समरद सामर नो संजोग। चित्रलेषा उवाच। ईह कसो चित्रलेषा जु एह। सषी
बाकि अबे मन को सनेह। देवुरष जु पेत्रय लोक मांहि। बल छल कर आन्हु पकर बांहि। सषी करहु
तो हि अन्निला बसिध। पेक्ष्वन मांन मेरौ प्रसिध। कविरोवाच। जग कुतेजि तेज दुवंस जात। नवलिषे
चित्रपत्र मासु नांत। नृप उग्रसेन बसुदेव नाम। सु जगोरदेह बलनंद स्याम। प्रद्युमन संग अनुरुध
पूत। इत्यादि वीर चित्रे अनूत। ए चित्र उत्ति उषा कू दए आंन। पुनि कह्यो सषी यन मह पिछान। सब चित्र
उषा देषे सुभाय। प्रद्युमन चित्र लज्या सु पाय। अनरुध को देषे जबे आंन। पुनि उषा बहि प्रतिमा पिछां
न। बस प्रेम चित्रलेषा विसेस। पंथ गिगन द्वारिका किये प्रवेस। पुनि सेजु सयन अनुरुध पाय। इह
जोग सक्त आन्यो उठाय। रति गरभ प्रद्युमन सुत अरेह। अनिरुध नाम सषी लह कुएह। बस प्रेम
कर्यो गंधरबी ब्याह। इहा करे उषा मन तन उछाह। रसरीत नय जोबन आरुढ। गहधरम सु सेवा
करे गुढ। करि रूप ता समोहन कुवार। वितयो सु काल सो नहि विचार। यक समय गोष तहा रहत अजां
न। पुनि करे सुहद पता बूल पांन। कंचुकि न सु पेदेष्यो कुवेस। उनि किये प्रमांन यह नर प्रवेस। कंचुकिवा
च। नुकू वरये हनो तन प्रचार। सब मरम कंचुकी कहि सुद्वार। कविरोवाच। सुन किन्या इषन असुरइ
स। बस सोच चित तहा धुन्यो सीस। अकुलाय पुत्रिका ये इआय। पुनि तहा निदर अनुध पाय। सो काम
पुत्र ताद सस्वरूप। अविलोक अलोकिक बिंब अनूप। असुरेस कीयो तब चित विचार। सुन था न य
हन मारुत संचार। बाणासुरवाच। पुनि कह्यो नृतिय हि लेहु पाप। यह सुनत उग्र अनुरुध आप
ले परघ प्रहारे सु नट सूर। चित नंग न येके उथ ये चूर। आयो बांणासुर बल अमांन। तिह नागपा
स बांध्यो निदांन। दुहा। करि बंधन अनिरुध को। रोक्यो उरगम वोर। उषा करत अति सोक उर इ
हां उपाय न औरं। २। इति श्री भागवते महापुरे मुक्त मार्गी। वासठ मो ध्याय। ६२। कविरोवाच। दु
हा। अनुरुध हि षोजत अतुर। तह च्यव मास वितीत। कहू न पायो सोध कछु। नये चित्त नयनीत
१। आए मुनी नारद इहां। विद्या विनय विसेस। त्रकाल ज्ञात पसा अतुल। कीनो उरहि प्रवेस। २। छंद
धोरा। कुज आनंद रसन दीन। प्रभु नु इज परम प्रवीन। इहां बैठ अविलंब अजेव। पुजसंग मिल जुइदे
व। श्री कृष्ण उवाच। अनुरुध ज्ञो अग्पात। तिह सोध नोन हि तात। कहि रिष हि कि छुकुवार। यह चित्त
सोच अपार। तुम त्रकालज्ञ विष्यात। तुम तेन कछु अज्ञात। अब मास च्यार विहाय। पेक हू सोधन
पाय तिहां कवर गहन तुरंग। वरन्यो जु रिष हि ब्रतंत। नारद उवाच छंद भुजंगप्रयात। श्रोणतपुर पत्तनई
क सुंदर। राज हि दइत करे बांणासुर। बलको पुत्र अजीत महाबल। उरगम थांन संग आसुर
दल। इस करि तिह अनुरुध हिरोक्यौ। विषम कतहां कवर विलोक्यौ। है अनरुध श्रोणतपुर
मांही। नरको तहां प्रवेस नांही। कविरोवाच। देजजुधान संग सब जादव। साके वरन वरन रथ
संजव। संग बलदेव स्यांम घन सुंदर। प्रद्युमन सांब जथा जुध परकर। वली प्रबल सेन्या चतुरं
गन। षजे षयालह बादस अद्यो दिन। प्रात आन घेरयो श्रोणतपुर। बलदल सकु उग्र बांणासुर। नि
कस्यो कोट द्वार ते निश्वर। सकयाकी दिस आये संकर। व्रषभ चढे कर रुमरु बत। फावत रोस त्र
सूल फिरावत। रिन मट प्रवत लोचन रोषारुन। उदजु धजूट तन ये दारुन। रुडहू घसी नयो मा

मयकुवारवाच। इहतवबोलकीनोउपच देषीयहमेरोपस्योदाव। कविरोवा। उनिकस्योको
पसुनहीप्रवीन दसकोटदावबलनदीन उनियहेदावबलदेवपाय रुकमीस्हकपटब
कस्योस्वाय। रुकमयकुवरवाच। निहचैसुदावमेरोनिदांन पदीनसाषदेकियप्रमांन। कवि
रोवा। जबसनामांऊयहकपटजांन बसधरमनइआकासबांन। आकासबाणीवाक। इहषो।
लतहैरुकमीअन्याव हिदेवसाषबलनदहाव। कविरोवाच। नवबांणतहांकीनोनिदांन वे
करेनाहिरुकमीप्रमांन उनहसैसबेनिलकेकुपात मान्योबलदेवहितुभमात। कहिकैव त
वनउरवादकीन मुषनीतधरममनमहमलीन सिधसस्त्रअसस्त्रमिलब्रहासेग एआदि
राजविद्याअनंग तुमगायवरावऊवननिवास नवनाहिराजविद्याअभ्यास इहउष्टवच
नरुकमीउचार रिसकरेमुकतबमुसलमार बलनदविजयनयेकरिवषांन उनिकवर
रुकमतहांदएषांन तेइसदैतवक्रकेतोरदंत सोहसोऊतौजिनकरअसंत अनेकउष्ट
जेमिलेआय उनगणसबेतेइनपउलाय। दुहा। कस्योविजयमारयोरुममि सहतबंधुदल
साज कस्नपधारेद्वारकारामसहितजदुराज ४ इतिश्रीना० महा० मुक्त० दसमोअनु
रुधव्यावरुकमीकुवारबध। इकसठमोध्याय। ६१। दुहा। वरोउत्रबलराजको बांणासुरजिह
नांम कुलदईतइकसहंस्रकर सुरजीतेसंग्राम १ हरआगेनाचेहरष नुत्यातवायअनीत
वाजतवाजेसोविवध अरुगावेहरगीत २ रुद्रोवाच। छंदपधरी। हरकह्योताहिसुवरनहोय कहि
मांगतबेवरदांनकोय। बांणासुरवाच। हरहोऊनगरममदरधार वनुकरऊतहारखवार। क
विरोवाच। उनिकियोरुद्रसोइप्रमांन निसदिवसकरतरछानिदांन। बांणासुरोवाच। हरसोबा
णासुरजोरहाथ वसगरनकहीइकवऊरवात हैनाथहाथमेरेहजार नवमोकहतिनकोलग
तभार जगमाहिसमथमोसौनजांन अतिबलीजुरेमोसौनआंन दिग्गजसमेतइगपालदेव
नयनाजगयेममजाननेव करस्हीरमैपरबतअनेक काहूनहिकीनीनेकटेक जगदीश्वर
तातेतुमहिजुध धनुलरऊआनमोसोप्रबुध तुजनयेउजातममलगतभार अबकरहुदेव
अज्ञाउदार। हरहेसोवाच। हरहसेतबेषलगरनदेषी विश्वेसवचनबोलेविसेष तबयेहधजा
गिरअकसमात तबजांनयहतुमसत्यबात करियेप्रवांनतवसिधकाज उपज्योजुधकर
ताकोउआज। कविरोवाच। उमकरीपतहाधुजापात वासुरनिसवंछितएहवात जबजयोक
षकोजन्मजांन परिथ्रकसमानगिरध्वजप्रमांन बाणासुरकेसुंदरस्वरूप इकउषानाम
पुत्रीअनूप। उषाउवाच। निसअर्धसईनसोवतनचीत अनुरुधसुपनदेष्योअचिंत सुषसय
नपुरषोस्वरूप अतिलछनगुनसोभाअनूप उनरीयरोमअतिकंपआय सोस्वपनदरूसस्वा
तिकसुनाय यहजाइउगीदेषेनओर वहराषेतनहिनजियकरूगौर इषनयोकहतचाह
दिगंत कहांगयोमोहितजअबहीकंथ विवरनकपोलतनहीनवांम विरहातुरअतिमनमथ
विरांम कुतअंड नांमममंत्राधिकार वियबांणासुरचितहिप्रवार मिंत्रीकीकिंनाउषामित्र तिहना
मचित्रलेषाविचित्र सोउरहतनिरंतरउषासंग उरउपजीचिंतादेषअंग। चित्रलेषाउवाच। सुरका
नीमनरूपमाल हैउषातवतनकवनहाल अविलोकदसायहउषाअंग इष्टोजुचित्रलेषा
प्रसंग। उषावाच। रू निसाअर्धसोवतनिसंक प्रतिरंगउहपसज्याप्रजंक वहसमयस्वप्नमेबि
वअनेक अविलोकयोसुंदरपुरसएक करिजतननिहार्योथांनकोन कितगयोनजांन्योऊतौ

सोजितजिततितजलअषिल। पीडतनए सुप्यास। ईहांदेष्योअतिकायइक। कूपमाहिंकिकलास
॥३॥ छंद॥ इहसुनतमात्रसबबालआय। ककलासविलोक्योमहाकाय। यहांक सैप्रद्युमनक्व
नएह। हवसरटकूपतैकाढलेह। नेसदयाबाल उद्यमविचार। उडरजुकूपकेमध्यडार। तवबां
धसरटकेरजुतांन। तेनिकस्योनहीसबहीनमांन। इहबालस्यामहिकेग्रेहआय। सोमर्मकहेहरूसहि
सुनाय। ईहसुनतकस्यआयेअजेव। हानकेबंधुदेवाधदेव। उनिकाढनकोउद्यमप्रमांन। प्रभुश्र
हेसरटकोआपपांन। इहछुवतमात्रककलासएह। तनपलटनयोसुधिवदेह। परलोसरूपपा
योप्रमांन। प्रभुआगेगहोजोरपान। श्रीकृष्णवाच। हसिकह्यदेवपूछ्योसुताहि। यहांदेहकहातू
कोनआहि। ककलासवाच। सुनियेममनृगवनामस्याम। इक्ष्वाकवंसनगराजनाम। आतम
अरूपसबकेअनंत। तुमतेजुछप्योहिकछुनतंत। कहिहूंतथापीकारनकपाल। तुमदयासि
धुदीनदयाल। मिलसघनबुंदनापत्ररेन। ननकणिकाजेतेनभीलेन। हीनीमिएतीधेनदान। सु
द्ररसरूपपरिकरसमांन। इकसमयदइमेउजनगाय। सोबच्योहाकलेयइसुनाय। वहपंथ
जातकोउविप्रआंन। उनकहेधेनअपनीप्रमांन। इजमेरीमेरीकरेहोय। करिसत्यनिवतनही
होयकोय। काढीसविप्रदकुलहेगाय। वेकगरतमेरेवास्याय। गहिलायोवीवहीविप्रगाय। सो
कारनमेबूझ्योसुनाय। तिहविप्रकह्योउरखवतंत। मोहिदइगायतुमजुन्मवंत। इहालीयेगयो
रूएकगाय। पेप्रथमकालसौदानपाय। राजावाच। अनजांनएहहमदईआज। अपराधछिमक
ममदेअकाज। दुजदेवधेनयइबानदेह। हवततउजदपइकअवरलेह। वसकोधनरेहवदह
विप्रविटकायगायनगयेविप्र। मिलरहीसुरनिकेजूथमां। निहचैमेसोउलहीनांहि। धर्मगत
प्रभुयहनगाधार। सोकरेनपतभिनभिनसमार। उनिकरमजोइनावीप्रमांन। प्रभुअविध
पायमेतजेप्रांन। लेगयेदूतिमोहिद्रियतमार। उषसहतगयोमैयमद्वार। यमराजोवाच। हित
धरमक्वनकहिप्रसहोय। उषसुषहीवांनीसहतदोय। उनहेदिर्घअरुअसपाप। इनमे
नजिहोतुमकवनआप। निरधारकह्योमैयहनिदांन। पहिलेकूनजिक्रयप्रमांन। अक
र्मजोइनउतिपतिएह। देवतबलयोककलासदेह। मिरत्योअविधलाकूपमांक। सुपजान्यो
नाहीभोरसांक। कोउउदितनयेममकरमकाज। अषिलेसकस्योउधारआज। श्रीकृष्णवा
अबपापअंतआयोप्रमांन। सुरलोकधरमविलसकुसुजांन। अषिलेसकलोतबचरन
एह। सुरथवविवांनलायोसनेह। कविरोवाच। करवंदनप्रभुकहनिमसकार। आरुहवि
वांनकीनोउधार। सबदिनसुनायपयोकलोसांम। व्रमअंसमहाडुरगयविरांम। अज्ञातनजे
जोव्रमअंस। निरयगतपुरसातनअसंस। करिबलनभुक्तेअसकोय। कुवेहोनहारसपत
गोवसटरसहरविप्रगवस
नहोय। सबमानलेहूधरमाउदेस। दुहा॥ सोसुबदिनदेष्योसुन्यो। इहनृपकोअष्यांन। कर
मधरमउपदेसकिय। नरहरप्रभुनिदांन॥ इतिश्रीनाथमनमुक्तउदसमभाषावांणधरमभ्र
ष्यानवतसतमोध्यायइद॥ वरनगोरनृपनवसन। संकरषनतनसोइ। कारनगोकलनंदके। आए
रथआरोह॥१॥ मिलहितनंदादिकमहर। यहांजुक्तमतआय। जथानईनआनंदजल। नएरो
मंचसुनाय॥२॥ छंदपध। यहांबैठेमिदरसुषदआन। उनकुसलपरसपरकहिप्रमांन। गोपि
कोआयसबपेदपेद। हसिबतननईमनकोसंदेह। गोपिनावाच। सुनिवनितावलनवि

हरिन मुहच्च ठिकार्तकेय अरु प्रद्युमन । स्वातिक जादव अरु बाणासुर । सांब कुवार बांण सुत स
मर एक इते बलदेव जुझोपे । कुंभकरन कुंभांड सकोपे । यह क्रम घोर जुध मचयो ऐसो । भूत भ
वद्भावत भन भवेसो । इहां अचुत रुद्र गन आए । जनहि विलोक अमर अकुलाए । ऐसो साच गुह्य
गन जारन । कूषमंड वेताल सकारन । राकस ब्रह्म विनायक रोरव । डाकन जातधांन करकौरव ई
तादिक सिव गन अचुत । जथा स्वरूप दुष्ट अघ संजुत । सारंग धनुष जु धरहरि साजे । सुव गन सहि
त मार रीन भाजे । सिव तु बबांन समुधायो । विष्नु बाण सो कष्ट वचायो । नत्र भव मारुत बांण संध
स्यो । नियत कछ गिर बाण निवारयो । अग्नि बांन इते सव जायो । वार बांण कर कष्ट वचायो । सिव
रुद्र बान संभारिय । विष्न बान सो कष्ट निवारिय । तहां जंभ सायक हरि तांने । यातें संकर अति
अकुलांने । तिह सौ प्रद्युमन दल नायक । स्याम कार्तक कीतन सुसायक । घायल भयौ मयुर स
हित घन । तब सेन्यानी भाज्य क्यो तन । कुंपक रन कुंभांड क कारण । बलभ्रसल हल हतम रेरि
ण । राकस मंत्री उभय संघारे । भागी सैंगी सेन संभारे । स्वातिक जादव अरु बांणासुर । प्रति भट
भिरत कुते सुप रस पर । जुग भिरी जू जे रिन भाम्यो । इहां बाणासुर अति अकुलांन्यो । स्वातिक जुध
बंधे बांणासुर । आण कष्ट सूं भिस्यो जु आसुर । सत पंच तिहे सर धनुष सकिय । गहरे सब असुर गल
गज्रिय । ईहा कष्ट इक बाण वजायो । उह गुण धनुष काट कर आयो । सर हजो मो भोवसुदे सुत स्वार
थी रथ वेधो हय संजुत । समद रविरथ भयो बाणासुर । उह र निवास कूक परि आतुर । माया निउ
न बाण की माता । विद्या असुर विवेक विष्याता । इहां रिन तन मन भन सिर आई । प्रभू अविलोकित लज्जा
पाई । भई परामुख कष्ट भयंकर । इह विच बाण ल ल्योक भु अंतर । उन अविकास वसन जब पायो
उहां भाग्य यह विधि संनीतर आयो । उहां उष्म जुर रुद्र उपाई । चतुर वाय जुर सीत लजाई । जुर ही
जुर ह्व वियह वियह भान्यो । माहेस्वरी परा भव मांन्यो । आंन सरन इरय त्यो जु आतुर । जथा
प्रकार करे बंदन जुर । कृपानिधान सरत दत कीनो । देव अभय तव जुर को दीनो । अज्ञा कष्ट
दई तक प्रेसी । तव जुर सी समांन भई तैसी । इह प्रसंग जो सुने सुनावे । तिनि सोई उरषन जुर
भय पावे । अब बांणासुर वकुस्यो आयो । साक सुरथ रिन रोष सवायो । इहां जो इस के निसाच
र आयुध । जथा चक्र हत काटे जुत जुध । संभ्रि चतुर भुज कि ये बांणासुर । सह प्रजु बेद भुजा
भिरस महर । काटन लगे जब दो रूकर । सेवक हित आये वहां संकर । कष्ट हि जब भव इ लि
यत की । देव अभय आसुर कह दीनी । श्रीकृष्नवाच । आगे कुं प्रह्लाद उधस्यो । मैं ता के हित याहि
न मास्यो । वियह इन हम सो जू वधास्यो । तातें भुज दत भार उतास्यो । कवि रोवाच दुहा । भारथरा
ष्यानुज । निस्वरस्त हें सन साय । दीनबंधु दुष्ट न दमन । सब दिन सिव सहाय ३ । दंड अनुग्र
ह गम अगम । सब विध स्याम समर्थ । काटे हाथ जु बान के । हरि दीनो सिर हथ ४ । किंभा संग अनु
रुधक वर । आंनदयो असुरेस । पौत्र वधु लीनि उगट । भुनु किये ग्रेह प्रवेस ५ । प्रात समें उवय दपर
व । बाचैसु नै विसाल । कहां न पराजय होय कछु । कष्ट कृपा सब काल ६ । इति श्री भा॰ महा॰ पु॰
दसमी स्कंध नुसारे अनरुध व्याव बाणासुर जुध वंडनो नाम त्रैसठमो ध्यायः ६३ । दुहा । कृ
ष्न देव के देस कवर । अरु जादव सुत आंन । करत जथा क्रम रीत कुल । वरन आषेट विधान १
भ्रमत भ्रमत अति भ्रम भयो । महा सघन बन मांहि । आन भये एक त्र यहां । देगट धुम गांह २

पद्मासन तहां सारंगपीतवासनतन मनिचुगुलताकं ववनमाला वन्योगरुडवाहांभुजा
विसाला कृत्पमवहन विलोकेकानर बिषअन्निकरतज्यो नटवर क्रमहंसेति दिदेष
अचानक व्रयावहनअरुरूवेवानक धरिधरिआयुधसवेपलधाए सुपेउवाहतन्नि
रतसवाए हनिहनि सस्त्रअस्त्रसवहारे टरैनमोहन रिंनतेटारे इहावलराजासनमु
षआयो अनिमाधवअतिदीसुषपायो कासीराजकेहयरथकाटे अनहतवानजुधकु
तपाटे समदरविरथनयोकासेस्वुर सामवकधारिछेद्योसिर मस्तसोबानननसोमार्यो
डुषदायकअंतदपुंरआयो पटरानीपतीसिरपहचान्यो प्रबलकालकंसोकालप्रमान्यो
कह्योनासकासेस्वुरकोदल मित्रीसुदरसनहसतमहाबल धरिहरीवहनसौमूरतधाई
वोटकगसासोरूपसुपाई ईहकलद्वारावतिआए वजेघरघरविजेवनाए कासिराज
कोपुत्रकियाकर नांमसुदरसननयोनरेस्वुर परजागतिसंपतितिहपाई न्हमअन्न
वामरमनभाई पायराजजिहवदरवकासो प्रतिकरिक्रोधरुद्रअपासो करीतपसाति
हहितसंकर अनमए सिवुदयालदयापर सिववाच मांगहूजोईईछ्या मनमांनीबोलेरु
द्रदयायहवानी सुदरसनोवाच नएपधमजूपेन्हतेसुर विस्वविदतहैभागयदैवर पवुअम
तीनकालगतिपावौ बधकपिताहतजुगतबतावौ सेवकसोहोमजयाविधसाधे करिअ
तिनर्कअगनआराधे कविरोवा नृपतिहअग्निहोत्रितलीनो कसौहोमडुजदीताकीनो
अग्निकुण्डमहनिकस्योअैसो जगदाहकप्रलियनजेसो तपततामृतनसिषातीनत
स चकुटिरेषविसेषमहारस मस्तकधुनतमुषदाहीमुष राजतदंतकुदालकालरु
प वावतअधरनरसनसवाला क्रूरदसाअतिरूपकराला तेजवंतअतिधरनकंपावत
जिहदिसचितवतदिसाजरावत इहद्वारावतिओरचलायो अतिरिसजुपेजरावतआयो
तपतपवनआगमनयेताको जिहतनलगतअुटततनजाको पुरजनत्राहिपुत्राहिपुकारे
मृगजुत्रस्तदावानलमारे हाहासबसुन्योमनमोहन अनयदएनयेषग्गआरोहन कमल
विलोकोअनलकरालो जितितितनईअग्नमयज्वाला प्रभुतहांकारनअगनपिछांने मो
हनरुडकस्पयहमाने चक्रसुदरसनकछवलायो धरिआगेजिहअनथकायो इहकेरे
कासीवरआन्यो जास्योनगरसुरासुरजान्यो हरिदेपुरसोचक्रसुदरसन षन्नपरआयो
करहरनपन इहप्रसंगजोसुनिसुनावै पापनसेरुअनफलपावै दुहा नासककसोकासि
सनृप उगमपुरीकतदाह पायविजयनरहरप्रभु अमरजयोअुबाह ४ इति
श्री भा० म० महा० पुराण मारगे दसमे पोंडरकवध नाम षसटमो अध्याय
६६ दोहा कपिमित्रीसुग्रीवको नामउविदबलवान सोनरकासुरकोसषा भ्रातमयंं
उमयांन १ बजनरकासुरकोअषिल पीतमवेरप्रमांन दुबिदउष्टद्वारावती करेउप
द्रवआन २ छंदबेअसरी जहांतहांग्रामनपलेजारे दिरघसिलउपरलेकारे सागरपे
वउबालतजलअम मारहाउष्ट बोरैरिषआश्रम वासंधरजलमेलबुफावे आश्रमअ
ग्नअनंतउपावे लेकुलबधुनउबनलगावे जहांतहांकमिलेयेहजगावे मुनिरेवंतना
मारकपरब ध्रनवजमहसोभापावत उदपरबतबलनदजुआए संगबजवनिता

रतवांम । सुधकरतहमारीकबकुसांम । कुलतजिउत्रपितुग्रेहकाज । जिहहोतवेदविधि लोकलाज । सोगयोहमारोबोहसंग । नवकंचुकीतजभुजंग । हमरूजोकालवितीतहोय । सोजानतआतमसाषसोय । इहनीतवचनकहिकहिअनंत । समफाइगोपीपरमसंत । मिलउत्रयत्रवैसाषमास । सबदेवकरेब्रजमेविलास । रसरीतविविधविधहासरास । इहदइ वरुणअग्याअसेस । वारुणीकरततरतरविसेस । पवनवटगंधतिनकीप्रचार । बलदेवक रततिहवनविहार । बलदेवआयतिहगंधज्ञांन । उनकरतगोपकासहतपांन । वनअवनए ककुमलविसाल । मिलपोहपगंधवैजंतीमाल । गोपिकासहितकररासगांन । श्रमभयोतहांद तिसमांन । प्रस्वेदबूंदनोतनप्रकास । वारुणीचिवसलोचनविसास । ईछ्याजलकीडाभईआ य । वसुदेवतहांजमुनाबुलाय । सरितानहमानोवचनसोय । हवकरयोअनादरगरबहोय । उतरजबजमुनाहियअजांन । मदमतवचनाहिनप्रमान । सोलहीवचनबलहृदयसूल । सत धारकरीजमुनासमूल । बलदेवकोपकीनोकराल । हलअग्रनेदआनीदयाल । सोदेहथा रकंपतसरीर । ईहाआनवरनलागीअधीर । जमुनावाच । वसुदेवसुतनसेषावतार । तुममहा बाहुवर्जतिविकार । बहलेहधरयोफलअग्रवीर । सुनमेप्रभावजांनोसरीर । अपराधछिमा करियेअनंत । समभावसबनतुमसदासंत । कविरोवाच । नरहरप्रभुयादिनतेनवीन । कालंदी करषननामकीन । दुहा । क्रीडावारविहारकर । प्रमदासहितप्रमांन । सुंदरआभूषनवसन । इह कवलादएआंन ॥ ३ ॥ नइविदीतीनावरी । वनघनकरतविलास । नरहरप्रभनरहरनिरष सु सुरगनभएसहास ॥ ४ ॥ इतिश्री ना० महा० मुकु० दसमो० भाषा० कालंदीभेदनोनाम पेंसठमो ध्याय ॥ ६५ ॥ दुहा । देसकरुषअसंपदल । कासीउरीसकोंम । राजकरेतहांविजयदिन । नृपपो ढकयहनांम ॥ १ ॥ दिनपलटोयगटोअदिन । अरुभइबुधअनूत । उनितिहद्वारवतिपुरी उरपवायेदूत ॥ २ ॥ चक्रादिकआयुधवहन । धरिहरिकेअनघोष । कासीराजअज्ञानकरि चय कारकतनरोष ॥ ३ ॥ छंदपैअड़ी । कासीराजजोवचनकहायो । वहसुबदूतद्वारिकाआयो । उग्रसैनकीपरषदउतम । कृस्नदेवजदुमिलेजथाक्रम । चर्चाधरमप्रसंगचलायो । याहीसम यदूतत्तेआयो । कासीराजकेवचनसकारन । तहांकृष्णसूदूतकहेतिन । पौंडकवाक्यदूत । नार यनकेचिंहसुनिरमल । बालबुधतुमधरतकोनबल । जैसेबहुमिलबालसमाजा । रामतक रतकाहुकोराजा । जथाविक्रराजाकेजांनत । ताकरूमनववकरिपरिमांनत । अवधपायते सिसयहआई । चयानबेनृपचिंहविलाई । यूहीतुमनृपताअभ्यासत । पुनिनारायननावप्र कासत । एसबबाहनचरनममआवहु । उरनकितोकरमफलपावहु । श्रीकृष्णवा । ताकहक हदयोहसिउतर । पितवकंकयोधमंत्रीवर । बलउनकेपलवहिवहिबोलत । लघुचीटीलोन नकहीतोलत । चलतुमकुलसमेतहूटेचष । भयोचहतहिस्वानसालनष । साफिदलबल जुपैसहावत । एहमतुमपाबेहीआवत । कविरोवा । इहसुनदूतसामपेआए । सबैकहकहे वचनसुनाए । वासुदेवतबसेनबनायो । अतिसक्रोधकासिपुरआयो । पौंडककोबलअति सेनापति । मित्रीसुंदरसननामसहामित्र । उहआयोलेत्रयअछोहिन । केहरूसेनएकत्र वहकनि । कासीराजकेवहनजथाक्रम । करिकरिअंगबनाएकृतिम । संषचक्रअरुगदा

कु मान कुजादव की किति कमात बसुगर्न विचारत दिर्घ वात इन सांब वकार्यो समर आय
सो घिर्यो धनुष सायक संनाय रथ स्वार थिवे धेहय समार रिए विरथ करे सब बान मार
करि कोप सांब इन विरथ कीन उन छेद धनुष गुन रथ थेद वीन वकु ओर आय असु नट स्यार
गहि लयो सांब कौ गरब गार कैरवन सांब की भेट कान अब रोके मिदर गृह आन इहनार
द्वारावती आय सोय हव संगक धहि सुनाय विध मुनी अब येह वासुदेव यति कौ पे कौर
व सुत्र अजेव बलदेव लषेविय हविरुध जादव अरु कौरव उपजि जुध हस्तपुर गए जब स
त हेत सकरषन आयुध जुत समेत उन आगे दियउ धवपठाय सकरषन तिहे आगम सुना
य इह सुनत मात्र धृतराष्ट्र आंन उनि मिले सकरषन हित समान किये इजा अरचा बहु विकार
सबै बैठे कौरव मिल सुढार बलभद्र वा॰ बलदेव कहत त्रत्री विधान न्रप उग्रसेन यह कहि दिनि
हांन कौन तुम धर्म यह जुध कीन नरक्यार पकर इक बाल लीन करकोप कहत कौरव कुवे
न निझ्र्वे विसेध आरक नैन कौरव वाच नहि जांन कालगत कौ निदांन उनि वचन लगे सिर पर
उपांन हम किये राजा पंहू आह इनके तब घर घर कुय तबाह सो गिनत नाहि सगपन स
नेह अब हम सो समता करत एह अहिपान दुग्ध कुय विष अनंत त्यूत जैनं दिषलता अस
त जे करत हमारो दियो राज यह आये हम सो लरन आज बलदेव वाच बलदेव यहां हसि
के जुबोल मुष करत आपनो आप मोल दुसील दसायन की दुरंत अब कुन दिउप जे सात
अंत अति गर्न हिष बाइ अमान उनपदे दंरुयन कौ षमांन अषिले सकल अवितार एह दु
ष्ट आगिनत है मनुजदेह रज वस्न उपासत ब्रमरुद्र सो उक्रम देव करुना समंद्र यो कहत ति
तिनहि कौरव अधीस मम राजदलत है केउ महीस कविराव निसेष कहे दुरवाद नाम धृतरा
ष्ट गये उव आप धांम ईस्वरिय पायन भये मदा अंध सो मानत नहीं कहु है समंध वितरोषयस
समीयो विचार धरनी हल जम्हस लजु धार निरकौरव विकरुं षयी निदांन उनि जेरु द्वारावति
षमांन बलबीर गंगजल मार षेत सब कौरव हस्तनउर समेत हिन दिस वंपोह लडुरंत उ
तिराय ओर षंच्यो अनंत यक ओर लयो जब दुर उचाय कुय ये हये हजब हाय हाय जब ल
ह्यौ नगर जल गिरन जांन सत दुह सबन के बल समान कर सांब अय जो न्रप कुवार बलदे
व सरन आए विसीवार करि जोर सुजोधन उएत कीन मुष नए स्वेत अरु मन मलीन इह व
धु वनावज मो अनंत अपराध छिमा करिये अनंत उन पर्यो सुयोधन आन पाय यहां दयो
अनय लीनो उवाय हतमान भये अरु कंप हिय दुरजोधन यह दाय जो दीय षट सहस्र अदुर
दरय हीअ षंन उनवाज अयुत दास स्वंक दीय एक सहस दासी अनूप रसरीत निउन
श्रिंगार रूप संग उत्र बधु जयजय समेत बलजीत आय परम्नास षेत वैसटा जथा कौर
व कुबोल सब कही जादवन सो सतो ल दुहा हव के रव कुल गरन हति विजय पाय बल
देव सांब हि ले दल बल सहित आए येह अजेव २ अथा विद्य उतर दिसा पुर है धस्योउ
पार ज्वो दिषण हिस अगम सब देषत संसार इति श्री ना॰ महा॰ मुक्त॰ सांब दुजोधन क
वार विवाहनो नाम सत्तमो ध्याय ६७ दुहा नरकासुर कौ बध करि उर धरधन अपनाय
सो रै सहस रु एक सो आनीत र निजु गाय क्यो सब वन कौ ... कर यह न एक ही लगन अनं

छप्पै २१०
लियैसुहाए॥बलिकौजानअकेलौवानर॥आयोउहै परबतअतिआतुर॥सुपेषमनत
जहासंकरषन॥गानकरतमिलमिलगोपीगन॥निकटबैठतरसाषनदीनै॥कपितिहंस
हूकिलकिलाकीनै॥सहअवांनकसुनतसंकरषन॥उनिअतिक्रोधचलायोपाहन कंद
रकूदेउपलबचायो॥अतिचारुनीनिकलतबआयो॥नारवलष्मआकर्षेवांनर॥उहाब्रज
वनिताकूकेआतुर॥संकरषनहलमुसलसम्हारे॥उहकपिपादपसालउषारे॥बहुमसी
बीट १६
मोकहगुरनयो॥रूषवतावतिसार अपनोषाननराषही मारतपायकुमार १॥छंदपाद
समासरसौत्तउदरकूं१ उनिनयोजन्मसुंदरसरूप लेगोदलनायौंमाततात कुलधर्मग्रे
हयहकुयविषात लेतेडिपटायोचहुसाल कुलपावतजोतिहसरूपकाल यहसैसबजेहे
अबहीमुढ उनिआनहोयजोबनारुढ सुषसेफतरलिसोगंधचास गजवाजसुनतसेव
कविलास सुषकरिकुकवरधरछ्वसीस हविडाहिकोनहैजेछतीस॥वक्तादीवाच॥क
हासुदरमिंदरसेकवास गजवाजकहानृपताविलास सिरछत्रकहात्रयलोकराज ब
कुसुनतकहाजोसेवसाज नृपनयेनक्कूजेथेवकार जगगएजुवालौजन्महार॥राजा
वाच॥जिहहारिजलमसुनधूतबाल कुलपावलग्योजिहपरमसाल जिनकरीसत्रुसेवास
दास जेनएसत्रुकेदीनदास कुलपावतजतेंहिपदसत्रुज्ञान तेहारिगएजगजन्मजान
जलमाकरहनजेसीतकाल पंचग्नितापहैहैउष्मकाल वरिषारुतमिंदरवाहिजाहि गिर
देहतजहिमअद्रमाहि अयासरूषोडसदानदेह हयमेधकरैसिंद्याजुलेह करकंव
काटअरपहिमहेस तबहोहिचक्कवरतीनरेस करिउयतपसाधनृपांन तबसीसछत्र
धारतनिदांन सुषसवैकहततूविषकष्त नृपग्रेहजन्मजोहयाधूत सवकीटकहातोहि
राजकाज तोदिदिषलग्तकुलअसुरलाज॥वक्तादीवाच॥छितनृपतकहाजोविजयकीन म
स्त्रिविनमहाजोफलीन अरुकहालयोजोइन्द्रराज हरिविमुषलगावतकुलहिलाज ह
रिविमुषहोईजोनृपकहाय जगजियतुजन्मजैहैगमाय बैओलीयांचूककेनै—लिषीजी बीट
चलक पितरसाषचलाए॥विवमूसलहलसेबबचाए॥कविनप्रहारपरसपरकीनै॥नटहक
लिरेमहारसनीनै॥वानरजोरजोरबलबवलावै॥नियतमारबलदेवनसावै॥जबनिरबल
नयोवनजान्यो॥उनिकबाकुजुधप्रमांन्यो॥साषामृघतहांसिलासंनारी॥देवसुपेहूरनकर
नारी॥उनिकपितिहमुष्टाजुधहास्यो॥मुसहलत्तैकपसिरमास्यो॥धानगएनयोदेहपरायो॥पे
षलमस्योसबनसुषपायो॥दुहा॥वादरमास्योरिनउबिद करेसुरनजयकार॥रामपधारेद्वा
रिका॥निषलसाधनिस्तार५॥इतिश्रीना०महा०मुक्त०छं०॥नाभाषा०॥द्विविदवानरबधनोना
मा॥सततसप्तमोध्याय॥६७॥दुहा॥दुरजोधनकीकिनका॥सुनलबनगुनसंग॥नामनवरशाप
तिनई॥रच्यौसुयंबररंग॥१॥छंद०॥लबमनानामनवत्रीसुलब॥उनतासुसुयंबरनयोवतब
मिलदेसदेसकेनृपकुवार॥अतिहीसरूपलबनउदार॥उनबैठेमंचनयुतप्रमांन॥निरघो
षबकुलबाजेनिसांन॥ईहांसांबकृष्णकोउतआय॥सीद्रजयाआनबैठेसुनाय॥उति
कायहांवरमालपान॥अविलोकेराजनकुवरआंन॥करकरषसांबकिन्याकुवार॥लेच
लोसबनकेमानमार॥दुरजोधनबा॥दहकरेसुकरूपतमंत्रएक॥इववालमरेजिनबाधि

अब अंत अवस्था अनायास। उन नृपत कह्यो बचन आप। प्रभु सुनिये सो पूरन प्रता
प। तुम अप्रमेय आतम अनंत। सरनागति निर्भय दान संत। तुम दीनबंधु देवाधदेव। अ
अखिलेस अखिल माया अजेव। निग्रह दुष्ट दान बंदिदान। उनि करत दीन रच्छा प्रमान। अ
वितार लेहो यह हेत एह। देवाधदेव धरि मनुज देह। प्रभु करे जु अज्ञा प्रमान। जगपाब
ल सुरासुर को उनजान। तुम दीनबंधु देवाधदेव। इह बिरद तिहारो जग अजेव। दीन को
अब रहम तें उधार। भगवंत करत नाही संभार। अब अंत अवस्था निकट आय। सर
नागत हित करिये सहाय। श्रीकृष्णबाच। भज लेकु कर मफल आप नृप। पाछें सुध लेकु सो
सरूप। राजाबाच। बिस्वेसर करि हो यह बिचार। उन कालिक इह हि दुष सिधपार। इह अयुत
हस्त बल षल असाध। अरु करत दुष्ट दिन दिन उपाध। करि प्रभु तुस समता बिजय काम।
सप्तदस बार जाज्यो संग्राम। इह जरासिंध आगे अनंत। कि रूकार ननिक से रमाकंथ।
अनूप एक बार उह बिजय पाय। या ही ते बाद्यो गर्भ आय। कविरोवा। सब सुनत होय बस्या सु
नाय। या बिच नारद मुनि तहां आय। प्रभु कर जय प्रकार। अरु भए रिष हिट बतउदा
र। श्रीकृष्णबाच। जय उर तुम गम नाग मबसंत। तुम ते अगम्य कछु है न तंत। सुन कहो बि
बरप्रा कृबसमाज। कि हन्यात रहत कहा करत काज। रिषोवाच। आपते कछु न बांनो द
याल। करुनानिधान बेताकाल। कहि कू तथापी कछु सुन्यो काज। धरि चित सुन कुरा
जाधराज। राज सू जिइग तव हित राज। कृत उद्यम कछु लपां रु व सकाज। उछाह होत पर घ
र अपार। बिस्वे सया हि उन के बिचार। तुव आहि जि ते भुवलोक नृप। सप्त राज संप
तसरूप। सो जीत जीत यह जरासिंध। बहु दीने कारागृह बंध। राजसू जिइग नहीं बिसिध
होकु साधन सबै तो उन के मष मी ना राज। उनको दे एती कवि न आज। इहा तातें करि कु स
हाय तुम। प्रभु बहा बल कु उनीत। सिध होकु साधन सबै। तो उन के मष मीत। १। कही अब
स्था नृपत की। सुत सबै संदेस। रिष नारद उपदेस करि। उन यह कह्यो प्रवेस। २। इति श्री ना०
माहा० पु० कृ० ॥ दसम० इति श्री कृष्ण प्रतिवारणा उर आगमनो नाम सितरमो ध्याय। ७०। सुन
सुनि हूत संदेस सब। अरु नारद उपदेस। मो हन जादव बुध मिल। बूझत मंत्र बिसेस।
१। छंदपध। माधव अपनो निश्चय मांन। उधव सूर बुधो एह आन। मो हि गत व्यथा हि पंकजनये
ह। अरु नृपत मो दुउ वकाज एह। पहिलै कहां चलिये यह प्रमांन। जगद्वध तुम हि सब बि
ध सुजांन। उधवबाच बदत अबरी। पहिले पंकज बसहि पधारकु। स्याम तहां सब काज सुधा
रकु। मागध बध कै है नृप मोषन। उन कै राज सुय जिइग शरन। अ सुत मतंग महाबैं ओहा
स धन सत अ सो हि न सो ही। प्रभु है जरासिंध के यह पन। जाच्यो तंग हो दिन ही जावन गु
दमर मयाको उन गाउ। सु पै देव उतपति सुनाउ। मगध देस को अधपत मानो। जरासिंध को
पितु जग जानो। पूरण जाके दल बल संपत। सो न आस सुत जत इक संतत। उन्न होत
महाउपपावे। उर दाहत सो कहन न आवे। सो नृप है सेरु इ हेत तप साधो। आतम ध
मन करे आराध्यो। महादेव सेवा तब मानी। भव दीये दरस सहेत भवानी। महादेवबा
च। उनबोले दरसया प्रमांने। मागकुत नृपत सु पैसन मांने। राजाबाच। देवन संतत एह मो

त। ईहदेवीईब्रा अतुल सब विस्मत सुरसंत २। छंद धिअरी। कृष्ण एक अरु अगिनत काम
न। जोग बिलास जुवं बितनो मन। नारद वाच। आगमन। महाजी गजो गेस्वर मोहन। पुन कोदे
त मनोरथ पूरन। ईहना रद संभ्रम मन आयो। एक समय द्वाराव ति आयो। कविरोवा। पंथ अ
कास गये अंत हपुर। सांमस रूप हृदय धरि सुंदर। प्रभु यह कौतेविलास दास पुर। मोहन वेद
रनीके मिंदर। दयानिधान विलोके नारद। ब्रम पुत्र अरु बुध विसारद। अषिले सर उठि सिंघासन सुष
आए। लेअ अति प्रीत सु कंठ लगाए। चरण पषाल लिय तचर्णोदिक। माधव धारे लेत हम सतक
पूजा करी जथा सुषपाए। बहुस्यो मुनि आसन बैठाए। श्री कृष्ण वाच। माधं वत बहू ब्रो अति हित
मन। कहि कु मुनी आगमन कारन। जथा देव रिह अग्या दीजे। काज मनोरथ पूरन कीजे। ना
रद वाच। तुम अवितार पुरष अषिले सुर। षलषय कार सहाय साध सुर। कू आयो प्रभु के दरस
न हित। वाहत जे ब्रह्मादि हित चित। दयानिधान दान मोहि दीजे। कृष्ण चरन चित मो उर कीजे।
कविरोवा। पुन नारद अति ही सुष पाए। अग्या माग अवर यह आए। निरतत तिह तहा कृष्ण निहा
रे। कीडा करत प्रद्य हित कारे। उधो सहित जु सन मुष आए। विधजुत पूजा करि बैठाए। श्री कृष्ण
वाच। प्रभु पूछ्यो मुनि कहा उधारे। नये पुरा कृत उदित हमारे। विप्र विलोक उच्यो यह वानक। अ
वर त्रिया घर आय अचांनक। रहो निहार विकल चित रोके। बालषिलावत कृष्ण विलोके। ई
ह अविलोक अवर यह आयो। पुन मोहन तहा मंजत पाए। अवर नार यह आये आतुर। अैसही
वी साधत अषिलेस सुर। इत्यादिक देषी लीला यह। यह व्यापार करत प्रभु प्रति यह। मोहन महल
मिंदर मिंदर। आदि अंति अविलोके इस्वर। ग्रेह ग्रेह माधव गुन गावत। प्रेम मत्त तन ए आनंद पाव
त। सुंदर सुंदर ग्रेह सिधाए। याही क्रम नारद फिर आए। रुषमनि के मिंदर अविरेषी। विस्मव है
इक मूरत देषी। देष कृष्ण सबो ले नारद। विसरे तन अति बुध विसारद। नारदो वाच। जगत ई
स मै निष्वय जांनी। प्रभु तव माया प्रबल प्रमांनी। जाम हि भूलर हे जोगेस्वर। आर पंच मुष अ
खिल चराचर। मोहा विलोकी देवी माया। निश्चै जिह सुर असुर नचाया। ध्यांन स्वरूप कृष्ण उर
व धारे। पुनि नारद निज ग्रेह पधारे। दुहा। कृष्ण विरत यह कछक । अविलोके अद्भूत माया जि
न की मोहनी। भूत जगत अविभूत ३। इति श्री ना०म० महा० भु० कृष्ण० एती नारद षोडस सहस्र ग्रेहे
तरयह गवन नोनाम गुर्णतर मोध्याय। ८९। कविरोवाच दुहा। नृपति दूत को आगमन। पुन रि
प राज प्रबोध। अषिलेस्वर सुनिये इहां। सबे पिंड सुष सोध १। छंद पधीर। इक दिवस कृष्ण
दयाल। उठि किक वर प्रात हि काल। नित कृत दित जुत कीन। द्रुज दांन सुर न दीन। धर वसन
आयुध धार। पुन सभा मध्य पधार। इक समय स्वाति क आय। प्रभु दरस उध वपाय। अनेक
अमरन अंस। वनि जथा जादव वंस। मिल सूत मागध संग। प्रभु हीयक तिव संग। छंद पध। इहां
एक अपुर बहुत आय। सो लयो तबै नी तर बुलाय। श्री कृष्ण वाच। किह पठियो हेत वक वन
काज। अन संकन वेग्यो सु पेआज। दूत हियो श्रुत कृष्ण देव। नवकहु कु जथा आगमन भे
व। दूत वाच। इक देस मगध धन पुष धांम। नगर तहा वसत गिरवज नाम। तहां जरासिंध राजा
अजेव। है पुष्ट महादेव धदेव। जग केतिह राजा जीत जीत। है अ सुत बंध मे लेअ नीत
गिर एक गुफा दुरगम गहीर। सोइ सहत मंकृति हिड बसरीर। पठियो उन मो कह देव पस

महिमा दिव्य अनंत । सोई सिध होहि प्रभु के सहाय । इह चोर नाहि और कउ पाय । श्री
कृस्न वाच । इह मंत्र विप्र सौं न लो आप । प्रभु निव देकीत प्रभु तात तात प सुर सिध पितर न वनूत
ग इह करत सबै इत्र आश्रन मंग । व सकर कउ प्रथी भुव विसेस । संसार सार मष कृत असेस
तत पन अस दिग दिव एह । सो महादेव धर महि सनेह । इन ते कबु उसकर नहि न आज । रि
णवीर वहा वउ अनुज राज । न वनूत करि दिगविग विजय भूप । साधिहे ज जे सो सरूप
। कविरोवाच । मिल सब न कउ प्रसकौ वचन मांन । पुन एह मंत्र कीनो प्रमांन । सहदेव पठे दछिण दि
संत । पुन नकुल वीर पछिम प्रजंत । उतर दिस अरजुन चले आप । पे भीम पुरब दिस बल अप्र
माप । चारू दिस पठिये बंधु च्यार । विष्यात वीत पौरष विचार । वसुमती द प्रजा विसेस
इन च्यार दिसा जीते असेस । इक रह्यो अजित सो जरासिंध । अति कपट जुध अरु महा अं
ध सो उस्तु नौज बैपं नव नरेस । स्यांम सो मित्र कीनो सुदेस । जुधस्टरोवाच । जो कह्यो प्रथम
उध व प्रमांन । सो करि कउ अबे जउ पति सुजांन । कविरोवा । इह भीमसेन अरजुन अजेव
उज रूप कह्यो प्रभु बासुदेव । आप्यिका लए तहां आय । उन जरासिंध के कांत पाय । भी
मवाच । वह देस कहै बल तत्र यो विप्र । प्रभु दरस इत तै आए छिप्र । जाचना अर थी विप्र जा
न । उन देखे कउ दान कुलक्रत प्रमांन । कछू करे जाचना भंग कोय । कै कीनी सम सामर्थ होय
नरक पदल है सौ नर निदांन । प्रगट यह बेद वाचा प्रमांन । कबु अदा वच बत्री न आज । जे वहत
राज हम पुन साज । हरिचंद दधीच अरु बल नरेस । चाध्रक कपोत देष कउ विसेस । इत्यादि करा
जा जे अनेक । विष्यात सु जस वसुधा विवेक । अरव सरी रष लहे अषंड । उन धर्म धुव हि जान
कउ षंड । राजा सिधोवाच । आकार चहन जाचन न एह । सो भयो नृपत मागध संदेह । कर मूल
स्वरण अरु नयन कोप । अंगुष्ट तंचा वहन ओप । प्रतिमान विप्र जब नप सिध । ए छत्री है के
अमर सिध । अब तो कबु जय अनमय प्रमांन । जाचना नगकै धर महांन । बल राज बले
बावन विष्यात । विपरीत कीत तत्र जोक वाच । अव रोधक सौ गरु हान अंग । न वमृतन कीनो
वचन भंग । निरधार करे मागध नरेस । अनिषेपो लौ विप्र जाच कउ असेस । भीमवा । यह कह्यो
विकोदर वच न एह । हित मान युद्ध जुध हम कउ देह । श्री कृस्न वा । इह वीक कह्ने बोल अजेव य
हि भीम पष हम वासुदेव । करि है स्रष जुध आए जुध काज । रिन इत्या हूर न महाराज । राजा सिधवा
मागध हसि बोले सुन कस्याम । सम तान मो हितु म सो संग्राम । धन धाम बाल सुध राधीर तु
म षारस मुद्र व सेतीर । वय तुल्य न अर्जन बल निधांन । सो पेन जुध मो सो समान । पतवीर
समर सो भीम पाय । प्रूक हत मान इद कउ जुटे आय । कविरोवा । रिण मर कउ व प्रा आघात वीर
सम द्दाव घाव जरजर सरीर । मिलत दाव घाव द कउ वैसमान । भीम हा जुध भूतल न यांन द्दा
रुन कीये पांडव महादाव । पेम रैन षलका कउ उपाव । मोहन सुध कीनी मूल मंत्र । तिह कहै
जुनार द गुट तंत्र । उवकरनक रष त्रन वासुदेव । अरु भीम ओर चिंते अजेव । त्रण तहां फा
रि सो अनंत । पेल षे भीम सम साप्रजंत । षलक रन कस्यो नार द सुषेन । सो पे सुध
कीनी भीमसेन । मगधेस कंठ गहि मान मार । पुन भीम सेन सो उधर पछार । पग एक चां
प पग सो प्रवीन । कर दुतिय चरन गहि दीप द जु कीन । षल फार उनयतन करे षंड । प्र

हितुष॥ सबै ग्रेह संतत कुंता सुष॥ कका ताहि एक फल रुद्र द्योत तब॥ याते कांत्न सिध
कहै है अब॥ ईहां नृपत फल ले घर आयौ॥ पटरानी द्रुपदी कुं वन फल पायौ॥ नारन अर्ध अर्ध
फल लीनौ॥ करि जुग नाग सु छेदन कीनौ॥ वहा द्रुन के गर्भ स्थित॥ तुरत अवध ग
रजनि इस्रापति॥ जुगम पंड द्रुमाता जाए॥ वेषस बन मन संभ्रम पाए॥ कोउ जिरा नांम ही
ईन कुल॥ वनिता नद जोह माया बल॥ ईन हि फारि दो कुं अविलोकी॥ एक बुद्धि आदेक अ
लोकी॥ कर ले जरघ सन कंबुकीनि॥ निकट आय देषं रुन वीनि॥ सो मिल गये देह अति सुं
दर॥ नाम नयौ तिह जरासिंध नर॥ दस हजार हस्ती बल उर धर॥ अपने दल इक बीस वि को
दर॥ बलु सम बल तब अनुधरमान कुं॥ जथा जोइ एउ वे ज्ञानकुं॥ वीर भीम दुर्जन रवन्ना कुं
वीवता हित व सिध वताव कुं॥ जाव कुं दुरजुधन हां जाए॥ पुन वे देह परम सुष पाए॥ तुम ए
जुआ उन निकट रहत कुं तहि॥ जथा काल की सिध होहि जिह॥ अरु जे नृप तबं बंध है याकै
तिन करि सुध सिस रोवत ताके॥ ग्रेह ग्रेह बियत व गुन गावहि॥ अरु बाल कन अ नेउ पजा
वहि॥ स्त्रीयोवाच॥ मत रोव नैकुं दुषके मारे॥ दुष्ट कघन स्यांम कुमारे॥ दुष्ट मारि तव पिता ब
नेहै॥ पुन हम उन परम सुष पहै॥ जहा जहा संकट परिहै जा को॥ तहां तहां होय सहाय
कता को॥ कविरोवा॥ तब मा रहम हमं त्र वताये॥ थिर कर सब हि नय हव हरायो॥ अज्ञा क
रीप्रयान कल अब॥ तहां सूत ले आयो रथ तब॥ अविरु जथा जोइ रथ आए॥ राजलोक
वहि चिटजु चलाए॥ उग्रसेन बलदेव वृष्ण अब॥ तत बिन रथ आरोहत कतत तब॥ बाजत विव
ध अनेक जु बाजे॥ सुनत जथा क्रम चवहि चव दिसा के॥ चतुरंगन यह सेज चलाए॥ पंथ जथा
विध सो नापाए॥ प्रनु अज्ञा दे इतप वाए॥ और मत तुम पाबै इत आए॥ नगर गअज्ञा लेन आर
द॥ विबुध लोक गए बुध विसारद॥ द्रल अनंत दिस दिस समुदाए॥ सोवीर मेम रु षंड सुहाए॥ उ
र कुरुषेत्र देस तज पावन॥ ईहां नयो पंचाल हि आवन॥ भूरपत नगिरन द सुष पाए॥ इंद्रप
रस्त अतिही सुष आए॥ पंडव सनमुष आय ग्रीत पर॥ सब हि निमिले जथा क्रम सुंदर॥ वामा
कुसम सो क्षवट वरषत॥ हित करि कम्पद रसमन हरषत॥ पुर वासी यसांद रस न पावत॥ वनि
ता ग्रह ग्रह कलस वंदावत॥ विवध नातगृह हाट बनाए॥ अविलोकत नृप मिंदर आए॥ यहां
द्रोपदी कुंता आई॥ लेत लैन हरिषत उर लाई॥ पुन सब रा ज लोक अंतह पुर॥ आनमि
ले अति हर्ष व के उर॥ पूजा करि जथा विध पावन॥ भोजन पांन सेज मन भावन॥ नियत जथा
क्रम डेरा दीनौ॥ प्रगट बंधुजन मित्र प्रवीनै॥ दुहा॥ एक एक के अग्र यह आए दास अनेक॥ त
हां सबकी सेवा करत विध विधस हित विवेक॥ १॥ अति हित नयो समाज ईहां अरु आ
नंद ब्रज ओर॥ करत विविध आषेटक्रम सब मिल राज किसोर॥ २॥ कुंता सुत के हेत करि
सांम रहे के उमास॥ बन विहार जल केल विध बंछित चित विलास॥ ३॥ इति श्री ना० महा०
मुक्त० दसमी० भाषा० श्री कृष्ण इंद्रप्रस्थ आगमनो नाम इकोत्तर मो ध्याय॥ ७१॥ दुहा॥
सभा विराजत धरम सुत भ्रात मित्र जनन नृप॥ तहां आए त्रयलोकपति अंग अंग कृत अनू
प॥ १॥ जुधिष्टरोवाच॥ छंद॥ देवाधदेव हो वासुदेव॥ अवलेस अषिल माया अजेव॥ करि जो
र जुज ष्टर अणत कीन॥ उनु परम उर षपूरन प्रवीन॥ मषराज सुयकारन महंत॥ अब ह

तहमजिग्यक्रम सोप्रभुकरिहु सहाय ।१। श्रीकृष्णवाच। हरियोसुनतप्रसनकै अग्यादी
नीएह करियेजिग्यारंभक्रम सबैबाह्मं देह ।२। छंदपा। द्वैपाईनगोतमसारषाज कीनेवि
सेष्टआयेसकाज मिलतहांआगस्तरुधुज समेत मैत्रेयचवनअत्रियमहंत धुजकवषए
वमिलवामदेव मुनिविस्वामित्रअतितपअभेव उनससपारासुरगर्गपाय वामनकं तंत
पोलिस्तआय धुजक्षपायनदेवल वामदेव अरुफरसरामतपबलअजेव कस्यपअघ
र्वआसुरकपाल धुजवीतहोतमधुविददयाल समअकृतव्रमअरुवीरसेन सोउकीने
रिहरेत्वजसुषेन धुजद्रोणकपावारजसकाज नीदमधत्राष्टरसुतसमाज ननिविदुरस
हितअनेकनृप सबआंनमिलेअपनेस्वरूप कृतजथायोग्यव्यापारकाज रसरीतसहि
तसबैकरतराज कन्कहलजीतभुवसोधकीन दिगदेवआद्यव्यापारदीन न्पूकरणजि
ग्यआगेविसेष ईन्द्रादअमरआएअसेष गंधर्वसिधचारणसुग्यांन उंनिउर्गजिंदैराकस
प्रमांन सुरकिंन्याकिंनररागसिध भुवमिलेसकलभुवपक नृप अरुसहितराजरमनी
अनूप विधजथाजोग्यगुरजनविचार सबदिनकहकारजकियसंभार अधिल्हेसक
पासबजुरेआंन पूरनतापरु वयहप्रमांन कृतहेमलगेआरंभकाज सुरसिधविहतरा
जासमाज प्रनिजथावेतविधअविधपाय सुमजिग्यभयोआनंदसुभाय। जुधष्टरोवाच। म
षअंतअचितपूजासनेम प्रथ्वीसुरपूजेसहितषेम इहजोग्यकहोधौकवनआज किहकरे
प्रथमपूजासकाज। कविरोवाच। सुषचाहरदेसवरिषनरेस सोदयोनउतरकिहविसेस। सह
देवोवाच। छपै। आदब्रह्मअविलेस विस्वरूपीविसंभर सबैदेयमयदेह धसौतनमनुज
काजधर कृस्नबाह्काकृस करनकारणसमथमिल ईहांजोग्यकोअवर मषप्रजाक
रियेमिल तसमातकरकृअविल्हेसतुम वासुदेवकहिवेदविध इनकसौवचनसह
देवईन सबैकरीतिहजोगसिध ।१। कविरोवाचछंदअपरी। ईहसबदिनकोमंत्रसुहायो।
परषदसुनतपरमसुषपायो कृस्नदेवयहपूजसकारन मिलिजयाअभिलाषसकल
मन चरनधोयजलसीसचढावत पूजाकरतपरमसुषपावत विहतकृस्नधकारवि
लोकौ सत्रुभयोसिसपालससोकौ उठवाढौतिहभुजाउवाई महाक्रोधनहितरही
समाई बोल्यौदारुनवचनमहाबल सबनसुनायवेद्यनयपषबल जथाउरंतरमा
याजांनी अतिदुरवादकहेअभमानी। सिसपालवाच। जाननजायकालगतिजेसी अनुचि
तकरीहधजनअैसी प्रगटषाह्स्त्रिराजप्रवीने कृमअभिषेकग्वालसिरकीने जाक
हकहतनंदकोजायो प्रगटअहीरवंसपदपायो जथाजोग्यकृस्नदिमतमो निदतकहि
काविषनिदानो भयोजजातविसमयनृपत उनकूराजदयोइनकूअत बाह्पवित्र
ह्नमकीनौबल षारसमुदतटजायवसौपल तातेजोग्यनपूजाताकौ अबतौउचित
काहिबोयाको। कविरोवाच। सवजबसतदुरवादसुनाए दुरनभयेकृस्नउपपाए या
केवचननभयोनहीआदर यथासामैलकेवचनमहघेसुर निंद्याकृस्नसुनैजोइनर दै
सोईसर्वधर्मकेबाहिर सुनटपांडुसुतयहासंभारे नैनसैनसोइकृस्ननिवारे आपच
नेभुजचक्रचलायो वहसिसपालमारफिरआयो काटौसीसभयोकोलाहल दुसह

तिमाजुसिधजांनीश्वेह॥ अविलकजुराडुवषंहआय॥ सोउवकुरसांधलीनिसुनाय॥ सो
इजरासिधसया मस्तर॥ परसपरमिरतपौरषसब्र॥ उरडुसहफारहास्यौसकोप॥ अर्थकत
कावकतपत्रओप॥ डवषंहभीमरिएअजरहार॥ धुनघसेधरनमुधीदिपतार॥ इहजरहकरौ
करपरसआय॥ पेलहैनाहिकाकुउपाय॥ धरपरेषंहमरजरासिध॥ सबछुटेदेहदेहीसबं
ध॥ अपिलेसुरअरजुनमिलिआय॥ लएभीमसेनकोकंठलाय॥ दुहा॥ डरगमअष्टावीसदिन
समहरनिस्यौसग्रांम॥ मगधराजकरभीमके॥ पतिजुधदीनेधांन॥ १॥ मागधकोइहा उत्रमिल
सुपैनामसहदेव॥ गहेयरनगोविंदके॥ मनभाहेअहमेव॥ २॥ देसमगधकोराजदल॥ वृथीभ्र
पजंत॥ कृष्णधरयौतिहसीसकर॥ दीनीअभयअनंत॥ ४॥ जरासिधकोवलसुजस॥ पायोभीम
प्रकास॥ प्रभुनरहरकीनीकृपा॥ सुपैकृतौनिजदास॥ ५॥ इतिश्रीना० महा० मुकु० इतिजरा
सिधवधनोमवदोतरमोध्याय॥ ७२॥ दुहा॥ सहसवीसअरुआठसै॥ निप्रहबंधनरेस॥ कवि
नपरेगिरकिंदरा॥ सेवतदुषअसेस॥ १॥ छंदपधरी॥ तनवसनमलनअरुछुधापास॥ दुनसह
तमहापरिनवप्रकास॥ रदवदनसौदुरबलसरीर॥ उरकंपअषिलअंतरअधीर॥ नवमन
कुमगनपिंजरनयांन॥ निकसतअसंपषीनिदांन॥ सहिदुसहजथानिकसेनरेस॥ कतद
रसनपरसनधारकेसे॥ एवंधमोषकीनेअनाथ॥ निजदरसदिषायोदेवनाथ॥ वनन्हगु
किरीटउरमणिविकास॥ कटिसुवकनकनीपीतवास॥ अद्भुतसरूपदेष्योअनंत॥ सोदवे
दवताएपर्मसंत॥ दुसहरनपरनवगएदुष॥ सबदिनकेउपजेपरमसुष॥ राजावाच॥ करि
जोरकहतकरुनाप्रकास॥ तुमदीनबंधुहमदीनदास॥ सर्नागतरक्षकसुवनस्वांम॥ कत
मोषहमारेप्रभुअकाम॥ हमनएराजपदअंधराज॥ कछुलष्योनहीकाजकुअकाज॥
मोहनीमाहामायामुरार॥ सोपरीवीचनाहिनसंभार॥ नयेराजनुष्टमदमांनतंग॥ अवल
ईसबेसुधप्रंगअंग॥ अखिलदेसकरकुउपदेसएह॥ सांमतिहहोकुतवपदसनेह॥ करि
कृपाकृष्णतिहअभयकीन॥ देवाधदेवनिजजनक्तदीन॥ श्रीकृष्णवा॥ नितनजकुमोहिकै
सावधांन॥ पुनिकरकुलोकरक्षाप्रमांन॥ सुषदुषलाभअरुहानसंग॥ इनकुसमांनदेषकु
अनंग॥ निहकामकरकुसबधरमनेम॥ पुनमोहिअंतमिलहोसप्रेम॥ करिजथाजोगआ
दरअनंत॥ कहितहांवचनयोरमाकंत॥ हैधरमसुवनकेजिह्नधाम॥ सवतहांआंनमिलि
योसमांन॥ कविरोवा॥ करिकृपानृपतसबविदाकीन॥ देवाधदेवतहांअनयदीन॥ एरा
जाअपनेग्रेहआय॥ सोनजतनयेसामहिसुनाय॥ सबभीमपार्थमिलकहनसंग॥ यदं
इदस्तआएअनंग॥ दियविजयसंषधुनिवासुदेव॥ अतिहर्षनयोअहयहअमेव॥ दुहा॥ कृ
ष्णजथाष्टरकोकरे॥ वंदनचरनवसेष॥ जरासिंधपोरुषजथा॥ सोसबकहेअसेष॥ १॥ युधष्टरोवा॥
कुंतीसुतकरिजोरकहि॥ राजावचनरसाल॥ यहतुमहीकरिहैहहां॥ कारजसिधकपालह
कियोनृपनकोमोषकृम॥ विनमहबंधछुडाय॥ प्रभुनरहरऐसीप्रकृति॥ सदाअनाथसहा
य॥ ३॥ इतिश्रीना० महा० मुकु० दस० वीससहंस्रआठसैनृपबंधमोषनं॥ तिहोतरमो
ध्याय॥ ७३॥ कविरोवाच दुहा॥ जरासिंधकोवधजथा॥ धनसुनकृष्णप्रनाव॥ नृपधरमसु
तकेनयो॥ उरआनंदअमाव॥ १॥ कह्योयुधिष्टरजोरिकर॥ प्रगटसमैजवपाय॥ कह्योवह

प्रदूमनकवछलपूरनप्रताप

दसमोः इतिस्रीनामधेदुरयोधनहासकैनोनामकिंचंतरमोध्याय॥७५॥दुहा॥क्रमजुत
पूरनजित्पकर यह आये गोबिंद नृपजुधिष्टरकैनयो इहाप रमआनंद १ अबकीनी
उछाह अति कथभक्तकेकाज इतपराए द्वारिका सजनबोजसमाज २ छंद्प। अधिरुद्धे
सकथबलनइआपूं देवाधकारप्रद्युमनहिदीन करुनानिधांनतबगवनकीन इहईइ
पइस्तआएअनंत तबमिलेआंनतंहांसजनसंत दिनकछुकरहेदेवाधदेव यहांकरत
धर्मचरचाअजेव जबरइइहस्तश्रीकस्नजांन पेउसहघातपूजीवमांन परबांधस्वालष
लसमयपाय अबघेरीद्वारावतीआय महिपतीस्वालसिसपालमित तिहधेवुबाहरुषम
निचिरित वहसमयपायरिनमहाअंध हतमानभयोतहाजरासिंध उहांस्वापूर्तंद्रा करी
एह सिसपालसषाबधसुनसनेह रनमारसबैएसुमतराज अविनीनिरजादवकरूआ
ज पथ्वीसबतंद्राकरिप्रबंन इहरुद्दहेततपकरअषंन मुष्टिकामात्रआहारमूलकरि
रहैरैएकासानकूल तपकरतवरषजिननोवितीत सिरसहेघांमजलमहासीत न्र
तेसनयेसुपक्षनृप चतुरदरसनदीनोदयारूप करिजोरस्वालतहांप्रणतकीन प्रभुजा
नतअंतरगतप्रवीन मोहिदेहुरुद्रअैसोविवान मनतेजुसतगुनवेगमांन सुरअसुरनाग
नरजक्षसंग गंधर्बनराकसकरिअनंग सोजादवकोकैहृदयसूल तासोकोउवाहन
करेतूल नवकियेप्रमानत्रपवितनेव दियेमायोइङ्गामाहादेव मयदियवनायअैसोवि
मान जलथलगिगनगमनजहाचित्तजांन। इतिस्वालसोमारथप्राप्ति। धरस्वालचित्तपूरबविराध
करिआकरिआएद्वारावतीक्रोध घेर्योसनगरकरउससहघात विस्थरेस्वैनचकुदिसवि
ष्यात सिलसर्पवद्धावरषेअसाध इत्याद्यकरेउसहउपाध हाहारवतबउरमांफहोय सु
तकथप्रद्युमनसुन्योसोय यहासावकआयेस्वातिकसधीर वनअनुजसहितअकरूरवी
र इत्यादिकजेजादवअनंग सोउमिलिआनप्रद्युमनसंग सन्नाहबंधआवधसफाय इहां
रथारोहरिएनृमआय करिसफेधनुषटंकारकीन प्रद्युमनकबानसंधेप्रवीन सालसो
निरोजादवसयांम देवासुरआगेज्यूउगांम करियेहेस्वालमायाप्रकास सरसोछिप्रद्युम
नकयोनास स्वालकोसेननायकसधीर सरपंचपंचवेधीअैसरीर प्रद्यूमनकयोपौरष
अपार प्रतिसुभटबोनहसदसप्रहार विस्तरेस्वालमायाविवेक एकतेरबैविग्रहअनेक
आकासविषेधरकबकआय दिष्टपतिकबकाकबकउराय जलनासकबकगिरसिषर
जाय उजमुहसबककजो नृमतआय योकरतस्वालमायाअपार बहिविवधवानउरमुष
विकार स्वालकैमुहसमिनीउमंत सोजुरेप्रद्युमनसोअसंत परसपरकरेसस्त्रनप्रहार मि
लहुकघांबोलतमारमार प्रउमनसीसभिनीप्रहार सोउमुर्छागतिन्लोसंभार यहसयो
प्रउमनजकअचेत रथहांकगयोत प्रसूतवेत प्रद्युमनकबुजबचेतपाय स्वारथसोबो
ल्योअतिरिसाय। प्रद्युमनवाच॥ हेजियतबिगायोषेतमोहि तातेअसाधधकारतोहि कुल
जादवनोनांहीनकोय हवभाजिपराम्मुषसमुषहोय। स्वारथीवाच। दुहा॥ आनेतुमहिअचेत
अति मतयहउपजीमोहि यहानकरियेसोवचन तातेदोषनतोहि ३ इति श्री नाप्महा
पुरू० दसमो० नाषालाए इतिप्रद्युमनदारावतीजुधनोनामबिह्तरमोध्याय।७६।कबिरोवाच

कालजवनाजगयोदल॥ निकसीजोतिदेहतेनिरमल॥ कस्योपवेसकसमहिअनकु
ल॥ कसचितकवैरभावकरि॥ कैगयोतनमदसुपेविषेहरि॥ ध्याननयोजबजिदुसह
रन॥ यहानयेअरथीसबतरन॥ सबहीविधसबकोसंतोषे॥ पूजादांनमानपरपोषे॥ दु
हा॥ न्रपसबनकौसुषनयो॥ अरुघरघरउछाहदेषस॥ पूरनजिहदिन॥ दरजोधनउर
दाह॥ ३॥ कसविरतअदभुतकरम॥ निग्रहमोषनरेस॥ कविनजुधसिसपालकी॥ अरुब
धनयोअसेस॥ ४॥ कीडारिनजदुनाथकी॥ करिहितगावैकोय॥ कविनरहरतिहपापकी॥
अंतनबाधाहोय॥ ५॥ इतिश्रीभा॰महा॰मुक्त॰सिसपालबधनोनामचोहोतरमोध्याय॥ ७४
॥ दुहा॥ कस्योपसुषदेवसो॥ इहैपरिक्षतराय॥ न्रपसबनकोसुषनयो॥ पूरनतामष
पाय॥ १॥ एकदिदरजोधनउरहि॥ लगेघायपरलोन॥ जलनविनहीपरज्वरी॥ कारनयह
धोकोन॥ २॥ सुषदेवोवाच॥ तहाकहेसुषदेवतब॥ हरवजथाप्रकार॥ अमरसिधनरआग
मन॥ विवधजिहवोपार॥ ३॥ कविरोवाचबंद्प॰॥ कतनीमजहाअनाधिकार॥ उनपार्थखज
नसेवाप्रकार॥ दुरयोधनद्रव्याधिकारदीन॥ उनकर्नदांनकारनप्रवीन॥ संभारसाधनानकुस
ध॥ सहदेवअषिलन्रपनअराध॥ दुजवरनसोधसौकषदेव॥ आपहीलयोयधकारएव॥
सुअषानरपतरमनीसुनाय॥ पंचलियदेदधकारपाय॥ राजावैराटजजुधानरूप॥ भ्राता
मिलन्रीअवान्रप॥ ईसादिकजेराजाअपार॥ कियेजथाजोकर्माधिकार॥ मयराजसू
यपूरनभमांन॥ वनजथाविवधमंगलविधान॥ इहवजेदेवउधनिप्रकास॥ उनकरीसुहप
वरषाप्रकास॥ अभिमंजनकियसुरसुरीआय॥ नुवन्रपन्रपरमनीसुनाय॥ अनिवाष
जुधष्टरचित्तआंन॥ करिकसकपापूरनसुकांम॥ रथबैगयहावियदुरषराज॥ मंगजुत
आएयहसमाज॥ अथमयदतसभाप्रकासन॥ मयदतसभाअरजनहिमूल॥ सोइयहांवना
इसांनकूल॥ विस्तारविवधपरषदवनाय॥ यहाराजजुजष्टवैठआय॥ सबभ्राततुत्रमि
लसजनसंग॥ अबआनजथाथितनयेअनंग॥ पालीगचादमिजजुवतिजाल॥ गावत
सोमंगलगुनगोपाल॥ उनलोकआनबेठेअपार॥ सुनसभाप्रगटदेषतसंसार॥ विधयुगत
वसनन्रपनवनाय॥ चितमानजथासोरंगवढाय॥ तहाआयोदुरयोधनअदेष॥ संगब्रधस
जनभ्रातासुवेष॥ इहसभाजलस्थलभ्रमअपार॥ दुरगवनजहाप्राकारद्वार॥ थलदेषन
योभ्रमजलअथाग॥ लीनेउचायतिहवसलाग॥ जलगहरथौरथलविमलजांन॥ उनिदए
बोरतिहवसनपांन॥ जलकुंडमांझबूड्योअजांन॥ उनलड्योनिचोवनवसनपांन॥ सोदेषक
ष्णतिहकरीसेन॥ निस्संकहस्योतहांभीमसेन॥ लषसमयहसेतहांसकललोक॥ अटअ
टिनहासकरिओकओक॥ उहानयेबिसानोपलदिआंन॥ पटफेरनिचोवतआपपांन॥
करिसीसउहांनीचोकुवार॥ अपनेग्रहआयोदुषअपार॥ दुहा॥ नारउतारनन्रपकोकु
लकोरवषयकार॥ नारथकोसंधारनट॥ वलोबीजयहवार॥ ४॥ संपतपाडवराजसुषपू
रनजिहप्रताप॥ सभादेषककरमबस॥ पस्योबिसानोआप॥ ५॥ दारुनउपजेदोहदुष
दरयोधनहिदुरंत॥ नवतातेअमरषनयो॥ तेसेईमिलतत॥ ६॥ अनिमनसुतसुषदेवसु
कीनोपसनप्रवीन॥ याकेउचितविचारइह॥ कजवरउतरदीन॥ ७॥ इतिश्रीभा॰महा॰मुक्त॰

जुतहापरसपर। दंतवक्रोवाच। दंतवक्र बोल्यो उर अति दुष। मैम मित्र हतक देष्यो मुष। इह
ममगदा वज्र आकारा। तोड़ कुतुम कहियत अवतारा। कविरोवाच। दंतवक्र की गदा जु दारु
न। कृष्णदेव कै लगी सकारन। कामोदकी गदा वज्र कत। इम कृष्ण सो हत्यो को ध अति। य
यदा घहारक रयौ माधव रिन। टुटे सत्रु के प्रान ताहि छिन। मार्यो दंतवक्र अनमानी। सांम
मांऊ वह जोति समांनी। दंतवक्र को भ्रात विदुरथ। सो पे वेर जान मम समरथ। धरि असि चर्म रो
षमन धायौ। इहां कृष्ण के सनमुष आयौ। उनि ताही हरि चक्र प्रहार्यो। माहा सूर्याम विदुर
थमार्यो। दंतवक्र अरु उस सह विदूरथ। रिन सनमुष चिर मरे महारथ। देवन विगन दुंधभी
दीनी। कृति सेवा चारन सिध कीनी। आयु पूत्त ना दुष्ट जु एते। तहां तहां नास करे व चुते ले। इ
हं अनंत देव ग्रह आए। वजे द्वारि कानगर वधाऐ। वहां के रव जादव जुध उत्तम। नयो स
बन के चित वदो भ्रम। सुन चार यउ दम सक रुषन। महा विषाद नयो मन हीमन। इह
दिस करुष जुधन उरह दिस। सुन इह वले तीरथ जात्रा मिस। महा मंत्र जुध नाधन मासो। इह दि
संक घ नात उर आनो। यहां बलदेव निकसग्यै याते। जुध दुसह सिजात न जाते। उह।
प्रभास न्हाय मही आए। अरु पावे सरिता अकवाए। तीरथनाम। प्रथो दिक विंद सरपा बन
चित्रकूट गिर सुषद सुहावन। विहत विला सत्रुद्धा तीरथ विध। सरित तन मुनगंगा मंजन
सिध इहां नेमषारण जु आए। मुनि जजत सनकादिक पाए। यहां उपत्त सबै ऊब दए।
आदर। ब्यास सिद्ध सरव एम हर्षवर। मुनि सो कुतोउ राए दुतिपर। व्यासा सत वैवै तिह
उ जवर याते सोन उत्तौ। अकुलाइ। यह बलदेव महारिस आई। बलदेवोवाच। अरे ध्याय
मत्र हिमत आई। ईन ते तो हि कहा सथ काई। वास सिष सिध अरु विद्यावर। याते गर्वविध्यो
तेरे उर। सो हित उ चित विषकू रे सब। हेत नीत माने बो मो हव। किये मैम मनुज देह यह
कारन सो हित उ चित विषकू रे सब हेत नीत माने वो मे इव कि ये मैम मनुज देह। पावं
छिन को रूप धार न। इहा सक र्वनद र्लन गायो। वह प्रहार पंचतत पायो। रिषिओवाच।
दुजन यह इम व्यासा सन दीनो। वा चनत नित्य उरनवीनो। यह हित उ चित उ चिवो याते तुव
तुमरेष करी नलाते। तुम्हम नराय कियाइ हाते। सो इहां तुम वध उपजे ऐसो प्रायस्चित
करिये प्रभु पावन। नियन ब्रह्म वध पाप नसावन। बलदेवोवाच। सत वचन रिषि तुम हित सुना
५ वड जो इन मक्क करवि जीवा व कु। रिषोवाच। इहां विचार कर कृपा प्रभु ऐसो। तव कुसमय
सति कुयते सो वेद वचन यह विध वए। पुत्र पिता की समता पाए। उग्रसव पुत्र हिया कौ
ताहि दयो व्यासासन ताको। बलदेवोवाच। निश्चै के रिक जो सकर षन। मागकु जो अभिला
ष चित्र मन। मन संपावन वैद्यो मुनीवर। इहां इल्वल नामा सायक असुर। इल्वल को सुत मा
हाबली अति। पापी दानव माहा दुष्ट पति। मुत उरी क सुरए अरु आमिष। मारत जिह वि
मार देत दुष। पूरन जिह होत न हि पावत। सो दानव पल दीन संतावत। दुहा। असुर क
रि कुनिर मल उह। सुर मुनि टरे जु सोन। याको प्राय चित यहां। करिये राम कृपाल। २
जिते कतीरथ जान न। नर्मद सम हिन्व क्रम जातिन की कर। सो तुम मम सरूप। ३
इति श्री ... कृष्ण ... भाषा ... सत्रवत्तीसमो ... अध्याय ...

दुहा॥ इह प्रदुमन स्तुति सो ऐसे कह्यो रिसाय॥ जद्यपि उमत्त मित्री उस्सद अब तहा मो पे नाय
१॥ बंदपधरी॥ सो गयो तहा रथ हांक सूत॥ रहां जयो समहर अभूत॥ रिनकव स्वलाये बान
चार॥ मित्री केआ रूअस्व मार॥ इक बान स्वार थी बेद अंग॥ गज्जन यकर धनुष सायक अनं
ग॥ मार्यो सग्राम मित्री उमत॥ इक बार छेद सिर काट अंत॥ प्रद्युमन तबे रिण विजय पाय॥ क
हि साधु साधु सुर नर सुनाय॥ दिन रात सहस दीस तउ रंत॥ इह जयो जुध्य यह सुन्त रअंत॥ इ
ह समय धर्म सुत ये हआप॥ जनु ऊत तेव हां दुरन उताप॥ उर निमत देखनि ससुन देव॥ यहां जये
चित विस्मय अजेव॥ चित वेष विग्रता जये अवेन॥ नृप इन्द्रजाली नीकवलनैन॥ नवचजे सेन संजु
त अनंत॥ विष्यात वीर जुध विजयवंत॥ अखिल्हे सर द्वारावती आय॥ सग्राम होत देख्यो सुनाय॥ ब
लनन्द नगर रक्षा विधांन॥ धरि रहे सु आवध सावधांन॥ ईहा कृष्न आय सग्राम और॥ जय होत स्वा
ल सुत्नि रे जोर॥ बलदेव कृष्न को समरखेत॥ सूत कहइ सक्रवाही सचेत॥ रिण विजय बाल मोप्यो मु
रार॥ मघषक कह्यो सो सक्र मार॥ पुन बान कृष्न बेध्यो अकास॥ सो इरथ जमएला इयो अकास॥ ह
व स्वाल विसषइत को पड़ोय॥ सांमके बांन नुजलडूबो सोय॥ पुनि गिस्यो नमसारंग चाप॥ अखिलेस
फेर लेस क्यो आप॥ स्वालोवा॥ इह अमत गिगन रथ सहित आप॥ उर वाद स्वाल बोल्यो सदाप॥ प
यी समी हि सिसुपाल पीत॥ जाकी त्रिय आनी यहा जीत॥ नृप सना मातहि सोइ हत नरेस॥ विध सुपे
नां हि पोरष विसेस॥ अब तो हि पवे रूत हां अंत॥ ईहां होय न आवन फिर असंत॥ श्रीकृष्णोवाच॥
हसि कह्यो कृष्न तहां वचन एह॥ उष्ट ऊ ए बिअपनो सुदेह॥ कत बंधन देषत चल्यो काज करि
सीस को प परकर करराल॥ जे महावीर नुवचक्र माहि॥ निहचै सुक रत कत कहत नाहि॥ कवि
रोवाच॥ इह कृष्न गदा हत कह्यो एह॥ उष्टत्र लगी नौ क्षिकल देह॥ पुन दरु मात्र फिर चेत पाय
सो वद्दन यो माया सुनाय॥ पलक स्यो स्वा तत बइतनेष॥ वसक पट यहा मायाविसेष॥ दोहा
इह वचन कृष्न सो कह्यो आय॥ मोहि पवि यो है देवकी माय॥ सुत कह्यो स्वाल सो समझ सिध
वसुदेव हि ले द्वोवल हिबंध॥ पसु सुन जथाले जात पाय॥ इह मात पितात वग्र ल्यो आय॥ मुह
कूस यां मम मवचन मांन॥ अब पिता छिम वकु वेइ ग्यान॥ श्रीकृष्णोवाच॥ इह सुन तनयो
से हम असेष॥ विध कपट इत वेष विसेष॥ बलनंद वीर वुहमी विष्यात॥ तहां असं नावनाय है वा
त॥ कविरोवाच॥ इह वीक्ष साल रथ उतर आय॥ वसुदेव रूप बांध्यो बनाय॥ इस्तरी देह त जुपे आ
प॥ बंध होन तिहारो राव बाप॥ सिर काट तहा कृतम सरूप॥ इह नारद यो दल महि अनूप॥ तिह दे
ष जये बिन इक सचिंत॥ कर मनुज नावत हां रमा कंत॥ धरि जोद्ध ध्यान कहि कृष्न धीर॥ सोपे
न सीस नाहि न सरीर॥ देख्यो निहार तब वासुदेव॥ उहां बेठे है रयमहि अरेव॥ मार्यो सुगदा क
र कर विमांन॥ निसेष तोर मार्यो निदांन॥ जल माझ परो रथ सो नजाय॥ इहां स्वाल गदा लेस
मुष आय॥ उह नु जाछेदी उवबान देव॥ परु चक्र सउ सन भिर अजेव॥ दुहा॥ मार्यो स्वाल
सयों मतिल॥ माधव तोर विवान॥ सुर हरहै वरषे सुमन उध नि दए निदांन २॥ इति श्री नाग॰
महा॰ मुकु॰ द सं॰ स्वाल वधनो नाम सितंतर्मोध्याय॥ ७७॥ सोरठा दुहा॥ अथ मह तो सिसपा
ल॥ चौदक राजा स्वाल नृप॥ कृत तिह वैर कराल॥ दंतवक्र उथद ऊ॥ १॥ बंदप अपरी॥ एइ स्रम
हा सेन सक आए॥ बियहर [illegible] बहर बिंदु प्रवहाए॥ सो सुन कृष्न देवबट समहर पेरष करत

रचितधीरपरकरजुधाय ॥ ३ ॥ निविप्र मंत्रकीनोप्रमांन उनकोकबुदीजेनेरआन बत्रके
बंधबाधेबिचार निम्रेतहांतंदुलबिप्रनार बंधनसोतंदुलगावबांध करिलेटापरिया
लीयाकाध ॥ ४ ॥ चलोबिप्रसोकरतआस बसुदेवकुवरकोनरबिसास यहाबिप्रद्वारिका
नगरआय सबपौरलंघनीतरसिधाय अंतहपुरहेतबक्रमआप पटरानीग्रहहरन
प्रताप अनिवारतिआयोबिप्रएह दुर्बलपटफाटेमलिनदेह दुषतदरिद्रमुषबचनदीन
पहिचान्योप्रभुदेषतप्रबीन उठकमतहासामुहेआय लियेसषामिलेतिहकंठलाय
धरिपानआंनकरुनानिधांन परिजंककसौआसनप्रमान पटपीतझारिरजबिप्रपाय
भगवंतस्वर्नधोयेसुनाय सोधरयोचरनजलआपसीस मनिमुच्यतकरीसेवामहीस
नृवबैनआपत्रयपवनभूप अरुकरतचरनमाजनसअनूप बेदनीदोरलविकनवा
त विधयुक्तकरीपूजाविष्यात इहाआयराजरमनीजुओर बादीहसपुछतगोरगोर
॥ राणीबाच ॥ पाऊनोकौनइहकिहप्रसंग अवधूतषीनपटमलिनअंग दारिद्ररूप
यहषीनदेह सक्याबेगयोकरिसनेह ॥ श्रीकृस्नबाच ॥ करिहेतसदामाबालकाल सां
दीपनकीहमपढेसाल मेरोगुरभ्रातायहमहंत सोनामसुदामाबिप्रसंत कुसलातकृस्न
पुछितकृपाल बलबीरमिलोइहमित्रबाल अबभागहमारेयेहआय सोदयोसाधदर
सनसुनाय पदबिछुरेहमतेजबप्रबीन तबबाहनयोकाऊनहीन दिषियतप्रकामसे
दुजदयाल हेदसाकोनयहनकाल सुधआवतहैवहदिनसनेह गुरपतनीपठियो
काजयेह ईधनकोहमतुमगएआय बनमांजबिषमतहासीतवाय उहसमयनईबिरषा
श्रकाल जलहरमहामिलजलदजाल कतनिसागिगनमिलअंधकार सोपंथलहतना
हिनसंचार उनरहेप्रुधारषसमयपाय बनमाकबिषमरजनीबिहाय किऊषोजतभोज
बषातकाल दुजगुरुलहेहमकृदयाल ॥ गुरबाच ॥ लीनेसषेमगुरकंठलाय प्रनहमहेतलुम
कष्टपाय कतसेबाहमअतितुमसुकाप यातेतुमनउरनत्रयेआज बिद्यामेदीनीसोबिसे
ष सोसफलहोहतुमकोअसेष ॥ २ ॥ श्रीकृस्नबा ॥ प्रभुहेतजुबनमेकष्टपाय सोइनयोहमे
स्वारथसुनाय ॥ दुहा ॥ तबआयेगुरयेदतहां सादीपनकेसंग तहागुरलीनायउरउप
जेसुषअंगअंग ॥ २ ॥ श्रीकृस्नबाच ॥ कृस्नसहायकदीनके सोयहबिरदसंभार मोहिदरदीसे
मिले प्रभुसामुहेपधार ॥ ३ ॥ सोरठा ॥ धरकरउरलेधाय केसबमहिमाबिरदकी बेदनस
केगाय सेषबषानेमुषसहस ॥ ३ ॥ नरकाप्रभुगावतनिगम इहैरावरीरीत पतितउ
धारनपरउरष पूरनप्रेमप्रतीत ॥ ४ ॥ कहोपिबानेआरको प्रभुतुमबिनगुपाल मोहिदर
दीमुटके दीनानाथदयाल ॥ ५ ॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेमुक्तमार्गेदसमस्कंधेमुसा
ली भाषाबारबनरहरदासेनबिरचित ॥ इतिसुदामाआगमनेनाम असीमोध्याय ॥ ८० ॥
॥ कबिरबाच ॥ दुहा ॥ कारनगुरयहकीकथा अपनीदसाअनंत कृस्नसुदामासोकह्यो
भगतहेतभगवंत ॥ १ ॥ श्रीकृस्नबाच ॥ छंदप ॥ पाधेयमित्रपत्नीप्रबीन दुजलाबकऊजोकछु
हमहिदीन हमएकभ्रातयाहीअसेह नवनेतदपतअलपनहिनेह तुलिकापत्रफ
लफूलतोहि हितकरहेतसबसनतोहि ॥ कबिरबाच ॥ सुकरयोबिप्रतिहसरनकाहि लेवा

अठितरमोअध्याय ७८ ॥ कविरिषोवाच दोहा ॥ कियआरंभजुजिग्यकौ सौनकआदिरिषि
सकरनलगेतहां दुष्टक्रम आसुरआयअसेस १ छंद उअपरी दीरघस्थूलदेहअ
तिदारुन क्रष्णवर्णअरुकलहअकारन कपिलकेसअरुदंतकुदाला कुटिलभ्रेकुटिअ
रुरूपकराला ऐसोजिग्यपालपलआए पापीदेषतविश्वउलाए सुनेकुलाहलतबैसक
रषन जिग्यसालाआयेरष्छकजन कोपमुसलहलसिमरनकीनो आनत एतेवचन
अधीनो व्हांगिगनचढिगयोसुआसुर उरपरिवासनज्योंअतिआतुर ईहाहलअय
जुग्रेच उताखो मस्तकफट्योमुसलकरमाखो दएआनदानवतिहद्वारुन रिषजईज
इतउचारेमदरन अज्ञामांगीकृउसिकआए आगेसुरजसरतिअनुकाए आयेप्राग
पुलस्तकेआश्रम करिमंजनगोमतिगिलकाक्रम पम्नवेपसाश्रोणगयापुरी सुमनक्र
तमालतामवणीसुन अदमालयकुंनजकोआश्रम दछिनअरणवआयउष्टम क
मादेवीदरसनहित ~~अयुतधेनतहांनक्रअधी~~ केर बिहरिफलनूपंचसरवर देवीक
ष्णदेपायनदरसन सुरजारगोकरणसनातन अयुतधेनतहांनक्रअधीनी देवजथा
विधमक्रनदीनी अबतापीकुपयोष्णीआवन निर्विंध्याविहरेदंडकवन रेवामहिषव
तीमनुतीरथ फिरप्रभासआयेपिछमपंथ नयोमहानारयज्ञकेनट सोपैयहांसुनो
रिनसंकट दोहा विहरततीरथवरषवितीत्यो उहांमाहानारथसुअतीत्यो रोषव
देअतिनीमविजयरिन उधजुधदरुघांदरियोधन अजिकुआपआपअकुलाए सोपे
न्केसुउजनसुनाए कवित्त यहांवलिदेवसोचकरिआपुन चलेनेमकरितिनदीनि
वारन इहांकुरषेत्रहांकरथआए पैदकुन्तिरतमहानटपाए महाविरोधविजयइ
ष्यामन रोषवदेनहीहोतस्वातरिन बलदेवोवाच इहांबलदेववचनकहिऐसे तुम
महिघाटकोउनहितेसो सषाबलकुदरयोधनसाधत अरुतनबलीनीमआराधत
कलहधरततुमपैनहकोउ हवतजवीरनिर्बृतनहोउ कविरोवा महावीरतहांवचन
मान्यो उवररामकोआदरनआन्यो तहांबलदेवविचारीतैसी ईनकीअबनावीहैऐसी
इहांनेमषारजुआए अस्त्रिसहितउनिकरतसुहाए दोहा करिकैतीरथपरिक्रमए
नरथषंजनपाल तबआएबलदेवतहां द्वारावतीदयाल २ करमविरतबलदेवके
करियेसिवरनकोय कालतीनमनवचनकरि हरीसोवहनहोय ३ इतिश्रीनागव
तेमहापुराणेमुक्तमार्गे १० बलभद्रतीरथजात्राप्रसंगः ॥ गुणियासिमोअध्याय ७९
दोहा यहांकहा यहांकहांमाविप्रयक महादरद्रीमुढ एकक्रियकरिसिधयहां अरु
हतलागअगुढ १ ईडीअर्थविन्नागवह मननिश्चयनिरकाम जथालाभसंतोषजिय
षीनवष्मतनसाम २ छंदपध्धरी मूषरूकअधरअतितनमलीन उपपरनवनाजन
वचनदीन जोकरैसुउद्यमअबलजाय पेकरुचित्तथिरत्तानपाय पतिव्रताताससपली
सप्रेम नितकर्तनक्तिसेवासनेम ब्राह्मणीउवाच कहितियावचनमुषसुनकुकंथ इ
कवितउसरेअलसअंत श्रीक्रष्णसषाजिनकेसमर्थ अज्ञानसहतहतउषअन्य
सादीपनकेतुमपढेसाथ वेइवासुदेवअनाथनाथ इहांनिकटद्वारिकावसतआप ४

पैसंजयअरुकंबोजसुकेकय। मद्रकतेकेरिलधुरितमय। नरथबंधकेजेतेनृपति। इ
त्यादिकआएसेनापति। घोषघोषकेजूथगोपगन। महरनंदआयेहरिषतमन। अवर
सकलब्रजजनवहआए। सहितकुटंबनसकटसजाए। तहांकुरुषेतपरबसिरआव
न। नएमहरफेरामनभावन। दुहा। कुटंबसहतसबकछ्रकह। इहामिलननैआन
सेवाहेतसबंधसुष। हरनशीतप्रमान। ४। कुंताइहांवसुदेवकह। सुषमिलबहनसुसंत
अषलिदसाजोआपनी। कहतनएएकंत। ५। कुंतावाच। बंदउअवरी। महाअवस्थापरि
हममाही। जिस्नैतुमसुधलईजुनाही। देवहोतपतिकुलजुउरदिन। अपनेकीसुधलेवत
आपुन। वसुदेववाच। ईहवसदेवदयोतबउतर। वहीबहनसोमातसमसर। तातेदोषहम
हिनहताको। जथाकरुअवकारनजाको। पतदिफिरयोदेवकोपेरयो। फिरेउत्रकाज्योंनट
फेरयो। दुष्टकंसकेअतदुषदारुन। तातेनमावतवातपातन। अबइहांदेवलोइतेआए
सजनमिलेसकुटमसुहाए। अरुहमसहीविपतजुऐसी। तुमकुसुनीहोयगीतेसी। उ
ग्रसेनदेवंधुआदअब। वैसहतत्रियाकुंतामिलीयेसब। कविरोवाच। ईहांकृष्णनेरनकुआ
ए। सबकौरवंससकुटमसुहाए। भीष्मकरनद्रौणवाजिन्नट। धराअधीसनृपतधतरास
ट। राणीपतीव्रतागंधारी। उनसबेसंगमिलनपधारी। संजयविदुरकृपाचार्जसम। कुं
तीनीजनीषमकज्याक्रम। नृपततहांवैराटनग्रजित। हेतदांध्रष्टकेतमैथुलहित
जुधामनुदमघोषआयजुहां। हितजुतबाल्हिककेकयहेजहां। संगसुसर्माभूपसुहा
ए। ईत्यादिककोरवमिलआए। मातदेवकीरामकृष्णसम। कीनीतहांमनुहारजथाक्रम
ईहानंदाद्यगोपसबआए। संगगोपसकुटमसुहाए। मिलेसकलजादवमनमाने। दुष्टकं
सवसुदेवदिदीनै। कर्मकलेसनिवेदनकीनै। कृष्णप्रवेसनंदग्रहकारन। चितषसंगसोल
गेचितारन। वेदिनसषादकृदिसानाई। छिनतिहनयनप्रेमजलछाई। याहीसमयकृ
ष्णयोआवन। नंदजसोदाअंगलगावन। तनमनुभ्रतिकप्रानलयतैसो। जायनकह्यो
विधाताजैसो। रोहिनमातदेवकीरांनी। हेतजसोदामिलहरषांनी। देवकीवाच। कहेदेवकी
वचनसकारन। महरजसोदाधिन्यहेतनैमन। पयकुचपानकरायेपोषे। सोहमविनुतुमहि
तसंतोषे। जथापुत्मकियरत्तनैनजल। पांनवसनसुगंधनपलपल। कविरोवाच। इहां
कृष्णउगकैपुबआये। उनगोपिनएकांतसुनाए। रूपमगनआनंदजुरोवत। जथा
चकोरचंदमुखजोवत। विछुरानिघाईजनुवामा। करतविलोकनवदनसकांमा। श्री
कृष्णवाच। प्रभुरक्षितनयेप्रेमपरायन। निरविकारजोगीनारायन। सषानावहमसे
जेसुंदर। कबकुमनआवतहेसुधकर। करयोगमनमुथराकिहकारन। मोषतसज
नदुष्टगनमारन। जातेकृतघनमोहीजानत। मायादेवीताहिनमावत। प्रेममिलतवि
छुरतहेप्रानी। जोदेवीगतकाहुनजानी। ७। वातविधुतमिलतउनिविछुरत। जलदतूल
त्रणरेणा जितहिति। वरततजोइविजोइकर्मवस। पेनवस्तुतसहतदेपरहंस। कृ
सबमधसबनतेबाहिर। आदनमध्यनरहतजुअतर। करेध्यानमेरोजोमनक्रम। मुक्त
होयसोमिलेमोकमम। दुहा। अध्यातमउपदेसइह गोपिनकरिगोपाल। कृतेतबेजम

वलमुष्टीमात्रआहि ईनकौक हादे रूपप्रभुहिआज जोकापवादजुरु होतलाज विस्वेंस्वपाल
कविसेष ३ जकोतहांअतरत्नादेष अविलोक गांवतंदुलअनंत करिबोललहेतहारमा
कंत मुष्टीतरमेलेमुषमकार ३ तनिमाधव ३ जैकरपसार सोहायलयोरुषमणिसंनाय ३
नसेहनकीन इहांजो अबतोहनइजसबैपाय भोजनमजनमहइ ३ जहिदीन करित्रपत
तिहातिनसहनकीन इहाप्रातसमयमोहनउदार कियविप्रविदाकरिनिमसकार जाको
नसदामाकबनजाय निसिसेषकछदारदनसाय इहाविप्रसदामाग्रिहआय पैपरनकुटी
अपनीनसाय थितितहांग्रेह नएसहथांन अतिउच्चअरबसंपतसबांन उहांफिरत
दासदासीअनेका वनिवछ्मकनकभूषनविवेक निरधारविप्रव्रकुघांनिहार विस्मय
परिसोभ्वनवारवार। सदामावा। प्रथीपतिकारूपयहरमांन रूपहांन्हलआयोअजांन
।कविरोवा। ३ जरहीतहावाहोउचिंत कामनिपहिचानेआपकंथ नगजटतकनक
भूषननिदान पटवसनवरनसोभाप्रमांन आवरतसंगसहचरिअनूप सोधतैउत
रिआईसरूप करिधूपदीपकलसाधिकार चितउचितमहामंगलाचार धरिसुजाकं
थमिदरपधार नौछावरकीनीविप्रनार वाजंत्रगीतउछववविसेष ३ जइहांईद्रकोवि
भौदेष। सदामावा। सबसंपतिसुषमिंदरसुगेर अैकछनविनाकोदेतमौर प्रभुबिनवन्हत
नृपतासहूर ३ ररत्नषकरेजौइद्रदूर मोहिजमनदरद्रीदीनमांन यहेबाहनकेसबकरिगि
लान पहिचानमोहिदेसमुषपाय लेमिलेसोआपनकंठलाय प्रभुकरीप्रीतमोसौप्रमांन
जोगेससिधजोपैनजान। कविरोवाच। यहपायइहसंपतअसेष विप्रसोभयोविलस्तवि
सेष पंचतत्वलयौतिहअवधपाय उहविप्रकि.हमेमिलोआय। दुहा॥ विप्रसदामाकी
विपत प्रभुनरहरकीप्रीत क्रपासिंधजगदीसकी राजनीतयहरीत २ क्रपाचिरत्रप्रभु
छको करिहैसिवरनकोय करमविषाददरिद्रको हेतनकबहूहोय ३ नरहरप्रभुमन
क्वनकर्मकरिहैंत्तजनत्रकाल कारनबंधनकर्मके तथाबुद्दहिजमजाल ४ इतिश्री
भागवतेमहापुराणेमुक्तमार्गेदसमस्कंधनुसारेंभाषाबारवनरहरदासेनविरंचितब
दामादारिद्रहर्नेनाम। इक्यासीमोध्याय। ८१। परिक्षतोवाच। दुहा। कालजुसूरजग्रह
नको आगमवरतेआंन क्रमजात्राकुरषेत्रकी ३ निसबदेसप्रमांन १ कालंतरसुकथा
सकहि रहेंसपरीछ्तराय कारनयहपूछीकथा प्रेमसहितसुषपाय २ ब्रजगोप
नतेविछरेब्रंदावनबलवीर। काऊउनअविसरकरू बक्रुरमिलेजउवीर ३ श्रीसु
कोवाच। छंदउआवरी। उग्रसेनराजाबलिआउन संगवसुदेवकवरसकरषन क्रमप्र
द्युमनसांबसकारन गाधसुचंद्रसमितसुकपारन वनताबालसकुटबविराजे
मदनसिव कावाहनसाजे इत्यादिकजादवसबआए देसनग ▮ रपुरजनसु
षदाए अनरुधजुक्ताइधकारी राषेदेस नगररषवारी करिनिछ्विप्रपदी
न्हगुनंदतिनकेरुधरकरेतिहतिरपन श्रीगतकुंडतहांनरेसहूरन विजयजिइातिह
कीनेवनवन उदपवित्रथलक्रमजुआए उतिमकुंडजुषेत्रअनुवाए ३ जसुरत्नीबकुदान
सुदीने क्रमजुतजहांतहांडेराकीने मछउसेनककोसिलकेरे ३ निवेदर्भकुरुदेसजु

मपितालग्नदिनसुन्नपगाय। अविल्हेसविवाहीमोहिआय। लिछमणावाच। ब्रतब्रहतसेन
कियेमबन्नेद। सबआयन्रपतिअतिबलसमेध। यद्यपिकियउद्यमन्रपसमाज। काहूनसध्यो
रूषवेधकाज। जउनाथइहांनिक्रमरमजान। तहांमछवेधकियेबानतान। वरमालजबैमेकंठ
आइ। विस्वेसम्वलेमोकहविवाह। राजानसबैमदगतरिसाय। यहारेकोउष्टनपंथआय। सारं
गधनुषगुनबानसंध। काटेसबहिनकेभुजाकंध। पाविष्टदेषसोत्रासपाय। उनिगयेसेषकातर
ढुलाय। सग्राम जीततहासत्रूसाल। प्रभ्रमोहियेहलाएक्रपाल। सेषस्त्रीयोवाच। नरकासुरना
माअसुरएक ~~[crossed out]~~ उहजीतजीतराजाअनेक। हमकिंन्याआंनीहेरहेर। घरमंक्रसु
राषीघेरघेर। उनिसुन्योतहांहमहरिप्रभाव। सबहीनलछोतहाब्रतसुभाव। अभिलाषहमारे
चितएह। देवीवरहमहीक्रस्नदेह। प्रभुसबहिनकोमनभावपाय। इहांनरकासुरबधकसोआ
य। एकिन्यासबद्वारिकाआंन। उनएकलग्नब्याहीप्रमांन। अभलाषक्रयेपूरनअनेक। इहई
ब्याहेमनमांक्रएक। विधसोयहतबितवारवार। नवभवहमपावहिहरीभ्रथार। दुहा। सब
हिनकीसंभावना। मनमोहनतनमाक्र। चितवतचंदचिकोरला। निसादिवसरुसांक। २ कहे
द्रौपदीसुकथा। विधजुतहसिहसिवांम। उग्रभागजागेयहां। हमवरसुंदरसाम। ३। इतिश्रीभा
गवतेमहापुराणेसुक्रमारगेदसमो॰ इतिद्रोपदीप्रतेरुषमलीआद्यविवाहकथानामोत
इयासीमोध्याय। ८३। कविरोवाच। छंद ७। पंचालीश्रृष्टिआदहससवेम। निसिषकछोरुषमनि
सनेम। क्रमजथाब्याइश्रीक्रस्नकीन। उन्सकलधर्मवनताप्रवीन। कुरषेत्रजितेमुनिपर्व
काज। सोइआयक्रस्नदरसनसमाज। द्वैपायननारदच्यिमनदेष। अरुविस्वामित्रदेवलविसे
ष। उजसतानंदअरुभारद्वाज। सुषफरसरामगोतमसमाज। गालववसिष्टभ्रगुरिषसज्ञा
न। उबिमिलउलिस्तकसपप्रमांन। अरुअत्रबृहसपतहांआय। अरुवुजमार्कंडेवमिलसुभा
य। एकंतद्वुतियअरुत्रतियएव। अंगिरअगस्तउजवामदेव। अरुजिझबलकइसाद्यआ
य। स्रवतेजसुधतपबलसुभाय। अविलोकउनहिमिलक्रस्नराम। पंक्रवजुतकीनेबहुप्रनांम। उ
जवरकरुअर्घासनजुदीन। प्रभुकछोमहामाधवप्रवीन। इहांदयोदरसतुमआजदेव। क्रमभ
येहमारेसफलएव। जलमेयहतीरथसकलजान। प्रतिमासुदेवपारथप्रमांन। सोफलतकष्ट
चिरकालदेव। द्रुजदरसमात्रहैसफलसेव। मुनीरोवाच। तुमइस्वरसरगुनरूपआप। उनधर
तदेहहरनप्रताप। अरुनीतधरमपालकअषंक्र। उष्टनक्रूदेहैमहादंक्र। अषिलेसअगममाया
अपार। कारुनारूपतवनमसकार। वसुदेववाच। मिलबेठसभातबरिषसमाज। क्रतहोतध
रमचरचासकाज। वसुदेवयहैपूछितविचार। तुमतेकालइवरिजितविकार। भवहीतक
रमकिहकर्मभग। प्रभुकहोप्रगटअबसोप्रसंग। नारदवाच। सुनबोलेतहांनारदरिषेस। निरधा
रदेवयहमतनरेस। मुनिकह्योजज्ञानारदनिदांन। सिधांतसुनऊजाउवरसुजांन। जिझरू
तेकटतहैकरमजाल। विधजुक्तहोयप्रसनविसाल। धरदेहउत्तमवासुदेव। हैदिव्यरूपदेवा
धदेव। उनहोतअषिलइस्वरअनंत। तुमप्रछतजोपेपरमतंत। भगवंतजानक्रभज्ञभाव। उ
नइबलदेवमायाप्रभाव। हैनिकटअनादरतासहोय। जलजैथा[illegible]गंगगतजिआंनजोय। ॥ क
विरोवाच। करजिनजनतनआरंभकीन। पुनमिलेसबैमुनीवरप्रवीन। भगवंतहेतकरिजि

हि

कहत नंदयेह नंदलाल ॥ ६ ॥ उदै सरूप अनूप उर धरिकु सदा सुष धांम ॥ तुनि मम को
तही जोत मिल करिकु सुषनि कांम ॥ ७ ॥ हे प्रभु परे न वकूं भमद ॥ जोगी जती अजान ॥ कष्ट
सहे बक कालकरि नाहिन लहत निदान ॥ ८ ॥ गोपीवाच ॥ हे प्रभु दीनानाथ हर ॥ अंबुज
चरन अनूप ॥ सुयह मेरे उर वस कु सुंदर सांम सरूप ॥ ९ ॥ वृजलीला हरी बिबविमज ॥ तु
नगोपिन को प्रेम ॥ नर हर भागत भक्त निज ॥ इहै निरंतर नेम ॥ १० ॥ इति श्री भागवते महापुरा
णे मुक्त मारगे दसमो स्कंध अनुसारेणे भाषा बारवन रहरदासेन विरचिते ॥ कुरषेत्रे
जात्रा आगमन श्री कृष्न गोपिका मिलन बयासीमो ध्याय ॥ ८२ ॥ कविरोवाच ॥ दुहा ॥
पांडव आए कृष्न पह जथा भक्त हित जांन ॥ मनवंछत जिन कह मिले ॥ इरनक पाइमा
न ॥ १ ॥ छंद ॥ इहां पांडु पुत्र सब मिलि आय ॥ बैठे सुधरम पर षद बनाय ॥ कुसलात कृष्न बूझी
कृपाल ॥ सुत धरम दयो उतर रसाल ॥ तव चरन कवल इरन प्रभाव ॥ विस्वास विहत मांने
प्रभाव ॥ अघिल्ह सकृष्न तिन के अनंत ॥ नित मंगल यह वरतै निरंत ॥ नव भूत हेत हरहर
न नार ॥ तुम न ये देव मनुजावतार ॥ कोरव अरु पांडव जदु कलित्र ॥ एन ये सबै तहां जु एक
त्र ॥ क्रम जुक्त राज रमनी अनेक ॥ विधि कहत बात सुभत विवेक ॥ सो रद सस्त्र सत एक सं
ग ॥ पै आवै पटरांनी उसंग ॥ श्रीकृष्न देव वनिता अनूप ॥ सुनै लछन जोबन गुन सरूप ॥ द्रौपद
उवाच ॥ तहां द्रौपद सुता सुश्रौ विष्यात ॥ विधि कहो आपनी व्याह बात ॥ रुकमणीवाच ॥ इक भ्रात
रुकम मम मदांध ॥ सिसपाल सर सकी नौस मंध ॥ सेन्या अनेक राजा सहाय ॥ उहां चैंदरा
ज सिसुपाल आय ॥ नुवपती सबै करि मांण भंग ॥ गदि वासुदेव लाये अभंग ॥ अज जदुथम
ध्यते सीह आय ॥ जिय मांनै ताही कूं लेजाय ॥ यह भांत मोहि लाए अनंत ॥ दुष्टन षलन कू केती
रदंत ॥ जामवतीवाच ॥ अति बली पिता मोहि जाबवंत ॥ जरजरत देह जु धन जयत ॥ मह वस
तरी बगिर विवर माहि ॥ नर अमर तहां को उगमनाहि ॥ दिन एक आयत हां कृष्न देव ॥ उत जा
बवंत तहां भिर अजेव ॥ अठवीस अहो निसल रे आंन ॥ प्रभु को प्रभाव नाहिन पिछान ॥ ईस्वासु
देव जाने अनंत ॥ संग दइ मोहि मिन व्याह संत ॥ सतभामावाच ॥ मम पिता बंधु बध किये विरोध
सो इस सिंघ हतो पायो न सोध ॥ मन संजुत ताको वद रमान ॥ उह दयो कृष्न कह दोष आंन ॥ नि
रदोष कृष्न यो मन मलीन ॥ कत मुधि या वन तिह गवन कीन ॥ पुन षोज जथा कम मनि सु
पाय ॥ इह सत्राजित कह दइ आय ॥ यह दयो दोष निरदोष वंत ॥ उवसा षव परवा ह्रो दुरंत व
ह पिता मोहि उर त्रास आंन ॥ उनि दइ व्याह प्राने सप्रांन ॥ कालंदीवाच ॥ मै स्याम चरन को स[illegible]
रन मांन ॥ अभिलाष चित्त तप कस्यो आंन ॥ जगदीस अंत रभाव जांन ॥ हित कस्यो स्याम मेरो स
मान ॥ उनि प्रबल सषा अर्जुन प्रवीन ॥ करुनानिधान कर यह न कीन ॥ [illegible]वाच ॥ क तव्याह काज
पितु सान कूल ॥ मोहि हेत सुयंबर रच्यो मूल ॥ उहां देस देस के नृप आन ॥ उनिज या जोइ बैठे प्र
मांन ॥ उह वीच तबै अषिले स आय ॥ आकर षधरी रथ पर उठाय ॥ इह भांत मोहि निज ये ह आंन ॥
प्रभु कस्यो व्याह राक सब मांन ॥ सत्यावाच ॥ नग्नजित राज मम पिता नाम ॥ कियेनेम वृषभ न नाथन
स कांम ॥ प्रभु कस्यो जहां सो व्रत प्रमांन ॥ विधि जुक्त व्याह मंगल विधांन ॥ कर रथारोह वाले कपाल
लष पंथ आन रोके नृपाल ॥ तब माधव धरि धरि धनुष बांन ॥ नप सब को कीनो हीनमांन ॥ भद्रावाच ॥ म

दपधरी॥ मनुअतुलतेजमारीचनांम॥ वनितातिह उरणिधरमवांम॥ तिह षटजन षट पुत्रपाय॥
सोवढतनयेक्रमक्रमसुनाय॥ इकदिवसपितातिनकोतुआय॥ पुवितनविति योद्रिष्टपाय॥
पुत्रनवहताकोमरमपाय॥ इक दिवस पिता तिनकेतुआयसोहसजुतउठेअपनेसुनाय॥ उ
स्साइकोपितुयहआपदीन॥ रिषनेमरीचितहामनमलीन॥ पापिष्टजोनतुअसुरपाय॥ जग
तथाकरमअनुसरहूजाय॥ एहरनकसपकेउदरआंन॥ पुनन्नयेपुत्रक्रमजुतपमांन॥
पुनमरेजोइमायाप्रभाव॥ अवितरेदेवकीगरभआय॥ तेक्रमक्रममारेदुष्टकंस॥ निरदइसि
लापटकेनिसंस॥ पुनितिनहिमंत्रअपनेप्रमांन॥ उरदहतदेवकीसोवआंन॥ तबजोकमाकहै
वहसुतंत्र॥ मोहिआनदेकुयहमूलमंत्र॥ प्रनासपेत्रवाच॥ इकसमरनामकुमीयेआन॥ प
रीषगपतंग सुएप्रमांन॥ बदनूकघृणीएषटसरूप॥ इहनएजोनआसुरअनूप॥ इहदैत
राजसोदएआंन॥ मोहनतहांआनेमोहमांन॥ बलराजकरेलेअयबाज॥ प्रभुकेपुनीततन
परसपाय॥ वेबालनयेसंक्रितिआय॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेप्रभुक्रमार्गेदसमोस्कं
॥ कंसहतदेवकीपुत्रमिलावनोनाम॥ पिंचियसीमोध्याय॥ ८५॥ दुहा॥ सुकहिपरीषतमं
नसुष विधयहसुविचार॥ पायसुभद्रापाणिगहि॥ कहिएजथाप्रकार॥ १॥ एक समय अर्जुनत्र
नय करितीरथव्रतकाज॥ आयेषेत्रप्रभासयह॥ सबमिलविप्रसमाज॥ २॥ सकरषनकीसहो
दरी॥ सुनीसुभद्रानाम॥ पतिमालबनरूपगुन॥ भइसजज्ञानांम॥ ३॥ दुरजोधनकहिदैनको
कियबलभइविचार॥ काकुनपूछतऔरकु॥ अपनीबुधअनुसार॥ ४॥ सोअरजुनइ
हवातसुन॥ उपजोमनअदेस॥ काकुजनइहकिंनका॥ पातबुधवेस॥ ५॥ कविरोवाच॥
छंद उधपरी॥ करयोरूपसन्यासस्मकारन॥ धरितुरकपटत्रदंडीधारन॥ अर्जनिबेधारि
काआयो॥ वचकनैषवैरागवनायो॥ पूजतसबैयाद्दिवासीपुर॥ गहतज्ञांनउपदेसज
थागुर॥ करयो निमंत्रणभोजनकारण॥ महापुरषबलदेवजांनमन॥ इहबलदेव
गेहतबआयो॥ विहतमध्यआसनबैगायो॥ इहांपरसपरकिन्याअर्जन॥ अन्योन्य
नयनयेअविलोकन॥ तातेइहइगमरागवद्योतह॥ उपजिप्रथमअनंगदसाइहहां
रहेसमतइकअरजुन॥ ताकतछिद्रकष्टनिजनाजन॥ करुनिमंत्रसुभद्रकुमारी॥ इ
जतदेवीआपपधारी॥ करयहिरथआरोहितकीनी॥ ताकतघातजुवनीनवीनी॥ धरिगां
जिवधनुषतहांधायो॥ अरजुनपाछेहिलागेआयो॥ समयपायपूब्यजबस्वाररथ
रथतिहबैकूदसदारथ॥ किन्याहरनपार्थजबकीनो॥ निरषतसंकटकुटमनदीनो॥ सो
वसुदेवकृष्णकेसबत॥ इदप्रहस्तलायोबलअद्भुत॥ इहबलदेवक्रोधअतकीनो॥ उ
नजोवरजेकृष्णप्रवीनो॥ श्रीकृष्णोवाच॥ कहिकुभ्रातअबमारिहोकोने॥ होतदईवस
जोकछुहैने॥ भगनीआंनजुकाकहेहे॥ लोकमाकजोअविगलेहो॥ सकरषनबकुचि
धसमजाए॥ योकहिकृष्णसोतिउपजाए॥ अरजुनग्रेहसुभद्राआंनी॥ धरमराजकीतहां
रजधांनी॥ दुहा॥ हरिआंनीकिन्याजहरि॥ अरुबकुभएउह॥ अर्जुनसुभद्राकोइहांव
रीजुराकसयाह॥ १॥ इतिसुभद्रा व्याह॥ मिथलापुरीबलानृपत॥ हेतहांवसतविदेह
मनसावाचाकरमना॥ संतमककृष्णसनेह॥ २॥ छंद॥ श्रुतनामइक द्विजसज्ञांन

गभनाव जगदीसजनक कअसुनजाय॥ उनजयोजीज्ञपूरनप्रमांन॥ निरघोषवजेमंगल
निसांन॥ रामदयआनवसुदेवराय॥ समत्रियाकुटमअपनेसुनाय॥ मषअंतकस्रोमं
~~निसांन रामदयआनवसुदेवराय समत्रियाकुटमअपनेसुनाय मषअंतक~~जनमहीस
सुनदानमानमुनिवरसदीस॥ वसुदेवदेवकीलोकसिध॥ अनिलाषदएपूरनप्रसिध॥ वसुदेवनंद
मिलकरतवात॥ प्रथीप्रसिधमित्रीउनात। वसुदेववाच। प्रीतमउरंतयहमोहपास॥ जोगेससिधपर
श्रमणजास॥ तवपीत मउरणनएन्रात॥ जिहकारनअबविछुरोनजात॥ प्रथमहमहमहीजामि
त्र॥ तिनकेसुनावउस्तचिरित्र॥ पीतमभ्वषअविरलजलपवाह॥ थकिरहतनपावतप्रेमथाह॥ पर
सपरप्रीतपूरनप्रमांन॥ मिलदईविदाबकुदानमांन॥ इहांनंदादिकव्रजघोषआय॥ सिवरत
नितपीतमहितसुनाय। दुहा॥ इहाविरषारितुआगमन॥ करिजात्राकुरषेत॥ कीनोआवनद्वा
रिका॥ जादवधरमविजेत। इतिश्रीभागवतेमहापुराणेमुकंमार्गदसमस्कंधअनुसारने। इ
तिवसुदेवकुरषेत्रजात्राकरनोनाम्।वरासीमोध्याय।८४।कविरोवाच।दुहा। एकसमय
द्वारावती॥ वनिवैगेवसुदेव॥ तवसकरषनकृषनतहां॥ आयेपुत्रअजेव॥ १ देषपितातवपुत्र
दिस॥ कवसमरणकमहेत॥ कृषनप्रनागुनकृषनके॥ रिदेनकरेकुरषेत॥ २। कविरोवाचवं
दप॥ वसुदेवकसोतबविमलवांन॥ तुमपरमपुरषवेदनप्रमांन॥ विष्यातमहोतुमवासुदे
व॥ नवरवतविनासतआपनेव॥ एअर्कआद्यजेजोतिवंत॥ उनमांकतुमहिनासतअनंत
थिरउर्बीविषमागिरविथार॥ कमनादवर्नअरुओउंकार॥ नवनूतमहाईदीसुनाय॥
स्वातकरजतामसगुनसुरूप॥ तवमायाकलिपतभुवननूप॥ अरुसुषमगतीप्रभुकीअ
नंत॥ अज्ञाननजानतआदअंत॥ कमबंधुनमतनवनूतकोय॥ याहितेफेरअगमनहो
य॥ स्वारथहितनटकतसिधुसात॥ ताहीतेजनमजुबथाजात॥ संपतकुटंबअरुतनस
मेत॥ हैममतामांनतबूधहेत॥ सोपासबंधतिनकेसनेह॥ बिनरहोनपावतकरमवेह
पोराणपुरषनिरगुणप्रसिध॥ सुतनांहिनमेरेस्वयंसिध॥ भूवभारविनासनतेहनूप॥ रिव
वकधरयोतुममनुजरूप॥ वस्तांनपुत्रमोहियेवीर॥ सोजगतप्रमांनसुदरसरीर। श्रीकृष्न
वाच। सुतकृषनतहांबोलेसुनाय॥ पितमहातततुमनहियाय। कविरोवा। उनमातपिता
तवज्ञांनपाय॥ सुतआदिब्रह्मजानेसुनाय॥ इनदएविप्रकेपुत्रआंन॥ जगदीसजथाज
मलोकजांन॥ हैअप्रमेयआतमअनंत॥ हैस्पाममहाजोगेससंत। वसुदेववाच। आगेतु
मगुरकेपुत्रआंन॥ उनदएदछनागुरप्रमान॥ करवैरनावममपुत्रकंस॥ सोइहतेबाल
वयपहनसंस॥ मेरेसुतदीजैआनमोहि॥ तातेअबजाचतपुत्रतोहि। कविरोवाच। अबिल्हेस
कृषनतबसुनितुदास॥ कृतसुतलगवनवासुदेकुवार॥ बलराजप्रभूकृतबपिबांन॥ अतिन
कृकरेरुवतिआंन॥ उनदइतराजप्रभुपदपषार॥ सकुटमउदकसोसीसधार॥ प्रभुकरे
जथाश्रुताप्रवीन॥ करजोरदीनकैप्रणितकीन। बलरोवच। दुहा। नमोअनंतब्रह्मनूप॥ क
ष्नप्रेमनिजकाय॥ सांषजोगसाधकअगुन॥ संततवेदसहाय॥ ३ पतिमाराजसतमप्र
कृत॥ बांणीहतकप्रमांन॥ प्रभुदरसनपावनप्रगट॥ ऐसेकहूदियआंन॥ ४ आगेकारनजो
उचित॥ कहियेकमलाकंथ॥ हितयुतसेवकजांनमोहि॥ अज्ञादेउअनंत। श्रीकृष्नवाच।

संकरकेनगंत। नियतअउमनिरधार। क्रमयुतिद्विजकविद्धूक।२।श्रीसुकदेववा।।छंद।।
सिवसक्त अगुणरूपीसंजोइ। गुनतेप्रकारक्रयअप्रियोइ। निरगुनकुसदाविष्नुनिदा
न। प्रभुप्रकितउरपसपैप्रमांन। उनजनतहिनिर्गुनताहिपाय। जननिर्धननिरगुनमां
कजाय। नृपकुंतीजधिष्टरउरनरेस। वरवीरपित्तामहतवविसेस। हयमेधनयोपूरनप्रमां
न। नृपपूछितहाकछहिनिदांन। श्रीकृस्नउवाच। पितकरूकृपाजासुविसेष। सबहत
ताहिसंपतअसेष। जबवाकोसंपतजाइजाय। सबकुटबत्याहिबोहसुजाय। जोकरे
सुउद्यमअफलजाय। वाकोजबउपजेविरतआय। जोहोयकांमनारहतजीवदुख
सुखनिखतधावेदइव। करिधमध्यांनरूपैअकांम। महिहोतमुक्तमिलपरमधांम। हविअ
वरदेवकोनकहोय। सविकबकुमुक्तपावेनसोय। यहअवरदेवसुरपतिअनेक। उ
नकेवसकौनांहिनमुक्तएक। मुक्तकेदेवभगवांनमांन। जगयहैवेदवाचासुजांन। अथ
वृकासुरप्रसंग।। सिवदेवबृकासुरवरसमाप। वाहीकेसंकटपरेआप। बृकनारदरिषहिआ
यकैवेगवरसुरसोवताय। विधविष्नुरुद्रकिंबाविनीत। उनसबहिनतुमजाचतउनी
त। नारदौवाच। हैउराराध्यविधविष्नदेव। सोफलैनवाचिरकालसेव। हरसेववेगहीप्रसहो
य। करिक्रोधकदाचितहेतकोय। वरपायहोयपीतमप्रसन। तिहकरेंअनादरकुमततिन
वरइच्छाहैजोवेगवीर। सिवहेतकरकुतोतपसधीर। कविरोवा। उनअसुरस्रवननार
दश्रमांन। थितभयोआयकेलासथांन। करिअगनकुंडदंपतिप्रकास। निजमाससुहोम
तरुद्रनाम। कयप्रघरुद्रतपउग्रहेत। सोनिकसअग्नितेतनसमेत। करकरषनिवारन
असुरकीन। उनकस्योहोमपूरनप्रवीन। रुद्रवाच।। जिहहेतकस्योतपकामजीत। बृकमा
गरूसौवरविधविनीत। बृकोवाच। किहसीसकरूकरसीसकोय। असुरासुरनरसोउन
समहोय। कविरोवाच। इतरुद्रकस्योसो उवरप्रमान। बृकपायोमनवंछतविधांन। सोअ
सुरनावइहइष्टसाथ। पापिष्टकरेकारनउपाध। ईइदेवजोइवरदांनदीन। तेमननएरु
द्रपापेमलीन। आसुरमदघटीआव। भयोदिष्टसिवापनकोमनाव। सिवसीसहा
थमेलनसुभाव। आसुरमनचीतेयहउपाव। भवलखिअसुरकेचितभेद ‥ षिसवले
नाजितहांअतिसषेद। आतमकृतअपनोदोषआंन। मनमाहिरुद्रतहातासमान।
भवजेजातअंतरनयांन। उहांअसुरपीठधावतअज्ञांन। तबचमेरुद्रजहांतहां
संताप। पंथउष्टजायउहचेसपाप। उषभयेरुद्रतहांभ्रमतदीन। करुणानिधांनको
ध्यांनकीन। अंतरगतव्यापकहैअनंत। कियेसिवारूपतहारमाकंथ। अपलेसुरगठे
मध्यआय। पिष्टगतभयेसिवगयेबुलाय। करमोहविवसयहविरतकीन। प्रभूकपटरू
पबोलेप्रवीन। कपटोवा। तूंकोनभयोअतिभ्रमतआज। किहकारनधावतकहाका
ज। बृकोवाच। मोननिजोपूछतहेतमोह। तुवहेतनमोअबलाहितोहि। ममग्रेहवलकु
समप्रीतमांन। करअन्नयचितसबबाहकांन। सिवावाचवादुहा। सिवारूपकहिअसुरसू
तोपेवरहत्तोहि। करिजुगउर्धजुनृत्यकरे। मनकुरिझावेमोहि।१। स्वांमीनिप्रतिहरषसे
नजिनाटकइहभांत। कमजुतमेरेचितकीतबबूजतहेप्यांत।४। सोआरवलस्रवनसु

×नामबंशुरदेकमहाबीर। संकुतिजौइनममहेखधारि। बृकउबाच। जबबुझौ×

कृस्न: २२०

सोवसभ्रीतामेत्रमान॥जगजथालाभसंतोबजान॥इहकरतकाजवंभनाआन॥सुन
ताकहकृस्नविचित्रमनितकरेन्नजनिसदिनसनेम॥अतिलाषकृस्नदरसनअनंत॥सोभि
दराजडुजकरतसंत॥प्रभुताकोअंतरभावपाय॥अभिल्हेसदियेतहांदरसआय॥यहानं
रदादरिषवरअनंत॥मिलकृस्नसंगसोचलिमहंत॥आवतभ्वनकरुदेसआय॥अरजानि
लटाकहिमबजाय॥पंचालकुंतमधुकयप्रवेस॥सुभकोसिलकेकिलघदेस॥प्रभुजनको
अंतरभावपाय॥अभिल्हेसुरमिथलापुरीआय॥बकुलासनृपतिश्रुतदेवविप्र॥प्रभुसनमु
षआएतहांबिप्र॥पूजाप्रभावकरिलगेपाय॥सुतदरूनिमंत्रकियेसुजाय॥देवाधिदेवध
रिउभयदेह॥सबसुरिषनसंगमुसंजुतसनेह॥दकुग्येहकरेभोजनदयाल॥करुनानिधा
नएकहिकाल॥उनकरीतबेअस्तुतअनेक॥आतमपरमातमपुरषएक॥दीननकोमा
धवदरसदेत॥हैकोनजाहिनहीबरनहेत॥सबभातकस्येतिहसमाधान॥धरिसीसहा
थकरुनानिधान॥अबल्हेसद्वारिकापुरीआय॥सुषकरतभयेदीननसहाय॥इतिश्री
भागवतेमहापुराणेमुक्तमार्गेदसम॰भाषाबारवनं॰बयासीमोध्यायः॥८२॥परीक्षतोवा
चा॥दुहा॥कह्योब्रह्मजुगजोरकर॥यहांपरीषतराय॥जथावेदउतपतिजग॥सुकमुनिक
होसुनाय॥१॥सुकोवाच॥छंदअबरी॥मुनिनारदयकसमयमानमन॥करतप्रथ्वीपरअ
टनसकारन॥इहांनरनारायनपहआए॥भ्रमतबदकाश्रममनभाए॥नरषषरूकेस
कलरिषिसुर॥वेवेसभाविलोकेबुधबर॥तिनमहिनरनारायनतैसे॥उडगनमध्यनिसाकर
ऐसे॥जोतुमबातमोदिहबीजद॥नरनारायनप्रतिसोईनारद॥नरनारायणोवाच॥काकुस
मयआगेकालंतर॥मिलजनजौकसभामुनीवर॥ब्रह्मज्ञांनचर्चाविस्तारी॥भयेब्रह्मरिषहरि
षतभारी॥रिहृसेसुरोवाच॥सबनहिनकसोअहोमधुसुदन॥प्रभुतुमआद्यबुध्यवसपूरन
वेदनकीउतितिवतावरू॥स्वामीआदिअंतसमफावरू॥सनंदनवाच॥कविरोवाच॥१॥नपू
रषसमययकपावन॥माधवकरीसईनईछ्यामन॥तहांप्रलयतबभयोप्रथ्वीतलज
हांतहांथलपूरस्योजल॥पुरषअनादियसिधप्रमांनी॥सबैसिष्टताउदरसमांनी॥सोयर
हेजलअंतरस्वामी॥भक्तउपासकअंतरजांमी॥यायअवधजागेप्रभुपावन॥ईछ्यानइ
सिष्टउपजावन॥प्रथमस्वामनिकसेववपावन॥वेदनएसोइधरमवढावन॥भक्तइसनि
वेदनजांनी॥महास्तुतकरीमनमांनी॥जोतिस्वरूपवेदधुनजागे॥पुरषप्रसिधभक्तरस
पागे॥ज्योबंदीजननृपहिजगावत॥बोलतबातेबिरदवढावत॥निर्गुनसगुनरूपनाराय
न॥पुनितिहवरनन किरेसुहितपुन॥प्रभुकोवारपारनहीपायो॥नेतनेततिहवेदवता
यो॥कविरोवा॰॥निगममर्मयहसुनिकेनारद॥विदाभयेजबबुधविसारद॥आश्रमदैपायन
केआये॥मुनिबेवेतहांआदरपाए॥नरनारायणोवाच॥नरनारायणभ्वनिरंतर॥ब्यास
हिकदेजथाविधविस्तर॥पिताप्रसंगयहैदैपायन॥उनहिकतउपदेसपरायन॥इहसु
कपरमतत्वजोपायो॥सुपेपरीक्षितनृपहिसुनायो॥इतिश्रीभागवतेमहापुराणेमुक्तमा
रगेदसमस्कं॰भाषाबारवन॰कविरोवाच॥८३॥सो॰॥८७॥३॥यहांपरीक्षितएह अर्थज
पूछ्योएकदिन॥सुकमममनसंदेह॥सोतुमभेटनकैसमथ॥१॥पावतरिषअपार॥नवजे

सोअविधपाय। सोकहैमोहिकरिकुसहाय। उहहोयनरषा जोअसेष। उनकरि
कृतनमंगलप्रवेस। कविरोवाच। यहसुनतविप्रबोल्यौअधीर। बलदेवकृष्णप्रउ
मनसुवीर। करिहौनयाहिजोजतनआज। कहौतुमतेसरिकुनकहाकाज। अर्जुनव
होरामकृष्णनाहिननिदान। गांडीवधरनअरजुनसहान। इकत्रंबपतोषनमंत्रआहि
हैसाथमोहिकुनजततादि। जीतरुम्रतुबलतासुजांन। अरुदेकृतेरोउत्रआंन। क
वरोवाच। लषदसमउत्रकोपसवकाल। कहिअरजनसोउजतातकाल। सोसुनतमात्र
अरजुनसधीर। सुविनयौतथामंजनसरीर। दुजयेहआयअरजुनदयाल। संधानवां
नकियसत्रसाल। अधउर्धसुतिकायेइआंन। पारथबकृरषाकरिप्रमानकरितहास
रपंजरकुराल। देरषातहांवाढौदयाल। कालगतप्रबलजानेनकोय। सुतजातमात्र
मरिगयोसोय। दुजअरजुननंद्याकरीदेष। व्रतनयोजुमिथ्याइहविसेष। इहांअर्जुनत
बजमलोकआय। पैतहांविप्रबालकनपाय। इंनइदअग्ननैरितप्रमांन। अरुअगनदि
षनईसांनआंन। उनवरुणरसातलननपजंत। दुजमृतकउत्रदेष्योदिगंत। पैविप्रबाल
काकुनपाय। इहांअर्जुनद्वारावतीआय। अविलोकलोकजोकनअसेष। उनकरनल
गोमंगलप्रवेस। श्रीकृष्णवाच। प्रभुकह्यौकृष्णयहभेदपाय। सोमौनमरणकरकुसहाय
प्रभुलयोसंगअर्जुनप्रवीन। यहाकृष्णरथहिआरोहकीन। हरीदीपलोकनीरधनिहा
रपरबतगएलोकालोकपार। गोबिंदआयपिछमदिगंत। अधारउहांदेष्योअनंत। म
हनएअस्तगतीतहांनान। पावेनपंथतमअतिप्रमांन। जोगेसकृष्णयहांदेषजोग
प्रभुनिजप्रभावचितीयोप्रियोग्प। पेख्यौसुसुद्रसनचक्रपांन। इहांकरूयौअपिलत
मदुरआंन। उनतहांचक्रकीनोप्रकास। तवप्रथीतापनहीसहयौतास। उनिसलिल
माउकीनोप्रवेस। देष्योइकमिंदरवहांप्रवेस। सहंस्रफलदेषजुतमनसतेज। सोमणिकैउ
परसुषसेज। इस्वरीजोतप्रतिमाअनूप। राजतजिहउपरअतुलरूप। सुप्रघनवदनतनस
घनसांम। कुंडलकिरीटमणिरतनतांम। सुनलबनतनसोभाविसाल। मणिलसतउरुज
वैजंतिमाल। तनपीतवसनभुजअष्टतास। प्रतिअंगअंगसोना [illegible] प्रकास। पारषदस
कलवाटेउनीत। अणिमादसिधआयुधअनीत। करिकिष्णपार्थजुतनमस्कार। अरुहाथजो
रगटेउदार। अषलेसउरस [illegible] हसकेअनंत। प्रनश्नकुसलआगमप्रजंत। श्रीकृष्ण
वाच। एवमउत्रमैयहांआंन। प्रनूदरसनतवकारनप्रमांन। हेदेहधरयौमैधरमहेत। मनु
जवंतारअमरनसमेत। भगवंतउतास्यौमनमार। अबआवतहैहमकृउदार। भगवं
तवाच। हेकृष्णआदतुमउरषकांम। अषलेसरइद्राधरअमाम। तिहउरवउरषमहि
माप्रमान। वेबालकदीनेयहांआंन। कविरोवाच। दुहा। वेबालकदीनेयहां। द्वारावतीद
याल। करधरदीनेविप्रके। प्रभुऐसेप्रतिपाल। ध। जरतअगनराषेअर्जुन। कृष्णपरिछि
तनकीन। दुष्मनदाताद्रनके। देवसहायकदीन। प। करमपराक्रमकृष्णके। कहनसम
मरथकोय। कहैजथानरहरसकव। संतवतावतसोय। ६। इतिश्री ना० महाप्रभुकृष्ण ०द०
नागावा० उजउत्रैषाग्र मनोनामानईयासीमोध्यायाः ८९। दुहा। कहजथाविधवा

नि [redacted] मायावसमोमुट कस्यौसुमोहितरूपकजो अंगीकारअगुटपसि
रउपरिकरआनसो नाचीअसुरअज्ञान ताहीकेकृतकरितहां नसमकसौनग
वान ६ संकटहाखोसिंनकौनासकस्यौ निसवार हैनरहरखन्दीनदित अैसद
रीउदार ७ तातेसंकटकौविरत करिदितगावैकोय जन्मजन्मजाकेजयो हैतनसं
गटहोय ८ इतिश्रीभागवतेमहापु० स्कं० दसमं नाबाबारणबृषासुरबधनोनामअष्टा
सीमोध्याय ८८ कविरोवाच दुहा सरसतिसरितातट सबै मिलरिषराजसमाज जथा
वेदविधजगजन करतब्रह्महितकाज १ रिषरोवाच तर्ककरीयकसमयतहां बुजवर
निगमनिदान महाश्रेष्ठत्रयदेवमह पेकोउकहोप्रमांन २ छंदपध तहं ब्रह्मपुत्र
गुतपतपाय याकरसुनसबदिनकसोआय भ्रगुकरहुजायनिरणयअनीत
तुमपरमउजपतिमाजुनीत कविरोवाच विधलोकआयभ्रगुतिहांविचार कीनेतब
पितुकोनमस्कार उवत्रमतबैसुतमिलनआय भ्रगुबैवतनाअपनेसुनाय उह
आयकोपमनमहअसेस विधकस्यौनआदरकछुविसेस उहांकृतकमेकेलासज्ञा
य सिवउगमिलनआयेसुनाय करउनयरुद्रतहांअयकीन लषमिलतन्भ्रगुक
रसमरलीन संकरतहांरिसकरधरत्रसूल लषकोपसिवागहिवरनसूल भ्रगुच
लेनागमनभयसनीत बुलविस्नलोकआयेउनीत सुषसेजसयनकमलासमां
न निद्रागतलएकरुनानिधान अनिवारतहांभ्रगुविप्रआंन जगदीसहृतेउरला
तजान अविचितउठेपतिमाउदार [redacted] करजोरकरेतहांनमसकार पदविप्र
लोटतआपपांन विस्वेसबोलतहांविमलवांन श्रीकृष्णोवाच मुनिब्रथामहतुमच
रनमूल तातेमनउतरहैवत्रतूल हैविस्वरनपूजकविसेष भ्रष्नासकजोतीर
थअसेष तवचरननिक्रपावनथसिद्ध सबकालरहोममहृदयसिध कविरोवा
च भ्रुकरीजथाबुजाषवीन देवाधदेवबुजवीदादीन मुनिआयतहांउजवदूसमा
ज कारनसबविनियोतहांसकाज सुनकियप्रमानयहरियसमाथ निरधार
विस्नूत्रयलोकनाथ इनतेनबडोकोउअमरआंन पेयहेनिगमआगमप्रमांन इ
तिदेवपरबदा दुहा विप्रएकद्वारावती वसेजुरहितविकार जथालाभसंतोषजुत
अविलब्रह्मआचार १ छंदप इकउत्रतयोविप्रउदरआन सोतुजातमात्रमरगयोजा
न उजगयोमृतकलेराजद्वार विलपतअतिरोवतवारवार सोसनामधर्मबोलत
ससोक लषतादिदुखितसबसुनतलोक विप्रउवाच जोनीदुजहैषीविषयलीन
मुरषमहीपनितचितमलीन कृतबत्रीएसेअधकराल इहबाल [redacted] मस्योमेरोग्र
काल साहंसविहारकृतविकलहोय यहनजिनरेसउपपानसोय कविरोवाच उ
जबालमृतकगयोराजद्वार क्रमजुग्रउत्रनवयहप्रकार इकसमयविप्रसोस
नाआय बुनकरिविलापसबदिनसुनाय उवबोलेअर्जुनयहअनंग प्रतिपा
लनीतपौरषपसंग अर्जुनोवाच सबसस्त्रधरतबत्रीसुजान बुनकेनमिसबर
षाप्रमांन तेउदरनरतषत्रीयनांहि जनउपसहतहैसहतजाहि बुनिहोयउत्र

न निसेषन यो नाहि न निधांन एव पनको ड जादव अनंग सब वरत तजो लाए क संग
सब जाति यन हि मेरो सहाय उपजै न नास का कउ उपाय वादे विरोध यन मे विसेष अपक
त पद है तो पे असेष दुसाध वा सव न होत दाह उपजै आतम कृत उप अथाह घ सत्र
प आप मेवं सघात ज्वाला न लज रिज रिवजल जात दुजवा जका ज करि कुदुरंत पैहो
त सब हिनास हप्रजंत।परिख्यत तो बाच।यहां कसो परीषत बचन एह सुन सुन उपजत है
मनसंदेह।दुहा।ब्रमनन्त कारज विहत कुलगुर सेवत कोय तिह सब सुन संभावना
है तन काऊ होय २ ब्रमकरम विध वेद बुत अरु विद्या बल आप यहां असंभावन इहै
या पद देत न आप ४।श्री सुषदेव बाच।सुषक है यो बचन तहां फेर संत अवितरे न समानुष
अनंत प्रभु तहां चलाए धरम पंथ संसार हि देहै नीत संथ विस्तार करत जगविमल वांन
दुनज थावर ण आश्रम प्रमांन निजधाम गवन इच्छा नि दांन प्रभु जथा अवध पूजा प्रमा
न इहे करीत हाली लाउदार नव नृत हेत तु वधं टरन चार एह इव जो ह्रिष राज आय
तप सिध तबै अपनै सुनाय दुरवासा विस्वामित्र देष अघस्त एवक सिप असेष अंगिरा
ज विल नृगु इहां आय संग वामदेव नारद सुनाय सुन मिल वसिष्ट अरु अत्र सिध इ
तादिक आये वप सुबुध सब सिध साध वंदत संसार विभन विलोक अंतर विकार उपजी
कुबुध नारी अधीन क्रम जोग इहै तब षिरत कीन सुन जक फूल नाषे न सिध पर सप
रक हत दिस दिस प्रसिध अब कर रुक सबै मिल बचन एह कत करे प्रत हां दुजन लेह
सुत कम सांबना मारूप भुत वन्यो अंग अंगन अनूप त्रिय वेष वना यो तबै तास पट
गेव करी ने प्रकास गर्भस्थल बंधे गर्भ गूढ मिल चले बाल वस अदन मूढ वन बाल
तहां सब त्रीया वेष इहां रिषन पास आए असेष करि जोग बाज बल प्रणत कीन प्रभु नृ
काल ज्ञत परम प्रवीन इह बाल प्रस्तुति अवध आय सो उकरत पुत्र इच्छा सुनाय बस
लज्या बोलत न हि न बाल करि जोर कहत स्वामी कृपाल या कै है गर्भ स्थित अनूत प्र
नु कै है उनी किध पूत रिख्यत बै जोग विद्या नुसार पायो सुता दिस ब बल प्रकार।दुर
वासा उवाच।दुरवासा तहां बोले सराप या तै तुम पै है नास आप या कै जु गर्भ क्है है अरि
ष्ट निसे क करे जादव सुनिष्ट।कबिरो वाच।सुन बाल यहै जब दुसह आप उर कंपव ढी भय
व किंत आप वसत्रा स तज्यो ज बत्रिया वेष अयम न यो मूसल तहां असेष उह गिरयो
मुसल उर तै अनूत भूमिपल टवेष उह सो कपूत समजादव सब नृप उग्रसेन सफि
धरम सनावै वे सु षेन यह वी व उहां श्री कृष्ण आय सब कह यो बाल कारन सुनाय सु
न दई तहां अग्यान रेस इह मुसल उपल घस कु असेस भूनि करेन्दपत अग्या प्रमांन
सो इरन यो मुसलूर न समांन वार धम हि गास्यो ताहि वेर उपजे सूता ते तट सुए र उहर हो
मुसल अव सेष आय सो उदध माहि गिरयो सुनाय जब गिल्यो सफर उदर न प जांन सु
नं न यो उदध गत वह प्रमांन मेल्यो जल जाल हि मछ मार सकुट मम बबांध्यो सुढार सो
ई मीन उदर फारयो सुनाय उह सेष लोह निकसे जु आय किहु हेत रहत जहां तहां पक
स निश्चै उदर फारयो सुनाय ... निकसे ... आय

रिका करत बिलास अनेक बेनब बिहत बिहारबन बिद्या बिनय बिबेक १ बास परीषत
सो बिबर कहत दसमई धकार भवतारण भगवंत के सुनऊ श्रवन उटसार २ ॥ पुरबरनन
छंद ॥ पुरबसत बरणयो रूप उनीत बिध जुक्त बिभव बिद्या बिनीत चतुरंगबल तिअज्ञा अ
धीन पुन सविबिध रमप अनुहित प्रवीन गजमत बरूत घूमत अज्ञान प्रतिमा अनूप परबत प्र
मांन प्रतिषंड षंड संभव पमंग अति तेजरंग आक्रत उतंग वाटिका ग्रेह उजल बिसाल
जल केलि जलाश्रय कमलजाल बनबन बिरत्र मृघिया बिहार आषेट षेट कौतिक अ
पार जलथलदि बिहर षेचार जंत सिंघादर दुर्बाणी असंत बनिता समूह बेबित बिहार
प्रतिदिवस षेलवन बन प्रकार अनेक भांतन नाटिक अनूप गति भेद ताल सुर त्रियरू
रूप गंधर्ब नाटिका क्रिड़ ज्ञान दिन प्रति रीझ सुलहत दांन दसषट सहंस्र असतआव
आन पुनराजरमनकहय हप्रमांन इकलाष सहंस्र इकसव अनूप सुत असीन
ये सुंदर सरूप पुन महारथी तिन महि प्रमांन अष्टादस बुध बल अप्रमांन प्र
दुमन सांब अनरुध प्रसिध मनु दिपत मांन द्रुक समर सिध भन नांन बिदु अरुदि
बलरयांन पुन अरुन भान पुहर नप्रमान सुन देव सुनंदन वेदबाहु व निवित्र अ
रु हिकच उत्साह निश्रय बिरुथ निग्रोध नाम पे वकोपहू मन धर्म धाम अनि
रुध भयो ताके अजीत सोवज्र नाम [illegible] नतासुत बिनीत सोवज्र नाम बत माफ
वीर धरि हेत कस्न राष्यो सरीर प्रति बाहु भयो ताके प्रसंस यह कथैं रम भयो
बिसतार वंस प्रथी प्रसिध जादव प्रसंस कुलनाम महनि रघ नन हिन कोय
जुल माय अधर्मी सबन जोय निरबीज निज जप लन हि सतान पुनवचोवं
सयरु बिध प्रमांन त्रयकोट सहंस्र मिल ७ अंन सतएक असीउपर सुजांन पुन
आचार जएते प्रकास तहां पढे बाल षट साल तास कदुक वृर सिष सिष्यान कीन नि
तपटत उक्त बिद्या नवीन इह सुनत बाल संष्या अषंड पायो न पार जादव प्रचंड नि
श्चै करन निर मूल काज रिक्ब कन भये जादव सुराज इह कारन उपजे अमर आय प
रिश्रम पुरष को उद्देत पाय सब दुष्ट असुर कीने संघार भगवान उतासी भूमभार अवि
तरे धरम के हेत आय बवबरण नीत मारग चलाय ॥ दुहा ॥ कष्ण चरित जु दसमको करे सु
नैन र कोय भव सागर दुस्तर जगत हेत पार गत होय १ कलीउ समन नर हर कूंव जय
बुध संजोग प्रभु सुजाचो परम पद हरन भक्त बियोग २ कष्ण देव कारन करन कमष
रन मन कोम पुनि मागत नर हर पतित मे पाउत बधांम ३ ॥ इति श्री भागवते महापुराणे मुक्त
मार्गे दसम स्कंधे नुसारे भाषा बारव नरहरदासेन बिरंचिते । श्री कष्ण द्वारिका मधे राजधा
नी ॥ बरननो नाम नेउमो ध्याय ॥ ९० ॥ दुहा ॥ नियत आघदे पूतना राम कष्ण ब्रजराज कठिन
अरिष्ट बिनास क्रम करे जथा सुरकाज १ कुंता सुत के धेष करि करम अनादर कीन ह
रि कीने ते मन्नहत निग्रह थांन नवीन २ ॥ छंद पध ॥ बिषमो दकलाषा यह बिधान क्रम जुक्त
कपट बियव सब तांन अत्याचार अवज्ञा किये असेष बिध बिध बिदत बैर हि बिसेष ॥ श्री
कष्ण वाच ॥ बिस्वेस कष्ण कीनो बिचार भुव धरयो देह भुव हरन भार मैटा रयो जद पी अप्रमा

रिषनुप्रवीन बलदेवगवनअतउपवियाा१ यातेंनयेसोकाकुलितआप उनकीपलए
कसुक्दपाय अभिल्हेसकष्मतिहवाहुआय प्रभुपसोवरनन्तुंजदव्यरूप यहकवल
नयनप्रतिमाअनूप मकराकृतकुंडलतुरभिमाल वनब्रमसुत्रकिंकिनविसाल ईत्यादिकन
षनअवरअंग अतिसोनालबनगुनअनंग सुनपीतवसनतनवर्णस्यांम संषादिकआ
युधकरसकांम उहांजरानांमरकव्याधआय उनफणाकारपगुनवरनपाय कमजानच
रनपरस्वरनकीन पद्मासनतहबेठेप्रवीन नषजोतजोतमनुमिणप्रमांन नरनारायनक
रुनांनिधांन कमलाविसेषनिज्हीकराल कियमनरूबानसंधानकाल विम्बेसचरनसर
हनौव्याध ईस्वरीअतुलमायाअगाध कछुकरतदिषावतकछुकाल धरिसगुनरूपराजा
धिराज अविलोकचरनचक्राचअंक यहांनिकटव्याधआयानिसंक अदेषचतुरभुजरू
पआप प्रतिमाअनूतषूरणप्रताप वसज्ञानकसोवहजुराव्याध प्रभुआदिपराकृसापरा
ध अवदेजनाथमोहिपरमदंड अपरहेसधरमपालकअषंड प्रभुदंडपात्रजुदंडपाय जन
उनअनर्थकोउकरैजाय।श्रीकृस्नवाच।इहगोरनकोधविरोधआज करिदयाकृस्नबोलेस
काज इहरुष्यासबमेरीअषंड दाताकोजाचककौनदंड अज्ञाहेमेरीव्याधएह दिव्यलो
कजाकुतुमदिव्यदेह मेहतेबालरामावतार उनवदलोलेतुमनऐपार।कविरोवाच।प्रभु
दरसकृपाअज्ञाप्रताप उहस्वर्गविमानचीसरगआप।दुहा।इहांदारकरथतेउतर आगै
गटोआनकीजेअज्ञामोहिकछु माधवजोमनमांन २ पायजयामनजाबपद्म ज्ञौवेकु
ठविवांन तहांइतेनवतयताप्रभुइरुष्यापरिवांन ३ कसोकमतवसूतकौ अवैदारका
जाय इहांनरहिवोउचितअब सोकहिसबनसुनाय ४ लोपेगोलहरीरवन यहमरजाद
अनंग ईद्रपहस्तजनजाकुअब सबअर्जुनकेसंग ५ कियदारकतहांपरिकमए वंद
पदवारमवार आयोउहांद्वारावती उनकहिसबेप्रकार ६ इतिश्रीभागवतेमाहापुराणेमुक्त
मार्गेदसमोस्कंदअनुसारेणभाषाबारवनरहरदासेनविरचितद्वारकाद्वारावतीआगमनो
नाम।बांणुवोध्याय।९२।परीषतवाच।इहांपरीषततनपतअब व्यासहीपूछविचार कृस्न
गवनवैकुंठकउ कीनोकवनप्रकार १ श्रीसुकदेवोवाच।छंद उअषरी।ब्रह्मादिकईद्रा
दिकमुनिवर देवगंधरबपज सपितृपर चारणसिधविबुधविद्याधर राकसजषमहार
किनर सुरकिन्नाउजराजसुहाए असेसबदरसहेतमिलआए सबकेयहअभिलाष
सुहावन प्रभुमलोककरोअबपावन वरषेउहपउधनीवाजत सुरकिन्नामिल
नाटकसाकत दिष्टसुधासबदितसुषदीनो कृस्नइहांदगमुदनकीने निरषेसोक
कृष्णनिहारे पन्नसैदेवेकुंटपधारे पेयरुगतकाकृनरपाई जलदनेदततांज्ञूजाई
सत्यधरमधीरजधुसंपति कमलजुतसंगगएज्यूंकीरत ज्यूंवपजागतमनुजनजांनत उ
नसुरगतिकृस्नपिबांनत विधकरजोडसबनकीयवेदन करतभएअसतुतअषंडन
ब्रह्मादिअस्तुत।वदत्रोटक।जयपावनदेवकीनंदजए निजरूपअनूपदिषायतए क
मलातिरुमातपबोधकसो वरसिधनयोतमरूजवसो गतिगुंटसनंदकेगेहगए नग

स निश्चै नहीं कसा होत नास उहा जरा नाम यक वसे व्याध सो उ जंतु प्राण घातक अस
ध रहि मुख लषं कअव से बसार कर व्याध बा द्यो का कुप्रकार कमजु गंत वहै न लका
जु कीन सोदारु सर लेअ गृदीन सुन कृष्न मुसल कारन सम्रल नवत व्हेत जो विर त्र
ला। दुहा। करत अकरत सुअनिथा कारन समय कृपाल तदपि होत ईव्या अतुल प्रभु
नरहर ब्रतिपाल ३। इति श्री भागवते महापुराणे सुष्कमार गेद समोस्कंध नुसारेण इतिज
दुवंस अपवनो नाम इकाणु मोध्याय। ९१। कृष्न सुब्यो सुषदेव की रहस परीषत राय करि
विद्या उधव कृष्न कहा कस्यो उन काज। १। सुषदेवो वाच। छंद पधरी। उतपात होन लागे
अकाल इह समय गिगन भू अंतराल अन मित्र देषत हां कृष्न आप उनक रत सोच अंतर
अमाप इक दिवस सभा जो धरम आन प्रभू बैठे जादव सब प्रमान। श्री कृष्न वाच। कृष्न उच
उपद्रव ए कराल अनिदिष्ट विष्ट आवत अकाल दुजवर दुस्सह जो श्राप दीन उन आगम
सो चवत प्रवीन इह गेर नर हि बौउ वित आज करियै पयांन इह बिन सकाज एपचिए सं
षोधार आप विपबाल विरध अंतर संताप मिल कस्यौ मंत्र सब हिन प्रमान नहि जान कोउ
भवत बनि दान तहा आय कृष्न पर भास षेत्र तातें मिल जादव कुल समेत सुन यांन थान
पूजा सिनान गोदान आद दियउन सुज्ञान प्रभु परम पुरष माया प्रवीन कृत कारज इव्या र
है कीन उन कस्यौ तहां वारुनी पांन अति पति अमंगल विरत आंन इह गेर विरुध वादे अस
ध उतपात होत नवन व उपाध हियत हां परम मन निष्ट होय कछु गिनत नां दिसन मंध कोय
करि क्रुध जुध उपज्यो कराल ईहां भिरत मत्त जोधा अकाल उहां अ स्त्र सस्त्र टूटे अनंत अवि
सेष रहे न हीं आयष अंत उपज्यो जु इहां अति बिरजएर कुपपत्र उधारा षडग हेर सो लेत सर
र कर पत्र सोध कर उन्नय सु वाहत महाक्रोध बिबरंक होत जिह लगत बीर सो परत पत्र क्र
ता सुनीर प्रति सुभट भिरत पौरष सशूर तहां वाजव सुदिस गिगन तूर प्रदुमन सांब भिर
जुध प्रमांन अक्रुर भोज बकु जुरे आंन अनरुधा रुध स्यातकी आप दकु होत युध उर
अति सताप जुटेजु सुभट सग्रांम जीत सुजुर सति जीत समहर स जीत गदमिले सुदार ए अंग
अंग भिरतहां सुमित्र सुरथ अनंग याही कृम आहव कुय अपार सष्यात सूर समहर संघार
अन्योन भिरे यदु कृम अनीत जग जेव सग्राम जीत जीत भाने जा मातुल वाट भीर पितु पुत्र
भिरे उर कुन पीर भ्राती जसु पित्रिय भ्रात भ्रात मिल ज्ञात ज्ञात सन मंध मात अज्ञात अहर
सो दास आन उन अंध विस्न भोजक प्रमांन स्यात त्व मधुर बुद्द मिल समांन उन सूरसेन
माथुर प्रमान अरु कुंकवि सरजन कुकर अंक ते भिरे समर तीर थ निसंक ईसाद ज्ञात जा
दव अनेक को जांने संष्या एक एक आयध छती सटूटे अपार उनि करे मुष्टि ल ताप्रहार
इहां टूट सबै आयुध अनंग तब करत क पर प्राहार अंग विधु ही करत जद्यप क्वाव हितु
करत धेष भिरवै स्नाव उनि राजकृष्न देषे प्रमांन इन कृ सूला गेभिर न आन भगवंत भता
सो भूम भार सब को पक स्यो जादव संघार निसेष भयो जदु वंस नास भिर समर षेत पांव
न प्रनास बलदेव विरत उपजी विसेष अविलोक नास कुल को असेष ईहां बैठे सागर
तीर तीर आयव स सोक सुदर नास न विभाय कृम जुक जो प्रश्न आसकीन वैकुंठ पधा

न्रवसकलगुनीत कर्योपरीषतकेतिलक वैनवराजविनीत २ देसविवेथपोतहर
यो सबैधरमसमफाय मन चिंतापिछलीमिटी आगेकरतउपाय ३ कियोवयान
प्रमानकरि हेमाजलकेहेत सबैछाडयहदरवसुष तहांद्रोपदीसमेत ४। इतिपंडव
हेमालेगवन। कविरोवाच। कहेजनमकमकछके सदान्नक्तसंजोर सुपनैकनहिदे
षसोयहअनिष्टअघघोर ५ कहेजथानरहरसकव कछचरितसुनकाज मनकम
वचनजाचतमुकत होराजनकेराज ६। कबत। कलपकलपसतकोट कोटषन्नुक
छपवारे सेससहसफनगनाधीस सुनजायसंन्नारे घतधाराररजरेण इनकुयेसंष्या
आवे। कछचरित्रविचित्र पार तिनकीकोउपावे न्नाषेजुव्यासस्तुतन्नागवत रहिहैजो
लोचंद्ररवि कविदासदासआतमकत कहेजथानरहरसकव १ इतिश्रीन्नागवतेम
हापुराणेमुक्तमार्गेदसमोस्कंधअनुसारेन्नाषाबारठनरहरदासेनविरंचितसुषपरीषि
तसंवादेतेरांणवोध्याय। ९३। इतिश्रीकछावतारसंपूर्णं। अथबुधावतारप्रारंन्नते। क
विरोवाच। कबतछपै। समयएकअसुरेस असुरमिलमंत्रउचारिय तबपूछ्योगुरसुक्र
न्नयोसंदेसउचारिय जबदेवासुरजुधा होतसुरन्निरतनिरंतर सुधापियूसारहित रह
तसनमुषआयुधकर कबहूनजातन्नोजनकरत वस्तन्नषननहीसंगवहत कविक
होसुपेकारनकवन रिष्टउष्टसबदिनरहत। १। सुक्रोवाच। दियउतरतबसुक्र सुनतुमक
हूबुधपर अग्नहोत्रिद्विजअदिन वस्तुहोमितउतिवासुर अरुअनेकन्नवन्नूप होमउज
करतसुरनहित सुरमुषअनलप्रसिध तहांमिलेपंचामृत हयमेघआदकरियतदवन
गंधवारसुरसंग्रहत तिहबलउप्रसिधसिधातयह सदाउपतन्नूरनरहत २ असुरवाच। इह
प्रसंगआसुरअमृह सबसुन्योसुक्रपह गुरद्विजानसुप्रसन कह्योकरजोरतन्वतह
सोइअबजिहविसेष कृपाकरिहमहिकरावहू जबमषन्नूरनहोय तहांअनुद्धिलापा
वहू सुरकहिदेहसबसुरगते होहिबाहूबलविजयपे करुनाप्रसादगरुदेवके
संरबमनोरथसिधपे। ३। कविरोवाच। सुक्राचार्जकरिप्रमांन असुरनउबाहकिये सबैसि
धसंन्नार सारउद्यमआरंन्निय वेदअर्थबुणसोध सोधलियमंत्रअसुरगुर अतिउसह
इहवात तबहिसुरलोकसुनीसुर उतपतिअतिचिताअतुल गएविबुधगुरयहतब
आरंन्नजिह्नअसुरनकरे अंतरधिरतनरहतअब ४ सुनीइहसपतसबै अमरचिता
उपन्निय ईन्द्रादिकसुरगनकवन नरबुधसोकितन्निनिय सबमिलगएससोक विस्व
जिततहांविसंन्नर कारनआगमकहू प्रगटप्रन्नूपूछदयापर जगदीससरनपिंजर
विजयजीवनकहूवहरातजब करजोरदुषकारनदुसह लगेकहनसुरेससब ५ स
दाअसुरगुरसुक्र मंत्रसंजीवनसाधत अषिलजिवावतअसुर सुधापियासारहित सु
कोजीतसमरसुर जयधरमसदाजानहूसमर षलजैहैनिजदोषषय सुरराजकर
हूतुमसुरगसुष अषलइसदीनोअन्नय। ६। श्रीहरीवाच। दुहा। हरितबकह्योउचारकै
अनुसुनदेवउकार करिहूंस्दासाबुधक केबुधाअवतार १। कविरोवाच। अनयपायईदा
यईहां सबैग [illegible] दयोसरनवरदांन २ सतधन्यामा

कृष: वंतअनंतसुवुधलए जसुदापयपायजथाजननी अरुवुधलथेइब्रात्रअपनी क्रमसंजुत
२२५ बालविहारकरे हवमाषनदधदहीजुहरे करअग्रधराधरधारधस्यौ घुटकेमघवांननमा
नहस्यौ ज्वालानलमुंजाएरुनजस्यौ कत्यासुदावानलपानकस्यौ मदमत्तमाहाअहि
मांनमल्यौ चलचिंतलयोदइतेसदल्यौ सिसपालदेआदनरेससबै जुरआयसुयंबर
हेतजिबै गुरतातिनकीगतिपतिगइ अविनीससुताजिनबीनलई जोउआनसुरासुर
जुधजुरे हतिग्रांबनलएकेउमानमुरे जुवनाजबैजुवलोकजयो भगवंतविरततैनस
भयो इब्राकवुचित्तयहैउपजी भुवषारसमदकीजायतुजी क्रमजुक्ततहांरज
धानकरी प्रनुघारिकानामविचत्रपुरी जुवभारजकारजउष्टभयो जगदीसतहांवंस
सर्बजयो किन्नाएकंत्रजुआनकरी वनिताहतभोमसबैजुबरी भगवंतअनंतजुमी
नभये हिरन्याषहमोलषवेदलए करनानिधकछिपरूपकरे हितसिंधूमथेतहारत्न
हरे कत्पकारनरूपनसिंघकियो हिरणाछहिमारविदारदियौ भगवांनसोबावनरू
पनऐ बलबधपतालातिहैपठिसे ग्रगुवंसमहाउजरामभयो उग्रदीननकोजुक्षक
दयो भुवरामकोआश्रमआननज्यौ तिहहेतवनीषणअबतज्यौ भगवंतकपाकृतेसि
धनई दसकंधहतेगढलंकदई भगवंतअबैतेइकलभए जगडुष्टनतैसबमारजए
अवितारसुकैहैइवुधअबै तेरधर्मअहंसापालतबै किलकीअघकारणरूपकरे ह
वमारमलेबअसेषहरे करुणाहमकलविरत्रकरे हितकोनसुरासुरसमथहै रस
नक्तयहाउल्लादरहे गुनगावतस्यामसुधामगए कविरोवाच।उअषरी।गहिमनवाचक
रमगुनगावे पैसोइसाधपरमपदपावे घारकसूतद्वारिकाआयो सबहिनकलकहौ
सुसुनायो। उग्रसेनवसुदेवसुनतभर दारुनदुषभयोअतिउरधर इहाअभासषेत्रस
बआए स्यामजहावैकुंठसिधाए भुनिवसुदेवसुमृत्यपरवांनी रोहिनसहितदेवकी
रांनी प्रांनसमांनकलनहीपावैंए सुपेदेहतजस्वर्गसिधाए इहांवसुदेवत्रियासब
आइ सोरहपैसहगवनसिधाई जादवअमरअवतरेजेते तजतनलोकलोकगएते
ते नियतपतिव्रतासोइनारी सतीभइपतीलोकसिधारी मिलबलदेवकलकीवांमा
कीनीअगनप्रवेससकांम अर्जुनआद्यसोकआधीने क्रमजुततिलाम्रतुकत्यकीने
इहांसमुद्रसेततजिआयो बोरनगरजलमाफबहायो तहांभयेजलबिबनिरंतर र
हैकलरुषमनिकोमिंदर जहांनिरंतरअंतरजामी सदाविराजतत्रभुवनस्वामी अ
घावघरजधानीऔई साधसंतअविलोकतसोई धुनिअविसेषयहाजोपाए वालेंउ
षत्रियकर्मविवाए इद्रप्रहस्तआनेजोअर्जुन जथाजुक्तसोईजहांवसेजन इहांउन
अर्जुनमुथराआए अविलोकतपुरदगजलआए किघविनायहगैरविजोक्यौ रह
तनजानकिकुविधरोक्यौ वज्रनाभसिरतिलकबनाए सीसछत्रधरस्वबरलाए क्रम
अविषेकजथाविधकीनो देसराजपरजागतिदीनो इहांफिरइद्रप्रहस्यतबआयो स
बैअमंगलमरमसुनायौ अंतरगतवैरागवध्योअब संदनजथामसांनभयोसब
सांमविनालागतजगसूनो देषदेषउपजतदुषदूनो।उषा।इहांजधष्टरआदंरे पा

सधावही उतपायअनयअनीतआश्रय कुटंबकोपोषनकरे जिहतिहप्रकारउपा
यअनहि उदरव्रतिहअनुसरै प्रभुप्रकृतिसंततधनपायोएप्रजापीडनततपरा
जनदुष्टजातजमातहातहो निकटव्रतिनिरंतरा अनदोषबलअबलीनसोकर उ
दकन्नमउतारहे तिहअंसनिदितआननितप्रति आपमुषआहारहे सोइदबजान
तपितासंपति भागवसपापतनयो तिहगरनकरतप्रसिधपोरष देवपरजागतरयो
नृपनीचसोमिलमंत्रघूबहि उहैमतलेअनुसरे नीतधरमहिबारुनिश्चय अन
अपजसतेनरै मंत्राधिकारसुपायमित्रिय नीतयहविस्तारही साधकोकरचोरतिहछ
न निरपराधहिमारिही चोरकोकरसावसाचो आपढिगबैगारही तिहपासनेकेद
ग्रताको सबैकाजसवारही आपनेहितकाजततपर स्वांमकारजकोगनै राज
काजबिगारनिरलज काजसाफहिआपने प्रजाकीनउकारलगहै मारधारनिका
रिये कृषिअंसच्यारुनाइलेले अषिलदेसउजारिहे सानंधसत्राअस्त्रधारहि
सूरसुनटकहायहे मरणकेनयसत्रुसोमिल स्वांमकामनसायहे बकुइद्मदे
देसंत्रबादिन वीरविद्याविस्तरै करविवसजिहतिहहेतस्वांमी मंत्रकेवलवसकरै
प्रभुअंगरछकनिकटवरतिय अनृथयहअभ्यासहे स्वामकूरिपुमंत्रकरिहे विष
प्रियोज्ञवकासिहे पानपानविसासमुद्रा कबुनअंतरजानहे विस्वासद्रोहीमहापा
पी स्वामघातसुवानिहे कृषिकरमअनृथअनेककरकरि राजअंससुरायहे तिहदो
षजायसमूलनिष्टत करमकेफलपावही उनचेचदाराप्रत्रउत्रिय आपसोधनषावही
उन्मबेठमधपहथाइपंचन कलियहीसुकहावही कलिकरतसुदसुविप्रकरमन सि
षासुत्रनधारही वाषानकरतपुरानचावत वेदअर्थविचारही सवधकोलेदमअ
गिणित जवरकिमाककवरै करसुदजातविरुधकरमन ब्रह्मविद्याविवहरै ब्रह्म
चारिजनृष्टव्रतिघ्र बाणप्रहस्थयहाश्रमी सन्यासलेहैनीचजातसु सास्त्रधारकसं
जमी वोहारतसरवोरगतरत द्रव्यलोलपइसता अरुरहतदासीगोप्रमव्गति पाव
विनहीविफता मंदमंसखुबतनिसादिनमद अज्याबालकआनिये मच्छमाकलेतए सुरा
मंत्रिन विधविधानवषांनिये सोइहोतनोजनचेटकासंग सुरापानसुधारिहे मुनिवंद
तसंततुनग्नमुद्रा यहसन्यासअराधहे नषकाषबालविसालजटधित अस्त्रसस्त्र
अन्यासहे करियेदउवअवासउजल विवधसुषनविलासही सोगंधतेलतंबोलतिन
ते कालक्षेपननहिकरे आयआपविरोधइरष क्रोधनिष्टनपरहरै तबचलतस्वांमी
तीरथजात्रा आनयामनउतरे चतुरंगचकुदिससंतचाजे विवधवानकविस्तरै स
नादहदुधननेरश्रंगा वनेवाजित्रवाजही मातंगज्यौमदमत्तअनमिल यांमयांमन
गाजही तहांबैवसिष्टासनहिस्वामी वीच[redacted]सिषनविराजही
वनवेषजोगसंजोइसंजुत स्वामअद्भुतसाजही चलकुटलनृकुटीअरुनलोचन
रूपअमलचढावहे वजरंगकाछसुलोहकीवन मिलतसेषमढावहे मिलकहतसा

नी जिनन्ने येपिता अजेव धर्यो बोधअ वितारतहो हरिदेवनकेदेव ३। छंदपधरी
अन्यरेबोधतहो बुधप्रकास श्रीपूनस्र संन्नासहास सबरूमुकलोचनसरीर धरिरूपक
लोकरूनासधीर कीनेसुकेसनिरमूलकाज वपुवसनसेतसुद्धमविराजत परनयेपद
मआसनप्रसिध सुरसिद्धकोटतेतीससिध कतपात्रनालकेरी अनिक करलीनेओघा
एकएक किये एकप्रांनआहारकाज वपुपुष्टनग्नमुद्राविराज प्रथतकरपत्रवपंचग्रा
स आहारउदकएकेअभ्यास उनध्यानविराजतस्वरपट थितहोतसपाम्भावकसुपट
आपंन्नेषभूस्तकप्रचार मषवाधहोतजवस्वाविचार नितकथाजिह्वाघातकनिदान
धरिनयनमुद्यअरिहंतध्यान सबश्रावकपोसादिअसाध मुषपटीरुधआस्नपा
ध सिरकेसजुसेलोचनसुसोह महिमासुजपालीसुत्रमोह स्नावकीआयसुदरसंमाज
वपुपटकूलविथविधविराज नमजटितहेमभूषनअनेक बहुमोलविविधवानकविवेक
अतनक्कसुचितवतपुंजऔर चाहतसप्रेमजूसविकोर कतजथानेषपरकरअनेक
अरुजजतअहंसाधर्मएक मतथपतप्रथमपाषंडमान परचारग्रंथन्तनप्रमान मष
विवधकरतपषंडनमजाद विपरीतन्नेषस्सकविषाद् श्रवकासंगअल्लेकसाध बोलतसुवो
लकदिनिगमबाध सिवधरमलोपकीनोसहास पाषंडधर्मप्रथीप्रकास सबषंडग्रंथवेद
कसंसार अधियनग्रंथकीनेअपार इहविधीअसुरउद्यमअकाज सबरहेजिह्नआरं
नसाज सोअसुरबोधप्रलोसार सबचलेएकमारगसंसार सुरसत्रुचितनएमोहसं
ग परहरेजिह्नकारनप्रसंग जगजीतनिरायुधअसुरजात ईजादअमरटरनयअनात
यहअतुदेवमायाअजीत आतअविनासकअनीत अविलोकजिह्नसाधकअनेक
अनुसर्योअहंसाधरमएक। कवत। अतुलबुधबलहस रूपअद्भुतअविरेख्यो प्रगटस्व
पपाषंड वेदरूसुन्योनवेष्यो असुरमोहउपजाय निगममतकीनोषंडन एकअहंसाध
रम विदतसुरलोकविहंडन सुरसिधकरेजयजयसबद कीतसुकविनरहरकहिय
अषिलेसअन्नयकीनेअमर बोधधरजगविस्तरिय ७। इतिश्रीभागवतेमहापुराणे
सुकमारगेदसमोस्कंधअनुसारऐनाषाबारवनरहरदासेनविरंचिते। बुधाअव
तारसंपूर्ण॥ अथनिकलंकअवितारवरननं।क विरोवाच। दुहा। ईसअनंतम
वच्चअब कलिकीनामकरतार धर्मविपर्जयहोयकलि तबकेहैअवितार १ जब
केहैइहसैनजगकहतसुनिगमनिदांन तबजानकनिरधारतुम प्रगटेकलिजुग
मान २। छंद वैताल। जबब्रमकरिहैवेदविक्रीय असुरसेवाअनुसरे गायत्रिमंत्रप
ढायजवननिद्रवलेलेघरन्नरे पुनसस्त्रधारकगांमजारक सनांनसिध्यापरहरे वि
नुन्नेरवेदकुदांनलेलेकरमनिदतकषिकरे सोदपात्रजामैग्रामजाल्लक दानसब
केआचरे जवनादकेघरवेनिरन्नय वेदसाषाविस्तरै सुत्रमात्रकुविप्रता आचारनि
ष्टअल्लेक कियाकमसंजोगसजुत अनेकमैकोउएक अरपढेलेलेघोरपातिग्र
ह अनंतद्रव्यउपायहै देव्याजकरिकरिएककेसत कोधवसविषयामदे बिनम
हिप्रगटकहायबविय करमबोरकराही उनपंथमारहीइथहिप्रानी धारदसदि

अज्ञामांन कैहै नेष हीजत जानिये त्रिणमात्र द्धनवुद्धसकैहै छिन कमंत्रिमानि
ये नरनार जिह जहां चित्त अटकै सोतदांम नमांनिहै कुलला जवेद म्रजाद तजकै
सोरितह अनुमानिये विद्या गुज्ञावेद वे मुष जपन तीरथ जानिये हतषंरु कैहै
निगम वेहत गुनहत पहिचानिये वननीच वेचत तउ वपदवी नेष मात्र जतीन ए
पाषंरु कपट सुदंनपांनी नित्तकरहि मएनए इत्यादि अकतअन्यथा विहित
विवध लोकन विस्तरै षितना सकैहै मेह वरषा प्रथी जल बुदन परै रिवव कहोहि
दुर्नछ सोरव षुध्या रोह प्रकासहै त्रिषन्नू षपीडत लोक अति दुष वसतन गरनि
वारिहै वनगहन परबतन पायवसिहै प्रुरुअका सनिहार है फलफूल मूलसलु वा
पलव जथा लाभ अहार है वरषा सुविद्यतमान कैहै तद पि आसन बूटिहै सनबं
धदारा सुता सुत सो मोह मित्री बूटहै इह मात हाहा भूत कैहै नृत दुषन वभूत जे
प्रथी स पापा कलपीडत नवतर हिसो हरनजे विपरीत कैहैं धरम की विध विगतक
रमव षांनिये छिग विज तकाल कराल दुस्तर एचिरत कलजुग जानिये। छंद पधरी। सु
नथान सुसंभल नाम ग्रांम जहां वसे जस धरम धांम हुजन तास येह अवितर हैं देव
अधयन अनंत कलिकी अजेव कलकाल अंत सतजुग प्रवेस आरोह स्वेत वाजी
सुरेस विस्तार धरम पाप हि विडार षित्त षडग धार आसुर षयार सुमसत्तसील उ
तिपति सहास षूजा सनेम धरम हि प्रकास संतोष सील व्रत दान संग आराध सत्त
संगत अनंग दुज सुर नी तुलसी तीरथ सुदेव सब भाव सहज सरधा सुसेव विज्ञा
न ज्ञान तत्व उपदेस नव प्रियत देवल हि जिह्वा नेस नजवम बम ब्रह्मा विधान सुन
करम षत्री षत्री सुजांन तिन वई ससुद निज कर्म नेम पसु पाल बल सेवा सप्रेम सब
समय धर्म वनता सुसाध किय व्रत सती वरजित पाध निज करम वरण व वसावधांन
विद्या ववेक मंजन विधान हित नक्त दया तप जोग दान संसार कपट वरजत समांन
पचास कोट प्रथी प्रदेस प्रतिक्रमण कलिक रिहै प्रवेस साम्रल दुष्ट आसुर संघार सु
रवंदक राहे हरदपा संनार परिक्रमण देवक लिकी प्रमांण इह हेतले है अवितार आं
ण आगे नवदस अवितार एह सुन धरम सेत कलि सैं कीदेह। कवित॥ धरम धाम सं
भल सुथान विश्राम सुष दवर तहां विप्र जस विप्र प्रगट वस है जु धरम दुर तिह सु
येह अवतार अघ जन्म वनार उतारन कलष नाव निरमूल अविनग नि धरम उधा
रन निकलंक नीत कलि निभ भ्रुवन तीन रवि पालनन कलिजुग वितीत नरहर
सकब महान वदस अवितार मन १॥ अथ चौवीस अवितार संष्या॥ विसद आदवा
राह भए सनकादिक सांमी जथा जिह अवितार नर जुना रायन नामी कपलद
त अरु रिषभ ध्रुव प्रथू एह ग्रीवा कूरम सफर नृसिंघ दुज जु वामन हरि दीवा
कुयहं स मनंत धनंतर दि जामदग्न जग ब्यास जय रघुनाथ कृष्ण अरु बोध पुनु न

मीधिनधिनए सुधिनएकसधीर व्यापारजोगप्यवैरागवैराव वनतनत्तावीर जरत
सोअग्निमांनज्वाला रोमरोमनरोष ग्रामतैलेदांमगिनगिन नएसांतिसंतोष स
बकालनकुटिविलाससंजुत वरतमादकसेवही मिलकरहिजुधजमातत्तीरथ
एकएकनजेवही धरिधातपात्रसुगंधसक्या वस्त्रपटसुधारहै वढअस्वगजरथ
करनसिवका वेससदनविहारहै मणिअलंकारअमोलनगमय श्रवनकंचन
वरधरै अन्नेकजातजमातयुतगत आपथ्यापीअनुसरै सन्यासवरजित वस्तु
अविहित सुषहितेतेसेवही इस्वजयुतनयेआपइस्वर दुजनमानतदेवही ज
गजोगपसाकतबंधआश्रम क्रीयापसुपतकीकरै चतुरंगलछसकेलचकुदिस
सतनचेलाविस्तरै अहिनेदचंगीसुराआमिष कनकबीजवटावहै चषरंतमु
दानस्मभेषल कलीसिधकहायहै कलसाधसंतमहंतकहिबै मद्यसुछिमतांस
है उनिबैअस्थलविमलअंतर प्रेमकथाप्रकासहै सतजुगअनूथजुआयसंग
त सेवहीनितसुंदरी करिहावभावकटाछकेवल नक्तहितअतिरसनरी सबना
तदेतसनेहसिष्या कामपाव पठावही गुरदत्तनामनमथ्यनकीतहां प्रेमसंजुत
पावही उनबाफ येहकुटंबअपनो वासविदेहविहारही अरुब्रधकालहितात
मातन बाफबेहदिषावही निजबाकुबलउपराजवितहि सासुसुसरनंपोषहै
बेटेसरीरअहारअतसय वेचषनषनषायहै दसइनवरषजुआयुकैहै चिरं
जीवसुजानिहै निसदिवसमुसपरियेहसंपति कलहपतिसंगनिहै सोइत्रियाप
तिकोअनहिप्यारी इथककांमनसोकरै बकुरहैमंत्रअराध्यततपर वस्त्रकोउ
तलाकरै तिहसंधसंधदेसुचिकातन जलसुलेतिहधरै पतिमरेकेतिहहोयभ्र
पहत तबैरोयरहिनरै रतकरेपततजआपइच्छा अंगविक्रियकारनी थि
रचित्तह्वैपतिव्रताथोरीय बकुतश्रीविभिचारनी पुनलोकधरममृजादभेहै
उदरकेहितआपनै तिहकाजचितअनेकआश्रय क्रमहिकुकरमकोगनै
वाचालकविकहिमहापिंडत कविसुमिथ्याकरकहै चतुरसोपरचितवंचक
उदरनरपोषनवहै कचवृथसोइलवनकहिबौ सुरतामृधीयासही कृषीक
र्मयाननिवानपाजा फोरनीरनिकासही पसुकाजकाहितहरेपीपर उरहिस
कनआनही कुजमारकरचंफाररबूा मनहिपोरषमांनही सिधांतविकिनव
इस्मकरिहै बलीअबलिनमारिहै पुनिउहैबेवजुवीचपंचन सुकरमृबसवा
रहै परदारपरद्रव्यद्रोहततपर जनकलोकनलाजहै विस्वासघातविसेसवंच
क स्वजनमीत्रीसाफहै जगमांफकैहैजतीजावर व्रतीव्रतिविसारहै वैरागले
अनुरागधिकबल विषधजोगपविचारहै सवदअलेलेमुनिमहंतजु उष्टकरतन
पोषहै हवबांनबीनग्रहस्थलैहै रातिकोअतिरोषहै सुरअंसलेलेकरहैसंचय
एअधरमउपायहै तिहपापआयकुटंबसंजुत जगसमूलसजायहै जबधेन

वएतिअवितारन्नूय २ दिदततीनअरुवीस नयेअवितारअगंजिय सततेताह
उरसंजोइ कारनसरूपकिय अबकलिजुगकेअंत हेतअवितारजुधैहै धरम
करममषधांत सबैनिरमूलनसैहै नवतअउनपअवितारजुव हवअसेषजब
जैहहित अविल्हैसखितहयआरुहित धनुकलंकीत्रयलोकपति ३ इहप्रकारअ
वितार नयेनवतअनायजुव चिदानंदचोवीस हेतअद्भूतदेवकुव उष्टदीनदम
दया रूपरसरोसजुरजिय नइन्नम्रनारायकंत जुवनारजुनजीय दुजदेवस
हायकधरमदिढ हितत्रलोकवंदनहरे सुनसाधसुषधआतमसकति कविनरह
रवंदनकरे ४ सतरैसैतेतीसनीयतसंवतउतरायन रितुग्रीषमआसाढमास प
षकक्षसुपावन वनआवैतिथनोमवार सिधजोइसमंगल उसकरनामवसिध
मधइजतजुवमंगल अवितारचिरतचोईसअे विजेसुजसजइप्रविस्तरयो कहि
दासदासनरहरसुकवि कतउधारअपनोकरयो। छदकंपताल॥ अवितारगीताइस
री करिनक्तकवनरहरकरी यहमुक्तमारगमानिये सोपानस्वरगसुजानिये य
हसहितसरधाउचरै उनीसोननवबंधनपरै समसाधसोवाचैसुनै अतिप्रेमनेम
फुआउनै सोइसांतिजोतसमायहै पेउनिजनमनपायहै। दुहा॥ सोलैसहंसअरुआ
वसे इकसवउपरिआंन छंदअनुष्टपकरिसकल पूरनग्रंथप्रमान १ मैजोइसु
नोउरानमहि क्रमजोइवरननकीन श्रोतावाचकहेतसो पावैनक्तप्रवीन २ कव
तबवै॥ नक्तपालअनतंग रामगीतामानसर निजसरधासोपांन नावमिलनीरह
निरमिल तहाअर्थतरतरल विबुधनवरसहिविहंगम अद्भूत उकतितरंग सफर
बऊबंदसुसंजम हरनाहिदुष्टअघदुयनको सजनइानसुसंगरे करसरविहार
नरहरकहै हंससमुहंर्जमंफरे।७। इतिश्रीचोवीसअवितारगीताचिरत्रमाहापुराणेना
गवतमुक्तमारगेनापाबारवनरहरदासेनविरचतग्रंथनामअवितारचिरत्रसंपूर्ण
अथफलस्तुतिकवत॥ उदधरूपजगदेष जीववब्रह्मवतजांणे विष्णुंआद्यकथा
स विबुधवांणीवाषांणे सास्त्रनावसमांन पिंडतबेवटकुयपारं तुबबुधकवितिके
उदधकोलेकेइवारं जिणउदधसीसअवितारजस सेतबंधनरहरसुकव उधार
आपजनउनअवूर नणिचहिउतरेपारजुव १ संवत १९४५ रामीगसरवदि ९
लिखीतंयोधपुरमधेवोरानवांनीरामपठनार्थश्रीठाकुरांसायबविजेसिंघजी

कि॰ ।सुरगंधरबगांनकीन नाटकसुरकिन्यारचनवीन देवकीदसाप्राचीआनंद दीप
तनयेपूरनक्रश्नचंद सिरकनकमुकटमनिमयसुदेस कुंचितअलसुदरसुउलकेसरलम
यस्रवनेकुमलसुरंगअरुमंदहासआकरतअनंगमनसोनतरजसुक्रोनमाल वनअंग
अंगभूषनविसाल तनस्यांमबसघन वनवरनतास कटिपीनवस्त्रतडितप्रकास चक्रा
दिकआयुधलजाचार निमेषलसुलहलसनिहार देवकीवसुदेवसुनओरदेष विस्वेस
पुरषलहसनविसेष वहुवारवारलेलेबलाय सुतजन्महरषउरनहिसमाय ।दुहा।
उस्रकेसकेदुसहमर हिनछिबपुत्रनिहार नरहरलोचनप्रेमवस धरदेतजलधार १
दुसहदसासुदेवकी देषीदीनदयाल क्रश्नतबेहसयोकयो करिहुनलयेयहकाल २ ।व
सुदेववाचछंदपधरी। वसुदेवनिरषअद्भुतबाल करिवारवारवंदनक्रपाल प्रेमुप
रमपुरषपूरनप्रमांन पायोनवेदवेदऊपुरांन अनषंमजोनतवअनाधार पेलहिन
सुरासुरवारपार धावतजिहमुनगनध्यानधार चितवतअगोचररावदविचार
निगमागमषोजतजोनजान अवितरीजोतममग्रेहआंन कहूनागवांनमोसोनको
य हितक्रपाअंतपरकहाहोय ।दुहा। हैजाकेकचकूपहै मिलव्रहमेमसमान तेप्रद्र
मेरेअवितरेव्रजहैहैईहवान ३ रूपअलोकिकरावरो वेदविदनव्रजराज समयनि
हारविचारसुष यहरूपसमियेआज ४ अबलोअद्भुतरूपयह दुरेलहीजइदेव वहत्यार
आयेहे नवककुलहिहेलेव ५ आगेमारेबालयह निरदयनिठरअनीत सुधआजे आ
वतसुहमयापकिहाप्रनीत ६ ।श्रीक्रश्नवाच। कालंतरआगेकिह्न मेरिषसुतपनाम
नाकेलइजुपतव्रता विस्नसुनामावांम ७ तपसाध्योअतिउग्रतिह मिलरिषत्रियासमेत
देवनजोदुरलभदरस दरिदीनोकरहेत ८ ।छंदप। ईहकह्योवचनभगवंतएह जिह
हेनकह्योवनदहनदेह याकोअमोघफललेहुआज क्रतकरहुजुपूरनचितकाज
सुतपावाच। करजोरकह्योदंपतसकाम वरदेहुहमहियहघरमधाम अवितरहुनाथ
ममग्रेहआयसदातुमदेवदीननसहाय ।भगवानोवाच। मेदीनोवरतुमकूमहतनयो
हीजदोयहैकहिअनंत वरदयोजथावेछिनविसेष सुस्थानपधारेसइनसेष ।दुहा।
विस्नमातसुनपपिता वहनधुरसविश्राम प्रगटतयेपूरनपुरष विस्नगरभयहनाम १
कालंतरवीतिकबुक जन्मसुदूजेजांन कस्यपतयोप्रजेसपत पतनीअदतिप्रमान २ आदि
नगरभक्तअवितस्यो वामनविप्रविनीत कियेसहायजहाइडको पुनबलछल्योपुनीत ३
तेइकस्यपवसुदेवतुम अदितदेवकीमाय तीजेजन्मसुअवितरे ईहव्रजमंमहलआय ४
छंदपधरी। मेलयोजलमतवउदरमान वरदयोजुनोपदिले विष्यान कहेवचनजथा
मेसत्यकीन इबयदेहरूपप्रतिरदीन अबक्रश्ननांममूरतउदार व्रजमंजविविधकर
हुविहार ।क्रश्नवाच। ।दुहा। करनमहानयकंसको जोतुममोकहुजांन करिहुजतनजो
हमकहत पेयहसमयपिछान ५ महरनंदकेग्रेहमो दि अबदेहुपहुचाय हिनजसवद
नहांपोषहे कुचपयपानकराय ६ ।कविरोवाचछंदप। कहिक्रश्नतहांनतलककीन
सुबालनावरनेप्रवीन इह लियेमानदेवकिनगय लेलैबलायअरुकंठलाय त
हांदेषेअदभुत चिरतताहि वसुदेवनयोअंतराविस्वास आनंदसालिलवढतउरअमं
न समतासकह्योसूतकासिनांन यकअयुतधेनविधजुननवीन करमनहिसुढसं
क्रपकीन दीनेलपेटपटजननिदाय लियपिताक्रश्नउरहिलगाय भंजीरचरनव
टपरीजांनवसुदेवपुत्रदेवतप्रमांन ।अथश्रीक्रश्नगोकलगवन। वसुदेवगोदले
येजिहवार दुरगमकपाटषुलगएदवार गमपरेपहरवाकऊनइयांन निदजुका
लजंफेनिदांन घननिसाअरधमिलगिगनघोर अंधारयसोमिलचहुओर वारे

ननघादसघनहुरंत यसरेसुविदसदिसनमदिगंत मघवाजलनवरषतमंदम ५ ऊतजै
तवदनआनंदकंद इहसेसनागफनसहंस्रआदि भिननाकरलीनेचलेगादि ॥ छंद
मायाजसुदाउदरमह अपुंनवसीजुआई नयोजन्मनाकोअनय पेयहअवसरपाइ
नाकहलेसोईनवे मानाअनदिन मोहिन देष्योसंतनमुषउलन जन्मसफलकरिजान
छंदप ॥ नबतरनसुताकेआयतीर वसुदेवसुगठेनयेवीर जलचढ्यौतटनमिललहर
जोर आवतविषमपरिओरओर पावेनथाहकहुघाटपाय इहगेरफिरतनंदिने
उपाय वसुदेवकृष्णचिंतवनकीन नंदजमुनातबदीयाहदीन ॥ छंद दुअषरी ॥ उत
रनदीजबगोकलआए पुरवासीनिंद्रावसपाए ष्युगमकपाटषुलेग्रहद्वारा समयक
स्योवसुदेवसंचारा पलकापरसोवतवहापाई जसवदलियेसुतासोजाई ईहज
सुदासंगकृष्णसुवाए आपुनसोकिन्यालेआए पुनवसुदेवविद्यघरपेसे जुरगये
विकटकपाटजुजेसे पहरजंजीरआपनेपायन सोयरहेवसुदेवसुवायन ॥ कृ
कृष्णजनमवसुदेवके देविकीगरभदयाल कियेवासग्रहनंदके प्रभुजगकेरषवार
इतीश्रीभागवतेमहापुराणेदसमोसकंधेतुसाईभाषाबोरसवनरहरदासे
नविराचितेश्रीकृष्णनिजरूपप्रकासनं ॥ त्रतियध्याय ॥ ३ ॥ कविरोवाच ॥ छ
पे ॥ इहमायाअंसावतार कियेरूपजुकिन्या दयारूपदेवकीघरीलेगोदहसुचन्या बाल
रुदनसुनसब जगेजामकसोजांन्यो आतुरकंसहिआन विवधईहममैवषांन्यो अष्ट
मोगरभनयोमोषयह सुन्योबालरोदनसही करजोरकंससूंसेवकन कथवडायस
गरीकहि १ अतिजंभातअतुरात उठ्योसज्यातजआतुर सुरापांनवसविकल गनत
उनवुधमिंत्रीगुर नयजिहअष्टमगरभसुपैनयोमोषसुनायो रोषनईनपरजरत घ
रेकरषग्गसुधायो आयोअसाध्यअवचिंतइह जनकाजुजुनजानियो प्रतिमाविते
कउरत्रासपरि प्रांनविनासप्रमांनियो २ ॥ छंदप ॥ ईहकंसजुमिंदरमांजआईपुंन
बहनगोदपुत्रकापाई उचकायलई किन्याअनीत कउनांहिदयालज्याकुचीन किन्या
सुपछारीसिलप्रकास उमगईकरनतेछुटिअकास सोनइदिव्यअपनेसरूप अतिप्र
नामहामायाअनूप ॥ महामायावाच ॥ बोलीसुगिगनमह विमलवांन पापिष्टनतेहंत
पिछांन सोउप्रगट्योदेषछीप्रमांन मारिहैतोहिमसकासमांन अनकाजबालमारे
अनाथ हथमारेआयोकहाहाथ ॥ कविरोवा ॥ योकहेमहामायाअनीत येगई
आपथांनकपुनीत विलपातकंसदिनोविहांन निसनइदंमधैपहरमांन करिसभा
कंसबेगेकुचीत त्रतिदुष्टमिंत्रीहाजरयनीत सुचकरकर किंन्यावचनसाल करकंस
क्रोधमनमहकराल तहांमिलेआनन्रवतव्यंतन मिंत्रिनसूंपूछ्योमूलमंत्र किंनिकां
वचनसबप्रगटकीन पुंनमिंत्रीमिलबोलेप्रवीन ॥ मित्रीवाच ॥ करियेनसोचयहवी
रकंस अविंतरेजुयेजहुअमरअंस अमरनकेंदेषेबलबिधांन निरभयसुषलपे
रषनिधांन मिलत्रासकंपनुगचेनमाहि जबपरेकगननबनागजांहि ब्रह्मासोतप
सीअबलवृध पूजेनताहिकोउयहप्रासिध हरुड निषारीरहिनराग वनवस्तसत
व्रतयुतविराग हरिहुस्योरहतएकांतहोय कहुनाहिदिष्टदेषैनकोय मुनिआपद
ग्धलज्यायमान सुरराजरहेकउनयसमांन हैसाजवजदपीमहादीनयेसंकानि
यततद्यपिप्रवीनप्रभुदेषहुकंटकनतनप्रमांन पहगमनंकरतहेविकलथांन अग
कलअलपआमयअसाध्य अहोयवधघनपजेअयौ पाघ वढपरैतबेकहुनहीवसा
यप्रभुकरहिसमजपाहिलेउपाय । निष्फसुरपोषकमषनिदांन योकरहुबाधाविप्र
नसमांन अमरनकोसाधक यहउपाय सोनरेषोयनगकहतराय ईकमंत्रसुनउ

प्रघ्यात॥ आज करियेन विलम या जननकाज व्रजमें मल्लमहाबालक विसेष दसद्योस
न रे जनम्यो सु देष पुन हल उतिनि जिहितिहप्रकार बलछलकरि अब तो ईहु विचार हेनि
पुनपान दियेक निदांन प्रभु तिन ऊदे ऊ अक्षापमांन क्रतदुष्टति तेसबाविदाकीन परखो
नघानाविद्याप्रवीन पूतना आदसबचलेपाप छलकारक बांधेसीस वाप पापिष्टचले आदे
सपाय अजजूथ जघ्यान षषुधतआय गतनइअगमयहाचिरतगूढ मायाप्रपंचजोन्यो नमू
ढ सबबाधकरे असुरन समूल सुरराज सुनतउरउगतसूल॥ दुहा॥ इहाविचारयो कं
सयह जोबनमद धनराज बालहतेमे दोषाविन कछुसरयो नहीकाज वचनअमर
विस्वासते मेजुबहिनकेबाल सुनकज्योमारेयबै करयो अनृपअकाल कहिमरअ
मगरनको अमरवानआकास नयगहराकिन्यानई सुरनकहाविस्वास काराग्रह
तैदेवकी दयेकाढवसुदेव कंसजो स्याम उपायकर नाषनवचनसनेव नलीबुरी
नवनव्यता होनीहोयसुहोय अमरउबोलनफुअब कहाकरे अबकोय नवनटरेन
रीकला अनय सुरासुरनउसाध करियेबि मासुकरि क्रपा कहामेरो अपराध॥ वसुदेव
वाच॥ कह्योजोरवसुदेवकर। चितमहसमयाविचार नावीवसजोकछुनयो वादि
नकछुउपचार गयेनबेवसुदेवग्रह मांनकुसनग्रहमोष कहानरोसोकं
सको हेतअदोषनदोष कंसदिनकाकरननरनकह आरेनंदअहीर समझायोव
सुदेवसो वेगासि घावऊवीर करियेरह्माबालकन अहोमित्रयहकाल अबव्रजमह
उतपातअति सुनदेअंतरसाल॥ ॥ऐतीश्री भागवंतेमाहापुराणे दसमास्कंध
नुसारऐणा॥बा॥नरहरदासेनविरचिते किस्यावचनव्रजबालकहननोनाम
चतुर्थोध्याय॥कविरोवा॥छंदप। अबनंदमहरके घरअनूप सुतनयेस्यामसुंदरस्व
रूप बतीसस्सुलछनपुरषवेष अंगअंगविराजनदेअसेष अरघायुविनीनेजुनअनं
द निरखोमुषसुतकोमहरनंद प्राचीनकरमफलअषिलपाय उधारउनयकुलपुत्र
आय दावानलपसरयोजो दिगंत अउचरनधानसूकनअनंत वहुओरवरषघनाचित
चाह यूनयोमहरघरघरउछाह मुषदेषउतोरेलोनमान सुषवढोसुपेउरनहीसमा
नगोकलउयमंगलगेहगेह माहि दूधनवरषेमनउमेह वनवनरहआवनजुवति
जुवनिवृंद मिलचलनउरंदगतमंदमंद गहगहेकंठमंगलसुगांन वस्त्रनवनभूष
नविवधवांन आरतीकलसमंगलवनाय व्रजवधुननंदरांनीवधाय निकटदेवद
नबालकानिहार आनंदपीयनजलवारवार देदेअसीसजावनदईव जसुदाकाबा
लकचिरंजीव ग्रहग्रहतेआयेगोपग्वाल सोउलीनेदधनाजनसुढाल आनंदमगनसुधनहि
नआंन सबकरनयरसपरदधसिनांन वनदहीहरदमिलपीतवांन मनुअंगनकाचढो
रेअमांन यहचलीदहीसरताअपार दधकरदममाच्योनंदद्वार आनंदकेलकरकरअनूप
य पटवस्त्रनंदपेसबनपाय अउगामगामतेआयगोप आनिदनभूषनवस्त्रओप ईस
आपनंदसुरगुरअराध सुनकीनोनंदीमुषसराध व्रजायमतउजबोलेविष्यानपगत
येग्यकरीपूजाप्रनान सुचिनीर नंदकीनोसिनांन आनरनवस्त्रपटबऊनआंन क्रनजा
तकरमविधिविदनवेद अउदांनपुनकीनेअषेद जेषधमप्रसूतासुरनजान आक्रनजन
गबहुरंगआंनकंचनमयभूषनउचितकीन वनाविमलपाटनोईनवीन सुनधाटदोहनी
कलकसंगआबादितपाटंबरउनंग यत्यादिकपरकरउचितआंन घेलहेसघेनदियेदु
जनदांन अउभूरदिछना।दियेअसेष।विधयुतविधांनकीनेविसेषजाचककजनमाग
धसूतजांन बहुपायदांनजयजयतिबान घजेकलसवनप्रति धांमधांम गहिवंदनमा
लागेमगांम सुनघनघपपेअगननउनग नीसाननादपूरिनानिहंग संगजुवानिजूथजूथ

नसनेरुगावनफिरगोपीचलीग्रेह ।किये आविघ्नपायपूरनसकाम नषत्रजोगहि।।कृष्णनो
म।।एतीश्रीभागवतेमहापुराणेदसमोसकंधनूसारभाषाबा।।नरहरदास
नविरचितेश्रीकृष्णजातकस्यपंचमोध्याय।।५।।कविरोवा।।छंद दुअषरी।।इक
दृतीपूतना।त्रियअसाध पुनकंसकरनपठईनपाध ।विषयुक्तवक्षनूषनवनायबनौं
मनीकरनअनिहाववनाव लटिछटिसुभो।।नैनसरस्सबैन निरसंकनूमावनदिखैनैनन
चकनकुचसो।।अंगअंग मुरिमुरिहिचिंतवतगनमतंग पापनीबानमुसकानपान न
फनानअंगसो।।अमांन गगगेरहेसबगोपगाम वसमोहपरछिबदेषबाम तननूपअ
नूपमवक्षनाहि चकिरहेगोपसबवचैदनचाहि वसनावीकाकुनपूछवान नूकोनआहि
अनुकहाजान इहसमयनंदकेग्रेहआय चऊधोलषाचितवतचितचाहि कनकमयविहद
पालनाकीन नगलटकनमुक्तासरनवीन घरगमोलररनमयजऊ तघार पटवक्षविरा
जतमोरपाट पलना।तिहऊलतकृष्णपाय तहदुष्टपूतनानिकटआय उरबालदसामह
रहेदेव नस्मजोअग्नकणकोसनेव ।विसलेपकुचनअंतराविषाहकार पापनीलगीयह
करनप्यार लीनंनउगयतिहनंदलाल षलबाललभावनकरतष्याल पापिष्टदीनेनउरजपा
न पयसंगसोषपूतनाप्रांन मुषमगृकृष्णकुचएकमेल कुचदुतियलसोकरमुष्टिकेल कुच
पांनकरतआनंदकंद मुसकानमनोहरमंदमंद अतिवृधावढीतइविकलअंग गयछुट
नावबलबुधनंग इहलगीउमाहनकुचेअधीर प्रतिअंगअंगतनइविकलपीर छुटेनिजबेब
लबलअबेह दुष्टासुकरीबहुदिर्घदेह इहकृष्णपयोधरधरनउगार दीनीसुबोहिरनगर
मार सगपरीकोसषटपायसीस चंमारकरीतिहमरनचीस तरलननाबदबेजेपरननाहि
एतेसबचूरननयेआय पापनीजानजियकरिपुकार सुनगिरेलोकननूलेसंभार इहआ
यगोपगोपीअइपांन सोपरीदेषपरबतसमांन उरऊपरदेषेकृष्णआय सुनषेलतदेषे
पनेसुनाय सोउषेलनदेअपनेसुनाय उरलायलयेजुवतीउगय बहुवारवारलेलेब
लायबहद एलालजसुदाहिआंन मानायहसुतकीकुसलमांन अविलोकलोनराइउना
र अरुदेतकृष्णपरउव्यवार गोमयमिलगोरजलायअंग गोमुत्रन्हवायेनीरगंगबक्ष
घेनदइविप्रनबुलाय सुरकवचरामरिछासुनाय सुनकुसललग्योबोलनसुनायपुनम
नऊजसोदाधानपाय लालनलमायउरलायलीन दुषटरेउस्सरहकुचपानदीनकरन
रेकंसकहिसावकास इहचलेनंदसोचतउदास।।नंदवाच।। व्रथानहोयवसुदेववान
जिहदयोनेदषलमरमजांन।।कविरोवाच।। सोचितसोंउमोचनउरघसास इहांनंद
मदरआवतअवास।।दुहा।। ऊनोदसोंगेकोदिवस इहांपूतनाआई करेजुजेसोकम
कौउपुननेसोफलपाय गोकलआयेनंदग्रह करतनरयादीकाल पायेमानउप्रांनस्म
कुसलविलोकेबाल मरीपूतनाकृष्णकर पुनतिहसदगनपाय देसोउसाषादसम
मदसुनिहसेनसुनाय एकमासकेजबभये कृष्णदेवश्रीकंत माहानपउवधोषम
हुउपजनलगेआचिन एतीश्रीभागवतेमाहापुराणेदसमोसकंधनुसारभा
षा।।नरहरदासनविरचितेपूतनाबधछठवोध्याय।।६।।कविरोवाचदुहा।। देवस्य
लइकदेविको ऊनोमहावनवीच षेलतजहांमिलकंसषल निसाचरनसोनीच
इहअवसरवहीअसुर मिलेसषासबआय माहानपउवधोषमहकरिहेकृष्णसहाय
२।।छंद दुअषरी।। यहमायाबलकृष्णउपायो जसवदजोंनमेरोजायो स्यामहिमात
चुघायसुवाए पलनाकनकरतनछिबछाए ।पिछमतागसकटकेपलना लेनिहबोहसु
वायेललना सुनकेगरनहिमहरसनागी ग्रहवापारकरनसबलागी ।निसचरआयस
कटढिगनिरदय कीनोआनप्रवेसमहांकय पूजीधानसुअसुरपवीनो किन्नदावनिड

बसकानो अंतर ऊनो निकट लगा आवत प्रभु नहादेष्यो उस्स... नमोहन वाम चरन सोमा
र्यो पगबल पिसघ घरन पराभ्यो अग्रनाग घरनी पर अटक्यो पैसो इस सकट उलट कलेपट
क्यो ॥ इती सकटभंजनं कविरोवाच ॥ छंद दुआदसरी ॥ इक दिन गोद लिये आनंद हि मात षि
लावत बाल मुकंद हि जब प्रभु असुर आगमन जान्यो आवत त्रणावृत उन मान्यो आरो क
र्यो मात ते आपन उनर गोद ते लोटन अंगन याही समय त्रणावृत आयो दारुन वात चक्र ह
रुआयो उमे पात्र त्रणा चक्र अकारो अरघ दिवस नहानियो अंधारो उभियन रेण के करी भै
सी जिह नैन लगत गिल लाजे सी पुरजन ना जग्र हन मज पैगे जथा बालन दुने वृष जैगे याप भ्र
रहा वयरूपायो अनरिषन स्यो त्रणावृत आयो यहां पेचर नि ह कृष्ण लम्यो मेरु न चक्र महग्यान
भ्रमाऐसी सअकासल ख्यो निह आसुर संग हिलगो गयो रक्षकसुर २ कंठ ग्रहन बालक किय ताके
इहा कपट बल छूट वाके सिल पर परे निसाचर सोई अति दारन रव व्रज मह होई त्रणावृत के प्रान न
तभिन निकसे नैन इन वाट छूटो तन न कृष्ण बालन कोन कयह करियो परबत मन ऊ वज्र हत परियो
यहां घोष जन आतुर आए पेषु निहनु परषेलन न पाए नंद उगय लालन उरलीनो कुसल पाय सुन अति हि
तेकीनो पुत्र यहां जसुदा नहीं पावत मनसो चतन सब देव मनावत अब षेलत न बोलक कित नग इयो
हाहा दइव क हा य ह दईयो याही समय नंद ग्रह आए पुन कुसल न षबरा न सुपाए घरनी कहलन दी
नौ बालक घरिको सूजे अरीग्रह घालक लालजसोदा लै उर लायो लैलै न सुबालन न मायो ज्यु घज्र
घव जव ननाजे ती दोरी आय असीसन देती ॥ व्रजवननावाच ॥ नयमे हर अहोव मनगी लालेहि
चोट जु नेक न नलागी ॥ कविरोवाच ॥ दुहा ॥ गोदांनादिक दांन गिन करे नंद तिह काल मंगल वजे
निसान मिल बंट्यो कुसल सुबाल असुर त्रणावृत को यहां नास कस्यो नंद नंद मंगल घर घर
घोष मह उपजे अति आनंद ॥ त्रणावृतबधककविरोवाच ॥ दुहा ॥ आसुर के अब लकाय अ
त अरुसत केवय क्रमजु न मन महमहर के इच्छर ज न्रयो अनंग सिसु देषत कोन न कस्यो आनि
घोर षबलन ऐह मन हि सिमानन मानके सोक उचत न संदेह घटघट व्यापक स्यांमघन अंतर
जामी आप हारक सदा सन्नावयह पर चितको परिनाप ॥ ॥ छंद दुआदसरी ॥ एक दिवस जसुदा
अनुरागी सुन हि पिला वन अंक सजागी यहां कृष्ण कहु आय जंभाई देवी माया अगम दिषाई देष
को रवहमं म विलोक्यो रहत न विश्व निरष मन रोक्यो सरसर नापर बतवन सागर घर न अंक
सह सज उमसि सघर षानच्यार नवचून अषमत माहि चवरासी लूष सुमं भिन जगजठ जीव चर
चर जेते नाछिन मात निहारे नेते नहाजसोदा मंभ त्रेलोकी का नरके मुष माहि विलोकी पुत्र हि पू
रन ब्रह्म प्रमान्यो जग आधार जगनपत जान्यो पुन प्रभु माया प्रबल प्रकासी वहेमान सुत हि निन अ
भ्यासी ॥ इतीश्री भागवत महापुराणे भाषा ब ॥ नरहरदास नाविरचिते मुष विश्वरूप वि
लोकन संकट सुर त्रणावृत बधनानाम ध्यानम द्युयाय ॥ ७ ॥ छंद उधोर कविरोवाच
जब लगे अहवन लाल कर टेक चलन नक्रमाल हगरि घत अंगन माहि जब कछु बाहिर जा हि
यह लेन मात उगय जिन बाल बाहिर जाय कय स्याम सघन सुदेस वन अलक बिपुर वि
सेस सुन विकस वदन सरोज मन लाजिन वेष मनोज जुग नई नषंजन जोय अति नैद दिष्ट
अनोय मिल कुटल भौंह मरार जुग जान मधुकर जोर अधर नरत अनूप रद वृज कणिका रूप
विघ जुक तुतरे वैन मनु पढत मंत्र जु मैन रहिक ग्सुनग ग्रतरेष वनरूप सीव विसेष उर सिंघ
नष रस चारु बिय जोइ आसिस मनुबाल लयक वलक रनलनलाल वनबाजु दंमा विसाल क हि
कन्क किकन कीन नगजटन ओप नवीन सुन्न उनक नूपर स्वद वन चलन पैम विहह लगज
बेदौर न लाल विचकाछ्नर जविसाल मुषहरष निरषत माय सुष अतुल उपजसुनाय
इह समय नंद कुवार व्रज करत बाल विहार अब राम कृष्ण अनूप सुनगौर स्याम सरूप
सरनि वैस सषा समाज वय रूप सम विराज इक गोप का के आय पुन सुनमि दर पाय मि
लघसेग्रहम जार नवनीत पात्र निहार छीका प्रलिबन सोय यह है सगन उनहो यत

गोराद कृष्णनो

चौसुदुरगमआदि। तिहकरलपङुचेनाहि इहकृष्णकरुनमान इकघस्यो। तुषलओन बेगर
तिनपरबाल तिहकंधचढनतकाल निसेषमाषनलीन। निजसषावाटजुदीन कृवीचग्वा
लनआय सोई धाररोक सुनाय मुषमाजदधदहरिमेल कियकृष्णछलयहकेल त्रियनईनमा
हिनिहार दयेवदनपेपयमार रहीनयननिमितनार मिलनसषानाजमुरार। छंद छेअष
री। अवरदिवसकाङुगहआये पुनदधिदधइ धनबाहिरपाए तहांयकसषाधयोगहनीत
रअविलोकेनाजनजिहअंतर अंधियारे सोअतिअकुलाई बाहिरसूनिहकृष्णबुलाई नयो
प्रकासंरतनमयभूषन वाटदयोदधअसुरविदुषन यदेषायदधबाहिरआएपदिचोनेगह
नीतिहपायेमटकारीनादेषेमिंदर करप्रेनापमीमनकरसूकर इकादिनकृष्णअकेलेआए
न हेकोउसंगसषातबनाहिन यहगोपीकेगहमजआए पैमाषनबडुतेरोपाए मिणमयथं
नमांगमनमोहन निजप्रतिबिंबविलोकचकितमन लख्योकहनतिहबिंब
हिलालन हमतुममिलषैहैयहमाषन यहममममानङुनानसुनावङु हमसंगनि नषेलन
कुआवङु एककवलमुषमेलनआपुन तामुषधुतियेदेषयफुलनतनन वागहकीनबस्यामन
आईमोहनचिरनदेषमुसकाई लालनगयलायनुरलीनो कृनयहप्रगटजसोदाकीनो मद्धि
रषलायलेनमुसकावे लालनअपनोछतियलगावे मुदितवचनयोनाषनमइ
याकहेपरघरजातकनईया। मेरे दूधदहीअरुमाषन अतुलितलालसुषईयेआपुनपर
घरजायकहापदपावतकानरमाषेनचोरकहावत अवरदिवसकाङुग
हआये संगबलदाउसषासुहाए पुनसबबालगेहमहपैसे जनवंचकअद्भुतगतिजेसे
जतनधरेछीकादधनाजन मोहनभयविलोकचकितमन अतिनेउपात्रविलोकेऊचेपे
तिनलगनहीहाथयङ्ग्चे कृष्णवहांअद्भुतमनकीनी लाबीलकुटीहाथसुलीनी सबमर
कनतललकुटीसंचारी नयेरध्रुतरहरंजिहनारी घसीनहांअविरलदधधारा यहअद्भु
इइकृष्णकवारा। उकमांमसबसुषाअघाए पानकरेदधअतिसुषपाए वाहीसमयग्रेह
नीआई करिचोरीनजिगयेकनाई हेदधपात्रसुछिद्रनिहारेन विस्मयबालसुचिरतवि
चारत दिवसअवरजसुदाकेनंदन छोनेकरतमृतिकानदसन कृष्णयहांकिसषाविलोके
रहियोनहीनाहिकोरोक्यो यहबालसोईदेषरिसायो वहनिकसजसुदापैआयो गहचढोबा
लकनाहीछिन लाउपेकहनकांनकेलहसन। बालक वाच। मैदेष्योअबहीरीमइयाकरउ
वमाटीषातकनईया। कहिरोवाच। लेछटिकाकरजसवदलागी सोआइनहांदोरसनागी
लेलगईमुषमाटीलालन तिहघरघरकापनलाल्योतन। मातावाच। मनरिसपूछनजस
वतमाई वषलक्योरेतेमाटीषाई। श्रीकृष्णवाच। घरननिहारनकापनघरघर उगज
ललनेरेलकुटियाकेमर घरननिहारनकापनघरघर लेलेवमेउसासउचारे मईयामोहि
लकुटीमतमारे देयहसषारिसायौमोहीनिहलनबारबहकावनतोही सकुकिउरछेअ
नासिलाई मेरामुषअविलोकरीमाई। कहिरोवाच। पुनयोकहिलघुवदनपसास्यो
नियतमाननिहांविश्वनिहास्यो पुनभूगोलानिहास्योपावनसप्तदीपनवषंडसुहावन
सातूसमदनियासीसरता सप्तपयालनुयगमसहता अबलवनास्थनितिनारअठार
परबतअसहकुलीअणपार। सोलनकलासिसद्वादसादिनकर नवनषत्रनारागिनन
नचर निगमचारनवदनपूराना मिलचंत्रषानचंराचरमाना देषराकसदेतउदानवकिंनर
जद्सगनेसुरगंध्रव मगंमनकोटतेतीससबेसुर महप्रअग्नासीनहारिषेसुर मेघत्रयो
दसननघनमाला पुनतहांप्रगटअष्टउगपाला प्रथपलदंमपहरदिननिषपरमास
अयनरितुसबेसमेसर पंचसलिलत्रयकालअनिलत्रयं मेरुतमंदसुगंघसीनमय
त्रगुनदेवत्रयपंचतत्वनिह जोतीचक्रअषमनदेहजिह जीवजोनेचउरासीजेनेतहांविले

केजसवदतेने इंन्यादिक नूपचक्रअषंमा वदनकोटदेषब्रह्मंमा ब्रह्मसिद्धजोवदवषानी
जननीसुपेविलोकीजानी मुषमुद्योपुनकवरमनोहर अद्भुतरसनूपज्योयहअवसर
पुत्रहिमानाब्रमषमान्यो जगकरताहरतासोजान्यो देवनअद्भुतबालदिषायो आदपुरष
सोगरनहिआयो प्रभुनवदेवीमायापेरी होनजननितबसुतगनहेरी नावननरमनंदरा
नीनूली फिरतजसोदाफूलीफूली ॥दुहा॥ लीनेसषाअनेकेसंग षोवयरूपसमानमा
षनघेरघरदूधदध मोहनदेतसुमान इहेजुचल्योचुवावअतिग्रहग्रहगोकलगामें
मिलमिलकहतगलीनमझ बंदबंदब्रजवाम बालविनोदविचित्रवर अद्भुतकतअ
पार ॥ विवधअगोचरमनवचन करतब्रजेसकवार ॥ एतीश्री भागवतेमहापुराणेभा
षा ॥ नरहरदासे ॥ नविरचिते श्रीकृष्ण बालविनोद ॥ अष्टमोध्याय ॥ ८

योगदि[illegible]

~~ठकुर जोरावरसिंघ भाटी गाँव गोवां बडी॥ तारीक ३।६।1933 समत १९९०~~

~~Thakur gorawar Singh Bhati | Date 3/6/1933 |~~

Thakur gorawar Singh Bhati of Gowa badi badi

ॐ श्री

श्रीवंदणासिवनाथरा करसामरथसिंघरकाज सुरिदधीनपार
द। विजेसिंघव्रजराज १ श्रकजालंघरथंभियो पोरस्वनुजकर
विजेसिंघकरता विजे रजवटजाटीराण २ पाटीगंघुरचापै
कारमनरोघ अलीवतुरहरदोयअंज जिकककसौवेंजाघ ॥३॥
बनेअंकघुरबाजरी नापुणि लोनांरा चूमाहरनामीचंवे जादम
कुलरोजाण॥४॥



